प्रबंध सम्पादक
श्रीचन्द रामपुरिया,
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
(जैन विश्व भारती)

आर्थिक सहायक
श्री रामलाल हसराज गोलछा
विराटनगर (नेपाल)

प्रकाशन तिथि
विक्रम सवत् २०३१
कार्तिक कृष्णा १३
(२५०० वा निर्वाण दिवस)

पृष्ठांक । ११००

मूल्य ८५/

मुद्रक —
एस नारायण एण्ड संस (प्रिंटिंग प्रेस)
७११७/१८, पहाडी धीरज, दिल्ली-६

ANGA SUTTĀNI

I

ĀYĀRO • SŪYAGADO • THANAM • SAMAWĀO •

(Original text Critically edited)

Vāćanā PRAMUKHA
ĀCĀRYA TULASI

EDITOR
MUNI NATHAMAL

Publisher
JAIN VISWA BHĀRATI
LADNUN (Rajasthan)

Managing Editor
Shreechand Rampuria.
Director
Āgama and Sāhitya Publication Dept
JAIN VISHWA BHARATI, LADNUN

Financial Assistance
Sri Ramlal Hansraj Golchha
Biratnagar (Nepal)

V S 2031
Kārtic Krishnā 13
2500th Nirvana Day

Pages 1100

Rs 85/-

Printers
S Narayan & Sons (Printing Press)
7117/18, Pahari Dhiraj,
Delhi-6

समर्पण

पुट्ठो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,
आणा-पहाणो जणि जस्स निच्च।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भिक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्व॥

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पटु,
होकर भी आगम-प्रधान था।
सत्य-योग मे प्रवर चित्त था,
उसी भिक्षु को विमल भाव से।

विलोडिय आगमदुद्धमेव,
लद्ध सुलद्ध णवणीयमच्छ।
सज्झाय - सज्झाण - रयस्स निच्च,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुव्व॥

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत।
श्रुत-सद्ध्यान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से।

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्व॥

जिसने श्रुत की धार वहाई,
सकल सघ मे मेरे मन मे।
हेतुभूत श्रुत - सम्पादन मे,
कालुगणी को विमल भाव से।

•

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथो से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नो से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमो का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमे लगे। सकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य मे सलग्न हो गया। अत मेरे इस अन्तस्तोष मे मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हू, जो इस प्रवृत्ति मे सविभागी रहे हैं। सक्षेप मे वह सविभाग इस प्रकार है—

सपादक ·		**मुनि नथमल**
	सहयोगी	मुनि दुलहराज
पाठ-सशोधन :	,,	मुनि सुदर्शन
	,,	मुनि मधुकर
	,,	मुनि हीरालाल

सविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति मे उन्मुक्त भाव से अपना सविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हू और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

ग्रन्थानुक्रम

परिशिष्ट

प्रकाशकीय

सन् १९६७ की वात है। आचार्यश्री वम्वई मे विराज रहे थे। मैंने कलकत्ता से पहुँचकर उनके दर्शन किए। उस समय श्री ऋषभदासजी राका, श्रीमती इन्दु जैन, मोहनलालजी कठौतिया आदि आचार्यश्री की सेवा मे उपस्थित थे और 'जैन विश्व भारती' को वम्वई के आस-पास किसी स्थान पर स्थापित करने पर चिन्तन चल रहा था। मैंने सुझाव रखा कि सरदारशहर मे 'गाधी विद्या-मन्दिर' जैसा विशाल और उत्तम सस्थान है। 'जैन विश्व भारती' उसी के समीप सरदारशहर मे ही क्यो न स्थापित की जाये? दोनो सस्थान एक दूसरे के पूरक होंगे। सुझाव पर विचार हुआ। श्री कन्हैयालालजी दूगड (सरदारशहर) को वम्वई वुलाया गया। सारी बातें उनके सामने रखी गई और निर्णय हुआ कि उनके साथ जाकर एक वार इसी दृष्टि से 'गांधी विद्या-मन्दिर' सस्थान को देखा जाए। निश्चित तिथि पर पहुचने के लिए कलकत्ता से श्री गोपीचन्दजी चोपडा और मे तथा दिल्ली से श्रीमती इन्दु जैन, लादूलालजी आच्छा सरदारशहर के लिए रवाना हुए। श्री कन्हैयालालजी दूगड दिल्ली से हम लोगो के साथ हुए। श्री राकाजी वम्वई से पहुचे। सरदारशहर मे भावभीना स्वागत हुआ। श्री दूगडजी ने 'गाधी विद्या-मन्दिर' की प्रवन्ध समिति के सदस्यो को भी आमन्त्रित किया। 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर मे स्थापित करने के विचार का उनकी ओर से भी हार्दिक स्वागत किया गया। सरदारशहर 'जैन विश्व-भारती' के लिए उपयुक्त स्थान लगा। आगे के कदम इसी ओर वढ़े।

आचार्यश्री सतगण व साध्वियो के वृन्द सहित कर्नाटक मे नदी पहाडी पर आरोहण कर रहे थे। आचार्यश्री ने वीच मे पैर थामे और मुझ से वोले "जैन विश्वभारती के लिए प्रकृति की ऐसी सुन्दर गोद उपयुक्त स्थान है। देखो, कैसा सुन्दर शान्त वातावरण है।"

'जैन विश्व भारती' की योजना को कार्य-रूप मे आगे वढाने की दृष्टि से समाज के कुछ और विचारशील व्यक्ति भी नदी पहाडी पर आए थे। श्री कन्हैयालालजी दूगड भी थे। प्रतिक्रमण के वाद का समय था। पहाडी की तलहटी मे दीपक और आकाश मे तारे जगमगा रहे थे। आचार्यश्री गिरि-शिखर पर काच महल मे पूर्वाभिमुख होकर विराजित थे। मैं उनके सामने वैठा था। वचनवद्ध हुआ कि यदि 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर मे स्थापित होती है, तो उसके लिए मैं अपना जीवन लगाऊगा। उस समय 'जैन विश्व भारती' की जैन श्वेताम्वर तेरापथी महासभा के एक विभाग के रूप मे परिकल्पना की गई थी। महासभा ने स्वीकार किया और

मैं उसका सयोजक चुना गया। सरदारशहर मे स्थान के लिए श्री कन्हैयालालजी दूगड और मैं प्रयत्नशील हुए। आचार्यश्री ऊटी (उटकमण्ड) पधारे। वहा महासभा के सभापति श्री हनुमानमलजी बेगाणी तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। जैन विश्व भारती की स्थापना प्राकृतिक दृष्टि से साधना के अनुकूल रम्य और शान्त स्थान मे होने की बात ठहरी। इस तरह नदी गिरि की मेरी प्रतिज्ञा से मैं मुक्त हुआ, पर मन ने मुझे कभी मुक्त नही किया। आखिर 'जैन विश्व भारती' की मातृ-भूमि बनने का सौभाग्य सरदारशहर से ६६ मील दूर लाडनूं (राजस्थान) को प्राप्त हुआ, जो सयोग से आचार्यश्री का जन्म-स्थान भी है।

आचार्यश्री ने आगम-सशोधन का कार्य स० २०११ की चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हाथ मे लिया। कुछ समय बाद उज्जैन में दर्शन किए। स० २०१३ मे लाडनूं मे आचार्य श्री के दर्शन प्राप्त हुए। कुछ ही दिनो बाद सुजानगढ मे दशवैकालिक सूत्र के अपने अनुवाद के दो फार्म अपने ढग से मुद्रित कराकर सामने रखे। आचार्यश्री मुग्ध हुए। मुनिश्री नथमलजी ने फरमाया—"ऐसा ही प्रकाशन ईप्सित है।" आचार्यश्री की वाचना में प्रस्तुत आगम वैशाली से प्रकाशित हो, इस दिशा मे कदम आगे बढे। पर अन्त मे प्रकाशन कार्य महासभा से प्रारम्भ हुआ। आगम-सम्पादन की रूपरेखा इस प्रकार रही—

१ आगम-सुत्त ग्रन्थमाला मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमो का प्रस्तुतीकरण।

२. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थमाला मूलपाठ, सस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियो सहित आगमो का प्रस्तुतीकरण।

३. आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला आगमो के समीक्षात्मक अध्ययनो का प्रस्तुतीकरण।

४ आगम-कथा ग्रन्थमाला आगमो से सम्बन्धित कथाओ का सकलन और अनुवाद।

५ वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला आगमो का सक्षिप्त वर्गीकृत रूप मे प्रस्तुतीकरण।

महासभा की ओर से प्रथम ग्रथमाला मे—(१) दसवेआलिय तह उत्तरज्झयणाणि, (२) आयारो तह आयारचूला, (३) निसीहज्झयण, (४) उववाइय और (५) समवाओ प्रकाशित हुए। रायपसेणइय एव सूयगडो (प्रथम श्रुतस्कन्ध) का मुद्रण-कार्य तो प्राय समाप्त हुआ पर वे प्रकाशित नही हो पाए।

दूसरी ग्रन्थमाला मे—(१) दसवेआलिय एव (२) उत्तरज्झयणाणि (भाग १ और भाग २) प्रकाशित हुए। समवायाग का मुद्रण-कार्य प्राय समाप्त हुआ पर प्रकाशित नहीं हो पाया।

तीसरी ग्रथमाला मे दो ग्रथ निकल चुके हैं (१) दशवैकालिक एक समीक्षात्मक अध्ययन और (२) उत्तराध्ययन एक समीक्षात्मक अध्ययन।

चौथी ग्रथमाला मे कोई ग्रथ प्रकाशित नही हुआ ।

पाँचवी ग्रथमाला मे दो ग्रथ निकल चुके हैं (१) दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख १) और (२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख २) ।

उक्त प्रकाशन-कार्य मे सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एव कमलनयनजी सरावगी) का बहुत वडा अनुदान महासभा को रहा । अनुदान स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी एव उनके पुत्र पन्नालालजी सरावगी की स्मृति मे प्राप्त हुआ था । भाई पन्नालालजी के प्रेरणात्मक शब्द तो आज भी कानो मे ज्यो-के-त्यो गूंज रहे हैं—"धन देने वाले तो मिल सकते हैं, पर जो इस प्रकाशन-कार्य में जीवन लगाने का उत्तरदायित्व लेने को तैयार हैं, उनकी वरावरी कौन कर सकेगा ?" उन्ही तथा समाज के अन्य उत्साहवर्धक सदस्यो के स्नेह-प्रदान से कार्य-दीपक जलता रहा ।

कार्य के द्वितीय चरण मे श्री रामलालजी हसराजजी गोलछा (विराटनगर) ने अपना उदार हाथ प्रसारित किया ।

आचार्यश्री की वाचना मे सम्पादित आगमो के सग्रह और मुद्रण का कार्य अव 'जैन विश्व भारती' के अचल से हो रहा है । प्रथम प्रकाशन के रूप मे ११ अगो को तीन खण्डो मे 'अगसुत्ताणि' के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है

प्रथम खण्ड मे आचार, सूत्रकृत्, स्थान, समवाय—ये प्रथम चार अग हैं ।
दूसरे खण्ड मे भगवती—पाँचवाँ अग है ।

तीसरे खण्ड मे ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्न-व्याकरण और विपाक—ये ६ अग हैं ।

इस तरह ग्यारह अगो का तीन खण्डो मे प्रकाशन 'आगम-सुत्त ग्रथमाला' की योजना को बहुत आगे वढा देता है ।

ठाणाग सानुवाद सस्करण का मुद्रण-कार्य भी द्रुतगति से हो रहा है और वह आगम-अनुसन्धान ग्रथमाला के तीसरे ग्रथ के रूप मे प्रस्तुत होगा ।

केवल हिन्दी अनुवाद के सस्करण के रूप मे 'दशवैकालिक और उत्तराध्ययन' का प्रकाशन हुआ है, जो एक नई योजना के रूप मे है । इसमें सभी आगमो का केवल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का निर्णय है ।

दशवैकालिक एव उत्तराध्ययन मूल पाठ मात्र को गुटको के रूप मे दिया जा रहा है ।

'जैन विश्व भारती' की इस अग एव अन्य आगम प्रकाशन योजना को पूर्ण करने मे जिन महानुभावो के उदार अनुदान का हाथ रहा है, उन्हें सस्थान की ओर से हार्दिक धन्यवाद है ।

मुद्रण-कार्य मे एस० नारायण एण्ड सस प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री नारायणसिंह जी का विनय, श्रद्धा, प्रेम और सौजन्य से भरा जो योग रहा उसके लिए हम कृतज्ञता प्रगट किए विना नही रह सकते। मुद्रण-कार्य को द्रुतगति देने मे श्री देवीप्रसाद जायसवाल (कलकत्ता) ने रात-दिन सेवा देकर जो सहयोग दिया, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस सम्बन्ध मे श्री मन्नालाल जी जैन (भूतपूर्व मुनि) की समर्पित सेवा भी स्मरणीय है।

इस अवसर पर मैं आदर्श साहित्य सघ के सचालको तथा कार्यकर्त्ताओ को भी नही भूल सकता। उन्होने प्रारम्भ से ही इस कार्य के लिए सामग्री जुटाने, धारने तथा अन्यान्य व्यवस्थाओ को क्रियान्वित करने मे सहयोग दिया है। आदर्श साहित्य सघ के प्रवन्धक श्री कमलेश जी चतुर्वेदी सहयोग मे सदा तत्पर रहे हैं, तदर्थ उन्हे धन्यवाद है।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, मत्री श्री सम्पत्तरायजी भूतोड़िया तथा कार्य समिति के अन्यान्य समस्त वन्धुओ को भी इस अवसर पर धन्यवाद दिये विना नही रह सकता, जिनका सतत सहयोग और प्रेम हर कदम पर मुझे वल देता रहा।

इस खण्ड के प्रकाशन के लिए विराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हसराजजी गोलछा से उदार आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ है, इसके लिए सस्थान उनके प्रति कृतज्ञ है।

सन् १९७३ में मैं जैन विश्व-भारती के आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग का निदेशक चुना गया। तभी से मैं इस कार्य की व्यवस्था में लगा। आचार्यश्री यात्रा मे थे। दिल्ली मे मुद्रण की व्यवस्था वैठाई गई। कार्यारभ हुआ, पर टाइप आदि की व्यवस्था मे विलव होने से कार्य मे द्रुतगति नही आई। आचार्यश्री का दिल्ली पधारना हुआ तभी यह कार्य द्रुतगति से आगे वढा। स्वल्प समय में इतना आगमिक साहित्य सामने आ सका उसका सारा श्रेय आगम सपादन के वाचनाप्रमुख आचार्यश्री तुलसी तथा सपादक-विवेचक मुनि श्री नथमलजी को है। उनके सहकर्मी मुनि श्री सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी तथा दुलहराजजी भी उस कार्य के श्रेयोभागी हैं।

ब्रह्मचर्य आश्रम मे ब्रह्मचारी का एक कर्त्तव्य समिधा एकत्रित करना होता है। मैने इससे अधिक कुछ और नही किया। मेरी आत्मा हर्षित है कि आगम के ऐसे सुन्दर सस्करण 'जैन विश्व भारती' के प्रारभिक उपहार के रूप में उस समय जनता के कर-कमलो में आ रहे हैं, जबकि जगत्‌वद्य श्रमण भगवान् महावीर की २५००वी निर्वाण तिथि मनाने के लिए सारा विश्व पुलकित है।

४६९४, असारी रोड
२१, दरियागज
दिल्ली-६

श्रीचन्द रामपुरिया
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
जैन विश्व-भारती

सम्पादकीय

आयारो—

आचाराग का जो पाठ हमने स्वीकार किया है, उसका आधार कोई एक आदर्श नही है। हमने पाठ का स्वीकार प्रयुक्त आदर्शों, चूर्णि और वृत्ति के सदर्भ में समीक्षापूर्वक किया है। 'आयारो' के प्रथम अध्ययन के दूसरे उद्देशक के तीन सूत्र (२७–२९) शेष पाच उद्देशको में भी प्राप्त होते हैं। पाठ-मशोधन में प्रयुक्त आदर्शों तथा आचाराग वृत्ति में यह प्राप्त नही है। आचाराग चूर्णि में 'लज्जमाणा पुढो पास' (आयारो, १।४०) सूत्र से लेकर 'अप्पेगे सपमारए, अप्पेगे उद्दवए' (आयारो, १।५३) तक ध्रुवकण्डिका (एक समान पाठ) मानी गई है[1]।

चूर्णि में प्राप्त सकेत के आधार पर हमने द्वितीय उद्देशक मे प्राप्त तीन सूत्र (२७–२९) शेष पाचो उद्देशको में स्वीकृत किए हैं।

आठवें अध्ययन के दूसरे उद्देशक (सू० २१) की चूर्णि[2] में 'कुभारायतणसि वा' के स्थान पर अनेक शब्द उपलब्ध होते हैं, जैसे—'उवट्टणगिहे वा, गामदेउलिए वा, कम्मगारसालाए वा, ततुवायगसालाए वा, लोहगारसालाए वा।' चूर्णिकार ने आगे लिखा है—'जचियाओ साला सव्वाओ भाणियव्वाओ[3]।'

यहा प्रतीत होता है कि 'कुभारायतणसि वा' शब्द अन्य अनेक शाला या गृहवाची शब्दो से युक्त था, किन्तु लिपि-दोष के कारण कालक्रम से शेष शब्द छूट गए। चूर्णि के आधार पर पाठ-पद्धति का निश्चय करना सभव नही था इसलिए उसे मूलपाठ में स्वीकृत नही किया गया।

हमने सक्षिप्त पाठ की पूर्ति भी की है। पाठ-सक्षेप की परम्परा श्रुत को कठाग्र करने की पद्धति और लिपि की सुविधा के कारण प्रचलित हुई। प० बेचरदास दोशी ने ८–१२–६६ को आचार्यश्री तुलसी के पास एक लेख भेजा था। उसमें इस विषय पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने

---

१ देखें—आयारो, पृ० ७ पादटिप्पण ७, पृ० ९ पादटिप्पण १०,
पृ० १० पादटिप्पण १, पृ० ११ पादटिप्पण ६,
पृ० १२ पादटिप्पण १, पृ० १३ पादटिप्पण ५,
पृ० १४ पादटिप्पण ८, पृ० १५ पादटिप्पण १,

२ आचारांग चूर्णि, पृ० २६०-२६१।

३ वही, पृ० २६१।

लिखा है—'प्राचीन जैन-श्रमण लिखने-लिखाने की प्रवृत्ति को आरभ-रूप समझते थे, फिर भी शास्त्रो की रक्षा के लिए उन्होंने लिखने-लिखाने के आरभ-रूप मार्ग को भी अपवाद समझकर स्वीकार किया। पर जितना कम लिखना पडे, उतना अच्छा, ऐसा समझकर उन्होंने शास्त्र की रक्षा के लिए ही, हो सके वहा तक कम आरभ करना पडे, ऐसा रास्ता खोजने का जरूर प्रयास किया। इस रास्ते की शोध से 'वण्णओ' और 'जाव' दो नए शब्द उनको मिले। इन दो शब्दो की सहायता से हजारो श्लोक व सैकडो वाक्य कम लिखने से उनका आरभ कम हो गया और शास्त्र के आशय मे भी किसी प्रकार की न्यूनता नही हुई।'

श्रुत को कठस्थ करने की पद्धति, लिपि की सुविधा और कम लिखने की मनोवृत्ति—पाठ-सक्षेप के ये तीनो कारण सभाव्य हैं। इनमे भले ही आशय की न्यूनता न हुई हो, किन्तु ग्रथ-सौन्दर्य अवश्य न्यून हुआ है। पाठक की कठिनाइया भी बढी हैं। जिन मुनियो के समग्र आगम-साहित्य कण्ठस्थ था, वे 'जाव' या 'वण्णग' द्वारा सकेतित पाठ का अनुसधान कर पूर्वापर की सम्बन्ध-योजना कर सकते हैं। किन्तु प्रतिलिपियो के आधार पर पढने वाला मुनि-वर्ग ऐसा नहीं कर सकता। उसके लिए 'जाव' या 'वण्णग' द्वारा सकेतित पाठ बहुत लाभदायी सिद्ध नही हुआ है। इसका हम प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं। इसी कठिनाई तथा ग्रन्थ-सौंदर्य की दृष्टि से हमारे वाचना-प्रमुख आचार्यश्री तुलसी ने चाहा कि सक्षेपीकृत पाठ की पुन पूर्ति की जाए। हमने अधिकाश स्थलो मे सक्षिप्त पाठ की पूर्ति की है। उसकी सूचना के लिए बिन्दु-सकेत दिया गया है। आयारो तथा आयार-चूला के पूर्ति-स्थलो के निर्देश की सूचना प्रथम परिशिष्ट में दी गई है।

प० बेचरदास दोशी के अनुसार पाठ सक्षेपीकरण देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने किया था। उन्होंने लिखा है—'देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने आगमो को ग्रथ-बद्ध करते समय कुछ महत्त्वपूर्ण बातें ध्यान में रखीं। जहा जहा शास्त्रों में समान पाठ आए वहां-वहा उनकी पुनरावृत्ति न करते हुए उनके लिए एक विशेष ग्रन्थ अथवा स्थान का निर्देश कर दिया। जैसे—'जहा उववाइए' 'जहा पण्णवणाए' इत्यादि। एक ही ग्रन्थ में वही बात बार-बार आने पर उसे पुन पुन न लिखते हुए 'जाव' शब्द का प्रयोग करते हुए उसका अन्तिम शब्द लिख दिया। जैसे—'णागकुमारा जाव विहरन्ति', 'तेण कालेण जाव परिसा णिग्गया' इत्यादि'[1]।

इस परम्परा का प्रारभ भले ही देवर्द्धिगणि ने किया हो, किन्तु इसका विकास उनके उत्तर-वर्ती काल में भी होता रहा है। वर्तमान में उपलब्ध आदर्शों में सक्षेपीकृत पाठ की एकरूपता नहीं है। एक आदर्श में कोई सूत्र सक्षिप्त है तो दूसरे में वह समग्र रूप से लिखित है। टीकाकारो ने स्थान-स्थान पर इसका उल्लेख भी किया है। उदाहरण के लिए औपपातिक सूत्र में "अयपायाणि वा जाव अण्णयराइ वा" तथा 'अयबधणाणि वा जाव अण्णयराइ वा'—ये दो पाठाश मिलते हैं। वृत्तिकार के सामने जो मुख्य आदर्श थे, उनमें ये दोनो सक्षिप्त रूप में थे, किन्तु दूसरे आदर्शो में ये

1 जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, पृ० ८१।

समग्र रूप में भी प्राप्त थे। वृत्तिकार ने इसका उल्लेख किया है[1]। लिपिकर्त्ता अनेक स्थलो में अपनी सुविधानुसार पूर्वगत पाठ को दूसरी बार नही लिखते और उत्तरवर्ती आदर्शों में उनका अनुसरण होता चला जाता। उदाहरण स्वरूप—रायपमेणइय सूत्र में 'सव्विड्ढीय अकालपरिहीणा' (स्वीकृत पाठ—हीण) ऐसा पाठ मिलता है[2]। इस पाठ मे अपूर्णता–सूचक सकेत भी नही है। 'सव्विड्ढीए' और 'अकालपरिहीण' के मध्यवर्ती पाठ की पूर्ति करने पर समग्र पाठ इस प्रकार बनता है—'सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए सव्वबलेण सव्वसमुदएण सव्वादरेण सव्वविभूसाए सव्वविभूइए सव्वसभमेण सव्वपुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकरेण सव्वदिव्वतुडियसद्दसन्निवाएण महया इड्ढीए महया जुइए महया वलेण महया समुदएण महया वरतुडियजमगसमयपडुप्पवाइयरवेण सख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइग-दुदुभि-निग्घोस-नाइयरवेण णियग परिवाल सद्धि सपरिवुडा साइ-साइ जाणविमाणाइ दुरूढा समाणा अकालपरिहीण।'

आयार-चूला ५।१४ मे 'महद्धणमोल्लाइ' तथा १५।१६ में 'महव्वए' के आगे भी अपूर्णता सूचक संकेत नही हैं।

प्रमादवश कही-कही अपूर्णता सूचक 'जाव' का विपर्यय भी हुआ है, यथा—
फासुय ·········· ··लाभे सते जाव पडिगाहेज्जा। (आयारचूला १।१०१)
वहुकटग·· ······ ····लाभे सते जाव णो ·· ····। (आयारचूला १।१३४)

समर्पण-सूत्र—

सक्षिप्त पद्धति के अनुसार आयारचूला में समर्पण के अनेक रूप मिलते हैं—

जाव—अकिरिय जाव अभूतोवघाइय (४।११)

तहेव -अक्कोसति वा तहेव तेल्लादि सिणाणादि सीओदगवियडादि णिगिणाइ य (७।१६-२०)

अतिरिच्छच्छिन्न तहेव तिरिच्छच्छिन्न तहेव (७।३४,३५)

एव—एव णायव्व जहा सद्दपडियाए सव्वा वाइत्तवज्जा रुवपडियाए वि (१२।२-१७)

जहा—पाणाइ जहा पिंडेसणाए (५।५)

सख्या—थूणसि वा (४) (७।११)

असण वा (४) (१।१२)

से भिक्खू वा २।

---

१ औपपातिक वृत्ति, पत्र १७७
पुस्तकान्तरे समग्रमिद सूत्रद्वयमस्त्येवेति।

२ देखें—प० बेचरदास दोशी द्वारा सपादित 'रायपसेणइय,' पृष्ठ ७१।

त चेव—त चेव भाणियव्व णवर चउत्थाए णाणत्त (११४६–१५४)
सेस त चेव एव ससरक्खे (११६५)
हेट्ठिमो—एव हेट्ठिमो गमो पायादि भाणियव्वो (१३१४०–७५)

आचारांग का वाचना-भेद—

समवायाग मे आचाराग की अनेक वाचनाओ का उल्लेख मिलता है[1]। वाचना का अर्थ है—अध्यापन या सूत्र और अर्थ का प्रदान। सक्षिप्त वाचना-भेद अनेक मिलते हैं, किन्तु वर्तमान मे मुख्य दो वाचनाए प्राप्त हैं—एक प्रस्तुत-वाचना और दूसरी नागार्जुनीय-वाचना। चूर्णि और टीका मे नागार्जुनीय वाचना-सम्मत्त पाठों का उल्लेख किया गया है। देखें—'आयारो' पृष्ठ २० पादटिप्पण सख्याक १०, पृष्ठ २१ पादटिप्पण सख्याक २, पृष्ठ ३० पादटिप्पण सख्याक २, पृष्ठ ३१ पादटिप्पण सख्याक ७, पृष्ठ ३५ पादटिप्पण सख्याक ५, पृष्ठ ५४ पादटिप्पण सख्याक १, पृष्ठ ४० पादटिप्पण सख्याक १, पृष्ठ ५० पादटिप्पण सख्याक १, पृष्ठ ५२ पादटिप्पण सख्याक ६ और ८, पृष्ठ ५४ पादटिप्पण सख्याक ६, पृष्ठ ५५ पादटिप्पण सख्याक ८, पृष्ठ ६९ पादटिप्पण सख्याक २, पृष्ठ ७३ पादटिप्पण सख्याक १, पृष्ठ ७५ पादटिप्पण सख्याक ४।

आचारांग के उद्धृत पाठ—

उत्तरवर्ती अनेक ग्रथो में आचाराग के पाठ उद्धृत किए गए हैं। अपराजितसूरि ने मूलाराधना की टीका में आचाराग के कुछ पाठ उद्धृत किए हैं[2]।

शोध करने पर ऐसा ज्ञात हुआ है कि कई पाठ आचाराग में नहीं हैं, कई पाठ शब्द-भेद से और कई पाठ आशिक रूप में मिलते हैं। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से दोनो के पाठ नीचे दिए जा रहे हैं—

मूलाराधना		आचाराग
तथा चोक्तमाचाराङ्गे — सुद मे आउस्सन्तो भगवदा एव मक्खाद। इह खलु सयमाभिमुखा दुविहा इत्थी पुरिसा जादा भवति। त जहा—सव्व समण्णा गदे णो सव्व समागदे चेव। तत्थ जे सव्व समण्णागदे थिराग हत्थ पाणि पादे सव्विदिय समण्णागदे तस्स ण णो कप्पदि एगमवि वत्थ धारिउ	×	×

---

१ समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० १३६।
२ मूलाराधना ४।४२१, टीका पत्र ६१२।

एवं परिहिउ एव अण्णत्थ एगेण पडि-
लेहगेण ।

अह पुण एव जाणिज्जा—उपातिकते हेमते गिम्हे सुपडिवण्णे से अथ पडिजुण्ण-मुवधि पदिट्ठावेज्ज ।

—४।४२१ टीका, पत्र ६११

अह पुण एव जाणेज्जा—उवाइक्कते खलु हेमते, गिम्हे पडिवण्णे अहापरि-जुन्नाइ वत्थाइ परिट्ठवेज्जा ।

आयारा ८।५०, ६६, ७२ ।

पडिलेहण, पादपुछण, उग्गह कडासण अण्णदर उवधि पावेज्ज ।

—४।४२१ टीका, पत्र ६११

वत्थ पडिग्गह कवल, पायपुछण उग्गह च कडासण एतेसु चेव जाणेज्जा ।

आयारो २।११२ ।

तथावत्थेसणाए—वुत्त तत्थ एसे हिरि-मणे सेग वत्थ वा धारेज्ज पडिलेहणग विदिय, तत्थ एसे जुग्गिदे देसे दुवे वत्थाणि धारिज्ज पडिलेहणग तदिय तत्थ एसे परिसाइ अणधिहासस्स तओ वत्थाणि धारेज्ज पडिलेहण चउत्थ ।

— ४।४२१ टीका, पत्र ६११

जे णिग्गथे तरुणे जुगव वलव अप्पायंके थिरसघयणे से एग वत्थ धारेज्जा णो वितिय ।

आयारचूला ५।२ ।

तथा पाएसणाए कथित —
हिरिमणे वा जुग्गिदे चाविअण्णगे वा तस्स ण कप्पदि वत्थादिक पुनश्चोक्त तत्रैव—पादचरित्तए ।

आलावु पत्त वा दारुग पत्त वा मट्टिग-पत्त वा, अप्पाण अप्पवीज अप्पसरिद तथा अप्पकार पत्तलाभे सति पडिग्ग-हिस्सामि ।

४।४२१ टीका, पत्र ६११

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा पाय एसित्तए ।

त जहा—अलाउपाय वा दारुपाय वा, मट्टिया पाय वा तहप्पगार पाय ।—(आयारचूला ६।१) फासुय एसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते पडिगाहेज्जा ।

आयारचूला ६ २२

भावनाया चोक्त—
चरिम चीवरधारी तेण परम चेलके तु जिणे ।

४।४२१ टीका, पत्र ६११

× ×

प्रति परिचय

(अ.) आचाराग (दानो श्रुतस्कध)

यह प्रति जैन-भवन, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता-७ से श्री श्रीचन्द जी रामपुरिया द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र १८५ हैं। प्रत्येक पत्र १०½ इच लम्बा तथा ४½ इच चौडा है। प्रत्येक पत्र में १-२७ तक पक्तिया हैं। प्रत्येक पक्ति में ४०-४५ तक अक्षर हैं। पत्र के चारों ओर वृत्ति लिखी हुई है। प्रति सुन्दर व कलात्मक है। सवत् आदि नहीं है।

(क.) आचारांग मूलपाठ दोनों श्रुतस्कन्ध

यह प्रति गवैया पुस्तकालय, सरदारशहर से श्री मदनचन्द जी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ६७ हैं। प्रत्येक पत्र १० इच लम्बा तथा ४ इच चौडा है। पक्तिया १३ हैं। प्रत्येक पक्ति में ५०-५२ तक अक्षर हैं। प्रति के अत में लिखा है—

सवत् १६७६ वर्षे आषाढ सुदि द्वितीय ४ भौम। श्री मालान्वये ... गोत्रे स० जटमल पुत्र स० वेणीदास पुस्तक प्रदत्त श्री मदनागपुरीय तपागच्छ सा० श्रीमानकीर्तिसूरि शिष्य माधव ज्योतिविद्।

अत के अक्षर किसी अन्य व्यक्ति के मालूम होते हैं। प्रति के बीच में बावडी तथा तीन बडे-बडे लाल टीके हैं।

(ख) आचाराग टब्बा (प्रथम श्रुतस्कन्ध)

यह प्रति गवैया पुस्तकालय से गोठी जी द्वारा प्राप्त है। इसके ८६ पत्र हैं। पक्तिया पाठ की ७ तथा टब्बे की १४ हैं। प्रत्येक पत्र १० इच लम्बा तथा ४ इच चौडा है। प्रत्येक पक्ति मे ४२ से ४५ तक पाठ के अक्षर हैं। अन्तिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

सवत् १७३२ वर्षे श्रावणमासे कृष्णपक्षे पचमी तिथौ गुरु वासरे।
लिखित पूज्य ऋषिश्री ५ अमराजी तत्शिष्येण लिपिकृत मुनिविनी
आत्मार्थो शुभ भवतु कल्याणमस्तु। मेड़तीया ग्रामे सपूर्ण सन्ति॥

(ग) आचाराग (प्रथमश्रुतस्कन्ध) पच पाठी (बालावबोध)

यह प्रति गवैया पुस्तकालय से श्री गोठी जी द्वारा प्राप्त है। इसके ६० पत्र है। प्रथम ३ तथा छठा पत्र नहीं है। प्रत्येक पत्र १० इच लम्बा तथा ४। इच चौडा है। मूलपाठ की पक्तिया ५ से १० तक हैं। अक्षर ३० से ३३ तक है। अन्तिम प्रशस्ति नही है।

(घ.) आचाराग दोनो श्रुतस्कन्ध (जीर्ण)

यह प्रति भारतीय सस्कृति विद्या-मन्दिर, अहमदावाद से श्री गोठी जी द्वारा प्राप्त है।

इसके ३७ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र १३॥ इच लम्वा, ५ इच चौडा है। पक्तिया १७ तथा प्रत्येक पक्ति में ६० से ६५ तक अक्षर हैं। अन्तिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

शुभ भवतु। कल्याणमस्तु ॥छ॥ सवत् १५७३ वर्षे १० मगलवार समत्त ॥छ॥ ॥छ॥ श्री ॥छ॥

प्रति के दीमक लगने से अनेक स्थानो पर छिद्र होगए हैं।

(च.) आचाराग मूलपाठ दोनो श्रुतस्कन्ध,

यह प्रति भारतीय सस्कृति विद्या-मन्दिर, अहमदावाद के लालभाई दलपतभाई ज्ञान भडार से मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त हुई है। इसके ७८ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र में १३ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति में ४० से ४७ तक अक्षर हैं। प्रत्येक पत्र १० इच लम्वा तथा ४॥ इच चौडा है। वीच में वावडी है।

(छ.) आचारांग दोनों श्रुतस्कन्ध, वृत्ति सहित (त्रिपाठी)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से गोठीजी द्वारा प्राप्त है। इसके २६० पत्र हैं। प्रत्येक पत्र ११ इंच लम्वा तथा ४॥ इच चौडा है मूलपाठ की पक्तिया १ से १७ तथा ४५ से ४७ तक अक्षर हैं। अन्तिम प्रशस्ति निम्नोक्त हैं—

सवत् १८६६ वर्षे श्रावणशुक्लपक्षे सप्तम्या तिथौ श्रीविक्रमपुरमध्ये लिपिकृत ॥ श्रीरस्तु कल्याणमस्तु। शुभ भूयादिति ॥

(व) आचारांग द्वितीय श्रुतस्कन्ध टव्बा (पचपाठी)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त हुई है। इसके ८४ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र १०½ इच लम्वा तथा १०½ इच चौडा है। मूलपाठ की पक्तिया ४ से १३ हैं। प्रत्येक पक्ति में २८ से ३३ तक अक्षर हैं। वीच-वीच में वावडिया है। अन्तिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

सवत् १७५२ वर्षे भादपदमासे पचम्या तिथौ ओरसगच्छे भट्टारक श्रीकक्कसूरि तत्पट्टे वर्तमानभट्टारकदेवगुप्तसूरिभिर्गृहीता नागोरी तपागच्छीय प० श्री दयालदास पार्श्वात् पचचत्वारिंशत् ४५ वर्षोत्तरात् महतोद्यमेन।

(वृ), (वृपा) मुद्रित, प्रकाशिका—श्रीसिद्धचक्र साहित्य प्रचारक समिति विक्रम सवत् १६६१।

(चू), (चूपा) मुद्रित—श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी, रतलाम, वि १६६८।

सूयगडो

हमने सूत्रकृत का पाठ किसी एक आदर्श को मान्य कर स्वीकार नही किया है। उसका स्वीकार पाठ-संशोधन मे प्रयुक्त आदर्शों, चूर्णि तथा वृत्ति के पाठो के तुलनात्मक अध्ययन तथा समीक्षापूर्वक किया गया है।

प्राचीनकाल मे लिखने की पद्धति बहुत कम थी। प्राय सभी ग्रन्थ कठस्थ परम्परा मे सुरक्षित रहते थे। इसीलिए घोषशुद्धि (उच्चारणशुद्धि) को बहुत महत्व दिया जाता था। शिष्यो की घोषशुद्धि करना आचार्य का एक कर्त्तव्य था। दशाश्रुतस्कन्ध सूत्र मे लिखा है[1]—'घोषशुद्धि कारक होना आचार्य की एक सपदा है।' पाठ और अर्थ के मौलिक रूप की सुरक्षा के लिए विशेष प्रकार की व्यवस्था थी। छेदसूत्रो से उसकी पूर्ण जानकारी मिलती है।

ज्ञानाचार के आठ प्रकार वतलाए गए हैं[2]। उनमे तीन आचारो का उक्त व्यवस्था से सम्बन्ध है। वे ये हैं[3]—

१. व्यजन—सूत्रपाठ की भाषा, मात्रा, बिन्दु और शब्दो को यथावत् बनाए रखना।
२ अर्थ—सूत्र के आशय को यथावत् बनाए रखना।
३ व्यजन-अर्थ—सूत्र और अर्थ—दोनो को मौलिक रूप मे सुरक्षित रखना।

चूर्णिकार ने उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया है[4]—'धम्मो मगलमुक्किट्ठ'—यह प्राकृत भाषा है। इसका 'धर्मो मगलमुत्कृष्टम्' इस प्रकार सस्कृत मे पाठ करना भाषागत व्यजनातिचार है।

'सव्व सावज्ज जोग पच्चक्खामि'—इसकी मात्रा बदलकर जैसे—'सव्वे सावज्जे जोगे पच्चक्खामि', उच्चारण करना मात्रागत व्यजनातिचार है। 'णमो अरहताण' का 'णमो अरहताण' इस प्रकार प्राप्त बिन्दु को छोडकर उच्चारण करना, 'णमो अरहताण' इस प्रकार 'र' के साथ अप्राप्त बिन्दु का उच्चारण करना—यह बिन्दुगत व्यजनातिचार है।

---

१ दशाश्रुतस्कन्ध, दशा ४।
२ निशीथभाष्य, गाथा ८, भाग-१, पृ० ६
काले विणये बहुमाने, उवधाने तहा अणिण्हवणे।
वजणअत्थतदुभए, अट्ठविधो णाणमायारो॥
३ वही, गाथा १७, भाग १, पृ० १२।
सक्कयमत्ताबिंदू, अण्णाभिधाणेण वा वि त अत्थं।
वजेति जेण अत्थ, वजणमिति भण्णते सुत्त॥
४ निशीथभाष्य चूर्णि, भाग १, पृ० १२।

'धम्मो मगल मुक्किट्ठ, अहिंसा सजमो तवो।' इनके मौलिक शब्दो को हटाकर वहा उनके पर्यायवाची शब्दो की योजना करना, जैसे—पुण्ण कल्लाणमुक्कोस, दयासवर-णिज्जरा। यह अन्याभिधान नामक व्यजनातिचार है।

सूत्र के अक्षर-पदो का हीन या अतिरिक्त उच्चारण करना अथवा उनका अन्यथा उच्चारण करना भी व्यजनातिचार है।

इस सारे विवरण का निष्कर्ष यह है कि सूत्रपाठ की भाषा, मात्रा, विन्दु, शब्द, शब्द-सख्या और पाठ्य-क्रम मौलिकता सुरक्षित रहनी चाहिए। इस व्यवस्था के अतिक्रमण के लिए प्रायश्चित्त की व्यवस्था की गई। भाषा, मात्रा, बिन्दु आदि का परिवर्तन करने पर लघूमासिक प्रायश्चित प्राप्त होता है। सूत्रपाठ को अन्यथा करने पर लघु चातुर्मासिक प्रायश्चित्त प्राप्त होता है[1]।

चूर्णिकार ने विषय के उपसहार मे लिखा है[2]—सूत्रभेद पे अर्थभेद, अर्थभेद से चरणभेद, चरणभेद से मोक्ष असभव हो जाता है। वैसा होने पर दीक्षा आदि कर्म प्रयोजन-शून्य हो जाते है। इसलिए व्यजन-भेद नही करना चाहिए।

इसी प्रकार अर्थभेद भी नही करना चाहिए। जो अर्थ अनुक्त और अघटित हो, वह नही करना चाहिए। अर्थ का परिवर्तन करने पर गुरु चातुर्मासिक प्रायश्चित्त प्राप्त होता है[3]।

सूत्र और अर्थ दोनो का एक साथ परिवर्तन करने पर पूर्वोक्त दोनो प्रायश्चित्त प्राप्त होते हैं।[4]

सूत्र और अर्थ के मौलिक स्वरूप के सुरक्षित रखने की दिशा मे आगमो के रचना-काल मे चिन्तन प्रारभ हो गया था। प्रस्तुत सूत्र मे इसका स्पष्ट निर्देश है। ग्रन्थाध्ययन मे मुनि को सावधान किया गया है कि वह सूत्र और अर्थ की अन्यरूप मे योजना न करे। अथवा

---

१ निशीथभाष्य, गाथा १८, चूर्णि भाग १, पृ० १२।

२ निशीथभाष्य, गाथा १८, चूर्णि भाग १, पृ० १२
सुत्तभेया अत्यभेओ। अत्यभेया चरणभेओ। चरणभेया अमोक्खो मोक्खाभावा दिक्खादयो किरियाभेदा अफला भवन्ति। तम्हा वजणभेदो ण कायव्वो।

३ निशीथभाष्य चूर्णि, भाग १, पृ० १३।

४ वही,

उसका अन्यथा प्रतिपादन न करे[1]। इसकी व्याख्या मे चूर्णिकार ने लिखा है[2]—सूत्र को सर्वथा ही अन्यथा न करे। अर्थ वही करे जो स्वसिद्धान्त से अविरुद्ध है। वृत्तिकार ने लिखा है[3]—सूत्र मे स्वमति से न जोडे अथवा सूत्र और अर्थ को अन्यथा न करे।

उक्त विवरण से ज्ञात होता है कि सूत्र अर्थ के मौलिक स्वरूप की सुरक्षा का तीव्र प्रयत्न किया गया था। फलत एक सीमा तक उसकी सुरक्षा भी हुई है। फिर भी हम यह नही कह सकते कि उसमे परिवर्तन नही हुआ है। वह उसके कारण भी प्राप्त हैं। जैसे—

१ विस्मृति, २ लिपिपरिवर्तन, ३ व्याख्या का मूल मे प्रवेश, ४ देश-काल का व्यवधान।

शीलाकसूरि सूत्रकृताग की वृत्ति लिख रहे थे तब उनके सामने उसके आदर्श और प्राचीन टीका—दोनो विद्यमान थे। दूसरे श्रुतस्कन्ध के दूसरे अध्ययन के एक स्थल मे आदर्शों मे एक जैसा पाठ नही था और टीका मे जो पाठ व्याख्यात था उसका सवादी पाठ किसी भी आदर्श मे नही था। इसलिए उन्होंने एक आदर्श को मान्य कर चर्चित अश की व्याख्या की[4]।

कुछ स्थानो पर हमने चूर्णि के पाठ स्वीकृत किए हैं। आदर्शों और वृत्ति की अपेक्षा से वे अधिक सगत प्रतीत होते हैं।

२।६।४५ मे 'णिहो णिस' पाठ है। वह वृत्ति मे 'णिवो णिम' इस प्रकार व्याख्यात है। वहा हमने चूर्णि का पाठ स्वीकृत किया है।[5]

पादटिप्पणो मे हमने पाठ-परिवर्तन व उनके कारणो की चर्चा की है। वैदिक परम्परा मे भी वेदो के मौलिक पाठ की सुरक्षा के लिए तीव्र प्रयत्न किए थे। किन्तु उनके पाठो मे भी कालजनित अतिक्रमण हुए हैं। डा० विश्ववन्धु ने लिखा है[6]—"यह सर्वमान्य तथ्य है

---

१ सूयगडो, १।१४।२६
णो सुत्तमत्थं च करेज्ज अण्ण।

२ सूत्रकृतांगचूर्णि, पृ० २९६
न सूत्रमन्यत् प्रद्वेषेण करोत्यन्यथा वा, जहा रण्णो भत्तसिणो उज्ज्वलप्रश्नो नामार्थं तमपि नान्यथा कुर्यात्, जहा 'आवती के आवती—एके यावती तं लोगो विप्परामसति' सूत्र सर्वथैवान्यथा न कर्त्तव्य, अर्थविकल्पस्तु स्वसिद्धान्ताविरुद्धो अविरुद्ध स्यात्।

३ सूत्रकृतांगवृत्ति, पत्र २५८
न च सूत्रमन्यत् स्वमतिविकल्पनत स्वपरत्रायी कुर्वीतान्यथा वा सूत्र तदर्थं वा ससारात्त्रायीत्राणशीलो जन्तूनां न विदधीत।

४ वही, पत्र ७९।
इह च प्राय सूत्रादर्शे नानाविधानि सूत्राणि दृश्यन्ते, न च टीकासवादेकोप्यस्माभिरादर्श समुपलब्धोऽत एकमादर्शमगीकृत्यास्माभिर्विवरण क्रियते।

५ देखें—२।६।४५ का पादटिप्पण।

६ अखिल भारतीय प्राच्य-विद्या-सम्मेलन, चौबीसवां अधिवेशन, वाराणसी १९६८, मुख्याध्यक्षीय भाषण, पृष्ठ ८, ९।

कि लगभग ५ हजार वर्षों से इस देश में वैदिक ग्रन्थो के प्राचीन पाठो को उनके मौलिक शुद्धरूप में सुरक्षित रखने के लिए उन्हे परम सावधानी और उत्कृष्ट श्रद्धा के साथ कण्ठस्थ करने का इतना घोर प्रयत्न होता रहा है कि जिसका किसी भी दूसरे देश के साहित्यिक इतिहास में उदाहरण नही है। किन्तु ऐसा होने पर भी, जैसा कि इस वैदिक अनुसन्धान के क्षेत्र में कार्य करने वाले हमारे पूर्ववर्ती विद्वानो को देखने में सयोगवश कुछ-कुछ और गत चालीस वर्षों के सतत शोध कार्य के मध्य में हमारे देखने मे, विस्तृत रूप में आया है कि ये ग्रन्थ भी कालकृत विध्वस और मानवकृत सक्रमण की अपूर्णता से प्रभावित हुए विना नही रह सके। यदि ऐसा वहुधा होता तो सचमुच यह एक अविश्वसनीय चमत्कार ही होता।"

कण्ठस्थ-परपरा से चलने वाले तथा प्रलव अवधि में लिपि-परिवर्तन के युग में सक्रमण करने वाले प्रत्येक ग्रन्थ के कुछ स्थल मौलिकता से इतस्तत हुए है।

प्रतिपरिचय

(क) सूत्रकृतांग मूलपाठ

यह प्रति 'वेवर पुस्तकालय' सुजानगढ की है। इसकी पत्र-सख्या ९४ व पृष्ठ सख्या १८८ है। प्रत्येक पत्र मे ११ पक्तिया व प्रत्येक पक्ति में ३२ से ३७ तक अक्षर है। प्रति की लम्बाई ११॥ इच व चौडाई ४॥। इच है। प्रति शुद्ध व वडे अक्षरो में स्पष्ट लिखी हुई है। यह प्रति सवत् १५८१ में लिखी हुई है। इसके अन्त में निम्न प्रशस्ति है।—

सवत् १५८१ वर्षे पत्तन नगरे श्री खरतरगच्छे श्री जिनवर्द्धनसूरि श्री जिनचन्द्रसूरि। श्री जिनसागरसूरि। श्री जिनसुन्दरसूरि पट्ट पूर्वाचल सहस्रकरावतार श्री जिनहर्षसूरिपट्टे श्री जिनचन्द्रसूरीणामुपदेशेन ऊकेशवशे साधुशाखाया। सो० जीवाभार्या श्रावारुपुत्ररत्न सो० महिपाल सो० गागाख्यो सा० तत्र सो गागा भार्या श्रा० धीरुपुत्र सो० पदमसी सो० हरिचदविद्यमानपुत्र सो० शिवचन्द सो० देवचद्राभ्या श्री एकादशागी सूत्राणि अलेखिपत तत्रेद श्री सूत्रकृतागसूत्र। सम्पूर्ण ॥श्री रस्तु॥

(ख) सूत्रकृताग वालाववोध प्रथमश्रुतस्कन्ध (त्रिपाठी)

यह प्रति 'गधैया पुस्तकालय' सरदाशहर की है। मध्य में पाठ व दोनो तरफ वार्तिका लिखी हुई है। इसके पत्र ४३ व पृष्ठ ८६ हैं। प्रत्येक पत्र मे पाठ की पक्तिया ५-६ करीव हैं व प्रत्येक पक्ति में अक्षर ६०-६२ करीव हैं। प्रति की लम्वाई १०३/४ इच व चौडाई ४१/२ इच है। अनुमानत यह प्रति १७वी शताब्दि की लगती है। प्रति के अन्त में प्रशस्ति नही है।

(ग) सूत्रकृतांग द्वितीय वालावबोध (त्रिपाठी)

यह प्रति 'घेवर पुस्तकालय' सुजानगढ की है। इसके पत्र ६५ व पृष्ठ १३० है। मध्य में पाठ व दोनो तरफ वार्तिका लिखी हुई है। प्रत्येक पत्र में पाठ की पक्तिया ४ से १२ तक हैं व प्रत्येक में ४५ से ५० तक अक्षर हैं। प्रति की लम्बाई १० इच व चौडाई ४½ इच करीव है। प्रति के अन्त मे निम्न प्रशम्ति है—

मूलपाठ प्रशस्ति—सूयगडस्स वीय खधो सम्मत्ते। श्री सूगडाग द्वितीय श्रुतस्कन्ध सूत्र सपूर्ण समाप्त॰ ॥ सुभ भवतु, कल्याणमस्तु। श्री रस्तु ॥ व ॥ व ॥ पड्या भवान सूत मेघज्जी लक्षत ॥ वालावबोध प्रशम्ति—सूत्रकृत आदित सर्वमध्ययन।२३। श्री साधुरत्न-शिष्येण पाशचन्द्रेण वृत्तित वालाववोधार्थं द्वितीयागस्यवार्त्तिक सम्पूर्ण ॥ व ॥ सूभ भवतु। कल्याणमस्तु श्रीरस्तु ॥ सवत् ॥ १६६३ वर्षे फागुणवदि ८ बुधे प्रति सूगडागनी पूरी कीची प्रति ठीक है।

(ख) सूत्रकृताग वालावबोध पचपाठी

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से प्राप्त, पत्र सख्या ६८ व पष्ठ १३६। पाठ की पक्तिया एक से १३ तक व प्रत्येक पक्ति मे ३४ से ३७ करीव अक्षर हैं। प्रति की लम्बाई १०½ इच व चौडाई ४½ इच करीव है। सवत् व प्रशम्ति नहीं है। आनुमानिक स० १७वी शदी।

(ख) सूत्रकृताग (मूलपाठ) निर्युक्ति सहित

यह प्रति 'गधैया पुस्तकालय' सरदारशहर से प्राप्त है। इसकी पत्र सख्या ४२ व पृष्ठ सख्या ८४ है। प्रत्येक पत्र मे १६ पक्तिया व प्रत्येक पक्ति मे ५२ से ६३ तक अक्षर हैं। प्रति की लम्बाई १३ इच व चौडाई ४½ इच है। प्रति के अन्त मे निम्न प्रशस्ति है—
सूयगडम्स निज्जुत्ती सम्मत्ता। पद्मोपम पत्रपर परान्वित, वर्णोज्जलसूक्तमरद सुन्दर मुमुक्षु-भृगप्रकरस्यवल्लभ, जीयाच्चिर सूत्रकृदग पुस्तक ॥ सवत १५१२ वर्षे आसोज वदि दीपा ॥
ऊएसगच्छे भट्टारक श्रीकक्कसूरीणा ॥ विक्रमपुरे ॥

(घ) सूत्रकृताग वृत्ति (हस्तलिखित)

यह प्रति 'गधैया पुस्तकालय' सरदारशहर की है। इसके पत्र ९० व पृष्ठ १८० हैं। प्रत्येक पत्र मे १७ पक्तिया व प्रत्येक पक्ति मे ६० से ६७ के करीव अक्षर है। इसकी लम्बाई १०½ इच व चौडाई ४॥ इच है। प्रति सुन्दर व सूक्ष्म अक्षरो मे लिखी हुई है। प्रति के अन्त मे निम्न प्रशस्ति है—

शुभ भवतु सवत् १७२५ वर्षे श्री यवनपुर नगरे। श्रीखरतरगच्छे। श्रीजिनभद्रसूरिपट्टालकार श्री जिनचन्द्रसूरि विजयराज्ये। श्री कमल सयमे। महोपाध्यायैं स्ववाचनार्थ ग्रथोय लेखित.

।।श्री।। व ।।श्री।। श्री पद्मकीर्त्युपाठकेभ्य प० महिमसारगणिना प्रतिरिय प्रदत्ता स्वपुण्यार्थं ।।

(वृ०) सूत्रकृताग वृत्ति मुद्रित श्री गोडीजी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी ।

(चू०) सूत्रकृताग चूर्णि मुद्रित श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेताम्वर सस्था रतलाम ।

ठाणं

प्राकृत मे एक शव्द के अनेक रूप वनते हैं। आगमो मे वे अनेक रूप प्रयुक्त भी हैं। आगम का सपादन करने वाले कुछ विद्वानो का यह आग्रह रहा है कि पाठ-सपादन मे विभिन्न रूपो मे एकरूपता लानी चाहिए। हमने पाठ-सपादन की इस पद्धति को मान्य नही किया है। यद्यपि प्रस्तुत सूत्र मे 'नकार' और 'णकार' की एकता स्वीकार कर सर्वत्र 'णकार' का ही प्रयोग किया है, पर रूप-भेदो मे एकता लाने के सिद्धान्त का सर्वत्र उपयोग नही किया है। ३।३७३ मे 'सुगती' और 'सुग्गती'—ये दो रूप मिलते हैं। ३।३७५ मे 'सोगता', 'सुगता' और 'सुग्गता'—ये तीन रूप मिलते हैं। हमने उन्हे यथावत् रखा है। ग्रथकार प्रयोग करने मे स्वतन्त्र हैं। वे एकरूपता के नियम से वधे हुए नही हैं, फिर सपादन कार्य मे एकरूपता का प्रयत्न अपेक्षित नही लगता।

आगमो मे अनेक भाषाओ और वर्णादेशो के विविध प्रयोग मिलते हैं। उनमे एकरूपता लाने पर विविधता की विस्मृति की सभावना हो सकती है। 'वाएण', 'कायसा'—ये दोनो रूप प्रयुक्त होते हैं। 'अडजा' के 'अडया' और 'अडगा' तथा 'कर्मभूमिजा' के 'कम्मभूमिया' और 'कम्मभूमिगा'—ये दोनो रूप वनते हैं। जिस स्थल मे जो रूप प्राप्त हो उस स्थल मे उसे रखना सपादन की त्रुटि नही है।

प्रति परिचय

(क) ठाणांग मूलपाठ (हस्तलिखित)

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। इसके पत्र ७४ तथा पृष्ठ १४८ हैं। प्रत्येक पत्र में १२ पक्तिया, प्रत्येक पक्ति मे ६० के करीव अक्षर है। यह प्रति १०।। इच लम्वी ४।। इच चौडी है। प्रति प्राय शुद्ध है। लिपि सवत् १५६५। प्रशस्ति मे लिखा है—

शुभ भवतु ।।छ।। श्री खरतरगच्छे श्री सागरचन्द्राचार्यान्वये वा० दयासागरगणिभि स्वशिष्य वा० ज्ञानमन्दिरगणिवाचनार्थं ग्रथोऽय लेखयाचक्रे ।। सवत् १५६५ वर्षे जिनश्रीवर्धमानसवत् २०३५ वर्षे चैत्रप्रयमाष्टम्या श्री वोहिथिरागोत्रे मत्रीश्वरवच्छराज नदन प्रधानशिरोमणि म० वरसिहगेहिन्या मन्त्रिणी वीऊलदेवी श्री विकया पुत्र म० मेघराज म० भोजराज म० नगराज म० हरिराज म० अमरसिह म० डूगरसिह पुत्रिका वीराई

प्रभृति पौत्रादि परिवारपरिवृतया सुपुण्यार्थ श्री ज्ञानभक्तिनिमित्त श्री स्थानाग सूत्रवृत्तिसहित लेखयित्वा विहारित श्रीखरतरगच्छे वृहतिश्रीबीकानयरे श्रीजिनहसमूरि विजयिराज्ये वा० महिमराजगणीद्राणा शिष्य वा० दयासागगणीवराणा शिष्य वा० ज्ञानमन्दिरगणिदेवतिल-कादिपरिवृताना वाच्यमान चिर नदतु। शुभ वोभोतु श्री चतुर्विध श्री सघाय ॥छ॥ श्री रस्तु ॥

(ख) ठाणाग मूलपाठ (हस्तलिखित)

वेवर पुस्तकालय सुजानगढ मे प्राप्त। इसके पत्र १०८ और पृष्ठ २१६ है। प्रत्येक पत्र मे १३ पक्तिया। प्रत्येक पक्ति में ४५ करीब अक्षर हैं। यह प्रति १० इच लम्बी तथा ४½ इच चौडी है। प्रति प्राय शुद्ध तथा स्पष्ट है। लिपि सवत् १६८५ है।

गवैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त (वृत्ति की प्रति)।
इसके पत्र २८३ और पृष्ठ ५६६ हैं। इसकी लम्बाई १२ इच है तथा चौडाई ४½ इच है। प्रत्येक पत्र मे १५ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति में ५८ से ६० तक अक्षर हैं।

(घ) ठाणाग (मूलपाठ)

यह प्रति लालभाई भाई दलपतभाई भारतीय सस्कृति विद्यामन्दिर (अहमदाबाद) की है। इसके पत्र ६६ तथा पृष्ठ १३२ हैं। प्रत्येक पृष्ठ मे १५ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति में ६० से ६५ तक अक्षर हैं। इसकी लम्बाई १२ इच तथा चौडाई ५ इच है। पत्रो के दोनो ओर कलात्मक वापिका है। अन्त में लिखा है—
सवत् १५१७ वर्षे ठाणाग सूत्र लेखयित्वा तेपामेव गुरुणामुपकारिता। साधुजनैर्वा चिर नदतात् ॥छ॥ ॥०॥

समवाओ

प्रस्तुत सूत्र का पाठ-सशोधन तीन आदर्शों तथा वृत्ति के आधार पर किया गया है। कुल स्थलो मे पाठ-सशोधन के लिए अन्य ग्रन्थो का भी उपयोग किया गया है। प्रकीर्ण समवाय (सूत्र २३४) मे प्रयुक्त आदर्शों मे 'अस्समेणे' पाठ नही है। यह चतुर्थ चक्रवर्ती के पिता का नाम है। इसके बिना अगले नामो की व्यवस्था विसगत हो जाती है। उल्लिखित सूत्र की सग्रह गाथाओ मे पद्मोत्तर नाम अतिरिक्त है। इसे पाठान्तर रूप मे स्वीकार किया गया है। आवश्यक निर्युक्ति (३६६) मे 'अस्समेणे' पाठ उपलब्ध है। उसके आधार पर 'अस्ससेणे' मूल-पाठ के रूप मे स्वीकृत किया गया है।

प्रकीर्ण समवाय (सूत्र २३०) की सग्रह गाथा मे बलदेव वासुदेव के पिता के नाम है। उक्त गाथा में स्थानाग (६।१६) तथा आवश्यक निर्युक्ति (४११)के आधार पर सशोधन

किया गया है। तीसरे बलदेव-वासुदेव के पिता का नाम रुद्द है, किन्तु समवायाग की हस्तलिखित वृत्ति मे 'रुद्द' के स्थान मे 'सोम' है। वस्तुत 'सोम' के बाद रुद्द' होना चाहिए[1]।

समवाय ३० (सूत्र १, गाथा २६) मे सभी सभी आदर्शों मे 'सज्झायवाय' पाठ मिलता है। वृत्तिकार ने भी उसकी स्वाध्यायवाद —इस रूप मे व्याख्या की है। अर्थ की दृष्टि से यह सगत नही है। दशाश्रुतस्कन्ध (सूत्र २६) मे उक्त गाथा उपलब्ध है। उसमे 'सब्भाय-वाय' के स्थान पर 'सब्भाववाय' पाठ है। दशाश्रुतस्कन्ध के वृत्तिकार ने इसका सस्कृत रूप 'सद्भाववाद' किया है। अर्थ-मीमासा करने पर यह पाठ सगत प्रतीत होता है।[2]

प्राचीन लिपि मे सयुक्त 'झकार' और सयुक्त 'भकार' एक जैसे लिखे जाते थे। इस प्रकार के लिपिहेतुक पाठ-परिवर्तन अनेक स्थानो मे प्राप्त होते हैं।

प्रति परिचय

(क) समवायांग मूलपाठ

यह प्रति जैसलमेर भडार की ताडपत्रीय (फोटोप्रिंट) मदनचन्दजी गोठी, सरदारशहर द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ६४ तथा पृष्ठ १२८ हैं किन्तु २४ वा पत्र नही है। प्रत्येक पृष्ठ मे ४ या ५ पक्तिया हैं तथा प्रत्येक पक्ति मे ११० अक्षर हैं। लिपि स० १४०१।

(ख) समवायांग मूलपाठ (पचपाठी)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त है। बीच मे मूलपाठ एव चारो ओर वृत्ति लिखी हुई है। इसके पत्र १०६ तथा पृष्ठ २१२ हैं। प्रत्येक पृष्ठ मे ६ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति मे ३०,३२ अक्षर हैं। यह प्रति १० इच लम्बी तथा ४$\frac{1}{2}$ इच चौडी है। इसके अन्त मे सवत् दिया हुआ नही है। किन्तु पत्रो की जीर्णता व लिपि के आधार पर यह पन्द्रहवी-सोलहवी शताब्दी के लगभग की है। प्रति के अन्त मे निम्न प्रशस्ति है—
।।छ।। समवाउ चउत्थमग ।।छ।। अकतोपि ग्रथाग्र १६६७ ।।छ।।

(ग) समवायांग मूलपाठ (पंचपाठी)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त है। बीच मे मूलपाठ एव चारो तरफ वृत्ति लिखी हुई है। इसके पत्र ८१ तथा पृष्ठ १६२ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में ५ से १२ पक्तिया है। प्रत्येक पक्ति मे ३२ से ४७ तक अक्षर हैं। यह प्रति १० इच लम्बी तथा ४$\frac{1}{2}$ इच चौडी है। लिपि सवत् १३४५ लिखा है, पर सवत् की लिखावट से कुछ सदिग्ध सा लगता है। फिर भी प्राचीन है। अन्तिम प्रशस्ति मे लिखा है—

---

१ देखें, समवाओ, पइण्णगसमवाओ सू० २३० का पाद-टिप्पण।

२ देखें, समवाओ, समवाय ३०, सू० १, गाथा २६ का दूसरा पाद-टिप्पण।

॥छ॥ भगवती सूत्रं समाप्तं ॥छ॥ संवत् १६६७ ॥छ॥

इस प्रति में पाठ बहुत संक्षिप्त है। अनेक स्थानों पर केवल प्रथम अक्षर ही लिखे गए हैं।

श्रीमदभयदेवसूरिवृत्ति (मुद्रित)—

प्रकाशक—श्रेष्ठी माणिकलाल चुन्नीलाल, कान्तिलाल, चुन्नीलाल—अहमदाबाद।

संपादक—मास्टर नगीनदास, नेमचन्द।

सहयोगानुभूति—

जैन परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएं हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, नयप्रमाणपूर्ण, तटस्थदृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी, तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगमवाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापनकर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसंधान, भाषान्तर, समीक्षात्मक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में हमें आचार्यश्री का सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन कर भार-मुक्त होऊं, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूं।

प्रस्तुत ग्रन्थ के पाठ संपादन में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी का पर्याप्त योग रहा है। मुनि शुभकरणजी इस कार्य में क्वचित् संलग्न रहे हैं। प्रति-शोधन में मुनि दुलहराजजी का पूर्ण योग मिला है। इसका ग्रंथ-परिमाण मुनि मोहनलाल जी (आमेट) ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति में उनके योग का मूल्यांकन करते हुए मैं उन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूं।

आगमविद् और आगम-संपादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचन्दजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

आगम के प्रबध-सपादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया प्रारभ से ही आगम कार्य मे सलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुचाने के लिए ये कृत-सकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकाश समय आगम-सेवा मे लगा रहे हैं। 'अगसुत्ताणि' के इस प्रकाशन मे इन्होंने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है।

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, जैन विश्व भारती के कार्यालय तथा आदर्श साहित्य सघ के कार्यालय के कार्यकर्ताओ ने पाठ-सम्पादन मे प्रयुक्त सामग्री के सयोजन में बडी तत्परता मे कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति मे योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार-पूर्ति मात्र है। वास्तव मे यह हम सबका पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

अणुव्रत-विहार
नई दिल्ली
२५०० वा निर्वाण दिवस

मुनि नथमल

भूमिका

१. आगमों का वर्गीकरण

जैन साहित्य का प्राचीनतम भाग आगम है। समवायाग मे आगम के दो रूप प्राप्त होते हैं—द्वादशाग गणिपिटक[1] और चतुर्दश पूर्व[2]। नन्दी में श्रुत-ज्ञान (आगम) के दो विभाग मिलते हैं—अग-प्रविष्ट और अग-बाह्य[3]। आगम-साहित्य में साधु-साध्वियों के अध्ययन विपयक जितने उल्लेख प्राप्त होते हैं, वे सब अगो और पूर्वों से सबधित हैं। जैसे—

१ सामायिक आदि ग्यारह अगो को पढने वाले—'सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जइ' (अतगड, प्रथम वर्ग)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य गौतम के विपय में प्राप्त है।

'सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जइ' (अतगड, पचम वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि की शिष्या पद्मावती के विपय में प्राप्त है।

'सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जइ' (अतगड, अष्टम वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् महावीर की शिष्या काली के विपय मे प्राप्त है।

'सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जइ' (अतगड, षष्ठ वर्ग १५वा अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् महावीर के शिष्य अतिमुक्तककुमार के विपय में प्राप्त है।

२ बारह अगो को पढने वाले—'बारसगी' (अतगड, चतुर्थ वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य जालीकुमार के विपय में प्राप्त है।

३ चौदह पूर्वो को पढने वाले—चोद्दसपुव्वाइ अहिज्जइ (अतगड, तृतीय वर्ग, नवम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य सुमुखकुमार के विपय में प्राप्त है।

'सामाइयमाइयाइ चोद्दसपुव्वाइ अहिज्जइ' (अतगड, तृतीय वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य अणीयसकुमार के विपय में प्राप्त है।

---

१. समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ८८।
२. वही, समवाय १४, सू० २।
३ नन्दी, सू० ४३।

भगवान् पार्श्व के साढे तीन सौ चतुर्दशपूर्वी मुनि थे[1]।

भगवान् महावीर के तीन सौ चतुर्दशपूर्वी मुनि थे[2]।

समवायाग और अनुयोगद्वार मे अग-प्रविष्ट और अग-बाह्य का विभाग नही है। सर्व प्रथम यह विभाग नन्दी मे मिलता है। अग-बाह्य की रचना अर्वाचीन स्थविरो ने की है। नदी की रचना से पूर्व अनेक अग-बाह्य ग्रन्थ रचे जा चुके थे और वे चतुर्दश-पूर्वी या दस-पूर्वी स्थविरो द्वारा रचे गये थे। इस लिए उन्हे आगम की कोटि मे रखा गया। उसके फलस्वरूप आगम के दो विभाग किए गए—अग-प्रविष्ट और अग-बाह्य। यह विभाग अनुयोगद्वार (वीर-निर्वाण छठी शताब्दी) तक नही हुआ था। यह सबसे पहले नदी (वीर-निर्वाण दसवी शताब्दी) मे हुआ है।

नदी की रचना तक आगम के तीन वर्गीकरण हो जाते है—पूर्व, अग-प्रविष्ट और अग-बाह्य। आज 'अग-प्रविष्ट' और 'अग-बाह्य' उपलब्ध होते हैं, किन्तु पूर्व उपलब्ध नही हैं। उनकी अनुपलब्धि ऐतिहासिक दृष्टि से विमर्शनीय है।

२. पूर्व

जैन परम्परा के अनुसार श्रुत-ज्ञान (शब्द-ज्ञान) का अक्षयकोष 'पूर्व' है। इसके अर्थ और रचना के विषय मे सब एक मत नही हैं। प्राचीन आचार्यों के मतानुसार 'पूर्व' द्वादशागी से पहले रचे गए थे, इसलिए इनका नाम 'पूर्व' रखा गया[3]। आधुनिक विद्वानो का अभिमत यह है कि 'पूर्व' भगवान् पार्श्व की परम्परा की श्रुत-राशि है। यह भगवान् महावीर से पूर्ववर्ती है, इसलिए इसे 'पूर्व' कहा गया है[4]। दोनो अभिमतो मे से किसी को भी मान्य किया जाए, किन्तु इस फलित मे कोई अन्तर नही आता कि पूर्वों की रचना द्वादशागी से पहले हुई थी या द्वादशागी पूर्वों की उत्तरकालीन रचना है।

वर्तमान मे जो द्वादशागी का रूप प्राप्त है, उसमे 'पूर्व' समाए हुए हैं। बारहवा अग दृष्टिवाद है। उसका एक विभाग है—पूर्वगत। चौदह पूर्व इसी 'पूर्वगत' के अन्तर्गत हैं। भगवान् महावीर ने प्रारभ मे पूर्वगत-श्रुत की रचना की थी। इस अभिमत से यह फलित होता है कि चौदह पूर्व और बारहवा अग—ये दोनो भिन्न नही हैं। पूर्वगत-श्रुत बहुत गहन था। सर्वसाधारण के लिए वह

---

१ समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० १४।

२ वही, सू० १२।

३ समवायाग वृत्ति, पत्र १०१।
प्रथम पूर्वं तस्य सर्वप्रवचनात् पूर्वं क्रियमाणत्वात्।

४ नन्दी, मलयगिरि वृत्ति, पत्र २४०
अन्ये तु व्याचक्षते पूर्वं पूर्वगतसूत्रार्थमर्हन् भाषते, गणधरा अपि पूर्वं पूर्वगतसूत्र विरचयन्ति, पश्चादाचारादिकम्।

मुलभ नही था। अगो की रचना अल्पमेधा व्यक्तियो के लिए की गई। जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण ने वताया है कि 'दृष्टिवाद मे समस्त शब्द-ज्ञान का अवतार हो जाता है। फिर भी ग्यारह अगो की रचना अल्पमेधा पुरुषो तथा स्त्रियो के लिए की गई'[1]। ग्यारह अगो को वे ही साधु पढते थे, जिनकी प्रतिभा प्रखर नही होती थी। प्रतिभा सम्पन्न मुनि पूर्वों का अध्ययन करते थे। आगम-विच्छेद के क्रम से भी यही फलित होता है कि ग्यारह अग दृष्टिवाद या पूर्वों से सरल या भिन्न-क्रम मे रहे हैं। दिगम्वर परम्परा के अनुसार वीर-निर्वाण वासठ वर्ष वाद केवली नही रहे। उनके वाद सौ वर्ष तक श्रुत-केवली (चतुर्दश-पूर्वी) रहे। उनके पश्चात् एक सौ तिरासी वर्ष तक दशपूर्वी रहे। उनके पश्चात् दो सौ वीस वर्ष तक ग्यारह अगधर रहे[2]।

उक्त चर्चा मे यह स्पष्ट है कि जव तक आचार आदि अगो की रचना नही हुई थी, तव तक महावीर की श्रुत-राशि 'चौदह पूर्व' या 'दृष्टिवाद' के नाम से अभिहित होती थी और जव आचार आदि ग्यारह अगो की रचना हो गई, तव दृष्टिवाद को वारहवें अग के रूप मे स्थापित किया गया।

यद्यपि वारह अगो को पढने वाले और चौदह पूर्वों को पढने वाले—ये भिन्न-भिन्न उल्लेख मिलते हैं,[3] फिर भी यह नही कहा जा सकता कि चौदह पूर्वों के अध्येता वारह अगो के अध्येता नही थे और वारह अगो के अध्येता चतुर्दश-पूर्वी नही थे। गौतम स्वामी को 'द्वादशागवित्' कहा गया है[4]। वे चतुर्दश-पूर्वी और अगधर दोनो थे। यह कहने का प्रकार-भेद रहा है कि श्रुत-केवली को कही 'द्वादशागवित्' और कही 'चतुर्दश-पूर्वी' कहा गया है।

ग्यारह अग पूर्वों मे उद्धृत या सकलित हैं। इसलिए जो चतुर्दश-पूर्वी होता है, वह स्वाभाविक रूप से द्वादशागवित् होता है। वारहवें अग मे चौदह पूर्व समाविष्ट हैं। इसलिए जो द्वादशागवित् होता है, वह स्वभावत चतुर्दश-पूर्व होता है। अत हम इस निष्कर्प पर पहुँचते हैं कि आगम के प्राचीन वर्गीकरण दो ही हैं—चौदह पूर्व और ग्यारह अग। द्वादशागी का स्वतन्त्र स्थान नही है। यह पूर्वों और अगो का सयुक्त नाम है।

कुछ आधुनिक विद्वानो ने पूर्वों को भगवान् पार्श्वकालीन और अगो को भगवान् महावीरकालीन माना है, पर यह अभिमत सगत नही है। पूर्वों और अगो की परम्परा भगवान् अरिष्टनेमि और भगवान् पार्श्व के युग मे भी रही है। अग अल्पमेधा व्यक्तियो के लिए रचे गए, यह पहले वताया जा चुका है। भगवान् पार्श्व के युग मे सव मुनियो का प्रतिभा-स्तर समान था, यह कैसे

---

१ विशेषावश्यकभाष्य, गाथा ५५४

जइवि य भूतावाए, सव्वस्स वओगयस्स ओयारो।
निज्जूहणा तहावि हु, दुम्मेहे पप्प इत्थी य॥

२ जयधवला, प्रस्तावना पृष्ठ ४६।

३ देखिए—भूमिका का प्रारम्भिक भाग।

४ उत्तराध्ययन, २३।७।

माना जा सकता है ? प्रतिभा का तारतम्य अपने-अपने युग मे सदा रहा है। मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टि से विचार करने पर भी हम इसी विन्दु पर पहुचते हैं कि अगो की अपेक्षा भगवान् पार्श्व के शासन मे भी रही है, इसलिए इस अभिमत की पुष्टि मे कोई साक्ष्य प्राप्त नही है कि भगवान् पार्श्व के युग मे केवल पूर्व ही थे, अग नही। सामान्य ज्ञान से यही तथ्य निष्पन्न होता है कि भगवान् महावीर के शासन मे पूर्वों और अगो का युग की भाव, भाषा, शैली और अपेक्षा के अनुसार नवीनीकरण हुआ। 'पूर्व' पार्श्व की परम्परा से लिए गए और 'अग' महावीर की परम्परा मे रचे गए, इस अभिमत के समर्थन मे सम्भवत कल्पना ही प्रधान रही है।

३ अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य

भगवान् महावीर के अस्तित्व-काल मे गौतम आदि गणधरो ने पूर्वों और अगो की रचना की, यह सर्व-विश्रुत है। क्या अन्य मुनियो ने आगम ग्रन्थो की रचना नही की। यह प्रश्न सहज ही उठता है। भगवान् महावीर के चौदह हजार शिष्य थे[1]। उनमे सात सौ केवली थे, चार सौ वादी थे। उन्होंने ग्रन्थो की रचना नही की, ऐसा सम्भव नही लगता। नदी मे वताया गया है कि भगवान् महावीर के शिष्यो ने चौदह हजार प्रकीर्णक वनाए थे[2]। ये पूर्वों और अगो से अतिरिक्त थे। उस समय अग-प्रविष्ट और अग-वाह्य ऐसा वर्गीकरण हुआ, यह प्रमाणित करने के लिए कोई साक्ष्य प्राप्त नही है। भगवान् महावीर के निर्वाण के पश्चात् अर्वाचीन आचार्यों ने ग्रथ रचे तव सभव है उन्हें आगम की कोटि मे रखने या न रखने की चर्चा चली और उनके प्रामाण्य और अप्रामाण्य का प्रश्न भी उठा। चर्चा के वाद चतुर्दश-पूर्वी और दश-पूर्वी स्थविरो द्वारा रचित ग्रन्थो को आगम की कोटि मे रखने का निर्णय हुआ किन्तु उन्हे स्वत प्रमाण नही माना गया। उनका प्रामाण्य परत था। वे द्वादशागी मे अविरुद्ध है, इस कसौटी से कसकर उन्हें आगम की सज्ञा दी गई। उनका परत प्रामाण्य था, इसीलिए उन्हे अग-प्रविष्ट की कोटि से भिन्न रखने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इस स्थिति के सन्दर्भ मे आगम की अग-वाह्य कोटि का उद्भव हुआ।

जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण ने अग-प्रविष्ट और अग-वाह्य के भेद-निरूपण मे तीन हेतु प्रस्तुत किए हैं—

१ जो गणधर कृत होता है,

२ जो गणधर द्वारा प्रश्न किए जाने पर तीर्थंकर द्वारा प्रतिपादित होता है,

---

१ समवाओ, समवाय १४, सू० ४।

२ नन्दी, सू० ७८
चोद्दसपइन्नगसहस्साणि भगवओ वद्धमाणस्स।

३ जो ध्रुव—शाश्वत सत्यो से सम्बन्धित होता है, सुदीर्घकालीन होता है—वही श्रुत अग-प्रविष्ट होता है[1]।

इसके विपरीत।

१ जो स्थविर-कृत होता है,

२ जो प्रश्न पूछे बिना तीर्थंकर द्वारा प्रतिपादित होता है,

३ जो चल होता है, तात्कालिक या सामयिक होता है—उस श्रुत का नाम अग-बाह्य है।

अग-प्रविष्ट और अग-बाह्य मे भेद करने का मुख्य हेतु वक्ता का भेद है[2]। जिस आगम के वक्ता भगवान् महावीर है और जिसके सकलयिता गणधर है, वह श्रुत-पुरुष के मूल अगो के रूप मे स्वीकृत होता है इसलिए उसे अग-प्रविष्ट कहा गया है। सर्वार्थसिद्धि के अनुसार वक्ता तीन प्रकार के होते है—१ तीर्थंकर २ श्रुत-केवली (चतुर्दश-पूर्वी) और ३ आरातीय[3]। आरातीय आचार्यो के द्वारा रचित आगम ही अग-बाह्य माने गए है। आचार्य अकलक के शब्दो मे आरातीय आचार्य-कृत आगम अग-प्रतिपादित अर्थ से प्रतिबिम्बित होते है इसीलिए वे अग-बाह्य कहलाते है[4]। अग-बाह्य आगम श्रुत-पुरुष के प्रत्यग या उपाग-स्थानीय है।

४. अंग

द्वादशागी मे सगर्भित बारह आगमो को अग कहा गया है। अग शब्द सस्कृत और प्राकृत दोनो भाषाओ के साहित्य में प्राप्त होता है। वैदिक साहित्य मे वेदाध्ययन के सहायक-ग्रन्थो को अग कहा गया है। उनकी सख्या छह है—

१ शिक्षा—शब्दो के उच्चारण-विधान का प्रतिपादक ग्रन्थ।

२ कल्प—वेद-विहित कर्मो का क्रमपूर्वक व्यवस्थित प्रतिपादन करने वाला शास्त्र।

३ व्याकरण—पद-स्वरूप और पदार्थ-निश्चय का निमित्त-शास्त्र।

४ निरुक्त—पदो की व्युत्पत्ति का निरूपण करने वाला शास्त्र।

५ छन्द—मन्त्रोच्चारण के लिए स्वर-विज्ञान का प्रतिपादक-शास्त्र।

६ ज्योतिष—यज्ञ-याग आदि कार्यो के लिए समय-शुद्धि का प्रतिपादक शास्त्र।

---

१ विशेषावश्यकभाष्य, गाथा ५५२

गणहर थेरकय वा, आएसा मुक्क - वागरणओ वा।
धुव - चल विसेसओ वा, अगाणगेसु नाणत्त॥

२ तत्त्वार्थभाष्य, १।२०

वक्तृ-विशेषाद् द्वैविध्यम्।

३ सर्वार्थसिद्धि, १।२०

त्रयो वक्तार —सर्वज्ञस्तीर्थकर, इतरो वा श्रुतकेवली आरातीयश्चेति।

४ तत्त्वार्थ राजवार्तिक, १।२०

आरातीयाचार्यकृतागार्थं प्रत्यासन्नरूपमगबाह्यम्।

वैदिक साहित्य मे वेद-पुरुष की कल्पना की गयी है। उसके अनुसार शिक्षा वेद की नासिका है, कल्प हाथ, व्याकरण मुख, निरुक्त श्रोत्र, छन्द पैर और ज्योतिष नेत्र है। इसीलिए ये वेद-शरीर के अग कहलाते है[1]।

पालि-साहित्य मे भी, 'अग' शब्द का उपयोग किया गया है। एक स्थान मे बुद्धवचनो को नवाग और दूसरे स्थान मे द्वादशाग कहा गया है।

नवांग—

१ सुत्त—भगवान् बुद्ध के गद्यमय उपदेश।
२ गेय्य—गद्य-पद्य मिश्रित अश।
३ वेय्याकरण—व्याख्यापरक ग्रन्थ।
४ गाथा—पद्य मे रचित ग्रन्थ।
५ उदान—बुद्ध के मुख से निकले हुए भावमय प्रीति-उद्गार।
६ इतिवुत्तक—छोटे-छोटे व्याख्यान, जिनका प्रारम्भ 'बुद्ध ने ऐसा कहा' से होता है।
७ जातक—बुद्ध की पूर्व-जन्म-सम्बन्धी कथाए।
८ अब्भुतधम्म—अद्भुत वस्तुओ या योगज-विभूतियो का निरूपण करने वाले ग्रन्थ।
९ वेदल्ल—वे उपदेश जो प्रश्नोत्तर की शैली मे लिखे गए है[2]।

द्वादशांग—

१ सूत्र, २ गेय, ३ व्याकरण, ४ गाथा, ५ उदान, ६ अवदान ७ इतिवृत्तक, ८ निदान, ९ वैपुल्य, १० जातक, ११ उपदेश-धर्म और १२ अद्भुत-धर्म[3]।

जैनागम बारह अगो मे विभक्त है—१ आचार, २ सूत्रकृत, ३ स्थान, ४ समवाय, ५ भगवती, ६ ज्ञाताधर्मकथा, ७ उपासकदशा, ८ अन्तकृतदशा, ९ अनुत्तरोपपातिकदशा, १० प्रश्न-व्याकरण, ११ विपाक और १२ दृष्टिवाद।

'अग' शब्द का प्रयोग भारतीय दर्शन की तीनो प्रमुख धाराओ मे हुआ है। वैदिक और बौद्ध साहित्य मे मुख्य ग्रन्थ वेद और पिटक है। उनके साथ 'अग' शब्द का कोई योग नही है। जैन साहित्य मे मुख्य ग्रन्थो का वर्गीकरण गणिपिटक है। उसके साथ 'अग' शब्द का योग हुआ है। गणिपिटक के बारह अग है—'दुवालसगे गणिपिडगे'[4]।

---

१ पाणिनीयशिक्षा, ४१।४२।
२ सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र, पृ० ३४
३ बौद्ध सस्कृत ग्रन्थ 'अभिसमयालकार' की टीका' पृ० ३५

सूत्र गेय व्याकरणं, गाथोदानावदानकम्।
इतिवृत्तकं निदानं, वैपुल्य च सजातकम्।
उपदेशाद्भुतौ धर्मो, द्वादशागमिदं वचः॥

४ समवाओ पइण्णगसमवाओ, सूत्र ८८।

जैन-परम्परा मे श्रुत-पुरुष की कल्पना भी प्राप्त होती है। आचाग आदि बारह आगम श्रुत-पुरुष के अगस्थानीय हैं। सभवत इसीलिए उन्हे बारह अग कहा गया[1]। इस प्रकार द्वादशाग 'गणिपिटक' और 'श्रुत-पुरुष'—दोनो का विशेषण बनता है।

आयारो

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशागी का पहला अग है। इसमें आचार का वर्णन है, इसलिए इसका नाम 'आयारो' (आचार) है। इसके दो श्रुतस्कन्ध हैं—आयरो और आयारचूला।

विषय-वस्तु

समवायाग और नन्दी मे आचाराग का विवरण प्रस्तुत किया गया है। उसके अनुसार प्रस्तुत सूत्र आचार, गोचर, विनय, वैनयिक (विनय-फल), स्थान (उत्थितासन, निषण्णासन, और शयितासन), गमन, चक्रमण, भोजन आदि की मात्रा, स्वाध्याय आदि मे योग-नियुजन, भाषा, समिति, गुप्ति, शय्या, उपधि, भक्त-पान, उद्गम-उत्पादन, एषणा आदि की विशुद्धि, शुद्धाशुद्ध-ग्रहण का विवेक, व्रत, नियम, तप, उपधान आदि का प्रतिपादक है[2]।

आचार्य उमास्वाति ने आचाराग के प्रत्येक अध्ययन का विषय सक्षेप मे प्रतिपादित किया है। वह क्रमश इस प्रकार है[3]—

१ षड्जीवकाय यतना।
२ लौकिक सतान का गौरव-त्याग।
३ शीत-उष्ण आदि परीषहो पर विजय
४ अप्रकम्पनीय सम्यक्त्व।
५ ससार से उद्वेग।
६ कर्मों को क्षीण करने का उपाय।
७ वैयावृत्य का उद्योग।
८ तपस्या की विधि।
९ स्त्री-सग-त्याग।

---

१ मूलाराधना, ४।५९९ विजयोदया
श्रुत पुरुष मुखचरणाद्यगस्थानीयत्वादगशब्देनोच्यते।
२ (क) समवाओ, पइण्णग समवाओ, सू० ८९।
(ख) नदी, सू० ८०।
३ प्रशमरति प्रकरण, ११४-११७।

१० विधि-पूर्वक भिक्षा का ग्रहण ।
११ स्त्री, पशु, क्लीव आदि से रहित शय्या ।
१२ गति-शुद्धि ।
१३ भाषा-शुद्धि ।
१४ वस्त्र की एषणा-पद्धति ।
१५ पात्र की एषणा-पद्धति ।
१६ अवग्रह-शुद्धि ।
१७ स्थान-शुद्धि ।
१८ निषद्या-शुद्धि ।
१९ व्युत्सर्ग-शुद्धि ।
२० शब्दासक्ति-परित्याग ।
२१ रूपासक्ति-परित्याग ।
२२ परक्रिया-वर्जन ।
२३ अन्योन्यक्रिया-वर्जन ।
२४ पच महाव्रतो की दृढता ।
२५ सर्वसगो से विमुक्तता ।

निर्युक्तिकार ने नव ब्रह्मचर्य अध्ययनो के विषय इस प्रकार वतलाए हैं—

१ सत्थपरिण्णा—जीव सयम ।
२ लोगविजय—वध और मुक्ति का प्रवोध ।
३ सीओसणिज्ज—सुख-दु ख-तितिक्षा ।
४ सम्मत्त—सम्यक्-दृष्टिकोण ।
५ लोगसार—असार का परित्याग और लोक मे सारभूत रत्नत्रयी की आराधना ।
६ धुय—अनासक्ति ।
७ महापरिण्णा—मोह से उत्पन्न परीषहो और उपसर्गों का सम्यक् सहन ।
८ विमोक्ख—निर्याण (अतक्रिया) की सम्यक्-आराधना ।
९ उवहाणसुय—भगवान् महावीर द्वारा आचरित आचार का प्रतिपादन[1] ।

---

१ आचारांग निर्युक्ति, गाथा ३३, ३४
जिअसजमी अ लोगो जह वज्झइ जह य त पजहियव्व ।
सुहदुक्खतितिक्खाविय, सम्मत्त लोगसारो य ॥
निस्सगया य छट्ठे मोहसमुत्था परीसहुवसग्गा ।
निज्जाण अट्ठमए नवमे य जिणेण एवति ॥

आचार्य अकलक के अनुसार आचाराग का समग्र विषय चर्या-विधान[1] तथा अपराजित सूरि के अनुसार रत्नत्रयी के आचरण का प्रतिपादन है[2]।

जैन-परम्परा मे 'आचार' शब्द व्यापक अर्थ मे व्यवहृत होता है। आचाराग की व्याख्या के प्रसग मे आचार के पाच प्रकार बतलाए गए हैं—१ ज्ञानाचार, २ दर्शनाचार, ३ चरित्राचार, ४ तपाचार और ५ वीर्याचार[3]। प्रस्तुत सूत्र मे इन पाचो आचारो का निरूपण है

सूयगडो

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशागी का दूसरा अग है। इसका नाम 'सूयगडो' है। समवाय, नदी और अनुयोगद्वार—तीनो आगमो मे यही नाम उपलब्ध होता है[4]। निर्युक्तिकार भद्रबाहुस्वामी ने प्रस्तुत आगम के गुण-निष्पन्न नाम तीन बतलाए हैं[5]—

१ सूतगड—सूतकृत

२ सुत्तकड—सूत्रकृत

३ सूयगड—सूचाकृत

प्रस्तुत आगम मौलिक दृष्टि मे भगवान् महावीर से सूत (उत्पन्न) है तथा यह ग्रन्थरूप मे गणधर के द्वारा कृत है, इसलिए इसका नाम 'सूतकृत' है।

इसमे सूत्र के अनुसार तत्त्वबोध किया जाता है, इसलिए इसका नाम 'सूत्रकृत' है।

इसमे स्व और पर समय की सूचना कृत है, इसलिए इसका नाम 'सूचाकृत' है।

वस्तुत सूत, सुत्त और सूय—ये तीनो सूत्र के ही प्राकृत रूप हैं। आकार भेद होने के कारण तीन गुणात्मक नामो की परिकल्पना की गई है।

---

१ तत्त्वार्थ राजवार्तिक, १।२०
आचारे चर्याविधानं शुद्ध्यष्टकपंचसमितित्रिगुप्तिविकल्पं कथ्यते।

२ मूलाराधना, आश्वास २, श्लोक १३०, विजयोदया
रत्नत्रयाचरणनिरूपणपरतया प्रथममगमाचारशब्देनोच्यते।

३ समवाओ, पइण्णग समवाओ, सू० ८९
से समासओ पचविहे प० त—णाणायारे दसणायारे चरित्तायारे तवायारे वीरियायारे।

४ (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ८८
(ख) नदी, सू० ८०।
(ग) अणुओगदाराइ, सू० ५०।

५ सूत्रकृतागनिर्युक्ति, गाथा २
सूतगड सुत्तकड सूयगड चेव गोण्णाइ।

सभी अग मौलिक रूप मे भगवान् महावीर द्वारा प्रस्तुत और गणधर द्वारा ग्रन्थरूप मे प्रणीत हैं। फिर केवल प्रस्तुत आगम का ही सूत्रकृत नाम क्यो ? इसी प्रकार दूसरा नाम भी सभी अगो के लिए सामान्य है। प्रस्तुत आगम के नाम का अर्थस्पर्शी आधार तीसरा है। क्योकि प्रस्तुत आगम मे स्वसमय और परसमय की तुलनात्मक सूत्रता के सन्दर्भ मे आचार की प्रस्थापना की गई है। इसलिए इसका सबंध सूचना से है। समवाय और नदी मे यह स्पष्टतया उल्लिखित है—'सूयगडे ण ससमयासूइज्जति परसमया सूइज्जति ससमय-परसमया सूइज्जति'[1]।

जो सूचक होता है उसे सूत्र कहा जाता है। प्रस्तुत आगम की पृष्ठभूमि मे सूचनात्मक तत्त्व की प्रधानता है, इसलिए इसका नाम सूत्रकृत है।

सूत्रकृत के नाम के सम्बन्ध मे एक अनुमान और किया जा सकता है। वह वास्तविकता के निकट प्रतीत होता है। दृष्टिवाद के पाच प्रकार हैं—परिकर्म, सूत्र, पूर्वानुयोग, पूर्वगत और चूलिका।

आचार्य वीरसेन के अनुसार सूत्र मे अन्य दार्शनिको का वर्णन है[2]। प्रस्तुत आगम की रचना उसी के आधार पर की गई इसलिए इसका सूत्रकृत नाम रखा गया। सूत्रकृत शब्द के अन्य व्युत्पत्तिक अर्थो की अपेक्षा यह अर्थ अधिक सगत प्रतीत होता है। 'सुत्तगड' और बौद्धो के सुत्तनिपात' मे नामसाम्य प्रतीत होता है।

अंग और अनुयोग—

द्वादशागी मे प्रस्तुत आगम का स्थान दूसरा है। अनुयोग चार हैं –

१ चरणकरणानुयोग,

२ धर्मकथानुयोग,

३ गणितानुयोग।

४ द्रव्यानुयोग।

चूर्णिकार के अनुसार प्रस्तुत आगम चरणकरणानुयोग (आचार शास्त्र) है[3]। शीलाकसूरि ने इसे द्रव्यानुयोग (द्रव्य शास्त्र) की कोटि मे रखा है। उनके अनुसार आचाराग प्रधानतया चरण-करणानुयोग तथा सूत्रकृताग प्रधानतया द्रव्यानुयोग है[4]।

---

१ (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ९० ।
(ख) नदी, सू० ८२।

२ कसायपाहुड, भाग १; पृ० १३४।

३ सूत्रकृतागचूर्णि पृ० ५।
इह चरणाणुओगे ण अधिकारो।

४ सूत्रकृतॉग वृत्ति, पत्र १
तत्राचाराङ्गे चरणकरणप्राधान्येन व्याख्यातम्, अधुना अवसरायात द्रव्यप्राधान्येयसूत्रकृताख्यं द्वितीयमङ्ग व्याख्यातुमारभ्यते।

समवाय तथा नन्दी मे द्वादशागी का विवरण दिया हुआ है। वहां सभी अगो के विवरण के अत मे एव चरणकरणपरूवणता' पाठ मिलता है। अभयदेवसूरी ने चरण' का अर्थ श्रमण धर्म और 'करण' का अर्थ पिण्डविशुद्धि, समिति आदि किया है[1]।

चूर्णिकार ने कालिकश्रुत को चरणकरणानुयोग तथा दृष्टिवादको द्रव्यानुयोग माना है।[2]

द्वादशागी मे मुख्यत द्रव्यशास्त्र दृष्टिवाद है। शेष अगो मे द्रव्य का प्रतिपादन गौण है। द्रव्यशास्त्र मे भी गौणरूप मे आचार का प्रतिपादन हुआ है। चूर्णिकार ने मुख्यता की दृष्टि से प्रस्तुत आगम को आचार शास्त्र माना है और वह उचित भी है। वृत्तिकार ने इसमे प्राप्त द्रव्य विषयक प्रतिपादन को मुख्य मानकर इसे द्रव्यशास्त्र कहा है। इन दोनो वर्गीकरणो मे सापेक्ष दृष्टिभेद है।

ठाणं

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशागी का तीसरा अग है। इसमे सख्या-क्रम से जीव, पुद्गल आदि की स्थापना की गई है इसलिए इसका नाम ठाण है।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम मे 'स्वसमय' (अर्हत् का दर्शन), 'परसमय' तथा स्वसमय और परसमय—दोनो की स्थापना की गई है। जीव और अजीव, लोक और अलोक की स्थापना की गई है।[3] इसमे सग्रह नय की दृष्टि से जीव की एकता और व्यवहार नय की दृष्टि से उसकी भिन्नता प्रतिपादित है। सग्रह नय के अनुसार चैतन्य की दृष्टि से जीव एक है। व्यवहार नय के दृष्टिकोण से प्रत्येक जीव विभक्त होता है, जैसे—ज्ञान और दर्शन की दृष्टि से वह दो भागो मे विभक्त है। कर्मचेतना, कर्मफल चेतना और ज्ञान चेतना की दृष्टि से अथवा ध्रौव्य, उत्पाद और

---

१ समवायांग वृत्ति, पत्र १०२ –

चरणम्—व्रतश्रमणधर्मसयमाद्यनेकविधम् ।

करणम्—पिण्डविशुद्धिसमित्याद्यनेकविधम् ।

२ सूत्रकृतांगचूर्णि, पृ० ५ ।

कालियसुय चरणकरणाणुयोगो, इसिभासिओत्तरज्झयणाणि धम्माणुयोगो, सूरपण्णत्तादि गणितानुयोगो, दिट्ठवावो दव्वाणुजोगोत्ति ।

३ समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ६१॥

विनाश की दृष्टि से वह तीन भागो मे विभक्त है। गति-चतुष्टय मे परिभ्रमण करने के कारण वह चार भागो मे विभक्त है। पारिणामिकआदि पाच भावो की दृष्टि से वह पाच भागो मे विभक्त है। भवान्तर मे सकमण के समय पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, उर्ध्व और अध —इन छह दिशाओ मे गमन करने के कारण वह छह भागो मे विभक्त है। स्यादस्ति, स्याद्नास्ति की सप्तभगी की दृष्टि से वह सात भागो मे विभक्त है। आठ कर्मों की दृष्टि से वह आठ भागों मे विभक्त है। नौ पदार्थों मे परिणमन करने के कारण वह नौ भागो मे विभक्त है। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, प्रत्येक वनस्पतिकायिक, साधारण वनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रियजाति, त्रीन्द्रियजाति, चतुरिन्द्रियजाति और पचेन्द्रियजाति की दृष्टि से वह दस भागो मे विभक्त है।[1] इसी प्रकार प्रस्तुत आगम पुद्गल आदि के एकत्व तथा दो से दस तक के पर्यायो का वर्णन करता है। पर्यायो की दृष्टि से एक तत्त्व अनन्त भागो मे विभक्त हो जाता है और द्रव्य की दृष्टि से वे अनन्त भाग एक तत्त्व मे परिणत हो जाते हैं। प्रस्तुत आगम मे इस अभेद और भेद की व्याख्या उपलब्ध है।

समवाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशागी का चौथा अग है। इसका नाम समवाओ है। इसमे जीव-अजीव आदि पदार्थों का परिच्छेद या समवतार है, इसलिए इसका नाम समवाओ है[2]। दिगम्बर साहित्य के अनुसार इसमें जीव आदि पदार्थों का सादृश्य-सामान्य के द्वारा निर्णय किया गया है, इसलिए इसका नाम समवाओ है[3]।

समवाओ में द्वादशागी का वर्णन है। यह द्वादशागी का चौथा अग है, इसलिए इसमें इसका विवरण भी प्राप्त है।

द्वादशागी का क्रम-प्राप्त विवेचन नन्दी सूत्र में है। उसके अनुसार समवाओ की विषय-सूची इस प्रकार है—

१ जीव-अजीव, लोक-अलोक और स्वसमय-परसमय का समवतार।

२ एक से सौ तक की सख्या का विकास।

---

१ कसायपाहुड भाग पृ० १२३

२ समवायांग वृत्ति, पत्र १

समिति—सम्यक् भवेत्याधिक्येन भयनमय—परिच्छेदो जीवाजीवादिविविधपदार्थसार्थस्य यस्मिन्नसौ समवाय, समवयन्ति वा—समवसरन्ति समिलन्ति नानाविधा आत्मादयो भावा अभिधेयतया यस्मिन्नसौ समवाय इति।

३ गोमटसार, जीवकाण्ड, जीवप्रबोधिनी टीका, गाथा ३५६

"सं—सग्रहेण सादृश्यसामान्येन भवेयंते ज्ञायन्ते जीवादिपदार्था द्रव्यकालभावनाश्रित्य भस्मिन्निति समवायाङ्गम्।"

३ द्वादशाग गणिपिटक का वणन[1] ।

ममवायाग के अनुसार समवाओ की विषय-सूची इस प्रकार है[2]—

१ जीव-अजीव, लोक-अलोक और स्वसमय-परसमय का समवतार ।

२ एक से सौ तक की संख्या का विकास ।

३ द्वादशाग-गणिपिटक का वणन ।

४ आहार	१४ योग
५ उच्छ्वास	१५ इन्द्रिय
६ लेश्या	१६ कषाय
७ आवास	१७ योनि
८ उपपात	१८ कुलकर
९ च्यवन	१९ तीर्थंकर
१० अवगाह	२० गणधर
११ वेदना	२१ चक्रवर्ती
१२ विधान	२२ बलदेव-वासुदेव ।
१३ उपयोग	

दोनो विषय-सूचियो का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि समवायाग की नदि- त विषय-सूची सक्षिप्त है और समवाओ-गत विषय-सूची विस्तृत । विषय-सूची के आधार पर प्रस्तुत सूत्र का आकार भी छोटा और बडा हो जाता है ।

दोनो विवरणो मे 'सौ तक एकोत्तरिका वृद्धि होती है' इसका उल्लेख है । अनेकोत्तरिका वृद्धि का दोनो में उल्लेख नही है । नन्दीचूर्णी, हारिभद्रीयावृत्ति तथा मलयगिरीयावृत्ति—इन तीनो में अनेकोत्तरिका वृद्धि का कोई उल्लेख नही है । समवायाग की वृत्ति में अभयदेवसूरि ने अनेको-त्तरिका वृद्धि की चर्चा की है । उनके अनुसार सौ तक एकोत्तरिका वृद्धि होती है और उसके पश्चात् अनेकोत्तरिका वृद्धि होती है[3] ।

वृत्तिकार का यह उल्लेख समवायाग के विवरण के आधार पर नही, किन्तु उपलब्ध पाठ के आधार पर है—ऐसा प्रतीत होता है ।

---

१ नन्दी, सू० ८३

से किं त समवाए ? समवाए ण जीवा समासिज्जति, अजीवा समासिज्जति जीवाजीवा समासिज्जति । ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमय-परसमए समासिज्जइ । लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ, लोयालोए समासिज्जइ । समवाएण एगाइयाणं एगुत्तरियाण ठाणसय-विवड्ढियाण भावाण परूवणा आघविज्जइ, दुवालसविहस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समासिज्जइ ।

२ समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ९२ ।

३ समवायाग, वृत्ति, पत्र १०५

'च शब्दस्य चान्यत्र सम्बन्धादेकोत्तरिका अनेकोत्तरिका च, तत्र शत यावदेकोत्तरिका परतोऽनेकोत्तरिकेति ।'

दोनो विवरणो की समीक्षा करने पर दो प्रश्न उपस्थित होते हैं—

१ नन्दी में समवायाग का जो विवरण है, उससे उपलब्ध समवायाग क्या भिन्न नही है ?

२ क्या उपलब्ध समवायाग देवर्धिगणी की वाचना का है ? यदि है तो समवायाग के दोनो विवरणो मे इतना अन्तर क्यो ?

प्रथम प्रश्न के समाधान मे यह कहा जा सकता है कि नन्दीगत समवायाग-विवरण के अनुसार समवायाग सूत्र का अन्तिमविषय द्वादशागी के आगे अनेक विषय प्रतिपादित हैं। इससे ज्ञात होता है कि समवायाग का वर्तमान आकार नन्दीगत समवायाग-विवरण से भिन्न है।

दूसरे प्रश्न का निश्चयात्मक उत्तर देना कठिन है, फिर भी इतना कहा जा सकता है कि आगमो की अनेक वाचनाए रही हैं। इसीलिए प्रत्येक अग के विवरण मे अनेक वाचनाओ (परित्ता वायणा) का उल्लेख किया गया है। अभयदेवसूरि ने समवायाग की वृहद्-वाचना का उल्लेख किया है[1]। इससे अनुमान किया जा सकता है कि नन्दी मे लघु वाचना वाले समवायाग का विवरण है।

अभयदेवसूरि को प्रस्तुत-सूत्र के वाचनान्तर प्राप्त थे, ऐसा उनकी वृत्ति से ज्ञात होता है[2]।
समवायाग परिवर्धित आकार के विषय मे दो अनुमान किये जा सकते है—

१ प्रस्तुत सूत्र देवर्धिगणी की वाचना से भिन्न वाचना का है।

२ अथवा द्वादशागी के उत्तरवर्ती अश देवर्धिगणी के पश्चात् इसमे जोडे गए हैं।

यदि प्रस्तुत सूत्र भिन्न वाचना का होता तो इस विषय मे कोई अनुश्रुति मिल जाती। ज्योतिष्करण्ड माथुरी वाचना का है—यह अनुश्रुति वरावर चलती आ रही है। उपलब्ध समवायाग भी यदि माथुरी वाचना का होता तो उस विषय की कोई अनुश्रुति मिल जाती।

प्रथम अनुमान की पुष्टि की सभावना कम होने पर दूसरे अनुमान की सभावना वढ जाती है। किन्तु भगवती तथा स्थानाग से दूसरे अनुमान का भी निरसन हो जाता है। भगवती मे कुलकर, तीर्थंकर आदि के पूरे विवरण के लिए समवायाग के अन्तिम भाग को देखने की सूचना दी गई है[3]। इसी प्रकार स्थानाग मे भी वलदेव वासुदेव के पूरे विवरण के लिए समवायाग के अन्तिम भाग को देखने की सूचना दी गई है[4]। इससे ज्ञात होता है कि परिशिष्ट-भाग देवर्धिगणी के समय मे ही जोडा गया था।

---

१ (क) समवायांग वृत्ति, पत्र ५८ वृहद्वाचनायामनन्तरोक्तमतिशयद्वय नाधीयते।
(ख) वही, पत्र ५६ वृहद्वाचनायामिदमन्यदतिशयद्वयमधीयते।

२ समवायाग वृत्ति, पत्र १४४ वाचनान्तरे तु पर्युपणाकल्पोक्तक्रमेणेत्यभिहितम

३ भगवई शतक ५, उद्देशक ५।

४ ठाण ६।१६,२०।

एक आगम के लिए एक सकलनकार के द्वारा दो प्रकार के विवरण (समवायाग तथा नदी मे) दिए गए—यह विचित्र बात है।

माथुरी और वल्लभी—ये दो मुख्य वाचनाए थी। गौण वाचनाए अनेक थी। इसीलिए अनेक वाचनान्तर मिलते हैं। ये वाचनान्तर सभवत व्याख्याश या परिशिष्ट जोडने से हो जाते। समवायाग मे द्वादशागी का उत्तरवर्ती भाग उसका परिशिष्ट भाग है—ऐसी कल्पना की जा सकती है। परिशिष्ट का विवरण समवायाग के विवरण मे परिवर्धित किया गया, इसलिए उसकी विषय-सूची नन्दीगत समवायाग की विषय-सूची से लम्बी हो गई। परिशिष्ट भाग मे प्रज्ञापना के ग्यारह पदो का सक्षेप है, ये किस हेतु से यहा जोडे गए, यह अन्वेषण का विषय है।

कार्य-सपूर्ति

प्रस्तुत आगमो के पाठ-सशोधन मे अनेक मुनियो का योग रहा है। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

इसके सम्पादन का बहुत कुछ श्रेय शिष्य मुनि नयमल को है, क्योंकि इस कार्य मे अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। अन्यथा यह गुरुतर कार्य बडा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलत योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्रहस्य पकड़ने मे इनकी मेघा काफी पैनी हो गई है। विनय-शीलता, श्रम-परायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव ने इनकी प्रगति मे बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति मे क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्त्तव्य-परता ने मुझे बहुत सतोष दिया है।

मैंने अपने सघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियो के बल-बूते पर ही आगम के इस गुरुतर कार्य को उठाया है। अब मुझे विश्वास हो गया है कि अपने शिष्य साधु-साध्वियो के निस्वार्थ, विनीत एव समर्पणात्मक सहयोग से इस वृहत् कार्य को असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकूंगा।

भगवान् महावीर की पचीसवी निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उनकी वाणी को जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है।

अणुव्रत विहार, नई दिल्ली-१
२५००वा निर्वाण दिवस

आचार्य तुलसी

Editorial

Ayaro

The text of the Āćārānga, adopted by us, does not depend on one specimen only. We have adopted it on the review with reference to the specimens in use, the Ćūrṇi and the Vṛitti The three sūtras (27-29) in the second 'Uddeśaka' of the first Adhyayana of the 'Āyāro' are found in all the other five Uddeśakas also In the specimens used in the redemption of the text as well as in the Āćārānga Vṛitti they are not found In the Āćārānga Ćurṇi, commencing from the Sūtrā 'lajjamāṇā puḍhopasa' (Āyāro, Sū 16, page 4) to the Sūtra 'Appege Sampamārae, Appege Uddawae' (Āyāro, Sū 29, page 6), it is considered as 'Dhruvakanḍikā' (the one and the same text)[1]

On the basis of the indications found in the Ćūrṇi, we have adopted the three Sūtras in the second Uddeśaka in the rest five Uddeśakas

In place of 'Kumbhārāyataṇamsi wā, in the Ćūrṇi[2] of the second Uddeśaka (Sū 21) of the eighth Adhyayana, many a word is found, e g 'uwattanagihe wā, gāmdeulie wā, kammagārasālāe wā, tantuwāyagasālāe wā, lohagārasālāe wā' The Ćūrṇikāra further writes—'Jaćiyāo Sālā Sawwāo māṇiyawwāo'[3]

Here it appears that the word 'Kumbhārāyataṇamsi wā' was added with many other words meaning 'Śālā' or house but, in the course of time due to the faulty scribing, all the other words were left out It is not possible to decide the text-system on the basis of the Ćūrni only. This is why it has not been included in the text.

---

1 See—Ayāro, page 8, footnote no 2, page 11, footnote no 2, page 14, footnote no 1, page 16, footnote no 3, page 19, footnote no 4

2. Acaranga Curni, page 260–261

3 Acaranga Curni, page 261,

We have completed the abridged text, too The tradition to abridge the text was in vouge due to learning of the Śruta by heart and making the scribing easy Pandit Bećar Das Joshi had written to Āćarya Tulsi, throwing light on this topic in an article, on 8th December 1966 He observes, "The traditional Jain Śramanas considered the tendency to write and get written as sinful activities They, nevertheless, adopted this path as an acception to safe-guard the scriptures The less writing, the better Taking this they, surely, tried to search out the way to reduce the sinful activity to the least for the safeguard of the scriptures In the search of this path they found two novel words as 'Wannao' and 'Jāwa' With the help of these two words, they could abridge thousands of Ślokas and hundreds of sentences and their beginning was shortened as well as no deficiency occured in understanding the meaning of the scripture"

Three reasons—the system to learn the Śruta by heart, convenience by the script and the intention to write briefly, are probable to cause the abridgement of the text It has undoubtly, caused no deficiency in the meaning, but it has marred the charm of the text The difficulties of the reader have also increased The Munis, having the whole Āgama literature learnt by heart, can make out the antecedents and precedents referred to by the words 'Jāwa' and 'Wannaga' but the class of Munis learning with the help of the manuscripts cannot do so The text, having the references of 'Jāwa' and 'Wannaga', has not proved to be much beneficial to them We, too have been experiencing this difficulty apparently To solve this difficulty and bring back the beauty of the text Āćārya Tulsi, our Vāćanā-head, desired that the abridced text be recompleted We have accordingly, completed the abridged text in most places To indicate that 'dot-marks' have been given In the first and the second appendices, the tables to point out the places of completion in the 'Āyāro' and the 'Āyāra ćūla' have been added

According to Bećara Das Joshi, the text-abridgement was done by Devardhigani Kśamāśramana He writes—"Devardhigaṇi Kśamāsramana, while reducing the Āgamas in writing, kept some important points in mind Where ever he found similar readings he avoided the later one by using the words e g 'Jahā Uwhwāie', 'Jahā Pannawānae' etc to denote the omitted text When some statement occured again and again in a work, he used the word 'Jāwa' and wrote the last word of it refraining from the repetition, e g 'Nāga Kumārā Jāwa wiharanti', 'Tena Kāleṇa Jāwa Parisā Niggaya' etc"[1]

---

1 Jain Sahitya ka Vrihat Itihas, page 81

The process of abridgement might have been started by Devar dhigani, but it developed in later period In the specimens, available at present, the abridged text is not uniformal A Sūtra has been abridged in one specimen but written in its full version in the other The commentators have also mentioned it in many places In the Āupapatik Sūtra, for example, these two passages, "Ayapāyāni wā Jāwa Annayarāin wā" and 'Ayabandhanani wā Jāwa Aṇṇayarāin wā' are found They were in the abridged form in the main specimens the Vṛittikāra had, but their ful version too, was found in other specimens The commentator himself has noted it[1] Many a time, the scribes, according to their own convenience did not write the preceding text again others followed them in the later specimens

SŪYAGADO

We have adopted the text of the Sūtra Kṛita depending not on one specimen only It has been redeemed after the comparative study, based on the specimens used in the text-redemption, the Ćūrni and the readings of the Vṛitti, and their critical review as well

The system to write was little popular in ancient times Almost all the scriptures were maintained traditionally learnt by heart This is why the 'Ghośa-Suddhi' (correctness of pronounciation) was much stressed upon This was a pious duty of the Āćārya to correct the seat of utterence of the disciples The Daśāśrutaskandha Sūtra says[2]—to become 'Ghośa-Sudhi-Kārka' is one of the virtues of an Āćārya Special arrangement was there to maintain the text and the meaning in the original form The Ćhedasūtras throws full light on it

Eight kinds of the Jñānāćāra have been enumerated[3]. Of them, the three Āćāras are concerned with the said arrangement
They are[4]—

---

1 (a) Aupapatika Vritti, patra 177
(b) Pustakantare Samagramidam Sutradwayamastyeveti,
2 Dasasrutaskandha, Dasa 4
3 Nisithabhasya, Gatha 8, part 1, page 6
Kale vinayo bahumano, uwadhane taha aninhawane,
wanjana-atthatadubhae, atthawidho nanamayaro
4 Ibid, gatha 17, part 1, page 12.
Sakkayamattabindu Annabhidhanena wa witam Attham,
Wanjeti Jena Attham, wanjanamiti bhannate suttam

1 Vyanjana—To maintain the language, vowel-marks, nasal points and words of the text of Sūtra, as it is

2. Artha—To maintain the purport (meaning) of the sutra as it is

3 Vyanjana as well as artha—To maintain the Sūtra and its meaning both in the original form

The Čūrnikāra makes it clear with examples[1], 'Dhammoma ngalam muk-kitṭham' is expressed in Prākṛit language. To render this reading in Sanskṛit 'Dharmo Mangalamutkṛiṣṭam' as such is a dialectical sin of Vyanjana

In the same way, to utter 'Sawwam sāwwajjam Jogam paććakkhāami' as 'Sawwesāwajje joge paććakkhami' by changing its vowels is a diacritical sin of Vyanjana

likewise, to utter 'Namo arahantāṇani' as 'Namo arahantāna' omitting the therepotent point of nasal sound and also to pronounce 'Namo aramhantānam' adding the point of nasal sound with 'ra' when it is not there, is a nasal-point-change sin of Vyanjana.

To bring in the synonyms, in place of the original words of 'Dhammo mangalam mukkittham', such as 'Punam Kallāna mukk osam' is also a different-word-sin of Vyanjana

The conclusion of all this account is to stress upon that the originality of language, vowel mark, point of nasal sound, word, word-number, and text-order must be maintained in all respects Rules were laid down to expiate the sin against this arrangement On changing the language, the vowel-mark or the point of nasal sound one has to undergo the specified atonement On doing the Sūtra-Pātha otherwise an expiation of four months followed [2]

In the conclusion of the topic, the Čūrnikāra writes[3]—A change of Sūtra causes a change of meaning, a change of meaning causes a change of

---

1 Nisithabhasya curni, Part I, page 12

2. Ibid

3 Nisithbhasya, Gatha 18, Curnibhasya 1, page 12.
Suttabheya atthabheo, atthabheya caranabheyo, caranabheva amokkho Mokkhabhawat dikkhadayo Kiriyabheda aphala bhawanti Taha vanjanabhedo na kayawwo

conduct and the change of conduct makes the salvation impossible. In that case all the rites, such as Dīkśā etc become futile A change of Vyanjana, therefore, be not done

Likewise, a change of meaning also be not made The meaning that is uncouth and not applicable be not carried out On changing the meaning, an expiation for four months follows[1]

Similarly, on changing the Sūtra and its meaning together, both the aforesaid expiations fall on[2]

A deep thinking had taken place to maintain the originality of the Sūtras and their meaning even in the period of composition of the Āgamas In the present Sūtra, it is clearly stated A muni studying the work has been alerted that he in no way is set up a Sūtra and its meaning differently or expound it otherwise[3] The Ćūrnikāra annotates it thus[4] In no way a Sūtra be done otherwise The meaning and that meaning only be carried out which is consistant with its own principle The Vṛttikara writes[5]—A Sūtra be not added to intentionally or a Sūtra or its meaning be not done otherwise

From the aforesaid account it is learnt that it was keenly endeavoured to maintain the Sūtra and its meaning in its original form As a result, it has been maintained also to some extent We can, nevertheless, not say that it has not been changed It has been done and the reasons for it are also there, e g

1 Forgetfulness

---

1 Nisithbhasya Curni, part 1, page 13

2 Ibid

3 Sutrakrita 1/14/26

No Suttamattha cakarejja annam

4 Sutrakrita Curni, page 296

Na Sutramanyat praddhesena karotyanyathawa Jaha ranno bhattansino ujjawalaprasno nimarthas tamapi nanyatha kuryat, Jaha 'Awantike Awantieke Yawanti tamtogo vipparmsanti' Sutram sarwathaiwanyatha na Kartawyam, arthavikalpastu swasiddhantavinuddho aviruddah syat

5 Suttrarkitavrtti, page 258

Na ca Sutramanyat Swamativikalpanatah swarparatrayi Kuritanyatha wa suttram todartha wa sansarattrayitrana sito jantunam na vidadhita.

2 Change of script
3 Assimilation of the commentary with the text.
4 Intervention of time and place

When Silānkarsūri wrote his Vṛitti on the 'Sūtrakṛita', he had its specimens and ancient commentary (Tīka) both In one place of the second Addhyayna of the second Śrutāskandha, the reading was not similar to that of the specimens, and the reading, that was commented on, was not found consistant with that of any specimen He, therefore, commented on the said passage honouring only one specimen [1]

We have adopted the readings of the Ćūrnī in some places In comparision to that of the specimens and the Vritti they appear more relevant

In 2/6/45 the reading is 'niho nisam' It has been commented on in the Vṛitti as 'niwo nisam' We have adopted the reading of the Ćūrni there[2]

We have discussed the changes in the text and their causes under the footnotes It was keenly endeavoured in the Vedic tradition also to maintain the originality of the text of the Vedas But in their texts, too, there have been timely violations Dr Viswabandhu writes[3]—"It is a fact accepted by all that great pains, which know no parallel in the world history of literature, were taken in this country to maintain the texts of the Vedic literature in their original and correct form by learning them by heart with great care and utmost reverence during the past five thousand years Nevertheless, as the scholars, preceding to us, incidently found here and there as we have largely seen during our incessant research work for the past forty years, these works, too, could not be saved from the effects of time bound damages and insufficient human hurlings Had it been mostly the other way, truly, it would be an incredible miracle"

Continuirg with the tradition of cramming and passing from one to the other age of script-change in the prolonged period Some places of every work have deviated from their originality

---

1 Suttrakritavritti, page 79
Iha ca pra_ah suttradarsesu nanabhidhani Suttrani drisyante, na ca tika sambadi ekaryasmabhiradarsah samuphabdhot ekamadarsamangikrityasmabhi sw_ranam kriyate

2 See Footnote on 2/6/45

3 Akhilabharatiya praciva vidya Sammelan, Twentifourth gathering, Varanasi 19(Mukhy-dyaksiya speech, page, 8-9

THĀNAM

A word has different forms in Prākrit, and these different forms are used, too, in the Āgamas Some scholars, engaged in the editing work of the Āgamas, have stressed upon that the uniformity in the form of words should be brought up We have not adopted this method of editing Although accepting the sameness of the sound 'na' and 'na', only 'ṇa' has been used in all the places, the principle to bring up uniformity in different forms everywhere has not been observed In 3/373 two forms 'Sugati' and 'Suggati' are found, in 3/375 'Sogata', 'Sugata' and 'Suggata', three forms are found We have adopted them as they are. The authors are free in their usages As they are not the bondsmen of the rule of uniformity, to try to bring uniformity in the editing-work does not seem desirable

The Āgamas contain the usages of different languages and syllable changes In bringing up uniformity in them, the probability to forget the multiformity may arise 'Wayenam' as well as 'Kamasā' both the forms are used 'Anḍaya' as well as 'Anḍagā' for 'Anḍajāh' and 'Kammabhumiyā' as well as 'Kammabhūmigā' for 'Karmabhumijāh' both the forms are formed To keep up the form as found in a particular place is not a fault of editing

SAMAWĀO

The text redemption of this Sūtra is based on three specimens and the Vritti as well In some places other works, too, have been used to redeem the text In the specimens of the 'Prakīrna Samawāya' (Sūtra 234) the reading 'Assasene' is not found This is the name of the father of fourth Cakrawarti In the absence of it, the arrangement of further names becomes inconsistent In the Sangraha Gathas of the said Sūtra, the name 'Padmottara' is in excess It has been taken as a recension The reading 'Assasene' is found in the Āwaśyaka Niryukti (399) Basing on it 'Assasene' has been adopted as the text-reading

In the Sangraha Gatha of the Prakirṇa Samawāya (Sūtra 230) Baldeva-Vasudeva's father's name are given Basing on the Sthānānga (9/19) and the Āwaśyaka Niryukti the amendment has been carried out The name of the third Baladeva-Vāsudeva's father is 'Rudda', but the manuscript of the Vṛtti of Samawāyānga mentions it as 'Soma' instead of 'Rudda' In fact, 'Rudda' should follow 'Soma'

---

1 See, Samawao, painnagasamawao, Sutra 230, the first footnote

In all the specimens of the Samawāya 30 (Sūtra 1, gatha 26) it reads 'Sajjhayawāyam' The vrittikāra, too, explains it as 'Swādhyāyawādam' But it is not relevent as far as the meaning is concerned The said 'gāthā' is found in the Daśāsrutaskandha (Sūtra 26) where the reading is 'Sabbhāwawāyam' instead of 'Sajjhayawāyam' The Vṛittikāra of 'Daśāsrutaskandha' has given its Sanskrit form as 'Sadbhāwa wādam' On reviewing the meaning critically, this reading appears to be relevent[1]

1, See, Samawao Samawaya 30, Sutra 1, the second footnote of Sutra 230

Forward

The Classification of the Agamas

The most ancient part of the Jain literature is the Āgama The Samawāyānga mentions two forms of the Āgama, such as, 1 Dwadaśanga gaṇipitaka[2] and 2 Ćaturadaśapūrwa[3], In the Nandi, two divisions of the Śrūta-Jyāña (Āgama) have been given 1 Anga Piavișṭa and Angavāhya[3] The accounts, found regarding the Adhyayanas of the Sādhus and Sadhwis (monks and nuns), pertain to the Angas and pūrwas, as

1 The readers of the eleven Angas beginning from the Sāmayika—

Sāmāiyamāiyāin ekkarasa-angāin ahijajai (Antagaḍa, Prathama Varga) This statement is found regarding Gautama, the disciple of lord Arișṭanemi

Sāmāiyamāiyāin ekkarasa angāin Ahijajai (Antāgada, Panćam Varga, Prathama Adhyayana) This statement relates to Padmavati, the disciple of lord Arișṭānemi

Sāmāiyamāiyāin ckkarasa-angāin (Antagaḍa, Așṭama Varga, Prathama Adhyayana) This statement pertains to Kāli, the disciple of lord Mahavīra

Sāmāiyamāiyāin ekkarasa-angāin Ahijajai (Antagaḍa Saṣṭa Varga, 15th Adhyayana) This statement has been given regarding Atimuktakumara, the disciple of lord Mahavīra

2 The readers of the twelve Angas—

The statement regarding Jālīkumāra, the disciple of lord Arișṭanemi, is given as such Bārasangī (Antagaḍa, Ćaturtha Varga, Prathama Adhyayana)

---

1 Samawayanga, Prakirnaka, Samawaya, Sutra 88
2 Ibid, Samawaya 14, Sutra 2.
3 The Nandi, Sutra 43

3 The readers of the fourteen Pūrwas—

Čauddasapuwwāin ahijjai (Antagaḍa, tṛtiya Varga, Navama Adhyayana) This is the statement found regarding Sumukhakumāra the disciple of lord Ariṣṭanemi

Sāmāiyamāiyāin Čauddasapuwwāin ahijjai (Antagada, tṛtīya Varga, Prathama Adhyayana) This statement is found regarding Aniyasakumāra, the disciple of lord Ariṣṭanemi

There were three hundred and fifty ćaturdaśa-pūrwī munis of lord Pārśwa [1]

There were three hundred ćaturdaṣa- pūrwī munis of lord Mahāvirā.[2]

The division, Anga Praviṣta and Anga-Vāhya, have not been given in the Samawāyānga and Anuyogadwāra This division first have been made in the Nandi The later sthaviras composed the Anga-Vāhya Many anga-vāhyas had been composed before the composition of the Nandi and they were done by the ćatūrdaśa-pūrwi or daśa-pūrwi sthaviras They were, therefore, taken as solemn as the Āgama and two divisions were made of it such as, 1 Anga-praviṣta and 2 Anga-Vāhya This division is not found in the Anuyogdwāra (sixth century of the Vira-Nirwaṇa) This was first done in the Nandi (tenth century of the Vira-Nirwaṇa)

When the Nandi was composed, the Āgama was classified threefold, 1 Pūrwa, 2 Anga-Praviṣta and 3 Anga-Vahya What we have today is only 'Anga-Pravista and 'Anga-vahya' The 'purwas are extinct. Their extinction is a subject of delibration from the historical point of view

PŪRWA

According to the Jaina tradition, the Pūrwa is the Akśaya-Koṣa (in exhaustible lexicon) of the Śruta-Jyaña (word knowledge) All do not hold one and the same view about the meaning of the title and their composition The ancient Āćāryas hold that as they were composed before the 'Dwādasāngī' they were given the title 'Purwa'[3] But the modern, scholars

1 Samawayanga, Prakirnaka Samawaya, Sutra 14
2 Ibid, Sutra 12.
3 Samawayanga vritti, Patra 101
Prathamam Purwam tasya Sarwa pravacnat purwam Kriyamanatwat.

view that the 'Pūrwa' was the Śruta-Rāśi of the tradition of lord 'Pārśwa and preceding to Lord Mahāvīra, it was, therefore called 'Pūrwa' Whatever view of the two is accepted, the conclusion is the same that the 'Pūrwas' were composed before the 'Dwadasāngī' or the 'Dwādaśangi' is a later composition than the 'Pūrwas'[1]

In the form the 'Dwādaśāngi' is now found, the 'Pūrwas' are assimilated The twelfth Anga is 'Dristiwāda' One of its divisions is 'Pūrwagata' The fourteen 'Pūrwas are included in it The opinion that lord Mahāvira first composed the 'Pūrwagata 'Śruta', leads us to the conclusion that the forteen 'Pūrwas' and the twelfth Anga are one and the same The 'Pūrwa-śruta was very difficult to understand The common people could not follow it The Angas were composed for the benefit of less intelligent persons Jinabhadra-ganī Ksamāśramana says 'The Dṛṣṭiwāda contains all the word-knowledge (śabda-Jyaña) The eleven Angas, nevertheless, have been composed for the good of less intelligent people[2] The eleven Angas were studied only by those monks (Sadhus) who were not very intelligent The intelligent munis studied the 'Pūrwas' From the order of classification of the Āgama, it is concluded that the eleven Angas are easier than Dṛṣṭiwāda or Pūrwas or have been in a different order from theirs

According to the Digambara tradition the Kewalis became extinct after 62 years of 'Vīra-nirwāna' After that, for a hundred years only Srūta-Kewalis (Caturdaśa-Pūrwis) were found Beyond that for one hundred and eightythree years only Daśapūrvīs were found And, later to them for a period of two hundred and twenty years only the eleven-Angadharas were found[3]

The discussion, given above, makes it quite clear that so long as the Āćāra etc Angas were not composed, the Śruta-Raśī of lord Mahavira was called 'Ćaudaha Pūrwaś or 'Dṛṣtīwāda' When the eleven Āćāra

---

1 Nandi, Malayagiri vritti, Patra 240
Anye tu wyacaksate purwam purwagatasutrarthamarhan bhaste, Ganadhara api purwam purwagata Sutram Viracayanti, Pascadaearadikam

2 Visesawasyaka Bhasya, Gatha 554
Ja-i-wi ya Bhutawa-e sawwassa waogayassa Nijjuhana Tahawi hu, dummehe pappa itthi oyaro ya

3 Jayadhawala, Prastawana, Page 49

etc Angas were composed, the Dṛṣṭīwāda was given in the form of the twelfth Anga

Though the two different accounts[1], such as, 'readers of the twelve Angas' and 'readers of the fourteen Pūrwas' are found, it cannot be said that the scholars in the fourteen Pūrwas were not scholars in the twelve Angas and vice-versa Gautama Swami was called 'Dwādaśāngavit'[2]. He was a 'ćaturdaśa-pūrvī' as well as 'Angadhara' A 'sruta-kewali' was somewhere called 'Dwādasāngavit' and sometimes 'ćaturdasa-pūrvī' as well

As the eleven Angas are taken from or a collection of the Pūrwas, a 'ćaturdasa-pūrvi' is, of course, a 'Dwādasangī' also As the fourteen Pūrwas are incorporated in the twelfth Anga, a 'Dwādaśāngavit' too We, therefore, reach this conclusion that the Āgama had only two ancient classifications 1 the Fourteen Pūrwas and 2 the eleven Angas The 'Dwādasangi' had no independent standing This is the title given to the Pūrwas and the Angas jointly

Some modern scholars hold the Pūrwas, to be of the period of lord Pārśwa and the Angas of lord Mahāvīra But this view is not correct. The tradition of the Pūrwas and the Angas was prevelent at the time of lord Ariṣṭanemi and lord Pārśwa too That the Angas were composed for the use of less intelligent people has been told before That the intelligence quotient of all the Munis at the time of lord Pārśwa was equal is incredible The intelligence quotients have always differed in each and every age Considering from the psychological and practical view, we reach the conclusion that the necessity of the Angas prevailed in the order of lord Pārśwa too To support this view that at the time of lord Pārśwa only the Pūrwas and not the Angas existed, no evidence is, therefore, found By common sense this fact is established that the Pūrwas and the Angas were renovated according to the purport, language, style and necessity of the age in the order of lord Mahāvīra Fancy has, perhaps, played a main role to support the view that the Pūrwas were received traditionally from lord Pārswa and the Angas were composed in the tradition of Lord Mahāvīra

3 Anga-Praviṣṭa and Anga-Vāhya

It is heard by all that the gaṇadharas Gautama etc, composed the Pūrwas and the Angas at the time of lord Mahāvīra A simple question

---

1 See the beginning of the preface

2 Uttaradhyayana, 23/7

arises if other Munis did not compose the Āgama works There had been fourteen thousand desciples of lord Mahāvīra[1] Of them seven hundred were 'Kewalīs' and four hundred 'Wādīs' That they did not take part in the composition of the Āgamas does not seem credible The Nandī says that the disciples of Lord Mahāvīra composed fourteen thousand 'Prakīrnakas'[2] besides the aforesaid 'Pūrwas and 'Angas' Nothing proves that the classification, such as, 'Anga-Pravişţa' and 'Anga-Vāhya' was done at that time When the later Ācāryas compiled the works after the 'Nirwana' of lord Mahāvīra, the discussion was, perhaps, held to classify them under the Āngamas or not and the question of their authenticity, too, arose After the discussion it was decided to classify the works, composed by the 'ćaturdasa-pūrvī' and the 'Dasa-pūrvī' sthaviras, under the Āgama but they were not considered authentic by themselves Their authenticity depended on others That they are consistent with the 'Dwādaśāngī' was the touch-stone to give them the title of the Āgama As their authenticity was dependent, the necessity was felt to keep them out of the class of the 'Anga Pravişţā' and, in this content only, the 'Anga-Vahya' class of the Āgama took place

Jinabhadragani Kşmāşramaņa ascertains the kinds of 'Anga-Pravişţa and 'Anga-Vahya' on three grounds, such as—

1 That which is composed by a ganadhara

2 That which is expounded by a Tīrthankara on the query of a gaņadhara

3. That which is pertaining to the firm-eternal truths, and is perpetual and permanent, and that Śruta only is entitled as 'Anga-Pravişţa'

Contrary to this I that Śruta which is composed by a Sthavira, temporary or suited to the times only is entitled as 'Anga-Vāhya'[3]

The main ground to differenciate the Anga-Pravişţa from the Anga-

---

1 Samawayanga, Samawaya 14, Sutra 4

2 Nandi, Sutra 78
Coddaspa-i-nnagasasahassani Bhagwa-O Baddhamanassa

3 Viscsavasyakabhasya, Gatha 552
Ganahara-therakatham wa, Aesa Mukka-wagarana-O wa Dhuva-cala visesa-O wa, Anganamgesu Nanattam

vāhya is based on the difference of the person who has spoken it[1] The Āgama delivered by Lord Mahavira and compiled by the ganadharas, is accepted as the basic Angas of the Śruta-Puruṣa It is, therefore called the 'Anga-Praviṣṭa' According to Sarvārthsiddhi the speakers are of three kinds, 1 the Tīrthankara, 2 the Śruta-Kewali and 3 the Ārātiya[2] The Āgamas Composed by the Ārātīya Āćāryas are regarded as 'Anga-Vāhya'. According to Āćārya Akalanka, the Āgamas composed by the Ārātiya-Āćārya reflect the meaning supported by the Angas[3] They are, therefore, called the 'Anga-Vāhyas'[3] The Anga-Vāhya Agamas are as good as the Pratyanga or Upānga of the Śruta-purusa

ANGA

The twelve Āgamas incorporated in the Dwādaśāngī are called Angas The word 'Anga' is found in the literature of Sanskrit and Prakrit both In the Vedic literature the works assisting the study of Vedas are given the title of 'Anga' They are six—

1 Siksa—The work that expounds the rules of utterence of the words
2 Kalpa—The scripture that expounds the vedic rites and rituals in an order and agreement
3 Vyakarana—The scripture that expounds the theories of morphology and meaning of the words
4 Nirukta—The scripture that expounds etamology of the words
5 Chandas—The scripture that expounds the theories of morpheme to recite the Mantras
6 Jyotis—The scripture that expounds the theories to find correct time for the rites of Yajna-Yāga etc

The Vedas have been personified in the Vedic-literature Accordingly the 'Sikṣā' has been regarded as nose, the' kalpa' as hands, the 'Vyākarana' as mouth, the 'Nirukta' as ears, the Čhandas as feet and the Jyotiṣ as eyes of the Veda-person They are therefore, called the parts of the body of Vedas[4] In the Pali-literature, too, the word 'Anga' has beenu sed At one place the 'Buddha-Vaćanas' have been called 'Nawānga and 'Dwādaṣānga' at the other

1 Tatwartha bhasya, 1/20
Waktri-visesad dwaividhyam
2 Sarvarthasiddhi, 1/20
Trayo waktarah - Sarvajna Tirthankarah, itaro wa Srutakewali Aratiyasceti
3 Tattwartha - Rajavarttika, 1/20
Aratiyacarya Kritangarthapratyasannarupamangavahyam
4 Paniniyasiksa, 41, 12

Nawanga

1 **Sutta**—The sermons of lord Buddha in prose

2 **Geyya**—The mixed portion of prose and verse

3 **Vaiyyakarana**—The works containing explanation

4 **Gatha**—The works composed in verse

5 **Udana**—The gistful and affectionate expressions delivered from the mouth of lord Buddha

6 **Itibuttaka**—Small lectures beginning with the words, 'Lord Buddha said thus'

7 **Jataka**—The stories of the former births of lord Buddha

8 **Abbhutadhamma**—The work that explains the mysterious things or the superhuman powers born of the 'Yoga'

9 **Vedalla**—Those sermons which have written in the form of dialogues [1]

Dwadasanga

1 The Sutra, 2 the Geyya, 3 the Vyākarane, 4 the Gatha, 5 the Udana, 6 the Awadana, 7 The Itivṛittāka, 8 The Niduna, 9 the Vaipālya 10 The Jataka, 11 the Upadeśa-dharma and, 12 the Adbhuta-dharma [2]

The Jaināgama has been divided into twelve Angas—

1 The Aćara 2 The Sūtrakṛita 3 The Sthāna 4 The Samawāya 5 The Bhagawati 6 The Jynātā Dharmekatha 7 the Upāsakadasa 8 the Antakṛita 9 the Anuttaropapātika 10 the Praśna-Vyākaraṇa 11 the Vipāka and 12 the Dṛiṣṭiwāda

The word 'Anga' has been used in the three chief Indian philosophical schools The main works of the Vedic and Buddhist literature are the Vedas and the Pitakas respectively Nowhere the word 'Anga' has been added to them The main works in the Jain literature have been classified as the Gaṇipitaka. The Ganipitaka has the twelve Angas—'Duwālasange ganipitage[3]

---

1 Saddharma Pundakrika Sutra, page 34

2 Buddha Sanskrit Grantha 'Achisamayalankar' Ki tika, Page, 35
Sutram Geyam Vyakaranam, Gathoanavadanakam
Itibrittakam Nidanam, Vaipulayam ca Sajatakam
Upadesadbhutau dharman, Dwadasangamidam vacah

3 Samawayanga, Prakirnaka Samawaya, Sutra 88

The personification of 'Śruta-Puruṣa' too, is found in the Jain-tradition The twelve Āgamas, Āćara etc, are like the parts of the 'Śruta Puruṣa' They are, therefore, called the twelve Angas[1] So the Dwādaśānga becomes the adjective of the Ganipitaka and the Śruta-Puruṣa' both

ĀYĀRO

The title

This Āgama is the first Anga of the 'Dwādaśāngī' As it contains the account of the conduct (Āćāra), the title 'ĀYĀRO' It has two Śruta-skandhas—1 ĀYĀRO, 2 ĀYĀRAČULA

The Contents

The Samawāyānga and the Nandi give an account of the Āćārānga. According to that the present Sūtra explains the Āćara, Goćar, Vinaya, Vainayika (fruit of vinaya), (Utthitāsana, Nisanāsana and Śayitāsana), Gamana, ćamkramana Dose of food etc, application of Yoga in self study etc, language, Samiti, Gupti, Śayya, Upadhi, Bhakta-Pāna (edibles and drinks), Udgama-Utthana, the purity of 'eṣnā' (motives) etc[1] the discernment of taking Śuddhāśuddha, Vṛta, Niyama, Tapas, Updhan etc[2]

Āćārya Umāswāti has expounded the topics of every Adhyayana in the Āćārānga in brief That is given in the order as under [3]

1 Śaḍajīvakāya Yātnā
2 Renunciating the glory of the wordly off-springs
3 Winning over of the Pariṣahas, such as cold-hot etc
4. Undaunted Samyaktwa
5 Udvegas of the world
6 The means of nullifying the 'Karmas' (deeds)
7 The endeavour to 'Vaiyavṛitya'.
8 The way to penance

---

1 Mularadhna 4/599, Vijayodaya
Srutam Purusah Mukhcaranadyangasthaniyatwadangasabdenocyate
2. (a) Samawayanga, Prakirnaka Samawaya, Sutra 89
(b) Nandi, Sutra 80
3 Prasamarati Prakarana, 114-117.

9 Renunciation of passion for woman
10 Rules to receive the alms
11 Bed without woman, Creature, eunuch etc
12 Purity in movement
13 Purity of language
14 Method of begging cloth.
15 Method of begging bowls
16 Purity of habit (Avagraha)
17 Purity of Place (Sthāna)
18 Purity of 'Visadya'
19 Purity of 'Vyutsarga'
20 Renunciation of attachment to sound
21 Renunciation of attachment to form
22 Giving up 'Parakriya'
23 Giving up 'Anyonya-kriya'.
24 Steadfastness to the Five Mahāvṛitas
25 Libration from 'Sarvasangas' (all associations)

The Niryuktikāra has enumerated the topics of the nine Adhyayanas of Brahmaćarya as under

1 *Satya Parinna*—Jiva Samyama.
2 *Loga Vijaya*—Knowledge of bondage and libration
3 *Siosanijja*—Equanimity of pleasure and pain
4 *Sammatta*—Right vision
5 *Loga-Sara*—Renunciation of worthless and adoration of the Ratna-trayi, worthy in the world

---

1 Acaranga Niryukti, Gatha 33-34
Jiyasamjamo a logo jaha bajjhai jaha ya am pajahiyav vam
Suhadukkhatitikkhaviya sammattam logasaro ya
Nissangaya ya chatthe mohasamuttha parisahuwasagga,
Nijjanam atthamae nawame ya jinena evamti

2, Tatwartha Rajavarttika, 1/20
Acare carya-vidhanam sudhyastaka paniasamiti-triguptivikalpam kathyate

6 *Dhuya*—non-attachment

7 *Mahaparinna*—Enduring properly the Parişahas and Upsargas born of 'Moha'

8 *Vimokkha*—Proper observanes of 'Niravanā' (the final state)

9 *Uvahanasuya*—Explanation of the conduct observed by lord Mahāvira[1]

Āćārya Akalanka holds that the total matter of the Āćārānga is concerning the 'Ćarya-Vidhana' (mode of behaviour and conduct)[2] While Aparājit Suri opines that it is the ascertainment of the conduct of the 'Ratna-trayī'[1]

SŪYAGAḌO

The Title

This Āgāma, the second part of the Dwādasāngi, is given the title as 'Sūyagado' The Samawāya, the Nandi and the Anuyogadwār, all the three Āgāmas have this title only for it [2] Bhadrawāhu-Swāmi, the Niryuktikāra has given three titles of this Āgama according to its tributes [3]

1 Sūtagada—Sūtakrita

2 Suttakada—Sūtrakrita

3 Sūyagada—Sūćākrita

Originally this Āgama is 'Sūta' (hails from) by lord Mahāvīra and was given the form of a work by ganadhara This is, therefore, entitle as 'Sutakrita'

As the truth in it has been ascertained according to the 'Sūtrā', it is 'Sutrakṛita'

As the 'Sūćanā of 'Swa' and 'Para' Samaya has been given in it, it is called 'Sūćā-krita'

---

1 Mularadhna, Aswasa 2, Sloka 130, vijayodaya
Ratnatrayacarana nirupanaparataya prathamabhangamacare sabdenocyate

2 (a) Samawao, Paissagamawao, Sutra 88
(b) Nandi, Sutra 80
(c) Anuogadwaraın, Sutra 50

3 Sutrakritanga-niryukti, Gatha 2.
Sutagadam, suttakadam, suyagadam cewa gonna-in

'Sūta', 'Sutta' and 'Sūya' are as a matter of fact, the Prakṛit forms of 'Sūtra' only These different formations led to the imagination of the three attributive titles

Originally, all the Angas were delivered by lord Mahāvīra and brought into a composed form by Ganadhara Then, how can this Āgama only be called 'Sūtrakrita'? Similarly, the second title, too, is common to all the Angas The third is the significant basis of the title of this 'Āgama' As the conduct has been ascertained in the context of a comparative preception (Sūtrnā) in this Āgama, it is concerned with 'Sūćana' The Samawāya and the Nandi clearly state this—

Sūyagaḍe nam sasamayāsūhajjanti, Parasamaya Sūhajjanti sasamaya-parasamayā suhajjanti [1] What is preceptive is called a 'Sutra' The background of this Āgama mainly consists of preceptive element Its title is, therefore, 'Sūtrakṛita'

Another thought, which seems to touch the reality more closely, can be put forth regarding the title 'Sutrakrita' The Driṣṭiwāda is five fold—

1 Parikarma
2 Sūtra
3 Pūrwānuyoga
4 Pūrwāgata
5 Ćūlikā

According to Āćarya Vīrasena the Sūtra has an account of other philosophers[2] As this Āgama was composed on that basis only, it was given the title 'Sūtrakṛita' This meaning seems to be more logical than the other etomological meanings of the word 'Sūtrakṛita' The 'Suttagaḍa' and the 'Suttanipāta' of the Budhists seem to be identical in their titles

Anga and Anuyoga—

This Āgama has the second place in the Dwādāśāngi There are four kinds of Anuyoga—

1 Ćaranakaranānuooga
2 Dharmakathānuyoga
3 Ganitānuyoga
4 Drawyānuyoga

---

1 (a) Samawao, paissagasamawao, Sutra 90
(b) Nandi, Sutra 82
2 Kasayapahuda, Part 1, page 134

The Ćurnıkāra holds that this Āgama is 'ćaranakaranānuyoga (treatise on conduct)[1] Sīlānkasūri has classified it under 'Drawyānuyoga' (treatise on substances) According to him the Āćārānga is primarily a ćaranakaranayoga while 'Sūtrakṛitānga' is primarily a 'Drawyānuyoga'[2]

The Samawāya and the Nandi give an account of the 'Dwādaśāngī' At the end of the account of the Angas, the lines read 'evam ćarnakarana-paruwanayā' Abhayadeva Sūri connotes the meaning of 'ćarana' as 'Sramana dharma' and of 'Karana' as 'Pinda-viśuddhi, Samiti etc'[3]

The ćūrnikara has regarded the Kālikasruta as a 'ćaranakaranayoga' and the 'Driṣṭiwāda' as a 'drawyanuyoga'[4]

The Dwādaśāngī primarily expounds the Driṣṭiwāda, treatise on substances and secondarily the code of conduct The Ćurnikara legimately regards this Āgama primarily as a treatise on the code of conduct while the Vrittikāra lying stress upon its ascertainment of Dravya (substance), calls it Dravyāśaśtra (a treatise on substance) Both of these classifications have a dialectical variation

ṬHANAM

The title

This Āgama is the third part of the Dwādaśāngī It sets up the Jīva, Pudgala etc, in number-order Hence the title, 'Ṭhanam'

The Contents

Swa-samaya (Arhat-philosophy), Para-Samaya as well as swa-samaya and Para-samaya both have been set up in this Āgama The Jīva and the Ajīva, the Loka and the Aloka have been founded here[5]

One-ness of the Jīva and its sevarality, according to the views of the 'Sangraha Naya' and the 'Vyavahāra Naya,' have been expounded

---

1 Sutrakritainga Curni, page 5
iha caranānu-o-gena adhikaro

2. Srtrakritangaritti, page, 1
Tatracaranga carnakaranam pradhanyena Vyakhyatam, adhuna awasarayatam drawya pradhanyena sutrakritakhyam dwitiyamangam Vyakhyatumarabhyate

3 Samawayangavritti, Patra 102.
Caranam—Vratasramanadharma Samyamadyanekavidham
Karanam-Pindavisuddhi Samityadyaneka vidham
Sutrakritanga Curni—

4 Kaiyasuyam caranakarananuyogo isibhslottar ajjhayanani dhammanuyogo, Surpannattadi ganitanuyogo, ditthiwado dawwanujogotti

5 Samawao, painnagasamawao, Sutra 92

in it According to the Sangraha Naya, the Jīva is one and the same far as the soul is concerned From the view point of the 'vyavahāra-naya' each and every Jīva is parted with, i e it is divided into two parts according to the knowledge and appaerance, into three parts according to the 'Karma-ćetnā' or 'Phrowge-utpāda' and 'Vināśa', into four parts because of its wandering in the four-fold motion, into five parts from the view point of 'Parināmikādi' five states, into six parts due to the accession to the six directions, such as the East, West, North, South, up-ward and down-ward at the time of transgression to other birth, into seven parts according to the seven kinds of 'Syādasti-Syādnāsti', into eight parts according to the eight 'Karmas', into nine parts as it changes into the nine substances, and into ten parts from the view point of the 'Prithivi-Kāyika', 'Jala Kāyika', 'Agni-Kāyika', 'Wāyu-Kāyika', 'Pratyeka Vanaspati-Kāyika', 'Sādhārana Vanaspati-Kāyika' species having two organs, species having three organs, species having four organs, and species having five organs [1] Likewise, this Āgama gives an account of one-ness of 'Pudgala' etc and their various 'Paryāyas' (modifications) counting from two to ten From the viiew of 'Paryāyas', one and the same element parts with into innumerable and unlimited parts, and, from the view point of the matter (Dravya), these innumerable parts conform into one and the same element This exposition of conformity and deformity is well found in this Āgama

Samawāo

The title

The Āgama is the fourth part of the 'Dwādaśāngī' having the title 'Samawāo' The substances, Jīva-Ajiva etc, have been put into divisions or brought down properly in this Āgama, therefore, the title 'Samawāo' [2] According to the Digamber literature, this Āgama speaks of similarity of the Jivadi substances therfore, called the 'Samawāo'.[3] The 'Samawāo'

1 Kasayapahuda, part 1, page 123

2 Samawao-Vrithi, patra 1,
Samit-Samyaka avetyadhikyena ayanamayah Paticchedo Jivajivadi-vividha-padartha Sarthasya yasaminnasan Samawayah
Samawayanti wa, Samawasaranti Sammilanti nanawidha Atmadayo Bhawa Bhawa abhidheya aya Yasminnasan Samawaya iti

3, Gommatasara Jivakanda Jivaprabodhni Tika, gatha 356
"Sam-Sangrahena Sadrisya-Samanyena Avayante jnayante jivadipadartha dravya kalabhavan a sritya asmitnniti 'Samawayangam
Nandi, Sutra. 83

gives an aocount of the 'Dwādaśangī'. And, as it is the fourth part of the 'Dwādasangī', it narrates the 'Samawāo, too

The Nandi-Sūtra discusses the 'Dwadaśangī in order The table of contents of the 'Samawāo has been given in it as under'

1 The description of the Jīva-Ajīva, Loka-Aloka and Swa-Samaya as the well as Para-samaya

2 The evolution of the number beginning from one to hundred

3 The account of the Dwadaśanga ganipitaka [1]

According to the 'Samawāyānga' the table of contents of the 'Samawā-o' is as follows

1 The description of Jīva-Ajīva, Loka-Aloka and swa-samaya as well as Para-samaya,

2 The evolution of the number beginning from one to hundred

3 The account of the 'Dwādasānga-gani- pitaka'

4 Āhāra

5 Uććhwāsa

6 Leśyā

7 Āwāsa

8 Upapāta

9 Čyawana

10 Awagāha

11 Vedanā

12 Vidhāna

13 Upayoga

14 Yoga

15 Indriya (organs)

16 Kasāya

17 Yoni

18 Kulakara

---

1 Se kim tam samawae nam jiva samasijjanti, ajiva samaanjsa jti jivajiva samasij-janti

Sasamae samasijjai, para samaye samasijjai, sasamaya para sama-e samasijja-i Loe sa masijjai, aloe samasijjai, lo-a-loe samasijjai, samawaenam ega-i-yanam eguttariyanam thanasaya niwaddhiyanam bhawanam paruwana adhhawijja-i duwalasa vihassa ya ganipidagssa pallawagge samasijja-i,

19 Tīrathankara

20 Ganadhara

21. Čakrawarti

22 Baladeva-Vasudeva[1]

A comparative study of both the tables of contents makes it clear that the table of contents given in the Nandi is a brief one, and that of the 'Samawa-o' large. The volume of the Sūtra, too, becomes short and long according to the tables of contents

That the 'ekottarika Vṛiddhi' (Increasing one by one) takes place upto hundred is mentioned in both the accounts In either of them, there is no mention of the 'Anekottarika Vriddhi' The Anekottarika Vriddhi has not at all been mentioned in the Nandī Čūrnī, Hāribhadrīyā Vritti and the Malaya Girīyavritti, all the three Abhayadeva Sūri has discuss the Anekottarikā Vriddhi in his Vṛitti of Samawāyānga According to him, the Ekottarika Vṛiddhi takes place upto hundred and beyond that the Anekottarikā Vriddhi[2]

It appears that the Vṛittikāra has discussed it not on the account given in the 'Samawāyānga' but on the text then available to him

On reviewing both the accounts, two questions arise—

1 Is not the present Samawāyānga different from the account of the Samawāyānga given in the Nandi ?

2 Is the present Samawāyānga is of the Vaćna by Devardhigaṇī ? If so, why then such a variation in both the accounts of the 'Samawāyānga' ?

In reply to the first question, it can be said that 'Dwādasānngi' is the final content of the Samawāyānga-Sutra according to the account, relating to the Samawāyānga, given in the Nandi Many a content has been expounded beyond the 'Dwadaśāngī' in the present Samawāyānga It is therefore, established that the present volume of the 'Samawāyānga' is different from that of the account of the Samawāyānga given in the Nandi

---

1 Samawa-o, pa-i-nnagasamawo, Sutra 92

2 Samawa-o Vritti, patra 105
'ca sabdasya canyatra sambandhatdkottarika anekottarika ca, tatra satam vawadekottarika parato gnekottariketi,

Difficult it is to give an assertive answer to the second question So much, nevertheless, can be said that there had been various Vāćanās of the Āgamas This is why a mention of various Vāćanās (Parittā Vāyanā) has been made while giving the account of each and every 'Anga' Abhayadeva Sūri gives a mention of the large (Brihat) Vāćanā of the Samawāyānga[1] From it, this may be inferred that the Nandī gives an account of the Samawāyānga relating to the short 'Vāćanā '

It is established from the Vritti[2] written by him, that Abhayadeva Sūri had with him various Vāćanās of this Sūtra.

There can be two likelihoods regarding the enlarged edition of the 'Samawāyānga '

1 That this Sūtra is based upon the Vāćanā different from that of the Vāćanā of Dewardhiganī,' or 2 That the portions beyond the 'Dwadasāngī' have been added to it after 'Devardhiganī' Had this Sūtra depended on some different 'Vāćanā,' there would have been some tradition mentioned This agelong traditional mention has been coming down that the Jyotis-Kanḍa is based upon the 'Māthurī Vāćanā'. Had the present Samawāyānga, too, been based on the Māthurī Vāćanā, there would have been some traditional mention of it

The first likelihood lacking the probablity of its support, the second likelihood gains the ground But it too, is refuted by the Bhagwati, and the Sthānānga. The Bhagwati refers to the final part of the Samawāyānga for the full account of Kulakar, Tirathankar etc[3] Likewise, the final part of the Samawāyānga has been referred to for the full account of the Baldeva-Vasudeva by the Sthānānga also[4] It is, therefore, obvious that the appendix

---

1 (a) Samawao Vritti, Patra 58 Brīhadvacanayamanantaroktamatisayadwayamcradhi yate
(b) Ibid, Patra 69
Brihadvacanayamidamanyadatisayadwayamadhiyate

2. Samawao Vritti, Patra 144 Vacanantaretu paryasana Kalpo tasramentyabhihitam

3 Bhagwati Satara 5, Uddesaka 5

4 Sthananga, 9/19-20

was added in the time of Devardhigaṇī only

It is strange that one and the same editor gave two different accounts (in the Samawāyānga and the Nandi) of one and the same Āgama

There were two main Vācanās, the Māthuri and the Vallabhi There were many other secondary Vācanās also This is why there are many different readings These different readings, probabily occured on adding the explanation or appendix portions This can well be inferred that the later part of the Dwādasāngi in the Samawāyānga is its appendix The account of the appendix was added to the account of the Samawāyānga with the result that its table of contents swelled more than the table of the Samawāyānga found in the Nandi There is a summary of eleven stenzas of the 'Prajñāpnā' in the appendix It is a matter of investigation why they were added here ?

Accomplishment of the work

In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many a Muni I bless them that their devotedness to the performance be ever more developed

For the editing of this Āgama major amount of credit goes to my learned disciple Muni Shri Nath Mali Day in and day out he has devoted himself to this arduous task. It is because of his concentrated efforts that the work has got such a nice accomplishment Otherwise, it would not have been an easy job On account of his in-born Yogic temperament he was capable of attaining that concentration of mind which was essential for achieving the end On account of his constant devotion to the work of research in the field of Āgamic literature his intellect has achieved sufficient sharpness in finding out immediately the hidden meaning and mysteries of Āgamic expositions His keen sense of obedience, perseverance and absolute dedication have contributed much in developing his personality The above qualities are seen in him since his early age Right from the time when he joined the Sangha I have been an observor of these qualities of his, which have so developed His capacity to undertake to a big task has given me ever increasing satisfaction

I have undertaken this hard and tremendous task of editing the Âgamas relying on the strength of such learned disciples in the Sangha I am now, quite confident that I shall be able to complete this hazardous work with the help and assistance of my obedient, selfless and devout disciples.

On the holy occasion of this 25th centinary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the teachings of the Lord

Anuvrata Vihar

Delhi

Āchārya Tulasi

विसयाणुक्कम

आयारो

आयारचूला

केवलनाण-लद्धि-पद ३८, देवागमण-पद ४०, धम्मोवदेस-पद ४१, अहिंसामहव्वय-पद ४३, अहिंसामहव्वयस्स भावणा-पद ४४, सच्चमहव्वय-पद ५०, सच्चमहव्वयस्स भावणा-पद ५१, अतेणगमहव्वय-पद ५७, अतेणगमहव्वयस्स भावणा-पद ५८, बंभचेरमहव्वय-पद ६४, बंभचेरमहव्वयस्सभावणा-पद ६५, अपरिग्गहमहव्वय-पद ७१, अपरिग्गहमहव्वयस्स भावणा-पद ७२ ।

●

सूयगडो

पढमं अज्झयणं श्लो० १-८८ पृ० २५३-२६३

बंध-मोक्ख-पद १, पंचमहब्भूत-पद ७, एगप्प-वाद-पद ९, तज्जीव-तच्छरीर-वाद-पद ११, अकारक-वाद-पद १३, आयच्छट्ठ-वाद-पद १५, बुद्धाण पंचखंध-चतुधातु-वाद-पद १७, णिस्सारता-निदंसण-पद १९, णियति-वाद-पद २८, अण्णाणिय-वाद-पद ४१, सोगताण कम्मोवचय-चिंता-पद ५१, सुत्तकारस्स उत्तर-पद ५६, पूइकम्म-आहार-दोस-पद ६०, कयवाद-पद ६४, अवतार-वाद-पद ७०, अत्त-पवाद-पसंसा पद ७२, सिद्ध-वाद-पद ७४, उवसंहार-पद ७५, जावणा पद ७६, लोग-वाय-पद ८०, अहिंसा-पद ८३, भिक्खु-चरिया-पद ८६ ।

●

बीयं अज्झयणं श्लो० १-७६ पृ० २६४-२७५

संबोधि-पद १, अणिच्च-भावणा-पद ५, कम्म-विवाग-पद ७, कसाय-परिणाम-पद ९, सिक्खा-पद १०, वीर-पद १२, कम्म-विधूणण-पद १३, अणुलोम-परीसह-पद १६, माण-विवज्जण-पद २३, समता-धम्म-पद २८, सामण्णस्स माहप्प-पद ३२, सुहुम सल्ल-पद ३३, एगचारि-पद ३४, राय-संसग्ग विवज्जण-पद ४०, अहिगरण-विवज्जण-पद ४१, गिहि-भायण-पद ४२, उत्तम-धम्म-गहण-पद ४३, बंभचेर-पद ४७, मुणीण विवेग-पद ५०, आयहित-पद ५२, सामाइय-पद ५३, कम्मावचय-पद ५५, काम-पुच्छा पद ५६, आरंभ-परिणाम-पद ६३, परलोग-संदेह-पद ६४, परलोग-सद्दहणा-पद ६५, आयतुला-पद ६६, अगारवासे-धम्म-पद ६७, सच्चोवकम्म-पद ६८, असरण-भावणा-पद ७०, बोहि-दुल्लह-पद ७३, धम्मस्स तेकालियत्त-पद ७४ ।

●

तइयं अज्झयणं श्लो० १-८२ पृ० २७६-२८६

ओघ-उवसग्ग-पद १, सीत-परीसह-पद ४, गिम्ह-परीसह-पद ५, जायणा-परीसह-पद ६, वध-परीसह-पद ८, अक्कोस-परीसह-पद ९, फास-परीसह पद १२, केसलोय-बंभचेर-परीसह-पद १३, बंध-बंध-परीसह-पद १४, उक्खेव-पद १७, अणुकूल-परीसह-पद १८, भोग-निमंतण-पद ३२, अज्झत्थ-विसीदण-पद ४०, परवाद-वयण-पद ४७, अणुस्सुत-विसीदण-पद ६१, सात सातेण विज्जई-पद ६६, अबंभचेर-समत्थण-तण्णिरसण-पद ६९ ।

●

ठाणं

चउत्थ ठाण सू० १-६६२ पृ० ५६४-६८०

पंचमं ठाणं सू० १-२४० पृ० ६८१-७१६

पद ४९, णिमिज्जा-पद ५०, अज्जवट्ठाण-पद ५१, जोइसिय-पद ५२, देव पद ५३, परियारणा-पद ५४, अग्गमहिसी-पद ५५, अणिय-अणियाहिवइ-पद ५७, देवठिति-पद ६८, पडिमा-पद ७०, आजीव-पद ७१, गय-चिंध-पद ७२, उदिय-पग्गिय-हीवमग्ग पद ७३, हेउ पद ७५, अहेउ-पद ७६, अणुत्तर पद ८३, पच-कल्लाण-पद ८४, महाणदी उत्तरण-पद ९८, पढमपाउस-पद ९९, वासावास पद १००, अणुग्घातिय-पद १०१, रायंतेउर पवेस-पद १०२, गब्भधरण-पद १०३, णिग्गंथ णिग्गंथी-एगओवास-पद १०७, आसव-संवर-पद १०९, दंड-पद १११, किरिया पद ११२, परिण्णा-पद १२३, ववहार-पद १२४, सुत्त-जागर-पद १२५, रयादाण-वमण पद १२८, दत्ति-पद १३०, उवघात-विसोहि-पद १३१, दुल्लभ-सुलभबोहि-पद १३३, पडिसंलीण-अपडिसंलीण-पद १३५, संवर-असंवर-पद १३७, संजम-असंजम-पद १३९, तण-वणस्सइ-पद १४६, आयार-पद १४७, आयारपकप्प-पद १४८, आरोवणा-पद १४९, वक्खार-पव्वय-पद १५०, महादह-पद १५४, वक्खारपव्वय-पद १५६, धायइसंड-पुक्खरवर-पद १५८, समयक्खेत्त-पद-१५८, ओगाहणा-पद १५९, विवोय-पद १६४, निग्गंथी-अवलंबण-पद १६५, आयरिय-उवज्झाय-अइसेस-पद १६६, आयरिय-उवज्झाय-गणावक्कमण-पद १६७, इड्ढिमंत-पद १६८, अत्थिकाय-पद १६९, गइ-पद १७५, इंदियत्थ-पद १७६, मुंड-पद १७७, बायर-पद १७८, अचित्त-वाउकाय-पद १८३, णियंठ-पद १८४, उवधि-पद १९०, णिस्साट्ठाण-पद १९२, णिहि-पद १९३, सोच-पद १९४, छउमत्थ-केवलि-पद १९५, महाणिरय-पद १९६, महाविमाण-पद १९७, सत्त-पद १९८, भिक्खाग-पद १९९, वणीमग-पद २००, अचेल-पद २०१, उक्कल-पद २०२, समिती-पद २०३, जीव-पद २०४, गति-आगति-पद २०५, जीव-पद २०८, जोणि-ठिइ-पद २०९, संवच्छर-पद २१०, जीवस्स णिज्जाणमग्ग-पद २१४, छेयण-पद २१५, आणंतरिय-पद २१६, अणंत-पद २१७, णाण-पद २१८, पच्चक्खाण-पद २२१, पडिक्कमण-पद २२२, सुत्त-पद २२३, कप्प-पद २२५, वध-पद २२८, महाणदी-पद २३०, तित्थगर-पद २३४, सभा-पद २३५, णक्खत्त-पद २३७, पाव-कम्म-पद २३८, पोग्गल-पद २३९।

छट्ठं ठाणं   सू० १-१३२   पृ० ७१७-७३२

गण-धारण-पद १, निग्गंथी-अवलंबण-पद २, साहम्मियस्स अंतकम्म-पद ३, छउमत्थ-केवलि-पद ४, असंभव-पद ५, जीव-पद ६, गति-आगति-पद ९, जीव-पद ११, तणवणस्सइ-पद १२, णो-सुलभ-पद १३, इंदियत्थ-पद १४, संवर-असंवर-पद १५, सात-असात-पद १७, पायच्छित्त-पद १९, मणुस्स-पद २०, कालचक्क-पद २३, संघयण-पद ३०, संठाण पद ३१, अणत्तव अत्तव-पद ३२, आरिय-पद ३४, लोगट्ठिति-पद ३६, दिसा पद ३७, आहार-पद ४१, उम्माय-पद-४३, पमाय-पद ४४, पडिलेहणा-पद ४५, लेसा-पद ४७, अग्गमहिसी-पद ५०, देवठिति पद ५२, महत्तरिया-पद ५३, अग्गमहिसी-पद ५५, सामाणिय-पद ५६, मइ-पद ६१, तव-पद ६५, विवाद-पद ६७, खुड्डपाण-पद ६८, गोयरचरिया-पद ६९, महाणिरय-पद ७०, विमाण-पत्थड-पद ७२, नक्खत्त-पद ७३, इतिहास-पद ७६, संजम-

असजम-पद ८१, खेत्त-पव्वय-पद ८३, महादह-पद ८८, णदी-पद ८९, धायइसंड-पुक्खरवर-पद ९३, उउ-पद ९५, ओमरत्त-पद ९६, अतिरत्त-पद ९७, अत्थोग्गह पद ९८, ओहिणाण-पद ९९, अवयण-पद १००, कप्पस्स-पत्थार-पद १०१, पलिमथु-पद १०२, कप्पठिति-पद १०३, महावीरस्स-छट्ठभत्त-पद १०४, विमाण-पद १०७, देव-पद १०८, भोयण-परिणाम-पद १०९, विसपरिणाम-पद ११०, पट्ठ-पद १११, विरहिय-पद ११२, आउयबध-पद ११६, परभवियाउय-पद ११९, भाव-पद १२४, पडिक्कमण-पद १२५, नक्खत्त-पद १२६, पावकम्म-पद १२८, पोग्गल-पद १२९ ।

•

सत्तम ठाणं सू० १-१५५ पृ० ७३३-७५५

गणावक्कमण-पद १, विभगणाण-पद २, जोणिसगह-पद ३, गति-आगति-पद ४, सगहट्ठाण-पद ६, असगहट्ठाण-पद ७, पडिमा-पद ८, आयारचूला-पद ११, पडिमा-पद १३, अहेलोगट्ठिति-पद १४, वायरवाउकाइय-पद २५, सठाण-पद २६, भयठाण-पद २७, छउमत्थ-पद २८, केवलि-पद २९, गोत्त-पद ३०, णय-पद ३८, सरमडल-पद ३९, कायकिलेस-पद ४९, खेत्त-पव्वय-नदी-पद ५०, कुलगर-पद ६१, चक्कवट्टिरयण-पद ६७, दुस्समा-लक्खण-पद ६९, सुसमा-लक्खण-पद ७०, जीव-पद ७१, आउभेद-पद ७२, जीव-पद ७३, बभदत्त-पद ७४, मल्लीपव्वज्जा-पद ७५, दसण-पद ७६, छउमत्थ-केवलि-पद ७७, महावीर-पद ७९, विकहा-पद ८०, आयरिय-उवज्झाय-अइसेस-पद ८१, सजम-असजम-पद ८२, आरभ-पद ८४, जोणि-ठिइ-पद ९०, ठिति-पद ९१, अग्गमहिसी-पद ९४, देव-पद ९७, णदीसरवर-पद ११०, सेढी-पद ११२, अणिय-अणियाहिवइ-पद ११३, वयणविकप्प-पद १२९, विणय-पद १३०, समुग्घात-पद १३८, पवयणनिण्हग-पद १४०, अणुभाव-पद १४३, णक्खत्त-पद १४५, कूड पद १५०, कुलकोडि-पद १५२, पावकम्म-पद १५३, पोग्गल पद १५४ ।

•

अट्ठम ठाणं सू० १-१२८ पृ० ७५६-७७६

एगल्लविहार-पडिया-पद १, जोणिसगह-पद २, गति-आगति-पद ३, कम्म-बध-पद ५, आलोयणा-पद ९, सवर-असवर-पद ११, फास-पद १३, लोगट्ठिति-पद १४, गणिसपया-पद १५, महाणिहि-पद १६, समिति-पद १७, आलोयणा-पद १८, पायच्छित्त-पद २०, मदट्ठाण-पद २१, अकिरियावादि-पद २२, महाणिमित्त-पद २३, वयणविभत्ति-पद २४, छउमत्थ-केवलि-पद २५, आउवेद-पद २६, अग्गमहिसी पद २७, महग्गह-पद ३१, तणवणस्सइ-पद ३२, सजम-असजम-पद ३३, सुहुम-पद ३५, भरहचक्कवट्टि-पद ३६, पाम-गण-पद ३८, दसण-पद ३८, ओवमिय-पद ३९, अरिट्ठनेमि-पद ४०, महावीर-पद ४१, आहार-पद ४२, कण्हराइ-पद ४३, मज्झपदेस-पद ४८, महापउम-पद ५२, कण्ह-अग्गमहिसी-पद ५३, पुव्व-वत्थू-पद ५४, गति-पद ५५, दीवसमुद्द-पद ५६, काकणिरयण-पद ६१, मागध-जोयण-पद ६२, जवूदीव-पद ६३, धायइसड-पद ८६, पुक्खरवर-पद ८९, कूड-पद ९१, जगति पद ९२, कूड पद

•

नवम ठाण सू १-७३ पृ० ७७७-७९४

•

दसमं ठाण सू० १-१७८ पृ० ७९५-८२३

•

समवाओ

कम्म-पद ६, नक्खत्त-पद ७, ठिइ-पद १२, आणपाण-पद २१, आहारट्ठ-पद २२, सिद्धि-पद २३।

•

अट्ठमो समवाओ सू० १-१८ पृ० ८३७-८३८

मयट्ठाण-पद १, पवयणमाया-पद २, चेइयरुक्ख-पद ३, जबू-पद ४, कूडसामलि-पद ५, जबुद्दीव-पद ६, समुग्घाय-पद ७, गण-गणहर-पद ८, नक्खत्त पद ९ ठिइ-पद १०, आणपाण-पद १६, आहारट्ठ-पद १७, सिद्धि-पद १८।

•

नवमो समवाओ सू० १-२० पृ० ८३८-८४०

बभचेर-गुत्ति-पद १, बभचेर-अगुत्ति-पद २, बभचेर-पद ३, पास-पद ४, नक्खत्त-पद ५, तारा-पद ७ मच्छ-पद ८, भोम-पद ९, सुधम्मसभा-पद १०, कम्म-पद ११, ठिइ-पद १२, आणपाण-पद १८, आहारट्ठ-पद १९, सिद्धि-पद २०।

•

दसमो समवाओ सू० १-२५ पृ० ८४०-८४२

समण-धम्म-पद १, चित्तसमाहि-ट्ठाण-पद २, मदरपव्वय-पद ३, तित्थयर-पद ४, वासुदेव-वलदेव-पद ५, नक्खत्त-पद ७, रुक्ख-पद ८, ठिइ-पद ९, आणपाण-पद २३, आहारट्ठ-पद २४, सिद्धि-पद २५।

•

एक्कारसमो समवाओ सू० १-१६ पृ० ८४२-८४३

उवासगपडिमा-पद १, जोइसत-पद २, जोइस-पद ३, गणहर-पद ४, नक्खत्त-पद ५, विमाण-पद ६, मदर-पव्वय-पद ७, ठिइ-पद ८, आणपाण-पद १४, आहारट्ठ-पद १५, सिद्धि-पद १६।

•

बारसमो समवाओ सू० १-२० पृ० ८४३-८४५

भिक्खुपडिमा-पद १, सभोग-पद २, कितिकम्म-पद ३, विजयरायहाणी-पद ४, वलदेव-पद ५, मदरपव्वय-पद ६, जबूदीव-वेइया-पद ७, राइ-पद ८, दिवस-पद ९, ईसिपब्भार-पद १०, ठिइ-पद १२, आणपाण-पद १८, आहारट्ठ-पद १९, सिद्धि-पद २०।

•

तेरसमो समवाओ सू० १-१७ पृ० ८४५-८४६

किरियाठाण-पद १, विमाणपत्थड-पद २, विमाण-पद ३, जाइकुलकोडी-पद ५, पुव्व-पद ६, पओग-पद ७, सूरमडल-पद ८, ठिइ-पद ९ आणपाण-पद १५, आहारट्ठ-पद १६, सिद्धि-पद १७।

•

चउद्दसमो समवाओ सू० १-१८ पृ० ८४६-८४८

भूअग्गाम-पद १, पुव्व पद २, महावीर-पद ४, जीवट्ठाण-पद ५, भरहेरवय-पद ६, रयण-पद ७, महानई-पद ८, ठिइ-पद ९, आणपाण-पद १६, आहारट्ठ-पद १७, सिद्धि-पद १८।

पइण्णगसमवाओ सू० १-२६१ पृ० ९०४-९५४

तित्थयर-पद १, देवलोय-पद २, तित्थयर-पद ४, वासहर-पव्वय-पद ५, कचण-पव्वय-पद ६, तित्थयर-पद ७, देव-पद ८, तित्थयर-पद ९, देव-पद ११, महावीर-पद १२, जीवप्प-देसोगाहणा-पद १३, पास-पद १४, तित्थयर-पद १५, वासहर-पव्वय-पद १७, वक्खार-पव्वय-पद १८, देवलोय-पद १९, महावीर-पद २०, तित्थयर-पद २१, चक्कवट्टि-पद २२, वक्खार-पव्वय-पद २३, वासहरकूड-पद २४, तित्थयर-पद २५, चक्कवट्टि-पद २६, वक्खार-पव्वय-पद २७, वक्खार-पव्वयकूड-पद २८, नदणकूड-पद २९, विमाण-पद ३०, अतर-पद ३२, पास पद ३४, कुलगर-पद ३५, तित्थयर पद ३६, विमाण पद ३७, महावीर-पद ३८, तित्थयर-पद ४०, अ तर-पद ४१, विमाण-पद ४३, भोमेज्ज-विहार-पद ४४, महावीर-पद ४५, सूरिय-पद ४६, तित्थयर-पद ४७, विमाण-पद ४८, अ तर-पद ४९, कुलगर-पद ५१, ताराख्व-पद ५२, अ तर-पद ५३, विमाण-पद ५५, जमग-पव्वय-पद ५६, चित्त-विचत्तकूड-पद ५७, वट्टवेयड्ढ-पव्वय-पद ५८, हरि-हरिस्सहकूड-पद ५९, वलकूड-पद ६०, तित्थयर-पद ६१, पास पद ६२, दह-पद ६४, विमाण-पद ६५, पास-पद ६६, दह-पद ६७, अतर-पद ६८, दह-पद ६९, मदर-पव्वय-पद ७०, आवास-पद ७१, अतर-पद-७२, हरिवास-रम्मयवास-पद ७३, जीवा-पद ७४, मदर पव्वय-पद ७५, जवुद्दाव-पद ७६, लवणसमुद्द-पद ७७, पास-पद ७८, घायइसड-पद ७९, अतर-पद ८०, चक्कवट्टि पद ८१, अतर-पद ८२, आवास-पद ८३, तित्थयर-पद ८४, वासुदेव-पद ८५, महावीर-पद ८६, उसभ-महावीर-पद ८७, दुवालसग-पद ८८, रासि-पद १३५, पज्जत्तापज्जत्त-पद १४०, आवास-पद १४१, ठिइ-पद १५३, सरीर-पद १५८, ओहि-पद १७२, वेयणा-पद १७३, लेसा-पद १७४, आहार-पद १७५, आउगवध पद १७६, उववाय-उवट्टणा-विरह-पद १७९, आगरिस-पद १८४, सघयण पद १८६, सठाण पद १९६, वेय-पद २०९, सम-वसरण-पद २१५, कुलगर-पद २१६, तित्थयर-पद २२०, चक्कवट्टि-पद २३४, वलदेव-वासुदेव-पद २३८, एरवय-तित्थगर पद २४८, भावि-कुलगर-पद २४९, भावि-तित्थगर-पद २५१, भावि-चक्कवट्टि-पद २५४, भावि-वलदेव-वासुदेव-पद २५६, एरवय-भावि-तित्थगर-पद २५८, एरवय-भावि-चक्कवट्टि-वलदेव-वासुदेव-पद २५९, निक्खेव-पद २६१ ।

•

संकेत-निर्देशिका

● ० ये दोनो विन्दु पूर्त्त-पाठ के द्योतक हैं। पूर्त्त-पाठ के प्रारभ मे भरा विन्दु [●] और उसके 'समापन मे रिक्त विन्दु [०] रखा गया है। देखें—पृष्ठ १४ सू० १४०।

[?] कोष्ठकवर्ती पाठ के आगे प्रश्न [?] आदर्शो मे अप्राप्त किन्तु आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें—पृ० ४०४ सू० २।

' ' यह दो या उसमे अधिक शब्दो के स्थान मे पाठान्तर होने का सूचक है। देखें—पृ० ६ सू० २६।

× क्रास [×] पाठ न होने का सूचक है। देखें—पृ० ४ सू० ४।

० पाठ के पूर्व या अन्त मे खाली विन्दु [०] अपूर्ण पाठ का द्योतक है। देखें—पृ० ४ टिप्पणी १२, २।

'वण्णओ' व 'जाव' शब्द के टिप्पण मे उनके पूर्तिस्थल का निर्देश है। देखें—पृ० ४६६ टिप्पण ३ तथा पृ० ४६५ टिप्पण ४।

'एव', 'जहा' 'तहेव' आदि के टिप्पण मे उनकी पूर्तिस्थल का निर्देश है। देखें—पृ० ४६६, सू० १६०, १८४ तथा

अ, क, ख, ग, घ, च, छ व। देखें—सपादकीय मे 'प्रतिपरिचय' शीर्षक स्थल।

क्व क्वचित् प्रयुक्तादर्श।

स०पा० सक्षिप्त पाठ का सूचक है। देखें—पृ० ४ टिप्पण ३।

वृ वृत्ति का सूचक है। देखें—पृ० ४ टिप्पण ५।

वृपा वृत्ति सम्मत पाठान्तर। देखें—पृ० ४ टिप्पण १०।

दी० दीपिका सम्मत पाठान्तर। देखें—पृ० २५६ टिप्पण ६।

व्या०वि० व्याकरण विमर्श। देखें—पृ० २६० टिप्पण ३।

पू० पूर्ण पाठार्थ द्रष्टव्यम्। देखें—पृ० ५५४ टिप्पण ६।

चू० चूर्णि का सूचक है। देखें—पृ० ४० टिप्पण ५।

चू०पा० चूर्णि सम्मत पाठान्तर। देखें—पृ० ४ टिप्पण १०।

पद, विशेष गाथा तथा विशेष सूक्तियो को गहरे टाइप मे दिया गया है। देखें—आयारो।

अ० अणुओगदाराणि
ओ० ओववाइय
चद चदपण्णत्ती
ज जवूद्दीवपण्णत्ती
ठा० ठाण
दसा० दसासुयक्खधो
नि० निसीहज्झयण
प० पइण्णगसमवाओ
पण्ण० पण्णवणा
भ० भगवई
राय० रायपसेणइय
स० समवाओ
सू० सूयगडो

आयारो

पढमं अज्झयणं

सत्थपरिण्णा

पढमो उद्देसो

अप्पणो अत्थित्त-पदं

१ सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं[1]—इहमेगेसिं नो सण्णा भवइ, तं जहा—

पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
दाहिणाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
पच्चत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
उत्तराओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
उड्ढाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
'अहे वा दिसाओ'[2] आगओ अहमंसि,
'अण्णयरीओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
अणुदिसाओ वा'[3] आगओ अहमंसि,

२ एवमेगेसिं णो णातं भवति[4]—अत्थि मे आया ओववाइए[5], णत्थि मे आया ओववाइए, के अहं आसी ? के वा इओ चुओ[6] इह पेच्चा भविस्सामि ?

---

१ °मक्खायं (ख)।

२ अहे दिसाओ वा (क, ख, ग, घ, च) अहो दिसाओ वा (छ)।

३ अण्णयरीओ वा दिसाओ वा अणुदिसाओ (क, ग, छ), अण्णयरीओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा (घ), अण्णतराए दिसाओ वा अणुद्दिसाओ वा (च)।

४ भवति, तं जहा (चू)।

५ ओववातिते (क), उववादिए (च)।

६ चुते (घ)।

३ सेज्ज पुण जाणेज्जा—सहसम्मुइयाए[1], परवागरणेणं, अण्णेसिं वा अंतिए सोच्चा तं जहा—

पुरत्थिमाओ[2]	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि,[3]
•दक्खिणाओ	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि,
पच्चत्थिमाओ	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि,
उत्तराओ	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि,
उड्ढाओ	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि,
अहे	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि°,
अण्णयरीओ	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि,
अणुदिसाओ	वा		आगओ	अहमंसि,

४ एवमेगेसिं जं णातं[4] भवइ—अत्थि मे आया ओववाइए। जो इमाओ 'दिसाओ अणुदिसाओ वा'[5] अणुसंचरइ[6], सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ 'जो आगओ अणुसंचरइ,'[7] सोहं ॥

५ से आयावाई, लोगावाई, कम्मावाई, किरियावाई ॥

आस्रव-पदं

६ अकरिस्सं चहं, कारवेसुं[8] चहं, करओ यावि समणुण्णे भविस्सामि ॥

संवर-पदं

७ एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्म-समारंभा परिजाणियव्वा भवंति ॥

आस्रव-परिणाम-पद

८ अपरिण्णाय-कम्मे[9] खलु अयं पुरिसे, जो इमाओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा अणुसंचरइ, सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ सहेति, अणेगरूवाओ जोणीओ संधेइ[10], विरूवरूवे फासे य[11] पडिसंवेदेइ[12] ॥

---

१ समदियाए (क), सहसम्मुइयाओ (घ), सहम्समुइए (च)।
२. पुरित्थि° (ख, च)।
३ स० पा०—अहमंसि जाव अण्णयरी।
४ णाण (ख), णाय (घ)।
५ दिसाओ वा अणुदिसाओ (ख, छ), दिसाओ वा अणुदिसाओ य (चू, वृ)।
६ अणुसंसरइ, अणुसमरति (चूपा), अणुसंसरइ (वृपा)।
७ × (क, ख, ग, च)।
८ काराविस्सं (क, ख, ग), कारावेम्सं (घ), कारावेस्सु (च)।
९ कम्मा (क, घ)।
१० संधावती (चू), संधेइ (चूपा), संधावइ (वृपा)।
११ × (ख, ग, घ, च)।
१२ °संवेतेइ (क), °संवेदयइ (घ, च)।

कम्म-सोय-पदं

९ तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।।

१० इमस्स चेव जीवियस्स, परिवदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए[1], दुक्खपडिघायहेउ ।।

संवर-साहणा-पदं

११ एयावति सव्वावति लोगंसि कम्म-समारंभा परिजाणियव्वा भवंति ।।

१२ जस्सेते लोगंसि कम्म-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।।

बीओ उद्देसो

अण्णाण-पदं

१३. अट्टे लोए परिजुण्णे, दुस्संबोहे अविजाणए ।।

१४ अस्सिं लोए पव्वहिए[2] ।।

पुढविकाइयहिंसा-पदं

१५ तत्थ तत्थ पुढो पास[3], आतुरा[4] परितावेंति ।।

१६ संति पाणा पुढो सिया ।।

१७. लज्जमाणा पुढो पास ।।

१८ अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ।।

१९ जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं पुढवि-कम्म-समारंभेण पुढवि-सत्थं समारंभेमाणे[5] अण्णे वणेगरूवे[6] पाणे विहिंसति ।।

२० तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।।

२१ इमस्स चेव जीवियस्स, परिवदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए, दुक्खपडिघायहेउ ।।

२२ से सयमेव पुढवि-सत्थं समारभइ, अण्णेहिं वा पुढवि-सत्थं समारभावेइ, अण्णे वा पुढवि-सत्थं समारभंते[7] समणुजाणइ ।

२३ तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।।

२४ से तं संबुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।।

---

१ °मोयणाए (चू, वृपा) ।

२ पव्वविए (च) ।

३ पासे (क, घ) ।

४. आतुरा अस्सि (वृ) ।

५ समारंभमाणा (ख, ग, छ) ।

६ अणेग° (घ, च) ।

७ समारंभमाणे (घ) ।

२५ सोच्चा खलु भगवओ अणगाराण वा[1] अतिए इहमेगेसि णात भवति—एस खलु गथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए[2] ।।

२६ इच्चत्थ गढिए लोए ।।

२७ जमिण 'विरूवरूवेहि सत्थेहि'[3] पुढवि-कम्म-समारभेण पुढवि-सत्थ समारभेमाणे[4] अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिसइ ।।

पुढविकाइयाण जीवत्त-वेदणाबोध-पद

२८ से बेमि—अप्पेगे अधमब्भे[5], अप्पेगे अधमच्छे[6] ।।

२९ अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे, अप्पेगे 'गुप्फमब्भे, अप्पेगे गुप्फमच्छे, अप्पेगे जघमब्भे, अप्पेगे जघमच्छे, अप्पेगे जाणुमब्भे'[7] अप्पेगे जाणुमच्छे, अप्पेगे ऊरुमब्भे, अप्पेगे ऊरुमच्छे, अप्पेगे कडिमब्भे, अप्पेगे कडिमच्छे, अप्पेगे णाभिमब्भे, अप्पेगे णाभिमच्छे, अप्पेगे उयरमब्भे, अप्पेगे उयरमच्छे, अप्पेगे पासमब्भे, अप्पेगे पासमच्छे, अप्पेगे पिट्ठमब्भे[8], अप्पेगे पिट्ठमच्छे, अप्पेगे उरमब्भे, अप्पेगे उरमच्छे, अप्पेगे हिययमब्भे, अप्पेगे हिययमच्छे, अप्पेगे थणमब्भे, अप्पेगे थणमच्छे, अप्पेगे खधमब्भे, अप्पेगे खधमच्छे, अप्पेगे बाहुमब्भे, अप्पेगे बाहुमच्छे, अप्पेगे हत्थमब्भे, अप्पेगे हत्थमच्छे, अप्पेगे अगुलिमब्भे, अप्पेगे अगुलिमच्छे, अप्पेगे णहमब्भे, अप्पेगे णहमच्छे, अप्पेगे गीवमब्भे, अप्पेगे गीवमच्छे, अप्पेगे हणुयमब्भे[9] अप्पेगे हणुयमच्छे, अप्पेगे होट्ठमब्भे[10], अप्पेगे होट्ठमच्छे, अप्पेगे दतमब्भे, अप्पेगे दतमच्छे, अप्पेगे जिब्भमब्भे, अप्पेगे जिब्भमच्छे, अप्पेगे तालुमब्भे, अप्पेगे तालुमच्छे, अप्पेगे गलमब्भे, अप्पेगे गलमच्छे, अप्पेगे गडमब्भे, अप्पेगे गडमच्छे, अप्पेगे कण्णमब्भे, अप्पेगे कण्णमच्छे, अप्पेगे णासमब्भे[11], अप्पेगे णासमच्छे, अप्पेगे अच्छिमब्भे, अप्पेगे अच्छिमच्छे, अप्पेगे भमुहमब्भे, अप्पेगे भमुहमच्छे, अप्पेगे णिडालमब्भे, अप्पेगे णिडालमच्छे, अप्पेगे सीसमब्भे[12], अप्पेगे सीसमच्छे ।।

३०. अप्पेगे सपमारए, अप्पेगे उद्दवए ।।

---

१. × (घ) ।
२ निरए (क, ख, घ, च) ।
३ °रूवेसु सत्थेसु (क, च, छ) ।
४ समारभमाणे (क, ख, ग, च, छ) ।
५ अत्त° (च) ।
६ °मच्चे (घ) ।
७ पुप्फमब्भे अप्पेगे एव जघापुप्फगमब्भे अप्पेगे जाणुमब्भे (च) ।
८. पुट्ठि° (क); पिट्ठि° (ख, ग, च), पट्ठि° (घ) ।
९ हणुम° (क, घ, च, छ) ।
१० उट्ठ° (घ) ।
११ नक्क° (घ, च) ।
१२ सिर° (च) ।

हिंसाविवेग-पदं

३१ एत्थ सत्थ समारभमाणस्स इच्चेते आरभा अपरिण्णाता भवति ॥
३२ एत्थ सत्थ असमारभमाणस्स इच्चेते आरभा परिण्णाता भवति ॥
३३ **तं परिण्णाय मेहावी** नेव सय पुढवि-सत्थ समारभेज्जा, नेवण्णेहिं पुढवि-सत्थ समारभावेज्जा, नेवण्णे पुढवि-सत्थ समारभते समणुजाणेज्जा ॥
३४ जस्सेते पुढवि-कम्म-समारभा[1] परिण्णाता भवति, से हु मुणी परिण्णात-कम्मे ।
—त्ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

समप्पण-पदं

३५ से वेमि—से[2] जहावि अणगारे उज्जुकडे, णियागपडिवण्णे[3], अमाय कुव्वमाणे वियाहिए ॥
३६ **जाए सद्धाए णिक्खतो, तमेवअणुपालिया[4] । 'विजहित्तु विसोत्तिय'[5] ॥**
३७ **पणया वीरा महावीहिं ।**

आउकाइयाण अत्थित्त-अभयदाण-पदं

३८ लोग च आणाए अभिसमेच्चा[6] अकुतोभय ॥
३९ से वेमि—णेव सय लोग अब्भाइक्खेज्जा, णेव अत्ताण अब्भाइक्खेज्जा ।
जे लोय अब्भाइक्खइ, से अत्ताण अब्भाइक्खइ ।
जे अत्ताण अब्भाइक्खइ, से लोय अब्भाइक्खइ ॥

आउकाइयहिंसा-पद

४० **लज्जमाणा[7] पुढो पास ॥**
४१ अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ॥
४२. जमिण विरूवरूवेहिं सत्थेहिं उदय-कम्म-समारभेण उदय-सत्थ समारभमाणे अण्णे वणेगरूवे[8] पाणे विहिंसति ॥

---

१. °काय° (च) ।
२ × (क, छ) ।
३. निकाय° (चू, वृपा) ।
४ तामेव° (घ, च), °अणुपालेज्जा (वृ) ।
५ विजहित्ता° (ख, ग, घ, च), तिन्नोहुसि विसोत्तिय (चू), विजहित्ता पुव्वसजोग (वृपा) ।
६ °समिच्चा (ख, घ) ।
७ अट्टे लोए परिजुण्णे, दुस्सवोहे अविजाणए, अस्सि लोए पव्वहिए, तत्थ-तत्थ पुढो पास, आतुरा परितावेंति । एस आढत्त पुढविक्काइय-उद्देसयगमेण धुवगडिया सुत्तत्थतो भाणियव्वा अप्पेगे अधमब्भे (चू) ।
८ अणेग° (ग, घ) ।

४३ तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता ॥
४४ इमस्स चेव जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं ॥
४५ से सयमेव उदय-सत्थं समारभति, अण्णेहिं वा उदय-सत्थं समारभावेति, अण्णे वा[1] उदय-सत्थं समारभंते समणुजाणति ॥
४६ तं से अहियाए, तं से अबोहीए ॥
४७ से तं संबुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ॥
४८ सोच्चा खलु[2] भगवओ अणगाराणं वा[3] अंतिए इहमेगेसिं णायं भवति—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए ॥
४९ इच्चत्थं गढिए लोए ॥
५० जमिणं 'विरूवरूवेहिं सत्थेहिं'[4] उदय-कम्म-समारंभेणं उदयसत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे[5] पाणे विहिंसति ॥

आउकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं

५१ से बेमि—'अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ॥
५२ अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे ॥
५३ अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए'[6] ॥

हिंसाविवेग-पदं

५४. से बेमि—संति पाणा उदय-निस्सिया जीवा अणेगा ॥
५५. इहं[7] च खलु भो ! अणगाराणं उदय-जीवा वियाहिया ॥
५६ सत्थं चेत्थं[8] अणुवीइ पासा[9] ॥
५७ 'पुढो सत्थं'[10] पवेइयं ॥
५८ अदुवा अदिण्णादाणं ॥
५९. कप्पइ णे[11], कप्पइ णे पाउं, अदुवा विभूसाए ॥

---

१. × (ख, ग)
२ × (घ, च) ।
३. × (क, ख, ग) ।
४. °रूवेसु सत्थेसु (च) ।
५. अणेग° (घ, च) ।
६ × (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ), एतानि त्रीणि सूत्राणि वृत्तौ न व्याख्यातानि प्रतिष्वपि नोपलभ्यन्ते, केवलं चूर्णावेव ध्रुवकण्डिका निर्देशेन गृहीतानि सन्ति । पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यम्—१।२८-३० ।
७ इह (छ) ।
८ चेत्थ (क, ख, छ) ।
९. पास (घ, च) ।
१०. पुढोऽपास (वृपा) ।
११. णो (घ) ।

६० पुढो सत्थेहिं विउट्टति ।।
६१ एत्थवि तेसिं णो णिकरणाए ।।
६२ एत्थ सत्थं समारभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ।।
६३ एत्थ सत्थं असमारभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति ।।
६४ तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं उदय-सत्थं समारभेज्जा, णेवण्णेहिं उदय-सत्थं समारभावेज्जा, उदय-सत्थं समारभंतेवि अण्णे ण समणुजाणेज्जा ।।
६५ जस्सेते उदय-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णात-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।।

चउत्थो उद्देसो

तेउकाइयाणं अत्थित्त-पदं

६६ 'से बेमि'[1]—णेव सयं लोगं अब्भाइक्खेज्जा, णेव अत्ताणं अब्भाइक्खेज्जा ।।
जे लोगं अब्भाइक्खइ, से अत्ताणं अब्भाइक्खइ ।
जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ, से लोगं अब्भाइक्खइ ।।
६७ जे दीहलोग-सत्थस्स खेयण्णे, से असत्थस्स खेयण्णे ।
जे असत्थस्स खेयण्णे, से दीहलोग-सत्थस्स खेयण्णे ।।
६८ वीरेहिं एयं अभिभूय दिट्ठं, संजतेहिं सया जतेहिं सया अप्पमत्तेहिं ।।

तेउकाइयहिंसा-पदं

६९ जे पमत्ते गुणट्ठिए[2], से हु दंडे पवुच्चति ।।
७० तं परिण्णाय मेहावी इयाणिं णो जमहं पुव्वमकासी पमाएणं ।।
७१ लज्जमाणा पुढो पास[3] ।।
७२ अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ।।
७३ जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं अगणि-कम्म-समारंभेणं अगणि-सत्थं समारभमाणे, अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ।।
७४ तत्थ खलु[4] भगवया परिण्णा पवेइया ।।
७५ इमस्स चेव जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं ।।
७६ से सयमेव अगणि-सत्थं समारभइ, अण्णेहिं वा अगणि-सत्थं समारभावेइ, अण्णे वा अगणि-सत्थं समारभमाणे समणुजाणइ ।।

---

१ सेयं मिणं (च) ।
२ गुणट्ठी (क, वृ), गुणट्ठीए (ख, ग) ।
३ पुव्वंगडियं भणिऊण जाव से बेमि (चू) ।
४ × (च) ।

७७ त से अहियाए, त से अवोहीए ॥
७८ से त सवुज्झमाणे, आयाणीय समुट्ठाए ॥
७९. सोच्चा खलु भगवओ अणगाराण वा अतिए इहमेगेसिं णाय भवति—एस खलु गथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए ॥
८० इच्चत्थ गढिए लोए ॥
८१ जमिण विरूवरूवेहिं सत्थेहिं अगणि-कम्म-समारभेण अगणि-सत्थ समारभमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ॥

तेउकाइयाण जीवत्त-वेदणावोध-पद

८२ से वेमि—अप्पेगे अधमब्भे, अप्पेगे अधमच्छे ॥
८३ अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे[1] ॥
८४. अप्पेगे सपमारए, अप्पेगे उद्दवए ॥

हिंसाविवेग-पद

८५ से वेमि—सति पाणा पुढवि-णिस्सिया, तण-णिस्सिया, पत्त-णिस्सिया, कट्ठ-णिस्सिया, गोमय-णिस्सिया, कयवर-णिस्सिया ।

संति सपातिमा पाणा, आहच्च संपयंति य[2] ।
अगणिं च खलु पुट्ठा, एगे सघायमावज्जंति ॥

जे तत्थ सघायमावज्जति, ते तत्थ परियावज्जति[3] ।
जे तत्थ परियावज्जति, ते तत्थ उद्दायति ॥

८६ एत्थ सत्थ समारभमाणस्स इच्चेते आरभा अपरिण्णाया भवति ॥
८७ एत्थ सत्थ असमारभमाणस्स इच्चेते आरभा परिण्णाया भवति ॥
८८ त परिण्णाय मेहावी नेव सय अगणि-सत्थ समारभेज्जा, नेवण्णेहिं अगणि-सत्थ समारभावेज्जा, अगणि-सत्थ समारभमाणे अण्णे न समणुजाणेज्जा ॥
८९ जस्सेते अगणि-कम्म-समारभा परिण्णाया भवति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति वेमि ॥

---

१ द्रष्टव्यम्— १।५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
२ × (क, ख, ग, च) ।
३ °विज्जति (क, ख, छ) ।

पंचमो उद्देसो

अणगार-पद

९० तं[1] णो करिस्सामि समुट्ठाए ॥

९१ मता[2] मइम अभय विदित्ता ॥

९२. त जे णो करए एसोवरए, एत्थोवरए एस अणगारेत्ति पवुच्चइ ॥

गिहचाइणो वि गिहवास-पद

९३ जे गुणे से आवट्टे, जे आवट्टे से गुणे ॥

९४. उड्ढ अह[3] तिरिय पाईण 'पासमाणे रूवाइं पासति'[4], 'सुणमाणे सद्दाइ सुणेति'[5] ॥

९५ उड्ढ अह तिरिय पाईण मुच्छमाणे रूवेसु मुच्छति, सद्देसु आवि ॥

९६ एस लोए वियाहिए ॥

९७ एत्थ अगुत्ते अणाणाए ॥

९८ पुणो-पुणो गुणासाए, वकसमायारे, पमत्ते गारमावसे ॥

वणस्सइकाइय हिंसा-पदं

९९ लज्जमाणा पुढो पास[6] ॥

१०० अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ॥

१०१ जमिण विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वणस्सइ-कम्म-समारभेण वणस्सइ-सत्थ समारभमाणे अण्णे वणेगरूवे[7] पाणे विहिंसति ॥

१०२ तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता ॥

१०३ इमस्स चेव जीवियस्स, परिवदण-माणण-पूयणाए, जाती-मरण-मोयणाए, दुक्खपडिघायहेउ ॥

१०४ से सयमेव वणस्सइ-सत्थ समारभइ, अण्णेहिं वा वणस्सइ-सत्थ समारभावेइ, अण्णे वा वणस्सइ-सत्थ समारभमाणे समणुजाणइ ॥

१०५ त से अहियाए, त से अबोहीए ॥

१०६ से त सवुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ॥

१०७ सोच्चा भगवओ, अणगाराण वा अतिए इहमेगेसिं णाय भवति—एस खलु गथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णिरए ॥

---

१ ते (च)।

२. मत्ता (क, घ, च)।

३ अव (वृ), अहे य (ख)।

४ पासियाइ दरिसेति (चू), पस्समाणो रूवाइ पासइ (चूपा)।

५ सुणिमाणि सुणेति (चू); सुणमाणो सद्दाइ सुणेति। एव गधरसफासेहि वि भाणियव्व (चूपा)।

६ घुवगडिया (चू)।

७. अणेग° (ख, ग, च)।

१०८ इच्चत्थं गढिए लोए ।

१०९ जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वणस्सइ-कम्म-समारंभेणं वणस्सइ-सत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ॥

वणस्सइकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं

११० से बेमि—अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ॥

१११ अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे[1] ॥

११२ अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए ॥

वणस्सइजीवाणं माणुस्सेण तुलणा-पदं

११३ से बेमि—इमंपि जाइधम्मयं, एयंपि जाइधम्मयं । इमंपि वुड्ढिधम्मयं, एयंपि वुड्ढिधम्मयं । इमंपि चित्तमंतयं, एयंपि चित्तमंतयं । इमंपि छिन्नं मिलाति, एयंपि छिन्नं मिलाति । इमंपि आहारगं, एयंपि आहारगं । इमंपि अणिच्चयं, एयंपि अणिच्चयं । इमंपि असासयं, एयंपि असासयं । इमंपि चयावचइयं, एयंपि चयावचइयं[2] । इमंपि विपरिणामधम्मयं, एयंपि विपरिणामधम्मयं ॥

हिंसाविवेग-पदं

११४. एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ॥

११५ एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति ॥

११६. **तं परिण्णाय मेहावी**—णेव सयं वणस्सइ-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं वणस्सइ-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे वणस्सइ-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ॥

११७ जस्सेते वणस्सइ-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ॥

छट्ठो उद्देसो

संसार-पदं

११८. से बेमि—संतिमे तसा पाणा, तं जहा—अंडया पोयया जराउया रसया संसेयया संमुच्छिमा उब्भिया ओववाइया ॥

११९ एस संसारेत्ति[3] पवुच्चति ॥

---

१ द्रष्टव्यम्—१।५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम् । (ख, ग) ।

२ चओवचइयं (क, घ, च, छ, चू), चयावचयं ३. संसारित्ति (क, ख) ।

१२०. **मदस अवियाणओ ॥**
१२१ णिज्झाइत्ता पडिलेहित्ता पत्तेय परिणिव्वाण ॥
१२२ सव्वेसि पाणाण सव्वेसि भूयाण सव्वेसि जीवाणं सव्वेसि सत्ताण अस्साय[1] अपरिणिव्वाण महब्भय दुक्ख ति बेमि ॥

तसकाइयहिंसा-पदं

१२३ **तसंति पाणा पदिसोदिसासु य ॥**
१२४ **तत्थ-तत्थ पुढो पास, आउरा परितावेंति[2] ॥**
१२५ **संति पाणा पुढो सिया ॥**
१२६ **लज्जमाणा पुढो पास ॥**
१२७ अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ॥
१२८ जमिण विरूवरूवेहि सत्थेहि तसकाय-समारभेण तसकाय-सत्थ समारभमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिसति ॥
१२९ तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ॥
१३० इमस्स चेव जीवियस्स, परिवदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए, दुक्खपडिघायहेउ ॥
१३१ से सयमेव तसकाय-सत्थ समारभति, अण्णेहि वा तसकाय-सत्थ समारभावेइ, अण्णे वा[3] तसकाय-सत्थ समारभमाणे समणुजाणइ ॥
१३२ त से अहियाए, त से अबोहीए ॥
१३३ से त सबुज्झमाणे, **आयाणीयं समुट्ठाए ॥**
१३४ सोच्चा भगवओ, अणगाराण 'वा अतिए'[4] इहमेगेसि णाय भवइ—एस खलु गथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए ॥
१३५ **इच्चत्थ गढिए लोए ॥**
१३६ जमिण विरूवरूवेहि सत्थेहि तसकाय-समारभेण तसकाय-सत्थ समारभमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिसति ॥

तसकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं

१३७ से बेमि—अप्पेगे अधमब्भे, अप्पेगे अधमच्छे ॥
१३८. अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे[5] ॥
१३९ अप्पेगे सपमारए, अप्पेगे उद्दवए ॥

---

१ आसय (क्व) ।
२ अट्टा 'ते जाव परितावेंति' धुवगडिया (चू) ।
३ वि (घ) ।
४ × (क) । सर्वत्र नास्ति ।
५ द्रष्टव्यम्—१।५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

हिंसाविवेग-पद

१४० से बेमि—अप्पेगे अच्चाए वहंति, अप्पेगे अजिणाए वहंति,[1] अप्पेगे मसाए वहंति, अप्पेगे सोणियाए वहंति,[2] •अप्पेगे हिययाए[3] वहंति, अप्पेगे पित्ताए वहंति, अप्पेगे वसाए वहंति, अप्पेगे पिच्छाए वहंति, अप्पेगे पुच्छाए वहंति, अप्पेगे वालाए वहंति, अप्पेगे सिंगाए वहंति, अप्पेगे विसाणाए वहंति, अप्पेगे दंताए वहंति, अप्पेगे दाढाए वहंति, अप्पेगे नहाए वहंति, अप्पेगे ण्हारुणीए वहंति, अप्पेगे अट्ठीए वहंति, अप्पेगे अट्ठिमिंजाए वहंति, अप्पेगे अट्ठाए वहंति, अप्पेगे अणट्ठाए° वहंति, अप्पेगे 'हिंसिंसु मेत्ति वा'[4] वहंति, अप्पेगे हिंसंति मेत्ति वा वहंति, अप्पेगे हिंसिस्संति मेत्ति वा वहंति ॥

१४१ एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ॥

१४२ एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति ॥

१४३ तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं तसकाय-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं तसकाय-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे तसकाय-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ॥

१४४ जस्सेते तसकाय-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ॥

सत्तमो उद्देसो

अत्तुला-पदं

१४५ 'पहू एजस्स'[5] दुगंछणाए ॥

१४६ आयंकदंसी अहियं ति नच्चा ॥

१४७ जे अज्झत्थं जाणइ, से बहिया जाणइ । जे बहिया जाणइ, से अज्झत्थं जाणइ ॥

१४८ एयं तुलमण्णेसिं ॥

१४९ इह[6] संतिगया दविया, णावकंखंति वीजिउं[7] ॥

वाउकाइयहिंसा-पदं

१५० लज्जमाणा[8] पुढो पास ॥

---

१ हणंति (च), ववंति (क), हिंसंति (घ) ।

२ स० पा०—एवं हिययाए पित्ताए वसाए पिच्छाए पुच्छाए वालाए सिंगाए विसाणाए दंताए दाढाए नहाए ण्हारुणीए अट्ठीए अट्ठिमिंजाए अट्ठाए अणट्ठाए ।

३ हिउयाए (क, च) ।

४ हिंसिंसु इति वा (ख, ग) ।

५ पहू य एगस्स (वृ), पभू एयस्स (क) ।

६ इति (चूपा) ।

७ जीविय (क, छ), जीविउ (ख, ग, घ, च, वृ), मूलपाठः चूर्ण्यभिप्रायेण स्वीकृतोस्ति । 'दसवेआलिय' सूत्रस्य (६।३७) श्लोकेनास्य पुष्टिर्जायते ।

८. अट्टा परिजुण्णा आकंपिता जाव आतुरा परितावितां धुवगटिया (चू) ।

१५१ अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ॥

१५२ जमिण विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वाउकम्म-समारभेण वाउ-सत्थ समारभमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ॥

१५३ तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ॥

१५४ इमस्स चेव जीवियस्स, परिवदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए, दुक्खपडिघायहेउ ॥

१५५ से सयमेव वाउ-सत्थ समारभति, अण्णेहिं वा वाउ-सत्थ समारभावेति, अण्णे वा वाउ-सत्थ समारभते समणुजाणइ ॥

१५६ त से अहियाए, त से अवोहीए ॥

१५७ से त संवुज्झमाणे, **आयाणीयं समुट्ठाए** ॥

१५८ सोच्चा भगवओ, अणगाराण वा अतिए इहमेगेसिं णाय भवइ—एस खलु गथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णिरए ॥

१५९ **इच्चत्थं गढिए लोए** ॥

१६० जमिण विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वाउकम्म-समारभेण वाउ-सत्थ समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ॥

वाउकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं

१६१ से वेमि—अप्पेगे अधमब्भे, अप्पेगे अधमच्छे ।

१६२ अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे[1] ॥

१६३ अप्पेगे सपमारए, अप्पेगे उद्दवए ॥

हिंसाविवेग-पदं

१६४ से वेमि—**सति संपाइमा पाणा, आहच्च संपयंति य ॥**
फरिस च खलु पुट्ठा, एगे संघायमावज्जति ॥
जे तत्थ सघायमावज्जति, ते तत्थ परियावज्जति,
जे तत्थ परियावज्जति, ते तत्थ उद्दायति ॥

१६५ एत्थ सत्थ समारभमाणस्स इच्चेते आरभा अपरिण्णाया भवति ॥

१६६ एत्थ सत्थ असमारभमाणस्स इच्चेते आरभा परिण्णाया भवति ॥

१६७ **त परिण्णाय मेहावी** णेव सय वाउ-सत्थ समारभेज्जा, णेवण्णेहिं वाउ-सत्थ समारभावेज्जा, णेवण्णे वाउ-सत्थ समारभते समणुजाणेज्जा ॥

१६८ जस्सेते वाउ-सत्थ-समारभा परिण्णाया भवति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे त्ति वेमि ॥

---

१ द्रष्टव्यम्—१।५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

मुणि-संवोध-पदं

१६९ एत्थं पि जाणे उवादीयमाणा ॥

१७० जे आयारे न रमंति ॥

१७१ आरंभमाणा विणय वियति ॥

१७२ छन्दोवणोया अज्झोववण्णा ॥

१७३ 'आरभसत्ता पकरेंति सग'[1] ॥

१७४ से वसुम सव्व-समन्नागय-पण्णाणेण अप्पाणेण अकरणिज्ज पाव कम्म ॥

१७५ त[2] णो अण्णेसि ॥

हिंसाविवेग-पदं

१७६ त परिण्णाय मेहावी णेव सय छज्जीव-णिकाय-सत्थ समारभेज्जा, णेवण्णेहि छज्जीव-णिकाय-सत्थ समारभावेज्जा, णेवण्णे छज्जीवणिकाय-सत्थ समारभते समणुजाणेज्जा ॥

१७७ जस्सेते छज्जीव-णिकाय-सत्थ-समारभा परिण्णाया भवति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति वेमि ॥

---

१ 'आरंभसत्ता पकरेंति सग', अस्य पाठस्यानन्तर चूर्ण्यां निम्न- पाठ उपलभ्यते—'एत्थ वि जाण अणुवाइयमाणा, जे आयारे रमति, अणारभमाणा विणय वदति, पसत्यछदोवणीता, तत्थेव अज्झोववण्णा आरभे असत्ता णो पगरेंति सग' ।

२ × (ख, ग, छ) ।

बीअं अज्झयणं

लोगविजओ

पढमो उद्देसो

आसत्ति-पदं

१ जे गुणे से मूलट्ठाणे, जे मूलट्ठाणे से गुणे ॥

२ इति से गुणट्ठी महता परियावेणं[1] वसे पमत्ते[2]—माया मे, पिया मे, भाया मे, भइणी मे, भज्जा मे, पुत्ता मे, धूया मे, सुण्हा मे[3], सहि-सयण-संगथ-संथुया मे, विवित्तोवगरण[4]-परियट्टण-भोयण-अच्छायण[5] मे, इच्चत्थं[6] गढिए लोए—वसे पमत्ते ॥

३ **अहो य[7] राओ य परितप्पमाणे, कालाकाल-समुट्ठाई, संजोगट्ठी अट्ठालोभी, आलुंपे सहसक्कारे[8], विणिविट्ठचित्ते[9], एत्थ सत्थे[10] पुणो-पुणो ॥**

असरणाणुपेहापुव्वं अप्पमाद-पदं

४ अप्पं च खलु आउं इहमेगेसिं[11] माणवाणं, तं जहा—सोय-परिण्णाणेहिं[12] परिहायमाणेहिं, चक्खु-परिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, घाण-परिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, रस-परिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, फास-परिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं ॥

---

१ °वेण पुणो पुणो (छ), चूर्णौ वृत्तौ च नैतत् पदं व्याख्यातमस्ति ।

२ पमत्ते, तं जहा (क, ख, ग, घ, च) ।

३ मे, सहाया मे (घ) ।

४ विचित्तो° (ख,च) ।

५ च्छायण (क), अच्छादयण (च्) ।

६ इच्चत्थं से (क), इच्चत्थ इत्थ से (ग), इच्चत्थ एत्थ से (च) ।

७ × (क,ख,ग,घ) ।

८ सहसाकारे (क,ख,ग,छ), सहस्सकारे (च) ।

९ °चिट्ठे (चू,वृ,च) ।

१० सत्ते (चू, वृपा), सत्थे (चूपा) ।

११ इधमेगेसिं चि (च) ।

१२ °पण्णाणेण (चू,क) ।

५ अभिक्कंतं[1] च खलु वयं सपेहाए[2] ॥

६ तओ से एगया मूढभावं जणयंति[3] ॥

७ जेहिं वा सद्धिं संवसति[4] 'ते वा णं'[5] एगया णियगा तं पुव्विं परिवयंति, सो वा ते णियगे पच्छा परिवएज्जा ॥

८ **नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा।**
तुमं पि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा ॥

९ से ण हस्साए[6], ण किड्डाए, ण रतीए, ण विभूसाए ॥

१० इच्चेवं समुट्ठिए अहोविहाराए ॥

११ अंतरं च खलु इमं सपेहाए[7]—धीरे मुहुत्तमवि णो पमायए ॥

१२. **वओ[8] अच्चेइ जोव्वणं व ॥**

१३ **जीविए इह जे पमत्ता ॥**

१४ से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपित्ता विलुंपित्ता उद्दवित्ता उत्तासइत्ता ॥

१५ अकडं करिस्सामित्ति मण्णमाणे ॥

१६ जेहिं वा सद्धिं संवसति 'ते वा णं'[9] एगया णियगा तं पुव्विं पोसेंति, सो वा ते नियगे पच्छा पोसेज्जा ॥

१७ **नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ॥**
तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा ॥

१८ उवाइय[10]-सेसेण[11] वा सन्निहि-सन्निचओ कज्जइ[12], इहमेगेसिं असंजयाणं[13] भोयणाए ॥

१९ तओ से एगया रोग-समुप्पाया समुप्पज्जंति ॥

२० जेहिं वा सद्धिं संवसति ते वा णं एगया णियगा तं[14] पुव्विं परिहरंति, सो वा ते णियगे पच्छा परिहरेज्जा ॥

२१ **नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ॥**
तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा ॥

---

१ अहिक्कंन (क), अहिकंत (घ), अतिकंत (च)।

२ संपेहाए (क, घ, छ), वृत्तौ 'स पेहाए' इति पदद्वयं पृथग् व्याख्यातम्—प्रेक्ष्य पर्यालोच्य से इति प्राणी (वृ)।

३ जणयति (वृ), जणयंति (वृपा)।

४ संवसंति (घ,च,छ)।

५ ते वण (क,छ), ते विण (घ), त एव ण (वृ)।

६ हासाए (क,ख,ग,छ)।

७ संपेहाए (क, ख, च), वृत्तिकृता पंचमसूत्रे स प्रेक्ष्य इति व्याख्यातम्, अत्र च संप्रेक्ष्य।

८ वओ (क,ख,ग)।

९ त एव वा ण (वृ), ते व ण (ख)।

१० उवादीत (क, च)।

११ सेस तेण (क, ख, घ, च, छ)।

१२ किज्जइ (ख, ग, छ)।

१३ माणवाणं (च)।

१४. × (क, ख, ग, घ)।

२२ जाणित्तु दुक्ख पत्तेय[1] साय ॥
२३ अणभिक्कत[2] च खलु वय सपेहाए[3] ॥
२४ खण जाणाहि पडिए !
२५ जाव सोय-'पण्णाणा अपरिहीणा,'[4]
जाव णेत्त-पण्णाणा अपरिहीणा,
जाव घाण-पण्णाणा अपरिहीणा,
जाव जीह-पण्णाणा अपरिहीणा,
जाव फास-पण्णाणा अपरिहीणा ॥
२६ इच्चेतेहिं विरूवरूवेहिं पण्णाणेहिं अपरिहीणेहिं[5] आयट्ठ सम्म समणुवासिज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

अरति-निव्वत्तण-पदं

२७ अरइ आउट्टे से मेहावी ॥
२८ खणसि मुक्के ॥
२९ अणाणाए पुट्ठा 'वि एगे'[6] णियट्टति ॥
३० मंदा मोहेण पाउडा ॥
३१ "अपरिग्गहा भविस्सामो" समुट्ठाए, लद्धे कामेहिगाहंति[7] ॥
३२ अणाणाए मुणिणो पडिलेहति ॥
३३ एत्थ मोहे पुणो पुणो सण्णा ॥
३४ णो हव्वाए णो पाराए ॥
३५ विमुक्का[8] हु ते जणा, जे जणा पारगामिणो ॥

अणगार-पदं

३६ लोभ अलोभेण दुगछमाणे, लद्धे कामे नाभिगाहइ[9] ॥
३७ विणइत्तु[10] लोभ निक्खम्म, एस अकम्मे जाणति-पासति ॥

---

१ पत्तेय (क, ख, ग, घ, च) ।
२ अणतिक्कतं (क) ।
३ सपेहाए (क, ख, ग, घ, च) ।
४ परिण्णाणेहिं अपरिहायमाणेहिं (क,ख,ग,घ,छ) सर्वत्र ।
५ अपरिहीयमाणेहिं (क,ख,ग,घ,छ,वृ) ।
६ × (चू) ।
७ °अभिग्गाहति (क), °अभिग्गहति (ख,छ), अभिगाहति (ग) ।
८ विमुत्ता (क,ख,ग,घ,छ) ।
९ णोभिगाहइ (क, च) ।
१०. विणावि (क, ग, छ, वृ) ।

३८ पडिलेहाए णावकखति ॥

३९. एस अणगारेत्ति पवुच्चति ॥

दंड-समादाण-पद

४० अहो य राओ य[1] परितप्पमाणे, कालाकालसमुट्ठाई, सजोगट्ठी अट्ठालोभी, आलुपे सहसक्कारे,[2] विणिविट्ठचित्ते, एत्थ सत्थे पुणो-पुणो ॥

४१ से आय-बले, से णाइ-बले[3], से मित्त-बले, से पेच्च-बले, से देव-बले, से राय-बले, से चोर-बले, से अतिहि-बले, से किवण[4]-बले, से समण-बले ॥

४२ इच्चेतेहिं विरूवरूवेहिं कज्जेहिं 'दंड-समायाण ॥

४३ सपेहाए[5] भया कज्जति[6] ॥

४४ पाव-मोक्खोत्ति मण्णमाणे ॥

४५ अदुवा आससाए ॥

हिंसाविवेग-पद

४६ त परिण्णाय मेहावी णेव सय एएहिं कज्जेहिं दड समारभेज्जा, णेवण्ण[7] एएहिं कज्जेहिं दड समारभावेज्जा, 'णेवण्ण एएहिं कज्जेहिं दड समारभत समणुजाणेज्जा'[8] ॥

अणासत्ति-पद

४७ एस मग्गे आरिएहिं[9] पवेइए ॥

४८ जहेत्थ कुसले णोवलिंपिज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

समत्त-पदं

४९ 'से असइ उच्चागोए, असइ णीयागोए। णो हीणे, णो अइरित्ते'[10], णो पीहए[11] ॥

---

१ × (क,ख) ।

२ सहसाकारे (क, ख, ग) ।

३ बले, से सयण-बले (क, ख, ग, घ, च) ।

४ किविण (क, ख, ग) ।

५ सपेहाए (क, ख, ग, घ, च, छ), 'सप्रेक्षया' पर्यालोचनया एव सप्रेक्ष्य वा (वृ) ।

६ दड समारभति (चू), दड-समायाण··· कज्जइ (चूपा) ।

७ णेव अन्नेहिं (छ) ।

८ एएहिं कज्जेहिं दड समारभते वि अण्णे ण समणुजाणिज्जा (क, ख, ग, घ, च) ।

९ आयरिएहिं (क, ख, घ) ।

१० नागार्जुनीया—एगमेगे खलु जीवे अईअद्धाए असइ उच्चागोए असइ णीयागोए कडगट्ठयाए णो हीणे नो अइरित्ते (चू, वृ) ।

११ पीहेइ (ख, ग) ।

५० इति[1] सखाय के गोयावादी ? के माणावादी ? कसि वा एगे गिज्झे ?
५१ तम्हा पडिए णो हरिसे, णो कुज्झे ॥
५२ **भूएहि जाण पडिलेह सात[2] ॥**
५३ **समिते एयाणुपस्सी ॥**
५४ त जहा—अधत्त बहिरत्त मूयत्त काणत्त कुटत्त खुज्जत्त वडभत्त सामत्त सबलत्त ॥
५५ सहपमाएण अणेगरूवाओ जोणीओ सधाति[3], विरूवरूवे फासे पडिसवेदेइ[4] ॥
५६ से अबुज्झमाणे 'हतोवहते जाइ-मरण अणुपरियट्टमाणे'[5] ॥

परिग्गह-तद्दोस-पदं

५७ जीविय पुढो पिय इहमेगेसि माणवाण, खेत्त-वत्थु ममायमाणाण ॥
५८ आरत्त विरत्त मणिकुडल सह हिरण्णेण, इत्थियाओ परिगिज्झ तत्थेव रत्ता ॥
५९. ण एत्थ तवो वा, दमो वा, णियमो वा दिस्सति ॥
६० सपुण्ण बाले जीविउकामे लालप्पमाणे मूढे विप्परियासुवेइ[6] ॥
६१ **इणमेव णावकखति, जे जणा धुवचारिणो ।**
जाती-मरणं परिण्णाय, चरे संकमणे दढे ॥
६२ **णत्थि कालस्स णागमो ॥**
६३ **सव्वे पाणा पियाउया[7]** सुहसाया दुक्खपडिकूला अप्पियवहा पियजीविणो जीविउकामा ॥
६४ **सव्वेसिं जीविय पिय ॥**
६५ त परिगिज्झ दुपय चउप्पय अभिजुजियाण ससिचियाण तिविहेण जा वि से तत्थ मत्ता भवइ—अप्पा वा बहुगा वा ॥
६६ से तत्थ गढिए चिट्ठइ, भोयणाए ॥
६७ तओ से एगया विपरिसिट्ठ[8] सभूय महोवगरण भवइ ॥

---

१ एवं (चू) ।
२ नागार्जुनीया —पुरिसेण खलु दुक्खविवाग-गवेसएण पुव्वि ताव जीवाभिगमे कायव्वे, जाइ च इच्छिताणिच्छे, त सातासात विया-णिया हिंसोवरती कायव्वा (चू) ।
नागार्जुनीया —पुरिसे ण खलु दुक्खुव्वय-सुहेसए (वृ) ।
३ सधाएति (ख, ग, च) ।
४ परि° (घ, वृ) ।
५ हतोवहते विणिविट्ठ चित्ते एत्थ सत्ते पुणो पुणो (चू) ।
६ विप्परियासमुवेइ (ख, ग, घ, छ) ।
७ पियायया (वृपा) ।
८ विविह परिसिट्ठ (क, ख, ग, घ, च) ।

६८. तं पि से एगया दायाया विभयंति, अदत्तहारो[1] वा से अवहरति,[2] रायाणो वा
से विलुंपंति, णस्सति वा से, विणस्सति वा से, अगारदाहेण वा से डज्झइ ॥
६९ इति से परस्स अट्ठाए कूराइं कम्माइं बाले पकुव्वमाणे तेण दुक्खेण मूढे[3]
विप्परियासुवेइ[4] ॥
७० मुणिणा हु एयं पवेइयं ॥
७१ **अणोहंतरा एते, नो य ओहं तरित्तए।**
अतीरंगमा एते, नो य तीरं गमित्तए।
अपारंगमा एते, नो य पारं गमित्तए ॥
७२ **आयाणिज्जं च आयाय, तम्मि ठाणे ण चिट्ठइ।**
वितहं पप्पखेयण्णे[5], तम्मि ठाणम्मि चिट्ठइ ॥
७३ उद्देसो पासगस्स णत्थि ॥
७४ बाले पुण णिहे कामसमणुण्णे असमियदुक्खे दुक्खी दुक्खाणमेव आवट्टं
अणुपरियट्टइ।

—त्ति बेमि ॥

चउत्थो उद्देसो

भोग-भोगि-दोस-पदं

७५ तओ से एगया रोग-समुप्पाया समुप्पज्जंति ॥
७६ जेहिं वा सद्धिं संवसति ते वा णं एगया णियया पुव्विं परिवयंति, सो वा ते
णियगे पच्छा परिवएज्जा ॥
७७ **नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा।**
तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा ॥
७८ **जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं सायं ॥**
७९ भोगामेव अणुसोयंति ॥
८०. इहमेगेसिं माणवाणं ॥
८१ तिविहेण जावि से तत्थ मत्ता भवइ—अप्पा वा बहुगा वा ॥
८२ से तत्थ गढिए चिट्ठति, भोयणाए ॥
८३ ततो से एगया विपरिसिट्ठं संभूयं महोवगरणं भवति ॥

---

१ अदत्ताहारा (ख, ग)।
२ अवहरंति (ख, ग)।
३ समूढे (क, घ)।
४. विप्परियासमुवेति (ख, ग, घ, च, छ)।
५ °अखेतण्णो (चू)।

८४ त पि से एगया दायाया विभयति, अदत्तहारो वा से अवहरति[1], रायाणो वा से विलुपति, णस्सइ वा से, विणस्सइ वा से, अगारडाहेण वा डज्झइ ॥

८५ इति से परस्स अट्ठाए कूराइ कम्माइ बाले पकुव्वमाणे तेण दुक्खेण मूढे[2] विप्परियासुवेइ ॥

८६ **आस च छद च विगिंच[3] धीरे ॥**

८७ तुम चेव त सल्लमाहट्टु ॥

८८ जेण सिया तेण णो सिया ॥

८९ **इणमेव णावबुज्झति, जे जणा मोहपाउडा ॥**

९० **थीभि लोए पव्वहिए ॥**

९१ ते भो वयति—एयाइं आयतणाइ ॥

९२ से दुक्खाए मोहाए माराए णरगाए णरग-तिरिक्खाए[4] ॥

९३ सतत मूढे धम्म णाभिजाणइ[5] ॥

९४ उदाहु वीरे—**अप्पमादो महामोहे** ॥

९५ अल कुसलस्स पमाएण ॥

९६. सति-मरण सपेहाए[6], भेउरधम्म सपेहाए ॥

९७ णाल पास ॥

९८ अल ते एएहि ॥

९९ एय पास मुणी ! महब्भय ॥

१००. **णाइवाएज्ज कचणं ॥**

१०१ **एस वीरे पससिए**[7], जे ण णिविज्जति आदाणाए ॥

१०२ **"ण मे देति" ण कुप्पिज्जा, थोवं लद्धु न खिसए ।**
'पडिसेहिओ' परिणमिज्जा'[8] ॥

१०३ एय मोण समणुवासेज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

---

१ हरति (क, छ) ।
२. समूढे (क, घ, च) ।
३. विविञ्च (क) ।
४. तिरियाए (घ) ।
५ न जानाति (वृ) ।
६ सपेहाए (क, च) ।
७ नमसिते (चूपा) ।
८ पडिलाभिओ (वृपा) ।
९ पडिलाभितो परिणमे, णवोवास चेव कुज्जा (चूपा) ।

पंचमो उद्देसो

आहारस्स अणासत्ति-पदं

१०४ जमिणं विरूवरूवेहिं 'सत्थेहिं लोगस्स कम्म-समारंभा'[1] कज्जंति, तं जहा—अप्पणो से पुत्ताणं धूयाणं सुण्हाणं णातीणं धातीणं राईणं दासाणं दासीणं कम्म-कराणं कम्मकरीणं आएसाए, पुढो पहेणाए, सामासाए, पायरासाए ॥
१०५ सन्निहि-सन्निचओ कज्जइ इहमेगेसिं माणवाणं भोयणाए ॥
१०६ समुट्ठिए अणगारे आरिए आरियपण्णे आरियदंसी 'अयं संधीति अदक्खु'[2] ॥
१०७ से णाइए, णाइआवए, ण समणुजाणइ ॥
१०८ सव्वामगंधं[3] परिण्णाय, णिरामगंधो परिव्वए ॥
१०९ अदिस्समाणे कय-विक्कएसु । से ण किणे, ण किणावए, किणंतं ण समणुजाणइ ॥
११० से भिक्खू कालण्णे बलण्णे[4] मायण्णे खेयण्णे खणयण्णे[5] विणयण्णे समयण्णे[6] भावण्णे, परिग्गहं अममायमाणे, कालेणुट्ठाई, अपडिण्णे ॥
१११ दुहओ छेत्ता नियाइ ॥
११२ वत्थं पडिग्गहं, कंबलं पायपुंछणं, उग्गहं च कडासणं ।
एतेसु चेव जाएज्जा[7] ॥
११३ लद्धे आहारे अणगारे मायं जाणेज्जा, से जहेयं भगवया पवेइयं ॥
११४ लाभो त्ति न मज्जेज्जा ॥
११५ अलाभो त्ति ण सोयए[8] ॥
११६ बहुं पि लद्धुं ण णिहे ॥
११७ परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्केज्जा ॥
११८ 'अण्णहा णं पासए परिहरेज्जा'[9] ॥
११९ एस मग्गे आरिएहिं पवेइए ॥
१२० जहेत्थ कुसले णोवलिंपिज्जासि त्ति बेमि ॥

कामं-अणासत्ति-पदं

१२१ कामा दुरतिक्कमा ॥

---

१ सत्थेहिं विरूवरूवाणं अट्ठाए (चूपा) ।
२ अयं संधिमदक्खु (वृपा), °अद्दक्खु (क, ख, ग, छ) ।
३ °गधे, (घ, च) ।
४. बालण्णे (क, घ, च, वृ) ।
५. खणण्णो (चू) ।
६ समयण्णे परसमयण्णे (घ, च), ससमयण्णे परसमयण्णे (छ) ।
७ जाणेज्जा (क, ख, ग, घ, च, वृ) ।
८ सोएज्जा (ख, ग, च, छ) ।
९ अण्णतरेण पासाएण परिहरिज्जा (चूपा) ।

१२२ जीवियं दुप्पडिवूहणं[1] ॥
१२३ कामकामी खलु अय पुरिसे ॥
१२४ से सोयति जूरति तिप्पति[2] पिड्डति[3] परितप्पति ॥
१२५ आयतचक्खू लोग-विपस्सी लोगस्स अहो भाग जाणइ, उड्ढ भाग जाणइ, तिरिय भाग जाणइ ॥
१२६ गढिए[4] अणुपरियट्टमाणे ॥
१२७ सधि विदित्ता इह मच्चिएहिं ॥
१२८ एस वीरे पससिए, जे बद्धे पडिमोयए ॥
१२९ जहा अतो तहा बाहिं, जहा बाहिं तहा अंतो ॥
१३०. अंतो अंतो पूतिदेहंतराणि, पासति पुढोवि सवताइ ॥
१३१. पडिए पडिलेहाए ॥
१३२. से मइम परिण्णाय, मा य हु लाल पच्चासी ॥
१३३ मा तेसु तिरिच्छमप्पाणमावातए ॥
१३४ कासकसे[5] खलु अय पुरिसे, वहुमाई, कडेण मूढे पुणो तं करेइ लोभ ॥
१३५. वेर वड्ढेति अप्पणो ॥
१३६. जमिणं परिकहिज्जइ, इमस्स चेव पडिवूहणयाए[6] ॥
१३७. अमरायइ[7] महासड्ढी ॥
१३८. अट्टमेतं पेहाए[8] ॥
१३९. अपरिण्णाए कदति ॥

तिगिच्छा-पदं

१४० 'से त जाणह जमह बेमि'[9] ॥
१४१ 'तेइच्छ पडिते'[10] पवयमाणे ॥
१४२ से[11] हता 'छेत्ता भेत्ता'[12] 'लुपइत्ता विलुपइत्ता'[13] उद्दवइत्ता ॥

---

१ °वूहग (घ चू) ।
२ तप्पति (चू) ।
३ पिट्टइ (क, ख, ग), × (च, चू) ।
४ गढिए लोए (ख, ग, घ) ।
५ कासकसे य (घ), कासकासे (वृ), इम अज्ज करेमि इम हिज्जो काहामि (चू) ।
६ पडिवूहणट्ठाए (वृ, छ) ।
७ अमराइ (घ, च) ।
८ उपेहाए (चू), तु पेहाए (क, घ, च, छ) ।
९ से एव मायाणह ज बेमि (चू), से एव मायाणह जमह बेमि (क, ख, ग) ।
१० तेइच्छपडितो (चू) ।
११ × (चू) ।
१२ भेत्ता छेत्ता (ख, ग, घ, च, छ) ।
१३ लुपित्ता विलुपित्ता (ख, ग, च, छ) ।

१४३ अकड करिस्सामित्ति मण्णमाणे ॥
१४४ जस्स वि य ण करेइ ॥
१४५. अल बालस्स सगेण ॥
१४६ जे वा से कारेइ वाले ॥
१४७ 'ण एव'[1] अणगारस्स जायति ।

—त्ति वेमि ॥

छट्ठो उद्देसो

परिग्गह-परिच्चाय-पदं

१४८ मे त सवुज्झमाणे आयाणीय समुट्ठाए ॥
१४९. तम्हा पाव कम्म, णे व कुज्जा न कारवे ॥
१५० सिया से[2] एगयर विप्परामुसइ[3], छसु अण्णयरसि कप्पति ॥
१५१ सुहट्ठी लालप्पमाणे सएण दुक्खेण मूढे विप्परियासमुवेति ॥
१५२. सएण विप्पमाएण, पुढो वय पकुव्वति ॥
१५३ जसिमे पाणा पव्वहिया । पडिलेहाए णो णिकरणाए[4] ॥
१५४ एस परिण्णा पवुच्चइ ॥
१५५ कम्मोवसती ॥
१५६ जे ममाइय-मति जहाति, से जहाति[5] ममाइय ॥
१५७ से हु दिट्ठपहे[6] मुणी, जस्स णत्थि ममाइय ॥
१५८ त परिण्णाय मेहावी ॥
१५९ विदित्ता लोग, वता लोगसण्ण, 'से मतिम'[7] परक्कमेज्जासि[8] त्ति वेमि ॥

अणासत्तस्स ववहार-पद

१६०. णारति[9] सहते वीरे, वीरे णो सहते रति ।
जम्हा अविमणे वीरे, तम्हा वीरे ण रज्जति ॥
१६१. सद्दे य[10] फासे अहियासमाणे ॥
१६२ णिव्विद णदि इह जीवियस्स ॥

---

१ ण हु एव (चू) ।
२ तत्थ (क, ख, ग, घ, छ, वृ) ।
३ विपरामुसति (क) ।
४. णिकरणयाए (ख, ग) ।
५. चयइ (क, ख, ग, च) ।
६. दिट्ठभये (घ, च, चूपा, वृपा) ।
७ स मइम (ख), स इति मुनि (वृ) ।
८ परक्कमेज्जा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
९. णो रइ (क, च) ।
१० × (ख, ग, च, छ) ।

१६३. मुणी मोणं समादाय, धुणे[1] कम्म-सरीरगं ॥
१६४. पत लूह सेवंति, वीरा समत्तदसिणो[2] ॥
१६५ एस ओघतरे मुणी, तिण्णे मुत्ते विरते, वियाहिते त्ति वेमि ॥
१६६. दुव्वसु मुणी अणाणाए ॥
१६७. तुच्छए गिलाइ वत्तए ॥
१६८ एस वीरे पससिए ॥
१६९. अच्चेइ लोयसंजोय ॥
१७०. एस णाए पवुच्चइ[3] ॥

बध-मोक्ख-पद

१७१ ज दुक्ख पवेदित इह माणवाण, तस्स दुक्खस्स कुसला परिण्णमुदाहरति[4] ॥
१७२ इति कम्म परिण्णाय सव्वसो ॥
१७३ जे अणण्णदसी, से अणण्णारामे,
जे अणण्णारामे, से अणण्णदसी ॥

धम्मकहा-पदं

१७४ जहा पुण्णस्स कत्थइ, तहा तुच्छस्स कत्थइ ।
जहा तुच्छस्स कत्थइ, तहा पुण्णस्स कत्थइ ॥
१७५ अवि य हणे अणादियमाणे[5] ॥
१७६ एत्थपि जाण, सेयति णत्थि ॥
१७७ के यं पुरिसे ? कं च णए ?
१७८ एस वीरे पससिए, जे वद्धे पडिमोयए ॥
१७९ उड्ढं अहं तिरिय दिसासु, से सव्वतो सव्वपरिण्णचारी ॥
१८०. ण लिप्पई छणपएण वीरे ।
१८१ से मेहावी अणुग्घायणस्स खेयण्णे, जे य बंधप्पमोक्खमण्णेसी ॥
१८२ कुसले पुण णो वद्धे, णो मुक्के ॥
१८३ से ज च आरभे, ज च णारभे, अणारद्धं च णारभे ॥
१८४. छणं छण परिण्णाय, लोगसण्ण च सव्वसो ॥
१८५ उद्देसो पासगस्स णत्थि ॥
१८६ वाले पुण णिहे कामसमणुण्णे असमियदुक्खे दुक्खी दुक्खाणमेव आवट्ट अणुपरियट्टइ । —त्ति वेमि ॥

---

१. धूण (चू) ।
२ सम्मत्त ० (वृपा, चू) ।
३. स वुच्चइ (घ) ।
४ पतिण्ण ० (छ) ।
५. × (चू) ।

तइयं अज्झयणं

सीओसणिज्जं

पढमो उद्देसो

सुत्त-जागर-पदं

१. सुत्ता अमुणी सया[1], मुणिणो सया[2] जागरंति ॥

२ लोयंसि जाण अहियाय दुक्खं ॥

३ समयं लोगस्स जाणित्ता, एत्थ सत्थोवरए ॥

४ जस्सिमे सद्दा य रूवा य गंधा य रसा य फासा य अभिसमन्नागया भवंति, से 'आयवं नाणवं वेयवं धम्मवं बंभवं'[3] ॥

५ पण्णाणेहिं परियाणइ लोयं, 'मुणीति वच्चे'[4], धम्मविउत्ति अंजू[5] ॥

६ आवट्टसोए संगमभिजाणति ॥

७ सीओसिणच्चाई से निग्गंथे अरइ-रइ-सहे फरुसियं[6] णो वेदेति ॥

८ जागर-वेरोवरए वीरे[7] ॥

९ एवं दुक्खा पमोक्खसि[8] ॥

१० जरामच्चुवसोवणीए णरे, सययं मूढे धम्मं णाभिजाणति ।

११ पासिय आउरे[9] पाणे, अप्पमत्तो परिव्वए ॥

---

१. × (चू, च) ।

२ सततमनवरतम् (वृ) ।

३ आतवि वेदवि धम्मवि बंभवि (चू), आतव ० (चूपा), आयवी णाणवी वेदवी धम्मवी बंभवी (वृपा) ।

४. मुणी वच्चे (वृ, छ) ।

५ उज्जू (क, च, छ) ।

६ फरुसयं (चू) ।

७ धीरे (छ) ।

८ पमुच्चसि (क, ख, ग, घ, छ) ।

९. आतुरे मो (चू) ।

१२ **मंता एयं मइमं ! पास ॥**
१३ **आरंभज दुक्खमिणं ति णच्चा ॥**
१४ **माई पमाई[1] पुणरेइ गब्भं ॥**
१५ **उवेहमाणो सद्द-रूवेसु अंजू, माराभिसंकी[2] मरणा पमुच्चति ॥**
१६ अप्पमत्तो कामेहिं, उवरतो पावकम्मेहिं, वीरे आयगुत्ते 'जे खेयण्णे'[3] ॥
१७ जे पज्जवजाय-सत्थस्स खेयण्णे, से असत्थस्स खेयण्णे,
जे असत्थस्स खेयण्णे, से पज्जवजाय-सत्थस्स खेयण्णे ॥
१८ अकम्मस्स ववहारो न विज्जइ ॥
१९ कम्मुणा[4] उवाही[5] जायइ ॥
२० **कम्मं च पडिलेहाए ॥**
२१ **'कम्ममूलं च'[6] जं छणं ॥**
२२ पडिलेहिय सव्व समायाय ॥
२३ दोहिं अतेहिं अदिस्समाणे ॥
२४ **तं परिण्णाय मेहावी ॥**
२५ विदित्ता लोग, वता लोगसण्ण से मइम[7] परक्कमेज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

परमबोध-पदं

२६ **जातिं[8] च वुड्ढि च इहज्ज ! पासे ॥**
२७ **भूतेहिं जाणे पडिलेह सातं ॥**
२८ **तम्हा तिविज्जो[9] परमति णच्चा, समत्तदंसी[10] ण करेति पावं ॥**
२९ **उम्मुच पास इह मच्चिएहिं ॥**
३० **आरभजीवी 'उ भयाणुपस्सी'[11] ॥**

---

१ पमाया (घ) ।
२ मारावसक्की (चूपा) ।
३ × (चू०) ।
४ कम्मणा (क, ख, ग) ।
५ उवही (चू) ।
६ कम्ममाहूय (चूपा, वृपा) ।
७ मेहावी (ख, ग, च) ।
८ आदर्शेपु २६ सूत्रादारभ्य ३५ सूत्रपर्यन्तं गाथाचतुष्कमङ्कितमस्ति ।
९ चूर्णौ एतत् पद द्विधा व्याख्यातमस्ति—विज्जत्ति हे विद्वन् ! अहवा अतिविज्जू । वृत्तौ केवल 'अतिविज्ज' पद व्याख्यातमस्ति—अतीव विद्या—तत्त्वपरिच्छेत्री यस्यासावतिविद्य ।
१० सम्मत्त° (क, वृपा) ।
११ उभयाणुपस्सी (वृ) ।

३१ कामेसु गिद्धा णिचयं करेंति, संसिच्चमाणा पुणरेंति गब्भं ॥

३२ अवि से हासमासज्ज, हंता णंदीति मन्नति ।
अलं बालस्स संगेण, वेरं वड्ढेति[1] अप्पणो ॥

३३ तम्हा तिविज्जो परमंति णच्चा, आयंकदंसी ण करेति पावं ॥

३४ 'अग्गं च मूलं च विगिंच धीरे'[2] ॥

३५ पलिच्छिंदिया णं णिक्कम्मदंसी ॥

३६ एस मरणा पमुच्चइ ॥

३७ से हु दिट्ठपहे[3] मुणी ॥

३८ लोयंसी परमदंसी विवित्तजीवी उवसंते,
समिते[4] सहिते सया जए कालकंखी परिव्वए ॥

३९ बहुं च खलु पावकम्मं पगडं ॥

४० सच्चंसि धितिं कुव्वह ॥

४१ एत्थोवरए मेहावी सव्वं पावकम्मं झोसेति[5] ॥

अणेगचित्त-पदं

४२ अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे, से केयणं अरिहए पूरइत्तए ॥

४३ से अण्णवहाए अण्णपरियावाए[6] अण्णपरिग्गहाए, जणवयवहाए[7] जणवय-परियावाए[8] जणवयपरिग्गहाए ॥

संजमाचरण-पदं

४४. आसेवित्ता एतमट्ठं, इच्चेवेगे समुट्ठिया, तम्हा तं बिइयं[9] नो सेवए[10] ॥

४५ णिस्सारं पासिय णाणी, उववायं चवणं[11] णच्चा । अणण्णं चर माहणे !

४६ से ण छणे ण छणावए, छणंतं णाणुजाणइ[12] ॥

४७ णिव्विंद णंदिं अरते पयासु ॥

४८ अणोमदंसी 'णिसन्ने पावेहिं कम्मेहिं'[13] ॥

---

१ वड्ढति (क, ख, ग) ।

२ °वीरे (क, ग, च, चू), मूलं च अग्गं च विइत्तु वीरो (चूपा) । नागार्जुनीया —मूलं च अग्गं च विएत्तु वीरे, कम्मासवं चेइ विमोक्खणं च (चू) ।

३ दिट्ठभए (क, ख, ग, घ, च, छ, चूपा, वृ), दिट्ठवहे (चूपा) ।

४ समिते अप्पमाई (ती) (घ, छ) ।

५ सोसेइ (घ) ।

६ °परियावणाए (च, छ), °परियावए (क, ख, ग) ।

७ जाणवय° (ख, ग, च) ।

८ ° परिवायाए (क, ख, ग, च, वृ) ।

९ बीयं (ख, ग, घ, च) ।

१० सेवे (क, ख, ग, घ) ।

११ चयणं (क, ख, ग, घ, चू) ।

१२ णाणुमोदए (चू) ।

१३ तेसु कम्मेसु पावं (चूपा) ।

४९ कोहाइमाणं हणिया य वीरे, लोभस्स पासे णिरय महंत ।
तम्हा हि[1] वीरे विरते वहाओ, 'छिंदेज्ज सोय लहुभूयगामी'[2] ॥
५०. गथ परिण्णाय इहज्जेव वीरे[3], सोय परिण्णाय चरेज्ज दते ।
उम्मग्ग[4] लद्धु इह माणवेहि, णो पाणिण पाणे समारभेज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

अज्झत्थ-पदं

५१ संधि लोगस्स जाणित्ता ॥
५२. आयओ बहिया पास ॥
५३ तम्हा ण हता ण विघायए ॥
५४ जमिण अण्णमण्णवितिगिच्छाए पडिलेहाए ण करेइ पाव कम्म, किं तत्थ मुणो कारण सिया ?
५५. समय तत्थुवेहाए, अप्पाणं विप्पसायए ॥
५६ अणण्णपरम नाणी, णो पमाए कयाइ वि ।
आयगुत्ते सया वीरे, जायामायाए जावए ॥
५७ 'विराग रूवेहिं[5] गच्छेज्जा, महया खुड्डएहि वा'[6][7] ॥
५८. आगति गति परिण्णाय, दोहिं वि अतेहिं अदिस्समाणे[8] ।
से ण छिज्जइ ण भिज्जइ ण डज्झइ, ण हम्मइ कचण सव्वलोए ॥
५९. 'अवरेण पुव्वं ण सरति एगे, किमस्सतीतं ? किं वागमिस्सं ?
भासति एगे इह माणवा उ, जमस्सतीत[9] आगमिस्स'[10] ॥
६०. णातीतमट्ठ[11] ण य आगमिस्स, अट्ठ नियच्छति तहागया उ ।
विधूत-कप्पे एयाणुपस्सी, णिज्झोसइत्ता 'खवगे महेसी'[12] ॥

---

१ य (ख, ग, घ) ।
२ छिदिज्ज सोत न हु भूतगाम (चूपा) ।
३ धीरे (क, ख, ग, घ, छ) ।
४ उम्मुज्ज (क, ख, ग), उम्मुग (घ, छ) ।
५ रूवेसु (क, ख, ग) ।
६ य (ख, ग, घ, च) ।
७ नागार्जुनीया —विसयपचगम्मि वि, दुविहम्मि तिय तिय । भावओ सुट्ठु जाणित्ता, से न लिप्पइ दोसु वि (चू), नागार्जुनीया — विसयमि° (वृ) ।
८ अदिस्समाणेहिं (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ) ।
९ °तीत त (ख), °तीत किं (घ) ।
१० अवरेण पुव्व किह से अईय,
किह आगमिस्स न सरति एगे ।
भासति एगे इह माणवा उ,
जह से अईय तह आगमिस्स ॥
(चूपा, वृपा) ।
११ °मद्ध (च) ।
१२ × (क, घ, च) ।

६१. का अरई ? के आणंदे ? एत्थंपि अग्गहे[1] चरे ।
सव्वं हासं परिच्चज्ज, आलीण-गुत्तो परिव्वए ॥

६२ पुरिसा ! तुममेव तुमं मित्तं, किं बहिया मित्तमिच्छसि ?

६३ जं जाणेज्जा उच्चालइयं, तं जाणेज्जा दूरालइयं ।
जं जाणेज्जा दूरालइयं, तं जाणेज्जा उच्चालइयं ॥

६४. पुरिसा ! अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ, एवं दुक्खा पमोक्खसि ॥

६५ पुरिसा ! सच्चमेव समभिजाणाहि[2] ॥

६६ सच्चस्स आणाए 'उवट्ठिए से'[3] मेहावी मारं तरति ॥

६७. सहिए धम्ममादाय, सेयं समणुपस्सति ॥

६८ दुहओ जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जंसि एगे पमादेंति ॥

६९. 'सहिए दुक्खमत्ताए'[4] पुट्ठो णो झंझाए ॥

७० पासिमं दविए[5] लोयालोय-पवंचाओ मुच्चइ ।

—त्ति बेमि ॥

चउत्थो उद्देसो

कसायविरइ-पदं

७१ से वंता कोहं च, माणं च, मायं च, लोभं च ॥

७२ एयं पासगस्स दंसणं 'उवरयसत्थस्स पलियंतकरस्स'[6] ॥

७३ आयाणं [णिसिद्धा[7] ?] सगडब्भि[8] ॥

७४ जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइ, जे सव्वं जाणइ, से एगं जाणइ ॥

७५ सव्वतो पमत्तस्स भयं, सव्वतो अप्पमत्तस्स नत्थि भयं ॥

७६ 'जे एगं नामे, से बहुं नामे, जे बहुं नामे, से एगं नामे'[9] ॥

७७ दुक्खं लोयस्स जाणित्ता ॥

७८ वंता लोगस्स संजोगं, जंति वीरा[10] महाजाणं ।
परेण परं जंति, नावकंखंति जीवियं ॥

---

१ अगरहे (चू) ।

२ °जाणहि (क), °जाणेहि (च) ।

३ से उवट्ठिए से (क, ख, ग), से समुट्ठिए (घ), से उवट्ठिए (च) ।

४ सहिते धम्ममादाय (चू), सहिते दुक्खमत्ताते (चूपा), °मेत्ताते (क), °माताते (च) ।

५. दविए लोए (छ) ।

६ °कडस्स (क) ।

७. द्रष्टव्यम् सू० ८६ ।

८ × (चू) ।

९ जे एगनामे, से बहुनामे, जे बहुनामे, से एगनामे (क), द्वादशारनयचक्रवृत्तौ 'एगणामे बहुणामे' इति पाठो विवृतोस्ति—यद् एकस्य भावं तत् सर्वस्यापि, यत् सर्वस्य तद् एकस्यापि (पृ० ३७५) ।

१० धीरा (क) ।

७९. एग विगिंचमाणे पुढो विगिंचइ, पुढो विगिंचमाणे एग विगिंचइ ॥
८० सड्ढी आणाए मेहावी ॥
८१ लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय ॥
८२. अत्थि सत्थं परेण परं, णत्थि असत्थं परेण परं ॥
८३ जे कोहदंसी से माणदसी, जे माणदसी से मायदसी ।
जे मायदंसी से लोभदसी, जे लोभदंसी से पेज्जदंसी ।
जे पेज्जदसी से दोसदसी, जे दोसदसी से मोहदंसी ।
जे मोहदंसी से गब्भदंसी, जे गब्भदसी से जम्मदसी ।
जे जम्मदंसो से मारदंसी, जे मारदसी से निरयदसी ।
जे निरयदंसी से तिरियदसी, जे तिरियदंसी से दुक्खदसी ॥
८४ से मेहावी अभिनिवट्टेज्जा[1] कोह च, माण च, माय च, लोह च, पेज्ज च, दोसं च, मोह च, गब्भ च, जम्म च, मार[2] च, नरग च, तिरिय च, दुक्ख च ॥
८५ एय पासगस्स दसण उवरयसत्थस्स पलियतकरस्स ॥
८६. आयाण 'णिसिद्धा सगडब्भि ॥
८७ किमत्थि उवाही[3] पासगस्स ण विज्जइ[4] ?
णत्थि[5] ।

—त्ति बेमि ॥

---

१ °निव्वट्टेज्जा (क, घ, छ) ।
२ मरण (ख, ग) ।
३. उवही (धी) (क, घ, छ) ।
४ × (चू) ।
५ चतुर्थाध्ययनस्य ५३ सूत्रस्य 'अह णत्थि'° 'णत्थि वा'° इति पाठान्तरद्वय लभ्यते । तदाधारेण 'पासगस्स' इति पदानन्तरं 'अह' इति पद अध्याहार्यम् ।

चउत्थं अज्झयणं

सम्मत्तं

पढमो उद्देसो

सम्मावाए अहिंसा-पद

१ से बेमि—जे[1] अईया, जे य पडुप्पन्ना, जे य आगमेस्सा अरहता[2] भगवतो[3] ते सव्वे एवमाइक्खति, एव भासति, एव पण्णवेति, एव परूवेति—सव्वे पाणा सव्वे भूता सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हतव्वा, ण अज्जावेयव्वा, ण परिघेतव्वा, ण परितावेयव्वा, ण उद्दवेयव्वा ॥

२ एस धम्मे सुद्धे[4] णिइए सासए समिच्च लोय खेयण्णेहि[5] पवेइए ॥

३ त जहा—उट्ठिएसु वा, अणुट्ठिएसु वा। उवट्ठिएसु वा, अणुवट्ठिएसु वा। उवरयदडेसु वा, अणुवरयदडेसु वा। सोवहिएसु वा, अणोवहिएसु वा। सजोगरएसु वा, असजोगरएसु वा ॥

४ **तच्च चेयं तहा चेय, अस्सि चेय पवुच्चइ ॥**

५ त आइइत्तु[6] ण णिहे ण णिक्खिवे, जाणित्तु धम्म जहा[7] तहा ॥

६ दिट्ठेहि णिव्वेय गच्छेज्जा ॥

७ **णो लोगस्सेसण चरे ॥**

८ **जस्स णत्थि इमा णाई, अण्णा तस्स कओ[8] सिया ?**

९ दिट्ठ सुय मय विण्णाय, जमेय[9] परिकहिज्जइ ॥

---

१ जे य (ख, ग, घ, छ)।
२ अरिहता (ख, घ)।
३ भगवता (घ, च)।
४. सुद्धे धुवे (घ)।
५ खेत्तन्नेहि (च)।
६ आइत्तु (ख, ग, च, छ, वृ)।
७ अहा (घ)।
८ कुतो (च)।
९ ज लोए (चू)।

१० समेमाणा पलेमाणा[1], पुणो-पुणो जातिं पकप्पेंति ।।

११ अहो य राओ य[2] 'जयमाणे, वीरे'[3][4] सया आगयपण्णाणे ।
पमत्ते बहिया पास, अप्पमत्ते सया परक्कमेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

वीओ उद्देसो

सम्मानाणे अहिंसापरिक्खा-पदं

१२ जे आसवा ते परिस्सवा, जे परिस्सवा ते आसवा,
जे अणासवा ते अपरिस्सवा, जे अपरिस्सवा ते अणासवा—एए पए संबुज्झमाणे,
लोयं च आणाए अभिसमेच्चा पुढो पवेइयं ।।

१३ आघाइ[5] णाणी इह माणवाणं संसारपडिवन्नाणं संबुज्झमाणाणं विण्णाणपत्ताणं ।।

१४ अट्टा वि संता अदुआ पमत्ता ।।

१५ अहासच्चमिणं ति बेमि ।।

१६. नाणागमो मच्चुमुहस्स अत्थि, इच्छापणीया वंकाणिकेया[6] ।
कालग्गहीआ णिचए णिविट्ठा, 'पुढो-पुढो जाइं पकप्पयंति'[7] ।।

१७ 'इहमेगेसिं तत्थ-तत्थ संथवो भवति । अहोववाइए फासे पडिसंवेदयंति ।।

१८ चिट्ठं कूरेहिं कम्मेहिं चिट्ठं परिचिट्ठति[8] ।
अचिट्ठं कूरेहिं कम्मेहिं, णो चिट्ठं परिचिट्ठति[9] ।।'[10]

१९. एगे वयंति अदुवा वि णाणी, णाणी वयंति अदुवा वि एगे ।।

---

१ पालेमाणा (क, च), चलेमाणा (शु) ।

२ × (ख, ग, छ) ।

३ धीरे (ख, ग, घ, वृ) ।

४ जताहि एव वीरे (चू) ।

५ अक्खाइ (घ), नागार्जुनीया आघाइ धम्मं खलु से जीवाणं, तंजहा—संसारपडिवन्नाणं मणुस्सभवत्थाणं आरंभविणईणं दुक्खुव्वे-असुहेसगाणं धम्मसवणगवेसगाणं निक्खित्त-सत्थाणं सुस्सूसमाणाणं पडिपुच्छमाणाणं विन्नाणपत्ताणं (चू, वृ) ।

६ अत्रैकपदे दीर्घत्वम्, वङ्कक=वंका ।

७ पुढो पुढो जाइं पकरेंति (चू), एत्थ मोहे पुणो पुणो, पुढो पुढो जाइं पगप्पेंति (चूपा), °पकप्पेंति (क), °पकप्पन्ति (ख, ग, च,) °पकुप्पति (छ) । 'पुढो पुढो जाइ पकप्पयन्ति' पंक्तिस्थाने शुब्रिंग संपादिते पुस्तके एतादृश पाठान्तरम्—एत्थ मोहे पुणो पुणो, इहमेगेसिं तत्थ तत्थ संथवो भवइ, अहोववाइए फासे पडिसंवेय-यन्ति,
चित्तं कूरेहिं कम्मेहिं, चित्तं परिविचिट्ठइ,
अचित्तं कूरेहिं कम्मेहिं, नो चित्तं परिवि-चिट्ठइ ।

८ परिविचिट्ठई (क, चू) ।

९ परिविचिट्ठई (क) ।

१० × (शु) ।

२०. आवंति केआवंति लोयंसि समणा य माहणा य पुढो विवादं वदंति—से दिट्ठं च णे, सुयं च णे, मयं च णे, विण्णायं च णे, उड्ढं अहं[1] तिरियं दिसासु सव्वतो सुपडिलेहियं च णे—"सव्वे पाणा 'सव्वे भूया सव्वे जीवा'[2] सव्वे सत्ता हंतव्वा, अज्जावेयव्वा, परिघेतव्वा, परियावेयव्वा[3], उद्दवेयव्वा।
एत्थ[4] वि जाणह णत्थित्थ दोसो।।"

२१. अणारियवयणमेयं।।

२२. तत्थ जे ते आरिया, ते एवं वयासी—से दुद्दिट्ठं च भे, दुस्सुयं च भे, दुम्मयं च भे, दुव्विण्णायं च भे, उड्ढं अहं तिरियं दिसासु सव्वतो दुप्पडिलेहियं च भे, जण्णं तुब्भे एवमाइक्खह, एवं भासह, एवं 'परूवेह, एवं पण्णवेह'[5]—"सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता हंतव्वा, अज्जावेयव्वा, परिघेतव्वा, परियावेयव्वा, उद्दवेयव्वा।
एत्थ वि जाणह 'णत्थित्थ दोसो'[6]।।"

२३. वयं पुण एवमाइक्खामो, एवं भासामो, एवं परूवेमो, एवं पण्णवेमो—"सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हंतव्वा, ण अज्जावेयव्वा, ण परिघेतव्वा, ण परियावेयव्वा, ण उद्दवेयव्वा।
एत्थ वि जाणह णत्थित्थ दोसो।।"

२४. आरियवयणमेयं।।

२५. पुव्वं निकाय समयं पत्तेयं[7] पुच्छिस्सामो—हंभो पावादुया[8]! किं भे सायं दुक्खं उदाहु असायं?

२६. समिया पडिवन्ने[9] यावि एवं बूया—सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं असायं अपरिणिव्वाणं महब्भयं दुक्खं। —त्ति बेमि।।

तइओ उद्देसो

सम्मत्त-पदं

२७. **उवेह[10] एणं बहिया य लोयं, से सव्वलोगंसि जे केइ विण्णू।
अणुवीइ[11] पास णिक्खित्तदंडा, जे केइ सत्ता पलियं चयंति[12]।।**

२८. **नरा[13] मुयच्चा धम्मविदु त्ति अंजू।।**

---

१ अहेयं (क)।
२ सव्वे जीवा सव्वे भूया (वृ, क, घ, छ)।
३. परियावेयव्वा किलामेयव्वा (क, ख, ग)।
४ एत्थ पि (ख, ग, घ)।
५ पन्नवेह, एवं परूवेह (चू, क)।
६ नत्थित्थ दोसो। अणारियवयणमेयं (क, ख, ग, घ, च, छ)।
७ पत्तेयं-पत्तेयं (ख, ग, च, छ)।
८ पवादिया (छ), समणा माहणा (चू)।
९. पडिवण्णे (चू)।
१०. उवेहेण (क, घ), उवेहेण (ख, ग), उव्वेहेण (च, छ)।
११ अणुविंतिय (क, च), अणुचिंतिय (छ)।
१२ जहंति (चू, छ)।
१३ नरं (क, ख, ग, घ, च)।

२९. आरंभज दुक्खमिणंति णच्चा, एवमाहु समत्तदंसिणो[1] ॥
३० ते सव्वे पावाइया दुक्खस्स कुसला परिण्णमुदाहरंति ॥
३१ इति कम्म परिण्णाय सव्वसो ॥
३२ इह आणाकखी पडिए अणिहे एगमप्पाण सपेहाए धुणे सरीर,[2] कसेहि[3] अप्पाण, जरेहि अप्पाण ॥
३३ जहा जुण्णाइ कट्ठाइ, हव्ववाहो[4] पमत्थति, एव अत्तसमाहिए अणिहे ॥

कसाय-विवेग-पद

३४ विगिंच कोह अविकंपमाणे, इमं णिरुद्धाउय संपेहाए ॥
३५. दुक्ख च जाण[5] अदुवागमेस्स ॥
३६ पुढो फासाइ च फासे[6] ॥
३७ लोयं च पास विप्फदमाणं ॥
३८ जे णिव्वुडा पावेहिं कम्मेहिं, अणिदाणा ते वियाहिया ॥
३९ तम्हा तिविज्जो[7] णो पडिसजलिज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

चउत्थो उद्देसो

सम्माचरित्त-पदं

४० आवीलए पवीलए निप्पीलए[8] जहित्ता पुव्वसजोग, हिच्चा उवसम ॥
४१ तम्हा अविमणे वीरे सारए समिए सहिते सया जए ॥
४२ दुरणुचरो मग्गो वीराण अणियट्टगामीण ॥
४३. विगिंच मंस-सोणिय ॥
४४. एस पुरिसे दविए वीरे, आयाणिज्जे वियाहिए ।
जे धुणाइ समुस्सय, वसित्ता बभचेरसि ॥
४५ णेत्तेहि पलिछिन्नेहिं, आयाणसोय-गढिए बाले ।
अव्वोच्छिन्नवधणे, अणभिक्कतसजोए ।
तमसि[9] अविजाणओ आणाए लभो णत्थि त्ति बेमि ॥
४६ जस्स नत्थि पुरा पच्छा, मज्झे तस्स कओ[10] सिया ?
४७ से हु पण्णाणमते बुद्धे आरभोवरए ॥

---

१. सम्मत्त° (क, वृपा) ।
२ सरीरग (वृ) ।
३ किसेहि (चू), कम्मेहिं जरेहिं (ख) ।
४ हव्ववाहू (घ, च, छ) ।
५ वट्ठ (क) ।
६ फासए (क, छ) ।
७ द्रष्टव्यम्—३।२८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
८ निप्फीलए (क, घ) ।
९ अघस्स तमस्स (चू), तमसि (चूपा) ।
१० कुओ (क, च, छ) ।

४८. सम्ममेयंति पासह ।।

४९. जेण बंधं वहं घोरं, परितावं च दारुणं ।।

५०. पलिछिंदिय बाहिरगं च सोयं, णिक्कम्मदंसी इह मच्चिएहिं ।।

५१. 'कम्मुणा सफलं'[1] दट्ठु, तओ णिज्जाइ वेयवी ।।

५२ जे खलु भो ! वीरा समिता सहिता सदा जया संघडदंसिणो[2] आतोवरया अहा-तहा[3] लोगमुवेहमाणा, पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं इति सच्चंसि परिचिट्ठिंसु[4], साहिस्सामो[5] णाणं वीराणं समिताणं सहिताणं सदा जयाणं संघडदंसिणं आतोवरयाणं अहा-तहा लोगमुवेहमाणाणं ।।

५३ किमत्थि उवाधी[6] पासगस्स 'ण विज्जति ?
णत्थि'[7] ।।

त्ति बेमि ।।

---

१ कम्माण सफलत्तं (वृ) ।
२ सत्थड० (च), संघड० (चू) ।
३ तह (क) ।
४. परिविचिट्ठिंसु (क, ख, ग, च, छ), विपरिचिट्ठिंसु (चू) ।
५. अग्घातिस्सामो (च) ।
६ उवही (क, घ, च, छ) ।
७ अह णत्थि ? ण विज्जति (चू), णत्थि वा ण विज्जति (छ) ।

पंचमं अज्झयणं

लोगसारो

पढमो उद्देसो

काम-पदं

१ 'आवती केआवति लोयसि विप्परामुसति, अट्ठाए अणट्ठाए वा'[1], एएसु चेव विप्परामुसति ॥

२ गुरू से कामा ॥

३ तओ से मारस्स अतो, जओ से मारस्स अतो, तओ से दूरे ॥

४ णेव से अतो, णेव से दूरे[2] ॥

५ से पासति फुसियमिव, कुसग्गे पणुन्नं णिवतित वातेरितं ।
एवं बालस्स जीवियं, मंदस्स अविजाणओ ॥

६ कूराणि कम्माणि बाले पकुव्वमाणे, तेण दुक्खेण मूढे विप्परियासुवेइ[3] ॥

७ मोहेण गब्भ 'मरणाति एति'[4] ॥

८ एत्थ मोहे पुणो-पुणो ॥

९ ससय परिजाणतो, ससारे परिण्णाते भवति,
ससय अपरिजाणतो, ससारे अपरिण्णाते भवति ॥

१० जे छेए से सागारिय ण सेवए ॥

---

१ × (ख, ग, घ, च, छ), नागार्जुनीया — जावति केइ लोए छक्कायवह समारभति अट्ठाए अणट्ठाए वा (वृ) ।

२ वाहिं (चू) ।

३ विप्परियासमुवेति (क, ख, ग, छ), °समेति (च, चू) ।

४ मरणादुवेति (चूपा) ।

११ 'कट्टु एवं अविजाणओ'[1] वितिया मंदस्स वालया ॥
१२ लद्धा हुरत्था पडिलेहाए आगमित्ता आणविज्जा अणासेवणयाए—त्ति वेमि ॥
१३ पासह एगे रूवेसु गिद्धे परिणिज्जमाणे ॥
१४. 'एत्थ फासे'[2] पुणो-पुणो ॥
१५ आवती केआवती लोयंसि आरंभजीवी, एएसु चेव आरंभजीवी ॥
१६ एत्थ वि वाले परिपच्चमाणे[3] रमति पावेहिं कम्मेहिं, 'असरणे सरणं' ति मण्णमाणे ॥
१७ इहमेगेसिं एगचरिया भवति—से वहुकोहे वहुमाणे वहुमाए वहुलोहे वहुरए वहुनडे वहुसढे[4] वहुसंकप्पे, आसवसक्की पलिउच्छन्ने,
उट्ठियवाय पवयमाणे "मा मे केइ अदक्खू"
अण्णाण-पमाय-दोसेण, सययं मूढे धम्मं णाभिजाणइ ॥
१८. अट्टा पया माणव ! कम्मकोविया[5] जे अणुवरया, अविज्जाए पलिमोक्खमाहु, आवट्टं[6] अणुपरियट्टंति ।

—त्ति वेमि ॥

वीओ उद्देसो

अप्पमादमग्ग-पद

१९ आवती केआवती लोयंसि अणारंभजीवी, एतेसु[7] चेव मणारंभजीवी[8] ॥
२० एत्थोवरए तं झोसमाणे 'अयं संधी' ति अदक्खु ॥
२१ जे 'इमस्स विग्गहस्स अयं खणे त्ति मन्नेसी'[9] ॥
२२. एस मग्गे आरिएहिं पवेदिते ॥
२३. उट्ठिए णो पमायए ॥
२४. जाणित्तु दुक्खं 'पत्तेयं सायं'[10] ॥
२५. पुढोछंदा इह माणवा, पुढो दुक्खं पवेदितं ॥

---

१ °अवयाणतो (चू), °अवियाणतो (चूपा), नागार्जुनीया—जे खलु विसए सेवई सेवित्ता वा णालोएइ, परेण वा पुट्ठो निण्हवइ अहवा तं परं सएण वा दोसेण उवलिंपिज्जा (वृ, चू) ।
२. एत्थ मोहे (चू, वृपा), तत्थ फासे (चूपा) ।
३. परिवच्चमाणे (च), परितप्पमाणे (छ,चू,वृ), परिपच्चमाणे (चूपा, वृपा) ।
४ चूर्णिकृता 'वहुसढे' इति न व्याख्यातम् ।
५ कम्मअकोविता (चू) ।
६. आवट्टमेव (ख, ग, च) ।
७ तेसु (वृ) ।
८ अणारंभ° (ग, च) ।
९ अन्नेसि (ख, ग, च) ।
१० पत्तेय-साय (क, च, छ) ।

२६ से अविहिंसमाणे अणवयमाणे, पुट्ठो[1] फासे विप्पणोल्लए ॥
२७ एस समिया-परियाए वियाहिते ॥
२८ जे असत्ता पावेहिं कम्मेहिं, उदाहु ते आयका फुसति ॥
इति उदाहु वीरे[2] 'ते फासे पुट्ठो हियासए' ॥
२९ से पुव्व पेय पच्छा पेय भेउर-धम्म, विद्धसण-धम्म, अधुव, अणितिय, असासय, चयावचइय[3], विपरिणाम-धम्म, पासह एय 'रूव ॥
३० सधि'[4] समुप्पेहमाणस्स एगायतण[5]-रयस्स इह विप्पमुक्कस्स, णत्थि मग्गे विरयस्स त्ति बेमि ॥

परिग्गह-पद

३१ आवती केआवती लोगसि परिग्गहावती—से अप्प वा, बहु[6] वा, अणु वा, थूल वा, चित्तमत वा, अचित्तमत वा, एतेसु चेव परिग्गहावती ॥
३२ एतदेवेगेसि[7] महब्भय भवति, लोगवित्त[8] च ण उवेहाए ॥
३३ एए सगे अविजाणतो ॥
३४ से 'सुपडिबुद्ध सूवणीय ति णच्चा'[9], पुरिसा ! परमचक्खू ! विपरक्कमा[10] ॥
३५ एतेसु चेव बभचेर ति बेमि ॥
३६ से सुय च मे अज्झत्थिय[11] च मे, "बध-पमोक्खो तुज्झ[12] अज्झत्थेव" ॥
३७. एत्थ विरते अणगारे, दीहराय तितिक्खए ।
पमत्ते बहिया पास, 'अप्पमत्तो परिव्वए'[13] ॥
३८ एय मोण सम्म अणुवासिज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

अपरिग्गह-कामनिव्वेयण-पद

३९ आवती केआवती लोयसि अपरिग्गहावती, एएसु चेव अपरिग्गहावती ॥

---

१ पुढो (ख, ग, घ) (अशुद्धम्) ।
२ धीरे (क, ख, ग, छ, चू) ।
३ चयो० (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
४. रूव-सधि (क, च, छ, वृ, चू) ।
५ एगायण (घ) ।
६ बहुय (क, घ, च, छ) ।
७ एयमेगेसिं (ख, ग), एयमेवेगेसि (घ) ।
८ लोग वित्त (ख, ग, छ) ।
९ सुपडिबद्ध० (क, घ, छ, वृ), सुत अणुविचितेति णच्चा (चूपा) ।
१० विपरक्कम (ख, ग, च) ।
११ अज्झत्थ (क, ख, ग, घ, च), अज्झत्थय (क्व) ।
१२ × (ख, ग, घ, छ) ।
१३ अप्पमाय सुसिक्खेज्जा (चू) ।

४०. सोच्चा वई[1] मेहावी, पडियाण णिसामिया ।
समियाए[2] धम्मे, आरिएहिं पवेदिते ।।

४१ जहेत्थ मए सधी झोसिए, एवमण्णत्थ सधी दुज्झोसिए भवति, तम्हा बेमि—
णो णिहेज्ज[3] वीरिय ।।

४२ जे पुव्वुट्ठाई, णो पच्छा-णिवाई ।
जे पुव्वुट्ठाई, पच्छा-णिवाई ।
जे णो पुव्वुट्ठाई, णो पच्छा-णिवाई ।।

४३. सेवि तारिसए सिया[4], जे परिण्णाय लोगमणुस्सिओ[5] ।।

४४ एय णियाय मुणिणा पवेदित—इह आणाकखी पंडिए अणिहे,
पुव्वावरराय जयमाणे, सया सील सपेहाए,
सुणिया भवे अकामे अझझे ।।

४५ इमेण चेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण वज्झओ ?

४६ 'जुद्धारिह खलु दुल्लह'[6] ।।

४७ जहेत्थ कुसलेहिं परिण्णा-विवेगे भासिए ।।

४८ चुए हु वाले गब्भाइसु रज्जइ[7] ।।

४९ अस्सि चेय पव्वुच्चति, रूवसि वा छणसि वा ।।

५० से हु एगे सविद्धपहे[8] मुणी, अण्णहा लोगमुवेहमाणे ।।

५१. इति कम्म परिण्णाय, सव्वसो से ण हिंसति । सजमति णो पगब्भति ।।

५२ उवेहमाणो पत्तेय साय ।।

५३ वण्णाएसी णारभे कचण सव्वलोए ।।

५४. एगप्पमुहे विदिसप्पइण्णे, निव्विन्नचारी अरए पयासु ।।

५५ से वसुम सव्व-समन्नागय-पण्णाणेण अप्पाणेण[9] अकरणिज्ज पाव कम्मं ।।

५६ त णो अन्नेसिं[10] ।।

५७ ज सम्म ति पासहा[11], तं मोणं ति पासहा ।
ज मोण ति पासहा, त सम्मं ति पासहा ।।

---

१ वर्ति (क, ख, ग), वार्त (छ) ।
२ समया (घ, च) ।
३ णिहणिज्ज (ख, ग), निण्हवेज्ज (घु) ।
४ चेव (चू) ।
५ °मण्णेसति (चू, क), °मण्णुसिया (ख, ग, छ), °मण्णेसिनि (च), °मणुस्सिते (चूपा) ।
६ जुद्धारिय च दुल्लह (वृपा) ।
७ रिज्जइ (वृ, चूपा) ।
८ सविद्धभए (चू, वृपा), सविद्धपहे (चूपा) ।
९ × (चू, घ, च) ।
१० अन्नेसी (क, ख, ग, घ, च) ।
११ पासह (ख, ग) (सर्वत्र) ।

५८ ण इम सक्क सिढिलेहिं अद्दिज्जमाणेहिं[1] गुणासाएहिं वकसमायारेहिं पमत्तेहिं गारमावसतेहिं ॥

५९ मुणी मोणं समायाए, धुणे कम्म-सरीरग[2] ॥

६०. पत लूह सेवति, वीरा समत्तदसिणो[3] ॥

६१. एस ओहतरे मुणी, तिण्णे मुत्ते विरए वियाहिए ।

—त्ति बेमि ॥

चउत्थो उद्देसो

अवियत्तस्स एगल्लविहार-पद

६२ गामाणुगाम दूइज्जमाणस्स दुज्जात दुप्परक्कत भवति अवियत्तस्स[4] भिक्खुणो ॥

६३ वयसा वि एगे वुइया कुप्पति माणवा ॥

६४. उन्नयमाणे य णरे, महता मोहेण मुज्भति[5] ॥

६५ सवाहा वहवे भुज्जो-भुज्जो दुरतिक्कमा अजाणतो अपासतो ॥

६६. एयं ते मा होउ ॥

६७ एय कुसलस्स दसण ॥

६८ तद्दिट्ठीए तम्मोत्तीए[6] तप्पुरक्कारे, तस्सण्णी तन्निवेसणे ॥

इरिया-पदं

६९. जयविहारी चित्तणिवाती[7] पथणिज्भाती पलीवाहरे,[8] पासिय पाणे गच्छेज्जा ॥

७० से अभिक्कममाणे पडिक्कममाणे सकुचेमाणे[9] पसारेमाणे विणियट्टमाणे सपलिमज्जमाणे[10] ॥

कम्मणो बंध-विवेग-पद

७१ एगया गुणसमियस्स रीयतो कायसफासमणुचिण्णा एगतिया पाणा उद्दायति ॥

७२ इहलोग-वेयण वेज्जावडिय ॥

७३ ज 'आउट्टिकय कम्म'[11], त परिण्णाए[12] विवेगमेति ॥

७४ एव से अप्पमाएणं, विवेग किट्टति वेयवी ॥

१, आदिज्ज० (क), अदिज्ज० (ख, ग, घ, च, छ) ।

२ 'कम्म' नास्ति (क, घ, च, छ) ।

३ सम्मत्त० (क, वृपा, चू) ।

४ अव्वत्तस्स (क) ।

५ वुज्भति (चू पा) ।

६ तम्मुत्तिए (क, च) ।

७ चित्तणिधायी (चूपा) ।

८ पलिवहिरे (क, ग), पलिवाहरे (च), वलिवाहिरे (शु), पलिवाहिरे (ख, घ, छ, वृ) ।

९ सकुच० (च) ।

१० सपलिज्ज० (ख) ।

११ आउट्टीकम्म (क, च), आवट्टीकम्म (घ) ।

१२ परिन्नाय (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

वंभचेर-पदं

७५ से पभूयदसी पभूयपरिण्णाणे उवसते समिए सहिते सया जए दट्ठु विप्पडिवेदेति अप्पाण—

७६ किमेस जणो करिस्सति ?

७७ 'एस से'[1] परमारामो, जाओ लोगम्मि इत्थीओ ॥

७८ मुणिणा हु एत पवेदित, उव्वाहिज्जमाणे गामधम्मेहिं—,

७९ अवि णिव्वलासए ॥

८० अवि ओमोयरिय कुज्जा ॥

८१ अवि उड्ढठाण ठाइज्जा ॥

८२ अवि गामाणुगाम दूइज्जेज्जा ॥

८३ अवि आहार वोच्छिदेज्जा ॥

८४ अवि चए इत्थीसु मण ॥

८५ पुव्व[2] दडा पच्छा फासा, पुव्व फासा पच्छा दडा ॥

८६ इच्चेते कलहासगकरा भवति । पडिलेहाए आगमेत्ता आणवेज्जा अणासे वणाए त्ति वेमि ॥

८७ से णो काहिए णो पासणिए णो सपसारए णो ममाए[3] णो कयकिरिए वइगुत्ते अज्झप्प-सवुडे परिवज्जए सदा पाव ॥

८८ एत मोण समणुवासिज्जासि ।

—त्ति वेमि ॥

पंचमो उद्देसो

आयरिय-पदं

८९ से वेमि—त जहा ।

अवि हरए पडिपुण्णे, 'चिट्ठइ समसि भोमे'[4] ।
उवसतरए सारक्खमाणे, से चिट्ठति सोयमज्झगए ॥

९०. से पास सव्वतो गुत्ते, पास लोए महेसिणो,
जे य पण्णाणमता पवुद्धा आरभोवरया ॥

९१ सम्ममेयति पासह[5] ॥

९२ कालस्स कखाए परिव्वयति त्ति वेमि ॥

---

१ एसे (सो) (क, घ, च) ।
२ पुव्वि (घ) ।
३ ममायए (छ), मामए (शु) ।
४ समसि भोमे चिट्ठइ (च) ।
५ पासहा (क, च, छ) ।

सद्धा-पदं

९३ वितिगिच्छ[1]-समावन्नेण अप्पाणेण णो लभति समाधि ।।
९४ सिया वेगे अणुगच्छति, असिया वेगे अणुगच्छति,
अणुगच्छमाणेहि अणणुगच्छमाणे कह ण णिव्विज्जे ?
९५ **तमेव सच्च णीसक, ज जिणेहि पवेइयं ।।**

मज्झत्थ-पदं

९६ सड्ढिस्स ण समणुण्णस्स सपव्वयमाणस्स—
समियति मण्णमाणस्स एगया समिया होइ ।
समियति मण्णमाणस्स एगया असमिया होइ ।
असमियति मण्णमाणस्स एगया समिया होइ ।
असमियति मण्णमाणस्स एगया असमिया होइ ।
समियति मण्णमाणस्स समिया वा, असमिया वा, समिया होइ उवेहाए ।
असमियति मण्णमाणस्स समिया वा, असमिया वा, असमिया होइ उवेहाए ।।
९७ उवेहमाणो अणुवेहमाण बूया **उवेहाहि समियाए ।।**
९८ इच्चेव तत्थ मधी झोसितो भवति ।।

अहिंसा-पद

९९ उट्ठियस्स ठियस्स गति समणुपासह ।।
१०० एत्थवि वालभावे अप्पाण णो उवदसेज्जा ।।
१०१ तुमसि नाम सच्चेव[2] ज 'हतव्व' ति मन्नसि,
तुमसि नाम सच्चेव ज 'अज्जावेयव्व' ति मन्नसि,
तुमसि नाम सच्चेव ज 'परितावेयव्व' ति मन्नसि,
[3]•तुमसि नाम सच्चेव ज 'परिघेतव्व' ति मन्नसि,
तुमसि नाम सच्चेव० ज 'उद्दवेयव्व' ति मन्नसि ।।
१०२ अजू चेय[4]-पडिवुद्ध[5]-जीवी, **तम्हा ण हता ण विघायए ।।**
१०३ **अणुसवेयणमप्पाणेण, ज 'हतव्वा' ति[6] णाभिपत्थए ।।**

आय-पदं

१०४ **जे आया से विण्णाया, जे विण्णाया से आया । जेण विजाणति से आया ।।**

---

१ वितिगिछ (छ), विगिछ (शु) ।
२ त चेव (क, घ, च) ।
३ स० पा०—एव ज 'परिघेतव्व' ति मन्नसि ज ।
४ चेय (क, ख, ग, च, चू, छ) ।
५ पडिवुज्झ (क, च, चू) ।
६ × (ख, ग, घ, च, छ) ।

१०५ त पडुच्च पडिसंखाए ॥
१०६ एस आयावादी समियाए-परियाए वियाहिते ।

—त्ति बेमि ॥

छट्ठो उद्देसो

मग्गदसण-पद

१०७ अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा ॥
१०८ एत ते मा होउ ॥
१०९ एय कुसलस्स दमण ॥
११० तद्दिट्ठीए तम्मुत्तीए, तप्पुरक्कारे तस्सण्णी तन्निवेसणे ॥
१११ अभिभूय अदक्खू, अणभिभूते पभू निरालबणयाए ॥
११२ जे मह[1] अवहिमणे ॥
११३ पवाएण पवाय जाणेज्जा ॥
११४ सहसम्मइयाए[2], परवागरणेण अण्णेसिं वा अतिए सोच्चा ॥
११५ णिद्देस णातिवट्टेज्जा मेहावी ॥

सच्चस्स अणुसीलण-पद

११६ सुपडिलेहिय[3] सव्वतो सव्वयाए[4] सम्ममेव समभिजाणिया[5] ॥
११७ इहारामं परिण्णाय, अल्लीण-गुत्तो परिव्वए ॥
णिट्ठियट्ठी वीरे, आगमेण सदा परक्कमेज्जासि[6] त्ति बेमि ॥
११८ उड्ढ सोता अहे सोता, तिरिय सोता वियाहिया,
एते सोया वियक्खाया, जेहिं संगंति पासहा ॥
११९ 'आवट्ट तु उवेहाए'[7], 'एत्थ विरमेज्ज वेयवी'[8] ॥
१२० विणएत्तु[9] सोय णिक्खम्म[10], एस मह अकम्मा जाणति पासति ॥
१२१ पडिलेहाए णावकखति, इह आगतिं गतिं परिण्णाय ॥
१२२ अच्चेइ जाइ-मरणस्स वट्टमग्ग[11] वक्खाय[12]-रए ॥

---

१ अह (चू) ।
२ °सम्मुइ (ति) याए (क, घ, च, छ) ।
३ °लेहिय (चू) ।
४ सव्वत्ताए (चू), सर्वात्मना (वृ) ।
५ °मेत (चू) ।
६ °ज्जा (घ) ।
७ आवट्टमेय तु पेहाए (च, ग, घ), अट्टमेय उवेहाए (चू) ।
८ विवेग किट्टइ वेदवी (चू, वृपा), एत्थ विरमेज्ज वेयवी (चूपा) ।
९ विणएत्ता (चूपा) ।
१० णिक्कम्म (घ, छ) ।
११ वटुमग्ग (क), वद्धमग्ग (च, शु) ।
१२ विक्खाय (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

परमप्प-पदं

१२३ **सव्वे सरा णियट्टंति ॥**

१२४. **तक्का जत्थ ण विज्जइ ॥**

१२५ **मई तत्थ ण गहिया ॥**

१२६ ओए अप्पतिट्ठाणस्स[1] खेयन्ने ॥

१२७ से ण दोहे, ण हस्से[2], ण वट्टे, ण तसे, ण चउरसे, ण परिमण्डले ॥

१२८ ण किण्हे, न णीले, ण लोहिए', ण हालिद्दे, ण सुक्किल्ले ॥

१२९ ण सुब्भिगधे[3], ण दुरभिगधे ॥

१३० ण तित्ते, ण कडुए, ण कसाए, ण अबिले, ण महुरे ॥

१३१ ण कक्खडे[4], ण मउए, ण गरुए, ण लहुए, ण सीए, ण उण्हे, ण णिद्धे, ण लुक्खे ॥

१३२ ण काऊ ॥

१३३ ण रुहे ॥

१३४ ण सगे ॥

१३५ ण इत्थी, ण पुरिसे, ण अण्णहा ॥

१३६ परिण्णे सण्णे[5] ॥

१३७ उवमा ण विज्जए ॥

१३८ अरूवी सत्ता ॥

१३९ **अपयस्स पय णत्थि ॥**

१४० से ण सद्दे, ण रूवे, ण गधे, ण रसे, ण फासे, इच्चेताव ।

—त्ति बेमि ॥

---

१ वृत्तिकृता एतत्पद षष्ठ्यन्त व्याख्यातम्, तेन अर्थस्य जटिलता जाता । प्राकृतशैल्या एतत् विभक्तिपरिवर्तनपूर्वक प्रथमान्त व्याख्यायते, तदा अर्थसारल्य स्यात् ।

२ ह्रुस्से (क, घ, च), रहस्से (ख), हरस्से (छ) ।

३ सुरहि ° (क, ख, ग) ।

४ कक्कडे (घ, छ) ।

५ सन्वओ (चू), × (घ) ।

छट्ठं अज्झयणं

धुयं

पढमो उद्देसो

नाणस्स निरूवण-पद

१. ओबुज्झमाणे इह माणवेसु आघाइ[1] से णरे ॥

२ जस्सिमाओ जाईओ सव्वओ सुपडिलेहियाओ भवति, अक्खाइ से णाणमणेलिसं ॥

३ से किट्टति तेसिं समुट्ठियाण णिक्खित्तदंडाण समाहियाण पण्णाणमंताण इह मुत्तिमग्गं ॥

४ एवं पेगे महावीरा विप्परक्कमंति ॥

अणत्तपण्णाणं अवसाद-पद

५ पासह एगेवसीयमाणे[2] अणत्तपण्णे ॥

६ से बेमि—से जहा वि कुम्मे हरए विणिविट्ठचित्ते, पच्छन्न-पलासे, उम्मग्गं[3] से णो लहइ ॥

७ भंजगा इव सन्निवेसं णो चयंति, एवं पेगे[4]—
'अणेगरूवेहिं कुलेहिं'[5] जाया,
'रूवेहिं सत्ता'[6] कलुणं थणंति,
णियाणाओ ते ण लभंति मोक्खं ॥

---

१ अक्खाति (क, ख, ग, घ), अग्घाति (चू) ।
२ विसीय॰ (क, ख, ग, घ, चू) ।
३ उम्मुग्गं (क, घ, छ) ।
४ वेगे (च) ।
५ अणेगगोत्तेसु कुलेसु (चू) ।
६ रूवेसु गिद्धा (च) ।

८ अह पास 'तेहिं-तेहिं'[1] कुलेहिं आयत्ताए[2] जाया—

गंडी अदुवा कोढी[3], रायसी अवमारियं।
काणियं झिमियं चेव, कुणिय खुज्जियं तहा॥
उदरिं पास मूयं[4] च, सूणिअ च गिलासिणिं।
वेवइं[5] पीढसप्पि च, सिलिवयं[6] महुमेहणिं[7]॥
सोलस एते रोगा, अक्खाया अणुपुव्वसो।
अह णं फुसंति आयका, फासा य असमजसा॥
मरण तेसिं संपेहाए[8], उववाय चयणं च णच्चा।
परिपागं[9] च संपेहाए, त सुणेह जहा तहा॥

९ संति पाणा अधा तमसि[10] वियाहिया॥

१० तामेव सइ असइ अतिअच्च[11] उच्चावयफासे पडिसवेदेति[12]॥

११ वुद्धेहिं एय पवेदित॥

पाणि-किलेस-पदं

१२ संति पाणा वासगा, रसगा, उदए उदयचरा, आगासगामिणो॥

१३. पाणा पाणे किलेसति॥

१४. पास लोए महब्भय॥

तिगिच्छापसंगे अहिंसा-पदं

१५. वहुदुक्खा हु जतवो॥

१६ सत्ता कामेहिं[13] माणवा॥

१७ अबलेण वह गच्छति, सरीरेण पभंगुरेण॥

१८ अट्टे से वहुदुक्खे, इति वाले पगब्भइ[14]॥

---

१. तेहिं (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ)।
२ × (चू)।
३ कोट्ठी (ग, छ)।
४ मूइ (क, घ, चू)।
५ वेवय (क, ख, ग, च), वेवइय (घ)।
६ मिन्नेवइ (घ, च)।
७ मधुमेहण (छ)।
८ सपेहाए (क, घ, च), पेहाए (ख, ग)।
९ परियाग (ख, ग, घ) (असुद्ध), पलिपाग (चू)।
१०. तमसि (क, घ)।
११ अतिगच्च (क)।
१२ °वेदेति (क, ख, घ, च, छ)।
१३ कामेसु (च)।
१४ पकुव्वइ (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ, चू), पगब्भइ (चूपा), वृत्तौ चूर्णौ च 'पकुव्वइ' पाठो व्याख्यातोऽस्ति। किन्तु उत्तराध्ययनस्य पञ्चमाध्ययने सप्तमे श्लोके 'इइ वाले पगब्भई' एव पाठोस्ति। चूर्णिकृता पाठान्तरत्वेन एष पाठो व्याख्यात। अर्थ-मीमासयासौ अधिक सगच्छते। तेनासौ मूले स्वीकृत।

१९ एते रोगे बहू णच्चा, आउरा परितावए ।।
२० णाल पास ।।
२१ अल तवेएहिं ।।
२२ एय पास मुणी ! महब्भय ।।
२३ णातिवाएज्ज कचण ।।

सयणपरिच्चायधुत-पद

२४ आयाण भो ! सुस्सूस भो ! 'धूयवाद पवेदइस्सामि"[1] ।।
२५ इह खलु अत्तत्ताए तेहिं-तेहिं कुलेहिं अभिसेएण[2] अभिसभूता, अभिसजाता, अभिणिव्वट्टा, अभिसवुड्ढा[3], अभिसवुद्धा अभिणिक्खता, अणुपुव्वेण महामुणी ।।
२६ त परक्कमत परिदेवमाणा, "मा णे चयाहि" इति ते वदंति ।।
छदोवणीया अज्झोववन्ना, अक्कंदकारी जणगा रुवंति ।
२७ अतारिसे मुणी, णो[4] ओहतरए, जणगा जेण विप्पजढा ।।
२८ सरण तत्थ णो समेति । किह णाम से तत्थ रमति ?
२९ एय[5] णाण सया समणुवासिज्जासि ।

—त्ति वेमि ।।

बीओ उद्देसो

कम्मपरिच्चायधुत-पद

३० आतुर लोयमायाए, 'चइत्ता पुव्वसजोग'[6] हिच्चा[7] उवसम वसित्ता वभचेरम्मि वसु वा अणुवसु वा जाणित्तु धम्म अहा[8] तहा, 'अहेगे तमचाइ कुसीला ।।
३१ वत्थ पडिग्गह कवल पायपुछण विउसिज्जा[9] ।।
३२ अणुपुव्वेण अणहियासेमाणा परीसहे दुरहियासए ।।
३३ कामे ममायमाणस्स इयाणिं वा मुहुत्ते[10] वा अपरिमाणाए भेदे ।।

---

१ नागार्जुनीया —धूयोवाय पवेयइस्सामि (चू), धूतोवाय पवेयति (वृ) ।
२ × (घ, च) ।
३ × (क, छ), °सवड्ढा (ख, ग), अभिवुद्धा (घ) ।
४ जहाहि (चू) ।
५ × (क, घ, च, छ) ।
६ एव (च) (अशुद्ध) ।
७ जहित्ता पुव्वमायतण (चू) ।
८ हिच्चा इह (चू) ।
९ जहा (ख) ।
१० विओ° (छ) ।
११ मुहुत्तेण (ख, ग, च, छ, वृ) ।

३४ एव से अतराइएहिं कामेहिं आकेवलिएहिं[1] अवितिण्णा[2] चेए[3] ॥
३५ 'अहेगे धम्म मादाय[4] 'आयाणप्पभिइ सुपणिहिए[5] चरे[6] ॥
३६. अपलीयमाणे[7] दढे ॥
३७ सव्वं गेहिं[8] परिण्णाय, एस पणए महामुणी ॥
३८ अइअच्च सव्वतो सग "ण मह अत्थित्ति इति एगोहमसि ॥"
३९ जयमाणे एत्थ विरते अणगारे सव्वओ मुडे रीयते[9] ॥
४० जे अचेले परिवुसिए[10] सचिक्खति[11] ओमोयरियाए ॥
४१ से अक्कुट्ठे व[12] हए व लूसिए[13] वा ॥
४२. पलिय पगथे अदुवा पगथे[14] ॥
४३ अतहेहिं सद्द-फासेहिं, इति सखाए ॥
४४ एगतरे अण्णयरे अभिण्णाय, तितिक्खमाणे परिव्वए ॥
४५ जे य हिरी, जे य अहिरीमणा[15] ॥
४६. चिच्चा सव्व विसोत्तियं, 'फासे फासे'[16] समियदसणे ॥
४७ एते भो ! णगिणा वुत्ता, जे लोगसि अणागमणधम्मिणो ॥
४८. आणाए मामगं धम्म ॥
४९. एस उत्तरवादे, इह माणवाणं वियाहिते ॥
५० एत्थोवरए त झोसमाणे ॥
५१ आयाणिज्ज परिण्णाय, परियाएण विगिचइ ॥
५२ 'इहमेगेसिं एगचरिया होति'[17] ॥
५३ तत्थियराइयरेहिं कुलेहिं सुद्धेसणाए सव्वेसणाए ॥
५४ से मेहावी परिव्वए ॥

---

१ अकेवलि० (चू) ।
२ अवतिन्ना (ग, छ, वृ) ।
३ एताणि विवज्जतेण पढिज्जति अत्यआमावातो—अहेगे त चाई सुसीले वत्थ पडिग्गह कवल पाय-पुछण अविउसिज्ज, अणुपुव्वेण अहियासमाणो परीसहे दुरहियासओ, कामे अममायमाणस्स इदाणि वा मुहुत्ते वा अपरिमाणाए भेदे। एव से अतराइएहिं कामेहिं आकेवलिएहिं वितिन्ना चेए (चू) ।
४ सहिए धम्ममायाय (चूपा) ।
५ °पभितिसु पणि° (क, ख, ग, च, छ, वृ) ।
६ उवदेसमेव चर (चू) ।
७ अप्प° (क, ग, घ, छ) ।
८ गिहिं (ख, घ), गध (थ) (चू) ।
९ गीयते (क, घ, च) ।
१० °जुसिते (छ), × (चू) ।
११ सचिट्ठति (छ) ।
१२ वा (ख, च, छ) ।
१३ लुचिए (ख, ग, छ, वृ) ।
१४ पकत्य (क), पकथे (ख, ग, च), पगत्थ (छ) ।
१५ °माणे (णा) (ख, घ, च, छ) ।
१६ फासे (ख, घ), सफासे फासे (च) ।
१७ × (चू) ।

५५. सुब्भि अदुवा दुब्भि ॥
५६ अदुवा तत्थ भेरवा ॥
५७ पाणा पाणे किलेसंति ॥
५८ ते फासे पुट्ठो धीरो[1] अहियासेज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

उवगरणपरिच्चायधुत-पद

५९ 'एय खु मुणी'[2] आयाण सया सुअक्खायधम्मे विधूतकप्पे णिज्झोसइत्ता'[3] ॥
६० जे अचेले परिवुसिए, तस्स ण भिक्खुस्स णो एव भवइ—परिजुण्णे[4] मे वत्थे वत्थ जाइस्सामि, सुत्त जाइस्सामि, सूइ जाइस्सामि, सधिस्सामि, सीवीस्सामि, उक्कसिस्सामि, वोक्कसिस्सामि, परिहिस्सामि[5], पाउणिस्सामि ॥
६१ अदुवा तत्थ परक्कमत भुज्जो अचेल तणफासा फुसति, सीयफासा फुसति, तेउफासा फुसति, दसमसगफासा फुसति ॥
६२ एगयरे अण्णयरे विरूवरूवे फासे अहियासेति अचेले ॥
६३ 'लाघव आगममाणे'[6] ॥
६४ तवे से अभिसमण्णागए भवति ॥
६५ जहेय[7] भगवता पवेदित तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो[8] सव्वत्ताए समत्तमेव[9] समभिजाणिया[10] ॥

सरीरलाघवधुत-पद

६६ एव तेसिं महावीराण चिरराइ पुव्वाइ वासाणि रीयमाणाण दवियाण पास अहियासिय ॥
६७ आगयपण्णाणाण किसा बाहा[11] भवति, पयणुए य मससोणिए ॥
६८ विस्सेणिं कट्टु, परिण्णाए[12] ॥

---

१ वीरो (रे) (क, च) ।
२ एस मुणी (चू) ।
३ °मइत्ता (क, ख, ग, छ, वृ) ।
४ °जिण्णे (घ, छ) ।
५ × (क, घ, च) ।
६ नागार्जुनीया —एव खलु से उवगरण-लाघविय तव कम्मक्खयकारण करेइ (चू, वृ) ।
७ से जहेय (चू) ।
८ नागार्जुनीया —सव्व ।
९ सम्मत्तमेव (ख, ग, घ, च, छ, वृ), समत्तमेव (वृपा) ।
१० °जाणित्ता (ख, ग, च) ।
११ बाधा (क, च), बाहवो (छ) ।
१२ °ण्णाय (ख, ग, च, छ) ।

६९ एस तिण्णे मुत्ते विरए वियाहिए त्ति बेमि ॥

संजमधुत-पद

७०. विरयं भिक्खुं रीयंतं, चिररातोसियं, अरती तत्थ किं विधारए[1] ?
७१. संधेमाणे[2] समुट्ठिए[3] ॥
७२. जहा से दीवे असंदीणे, एवं से धम्मे 'आयरिय-पदेसिए'[4] ॥
७३ 'ते अणवकंखमाणा'[5] अणतिवाएमाणा[6] दइया[7] मेहाविणो पंडिया ॥

विणयधुत-पद

७४ एवं तेसिं भगवओ अणुट्ठाणे[8] जहा से दिया[9]-पोए ॥
७५ एवं ते सिस्सा दिया य राओ य, अणुपुव्वेण वाइय ।

—त्ति बेमि ॥

चउत्थो उद्देसो

गोरवपरिच्चायधुत-पद

७६ एवं ते सिस्सा दिया य राओ य, अणुपुव्वेण वाइया 'तेहिं महावीरेहिं'[10] पण्णाणमंतेहिं ॥
७७ तेसिंतिए[11] पण्णाणमुवलब्भ[12] हिच्चा उवसमं 'फारुसियं समादियंति'[13] ॥
७८. वसित्ता बंभचेरंसि आणं 'तं णो' त्ति मण्णमाणा ॥
७९ अग्घायं[14] तु सोच्चा णिसम्म समणुण्णा जीविस्सामो एगे णिक्खम्म ते—
असंभवंता विडज्झमाणा, कामेहिं गिद्धा अज्झोववण्णा ।
समाहिमाघायमझोसयंता, सत्थारमेव फरुसं वदंति ॥
८०. सीलमंता उवसंता, संखाए रीयमाणा । असीला अणुवयमाणा ॥
८१. बितिया मंदस्स बालया ॥

---

१ न धारए (चूपा) ।
२ संधणाए (चू), संधेमाणे (चूपा) ।
३ °ट्ठाय (ख, ग, च, छ) ।
४ आरिय-देसिए (क, च, चू) ।
५ ते अवयमाणा भावसोया (चू), ते अणवकंखेमाणा (चूपा) ।
६ पाणे अणति° (ख, ग, छ, वृ), अणतिवरतेमाणा जाव अपरिगिण्हेमाणा (चू) ।
७ चियत्ता (चू) ।
८ आणुट्ठाणे (चू) ।
९ दियं (ग) ।
१० तेसिं महावीराणं (चू) ।
११ तेसंतिए (क, च), तेसिमंतिए (छ) ।
१२ °पद्दलब्भ (चू) ।
१३ अहेगे फारुसियं समारभंति (चूपा), अहेगे फारुसियं समारुहंति (वृपा) ।
१४ आघायं (क, ख, घ, च) ।

८२ णियट्टमाणा वेगे आयार-गोयरमाइक्खंति णाणभट्ठा दंसणलूसिणो ॥
८३ णममाणा एगे जीवितं विप्परिणामेंति ॥
८४ पुट्ठा वेगे णियट्ठंति, जीवियस्सेव कारणा[1] ॥
८५ णिक्खंतं पि तेसिं दुण्णिक्खंतं भवति ॥
८६. बालवयणिज्जा हु ते नरा, पुणो-पुणो जातिं[2] पकप्पेंति[3] ॥
८७ अहं सं भवता विद्दायमाणा, अहमंसी[4] विउक्कसे ॥
८८. उदासीणे[4] फरुसं वदंति ॥
८९. पलियं पगंथे अदुवा पगंथे अतहेहिं ॥
९० तं मेहावी जाणिज्जा धम्मं ॥
९१ अहम्मट्ठी तुमंसि णाम बाले, आरंभट्ठी, अणुवयमाणे, हणमाणे[5], घायमाणे, हणओ यावि समणुजाणमाणे, घोरे धम्मे उदीरिए, उवेहइ णं अणाणाए ॥
९२ एस विसण्णे वितद्दे वियाहिते त्ति बेमि ॥
९३ किमणेण भो! जणेण करिस्सामित्ति मण्णमाणा[6]—'एवं पेगे वइत्ता[7]',
मातरं पितरं हिच्चा, णातओ य परिग्गहं ।
'वीरायमाणा[8] समुट्ठाए, अविहिंसा सुव्वया दंता[9]' ॥
९४ अहेगे[10] पस्स दीणे उप्पइए पडिवयमाणे[11] ॥
९५ वसट्टा कायरा जणा लूसगा भवंति ॥

---

१ कारणाए (क, घ, छ) ।

२ गब्भाइं (चू) ।

३ °मर्मोति (ख, ग, च) ।

४ उदासीणा (छ) ।

५ हण पाणे (क, ख, ग, घ च), हयमाणे (छ), 'छ' प्रतौ 'हयमाणे' इति पाठान्तरं लभ्यते । अस्याधारेण 'हणमाणे' इति पाठस्य कल्पना जायते । अर्थसमीक्षयापि 'हणमाणे' इति पाठः समीचीनः प्रतिभाति । 'घायमाणे' अत्र कारितस्य 'हणओयावि समणुजाणमाणे' अत्रानुमोदनस्यार्थोऽस्ति । अस्मिन् संदर्भे यदि 'हणमाणे' पाठः स्यात् तदा कृतकारितानुमोदनस्य संगतिर्जायते । चूर्णावपि (पृ० २३०) अस्य पाठस्य संवादिविवरणं लभ्यते— 'पुढविकाइयादि जीवे हणसि हणावेसि हणतोवि' योगत्रिककरणत्रिगेण ।

६ मण्णमाणे (क, ख, घ, च, छ) ।

७ एवमेगे विदित्ता (क), एवं एगे विभत्ता (चूपा), विदित्ता (छ) ।

८ °माणे (क, घ, च, छ) ।

९ नागार्जुनीया—समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसूया अविहिंसगा सुव्वया दंता परदत्तभोइणो पावं कम्मं न करिस्सामो समुट्ठाए (चू, वृ) ।

१० × (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ) ।

११ पडियमाणे (च, छ) ।

९६ अहमेगेसिं सिलोए[1] पावए भवइ, "से समणविब्भते समणविब्भते"[2] ।।
९७ पासहेगे[3] समण्णागएहिं असमण्णागए[4], णममाणेहिं अणममाणे, विरतेहिं अविरते, दविएहिं अदविए ।।
९८ अभिसमेच्चा पडिए मेहावी णिट्ठियट्ठे वीरे आगमेण सया परक्कमेज्जासि[5] ।

—त्ति बेमि ।।

पंचमो उद्देसो

तितिक्खाधुत-पद

९९ से गिहेसु वा गिहतरेसु वा, गामेसु वा गामतरेसु वा, नगरेसु वा नगरतरेसु वा, जणवएसु वा 'जणवयतरेसु वा'[6], सतेगइया जणा लूसगा भवति, अदुवा—**फासा फुसति ते फासे, पुट्ठो वीरोहियासए**[7] ।।

धम्मोवदेसधुत-पदं

१०० **ओए समियदसणे** ।।
१०१. **दय लोगस्स जाणित्ता** पाईण पडीण दाहिण उदीण, आइक्खे[8] विभए किट्टे वेयवी ।।
१०२ से उट्ठिएसु वा अणुट्ठिएसु[9] वा सुस्सूसमाणेसु पवेदए—सर्ति, विरति, उवसम, णिव्वाण[10], सोयविय[11], अज्जविय, मद्दविय, लाघविय, अणइवत्तिय[12] ।।
१०३ सव्वेसिं पाणाण सव्वेसिं भूयाण सव्वेसिं जीवाण सव्वेसिं सत्ताण अणुवीइ भिक्खू धम्ममाइक्खेज्जा ।।

---

१ लोए (च, छ) ।
२ समणवितते (क, घ, चू), समणे भवित्ता समणविब्भंते (ख, ग), समणे भवित्ता विब्भंते विब्भंते (छ) ।
३ पास एगे (क), पासवेगे (च) ।
४ सह असमण्णागए (ख, ग, छ) ।
५ सव्वओ परिव्वएज्जासि (चू) ।
६ जणवयतरेसु वा जाव रायहाणीसु वा रायहाणीअतरेसु वा गामणयरतरे वा गाम जणवयतरे वा णगरजणवयतरे वा जाव गाम-रायहाणीअतरे वा उज्जाणे वा उज्जाणतरे वा विहारभूमी गयस्स वा गच्छतस्स वा अद्धाणपडिवन्नस्स अच्छतस्स वा जाव काउसग्ग ठाण वा ठियस्स (चू, वृ) ।
७ धीरो ० (च) ।
८ नागार्जुनीया —'जे खलु समणे बहुस्सुए बब्भागमे आहारणहेउकुसले धम्मकहालद्धि-सपन्ने खेत्त काल पुरिस समासज्ज केय पुरिसे क वा दरिसणमभिसपन्नो ? एव गुण जाइए पभू धम्मस्स आघवित्तए' ।
९ अणुट्ठिएसु वा जाव सोवट्ठिएसु वा (चू) ।
१० णेव्वाण (क, च) ।
११ सोय (ख, ग) ।
१२ अणतिवातिय (चू) ।

१०४ अणुवीइ भिक्खू धम्ममाइक्खमाणे—णो अत्ताणं आसाएज्जा, णो परं आसाएज्जा, णो अण्णाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं आसाएज्जा ॥

१०५ से अणासादए अणासादमाणे वुज्झमाणाणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं, जहा से दीवे असंदीणे, एवं से भवइ सरणं महामुणी ॥

कसायपरिच्चायधुत-पदं

१०६. एवं से उट्ठिए ठियप्पा[1], अणिहे अचले चले, अबहिलेस्से परिव्वए ॥

१०७ संखाय पेसलं धम्मं, दिट्ठिमं परिणिव्वुडे ॥

१०८. तम्हा संगं ति पासह ॥

१०९. गंथेहिं गढिया[2] णरा, विसण्णा कामविप्पिया[3] ॥

११० 'तम्हा लूहाओ णो परिवित्तसेज्जा'[4] ॥

१११ जस्सिमे आरंभा सव्वतो सव्वत्ताए सुपरिण्णाया भवंति, 'जेसिमे लूसिणो णो परिवित्तसंति'[5], से वंता कोहं च माणं च मायं च लोभं च ॥

११२ एस तुट्टे[6] वियाहिते त्ति बेमि ॥

११३. कायस्स विओवाए,[7] एस संगामसीसे वियाहिए ।
से हु पारंगमे मुणी, अवि हम्ममाणे[8] फलगावयट्ठि[9],
कालोवणीते कंखेज्ज कालं, जाव सरीरभेउ ।

—त्ति बेमि ।

---

१ उट्ठितप्पा (चू, च) ।

२ गहिता (छ) ।

३ कामक्कता (क, ख, ग, च, छ, वृ) ।

४ जसि इमे लूसिणो णो परिवित्तसति (चू), तम्हा लूहाओ णो परिवित्तसिज्जा (चूपा) ।

५ × (चू), जस्सि° (च, छ) ।

६ तिउट्टे (चू) ।

७ विवाघाए (ख, ग), विघाए (छ), विवायाए (च), व्याघात (विआघाए) (वृ) ।

८ हन्न° (क) ।

९ °तट्ठि (क, छ) ।

अट्ठमं अज्झयणं

विमोक्खो

पढमो उद्देसो

असमणुण्णविमोक्ख-पद

१ से बेमि—समणुण्णस्स[1] वा असमणुण्णस्स[2] वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा णो पाएज्जा, णो णिमंतेज्जा, णो कुज्जा वेयावडियं—परं आढायमाणे त्ति बेमि ॥

२ धुवं चेयं जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा, पायपुंछणं वा लभिय णो लभिय, भुंजिय णो भुंजिय, पंथं विउत्ता[3] विउकम्म विभत्तं धम्मं झोसेमाणे[4] समेमाणे पलेमाणे[5], पाएज्ज वा, णिमंतेज्ज वा, कुज्जा वेयावडियं—परं अणाढायमाणे त्ति बेमि ॥

असमायार-पद

३. इहमेगेसिं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवति, ते इह आरंभट्ठी अणुवयमाणा हणमाणा[6] घायमाणा, हणतो यावि समणुजाणमाणा ॥

४ अदुवा अदिन्नमाइयति ॥

५ अदुवा वायाओ विउंजंति[7], तं जहा—अत्थि लोए, णत्थि लोए, धुवे लोए, अधुवे लोए, साइए[8] लोए, अणाइए[9] लोए, सपज्जवसिते लोए, अपज्जवसिते

---

१ अतः पूर्वं 'से भिक्खू' इति गम्यमस्ति ।
२ अमणु° (क, ख, ग ।
३ वियत्ता (क, छ), विवत्ताण (ख, ग), विइयत्ता (च), विवत्तूण (चू) ।
४ जोसे° (च) ।
५ मलेमाणा (घ), वलेमाणे (च), चलेमाणे (छ), मालेमाणा (चू) ।
६ द्रष्टव्यम्—६।६१ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
७ विप्पउंजंति (क, ख, ग, च, छ) ।
८. साइ (घ) ।
९ अणाइ (घ) ।

लोए, सुकडेत्ति वा दुक्कडेत्ति वा, कल्लाणेत्ति वा पावेत्ति[1] वा, साहुत्ति वा असाहुत्ति वा, सिद्धीति वा असिद्धीति वा, णिरएत्ति वा अणिरएत्ति वा ।।

६ जमिण विप्पडिवण्णा मामग धम्म पण्णवेमाणा ।।

७ एत्थवि जाणह[2] अकस्मात्[3] ।।

८ 'एव तेसिं णो सुअक्खाए, णो सुपण्णत्ते धम्मे भवति'[4] ।।

विवेग-पद

९ से जहेय भगवया पवेदित आसुपण्णेण जाणया पासया ।।

१० अदुवा गुत्ती वओगोयरस्स त्ति बेमि ।।

११ सव्वत्थ सम्मय पाव ।।

१२ तमेव उवाइकम्म ।।

१३ एस मह विवेगे वियाहिते ।।

१४. गामे वा अदुवा रण्णे ?

णेव गामे णेव रण्णे धम्ममायाणह—पवेदित माहणेण मईमया ।।

१५ जामा तिण्णि उदाहिया[5], जेसु इमे आरिया[6] सबुज्झमाणा समुट्ठिया ।

१६. जे णिव्वुया पावेहिं[7] कम्मेहिं, अणियाणा ते वियाहिया ।।

अहिंसा-पद

१७. उड्ढं अह तिरिय दिसासु, सव्वतो सव्वावति च ण पडियक्क[8] 'जीवेहिं कम्म-समारभे ण'[9] ।।

१८. त परिण्णाय मेहावी णेव सय एतेहिं काएहिं दड समारभेज्जा, णेवण्णेहिं एतेहिं काएहिं दड समारभावेज्जा, नेवण्णे एतेहिं काएहिं दड समारभते वि समणुजाणेज्जा ।।

१९ जेवण्णे एतेहिं काएहिं दड समारभति, तेसिं पि वय लज्जामो ।।

२०. त परिण्णाय मेहावी त वा दड, अण्ण वा दड, णो दडभी[10] दड समारभेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

---

१ पावइत्ति (क), पावएत्ति (घ, च, छ) ।

२ जाण (क, च), जाणे (घ) ।

३ अकम्हा (चू) ।

४ न एस धम्मे सुयक्खाए सुपन्नत्ते भवइ (चू) ।

५ उदाहडा (घ, छ, चू), उदाहया (ख, ग) ।

६ आयरिया (घ, छ) ।

७ निव्वुडा (चू) ।

८. पाडेक्क (क), पाडियक्क (घ, चू) ।

९ दड समारभते (चू) ।

१० दडभीरू (चू) ।

बीओ उद्देसो

अणाचरणीय-विमोक्ख-पद

२१ से भिक्खू परक्कमेज्ज वा, चिट्ठेज्ज वा, णिसीएज्ज वा, तुयट्टेज्ज वा, सुसाणसि वा, सुन्नागारसि वा, गिरिगुहसि वा, रुक्खमूलसि वा, कुभारायतणसि वा, हुरत्था वा कहिंचि विहरमाण त भिक्खु उवसकमित्तु गाहावती बूया—आउसतो समणा ! अह खलु तव अट्ठाए असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा वत्थ वा पडिग्गह वा कवल वा पायपुछण वा पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ[1] अभिहड आहट्टु[2] चेतेमि[3], आवसह[4] वा समुस्सिणोमि, से भुजह वसह आउसतो समणा !

२२ भिक्खू त गाहावतिं समणस सवयस पडियाइक्खे—आउसतो गाहावती ! णो खलु ते वयण आढामि, णो खलु ते वयण परिजाणामि, जो तुम मम अट्ठाए असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा वत्थ वा पडिग्गह वा कवल वा पायपुछण वा पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएसि, आवसह वा समुस्सिणासि, से विरतो आउसो गाहावती ! एयस्स अकरणाए ।।

२३ से भिक्खू परक्कमेज्ज वा[5], चिट्ठेज्ज वा, णिसीएज्ज वा, तुयट्टेज्ज वा सुसाणसि वा, सुन्नागारसि वा, गिरिगुहसि वा, रुक्खमूलसि वा, कुभारायतणसि वा°, हुरत्था वा कहिंचि विहरमाण त भिक्खु उवसकमित्तु गाहावती आयगयाए पेहाए असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा वत्थ वा पडिग्गह वा कवल वा पायपुछण वा पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएइ, आवसह वा समुस्सिणाति[6] त भिक्खु परिघासेउ ।।

२४ त च भिक्खू जाणेज्जा—सहसम्मइयाए[7], परवागरणेण, अण्णेसिं वा अतिए[8] सोच्चा अय खलु गाहावई मम अट्ठाए असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा वत्थ वा पडिग्गह वा कवल वा पायपुछण वा पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ[9] •समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु°

---

१ °सिट्ठ (ख, ग, घ) ।
२ आफुड (च) ।
३ वेतेमित्ति केयि भणति करेमि, त तु ण युज्जति (चू) ।
४ आवसध (ख, ग), आवसथ (छ) ।
५ स० पा०—परक्कमेज्ज वा जाव हुरत्था ।
६ °स्सिणोति (क) ।
७ सम्मु° (क, घ, च, छ) ।
८ × (क, ग, घ, च, छ) ।
९ स० पा०—समारब्भ जाव चेएइ ।

चेएइ, आवसहं वा समुस्सिणाति[1], तं च भिक्खू पडिलेहाए[2] आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए[3] त्ति बेमि ॥

२५ भिक्खु च खलु पुट्ठा वा अपुट्ठा वा जे इमे आहच्च गंथा फुसंति—"से हंता ! हणह, खणह, छिंदह, दहह, पचह, आलुंपह, विलुंपह, सहसाकारेह[4], विप्परामुसह"—ते फासे 'धीरो पुट्ठो'[5] अहियासए ॥

२६ अदुवा आयार-गोयरमाइक्खे, तक्किया ण मणेलिसं । 'अणुपुव्वेण सम्मं पडिलेहाए आयगुत्ते ॥

२७ अदुवा गुत्ती गोयरस्स'[6] ॥

२८. बुद्धेहिं एयं पवेदितं—से समणुण्णे असमणुण्णस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा णो पाएज्जा, णो णिमंतेज्जा, णो कुज्जा वेयावडियं—परं आढायमाणे[7] त्ति बेमि ॥

२९ धम्ममायाणह, पवेइयं माहणेण मतिमया—समणुण्णे समणुण्णस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पाएज्जा, णिमंतेज्जा, कुज्जा वेयावडियं—परं आढायमाणे[8] ।

—त्ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

पव्वज्जा-पदं

३०. मज्झिमेण[9] वयसा एगे[10], संबुज्झमाणा समुट्ठिता ॥

---

१ °स्सिणोति (क) ।

२ सपडिलेहाए (ख, ग, घ) ।

३ °सेवणयाए (घ) ।

४ सहसक्कारेह (क) ।

५ पुट्ठो धीरो (ख, ग, घ), पुट्ठो वीरो (घ) । वीरो पुट्ठो (च) ।

६ अदुवा वइगुत्तीए गोयरस्स अणुपुव्वेण सम्मं पडिलेहाए आयगुत्ते (क, ख, ग, घ, छ, वृ), चूर्णिव्याख्यातं पाठं सङ्केतोस्ति, यथा—'असरिसं जं भणितं—अणण्णतुल्लं, अणुव्वणाणि सम्मं, जं भणितं—कम्मेण किंते असरिसं, पडिलेहा पेक्खिता, आयगुत्ते तिहिं गुत्तीहिं उवउत्तो उत्तरेवि दिज्जमाणे कुप्पेति ण वा, सत उत्तरसमत्थो भवति ताहे, अह गुत्ती एगतेण गुत्ती वयोगोयरे' । आदर्शेषु पाठपरिवर्तनं जातम् । वृत्तिकृतापि परिवर्तितपाठानुसारेण विवरणं कृतम्, किन्तु अर्थमीमांसया नैतत् समीचीनं प्रतिभाति । अस्यैवाध्ययनस्य दशमे सूत्रे 'अदुवा गुत्ती वओगोयरस्स' इति पाठो लभ्यते । तेनास्माभि चूर्णिसम्मतः पाठः स्वीकृतः ।

७ °मीणे (क, च) ।

८ °मीणे (क, च) ।

९. मज्झ° (ख) ।

१० वि एगे (क, ख, ग, च, छ, वृ), मिहं एगे (घ) ।

३१. 'सोच्चा वई मेहावी'[1], पडियाणं निसामिया ।
समियाए[2] धम्मे, आरिएहिं[3] पवेदिते ।।

अपरिग्गह-पदं

३२ ते अणवकखमाणा अणतिवाएमाणा अपरिग्गहमाणा णो 'परिग्गहावती सव्वावती'[4] च ण लोगसि ।।

३३. णिहाय दड पाणेहिं, पाव कम्म अकुव्वमाणे, एस मह अगथे वियाहिए ।।

आहारहेउ-पद

३४. ओए जुतिमस्स[5] खेयण्णे उववाय[6] चवणं[7] च णच्चा ।।

३५. आहारोवचया देहा, परिसह-पभगुरा ।।

३६ पासहेगे सव्विदिएहिं परिगिलायमाणेहिं ।।

३७ ओए दय दयइ ।।

३८ जे सन्निहाण[8]-सत्थस्स खेयण्णे ।।

३९ से भिक्खू कालण्णे बलण्णे मायण्णे खणण्णे विणयण्णे समयण्णे परिग्गह अममायमाणे कालेणुट्ठाई अपडिण्णे ।।

४० दुहओ छेत्ता नियाइ ।।

अगणि-असेवण-पदं

४१ त भिक्खु सीयफास-परिवेवमाणगाय उवसकमित्तु गाहावई बूया—आउसतो समणा ! णो[9] खलु ते गामधम्मा उव्वाहति ?
आउसतो गाहावई ! णो[10] खलु मम गामधम्मा उव्वाहति । सीयफास[11] णो खलु अह सचाएमि अहियासित्तए । णो खलु मे कप्पति अगणिकाय उज्जालेत्तए वा पज्जालेत्तए वा, काय आयावेत्तए वा पयावेत्तए वा अण्णेसिं वा वयणाओ ।।

४२ सिया से एव वदतस्स परो अगणिकाय उज्जालेत्ता पज्जालेत्ता काय आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा, त च भिक्खू पडिलेहाए आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए ।
—त्ति बेमि ।।

---

१ सोच्चा मेहावी वयण (क, ख, ग, घ, छ), सोच्चा मेहावी ण वयण (चू) ।
२ समयाए (क) ।
३ आयरिएहिं (घ, छ) ।
४ °वति सव्वावति (ख, ग, घ, च, छ), °वती स सव्वा° (चू), चूर्णिकृता 'स सव्वावति च ण लोगसि' इति पाठस्य सम्बन्ध 'णिहाय दड पाणेहिं' अनेन सूत्रेण सह योजितोस्ति ।
५ जुइमतस्स (ख, ग, च), अहवा जुत्तिम (चू) ।
६ ओवाय (क, घ) ।
७ चयण (घ, च) ।
८ सनिहाणस्स (चू) ।
९ × (चू) ।
१० अप्प (चू) ।
११ ° फास च (क, ख, च) ।

चउत्थो उद्देसो

उवगरण-विमोक्ख-पद

४३ जे भिक्खू तिहिं वत्थेहिं परिवुसिते[1] पायचउत्थेहिं, तस्स णं णो एवं भवति—चउत्थं वत्थं जाइस्सामि[2] ॥

४४ से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा ॥

४५ अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा ॥

४६ णो धोएज्जा[3], णो रएज्जा, णो धोय-रत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा ॥

४७ अपलिउंचमाणे[4] गामंतरेसु ॥

४८ ओमचेलिए[5] ॥

४९ एयं खु वत्थधारिस्स सामग्गियं ॥

५० अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते, गिम्हे पडिवन्ने, अहापरिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्ठवेज्जा, अहापरिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्ठवेत्ता—

५१ अदुवा संतरुत्तरे[6] ॥

५२ अदुवा एगसाडे ॥

५३ 'अदुवा अचेले'[7] ॥

५४ लाघवियं आगममाणे ॥

५५ तवे से अभिसमन्नागए भवति ॥

५६ जमेयं[8] भगवया पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए[9] समत्तमेव[10] समभिजाणिया ॥

सरीर-विमोक्ख-पद

५७ जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—पुट्ठो खलु अहमंसि, नालमहमंसि सीय-फासं अहियासित्तए, से वसुमं सव्व-समन्नागय-पण्णाणेणं अप्पाणेणं केइ अकरणयाए आउट्टे ॥

---

१ °उसिते (घ,छ)।
२ धारिस्सामि (चू)।
३ धावेज्जा (ग), धाएज्जा (घ)।
४ °ओवमाण (ख, च, छ)।
५ अवम° (क, ख, ग)।
६ अथवावमचेल एककल्पपरित्यागात् द्विकल्पधारीत्यर्थ. (वृ)।
७ × (चू)।
८ जहेयं (घ)।
९ सव्वयाए (घ), सव्वताए (च), आवट्टे (ख, ग)।
१० सम्मत्त° (ख, ग, घ, च, छ, वृ), समत्त° (वृपा)।

५८. तवस्सिणो हु त सेय, जमेगे[1] विहमाइए[2] ॥
५९ तत्थावि तस्स कालपरियाए ॥
६० से वि तत्थ विअतिकारए ॥
६१ इच्चेत विमोहायतण हिय, सुह, खम, णिस्सेयस[3], आणुगामिय ।

—ति वेमि ॥

पंचमो उद्देसो

उवगरण-विमोक्ख-पदं

६२ जे भिक्खू दोहिं वत्थेहिं परिवुसिते पायतइएहिं, तस्स ण णो एव भवति—तइय वत्थ जाइस्सामि ॥
६३ मे अहेसणिज्जाइ वत्थाइ जाएज्जा[4] ॥
६४ •अहापरिग्गहियाइ वत्थाइ धारेज्जा ॥
६५ णो धोएज्जा, णो रएज्जा, णो धोय-रत्ताइ वत्थाइ धारेज्जा ॥
६६ अपलिउचमाणे गामतरेसु ॥
६७ ओमचेलिए° ॥
६८ एय खु तस्स भिक्खुस्स सामग्गिय ॥
६९ अह पुण एव जाणेज्जा—उवाइक्कते खलु हेमते, गिम्हे पडिवन्ने, अहापरिजुण्णाइ वत्थाइ परिट्ठवेज्जा, अहापरिजुण्णाइ वत्थाइ परिट्ठवेत्ता—
७० अदुवा एगसाडे ॥
७१ अदुवा अचेले ॥
७२ लाघविय आगममाणे ॥
७३ तवे से अभिसमन्नागए भवति ॥
७४ जमेय भगवता[5] पवेदित, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए समत्तमेव[6] समभिजाणिया ॥

गिलाणस्स भत्तपरिण्णा-पद

७५ जस्स ण भिक्खुस्स एव भवति—"पुट्ठो अवलो अहमसि, नालमहमसि 'गिहतर-सकमण'[7] भिक्खायरिय[8]-गमणाए" 'से एव वदतस्स परो अभिहड असण वा

---

१ जसेगे (क, घ, च) ।
२ वेहसादिए (छ) ।
३ निस्सेम (ख, ग, घ, च), निस्सेसिय (चू) ।
४ स० पा० —जाएज्जा जाव एय ।
५ जहेय (घ, छ) ।
६ सम्मत्त ° (ख,ग,घ,च,छ,वृ), समत्त ° (वृपा) ।
७ गृहाद्गृहान्तर सङ्क्रमितुम्' इति वृत्तौ ।
८ भिक्खायरिय (क, घ, च, छ) ।

पाण वा खाइम वा साइम वा आहट्टु दलएज्जा, से पुव्वामेव[1] आलोएज्जा आउसतो ! गाहावती ! णो खलु मे कप्पइ 'अभिहडे असणे'[2] वा पाणे खाइमे वा साइमे वा भोत्तए[3] वा, पायए[4] वा, अण्णे वा एयप्पगारे[5]'[6] ॥

वेयावच्चपकप्प-पदं

७६ जस्स ण भिक्खुस्स अय पगप्पे—अह च खलु पडिण्णत्तो अपडिण्णत्तेहिं, गिलाणो अगिलाणेहिं, अभिकख साहम्मिएहिं कीरमाण वेयावडिय सातिज्जिस्सामि। अह वा वि खलु अपडिण्णत्तो पडिण्णत्तस्स, अगिलाणो गिलाणस्स, अभिकख साहम्मिअस्स कुज्जा वेयावडिय करणाए[7] ॥

७७ आहट्टु पइण्ण[8] आणक्खेस्सामि[9], आहड च सातिज्जिस्सामि, आहट्टु पइण्ण आणक्खेस्सामि, आहड च णो सातिज्जिस्सामि, आहट्टु पइण्ण णो आणक्खेस्सामि, आहड च सातिज्जिस्सामि, आहट्टु पइण्ण णो आणक्खेस्सामि, आहड च णो सातिज्जिस्सामि ॥

७८ 'लाघविय आगममाणे ॥

७९ तवे से अभिसमण्णागए भवति ॥

८० जमेय भगवता पवेदित, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए समत्तमेव समभिजाणिया'[10] ॥

८१ एव मे अहाकिट्टियमेव धम्म समहिजाणमाणे सते विरते सुसमाहितलेसे ॥

८२ तत्थावि तस्स कालपरियाए ॥

८३ से तत्थ विअतिकारए ॥

८४ इच्चेत विमोहायतण हिय, सुह, खम, णिस्सेयस, आणुगामिय[11] ।

—ति बेमि ॥

---

१ पुव्व° (ख, ग, घ) ।

२ अभिहड असण (ख, ग, च) ।

३ भोइत्तए (ख, ग) ।

४ पायत्तए (ख), पित्तए (घ), पातुए (छ), पात्तए (च) ।

५ तहप्पगारे (छ) ।

६ त भिक्खु केइ गाहावई उवसकमित्तु बूया—आउसतो समणा ! अहन्न तव अट्ठाए असण वा (४) अभिहड दलामि, से पुव्वामेव जाणेज्जा—आउसतो गाहावई ! जन्न तुम मम अट्ठाए असण (४) अभिहड चेतेसि, णो य खलु मे कप्पइ एयप्पगार असण वा (४) भोत्तए वा पायए वा अन्ने वा तहप्पगारे (वृपा) ।

७ करणयाए (क, च) ।

८ परिण्ण (क, ख, ग, घ, च, छ), चूर्णिवृत्त्यनुसारेण स्वीकृतोऽत्र पाठ (सर्वत्र) ।

९ आणिक्खि° (ख, ग), अणिक्खि° (चू) ।

१०. चिन्हान्तर्वर्ती पाठ चूर्णौ वृत्तौ च समस्ति, प्रतिषु नोपलभ्यते। चूर्ण्यनुसारेणाय पाठ स्वीकृत, वृत्तौ 'समभिजाणमाणे' एतस्य पश्चादसौ स्वीकृतोऽस्ति ।

११ अणु° (क ख, ग, च, छ) ।

छट्ठो उद्देसो

८५ जे भिक्खू एगेण वत्थेण परिवुसिते पायविइएण, तस्स णो एव भवइ—बिइय वत्थ जाइस्सामि ॥

८६ से अहेसणिज्ज वत्थ जाएज्जा ॥

८७ अहापरिग्गहिय वत्थ धारेज्जा[1] ॥

८८ °णो धोएज्जा, णो रएज्जा, णो धोय-रत्त वत्थ धारेज्जा ॥

८९ अपलिउचमाणे गामतरेसु ॥

९० ओमचेलिए ॥

९१ एय खु वत्थधारिस्स सामग्गिय ॥

९२ अह पुण एव जाणेज्जा—उवाइक्कते खलु हेमते°, गिम्हे पडिवन्ने, अहापरिजुण्ण वत्थ परिट्ठवेज्जा, अहापरिजुण्ण वत्थ परिट्ठवेत्ता—

९३ 'अदुवा अचेले'[2] ॥

९४ लाघविय आगममाणे[3] ॥

९५ °तवे से अभिसमण्णागए भवति ॥

९६ जमेय भगवता पवेदित, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए° समत्तमेव[4] समभिजाणिया ॥

एगत्तभावणा-पदं

९७ जस्स ण भिक्खुस्स एव भवइ—एगो अहमसि, न मे अत्थि कोइ, न याहमवि कस्सइ[5], एव से एगागिणमेव[6] अप्पाण समभिजाणिज्जा[7] ॥

९८ लाघविय आगममाणे ॥

९९ तवे से अभिसमन्नागए भवइ ॥

१०० जमेय भगवता पवेदित, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए समत्तमेव[8] समभिजाणिया ॥

अणासायलाघव-पदं

१०१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा आहारेमाणे

---

१ स० पा०—धारेज्जा जाव गिम्हे ।

२ अदुवा एगसाडे अदुवा अचेले (ख, ग, घ, च, छ, शु) ।

३ स० पा०—आगममाणे जाव समत्तमेव ।

४ द्रष्टव्यम्—८।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

५ कस्सवि (घ) ।

६ एगाणिय° (च, चू) ।

७ एतेसु अट्ठसुवि उद्देसएसु एस आलावओ सव्वत्थ भाणियव्वो—ण मे अत्थि कोयि णाहमवि कस्सति, अहवा वेहाणसमरणउद्देसगातो आरब्भ एस आलावओ वत्तव्वो, ण मम अत्थि कोयि° (चू) ।

८ द्रष्टव्यम्—८।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

णो वामाओ हणुयाओ दाहिण हणुय सचारेज्जा[1] आसाएमाणे[2], दाहिणाओ वा हणुयाओ वाम हणुय णो सचारेज्जा आसाएमाणे, से अणासायमाणे ।।

१०२ लाघविय आगममाणे ।

१०३ तवे से अभिसमन्नागए भवइ ।।

१०४ जमेय भगवता पवेइय, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए समत्तमेव[3] समभिजाणिया ।।

सलेहणा-पद

१०५ जस्स ण भिक्खुस्स एव भवति—से 'गिलामि च'[4] खलु अह इमसि समए[5] इम सरीरग अणुपुव्वेण परिवहित्तए, से आणुपुव्वेण आहार सवट्टेज्जा, आणुपुव्वेण आहार सवट्टेत्ता,

कसाए पयणुए किच्चा, समाहियच्चे फलगावयट्ठी,
उट्ठाय भिक्खू अभिनिव्वुडच्चे ।।

इगिणिमरण-पद

१०६ अणुपविसित्ता गाम वा, णगर वा, खेड वा, कव्वड वा, मडव[6] वा, पट्टणं वा, दोणमुह वा, आगर वा, आसम वा, सण्णिवेस वा, णिगम वा, रायहाणि वा, 'तणाइ जाएज्जा'[7], तणाइ जाएत्ता, से तमायाए एगतमवक्कमेज्जा, एगतमवक्कमेत्ता अप्पडे अप्प-पाणे अप्प-वीए अप्प-हरिए अप्पोसे अप्पोदए अप्पुत्तिग-पणग-दग मट्टिय-मक्कडासताणए, 'पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तणाइ सथरेज्जा, तणाइ सथरेत्ता'[8] एत्थ वि समए इत्तरिय कुज्जा ।।

१०७ त सच्च सच्चावादी[9] ओए तिण्णे छिण्ण-कहकहे आतीतट्ठे[10] अणातीते **वेच्चाण**[11] **भेउर** काय, सविहूणिय विरूवरूवे परिसहोवसग्गे अस्सि 'विस्स भइत्ता'[12] भेरवमणुचिण्णे ।।

---

१ साहरेज्जा (चू) ।

२ आढायमाणे (चूपा वृपा) ।

३ द्रष्टव्यम्—८ ५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

४ गिलाणा मिव (ख, ग), गिलाणमिव (छ,चू) ।

५ समये णो सचाएमि (ख, ग), न शक्नोमि (वृ) ।

६ मडव (ग) ।

७ × (क, ग, घ, च) ।

८ पडिलेहित्ता सथारग सथरेइ सथारग सथरेत्ता (चू) ।

९ सच्चवादी (ख, ग, च, छ) ।

१० अइअट्ठे (क, घ, च) ।

११ चेच्चाण (ख, ग, घ, च, छ, वृ), वकार-चकारयोर्लिपिसादृश्यात् वर्णपरिवर्तन जातम्, तेन 'वेच्चाण' स्थाने 'चेच्चाण' इति रूप सवृत्तम् । वृत्तिकृता उपलब्धपाठाधारेण 'त्यक्त्वा' इति व्याख्यातम्, किन्तु चूर्णिकृता 'विइत्ता' इति व्याख्यातम् । प्रकरणसङ्गत्या-स्माभि 'वेच्चाण' इति पाठ स्वीकृत ।

१२ विस्सभणयाए (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ),

१०८ तत्थावि तस्स कालपरियाए ॥
१०९ से[1] तत्थ विअंतिकारए ॥
११० इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं, आणुगामियं ।

—त्ति बेमि ॥

सत्तमो उद्देसो

उवगरण-विमोक्ख-पदं

१११ जे भिक्खू अचेले परिवुसिते, 'तस्स णं'[2] एवं भवति—चाएमि अहं तणफासं अहियासित्तए, सीयफासं अहियासित्तए, तेउफासं[3] अहियासित्तए, दंस-मसगफासं अहियासित्तए, एगतरे अण्णतरे विरूवरूवे फासे अहियासित्तए, हिरिपडिच्छादणं चहं[4] णो संचाएमि अहियासित्तए, एवं से कप्पति कडि-बंधणं धारित्तए ॥

११२ अदुवा तत्थ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तणफासा फुसंति, सीयफासा फुसंति, तेउफासा फुसंति, दंस-मसगफासा फुसंति, एगयरे अण्णयरे विरूवरूवे फासे अहियासेति अचेले ॥

११३ लाघवियं आगममाणे ॥
११४ तवे से अभिसमन्नागए भवति ॥
११५ जमेयं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए समत्तमेव[5] समभिजाणिया ॥

वेयावच्चपकप्प-पदं

११६ जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु[6] दलइस्सामि,[7] आहडं च सातिज्जिस्सामि ॥

११७ जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु दलइस्सामि, आहडं च णो सातिज्जिस्सामि ॥

११८ जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु 'अण्णेसिं भिक्खूणं'[8] असणं वा

वृत्तिकृता 'विश्रमणतया' इति व्याख्यातम्, किन्तु प्रकरणदृष्ट्या देहात्मभेदभावनाभिधायकपाठ सुसङ्गतोस्ति, तेन चूर्णिकृता व्याख्यात पाठ स्वीकृत ।

१ से वि (ख, ग, च, छ) ।
२ तस्स ण भिक्खुस्स (वृ) ।
३ चूर्णौ असौ पाठो न व्याख्यातो दृश्यते ।
४ च (ख, ग, घ, च) ।
५ द्रष्टव्यम्—८।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
६ आहट्टु पइण्ण (चू), चतुर्ष्वपि सूत्रेषु असौ पाठभेदो द्रष्टव्य ।
७ दाहामि (चू) ।
८ X (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

पाण वा खाइम वा साइम वा आहट्टु नो दलइस्सामि, आहड च सातिज्जिस्सामि ।।

११९ जस्स ण भिक्खुस्स एव भवति—अह खलु अण्णेसि भिक्खूण असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा आहट्टु नो दलइस्सामि, आहड च णो सातिज्जिस्सामि ।।

१२० अह च खलु तेण अहाइरित्तेण[1] अहेसणिज्जेण अहापरिग्गहिएण असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा अभिकख साहम्मियस्स कुज्जा वेयावडिय करणाए ।।

१२१ अह वावि तेण अहातिरित्तेण अहेसणिज्जेण अहापरिग्गहिएण असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा अभिकख साहम्मिएहि कीरमाण वेयावडिय सातिज्जिस्सामि ।।

१२२. लाघविय आगममाणे[2] ।।

१२३ °तवे से अभिसमण्णागए भवति ।।

१२४ जमेय भगवता पवेदित, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए° समत्तमेव[3] समभिजाणिया ।।

पाओवगमण-पद

१२५ जस्स ण भिक्खुस्स एव भवति—से गिलामि[4] च खलु अह इमम्मि समए इम सरीरग अणुपुव्वेण परिवहित्तए, से आणुपुव्वेण आहार सवट्टेज्जा, आणुपुव्वेण आहार सवट्टेत्ता कसाए पयणुए किच्चा समाहिअच्चे फलगावयट्ठी, उट्ठाय भिक्खू अभिणिव्वुडच्चे ।।

१२६ अणुपविसित्ता गाम वा[5], °णगर वा, खेड वा, कव्वड वा, मडब वा, पट्टण वा, दोणमुह वा, आगर वा, आसम वा, सण्णिवेस वा, णिगम वा°, रायहाणि वा, तणाइ जाएज्जा, तणाइ जाएत्ता से तमायाए एगतमवक्कमेज्जा, एगतमवक्कमेत्ता अप्पडे अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्प-हरिए अप्पोसे अप्पोदए अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासताणए, पडिलेहिय-पडिलेहिय पमज्जिय-पमज्जिय तणाइ सथरेज्जा, तणाइ सथरेत्ता एत्थ वि समए काय च, जोग च, इरिय च, पच्चक्खाएज्जा ।।

१२७ 'त सच्च सच्चावादी ओए तिण्णे छिन्न-कहकहे आतीतट्ठे अणातीते वेच्चाण[6]

---

१ आहा° (क, च, छ) ।
२ स० पा०—आगममाणे जाव समत्तमेव ।
३ द्रष्टव्यम्—८।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
४ गिलाएमि (ख, छ) ।
५ स० पा०—गाम वा जाव रायहाणि ।
६ द्रष्टव्यम्—८।१०७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

भेउरं कायं, सविहूणिय विरूवरूवे परिसहोवसग्गे अस्सि 'विस्स भइत्ता'[1] भेरव-
मणुचिण्णे ॥

१२८ तत्थावि तस्स कालपरियाए ॥

१२९ से तत्थ विअतिकारए ॥

१३० इच्चेत विमोहायतण हिय, सुह, खम, णिस्सेयस, आणुगामिय[2] ।

—ति बेमि ॥

अट्ठमो उद्देसो

अणसण-पद

१ 'आणुपुव्वी - विमोहाइ'[3], जाइ धीरा[4] समासज्ज ।
वसुमतो[5] मइमतो, सव्व णच्चा अणेलिस ॥

भत्तपच्चक्खाण-पद

२ दुविह पि 'विदित्ताण, बुद्धा धम्मस्स पारगा'[6] ।
अणुपुव्वीए[7] सखाए, आरभाओ[8] तिउट्टति ॥

३ कसाए पयणुए किच्चा, अप्पाहारो तितिक्खए ।
अह भिक्खू गिलाएज्जा, आहारस्सेव अतिय ॥

४ जीविय णाभिकखेज्जा, मरण णोवि पत्थए ।
दुहतोवि ण सज्जेज्जा, जीविते मरणे तहा ॥

५ मज्झत्थो णिज्जरापेही, समाहिमणुपालए ।
अतो बहि विउसिज्ज, अज्झत्थ सुद्धमेसए ॥

६ ज किंचुवक्कम[9] जाणे, आउक्खेमस्स अप्पणो ।
तस्सेव अतरद्धाए, खिप्प सिक्खेज्ज पडिए ॥

७ गामे वा अदुवा रण्णे, थडिल पडिलेहिया ।
अप्पपाण तु विण्णाय[10], तणाइ सथरे मुणी ॥

८ अणाहारो तुअट्टेज्जा[11], पुट्ठो तत्थहियासए ।
णातिवेल उवचरे, माणुस्सेहिं वि पुट्ठओ[12] ॥

---

१ द्रष्टव्यम्—८।१०७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
२ नागार्जुनीया —कट्ठमिव आतट्ठे तत्थ सचतित सज्जीकरेत्ता उ पतिण्णे छिन्नकह कहेज्जा जाव आणुगामिय (चू) ।
३ अणुपुव्वेण विमोहाइ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
४ वीरा (क, च) ।
५ वुसिमतो (चू) ।
६ विगिंचित्ता दुट्ठादुट्ठाण जाणगा (चूपा) ।
७ °पुव्वीइ (ग) ।
८ कम्मुणाओ (घ, च, चूपा, वृपा) ।
९ किंचिवुक्कम (च) ।
१० वियाणित्ता (चू) ।
११ णिवज्जेज्जा (चू, वृ) ।
१२ °पुट्ठव (क, च, छ), °पुट्ठए (ख, ग) ।

९ ससप्पगा य जे पाणा, जे य उड्ढमहेचरा।
भुजति मस-सोणिय, ण छणे ण पमज्जए॥
१० पाणा देह विहिसति, ठाणाओ ण विउब्भमे[1]।
'आसवेहि विवित्तेहि'[2], तिप्पमाणेऽहियासए[3]॥
११ गथेहि विवित्तेहि[4], आउ-कालस्स पारए।

इगिणिमरण-पद

पग्गहियतरग[5] चेय, दवियस्स वियाणतो[6]॥
१२ अय से अवरे धम्मे, णायपुत्तेण साहिए।
आयवज्ज पडीयार, विजहिज्जा तिहा तिहा॥
१३ हरिएसु ण णिवज्जेज्जा, थडिल 'मुणिआ सए'[7]।
विउसिज्ज[8] अणाहारो, पुट्ठो तत्थहियासए॥
१४ इदिएहि गिलायते, समिय साहरे[9] मुणी।
तहावि से अगरिहे[10], अचले जे समाहिए॥
१५ अभिक्कमे पडिक्कमे, सकुचए पसारए।
काय-साहारणट्ठाए[11], एत्थ[12] वावि अचेयणे॥
१६ परक्कमे[13] परिकिलते, अदुवा चिट्ठे अहायते।
ठाणेण परिकिलते, णिसिएज्जा य अतसो॥
१७ 'आसीणे णेलिस'[14] मरण, इदियाणि समीरए।
कोलावास समासज्ज, वितह पाउरेसए॥
१८ जओ वज्ज समुप्पज्जे, ण तत्थ अवलबए।
ततो उक्कसे[15] अप्पाण, सव्वे फासेहियासए॥

---

१ वि उब्भमे (क, ख, ग, घ, वृ)।
२ अवसव्वेहि विचित्तेहि (चू)।
३ तप्प° (छ)।
४ विचित्तेहि (क, ख, घ, च, छ, चू)।
५ °तराग (क), °तर (चू)।
६ मुयाहितो (चू)।
७ मुणि आसए (च, चू)।
८ वियो° (ख, ग, च, छ)।
९ आहरे (ख, ग, घ, च, छ, वृ)।
१० अगरहे (क, ख, ग, छ)।
११ साहरण° (क, ग, छ), सधारण (चू), सहारण (च)।
१२ इत्थ (घ)।
१३ परिक्कमे (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१४ आसीण मणेलिस (क, घ, च), उदासीणो अणेलिसो (चू)।
१५ उक्कसे (ग, घ, छ)।

१९ अय चायततरे[1] सिया, जो एव अणुपालए।
सव्वगायणिरोधेवि, ठाणातो ण विउब्भमे॥
२० अय से उत्तमे धम्मे, पुव्वट्ठाणस्स पग्गहे।
अचिर पडिलेहित्ता, विहरे चिट्ठ माहणे॥
२१ अचित्त तु समासज्ज, ठावए तत्थ अप्पग।
वोसिरे सव्वसो काय, ण मे देहे परीसहा॥
२२ जावज्जीव परीसहा, उवसग्गा 'य सखाय'[2]।
सवुडे देहभेयाए, इति पण्णेहियासए॥
२३ भेउरेसु न रज्जेज्जा, कामेसु वहुतरेसु[3] वि।
इच्छा[4]-लोभ ण सेवेज्जा, सुहुम[5] वण्ण सपेहिया॥
२४ सासएहि णिमतेज्जा, 'दिव्व माय'[6] ण सद्दहे।
त पडिवुज्झ माहणे, सव्व नूम विधूणिया॥
२५ सव्वट्ठेहि[7] अमुच्छिए, आउकालस्स पारए।
तितिक्ख परम णच्चा, विमोहण्णतर हित॥

—ति वेमि॥

---

१ चायतरे (ख), चाततरे (चू, क), आयरे द्रढग्गाहतरे धम्मे (चूपा), यदि वा आत्ततर (वृ)।
२ तिति सखाते (क), इति सखया (ता) (ग, घ, छ), इति सखाय (च, वृ)।
३ वहुलेसु (चूपा, वृपा)।
४ इच्छ° (क)।
५ धुव (धुव°) (क, ख, ग, घ, च, छ, चूपा, वृपा)।
६ दिव्वमाय (ख, घ, च, चूपा)।
७ सव्वत्थेहि (चू)।

नवमं अज्झयणं

उवहाणसुयं

पढमो उद्देसो

भगवओ चरिया-पदं

१ अहासुयं वदिस्सामि, जहा से समणे भगवं उट्ठाय।
संखाए तंसि हेमंते, अहुणा पव्वइए रीयत्था[1] ॥

२ णो चेविमेण वत्थेण, पिहिस्सामि तंसि हेमंते।
से पारए आवकहाए[2], एयं खु अणुधम्मियं[3] तस्स ॥

३ चत्तारि साहिए मासे, बहवे पाण-जाइया[4] आगम्म।
अभिरुज्झ कायं[5] विहरिंसु, आरुसियाणं तत्थ हिंसिंसु ॥

४ संवच्छरं साहियं मासं, जं ण रिक्कासि वत्थगं भगवं।
अचेलए ततो चाई, तं वोसज्ज वत्थमणगारे ॥

५ अदु पोरिसिं तिरियं भित्तिं, चक्खुमासज्ज अंतसो झाइ।
अह चक्खु-भीया[6] सहिया, तं "हंता हंता" बहवे कंदिंसु ॥

६ सयणेहिं वितिमिस्सेहिं[7], इत्थीओ तत्थ से परिण्णाय।
सागारियं[8] ण सेवे, इति से सयं पवेसिया झाति ॥

---

१. रीइत्था (क, चू), रीयित्था (च), रीएत्था (ग)।
२ आवकहं (घ)।
३ आणु॰ (छ)।
४. ॰जाती (क)।
५ आरुज्झ॰ (चू)।
६ ॰भीय (ग, च, छ)।
७ विमिस्सेहिं (घ)।
८ साकारियं (घ, छ)।

७ जे के इमे अगारत्था, मीसीभाव पहाय से झाति।
पुट्ठो[1] वि णाभिभासिसु, गच्छति णाइवत्तई अजू॥
८ णो सुगरमेतमेगेसिं, णाभिभासे अभिवायमाणे।
हयपुव्वो तत्थ दडेहि, लूसियपुव्वो अप्पपुण्णेहि॥
९ फरुसाइ दुत्तितिक्खाइ, अतिअच्च मुणी परक्कममाणे।
आघाय-णट्ट-गीताइ, दडजुद्धाइ मुट्ठिजुद्धाइ॥
१० गढिए मिहो[2]-कहासु[3], समयमि[4] णायसुए[5] विसोगे अदक्खू।
एताइ सो उरालाइ, गच्छइ णायपुत्ते[6] असरणाए॥
११ अविसाहिए दुवे वासे, सीतोद अभोच्चा णिक्खते।
एगत्तगए[7] पिहियच्चे, से अहिण्णायदसणे सते॥
१२ पुढवि च आउकाय[8], तेउकाय च वाउकाय च।
पणगाइ[9] बीय-हरियाइ, तसकाय च सव्वसो णच्चा॥
१३ एयाइ सति पडिलेहे, चित्तमताइ से अभिण्णाय।
परिवज्जिया[10] ण विहरित्था, इति सखाए से महावीरे॥
१४ अदु[11] थावरा तसत्ताए, तसजीवा य थावरत्ताए।
अदु सव्वजोणिया सत्ता, कम्मुणा[12] कप्पिया पुढो बाला॥
१५ भगव च 'एव मन्नेसिं'[13], सोवहिए हु लुप्पती बाले।
कम्म च सव्वसो णच्चा, त पडियाइक्खे पावग भगव॥
१६ दुविह समिच्च मेहावी, किरियमक्खायणेलिसिं[14] णाणी।
आयाण-सोयमतिवाय-सोय, जोग च सव्वसो णच्चा॥
१७ अइवातिय[15] अणाउट्टे[16], सयमण्णेसिं अकरणयाए।
जस्सित्थिओ परिण्णाया, सव्वकम्मावहाओ से[17] अदक्खू॥

---

१ नागार्जुनीया—पुट्ठो व सो अणुपुट्ठो व, णो अणुन्नाइ पावग भगव। पुट्ठे व से अपुट्ठे वा° (चू)।
२ मिघु° (च), मिहु° (छ)।
३ °कहासु (क, घ)।
४ समतो (चू)।
५ °पुत्ते (ख, ग, वृ)।
६. णाइ° (छ)।
७ एगत्ति° (चू)।
८. °काय च (क, ग, च, छ)।
९ पणगाय (ख)।
१० °वज्जिया (ख, ग)।
११. अदुवा (ख, ग, च, छ), अदुव (क)।
१२ कम्मणा (चू)।
१३ एवमन्नेसिं (क, घ, च, छ, व), एवमणिसित्ता (चू)।
१४ °मणेलिस (ख, ग)।
१५ °वत्तिय (छ)।
१६ अणाउट्टि (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ)।
१७ × (क, घ, च, छ)।

१८ अहाकडं[1] न से सेवे, सव्वसो कम्मुणा 'य अदक्खू'[2] ।
जं किंचि पावगं भगवं, तं अकुव्वं वियडं भुंजित्था ॥
१९ णो सेवती य परवत्थं[3], परपाए वि से ण भुंजित्था ।
परिवज्जियाण ओमाणं, गच्छति संखडिं असरणाए[4] ॥
२० मायण्णे असण-पाणस्स, णाणुगिद्धे रसेसु अपडिण्णे ।
अच्छिंपि णो पमज्जिया[5], णोवि य कंडूयये मुणी गायं ॥
२१ अप्पं तिरियं पेहाए, अप्पं पिट्ठओ उपेहाए[6] ।
अप्पं बुइएऽपडिभाणी, पंथपेही चरे जयमाणे ॥
२२ सिसिरंसि अद्धपडिवन्ने, तं वोसज्ज[7] वत्थमणगारे ।
पसारित्तु बाहुं परक्कमे, णो अवलंबियाण कंधंसि[8] ॥
२३ एस विही अणुक्कतो, माहणेण मईमया ।
'अपडिण्णेण वीरेण, कासवेण महेसिणा'[9] ॥

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

भगवओ सेज्जा-पद

१ चरियासणाइं[10] सेज्जाओ, एगतियाओ जाओ बुइयाओ ।
आइक्ख ताइं सयणासणाइं[11], जाइं सेवित्था से महावीरो ॥
२ आवेसण[12] - 'सभा-पवासु'[13], पणियसालासु एगदा वासो ।
अदुवा पलियट्ठाणेसु, पलालपुंजेसु एगदा वासो ॥
३ आगंतारे आरामागारे, गामे[14] णगरेवि[15] एगदा वासो ।
सुसाणे सुण्णगारे[16] वा, रुक्खमूले वि एगदा वासो ॥

---

१ आहा° (च, छ) ।
२ वव अदक्खू (क), अदक्खू (ख, ग, च), य दक्खू (घ) ।
३. पर वत्थ (ख, ग) ।
४ असरणयाए (घ, च) ।
५ पमज्जिज्जा (ख) ।
६ व पेहाए (घ) ।
७ वोसरिज्ज (घ, चू) ।
८ खंधंसि (क, च) ।
९ बहुसो अपडिण्णेण, भगवया एवं रीयंति (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ, चूपा) ।
१० अयं च श्लोकः चिरंतनटीकाकारेण न व्याख्यातः (वृ) ।
११ सयणाइं (क, च) ।
१२ आएसण (चू) ।
१३ सभप्पवासु (क, घ, छ) ।
१४ × (क, च), तह य (घ, छ, व) ।
१५ °वा (क) ।
१६ सुण्णागारे (छ) ।

४ एतेहिं मुणी सयणेहिं, समणे आसी[1] पतेरस[2] वासे ।
राइं दिवं पि जयमाणे, अप्पमत्ते समाहिए झाति ॥
५ 'णिद्दं पि णो पगामाए, सेवइ[3] भगवं उट्ठाए'[4] ।
जग्गावती[5] य अप्पाणं, ईसिं 'साई या'[6] सी अपडिण्णे ॥
६ संबुज्झमाणे पुणरवि, आसिंसु भगवं उट्ठाए ।
णिक्खम्म एगया राओ, बहिं[7] चकमिया[8] मुहुत्तागं ॥
७ सयणेहिं तस्सुवसग्गा[9], भीमा आसी अणेगरूवा य ।
संसप्पगाय जे पाणा, अदुवा जे पक्खिणो उवचरंति ॥
८ अदु[10] कुचरा उवचरंति, गामरक्खा य सत्तिहत्था य ।
अदु गामिया उवसग्गा, इत्थी एगतिया पुरिसा य ॥
९ इहलोइयाइं परलोइयाइं, भीमाइं अणेगरूवाइं ।
अवि सुब्भि-दुब्भि-गंधाइं, सद्दाइं अणेगरूवाइं ।
१० अहियासए सया समिए[11], फासाइं विरूवरूवाइं ।
अरइं रइं अभिभूय, रीयई माहणे अबहुवाई ॥
११ स जणेहिं तत्थ पुच्छिंसु, एगचरा वि एगदा राओ ।
अव्वाहिए कसाइत्था, पेहमाणे समाहिं अपडिण्णे ॥
१२ अयमंतरंसि को एत्थ, अहमंसि त्ति भिक्खू आहट्टु ।
अयमुत्तमे से धम्मे, तुसिणीए स कसाइए झाति ॥
१३ जंसिप्पेगे पवेयंति, सिसिरे मारुए पवायंते ।
तंसिप्पेगे अणगारा, हिमवाए णिवायमेसंति ॥
१४ संघाडिओ पविसिस्सामो[12], एहा य समादहमाणा ।
पिहिया वा सक्खामो[13], अतिदुक्खं हिमग-संफासा ॥
१५ तंसि भगवं अपडिण्णे, अहे वियडे अहियासए दविए ।
णिक्खम्म एगदा राओ, चाएइ[14] भगवं समियाए ॥

---

१ वासी (छ) ।
२ पतेलस (च) ।
३ सेवइ य (ख, ग) ।
४ नागार्जुनीया—णिद्दावि ण प्पगामा, आसी तहेव उट्ठाए (चू) ।
५ जगा॰ (ख, छ) ।
६ साइ य (क, च, छ) ।
७. वहिं (च) ।
८ चकमित्ता (छ) ।
९ तत्थु॰ (क, ख, ग, घ, छ) ।
१० अदुवा (क, छ) ।
११ सहिए, इति मता भगवं अणगारे (चूपा) ।
१२ पहिरिस्सामो (चू) ।
१३ पस्सामो (चू) ।
१४ च ठाएइ (ग)—अशुद्ध प्रतिभाति ।

१६ एस विही अणुक्कतो, माहणेण मईमया।
'अपडिण्णेण वीरेण, कासवेण महेसिणा'[1] ॥

—त्ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

भगवओ परीसह-उवसग्ग-पद

१ तणफासे[2] सीयफासे य, तेउफासे य दस-मसगे य।
अहियासए सया समिए, फासाइ विरूवरूवाइ ॥
२ अह[3] दुच्चर-लाढमचारी, वज्जभूमि च सुब्भ[म्ह?]भूमि च।
पत सेज्ज सेविंसु, आसणगाणि चेव पताइ ॥
३ लाढेहिं तस्सुवसग्गा, वहवे जाणवया लूसिसु।
अह लूहदेसिए भत्ते, कुक्कुरा तत्थ हिंसिसु णिवतिसु ॥
४ अप्पे जणे णिवारेइ, लूसणए सुणए दसमाणे[4]।
छुछुकारति आहसु, समण कुक्कुरा डसतुत्ति ॥
५ एलिक्खए जणे[5] भुज्जो, वहवे वज्जभूमि फरुसासी।
लट्ठि गहाय णालीय[6], समणा तत्थ एव विहरिसु ॥
६ एव पि तत्थ विहरता, पुट्ठपुव्वा अहेसि सुणएहिं।
सलुचमाणा सुणएहिं, दुच्चरगाणि[7] तत्थ लाढेहिं ॥
७ णिधाय दड पाणेहिं, त काय वोसज्जमणगारे।
अह[8] गामकटए भगव, ते अहियासए अभिसमेच्चा ॥
८ णाओ सगामसीसे वा, पारए तत्थ से महावीरे।
एव पि तत्थ लाढेहिं, अलद्धपुव्वो वि एगया गामो ॥
९ उवसकमतमपडिण्ण, गामतिय पि अप्पत्त।
पडिणिक्खमित्तु लूसिसु[9], एत्तो[10] पर पलेहित्ति ॥
१० हयपुव्वो तत्थ दडेण, अदुवा मुट्ठिणा अदु 'कुताइ-फलेण'[11]।
अदु लेलुणा कवालेण, हता हता वहवे कदिंसु ॥

---

१ वहुसो अपडिण्णेण, भगवया एव रीयति (क, ख, ग, घ, छ, वृ, चूपा)।
२ °फास (क, ख, ग, च)।
३ अवि (चू)।
४ डसमाणे (च) भसमाणे (चू)।
५ जणा (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ)।
६ नालिय (ख, ग, चू)।
७ दुच्चराणि (क, च, छ, वृ)।
८ अदु (घ, छ)।
९ लूसिंति (चू)।
१० एताओ (तो) (क, ख, ग, घ, च, छ)।
११ कुतेण फलेण (घ)।

११ मसाणि[1] छिन्नपुव्वाइ, उट्ठुभति[2] एगया काय ।
परीसहाइ लुंचिसु, अहवा पसुणा अवकिरिसु[3] ॥
१२ उच्चालइय णिहणिसु, अदुवा आसणाओ खलइसु ।
वोसट्ठकाए पणयासी, दुक्खसहे भगव अपडिण्णे ॥
१३ सूरो सगामसीसे वा, सवुडे तत्थ से महावीरे ।
पडिसेवमाणे फरुसाइ, अचले भगव रीइत्था ॥
१४ एस विही अणुक्कतो, माहणेण मईमया ।
'अपडिण्णेण वीरेण, कासवेण महेसिणा'[4] ॥

—त्ति बेमि ॥

चउत्थो उद्देसो

भगवओ अतिगिच्छा-पद

१ ओमोदरिय चाएति, अपुट्ठे वि भगव रोगेहि ।
पुट्ठे वा से अपुट्ठे वा, णो से सातिज्जति तेइच्छ ॥
२ ससोहण च वमण च, गायब्भगण[5] सिणाण च ।
सबाहण 'ण से कप्पे'[6], दतपक्खालण परिण्णाए ॥
३ विरए[7] गामधम्मेहि, रीयति माहणे अबहुवाई ।
सिसिरमि एगदा भगव, छायाए झाइ आसी य ॥

भगवओ आहार-चरिया-पद

४ आयावई य गिम्हाण, अच्छइ उक्कुडुए अभिवाते[8] ।
अदु जावइत्थ[9] लूहेण, ओयण - मथु - कुम्मासेण ॥
५ एयाणि तिण्णि पडिसेवे, अट्ठ मासे य जावए भगव ।
अपिइत्थ[10] एगया भगव, अद्धमास अदुवा मास पि ॥

---

१ मंसूणि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
२ उट्ठभिया (क, ख, ग, च, छ, वृ), उट्ठभियाए (घ) ।
३ उवकरिसु (क, ख, ग, घ, च, छ)—वृत्ति-चूर्ण्यनुसारेण अशुद्ध प्रतिभाति ।
४ बहुसो अपडिण्णेण, भगवया एव रीयति (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ, चूपा) ।
५ °मब्भगण (घ) ।
६ ण सेवित्था (चू) ।
७. विरए य (क, घ, च, छ) ।
८ अभितावे (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ) ।
९ जावइ (घ) ।
१० अपियत्थ (चू) ।

६ अवि साहिए दुवे मासे, छप्पि मासे अदुवा अपिवित्ता[1] ।
रायोवराय अपडिण्णे, अन्नगिलायमेगया भुंजे ॥
७ छट्ठेण एगया भुंजे, अदुवा[2] अट्ठमेण दसमेण ।
दुवालसमेण एगया भुंजे, पेहमाणे समाहिं अपडिण्णे ॥
८ णच्चाण[3] से महावीरे, णो वि य पावग सयमकासी ।
अण्णेहिं वा ण कारित्था, कीरत पि णाणुजाणित्था ॥

९ गाम पविसे[4] णयर वा, घासमेसे[5] कड परट्ठाए ।
सुविसुद्धमेसिया भगव, आयत-जोगयाए सेवित्था[6] ॥
१० अदु वायसा दिगिंछत्ता[7], जे अण्णे रसेसिणो सत्ता ।
घासेसणाए चिट्ठते, सयय[8] णिवतिते य पेहाए ॥
११ अदु माहण व समण वा, गामपिंडोलग च अतिहिं वा ।
सोवाग मूसियार वा, कुक्कुर 'वावि विह ठिय'[9] पुरतो ॥
१२ वित्तिच्छेद वज्जतो, तेसप्पत्तिय[10] परिहरतो ।
मद परक्कमे भगव, अहिंसमाणो घासमेसित्था ॥ (त्रिभिः कुलकम्)
१३ अवि सूइय व[11] सुक्क वा, सीयपिंड पुराणकुम्मास ।
अदु वक्कस[12] पुलाग वा, लद्धे पिंडे अलद्धए दविए ॥
१४ अवि झाति से महावीरे, आसणत्थे अकुक्कुए झाण ।
उड्ढमहे[13] तिरिय च, पेहमाणे[14] समाहिमपडिण्णे ॥
१५ अकसाई विगयगेही[15], सद्दरूवेसुऽमुच्छिए[16] झाति ।
छउमत्थे वि परक्कममाणे, णो[17] पमाय सइ पि कुव्वित्था ॥

---

१ रीयित्था (चू), विहरित्था (च) ।
२ अदु अट्ठ° (ख), अदुट्ठ° (ग) ।
३ णच्चाण (क, ख, ग, घ, च) ।
४ पविस्स (शु) ।
५ घासमात (चू) ।
६ गवेसित्था (चू) ।
७ दिगिंच्छित्ता (ख, ग) ।
८ समय (क, ख, ग, घ, च, छ), स्वीकृतपाठ चूर्णिवृत्त्यनुसारी वर्तते ।
९ वा विट्ठिय (क, ख), वा विचिट्ठिय (घ), वा उवट्ठिय (चू), वा चिट्ठिय (च), वा विविध° (वृ) ।
१० तेसिमप्पत्तिय (ख, ग), तेसिं पत्तिय (क, च), 'आममकुर्वन्' (वृ) ।
११ वा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१२ वुक्कस (ख) ।
१३ उड्ढ अहे य (य) (ख, ग, घ, छ) ।
१४ नोए झायइ (ख, ग), झायइ (चू) ।
१५ गेही य (क, ख, ग, घ, च) ।
१६ अमुच्छिए (ख, ग, च) ।
१७ ण (च) ।

१६ सयमेव अभिसमागम्म, आयतजोगमायसोहीए ।
अभिणिव्वुडे अमाइल्ले, आवकहं भगवं समिआसी ॥
१७ एस विही अणुक्कतो, माहणेण मईमया ।
'अपडिण्णेण वीरेण, कासवेण महेसिणा'[1] ॥

—त्ति बेमि ॥

ग्रन्थ-परिमाण
कुल अक्षर २६९२७
अनुष्टुप् श्लोक-८४१ अक्षर १५

---

१ वहुसो अपडिण्णेण, भगवया एवं रीयति (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ, चूपा) ।

आयारचूला

पढमं अज्झयणं

पिंडेसणा

पढमो उद्देसो

सचित्त-ससत्त-असणादि-पदं

१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं[1] पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा—पाणेहिं वा, पणएहिं वा, बीएहिं वा, हरिएहिं वा—संसत्तं, उम्मिस्सं, सीओदएण वा ओसित्तं[2], रयसा वा परिवासियं[3], तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा—परहत्थंसि वा परपायंसि वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे वि[4] संते णो पडिग्गाहेज्जा[5] ।।

२ से य आहच्च पडिग्गाहिए[6] सिया, से तं आयाय एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता—अहे आरामंसि वा अहे उवस्सयंसि वा अप्पंडे, अप्प-पाणे, अप्प-बीए, अप्प-हरिए, अप्पोसे, अप्पुदए, अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणए विगिंचिय-विगिंचिय, उम्मिस्सं[7] विसोहिय-विसोहिय तओ संजयामेव भुंजेज्ज वा पीएज्ज वा ।।

३ जं च णो संचाएज्जा भोत्तए वा पायए वा, 'से तमायाय'[8] एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता—अहे झाम-थंडिलंसि वा, अट्ठि-रासिंसि वा, किट्टं[9]-रासिंसि

---

१ से जं (क, व) ।
२ उस्सित्त (क), अभिसित्त (चू) ।
३ °धामिय (अ, क, घ, च, व) ।
४ × (चू) ।
५ पडिगा° (घ, छ, ब) ।
६ °गाहे (अ, घ, च, छ, ब) ।
७ उम्मीस (क, च) ।
८ सेत्त° (अ, घ, छ) ।
९ किट्टि° (छ) ।

वा, तुस-रासिंसि वा, गोमय-रासिंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि[1] पडिलेहिय-पडिलेहिय पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव परिट्ठवेज्जा ॥

ओसहि-आदि-पद

४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जाओ[2] पुण ओसहीओ जाणेज्जा—कसिणाओ, सासिआओ, अविदल-कडाओ, अतिरिच्छच्छिन्नाओ, अव्वोच्छिन्नाओ, तरुणियं वा छिवाडिं अणभिक्कंता-भज्जियं[3] पेहाए—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[4] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जाओ[5] पुण ओसहीओ जाणेज्जा—अकसिणाओ, असासियाओ, विदल-कडाओ, तिरिच्छच्छिन्नाओ, वोच्छिण्णाओ, तरुणियं वा छिवाडिं अभिक्कंतं भज्जियं पेहाए—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ॥

६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[6] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—पिहुयं वा, बहुरजं वा, भुज्जियं[7] वा, मंथुं वा, चाउलं वा, चाउल-पलंबं वा सइं भज्जियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[8] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—पिहुयं वा[9], •बहुरजं वा, भुज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा°, चाउल-पलंबं वा असइं भज्जियं—दुक्खुत्तो वा भज्जियं, तिक्खुत्तो वा भज्जियं—फासुयं एसणिज्जं[10] •ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा ॥

अण्णउत्थिय-गारत्थिय-सद्धिं-पद

८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं[11] •पिंडवाय-पडियाए° पविसितुकामे णो अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ[12] अपरिहारिएण वा[13] सद्धिं गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ।

---

१ थंडिल्लंसि (अ, छ) ।
२ से जाओ (क, ब, छ) ।
३ °क्कतभज्जियं (क, च), °क्कतमभज्जियं (घ) ।
४ स० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।
५ से जाओ (क, ग, छ, ब) ।
६ स० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।
७ भुंजियं (क, घ, च, छ, ब), भज्जियं (अ), हस्त° वृत्तौ दुर्भियति ।
८ स० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।
९ स० पा०—पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं ।
१० स० पा०—एसणिज्जं जाव लाभे ।
११ स० पा०—गाहावइकुलं जाव पविसितुकामे ।
१२ परिहारिओ वा (अ, क, च, छ, ब) ।
१३ × (अ, क, च, छ, ब) ।

९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा वहिया वियार-भूमि वा विहार-भूमि वा णिक्खममाणे वा पविसमाणे वा णो अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ अपरिहारिएण वा सद्धि वहिया वियार-भूमि वा विहार-भूमि वा णिक्खमेज्ज[1] वा पविसेज्ज वा ॥

१० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दुइज्जमाणे—णो अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ अपरिहारिएण वा सद्धि गामाणुगाम दूइज्जेज्जा ॥

११ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[2] •गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे णो अण्णउत्थियस्स वा, गारत्थियस्स वा, परिहारिओ अपरिहारिअस्स वा असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा देज्जा वा अणुपदेज्जा वा ॥

अस्सिपडियाए-पद

१२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[3] •गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अस्सिपडियाए[4] एग साहम्मिय समुद्दिस्स, पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ 'समारब्भ समुद्दिस्स'[5] कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएइ। त तहप्पगार असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पुरिसतरकड वा अपुरिसतरकड वा, वहिया णीहड वा अणीहड[6] वा, अत्तट्ठिय वा अणत्तट्ठिय वा, 'परिभुत्त वा'[7] 'अपरिभुत्त वा'[8] आसेविय वा अणासेविय वा— अफासुय[9] •अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ॥

१३ [10]•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अस्सिपडियाए वहवे साहम्मिया समुद्दिस्स, पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएइ। त तहप्पगार असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पुरिसतरकड वा अपुरिसतरकड वा, वहिया णीहड वा अणीहड वा, अत्तट्ठिय वा अणत्तट्ठिय वा, परिभुत्त वा अपरिभुत्त वा, आसेविय वा अणासेविय वा—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

---

१ न प्रविशेत् नापि ततो निष्क्रामेत् (वृ)।
२, ३ स० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।
४ अस्स° (क, च, छ, व, वृ)।
५ समारभमुद्दिस्स (च,व), समारभ° (अ,घ)।
६ अवहिया अणीहड (क, च)।
७ × (चू)
८ × (क)।
९ स० पा०—अफासुय जाव णो।
१०. स० पा०—एव वहवे साहम्मिया एग साहम्मिणि वहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स चत्तारि आलावगा भाणियव्वा।

१४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अस्सिपडियाए एग साहम्मिणिं समुद्दिस्स, पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएइ। त तहप्पगार असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पुरिसतरकड वा अपुरिसतरकड वा, बहिया णीहड वा अणीहड वा, अत्तट्ठिय वा अणत्तट्ठिय वा, परिभुत्त वा अपरिभुत्त वा, आसेविय वा अणासेविय वा—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

१५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स, पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएइ। त तहप्पगार असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पुरिसतरकड वा अपुरिसतरकड वा, बहिया णीहड वा अणीहड वा, अत्तट्ठिय वा अणत्तट्ठिय वा, परिभुत्त वा अपरिभुत्त वा, आसेविय वा अणासेविय वा—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा° ॥

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-पद

१६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल[1] °पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स, पाणाइ वा भूयाइ वा जीवाइ वा सत्ताइ वा समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएइ। त तहप्पगार असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पुरिसतरकड वा अपुरिसतरकड वा, बहिया णीहड वा अणीहड वा, अत्तट्ठिय वा अणत्तट्ठिय वा, परिभुत्त वा अपरिभुत्त वा, आसेविय वा अणासेविय वा—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

१७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल[2] °पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स, पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएइ। त तहप्पगार असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अपुरिसतरकड, 'अबहिया

१, २ स० पा०—गाहावइकुल जाव पविट्ठे।

णीहड[1], अणत्तट्ठिय, अपरिभुत्त, अणासेवित—अफासुय अणेसणिज्ज[2] •ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ॥

१८ अह पुण एव जाणेज्जा—पुरिसतरकड, वहिया णीहड, अत्तट्ठिय, परिभुत्त, आसेविय—फासुय एसणिज्ज[3] •ति मण्णमाणे लाभे सते° पडिगाहेज्जा ॥

कुल पद

१९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए पविसितुकामे, सेज्जाइ पुण कुलाइ जाणेज्जा—इमेसु खलु कुलेसु णितिए पिंडे दिज्जइ, णितिए[4] अग्ग-पिंडे दिज्जइ, णितिए भाए दिज्जइ, णितिए अवड्ढभाए दिज्जइ—तहप्पगाराइ कुलाइ णितियाइ णितिउमाणाइ, णो भत्ताए वा पाणाए वा पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ॥

२० एय[5] खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय, ज सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

अट्ठमी-आदि-पव्व-पद

२१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अट्ठमि-पोसहिएसु वा, अद्धमासिएसु वा, मासिएसु वा, दोमासिएसु वा, तिमासिएसु वा, चाउमासिएसु वा, पचमासिएसु वा, छमासिएसु वा उउसु[6] वा, उउसधीसु वा, उउपरियट्टेसु वा, वहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगे एगाओ उक्खाओ परिएसिज्जमाणे पेहाए, दोहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, 'तिहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए'[7] 'चउहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए'[8], कुभीमुहाओ वा कलोवाइओ[9] वा सण्णिहि-'सण्णिचयाओ वा'[10] परिएसिज्जमाणे पेहाए—तहप्पगार असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अपुरिसतरकड,[11]

---

१ वहिया अणीहड (अ) ।
२ स० पा०—अणेसणिज्ज जाव णो ।
३ स० पा०—एसणिज्ज जाव पडिगाहेज्जा ।
४ × (क, च) ।
५ एव (घ, च, छ) । अशुद्ध प्रतिभाति ।
६ उदुसु (च) ।
७ × (च) ।
८ × (अ, क, घ, च, व) ।
९ कालओ वा ततो(छ),कालओ वा तिण्णो(व)।
१० सणिचयाओ वा तओ एव विह जावतिय पिंड समणादीण परिएसिज्जमाण पेहाए (वृ) ।
११ स० पा०—अपुरिसतरकड जाव अणासेवित।

°अवहिया णीहड, अणत्तट्ठिय, अपरिभुत्त°, अणासेवित—अफासुय अणेसणिज्ज[1] °ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

२२ अह पुण एव जाणेज्जा—पुरिसतरकड,[2] °वहिया णीहड, अत्तट्ठिय, परिभुत्त°, आसेविय—फासुय[3] °एसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° पडिगाहेज्जा ॥

कुल-पद

२३. से भिक्खू वा[4] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जाइ पुण कुलाइ जाणेज्जा, त जहा—उग्ग-कुलाणि वा, 'भोग-कुलाणि'[5] वा, राइण्ण-कुलाणि वा, खत्तिय-कुलाणि वा, इक्खाग-कुलाणि वा, हरिवस-कुलाणि वा, एसिय-कुलाणि वा, वेसिय-कुलाणि वा, गडाग-कुलाणि वा, कोट्टाग-कुलाणि वा, गामरक्खकुलाणि वा, पोक्कसालिय[6]-कुलाणि वा—अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु कुलेसु अदुगुछिएसु अगरहिएसु, असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा फासुय एसणिज्ज[7] °ति मण्णमाणे लाभे सते° पडिगाहेज्जा ॥

महामह-पद

२४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा समवाएसु वा, पिंड-णियरेसु वा, इद-महेसु वा, खद-महेसु वा, रुद्द-महेसु वा, मुगुद-महेसु वा, भूय-महेसु वा, जक्ख-महेसु वा, णाग-महेसु वा, थूभ-महेसु वा, चेतिय-महेसु वा, रुक्ख-महेसु वा, गिरि-महेसु वा, दरि-महेसु वा, अगड-महेसु वा, तडाग[8]-महेसु वा, दह-महेसु वा, णई-महेसु वा[9], सर-महेसु वा, सागर-महेसु वा, आगर-महेसु वा—अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु विरूवरूवेसु महामहेसु वट्टमाणेसु, वहवे समण-माहण-अतिहि-किविण-वणीमए[10] एगाओ उक्खाओ परिएसिज्जमाणे पेहाए, दोहिं[11] °उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, तिहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, चउहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, कुभीमुहाओ वा कलोवाइओ वा° सण्णिहि-सण्णिचयाओ वा परिएसिज्जमाणे पेहाए—तहप्पगार असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अपुरिसतरकड,[12]

---

१ स० पा०—अणेसणिज्ज णो ।
२ स० पा०—पुरिमतरकड जाव आसेविय ।
३ स० पा०—फासुय जाव पडिगाहेज्जा ।
४ स० पा०—भिक्खू वा जाव पविट्ठे ।
५. भोज-कुलाणि (चू) ।
६ वोक्क° (अ, छ व, चू) ।
७ स० पा०—एसणिज्ज जाव पडिगाहेज्जा ।
८ तलाग (ध, च, छ) ।
९ वा असणमहेसु वा (क) ।
१० वणीमएसु (अ, क, च, छ, ब) अशुद्ध ।
११ स० पा०—दोहिं जाव सण्णिहिसण्णिचयाओ ।
१२ °गय (अ, क, च), °कय (छ), स० पा०—अपुरिसतरकड जाव णो ।

•अवहिया णीहड, अणत्तट्ठिय, अपरिभुत्त, अणासेवित—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ॥

२५. अह पुण एव जाणेज्जा—दिण्ण ज तेसिं दायव्व ।
अह तत्थ भुजमाणे पेहाए—गाहावइ-भारिय वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्त वा, गाहावइ-धूय वा, सुण्ह वा, धाइ वा, दास वा, दासिं वा, कम्मकर वा, कम्मकरिं वा, से पुव्वामेव[1] आलोएज्जा[2]—आउसि ! त्ति वा भगिणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयर भोयणजाय ? से सेव वदतस्स परो असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा आहट्टु दलएज्जा—तहप्पगार असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा सय वा ण[3] जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुय[4] •एसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° पडिगाहेज्जा ॥

सखडि-पद

२६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पर अद्धजोयण-मेराए सखडिं णच्चा सखडि-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

२७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—पाईण सखडिं णच्चा पडीण गच्छे, अणाढायमाणे, पडीण सखडिं णच्चा पाईण गच्छे, अणाढायमाणे, दाहिण सखडिं णच्चा उदीण गच्छे, अणाढायमाणे, उदीण सखडिं णच्चा दाहिण गच्छे, अणाढायमाणे ॥

२८ जत्थेव सा सखडी सिया, त जहा—गामसि वा, णगरसि वा, खेडसि वा, कव्वडंसि वा, मडबसि[5] वा, पट्टणसि वा, दोणमुहसि वा, आगरसि वा, णिगमसि वा, आसममि वा 'सण्णिवेससि वा रायहाणिंसि वा'[6]—सखडिं सखडि-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

२९ केवली बूया आयाणमेय[7]—सखडिं सखडि-पडियाए अभिसधारेमाणे आहाकम्मिय वा, उद्देसिय वा, मीसजाय[8] वा, कीयगड वा, पामिच्च वा, अच्छेज्ज वा, अणिसिट्ठ वा, अभिहड वा आहट्टु दिज्जमाण भुजेज्जा ।
असजए[9] भिक्खू-पडियाए, खुड्डिय-दुवारियाओ महल्लियाओ[10] कुज्जा, महल्लिय-

---

१ पुव्व° (क, च) ।
२ आलोएज्जा पभू वा पभूसदिट्ठो (च), प्रभु प्रभुसदिष्ट वा ब्रूयात् (वृ) ।
३ × (घ, छ) ।
४ स० पा०—फासुय जाव पडिगाहेज्जा ।
५ मडबसि (व) ।
६ रायहाणिसि वा सण्णिवेससि वा (वृ), चूर्णौ—'गामादि पुव्ववण्णिया' इति सङ्केतेन १।८।१०६ अनुक्रम अनुसृत ।
७ आययण° (वृपा) ।
८ °ज्जाय (च, छ, व) ।
९ अस्स° (घ, छ, व) ।
१०. महाद्वारा. (वृ) ।

दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा, णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा, अंतो वा, बहिं वा उवस्सयस्स[1] हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, दालिय-दालिय, संथारगं संथरेज्जा—'एस खलु भगवया सेज्जाए अक्खाए।'[2] तम्हा से संजए णियंठे[3] तहप्पगारं पुरे-संखडिं[4] वा, पच्छा-संखडिं वा, संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

३० एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—त्ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

३१ से एगइओ अण्णतरं संखडिं आसित्ता पिबित्ता छड्डेज्ज वा, वमेज्ज वा, भुत्ते वा से णो सम्मं परिणमेज्जा, अण्णतरे वा से दुक्खे रोयातंके समुप्पज्जेज्जा ॥

३२ केवली बूया आयाणमेयं—इह खलु भिक्खू गाहावईहिं वा, गाहावइणीहिं वा, परिवायएहिं वा, परिवाइयाहिं वा, एगज्झं सद्धिं[5] सोंडं पाउं भो! वतिमिस्सं[6] हुरत्था वा, उवस्सयं पडिलेहमाणे णो लभेज्जा, तमेव उवस्सयं सम्मिस्सिभाव-मावज्जेज्जा[7] ॥

अण्णमण्णे वा से मत्ते विप्परियासियभूए इत्थिविग्गहे वा, किलीवे वा, तं भिक्खुं उवसंकमित्तु बूया—आउसंतो! समणा! अहे आरामंसि वा, अहे उवस्सयंसि वा, राओ वा, वियाले वा, गामधम्म[8]-णियंतियं कट्टु, रहस्सियं मेहुणधम्म-परियारणाए आउट्टामो। तं चेगइओ सातिज्जेज्जा। अकरणिज्जं चेयं संखाए। एते आयाणा[9] संति संचिज्जमाणा, पच्चावाया भवंति[10]। तम्हा से संजए णियंठे तहप्पगारं पुरे-संखडिं वा, पच्छा-संखडिं वा, संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा[11] गमणाए ॥

---

१ कुज्जा उवासयस्स (क, छ), उवस्सयस्स कुज्जा (घ), उपाश्रयं संस्कुर्यात् (वृ)।
२ एस विलुंगयामो सिज्जाए अक्खाए (अ, छ), एस खलु गयामो सेज्जाए अक्खाए (क), एस वि खलु गयामो सिज्जाए अक्खाए (च), एस खलु गयामो सिज्जाए (वृ)।
३ निग्गंथे अण्णयरं वा (घ)।
४. × (क, घ, च)।
५ सद्धिं (व)।
६ विति° (च, छ)।
७ मिश्रीभावम्° (वृ)।
८ गाम° (चू), ग्रामासन्ने वा (वृ)।
९ आयतणाणि (घ, वृ)।
१० × (अ, क, घ, च, छ)।
११ °धारेज्ज (अ)।

३३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयर[1] सखडि सोच्चा णिसम्म सपरिहावइ[2] उस्सुय-भूयेण अप्पाणेण ।
धुवा सखडी । णो सचाएइ तत्थ इतरेतरेहिं कुलेहिं सामुदाणिय[3] एसिय, वेसिय, पिंडवाय पडिगाहेत्ता आहार आहारेत्तए । माइट्ठाण सफासे, णो एव करेज्जा ।
से तत्थ कालेण अणुपविसित्ता तत्थितरेतरेहि कुलेहि सामुदाणिय एसिय, वेसिय, पिंडवाय पडिगाहेत्ता आहार आहारेज्जा ।।

३४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण जाणज्जा—गाम वा[4], °णगर वा, खेड वा, कव्वड वा, मडव वा, पट्टण वा, दोणमुह वा, आगर वा, णिगम वा, आसम वा, सण्णिवेस वा,° रायहाणि वा । इमसि खलु गामसि वा[5], °णगरसि वा, खेडसि वा, कव्वडसि वा मडवसि वा, पट्टणसि वा, दोणमुहसि वा, आगरसि वा, णिगमसि वा, आसमसि वा, सण्णिवेससि वा°, रायहाणिसि वा, सखडी सिया । त पि य गाम वा जाव रायहाणि वा, 'सखडि-पडियाए'[6] णो अभिसधारेज्जा गमणाए ।।

३५ केवली बूया आयाणमेय—आइण्णावमाण[7] सखडि अणुपविस्समाणस्स—पाएण वा पाए अक्कतपुव्वे भवइ, हत्थेण वा हत्थे सचालियपुव्वे भवइ, पाएण वा पाए आवडियपुव्वे भवइ, सीसेण वा सीसे सघट्टियपुव्वे भवइ, काएण वा काए सखोभियपुव्वे भवइ, दडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा अभिहयपुव्वे भवइ, सीओदएण वा ओसित्तपुव्वे भवइ, रयसा वा परिघासियपुव्वे[8] भवइ, अणेसणिज्जे[9] वा परिभुत्तपुव्वे भवइ, अण्णेसि वा दिज्जमाणे पडिगाहियपुव्वे भवइ—तम्हा से सजए णिग्गथे तहप्पगार आइण्णोमाण सखडि सखडि-पडियाए नो अभिसधारेज्ज गमणाए ।।

विचिगिच्छा-समावण्ण-पद

३६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा एसणिज्जे सिया, अणेसणिज्जे सिया—विचिगिच्छ[10]-समावण्णेण अप्पाणेण असमाहडाए लेस्साए, तहप्पगार असण वा[11] °पाण वा खाइम वा साइम वा अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे° लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ।।

---

१ अण्णयरिं (अ, च) ।
२ सप्रधावति (वृ) ।
३ समु° (अ, क, च, छ) ।
४ स० पा०—गाम वा जाव रायहाणि ।
५ स० पा०—गामसि वा जाव रायहाणिसि ।
६ सखडिं सखडि-पडियाए (व) ।
७ आइण्णो° (अ, घ, व) । अशुद्ध ।
८ परिज्जासित° (क), परियासित° (च,छ) ।
९ °णिज्जेण (अ, छ) ।
१० वितिगिच्छ (व), वितिगिंछ (अ), विचिगिंछ (छ) ।
११ स० पा०—असण वा° लाभे ।

सव्वभण्डगमायाए-पद

३७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं[1] °पिंडवाय-पडियाए° पविसितुकामे सव्वं भंडगमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ॥

३८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा वहिया विहार-भूमिं वा वियार-भूमिं वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा सव्वं भंडगमायाए वहिया विहार-भूमिं वा वियार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ॥

३९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे सव्वं भंडगमायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

४० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अह[2] पुण एवं जाणेज्जा—तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसियं वा महियं सण्णिवयमाणिं[3] पेहाए, महावाएण वा रयं समुद्धयं पेहाए, तिरिच्छं[4] संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा सन्निवयमाणा पेहाए, से एवं णच्चा णो सव्वं भंडगमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा। वहिया विहार-भूमिं वा वियार-भूमिं वा पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा, गामाणुगामं वा[5] दूइज्जेज्जा ॥

कुल-पद

४१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा, तं जहा—खत्तियाण वा, राईण वा, कुराईण वा, रायपेसियाण वा, रायवसट्ठियाण[6] वा, अंतो वा वहिं[7] वा गच्छंताण वा, सण्णिविट्ठाण वा, णिमंतेमाणाण वा, अणिमंतेमाणाण वा असणं वा[8] °पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

[एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—ति वेमि[9] ॥]

---

१ सं० पा०— गाहावइकुलं·· पविसितुकामे ।
२ अह य (घ, छ) ।
३ °माणं (अ, घ) ।
४ तिरिच्छं (अ, क, घ, च) ।
५ × (क, छ, व), च (अ) ।
६ °वसुट्ठियाण (घ) ।
७ वहियं (अ, छ), वाहियं (च), वहिया (घ) ।
८ सं० पा०—असणं वा· लाभे ।
९ कोष्ठकवर्ती पाठ आदर्शेषु नोपलभ्यते, किन्तु प्रस्तुताध्ययनस्य रचनाक्रमेणासौ युज्यते । उद्देशकान्ते सर्वत्र एतस्य दर्शनात् ।

चउत्थो उद्देसो

सखडि-पदं

४२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[1] °गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—मसादिय[2] वा, मच्छादिय[3] वा, मस-खल वा, मच्छ-खल[4] वा, आहेण[5] वा, पहेण वा, हिंगोल वा, समेल[6] वा हीरमाण पेहाए, अतरा से मग्गा वहुपाणा वहुवीया वहुहरिया वहुओसा वहुउदया वहुउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासताणगा, वहवे तत्थ समण-माहण-अतिथि-किवण-वणीमगा उवागता उवागमिस्सति, तत्थाइण्णावित्ती[7]। णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह[8]-धम्माणुओगचिंताए। सेव[9] णच्चा तहप्पगार पुरे-सखडि वा, पच्छा-सखडि वा, सखडि सखडि-पडियाए णो अभिसधारेज्ज गमणाए ॥

४३ से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—मसादिय वा, मच्छादिय वा, मस-खल वा, मच्छ-खल वा, आहेण वा, पहेण वा, हिंगोल वा, समेल वा हीरमाण पेहाए, अतरा से मग्गा अप्पडा[10] °अप्पपाणा अप्पवीया अप्पहरिया अप्पोसा अप्पुदया अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°सताणगा, णो तत्थ[11] वहवे समण-माहण[12]-°अतिथि-किवण-वणीमगा उवागता°उवागमिस्सति, अप्पाइण्णावित्ती। पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए, पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह[13]-धम्माणुओग-चिंताए। सेव णच्चा तहप्पगार पुरे-सखडि वा, पच्छा-सखडि वा, सखडि सखडि-पडियाए अभिसधारेज्ज गमणाए ॥

खीरिणी-गावी-पदं

४४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल[14] °पिंडवाय-पडियाए° पविसितुकामे सेज्ज पुण जाणेज्जा—खीरिणीओ[15] गावीओ खीरिज्जमाणीओ पेहाए, असण

---

१ स० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।
२ मस° (घ)।
३ मज्जा° (घ, व)।
४ मज्ज° (घ)।
५ अहेण (घ, व)।
६ समील (च, व)।
७ अन्नाइण्णा° (क, च), अच्चाइण्णा° (चू)।
८ °पेहाए (क, च, व), पेहा (घ)।
९ स एव (क, च), से एव (अ, घ)।
१० स० पा०—अप्पडा जाव सताणगा।
११ जत्थ (अ, क, च, छ, व)।
१२ स० पा०—समण-माहण जाव उवागमिस्सति।
१३ °पेहाए (क, व), पेहा (च)।
१४ स० पा०—गाहावइ-कुल जाव पविसितुकामे।
१५ खीरिणियाओ (क, घ, च, छ, व)।

वा पाण वा खाइम वा साइम वा उवसखडिज्जमाण[1] पेहाए, पुरा अप्पजूहिए,[2] सेव णच्चा णो गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा। से त्तमायाए एगतमवक्कमेज्जा, एगतमवक्कमेत्ता अणावायममलोए चिट्ठेज्जा ॥

४५ अह पुण एव जाणेज्जा - खीरिणीओ गावीओ खीरियाओ पेहाए, असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा उवक्खडिय पेहाए, पुरा पजूहिए, से एव णच्चा तओ सजयामेव गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ॥

माइट्ठाण-पद

४६ भिक्खागा णामेगे[3] एवमाहसु—'समाणे वा, वसमाणे'[4] वा, गामाणुगाम दूइज्ज-माणे—"खुड्डाए खलु अय गामे, सणिरुद्धाए, णो महालए, से हता ! भयतारो ! वाहिरगाणि गामाणि भिक्खायरियाए[5] वयह ।"

सति तत्थेगइयस्स भिक्खुस्स पुरे-सथुया वा, पच्छा-सथुया वा परिवसति, त जहा—गाहावई वा, गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा, कम्मकरीओ वा। तहप्पगाराइ कुलाइ पुरे-सथुयाणि वा, पच्छा-सथुयाणि वा, पुव्वामेव भिक्खायरियाए अणुपविसिस्सामि अवि य इत्थ लभिस्सामि—पिंड वा, लोय वा, खीर वा, दधि वा, णवणीय वा, घय वा, गुल वा, तेल्लं वा, महु वा, मज्ज वा, मस वा, सकुलिं[6] वा, फाणिय वा, 'पूय वा'[7], सिहरिणिं वा, त पुव्वामेव भोच्चा पेच्चा, पडिग्गह सलिहिय समज्जिय, तओ पच्छा भिक्खूहिं सद्धिं गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए पविसिस्सामि, णिक्खमिस्सामि वा। माइट्ठाण सफासे, त णो एव करेज्जा ॥

४७ से तत्थ भिक्खूहिं सद्धिं कालेण अणुपविसित्ता, तत्थितरेतरेहिं[8] कुलेहिं सामुदा-णिय, एसिय, पिंडवाय पडिगाहेत्ता आहार आहारेज्जा ॥

४८ एय खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[9], •ज सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—ति वेमि ॥°

१ उवक्खडि° (अ, क, घ, छ, व, चू)।
२ अप्पमूहितो (क), अप्पयूहिए (घ), अप्पवूहिए (छ)।
३ °नाम मेगे (व)।
४ समाणा वा वसमाणा (च)।
५ °पडियाए (घ, व)।
६ सकुलिं (घ, छ), सक्कुलिं (क्व)।
७ × (घ, छ, वृ)।
८ तत्थियराइयरेहिं (घ, व)।
९ स° पा°—सामग्गिय ।

पंचमो उद्देसो

४९ से भिक्खू वा[1] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—अग्ग-पिंड[2] उक्खिप्पमाण पेहाए, अग्ग-पिंड णिक्खिप्पमाण पेहाए, अग्ग-पिंड हीरमाण पेहाए, अग्ग-पिंड परिभाइज्जमाण पेहाए, अग्ग-पिंड परिभुज्जमाण पेहाए, अग्ग-पिंड परिट्ठवेज्जमाण पेहाए, पुरा असिणाइ[3] वा, अवहाराइ वा, पुरा जत्थण्णे समण-माहण-अतिहि-किविण-वणीमगा खद्ध-खद्ध उवसकमति—से हता अहमवि खद्ध[4] उवसकमामि। माइट्ठाण सफासे, णो एव करेज्जा ॥

विसमट्ठाण-परक्कम-पद

५० से भिक्खू वा[5] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे—अतरा से वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि[6] वा, तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गल-पासगाणि वा—सइ परक्कमे सजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुय गच्छेज्जा ॥

५१ केवली बूया आयाणमेय—से तत्थ परक्कममाणे पयलेज्ज वा, 'पक्खलेज्ज वा'[7], पवडेज्ज वा,-से तत्थ पयलमाणे वा, 'पक्खलमाणे वा'[8], पवडमाणे वा, तत्थ से काये उच्चारेण वा, पासवणेण वा, खेलेण वा, सिघाणेण वा, वतेण वा, पित्तेण वा, पूएण वा, सुक्केण वा, सोणिएण वा उवलित्ते सिया। तहप्पगार काय णो अणतरहियाए पुढवीए, णो ससिणिद्धाए पुढवीए, णो ससरक्खाए पुढवीए, णो चित्तमताए सिलाए, णो चित्तमताए लेलुए, कोलावाससि वा दारुए जीव-पइट्ठिए सअडे सपाणे[9] •सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°सताणए णो आमज्जेज्ज वा, णो पमज्जेज्ज वा, णो सलिहेज्ज वा, 'णो णिल्लिहेज्ज वा'[10],णो[11] उव्वलेज्ज वा, णो उवट्टेज्ज वा, णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा।

से पुव्वामेव अप्पससरक्ख तण वा, पत्त वा, कट्ठ वा, सक्कर वा जाइज्जा, जाइत्ता से त्तमायाए एगतमवक्कमेज्जा, एगतमवक्कमेत्ता अहे झामथडिलसि

---

१ स० पा०—भिक्खू वा जाव पविट्ठे।
२ अग्रपिण्डो—निष्पन्नस्य शाल्योदनादेराहारस्य देवताद्यार्थ स्तोकस्तोकोद्धारस्तमुक्षिप्यमाण दृष्ट्वा (वृ)।
३ असणाइ (क, व), असिणेइ (छ)।
४ खद्ध खद्ध (छ, व)।
५ स० पा०—भिक्खू वा जाव पविट्ठे।
६ पोगाराणि (अ), पोग्गलाणि (व)।
७ × (अ, क, घ, च, व)।
८ × (अ, क, घ, च, व)।
९ स० पा०—सपाणे जाव सताणए।
१० × (छ)।
११ × (अ, क, घ, च, व) सर्वत्र।

वा[1], •अट्ठि-रासिंसि वा, किट्ट-रासिंसि वा, तुम-रासिंसि वा, गोमय-रासिंसि वा°, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि, पडिलेहिय-पडिलेहिय पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा, संलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उवट्टेज्ज वा, आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ॥

वियाल-परक्कम-पद

५२ से भिक्खू वा[2] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा[3]—गोणं वियालं पडिपहे[4] पेहाए, महिसं वियालं पडिपहे पेहाए, एवं—मणुस्सं, आसं, हत्थिं[5], सीहं, वग्घं, विगं, दीवियं, अच्छं, तरच्छं, परिसरं, सियालं, विरालं, सुणयं, कोलसुणयं, कोकंतियं, चित्ता-चिल्लडयं—वियालं[6] पडिपहे पेहाए, सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ॥

विसमट्ठाण-परक्कम-पद

५३ से भिक्खू वा[7] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे—अंतरा से ओवाओ वा, खाणू वा, कंटए वा, घसी[8] वा, भिलुगा वा, विसमे वा, विज्जले वा परियावज्जेज्जा—सति परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ॥

कंटक-बोंदिया-पदं

५४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलस्स दुवार-बाहं कंटक-बोंदियाए परिपिहियं पेहाए, तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणणुण्णविय अपडिलेहिय अपमज्जिय णो अवंगुणिज्ज वा, पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा।
तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुण्णविय, पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव अवंगुणिज्ज वा, पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ॥

अणावायमसंलोय-चिट्ठण-पद

५५ से भिक्खू वा[9] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे°

---

१ स० पा०—झामथंडिलंसि वा जाव अण्णयरंसि।
२ स० पा०—भिक्खू वा जाव पविट्ठे।
३ यथात्र किञ्चिद्गवादिकमान्त इति (वृ)।
४ पडिपहं (अ, क, च)।
५ हत्थी (अ, क, च, छ)।
६ वियाल—दृप्तम् (वृ)।
७ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
८ घसा (व)।
९ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।

समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा[1]—समण वा, माहण वा, गामपिंडोलग वा, अतिहि वा पुव्वपविट्ठ पेहाए णो तेसिं सलोए, सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा ॥

५६ 'केवली वूया आयाणमेय -पुरा पेहाए तस्सट्ठाए परो असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा आहट्टु दलएज्जा ।

अह भिक्खूण पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा एस हेऊ, एस कारण, एस उवएसो, ज णो तेसिं सलोए, सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा'[2] । से त्तमायाए एगतमवक्कमेज्जा, एगतमवक्कमेत्ता अणावायमसलोए चिट्ठेज्जा ॥

परिभायण-सभुजण-पद

५७ से से[3] परो अणावायमसलोए चिट्ठमाणस्स असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा आहट्टु दलएज्जा, सेय[4] वदेज्जा—आउसतो समणा ! इमे भे असणे वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा सव्वजणाए निसिट्ठे, त भुजह वा[5] ण परिभाएह वा ण । त चेगइओ पडिगाहेत्ता तुसिणीओ उवेहेज्जा, अवियाइ एव मम मेव सिया । एव[6] माइट्ठाण सफासे, णो एव करेज्जा । से त्तमायाए तत्थ गच्छेज्जा, तत्थ गच्छेत्ता से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसतो समणा ! इमे भे असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा सव्वजणाए णिसिट्ठे, त भुजह वा ण, परिभाएह वा ण । 'से णेव'[7] वदत परो वएज्जा—आउसतो समणा ! तुम चेव ण परिभाएहि । से तत्थ परिभाएमाणे णो अप्पणो खद्ध-खद्ध डाय-डाय ऊसढ-ऊसढ रसिय-रसिय मणुण्ण-मणुण्ण णिद्ध-णिद्ध लुक्ख-लुक्ख,[8] से तत्थ अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे वहुसममेव परिभाएज्जा ।
से ण परिभाएमाण परो वएज्जा—आउसतो समणा ! मा ण तुम परिभाएहि, सव्वे वेगतिया भोक्खामो वा, पाहामो वा । से तत्थ भुजमाणे णो अप्पणो खद्ध खद्ध डाय डाय ऊसढ ऊसढ रसिय रसिय मणुण्ण मणुण्ण णिद्ध णिद्ध लुक्ख-लुक्ख, से तत्थ अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे वहुसममेव भुजेज्ज वा, पीएज्ज वा ॥

पुव्वपविट्ठसमणादि-उवाइक्कमण-पद

५८ से भिक्खू वा[9] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—समण वा, माहण वा, गाम-पिंडोलग वा, अतिहि

---

१ यथात्र गृहे श्रमणादि कश्चित्प्रविष्ट (वृ) ।
२ × (अ, क, छ, वृ) ।
३ × (घ) ।
४ से एव (घ) ।
५. व (अ, व) ।
६ × (अ, घ, च) ।
७ एव (घ), अर्थेन साधुमेवम् (वृ) ।
८ न गृण्हीयादिति (वृ) ।
९- स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

वा पुव्वपविट्ठं पेहाए णो ते उवाइक्कम्म पविसेज्ज वा, ओभासेज्ज वा। से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अणावायमसंलोए चिट्ठेज्जा ॥

५९ अह पुणेवं जाणेज्जा—पडिसेहिए व[1] दिन्ने वा, तओ तम्मि णियत्तिए। संजयामेव पविसेज्ज वा, ओभासेज्ज वा ॥

६० एयं[2] खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[3], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—त्ति बेमि° ॥

छट्ठो उद्देसो

भत्तट्ठ-समुदितपाणाणं उज्जुगमण-पदं

६१ से भिक्खू वा[4] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—रसेसिणो बहवे पाणा[5], घासेसणाए संथडे सण्णिवइए पेहाए, तं जहा—कुक्कुड-जाइयं वा, सूयर-जाइयं वा, अग्गपिंडंसि वा वायसा संथडा सण्णिवइया पेहाए—सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, नो उज्जुयं गच्छेज्जा ॥

गाहावइकुल-पविट्ठस्स अकरणिज्ज-पदं

६२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[6] °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे—नो गाहावइ-कुलस्स 'दुवार-साहं'[7] अवलंबिय-अवलंबिय चिट्ठेज्जा। नो गाहावइ-कुलस्स दगच्छड्डणमत्ताए चिट्ठेज्जा। नो गाहावइ-कुलस्स चंदणिउयए चिट्ठेज्जा। नो गाहावइ-कुलस्स सिणाणस्स वा, वच्चस्स वा, संलोए सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा। णो गाहावइ-कुलस्स आलोयं वा, थिग्गलं वा, संधिं वा, दग-भवणं वा बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय, अंगुलियाए वा उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय णिज्झाएज्जा। णो गाहावइं अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय जाएज्जा। णो गाहावइं अंगुलियाए चालिय-चालिय जाएज्जा। णो गाहावइं अंगुलियाए तज्जिय-तज्जिय जाएज्जा। णो गाहावइं अंगुलियाए उक्खलुंपिय[8]-उक्खलुंपिय जाएज्जा। णो गाहावइं वंदिय-वंदिय जाएज्जा। 'णो वं णं'[9] फरुसं वएज्जा ॥

---

१ वा (छ)।
२ एवं (अ, क, छ, वृ)।
३ म० पा०—सामग्गियं°।
४ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
५ ताञ्च (वृ)।
६ म० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।
७ दुवारसामग्गियं (अ), दुवारवाहं (क, च, चू), बारसाहं (घ)।
८ चाउगुलपिय २(अ), उक्खलपिय २(क, च), उक्खुलविय २ (घ, व)।
९ णो चेव णं (अ), णो वयणं (च, छ, व)।

पुरेकम्म-आदि-पदं

६३ अह तत्थ कंचि[1] भुजमाणं पेहाए, तं जहा—गाहावइं[2] वा[3], •गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा,° कम्मकरिं वा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं भोयणजायं ?

से सेवं वयंतस्स परो हत्थं वा, मत्तं वा, दव्विं वा, भायणं वा, सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा। से पुव्वामेव आलोएज्जा— आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा, मा एयं तुमं हत्थं वा, मत्तं वा, दव्विं वा, भायणं वा, सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेहि वा, पहोएहि वा, अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतस्स परो हत्थं वा, मत्तं वा, दव्विं वा, भायणं वा, सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा, उच्छोलेत्ता पहोइत्ता आहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारेण पुरेकम्मकएण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दव्वीए वा, भायणेण वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं अणेसणिज्जं[4] •ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

६४ अह पुण एवं जाणेज्जा—णो पुरेकम्मकएण, उदउल्लेण[5]। तहप्पगारेण उदउल्लेण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दव्वीए वा, भायणेण वा, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं[6] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

६५ अह पुण एवं जाणेज्जा—णो उदउल्लेण, ससिणिद्धेण[7]। •तहप्पगारेण ससिणिद्धेण हत्थेण वा[8] ॥

६६ अह पुण एवं जाणेज्जा—णो ससिणिद्धेण, ससरक्खेण। तहप्पगारेण ससरक्खेण हत्थेण वा ॥

६७ अह पुण एवं जाणेज्जा—णो ससरक्खेण, मट्टिया-संसट्ठेण। तहप्पगारेण मट्टिया-संसट्ठेण हत्थेण वा ॥

६८ अह पुण एवं जाणेज्जा—णो मट्टिया-संसट्ठेण, ऊस-संसट्ठेण। तहप्पगारेण ऊस-संसट्ठेण हत्थेण वा ॥

---

१ किंचि (क, घ, छ)।

२ गाहावइय (च, छ)।

३ स० पा०—गाहावइं वा जाव कम्मकरिं।

४ स० पा०—अणेसणिज्जं जाव णो।

५ अत ८१ सूत्रपर्यन्त 'देज्जा' इति क्रियापदमध्याहार्यम्।

६ स० पा०—अफासुयं जाव णो।

७ स० पा०—ससिणिद्धेण सेसं तं चेव एवं ससरक्खे मट्टिया ऊसे, हरियाले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे गेरुय वण्णिय सेडिय, सोरट्ठिय पिट्ठ कुक्कस उक्कुट्ठ संसट्ठेण।

८ अत ८० सूत्रपर्यन्तं पूर्णपाठार्थं १।६४ सूत्रं द्रष्टव्यम्।

६९ अह पुण एव जाणेज्जा—णो ऊस-ससट्ठेण, हरियाल-ससट्ठेण। तहप्पगारेण हरियाल-ससट्ठेण हत्थेण वा ॥

७० अह पुण एव जाणेज्जा—णो हरियाल-ससट्ठेण, हिंगुलय-ससट्ठेण। तहप्पगारेण हिंगुलय-ससट्ठेण हत्थेण वा ॥

७१ अह पुण एव जाणेज्जा—णो हिंगुलय-ससट्ठेण, मणोसिला-ससट्ठेण। तहप्पगारेण मणोसिला-ससट्ठेण हत्थेण वा ॥

७२ अह पुण एव जाणेज्जा—णो मणोसिला-ससट्ठेण, अजण-ससट्ठेण। तहप्पगारेण अजण-ससट्ठेण हत्थेण वा ॥

७३ अह पुण एव जाणेज्जा—णो अजण-ससट्ठेण, लोण-ससट्ठेण। तहप्पगारेण लोण-ससट्ठेण हत्थेण वा ॥

७४ अह पुण एव जाणेज्जा—णो लोण-ससट्ठेण, गेरुय-ससट्ठेण। तहप्पगारेण गेरुय-ससट्ठेण हत्थेण वा ॥

७५ अह पुण एव जाणेज्जा—णो गेरुय-ससट्ठेण, वण्णिया-ससट्ठेण। तहप्पगारेण वण्णिया-ससट्ठेण हत्थेण वा ॥

७६ अह पुण एव जाणेज्जा—णो वण्णिया-ससट्ठेण, सेडिया-ससट्ठेण। तहप्पगारेण सेडिया[1]-ससट्ठेण हत्थेण वा ॥

७७ अह पुण एव जाणेज्जा—णो सेडिया-ससट्ठेण, सोरट्ठिया-ससट्ठेण। तहप्पगारेण सोरट्ठिया-ससट्ठेण हत्थेण वा ॥

७८ अह पुण एव जाणेज्जा—णो सोरट्ठिया-ससट्ठेण, पिट्ठ-ससट्ठेण। तहप्पगारेण पिट्ठ-ससट्ठेण हत्थेण वा ॥

७९ अह पुण एव जाणेज्जा—णो पिट्ठ-ससट्ठेण, कुक्कस-ससट्ठेण। तहप्पगारेण कुक्कस-ससट्ठेण हत्थेण वा ॥

८० अह पुण एव जाणेज्जा—णो कुक्कस-ससट्ठेण, उक्कुट्ठ[2]-ससट्ठेण। तहप्पगारेण उक्कुट्ठ-ससट्ठेण हत्थेण वा° ॥

८१ अह पुण एव जाणेज्जा—णो 'अससट्ठे, ससट्ठे'[3]। तहप्पगारेण ससट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दव्वीए वा, भायणेण वा असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा फासुय[4] °एसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° पडिगाहेज्जा[5] ॥

---

१ सेडिय (क)।

२ उक्किट्ठ (घ)।

३ पूर्वापरसादृश्यात् एतत् पदद्वयमपि तृतीयान्तं युज्यते, किन्तु आदर्शेषु प्रथमान्तं लिखितमस्ति, वृत्तिकृतापि तथैव व्याख्यातमस्ति, तेन यथा मूल एव पाठः स्वीकृतः।

४ म० पा०—फासुय जाव पडिगाहेज्जा।

५ अह पुणेव जाणेज्जा असंसट्ठे तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा ४ असण वा ४ फासुयं जाव पडिगाहेज्जा 'छ' प्रतौ एतत् सूत्रमधिकमस्ति।

पिहुय-आदि-कोट्टण-पद

८२ से भिक्खू वा[1] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे° सेज्ज पुण जाणेज्जा—पिहुय वा, बहुरय वा[2], •भज्जिय वा, मथु वा, चाउल वा°, चाउलपलब वा, अस्सजए भिक्खु-पडियाए चित्तमताए सिलाए[3], •चित्त-मताए लेलुए कोलावाससि वा दारुए जीवपइट्ठिए, सअडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय°-मक्कडासताणाए कोट्टेसु वा, कोट्टिति वा, कोट्टिस्सति वा, उप्पणिसु[4] वा, उप्पणिति वा, उप्पणिस्सति वा – तहप्पगार पिहुय वा जाव चाउलपलब वा—अफासुय[5] •अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ॥

लोण-पद

८३ से भिक्खू वा[6] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—बिल वा लोण, उब्भिय वा लोण, अस्सजए भिक्खु-पडियाए चित्तमताए सिलाए[7], •चित्तमताए लेलुए, कोलावाससि वा दारुए जीवपइट्ठिए, सअडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°सताणाए भिंदिसु वा, भिंदति वा, भिंदिस्सति वा, रुचिसु वा, रुचिति वा, रुचिस्सति वा – बिल वा लोण, उब्भिय वा लोण—अफासुय[8] •अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ॥

अगणि-णिक्खित्त-पद

८४ से भिक्खू वा[9] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अगणि-णिक्खित्त, तहप्पगार असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अफासुय[10] •अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे° लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

८५ केवली बूया आयाणमेय – अस्सजए[11] भिक्खु-पडियाए उस्सिचमाणे वा, निस्सि-चमाणे वा, आमज्जमाणे वा, पमज्जमाणे वा, ओयारेमाणे वा, उव्वत्तमाणे[12] वा, अगणिजीवे हिंसेज्जा ।

---

१ स० पा०—भिक्खू वा सेज्ज ।
२ स० पा०—बहुरय वा जाव चाउलपलब ।
३ स० पा०—सिलाए जाव मक्कडा ।
४ उप्फ° (अ, क, च) ।
५ स० पा०—अफासुय जाव णो ।
६ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
७ स० पा०—सिलाए जाव सताणाए ।
८ स० पा०—अफासुय जाव णो ।
९ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
१० स० पा०—अफासुय लाभे ।
११ असजए (छ) ।
१२ ओयत्तेमाणे (अ, क), पवत्तेमाणे (छ) ।

अह भिक्खूण पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारण, एसुवएसे, त तहप्पगार असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अगणि-णिक्खित्त—अफासुय अणेसणिज्ज[1] •ति मण्णमाणे° लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

८६ एय खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय, ज सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जए।

—ति वेमि ॥

सत्तमो उद्देसो

मालोहड-पद

८७ से भिक्खू वा[2] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा खधसि वा, थभसि वा, मचसि वा, मालसि वा, पासायसि वा, हम्मियतलसि वा, अण्णयरसि वा तहप्पगारसि अतलिक्खजायसि उवणिक्खित्ते सिया—तहप्पगार मालोहड असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अफासुय[3] •अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ॥

८८ केवली बूया आयाणमेय—अस्सजए भिक्खु-पडियाए पीढ वा, फलग वा, णिस्सेणि वा, उदूहल वा, अवहट्टु उस्सविय आरुहेज्जा[4]। से तत्थ दुरुहमाणे[5] पयलेज्ज वा, पवडेज्ज वा, से तत्थ पयलमाणे वा, पवडमाणे वा, हत्थ वा, पाय वा, बाहु[6] वा, ऊरु वा, उदर वा, सीस वा, अण्णयर वा कायसि इदिय-जाय लूसेज्ज वा पाणाणि वा भूयाणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, सघसेज्ज वा, सघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाण सकामेज्ज वा—त तहप्पगार मालोहड असण वा[7] •पाण वा खाइम वा साइम वा अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे° लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

८९. से भिक्खू वा[8] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा कोट्ठियाओ वा, कोलज्जाओ[9] वा, अस्सजए भिक्खु-पडियाए उक्कुज्जिय, अवउज्जिय,

---

१ स० पा०—अणेसणिज्ज लाभे।

२ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।

३ स० पा०—अफासुय जाव णो।

४ द्रुहेज्जा (अ, व), दूहिज्जा (घ), दुरुहेज्जा (च)।

५ दूहमाणे (घ)।

६ बाह (अ, क, घ, व)।

७ स० पा०—असण वा ४ लाभे।

८ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।

९ कोलेज्जाओ (क, च), कोलिज्जाओ (घ)।

ओहरिय, आहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा मालोहडं[1] ति णच्चा लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

मट्टिओलित्त-पदं

६० से भिक्खू वा[2] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा मट्टिओलित्तं[3]—तहप्पगारं असणं वा[4] •पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे °लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

६१ केवली बूया आयाणमेयं—अस्संजए भिक्खू-पडियाए मट्टिओलित्तं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उब्भिंदमाणे पुढवीकायं समारंभेज्जा, तह तेउ-वाउ-वणस्सइ-तसकायं समारंभेज्जा, पुणरवि ओलिंपमाणे पच्छाकम्मं करेज्जा। अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[5] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं तहप्पगारं मट्टिओलित्तं असणं वा[6] •पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

पुढविकाय-पइट्ठिय-पदं

६२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[7] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°प्पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुढविकाय-पइट्ठियं—तहप्पगारं असणं वा[8] •पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुढविकाय-पइट्ठियं°—अफासुयं[9] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

आउकाय-पइट्ठिय-पदं

६३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[10] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु° पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आउकाय-पइट्ठियं—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आउकाय-पइट्ठियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

---

१ माला° (छ)।
२ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
३ °ओवलित्तं (घ, छ)।
४ स० पा०—असणं वा ४ जाव लाभे।
५ स० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।
६ स० पा०—असणं वा ४ लाभे।
७ स० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।
८ स० पा०—असणं वा ४ अफासुयं।
९ स० पा०— अफासुयं जाव णो।
१० स० पा०—भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा ४ आउकायपइट्ठियं तह चेव। एवं अगणिकायपइट्ठियं लाभे।

अगणिकाय-पइट्ठिय-पदं

९४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अगणिकाय-पइट्ठिय—तहप्पगार असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अगणिकाय-पइट्ठिय—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे° लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

९५ केवली बूया आयाणमेय—अस्सजए भिक्खु-पडियाए अगणि ओसक्किय[1], णिस्सक्किय[2], ओहरिय, आहट्टु दलएज्जा ।
अह भिक्खूण पुव्वोवदिट्ठा[3] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारण, एसुवएसे, ज तहप्पगार असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अगणिकाय-पइट्ठिय—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ॥

अच्चुसिण-वीयण-पद

९६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[4] •गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अच्चुसिण, अस्सजए भिक्खु-पडियाए सूवेण[5] वा, विहुवणेण[6] वा, तालियटेण वा, 'पत्तेण वा'[7], साहाए वा, साहा-भगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुण-हत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्नेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा फुमेज्ज वा, वीएज्ज वा ।
से पुव्वामेव आलोएज्जा आउसो ! त्ति वा, भगिणि ! त्ति वा मा एय तुम असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अच्चुसिण सूवेण वा, विहुवणेण वा, तालियटेण वा, पत्तेण वा, साहाए वा, साहा-भगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुण-हत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्नेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा फुमाहि वा, वीयाहि वा, अभिकखसि मे दाउ ? एमेव दलयाहि ।
से सेव वदतस्स परो सूवेण वा जाव फुमित्ता वा, वीइत्ता वा आहट्टु दलएज्जा—तहप्पगार असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अफासुय[8] •अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ॥

वणस्सइकाय-पइट्ठिय-पद

९७. से भिक्खू वा[9] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे °समाणे

---

१ उस्सक्किय (क, घ, च), उस्सिक्किय (छ), ओसिक्किय (अ) ।
२ णिस्सिक्किय (अ, छ, व) ।
३ स० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव णो ।
४ स० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।
५ सुप्पेण (अ, च) ,
६ विहुयणेण (अ, क, घ, च) ।
७ × (घ, वृ) ।
८ स० पा०—अफासुय जाव णो ।
९ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वणस्सइकाय-पइट्ठियं—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वणस्सइकाय-पइट्ठियं—अफासुयं अणेसणिज्जं[1] •ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

तसकाय-पइट्ठिय-पदं

९८ [2]•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा तसकाय-पइट्ठियं—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा तसकाय-पइट्ठियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा° ॥

पाणग-जाय-पदं

९९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[3] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण 'पाणग-जायं'[4] जाणेज्जा, तं जहा—उस्सेइमं वा, संसेइमं वा, चाउलोदगं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं पाणग-जायं अहुणा-धोयं, अणंबिलं, अव्वोक्कंतं[5], अपरिणयं, अविद्धत्थं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

१०० अह पुण एवं जाणेज्जा—चिराधोयं, अंबिलं, वुक्कंतं[6], परिणयं, विद्धत्थं—फासुयं[7] •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ॥

१०१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[8] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण 'पाणग-जायं' जाणेज्जा, तं जहा—तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुद्ध-वियडं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं पाणग-जायं पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणी ! त्ति वा, दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं पाणग-जायं ?

से सेवं वदंतं[10] परो वदेज्जा—आउसंतो ! समणा ! तुमं चेवेदं पाणग-जायं पडिग्गहेण[11] वा उस्सिंचियाणं, ओयत्तियाणं गिण्हाहि—तहप्पगारं पाणग-जायं सयं वा[12] गिण्हेज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं[13] •एसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा ॥

---

१ सं० पा०—अणेसणिज्जं लाभे ।
२ सं० पा०—एवं तसकाए वि ।
३ सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।
४ पाणगं (घ, व) ।
५ अवुक्कंतं (घ), अवोक्कंतं (छ) ।
६ वक्कंतं (छ) ।
७ सं० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा ।
८ सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।
९ पाणगं (क, च) ।
१० वयंतस्स (घ) ।
११ पडिग्गहेण वा मत्तएण वा (च), पडिगाहेण (छ)
१२ वा णं (अ) ।
१३ सं० पा०—फासुयं लाभे संते जाव पडिगाहेज्जा ।

१०२. से भिक्खू वा[1] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण 'पाणग-जायं'[2] जाणेज्जा—अणंतरहियाए पुढवीए[3], •ससिणिद्धाए पुढवीए, ससरक्खाए पुढवीए, चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए, सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणए ओद्धट्टु[4] निक्खित्ते सिया। असंजए भिक्खु-पडियाए उदउल्लेण वा, ससिणिद्धेण वा, सकसाएण वा, मत्तेण वा, सीओदएण वा संभोएत्ता आहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारं पाणग-जायं—अफासुयं[5] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा॥

१०३ एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं,[6] •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—त्ति बेमि°॥

अट्ठमो उद्देसो

१०४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[7] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण पाणग-जायं जाणेज्जा, तं जहा अंब-पाणगं वा, अंबाडग-पाणगं वा, कविट्ठ-पाणगं वा, मातुलिंग[8]-पाणगं वा, मुद्दिया-पाणगं वा, दाडिम-पाणगं वा, खज्जूर-पाणगं वा, णालिएर-पाणगं वा, करीर-पाणगं वा, कोल-पाणगं वा, आमलग-पाणगं वा, चिंचा-पाणगं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं पाणग-जायं सअट्ठियं सकणुयं सबीयगं अस्संजए भिक्खु-पडियाए छब्बेण[10] वा, दूसेण[11] वा, वालगेण वा, आवीलियाण वा, परिपीलियाण वा, परिस्सावियाण[12] आहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारं[13] पाणग-जायं—अफासुयं[14] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा॥

गंध-आघायण-पद

१०५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[15] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे

---

१ सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
२ पाणगं (चू, वृ, च)।
३ सं० पा०—पुढवीए जाव संताणए।
४ ओहट्टु (क)।
५ सं० पा०—अफासुयं लाभे।
६ सं० पा०—सामग्गियं।
७ सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।
८ मातुलुंग (अ, छ), मातुलेंग (क), मातुलग (च)।
९ असंजए (क, च)।
१० छप्पेण (अ, च), छट्टेण (घ)।
११ दूयेण (छ)।
१२ परिसाइयाण (क,छ,व), परिसावियाण(घ)।
१३ अहप्पगारं (घ)।
१४ सं० पा०—अफासुयं लाभे।
१५ सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।

समाणे से आगतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा—अन्न-गधाणि वा, पाण-गधाणि वा, सुरभि-गधाणि वा अग्घाय[1]-अग्घाय—से तत्थ आसाय-पडियाए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने अहोगधो-अहोगधो णो गधमाघाएज्जा ॥

सालुय-आदि-पद

१०६ से भिक्खू वा[2] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—सालुय वा, विरालिय वा, सासवणालिय वा—अण्णतर वा तहप्पगार आमग असत्थपरिणय—अफासुय[3] •अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे° लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

पिप्पलि-आदि-पद

१०७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[4] •गाहावइ-कुल पिडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—पिप्पलिं[5] वा, पिप्पलि-चुण्ण वा, मिरिय वा, मिरिय-चुण्ण वा, सिंगवेर वा, सिंगवेर-चुण्ण वा—अण्णतर वा तहप्पगार आमग असत्थपरिणय—अफासुय[6] •अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ॥

पलब-जाय-पद

१०८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[7] •गाहावइ-कुल पिडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्ज पुण पलब[8]-जाय जाणेज्जा, त जहा—अब-पलब वा, अबाडग-पलब वा, ताल-पलब वा, झिज्झिरि[9]-पलब वा, सुरभि[10]-पलब वा, सल्लइ-पलब वा—अण्णयर वा तहप्पगार पलब-जाय आमग असत्थपरिणय—अफासुय अणेसणिज्ज[11] •ति मण्णमाणे° लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

पवाल-जाय-पद

१०९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[12] •गाहावइ-कुल पिडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्ज पुण पवाल-जाय जाणेज्जा, त जहा—आसोत्थ[13]-पवाल वा,

---

१ आघाय (अ, क, च)।
२ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
३ स० पा०—अफासुय जाव लाभे।
४ स० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।
५ पिप्पिलिं (छ)।
६ स० पा०—अफासुय जाव णो।
७ स० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।
८ पलवग (व)।
९ झिल्लिर (अ), झिज्झिर (घ, छ)।
१० सुरघु (छ)।
११ स० पा०—अणेसणिज्ज जाव लाभे।
१२ स० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।
१३ आसोट्ठ (क, घ), आसत्थ (छ), आसट्ठ (वृ)।

णग्गोह[1]-पवाल वा, पिलुखु-पवाल वा, णीपूर[2]-पवाल वा, सल्लइ-पवाल वा—अण्णयर वा तहप्पगार पवाल-जाय आमग असत्थपरिणय—अफासुय अणेसणिज्ज[3] •ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ॥

सरडुय-जाय-पद

११० से भिक्खू वा[4] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्ज पुण सरडुय-जाय जाणेज्जा, त जहा—अव-सरडुय[5] वा, अवाडग-सरडुय वा, कविट्ठ-सरडुय वा, दाडिम-सरडुय वा, विरल[6]-सरडुय वा[7]—अण्णयर वा तहप्पगार सरडुय-जाय आमग असत्थपरिणय—अफासुय[8] •अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ॥

मथु-जाय-पद

१११ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[9] •गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्ज पुण मथु-जाय जाणेज्जा, त जहा उवर-मथु वा, णग्गोह-मथु वा, पिलुखु[10]-मथु वा, आसोत्थ-मथु वा—अण्णयर वा तहप्पगार मथु-जाय आमय दुरुक्क साणुवीय—अफासुय[11] •अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ॥

आमडाग-आदि-पद

११२ से भिक्खू वा[12] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—आमडाग वा, पूइपिण्णाग वा, महु वा, 'मज्ज वा'[13], सप्पि वा, खोल वा पुराणग। एत्थ पाणा अणुप्पसूया, एत्थ पाणा जाया, एत्थ पाणा सवुड्ढा, एत्थ पाणा अवुक्कता[14], एत्थ पाणा अपरिणया, एत्थ पाणा अविद्धत्था[15]—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

उच्छु-मेरग-आदि-पद

११३ से भिक्खू वा[16] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे°

१ णिग्गोह (छ)
२ णीयूर (अ, घ, छ, ब)।
३ स० पा०—अणेसणिज्ज जाव णो।
४ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
५ अवद्धास्थिफलम् (वृ)।
६ फिल्ल (क), पिल्ल (घ)।
७ वा पिप्पल्लि (च)।
८ स० पा०—अफासुय जाव णो।
९ स० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।
१० पिलक्खु (क, च)।
११ स० पा०—अफासुय जाव णो।
१२ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
१३ × (चू)।
१४ वक्कता (क, छ), ऽवक्कता (च), वुक्कता (ब)।
१५ णो विद्धत्था (घ, छ)।
१६ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।

समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—उच्छु-मेरग वा, अक-करेलुय वा, कसेरुग वा, सिंघाडग वा, पूतिआलुग वा—अण्णयर वा तहप्पगार आमग असत्थपरिणय[1]—•अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ॥

उप्पल-आदि-पद

११४ से भिक्खू वा[2] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—उप्पल वा, उप्पल-नाल वा, भिस वा, भिस-मुणाल वा, पोक्खल वा, पोक्खल-विभग[3] वा—अण्णतर वा तहप्पगार[4] •आमग असत्थपरिणय—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ॥

अग्गबीय-आदि-पद

११५ से भिक्खू वा[5] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—अग्ग-वीयाणि वा, मूल-वीयाणि वा, खध-वीयाणि वा, पोर-वीयाणि वा, अग्ग-जायाणि वा, मूल-जायाणि वा, खध-जायाणि वा, पोर-जायाणि वा,

णण्णत्थ[6] तक्कलि-मत्थएग वा, तक्कलि-सीसेण वा, णालिएरि[7]-मत्थएण वा, खज्जूरि[8]-मत्थएण वा, ताल-मत्थएण वा—अण्णयर वा तहप्पगार आम असत्थ-परिणय[9]—•अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ॥

उच्छु-पदं

११६ से भिक्खू वा[10] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—उच्छु वा काणग[11] अगारिय समिस्स विगदूमिय[12], वेत्तग्ग[13] वा, कदलीऊसुय[14] वा—अण्णयर वा तहप्पगार आम असत्थपरिणय[15]—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ॥

---

१ स० पा०—असत्थपरिणय जाव णो ।
२ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
३ °विभाग (क, च) ।
४ स० पा०—तहप्पगार जाव णो ।
५ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
६ अण्णत्थ (चू) ।
७ णालिएर (अ, च, ब) ।
८ खज्जूर (ब) ।
९ स० पा०—असत्थपरिणय जाव णो ।
१० स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
११ काण (घ ब) ।
१२ वइदूमिय (अ), विगदूसिय (व, ब), वियि-दूमिय (छ) ।
१३ वेत्तग (अ), वित्तज्जग (घ), वेत्तगाग (छ) ।
१४ °उस्सुग (चू), °ऊसिग (छ), चूर्णौ अन्येपि शब्दा दृश्यन्ते—फलतो सिम्बाकलो चणगो, ओली सिंगा तस्स चेव, एव मुग्ग मासाणावि ।
१५ स० पा०—असत्थपरिणय जाव णो ।

लसुण-पद

११७ से भिक्खू वा[1] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—लसुणं वा, लसुण-पत्तं वा, लसुण-नालं वा, लसुण-कंदं वा, लसुण-चोयगं[2] वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणयं[3] —•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

अत्थिय-आदि-पद

११८ से भिक्खू वा[4] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—अत्थियं[5] वा कुंभिपक्कं, तिंदुगं वा, वेलुयं[6] वा, कासवणालियं वा—अण्णतरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणयं[7]—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

कण-आदि-पद

११९ से भिक्खू वा[8] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—कणं वा, कण-कुंडगं वा, कण-पूयलियं[9] वा, चाउलं वा, चाउल-पिट्ठं वा, तिलं वा, तिल-पिट्ठं वा, तिल-पप्पडगं वा—अण्णतरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणयं[10]—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

१२० एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[11], •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—त्ति बेमि° ।।

नवमो उद्देसो

पच्छाकम्म-पद

१२१ इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति—गाहावई वा,[12] •गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा,° कम्मकरीओ वा तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—जे इमे भवंति समणा भगवंतो

---

१ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
२ चोयं (क, घ, च, छ, ब) ।
३ स० पा०—असत्थपरिणयं जाव णो ।
४ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
५ अच्छियं (च) ।
६ पेल्लुगं (क), पलुगं (च) ।
७ स० पा०—असत्थपरिणयं जाव णो ।
८ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
९ पूयलिं (क, च, छ, ब) ।
१० स० पा०—असत्थपरिणयं जाव णो ।
११ स० पा०—सामग्गियं ।
१२ स० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ ।

सीलमता वयमता गुणमता सजया सवुडा बभचारी उवरया मेहुणाओ धम्माओ, णो खलु एएसि कप्पइ आहाकम्मिए असणे[1] वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा भोत्तए वा, पायत्तए[2] वा ।

सेज्ज पुण इम अम्ह अप्पणो अट्ठाए[3] णिट्ठिय, त जहा—असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा सव्वमेय समणाण णिसिरामो, अवियाइ वय पच्छा वि अप्पणो अट्ठाए असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा चेइस्सामो । एयप्पगार णिग्घोस सोच्चा णिसम्म तहप्पगार असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अफासुय अणेसणिज्ज[4] •ति मण्णमाणे° लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ।।

पुरापच्छासंथुय-कुल-पद

१२२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, 'समाणे वा, वसमाणे वा'[5], गामाणुगाम वा दूइज्जमाणे सेज्ज पुण जाणेज्जा—गाम वा[6], •णगर वा, खेड वा, कव्वड वा, मडब वा, पट्टण वा, दोणमुह वा, आगर वा, णिगम वा, आसम वा, सण्णिवेस वा,° रायहाणि वा । इमसि खलु गामसि वा,[7] •णगरसि वा, खेडसि वा कव्वडसि वा, मडवसि वा, पट्टणसि वा, दोणमुहसि वा, आगरसि वा, णिगमसि वा, आसमसि वा, सण्णिवेससि वा,° रायहाणिसि वा—सतेगइयस्स भिक्खुस्स पुरेसथुया[8] वा, पच्छासथुया वा परिवसति, त जहा—गाहावई वा,[9] •गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा,° कम्मकरीओ वा । तहप्पगाराइ कुलाइ णो पुव्वामेव भत्ताए वा, पाणाए वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।।

१२३ केवली बूया आयाणमेय—पुरा पेहाए 'तस्स परो अट्ठाए'[10] असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा उवकरेज्ज वा, उवक्खडेज्ज वा ।

अह भिक्खूण पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ एस कारण, एस उवएसो, ज णो तहप्पगाराइ कुलाइ पुव्वामेव भत्ताए वा, पाणाए वा पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा । से त्तमायाए एगतमवक्कमेज्जा, एगतमवक्कमेत्ता अणावाय-मसलोए चिट्ठेज्जा । से तत्थ कालेण अणुपविसेज्जा, अणुपविसेत्ता तत्थियरेयरेहिं

---

१ असण (क) ।
२ पात्तए (क), पायए (च), पाएत्तए (घ) ।
३ सयट्ठाए (अ, क, च) ।
४ स० पा०—अणेसणिज्ज जाव लाभे ।
५ समाणे वसमाणे वा (क, च, व), समाणे (घ, छ) ।
६ स० पा०—गाम वा जाव रायहाणि ।
७ स० पा०—गामसि वा जाव रायहाणिसि ।
८ पुव्व° (व) ।
९ स० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ ।
१० अस्य स्थाने ११५६ सूत्रे 'तस्सट्ठाए परो' इत्येव रूप पाठ ।

कुलेहिं सामुदाणियं,[1] एसियं, वेसियं, पिंडवायं एसित्ता आहारं आहारेज्जा।

सिया से परो कालेण अणुपविट्ठस्स आहाकम्मियं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवकरेज्ज वा, उवक्खडेज्ज वा। तं चेगइओ तुसिणीओ उवेहेज्जा, आहडमेव पच्चाइक्खिस्सामि। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भगिणि! त्ति वा, णो खलु मे कप्पइ आहाकम्मियं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा भोत्तए वा, पायए वा। मा उवकरेहि, मा उवक्खडेहि। से सेवं वयंतस्स परो आहाकम्मियं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवक्खडेत्ता आहट्टु दलएज्जा। तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं[2] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे॰ लाभे संते णो पडिगाहेज्जा॥

गिलाण-पद

१२४ से भिक्खू वा[3] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे॰ समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—मंसं वा मच्छं वा भज्जिज्जमाणं[4] पेहाए,[5] तेल्लपूयं वा आएसाए उवक्खडिज्जमाणं पेहाए, णो खद्ध-खद्धं उवसंकमित्तु ओभासेज्जा[6], णण्णत्थ गिलाणाए[7]॥

माइट्ठाण-पद

१२५. से भिक्खू वा[8] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे॰ समाणे अण्णतरं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता सुब्भि-सुब्भिं भोच्चा दुब्भि-दुब्भिं परिट्ठवेइ। माइट्ठाणं[9] संफासे, णो एवं करेज्जा।

सुब्भिं वा दुब्भिं वा, सव्वं भुंजे न छड्डए॥

१२६ से भिक्खू वा[10] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे॰ समाणे अण्णतरं वा पाणग-जायं पडिगाहेत्ता पुप्फं-पुप्फं[11] आविइत्ता[12] कसाय-कसायं परिट्ठवेइ। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा। पुप्फं पुप्फेति वा, कसायं कसाए त्ति वा सव्वमेयं भुंजेज्जा, णो किंचि वि परिट्ठवेज्जा॥

१२७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुपरियावण्णं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता[13]

---

१ समुदा॰ (क, घ, च, छ, ब)।
२ सं॰ पा॰—अफासुयं लाभे।
३ सं॰ पा॰—भिक्खू वा जाव समाणे।
४ भिज्जमाणं (अ), भज्जमानमिति (वृ)।
५ पेहाए सक्कुलिं वा (चू)।
६ याचेत (वृ)।
७ गिलाणीए (अ, क, च), गिलाणणीसाए(छ)।
८ सं॰ पा॰—भिक्खू वा जाव समाणे।
९ साति॰ (ब)।
१०. सं॰ पा॰—भिक्खू वा जाव समाणे।
११ वर्णगन्धोपेतं पुष्पं तद् विपरीतं कषायम्(वृ)।
१२ आवेइत्ता (च), आवीइत्ता (छ)।
१३ पडिगाहेत्ता बहवे (अ, छ, ब)।

साहम्मिया तत्थ वसति सभोइया समणुण्णा अपरिहारिया अदूरगया। तेसिं अणालोइया[1] अणामतिया[2] परिट्ठवेइ। माइट्ठाण सफासे, णो एव करेज्जा। से त्तमायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसतो! समणा! इमे मे असणे[3] वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा वहुपरियावण्णे, त भुजह ण[4]।

से सेव वयत परो वएज्जा—आउसतो! समणा! आहारमेय असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा जावइय-जावइय परिसडइ[5], तावइय-तावइय भोक्खामो वा, पाहामो वा। सव्वमेय परिसडइ[6], सव्वमेय भोक्खामो वा, पाहामो वा॥

वहिया नीहड-पद

१२८ से भिक्खू वा[7] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे° सेज्ज पुण जाणेज्जा—असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पर समुद्दिस्स वहिया णीहड, ज[8] परेहिं असमणुण्णाय अणिसिट्ठ—अफासुय[9] •अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा।

ज[10] परेहिं समणुण्णाय सम्म[11] णिसिट्ठ—फासुय[12] •एसणिज्ज ति मण्णमाणे° लाभे सते पडिगाहेज्जा॥

१२९ एय खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय[13], •ज सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—ति वेमि°॥

दसमो उद्देसो

माइट्ठाण-पद

१३० से एगइओ साहारण वा पिंडवाय पडिगाहेत्ता, ते साहम्मिए अणापुच्छित्ता जस्स-जस्स इच्छइ तस्स-तस्स खद्ध-खद्ध दलाति[14]। माइट्ठाण सफासे, णो एव करेज्जा। से त्तमायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता[15] वएज्जा[16]—आउसतो!

---

१ °इय (च, छ)।
२ °मते (घ)।
३ असण (क)।
४ व ण (अ, व)।
५ °सरइ (घ, च, छ)।
६ °सरइ (घ, च)।
७ स० पा०—भिक्खू वा सेज्ज।
८ त (अ, क, घ, च)।
९ स० पा०—अफासुय जाव णो।
१० त (अ, क, घ, च)।
११ सम (अ, क, घ, व)।
१२ स० पा०—फासुय लाभे सते जाव पडिगाहेज्जा।
१३ स० पा०—सामग्गिय।
१४ दलयति (अ)।
१५ गच्छेत्ता पुव्वामेव (अ, छ, व)।
१६ आलोएज्जा (व)।

समणा ! संति मम पुरे-संथुया वा, पच्छा-संथुया वा, तं जहा—आयरिए वा, उवज्झाए वा, पवत्ती वा, थेरे वा, गणी वा, गणहरे वा, गणावच्छेइए वा। अवियाइं एएसिं खद्धं-खद्धं दाहामि।

'से णेवं'[1] वयंतं परो वएज्जा—कामं खलु आउसो ! अहापज्जत्तं णिसिराहि[2]। जावइयं-जावइयं परो वयइ, तावइयं-तावइयं णिसिरेज्जा। सव्वमेयं परो वयइ, सव्वमेयं णिसिरेज्जा॥

१३१ से एगइओ मणुण्णं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता पंतेण भोयणेण[3] पलिच्छाएति मामेयं दाइयं संतं, दट्ठूण सयमायए। आयरिए वा[4], •उवज्झाए वा, पवत्ती वा, थेरे वा, गणी वा, गणहरे वा° गणावच्छेइए वा। णो खलु मे कस्सइ किंचि वि दायव्वं सिया। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा। से त्तमायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता पुव्वामेव उत्ताणए हत्थे पडिग्गहं कट्टु—'इमं खलु'[5] इमं खलु त्ति आलोएज्जा, णो किंचि वि णिगूहेज्जा॥

१३२ से एगइओ अण्णतरं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता भद्दयं-भद्दयं भोच्चा, विवण्णं विरसमाहरइ। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा॥

बहुउज्झिय-धम्मिय-पदं

१३३ से भिक्खू वा[6] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे° सेज्जं पुण जाणेज्जा—अंतरुच्छुयं वा, उच्छु-गंडियं वा, उच्छु-चोयगं वा, उच्छु-मेरुगं[7] वा, उच्छु-सालगं वा, उच्छु-डगलं[8] वा, सिंबलिं[9] वा, सिंबलि-थालगं[10] वा। अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि, अप्पे सिया[11] भोयणजाए, बहुउज्झिय-धम्मिए। तहप्पगारं अंतरुच्छुयं वा जाव सिंबलि-थालगं वा—अफासुयं[12] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा॥

---

१ मेव (घ)।
२ णिमराहि (अ, छ)।
३ भोयणे जाईण (घ)।
४ स० पा०—आयरिए वा जाव गणावच्छेइए।
५ × (क, व, छ, व)।
६ स० पा०—भिक्खू वा सेज्जं।
७ °मेरग (अ, व)।
८ आचाराङ्गस्य १।१० वृत्तौ—'डालगं' ति शाखैकदेश। ७।२ वृत्तौ—'डालगं' ति आम्रश्लक्ष्णखण्डानि, इति लभ्यते, किन्तु निशीथस्य षोडशोद्देशे 'डगलं' पाठो लभ्यते। तद् भाष्यचूर्णौ डगलस्यार्थो विहित। भाष्ये यथा—'डगल' चक्कलिच्छेदो (५४११), चूर्णौ यथा—चक्कलिछेदे छिण्णं डगलं भण्णति (भा० ४ पृष्ठ ९६)। आचाराङ्गे लिपिदोषत परिवर्तनमिदं जातमिति संभाव्यते।
९ सवलिं (अ, क च, छ), सपलिं (व)।
१० थालियं (अ)।
११ × (क, घ, च, छ)।
१२ स० पा०—अफासुयं जाव णो।

१३४ से भिक्खू वा[1] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे° सेज्ज पुण जाणेज्जा—बहु-अट्ठिय वा मस, मच्छ वा बहु कटग। अस्सि खलु पडिग्गहियसि, अप्पेसिया भोयण-जाए, बहुउज्झियधम्मिए। तहप्पगार बहु-अट्ठिय वा मस, मच्छ वा बहु कंटगं—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

१३५ से भिक्खू वा[2] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सिया ण परो बहु-अट्ठिएण मसेण[3] उवणिमतेज्जा—आउसतो! समणा! अभिकखसि बहु-अट्ठिय मस पडिगाहित्तए?

एयप्पगार णिग्घोस सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा, णो खलु मे कप्पइ मे बहु-अट्ठिय मस पडिगाहित्तए, अभिकखसि मे दाउ जावइय, तावइय पोग्गल दलयाहि, मा अट्ठियाइ।

से सेव वयतस्स परो अभिहट्टु अतो-पडिग्गहगसि[4] बहु-अट्ठिय मस परिभाएत्ता[5] णिहट्टु दलएज्जा। तहप्पगार पडिग्गहग[6] परहत्थसि वा, परपायसि वा—अफासुय अणेसणिज्ज[7] •ति मण्णमाणे° लाभे सते णो पडिगाहेज्जा।

से आहच्च पडिगाहिए सिया, त णोहि त्ति वएज्जा, णो अणहित्ति[8] वएज्जा। से त्तमायाए एगतमवक्कमेज्जा, एगतमवक्कमेत्ता अहे आरामसि वा, अहे उवस्सयसि वा, अप्पडए[9] •अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पुदए अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° सताणए मसग मच्छग[10] भोच्चा अट्ठियाइ कटए गहाय, से त्तमायाए एगतमवक्कमेज्जा, एगतमवक्कमेत्ता अहे झामथडिलसि वा[11], •अट्ठि-रासिसि वा, किट्ट-रासिसि वा, तुस-रासिसि वा, गोमय-रासिसि वा, अण्णयरसि वा तहप्पगारसि थडिलसि पडिलेहिय-पडिलेहिय°, पमज्जिय-पमज्जिय तओ सजयामेव परिट्ठवेज्जा ॥

अजाणया लोण-दाण-पद

१३६ से भिक्खू वा[12] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सिया से परो अभिहट्टु अतो-पडिग्गहए बिल वा लोण, उब्भिय वा लोण

---

१ स० पा०—भिक्खू वा सेज्ज।
२ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
३ मसेण मच्छेण (अ, व, छ)।
४ पडिग्गहसि (अ)।
५ परिभोउत्ता (अ), परियाभोएत्ता (क, च)।
६ °ग्गहण (अ)।
७ स० पा०—अणेसणिज्ज लाभे सते जाव णो।
८ अणिहित्ति (छ)।
९ स० पा०—अप्पडए जाव सताणए।
१० × (घ)।
११ स० पा०—झामथडिलसि वा जाव पमज्जिय।
१२ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।

परिभाएत्ता णीहट्टु दलएज्जा, तहप्पगारं पडिग्गहगं परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—अफासुयं अणेसणिज्जं[1] •ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।
से आहच्च पडिग्गाहिए सिया, तं च णाइदूरगए जाणेज्जा, से त्तमायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा 'इमं ते किं जाणया दिन्नं ? उदाहु अजाणया'[2] ?
सो य भणेज्जा—णो खलु मे जाणया दिन्नं, अजाणया। कामं[3] खलु आउसो ! इदाणिं णिसिरामि। तं भुंजह च णं परिभाएह च णं।
तं परेहिं समणुण्णायं समणुसिट्ठं, तओ संजयामेव भुंजेज्ज वा, पीएज्ज वा। जं च णो संचाएति भोत्तए वा, पायए वा। साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुण्णा अपरिहारिया अदूरगया तेसिं अणुपदातव्वं। सिया णो जत्थ साहम्मिया सिया, जहेव बहुपरियावण्णे कीरति, तहेव कायव्वं सिया॥

१३७ एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[4], •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—त्ति बेमि°॥

एगारसमो उद्देसो

माइट्ठाण-पद

१३८ भिक्खागा णामेगे एवमाहंसु समाणे वा, वसमाणे वा, गामाणुगामं 'वा दूइज्ज-माणे'[5] मणुण्णं भोयण-जायं लभित्ता "से[6] भिक्खू गिलाइ, से हंदह[7] णं तस्साह-रह। से य भिक्खू णो भुंजेज्जा। तुमं चेव णं भुंजेज्जासि।"
से एगइओ भोक्खामित्ति कट्टु पलिउंचिय-पलिउंचिय आलोएज्जा, तं जहा—इमे पिंडे, इमे[8] लोए[9], इमे तित्तए, इमे कडुयए, इमे कसाए, इमे अंबिले इमे महुरे, णो खलु एत्तो किंचि गिलाणस्स सयति त्ति। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा। तहाठियं[10] आलोएज्जा, जहाठियं[11] गिलाणस्स सदति—तं तित्तयं तित्तएत्ति वा, कडुयं कडुएत्ति वा, कसायं कसाएत्ति वा, अंबिलं अंबिलेत्ति वा, महुरं महुरेत्ति वा॥

---

१ सं॰ पा॰—अणेसणिज्जं जाव णो।
२ अजाणया दिन्नं (घ)।
३ इमं (अ)।
४ सं॰ पा॰—सामग्गियं।
५ दूइज्जमाणे वा (अ), दूइज्जमाणे (च,छ,व)।
६ से य (अ)।
७ गृह्णीत यूयम् (वृ)।
८ × (क, च, छ)।
९. लुक्खए (छ)।
१०. तहेव तं (अ, च, छ)।
११ जहेव तं (अ, च, छ)।

मणुण्ण-भोयण-जाय-पद

१३९ भिक्खागा णामेगे एवमाहसु समाणे वा, वसमाणे वा, गामाणुगाम [वा ?] दूइज्जमाणे मणुण्ण भोयण-जाय लभित्ता "से भिक्खू गिलाइ, से हदह ण तस्साहरह। से य भिक्खू णो भुजेज्जा। आहरेज्जासि[1] ण।"
णो खलु मे[2] अतराए आहरिस्सामि। इच्चेयाइ[3] आयतणाइ उवाइकम्म ॥

सत्त पिंडेसणा सत्त पाणेसणा-पद

१४० अह भिक्खू जाणेज्जा सत्त पिंडेसणाओ, सत्त पाणेसणाओ ॥

१४१ तत्थ खलु इमा पढमा पिंडेसणा—अससट्ठे हत्थे अससट्ठे मत्ते—तहप्पगारेण अससट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण[4] वा असण वा [पाण वा][5] खाइम वा साइम वा सय वा ण जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुय[6] °एसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° पडिगाहेज्जा—पढमा पिंडेसणा ॥

१४२ अहावरा दोच्चा पिंडेसणा—ससट्ठे हत्थे ससट्ठे मत्ते[7]—°तहप्पगारेण ससट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण वा असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा सय वा ण जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुय एसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते पडिगाहेज्जा—दोच्चा पिंडेसणा° ॥

१४३ अहावरा तच्चा पिंडेसणा—इह खलु पाईण वा, पडीण वा, दाहिण वा, उदीण वा सतेगइया सड्ढा भवति—गाहावई वा[8], °गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा। तेसिं च ण अण्णतरेसु विरूवरूवेसु भायण-जाएसु उवणिक्खित्तपुव्वे सिया, त जहा—थालसि वा, पिढरसि[9] वा, सरगसि वा, परगसि वा, वरगसि वा।
अह पुणेव जाणेज्जा—अससट्ठे हत्थे ससट्ठे मत्ते, ससट्ठे वा हत्थे अससट्ठे[10] मत्ते। से य पडिग्गहधारी सिया पाणिपडिग्गहए[11] वा, से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणि ! त्ति वा एएण तुम अससट्ठेण हत्थेण ससट्ठेण मत्तेण,

---

१ आहारेज्जासि (अ, घ, छ, व), आहारेज्जा से (क, च)।
२ इमे (अ, क, च, छ, व)।
३ इच्चेइयाइ (क, छ, व)।
४ मत्तएण (अ, छ, व)।
५ पिण्डैषणाया 'पाण वा' इति पाठो नापेक्षितोऽस्ति। असौ प्रवाहपाती एव बोध्य। एवमेव पानैषणायामपि 'असण वा खाइम वा साइम वा' इति पाठा नापेक्षिता सन्ति।
६ स० पा०—फासुय पडिगाहेज्जा।
७ स० पा०—मत्ते तहेव दोच्चा पडिमा।
८ स० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ।
९ पिढरगसि (अ, च), पिठरगसि (घ), पिठरसि (व)।
१० अससट्ठे वा (क, च)।
११ °पडिग्गहिए (छ, व)।

ससट्ठेण वा हत्थेण असंसट्ठेण मत्तेण, अंसि पडिग्गहगंसि वा पाणिंसि वा णिहट्टु उवित्तु दलयाहि। तहप्पगारं भोयण-जायं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं[1] •ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा—तच्चा पिंडेसणा॥

१४४ अहावरा चउत्था पिंडेसणा—से भिक्खू वा[2] •भिक्खुणी वा, गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे° सेज्जं पुण जाणेज्जा—पिहुयं वा[3] •बहुरजं वा, भुज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा°, चाउल-पलंबं वा। अंसि खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे अप्पे पज्जवजाए, तहप्पगारं पिहुयं वा जाव चाउल-पलंबं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा[4]—•फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—चउत्था पिंडेसणा॥

१४५ अहावरा पंचमा पिंडेसणा—से भिक्खू वा[5] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे उवहितमेव[6] भोयण-जायं जाणेज्जा, तं जहा—सरावंसि वा, डिंडिमंसि वा, कोसगंसि वा।

अह पुण एवं जाणेज्जा—बहुपरियावन्ने पाणीसु दगलेवे। तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा सयं वा णं जाएज्जा[7] •परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—पंचमा पिंडेसणा॥

१४६ अहावरा छट्ठा पिंडेसणा—से भिक्खू वा[8] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे° पग्गहियमेव[9] भोयण-जायं जाणेज्जा—जं च सयट्ठाए पग्गहियं, जं च परट्ठाए पग्गहियं, तं पाय-परियावन्नं, तं पाणि-परियावण्णं—फासुयं[10] •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—छट्ठा पिंडेसणा॥

१४७ अहावरा सत्तमा पिंडेसणा—से भिक्खू वा[11] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे बहुउज्झिय-धम्मियं भोयण-जायं जाणेज्जा—जं चण्णे बहवे दुपय-चउप्पय-समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झिय-धम्मियं भोयण-जायं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा[12]—•फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—सत्तमा पिंडेसणा। इच्चेयाओ सत्त पिंडेसणाओ॥

---

१ स० पा०—एसणिज्जं जाव लाभे।
२ स० पा०—भिक्खू वा सेज्जं।
३. स० पा०—पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं।
४ स० पा०—देज्जा जाव पडिगाहेज्जा।
५ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
६ उग्गहियं° (घ)।
७ स० पा०—जाएज्जा जाव पडिगाहेज्जा।
८ स० पा०—भिक्खू वा जाव पग्गहियं°।
९ उग्गहियं° (अ,क,च), उग्गहितं पग्गहितं (चू)।
१०. स० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा।
११ स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
१२ स० पा०—देज्जा जाव फासुयं पडिगाहेज्जा।

१४८. अहावराओ सत्त पाणेसणाओ। तत्थ खलु इमा पढमा पाणेसणा—असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते[1]॥

१४९ •अहावरा दोच्चा पाणेसणा—संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते॥

१५० अहावरा तच्चा पाणेसणा—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति॥

१५१ अहावरा चउत्था पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण पाणग-जायं जाणेज्जा, तं जहा—तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुद्धवियडं वा। अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे, अप्पे पज्जवजाए। तहप्पगारं तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुद्धवियडं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा॥

१५२ अहावरा पंचमा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे उवहितमेव पाणग-जायं जाणेज्जा॥

१५३ अहावरा छट्ठा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे पग्गहियमेव पाणग-जायं जाणेज्जा॥

१५४ अहावरा सत्तमा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे बहुउज्झिय-धम्मियं पाणग-जायं जाणेज्जा°॥

१५५ इच्चेयासिं सत्तण्हं पिंडेसणाणं, सत्तण्हं पाणेसणाणं अण्णतरं पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा—मिच्छा पडिवन्ना खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया, अण्णोण्णसमाहीए एवं च णं विहरंति॥

१५६ एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—त्ति बेमि॥

---

१ अत १५४ सूत्रपर्यन्त पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्य १।१४१-१४७ सूत्राणि। स० पा०—तं चेव भाणियव्वं णवरं चउत्थाए णाणत्तं से भिक्खू वा जाव समाणे सेज्जं पुण पाणग-जायं जाणेज्जा तं जहा तिलोदगं वा तुसोदगं वा जवोदगं वा आयामं वा सोवीरं वा सुद्धवियडं वा अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे तहेव पडिगाहेज्जा।

बीयं अज्झयणं

सेज्जा

पढमो उद्देसो

उवस्सयएसणा-पद

१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा उवस्सय एसित्तए[1], अणुपविसित्ता गाम वा[2], •णगर वा, खेड वा, कव्वड वा, मडव वा, पट्टण वा, दोणमुह वा, आगर वा, णिगम वा, आसम वा, सण्णिवेस वा°, रायहाणि वा, सेज्ज पुण उवस्सय जाणेज्जा—सअड[3] •सपाण सवीय सहरिय सउस सउदय सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा सताणय। तहप्पगारे उवस्सए णो 'ठाण वा, सेज्ज वा, निसीहिय वा चेतेज्जा'[4] ॥

२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण उवस्सय जाणेज्जा—अप्पड अप्पपाण[5] •अप्पवीय अप्पहरिय अप्पोस अप्पुदय अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° सताणग। तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ सजयामेव ठाण वा, सेज्ज वा, निसीहिय वा चेतेज्जा ॥]

अस्सिपडियाए-उवस्सय-पद

३ सेज्ज पुण उवस्सय जाणेज्जा—अस्सिपडियाए एगं साहम्मिय समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेतेति। तहप्पगारे उवस्सए पुरिसतरकडे वा अपुरिसतरकडे

---

१. एसित्तए से (अ, व)।

२. स० पा०—गाम वा जाव रायहाणि।

३. स० पा०—सअड जाव सताणय।

४. स्थान—कायोत्सर्ग, शय्या—सन्तारक, निषीधिका—स्वाध्यायभूमि, 'नो चेइज्ज' त्ति नो चेतयेत्—नो कुर्यात् इत्यर्थ (वृ)।

५ स० पा०—अप्पपाण जाव सताणग।

वा', °अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा° अणासेविते वा णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

४ '°सेज्ज पुण उवस्सय जाणेज्जा—अस्सिपडियाए वहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारव्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेतेति। तहप्पगारे उवस्सए पुरिसतरकडे वा अपुरिसतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

५ सेज्ज पुण उवस्सय जाणेज्जा—अस्सिपडियाए एग साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारव्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेतेति । तहप्पगारे उवस्सए पुरिसतरकडे वा अपुरिसतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाण वा सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

६ सेज्ज पुण उवस्सय जाणेज्जा—अस्सिपडियाए वहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारव्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेतेति । तहप्पगारे उवस्सए पुरिसतरकडे वा अपुरिसतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाण वा, सेज्ज वा णिसीहिय वा चेतेज्जा° ॥

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-उवस्सय-पद

७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण उवस्सय जाणेज्जा—वहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स' पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ' °समारव्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएइ । तहप्पगारे उवस्सए पुरिसतरकडे वा अपुरिसतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविए वा अणासेविए वा णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण उवस्सय जाणेज्जा—वहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारव्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएइ । तहप्पगारे

---

१ स० पा०—अपुरिसतरकडे वा जाव अणासेविते, १।१२ सूत्रे 'अपुरिसतरकड वा' इति पदानन्तर 'वहिया णीहड वा अणीहड वा' इति पाठो विद्यते, तथापि उपाश्रयप्रकरणे नैष प्राप्तोस्ति, तेन नासौ ग्राह्य ।

२ स० पा०—एव वहवे साहम्मिया एग साहम्मिणि वहवे साहम्मिणीओ ।

३ समुद्दिस्स त चेव भाणियव्व (घ, च) ।

४ स० पा०—सत्ताइ जाव चेएइ तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसतरकडे जाव अणासेविए ।

उवस्सए अपुरिसतरकडे, अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते°, अणासेविए णो ठाण वा सेज्ज वा णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

९ अह पुणेव जाणेज्जा—पुरिसतरकडे[1], °अत्तट्ठिए, परिभुत्ते°, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ सजयामेव ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

परिकम्मिय-उवस्सय-पद

१० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण उवस्सय जाणेज्जा—अस्सजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कविए[2] वा, छन्ने वा, लित्ते वा, घट्ठे वा, मट्ठे वा, समट्ठे वा, सपधूमिए वा। तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसतरकडे[3], °अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते°, अणासेविए णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

११ अह पुणेव जाणेज्जा—पुरिसतरकडे[4], °अत्तट्ठिए, परिभुत्ते°, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ सजयामेव ठाण वा, सेज्ज वा, णिसोहिय वा चेतेज्जा ॥

१२ से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण उवस्सय जाणेज्जा—अस्सजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ महल्लियाओ कुज्जा, [5]°महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा, णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा, अतो वा वहिं वा उवस्सयस्स हरियाणि छिदिय-छिदिय, दालिय-दालिय° सथारग सथारेज्जा[6], वहिया वा णिण्णक्खु[7], तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसतरकडे[8], °अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते°, अणासेविते णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसोहिय वा चेतेज्जा ॥

१३ अह पुणेव जाणेज्जा—पुरिसतरकडे[9], °अत्तट्ठिए, परिभुत्ते°, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ सजयामेव ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

वहिया निस्सारिय-उवस्सय-पद

१४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण [उवस्सय ?] जाणेज्जा—अस्सजए भिक्खु-पडियाए उदगप्पसूयाणि कदाणि वा, मूलाणि वा, [तयाणि वा ?][10], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, वीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाण साहरति, वहिया वा णिण्णक्खु, तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसतरकडे[11],

---

१ स० पा०—पुरिसतरकडे जाव आसेविए।
२ उक्कंपिए (क, घ, च, व)।
३ स० पा०—अपुरिसतरकडे जाव अणासेविए।
४. स० पा०—पुरिसतरकडे जाव आसेविए।
५. स० पा०—जहा पिंडसणाए जाव सथारग।
६ सथारेज्जा (अ, क, घ, च, व)।
७ णिणक्खु (क, छ)।
८ स० पा०—अपुरिसतरकडे जाव अणासेविते।
९ स० पा०—पुरिसतरकडे जाव आसेविए।
१०. यद्यप्ययमत्र प्रतिपु नोपलभ्यते, तथापि ३।३।५५ सूत्रमनुसृत्यासावत्र युज्यते।
११. स० पा०—अपुरिसतरकडे जाव णो।

•अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते, अणासेविते• णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

१५ अह पुणेव जाणेज्जा—पुरिसतरकडे[1], •अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ सजयामेव ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा° चेतेज्जा ॥

१६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण उवस्सय जाणेज्जा—अस्सजए भिक्खु-पडियाए पीढ वा, फलग वा, णिस्सेणि वा, उदूहल वा ठाणाओ ठाण साहरइ, बहिया वा णिण्णक्खु, तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसतरकडे[2], •अणत्तट्ठिए, अपरि-भुत्ते, अणासेविए° णो ठाण वा सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

१७ अह पुणेव जाणेज्जा—पुरिसतरकडे[3] •अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ सजयामेव ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा° चेतेज्जा ॥

अतलिक्ख-जाय-उवस्सय-पदं

१८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण उवस्सय जाणेज्जा—त जहा—खघसि वा, मचसि वा, मालसि वा, पासायसि वा, हम्मियतलसि वा, अण्णतरसि वा तहप्पगारसि अतलिक्खजायसि, णण्णत्थ आगाढाणागाढेहिं[4] कारणेहि ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ।

से य आहच्च चेतिते सिया णो तत्थ सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा हत्थाणि वा, पादाणि वा, अच्छीणि वा, दताणि वा, मुह वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा । णो तत्थ ऊसढं[5] पगरेज्जा, त जहा—उच्चार वा, पासवण वा, खेल वा, सिंघाण वा, वत वा, पित्त वा, पूर्ति वा, सोणिय वा, अण्णयर वा सरीरावयव ॥

१९ केवली बूया आयाणमेय—से तत्थ ऊसढ पगरेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा । से तत्थ पयलमाणे[6] वा पवडमाणे[7] वा हत्थ वा[8], •पाय वा, बाहु वा, ऊरु वा,° उदर वा, सीस वा, अण्णतर वा कायसि इदिय-जात लूसेज्ज वा, पाणाणि वा भूयाणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा[9], •वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, सघसेज्ज वा, सघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा ठाणाओ ठाण सकामेज्ज वा, जीवियाओ° ववरोवेज्ज वा ।

अह भिक्खूण पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, [10]•एस हेऊ, एस कारण, एस उवएसो,°

---

१ स० पा०—पुरिसतरकडे जाव चेतेज्जा ।
२ स० पा०—अपुरिसतरकडे जाव णो ।
३ स० पा०—पुरिसतरकडे जाव चेतेज्जा ।
४. गाढा° (क, च, व), आगाढावगाढेहिं (घ), आगाढादीहिं (छ) ।
५ 'उत्सृष्टम्' उत्सर्जन—त्यागमुच्चारादे (वृ)।
६ पयले° (क, च, छ) ।
७ पवडे° (क, च, छ) ।
८ स० पा०—हत्थ वा जाव सीस ।
९ स० पा०—अभिहणेज्ज वा जाव ववरोवेज्ज ।
१० स० पा०—पइण्णा जाव ज ।

जं तहप्पगारे उवस्सए अंतलिक्खजाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

सागारिय-उवस्सय-पदं

२० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—सइत्थियं, सखुड्डं, सपसुभत्तपाणं। तहप्पगारे सागारिए[1] उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

२१ आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावइ-कुलेण सद्धिं संवसमाणस्स—अलसगे वा, विसूइया वा, छड्डी वा उव्वाहेज्जा[2]। अण्णतरे वा से दुक्खे रोगातंके[3] समुप्पज्जेज्जा। अस्संजए कलुण-पडियाए तं भिक्खुस्स गातं तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा, अब्भंगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा। सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण[4] वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा, आघंसेज्ज वा, पघंसेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उव्वट्टेज्ज वा। सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा, 'उच्छोलेज्ज वा',[5] पहोएज्ज वा, सिणावेज्ज वा, सिंचेज्ज वा। दारुणा वा दारुपरिणामं[6] कट्टु अगणिकायं उज्जालेज्ज वा, पज्जालेज्ज वा, उज्जालेत्ता पज्जालेत्ता कायं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

२२. आयाणमेयं भिक्खुस्स सागारिए उवस्सए संवसमाणस्स[7]—इह खलु गाहावई वा[8], •गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा•, कम्मकरीओ वा अण्णमण्णं अक्कोसंति वा, वधंति[9] वा, रुंभंति वा, उद्दवेंति[10] वा।

अह भिक्खू णं उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एते खलु अण्णमण्णं अक्कोसंतु वा मा वा अक्कोसंतु, वधंतु वा मा वा वधंतु, रुंभंतु वा मा वा रुंभंतु, उद्दवेंतु वा मा वा उद्दवेंतु।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा[11], •एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो•

---

१ साकारिए (छ, व)।
२ उप्पा° (क, च, व)।
३. रोगे आयंके (घ)।
४ लोद्देण (अ, व)।
५ उच्छोलेज्ज पच्छोलेज्ज वा (व)।
६ दारुण परि° (अ, च), दारुण° (क)।
७. वसमाणस्स (व)।
८ सं० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ।
९ पहंति (क), × (च, व), वहंति (अ)।
१०. उद्दंति वा उद्दवेंति (घ), उद्दवंति वा उद्दवेंति (छ)।
११. सं० पा०—पइण्णा जाव जं।

ज तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ।।

२३ आयाणमेय भिक्खुस्स गाहावईहि सद्धि सवसमाणस्स[1]—इह खलु गाहावई अप्पणो सअट्ठाए अगणिकाय उज्जालेज्ज वा, पज्जालेज्ज वा, विज्झावेज्ज वा । अह भिक्खू उच्चावय मण णियच्छेज्जा—एते खलु अगणिकाय उज्जालेंतु वा मा वा उज्जालेंतु, पज्जालेतु वा मा वा पज्जालेतु, विज्झावेतु वा मा वा विज्झावेतु ।

अह भिक्खूण पुव्वोवदिट्ठा[2] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारण, एस उवएसो°, ज तहप्पगारे [सागारिए ?] उवस्सए णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ।।

२४ आयाणमेय भिक्खुस्स गाहावईहि सद्धि सवसमाणस्स—इह खलु गाहावइस्स कुडले वा, गुणे वा, मणी वा, मोत्तिए वा, 'हिरण्णे वा'[3], 'सुवण्णे वा'[4], कडगाणि वा, तुडियाणि वा, तिसरगाणि[5] वा, पालबाणि वा, हारे वा, अद्धहारे वा, एगावली वा, मुत्तावली वा, कणगावली वा, रयणावली वा, तरुणिय वा कुमारि अलकिय-विभूसिय पेहाए, अह भिक्खू उच्चावय मण णियच्छेज्जा—एरिसिया वा सा णो वा एरिसिया—इति वा ण बूया, इति वा ण मण साएज्जा ।

अह भिक्खूण पुव्वोवदिट्ठा[6] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारण, एस उवएसो°, ज तहप्पगारे [सागारिए ?] उवस्सए णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ।।

२५ आयाणमेय भिक्खुस्स गाहावईहि सद्धि सवसमाणस्स—इह खलु गाहावइणीओ वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, गाहावइ-धाईओ वा, गाहावइ-दासीओ वा, गाहावइ-कम्मकरीओ वा । तासि च ण एव वुत्तपुव्व भवइ—जे इमे भवति समणा भगवतो[7] •सीलमता वयमता गुणमता सजया सवुडा बभचारी° उवरया मेहुणाओ धम्माओ, णो खलु एतेसि कप्पइ मेहुण धम्म परियारणाए आउट्टित्तए ।

जा य खलु एएहि सद्धि मेहुण धम्म परियारणाए आउट्टेज्जा, पुत्त खलु सा

---

१ वस (अ, घ, च, छ, व) ।
२ स० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव ज ।
३ × (अ) ।
४ × (छ) ।
५ तिसराणि (च) ।
६ स० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव ज ।
७ स० पा०—भगवतो जाव उवरया ।

लभेज्जा—ओयस्सि तेयस्सि वच्चस्सि जसस्सि मपराइय[1] आलोयण-दरिसणिज्ज । एयप्पगार णिग्घोस सोच्चा णिसम्म तासि च ण अण्णयरी सड्ढी[2] त तवस्सि भिक्खु मेहुण धम्म परियारणाए आउट्टावेज्जा ।

अह भिक्खूण पुव्वोवदिट्ठा[3] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एम कारण, एस उवएसो °, ज तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

२६ एय खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय[4], •ज सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जए ।

—ति वेमि ° ॥

बीओ उद्देसो

२७ गाहावई णामेगे सुइ-समायारा भवति, भिक्खू य असिणाणए[5] मोयसमायारे, 'से तग्गधे'[6] दुग्गधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवइ ।

ज पुव्वकम्म त पच्छाकम्म, ज पच्छाकम्म त पुव्वकम्म । त भिक्खु-पडियाए वट्टमाणे करेज्जा वा, नो 'वा करेज्जा'[7] ।

अह भिक्खूण पुव्वोवदिट्ठा[8] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एम कारण, एस उवएसो °, ज तहप्पगारे उवस्सए णो ठाण वा[9], •सेज्ज वा, णिसीहिय वा ° चेतेज्जा ॥

२८ आयाणमेय भिक्खुस्स गाहावईहि सद्धि सवसमाणस्स—इह खलु गाहावइस्स[10] अप्पणो सयट्ठाए विरूवरूवे भोयण-जाए उवक्खडिए सिया, अह पच्छा भिक्खु-पडियाए असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा उवक्खडेज्ज वा, उवकरेज्ज वा, त च भिक्खू अभिकखेज्जा भोत्तए वा, पायए वा, वियट्टित्तए[11] वा ।

अह भिक्खूण पुव्वोवदिट्ठा[12] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारण, एस उवएसो °, ज तहप्पगारे उवस्सए णो ठाण वा[13], •सेज्ज वा, णिसीहिय वा ° चेतेज्जा ॥

२९ आयाणमेय भिक्खुस्स गाहावइणा सद्धि सवसमाणस्स—इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सयट्ठाए विरूवरूवाइ दारुयाइ भिन्न-पुव्वाइ भवति, अह पच्छा भिक्खु-पडियाए विरूवरूवाइ दारुयाइ भिदेज्ज वा, किणेज्ज वा, पामिच्चेज्ज वा,

---

१. सपहारिय (अ) ।
२ सहिय (अ), सहित (छ) ।
३ स० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव ज ।
४ स० पा०—सामग्गिय ।
५ असिणाणाए (अ) ।
६ से मे गधे (अ, क, घ, च, छ, ब, चू) ।
७ करेज्जा (अ), करेज्जा वा (छ, ब) ।
८ स० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव ज ।
९ स० पा०—ठाण वा जाव चेतेज्जा ।
१० तत्रैवाहारगृद्धया विवर्त्तितुम् आसितुमाकाङ्क्षेत् (वृ) ।
११ तृतीयार्थे षष्ठी (वृ) ।
१२ स० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव ज ।
१३ स० पा०—ठाण वा चेतेज्जा ।

दारुणा वा दारुपरिणाम[1] कट्टु अगणिकाय उज्जालेज्ज वा, पज्जालेज्ज वा। तत्थ भिक्खू अभिकखेज्जा आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, वियट्टित्तए वा। अह भिक्खूण पुव्वोवदिट्ठा[2] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारण, एस उवएसो°, ज तहप्पगारे उवस्सए णो ठाण वा[3], •सेज्ज वा, णिसीहिय वा° चेतेज्जा ॥

३० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उच्चार पासवणेण उव्वाहिज्जमाणे राओ वा विआले वा गाहावइ-कुलस्स दुवारवाह अवगुणेज्जा, तेणे य तस्सधिचारी अणुपविसेज्जा। तस्स भिक्खुस्स णो कप्पइ एव वदत्तिए—अय तेण पविसइ वा णो वा पविसइ, उवल्लियइ[4] वा णो वा उवल्लियइ, अइपतति[5] वा णो वा अइपतति, वदति वा णो वा वदति, तेण हड अण्णेण हड, तस्स हड अण्णस्स हड, अय तेणे अय उवचरए, अय हता अय एत्थमकासी त तवस्सि भिक्खु[6] अतेण तेण ति सकति।
अह भिक्खूण पुव्वोवदिट्ठा[7] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारण, एस उवएसो, ज तहप्पगारे उवस्सए णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ॥

तण-पलालाच्छाइय-उवस्सय-पद

३१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण उवस्सय जाणेज्जा—तण-पुजेसु वा, पलाल-पुजेसु वा, सअडे[8] •सपाणे सवीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° सताणए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

३२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण उवस्सय जाणेज्जा—तण-पुजेसु वा, पलाल-पुजेसु वा, अप्पडे[9] •अप्पपाणे अप्पवीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पुदए अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासताणए, तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ सजयामेव ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा° चेतेज्जा ॥

वज्जियव्व-उवस्सय-पद

३३ से आगतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अभिक्खण-अभिक्खण साहम्मिएहि ओवयमाणेहि णोवएज्जा[10] ॥

---

१ दारुण° (घ, च)।
२ स० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव ज।
३ स० पा०—ठाण वा चेतेज्जा।
४ उव्वलियति (च), उवलियत्ति (घ)
५. आवयति (घ, च)।
६ भिक्खुय (अ, छ)।
७ स० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव चेतेज्जा।
८ चूर्णावत्र वहुवचन लभ्यते—'सडेहिं', स० पा०—सअडे जाव सताणए।
९ चूर्णावत्र वहुवचन लभ्यते—'अप्पडेहिं' स० पा०—अप्पडेहिं जाव चेतेज्जा।
१० णोयवएज्जा (अ), णो उवएज्जा (क,घ,च)।

कालाइक्कंत-किरिया-पदं

३४ से आगतारेसु वा[1], •आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा°, परियावसहेसु वा, जे भयतारो उडुवद्धियं वा वासावासियं वा कप्पं उवातिणावित्ता[2] तत्थेव भुज्जो[3] संवसंति, अयमाउसो ! कालाइक्कंत-किरिया वि भवइ ॥

उवट्ठाण-किरिया-पदं

३५ से आगतारेसु वा[4], •आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा°, परियावसहेसु वा, जे भयंतारो उडुबद्धियं वा वासावासियं वा कप्पं उवातिणावित्ता तं दुगुणा तिगुणेण[5] अपरिहरित्ता तत्थेव भुज्जो संवसंति, अयमाउसो[6] ! उवट्ठाण-किरिया वि[7] भवइ ॥

अभिक्कंत-किरिया-पदं

३६ इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा, संतेगइया सड्ढा भवंति, तं जहा—गाहावई वा[8], •गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा। तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ[9]।

तं सद्दहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिताइं भवंति, तं जहा—आएसणाणि वा, आयतणाणि वा, देवकुलाणि वा, सहाओ[10] वा पवाओ[11] वा, पणिय-गिहाणि वा, पणिय-सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा, सुहाकम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, वद्ध[12]-कम्मंताणि वा, वक्क[13]-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि वा, कट्ठ-कम्मंताणि

---

१ म० पा०—आगतारेसु वा जाव परियावसहेसु।

२ °तिणित्ता (अ, क, घ, च, ब)।

३ भुज्जो-भुज्जो (घ)।

४ म० पा०—आगतारेसु वा जाव परियावसहेसु।

५ दुगुणेण (अ, क, घ, च, ब)। स्वीकृत पाठ वृत्त्यनुसारी वर्तते।

६ अयमाउसो ! इतरा (अ, घ, ब)।

७ या वि (अ, ब)।

८ स० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ।

९ साधूनामेवंभूतं प्रतिश्रयं कल्पते नैवंभूतं, इत्येवं न ज्ञातं भवतीत्यर्थः, प्रतिश्रयदानफलं च स्वर्गादिकं तैः कुतश्चिदवगतम् (वृ)।

१० सहाणि (क, घ, छ, ब)।

११ पवाणि (अ, क, घ, छ, ब)।

१२ वत्थ° (छ)।

१३ वल्कज° (वृ)।

वा, सुसाण-कम्मताणि वा, सति-कम्मताणि वा[1], गिरि-कम्मताणि वा, कदर[2]-कम्मताणि वा, सेलोवट्ठाण-कम्मताणि वा[3], भवणगिहाणि वा ।
जे भयतारो तहप्पगाराइ आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा तेहि ओवयमाणेहि ओवयति, अयमाउसो ! अभिक्कत-किरिया वि[4] भवइ ॥

अणभिक्कंत-किरिया-पद

३७. इह खलु पाईण वा, पडीण वा, दाहीण वा, उदीण वा, सतेगइया सड्ढा भवति, त जहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा । तेसि च ण आयार-गोयरे णो सुणिसते भवइ ।
त सद्दहमाणेहि, त पत्तियमाणेहि, त रोयमाणेहि बहवे समण-माहण-अतिहि-किविण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहि अगाराइ चेतिआइ भवति, त जहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा ।
जे भयतारो तहप्पगाराइ आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा तेहि अणोवयमाणेहि ओवयति, अयमाउसो ! अणभिक्कत-किरिया वि भवति ॥

वज्ज-किरिया-पद

३८ इह खलु पाईण वा, पडीण वा, दाहीण वा, उदीण वा, सतेगइया सड्ढा भवति, त जहा गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा । तेसि च ण एव वुत्तपुव्व भवइ—जे इमे भवति समणा भगवतो सीलमता[5] °वयमता गुणमता सजया सवुडा बभचारी° उवरया मेहुणाओ धम्माओ, णो खलु एएसि भयताराण कप्पइ आहाकम्मिए उवस्सए वत्थए ।
सेज्जाणिमाणि[6] अम्ह अप्पणो सअट्ठाए[7] चेतिताइ भवति, त जहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा । सव्वाणि ताणि समणाण णिसिरामो, अवियाइ वय पच्छा अप्पणो सअट्ठाए चेतिस्सामो, त जहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा ।
एयप्पगार णिग्घोस सोच्चा णिसम्म जे भयतारो तहप्पगाराइ आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छति, उवागच्छित्ता इतरेतरेहि[8] पाहुडेहि वट्टति, अयमाउसो ! वज्ज-किरिया वि भवइ ॥

---

१ वा सुण्णागारकम्मताणि वा (अ) ।
२ कदरा (अ) ।
३. वा सयण-गिहाणि वा (छ) ।
४ या वि (अ, क, घ, च, व) ।
५ स० पा०—सीलमता जाव उवरया ।
६ °इमाणि (च) ।
७ अट्ठाए (अ, छ, व) ।
८ इतरातिरेहि (क, घ), इयरातरेहि (अ, च) ।

महावज्ज-किरिया-पद

३९ इह खलु पाईण वा, पडीण वा, दाहीण वा, उदीण वा, सतेगइया सड्ढा भवति, त जहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा। तेसिं च ण आयार-गोयरे णो सुणिसते भवइ।

त सद्दहमाणेहिं, त पत्तियमाणेहिं, त रोयमाणेहिं वहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइ चेतिताइ भवति, त जहा—आएसणाणि वा भवणगिहाणि वा। जे भयतारो तहप्पगाराइ आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छति, उवागच्छित्ता इतरेतरेहिं[1] पाहुडेहिं वट्टति, अयमाउसो! महावज्ज-किरिया वि भवइ॥

सावज्ज-किरिया-पद

४० इह खलु पाईण वा, पडीण वा, दाहीण वा, उदीण वा, सतेगइया सड्ढा भवति, त जहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा। तेसिं च ण आयार-गोयरे णो सुणिसते भवइ।

त सद्दहमाणेहिं, त पत्तियमाणेहिं, त रोयमाणेहिं वहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइ चेतिआइ भवति, त जहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा। जे भयतारो तहप्पगाराइ आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छति, उवागच्छित्ता इतरेतरेहिं पाहुडेहिं वट्टति, अयमाउसो! सावज्ज-किरिया वि भवइ॥

महासावज्ज-किरिया-पद

४१ इह खलु पाईण वा, पडीण वा, दाहीण वा, उदीण वा, सतेगइया सड्ढा भवति, त जहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा। तेसिं च ण आयार-गोयरे णो सुणिसते भवइ।

त सद्दहमाणेहिं, त पत्तियमाणेहिं, त रोयमाणेहिं एग समणजाय समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइ चेतिताइ भवति, त जहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा। महया पुढविकाय-समारभेण, [2]°महया आउकाय-समारभेण, महया तेउकाय-समारभेण, महया वाउकाय-समारभेण, महया वणस्सइकाय-समारभेण°, महया तसकाय-समारभेण, महया सरभेण, महया समारभेण, महया आरभेण, महया विरूवरूवेहिं पावकम्म-किच्चेहिं, त जहा—छायणओ लेवणओ सथार-दुवार-पिहणओ। सीतोदए वा परिट्ठवियपुव्वे भवइ, अगणिकाए वा उज्जालियपुव्वे भवइ, जे भयतारो तहप्पगाराइ आएसणाणि वा जाव

१ इतरातरेहिं (अ), इयराइयरेहिं (घ)।

२ स० पा०—एव आउतेउवाउवणस्सइ।

भवणगिहाणि वा उवागच्छति, उवागच्छित्ता इयराइयरेहिं पाहुडेहिं दुपक्ख ते कम्म सेवति, अयमाउसो ! महासावज्ज-किरिया वि भवइ ।।

अप्पसावज्ज-किरिया-पद

४२ इह खलु पाईण वा, पडीण वा, दाहीण वा, उदीण वा सतेगइया सड्ढा भवति, त जहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा । तेसिं च ण आयार-गोयरे णो सुणिसते भवइ ।

त सद्दहमाणेहिं, त पत्तियमाणेहिं, त रोयमाणेहिं अप्पणो सअट्ठाए तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइ चेतिताइ भवति, त जहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा। महया पुढविकाय-समारभेण[1] •महया आउकाय-समारभेण, महया तेउकाय-समारभेण, महया वाउकाय-समारभेण, महया वणस्सइकाय-समारभेण, महया तसकाय-समारभेण, महया सरभेण, महया समारभेण, महया आरभेण, महया विरूवरूवेहिं पावकम्म-किच्चेहिं, त जहा—छायणओ लेवणओ सथार-दुवार-पिहणओ। सीतोदए वा परिट्ठवियपुव्वे भवइ° अगणिकाए वा उज्जालियपुव्वे भवइ ।

जे भयतारो तहप्पगाराइ आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छति, उवागच्छित्ता इयराइयरेहिं पाहुडेहिं एगपक्ख ते कम्म सेवति, अयमाउसो ! अप्पसावज्ज-किरिया वि भवइ ।।

४३ एय खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय[2], •ज सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—त्ति बेमि° ।।

तइओ उद्देसो

उवस्सय-छलण-पद

४४ सिय[3] णो सुलभे फासुए उछे अहेसणिज्जे, णो य खलु सुद्धे इमेहिं पाहुडेहिं, त जहा—छायणओ, लेवणओ, सथार-दुवार-पिहणओ[4], पिंडवाएसणाओ ।

से[5] भिक्खू चरिया-रए, ठाण-रए, निसीहिया-रए, सेज्जा-सथार-पिंडवाएसणा-रए। सति भिक्खुणो एवमक्खाइणो उज्जुया[6] णियाग-पडिवन्ना अमाय कुव्वमाणा वियाहिया ।

सतेगइया पाहुडिया उक्खित्तपुव्वा भवइ, एव णिक्खित्तपुव्वा भवइ, परिभाइय-

---

१ स० पा०—समारभेण जाव अगणिकाए ।

२ स० पा०—सामग्गिय ।

३ से य (क, घ, च, छ, व) ।

४ पिहुणाओ (अ), पिहाणओ (क, च, छ, व) ।

५ से य (अ) ।

६ उज्जुअडा (अ, छ) ।

पुव्वा भवइ, परिभुत्तपुव्वा भवइ, परिट्ठवियपुव्वा भवइ, एवं वियागरेमाणे समियाए[1] वियागरेति ?

हंता भवइ ॥

उवस्सय-जयण-पद

४५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—खुड्डियाओ, खुड्ड-दुवारियाओ[2], निइयाओ[3] [नीयाओ ?] संनिरुद्धाओ[4] भवंति । तहप्पगारे उवस्सए राओ वा, विआले वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा, पुरा हत्थेण पच्छा पाएण तओ संजयामेव णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ॥

४६ केवली बूया आयाणमेयं—जे तत्थ समणाण वा, माहणाण वा, छत्तए वा, मत्तए वा, दंडए वा, लट्ठिया वा, भिसिया वा, 'नालिया वा, चेलं वा'[5], चिलिमिली वा, चम्मए वा, चम्मकोसए वा, चम्म-छेदणए वा—दुब्बद्धे दुण्णिक्खित्ते अणिकंपे चलाचले—भिक्खू य राओ वा वियाले वा णिक्खममाणे वा, पवि-समाणे वा पयलेज्ज वा, पवडेज्ज वा । से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा हत्थं वा, पायं वा[6], °बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा अण्णयरं वा कायंसि° इंदिय-जायं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा भूयाणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा[7], °वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीवियाओ° ववरोवेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं तहप्पगारे उवस्सए पुरा हत्थेण पच्छा पाएण तओ संजयामेव णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ॥

उवस्सय-जायणा-पद

४७ से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ उवस्सयं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए,[8] ते उवस्सयं अणुण्णवेज्जा—कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णातं वसिस्सामो जाव आउसंतो, जाव आउसंतस्स उवस्सए, जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव'[9] उवस्सयं गिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ॥

---

१ समियं (घ), समिया (छ) ।

२ °दुवाराओ (घ) ।

३. नेरइयाओ (अ), निययाओ (घ) ।

४ सनिरुद्धिओ (अ) ।

५ नालिया वा चेले वा (अ), चेलं वा नालिया वा (घ, ब), नालिया वा (छ) ।

६ सं० पा०— पायं वा जाव इंदिय ।

७ सं० पा०—अभिहणेज्ज वा जाव ववरो-वेज्ज ।

८ समाहिट्ठाए (अ,क,घ, छ), समाहिट्ठए (ब) ।

९ एवावता (अ), इत्ता त्ता (क), इत्ता वा (च), इ ताव (छ) ।

सेज्जायर-णाम-गोय-जायणा-पदं

४८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सुवस्सए संवसेज्जा, तस्स पुव्वामेव णाम-गोयं जाणेज्जा। तओ पच्छा तस्स गिहे णिमंतेमाणस्स अणिमंतेमाणस्स वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा—अफासुयं[1] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा॥

उवस्सय-विसुद्धि-पदं

४९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—ससागारियं सागणियं सउदयं, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण[2]-•पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा॥

५०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—गाहावइ-कुलस्स मज्झंमज्झेणं गंतुं पंथं पडिबद्धं वा[3], णो पण्णस्स[4] •णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा॥

५१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा[5], •गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा अण्णमण्णमक्कोसंति वा[6], •वधंति वा, रुंभंति वा°, उद्दवेंति वा, णो पण्णस्स[7] •णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[8], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा॥

५२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा, अब्भंगे [गें ?]ति वा, मक्खे[खें ?]ति वा, णो पण्णस्स[9] •णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग° चिंताए। तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[10], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा॥

५३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा, अण्णमण्णस्स गायं सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण

---

१. सं० पा०—अफासुयं जाव णो।
२. सं० पा०—वायण जाव चिंताए।
३. × (अ)।
४. सं० पा०—पण्णस्स जाव चिंताए।
५. सं० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ।
६. सं० पा०—अण्णमण्णमक्कोसंति वा जाव उद्दवेंति।
७, ९. सं० पा०—पण्णस्स जाव चिंताए।
८, १०. सं० पा०—ठाणं वा जाव चेतेज्जा।

वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा, आघसति वा, पघसति वा, उव्वलेंति वा, उव्वट्टेंति वा, णो पण्णस्स[1] •णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[2], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा,° चेतेज्जा ॥

५४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा- इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेंति वा, पधोवेंति वा, सिंचंति वा, सिणावेंति वा, णो पण्णस्स[3] •णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग° चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[4], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ॥

५५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा णिगिणा ठिआ, णिगिणा उवल्लीणा मेहुणधम्मं विण्णवेंति, रहस्सियं वा मंतं मंतेंति, णो पण्णस्स[5] •णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[6], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ॥

५६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—आइण्णसंलेक्खं[7], णो पण्णस्स[8] •णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

संथारग-पदं

५७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं एसित्तए। सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—सअंडं[9] •सपाणं सबीअं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगं, तहप्पगारं संथारगं[10]—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

५८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं[11] •अप्पपाणं अप्पबीअं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगं, गरुयं, तहप्पगारं संथारगं[12]—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

५९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं[13] •अप्पपाणं

१,३,५,८ सं० पा०—पण्णस्स जाव चिंताए। ९ सं० पा०—सअंडं जाव संताणगं।
२,४,६ सं० पा०—ठाणं वा जाव चेतेज्जा। १०,१२ सं० पा०—संथारगं लाभे।
७ संलिखे (घ), ° संलेखे (छ)। ११,१३ सं० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं।

अप्पबीअ अप्पहरिय अप्पोस अप्पुदय अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° सताणग, लहुय अपाडिहारिय, तहप्पगार सथारग[1]—•अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे° लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

६० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण सथारग जाणेज्जा—अप्पड[2] •अप्पपाण अप्पबीअ अप्पहरिय अप्पोस अप्पुदय अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° सताणग, लहुय पाडिहारिय णो अहाबद्ध, तहप्पगार सथारग[3]—°अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे° लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

६१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण सथारग जाणेज्जा—अप्पड[4] •अप्पपाण अप्पबीअ अप्पहरिय अप्पोस अप्पुदय अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° सताणग, लहुय पाडिहारिय अहाबद्ध, तहप्पगार सथारय[5]—•फासुय एसणिज्ज ति मण्णमाणे° लाभे सते पडिगाहेज्जा ॥

सथारग-पडिमा-पद

६२ इच्चेयाइ आयतणाइ उवाइक्कम्म अह भिक्खू जाणेज्जा, इमाहिं चउहिं पडिमाहिं सथारग एसित्तए ॥

६३ तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय सथारग जाएज्जा, त जहा—इक्कड वा, कढिण[6] वा, जतुय वा, परग वा, मोरग[7] वा, तर्ण[8] वा, कुस वा, 'कुच्चग वा'[9], पिप्पलग वा, पलालग वा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयर सथारग ? तहप्पगार सय वा ण जाएज्जा परो वा से देज्जा—फासुय एसणिज्ज[10] •ति मण्णमाणे° लाभे सते पडिगाहेज्जा—पढमा पडिमा ॥

६४ अहावरा दोच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए सथारग जाएज्जा, त जहा—गाहावइ वा, गाहावइ-भारिय वा, गाहावइ-भगिणि वा, गाहावइ-पुत्त वा, गाहावइ-धूय वा, सुण्ह वा, धाइ वा, दास वा, दासि वा, कम्मकर वा, कम्मकरि[11] वा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणि !

---

१ क्वचित् 'सेज्जा सथारग' इति पाठोऽस्ति। तत्र 'सेज्जा' लिपिदोषेण प्रक्षिप्त इति सभाव्यते, स० पा०—सथारग लाभे।
२ स० पा०—अप्पड जाव सताणग।
३ स० पा०—सथारग लाभे।
४ स० पा०—अप्पड जाव सताणग।
५ स० पा०—सथारय जाव लाभे।
६ कढिणग (घ)।
७ पोरग (घ)।
८ तणग (क, च, छ, व)।
९ कुच्चग वा वच्चग वा (चू)।
१० स० पा०—एसणिज्ज जाव लाभे।
११ कम्मकरी (अ,घ,व), कम्मकरीय (च,छ)।

त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं संथारगं ? तहप्पगारं संथारगं सयं वा ण जाएज्जा परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं[1] •ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—दोच्चा पडिमा ॥

६५ अहावरा तच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सुवस्सए संवसेज्जा, ते तत्थ अहासमण्णागए, तं जहा—इक्कडे वा[2] •कढिणे वा, जंतुए वा, परगे वा, मोरगे वा, तणे वा, कुसे वा, कुच्चगे वा, पिप्पले वा°, पलाले वा। तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए वा, णेसज्जिए वा विहरेज्जा—तच्चा पडिमा ॥

६६ अहावरा चउत्था पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहासंथडमेव संथारगं जाएज्जा, तं जहा—पुढविसिलं वा, कट्ठसिलं वा अहासंथडमेव। तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए वा, णेसज्जिए वा विहरेज्जा—चउत्था पडिमा ॥

६७ इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे[3] •णो एवं वएज्जा मिच्छा पडिवन्ना खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने।
जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया°, अण्णोण्णसमाहीए एवं च णं विहरंति ॥

संथारग-पच्चप्पण-पद

६८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तिए। सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—सअंडं[4] •सपाणं सबीअं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं, तहप्पगारं संथारगं णो पच्चप्पिणेज्जा ॥

६९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए। सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं[5] अप्पपाणं अप्पबीअं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं, तहप्पगारं संथारगं पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, आयाविय-आयाविय, विणिद्धुणिय-[6] विणिद्धुणिय तओ संजयामेव पच्चप्पिणेज्जा ॥

उच्चारपासवण-भूमि-पद

७० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा समाणे वा, वसमाणे वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा पुव्वामेव णं[7] पण्णस्स उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेज्जा ॥

---

१ सं० पा०—एसणिज्जं जाव पडिगाहेज्जा।
२ सं० पा०—इक्कडे वा जाव पलाले।
३ सं० पा०—पडिवज्जमाणे तं चेव जाव अण्णोण्णसमाहीए।
४ सं० पा०—सअंडं जाव संताणगं।
५ सं० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं।
६ विहुणिय २ (क,च), विद्धुणिय २ (घ,व)।
७ × (क, घ, च)।

७१ केवली बूया आयाणमेय—अपडिलेहियाए उच्चारपासवणभूमीए, भिक्खू[1] वा भिक्खुणी वा राओ वा विआले वा उच्चारपासवण परिट्ठवेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा। से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा हत्थं वा पाय वा[2] •बाहु वा, ऊरु वा, उदर वा, सीस वा अण्णयर वा कायसि इदिय-जाय° लूसेज्ज वा पाणाणि वा[3] •भूयाणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, सघसेज्ज वा, सघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाण सकामेज्ज वा, जीविआओ° ववरोवेज्ज वा। अह भिक्खूण पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारण, एस उवएसो, ज पुव्वामेव पण्णस्स उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेज्जा ॥

सयण-विहि-पद

७२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा सेज्जा-सथारग-भूमि पडिलेहित्तए, गण्णत्थ आयरिएणं वा, उवज्झाएण वा[4], •पवत्तीए वा, थेरेण वा, गणिणा वा, गणहरेण वा°, गणावच्छेइएण[5] वा, बालेण वा, वुड्ढेण वा, सेहेण वा, गिलाणेण वा, आएसेण वा,
अतेण[6] वा, मज्झेण वा, समेण वा, विसमेण वा, पवाएण वा, णिवाएण वा 'तओ सजयामेव'[7] पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय[8] बहु-फासुय सेज्जा-सथारग सथरेज्जा ॥

७३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुय सेज्जा-सथारग सथरेत्ता अभिकखेज्जा बहु-फासुए सेज्जा-सथारए दुरुहित्तए, से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-सथारए दुरुहमाणे, से पुव्वामेव ससीसोवरिय काय पाए य पमज्जिय-पमज्जिय तओ सजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-सथारगे दुरुहेज्जा, दुरुहेत्ता तओ सजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-सथारए सएज्जा ॥

७४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-सथारए सयमाणे, णो अण्णमण्णस्स हत्थेण हत्थ, पाएण पाय, काएण काय आसाएज्जा। से अणासायमाणे तओ सजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-सथारए सएज्जा ॥

७५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उस्सासमाणे वा, णीसासमाणे वा, कासमाणे वा,

---

१ से भिक्खू (छ, ब)।
२ स० पा०—पाय वा जाव लूसेज्ज।
३. स० पा०—पाणाणि वा जाव ववरोवेज्ज।
४ स० पा०—उवज्झाएण वा जाव गणावच्छेइएण।
५. गणावच्छेएण (च)।
६ अन्तेन वेत्यादीना पदाना तृतीया सप्तम्यर्थे (वृ)।
७ × (क, घ, च, ब)।
८ पमज्जिय तओ सजयामेव (क,घ,च,छ,ब)।

छीयमाणे वा, जंभायमाणे वा, उड्डुए[1] वा, वायणिसग्गे वा करेमाणे, पुव्वामेव आसयं वा, पोसयं वा पाणिणा परिपिहित्ता तओ संजयामेव ऊससेज्ज[2] वा, णीससेज्ज वा, कासेज्ज वा, छीएज्ज वा, जंभाएज्ज वा, उड्डुयं वा, वायणिसग्गं वा करेज्जा ॥

७६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—समा वेगया सेज्जा भवेज्जा, विसमा वेगया सेज्जा भवेज्जा, पवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सदंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-दंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सउवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिरुवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा—तहप्पगाराहिं सेज्जाहिं संविज्जमाणाहिं पग्गहिततरागं विहारं विहरेज्जा, णो किंचिवि गिलाएज्जा ॥

७७ एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥



१ उड्डोए (घ, च, छ) । २ ऊसासेज्ज (क, घ, च, छ) ।

तइयं अज्झयणं

इरिया

पढमो उद्देसो

वासावास-पदं

१ अब्भुवगए खलु वासावासे अभिपवुट्ठे, वहवे पाणा अभिसभूया, वहवे वीया अहुणुब्भिन्ना[1], अतरा से मग्गा वहुपाणा वहुवीया[2] °वहुहरिया वहु-ओसा वहु-उदया वहु-उत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°सताणगा, अणभिक्कता पथा, णो विण्णाया मग्गा, सेव णच्चा णो गामाणुगाम दूइज्जेज्जा, तओ सजयामेव वासावास उवल्लिएज्जा ।।

२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण जाणेज्जा—गाम वा[3], °णगर वा, खेड वा, कव्वड वा, मडव वा, पट्टण वा, दोणमुह वा, आगर वा, णिगम वा, आसम वा, सण्णिवेस वा°, रायहाणि वा । इमसि खलु गामसि वा[4], °णगरसि वा, खेडसि वा, कव्वडसि वा, मडवसि वा, पट्टणसि वा, दोणमुहसि वा, आगरसि वा, णिगमसि वा, आसमसि वा, सण्णिवेसंसि वा°, रायहाणिसि वा—णो महती विहारभूमी, णो महती वियारभूमी, णो सुलभे पीढ-फलग-सेज्जा-सथारए, णो सुलभे फासुए उछे अहेसणिज्जे, वहवे जत्थ समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा उवागया उवागमिस्सति य, अच्चाइण्णा वित्ती—णो पण्णस्स निक्खमण-पवेसाए[5], °णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह°-धम्माणुओग-

---

१ अहुणुब्भिया (अ), अहुणोब्भिन्ना (घ), अहुणाभिन्ना (च, व) ।

२. स० पा०—वहुवीया जाव सताणगा ।

३ स० पा०—गाम वा जाव रायहाणि ।

४. स० पा०—गामसि वा जाव रायहाणिसि ।

५. स०पा०—निक्खमणपवेसाए जाव धम्माणु° ।

चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारं गामं वा णगरं वा जाव रायहाणिं वा णो वासावासं उवल्लिएज्जा ॥

३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—गामं वा जाव रायहाणिं वा। इमंसि खलु गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा—महती विहारभूमी, महती वियारभूमी, सुलभे जत्थ पीढ-फलग-सेज्जा-संथारए, सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे, णो जत्थ बहवे समण[1]-•माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा° उवागया उवागमिस्संति य, अप्पाइण्णा वित्ती[2]—•पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए, पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारं गामं वा जाव° रायहाणिं वा, तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिएज्जा ॥

गामाणुगाम-विहार-पद

४ अह पुणेवं जाणेज्जा—चत्तारि मासा वासाणं वीइक्कंता, हेमंताण य पंच-दस-रायकप्पे परिवुसिए, अंतरा से मग्गा बहुपाणा[3] •बहुबीया बहुहरिया बहु-ओसा बहु-उदया बहु-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगा, णो जत्थ बहवे समण[4]-•माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा° उवागया उवागमिस्संति य। सेवं णच्चा णो गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

५ अह पुणेवं जाणेज्जा—चत्तारि मासा वासाणं वीइक्कंता, हेमंताण य पंच-दस-रायकप्पे परिवुसिए, अंतरा से मग्गा अप्पंडा[5] •अप्पपाणा अप्पबीया अप्पहरिया अप्पोसा अप्पुदया अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगा, बहवे जत्थ समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा उवागया उवागमिस्संति य। सेवं णच्चा तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे पुरओ जुगमायं पेहमाणे, दट्ठूण तसे पाणे उद्धट्टु पायं रीएज्जा, साहट्टु पायं रीएज्जा, उक्खिप्प पायं रीएज्जा, तिरिच्छं[6] वा कट्टु पायं रीएज्जा। सति परक्कमे संजतामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाणाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा, उदए वा, मट्टिया वा अविद्धत्था। सति परक्कमे[7] •संजतामेव परक्कमेज्जा°, णो उज्जुयं गच्छेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

---

१ सं० पा०—समण जाव उवागया।
२ सं० पा०—वित्ती जाव रायहाणिं।
३ सं० पा०—बहुपाणा जाव संताणगा।
४. सं० पा०—समण जाव उवागया
५ सं० पा०—अप्पंडा जाव संताणगा।
६ वितिरिच्छं (अ, घ, च, ब)।
७. सं० पा०—परक्कमे जाव णो।

८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे अतरा से विरूवरूवाणि पच्चतिकाणि दस्सुगायतणाणि मिलक्खूणि अणारियाणि दुस्सन्नप्पाणि दुप्पण्ण-वणिज्जाणि अकालपडिवोहीणि अकालपरिभोईणि, सति लाढे विहाराए, सथरमाणेहि जणवएहि, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए ।।

९ केवली बूया आयाणमेय—ते ण वाला 'अय तेणे' 'अय उवचरए' 'अय तओ आगए' त्ति कट्टु त भिक्खु अक्कोसेज्ज वा[1], •वधेज्ज वा, रुभेज्ज वा°, उद्दवेज्ज[2] वा। वत्थ पडिग्गह कवल पायपुछण 'अच्छिदेज्ज वा'[3], अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज[4] वा।

अह भिक्खूण पुव्वोवदिट्ठा[5] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारण, एस उवएसो°, ज णो तहप्पगाराणि विरूवरूवाणि पच्चतियाणि दस्सुगायतणाणि[6] •मिलक्खूणि अणारियाणि दुस्सन्नप्पाणि दुप्पण्णवणिज्जाणि अकालपडिवोहीणि अकालपरि-भोईणि, सति लाढे विहाराए, सथरमाणेहि जणवएहि°, विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए, तओ सजयामेव गामाणुगाम दूइज्जेज्जा ।।

१० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे अतरा से अरायाणि वा, गणरायाणि वा, जुवरायाणि वा, दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा सति लाढे विहाराए, सथरमाणेहि जणवएहि, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्ज गमणाए ।।

११ केवली बूया आयाणमेय—ते ण वाला 'अय तेणे'[7] •'अय उवचरए' 'अय तओ आगए' त्ति कट्टु त भिक्खु अक्कोसेज्ज वा, वधेज्ज वा, रुभेज्ज वा, उद्दवेज्ज वा। वत्थ पडिग्गह कवल पायपुछण अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभ-वेज्ज वा।

अह भिक्खूण पुव्वोवदिट्ठा—एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारण, एस उवएसो, ज णो तहप्पगाराणि अरायाणि वा, गणरायाणि वा, जुवरायाणि वा, दोर-ज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा सति लाढे विहाराए, सथर-माणेहि जणवएहि, विहार-वत्तियाए पवज्जेज्ज° गमणाए, तओ सजयामेव गामाणुगाम दूइज्जेज्जा ।।

१२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे अतरा से विह सिया। सेज्ज पुण विह जाणेज्जा—एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण

---

१ स० पा०—अक्कोसेज्ज वा जाव उद्दवेज्ज।
२ उवद्दवेज्ज (अ, क, च, व)।
३ अच्छिदेज्ज वा भिदेज्ज वा (च, छ, व), अच्छिदेज्ज वा अभिदेज्ज वा (अ)।
४, परिट्ठवेज्ज (घ, च, व)।
५ स० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव ज।
६ स० पा०—दस्सुगायतणाणि जाव विहार-वत्तियाए।
७ स० पा०—अय तेणे त चेव जाव गमणाए।

वा, पचाहेण वा पाउणेज्ज वा, नो पाउणज्ज वा। तहप्पगारं विहं अणेगाह-गमणिज्जं, संति लाढे[1] •विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं°, णो विहार-वत्ति-याए पवज्जेज्जा गमणाए ॥

१३ केवली बूया आयाणमेयं—अंतरा से वासे सिया पाणेसु वा, पणएसु वा, बीएसु वा, हरिएसु वा, उदएसु वा, मट्टियासु[2] वा अविद्धत्थाए।
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[3] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं तहप्पगारं विहं अणेगाह-गमणिज्जं[4], •संति लाढे विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा° गमणाए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

नावा-विहार-पद

१४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे[5] अंतरा से णावासंतारिमे उदए सिया। सेज्जं पुण णावं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए किणेज्ज वा, पामिच्चेज्ज वा, णावाए वा णाव[6]-परिणामं कट्टु थलाओ वा णावं जलंसि ओगाहेज्जा, जलाओ वा णावं थलंसि उक्कसेज्जा, पुण्णं वा णावं उस्सिंचेज्जा, सण्णं वा णावं उप्पीलावेज्जा। तहप्पगारं णावं उड्ढगामिणिं वा, अहेगामिणिं वा, तिरियगामिणिं वा, परं जोयणमेराए अद्धजोयणमेराए वा अप्पतरो वा भुज्जतरो वा णो दुरुहेज्ज गमणाए ॥

१५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुव्वामेव तिरिच्छ-संपातिमं णावं जाणेज्जा, जाणेत्ता से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता भंडगं पडिलेहेज्जा[7], पडिलेहेत्ता एगाभोयं[8] भंडगं करेज्जा, करेत्ता ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जेज्जा, पमज्जेत्ता सागारं भत्तं पच्चक्खाएज्जा, पच्चक्खाएत्ता एगं पायं जले किच्चा, एगं पायं थले किच्चा, तओ संजयामेव णावं दुरुहेज्जा ॥

१६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णावं दुरूहमाणे णो णावाए पुरओ दुरुहेज्जा, णो णावाए मग्गओ दुरुहेज्जा, णो णावाए मज्झतो दुरुहेज्जा, णो बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय, अंगुलिए[9] उवदंसिय-उवदंसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय णिज्झाएज्जा ॥

---

१ सं० पा०—लाढे जाव णो।
२ मट्टिएसु (क, च), मट्टियाएसु (घ, छ)।
३ सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।
४ सं० पा०—अणेगाहगमणिज्जं जाव गमणाए।
५ दूइज्जेज्जा (क, घ, च, छ, व)।
६ णाव (क, घ, च, छ, व)।
७ पडिगाहेज्जा (घ, छ, व)।
८ °भायं (अ), °भोयणं (छ)।
९ अंगुलियाए (च, छ, व)।

१७ से ण परो णावा-गतो णावा-गय वएज्जा —आउसतो ! समणा ! एय ता[1] तुम णाव उक्कसाहि वा, वोक्कसाहि वा, खिवाहि वा, रज्जुयाए[2] वा गहाय आकसाहि। णो से त परिण्ण परिजाणेज्जा[3], तुसिणीओ उवेहेज्जा ॥

१८ से ण परो णावा-गओ णावा-गय वएज्जा—आउसतो ! समणा ! णो सचाएसि तुम णाव उक्कसित्तए वा, वोक्कसित्तए वा, खिवित्तए वा, रज्जुयाए वा गहाय आकसित्तए। आहर एत णावाए रज्जूय, सय चेव ण वय णाव उक्कसिस्सामो वा, वोक्कसिस्सामो वा, खिविस्सामो वा, रज्जुयाए[4] वा गहाय आकसिस्सामो। णो से त परिण्ण परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ॥

१९ से ण परो णावा-गओ णावा-गय वएज्जा—आउसतो ! समणा ! एय ता[5] तुम णाव अलित्तेण[6] वा, पिहएण[7] वा, वसेण वा, वलएण वा, अवल्लएण[8] वा वाहेहि। णो से त परिण्ण परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ॥

२० से ण परो णावा-गओ णावा-गय वदेज्जा—आउसतो ! समणा ! एय ता तुम णावाए उदय हत्थेण वा, पाएण वा, मत्तेण वा, पडिग्गहेण वा, णावा-उस्सिचणेण वा उस्सिचाहि। णो से त परिण्ण परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ॥

२१ से ण परो णावा-गओ णावा-गय वएज्जा—आउसतो ! समणा ! एत ता तुम णावाए उत्तिग हत्थेण वा, पाएण वा, बाहुणा वा, ऊरुणा[9] वा, उदरेण वा, सीसेण वा, काएण वा, णावा-उस्सिचणेण वा, चेलेण वा, 'मट्टियाए वा, कुसपत्तएण वा'[10], कुविदेण[11] वा पिहेहि। णो से त परिण्ण परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ॥

२२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णावाए उत्तिगेण उदय आसवमाण पेहाए, उवरुवरि[12] णाव कज्जलावेमाण पेहाए णो पर उवसकमित्तु एव बूया—आउसतो ! गाहावइ ! एय ते णावाए उदय उत्तिगेण आसवति, उवरुवरि वा णावा कज्जलावेति। एतप्पगार मण वा वाय वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा, अप्पुस्सुए

---

१ × (अ, छ)।
२ रज्जूए (अ, क, घ, ब)।
३ जाणेज्जा (घ, ब)।
४ रज्जूए (च)।
५ × (छ)।
६ आलित्तेण (अ, क, घ, च, छ, ब)।
७ पीढेण (अ, क, घ, च, छ, ब)। अय पाठो निशीथस्य तथा अप्रयुक्ताचाराङ्गादर्शस्या-नुसारेण स्वीकृत।
८ अवल्लेण (च)।
९ उरुणा (घ, च, छ, ब)।
१० निशीथ-चूर्णि, भाग ४, पृष्ठ २०९ 'मट्टियाए वा कुसपत्तेण वा' इत्यस्य स्थाने 'कुसमट्टियाए वा' इति पाठोऽस्ति।
११ कुरुविदेण (अ, क, घ, च, छ, ब)। अय पाठो निशीथस्य तथा अप्रयुक्ताचाराङ्गादर्शस्यानुसारेण स्वीकृत।
१२ उवरुवरि (घ)।

अवहिलेस्से एगतगएण अप्पाण वियोसेज्ज[1] समाहीए, तओ सजयामेव णावा-सतारिमे उदए अहारिय रीएज्जा ॥

२३ एय खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय, ज सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सदा जएज्जासि ।

—त्ति वेमि ॥

बीओ उद्देसो

नावा-विहार-पद

२४ से ण परो णावा-गओ णावा-गय वदेज्जा—आउसतो ! समणा ! एय ता तुम छत्तग वा[2], •मत्तग वा, दडग वा, लट्ठिय वा, भिसिय वा, नालिय वा, चेल वा, चिलिमिलि वा, चम्मगं वा, चम्म-कोसग वा°, चम्म-छेयणग वा गेण्हाहि, एयाणि तुम विरूवरूवाणि सत्थ-जायाणि धारेहि, एय ता तुम दारग वा 'दारिग वा'[3] पज्जेहि । णो से त परिण्ण परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ॥

२५ से ण परो णावा-गए णावा-गय वदेज्जा—आउसतो ! एस ण समणे णावाए भडभारिए भवइ । से ण वाहाए गहाय णावाओ उदगसि पक्खिवह[4] । एतप्प-गार णिग्घोस सोच्चा णिसम्म से य चीवरधारी सिया, खिप्पामेव चीवराणि उव्वेढिज्ज वा, णिव्वेढिज्ज वा, उप्फेस वा करेज्जा ॥

२६ अह पुणेव जाणेज्जा—अभिक्कत-कूरकम्मा खलु बाला वाहाहिं गहाय नावाओ उदगसि पक्खिवेज्जा ।

से पुव्वामेव वएज्जा—आउसतो ! गाहावइ ! मा मेत्तो वाहाए गहाय णावाओ उदगसि पक्खिवह, सय चेव ण अह णावातो उदगसि ओगाहिस्सामि ।

से णेव वयत परो सहसा बलसा वाहाहिं गहाय णावाओ उदगसि पक्खिवेज्जा, त णो सुमणे सिया, णो दुम्मणे[5] सिया, णो उच्चावय मण णियच्छेज्जा, णो तेसि वालाण घाताए वहाए समुट्ठेज्जा, अप्पुस्सुए[6] •अवहिलेस्से एगतगएण अप्पाण वियोसेज्ज° समाहीए, तओ सजयामेव उदगसि पवेज्जा ॥

२७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगसि पवमाणे णो हत्थेण हत्थ, पाएण पाय, काएण काय, आसाएज्जा । 'से अणासायमाणे'[7] तओ सजयामेव उदगसि पवेज्जा ॥

---

१. विउसज्ज (क) ।
२ स० पा०—छत्तग वा जाव चम्मछेयणग ।
३ × (क, घ, च) ।
४ पक्खिवेज्जा (क, ग, च, छ, व) ।
५ दुमणे (घ, छ, व) ।
६ सं० पा०—अप्पुस्सुए जाव समाहीए ।
७ से अणासादए अणा° (अ) ।

२८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे णो उम्मग्ग[1]-णिमग्गियं[2] करेज्जा। मामेयं उदगं कण्णेसु वा, अच्छीसु वा, णक्कंसि वा, मुहंसि वा परियावज्जेज्जा, तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा॥

२९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे दोब्बलियं पाउणेज्जा। खिप्पामेव उवहिं विगिंचेज्ज वा, विसोहेज्ज वा, णो चेव णं सातिज्जेज्जा[3]॥

३० अह पुणेवं जाणेज्जा—पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए तओ संजयामेव उदउल्लेण वा, ससिणिद्धेण वा काएण उदगतीरे चिट्ठेज्जा॥

३१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा ससिणिद्धं वा कायं णो आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा, संलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उव्वट्टेज्ज वा, आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा॥

३२ अह पुण एवं जाणेज्जा—विगओदए मे काए, वोच्छिन्नसिणेहे[4] मे काए। तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज वा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा॥

३३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो परेहिं सद्धिं परिजविय-परिजविय गामाणुगामं दूइज्जेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा॥

जंघासंतारिम-उदग-पदं

३४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से जंघासंतारिमे उदए सिया। से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पादे य पमज्जेज्जा, पमज्जेत्ता[5] •सागारं भत्तं पच्चक्खाएज्जा, पच्चक्खाएत्ता॰ एगं पायं जले किच्चा, एगं पायं थले किच्चा, तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए[6] अहारियं रीएज्जा॥

३५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जंघासंतारिमे उदगे अहारियं रीयमाणे, णो 'हत्थेण हत्थं'[7] पाएण पायं, काएण कायं, आसाएज्जा। 'से अणासायमाणे'[8] तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा॥

३६ से भिक्खु वा भिक्खुणी वा जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीयमाणे णो साय[9]-वडियाए, णो परदाह-वडियाए, महइमहालयंसि उदगंसि कायं विउसेज्जा, तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा॥

---

१ उम्मुग्ग (घ, च, व)।
२ णिम्मुग्गियं (घ, च)।
३ सातिज्जेज्ज वा (छ)।
४ छिन्न॰ (क, घ, च व)।
५ स॰ पा॰—पमज्जेत्ता जाव एगं।
६ उदगंसि (क, घ, च)।
७ हत्थेण वा हत्थं (अ) (सर्वत्र)।
८ से अणासादए अणा॰ (अ)।
९ साया (अ)।

३७ अह पुणेव जाणेज्जा—पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए, तओ संजयामेव उदउल्लेण वा ससणिद्धेण[1] वा काएण दगतीरए[2] चिट्ठेज्जा ॥

३८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा कायं, ससणिद्धं वा कायं णो आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा ॥

३९ अह पुणेव जाणेज्जा—विगतोदए मे काए, छिण्णसिणेहे मे काए, तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा[3] °पमज्जेज्ज वा संलिहेज्ज वा णिल्लिहेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा आयावेज्ज वा° पयावेज्ज वा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

४० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो मट्टियामएहिं पाएहिं हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, विकुज्जिय-विकुज्जिय, विफालिय-विफालिय, उम्मग्गेण हरिय-वहाए गच्छेज्जा। "जहेयं[4] पाएहिं मट्टियं खिप्पामेव हरियाणि अवहरंतु"। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा।
से पुव्वामेव अप्पहरियं मग्गं पडिलेहेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

विसमट्ठाण-परक्कम-पद

४१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि वा, तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गल-पासगाणि वा, गड्डाओ वा, दरीओ वा। सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ॥

४२ केवली बूया आयाणमेयं से तत्थ परक्कममाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा। से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा रुक्खाणि वा, गुच्छाणि वा, गुम्माणि वा, लयाओ वा, वल्लीओ वा, तणाणि वा गहणाणि वा, हरियाणि वा, अवलंबिय-अवलंबिय उत्तरेज्जा[5], जे तत्थ पाडिपहिया[6] उवागच्छंति, ते पाणी जाएज्जा, तओ संजयामेव अवलंबिय-अवलंबिय उत्तरेज्जा[7], तओ गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

४३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से जवसाणि वा, सगडाणि वा, रहाणि वा, सचक्काणि वा, परचक्काणि वा, सेणं वा विरूवरूवं संणिविट्ठं[8] पेहाए, सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ॥

---

१ सक्षिणिद्धेण (च)।
२ उदगतीरए (घ)।
३ सं० पा०—आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज।
४ जमेतं (छ)।
५. उत्तारेज्जा (अ)।
६ पाडिवधेया (क), पाडिवाहेया (घ), पाडि-पहिया (छ)।
७ उत्तारेज्जा (अ)।
८. संणिरुद्ध (व)।

अभिणिचारिय-पदं

४४ से ण परो सेणागओ वएज्जा—आउसतो ! एस ण समणे सेणाए अभिणिचारिय[1] करेइ। से ण वाहाए गहाय श्रागसह। से ण परो वाहाहि गहाय आगसेज्जा। त णो सुमणे सिया[2], •णो दुम्मणे सिया, णो उच्चावय मण णियच्छेज्जा, णो तेसिं वालाण घाताए वहाए समुट्ठेज्जा। अप्पुस्सुए अवहिलेस्से एगतगएण अप्पाण वियोसेज्ज° समाहीए, तओ सजयामेव गामाणुगाम दूइज्जेज्जा ॥

पाडिपहिय-पद

४५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा। तेण पाडिपहिया एव वदेज्जा—आउसतो ! समणा ! केवइए एस गामे वा[3], •णगरे वा, खेडे वा, कव्वडे वा, मडवे वा, पट्टणे वा, दोणमुहे वा, आगरे वा, णिगमे वा, आसमे वा, सण्णिवेसे वा°, रायहाणी वा ? केवइया एत्थ आसा हत्थी गामपिंडोलगा मणुस्सा परिवसति ?
से वहुभत्ते वहुउदए वहुजणे वहुजवसे ? से अप्पभत्ते अप्पुदए अप्पजणे अप्पजवसे ? 'एयप्पगाराणि पसिणाणि पुट्ठो नो आइक्खेज्जा, एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा'[4] ॥

४६ एव खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय[5], •ज सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि।

—त्ति वेमि° ॥

तइओ उद्देसो

अंगचेट्ठापुव्व निज्झाण-पद

४७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे अतरा से वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि वा[6], •तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गल-पासगाणि वा, गड्डाओ वा°, दरीओ वा, कूडागाराणि वा, पासादाणि वा, णूम-गिहाणि वा, रुक्ख-गिहाणि वा, पव्वय-गिहाणि वा, रुक्ख वा चेइय-कड, थूभ वा चेइय-कड, आएसणाणि वा[7], •आयतणाणि वा, देवकुलाणि वा, सहाओ वा, पवाओ

---

१ अभिणिवारिय (अ, क, घ, च, व)।
२ स० पा०—सिया जाव समाहीए।
३ स० पा०—गामे वा जाव रायहाणी।
४, × (व), एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा एयप्पगाराणि पसिणाणि पुट्ठो वा अपुट्ठो वा णो वागरेज्जा (क, च, छ), एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा एय पुट्ठो वा अपुट्ठो वा णो वागरेज्जा (घ)।
५ स० पा०—सामग्गिय।
६ स० पा०—पागाराणि वा जाव दरीओ।
७ स० पा०—आएसणाणि वा जाव भवण-गिहाणि।

वा, पणिय-गिहाणि वा, पणिय-सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा, सुहा-कम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, वद्ध-कम्मंताणि वा, वक्क-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि वा, कट्ठ-कम्मंताणि वा, सुसाण-कम्मंताणि वा, संति-कम्मंताणि वा, गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर-कम्मंताणि वा, सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा°, भवणगिहाणि वा णो बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय, अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय णिज्झाएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

४८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से कच्छाणि वा दवियाणि वा, णूमाणि वा, वलयाणि वा, गहणाणि वा, गहण-विदुग्गाणि वा, वणाणि वा, वण-विदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वय-विदुग्गाणि वा, अगडाणि वा, तलागाणि वा, दहाणि वा, णदीओ वा, वावीओ वा, पोक्खरिणीओ वा, दीहियाओ वा, गुंजालियाओ वा, सराणि वा, सर-पंतियाणि वा, सर-सर-पंतियाणि वा णो बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[1], °अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय, णिज्झाएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा° ॥

४९ केवली बूया आयाणमेयं—जे तत्थ मिगा वा, पसुया[2] वा, पक्खी वा सरीसिवा[3] वा, सीहा वा, जलचरा वा, थलचरा वा, खहचरा वा सत्ता, ते उत्तसेज्ज वा, वित्तसेज्ज वा, वाडं वा सरणं वा कंखेज्जा। चारे त्ति मे अयं समणे।
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[4] °एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं णो बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[5], °अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय°, णिज्झाएज्जा, तओ संजयामेव आयरिय-उवज्झाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

आयरिय-उवज्झाय-सद्धिं-विहार-पदं

५० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आयरिय-उवज्झाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो आयरिय-उवज्झायस्स हत्थेण हत्थं[6], °पाएण पायं, काएण कायं आसाएज्जा। से° अणासायमाणे तओ संजयामेव आयरिय-उवज्झाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

५१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आयरिय-उवज्झाएहिं सद्धिं दूइज्जमाणे अंतरा से

---

१ स० पा०—पगिज्झिय जाव णिज्झाएज्जा।
२ पसू (अ)।
३ सिरीसिवा (अ, घ, च)।
४ स० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।
५ स० पा०—पगिज्झिय जाव णिज्झाएज्जा।
६ स० पा०—हत्थं जाव अणासायमाणे।

पाडिपहिया उवागच्छेज्जा, ते ण पाडिपहिया एव वएज्जा—आउसतो ! समणा ! के तुब्भे ? कओ वा एह ? कहिं वा गच्छिहिह ?
जे तत्थ आयरिए वा उवज्झाए वा से भासेज्ज वा, वियागरेज्जा वा। आयरिय-उवज्झायस्स भासमाणस्स वा, वियागरेमाणस्स वा णो अतराभास करेज्जा, तओ सजयामेव आहारातिणिए[1] दूइज्जेज्जा ॥

आहारातिणिय-सद्धि-विहार-पद

५२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आहारातिणिय गामाणुगाम दूइज्जमाणे णो रातिणियस्स हत्थेण हत्थ[2], °पाएण पाय, काएण काय आसाएज्जा। से° अणासायमाणे तओ सजयामेव आहारातिणिय गामाणुगाम दूइज्जेज्जा ॥

५३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आहारातिणिय दूइज्जमाणे अतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा। ते ण पाडिपहिया एव वदेज्जा—आउसतो ! समणा ! के तुब्भे ? कओ वा एह ? कहिं वा गच्छिहिह ?
जे तत्थ सव्वरातिणिए[3] से भासेज्ज वा, वियागरेज्ज वा। रातिणियस्स भासमाणस्स वा, वियागरेमाणस्स वा णो अतराभास भासेज्जा, तओ सजयामेव गामाणुगाम दूइज्जेज्जा ॥

पाडिपहिय-पद

५४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे अतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा[4]। ते ण पाडिपहिया एव वदेज्जा—आउसतो ! समणा ! अवियाइ एत्तो पडिपहे पासह, त जहा—मणुस्स वा, गोण वा, महिस वा, पसु वा, पक्खि वा, सरीसिव[5] वा, जलयर वा ? से आइक्खह, दसेह। त णो आइक्खेज्जा, णो दसेज्जा, णो तेसि[6] त परिण्ण परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाण वा णो जाणति वएज्जा, तओ सजयामेव गामाणुगाम दूइज्जेज्जा ॥

५५ से भिक्खू वा भिक्खुणो वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे अतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा[7]। ते ण पाडिपहिया एव वएज्जा—आउसतो ! समणा ! अवियाइ एत्तो पडिपहे पासह—उदगपसूयाणि कदाणि वा मूलाणि वा, 'तयाणि वा पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा'[8], उदग वा

---

१ °राइणियाए (अ, ब), अहा° (घ, च)।
२ स० पा०—हत्थ जाव अणासायमाणे।
३ रातिणिए (घ)।
४ आगच्छेज्जा (अ, च, छ)।
५ सिरीसिव (अ, छ, ब), सिरीसव (च)।
६ तस्स (क, च, छ)।
७ आगच्छेज्जा (अ, छ)।
८ तया पत्ता पुप्फा फला बीया हरिया (अ, क, घ, च, छ, ब)।

सणिहिय, अगणिं वा सणिक्खित्तं ? से आइक्खह[1], •दसेह । त णो आइक्खेज्जा, णो दसेज्जा, णो तेसिं त परिण्ण परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाण वा णो जाणति वएज्जा, तओ सजयामेव गामाणुगाम° दूइज्जेज्जा ॥

५६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे अतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । ते ण पाडिपहिया एव वएज्जा—आउसतो ! समणा ! अवियाइ एत्तो पडिपहे पासह-जवसाणि वा[2], •सगडाणि वा, रहाणि वा, सचक्काणि वा, परचक्काणि वा°, सेण वा विरूवरूव सणिविट्ठ ? से आइक्खह, दसेह । त णो आइक्खेज्जा, णो दसेज्जा, णो तेसिं त परिण्ण परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाण वा णो जाणति वएज्जा, तओ सजयामेव गामाणुगाम दूइज्जेज्जा ॥

५७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे अतरा से पाडिपहिया[3] •उवागच्छेज्जा । तेण पाडिपहिया एव वदेज्जा°—आउसतो ! समणा ! केवइए एत्तो गामे वा[4], •णगरे वा, खेडे वा, कव्वडे वा मडवे वा, पट्टणे वा, दोणमुहे वा, आगरे वा, णिगमे वा, आसमे वा, सण्णिवेसे वा°, रायहाणी वा ? से आइक्खह, दसेह । त णो आइक्खेज्जा, णो दसेज्जा, णो तेसिं त परिण्ण परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाण वा णो जाणति वएज्जा, तओ सजयामेव गामाणुगाम दूइज्जेज्जा ॥

५८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे अतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । ते ण पाडिपहिया एव वदेज्जा—आउसतो ! समणा ! केवइए एत्तो गामस्स वा, णगरस्स वा[5], •खेडस्स वा, कव्वडस्स वा, मडवस्स वा, पट्टणस्स वा, दोणमुहस्स वा, आगरस्स वा, णिगमस्स वा, आसमस्स वा, सण्णिवेसस्स वा° रायहाणीए वा मग्गे ? से आइक्खह, दसेह । त णो आइक्खेज्जा, णो दसेज्जा, णो तेसिं त परिण्ण परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाण वा णो जाणति वएज्जा, तओ सजयामेव गामाणुगाण दूइज्जेज्जा ॥

वियाल-पद

५९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाण दूइज्जमाणे अतरा से गोण वियाल पडिपहे पेहाए[6], •महिस वियाल पडिपहे पेहाए, एव—मणुस्स, आस, हत्थि, सीह, वग्घ, विग, दीविय, अच्छ, तरच्छ, परिसर, सियाल, विराल, सुणय,

---

१ स० पा०—आइक्खह जाव दूइज्जेज्जा ।
२ स० पा०—जवसाणि वा जाव सेण ।
३. स० पा०—पाडिपहिया जाव आउसतो ।
४ स० पा०—गामे वा जाव रायहाणी ।
५ स० पा०—णगरस्स वा जाव रायहाणीए ।
६ स० पा०—पेहाए जाव चित्ताचिल्लड ।

कोल-सुणय, कोकतिय,° चित्ताचिल्लड—वियाल पडिपहे पेहाए, णो तेसिं भीओ उम्मग्गेण गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्ग सकमेज्जा, णो गहण वा, वण वा, दुग्ग वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयसि उदयसि काय विउसेज्जा, णो वाड वा, सरण वा, सेण वा, सत्थ वा कखेज्जा, अप्पुस्सुए[1] •अवहिलेस्से एगतएण अप्पाण वियोसेज्ज° समाहीए, तओ सजयामेव गामाणुगाम दूइज्जेज्जा ॥

आमोसग-पद

६० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे अतरा से विह सिया। सेज्ज पुण विह जाणेज्जा—इमसि खलु विहसि वहवे आमोसगा उवगरण-पडियाए सपिडिया गच्छेज्जा, णो तेसिं भीओ उम्मग्गेण गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्ग सकमेज्जा, णो गहण वा, वण वा, दुग्ग वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयसि उदयसि काय विउसेज्जा, णो वाड वा, सरण वा, सेण वा, सत्थ वा कखेज्जा, अप्पुस्सुए अवहिलेस्से एगतगएण अप्पाण वियोसेज्ज समाहीए, तओ सजयामेव गामाणुगाम दूइज्जेजा ॥

६१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे अतरा से आमोसगा सपिडिया गच्छेज्जा। ते ण आमोसगा एव वदेज्जा—आउसतो! समणा! 'आहर एय'[2] वत्थ वा, पाय वा, कवल वा, पायपुछण वा—देहि, णिक्खिवाहि। त णो देज्जा, णो णिक्खिवेज्जा, णो वदिय-वदिय जाएज्जा, णो अजलिं कट्टु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवेहेज्जा।

त ण आमोसगा 'सय करणिज्ज'[3] ति कट्टु अक्कोसति वा[4], •वधति वा, रुभति वा°, उद्दवति वा। वत्थ वा, पाय वा, कवल वा, पायपुछण वा अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज[5] वा। त णो गामससारिय कुज्जा, णो रायससारिय कुज्जा, णो पर उवसकमित्तु बूया—आउसतो! गाहावइ! एए खलु आमोसगा उवगरण-पडियाए सय करणिज्ज ति कट्टु अक्कोसति वा जाव परिभवेंति[6] वा। एयप्पगार मण वा वइ[7] वा णो पुरओ कट्टु, विहरेज्जा,

---

१ स० पा०—अप्पुस्सुए जाव समाहीए।
२ आहार एव (छ), आहर एत्थ (अ,क,व)।
३ सय करणिज्जा करणिज्ज (च)।
४ स० पा०—अक्कोसति वा जाव उद्दवति।
५ परिट्ठ° (अ, क, घ, च, छ, व)।
६ परिट्ठ° (अ, क, घ, च, छ, व)।
७ वाय (च), वय (छ, ग)।

अप्पुस्सुए[1] °अवहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज° समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

६२ एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिते सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

---

१. स० पा०—अप्पुस्सुए जाव समाहीए।

चउत्थं अज्झयणं

भासज्जातं

पढमो उद्देसो

वइ-अणायार-पदं

१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इमाइं वइ-आयाराइं सोच्चा णिसम्म इमाइं अणा-यारांइं अणायरियपुव्वाइं जाणेज्जा—जे कोहा वा वायं विउंजंति, जे माणा वा वायं विउंजंति, जे मायाए वा वायं विउंजंति, जे लोभा वा वायं विउंजंति, जाणओ वा फरुसं वयंति, अजाणओ वा फरुसं वयंति, सव्वमेयं[1] सावज्जं वज्जेज्जा विवेगमायाए ॥

२ धुवं चेयं जाणेज्जा, अधुवं चेयं जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा लभिय णो लभिय, भुंजिय णो भुंजिय, अदुवा आगए अदुवा णो आगए, अदुवा एइ अदुवा णो एइ, अदुवा एहिति अदुवा णो एहिति, एत्थवि आगए एत्थवि णो आगए, एत्थवि एइ एत्थवि णो एइ, एत्थवि एहिति एत्थवि णो एहिति ॥

सोडस-वयण-पदं

३ अणुवीइ[2] णिट्ठाभासी, समियाए संजए भासं भासेज्जा, तं जहा—एगवयणं, दुवयणं, बहुवयणं, इत्थीवयणं[3], पुरिसवयणं, णपुंसगवयणं, अज्झत्थवयणं, उवणीयवयणं, अवणीयवयणं, उवणीय-अवणीयवयणं, अवणीय-उवणीयवयणं तीयवयणं, पडुप्पन्नवयणं, अणागयवयणं, पच्चक्खवयणं, परोक्खवयणं ॥

---

१ सव्वं वेयं (क, च, ब), सव्वं चेयं (घ) ।
२ अणुवीय (छ) ।
३ इत्थि॰ (अ) ।

४ से १ एगवयणं वदिस्सामीति एगवयणं वएज्जा[1], २ °दुवयणं वदिस्सामीति दुवयणं वएज्जा, ३ बहुवयणं वदिस्सामीति बहुवयणं वएज्जा, ४ इत्थीवयणं वदिस्सामीति इत्थीवयणं वएज्जा, ५ पुरिसवयणं वदिस्सामीति पुरिसवयणं वएज्जा, ६ णपुंसगवयणं वदिस्सामीति णपुंसगवयणं वएज्जा, ७ अज्झत्थ-वयणं वदिस्सामीति अज्झत्थवयणं वएज्जा, ८ उवणीयवयणं वदिस्सामीति उवणीयवयणं वएज्जा, ९ अवणीयवयणं वदिस्सामीति अवणीयवयणं वएज्जा, १० उवणीय-अवणीयवयणं वदिस्सामीति उवणीय-अवणीयवयणं वएज्जा, ११ अवणीय-उवणीयवयणं वदिस्सामीति अवणीय-उवणीयवयणं वएज्जा, १२ तीयवयणं वदिस्सामीति तीयवयणं वएज्जा, १३ पडुप्पन्नवयणं वदिस्सामीति पडुप्पन्नवयणं वएज्जा, १४ अणागयवयणं वदिस्सामीति अणागयवयणं वएज्जा, १५ पच्चक्खवयणं वदिस्सामीति पच्चक्खवयणं वएज्जा°, १६ परोक्खवयणं वदिस्सामीति परोक्खवयणं वएज्जा ॥

अणुवीइ णिट्ठाभासि-पदं

५ 'इत्थी वेस, पुरिस वेस, णपुंसगं वेस'[2], एवं[3] वा चेयं, अण्णं[4] वा चेयं अणुवीइ णिट्ठाभासी समियाए संजए भासं भासेज्जा, इच्चेयाइं आयतणाइं उवातिकम्म ॥

भासज्जात-पदं

६ अह भिक्खू जाणेज्जा चत्तारि भासज्जायाइं, तं जहा—सच्चमेगं[5] पढमं भासजायं, बीयं मोसं, तइयं सच्चामोसं, जं णेव सच्चं णेवमोसं णेव सच्चामोसं—असच्चामोसं णाम तं चउत्थं भासज्जातं ॥

७ से बेमि—जे अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य अणागया अरहंता भगवंतो सव्वे ते एयाणि चेव चत्तारि भासज्जायाइं भासिंसु वा, भासंति वा, भासिस्संति वा, पण्णविंसु वा, पण्णवेंति वा, पण्णविस्संति वा ॥

८ सव्वाइं च णं एयाणि अचित्ताणि वण्णमंताणि गंधमंताणि रसमंताणि फासमंताणि चयोवचइयाइं[6] विप्परिणामधम्माइं[7] भवंतीति अक्खायाइं[8] ॥

९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—पुव्वं भासा अभासा, भासिज्जमाणी भासा भासा, भासासमयविइक्कंता[9] भासिया भासा अभासा ॥

---

१ सं० पा०—वएज्जा जाव परोक्खवयणं ।
२ इत्थीवेद पुवेय णपुंसगवेय (घ, छ, व) ।
३ एयं (घ, छ) ।
४ अण्णहा (अ, च, छ, व) ।
५ °मेयं (अ, घ, छ), °मेतं (क) ।
६ चओवए (अ), चयोवचयाइं (छ), चयोवचयमंताणि (व) ।
७ विविहपरिणाम° (च, छ) ।
८ समक्खयाइं (अ) ।
९ °विइक्कंतं च णं (क, घ, च, छ) ।

सावज्ज-भासा-पदं

१० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण जाणेज्जा—जा य भासा सच्चा, जा य भासा मोसा, जा य भासा सच्चामोसा, जा य भासा असच्चामोसा, तहप्पगार भास सावज्ज सकिरिय कक्कस कडुय निट्ठुर फरुस अण्हयकरिं छेयणकरिं भेयणकरिं परितावणकरिं उद्दवणकरिं भूतोवघाइय अभिकख 'णो भासेज्जा'[1] ॥

असावज्ज-भासा-पद

११ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण जाणेज्जा—जा य भासा सच्चा सुहुमा, जा य भासा असच्चामोसा, तहप्पगार भास असावज्ज अकिरिय[2] °अकक्कस अकडुय अनिट्ठुर अफरुस अणण्हयकरिं अछेयणकरिं अभेयणकरिं अपरितावणकरिं अणुद्दवणकरिं° अभूतोवघाइय अभिकख[3] भासेज्जा ॥

आमतणी-भासा-पदं

१२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुम आमतेमाणे आमतिते वा अपडिसुणेमाणे णो एव वएज्जा—'होले ति वा, गोले ति वा'[4], वसुले ति वा, कुपक्खे ति वा घडदासे ति वा, साणे ति वा, तेणे ति वा, चारिए ति वा, माई ति वा, मुसावाई ति वा 'इच्चेयाइ तुम एयाइ'[5] ते जणगा वा—एतप्पगार[6] भास सावज्ज सकिरिय जाव भूतोवघाइय अभिकख नो भासेज्जा ॥

१३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुम आमतेमाणे आमतिए वा अपडिसुणेमाणे एव वएज्जा—अमुगे ति वा, आउसो ति वा, आउसतो[7] ति वा, सावगे ति वा, उपासगे ति वा, धम्मिए ति वा, धम्मपिये ति वा—एयप्पगार भास असावज्ज जाव अभूतोवघाइय अभिकख भासेज्जा ॥

१४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इत्थि आमतेमाणे आमतिए य अपडिसुणेमाणी नो एव वएज्जा—होले ति वा, गोले ति वा[8], °वसुले ति वा, कुपक्खे ति वा, घडदासी ति वा, साणे ति वा, तेणे ति वा, चारिए ति वा, माई ति वा, मुसावाई ति वा, इच्चेयाइ तुम एयाइ ते जणगा वा—एतप्पगार भास सावज्ज जाव भूतोवघाइय अभिकख णो भासेज्जा° ॥

---

१ णो भास भासेज्जा (अ, ब), भास णो भासेज्जा (घ)।
२ स० पा०—अकिरिय जाव अभूतोवघाइय।
३ अभिकख भास (अ, घ, छ)।
४ होले इ वा गोले इ वा (घ), होलि त्ति वा गोलि त्ति वा (छ)।
५ इतियाइ तुम इतियाइ (अ), एयाइ तुम° (क, च) एतिया तुम° (ब)।
६ तहप्पगार (छ)।
७ आउसतारो (क, घ, छ)।
८ स० पा०—गोले ति वा इत्थीगमेण णेतव्व।

१५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इत्थियं आमंतेमाणे आमंतिए य अपडिसुणेमाणी एवं वएज्जा—आउसो ति वा, 'भगिणी ति वा'[1], भगवई ति वा, साविगे ति वा, उवासिए ति वा, धम्मिए ति वा, धम्मपिये[2] ति वा—एतप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेज्जा ॥

विधि-निसिद्ध-भासा-पद

१६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो एवं वएज्जा—णभोदेवे[3] ति वा, गज्जदेवे[4] ति वा, विज्जुदेवे ति वा, पवुट्ठदेवे[5] ति वा, निवुट्ठदेवे ति वा, पडउ वा वासं मा वा पडउ, णिप्फज्जउ वा सस्सं[6] मा वा णिप्फज्जउ, विभाउ वा रयणी मा वा विभाउ, उदेउ वा सूरिए मा वा उदेउ, सो वा राया जयउ मा वा जयउ—णो एतप्पगारं भासं भासेज्जा पण्णवं ॥

१७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अंतलिक्खे ति वा, गुज्झाणुचरिए ति वा, संमुच्छिए ति वा, णिवइए[7] ति वा 'पओए, वएज्ज'[8] वा वुट्ठबलाहगे ति वा ॥

१८ एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

कक्कस-भासा-पद

१९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तं जहा—गंडी गंडी ति वा, कुट्ठी कुट्ठी ति वा,[9] °रायंसी रायंसी ति वा, अवमारियं अवमारिए ति वा, काणियं काणिए ति वा, झिमियं झिमिए ति वा, कुणियं कुणिए ति वा, खुज्जियं खुज्जिए ति वा, उदरी उदरी ति वा, मूयं मूए ति वा, सूणियं सूणिए ति वा, गिलासिणी गिलासिणी ति वा, वेवई वेवई ति वा, पीढसप्पी पीढसप्पी ति वा, सिलिवयं सिलिवए ति वा°, महुमेहणी महुमेहणी[10] ति वा, हत्थछिन्नं हत्थछिन्ने ति वा, [11]°पादछिन्नं पादछिन्ने ति वा, नक्कछिन्नं नक्कछिन्ने ति वा, कण्णछिन्नं कण्णछिन्ने ति वा, ओट्ठ-

---

१ भगिणि ति वा भोई ति वा (क, घ, च) ।
२ धम्मिणिए (क) ।
३ णभ देवे (घ) ।
४. गज्ज देवे (व) ।
५ पवुट्ठो° (अ) ।
६. सास (अ, व) ।
७ णिवडिए (च) ।
८ तओ एवं वदेज्जा (छ) ।
९ सं० पा०—कुट्ठी ति वा जाव महुमेहणी ।
१०. महुमेही (छ) ।
११. सं० पा०—एवं पादणक्ककण्णउट्ठच्छिन्नेति वा ।

छिन्न ० ओट्ठछिन्ने ति वा"[1] जे यावण्णे तहप्पगारे तहप्पगाराहिं[2] भासाहिं बुइया-बुइया[3] कुप्पति माणवा। ते यावि तहप्पगाराहिं भासाहिं अभिकंख णो भासेज्जा॥

अकक्कस-भासा-पद

२० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा तहावि ताइं एवं वएज्जा[4] तं जहा—ओयंसी ओयंसी ति वा, तेयंसी तेयंसी ति वा, वच्चंसी वच्चंसी ति वा, जसंसी जसंसी ति वा, अभिरूवं अभिरूवे ति वा, पडिरूवं पडिरूवे ति वा, पासाइयं पासाइए ति वा, दरिसणिज्जं दरिसणीए ति वा, जे यावण्णे तहप्पगारा तहप्पगाराहिं[5] भासाहिं बुइया-बुइया णो कुप्पंति माणवा। ते यावि तहप्पगारा एयप्पगाराहिं[6] भासाहिं अभिकंख भासेज्जा[7]॥

सावज्ज-असावज्ज-भासा-पद

२१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा, तं जहा—वप्पाणि वा[8], ॰फलिहाणि वा, पागाराणि वा, तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गल-पासगाणि वा, गड्डाओ वा, दरीओ वा, कूडागाराणि वा, पासादाणि वा, णूम-गिहाणि वा, रुक्ख-गिहाणि वा, पव्वय-गिहाणि वा, रुक्खं वा चेइय-कडं, थूभं वा चेइय-कडं, आएसणाणि वा, आयतणाणि वा, देवकुलाणि वा, सहाओ वा, पवाओ वा, पणिय-गिहाणि वा, पणिय-सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा, सुहा-कम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, वद्ध-कम्मंताणि वा, वक्क-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि वा, कट्ठ-कम्मंताणि वा, सुसाण-कम्मंताणि वा, संति-कम्मंताणि वा, गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर-कम्मंताणि वा, सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा, ॰ भवणगिहाणि वा—तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तं जहा—सुकडे ति वा, सुट्ठुकडे ति वा, 'साहुकडे ति वा, कल्लाणे ति वा"[9], करणिज्जे ति वा—एयप्पगारं भासं सावज्जं[10] ॰सकिरियं कक्कसं कडुयं निट्ठुरं फरुसं अण्हयकरिं छेयणकरिं भेयणकरिं परितावणकरिं उद्दवणकरिं भूतोवघाइयं अभिकंख ॰ णो भासेज्जा॥

२२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा, तं जहा—

---

१ एवं पाद नक्क कण्ण ओट्ठ ० (अ), एवं पाद कण्ण नक्क ० (छ, ब)।

२ एयप्प ० (क, छ)।

३. × (अ)।

४ भासेज्जा (छ)।

५ एयप्प ० (अ, घ, च)।

६ पूर्वं सूत्रे 'तहप्पगाराहिं' विद्यते, किन्तु अत्र प्रतिषु तथा नास्ति।

७ भासेज्जा। तहप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासेज्जा (अ, ब)।

८ स० पा०—वप्पाणि वा जाव भवणगिहाणि।

९ साहुकल्लाणं ति वा (अ, छ)।

१० स० पा०—सावज्जं जाव णो।

वप्पाणि वा जाव भवणगिहाणि वा—तहावि ताइ एव वएज्जा, त जहा—आरभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकड ति वा, पासादिय पासादिए ति वा, दरिसणीय दरिसणीए ति वा, अभिरूव अभिरूवे ति वा, पडिरूव पडिरूवे ति वा- एयप्पगार भास असावज्ज[1] •अकिरिय अकक्कस अकडुय अनिट्ठुर अफरुस अणण्हयकरि अछेयणकरि अभेयणकरि अपरितावणकरि अणुद्दवणकरि अभूतोवघाइय अभिकख° भासेज्जा ॥

२३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा उवक्खडिय पेहाए तहावि[2] त णो एव वएज्जा, त जहा—सुकडे ति वा, सुट्ठुकडे ति वा, साहुकडे ति वा, कल्लाणे ति वा, करणिज्जे ति वा—एयप्पगार भास सावज्ज जाव भूतोवघाइय अभिकख णो भासेज्जा ॥

२४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा उवक्खडिय पेहाए एव वएज्जा, त जहा—आरभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा, भद्दय भद्दए ति वा, ऊसढ ऊसढे ति वा, रसिय रसिए ति वा, मणुण्ण मणुण्णे ति वा—एयप्पगार[3] भास असावज्ज जाव अभूतोवघाइय अभिकख भासेज्जा ॥

२५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्स[4] वा, गोण वा, महिस वा, मिग वा, पसु वा, पक्खि वा, सरीसिव वा, जलयर वा, से त्त[5] परिवूढकाय पेहाए णो एव वएज्जा—थूले[6] ति वा, पमेइले ति वा, वट्टे ति वा, वज्झे ति वा, पाइमे ति वा—एयप्पगार भास सावज्ज जाव भूतोवघाइय अभिकख णो भासेज्जा ॥

२६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्स[7] •वा, गोण वा, महिस वा, मिग वा, पसु वा, पक्खि वा, सरीसिव वा°, जलयर वा, से त्त परिवूढकाय पेहाए एव वएज्जा, त जहा—परिवूढकाए ति वा, उवचियकाए ति वा, थिरसघयणे ति वा, चियमससोणिए ति वा, बहुपडिपुण्णइदिए ति वा—एयप्पगार भास असावज्ज जाव अभूतोवघाइय अभिकख भासेजा ॥

२७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा विरूवरूवाओ गाओ पेहाए णो एव वएज्जा, त जहा—गाओ दोज्झाओ[8] ति वा, दम्मे[9] ति वा, गोरहे[10] ति वा, 'वाहिमा ति वा

---

१ स० पा०—असावज्ज जाव भासेज्जा ।
२ तहाविह (घ, व) ।
३ तहप्प° (अ, च) ।
४ माणुस्स (घ, छ) ।
५ त (छ) ।
६ थुल्ले (अ, क, च, छ) ।
७ स० पा०—मणुस्स जाव जलयर ।
८ दोज्झा (अ, क, च, छ, व) ।
९ दम्मा (अ, च, व) ।
१० गोरहा (अ, च व) ।

रहजोग्गाति वा"—एयप्पगार भास सावज्ज जाव भूतोवघाइय अभिकख णो भासेज्जा ॥

२८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा विरूवरूवाओ गाओ पेहाए एव वएज्जा, त जहा—जुवगवे ति वा, धेणू ति वा, रसवती ति वा, हस्से[२] ति वा, महल्लए[३] ति वा, महव्वए ति वा सवहणे ति वा—एयप्पगार भास असावज्ज जाव अभूतोवघाइय अभिकख भासेज्जा ॥

२९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा **तहेव गतुमुज्जाणाइ पव्वयाइ वणाणि य[४] रुक्खा महल्ला पेहाए** णो एव वएज्जा, त जहा—पासायजोग्गा ति वा, 'गिहजोग्गा ति वा, तोरणजोग्गा'[५] ति वा, 'फलिहजोग्गा ति वा, अग्गल'[६]-नावा-उदगदोणि-पीढ-चगवेर[७]-णगल-कुलिय-जतलट्ठी-णाभि-गडी-आसण-सयण-जाण-उवस्सय-जोग्गा ति वा—एयप्पगार भास सावज्ज जाव भूतोवघाइय अभिकख णो भासेज्जा ॥

३० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा **तहेव गतुमुज्जाणाइ पव्वयाणि वणाणि य रुक्खा महल्ला पेहाए** एव वएज्जा, त जहा—जातिमता ति वा, दीहवट्टा ति वा, महालया ति वा, पयायसाला ति वा, विडिमसाला ति वा, पासाइया ति वा, दरिसणीयाति वा, अभिरूवा ति वा, पडिरूवा ति वा—एयप्पगार भास असावज्ज जाव अभूतोवघाइय अभिकख भासेज्जा ॥

३१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसभूया वणफला [अबा ?] पेहाए तहावि ते णो एव वएज्जा, त जहा—पक्का ति वा, पायखज्जा ति वा, वेलोचिया[८] ति वा, टाला ति वा, वेहिया ति वा—एयप्पगार भास सावज्ज जाव भूतोवघाइय अभिकख णो भासेज्जा ॥

३२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसभूया 'वणफला अबा'[९] पेहाए एव वएज्जा, त जहा—असथडा इ वा, बहुणिवट्टिमफला ति वा, बहुसभूया इ वा, भूयरूवा ति वा—एयप्पगार भास असावज्ज जाव अभूतोवघाइय अभिकख भासेज्जा ॥

३३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसभूयाओ ओसहीओ पेहाए तहावि ताओ णो एव वएज्जा, त जहा—पक्का ति वा, नीलिया ति वा, छवीया[१०] ति वा, लाइमा ति वा, भज्जिमा ति वा, बहुखज्जा ति वा—एयप्पगार भास सावज्ज जाव भूतोवघाइय अभिकख णो भासेज्जा ॥

---

१ वाहनयोग्यो रथयोग्य' (वृ) ।
२ हस्से (घ, छ), रहस्से (ब) ।
३ महल्ले (छ, ब) ।
४. वा (च, ब) ।
५ तोरणजोग्गा ति वा गिहजोग्गा (अ, ब) ।
६. अग्गलजोग्गा ति वा फलिह° (च) ।
७ सिगवेर (अ, ब) ।
८ वेलोविगा (अ), वेलोतिया (क, घ, च), वेलोविया (ब) ।
९ वणफणा (क, च, ब), फलअबा (वृ) ।
१० छवी (अ) ।

३४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसभूयाओ ओसहीओ पेहाए एव वएज्जा, त जहा—रुढा ति वा, बहुसभूया ति वा, थिरा ति वा, ऊसढा ति वा, गब्भिया ति वा, पसूया ति वा ससारा[1] ति वा—एयप्पगार भास असावज्ज जाव अभूतोवघाइय अभिकख भासेज्जा ॥

३५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइ सद्दाइ सुणेज्जा, तहावि ताइ णो एव वएज्जा, त जहा—सुसद्दे ति वा, 'दुसद्दे ति वा'[2]—एयप्पगार भास सावज्ज जाव भूतोवघाइय अभिकख णो भासेज्जा ॥

३६ 'से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइ सद्दाइ सुणेज्जा'[3], ताइ एव वएज्जा, त जहा—सुसद्द सुसद्दे ति वा, 'दुसद्द दुसद्दे ति वा'[4]—एयप्पगार भास असावज्ज जाव अभूतोवघाइय अभिकख भासेज्जा ॥

३७ एव रुवाइ—कण्हे ति वा, णीले ति वा, लोहिए ति वा, हालिद्दे ति वा, सुकिल्ले ति वा,

गधाइ—सुब्भिगधे ति वा, दुब्भिगधे ति वा,

रसाइ—तित्ताणि वा, कडुयाणि वा, कसायाणि वा, अबिलाणि वा, महुराणि वा,

फासाइ—कक्खडाणि वा, मउयाणि वा, गुरुयाणि वा, लहुयाणि वा, सीयाणि वा, उसिणाणि वा, णिद्धाणि वा, लुक्खाणि वा ॥

अणुवीइ णिट्ठाभासि-पद

३८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा वता 'कोह च माण च माय च लोभ च'[5], अणुवीइ णिट्ठाभासी णिसम्मभासी अतुरियभासी विवेगभासी समियाए सजए भास भासेज्जा ॥

३९ एय खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय, ज सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

---

१ ससारा (अ, छ) ।
२ × (च, छ) ।
३ × (अ, क, च, छ, ब) ।
४ × (च, छ) ।
५ कोहवयण माण वा ४ (क, घ, च, ब) ।

पंचमं अज्झयणं

वत्थेसणा

पढमो उद्देसो

वत्थजाय-पदं

१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा वत्थ एसित्तए, सेज्ज पुण वत्थ जाणेज्जा, त जहा—जगिय वा, भगिय वा, साणय वा, पोत्तग वा, खोमिय वा, तूलकड वा, तहप्पगार वत्थ[1]—

२ जे णिग्गथे तरुणे जुगव[2] वलव अप्पायके थिरसघयणे, से एग वत्थ धारेज्जा, णो वितिय ।।

३ जा णिग्गथो, सा चत्तारि सघाडीओ धारेज्जा—एग दुहत्थवित्थार, दो तिहत्थवित्थाराओ, एग चउहत्थवित्थार, तहप्पगारेहिं[3] वत्थेहिं असविज्ज-माणेहिं[4] अह पच्छा एगमेग ससीवेज्जा ।।

अद्धजोयण-मेरा-पद

४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पर अद्धजोयण-मेराए वत्थ-पडियाए नो अभिसधारेज्जा गमणाए ।।

अस्सिपडियाए वत्थ-पद

५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण वत्थ जाणेज्जा—अस्सिपडियाए एग साहम्मिय समुद्दिस्स पाणाइ[5] •भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएति । त तहप्पगार वत्थ

---

१ धारयेदित्युत्तरेण सम्वन्ध (वृ) ।

२ जुवव (घ) ।

३. एएहिं (अ, च, व) ।

४ अविज्ज° (अ, व) ।

५ स० पा०—पाणाइ जहा पिंडेसणाए ।

पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्त
वा अणत्तट्ठियं वा परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा
अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

६ [1]से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए ब
साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स
पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तहप्पगारं
पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्त
वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा
अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए
साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स
पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तहप्पगारं
पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्त
वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं
अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए
साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समु
कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तहप्पगारं
पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्त
वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं
अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-वत्थ-पद

९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—बहवे समण-मा
अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जी
सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आ
चेएइ। तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णी
वा अणीहडं वा अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं
आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे
णो पडिगाहेज्जा ॥

१० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—बहवे समण-मा

---

१ स० पा०—एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ बहवे समणमाह
तहेव, पुरिसंतर जहा पिंडेसणाए।

अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएइ। त तहप्पगार वत्थ अपुरिसतरकड, अवहिया णीहड, अणत्तट्ठिय, अपरिभुत्त, अणासेवित—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा॥

११ अह पुण एव जाणेज्जा—पुरिसतरकड, बहिया णीहड, अत्तट्ठिय, परिभुत्त, आसेविय—फासुय एसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते पडिगाहेज्जा°॥

भिक्खु-पडियाए-कीयमाइ-वत्थ-पदं

१२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण वत्थ जाणेज्जा—असजए भिक्खु-पडियाए कीय वा, धोय वा, रत्त वा, घट्ठ वा, मट्ठ वा, समट्ठ[1] वा, सपधूमिय[2] वा, तहप्पगार वत्थ अपुरिसतरकड[3], °अवहिया णीहड, अणत्तट्ठिय, अपरिभुत्त, अणासेवित—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा॥

१३ अह पुणेव जाणेज्जा—पुरिसतरकड[4], °बहिया णीहड, अत्तट्ठिय, परिभुत्त, आसेविय—फासुय एसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° पडिगाहेज्जा॥

महद्धणमुल्लवत्थ-पद

१४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइ पुण वत्थाइ जाणेज्जा विरूवरूवाइ महद्धण-मोल्लाइ त जहा—आजिणगाणि[5] वा, सहिणाणि[6] वा, सहिण-कल्लाणाणि वा, आयकाणि[7] वा, कायकाणि[8] वा, खोमयाणि वा, दुगुल्लाणि वा, मलयाणि वा, पत्तुण्णाणि वा, असुयाणि वा, चीणसुयाणि वा, देसरागाणि[9] वा, अमिलाणि वा, गज्जलाणि वा, फालियाणि[10] वा, कोयहा[वा?]णि[11] वा, कवलगाणि वा, पावाराणि वा—अण्णयराणि वा तहप्पगाराइ वत्थाइ महद्धणमोल्लाइ[12]—°अफासुयाइ अणेसणिज्जाइ ति मण्णमाणे॰ लाभे सते णो पडिगाहेज्जा॥

अजिणवत्थ-पद

१५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण आईणपाउरणाणि वत्थाणि[13] जाणेज्जा,

---

१ ससट्ठ (क)।
२ °धूवित (अ, छ)।
३ स॰ पा॰—अपुरिसतरकड जाव अणासेवित।
४ स॰ पा॰—पुरिसतरकड जाव पडिगाहेज्जा।
५ आतिणाणि (अ), अजिणमाणि (क, च)।
६ सहणाणि (छ)।
७ आयाणाणि (अ, क, घ, च), आयाण (व)।
८ कायाणाणि (घ, व)।
९ वेसरागाणि (अ), देसराणि (छ), वेसराणि (व)।
१० फलियाणि (क, च, छ, व)।
११ कायहाणि (अ), कोहयाणि (घ), निशीथस्य १७ उद्देशकस्य चूर्णौ 'कोतवाणि' इति पाठो लभ्यते।
१२ स॰ पा॰—महद्धणमोल्लाइ लाभे।
१३ वा वत्थाणि वा (क, छ)।

तं जहा—उद्दाणि[1] वा, पेसाणि[2] वा, पेसलेसाणि वा, किण्हमिगाईणगाणि वा, णीलमिगाईणगाणि वा, गोरमिगाईणगाणि वा, कणगाणि वा, कणगकंताणि[3] वा, कणगपट्टाणि वा, कणगखइयाणि वा, कणगफुसियाणि वा, वग्घाणि वा, विवग्घाणि वा, आभरणाणि वा, आभरणविचित्ताणि वा—अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं आईणपाउरणाणि वत्थाणि[4]—•अफासुयाइं अणेसणिज्जाइं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

वत्थपडिमा-पदं

१६ इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइकम्म, अह भिक्खू जाणेज्जा चउहिं पडिमाहिं वत्थं एसित्तए ॥

१७ तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय वत्थं जाएज्जा, तं जहा—जंगियं वा, भंगियं वा, साणयं वा, पोत्तयं वा, खोमियं वा, तूलकडं वा—तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा—पढमा पडिमा ॥

१८ अहावरा दोच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए वत्थं जाएज्जा, तं जहा—गाहावइं वा[5], •गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा°, कम्मकरिं वा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा भगिणि! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णतरं वत्थं? तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं[6] •एसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा—दोच्चा पडिमा ॥

१९ अहावरा तच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, तं जहा—अंतरिज्जगं वा उत्तरिज्जगं वा—तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा[7] •परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—तच्चा पडिमा ॥

२० अहावरा चउत्था पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उज्झिय-धम्मियं वत्थं जाएज्जा, जं चऽण्णे बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झिय-धम्मियं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से[8] देज्जा—

---

१ उद्दवाणि (घ), ओट्टाणि (छ)।

२ पेसणाणि (छ)।

३ कणगकताणि (अ, क, घ, च, छ, ब), कनककान्तीनि (वृ)।

४ सं० पा०—वत्थाणि•••लाभे।

५ सं० पा०—गाहावइं वा जाव कम्मकरिं।

६ सं० पा०—फासुयं लाभे संते जाव पडिगाहेज्जा।

७ सं० पा०—जाएज्जा जाव पडिगाहेज्जा।

८ ण (अ, ब)।

फासुयं[1] •एसणिज्जं[1] ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—चउत्था पडिमा ॥

२१ इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं[3] •अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा—मिच्छा पडिवन्ना खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने ।
जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया, अण्णोण्णसमाहीए एवं च णं विहरंति° ॥

संगार-वयणपुव्वं वत्थ-पदं

२२. सिया णं एयाए एसणाए एसमाणं परो वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! एज्जाहि तुमं मासेण वा, दसराएण वा, पंचराएण वा, सुए वा, सुयतरे[4] वा, तो ते वयं आउसो ! अण्णयरं वत्थं दाहामो[5]। एयप्पगारं[6] णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे[7] संगार-वयणे पडिसुणित्तए, अभिकंखसि मे दाउं ? इयाणिमेव दलयाहि ।
से सेवं[8] वयंतं परो वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! अणुगच्छाहि, तो ते वयं अण्णतरं वत्थं दाहामो । से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिसुणेत्तए, अभिकंखसि मे दाउं ? इयाणिमेव दलयाहि ।
से सेवं वयंतं परो णेत्ता वदेज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेयं वत्थं समणस्स दाहामो । अवियाइं वयं पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स वत्थं[9] चेइस्सामो । एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं[10] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

वत्थ-आघंसण-पदं

२३ सिया णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेयं वत्थं—सिणाणेण वा[11]", •कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा,

---

१. सं० पा०—फासुयं पडिगाहेज्जा ।
२ °यं (अ) ।
३ सं० पा० —पडिमाणं जहा पिंडेसणाए ।
४ °तराए (घ, च, छ, ब) ।
५ दासामो (अ, च, ब) ।
६ तहप्प° (अ) ।
७ °गारं (छ) ।
८ णेवं (क, घ, च, छ); एवं (ब) ।
९ जाव (अ, क, घ, च, छ, ब) ।
१० सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।
११ सं० पा०—सिणाणेण वा जाव आघंसित्ता ।

पउमेण वा° आघसित्ता वा, पघसित्ता वा समणस्स ण दासामो।" एयप्पगार णिग्घोस सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा मा एय तुम वत्थ सिणाणेण वा जाव आघसाहि वा पघसाहि वा, अभिकखसि मे दाउ ? एमेव दलयाहि।"

से सेव वयतस्स परो सिणाणेण वा जाव आघसित्ता वा पघसित्ता वा दलएज्जा, तहप्पगार वत्थ—अफासुय[1] °अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा॥

वत्थ-उच्छोलण-पद

२४ से ण परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेय वत्थ—सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा[2], पधोवेत्ता[3] वा समणस्स ण दासामो।" एयप्पगार णिग्घोस सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा मा एय तुम वत्थ सिओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेहि वा पधोवेहि वा, अभिकखसि[4] °मे दाउ ? एमेव दलयाहि।"

से सेव वयतस्स परो सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा पधोवेत्ता वा दलएज्जा, तहप्पगार वत्थ—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा॥

वत्थ-विसोहण-पद

२५ से ण परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेय वत्थ—कदाणि वा[5], °मूलाणि वा, [तयाणि वा ?], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा°, हरियाणि वा विसोहित्ता समणस्स ण दासामो।" एयप्पगार णिग्घोस सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा मा एयाणि तुम कदाणि वा जाव हरियाणि वा विसोहेहि, णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे वत्थे पडिगाहित्तए।"

से सेव वयतस्स परो कदाणि वा जाव हरियाणि वा विसोहित्ता दलएज्जा, तहप्पगार वत्थ—अफासुय[6] °अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा॥

वत्थ-पडिलेहण-पद

२६ सिया से परो णेत्ता वत्थ णिसिरेज्जा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा तुम चेव ण सतिय वत्थ अतोअतेण पडिलेहिस्सामि॥

---

१ स० पा०—अफासुय जाव णो।

२. × (छ)।

३ पच्छोलेत्ता (छ)।

४ स० पा०—अभिकखसि सेस तहेव जाव णो।

५ स० पा०—कदाणि वा जाव हरियाणि।

६ स० पा०—अफासुय जाव णो।

२७ केवली बूया आयाणमेयं—'वत्थंतेण उ'[1] बद्धे सिया कुंडले वा, गुणे वा, मणी वा[2], •मोत्तिए वा, हिरण्णे वा, सुवण्णे वा, कडगाणि वा, तुडयाणि वा, तिसरगाणि वा, पालंबाणि वा, हारे वा, अद्धहारे वा, एगावली वा, मुत्तावली वा, कणगावली वा° रयणावली वा, पाणे वा, बीए वा, हरिए वा।
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[3] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं पुव्वामेव वत्थं अंतोअंतेण पडिलेहिज्जा॥

सअंडाइ-वत्थ-पदं

२८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—सअंडं[4] •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगं, तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं[5] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा॥

अप्पंडाइ-वत्थ-पदं

२९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—अप्पंडं[6] •अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं, अणलं अथिरं अधुवं अधारणिज्जं, रोइज्जंतं ण रुच्चइ, तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं[7] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा॥

३० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—अप्पंडं[8] •अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं, अलं थिरं धुवं धारणिज्जं, रोइज्जंतं रुच्चइ, तहप्पगारं वत्थं—फासुयं[9] •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा॥

वत्थ-परिकम्म-पदं

३१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे वत्थे" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण[10] सिणाणेण वा[11], •कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा°, पघंसेज्ज वा॥

३२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे वत्थे" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण

---

१ वत्थे ते उ (च), वत्थेण उ (घ, ब)।
२ सं० पा०—मणी वा जाव रयणावली।
३ सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।
४ सं० पा०—सअंडं जाव संताणगं।
५ सं० पा०—अफासुयं जाव णो।
६,८ सं० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं।
७ सं० पा०—अफासुयं जाव णो।
९ सं० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा।
१० निशीथे (१४।१५) 'बहुदेवसिएण' पाठो लभ्यते। आचारांगस्य चूर्णावपि (पृ० ३६४) 'बहुदेवसिएण' पाठोस्ति, किन्तु तस्य वृत्तौ (पृ० ३६४) 'बहुदेसिएण' पाठो व्याख्यातोस्ति। प्रतिषु चापि एष एव लभ्यते तेनात्र अयमेव पाठः स्वीकृतः।
११ सं० पा०—सिणाणेण वा जाव पघंसेज्ज।

सीओदग-वियडेण वा[1], •उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा°, पधोएज्ज वा ।।

३३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगधे मे वत्थे" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सिणाणण वा[2], •कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघसेज्ज वा, पघसेज्ज वा ।।

३४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगधे मे वत्थे" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा° ।।

वत्थ-आयावण-पद

३५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा वत्थ आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगार वत्थ णो अणतरहियाए पुढवीए, णो ससणिद्धाए[3] पुढवीए[4], •णो ससरक्खाए पुढवीए, णो चित्तमताए सिलाए, णो चित्तमताए लेलुए, कोलावाससि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा °सताणए आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।।

३६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा वत्थ आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगार वत्थ थूणसि वा, गिहेलुगसि वा, उसुयालसि[5] वा, कामजलसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।।

३७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा वत्थ आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगार वत्थ कुलियसि वा, भित्तिसि वा, सिलसि वा, 'लेलुसि वा'[6], अण्णतरे वा तहप्पगारे अतलिक्खजाए[7] •दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकपे चलाचले णो आयावेज्ज वा°, णो पयावेज्ज वा ।।

३८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा वत्थ आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगार वत्थ खधसि वा, मचसि वा, मालसि वा, पासायसि वा, हम्मियतलसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अतलिक्खजाए[8] •दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकपे चलाचले णो आयावेज्ज वा°, णो पयावेज्ज वा ।।

---

१ स० पा०—सीओदग-वियडेण वा जाव पधोएज्जा ।

२ स० पा—सिणाणेण वा तहेव सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा आलावओ ।

३ ससिणि° (क, च) ।

४ स० पा०—पुढवीए जाव सताणए ।

५ ऊसु° (अ) ।

६ जाव (अ), × (छ) ।

७ स० पा०—अतलिक्खजाए जाव णो ।

८ स० पा०—अतलिक्खजाए जाव णो ।

३९ से त्तमादाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अहे झामथंडिलंसि वा[1], •अट्ठिरासिंसि किट्टरासिंसि वा, तुसरासिंसि वा, गोमयरासिंसि वा°, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव वत्थं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।।

४० एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[2], •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि° ।।

बीओ उद्देसो

णो धोएज्जा रएज्जा-पद

४१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा, अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा, णो धोएज्जा णो रएज्जा, णो धोयरत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा, अपलिउंचमाणे गामंतरेसु ओमचेलिए । एयं खलु वत्थधारिस्स सामग्गियं ।।

सव्वचीवरमायाए-पद

४२ से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसिउकामे सव्वं चीवरमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।।

४३ [3]•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमिं वा, विहार-भूमिं वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा सव्वं चीवरमायाए बहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।।

४४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे सव्वं चीवरमायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

४५ अह पुणेवं जाणेज्जा—तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसियं वा महियं सण्णिवयमाणिं पेहाए, महावाएण वा रयं समुद्धुयं पेहाए, तिरिच्छं संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा सन्निवयमाणा पेहाए, से एवं णच्चा णो सव्वं चीवरमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा, बहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा, गामाणुगामं वा दूइज्जेज्जा ।।

---

१ सं० पा०—झामथंडिलंसि वा जाव अण्णयरंसि ।

२ सं० पा०—सामग्गियं ।

३ सं० पा०—एवं बहिया विचारभूमिं वा विहारभूमिं वा गामाणुगामं दूइज्जेजा अह पुणेवं जाणेज्जा तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए जहा पिंडेसणाए णवरं सव्वं चीवरमायाए ।

पाडिहारिय-वत्थ-पद

४६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा एगइओ 'मुहुत्तग-मुहुत्तग'[1] पाडिहारियं वत्थं जाएज्जा—एगाहेण[2] वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छेज्जा, तहप्पगारं वत्थं णो अप्पणा गिण्हेज्जा, णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु[3] एवं वदेज्जा—"आउसंतो! समणा! अभिकंखसि वत्थं धारेत्तए वा, परिहरित्तए वा?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिंदिय-पलिच्छिंदिय परिट्ठवेज्जा। तहप्पगारं 'वत्थं ससंधियं'[4] तस्स चेव णिसिरेज्जा, 'णो णं'[5] साइज्जेज्जा॥

४७ से एगइओ एयप्पगारं[6] णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म जे भयंतारो तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि 'मुहुत्तग-मुहुत्तगं'[7] जाइत्ता[8] एगाहेण[9] वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छंति, तहप्पगाराणि वत्थाणि णो अप्पणा गिण्हंति, णो अण्णमण्णस्स अणुवयंति[10], °णो पामिच्चं करेंति, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं करेंति, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेंति—'आउसंतो! समणा! अभिकंखसि वत्थं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिंदिय-पलिच्छिंदिय परिट्ठवेंति। तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि तस्स चेव णिसिरेंति°, णो णं सातिज्जंति, 'से हंता' अहमवि मुहुत्तगं[11] पाडिहारियं वत्थं जाइत्ता एगाहेण[12] वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छिस्सामि। अवियाइं एयं ममेव सिया। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा॥

वत्थविक्किया-पद

४८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो वण्णमंताइं वत्थाइं विवण्णाइं करेज्जा, विवण्णाइं

---

१ मुहुत्तग (घ, च, छ, व)।
२ जाव एगाहेण (अ, क, घ, च, छ, व)।
३ °मित्ता (घ, च, छ, व)।
४ ससंधियं वत्थं (अ), वत्थं ससंधियं वत्थं (च, छ)।
५ णो अत्ताणं (अ, क, छ), न अत्ताणं (व)।
६ तह° (व)।
७ मुहुत्तग (छ)।
८ जाएज्जा (छ)।
९ जाव एगाहेण (अ, क, घ च, छ, व)।
१० तं चेव जाव णो साइज्जंति वहुवयणेण भासियव्वं (क, च, छ), तं चेव जाव णो साइज्जंति वहुमाणोए भासियव्वं (अ), तं चेव जाव णो साइज्जंति वहुवयणेण भाणियव्वं (घ), तं चेव जाव णो साइज्जंति वहुमाणेण भासियव्वं (व), स० पा०—अणुवयंति तं चेव जाव णो सातिज्जंति वहुवयणेण भाणियव्वं।
११ मुहुत्तं (अ, छ, व)।
१२ जाव एगाहेण (अ, क, घ, च, छ, व)।

णो वण्णमताइ करेज्जा, "अण्ण वा वत्थ लभिस्सामि" त्ति कट्टु णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो पामिच्च कुज्जा, णो वत्थेण वत्थ-परिणाम करेज्जा[1], णो पर उवसकमित्तु एव वदेज्जा—"आउसतो ! समणा ! अभिकखसि मे वत्थ धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?" थिर वा ण सत णो पलिच्छिदिय-पलिच्छिदिय परिट्ठवेज्जा, जहा चेय[2] वत्थ पावग परो मन्नइ ।

पर च ण अदत्तहारिं पडिपहे पेहाए तस्स वत्थस्स णिदाणाए णो तेसिं भीओ उम्मग्गेण गच्छेज्जा[3], °णो मग्गाओ मग्ग सकमेज्जा, णो गहण वा, वण वा, दुग्ग वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयसि उदयसि काय विउसेज्जा, णो वाड वा सरण वा सेण वा सत्थ वा कखेज्जा, अप्पुस्सुए अवहिलेस्से एगतगएण अप्पाण वियोसेज्ज समाहीए°, तओ सजयामेव गामाणुगाम दूइज्जेज्जा ।।

आमोसग-पद

४९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे अतरा से विह सिया । सेज्ज पुण विह जाणेज्जा- इमसि खलु विहसि बहवे आमोसगा वत्थ-पडियाए सपिंडिया[4] गच्छेज्जा[5], °णो तेसिं भीओ उम्मग्गेण गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्ग सकमेज्जा, णो गहण वा, वण वा, दुग्ग वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयसि उदयसि काय विउसेज्जा, णो वाड वा, सरण वा, सेण वा, सत्थ वा कखेज्जा, अप्पुस्सुए अवहिलेस्से एगतगएण अप्पाण वियोसेज्ज समाहीए, तओ सजयामेव° गामाणुगाम दूइज्जेज्जा ।।

५० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे अतरा से आमोसगा सपिंडिया[6] गच्छेज्जा । तेण आमोसगा एव वदेज्जा—आउसतो ! समणा ! आहरेय वत्थ, देहि, निक्खिवाहि[7] । °त णो देज्जा, णो णिक्खिवेज्जा, णो वदिय-वदिय जाएज्जा, णो अजलिं कट्टु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवेहेज्जा ।

ते ण आमोसगा सय करणिज्ज ति कट्टु अक्कोसति वा, वधति वा, रुभति वा, उद्दवति वा, वत्थ अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा । त णो गामससारिय कुज्जा, णो रायससारिय कुज्जा, णो पर उवसकमित्तु बूया—

---

१ कुज्जा (च) ।
२. वेय (अ, च), मेय (क, घ, व) ।
३ स० पा०—गच्छेज्जा जाव अप्पुस्सुए तओ ।
४ सपडिया (क, घ, व) ।
५ स० पा०—गच्छेज्जा जाव गामाणुगाम ।
६. पडिया (अ), सपडिया (क, घ, च), सपड्डिया (छ) ।
७ स० पा०—निक्खिवाहि जहा इरियाए णाणत्त वत्थपडियाए ।

आउसतो ! गाहावइ ! एए खलु आमोसगा वत्थ-पडियाए सयं करणिज्जं ति कट्टु अक्कोसंति वा, वधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, वत्थं अच्छिंदेंति वा, अवहरेंति वा, परिभवेंति वा। एयप्पगारं मणं वा, वइं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा° ॥

५१ एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[1], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि° ॥

---

१ सं० पा०—सामग्गियं ।

छट्ठं अज्झयणं

पाएसणा

पढमो उद्देसो

पायजाय-पदं

१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा पाय एसित्तए, सेज्ज पुण पाय जाणेज्जा, त जहा—अलाउपाय[1] वा, दारुपाय वा, मट्टियापाय वा—तहप्पगार पाय—

एगपाय-पदं

२ जे निग्गथे तरुणे जुगव वलव अप्पायके थिरसघयणे, से एग पाय धारेज्जा, णो वीय[2] ॥

अद्धजोयण-मेरा-पद

३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पर अद्धजोयण-मेराए पाय-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

अस्सिपडियाए पाय-पदं

४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण पाय जाणेज्जा—अस्सिपडियाए एग साहम्मिय समुद्दिस्स पाणाइ[3] •भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएति। त तहप्पगार पाय

---

१ लाउयपाय (क, च, छ), अलाउयपाय (घ)।

२ वितिय (च, छ, व)।

३ स० पा०—पाणाइ जहा पिंडेसणाए चत्तारि आलावगा। पचमे वहवे समणमाहणा पगणिय-पगणिय तहेव से भिक्खू वा २ अस्सजए भिक्खुपडियाए वहवे समणमाहणा वत्थेसणालावओ।

पुरिसतरकड वा अपुरिसतरकड वा, वहिया णीहड वा अणीहड वा, अत्तट्ठिय वा अणत्तट्ठिय वा, परिभुत्त वा अपरिभुत्त वा, आसेविय वा अणामेविय वा—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण पाय जाणेज्जा—अस्सिपडियाए वहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएति। त तहप्पगार पाय पुरिसतरकड वा अपुरिसतरकड वा, वहिया णीहड वा अणीहड वा, अत्तट्ठिय वा अणत्तट्ठिय वा, परिभुत्त वा अपरिभुत्त वा, आसेविय वा अणासेविय वा—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण पाय जाणेज्जा—अस्सिपडियाए एग साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएति। त तहप्पगार पाय पुरिसतरकड वा अपुरिसतरकड वा, वहिया णीहड वा अणीहड वा, अत्तट्ठिय वा अणत्तट्ठिय वा, परिभुत्त वा अपरिभुत्त वा, आसेविय वा अणासेविय वा—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण पाय जाणेज्जा—अस्सिपडियाए वहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कोय पामिच्च अच्छज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएति। त तहप्पगार पाय पुरिसतरकड वा अपुरिसतरकड वा, वहिया णीहड वा अणीहड वा, अत्तट्ठिय वा अणत्तट्ठिय वा, परिभुत्त वा अपरिभुत्त वा, आसेविय वा अणासेविय वा—अफासुय अणभणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

समण-माहणाइ समुद्दिस्स पाय-पद

८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण पाय जाणेज्जा—वहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिमट्ठ अभिहड आहट्टु चेएइ। त तहप्पगार पाय पुरिसतरकड वा अपुरिसतरकड वा, वहिया णीहड वा अणोहड वा, अत्तट्ठिय वा अणत्तट्ठिय वा, परिभुत्त वा अपरिभुत्त वा, आसेविय वा अणासेविय वा—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

९ से[1] भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण पाय जाणेज्जा—वहवे समण-माहण-

---

१ यद्यपि प्राप्तप्रतिषु 'वहवे समणमाहण' इति सूत्रात् पूर्वं 'अस्सजए भिक्खु-पडियाए' एतत् सूत्र लभ्यते, किन्तु वस्त्रैषणाया (१०-१३) क्रमेण पूर्वं 'वहवे समण-

अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएति । त तहप्पगार पाय अपुरिसतरकड, अवहिया णीहड, अणत्तट्ठिय, अपरिभुत्त, अणासेविय—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ।।

१० अह पुणेव जाणेज्जा—पुरिसतरकड, वहिया णीहड, अत्तट्ठिय, परिभुत्त, आसेविय—फासुय एसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते पडिगाहेज्जा ।।

भिक्खु-पडियाए कीयमाइ-पद

११ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण पाय जाणेज्जा—अस्सजए भिक्खु-पडियाए कीय वा, धोय वा, रत्त वा, घट्ठ वा, मट्ठ वा, समट्ठ वा, सपधूमिय वा—तहप्पगार पाय अपुरिसतरकड, अबहिया णीहड, अणत्तट्ठिय, अपरिभुत्त, अणासेविय—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ।।

१२ अह पुण एव जाणेज्जा—पुरिसतरकड, वहिया णीहड, अत्तट्ठिय, परिभुत्त, आसेविय—फासुय एसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते पडिगाहेज्जा °।।

महद्धणमुल्लपाय-पद

१३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइ पुण पायाइ जाणेज्जा विरूवरूवाइ महद्धण-मुल्लाइ, त जहा—अय-पायाणि वा, तउ[1]-पायाणि वा, तव-पायाणि वा, सीसग-पायाणि वा, हिरण्ण-पायाणि वा, सुवण्ण-पायाणि वा, रीरिय-पायाणि वा, हारपुड-पायाणि वा, मणि-काय-कस-पायाणि वा, सख-सिंग-पायाणि वा, दत-चेल-सेल-पायाणि वा, चम्म-पायाणि वा—अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ महद्धणमुल्लाइ पायाइ—अफासुयाइ[2] °अणेसणिज्जाइ ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ।।

पाय-बधण-पद

१४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइ पुण पायाइ जाणिज्जा विरूवरूवाइ महद्धण-बधणाइ त जहा—अयबधणाणि वा[3], °तउबधणाणि वा, तबबधणाणि वा, सीसगबधणाणि वा, हिरण्णबधणाणि वा, सुवण्णबधणाणि वा, रीरियबधणाणि

माहण °' सूत्र तत्पश्चात् 'अस्सजए भिक्खु-पडियाए' एतत् सूत्र युज्यते, अत एष एव क्रमोऽत्र स्वीकृत । सूत्रस्य विपर्ययो लिपि-दोषेण जात इति प्रतीयते । चूर्णौ वृत्तौ च न व्याख्याते इमे सूत्रे । प्राप्तविपर्यय परिलक्ष्यैव जयाचार्येण सूत्रस्य विचित्रा गतिरिति सकेतितम् ।

१ तउय (घ) ।

२ स० पा०—अफासुयाइ जाव णो ।

३ स० पा०—अयबधणाणि वा जाव चम्म-बधणाणि ।

वा, हारपुडवधणाणि वा, मणि-काय-कस-वधणाणि वा, सख-सिग-वधणाणि वा, दत-चेल-सेल-वधणाणि वा°, चम्मवधणाणि वा—अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ महद्धणवधणाइ—अफासुयाइ[1] •अणेसणिज्जाइ ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ॥

पाय-पडिमा-पद

१५ इच्चेयाइ आयतणाइ[2] उवातिकम्म अह भिक्खू जाणेज्जा चउहि पडिमाहि पाय एसित्तए ॥

१६ तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय पाय जाएज्जा, त जहा—लाउय-पाय वा, दारु-पाय वा, मट्टिया-पाय वा—तहप्पगार पाय सय वा ण जाएज्जा[3], •परो वा से देज्जा—फासुय एसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° पडिगाहेज्जा—पढमा पडिमा ॥

१७ अहावरा दोच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए पाय जाएज्जा, त जहा—गाहावइ वा[4], •गाहावइ-भारिय वा, गाहावइ-भगिणि वा, गाहावइ-पुत्त वा, गाहावइ-धूय वा, सुण्ह वा, धाइ वा, दास वा, दासि वा, कम्मकर वा°, कम्मकरि वा । से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयर पाय, त जहा—लाउय-पाय वा, दारु-पाय वा मट्टिया-पाय वा ? तहप्पगार पाय सय वा ण जाएज्जा, •परो वा से देज्जा—फासुय एसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° पडिगाहेज्जा—दोच्चा पडिमा ॥

१८ अहावरा तच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण पाय जाणेज्जा, सगतिय वा, वेजयतिय[6] वा—तहप्पगार पाय सय वा[7] •ण जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुय एसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° पडिगाहेज्जा—तच्चा पडिमा ॥

१९ अहावरा चउत्था पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उज्झिय-धम्मिय पाय जाएज्जा, ज चऽण्णे बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा णावकखति, तहप्पगार उज्झिय-धम्मिय पाय सय वा ण[8] •जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुय एसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° पडिगाहेज्जा—चउत्था पडिमा ॥

२० इच्चेयाण चउण्ह पडिमाण अण्णयर पडिम •पडिवज्जमाणे णो एव वएज्जा—मिच्छा पडिवन्ना खलु एते भयतारो, अहमेगे सम्म पडिवन्ने ।

---

१ स० पा०—अफासुयाइ जाव णो ।
२ आया° (घ) ।
३ स० पा०—जाएज्जा जाव पडिगाहेज्जा ।
४ स० पा०—गाहावइ वा जाव कम्मकरि ।
५. स० पा—जाएज्जा जाव पडिगाहेज्जा ।
६ वेजयति (अ, ब, क, घ, च, छ) ।
७ स० पा०—सय वा जाव पडिगाहेज्जा ।
८ स० पा०—सय वा ण जाव पडिगाहेज्जा ।
९ स० पा०—पडिम जहा पिंडेसणाए ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया, अण्णोण्णसमाहीए एवं च णं विहरंति ॥

सगार-वयणपुव्वं पाय-पदं

२१ से णं एताए एसणाए एसमाणं परो पासित्ता वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! एज्जासि तुमं मासेण वा,[1] •दसराएण वा, पंचराएण वा, सुए वा, सुयतरे वा तो ते वयं आउसो ! अण्णयरं पायं दाहामो। एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा - आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिसुणित्तए, अभिकंखसि मे दाउं ? इयाणिमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतं परो वएज्जा आउसंतो ! समणा ! अणुगच्छाहि तो ते वयं अण्णतरं पायं दाहामो। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिसुणेत्तए, अभिकंखसि मे दाउं ? इयाणिमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतं परो णेत्ता वदेज्जा - आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा आहरेयं पायं समणस्स दाहामो। अवियाइं वयं पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स पायं[2] चेइस्सामो । एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा° ॥

पाय-अब्भंगण-पदं

२२ से णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेयं पायं—तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, 'वसाए वा'[3] अब्भंगेत्ता वा[4], •मक्खेत्ता वा समणस्स णं दासामो।" एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं पायं तेल्लेण वा जाव अब्भंगाहि वा मक्खाहि वा, अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि।" से सेवं वयंतस्स परो तेल्लेण वा जाव अब्भंगेत्ता वा मक्खेत्ता वा दलएज्जा, तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

पाय-आघंसण-पदं

२३ से णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेयं पायं—

---

१ सं० पा० – मासेण वा जहा वत्थेसणाए।
२ जाव (अ, क, घ, च, छ, ब)।
३ × (क, च, ब)।
४ सं० पा०—अब्भंगेत्ता वा तहेव सिणाणाइ तहेव सीओदगादि कंदादि तहेव।

सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघसित्ता वा, पघसित्ता वा समणस्स ण दासामो।" एयप्पगार णिग्घोस सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा मा एय तुम पाय सिणाणेण वा जाव आघसाहि वा पघसाहि वा, अभिकखसि मे दाउ ? एमेव दलयाहि।"

से सेव वयतस्स परो सिणाणेव वा जाव आघसित्ता वा पघसित्ता वा दलएज्जा, तहप्पगार पाय—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

पाय-उच्छोलण-पद

२४. से ण परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेय पाय—सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पधोवेत्ता वा समणस्स ण दासामो।" एयप्पगार णिग्घोस सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा मा एय तुम पाय सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेहि वा, पधोवेहि वा, अभिकखसि मे दाउ ? एमेव दलयाहि।"

से सेव वयतस्स परो सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पधोवेत्ता वा दलएज्जा, तहप्पगार पाय—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

पाय-विसोहण-पद

२५ से ण परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेय पाय—कदाणि वा, मूलाणि वा [तयाणि वा ?] पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, वीयाणि वा, हरियाणि वा विसोहित्ता समणस्स ण दासामो।" एयप्पगार णिग्घोस सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा मा एयाणि तुम कदाणि वा जाव हरियाणि वा विसोहेहि, णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे पाये पडिगाहित्तए।"

से सेव वयतस्स परो कदाणि वा जाव हरियाणि वा विसोहित्ता दलएज्जा, तहप्पगार पाय—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा° ॥

सपाण-भोयण-पडिग्गह-पद

२६ से ण परो णेत्ता वएज्जा—आउसतो ! समणा ! मुहुत्तग-मुहुत्तग अच्छाहि जाव ताव अम्हे असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा उवकरेसु वा, उवक्खडेंसु वा, तो ते वय आउसो ! सपाण सभोयण पडिग्गहग दासामो,

तुच्छए पडिग्गहए दिण्णे समणस्स णो सुट्ठु साहु भवइ । से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ आहाकम्मिए असणे वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा भोत्तए वा, पायए वा, मा उवकरेहि, मा उवक्खडेहि, अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि ।
से सेवं वयंतस्स परो असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवकरेत्ता उवक्खडेत्ता सपाणगं सभोयणं पडिग्गहगं दलएज्जा, तहप्पगारं पडिग्गहगं—अफासुयं[1] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते• णो पडिगाहेज्जा ॥

पडिग्गह-पडिलेहण-पदं

२७ सिया से परो णेत्ता[2] पडिग्गहं णिसिरेज्जा, से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा तुमं चेव णं संतियं पडिग्गहगं अंतोअंतेणं पडिलेहिस्सामि ॥

२८ केवली बूया आयाणमेयं—अंतो पडिग्गहंसि पाणाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ।
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा[3], •एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो• जं पुव्वामेव पडिग्गहगं अंतोअंतेणं पडिलेहिज्जा ॥

सअंडाइ-पाय-पदं

२९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—सअंडं[4] •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं, तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

अप्पंडाइ-पाय-पदं

३० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं, अणलं अथिरं अधुवं अधारणिज्जं, रोइज्जंतं ण रुच्चइ, तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

३१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं, अलं थिरं धुवं धारणिज्जं, रोइज्जंतं रुच्चइ, तहप्पगारं पायं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ॥

---

१ स० पा०—अफासुयं जाव णो ।
२ उवणेत्ता (घ, च, व) ।
३. स० पा०—पइण्णा जाव जं ।
४. स० पा०—सअंडादि सव्वे आलावगा जहा वत्थेसणाए णाणत्तं तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा वसाए वा सिणाणादि जाव अण्णयरंसि वा ।

पाय-परिकम्म पदं

३२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे पाये" त्ति कट्टु णो वहुदेसिएण तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा अब्भगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा ॥

३३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे पाये" त्ति कट्टु णो वहुदेसिएण सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघसेज्ज वा, पघसेज्ज वा ॥

३४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे पाये" त्ति कट्टु णो वहुदेसिएण सीतोदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा ॥

३५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगधे मे पाये" त्ति कट्टु णो वहुदेसिएण तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा अब्भगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा ॥

३६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगधे मे पाये" त्ति कट्टु णो वहुदेसिएण सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघसेज्ज वा, पघसेज्ज वा ॥

३७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगधे मे पाये" त्ति कट्टु णो वहुदेसिएण सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा ॥

पाय-आयावण-पद

३८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्ज पाय आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगार पाय णो अणतरहियाए पुढवीए, णो ससिणिद्धाए पुढवीए, णो ससरक्खाए पुढवीए, णो चित्तमताए सिलाए, णो चित्तमताए लेलुए, कोलावाससि वा दारुए [अण्णयरे ?] जीवपइट्ठिए सअडे सपाणे सवीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासताणए आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ॥

३९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा पाय आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगार पाय थूणसि वा, गिहेलुगसि वा, उसुयालसि वा, कामजलसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ॥

४० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा पाय आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगार पाय कुलियसि वा, भित्तिसि वा, सिलसि वा, लेलुसि वा, अण्णतरे वा तहप्पगारे अतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ॥

४१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा पाय आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगार पाय खधसि वा, मचसि वा, मालसि वा, पासायसि वा,

हम्मियतलसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ॥

४२. से त्तमादाए एगतमवक्कमेज्जा, एगतवमक्कमेत्ता अहे भामथडिलसि वा, अट्ठिरासिसि वा, किट्टरासिसि वा, तुसरासिसि वा, गोमयरासिसि वा°, अण्णयरसि वा तहप्पगारसि थडिलसि पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तओ सजयामेव पाय आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ॥

४३ एय खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय, ज सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

पडिग्गह-पेहा-पद

४४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिडवाय-पडियाए पविसमाणे[1] पुव्वामेव पेहाए पडिग्गहग, अवहट्टु पाणे, पमज्जिय रय, ततो सजयामेव गाहावइ-कुल पिडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ॥

४५ केवली बूया आयाणमेय—अतो पडिग्गहगसि पाणे वा, बीए वा, रए वा परियावज्जेज्जा ।

अह भिक्खूण पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा[2], °एस हेऊ, एस कारण, एस उवएसो° ज पुव्वामेव पेहाए पडिग्गह, अवहट्टु पाणे, पमज्जिय रय तओ सजयामेव गाहावइ-कुल पिडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ॥

सीओदगादिसजुत्तपाय-पद

४६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सिया से परो आहट्टु[3] अतो पडिग्गहगसि सीओदग परिभाएत्ता णीहट्टु दलएज्जा, तहप्पगार पडिग्गहग परहत्थसि वा, परपायसि वा—अफासुय[4] °अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ॥

४७ से य आहच्च पडिग्गहिए सिया[5] खिप्पामेव उदगसि साहरेज्जा[6], सपडिग्गहमायाए पाण[7] परिट्ठवेज्जा, ससणिद्धाए 'वा ण'[8] भूमीए णियमेज्जा ॥

४८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्ल वा, ससणिद्ध वा पडिग्गह णो आमज्जेज्ज

---

१ पविट्ठे ° (क, च, चू) ।
२ स० पा०—पइण्णा जाव ज ।
३ अभिहट्टु (अ, क, च, छ, ब) ।
४ स० पा०—अफासुय जाव णो ।
५ सिया से (अ) ।
६ आहरेज्जा (च) ।
७ वण (अ); एवं (छ) ।
८ वण (घ, च), च ण (छ) ।

वा[1], •पमज्जेज्ज वा, सलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उवट्टेज्ज वा, आयावेज्ज वा° पयावेज्ज वा ।।

४९ अह पुण एव जाणेज्जा—विगतोदए मे पडिग्गहए, छिण्ण-सिणेहे मे पडिग्गहए, तहप्पगार पडिग्गह तओ सजयामेव आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज वा ।।

सपडिग्गहमायाए-पद

५० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए पविसिउकामे सपडिग्गहमायाए गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।।

५१ [2]•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा वहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमिं वा णिक्खममाणे वा पविसमाणे वा सपडिग्गहमायाए वहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा ।।

५२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे सपडिग्गहमायाए गामाणुगाम दूइज्जेज्जा ।।

५३ अह पुणेव जाणेज्जा – तिव्वदेसिय वास वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसिय वा महिय सण्णिवयमाणिं पेहाए, महावाएण वा रय समुद्धय पेहाए, तिरिच्छ सपाइमा वा तसा-पाणा सथडा सन्निवयमाणा पेहाए, से एव णच्चा णो सपडिग्गहमायाए गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्जं वा, पविसेज्ज वा, वहिया वियार-भूमिं वा, विहार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा, गामाणुगामं वा दूइज्जेज्जा ।।

पाडिहारिय-पडिग्गह-पदं

५४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा एगइओ मुहुत्तग-मुहुत्तग पाडिहारिय पडिग्गह जाएज्जा, एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छेज्जा,तहप्पगार पडिग्गह णो अप्पणा गिण्हेज्जा, णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो पामिच्च कुज्जा, णो पडिग्गहेण पडिग्गह-परिणाम करेज्जा, णो पर उवसकमित्तु एव वदेज्जा—"आउसतो ! समणा ! अभिकखसि पडिग्गह धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?" थिर वा ण सत णो पलिच्छिदिय-पलिच्छिदिय परिट्ठवेज्जा । तहप्पगार पडिग्गह ससधिय तस्स चेव णिसिरेज्जा, णो ण साइज्जेज्जा ।।

५५ से एगइओ एयप्पगार णिग्घोस सोच्चा णिसम्म जे भयतारो तहप्पगाराणि

---

१. मं० पा०—आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज ।

२ स० पा०—एव वहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा गामाणुगाम दूइज्जेज्जा । तिव्वदेसियादि जहा विइयाए वत्थेसणाए णवर एत्थ पडिग्गहे ।

पडिग्गहाणि ससंधियाणि मुहुत्तग-मुहुत्तगं जाइत्ता एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छंति, तहप्पगाराणि पडिग्गहाणि णो अप्पणा गिण्हंति, णो अण्णमण्णस्स अणुवयंति, णो पामिच्चं करेंति, णो पडिग्गहेण पडिग्गह-परिणामं करेंति, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदंति—"आउसंतो ! समणा ! अभिकंखसि पडिग्गहं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिंदिय-पलिच्छिंदिय परिट्ठवेंति । तहप्पगाराणि पडिग्गहाणि ससंधियाणि तस्स चेव णिसिरेंति, णो णं सातिज्जंति, 'से हंता' अहमवि मुहुत्तगं पाडिहारियं पडिग्गहं जाइत्ता एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छिस्सामि । अवियाइं एयं ममेव सिया । माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ।।

पायविक्किया-पद

५६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो वण्णमंताइं पडिग्गहाइं विवण्णाइं करेज्जा, विवण्णाइं णो वण्णमंताइं करेज्जा, "अण्णं वा पडिग्गहगं लभिस्सामि" त्ति कट्टु णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो पडिग्गहेण पडिग्गह-परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा—"आउसंतो ! समणा ! अभिकंखसि मे पडिग्गहं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिंदिय-पलिच्छिंदिय परिट्ठवेज्जा, जहा चेयं पडिग्गहं पावगं परो मन्नइ । परं च णं अदत्तहारिं पडिपहे पेहाए तस्स पडिग्गहस्स णिदाणाए णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा सरणं वा सेणं वा सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

आमोसग-पद

५७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया । सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा पडिग्गह-पडियाए संपिंडिया गच्छेज्जा, णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

५८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से आमोसगा संपिंडिया गच्छेज्जा । ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा—"आउसंतो ! समणा !

आहरेय पडिग्गह देहि, निक्खिवाहि।" त णो देज्जा, णो णिक्खिवेज्जा, णो वदिय-वदिय जाएज्जा, णो अजलि कट्टु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवेहेज्जा।
ते ण आमोसगा सय करणिज्ज ति कट्टु अक्कोसति वा, वधति वा, रु भति वा, उद्दवति वा, पडिग्गह अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा। त णो गामससारिय कुज्जा, णो रायससारिय कुज्जा, णो पर उवसकमित्तु बूया—आउसतो! गाहावइ! एए खलु आमोसगा पडिग्गह-पडियाए सय करणिज्ज ति कट्टु अक्कोसति वा, वधति वा, रु भति वा, उद्दवति वा, पडिग्गह अच्छिदेति वा, अवहरेंति वा, परिभवेंति वा। एयप्पगार मण वा, वइ वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा। अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगतगएण अप्पाण वियोसेज्ज समाहीए, तओ सजयामेव गामाणुगाम दूइज्जेज्जा॰॥

५६ एय खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय, ज सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जएज्जासि।

—त्ति बेमि॥

सत्तमं अज्झयणं

ओग्गह-पडिमा

पढमो उद्देसो

अदिन्नादाण-पच्चक्खाण-पदं

१ समणे भविस्सामि अणगारे अकिंचणे अपुत्ते अपसू परदत्तभोई पावं कम्मं णो करिस्सामि त्ति समुट्ठाए सव्वं भंते ! अदिण्णादाणं पच्चक्खामि ।।

२ से अणुपविसित्ता गामं वा[1], °णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, दोणमुहं वा, आगरं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा, रायहाणिं वा°—णेव सयं अदिन्नं गिण्हेज्जा, णेवण्णेणं[2] अदिण्णं गिण्हावेज्जा, णेवण्णं अदिण्णं गिण्हंतं पि समणुजाणेज्जा ।।

ओग्गह-पदं

३ जेहिं वि सद्धिं संपव्वइए, तेसिं पि याइं भिक्खू छत्तयं[3] वा, मत्तयं वा, दंडगं वा[4], °लट्ठियं वा, भिसियं वा, नालियं वा, चेलं वा, चिलमिलिं वा, चम्मयं वा, चम्मकोसयं वा°, चम्मछेदणगं वा—तेसिं पुव्वामेव ओग्गहं अणणुण्णविय अपडिलेहिय अपमज्जिय णो गिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज[5] वा। तेसिं पुव्वामेव ओग्गहं अणुण्णविय पडिलेहिय पमज्जिय तओ संजयामेव ओगिण्हेज्ज[6] वा, पगिण्हेज्ज वा ।।

४ से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णवेज्जा। कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णातं वसामो, जाव आउसो,

---

१ स० पा०—गामं वा जाव ।

२ णेवण्णेहिं (घ, छ) ।

३. छत्त (घ, च) ।

४ स० पा०—दंडगं वा जाव चम्मछेदणगं ।

५ परिगिण्हेज्ज (अ) ।

६. उ° (घ); उव° (छ) ।

जाव आउसतस्स ओग्गहे, जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव'[1] ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ॥

५ से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ साहम्मिया संभोइया समणुण्णा उवागच्छेज्जा, जे तेण सयमेसियाए[2] असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा तेण ते साहम्मिया संभोइया समणुण्णा उवणिमंतेज्जा, णो चेव णं पर-पडियाए उगिज्झिय-उगिज्झिय उवणिमंतेज्जा ॥

६ से आगंतारेसु वा[3], •आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णवेज्जा। कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णातं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसतस्स ओग्गहे, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो॰ ॥

७ से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ साहम्मिया अण्णसंभोइया समणुण्णा उवागच्छेज्जा, जे तेण सयमेसियाए[4] पीढे वा, फलए वा, सेज्जा-संथारए वा, तेण ते साहम्मिए अण्णसंभोइए समणुण्णे उवणिमंतेज्जा, णो चेव णं पर-वडियाए उगिज्झिय-उगिज्झिय उवणिमंतेज्जा ॥

८ से आगंतारेसु वा,[5] •आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते आग्गहं अणुण्णवेज्जा। कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णातं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसतस्स ओग्गहे, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो॰ ॥

९ से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ गाहावईण वा, गाहावइ-पुत्ताण वा सूई[6] वा, पिप्पलए वा, कण्णसोहणए वा, णहच्छेयणए वा, तं अप्पणो एगस्स अट्ठाए पाडिहारियं[7] जाइत्ता णो अण्णमण्णस्स देज्ज वा, अणुप-देज्ज वा, सयं करणिज्जं ति कट्टु से तमादाए[8] तत्थ गच्छेज्जा, गच्छत्ता पुव्वामेव उत्ताणए हत्थे[9] कट्टु भूमीए वा ठवेत्ता 'इमं खलु'[10] त्ति आलोएज्जा, णो चेव णं सयं पाणिणा परपाणिंसि पच्चप्पिणेज्जा ॥

१० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणिज्जा—अणंतरहियाए पुढवीए, ससणिद्धाए पुढवीए[11], •ससरक्खाए पुढवीए, चित्तमंताए सिलाए,

१. एतावना (अ, क, घ, च, छ ब)।
२,४ ॰सित्तए (अ, क, घ, च, छ)।
३,५ स॰ पा॰—से आगंतारेसु वा जाव।
६ सूती (अ), सूयी (च), सुई (छ), सुयी (ब)।
७ पडि॰ (अ, छ, ब)।
८ ॰ताए (छ)।
९ हत्थेंत्ति (छ)।
१० इमं खलु इमं खलु (अ, ब)।
११ स॰ पा॰—पुढवीए जाव संताणए।

चित्तमताए लेलुए, कोलावाससि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° सताणए, तहप्पगार ओग्गह णो ओगिण्हेज्ज[1] वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

११ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण ओग्गह जाणिज्जा—थूणसि वा, गिहेलुगसि वा, उसुयालसि वा, कामजलसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अतलिक्खजाए दुव्वद्धे[2] °दुन्निक्खित्ते अणिकपे चलाचले° णो ओग्गह ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण ओग्गह जाणेज्जा—कुलियसि वा[3], °भित्तिसि वा, सिलसि वा, लेलुसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अतलिक्खजाए दुव्वद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकपे चलाचले° णो ओग्गह ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पण ओग्गह जाणेज्जा—खधसि वा[4], °मचसि वा, मालसि वा, पासायसि वा, हम्मियतलसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अतलिक्खजाए दुव्वद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकपे चलाचले° णो ओग्गह ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण ओग्गह जाणेज्जा—ससागारिय सागणिय सउदय सइत्थि सखुड्ड सपसु सभत्तपाण, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए[5] °णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह°-धम्माणुओगचिंताए। सेव णच्चा तहप्पगारे उवस्सए ससागारिए जाव सखुड्ड-पसु-भत्तपाणे णो ओग्गह ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण ओग्गह जाणेज्जा—गाहावइ-कुलस्स मज्झमज्झेण गतु पथे पडिवद्ध वा णो पण्णस्स[6] °णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग° चिंताए। सेव णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गह ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण ओग्गह जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा[7], °गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा अण्ण-

---

१ गिण्हेज्ज (च, छ, व)।
२ स० पा०—दुव्वद्धे जाव णो।
३ स० पा०—कुलियसि वा जाव णो।
४ स० पा०—खधसि वा ˙ अण्णयरे वा तहप्पगारे जाव णो।
५ स० पा०—णिक्खमण-पवेसाए जाव धम्माणुओग।
६ स० पा०—पण्णस्स जाव चिंताए।
७ स० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ।

मण्णं अक्कोसति वा[1], °वधति वा, रुंभति वा, उद्दवेति वा, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा अब्भंगेंति वा, मक्खेंति वा, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा – इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा पउमेण वा आघसंति वा, पघसंति वा, उव्वलेंति वा, उव्वट्टेंति वा, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेंति वा, पधोवेंति वा, सिंचंति वा, सिणावेंति वा, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

२० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा णिगिणा ठिआ णिगिणा उवल्लीणा मेहुणधम्मं विण्णवेंति रहस्सियं वा मंतं मंतेंति, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा° ॥

२१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—आइण्णसंलेक्खं, णो पण्णस्स[2] °णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए। [सेवं णच्चा ?] तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

---

१ स० पा०—अक्कोसति वा तहेव तेल्लादि सिणाणादि सीओदगवियडादि णिगिणाइ य जहा सिज्जाए आलावगा णवरं ओग्गह-वत्तव्वया।

२ स० पा०—पण्णस्स जाव चिंताए।

२२ एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[1] •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि।

—त्ति बेमि° ॥

बीओ उद्देसो

२३ से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा, अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे[2] तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णविज्जा[3]। कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव'[4] ओग्गहं ओगिण्हिसामो, तेण परं विहरिस्सामो ॥

२४ से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि? जे तत्थ समणाण वा माहणाण वा छत्तए वा[5], •मत्तए वा, दंडए वा, लट्ठिया वा, भिसिया वा, नालिया वा, चेलं वा, चिलिमिली वा, चम्मए वा, चम्मकोसए वा°, चम्मछेदणए वा, तं णो अंतोहिंतो बाहिं णीणेज्जा, बहियाओ वा णो अंतो पवेसेज्जा, णो[6] सुत्तं वा णं पडिबोहेज्जा, णो तेसिं किंचि[7] अप्पत्तियं पडिणीयं करेज्जा ॥

अंब-ओग्गह-पद

२५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा अंबवणं उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुजाणावेज्जा। कामं खलु[8] •आउसो! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं° विहरिस्सामो ॥

२६ से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि? अह भिक्खू[9] इच्छेज्जा अंबं भोत्तए वा, [पायए वा?]। सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा—सअंडं[10] •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगं, तहप्पगारं अंबं—अफासुयं[11] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

---

१ स० पा०—सामग्गियं।
२ × (अ)।
३ °ण्णित्ता (अ, क, च, ब)।
४ एताव (अ, घ, च, ब), एतावता (क, छ)।
५ स० पा०—छत्तए वा जाव चम्मछेदणए।
६ × (क, घ, च, छ)।
७ किंचिवि (क, घ, च, ब)।
८. स० पा०—खलु जाव विहरिस्सामो।
९ भिक्खुणं (छ)।
१० स० पा०—सअंडं जाव संताणगं।
११ स० पा०—अफासुयं जाव णो।

२७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण अंबं जाणेज्जा—अप्पंडं[1] •अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°-संताणगं अतिरिच्छछिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं[2] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

२८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण अंबं जाणेज्जा—अप्पंडं[3] •अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°-संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं[4] •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ॥

२९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा अंबभित्तगं वा, अंबपेसियं वा, अंबचोयगं वा, अंबसालगं वा, अंबडगलं[5] वा भोत्तए वा, पायए वा। सेज्जं पुण जाणेज्जा—अंबभित्तगं वा जाव अंबडगलं वा सअंडं[6] •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगं—अफासुयं[7] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

३० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—अंबभित्तगं वा जाव अंबडगलं वा अप्पंडं[8] •अप्पाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं[9] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

३१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा अंबभित्तगं[10] वा जाव अंबडगलं वा अप्पंडं[11] •अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं[12] •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ॥

उच्छु ओग्गह-पदं

३२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा उच्छुवणं उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे[13], •जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुजाणावेज्जा। कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ॥

३३ से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि° एवोग्गहियंसि? अह भिक्खू इच्छेज्जा उच्छुं भोत्तए वा, पायए वा। सेज्जं [पुण ?] उच्छुं जाणेज्जा—सअंडं[14]

१,३ स० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं।
२ स० पा०—अफासुयं जाव णो।
४ स० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा।
५ °डालगं (अ, क घ, छ, ब)।
६ स० पा०—सअंडं जाव संताणगं।
७,९ स० पा०—अफासुयं जाव णो।
८,११ स० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं।
१० अंबं वा अंबचित्तगं (घ, च, छ)।
१२ स० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा।
१३ स० पा०—ईसरे जाव एवोग्गहियंसि।
१४ स० पा०—सअंडं जाव णो।

•सपाण सवीय सहरिय सउस सउदय सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-सताणग, तहप्पगार उच्छु—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते॰ णो पडिगाहेज्जा ॥

३४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण उच्छु जाणेज्जा—अप्पड[1] •अप्पपाण अप्पवीय अप्पहरिय अप्पोस अप्पुदय अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा॰ सताणग अतिरिच्छच्छिन्न[2] •अवोच्छिन्न—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

३५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण उच्छु जाणेज्जा—अप्पड अप्पपाण अप्पवीय अप्पहरिय अप्पोस अप्पुदय अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-सताणग तिरिच्छच्छिन्न वोच्छिन्न—फासुय एसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते पडिगाहेज्जा॰ ॥

३६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा[3] अतरुच्छुय वा, उच्छुगडिय वा, उच्छुचोयग वा, उच्छुसालग वा, उच्छुडगल वा भोत्तए वा, पायए वा। सेज्ज पुण जाणेज्जा—अतरुच्छुय वा जाव डगल वा सअड[4] •सपाण सवीय सहरिय सउस सउदय सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासताणग—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते॰ णो पडिगाहेज्जा ॥

३७ से भिक्खू वा भिक्खणी वा सेज्ज पुण जाणेज्जा—अतरुच्छुय वा जाव डगल वा अप्पड[5] •अप्पपाण अप्पवीय अप्पहरिय अप्पोस अप्पुदय अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासताणग अतिरिच्छच्छिन्न अवोच्छिन्न—अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ॥

३८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण जाणेज्जा—अतरुच्छुय वा जाव डगल वा अप्पड अप्पपाण अप्पवीय अप्पहरिय अप्पोस अप्पुदय अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासताणग तिरिच्छच्छिन्न वोच्छिन्न—फासुय एसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते पडिगाहेज्जा॰ ॥

लसुण-ओग्गह-पद

३९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा ल्हसुणवण उवागच्छित्तए, •[6]जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गह अणुजाणाविज्जा। काम खलु आउसो! अहालद अहापरिण्णाय वसामो, जाव आउसो, जाव आउसतस्स ओग्गहो,

---

१ स॰ पा॰—अप्पड जाव सताणग।

२ स॰ पा॰—अतिरिच्छच्छिन्न तहेव तिरिच्छच्छिन्न तहेव।

३ सेज्ज पुण अभिकखेज्जा (अ)।

४ स॰ पा॰—सअड जाव णो।

५ स॰ पा॰—अप्पड जाव पडिगाहेज्जा अतिरिच्छच्छिन्न तिरिच्छच्छिन्न तहेव।

६ स॰ पा॰—तहेव तिन्निवि आलावगा णवर ल्हसुण।

जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ॥

४० से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? अह भिक्खू इच्छेज्जा ल्हसुणं भोत्तए वा, [पायए वा ?] । सेज्जं पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—सअंडं सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं तहप्पगारं ल्हसुणं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

४१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

४२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा° ॥

४३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा ल्हसुणं[1] वा, ल्हसुण-कंदं वा, ल्हसुण-चोयगं वा, ल्हसुण-णालगं[2] वा भोत्तए वा, पायए वा । सेज्जं पुण जाणेज्जा—ल्हसुणं वा जाव ल्हसुण-णालगं वा सअंडं[4] °सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

४४ [5]°से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—ल्हसुणं वा जाव ल्हसुण-णालगं वा अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

४५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—ल्हसुणं वा जाव ल्हसुण-णालगं वा अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ॥

ओग्गह-पदं

४६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आगंतारेसु वा[6], °आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाणेज्जा—जे तत्थ ईसरे, जे

---

१ लहसुण (च), लसण (व) ।
२ डालग (अ, ब) ।
३ वीय (क्व) ।
४ स० पा०—सअंड जाव णो ।
५ स० पा०—एवं अतिरिच्छच्छिन्नेवि तिरिच्छ-च्छिन्ने जाव पडिगाहेज्जा ।
६ स० पा०—आगंतारेसु वा जावोग्गहियंसि ।

तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गह अणुण्णविज्जा। काम खलु आउसो ! अहालद अहापरिण्णाय वसामो, जाव आउसो, जाव आउसतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गह ओगिण्हिस्सामो, तेण पर विहरिस्सामो ॥

४७ से किं पुण तत्थ ओग्गहसि° एवोग्गहियसि ? जे तत्थ गाहावईण वा, गाहावइ-पुत्ताण वा इच्चेयाइ आयतणाइ[1] उवाइकम्म[2] ॥

ओग्गह-पडिमा-पदं

४८ अह भिक्खू जाणेज्जा इमाहिं सत्तहिं पडिमाहिं ओग्गह ओगिण्हित्तए ॥

४९ तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से आगतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गह जाएज्जा[3]—•जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गह अणुण्णविज्जा। काम खलु आउसो ! अहालद अहापरिणाय वसामो, जाव आउसो, जाव आउसतस्स ओग्गहो, जाव साह-म्मिया एत्ता, ताव ओग्गह ओगिण्हिस्सामो, तेण पर° विहरिस्सामो—पढमा पडिमा ॥

५० अहावरा दोच्चा पडिमा—जस्स ण भिक्खुस्स एव भवइ "अह च खलु अण्णेसिं भिक्खूण अट्ठाए ओग्गह ओगिण्हिस्सामि, अण्णेसिं भिक्खूण 'ओग्गहे ओग्गहिए'[4] उवल्लिस्सामि"—दोच्चा पडिमा ॥

५१ अहावरा तच्चा पडिमा—जस्स ण भिक्खुस्स एव भवइ "अह च खलु अण्णेसिं भिक्खूण अट्ठाए ओग्गह ओगिण्हिस्सामि, अण्णेसिं भिक्खूण च ओग्गहे ओग्गहिए णो उवल्लिस्सामि"—तच्चा पडिमा ॥

५२ अहावरा चउत्था पडिमा—जस्स ण भिक्खुस्स एव भवइ "अह च खलु अण्णेसिं भिक्खूण अट्ठाए ओग्गह णो ओगिण्हिस्सामि, अण्णेसिं च ओग्गहे ओग्गहिए उवल्लिस्सामि"—चउत्था पडिमा ॥

५३ अहावरा पचमा पडिमा—जस्स ण भिक्खुस्स एव भवइ, "अह च खलु अप्पणो अट्ठाए ओग्गह ओगिण्हिस्सामि, णो दोण्ह, णो तिण्ह, णो चउण्ह, णो पचण्ह—पचमा पडिमा ॥

५४ अहावरा छट्ठा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सेव ओग्गहे उवल्लि-एज्जा, जे तत्थ अहासमण्णागए, त जहा—इक्कडे वा[5] •कढिणे वा, जतुए वा, परगे वा, मोरगे वा, तणे वा, कुसे वा, कुच्चगे वा, पिप्पले वा°, पलाले वा।

---

१ आयाणाइ (क, च), आययाणाइ (घ), आयणाइ (छ), आययणा (व)।

२ परिहृत्यावग्रहमवग्रहीतु जानीयात् (वृ)।

३ स० पा०—जाएज्जा जाव विहरिस्सामो।

४ ओग्गहिए ओग्गहे (अ)।

५ स० पा०—इक्कडे वा जाव पलाले।

तस्स लाभे मवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए[1] वा, णेसज्जिए वा विहरेज्जा—छट्ठा पडिमा ।।

५५. अहावरा सत्तमा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहासथडमेव ओग्गह जाएज्जा, तजहा—पुढविसिल वा, कट्ठसिल वा अहासथडमेव, तस्स लाभे सवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुओ वा, णेसज्जिओ वा विहरेज्जा—सत्तमा पडिमा ।।

५६ इच्चेतासि सत्तण्ह पडिमाण अण्णयर[2] °पडिम पडिवज्जमाणे णो एव वएज्जा—मिच्छा पडिवन्ना खलु एते भयतारो, अहमेगे सम्म पडिवन्ने ।
जे एते भयतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताण विहरति, जो य अहमसि एय पडिम पडिवज्जित्ताण विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अण्णोण्णसमाहीए, एव च ण विहरति° ।।

पचविह-ओग्गह-पद

५७ सुय मे आउस ! ते ण भगवया एवमक्खाय—इह खलु थेरेहि भगवतेहि पचविहे ओग्गहे पण्णत्ते, तजहा—देविंदोग्गहे, रायोग्गहे, गाहावइ-ओग्गहे, सागारिय-ओग्गहे, साहम्मिय ओग्गहे ।।

५८ एय खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय[3], °ज सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि° ।।

---

१ उक्कुडए (अ, व) ।

२ स० पा०—अण्णयर जहा पिंडेसणाए ।

३ स० पा०—सामग्गिय ।

अट्ठमं अज्झयणं
ठाण-सत्तिक्कयं

ठाण-एसणा-पदं

१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा[1] ठाणं ठाइत्तए, से अणुपविसेज्जा 'गामं वा, णगरं वा'[2], •खेडं वा, कब्बडं वा, मडबं वा, पट्टणं वा, दोणमुहं वा, आगरं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा•, रायहाणिं वा[3], से अणुपविसित्ता गामं वा जाव रायहाणिं वा, सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—सअंडं[4] •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय°-मक्कडा-संताणयं, तं तहप्पगारं ठाणं—अफासुयं अणेसणिज्जं[5] •ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

२ [6]•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं। तहप्पगारे ठाणे पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा ॥

अस्सिंपडियाए ठाण-पदं

३ सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,

---

१ °कखेइ (अ, घ), °कखे (च, ब)।

२ स० पा०—णगरं वा जाव रायहाणिं।

३ गामं वा जाव सण्णिवेसं वा (अ, क, घ, च, छ, ब)।

४ सयडं (अ, च), स० पा०—सअंडं जाव मक्कडा।

५ स० पा०—अणेसणिज्जं लाभे।

६ स० पा०—एवं सेज्जागमेण णेयव्वं जाव उदगपसूयाइं ति।

अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

४ सेज्ज पुण ठाण जाणेज्जा—अस्सिपडियाए वहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेतेति । तहप्पगारे ठाणे पुरिसतरकडे वा अपुरिसतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

५ सेज्ज पुण ठाण जाणेज्जा—अस्सिपडियाए एग साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेतेति । तहप्पगारे ठाणे पुरिसतरकडे वा अपुरिसतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

६ सेज्ज पुण ठाण जाणेज्जा—अस्सिपडियाए वहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेतेति । तहप्पगारे ठाणे पुरिसतरकडे वा अपुरिसतरकडे वा अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-ठाण-पद

७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण ठाण जाणेज्जा—वहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएइ । तहप्पगारे ठाणे पुरिसतरकडे वा अपुरिसतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपुरिभुत्ते वा, आसेविए वा अणासेविए वा णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण ठाण जाणेज्जा—वहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएइ । तहप्पगारे ठाणे अपुरिसतरकडे, अणत्तट्ठिए, अपुरिभुत्ते, अणासेविए णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ।

९ अह पुणेव जाणेज्जा—पुरिसतरकडे, अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ सजयामेव ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

परिकम्मिय-ठाण-पद

१० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण ठाण जाणेज्जा—अस्सजए भिक्खु-

पडियाए कडिए वा, उक्कबिए वा, छन्ने वा, लित्ते वा, घट्ठे वा, मट्ठे वा, समट्ठे वा, सपधूमिए वा। तहप्पगारे ठाणे अपुरिसतरकडे, अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते, अणासेविए णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

११ अह पुणेव जाणेज्जा पुरिसतरकडे, अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ सजयामेव ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

१२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण ठाण जाणेज्जा—अस्सजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ महल्लियाओ कुज्जा, महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा, णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा, अतो वा वहि वा ठाणस्स हरियाणि छिंदिय-छिंदिय दालिय-दालिय सथारग सथारेज्जा, वहिया वा णिण्णक्खु, तहप्पगारे ठाणे अपुरिसतरकडे, अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते, अणासेविते णो ठाण वा, सेज्ज वा णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

१३ अह पुणेव जाणेज्जा—पुरिसतरकडे, अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ सजयामेव ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

वहिया निस्सारिय-ठाण-पद

१४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण [ठाण ?] जाणेज्जा—अस्सजए भिक्खु-पडियाए उदगप्पसूयाणि कदाणि वा, मूलाणि वा, [तयाणि वा ?], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, वीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाण साहरति, वहिया वा णिण्णक्खु, तहप्पगारे ठाणे अपुरिसतरकडे, अणत्तट्ठिए, अपुरिभुत्ते, अणासेविते णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ॥

१५ अह पुणेव जाणेज्जा—पुरिसतरकडे, अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ सजयामेव ठाण वा, सेज्ज वा णिसीहिय वा चेतेज्जा° ॥

ठाण-पडिमा-पद

१६ इच्चेयाइ आयतणाइ[1] उवातिकम्म, अह भिक्खू इच्छेज्जा चउहि पडिमाहिं ठाण ठाइत्तए ॥

१७ तत्थिमा पढमा पडिमा—अचित्त खलु उवसज्जिस्सामि[2], अवलबिस्सामि, काएण विपरिक्कमिस्सामि, सवियार ठाण ठाइस्सामि त्ति पढमा पडिमा ॥

---

१ आयाणाइ (क, घ, च)।

२ आदर्शेषु सूत्रचतुष्टयेऽपि 'उवसज्जेज्जा अवलवेज्जा, काएण विपरिक्कमादी' इति पाठो वर्तते। किन्तु प्रस्तुतपाठश्चूर्णिवृत्त्योराधारेण स्वीकृत ।

१८ अहावरा दोच्चा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जिस्सामि, अवलंबिस्सामि, काएण विपरिक्कमिस्सामि, णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि त्ति दोच्चा पडिमा ॥

१९ अहावरा तच्चा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जिस्सामि, णो अवलंबिस्सामि, णो काएण विपरिक्कमिस्सामि, णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि त्ति तच्चा पडिमा ॥

२० अहावरा चउत्था पडिमा—अचित्तं खलु[1] उवसज्जिस्सामि, णो अवलंबिस्सामि, णो काएण विपरिक्कमिस्सामि, णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि, वोसट्ठकाए वोसट्ठकेस-मंसु-लोम-णहे संणिरुद्धं वा ठाणं ठाइस्सामि त्ति चउत्था पडिमा ॥

२१ इच्चेयासिं चउण्हं पडिमाणं[2] अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा मिच्छा पडिवन्ना खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने ।
जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अण्णोण्णसमाहीए एवं च णं विहरंति ॥

संथारग-पच्चप्पण-पदं

२२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए । सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—सअंडं सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं, तहप्पगारं संथारगं णो पच्चप्पिणेज्जा ॥

२३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए । सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं, तहप्पगारं संथारगं पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, आयाविय-आयाविय, विणिद्धुणिय-विणिद्धुणिय तओ संजयामेव पच्चप्पिणेज्जा ॥

उच्चारपासवणभूमि-पदं

२४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा समाणे वा वसमाणे वा, गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा पुव्वामेव णं पण्णस्स उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहिज्जा ॥

२५ केवली बूया आयाणमेयं—अपडिलेहियाए उच्चारपासवणभूमीए, भिक्खू वा भिक्खुणी वा, राओ वा वियाले वा, उच्चारपासवणं परिट्ठवेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा, से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा, हत्थं वा, पायं वा, बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा, अण्णयरं वा कायंसि इंदिय-जायं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा भूयाणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीवियाओ ववरोवेज्ज वा ।

---

१ खलु णो (क, व) ।

२ सं० पा०—पडिमाणं जाव पग्गहियतरागं ।

अह भिक्खूण पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारण, एस उवएसो, ज पुव्वामेव पण्णस्स उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेज्जा ।।

ठाण-विहि-पदं

२६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा सेज्जा-सथारग-भूमिं पडिलेहित्तए, णण्णत्थ आयरिएण वा, उवज्झाएण वा, पवत्तीए वा, थेरेण वा, गणिणा वा, गणहरेण वा, गणावच्छेइएण वा, वालेण वा, वुड्ढेण वा, सेहेण वा, गिलाणेण वा, आएसेण वा, अतेण वा, मज्झेण वा, समेण वा, विसमेण वा, पवाएण वा, णिवाएण वा तओ सजयामेव पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय वहु-फासुय सेज्जा-सथारग सथारेज्जा ।।

२७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा वहु-फासुय सेज्जा-सथारग सथरेत्ता अभिकखेज्जा वहु-फासुए सेज्जा-सथारए दुरुहित्तए, से भिक्खू वा भिक्खुणी वा वहु-फासुए सेज्जा-सथारए दुरुहमाणे, से पुव्वामेव ससीसोवरिय काय पाए य पमज्जिय-पमज्जिय तओ सजयामेव वहु-फासुए सेज्जा-सथारगे दुरुहेज्जा, दुरुहेत्ता तओ सजयामेव वहु-फासुए सेज्जा-सथारए चिट्ठेज्जा ।।

२८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा वहु-फासुए सेज्जा-सथारए चिट्ठमाणे, णो अण्ण-मण्णस्स हत्थेण हत्थ, पाएण पाय, काएण काय आसाएज्जा । से अणासायमाणे तओ सजयामेव वहु-फासुए सेज्जा-सथारए चिट्ठेज्जा ।।

२९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उस्सासमाणे वा, णीसासमाणे वा, कासमाणे वा, छीयमाणे वा, जभायमाणे वा उड्डुए वा वायणिसग्गे वा करेमाणे, पुव्वामेव आसय वा, पोसय वा, पाणिणा परिपिहित्ता तओ सजयामेव ऊससेज्ज वा, णीससेज्ज वा, कासेज्ज वा, छीएज्ज वा, जभाएज्ज वा, उड्डुय वा वायणिसग्ग वा करेज्जा ।।

३० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—समा वेगया सेज्जा भवेज्जा, विसमा वेगया सेज्जा भवेज्जा, पवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सदस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-दस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सपरि-साडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सउवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिरुवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, तहप्पगाराहिं सेज्जाहिं सविज्जमाणाहिं° पग्गहियतराग विहरेज्जा, णेव किंचिवि वएज्जा[1] ।।

३१ एय खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय[2], °ज सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया° जएज्जासि । —त्ति वेमि ।।

---

१ चरेज्जा (अ) ।

२ स० पा०—सामग्गिय जाव जएज्जासि ।

नवमं अज्झयणं

णिसीहिया-सत्तिक्कयं

णिसीहिया-एसणा-पद

१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा णिसीहिय गमणाए, सेज्ज[1] पुण णिसीहिय जाणेज्जा—सअड[2] •सपाण मवीय सहरिय सउस सउदय सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-° मक्कडासताणय, तहप्पगार णिसीहिय—अफासुय अणेसणिज्ज[3] •ति मण्णमाणे° लाभे सते णो चेतिस्सामि[4] [चेएज्जा ?]

२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा णिसीहिय गमणाए, सेज्ज पुण णिसीहिय जाणेज्जा—अप्पड[5] •अप्पपाण अप्पवीय अप्पहरिय अप्पोस अप्पुदय अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-° मक्कडासताणय, तहप्पगार णिसीहिय—फासुय एसणिज्ज[6] •ति मण्णमाणे° लाभे सते चेतिस्सामि[7] [चेएज्जा ?] ॥

अस्सिपडियाए णिसीहिया-पद

३ "•सेज्ज पुण णिसीहिय जाणेज्जा—अस्सिपडियाए एग साहम्मिय समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेतेति। तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसतरकडाए

---

१ से (अ, क, घ, च, व)।

२ स० पा०—सअड जाव मक्कडा।

३ स० पा०—अणेसणिज्ज" लाभे।

४ वृत्तौ 'परिगृह्णीयात्' इति सस्कृत-रूप विद्यते 'चेतिस्सामि' इति पाठ सम्भवतो लिपिदोषेण जात। प्रकरणानुसारेणात्र कोष्ठकान्तर्गत पाठो युज्यते।

५. स० पा०—अप्पड जाव मक्कडा।

६ स० पा०—एसणिज्ज 'लाभे।

७ वृत्तौ 'गृह्णीयात्' इति सस्कृत-रूप विद्यते 'चेतिस्सामि' इति पाठ सम्भवतो लिपिदोषेण जात। प्रकरणानुसारेणात्र कोष्ठकान्तर्गत पाठो युज्यते।

८ स० पा०—एव सेज्जागमेण णेयव्व जाव उदगप्पसूयाइति।

वा अपुरिसतरकडाए वा, अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ।।

४ सेज्ज पुण णिसीहिय जाणेज्जा—अस्सिपडियाए वहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेतेति । तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसतरकडाए वा अपुरिसतरकडाए वा, अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ।।

५ सेज्ज पुण णिसीहिय जाणेज्जा—अस्सिपडियाए एग साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेतेति । तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसतरकडाए वा अपुरिसतरकडाए वा, अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ।।

६ सेज्ज पुण णिसीहिय जाणेज्जा—अस्सिपडियाए वहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेतेति । तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसतरकडाए वा अपुरिसतरकडाए वा, अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ।।

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-णिसीहिया-पद

७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण णिसीहिय जाणेज्जा—वहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएइ । तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसतरकडाए वा अपुरिसतरकडाए वा, अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाण वा, सेज्ज वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण णिसीहिय जाणेज्जा—वहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु चेएइ । तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसतरकडाए, अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो ठाणं वा, सेज्ज वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ।।

९ अह पुणेव जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, अत्तट्ठिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

परिकम्मिय-णिसीहिया-पदं

१० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कंविए वा, छन्ने वा, लित्ते वा, घट्ठे वा, मट्ठे वा, संमट्ठे वा, संपधूमिए वा, तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

११ अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, अत्तट्ठिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

१२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ महल्लियाओ कुज्जा, महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा, णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा, अंतो वा बहिं वा णिसीहियाए हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, दालिय-दालिय संथारगं संथरेज्जा, बहिया वा णिण्णक्खु, तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

१३ अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, अत्तट्ठिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

बहिया निस्सारिय-णिसीहिया-पदं

१४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण [णिसीहियं?] जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, [तयाणि वा?], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु, तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

१५ अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, अत्तट्ठिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा° ॥

१६ जे तत्थ दुवग्गा वा तिवग्गा वा चउवग्गा वा पचवग्गा वा अभिसधारेति णिसीहिय गमणाए, ते णो अण्णमण्णस्स काय आलिगेज्ज वा विलिगेज्ज वा, चुवेज्ज वा, दतेहिं णहेहि वा अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज[1] वा ।।

१७ एय खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय, ज सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जा सेयमिण मणेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

---

१ वोच्छि० (च)।

दसमं अज्झयणं

उच्चारपासवण-सत्तिक्कयं

पाय-पुछण-पद

१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उच्चारपावसण-किरियाए उव्वाहिज्जमाणे[1] सयस्स पायपुछणस्स असईए तओ पच्छा साहम्मिय जाएज्जा ।।

थंडिल-पद

२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थंडिल जाणज्जा—सअंड सपाण[2] •सबीअ सहरिय सउस सउदय सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-°मक्कडासताणय, तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवण वोसिरेज्जा ।।

३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थंडिल जाणेज्जा—अप्पंड[3] अप्पपाण अप्पबीअ[4] •अप्पहरिय अप्पोस अप्पुदय अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-°मक्कडासताणय, तहप्पगारंसि थंडिलंसि उच्चारपासवण वोसिरेज्जा ।।

४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थंडिल जाणेज्जा—अस्सिपडियाए एग साहम्मिय समुद्दिस्स[5] •पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु उद्देसिय चेएइ । तहप्पगार थंडिल पुरिसतरकड वा अपुरिसतरकड वा, अत्तट्ठिय वा अणत्तट्ठिय वा, परिभुत्त वा

---

१ उप्पा° (क) ।

२ स० पा०—सपाण जाव मक्कडा ।

३ आदर्शेषु एतत् पद न दृश्यते, वृत्तौ च उल्लिखितमस्ति । 'सअड' इति पदस्य प्रतिपक्षे 'अप्पड' इति पद स्वत प्राप्तमस्ति ।

४. स० पा०—अप्पबीअ जाव मक्कडा ।

५ स० पा०—अस्सिपडियाए एग साहम्मिय समुद्दिस्स अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स अस्सिपडियाए एग साहम्मिणि समुद्दिस्स अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स अस्सिपडियाए बहवे समणमाहण पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइ ४ जाव उद्देसिय चेतेति, तहप्पगार थंडिल पुरिसतरकड वा जाव बहिया णीहड वा अणीहड वा ।

अपरिभुत्त वा, आसेविय वा अणासेविय वा, अण्णयरसि वा तहप्पगारसि थडिलसि णो उच्चारपासवण वोसिरेज्जा ।।

५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थडिल जाणेज्जा—अस्सिपडियाए वहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु उद्देसिय चेएइ । तहप्पगार थडिल पुरिसतरकड वा जाव अणासेविय वा, अण्णयरसि वा तहप्पगारसि थडिलसि णो उच्चारपासवण वोसिरेज्जा ।।

६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थडिल जाणेज्जा—अस्सिपडियाए एग साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु उद्देसिय चेएइ । तहप्पगार थडिल पुरिसतरकड वा जाव अणासेविय वा, अण्णयरसि वा तहप्पगारसि थडिलसि णो उच्चारपासवण वोसिरेज्जा ।।

७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थडिल जाणेज्जा—अस्सिपडियाए वहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु उद्देसिय चेएइ । तहप्पगार थडिल पुरिसतरकड वा जाव अणासेविय वा, अण्णयरसि वा तहप्पगारसि थडिलसि णो उच्चारपासवण वोसिरेज्जा ।।

८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थडिल जाणेज्जा—अस्सिपडियाए वहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु उद्देसिय चेएइ । तहप्पगार थडिल पुरिसतरकड वा जाव अणासेविय वा, अण्णयरसि वा तहप्पगारसि थडिलसि णो उच्चारपासवण वोसिरेज्जा° ।।

९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थडिल जाणेज्जा—वहवे समण-माहण-किवण-वणीमग-अतिही[1] समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टु उद्देसिय चेएइ । तहप्पगार थडिल अपुरिसतरकड[2], °अणत्तट्ठिय, अपरिभुत्त, अणासेविय°, अण्णयरसि वा तहप्पगारसि थडिलसि णो उच्चारपासवण वोसिरेज्जा ।।

१० अह पुणेव जाणेज्जा—पुरिसतरकड[3], °अत्तट्ठिय, परिभुत्त, आसेविय°, अण्णयरसि वा तहप्पगारसि थडिलसि उच्चारपासवण वोसिरेज्जा ।।

---

१. पूर्वपाठेभ्य (१।१७, २ ८, ५।१०) अस्य शब्द-विन्यासो भिन्नोस्ति ।

२. स० पा०—अपुरिसतरकड जाव वहिया अणीहड वा अण्णयरसि ।

३ स० पा०—पुरिसतरकड जाव वहिया णीहड वा अण्णयरसि ।

११ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थंडिलं जाणेज्जा—अस्सिपडियाए कयं वा, कारियं वा, पामिच्चियं[1] वा, छण्णं वा, घट्ठं वा, मट्ठं वा, लित्तं वा, समट्ठं वा, संपधूमियं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थंडिलं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा, गाहावइ-पुत्ता वा कंदाणि वा, मूलाणि वा[2], •[तयाणि वा ?], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा°, हरियाणि वा अंतातो वा बाहिं णीहरंति, बहियाओ[3] वा अंतो साहरंति, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थंडिलं जाणेज्जा—खंधंसि वा, पीढंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, अट्टंसि[4] वा, पासायंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थंडिलं जाणेज्जा—अणंतरहियाए पुढवीए, ससिणिद्धाए पुढवीए, ससरक्खाए पुढवीए, मट्टियाकडाए[5], चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंताए लेलुयाए, कोलावासंसि वा[6] दारुयंसि जीवपइट्ठियंसि[7] •सअंडंसि सपाणंसि सबीअंसि सहरियंसि सउसंसि सउदयंसि सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-°मक्कडासंताणयंसि, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-पासवणं वोसिरेज्जा ॥

१५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थंडिलं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा, गाहावइ-पुत्ता वा कंदाणि वा[8], •मूलाणि वा, [तयाणि वा ?], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा°, बीयाणि वा परिसाडेंसु वा परिसाडेंति वा परिसाडिस्संति वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थंडिलं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा, गाहावइ-पुत्ता वा सालीणि वा, वीहीणि वा, मुग्गाणि वा, मासाणि वा, तिलाणि

---

१ पामिच्चिय (अ, क, घ, च)।
२ सं० पा०—मूलाणि वा जाव हरियाणि।
३ वाहीतो (अ, क)।
४ हम्मियतलंसि (घ)।
५ एष पाठो निशीथस्य (१४।२३)। सूत्रानुसारेण स्वीकृतः। सर्वासु आचाराङ्गप्रतिषु 'मट्टिया मक्कडाए' इति पाठोस्ति। असौ न शुद्धः प्रतिभाति।
६ अस्मिन् सूत्रे प्रतिषु 'वा' शब्दस्य प्रयोगा अधिका दृश्यन्ते, यथा 'वा दारुयंसि वा जीवपइट्ठियंसि वा' किन्तु १।५१ सूत्रानुसारेण 'वा' शब्दः सकृदेव युज्यते।
७ सं० पा०—जीवपइट्ठियंसि जाव मक्कडा।
८ सं० पा०—कंदाणि जाव बीयाणि।

वा, कुलत्थाणि वा, जवाणि वा, जवजवाणि वा, पासारेसु वा पासारंसि वा[1] पतिरिस्सति वा, अण्णयरसि वा तहप्पगारसि थडिलसि णो उच्चारपासवण वोसिरेज्जा ॥

७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थडिल जाणेज्जा— आमोयाणि वा घसाणि वा, भिलुयाणि वा, विज्जलाणि वा, खाणुयाणि वा, कडवाणि[2] वा, पगत्ताणि वा, दरीणि वा, पदुग्गाणि वा, समाणि वा, विसमाणि वा, अण्णयरसि वा तहप्पगारसि थडिलसि णो उच्चारपासवण वोसिरेज्जा ॥

८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थडिल जाणेज्जा—माणुस-रधणाणि वा, महिस-करणाणि वा, वसभ-करणाणि वा, अस्स-करणाणि वा कुक्कुड-करणाणि वा, लावय-करणाणि वा, वट्टय-करणाणि वा, तित्तिर-करणाणि वा, कवोय-करणाणि वा, कपिंजल-करणाणि वा, अण्णयरसि वा तहप्पगारसि थडिलसि णो उच्चारपासवण वोसिरेज्जा ॥

९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थडिल जाणेज्जा—वेहाणस-ट्ठाणेसु वा, गिद्धपिट्ठ-ट्ठाणेसु वा, तरुपडण[3]-ट्ठाणेसु वा, 'मेरुपडण-ट्ठाणेसु'[4] वा, विसभक्खण-ट्ठाणेसु वा, अगणिफडण[5]-ट्ठाणेसु वा, अण्णयरसि वा तहप्पगारसि [थडिलसि ?] णो उच्चारपासवण वोसिरेज्जा ॥

१० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थडिल जाणेज्जा—आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसडाणि वा, देवकुलाणि वा, सभाणि वा, पवाणि वा, अण्णयरसि वा तहप्पगारसि थडिलसि णो उच्चारपासवण वोसिरेज्जा ॥

११ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थडिल जाणेज्जा—अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि वा, अण्णयरसि वा तहप्पगारसि थडिलसि णो उच्चारपासवण वोसिरेज्जा ॥

१२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थडिल जाणेज्जा - तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा, चउमुहाणि वा, अण्णयरसि वा तहप्पगारसि थडिलसि णो उच्चारपासवण वोसिरेज्जा ॥

१३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थडिल जाणेज्जा—इगालडाहेसु वा, खारडाहेसु वा, मडयडाहेसु वा, मडयथूभियासु वा, मडयचेइएसु वा, अण्णयरसि वा तहप्पगारसि थडिलसि णो उच्चारपासवण वोसिरेज्जा ॥

१४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थडिल जाणेज्जा—णदीआययणेसु वा,

---

१ पइरसु वा पइरति वा (घ, च, छ)।

२ कडवाणि (अ, व)।

३ •पवडण (अ, च, छ)।

४ × (छ)।

५ °फडय (क,ख,घ,च), °पडण (छ)।

पकायतणेसु वा, ओघायतणेसु वा, सेयणपहंसि[1] वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

२५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—णवियासु वा मट्टियखाणियासु, णवियासु वा गोप्पलेहियासु, गवायणीसु[2] वा, खाणीसु वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

२६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—डागवच्चंसि वा, सागवच्चंसि वा, मूलगवच्चंसि वा, हत्थंकरवच्चंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

२७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—असणवणंसि वा, सणवणंसि वा, धायइवणंसि वा, केयइवणंसि वा, अंबवणंसि वा, असोगवणंसि वा, णागवणंसि वा, पुण्णागवणंसि वा[3], अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु पत्तोवएसु वा, पुप्फोवएसु वा, फलोवएसु वा, बीओवएसु वा, हरिओवएसु वा णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा[4] ॥

२८ से[5] भिक्खू वा भिक्खुणी वा सपायं वा परपायं वा गहाय से तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा अणावायंसि असंलोयंसि[6] अप्पपाणंसि[7] •अप्पबीअंसि अप्पहरियंसि अप्पोसंसि अप्पुदयंसि अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-°मक्कडासंताणयंसि अहारामंसि वा उवस्सयंसि तओ संजयामेव उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा[8] ॥

से तमायाए एगंतमवक्कमे अणावायंसि जाव मक्कडासंताणयंसि अहारामंसि वा, झामथंडिलंसि[9] वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि अचित्तंसि तओ संजयामेव उच्चारपासवणं परिट्ठवेज्जा ॥

२९ एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[10], •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया° जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

---

१ °वहंसि (अ), °पथ (छ) ।

२ गवाणीसु (अ, घ) ।

३ वा पुण्णगवणंसि वा (अ) ।

४ अस्मिन् सूत्रे चूर्णौ 'गुत्तागारादय' अनेके शब्दा व्याख्याता सन्ति । ते वृत्तौ प्रतिषु च नोपलभ्यन्ते ।

५ चूर्णौ भिन्नरूपं पाठो व्याख्यातो दृश्यते—'से भिक्खू वा २ राओ वा वियाले वा, वारग णाम उच्चारमत्तओ, अप्पणगं परायगं वा जाइत्ता अभिग्गहिओ धरेति न णिक्खवति विगिंचति वोसिरति विसोहिति निल्लेवेति से तमादाए झामथंडिलादीसु परिट्ठावेति' ।

६ °लोइयंसि (अ) ।

७ सं० पा०—अप्पपाणंसि जाव मक्कडा ।

८ वोसिरेज्जा उच्चारपासवणं वोसिरित्ता (क्व) ।

९ द्रष्टव्यम्—१।३ ।

१०. सं० पा०—सामग्गियं जाव जएज्जासि ।

एगारसमं अज्झयणं

सद्द-सत्तिक्कयं

वितत-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं

१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा [अहावेगइयाइ सद्दाइ सुणेइ, त जहा ?] मुइंग-सद्दाणि वा, 'नदीमुइंगसद्दाणि वा'[1], झल्लरीसद्दाणि वा, अण्णयराणि वा तहप्पगाराणि विरूवरूवाणि वितताइ सद्दाइ कण्णसोय-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

तत-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं

२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ सद्दाइ सुणेइ, त जहा—वीणा-सद्दाणि वा, विपची-सद्दाणि वा, वद्धीसग[2]-सद्दाणि वा, तुणय-सद्दाणि वा, पणव[3]-सद्दाणि वा, तुववीणिय-सद्दाणि वा, ढकुण[4]-सद्दाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ सद्दाइ तताइ कण्णसोय-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

ताल-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पद

३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ सद्दाइ सुणेति, त जहा—ताल-सद्दाणि वा, कसताल-सद्दाणि वा, लत्तिय-सद्दाणि वा, गोहिय-सद्दाणि वा, किरिकिरिय-सद्दाणि वा, अण्णयराणि वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ तालसद्दाइ कण्णसोय-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

झुसिर-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पद

४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ सद्दाइ सुणेति, त जहा—सख-सद्दाणि

---

१ × (क, च) ।

२ वप्पी° (घ, च), पप्पी° (छ), वव्वी° (क्व) ।

३ पणय (अ, छ, व) ।

४ ढकुण (अ) ।

वा, वेणु-सद्दाणि वा, वस-सद्दाणि वा, खरमुहि-सद्दाणि वा, पिरिपिरिय[1]-सद्दाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ सद्दाइ भुसिराइ[2] कण्णसोय-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

विविह-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पद

५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ सद्दाइ सुणेति, त जहा—वप्पाणि वा, फलिहाणि वा[3], •उप्पलाणि वा, पल्ललाणि वा, उज्झराणि वा, णिज्झराणि वा, वावीणि वा, पोक्खराणि वा, दीहियाणि वा, गुजालियाणि वा°, सराणि वा, सागराणि वा, सरपतियाणि वा, सरसरपतियाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ सद्दाइ कण्णसोय-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ सद्दाइ सुणेति, त जहा—कच्छाणि वा, णूमाणि वा, गहणाणि वा, वणाणि वा, वणदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वयदुग्गाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ सद्दाइ कण्णसोय-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ सद्दाइ सुणेति, त जहा—गामाणि वा, णगराणि वा, णिगमाणि वा, रायहाणीणि वा, आसम-पट्टण-सन्निवेसाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ[4] •विरूवरूवाइ सद्दाइ कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ सद्दाइ सुणेति, त जहा—आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसडाणि वा, देवकुलाणि वा, सभाणि वा, पवाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ[5] •विरूवरूवाइ सद्दाइ कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ सद्दाइ सुणेति, त जहा—अट्टाणि वा, अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ[6] •विरूवरूवाइ सद्दाइ कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

१० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ सद्दाइ सुणेति, त जहा—तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा, चउम्मुहाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ[7] •विरूवरूवाइ सद्दाइ कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

---

१ °परि (अ, वृ), परिपरिय (क, च, छ, ब)।

२ प्रथम-तृतीय-सूत्रयो 'विततताइ सद्दाइ, ताल-सद्दाइ' इति पाठोस्ति तथा द्वितीय-चतुर्थ-सूत्रयो सद्दाइ तताइ, सद्दाइ भुसिराइ' इति पाठोस्ति । एव विशेष्य विशेषणयोर्व्यत्ययोस्ति ।

३ स० पा०—फलिहाणि वा जाव सराणि ।

४-७ स० पा०—तहप्पगाराइ सद्दाइ णो ।

११ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—महिसट्ठाण-करणाणि वा, वसभट्ठाण-करणाणि वा, अस्सट्ठाण-करणाणि वा, हत्थिट्ठाण-करणाणि वा[1], °कुक्कुडट्ठाण-करणाणि वा, मक्कडट्ठाण-करणाणि वा, लावयट्ठाण-करणाणि वा, वट्टयट्ठाण-करणाणि वा, तित्तिरट्ठाण-करणाणि वा, कवोयट्ठाण-करणाणि वा°, कविंजलट्ठाण-करणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[2] °विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—महिस-जुद्धाणि वा, वसभ-जुद्धाणि वा, अस्स-जुद्धाणि वा, हत्थि-जुद्धाणि वा[3], °कुक्कुड-जुद्धाणि वा, मक्कड-जुद्धाणि वा, लावय-जुद्धाणि वा, वट्टय-जुद्धाणि वा, तित्तिर-जुद्धाणि वा, कवोय-जुद्धाणि वा°, कविंजल-जुद्धाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[4] °विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—'जूहिय-ट्ठाणाणि'[5] वा, हयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, गयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[6] °विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[7] °अहावेगइयाइं सद्दाइं° सुणेति, तं जहा—अक्खाइय-ट्ठाणाणि वा, माणुम्माणिय-ट्ठाणाणि वा, महयाहय-णट्ट-गीय-वाइय-तंति-तल-ताल-तुडिय-पडुप्पवाइय-ट्ठाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[8] °विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[9] °अहावेगइयाइं सद्दाइं° सुणेति, तं जहा—कलहाणि वा, डिंबाणि वा, डमराणि वा, दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[10] °विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[11] °अहावेगइयाइं° सद्दाइं सुणेति, तं जहा—खुड्डियं दारियं परिवुतं[12] मंडियालंकियं[13] निवुज्झमाणिं पेहाए, एगं पुरिसं वा वहाए

---

१ स० पा०—हत्थिट्ठाण-करणाणि वा जाव कविंजल ।
२ स० पा०—तहप्पगाराइं सद्दाइं णो ।
३ स० पा०—हत्थि-जुद्धाणि वा जाव कविंजल ।
४ स० पा०—तहप्पगराइं णो ।
५ निशीथे १२ उद्देशके २६ सूत्रे 'उज्जूहिया ठाणाणि' इति पाठो विद्यते ।
६ स० पा०—तहप्पगाराइं णो ।
७ स० पा०—भिक्खू वा २ जाव सुणेति ।
८ स० पा०—तहप्पगाराइं णो ।
९ स० पा०—भिक्खू वा २ जाव सुणेति ।
१० स० पा०—तहप्पगाराइं सद्दाइं णो ।
११ स० पा०—भिक्खू वा २ जाव सद्दाइं ।
१२ परिभुय (क्व), मण्डितालङ्कृता बहुपरिवृता (वृ) ।
१३ मंडिय° (घ, छ) ।

णीणिज्जमाण पेहाए, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ[1] •विरूवरूवाइ सद्दाइ कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

१७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइ विरूवरूवाइ महासवाइ एव जाणेज्जा, त जहा—वहुसगडाणि वा, वहुरहाणि वा, वहुमिलक्खूणि वा, वहुपच्चताणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ महासवाइ कण्णसोय-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

१८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइ विरूवरूवाइ महुस्सवाइ एव जाणेज्जा, त जहा—इत्थीणि वा, पुरिसाणि वा, थेराणि वा, डहराणि वा, मज्झिमाणि[2] वा, आभरण-विभूसियाणि वा, गायताणि वा, वायताणि वा, णच्चताणि वा, हसताणि वा, रमताणि वा, मोहताणि वा, विउल असण पाण खाइम साइम परिभुजताणि वा, परिभाइताणि वा, विच्छड्डियमाणाणि वा, विगोवयमाणाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ महुस्सवाइ कण्णसोय-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

सद्दासत्ति-पद

१९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो इहलोइएहिं सद्देहिं, णो परलोइएहिं सद्देहिं, णो सुएहिं सद्देहिं, णो असुएहिं सद्देहिं, णो दिट्ठेहिं सद्देहिं, णो अदिट्ठेहिं सद्देहिं, णो इट्ठेहिं सद्देहिं, णो कतेहिं सद्देहिं सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा ॥

२० एय खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय,[3] •ज सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया° जएज्जासि ।

—त्ति वेमि ॥

---

१ स० पा०—तहप्पगाराइ णो ।
२. मज्झ° (छ, व) ।
३. स० पा०—सामग्गिय जाव जएज्जासि ।

बारसमं अज्झयणं
रूव-सत्तिक्कयं

विविह-रूव-चक्खुदसण-पडिया-पद

१ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ रूवाइ पासइ, त जहा—गथिमाणि वा, वेढिमाणि वा, पूरिमाणि वा, सघाइमाणि वा, कट्ठकम्माणि[1] वा, पोत्यकम्माणि वा, चित्तकम्माणि वा, मणिकम्माणि वा, दतकम्माणि वा[2], पत्तच्छेज्जकम्माणि वा, 'विहाणि वा, वेहिमाणि वा'[3], अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ [रूवाइ ?] चक्खुदसण-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

२ [4]से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ रूवाइ पासाइ, त जहा—वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, उप्पलाणि वा, पल्ललाणि वा, उज्झराणि वा, णिज्झराणि वा, वावीणि वा, पोक्खराणि वा, दीहियाणि वा, गुजालियाणि वा, सराणि वा, सागराणि वा, सरपतियाणि वा, सरसरपतियाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ रूवाइ चक्खुदसण-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

३ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ रूवाइ पासइ, त जहा—कच्छाणि वा, णूमाणि वा, गहणाणि वा, वणाणि वा, वणदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वयदुग्गाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ रूवाइ चक्खुदसण-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ॥

---

१ कट्ठाणि (क, घ, च)।

२ वा मालकम्माणि वा (अ, क, घ, च, छ, व), वृत्तौ चूर्णौ च न व्याख्यातम्, अतो न गृहीतम्।

३ विविहाणि वा वेढिमाइ (अ, क, घ, छ, व)। निशीथस्य १२ उद्देशकस्य १७ सूत्रानुसारेण अय पाठ स्वीकृत। आचाराङ्ग-प्रतिपु लिपि-दोषाद् वर्णविपर्ययो जात इति प्रतीयते।

४ स० पा०—एव णायव्व जहा सद्द पडियाए सव्वा वाइत्तवज्जा रूव-पडियाए वि।

४ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ रूवाइ पासइ, त जहा—गामाणि वा, णगराणि वा, णिगमाणि वा, रायहाणीणि वा, आसम-पट्टण-सन्निवेसाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ रूवाइ चक्खुदसण-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ।।

५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ रूवाइ पासइ, त जहा—आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसडाणि वा, देवकुलाणि वा, सभाणि वा, पवाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ रूवाइ चक्खुदसण-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ।।

६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ रूवाइ पासइ त जहा—अट्टाणि वा, अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ रूवाइ चक्खुदसण-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ।।

७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ रूवाइ पासइ, त जहा—तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा, चउम्मुहाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ रूवाइ चक्खुदसण-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ।।

८ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ रूवाइ पासइ, त जहा—महिसट्ठाण-करणाणि वा, वसभट्ठाण-करणाणि वा, अस्सट्ठाण-करणाणि वा, हत्थिट्ठाण-करणाणि वा, कुक्कुडट्ठाण-करणाणि वा, मक्कडट्ठाण-करणाणि वा, लावयट्ठाण-करणाणि वा, वट्टयट्ठाण-करणाणि वा, तित्तिरट्ठाण-करणाणि वा, कवोयट्ठाण-करणाणि वा, कविंजलट्ठाण-करणाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ रूवाइ चक्खुदसण-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ।।

९ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ रूवाइ पासइ, त जहा—महिस-जुद्धाणि वा, वसभ-जुद्धाणि वा, अस्स-जुद्धाणि वा, हत्थि-जुद्धाणि वा, कुक्कड-जुद्धाणि वा, मक्कड-जुद्धाणि वा, लावय-जुद्धाणि वा, वट्टय-जुद्धाणि वा, तित्तिर-जुद्धाणि वा, कवोय-जुद्धाणि वा, कविंजल-जुद्धाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ रूवाइ चक्खुदसण-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ।।

१० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ रूवाइ पासइ, त जहा—जूहिय-ट्ठाणाणि वा, हयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, गयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ रूवाइ चक्खुदसण-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ।।

११ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ रूवाइ पासइ, त जहा—अक्खाइयट्ठाणाणि वा, माणुम्माणिय-ट्ठाणाणि वा, महयाहय-णट्ट-गीय-वाइय-

तति-तल-ताल-तुडिय-पडुप्पवाइय-ट्ठाणाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ रूवाइ चक्खुदसण-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ।।

१२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ रूवाइ पासइ त जहा—कलहाणि वा, डिवाणि वा, डमराणि वा, दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ रूवाइ चक्खुदसण-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ।।

१३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाई रूवाइ पासइ, त जहा—खुड्डिय दारिय परिवुत मडियालकिय निवुज्झमाणि पेहाए, एग पुरिस वा वहाए णीणिज्जमाण पेहाए, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ रूवाइ चक्खुदसण-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ।।

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइ विरूवरूवाइ महासवाइ एव जाणेज्जा, त जहा—वहुसगडाणि वा, वहुरहाणि वा, वहुमिलक्खूणि वा, वहुपच्चताणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ महासवाइ चक्खुदसण-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ।।

१५ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइ विरूवरूवाइ महुस्सवाइ एव जाणेज्जा, त जहा—इत्थीणि वा, पुरिसाणि वा, थेराणि वा, डहराणि वा, मज्झिमाणि वा, आभरण-विभूसियाणि वा, गायताणि वा, वायताणि वा, णच्चताणि वा, हसताणि वा, रमताणि वा, मोहताणि, वा विउल असण पाण खाइम साइम परिभुजताणि वा, परिभाइताणि वा, विच्छड्डियमाणाणि वा, विगोवयमाणाणि वा, अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूवरूवाइ महुस्सवाइ चक्खुदसण-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए ।।

रूवासत्ति-पद

१६ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो इहलोइएहिं रूवेहिं, णो परलोइएहिं रूवेहिं, णो सुएहिं रूवेहिं, णो असुएहिं रूवेहिं, णो दिट्ठेहि रूवेहिं, णो अदिट्ठेहिं रूवेहिं, णो इट्ठेहिं रूवेहिं, णो कतेहि रूवेहि सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा ।।

१७ एय खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय ज सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि° ।

—त्ति वेमि ।।

तेरसमं अज्झयणं

परकिरिया-सत्तिक्कयं

किरिया-पदं

१. परकिरियं अज्झत्थियं संसेसियं—णो त साइए[1], णो त णियमे ।।

पाद-परिकम्म-पद

२ 'से से'[2] परो पादाइ आमज्जेज्ज वा, 'पमज्जेज्ज वा'[3]—णो त साइए, णो त णियमे ।।

३ से से परो पादाइ संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा – णो त साइए, णो त णियमे ।।

४ से से परो पादाइ फूमेज्ज वा, रएज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

५ से से परो पादाइ तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए[4] वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज[5] वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

६ से से परो पादाइं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

७ से से परो पादाइ सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

८ से से परो पादाइ अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

९. से से परो पादाइ अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

---

१ सायए (घ) ।

२. सिया से (क, घ, च) सर्वत्र ।

३. × (अ, क, च, छ, ब) ।

४ निशीथे सर्वत्रापि 'तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा, णवणीएण वा' इति पाठो विद्यते ।

५ भिल ° (छ) ।

१० से से परो पादाओ खाणु[1] वा, कटय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥
११ से से परो पादाओ पूयं वा, सोणिय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

काय-परिकम्म-पद

१२ से से परो काय आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥
१३ से से परो काय सवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो त साइए णो त णियमे ॥
१४ से से परो काय तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, अब्भगेज्ज[2] वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥
१५ से से परो काय लोद्धेण[3] वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥
१६ से से परो काय सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥
१७ से से परो काय अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥
१८ से से परो काय अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

वण-परिकम्म-पद

१९ से से परो कायसि वण आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।
२० से से परो कायसि वण सवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥
२१ से से परो कायसि वण तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिगेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥
२२ से से परो कायसि वण लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥
२३ से से परो कायसि वण सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

---

१ खाणुय (क, घ, च, व) ।
२ भिल्लगेज्ज (च) ।
३ लोद्देण (अ, क) ।

२४ 'से से परो कायसि वण अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

२५ से से परो कायसि वण अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे'[1] ।।

२६ से से परो कायसि वण अण्णयरेण सत्थ-जाएण अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

२७ से से परो कायसि वण अण्णयरेण सत्थ-जाएण अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा पूय वा, सोणिय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

गड-परिकम्म-पद

२८ से से परो कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय[2] वा, भगदल वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

२९ से से परो कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा सवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

३० से से परो कायसि गड वा[3], °अरइय वा, पिडय वा°, भगदल वा तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा णो त साइए, णो त णियमे ।।

३१ से से परो कायसि गड वा[4], °अरइय वा, पिडय वा°, भगदल वा लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

३२ से से परो कायसि गड वा[5], °अरइय वा, पिडय वा°, भगदल वा सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।

[से से परो कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे । से से परो कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे][6] ।।

---

१ २४-२५ सूत्रे कोष्ठकोल्लिखित-प्रतिषु न विद्येते (अ, क, घ, च, छ) ।

२ पुलय (अ, च), पुलइय (क, छ, व), पुलइ (घ) । एव सर्वासु प्रतिषु 'पिडय' पाठ नोपलभ्यते, किन्तु उपलब्ध-पाठाना नार्थोऽवगम्यते । निशीथे तृतीयोद्देशके चतुस्त्रिशत्तम-सूत्रे 'पिडय' पाठ । अस्मिन् प्रकरणे स सम्यग्, इति स पाठ स्वीकृत । उक्तप्रतिपाठा लिपिदोषेण विकृता इति प्रतीयते ।

३,४,५ स० पा०—गड वा जाव भगदल ।

६ २४-२५ सूत्राङ्कानुसारेण अत्रापि कोष्ठकान्तर्गते सूत्रे युज्येते, परन्तु प्रतिषु नोपलभ्यते ।

३३ से से परो कायसि गड वा[1], •अरइय वा, पिडय वा°, भगदल वा अण्णयरेण सत्थ-जाएण अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥
३४ से से परो कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा अण्णयरेण सत्थजाएण अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा पूय वा, सोणिय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

मल-णीहरण-पद

३५ से से परो कायाओ सेय वा, जल्ल वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥
३६ से से परो अच्छिमल वा, कण्णमल वा, दतमल वा, णहमल वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

वाल-रोम-पद

३७ से से परो दीहाइ वालाइ, दीहाइ रोमाइ, दीहाइ भमुहाइ, दीहाइ कक्खरोमाइ, दीहाइ वत्थिरोमाइ कप्पेज्ज वा, सठवेज्ज[2] वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

लिक्ख-जूया-पद

३८ से से परो सीसाओ लिक्ख वा, जूय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

पाद-परिकम्म-पद

३९ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइ आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥
४० [3]•से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइ सवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥
४१ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइ फूमेज्ज वा, रएज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥
४२ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइ तेल्लेण वा घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिगेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥
४३ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइ लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

---

१ स० पा०—गड वा जाव भगदल ।
२ सवद्धेज्ज (च), सवज्जेज्ज (छ) ।
३ स० पा०—एव हिट्ठिमो गमो पायादि भाणियव्वो ।

४४ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइ सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

४५ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइ अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

४६ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइ अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा णो त साइए, णो त णियमे ॥

४७ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाओ खाणु वा, कटय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

४८ स से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाओ पूय वा, सोणिय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

काय-परिकम्म-पद

४९ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता काय आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

५० से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता काय सवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

५१ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता काय तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, अब्भगेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

५२ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता काय लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

५३ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता काय सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

५४ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता काय अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

५५ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता काय अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

वण-परिकम्म-पद

५६ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि वण आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

५७ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि वण सवाहेज्ज वा, लिमद्देज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

५८ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि वण तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

५९ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि वण लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

६० से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि वण सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

६१ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि वण अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

६२ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि वण अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

६३ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि वण अण्णयरेण सत्थ-जाएण अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

६४ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि वण अण्णयरेण सत्थ-जाएण अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा पूय वा, सोणिय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

गड-परिकम्म-पद

६५ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

६६ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा सवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

६७ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

६८ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा, लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

६९ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।

[से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।
से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे] ।।

७० से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा अण्णयरेण सत्थ-जाएण अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

७१ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा अण्णयरेण सत्थ-जाएण अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा पूय वा, सोणिय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

मल-णीहरण-पदं

७२ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायाओ सेय वा, जल्ल वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

७३ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता अच्छिमल वा, कण्णमल वा, दतमल वा, णहमल वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

वाल-रोम-पदं

७४ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता दीहाइ वालाइ, दीहाइ रोमाइ, दीहाइ भमुहाइ, दीहाइ कक्खरोमाइ, दीहाइ वत्थिरोमाइ कप्पेज्ज वा, सठवेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

लिक्ख-जूया-पद

७५ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता सीसाओ लिक्ख वा, जूय वा णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

आभरण-आविधण-पद

७६ से से परो अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावित्ता हार वा, अद्धहार वा, उरत्थ वा, गेवेय[1] वा, मउड वा, पालव वा, सुवण्णसुत्त वा आविधेज्ज[2] वा, पिणिधेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

---

१ सुवण्णगेवेय (घ) । २ आववेज्ज (घ, च) ।

पाद-परिकम्म-पद

७७. से से परो आरामसि वा, उज्जाणसि वा णीहरेत्ता वा, पविसेता वा पायाइ आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।[1]
[एव णेयव्वा अण्णमण्णकिरियावि ।][2] ॥

तिगिच्छा-पदं

७८ से से परो सुद्धेण वा वइ-वलेण तेइच्छ आउट्टे,
से से परो असुद्धेण वा वइ-वलेण तेइच्छ आउट्टे,
से से परो गिलाणस्स सचित्ताणि कदाणि वा, मूलाणि वा, तयाणि वा, हरियाणि वा खणित्तु वा, कड्ढेत्तु वा, कड्ढावेत्तु वा तेइच्छ आउट्टेज्जा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

७६ कडुवेयणा[3] कट्टुवेयणा पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदण वेदेति ॥

८० एय खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय, ज सव्वट्ठेहिं समिते सहिते सदा जए, सेयमिण मण्णेज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

१,२ अस्मात् सूत्रात् पुरतोपि 'पादाइ सवाहेज्ज वा' (सू० ३) अत प्रभृति 'सीसाओ लिक्ख वा' (सू० ३८) पर्यन्त सूत्राणि युज्यन्ते' परन्तु नात्र कश्चित् पूरणीय सकेत प्रनिपु प्राप्यते । "एव णेयव्वा अण्णमण्णकिरियावि" इति सूत्रमत्रानावश्यक प्रतिभाति, किन्तु वृत्तावस्ति व्याख्यातम् । सम्भाव्यते प्रस्तुत-सूत्रस्य पूरणीय-सकेतो लिपिदोषेण अन्यथा जात. । इत्यपि सम्भाव्यते 'एव णेयव्वा अण्णमण्ण किरियावि' इति सूत्र वाचनान्तरगतमस्ति । एकस्या वाचनाया उक्तसूत्रेणैव त्रयोदशाध्ययनस्य पाठ प्रवेदित , अपरस्या च त्रयोदशाध्ययनस्य सक्षिप्तपाठ पृथग्रूपेण प्रतिपादित । वर्तमाने समुपलब्ध पाठो द्वयोरपि वाचनयोर्मिश्रण प्रतीयते । तेनास्माभिरुक्तसूत्र कोष्ठक एव स्वीकृतम् ।

३ कम्मकय० (च) ।

चउद्दसमं अज्झयणं

अण्णुण्णकिरिया-सत्तिक्कयं

किरिया-पद

१ अण्णमण्णकिरियं[1] अज्झत्थियं संसेसियं—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

पाद-परिकम्म-पद

२ से अण्णमण्णं पादाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

३ [2]से अण्णमण्णं पादाइं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

४ से अण्णमण्णं पादाइं फूमेज्ज वा, रएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

५ से अण्णमण्णं पादाइं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६ से अण्णमण्णं पादाइं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

७ से अण्णमण्णं पादाइं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

८ से अण्णमण्णं पादाइं अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

९ से अण्णमण्णं पादाइं अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

---

१ अण्णोण° (वृ)। त्रयोदशाध्ययने 'से भिक्खू वा २' इति पाठो नास्ति। चतुर्दशाध्ययने प्रतिषु विद्यते, किन्तु वृत्तौ उभयत्रापि नास्ति व्याख्यान.।

२. स० पा०—सेसं तं चेव, एयं खलु° जइज्जासि।

१० से अण्णमण्ण पादाओ खाणु वा, कटय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

११ से अण्णमण्ण पादाओ पूय वा, सोणिय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

काय-परिकम्म-पद

१२ से अण्णमण्ण काय आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

१३ से अण्णमण्ण काय सवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

१४ से अण्णमण्ण काय तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, अब्भगेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

१५ से अण्णमण्ण काय लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

१६ से अण्णमण्ण काय सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

१७ से अण्णमण्ण काय अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

१८ से अण्णमण्ण काय अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

वण-परिकम्म-पद

१९ से अण्णमण्ण कायसि वण आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।

२० से अण्णमण्ण कायसि वण सवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।

२१ से अण्णमण्ण कायसि वण तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।

२२ से अण्णमण्ण कायसि वण लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।

२३ से अण्णमण्ण कायसि वण सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा, उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।

२४ से अण्णमण्ण कायसि वण अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।

२५ से अण्णमण्ण कायंसि वण अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा — णो त साइए, णो त णियमे ॥

२६ से अण्णमण्ण कायंसि वण अण्णयरेण सत्थ-जाएण अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

२७ से अण्णमण्ण कायंसि वण अण्णयरेण सत्थ-जाएण अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा पूय वा सोणिय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

गंड-परिकम्म-पद

२८ से अण्णमण्ण कायंसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

२९ से अण्णमण्ण कायंसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा सवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

३० से अण्णमण्ण कायंसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिगेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

३१ से अण्णमण्ण कायंसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा —णो त साइए, णो त णियमे ॥

३२ से अण्णमण्ण कायंसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा —णो त साइए, णो त णियमे ।
[से अण्णमण्ण कायंसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।
से अण्णमण्ण कायंसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।] ॥

३३ से अण्णमण्ण कायंसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा अण्णयरेण सत्थ-जाएण अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा णो त साइए, णो त णियमे ॥

३४ से अण्णमण्ण कायंसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा अण्णयरेण सत्थ-जाएण अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा पूय वा, सोणिय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

मल-णीहरण-पद

३५ से अण्णमण्ण कायाओ सेय वा, जल्ल वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

३६ से अण्णमण्ण अच्छिमल वा, कण्णमल वा, दतमल वा, णहमल वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

वाल-रोम-पद

३७ से अण्णमण्ण दीहाइ वालाइ, दीहाइ रोमाइ, दीहाइ भमुहाइ, दीहाइ कक्ख-रोमाइ, दीहाइ वत्थिरोमाइ कप्पेज्ज वा, सठवेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

लिक्ख-जूया-पदं

३८ से अण्णमण्ण सीसाओ लिक्ख वा, जूय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

पाद-परिकम्म-पद

३९ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइ आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

४० से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइ सवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

४१ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइ फूमेज्ज वा, रएज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

४२ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइ तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

४३ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइ लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

४४ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइ सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

४५ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइ अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

४६ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइ अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

४७ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाओ खाणु वा, कटय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

४८ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता पादाओ पूय वा, सोणिय वा णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

काय-परिकम्म-पदं

४९ से अण्णमण्णं अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

५० से अण्णमण्णं अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायं संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

५१ से अण्णमण्णं अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

५२ से अण्णमण्णं अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

५३ से अण्णमण्णं अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

५४ से अण्णमण्णं अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

५५ से अण्णमण्णं अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

वण-परिकम्म-पदं

५६ से अण्णमण्णं अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

५७ से अण्णमण्णं अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

५८ से अण्णमण्णं अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

५९ से अण्णमण्णं अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा वण्णेण वा, उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६० से अण्णमण्णं अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६१ से अण्णमण्णं अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

६२ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि वण अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

६३ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि वण अण्णयरेण धूवण-जाएण अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

६४ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि वण अण्णयरेण सत्थ-जाएण अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा पूय वा, सोणिय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

गड-परिकम्म-पद

६५ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

६६ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा सवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

६७ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

६८ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा, लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

६९ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।

[से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।

से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे] ॥

७० से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा अण्णयरेण सत्थ-जाएण अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ॥

७१ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायसि गड वा, अरइय वा, पिडय वा, भगदल वा अण्णयरेण सत्थ-जाएण अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता

वा पूय वा, सोणिय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

मल-णीहरण-पद

७२ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता कायाओ मेय वा, जल्ल वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

७३ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता अच्छिमल वा, कण्णमल वा, दतमल वा, णहमल वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

वाल-रोम-पद

७४ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता दीहाइ वालाइ, दीहाइ रोमाइ, दीहाइ भमुहाइ, दीहाइ कक्खरोमाइ, दीहाइ वत्थिरोमाइ कप्पेज्ज वा, सठवेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

लिक्ख-जूया-पद

७५ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता सीसाओ लिक्ख वा, जूय वा णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

आभरण-आविधण-पद

७६ से अण्णमण्ण अकसि वा, पलियकसि वा तुयट्टावेत्ता हार वा, अद्धहार वा, उरत्थ वा, गेवेय वा, मउड वा, पालव वा, सुवण्णसुत्त वा आविधेज्ज वा, पिणिधेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

पाद-परिकम्म-पद

७७ से अण्णमण्ण आरामसि वा, उज्जाणसि वा णीहरेत्ता वा, पविसेत्ता वा पायाइ आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

तिगिच्छा-पद

७८ से अण्णमण्ण सुद्धेण वा वइ-बलेण तेइच्छ आउट्टे ।
से अण्णमण्ण असुद्धेण वा वइ-बलेण तेइच्छ आउट्टे ।
से अण्णमण्ण गिलाणस्स सचित्ताणि कदाणि वा, मूलाणि वा, तयाणि वा, हरियाणि वा खणित्तु वा, कड्ढेत्तु वा, कड्ढावेत्तु वा तेइच्छ आउट्टेज्जा—णो त साइए, णो त णियमे ।।

७९ कडुवेयणा कट्टुवेयणा पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदण वेदेति ।।

८० एय खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय, ज सव्वट्ठेहिं समिते सहिते सदा जए, सेयमिण मण्णेज्जासि° ।

—त्ति बेमि ।।

पनरसमं अज्झयणं

भावणा

भगवओ-चवणादि-णक्खत्त-पदं

१ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे पचहत्थुत्तरे यावि होत्था — १ हत्थुत्तराहि चुए चइत्ता गब्भ वक्कते २ हत्थुत्तराहि गब्भाओ गब्भ साहरिए ३ हत्थुत्तराहि जाए ४ हत्थुत्तराहि सव्वओ सव्वत्ताए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए ५ हत्थुत्तराहि कसिणे पडिपुण्णे अव्वाघाए निरावरणे अणते अणुत्तरे केवलवरनाणदसणे समुप्पण्णे ॥

२ साइणा भगव परिनिव्वुए ॥

गब्भ-पद

३ समणे भगव महावीरे इमाए ओसप्पिणीए —सुसमसुसमाए समाए वीइक्कताए, सुसमाए समाए वीतिक्कताए, सुसमदुसमाए समाए वीतिक्कताए, दुसमसुसमाए समाए वहु वीतिक्कताए—पण्णहत्तरीए[1] वासेहि, मासेहि य अद्धणवमेहि[2] सेसेहि, जे से गिम्हाण चउत्थे मासे, अट्ठमे पक्खे—आसाढसुद्धे, तस्सण आसाढसुद्धस्स छट्ठीपक्खेण हत्थुत्तराहि नक्खत्तेण जोगमुवागएण[3], महाविजय-सिद्धत्थ-पुप्फुत्तर-पवर-पुडरीय-दिसासोवत्थिय-वद्धमाणाओ महाविमाणाओ वीस सागरोवमाइ आउय[4] पालइत्ता आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण चुए चइत्ता इह खलु जवुद्दीवे[5] दीवे, भारहे वासे, दाहिणड्ढभरहे दाहिणमाहणकुडपुर-सन्निवेससि[6] उसभदत्तस्स माहणस्स कोडाल-सगोत्तस्स देवाणदाए माहणीए जालधरायण-सगोत्ताए सीहोब्भवभूएण अप्पाणेण कुच्छिसि गब्भ वक्कते ॥

---

१ पण्णत्तरीए (अ, क, घ, च) ।

२ °णवमसेसेहि (क, घ, च) ।

३ जोगोवगएण (अ, च) ।

४ अहाउय (क, घ, च) ।

५ °द्दीवेण (क, घ, च, छ, व) ।

६ °वेसमि (छ) ।

चवण-पद

४ समणे भगव महावीरे तिण्णाणोवगए यावि होत्था—चइस्सामित्ति जाणइ, चुएमित्ति जाणइ, चयमाणे न जाणेइ, सुहुमे ण से काले पण्णत्ते ।।

गब्भसाहरण-पद

५. तओ ण 'समणस्स भगवओ महावीरस्स'[1] अणुकपए[2] ण देवे ण "जीयमेय" ति कट्टु जे से वासाण तच्चे मासे, पचमे पक्खे—आसोयबहुले, तस्स ण आसोयबहुलस्स तेरसीपक्खेण हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेहिं जोगमुवागएण बासीतिहिं राइदिएहिं वीइक्कतेहिं तेसीइमस्स राइदियस्स परियाए वट्टमाणे दाहिणमाहण-कुडपुर-सन्निवेसाओ उत्तरखत्तियकुडपुर-सन्निवेससि णायाण खत्तियाण सिद्धत्थस्स खत्तियस्स कासवगोत्तस्स तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठ-सगोत्ताए असुभाण पुग्गलाण अवहार करेत्ता, सुभाण पुग्गलाण पक्खेव करेत्ता[3] कुच्छिसि गब्भ साहरइ ।।

६ जेवि य से तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि गब्भे, तपि य दाहिणमाहणकुडपुर-सन्निवेससि उसभदत्तस्स माहणस्स कोडाल-सगोत्तस्स देवाणदाए माहणीए जालधरायण-सगोत्ताए कुच्छिसि साहरइ ।।

७ समणे भगव महावीरे तिण्णाणोवगए यावि होत्था—साहरिज्जिस्सामित्ति जाणइ, साहरिएमित्ति जाणइ, साहरिज्जमाणे वि[4] जाणइ, समणाउसो !

जम्म-पद

८ तेण कालेण तेण समएण तिसला खत्तियाणी अह अण्णया कयाइ णवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण, अद्धट्ठमाण राइदियाण वीतिक्कताण, जे से गिम्हाण पढमे मासे, दोच्चे पक्खे—चेत्तसुद्धे, तस्सण चेत्तसुद्धस्स तेरसीपक्खेण, हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेण जोगोवगएण समण भगव महावीर अरोया अरोय पसूया ।।

९. जण्ण राइ तिसला खत्तियाणी समण भगव महावीर अरोया[5] अरोय पसूया, तण्ण राइ भवणवइ-वाणमतर-जोइसिय-विमाणवासिदेवेहि य देवीहि य

---

१ समणे भगव महावीरे (अ, क, घ, च, छ, ब), कल्पसूत्रे (३०) 'समणे भगव महावीरे' इति पाठोस्ति, किन्तु 'हरिणेगमेसिणा' 'साहरिए' इति पदयो सन्दर्भे स युक्तोस्ति, किन्तु अत्र 'साहरइ' इति क्रियापदस्य सन्दर्भे प्रथमान्तोसौ नैव युक्त स्यात् ।

२ हियअणु° (छ) ।

३ करेत्ता अव्वाबाह अव्वाबाहेण (चू), कल्पसूत्रे (३०) प्येप पाठो दृश्यते ।

४ वि न (च), न (छ) । अशुद्ध प्रतिभाति ।

५ आरोया° (क, घ, च) ।

ओवयतेहि य उप्पयतेहि य[1] एगे मह दिव्वे देवुज्जोए देव-सण्णिवाते[2] देव-कहक्कहे उप्पिजलगभूए यावि होत्था ॥

१० जण्ण[3] रयणि तिसला खत्तियाणी समण भगव महावीर अरोया अरोय पसूया, तण्ण[4] रयणि वहवे देवा य देवीओ य एग मह अमयवास च, गधवास च, चुण्णवास च[5], हिरण्णवास च, रयणवास च वासिसु ॥

११ जण्ण रयणि तिसला खत्तियाणी समण भगव महावीर अरोया अरोय पसूया, तण्ण रयणि भवणवइ-वाणमतर-जोइसिय-विमाणवासिणो देवा य देवीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स कोउगभूइकम्माइ[6] तित्थयराभिसेय च करिसु ॥

नामकरण-पद

१२. जओ ण पभिइ समणे भगव महावीरे तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि गब्भ आहुए[7], तओ ण पभिइ त कुल विपुलेण हिरण्णेण सुवण्णेण धणेण धण्णेण माणिक्केण मोत्तिएण सख-सिल-प्पवालेण अईव-अईव परिवड्ढइ[8] ॥

१३ तओ ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो एयमट्ठ जाणेत्ता णिव्वत्त-दसाहसि वोक्कतसि सुचिभूयसि विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेति, विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेत्ता मित्त-णाति-सयण-सबधिवग्ग उवणिमतेति, मित्त-णाति-सयण-सबधिवग्ग उवणिमतेत्ता वहवे समण-माहण-किवण-वणिमग-भिच्छुटग-पडरगातीण विच्छड्डेति विगोवेति[9] विस्साणेति, दायारे[ए ?]सु[10] ण दाय[11] पज्जभाएति, विच्छड्डित्ता विगोवित्ता विस्साणित्ता दायारे[ए ?]सु ण दाय पज्जभाएत्ता मित्त-णाइ-सयण-सबधिवग्ग भुजावेति, मित्त-णाइ-सयण-सबधिवग्ग भुजावेत्ता मित्त-णाइ-सयण-सबधिवग्गेण इमेयारूव णामधेज्ज करेति[12]—जओ ण पभिइ इमे कुमारे तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि

---

१ य सपयतेहि य (क, घ, च)।
२ °वाते ण (अ, क, च, छ)।
३ ज (च, छ)।
४ त (च, छ)।
५ च पुप्फवास च (क, घ, व)।
६ °सुइ ° (छ)।
७ आहए (क्व)।
८ पवि° (अ)।
९ विगो° (अ, क, घ, च)।
१० 'ओवाइय' सूत्रे 'दाण च दाइयाण परिभाय-इत्ता' (सू० २३) इति पाठो दृश्यते। 'रायपसेणइय' सूत्रे 'दाण दाइयाण परिभाइत्ता' (सू० ६९५) इति पाठो विद्यते। 'कप्पसुत्ते' 'दाण दायारेहि परिभाएत्ता दाइयाण परिभाएत्ता' (सू० १११) इति पाठोस्ति। आलोच्य-पाठस्य विविधरूपावलोकनेन इत्यनुमीयतेस्य लिपिकाले परिवर्तन जातम्। वस्तुत 'दायाएसु इति पाठ सङ्गतोस्ति। अस्मिन् पाठे सत्येव 'पज्जभाएति' इति विभागार्थस्य धातु-पदस्य क्षयपदस्य दायपदस्य च सार्थकता स्यात्।
११ दाण (घ, छ)।
१२ कारवेंति (क, च), करावेंति (घ)।

गब्भे आहुए[1], तओ ण पभिइ इम कुल, विउलेण हिरण्णेण सुवण्णेण धणेण धण्णेण माणिक्केण मोत्तिएण सख-सिल-प्पवालेण अईव-अईव परिवड्ढइ, तो होउ ण कुमारे "वद्धमाणे" ।।

बाल-पद

१४ तओ ण समणे भगव महावीरे पचधातिपरिवुडे, [त जहा—खीरधाईए, मज्जणधाईए, मडावणधाईए, खेल्लावणधाईए, अकधाईए[2],] अकाओ अक साहरिज्जमाणे रम्मे मणिकोट्टिमतले गिरिकदरमल्लीणे[3] व चपयपायवे अहाणुपुव्वीए सवड्ढइ ।।

विवाह-पद

१५ तओ ण समणे भगव महावीरे विण्णायपरिणये[4] विणियत्तबाल-भावे[5] अप्पुस्सुयाइ[6] उरालाइ माणुस्सगाइ पचलक्खणाइ कामभोगाइ सद्द-फरिस-रस-रूव-गधाइ परियारेमाणे, एव च ण विहरइ ।।

नाम-पद

१६ समणे भगव महावीरे कासवगोत्ते । तस्स ण इमे तिण्णि णामधेज्जा एवमाहिज्जति, त जहा—१ अम्मापिउसतिए "वद्धमाणे" २ सह-सम्मुइए "समणे" ३ "भीम भयभेरव उराल अचेलय परिसह सहइ" त्ति कट्टु देवेहि से णाम कय "समणे भगव महावीरे" ।।

परिवार-पद

१७ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स पिआ कासवगोत्तेण । तस्स ण तिण्णि णामधेज्जा एवमाहिज्जति, त जहा—१ सिद्धत्थे ति वा २ सेज्जसे ति वा ३ जससे ति वा ।।

१८. समणस्स ण भगवओ महावीरस्स अम्मा वासिट्ठ-सगोत्ता । तीसेण तिण्णि णामधेज्जा एवमाहिज्जति, त जहा—१ तिसला ति वा २ विदेहदिण्णा ति वा ३ पियकारिणी ति वा ।।

१९ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स पित्तियए 'सुपासे' कासवगोत्तेण ।।

२० समणस्स ण भगवओ महावीरस्स जेट्ठे भाया 'णदिवद्धणे' कासवगोत्तेण ।।

२१ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स जेट्ठा[7] भइणी 'सुदसणा' कासवगोत्तेण[8] ।।

---

१ आहूते (च) ।
२ असौ कोष्ठकवर्ती पाठ व्याख्याश प्रतीयते ।
३ समल्लीणे (अ, घ) ।
४ °परिणय (घ, च, छ, व) ।
५ विणिवित्त° (च) ।
६ अणस्सुयाइ (अ, व) ।
७ कणिट्ठा (घ, च) ।
८ कासवी° (च) ।

२२ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स भज्जा 'जसोया' कोडिण्णागोत्तेण ॥

२३ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स धूया कासवगोत्तेण । तीसे ण दो णामधेज्जा एवमाहिज्जति, त जहा—१ अणोज्जा ति वा २ पियदसणा ति वा ॥

२४. समणस्स ण भगवओ महावीरस्स णत्तुई कोसियगोत्तेण[1] । तीसे ण दो णामधेज्जा एवमाहिज्जति, त जहा—१ सेसवती ति वा २ जसवती ति वा ॥

माउ-पिउ-काल-पद

२५ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो पासावच्चिज्जा समणोवासगा यावि होत्था । ते ण बहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पालइत्ता, छण्ह जीवनिकायाण सरक्खणनिमित्त[2] आलोइत्ता निदित्ता गरहित्ता पडिक्कमित्ता, अहारिह उत्तरगुण पायच्छित्त पडिवज्जित्ता, कुससथार दुरुहित्ता भत्त पच्चक्खाइति, भत्त पच्चक्खाइत्ता अपच्छिमाए मारणतियाए सरीर-सलेहणाए सोसियसरीरा[3] कालमासे काल किच्चा त सरीर विप्पजहित्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णा । तओ ण आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण चुए चइत्ता महाविदेहवासे चरिमेण उस्सासेण सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिणिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ॥

अभिणिक्खमणाभिप्पाय-पदं

२६ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे णाते णायपुत्ते णायकुल-विणिव्वत्ते विदेहे विदेहदिण्णे विदेहजच्चे विदेहसुमाले तीस वासाइ विदेहत्ति कट्टु अगारमज्झे वसित्ता अम्मापिऊहि कालगएहि देवलोगमणुपत्तेहि समत्तपइण्णे चिच्चा हिरण्ण, चिच्चा सुवण्ण, चिच्चा वल, चिच्चा वाहण, चिच्चा धण-धण्ण-कणय-रयण-सत-सार-सावदेज्ज, विच्छड्डेत्ता विगोवित्ता विस्साणित्ता, दायारे [ए ?]सु[4] ण 'दाय[5]' पज्जभाएत्ता[6], सवच्छर दलइत्ता जे से हेमताण पढमे मासे पढमे पक्खे—मग्गसिरवहुले, तस्स ण मग्गसिरवहुलस्स दसमीपक्खेण हत्थुत्तराहि णक्खत्तेण जोगोवगएण अभिणिक्खमणाभिप्पाए यावि होत्था—

सगहणी-गाहा

सवच्छरेण होहिति, अभिणिक्खमण तु जिणवरिंदस्स ।
तो अत्थ-सपदाण, पव्वत्तई पुव्वसूराओ ॥१॥

---

१ कोसिया° (घ) ।
२ सारक्खण° (घ, च) ।
३. सुसिय° (अ, घ), झुसिय° (च), झोसिय° (व) ।
४ द्रष्टव्यम्—१५।१३ सूत्रस्य द्वितीय पाद-टिप्पणम् ।
५ दाण (अ) ।
६ दाइत्ता परिभाइत्ता (छ) ।

एगा हिरण्णकोडी, अट्ठेव अणूणया सयसहस्सा।
सूरोदयमाईय, दिज्जइ जा पायरासो त्ति[1] ॥२॥
तिण्णेव य कोडिसया, अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ।
असितिं[2] च सयसहस्सा, एयं संवच्छरे दिण्णं ॥३॥
वेसमणकुंडलधरा, देवा लोगंतिया महिड्ढीया।
बोहिंति य तित्थयरं, पण्णरससु कम्म-भूमिसु ॥४॥
बंभंमि य कप्पंमि य, बोद्धव्वा कण्हराइणो मज्झे।
लोगंतिया विमाणा, अट्ठसु वत्था असंखेज्जा ॥५॥
एए देवणिकाया, भगवं बोहिंति जिणवरं वीरं।
सव्वजगजीवहियं, अरहं तित्थं पव्वत्तेहि ॥६॥

देवागमण-पद

२७ तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अभिणिक्खमणाभिप्पायं जाणेत्ता भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिणो देवा य देवीओ य सएहिं-सएहिं रूवेहिं, सएहिं-सएहिं णेवत्थेहिं, सएहिं-सएहिं चिंधेहिं, सव्विड्ढीए सव्वजुतीए सव्वबलसमुदएणं सयाइं-सयाइं जाण विमाणाइं दुरुहंति, सयाइं-सयाइं जाणविमाणाइं दुरुहित्ता अहाबादराइं पोग्गलाइं परिसाडेंति, अहाबादराइं पोग्गलाइं परिसाडेत्ता अहासुहुमाइं पोग्गलाइं परियाइंति, अहासुहुमाइं पोग्गलाइं परियाइत्ता उड्ढं उप्पयंति, उड्ढं उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए सिग्घाए चवलाए तुरियाए दिव्वाए देवगईए अहेणं ओवयमाणा-ओवयमाणा तिरिएणं असंखेज्जाइं दीवसमुद्दाइं वीतिक्कममाणा-वीतिक्कममाणा जेणेव जंबुद्दीवे दीवे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता जेणेव उत्तरखत्तियकुंडपुर-सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता जेणेव उत्तरखत्तियकुंडपुर-सन्निवेसस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तेणेव झत्तिवेगेण उवट्ठिया ॥

अलंकरण-सिवियाकरण-पद

२८ तओ णं सक्के देविंदे देवराया सणियं-सणियं जाणविमाणं ठवेति, सणियं-सणियं जाणविमाणं ठवेत्ता सणियं-सणियं जाणविमाणाओ पच्चोत्तरति, सणियं-सणियं जाणविमाणाओ पच्चोत्तरित्ता एगंतमवक्कमेति, एगंतमवक्कमेत्ता महया वेउव्विएणं समुग्घाएणं समोहण्णति, महया वेउव्विएणं समुग्घाएणं समोहणित्ता एगं महं णाणामणिकणयरयणभत्तिचित्तं सुभं चारुकंतरूवं देवच्छंदयं विउव्वति। तस्स णं देवच्छंदयस्स बहुमज्झदेसभाए एगं महं सपायपीढं णाणामणिकणय-

---

१. उ (घ)।

२. असियं (अ, घ, छ, ब)।

रयणभत्तिचित्त सुभ चारुकतरूव सिहासण विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ, समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेत्ता समण भगव महावीर वदति णमसति, वदित्ता णमसित्ता समण भगव महावीर गहाय जेणेव देवच्छदए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सणिय-सणिय पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयावेइ, सणिय-सणिय पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयावेत्ता सयपाग-सहस्सपागेहि तेल्लेहि अब्भगेति, अब्भगेत्ता गधकसाएहिं[1] उल्लोलेति, उल्लोलित्ता सुद्धोदएण मज्जावेइ, मज्जावित्ता जस्स जतपल[2] सयसहस्सेणति पडोलनित्तएण साहिएणं सीतएण[3] गोसीसरत्तचदणेण अणुलिपति, अणुलिपित्ता ईसिणिस्सासवातवोज्झ वरणगरपट्टणुग्गय कुसलणरपसंसित अस्सलालापेलव[4] छेयायरियकणग-खचियतकम्म[5] हसलक्खण पट्टजुयल णियसावेइ, णियसावेत्ता हार अद्धहार उरत्थ एगावलि पालवसुत्त-पट्ट-मउड-रयणमालाइ आविधावेति, आविधावेत्ता गथिम-वेढिम-पूरिम-सघातिमेण मल्लेण कप्परुक्खमिव समालकेति, समालकेत्ता दोच्चपि महया वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता एग मह चदप्पभ सिविय सहस्सवाहिणि विउव्वइ, त जहा—ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मकर-विहग-वाणर - कुजर - रुरु-सरभ-चमर-सद्दूलसीह-वणलय-विचित्तविज्जाहर-मिहुण-जुयल-जत-जोगजुत्त, अच्चीसहस्समालिणीय, सुणिरूवित-मिसिमिसित-रूवगसहस्सकलिय, ईसिभिसमाण, भिब्भिसमाण, चक्खुल्लोयणलेस्स, मुत्ताहलमुत्तजालतरोविय, तवणीय-पवरलबूस-पलबतमुत्तदाम, हारद्धहार-भूसणसमोणय, अहियपेच्छणिज्ज, पउमलयभत्तिचित्त, 'असोगलयभत्तिचित्त, कदलयभत्तिचित्त'[6] णाणालयभत्ति-विरइय सुभ चारुकतरूव णाणामणि-पचवण्णघटापडाय-परिमडियग्गसिहर पासादीय[7] दरिसणीय सुरूव ।

संगहणी-गाहा

सीया उवणीया, जिणवरस्स जरमरणविप्पमुक्कस्स ।
ओसत्तमल्लदामा, जलथलयदिव्वकुसुमेहि ॥७॥

---

१ °कासायिएहिं (च, छ) ।
२ ण मुल्ल (अ, घ, च, व) ।
३ सरसीएण (क, घ, च) ।
४ °लालपेसिय (घ), °लालपेलव (छ), °लालप्पेसलव (व) ।
५ मसूरियकणयकणयत° (घ) ।
६ × (अ), असोगलयभत्तिचित्त (क) ।
७ सुभ चारुकतरूवं पासादीय (अ,क,घ,च,व) ।

सिवियाए मज्झयारे, दिव्व वररयणरूवचेवइय[1]।
सीहासण महरिहं, सपादपीढं जिणवरस्स ॥८॥

आलइयमालमउडो, भासुरबोंदी वराभरणधारी।
खोमयवत्थणियत्थो[2], जस्स य मोल्लं सयसहस्सं ॥९॥

छट्ठेण उ भत्तेण, अज्झवसाणेण सोहणेण[3] जिणो।
लेसाहिं विसुज्झंतो, आरुहइ उत्तमं सीयं ॥१०॥

सीहासणे णिविट्ठो, सक्कीसाणा य दोहिं पासेहिं।
वीयंति चामराहिं, मणिरयणविचित्तदंडाहिं ॥११॥

पुव्विं उक्खित्ता, माणुसेहिं साहट्टुरोमपुलएहिं[4]।
पच्छा वहंति देवा, सुरअसुरगरुलणागिंदा ॥१२॥

पुरओ सुरा वहंती, असुरा पुण दाहिणंमि पासंमि।
अवरे वहंति गरुला, णागा पुण उत्तरे पासे ॥१३॥

वणसंडं व कुसुमियं, पउमसरो वा जहा सरयकाले।
सोहइ कुसुमभरेण, इय गयणयलं सुरगणेहिं ॥१४॥

सिद्धत्थवणं व जहा, कणियारवणं व चंपगवणं वा।
सोहइ कुसुमभरेण, इय गयणयलं सुरगणेहिं ॥१५॥

वरपडहभेरिझल्लरि-संखसयसहस्सिएहिं तूरेहिं।
गयणतले धरणितले, तूर-णिणाओ परमरम्मो ॥१६॥

ततविततं घणझुसिरं, आउज्जं चउव्विहं बहुविहीयं।
वायंति तत्थ देवा, बहूहिं आणट्टगसएहिं ॥१७॥

अभिणिक्खमण-पदं

२९ तेणं कालेणं तेणं समएणं जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे पक्खे—मग्गसिरबहुले, तस्स णं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं, सुव्वएणं दिवसेणं, विजएणं मुहुत्तेणं, 'हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं'[5] जोगोवगएणं, पाईणगामिणीए छायाए, वियत्ताए[6] पोरिसीए, छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं, एगसाडगमायाए, चंदप्पहाए सिवियाए सहस्सवाहिणीए[7], सदेवमणुयासुराए परिसाए समण्णिज्जमाणे-समण्णिज्जमाणे

१ °चिचइय (घ)।
२ खोमिय° (क, छ, ब)।
३ सुदरेण (क, घ, च, ब)।
४. साहट्ठ° (अ, क, च, ब)।
५ हत्थुत्तर° (अ, घ, छ)।
६ वीयाए (छ)।
७ °वाहिणीयाए (क, घ, ब)।

उत्तरखत्तियकुडपुर-सणिवेसस्स मज्झमज्झेण णिगच्छइ, णिगच्छित्ता जेणेव णायसडे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ईसिरयणिप्पमाण अच्छुप्पेण भूमिभागेण सणिय-सणिय चदप्पभ सिविय सहस्सवाहिणि ठवेइ, ठवेत्ता सणिय-सणिय चदप्पभाओ सिवियाओ सहस्सवाहिणीओ पच्चोयरइ, पच्चोयरित्ता सणिय-सणिय पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयइ, आभरणालकार ओमुयइ। तओ ण वेसमणे देवे जन्नुव्वायपडिए समणस्स भगवओ महावीरस्स हसलक्खणेण पडेण[1] आभरणालकार पडिच्छइ ॥

लोय-पदं

३० तओ ण समणे भगव महावीरे दाहिणेण दाहिण वामेण वाम पचमुट्ठिय लोय करेइ ॥

३१ तओ ण सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स जन्नुव्वायपडिए वयरामएण थालेण केसाइ पडिच्छइ, पडिच्छित्ता "अणुजाणेसि भते" त्ति कट्टु खीरोयसायर साहरइ ॥

सामाइयचरित्त-गहण-पद

३२ तओ ण समणे भगव महावीरे दाहिणेण दाहिण वामेण वाम पचमुट्ठिय लोय करेत्ता सिद्धाण णमोक्कार करेइ, करेत्ता, "सव्व मे अकरणिज्ज पावकम्म" ति कट्टु सामाइय चरित्त पडिवज्जइ, सामाइय चरित्त पडिवज्जेत्ता देवपरिस मणुयपरिस च आलिक्ख-चित्तभूयमिव ठ्वेइ।

सगहणी-गाहा

दिव्वो मणुस्सघोसो, तुरियणिणाओ य सक्कवयणेण।
खिप्पामेव णिलुक्को, जाहे पडिवज्जइ चरित्त ॥१८॥
पडिवज्जित्तु चरित्त, अहोणिसिं सव्वपाणभूतहित।
साहट्ठलोमपुलया[2], पयया देवा निसामिति ॥१९॥

मणपज्जवनाण-लद्धि-पद

३३ तओ ण समणस्स भगवओ महावीरस्स सामाइय खाओवसमिय चरित्त पडिवन्नस्स मणपज्जवणाणे णाम णाणे समुप्पन्ने—अड्ढाइज्जेहि दीवेहि दोहि य समुद्देहि सण्णीण पचेंदियाण पज्जत्ताण वियत्तमणसाण[3] मणोगयाइ भावाइ जाणेइ ॥

---

१ पडिसाडएण (छ)।

२, साहट्टु° (अ, क, व)।

३ °मणुस्साण (छ)।

अभिग्गह-पद

३४ तओ ण समणे भगव महावीरे पव्वइते समाणे मित्त-णाति-सयण-सबंधिवग्ग पडिविसज्जेति, पडिविसज्जेत्ता इम[1] एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ—"बारस-वासाइ वोसट्ठकाए चत्तदेहे[2] जे केइ उवसग्गा उप्पज्जति[3], त जहा—दिव्वा वा, माणुसा वा, तेरिच्छिया[4] वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पण्णे समाणे 'अणाइले अव्वहिते अद्दीणमाणसे तिविहमणवयणकायगुत्ते'[5] सम्म सहिस्सामि खमिस्सामि अहियासइस्सामि ॥"

विहार-पद

३५ तओ ण समणे भगव महावीरे इमेयारूव अभिग्गह अभिगिण्हेत्ता 'वोसट्ठकाए चत्तदेहे'[6] दिवसे मुहुत्तसेसे कम्मार[7] गाम समणुपत्ते ॥

३६ तओ ण समणे भगव महावीरे वोसट्ठचत्तदेहे अणुत्तरेण आलएण, अणुत्तरेण विहारेण, अणुत्तरेण सजमेण, अणुत्तरेण पग्गहेण, अणुत्तरेण सवरेण, अणुत्तरेण तवेण, अणुत्तरेण बभचेरवासेण, अणुत्तराए खतीए, अणुत्तराए मोत्तीए, अणुत्तराए तुट्ठीए, अणुत्तराए समितीए, अणुत्तराए गुत्तीए, अणुत्तरेण ठाणेण, अणुत्तरेण कम्मेण[8], अणुत्तरेण सुचरियफलणिव्वाणमुत्तिमग्गेण अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

३७ एव विहरमाणस्स जे केइ उवसग्गा समुप्पज्जिसु[9]—दिव्वा वा माणुसा[10] वा तेरिच्छिया वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पन्ने समाणे अणाइले अव्वहिए अदीण[11]-माणसे तिविहमणवयणकायगुत्ते सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ॥

केवलनाण-लद्धि-पद

३८ तओ ण समणस्स भगवओ महावीरस्स एएण विहारेण विहरमाणस्स बारस-वासा विइक्कता, तेरसमस्स य वासस्स परियाए वट्टमाणस्स जे से गिम्हाण दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे—वइसाहसुद्धे, तस्स ण वइसाहसुद्धस्स दसमीपक्खेण, सुव्वएण दिवसेण, विजएण मुहुत्तेण, हत्थुत्तराहि णक्खत्तेण जोगोवगतेण, पाईण-गामिणीए छायाए, वियत्ताए पोरिसीए, जभियगामस्स णगरस्स बहिया णईए

---

१ तओण इम (छ) ।
२ चियत्त° (च, छ, ब) ।
३ समुप्पज्जति (घ, छ, ब) ।
४ तेरिच्छा (च, ब) ।
५ × (अ, क, घ, च, ब) ।
६. वोसट्ठचत्तदेहे (क,घ), वोसट्ठचियत्तदेहे (छ) ।
७. कुमार (क, घ, च, छ, ब) ।
८ कम्मेण (ब, घ, च, छ) ।
९ °पज्जति (क, घ, ब) ।
१० माणुस्सा (च) ।
११ अद्दीण (अ, घ, च) ।

उजुवालिया[1] उत्तरे कूले, सामागस्स गाहावइस्स कट्ठकरणसि, वेयावत्तस्स चेइयस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, सालरुक्खस्स अदूरसामते, उक्कुडुयस्स, गोदोहियाए आयावणाए आयावेमाणस्स, छट्ठेण भत्तेण अपाणएण, उड्ढजाणु-अहोसिरस्स, धम्मज्झाणोवगयस्स, झाणकोट्ठोवगयस्स, सुक्कज्झाणतरियाए वट्टमाणस्स, निव्वाणे, कसिणे, पडिपुण्णे, अव्वाहए, णिरावरणे, अणते, अणुत्तरे, केवलवरणाणदसणे समुप्पण्णे ॥

३९ से भगव अरिह[2] जिणे जाए[3], केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी, सदेवमणुयासुरस्स लोयस्स पज्जाए जाणइ, त जहा—आगति गति ठिति चयण उववाय भुत्त पीय कड पडिसेविय आवीकम्म रहोकम्म लविय कहिय मणोमाणसिय सव्वलोए सव्वजीवाण सव्वभावाइ[4] जाणमाणे पासमाणे, एव च ण विहरइ ॥

देवागमण-पद

४०. जण्ण दिवस समणस्स भगवओ महावीरस्स णिव्वाणे कसिणे[5] •पडिपुण्णे अव्वाहए णिरावरणे अणते अणुत्तरे केवलवरणाणदसणे° समुप्पण्णे तण्ण दिवस भवणवइ-वाणमतर-जोइसिय-विमाणवासिदेवेहि य देवीहि य ओवयतेहि[6] य[7] •उप्पयतेहि य एगे मह दिव्वे देवुज्जोए देव-सण्णिवाते देव-कहक्कहे° उप्पिजलगभूए यावि होत्था ॥

धम्मोवदेस-पद

४१ तओ ण समणे भगव महावीरे उप्पण्णणाणदसणधरे अप्पाण च लोग च अभिसमेक्ख पुव्व देवाण धम्ममाइक्खति, तओ पच्छा मणुस्साण ॥

४२ तओ ण समणे भगव महावीरे उप्पण्णणाणदसणधरे गोयमाईण समणाण णिग्गथाण पच महव्वयाइ सभावणाइ छज्जीवनिकायाइ आइक्खइ भासइ[8] परूवेइ, त जहा—पुढविकाए[9] •आउकाए, तेउकाए, वाउकाए, वणस्सइकाए°, तसकाए ॥

अहिंसामहव्वय-पद

४३ पढम भते ! महव्वय—पच्चक्खामि सव्व पाणाइवाय—से सुहुम वा बायर वा, तस वा थावर वा—णेव सय पाणाइवाय करेज्जा, णेवण्णेहि पाणाइवाय

---

१ उज्जु° (घ, व)।
२ अरहा (अ, छ, व), अरह (क, घ)।
३ जाणए (घ, च)।
४ °भावेण (अ)।
५ स० पा०—कसिणे जाव समुप्पणे।
६ ओवयतेहि २ (अ व)।
७ स० पा०—ओवयतेहि य जाव उप्पिजलगभूए।
८ भासइ पण्णवइ (व)।
९ स० पा०—पुढविकाए जाव तसकाए।

कारवेज्जा, णेवण्ण पाणाइवाय करत समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण—मणसा वयसा कायसा, तस्स भते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥

अहिंसामहव्वयस्स भावणा-पदं

४४ तस्सिमाओ पच भावणाओ भवति । तत्थिमा पढमा भावणा—इरियासमिए से णिग्गथे, णो इरियाअसमिए[1] त्ति । केवली बूया—इरियाअसमिए से णिग्गथे, पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा, उद्दवेज्ज वा । इरियासमिए से णिग्गथे, णो इरियाअसमिए त्ति पढमा भावणा ॥

४५ अहावरा दोच्चा भावणा—मण परिजाणाइ से णिग्गथे, जे य मणे पावए सावज्जे सकिरिए अण्हयकरे छेयकरे भेदकरे अधिकरणिए[2] पाओसिए, पारिताविए पाणाइवाइए भूओवघाइए—तहप्पगार मण णो पधारेज्जा । मण परिजाणाति से णिग्गथे, 'जे य मणे अपावए'[3] त्ति दोच्चा भावणा ॥

४६ अहावरा तच्चा भावणा—वइ परिजाणइ से णिग्गथे, जा य वई पाविया सावज्जा सकिरिया[4] °अण्हयकरा छेयकरा भेदकरा अधिकरणिया पाओसिया पारिताविया पाणाइवाइया° भूओवघाइया—तहप्पगार वइ णो उच्चारिज्जा । जे वइ परिजाणइ से णिग्गथे, जा य वई अपावियत्ति तच्चा भावणा ॥

४७ अहावरा चउत्था भावणा—आयाणभडमत्तणिक्खेवणासमिए से णिग्गथे, णो आयाणभडमत्तणिक्खेवणाअसमिए । केवली बूया—आयाणभडमत्तणिक्खेवणा-असमिए से णिग्गथे पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ अभिहणेज्ज वा[5], °वत्तेज्ज वा, परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा°, उद्दवेज्ज वा, तम्हा आयाणभडमत्तणिक्खे-वणासमिए से णिग्गथे, णो आयाणभडमत्तणिक्खेवणाअसमिए त्ति चउत्था भावणा ॥

४८ अहावरा पचमा भावणा—आलोइयपाणभोयणभोई से णिग्गथे, णो अणालोइय-पाणभोयणभोई । केवली बूया—अणालोइयपाणभोयणभोई से णिग्गथे पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ अभिहणेज्ज वा[6], °वत्तेज्ज वा परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा°, उद्दवेज्ज वा, तम्हा आलोइयपाणभोयणभोई से णिग्गथे, णो अणालोइय-पाणभोयणभोई त्ति पचमा भावणा ॥

---

१ अइरियासमिए (अ), अणइरियासमिते (छ) ।
२ अहिगरणकरे कलहकरे (घ, वृ) ।
३ णो जे अमणे पावए (च) ।
४ स० पा०—सकिरिया जाव भूओवघाइया ।
५ स० पा०—अभिहणेज्ज वा जाव उद्दवेज्ज ।
६ स० पा०—अभिहणेज्ज वा जाव उद्दवेज्ज ।

४९ एतावताव महव्वए सम्म काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए आणाए आराहिए यावि भवइ । पढमे भते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमण ॥

सच्चमहव्वय-पद

५० अहावर दोच्च भते ! महव्वय—पच्चक्खामि सव्व मुसावाय वइदोस—से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, णेव सय मुस भासेज्जा, णेवण्णेण मुस भासावेज्जा, अण्ण पि मुस भासत ण समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण—मणसा वयसा कायसा, तस्स भते ! पडिक्कमामि[1] °निदामि गरिहामि अप्पाण° वोसिरामि ॥

सच्चमहव्वयस्स भावणा-पदं

५१ तस्सिमाओ पच भावणाओ भवति । तत्थिमा पढमा भावणा—अणुवीइभासी से णिग्गथे, णो अणणुवीइभासी । केवली बूया—अणणुवीइभासी से णिग्गथे समावदेज्जा[2] मोस वयणाए । अणुवीइभासी से णिग्गथे, णो अणणुवीइभासित्ति पढमा भावणा ॥

५२ अहावरा दोच्चा भावणा—कोह परिजाणइ से णिग्गथे, णो कोहणे सिया । केवली बूया—कोहपत्ते कोही समावदेज्जा मोस वयणाए । कोह[3] परिजाणइ से णिग्गथे, ण य कोहणे सियत्ति दोच्चा भावणा ॥

५३ अहावरा तच्चा भावणा—लोभ परिजाणइ से णिग्गथे, णो य लोभणए सिया । केवली बूया—लोभपत्ते लोभी समावदेज्जा मोस वयणाए । लोभ परिजाणइ से णिग्गथे, णो य लोभणए सियत्ति तच्चा भावणा ॥

५४ अहावरा चउत्था भावणा—भय परिजाणइ से णिग्गथे, णो भयभीरुए सिया । केवली बूया—भयप्पत्ते भीरू समावदेज्जा मोस वयणाए । भय परिजाणइ से णिग्गथे, णो य भयभीरुए सियत्ति चउत्था भावणा ॥

५५ अहावरा पचमा भावणा—हास परिजाणइ से णिग्गथे, णो य हासणए सिया । केवली बूया—हासपत्ते हासी समावदेज्जा मोस वयणाए । हास परिजाणइ से णिग्गथे, णो य हासणए सियत्ति पचमा भावणा ॥

५६ एतावताव महव्वए सम्म काएण फासिए[4] °पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए° आणाए आराहिए यावि भवति । दोच्चे भते ! महव्वए[5] °मुसावायाओ वेरमण° ॥

---

१ स० पा०—पडिक्कमामि जाव वोसिरामि ।
२ °वज्जेज्जा (क, घ, च, छ, व) ।
३ कोव (च, व) ।
४ स० पा०—फासिए जाव आणाए ।
५. स० पा०—महव्वए··· ।

अतेणगमहव्वय-पद

५७ अहावरं तच्चं भंते ! महव्वयं—पच्चक्खामि सव्वं अदिण्णादाणं—से गामे वा, णगरे वा, अरण्णे वा, अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा णेव सयं अदिण्णं गेण्हिज्जा, णेवण्णेहिं अदिण्णं गेण्हावेज्जा, अण्णंपि अदिण्णं गेण्हंतं न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए[1] •तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं° वोसिरामि ॥

अतेणगमहव्वयस्स भावणा-पद

५८ तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति । तत्थिमा पढमा भावणा—अणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे, णो अणणुवीइमिओग्गहजाई । केवली बूया—अणणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे, अदिण्णं गेण्हेज्जा । अणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे, णो अणणुवीइमिओग्गहजाई त्ति पढमा भावणा ॥

५९ अहावरा दोच्चा भावणा—अणुण्णवियपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणणुण्णवियपाणभोयणभोई । केवली बूया—अणणुण्णवियपाणभोयणभोई से णिग्गंथे अदिण्णं भुंजेज्जा[2], तम्हा अणुण्णवियपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणणुण्णवियपाणभोयणभोई त्ति दोच्चा भावणा ॥

६० अहावरा तच्चा भावणा—णिग्गंथे णं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि एतावताव ओग्गहणसीलए सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं ओग्गहंसि अणोग्गहियंसि एतावताव अणोग्गहणसीलो अदिण्णं ओगिण्हेज्जा । णिग्गंथेणं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि एतावताव ओग्गहणसीलए सियत्ति तच्चा भावणा ॥

६१ अहावरा चउत्था भावणा—णिग्गंथे णं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं ओग्गहणसीलए सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं अणोग्गहणसीले अदिण्णं गिण्हेज्जा । णिग्गंथे ओग्गहंसि ओग्गहियंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं ओग्गहणसीलए सियत्ति चउत्था भावणा ॥

६२ अहावरा पंचमा भावणा—अणुवीइमितोग्गहजाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु, णो अणणुवीइमिओग्गहजाई । केवली बूया—अणणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु अदिण्णं ओगिण्हेज्जा । अणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु, णो अणणुवीइमिओग्गहजाई—इइ पंचमा भावणा ॥

६३ एतावताव महव्वए सम्मं[3] •काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए°

---

१ सं० पा०—जावज्जीवाए जाव वोसिरामि । ३. सं० पा०—सम्मं जाव आणाए ।
२ गिण्हेज्जा (घ) ।

आणाए आराहिए यावि भवइ। तच्चे भंते महव्वए[1] •अदिण्णादाणाओ वेरमणं॰ ॥

बंभचेरमहव्वय-पद

६४ अहावरं चउत्थं भंते! महव्वयं—पच्चक्खामि सव्वं मेहुणं—से दिव्वं वा, माणुसं वा, तिरिक्खजोणियं वा, णेव सयं मेहुणं गच्छेज्जा,[2] •णेवण्णेहिं मेहुणं गच्छावेज्जा, अण्णंपि मेहुणं गच्छंतं न समणुज्जाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं॰ वोसिरामि ॥

बंभचेरमहव्वयस्स भावणा-पद

६५ तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति। तत्थिमा पढमा भावणा—णो णिग्गंथे अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं कहं कहइत्तए सिया। केवली बूया—णिग्गंथे णं अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं कहं कहमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा संतिकेवली-पण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। णो णिग्गंथे अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं कहं कहित्तए सियत्ति पढमा भावणा ॥

६६ अहावरा दोच्चा भावणा—णो णिग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं[3] इंदियाइं आलोएत्तए णिज्झाइत्तए सिया। केवली बूया—णिग्गंथे णं इत्थीणं मणोहराइं इंदियाइं आलोएमाणे णिज्झाएमाणे, संतिभेया संतिविभंगा[4] •संतिकेवलीपण्णत्ताओ॰ धम्माओ भंसेज्जा। णो णिग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं इंदियाइं आलोएत्तए णिज्झाइत्तए सियत्ति दोच्चा भावणा ॥

६७ अहावरा तच्चा भावणा—णो णिग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरित्तए[5] सिया। केवली बूया—णिग्गंथे णं इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरमाणे, संतिभेया[6] •संतिविभंगा संतिकेवलीपण्णत्ताओ धम्माओ॰ भंसेज्जा। णो णिग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरित्तए सियत्ति तच्चा भावणा ॥

६८ अहावरा चउत्था भावणा—णाइमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो पणीयरस-भोयणभोई। केवली बूया—अइमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे पणीयरसभोयण-भोई त्ति, संतिभेदा[7] •संतिविभंगा संतिकेवलीपण्णत्ताओ धम्माओ॰ भंसेज्जा।

---

१ सं॰ पा॰—महव्वए।

२ सं॰ पा॰—गच्छेज्जा तं चेव अदिण्णादाण-वत्तव्वया भाणियव्वा जाव वोसिरामि।

३ मणोहराइं २ (क, घ), मणोहराइं रूवाइं मणोहराइं (छ)।

४ सं॰ पा॰—संतिविभंगा जाव धम्माओ।

५ सुमरित्तए (अ, क, घ, छ, व)।

६ सं॰ पा॰—संतिभेया जाव भंसेज्जा।

७ सं॰ पा॰—संतिभेदा जाव भंसेज्जा।

णो अतिमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गथे णो पणीयरसभोयणभोई त्ति चउत्था भावणा ॥

६९ अहावरा पचमा भावणा—णो णिग्गथे इत्थीपसुपडगससत्ताइ सयणासणाइ सेवित्तए सिया । केवली वूया—णिग्गथे ण इत्थीपसुपडगससत्ताइ सयणासणाइ सेवेमाणे, सतिभेया[1] •सतिविभगा सतिकेवलीपण्णत्ताओ धम्माओ° भसेज्जा । णो णिग्गथे इत्थीपसुपडगससत्ताइ सयणासणाइ सेवित्तए सियत्ति पचमा भावणा ॥

७० एतावताव महव्वए सम्म काएण फासिए[2] •पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए आणाए° आराहिए यावि भवइ । चउत्थे भते ! महव्वए[3] •मेहुणाओ वेरमण° ॥

अपरिग्गहमहव्वय-पद

७१ अहावर पचम भते ! महव्वय—सव्व परिग्गह पच्चक्खामि[4]—से अप्प वा, बहु वा, अणु वा, थूल वा, चित्तमत वा, अचित्तमत वा णेव सय परिग्गह गिण्हेज्जा, णेवण्णेहि परिग्गह गिण्हावेज्जा, अण्णपि परिग्गह गिण्हत ण समणुजाणिज्जा[5] •जावज्जीवाए तिविह तिविहेण—मणसा वयसा कायसा, तस्स भते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण° वोसिरामि ॥

अपरिग्गहमहव्वयस्स भावणा-पद

७२ तस्सिमाओ पच भावणाओ भवति । तत्थिमा पढमा भावणा—सोयओ[6] जीवे मणुण्णामणुण्णाइ सद्दाइ सुणेइ । मणुण्णामणुण्णेहि सद्देहि णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा । केवली वूया—णिग्गथे ण मणुण्णामणुण्णेहि सद्देहि सज्जमाणे रज्जमाणे गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे विणिग्घायमावज्जमाणे, सतिभेया सतिविभगा सतिकेवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भसेज्जा ।

ण सक्का ण सोउ सद्दा, सोयविसयमागता ।
रागदोसा उ जे तत्थ, ते[7] भिक्खू परिवज्जए ॥२०॥

सोयओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइ सद्दाइ सुणेइ त्ति पढमा भावणा ॥

७३. अहावरा दोच्चा भावणा—चक्खूओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइ रूवाइ पासइ ।

---

१. स० पा०—सतिभेया जाव भसेज्जा ।
२. स० पा०—फासिए जाव आराहिए ।
३ स० पा०—महव्वए ' '।
४. पच्चाइक्खामि (अ, क, घ, च) ।
५ स० पा०—समणुजाणिज्जा जाव वोसिरामि।
६ सोतत्तेण (अ, क, छ, ब) ।
७ त (अ, क, घ, ब) ।

मणुण्णामणुण्णेहिं रूवेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा[1], •णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा°, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा। केवली बूया—निग्गंथे ण मणुण्णामणुण्णेहिं रूवेहिं सज्जमाणे रज्जमाणे[2] •गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे° विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेया संतिविभंगा[3] •संतिकेवलिपण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा।

णो सक्का रूवमदट्ठु, चक्खुविसयमागयं।
'रागदोसा उ जे तत्थ, ते'[4] भिक्खू परिवज्जए॥२१॥

चक्खूओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रूवाइं पासइ त्ति दोच्चा भावणा॥

७४ अहावरा तच्चा भावणा—घाणओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधाइं अग्घायइ। मणुण्णामणुण्णेहिं गंधेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा[5], •णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा°, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा। केवली बूया—निग्गंथे ण मणुण्णामणुण्णेहिं गंधेहिं सज्जमाणे रज्जमाणे[6] •गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे° विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा[7] •संतिकेवली-पण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा।

णो सक्का[8] ण[9] गंधमग्घाउ, णासाविसयमागयं।
रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए॥२२॥

घाणओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधाइं अग्घायति त्ति तच्चा भावणा॥

७५ अहावरा चउत्था भावणा—जिब्भाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेइ। मणुण्णामणुण्णेहिं रसेहिं णो सज्जेज्जा[10], •णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा°, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा। केवली बूया—णिग्गंथे ण मणुण्णामणुण्णेहिं रसेहिं सज्जमाणे[11] •रज्जमाणे गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे° विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेदा[12] •संतिविभंगा संतिकेवलीपण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा।

णो सक्का रसमणासाउ, जीहाविसयमागयं।
रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए॥२३॥

जीहाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेइ त्ति चउत्था भावणा॥

---

१ सं० पा०—रज्जेज्जा जाव णो।
२ सं० पा०—रज्जमाणे जाव विणिग्घाय।
३ सं० पा०—संतिविभंगा जाव भंसेज्जा।
४ रागो दोसो उ जो तत्थ, तं (अ, क)।
५ सं० पा०—रज्जेज्जा जाव णो।
६ सं० पा०—रज्जमाणे जाव विणिग्घाय।
७ सं० पा०—संतिविभंगा जाव भंसेज्जा।
८ सक्को (छ)।
९ × (अ, क, च, व)।
१० सं० पा०—सज्जेज्जा जाव णो।
११ सं० पा०—सज्जमाणे जाव विणिग्घाय।
१२ सं० पा०—संतिभेदा जाव भंसेज्जा।

७६ अहावरा पंचमा भावणा—फासओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसंवेदेइ।
मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा। केवली बूया—णिग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं सज्जमाणे[1] °रज्जमाणे गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे° विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा संतिकेवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा।

णो सक्का ण संवेदेउ, फासविसयमागयं।
रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए॥२४॥

फासओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसंवेदेति त्ति पंचमा भावणा॥

७७ एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए[2] आणाए आराहिए यावि भवइ। पंचमे भंते! महव्वए[3] °परिग्गहाओ वेरमणं°॥

७८ इच्चेतेहिं महव्वएहिं, पणुवीसाहि[4] य भावणाहिं संपण्णे अणगारे अहासुयं अहाकप्पं अहामग्गं सम्मं काएण फासित्ता, पालित्ता, तीरित्ता, किट्टित्ता आणाए आराहित्ता यावि भवइ।

—त्ति बेमि॥

---

१. सं० पा०—सज्जमाणे जाव विणिग्घाय।
२ अहिट्ठिए (अ, क, घ, च, छ, ब), प्रथममहाव्रतसूत्रे (४६) 'किट्टिए अवट्ठिए' इति पाठोस्ति, अत्र 'किट्टिए अहिट्ठिए' इति पाठो लभ्यते, किन्तु उक्तसूत्रस्य वृत्तेश्चानुसारेणात्रापि 'अवट्ठिए' इति पाठो युज्यते, तेन स स्वीकृतः।
३ सं० पा०—महव्वए।
४ पण° (छ, ब)।

सोलसमं अज्झयणं

विमुत्ती

अणिच्च-पद

१ अणिच्चमावासमुवेंति जंतुणो, पलोयए सोच्चमिदं अणुत्तरं।
विऊसिरे[1] विण्णु अगारबंधणं, अभीरु आरंभपरिग्गहं चए॥

पव्वय-दिट्ठंत-पद

२ तहागयं भिक्खुमणंतसंजयं, अणेलिसं विण्णु चरंतमेसणं।
तुदंति वायाहिं अभिद्दवं णरा, सरेहिं संगामगयं व कुंजरं॥
३ तहप्पगारेहिं जणेहिं हीलिए, ससद्दफासा फरुसा उदीरिया।
तितिक्खए णाणि अदुट्ठचेयसा, गिरिव्व वाएण ण संपवेवए॥

रुप्प-दिट्ठंत-पद

४ उवेहमाणे कुसलेहिं संवसे, अकंतदुक्खी तसथावरा दुही।
अलूसए सव्वसहे महामुणी, तहा हि से सुस्समणे समाहिए॥
५ विदू णते धम्मपयं अणुत्तरं, विणीयतण्हस्स मुणिस्स झायओ।
समाहियस्सऽग्गिसिहा व तेयसा, तवो य पण्णा य जसो य वड्ढइ॥
६ दिसोदिसंऽणंतजिणेण ताइणा, महव्वया खेमपदा पवेदिता।
महागुरू णिस्सयरा उदीरिया, तमं व तेजो तिदिसं पगासया॥
७ सितेहिं भिक्खू असिते परिव्वए, असज्जमित्थीसु चएज्ज पूअणं।
अणिस्सिओ लोगमिणं तहा परं, ण मिज्जति कामगुणेहिं पंडिए॥

---

१ विउ° (क, च, व), वियो° (घ), °विओ (छ)।

८ तहा विमुक्कस्स परिण्णचारिणो, धिईमओ दुक्खखमस्स भिक्खुणो ।
विसुज्झई जसि मल पुरेकड, समीरिय रुप्पमल व जोइणा[1] ॥

भुजगतय-दिट्ठत-पद

९ से हु प्परिण्णा समयमि वट्टइ, णिराससे उवरय-मेहुणे[2] चरे ।
भुजगमे जुण्णतय जहा जहे[3], विमुच्चइ से दुहसेज्ज माहणे ॥

समुद्द-दिट्ठत-पद

१० जमाहु ओह सलिल अपारग, महासमुद्द व भुयाहि दुत्तर ।
अहे य[4] ण परिजाणाहि पडिए, से हु मुणी अतकडे त्ति वुच्चइ ॥
११ जहा हि वद्ध इह 'माणवेहि य'[5], जहा य तेसि तु विमोक्ख आहिओ ।
अहा तहा बधविमोक्ख जे विऊ, से हु मुणी अतकडे त्ति वुच्चइ ॥
१२ इममि लोए 'परए य दोसुवि'[6], ण विज्जइ बधण जस्स किंचिवि ।
से हु णिरालबणे अप्पइट्ठिए, कलकली भावपह विमुच्चइ ॥

—त्ति बेमि ॥

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर—९६९१०

अनुष्टुप् श्लोक—३००६, अक्षर १८

---

१. जोइणो (अ, घ, व) ।
२ मेहुणा (क, वृ) ।
३ चए (घ) ।
४ व (अ, क, व) ।
५ माणवेहिं (अ, क) ।
६ परलोयतेसुवि (च) ।

सूयगडो

पढमो सुयक्खंधो

पढमं अज्झयणं

समए

पढमो उद्देसो

बंध-मोक्ख-पदं

१ बुज्झेज्ज तिउट्टेज्जा वधण परिजाणिया ।
किमाह[1] वधण वीरे[2] ? कि वा जाण तिउट्टइ ? ।।
२ चित्तमतमचित्त वा परिगिज्झ किसामवि ।
अण्ण वा अणुजाणाइ[3] एव[4] दुक्खा ण मुच्चई ।।
३ सय तिवातए पाणे अदुवा अण्णेहिं घायए ।
हणत वाणुजाणाइ वेर वड्ढइ अप्पणो ।।
४ जस्सि[5] कुले समुप्पण्णे जेहिं वा सवसे णरे ।
ममाती लुप्पती वाले अण्णमण्णेहिं मुच्छिए ।।
५ वित्त सोयरिया[6] चेव सव्वमेय ण ताणइ ।
'सधाति जीवित चेव'[7] कम्मणा[8] उ तिउट्टइ ।।
६ एए गथे विउक्कम्म एगे समणमाहणा ।
अयाणता विउस्सिता[9] सत्ता कामेहिं माणवा ।।

पचमहब्भूत-पद

७ सति पच महब्भूया[10] इहमेगेसिमाहिया ।
पुढवी आऊ[11] तेऊ वाऊ आगासपचमा ।।

---

१ किमाहु (चू) ।
२ वीरे (चू) ।
३ अणुजाणाए (क) ।
४ एव (क) ।
५ जेसि (ख), जसी (चू) ।
६ सोअरिया (ख), सोदरिया (चू) ।
७ सखाए जीविय चेव (क, ख, वृ, वृपा) ।
८ कम्मुणा (ख), कम्मणा (वृ), कम्मणा (वृपा) ।
९ वियोसिया (विओसिता), विउस्सिता (चू) ।
१० महब्भूता (चू) ।
११ आऊ य (ख) ।

८ एए पच महब्भूया तेब्भो[1] एगो[2] त्ति आहिया ।
अह[3] एसिं[4] 'विणासे उ'[5] विणासो होइ देहिणो[6] ॥

एगप्प-वाद-पद

९ जहा य पुढवीथूभे एगे णाणा हि दीसइ ।
एव भो ! कसिणे लोए विण्णू णाणा हि दीसए[7] ॥
१० एवमेगे[8] त्ति जपति मदा आरभणिस्सिया ।
एगे[9] किच्चा सय[10] पाव 'तिव्व दुक्ख'[11] णियच्छइ ॥

तज्जीव-तच्छरीर-वाद-पद

११ पत्तेय कसिणे आया जे वाला जे य पडिया ।
सति पेच्चा[12] ण ते संति णत्थि सत्तोववाइया ॥
१२ णत्थि पुण्णे व पावे वा णत्थि लोए इओ परे[13] ।
सरीरस्स विणासेण विणासो होइ देहिणो[14] ॥

अकारक-वाद-पद

१३ कुव्व च कारय[15] चेव सव्व कुव्व ण विज्जइ[16] ।
एव अकारओ अप्पा 'ते उ एव'[17] पगब्भिया ॥
१४ जे ते उ वाइणो एव लोए तेसिं कुओ[18] सिया ? ।
तमाओ ते तम जति मदा आरभणिस्सिया[19] ॥

---

१ ते भो (क, चूपा) ।
२ एक्को (क) ।
३ अध (चू) ।
४ तेसिं (ख, चू) ।
५ विणासेण (क्व), विसयोगे (चू) ।
६ देहिण (क, ख, चू) ।
७ वट्टइ (क, वृ) ।
८ एवमेगो (चू) ।
९ एगो (चू) ।
१० यण (क) ।
११ तेण तिव्व (क, चू); तेण तिप्प (चूपा) ।
१२ पच्चा (क्व) ।
१३ पर (चू), वरे (क्व) ।
१४ देहिण (ख, चू) ।
१५ कारव (चू) ।
१६ विज्जए (क) ।
१७ एव एते (ख), एवमेगे (चू) ।
१८ कतो (ख) ।
१९ मोहेण पाउता (चूपा) ।

आयच्छट्ठ-वाद-पदं

१५ संति पंच महब्भूया इहमेगेसि आहिया ।
आयछट्ठा[1] पुणेगाहु[2] आया लोगे य सासए ॥
१६ दुहओ ते ण विणस्संति[3] णो य उप्पज्जए असं ।
सव्वेवि सव्वहा[4] भावा णियतीभावमागया[5] ॥

बुद्धाण पंचखंध-चउधातु-वाद-पदं

१७ पंच खंधे वयंतेगे बाला उ खणजोइणो ।
अण्णो अणण्णो णेवाहु[6] हेउयं च[7] अहेउयं ॥
१८ पुढवी आऊ तेऊ य[8] तहा वाऊ य एगओ ।
चत्तारि धाउणो रूवं एवमाहंसु जाणगा[9] ॥

णिस्सारता-णिदंसण-पदं

१९ अगारमावसंता[10] वि आरण्णा[11] वा वि पव्वया[12] ।
इमं[13] दरिसणमावण्णा सव्वदुक्खा विमुच्चति[14] ॥
२० 'तेणाविमं तिणच्चा णं[15] ण ते धम्मविऊ जणा ।
जे ते उ वाइणो एवं ण ते ओहंतराऽऽहिया[16] ॥
२१ तेणाविमं तिणच्चा णं ण ते धम्मविऊ जणा ।
जे ते उ वाइणो एवं ण ते संसारपारगा ॥
२२ तेणाविमं तिणच्चा णं ण ते धम्मविऊ जणा ।
जे ते उ वाइणो एवं ण ते गब्भस्स पारगा ॥
२३ तेणाविमं तिणच्चा णं ण ते धम्मविऊ जणा ।
जे ते उ वाइणो एवं ण ते जम्मस्स पारगा ॥

---

१ आतच्छट्ठा (चू) ।
२ पुणो आहु (क, ख) ।
३ विण्णस्संति (क)
४ सव्वया (क, ख) ।
५ नियत्तीभाव° (क, ख) । 'क' प्रतौ निम्न-स्थाने नियती° इत्यपि लिखितमस्ति ।
६ णेगाहु (चू) ।
७ च (क्व) ।
८ × (क, ख) ।
९ यावरे (वृ), जाणगा (वृपा) ।
१० आगार° (ख) ।
११ अरण्णा (ख) ।
१२ पव्वइया (क) ।
१३ एत (चू) ।
१४ विमुच्चई (क, ख) ।
१५ तेणा वि संधि णच्चा णं (क, ख, वृ) । वृत्तौ प्रत्योश्चायमेव पाठो लभ्यते, किन्तु चूर्णिगत-पाठोर्थविचारणया प्रकरणपाती प्रतिभाति, तेनात्र मूले स एव स्वीकृत ।
१६ व्या० वि०—द्विपदयो सन्धि —ओहंतरा आहिया ।

२४ तेणाविमं तिणच्चा णं ण ते धम्मविऊ जणा।
जे ते उ वाइणो एवं ण ते दुक्खस्स पारगा॥
२५ तेणाविमं तिणच्चा णं ण ते धम्मविऊ जणा।
जे ते उ वाइणो एवं ण ते मारस्स पारगा॥
२६ 'णाणाविहाइं दुक्खाइं अणुहुंति पुणो पुणो।
संसारचक्कवालम्मि वाहिमच्चुजराकुले ॥
२७ उच्चावयाणि गच्छंता गब्भमेस्संतणंतसो' ।
णायपुत्ते महावीरे एवमाह' जिणोत्तमे"॥
—त्ति बेमि॥

बीओ उद्देसो

णियति-वाद-पद

२८ आघायं 'पुण एगेसिं' उववण्णा पुढो जिया।
वेदयंति' सुहं दुक्खं अदुवा लुप्पंति' ठाणओ॥
२९ ण तं सयं कडं दुक्खं 'ण य' अण्णकडं च णं।
सुहं वा जइ 'वा दुक्खं' सेहियं वा असेहियं॥
३० णं सयं' कडं ण अण्णेहिं वेदयंति पुढो जिया।
संगइयं तं तहा तेसिं इहमेगेसिमाहियं ॥
३१ एवमेयाणि जंपंता बाला पंडियमाणिणो"।
णिययाणिययं संतं अयाणंता" अबुद्धिया॥
३२ एवमेगे उ" पासत्था 'ते भुज्जो'" विप्पगब्भिया।
एवंपुवट्ठिया" संता णऽत्तदुक्खविमोयगा" ॥

---

१ व्या० वि०—एरन्ति अनन्तशः ।
२ °माहु (क, ख)।
३ संसारचक्कवालम्मि, भमंता [य पुणो पुणो]। उच्चावयं णिगच्छंता, गब्भमेसंतणंतसो॥ (चू)।
४ पुणिहेगेसिं (चू)।
५ वेदयंती (चू)।
६ विलुप्यन्ते (वृ)।
७ कओ (क, वृ), कत्तो (ख)।
८, वाऽसुहं (चू)।
९ तं (वृ)।
१० सइं (चू)।
११ पंडितवादिणो (चू)।
१२ अयाणमाणा (चू)।
१३ य (क)।
१४ अजाणता (चू)।
१५ °पवट्ठिया (क) °उवट्ठिया (ख); व्या० वि०—एवं+अपि+उवट्ठिया।
१६ न ते दुक्खविमोक्खया (क, ख), °विमोक्खया (वृ)।

३३ जविणो मिगा जहा सता परिताणेण[1] तज्जिया[2]।
असकियाइ सकति सकियाइ असकिणो ॥
३४ परिताणियाणि[3] सकता पासियाणि असकिणो।
अण्णाणभयसविग्गा सपलिति तहिं तहिं ॥
३५ अह त पवेज्ज वज्झ अहे वज्झस्स वा वए।
'मुच्चेज्ज पयपासाओ'[4] 'त तु मदो ण देहई'[5] ॥
३६ अहियप्पाऽहियपण्णाणे[6] विसमतेणुवागए[7] ।
से वद्धे पयपासाइ[8] तत्थ घाय[9] णियच्छइ ॥
३७ एव तु समणा एगे मिच्छदिट्ठी[10] अणारिया।
असकियाइ सकति[11] सकियाइ असकिणो ॥
३८. धम्मपण्णवणा जा सा[12] 'त तु'[13] सकति मूढगा।
आरभाइ[14] ण सकति अवियत्ता अकोविया ॥
३९ सव्वप्पग विउक्कस्स[15] सव्व णूम विहूणिया[16]।
अप्पत्तिय अकम्मसे एयमट्ठ मिगे चुए ॥
४० जे एय[17] णाभिजाणति मिच्छदिट्ठी[18] अणारिया।
मिगा वा पासवद्धा ते घायमेसतऽणतसो[19] ॥

अण्णाणिय-वाद-पदं

४१ माहणा समणा एगे सव्वे णाण सय वए।
'सव्वलोगे वि'[20] जे पाणा ण ते जाणति किंचण[21] ॥

---

१ परियाणेण (क, ख)।
२ वज्जिया (क, ख, वृ), तज्जिया (वृपा)।
३. परियाणियाणि (क, ख)।
४ मुच्चेज्जा° (क); वधेज्ज पदपासातो (चू), मुच्चेज्ज पदपासादी (चूपा, वृपा)।
५ त च मदे ण पेहती (चू), °देहते (क)।
६ अहिते हित पण्णाणा (चू)।
७. विसम तेणुवागते (चू), विसमतेऽणुवायए (क, वृपा)।
८ पयपासेहिं (चू)।
९ घत (चू)।
१० मिच्छादिट्ठी (चू)।
११ सकिती (चू)।
१२ तु (चू)।
१३ तीसे (चू)।
१४ आरभाय (चू)।
१५ विउक्कास (चू)।
१६ विधुणिया (चू)।
१७ तेत (चू)।
१८ मिच्छा° (चू)।
१९ व्या० वि—एपयन्ति अनन्तश।
२० सव्वलोगसि (चू)।
२१ कचण (क)।

४२ मिलक्खू अमिलक्खुस्स जहा वुत्ताणुभासए[1]।
ण हेउ से वियाणाइ[2] भासिय तऽणुभासए[3]॥
४३ एवमण्णाणिया णाण वयता वि सय सय।
णिच्छयत्थ ण जाणति मिलक्खु व्व अवोहिया[4]॥
४४ अण्णाणियाण वीमसा 'अण्णाणे ण णियच्छइ'[5]।
अप्पणो य[6] पर णाल कतो[7] अण्णाणुसासिउ ?॥
४५ वणे मूढे जहा जतू मूढणेयाणुगामिए[8]।
'दो वि एए अकोविया'[9] तिव्व सोय णियच्छई[10]॥
४६ अधो अध पह णेतो[11] दूरमद्धाण गच्छई।
आवज्जे उप्पह जतू[12] 'अदुवा पथाणुगामिए'[13]॥
४७ एवमेगे णियागट्ठी धम्ममाराहगा वय।
अदुवा[14] अहम्ममावज्जे ण ते सव्वज्जुय[15] वए॥
४८ एवमेगे वियक्काहि णो अण्ण[16] पज्जुवासिया।
अप्पणो य वियक्काहि अयमजू हि दुम्मई॥
४९ एव तक्काए[17] साहेता धम्माधम्मे अकोविया।
दुक्ख ते णातिवट्टति[18] सउणी पजर जहा॥
५० सय सय पससता गरहता[19] पर वय[20]।
जे उ तत्थ विउस्सति 'ससार ते[21] विउस्सिया[22]॥

---

१ °भासती (चू)।
२ वियाणेति (चू)।
३. °भासती (चू)।
४ अवोधिए (क, चू)।
५ णाणे णेव णियच्छति (क, चू)।
६ वि (वृ)।
७ कुतो (क)।
८ मुढेणे° (क, ख), मुढ णेयाणुगच्छति (वृ), मूढ मूढाणुगामिए (चू)।
९ दुहतो वि अकोविता (चू), उभयो वि न याणति (चूपा)।
१० व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या एकवचनम्—णियच्छति।
११ णति (चू)।
१२ जतो (चू), जतू (चूपा)।
१३ अहमक्खाणुगामिए (क)।
१४ अपि (चूपा)।
१५ सव्वुज्जुय (ख), सव्वुज्जुग (चू)।
१६ पर (वृ)।
१७ तक्काइ (ख)।
१८ नातिउट्टति (क), नाइतुट्टति (ख, वृ), ण तिउट्टति (चूपा)।
१९ गरहती (चू)।
२० वदि (चू)।
२१ ससारे ते (ख), ससरते (चू)।
२२ वि उसिया (वृपा)।

सोगताण कम्मोवचय-चिंता-पदं

५१ अहावर पुरक्खाय किरियावाइदरिसण[1] ।
कम्मचितापणट्ठाण दुक्खखधविवद्धण[2] ॥
५२ जाण काएणऽणाउट्टी[3] अवुहो 'ज च'[4] हिंसइ ।
पुट्ठो वेदेइ पर अवियत्त खु सावज्ज ॥
५३ सतिमे तओ आयाणा जेहि कीरइ पावग ।
अभिकम्मा य पेसा य मणसा[5] अणुजाणिया ॥
५४ एए उ तओ आयाणा जेहिं कीरइ पावग ।
एव भावविसोहीए[6] णिव्वाणमभिगच्छइ[7] ॥
५५ पुत्त 'पि ता'[8] समारभ[9] आहारट्ठ[10] असजए ।
भुजमाणो वि[11] मेहावी कम्मुणा[12] णोवलिप्पते[13] ॥

सुत्तकारस्स उत्तर-पद

५६ मणसा जे पउस्सति चित्त तेसि ण विज्जइ ।
अणवज्ज अतह तेसि ण ते सवुडचारिणो ॥
५७ इच्चेयाहि दिट्ठीहि सायागारवणिस्सिया ।
सरण[14] ति मण्णमाणा[15] सेवती पावग[16] जणा ॥
५८ जहा आसाविणिं[17] णाव जाइअघो दुरूहिया[18] ।
इच्छई[19] पारमागतु अतराले[20] विसीयई ॥
५९ एव तु समणा एगे मिच्छदिट्ठी[21] अणारिया ।
'ससारपारकखी ते'[22] ससार अणुपरियट्टति[23] ॥
—त्ति बेमि ॥

---

१ °वाईण दरि° (ख) ।
२ ससारस्स पवड्ढण (क, ख, वृपा) ।
३ °णाउट्टे (चू) ।
४ ज व (क), जे य (चू) ।
५ मणसा य (क) ।
६ भावणसुद्धीए (चू) ।
७ णेव्वाण° (चू) ।
८ पिया (क, ख), पिता (वृ) ।
९ समारब्भ (क्व) ।
१० आहारेज्ज (क, ख) ।
११ य (क, ख) ।
१२ कम्मणा (ख) ।
१३ °लिप्पई (क, ख) ।
१४ हिय (चू) ।
१५ °माणा तु (चू) ।
१६ अहिय (चू) ।
१७ आस्साविणिं (चू) ।
१८ दुरुभिया (चू) ।
१९ इच्छेज्जा (क), इच्छतो (चू) ।
२० अतरा इ (क), अतरा य (चू) ।
२१ मिच्छा° (चू) ।
२२ °पारमिच्छता (चू) ।
२३ °यट्टइ (क) ।

तइओ उद्देसो

पूइकम्म-आहार-दोस-पद

६० ज किंचि वि[1] पूइकड 'सड्ढी[2] आगतु[3] ईहिय'[4]।
सहस्सतरिय[5] भुंजे दुपक्ख चेव सेवई ॥
६१ तमेव अवियाणता विसमसि[6] अकोविया।
'मच्छा वेसालिया चेव'[7] उदगस्सऽभियागमे[8] ॥
६२ उदगस्स प्पभावेण 'सुक्कम्मि घातमेति'[9] उ।
ढकेहि य ककेहि य आमिसत्थेहि[10] ते दुही ॥
६३ एव तु समणा एगे वट्टमाणसुहेसिणो।
मच्छा वेसालिया चेव[11] घायमेसतणतसो[12] ॥

कयवाद पद

६४. इणमण्ण तु अण्णाण इहमेगेसिमाहिय।
देवउत्ते अय लोए बभउत्ते[13] त्ति आवरे ॥
६५ 'ईसरेण कडे'[14] लोए पहाणाइ[15] तहावरे।
जीवाजीवसमाउत्ते[16] सुहदुक्खसमण्णिए ॥
६६ 'सयभुणा कडे[17] लोए इति वुत्त महेसिणा।
मारेण सथुया माया तेण लोए असासए'[18] ॥

---

१. उ (ख, चू),
२ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—सड्ढीहिं।
३ व्या० वि०—विभक्तिरहितपद वर्णलोपश्च—आगन्तुकान् उद्दिश्य।
४ सड्ढीमागतुमीहिय (क, ख)।
५ सहस्सतरकड (चू)।
६ विसमसि (क)।
७. °वेसारिया° (क), मच्छे वेतालिए चेव (चूपा)।
८ उदगस्स अभिआगमे (चू)।
९ सुक्कसि ग्घात° (ख), सुक्कसि घतमेति(चू)।
१० आमिसामीहि (चू)।
११ व्या० वि०—चेव—इव।
१२ घतमेसत° (चू), व्या० वि—एष्यन्ति अनन्तश।
१३ °उत्ति (क, ख)।
१४ इस्सरेण कते (चू)।
१५ व्या वि०—पहाणाइ, अत्र 'कडे' इति वाक्य-शेष।
१६ जीवाजीवेहि सजुत्ते (चू)।
१७ कते (चू)।
१८ नागार्जुनीयास्तु पठन्ति—
अतिवड्ढियजीवा ण,
मही विण्णवते पभु।
ततो से माया सजुत्ते,
करे लोगस्सभिद्दवा ॥ (चू)

६७ माहणा समणा एगे[1] आह अडकडे जगे।
असो तत्तमकासी य अयाणता मुसं वए॥
६८ 'सएहिं परियाएहिं'[2] 'लोगं बूया कडे त्ति य'[3]।
तत्तं ते 'ण वियाणंति'[4] 'णाय णाऽऽसी'[5] कयाइ वि॥
६९ अमणुण्णसमुप्पायं दुक्खमेव विजाणिया।
समुप्पायमजाणता किह[6] णाहिंति[7] संवरं?॥

अवतार-वाद-पदं

७० सुद्धे अपावए आया इहमेगेसिमाहियं।
'पुणो कीडापदोसेणं से तत्थ अवरज्झई॥
७१ इह संवुडे मुणी जाए पच्छा होइ अपावए।
वियडं व जहा भुज्जो णीरयं सरयं तहा'[8]॥

अत्त-पवाद-पसंसा-पदं

७२ एयाणुवीइ मेहावी 'बंभचेरं ण तं वसे'[9]।
पुढो पावाउया[10] सव्वे अक्खायारो सयं सयं॥
७३ 'सए सए'[11] उवट्ठाणे सिद्धिमेव[12] ण अण्णहा।
'अधो वि होति वसवत्ती'[13] सव्वकामसमप्पिए[14]॥

---

१ वेगे (क, ख)।
२. सएण परियाएण (चू)।
३ °त्ति या (क), °कडे विधिं (चू), बूया लोए कडे विधिं, लोक बूया कडे ति च (चूपा)।
४ नाभिजाणंति (वृ)।
५ न विणासी (क, ख, वृ)।
६ कह (ख)।
७ नाहिंति (ख)।
८ कीलावण-प्पदोसेणं, रजसा अवतारते।
इह संवुडे भवित्ताणं, सुद्धे सिद्धीए चिट्ठती।
पुणो कालेणऽणंतेणं, तत्थ से अवरज्झती॥
(चू)।
°इह संवुडे भवित्ताणं,
पेच्चा होति अपावए°। (चूपा)।
९ बंभचेरे ण ते वसे (क, वृ)।
१० पावादिया (चू)।
११ सते सते (क)।
१२ व्या० वि०—मकार अलाक्षणिकः।
१३ अवो इहत्तवसमत्ती (क), इहेव होति° (चू), अवोही होति° (चूपा), 'ख' प्रतौ 'अधोधि' इति पाठोस्ति, किन्तु लिपिदोषेण 'वि' स्थाने 'धि' जात इति प्रतीयते।
१४ °समप्पिओ (चू)।

सिद्ध-वाद-पदं

७४ सिद्धा य ते अरोगा य इहमेगेसि आहिय ।
सिद्धिमेवपुरोकाउ[1] सासए[2] गढिया णरा ॥

उवसहार-पदं

७५ असवुडा अणादीय भमिहिंति पुणो-पुणो ।
कप्पकालमुवज्जति[3] ठाणा आसुरकिव्विसिय[4] ॥
—त्ति वेमि ॥

चउत्थो उद्देसो

जावणा-पद

७६ एते जिया भो ! 'ण सरण'[5] 'वाला पडियमाणिणो'[6] ।
'हिच्चा ण'[7] पुव्वसजोग सितकिच्चोवएसगा[8] ॥
७७ त च भिक्खू परिण्णाय विज्ज 'तेसु ण'[9] मुच्छए ।
अणुक्कस्से[10] अणवलीणे[11] मज्झेण[12] मुणि जावए ॥
७८ सपरिग्गहा य सारभा इहमेगेसिमाहिय ।
'अपरिग्गहे अणारभे'[13] भिक्खू जाण[14] परिव्वए ॥
७९ कडेसु घासमेसेज्जा विऊ दत्तेसण चरे ।
अगिद्धो विप्पमुक्को य ओमाण परिवज्जए ॥

लोगवाय-पद

८० 'लोगवाय णिसामेज्जा'[15] इहमेगेसिमाहिय ।
विवरीयपण्णसभूय[16] 'अण्णवुत्त-तयाणुग'[17] ॥

---

१. ०पुरा० (क, चू), सिद्धमेव (ख) ।
२ आसएहि (चू) ।
३ कप्पकालुववज्जति (चू) ।
४ ०किब्बिसिया (ख) ।
५ असरण (चूपा) ।
६ जत्थ वालेऽवसीयइ (क, वृपा) ।
७ जहित्ता (चू) ।
८ सिताकिच्चोवदेसिता (क, वृपा), सिया-किच्चोवएसगा (ख), सितकिच्चोवगा सिया (चू) ।
९. तेसि ण (क), ण तत्थ (चूपा) ।
१० अणुकम्मे (क), अणुक्कसाए (चू), अणुक्कसे (चूपा) ।
११ अप्पलीणे (क, ख, वृ) ।
१२. मज्झिमेण (क, चू) ।
१३ अपरिग्गहो अणारभो (ख, वृ) ।
१४ ताण (क, ख, वृ) ।
१५ लोगावाय० (चू), लोकावाद णिसामेत्ता (चूपा) ।
१६ विपरीतपण्णसभूया (चू) ।
१७ अणुण्णु वुतिताणुगं (क), अन्नेहिं वुइयाणुग (ख), अण्णोण्णवुइताणुगा (चू) ।

८१ अणंते णितिए लोए सासए ण विणस्सई।
अंतवं णितिए लोए 'इइ धीरोऽतिपासई'[1]।
८२ 'अपरिमाणं वियाणाइ'[2] इहमेगेसि आहियं।
सव्वत्थ सपरिमाणं 'इह धीरोऽतिपासई'[3]॥

अहिंसा-पदं

८३ जे केइ[4] तसा पाणा चिट्ठंतदुव[5] थावरा।
परियाए[6] अत्थि से अंजू[7] जेण[8] ते तसथावरा॥
८४ उरालं[9] जगतो जोगं 'विवज्जासं पलेंति य'[10]।
सव्वे अकंतदुक्खा[11] य अओ सव्वे अहिंसगा[12]॥
८५ एयं खु णाणिणो सारं जं ण हिंसइ कंचण[13]।
अहिंसा समयं चेव एयावंतं[14] वियाणिया॥

भिक्खु-चरिया-पदं

८६ 'वुसिते विगयगिद्धी य'[15] आयाणं सारक्खए।
चरियासणसेज्जासु भत्तपाणे य अंतसो॥
८७ एतेहिं तिहिं ठाणेहिं 'संजए सययं'[16] मुणी।
उक्कसं[17] जलणं णूमं[18]- मज्झत्थं च विगिंचए॥
८८ समिए तु सया साहू पंचसंवरसंवुडे।
सितेहिं असिते भिक्खू आमोक्खाए परिव्वएज्जासि॥
—त्ति बेमि॥

---

१ इति धीरोतिपासति (क), इति वीरोऽधिपासति (चू)।
२ अमितं जाणती वीरे (चू)।
३ इति वीरोऽधिपासती (चू)।
४ केति (क, ख)।
५ चिट्ठंति अदुव (ख), व्या० वि०—द्विपदयो सन्धि —चिट्ठंति+अदुव।
६ परिताए (क)।
७. जायं (चू)।
८ तेण (वृ)।
९. ओरालं (क)।
१० विपरीयं सपलेंति य (क), °पलिंति य(चू)।
११ अक्कंत° (वृ), अकंत ° (वृपा)।
१२ अहिंसया (क), अहिंसिया (ख, वृ)।
१३ किंचण (ख, च)।
१४ इत्तावयं (क)।
१५ वुसेए य विगयगेही (क), वुसिए य विगतगेही (चू), अकसायी सदाऽधिगतगेधी(चूपा)।
१६ संजमेज्ज सया (चू)।
१७ उक्कासं (चू)।
१८ णूमं (क, ख, वृ)।

बीअं अज्झयणं

वेयालिए

पढमो उद्देसो

संबोधि-पद

१ संबुज्झह[1] किण्ण[2] बुज्झहा संबोही खलु पेच्च दुल्लहा।
णो हूवणमंति राइओ णो सुलभं पुणरावि जीवियं॥
२ डहरा वुड्ढा य पासहा[3] गब्भत्था वि[4] चयंति माणवा।
सेणे जह वट्टयं हरे एवं आउखयंमि तुट्टई॥
३. 'मायाहिं पियाहिं लुप्पई णो सुलहा सुगई य[5] पेच्चओ'[6]।
'एयाइं भयाइं'[7] देहिया[8] आरंभा विरमेज्ज सुव्वए[9]॥
४ जमिणं जगई पुढो जगा कम्मेहिं लुप्पंति[10] पाणिणो।
सयमेव 'कडेहि गाहई'[11] णो तस्स[12] मुच्चे अपुट्ठवं[13]॥

अणिच्च-भावणा-पद

५ देवा गंधव्वरक्खसा असुरा भूमिचरा[14] सिरीसिवा[15]।
राया णरसेट्ठिमाहणा[16] 'ठाणा ते वि चयंति'[17] दुक्खिया॥

---

१. भो! संबुज्झह (चू)।
२ किण्णु (चू)।
३ पासह (ख)।
४ य (चू)।
५ वि (वृ)।
६ नागार्जुनीयास्तु पठन्ति—
माता पितरो य भातरो,
विलभेज्जसु केण पेच्चए (चू)।
७ एयाइं भयाइं (क)।
८ पेहिया (ख)।
९ सुट्ठिए (वृपा)।
१० विलुप्यन्ते (वृ)।
११ कडेहिं गाहति (क), कडेऽवगाहए (चू)।
१२ तस्सा (क, ख), वेण (चू)।
१३ पुट्ठवं (क)।
१४ भूमिगता (चू)।
१५ सरि° (क)।
१६ णर-अधिपमाहणा (चूपा)।
१७ ते वि चयंति ठाणाइं (क)।

६ 'कामेहि य सथवेहि य'[1] कम्मसहा[2] कालेण जतवो ।
ताले जह वधणच्चुए एव आउखयम्मि[3] तुट्टई ॥

कम्म-विवाग-पदं

७ जे यावि 'वहुस्सुए[4] सिया'[5] 'धम्मिए माहणे'[6] भिक्खुए सिया[4] ।
अभिणूमकडेहिं[8] मुच्छिए[9] तिव्व से[10] कम्मेहि किच्चती[11] ॥

८ अह पास विवेगमुट्ठिए[12] अवितिण्णे[13] इह भासई धुत[14] ।
णाहिसि[15] आर कओ पर ? वेहासे कम्मेहि किच्चई ॥

कसाय-परिणाम-पद

९ जइ वि य णिगिणे[16] किसे[17] चरे जइ वि य भुजिय मासमतसो ।
'जे इह'[18] मायादि[19] मिज्जई आगता गब्भादणतसो[20] ॥

सिक्खा-पद

१० पुरिसोरम[21] पावकम्मुणा[22] पलियत मणुयाण जीविय ।
सण्णा इह काममुच्छिया मोह जति 'णरा असवुडा'[23] ॥

---

१ कामेहि सथवेहि गिद्धा (वृ) ।
२ कम्मसहे (चू) ।
३ आउखए वि (चू) ।
४ व्या० वि०—वहुस्सुए धम्मिए माहणे भिक्खुए—सर्वत्रापि वहुवचन युज्यते । अत्र वहुवचनान्त क्रियापद स्वीकृतम्, तेन वृत्तिकृता छान्दसत्वाद् वहुवचन द्रष्टव्यम्—इति लिखितम् ।
५ भवे वहुस्सुता (चू) ।
६ धम्मिय माहण (ख, वृ, चू) ।
७ सुयी (चू) ।
८ ०करेहिं (चू) ।
९ मुच्छिया (चू) ।
१० ते (वृ, चू) ।
११. किच्चति (वृ, चू) ।
१२ विवाग० (चूपा) ।
१३ अवि तिण्णे (चूपा) ।
१४ धुव (क, ख, वृ) ।
१५ ण नेहिसि (चूपा) ।
१६ निगणे (क, ख) ।
१७ कसे (ख) ।
१८ जइ विह (चू) ।
१९ मायाति (क), मायाइ (ख), व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—मायादिणा ।
२० गब्भायणतसो (क, ख, वृ), व्या० वि०-गर्भादिअनन्तश ।
२१ व्या० वि०—पुरुष ! उपरम ।
२२ ०कम्मणा (ख) ।
२३ असवुडा नरा (क) ।

११ जयय विहराहि जोगव 'अणुपाणा पथा'[१] दुरुत्तरा ।
अणुसासणमेव पक्कमे[२] वीरेहि सम्म पवेइय ॥

वीर-पद

१२ 'विरया वीरा समुट्ठिया'[३] कोहाकायरियाइपीसणा[४] ।
पाणे ण हणति सव्वसो पावाओ विरयाऽभिणिव्वुडा ॥

कम्म-विधूणण-पद

१३ ण वि ता अहमेव लुप्पए[५] लुप्पती लोगसि[६] पाणिणो ।
एव सहिएऽहिपासए[७] अणिहे से पुट्ठेऽहियासए[८] ॥
१४ धुणिया कुलिय व लेववं कसए[९] देहमणासणादिहिं[१०] ।
अविहिंसामेव पव्वए अणुधम्मो मुणिणा पवेइओ ॥
१५ सउणी जह पसुगुडिया[११] विहुणिय धसयई सिय रय ।
एव दविओवहाणव कम्म खवइ तवस्सि माहणे ॥

अणुलोम-परीसह-पद

१६ उट्ठियमणगारमेसण 'समण ठाणठिय तवस्सिण'[१२] ।
डहरा वुड्ढा य पत्थए अवि सुस्से ण य त लभे जणा[१३] ॥
१७ जइ कालुणियाणि कासिया[१४] जइ रोयति[१५] य पुत्तकारणा ।
दविय भिक्खु समुट्ठिय णो 'लब्भति ण सण्णवेत्तए'[१६] ॥

---

१ अणुपत्थि पाणा (चूपा) ।
२ प्रतिक्रामेद् (वृ), परक्कमे (चू) ।
३ वीरा विरता हु पावका (चू) ।
४ व्या० वि दीर्घत्वमलाक्षणिकम् ।
५ लुप्पधे (चू) ।
६ लोगम्मि (क) ।
७ सहिएहिं° (क) ।
८ पुट्ठो अहियासए (क) ।
९ किसए (ख) ।
१० व्या० वि०—दीर्घत्वमलाक्षणिकम् ।
११ गडिया (ख) ।
१२ समणट्ठाणट्ठित तवस्सिय (चू) ।
१३ जण (क), जणो (चू) ।
१४ से करे (चू) ।
१५ रोवति (चू) ।
१६ लब्भति ण सठवेत्तए (क), लब्भिति न सठवित्तए (वृ) ।

१८ जइ त[1] कामेहि लाविया 'जइ आणेज्ज त बधिता घर'[2] ।
'त जीवित[3] णावकखिण'[4][5] 'णो लब्भति त सण्णवेत्तए'[6] ।।

१९ सेहति[7] य ण ममाइणो 'माय[8] पिया य सुया य भारिया'[9] ।
पोसाहि णे पासओ तुम 'लोग पर पि जहासि पोसणे'[10] ।।

२० अण्णे अण्णेहि मुच्छिया मोह जति 'णरा असवुडा'[11] ।
विसम विसमेहि गाहिया ते पावेहि पुणो पगब्भिया ।।

२१ 'तम्हा दवि[12] इक्ख पडिए'[13] पावाओ विरएभिणिव्वुडे ।
'पणए वीरे महाविहि'[14] सिद्धिपह णेयाउय धुव[15] ।।

२२ वेयालियमग्गमागओ[16] मणवयसा काएण सवुडो ।
चिच्चा वित्त च णायओ आरभ च सुसवुडे चरे[17] ।।

—त्ति बेमि ।।

बीओ उद्देसो

माण-विवज्जण-पद

२३ तय[18] स व जहाइ से रय इइ सखाय मुणी ण मज्जई ।
गोयण्णतरेण माहणे[19] अहऽसेयकरी अण्णेसि इखिणी ।।

---

१. वि य (ख), वि (वृ), ण (चू) ।
२ जति णेज्जाहि ण बधिउ घर (क) ।
३ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—जीवितस्स ।
४ ०कखए (ख), णाभिकखए (वृ) ।
५ जइ जीविय नावकखति (क) ।
६ नो लब्भति न सठवित्तए (क, ख), नो लब्भिति न सठवित्तए (वृ) ।
७ सेहिति (चू) ।
८ माया (ख) ।
९ माति पिति यि पती य भायरो (चू) ।
१० परलोग पि जहाहि उत्तम (चू) ।
११ असवुडा नरा (क) ।
१२ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—दविए ।
१३ दविए व समिक्ख पडिते (चू), तम्हा दवि इक्ख पडिए (चूपा) ।
१४ पणता वीरा महाविधि (चू), पणता वीधे तऽणुत्तर (चूपा), पणया वीरा ० (ख, वृ), व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम्—महावीहि ।
१५ सिव (चू), धुव (चूपा) ।
१६ ०मातओ (क) ।
१७ चरेज्जासि (क,ख), परिचएज्जासि(चूपा) ।
१८ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—तय ।
१९ जे विदू (चू, वृपा), माहणे (चूपा) ।

२४ जो परिभवई परं जणं संसारे परिवत्तई[1] महं[2] ।
अदु इंखिणिया उ पाविया[3] इह संखाय[4] मुणी ण मज्जई ॥

२५ जे यावि अणायगे[5] सिया जे वि य पेसगपेसगे[6] सिया ।
इदं[7] मोणपयं उवट्ठिए णो लज्जे समयं सया चरे ॥

२६ 'समं अण्णयरम्मि संजमे'[8] संसुद्धे समणे परिव्वए ।
जा[9] आवकहा समाहिए दविए कालमकासि पंडिए ॥

२७ दूरं अणुपस्सिया मुणी तीयं धम्ममणागयं तहा ।
पुट्ठे फरुसेहिं माहणे अवि हण्णू 'समयंसि रीयइ'[10] ॥

समता-धम्म-पदं

२८ पण्णसमत्ते[11] सया जए समता[12] धम्ममुदाहरे[13] मुणी ।
सुहुमे[14] उ सया अलूसए 'णो कुज्झे[15] णो माणि[16] माहणे'[17] ॥

२९ बहुजणणमणम्मि संवुडे 'सव्वट्ठेहिं णरे'[18] अणिस्सिए ।
'हरए व सया अणाविले'[19] धम्मं पादुरकासि[20] कासवं ॥

३० बहवे पाणा पुढो सिया पत्तेयं 'समयं समीहिया'[21] ।
जे मोणपयं उवट्ठिए विरइं[22] तत्थ अकासि[23] पंडिए ॥

---

१ परियत्तती (चू) ।
२ महे (क), चिरे (ख, चू, वृपा) ।
३ पातिका (चूपा) ।
४ संखाए (चू) ।
५ अणातए (चू) ।
६ पेस्सग० (चू) ।
७ जे (क, ख, वृ) ।
८ समे० (क, ख), समयन्नरम्मि० (चू), समयण्णतरम्मि वा सुते (चूपा) ।
९ जे (क, ख) ।
१० समयाधियासए (वृपा, चूपा) ।
११. ०समत्थे (क, ख), पण्हसमत्थे (चू, वृपा), पण्हसमत्ते (चूपा) ।
१२ समिया (क), समिता (चू), व्या० वि०—समतयाः ।
१३ ०मुदाहरेज्ज (चू) ।
१४ सुहमे (क) ।
१५ कुप्पे (चू) ।
१६ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—माणी ।
१७. कधयतो ण परं [णु] कोवये (चूपा) ।
१८ सव्वट्ठेसु सदा (चू) ।
१९ हरदे वतुमे [पतुमे ?] अणाउले (चू), ०अणाउरे (चूपा), ०अणाइले (क, चूपा) ।
२० प्रादु० (चू) ।
२१ ०उवेहिया (क, वृपा), समियं उवेहाए (चू), समिया उवेहिता (चूपा) ।
२२ विरयं (क) ।
२३ मकासि (चू) ।

३१ 'धम्मस्स य पारगे मुणी आरभस्स य 'अतए ठिए'[1]।
सोयति य ण ममाइणो 'णो य'[2] लभतो णिय'[3] परिग्गह'[4] ॥

सामण्णस्स माहप्प-पदं

३२ इहलोगे दुहावह विऊ[5] परलोगे य 'दुह दुहावह'[6]।
विद्धसणधम्ममेव त[7] इइ विज्ज को गारमावसे ? ॥

सुहुम-सल्ल-पद

३३ 'महया[8] पलिगोव[9] जाणिया जा वि य वदणपूयणा इह।
सुहुमे सल्ले दुरुद्धरे विउमता पयहिज्ज सथव'[10] ॥

एगचारि-पद

३४ एगे चरे ठाणमासणे[11] सयणे एगे[12] 'समाहिए सिया'[13]।
भिक्खू उवहाणवीरिए वइगुत्ते अज्झत्थसवुडे[14] ॥
३५ णो पीहे 'ण यावपगुणे'[15] दार सुण्णघरस्स सजए।
पुट्ठे ण उदाहरे वइ[16] ण 'समुच्छे णो सथरे तण'[17] ॥
३६ जत्थत्थमिए अणाउले[18] समविसमाणि मुणी हियासए।
चरगा अदुवा वि भेरवा अदुवा तत्थ सिरीसिवा सिया ॥

---

१ अतिए ठिए (क), अतिए ठित (चूपा)।

२ न (क)।

३ नियय (क), णितिय (चू)।

४ नागार्जुनीया विकल्पयन्ति—
सोऊण तय उवट्ठित,
केयि गिही विग्वेण उट्ठिता।
धम्मम्मि इध अणुत्तरे,
तपि जिणेज्ज इमेण पडिते ॥ (चू)।
नागार्जुनीयास्तु पठन्ति—
सोऊण तय उवट्ठिय,
केइ गिही विग्घेण उट्ठिया।
धम्मम्मि अणुत्तरे मुणी,
तपि जिणिज्ज इमेण पडिए ॥ (वृ)।

५ विदा (ख, चू)।

६ दुहा दुहावहा (चूपा)।

७ या (क, चू)।

८ महय (वृ), महता (वृपा)।

९ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—पलिगोव।

१० नागार्जुनीयास्तु पठन्ति—पलिमथ मह विजाणिया, जाविय वदणपूयणा इह[इध]। (चू),
सुहुम सल्ल दुरुद्धर,
तपि जिणे एएण पडिए। (चू, वृ)।

११ °आसणे (चू)।
व्या० वि०—मकार अलाक्षणिक।

१२ एग (ख, चू)।

१३ समाहितो चरे (चू)।

१४ अज्झप्प° (चू)।

१५ णावपगुण (क, ख), °ऽवगुणे (चू)।

१६ वय (ख)।

१७ समुच्छति णो सथडे तणे (चू)।

१८ अणाइले (क)।

३७ तिरिया मणुया[1] य[2] दिव्वगा[3] उवसग्गा तिविहा धियासए[4]।
लोमादीय पि[5] ण हरिसे सुण्णागारगए महामुणी ॥
३८ णो अभिकखेज्ज[6] जीविय णो वि य पूयणपत्थए सिया।
'अब्भत्थमुवेंति भेरवा'[7] सुण्णागारगयस्स भिक्खुणो ॥
३९ उवणीयतरस्स ताइणो भयमाणस्स विविक्कमासण[8]।
सामाइयमाहु तस्स ज[9] जो अप्पाण[10] भए ण दसए ॥

राय-ससग्ग-विवज्जण-पदं

४० उसिणोदगतत्तभोइणो[11] धम्मठियस्स[12] मुणिस्स हीमतो[13]।
ससग्गि[14] असाहु[15] राईहि असमाही उ तहागयस्स वि ॥

अहिगरण-वज्जण-पद

४१ अहिगरणकरस्स[16] भिक्खुणो वयमाणस्स पसज्झ दारुण।
अट्ठे 'परिहायई वहू'[17] अहिगरण ण करेज्ज पडिए[18] ॥

गिहि-भायण-पद

४२ सीओदग[19] पडिदुगछिणो[20] अपडिण्णस्स लवावसक्किणो[21]।
सामाइयमाहु तस्स ज[22] जो[23] गिहिमत्तेऽसण ण भुजई[24] ॥

---

१ मणुमा (चू, वृ)।
२ व (क)।
३ दिव्विया (चू)।
४ हियासिया (ख, वृपा), विसेविया (चू)।
५ × (ख)।
६ जावऽभिकख (चू)।
७ अब्भत्थुमुवति भेरवा (क), पठ्यते च—"अप्पुरत्थमुवेंति भेरवा" (चू)।
८ विवित्त° (क, चू)।
९ त (चू)।
१० व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अप्पाण।
११. °भोयणो (चू)।
१२ धम्मट्ठितस्स (चू)।
१३ ह्लीमतो (चू)।
१४ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—°ससग्गी असाहू।
१५ मसाहु (क)।
१६ °कडस्स (क, ख)।
१७ परिहायते धुव (चू)।
१८ सजए (चू)।
१९ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—सीओदगस्स।
२० °दुगुछिणो (चू)।
२१ °सेक्किणो (क), °सकिणो (ख), हस्तलिखितवृत्त्यादर्शे—अवसक्किणोत्ति—अवसपिण।
२२ त (चू)।
२३ ज (चू)।
२४. भक्खति (चू)।

उत्तम-धम्म-गहण-पद

४३ ण य सखयमाहु जोविय तह वि य बालजणो पगब्भई।
बाले पावेहि मिज्जई[1] इइ सखाय मुणी ण मज्जई॥
४४ छदेण[2] पलेतिमा पया बहुमाया मोहेण पाउडा।
वियडेण पलेंति माहणे सीउण्ह[3] वयसा हियासए॥
४५ कुजए अपराजिए जहा अक्खेहि कुसलेहि दीवय[4]।
कडमेव गहाय णो कलि णो तेय[5] णो चेव दावर॥
४६. एव लोगम्मि ताइणा[6] बुइए जे[7] धम्मे अणुत्तरे।
त गिण्ह हिय ति उत्तम[8] कडमिव सेसऽवहाय[9] पडिए॥

बभचेर-पद

४७ उत्तर[10] मणुयाण आहिया गामधम्म[11] इति मे अणुस्सुय।
जसी[12] विरया समुट्ठिया कासवस्स अणुधम्मचारिणो॥
४८ जे 'एय चरति'[13] आहिय णाएण[14] महया महेसिणा।
ते उट्ठिय[15] ते समुट्ठिया अण्णोण्ण सारेंति धम्मओ॥
४९ मा पेह पुरा पणामए अभिकखे उवहिं धुणित्तए[16]।
जे 'दूवण'[17]ण ते हि'[18]णो णया ते जाणति समाहिमाहिय॥

मुणीणं विवेग-पद

५० णो काहिए[19] होज्ज सजए पासणिए ण य सपसारए।
णच्चा धम्म अणुत्तर कयकिरिए य ण यावि मामए॥

---

१ मज्जती (चूपा)।
२ छण्णेण (चू)।
३ सीयुण्ह (चू)।
४ दिव्वय (क), दिव्वव (चू)।
५ तीय (ख), त्रेत (चू)।
६ ताणिणो (क), ताइणो (चू)।
७ ऽय (चू)।
८ उत्तिम (क)।
९ व्या० वि०—विभक्तिरहित सन्धिश्च—सेस अवहाय।
१० व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—उत्तरा।
११ गामधम्मा (क)।
व्या०वि०—विभक्तिरहितपदम्—गामधम्मे।
१२ जसि (ख)।
१३ एय० (क) ०करति (चू)।
१४ नायएण (चू)।
१५ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—उट्ठिया
१६ हुणित्तए (वृ)।
१७ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—दूवणया, ये दुरूपनता न ते हि समाधि जानन्ति, ये नो नता—विषयेषु न प्रणता—सन्ति ते समाधि जानन्ति।
१८ दूमणएहिं (क, वृपा)।
१९ काधीए (चू)।

५१ छण्ण च पसस[1] णो करे ण य उक्कोस[2] पगास[3] माहणे ।
तेसिं सुविवेगमाहिए[4] पणया जेहिं[5] सुझोसिय[6] धुय[7] ॥

आयहित-पद

५२. अणिहे[8] सहिए सुसवुडे धम्मट्ठी उवहाणवीरिए ।
विहरेज्ज समाहितिंदिए[9] 'आतहित दुक्खेण लब्भते'[10] ॥

सामाइय-पद

५३ ण हि णूण पुरा अणुस्सुय[11] अदुवा त तह णो अणुट्ठिय'[12] ।
मुणिणा सामाइयाहिय[13] णातएण[14] जगसव्वदसिणा ॥

५४ एव मत्ता[15] महतर[16] धम्ममिण[17] सहिया वहू जणा ।
गुरुणो छदाणुवत्तगा विरया तिण्ण महोघमाहिय[18] ॥

—ति वेमि ॥

तइओ उद्देसो

कम्मावचय-पद

५५ सवुडकम्मस्स भिक्खुणो ज दुक्ख पुट्ठ अवोहिए ।
त सजमओऽवचिज्जई[19] मरण हेच्च वयति पडिया ॥

---

१ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—पसस ।
२ उक्कास (क, चू), व्या० वि०—विभक्ति-रहितपदम्—उक्कोस ।
३ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—पगास ।
४ च विवेग० (वृ), सुविवेग० (वृपा) ।
५ धम्मे (चू) ।
६ सुज्झोसिय (क, चू, वृपा) ।
७ धूय (ख, वृ) ।
८ अणहे (वृपा) ।
९ ०इदिए (ख), ०तेंदिए (चू) ।
१० आयहिय खु दुहेण लब्भइ (क, ख) ।
११ मऽणुस्सुत (चू) ।
१२ ०समुट्ठिय (क, ख), अदुवाऽवितध णो अविट्ठित (चू); अदुवाऽवितह णो० (वृपा) ।
१३ सामाइग पद (चू) ।
१४ नाएण (क) ।
१५ माता (चू) ।
१६ महत्तर (चूपा, वृपा) ।
१७ ०मिम (चू) ।
१८ मघोघ० (चू) ।
१९ ०विचिज्जती (चू) ।

काम-मुच्छा-पदं

५६ जे विण्णवणाहिऽजोसिया[1] सतिण्णेहि सम वियाहिया।
'तम्हा उड्ढ ति पासहा'[2] अद्दक्खू कामाइ रोगव ॥

५७ अग्ग वणिएहि आहिय[3] धारेती रायाणया[4] इह।
'एव परमा महव्वया अक्खाया उ सराइभोयणा'[5] ॥

५८ जे इह सायाणुगा णरा अज्झोववण्णा कामेहि मुच्छिया।
किवणेण[6] सम[7] पगब्भिया ण वि जाणति समाहिमाहिय ॥

५९ वाहेण जहा व विच्छए अवले होइ गव पचोइए।
'से अतसो अप्पथामए णाईवचए अवले विसीयइ'[8] ॥

६० एव कामेसणाविऊ[9] अज्ज सुए पयहेज्ज[10] सथव।
कामी कामे ण कामए लद्धे वा वि[11] अलद्ध[12] कण्हुइ ॥

६१ मा पच्छ असाहुया भवे[13] अच्चेही[14] अणुसास[15] अप्पग।
अहिय च असाहु[16] सोयई से थणई परिदेवई[17] वहु ॥

६२ इह जीवियमेव पासहा[18] 'तरुण एव वाससयस्स तुट्टई'[19]।
'इत्तरवास व बुज्झहा'[20] गिद्ध[21] णरा कामेसु[22] मुच्छिया[23] ॥

---

१ °वणाहजोसिया (क), °वणाअझोसिया (ख), °ऽझोसिया (वृपा), ऽझूसिया (चू)।
२ उड्ढ तिरिय अघे तहा (वृपा), उड्ढ तिरिय अधेतिधा (चूपा)।
३ आणिय (चू), आहित (चूपा)।
४ राईणिया (क, ख)।
५ एव परमाणि महव्वताणि, अक्खाताणि सरातिभोयणाणि (चू)।
६ किमणेण (चू, वृपा)।
७ समा (वृ)
८ जेण तस्स तहिं अप्पथामता, अचयतो खलु सेऽवसीदतो (चू), से अतए अप्पथामए, नातिचए अवसे विसीदति (चूपा)।
९ कामेसण विऊ (क, ख, चूपा)।
१० पयहामि (चू), पजहेज्ज (क, चूपा)।
११ × (क)।
१२ अलद्धे (चू)।
१३ तवे (चू)।
१४ व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम्।
१५ अणुसासे (चू)।
१६ व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम्।
१७ परितप्पती (चू)।
१८ पस्सधा (चू)।
१९ तरुणेव० (ख), तरुणगो वाससयस्स तिउट्टति (चू), दुब्बलवाससया तिउट्टति (चूपा), °वाससयाउ तुट्टति (वृपा)।
२० इत्तर वासे य बुज्झह (क)।
२१ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—गिद्धा।
२२ कामेहिं (क)।
२३ चिप्पिता (चू)।

आरंभ-परिणाम-पद

६३ जे इह आरभणिस्सिया आयदड[1] एगतलूसगा ।
गता ते पावलोगय चिरराय[2] आसुरिय[3] दिस ॥

परलोग-सदेह-पद

६४ ण य सखयमाहु जीविय तह वि य वालजणो पगब्भई ।
पच्चुप्पण्णेण कारिय के[4] दट्ठु परलोगमागए ? ॥

परलोग-सद्दहणा-पद

६५ अदक्खुव[5] ! दक्खुवाहिय सद्दहसू अदक्खुदसणा ! ।
हदि ! हु सुणिरुद्धदसणे मोहणिज्जेण[6] कडेण कम्मुणा ॥

आयतुला-पद

६६ दुक्खी मोहे पुणो पुणो णिव्विदेज्ज सिलोगपूयण ।
एव सहिएऽहिपासए[7] 'आयतुल पाणेहि सजए'[8] ॥

अगारवासे धम्म-पद

६७ गार पि य[9] आवसे णरे अणुपुव्व पाणेहि सजए ।
समया सव्वत्थ सुव्वए देवाण गच्छे सलोगय ॥

सच्चोवक्कम-पद

६८ सोच्चा भगवाणुसासण सच्चे तत्थ करेज्जुवक्कम[10] ।
सव्वत्थ विणीयमच्छरे[11] उछ भिक्खु[12] विसुद्धमाहरे ॥
६९ सव्व णच्चा अहिट्ठए धम्मट्ठी उवहाणवीरिए ।
गुत्ते जुत्ते सया जए आयपरे परमायतट्ठिए ॥

असरण-भावणा-पद

७० वित्त पसवो य णाइओ[13] 'त वाले'[14] सरण ति मण्णई ।
एए मम 'तेसि वा'[15] अह णो ताण सरण ण[16] विज्जई ॥

---

१ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—आयदडा ।
२ चिरकाल (चू) ।
३ आसूरिय (चू) ।
४ को (ख) ।
५ अद्दक्खुव (चू) ।
६ मोहणिएण (चू)।
७ ऽधिपासिया (चू) ।
८ °तुले पाणेहि भवेज्जसि (चू) ।
९ × (ख) ।
१० करेहु° (क, चू), करेज्ज° (ख), करेज्जुवक्कम (चूपा) ।
११ अवणीत° (वृ) ।
१२ व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम् ।
१३ नायतो (क), णातयो (चू) ।
१४ वालजणो (चू) ।
१५ तेसु वा (क), तेसु वि (ख), तेसु या (वृ), °वी (चू) ।
१६ च (चू) ।

७१ अब्भागमियम्मि वा दुहे अहवोवक्कमिए[1] भवतिए[2]।
एगस्स गई य[3] आगई विदुमता सरण ण मण्णई ॥
७२ सव्वे सयकम्मकप्पिया अवियत्तेण दुहेण पाणिणो।
हिंडति भयाउला सढा जाइजरामरणेहिऽभिद्दुया[4] ॥

वोहि-दुल्लह-पदं

७३ इणमेव[5] खण वियाणिया[6] णो सुलभ 'वोहिं च'[7] आहिय।
एव सहिएऽहिपासए[8] आह जिणे इणमेव सेसगा ॥

धम्मस्स तेकालियत्त-पद

७४ अभविंसु पुरा वि भिक्खवो आएसा वि भविंसु[9] सुव्वया।
एयाइ गुणाइ आहु[10] ते कासवस्स अणुधम्मचारिणो ॥
७५ तिविहेण वि पाण[11] मा हणे आयहिए अणियाण[12] सवुडे।
एव सिद्धा अणतगा[13] सपइ[14] जे य अणागयावरे ॥
७६ एव[15] से उदाहु अणुत्तरणाणी अणुत्तरदसी अणुत्तरणाणदसणधरे।
अरहा णायपुत्ते भगव वेसालिए[16] वियाहिए[17] ॥
—त्ति वेमि ॥

---

१ अहवा उवक्कमिए (क)।
२ भवतए (चू), भवतरे (वृ), भवतिए (वृ ा)।
३ व (क, चू)।
४ वाधिजरामरणेहऽभिद्दुता (चू)।
५ इणमो य (चू, वृ)।
६ विताणिता (चू)।
७ वोधी य (चू)।
८ ऽहियासए (ख), ऽहिपस्सिया (चू); ऽधियासए (चूपा, वृपा)।
९ भवति (क, ख)।
१० आह (चू)।
११ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—पाणा।
१२ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अणियाणे।
१३ अणतसो (क, ख)।
१४ सपत (चू)।
१५ तुलना—उत्तरज्भयणाणि ६।१७।
१६ वेसालीए (चू)।
१७ 'क' प्रतौ अस्यानन्तरमेक श्लोक अतिरिक्तो लभ्यते—
इतिकम्मवियालमुत्तम,
जिणवरेण सुदेसिय सया।
जे आचरति आहिय,
खवितरया वइहिंति ते सिवं गतिं ॥

तइयं अज्झयणं

उवसग्गपरिण्णा

पढमो उद्देसो

ओघ-उवसग्ग-पद

१ सूर मण्णइ अप्पाण जाव जेय ण पस्सई ।
जुज्झत दढधम्मा[न्ना ?]ण[1] सिसुपालो व महारह ॥
२ पयाया सूरा रणसीसे सगामम्मि उवट्ठिए ।
माया पुत्त ण जाणाइ जेएण परिविच्छए[2] ॥
३ एव सेहे वि अप्पुट्ठे भिक्खुचरिया[3] - अकोविए ।
सूर मण्णइ अप्पाण जाव लूह ण सेवए ॥

सीत-परीसह-पदं

४ जया हेमतमासम्मि सीय फुसइ सवायग ।
तत्थ मदा विसीयति[4] रज्जहीणा[5] व खत्तिया ॥

गिम्ह-परीसह-पदं

५ पुट्ठे गिम्हाहितावेण विमणे सुपिवासिए[6] ।
तत्थ मदा विसीयति मच्छा अप्पोदए जहा ॥

जायणा-परीसह-पद

६ सया दत्तेसणा दुक्ख जायणा दुप्पणोल्लिया ।
कम्मता[7] दुब्भगा[8] चेव इच्चाहसु पुढोजणा ॥

---

१ कोष्ठकान्तर्वर्ती पाठश्चूर्ण्यनुसारी, यथा—दढधन्वानम् ।
२ °विच्छिए (क, ख) ।
३ भिक्खाचरिए (क), भिक्खाचरिया (ख वृ) ।
४ वसीयति (क) ।
५ रट्ठ° (चू) ।
६ सुप्पिवासिए (क) ।
७ कम्मत्ता (क, ख, वृ) ।
८ दूहगा (ख) ।

७ एए सद्दे[1] अचायता गामेसु णगरेसु वा[2]।
तत्थ मदा विसीयंति संगामम्मि व भीरुणो[3]॥

वध-परीसह-पद

८ अप्पेगे खुज्झियं[4] भिक्खु[5] सुणी डसइ लूसए।
तत्थ मदा विसीयंति तेउपुट्ठा[6] व पाणिणो॥

अक्कोस-परीसह-पद

९ अप्पेगे पडिभासंति[7] पाडिपथियमागया[8]।
'पडियारगया एए'[9] जे एए एवं[10]-जीविणो॥

१० अप्पेगे वइं[11] जुंजंति णिगिणा[12] पिंडोलगाहमा।
मुंडा कंडू-विणट्ठंगा उज्जल्ला[13] असमाहिया॥

११ एवं विप्पडिवण्णेगे अप्पणा उ अजाणया।
तमाओ ते तमं जंति मंदा मोहेण पाउडा[14]॥

फास-परीसह-पद

१२ पुट्ठो य दंसमसगेहिं तणफासमचाइया।
ण मे दिट्ठे परे लोए किं[15] परं मरणं सिया?॥

केसलोय-बंभचेर-परीसह-पद

१३ संतत्ता केसलोएणं बंभचेरपराइया।
तत्थ मदा विसीयंति 'मच्छा पविट्ठा'[16] व केयणे॥

---

१ सद्दा (ख)।
२ य (क)।
३ भीरुया (ख)।
४ कुज्झियं (क, ख), खुधियं (वृ)।
५ भिक्खू (चू)।
६ तेज० (क)।
७ परि० (क, चू)।
८ पडिपथिय० (क, ख)।
९ परियार० (क), तद्दारवेत्तणिज्जेते (चूपा)।
१० एव (क)।
११ वति (ख)।
१२ चरगा (चू)।
१३ उज्जाया (चूपा)
१४ ०पाउता (चू), मतिमदा इत्यिगाउया (चूपा)।
१५ जइ (क, ख, वृ)
१६ मच्छाविट्ठा (ख)

वध-वध-परीसह-पदं

१४ आयदडसमायारा मिच्छासठियभावणा ।
हरिसप्पओसमावण्णा केई लूसतिऽणारिया[1] ॥

१५ अप्पेगे पलियतसि चारो[2] 'चोरो त्ति'[3] सुव्वय ।
वधति भिक्खुय वाला कसायवसणेहि[4] य ॥

१६ तत्थ दडेण सवीते मुट्ठिणा अदु फलेण वा ।
णाईण सरई वाले इत्थी वा कुद्धगामिणी ॥

उक्खेव-पद

१७ एए भो कसिणा[5] फासा फरुसा[6] दुरहियासया[7] ।
हत्थी वा सरसवीता[8] कीवावसगा[9] गया गिह ॥

—ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

अनुकूल-परीसह-पद

१८ अहिमे[10] सुहुमा सगा भिक्खूण जे दुरुत्तरा ।
जत्थ एगे[11] विसीयति ण चयति[12] जवित्तए[13] ॥

१९ अप्पेगे णायओ[14] दिस्स रोयति परिवारिया[15] ।
पोस णे तात ! पुट्ठो सि कस्स 'तात ! जहासि'[16] णे ॥

---

१ लूसन° (क), लूसेंति° (चू) ।
२ चारि (क, ख) ।
३ चोरित्ति (क) ।
४ °वयणेहि (क, ख, वृ) ।
५ फरुसा (चू) ।
६ कसिणा (चू) ।
७ दुरु° (क, ख) ।
८ °सवीते (ख) ।
९ कीवाऽवस (क, वृ), कीवा अवसा (ख), तिव्वसढा (वृपा), तिव्वसढगा (चूपा) ।
१० अह इमे (ख), अथ इमे (चू) ।
११ मदा (चू) ।
१२ चएत्ता (चू) ।
१३ जहित्तए (क), जवइत्तए (चू) ।
१४ नातिगा (ख) ।
१५ °यारिया (क) ।
१६ तात चयासि (ख, वृ), परिच्चयासि (चू) ।

२० पिया ते थेरओ तात ! ससा ते खुड्डिया इमा।
भायरो ते सवा[1,2] तात ! सोयरा किं जहासि[3] णे ? ॥

२१ मायरं पियरं पोस 'एवं लोगो[4] भविस्सइ।
एवं 'खु लोइयं[5] तात ! जे 'पालेंति[6] उ[7] मायरं।

२२ 'उत्तरा महुरुल्लावा[8] पुत्ता ते तात ! खुड्डया।
भारिया ते णवा तात ! मा सा अण्णं जणं गमे॥

२३ एहि तात[9] ! घरं जामो मा तं कम्म[10] सहा वयं।
बीयं पि ताव[11] पासामो जामु ताव सयं गिहं॥

२४ गंतुं तात ! पुणाऽऽगच्छे[12] ण तेणाऽसमणो सिया।
अकामगं परक्कमंत[13] को तं[14] वारेउमरहइ ? ॥

२५ जं किंचि अणगं तात ! तं पि सव्वं समीकतं।
हिरण्णं ववहाराइ तं पि दाहामु[15] ते वयं॥

२६ इच्चेव[16] णं सुसेहंति[17] कालुणीयउवट्ठिया[18]।
विबद्धो णाइसंगेहिं तओऽगारं पहावइ॥

२७ 'जहा रुक्खं वणे जायं[19] मालुया पडिबंधइ।
एवं[20] णं पडिबंधति[21] णायओ असमाहिए[22]॥

---

१ व्या० वि०—शृण्वतीति श्रवा — आणाउववायवयणणिद्देसे य चिट्ठति (चू)।
२ सया (क), सगा (ख, वृ)।
३ चयासि (ख, वृ)।
४ एस लोए (क)।
५ खलु लोयं (ख)।
६ पोसइ (क), पालयंति (ख)।
७ पोसे पिउं (क्व)।
८ इतरा मधुरोल्लावा (चूपा)।
९ ताव (चू)।
१० व्या० वि०—'अकृथा' इति क्रियाशेषः।
११ तात (ख, वृ)।
१२ पुणोगच्छे (क, ख)।
१३ परक्कमं (क), परिक्कम्मं (ख)।
१४ ते (क, ख)।
१५ दासामो (चू)।
१६ इच्चेवं (चू)।
१७ सुसेहिंति (क), सुसिक्खंत (चू), सुसेहिंति (चूपा)।
१८ कालुणीयासमुट्ठिया (क), °समुट्ठिया (ख), कालुणतो° (चू)।
१९ वणे जातं जधा रुक्खं (चू)।
२० एवं (क)।
२१ परिवेढति (चू)।
२२ असमाहिणा (क्व)।

२८ विवद्धो[1] णाइसगेहिं[2] हत्थी वा वि णवग्गहे।
पिट्ठओ परिसप्पति 'सूती गो व्व अदूरगा'[3]॥
२९ एए सगा मणुस्साण पायाला व अतारिमा।
कीवा 'जत्थ य किस्सति'[4] णाइसगेहि मुच्छिया॥
३० त च भिक्खू परिण्णाय सव्वे सगा महासवा।
जीविय णावकखेज्जा सोच्चा धम्ममणुत्तर॥
३१ अहिमे[5] सति आवट्टा[6] कासवेण पवेइया।
वुद्धा जत्थावसप्पति सीयति अवुहा जहिं॥

भोग-णिमतण-पद

३२ रायाणो रायऽमच्चा य माहणा अदुव खत्तिया।
णिमतयति भोगेहिं भिक्खुय साहुजीविण॥
३३ हत्थस्स[7]-रह-जाणेहिं विहारगमणेहि य।
'भुज भोगे इमे सग्घे'[8] महरिसी ! पूजयामु त[9]॥
३४ वत्थगधमलकार इत्थीओ सयणाणि य।
भुजाहिमाइ भोगाइ आउसो[10] ! 'पूजयामु त'[11]॥
३५ जो तुमे णियमो चिण्णो भिक्खुभावम्मि सुव्वया[12] !।
अगारमावसतस्स सव्वो 'सविज्जए तहा'[13]॥
३६ चिर दूइज्जमाणस्स दोसो दाणि कुओ[14] तव ?।
इच्चेव ण णिमतेति णीवारेण[15] व सूयर॥
३७ चोइया भिक्खुचरियाए[16] अचयता जवित्तए[17]।
तत्थ मदा विसीयति उज्जाणसि व दुव्वला॥

---

१. विवद्धे (चू)।
२ नाय० (क)।
३ ०अदूरए (क), सूतिय व्व अदूरतो (चू)।
४ ०कीसति (क), जत्थ विसण्णेसी (चू), जत्थ विसण्णासी, जत्थावकीसति (चूपा)।
५ अह इमे (क), अहो इमे (चू, वृपा), अव इमे (चूपा)।
६ याऽऽवट्टा (चू), आवट्टा (चूपा)।
७ व्या० वि०–सन्धिपदमिदम्—हत्थि+अस्स।
८ ०सक्खे (क), भुजाहिमाइ भोगाइ (चू)।
९ ते (चू)।
१०. आयसो (चू)।
११ पूजयामि ते (चू)।
१२ उत्तमो (चू)।
१३ सो चिट्ठती तधा (चू), सविज्जते तधा (चूपा)।
१४ कओ (क)।
१५ णीयारेण (चू)।
१६ भिक्खुवज्जाए (क)।
१७. जवइत्तए (चू)।

३८ अचयता व[1] लूहेण उवहाणेण तज्जिया।
तत्थ मदा विसीयति 'पकसि व'[2] जरग्गवा॥

३९ एव[3] णिमतण लद्ध् मुच्छिया गिद्ध[4] इत्थिसु।
अज्झोववण्णा कामेहिं[5] चोइज्जता 'गिह गय'[6]॥

— त्ति बेमि॥

तइओ उद्देसो

अज्झत्थ-विसीदण-पद

४० जहा सगामकालम्मि 'पिट्ठओ भीरु[7] वेहइ'[8]।
वलय गहण णूम को जाणइ पराजय?॥

४१ मुहुत्ताण[9] मुहुत्तस्स मुहुत्तो होइ[10] तारिसो।
पराजियाऽवसप्पामो इति भीरू उवेहई॥

४२ एव तु समणा एगे अवल णच्चाण अप्पग।
अणागय भय दिस्स अवकप्पति म सुय॥

४३ 'को जाणइ'[11] वियोवात'[12] इत्थीओ उदगाओवा?।
चोइज्जता पवक्खामो ण[13] णे अत्थि पकप्पिय॥

४४ इच्चेव[14] पडिलेहति वलयाइ[15] पडिलेहिणो।
वितिगिंछसमावण्णा[16] पथाण व अकोविया॥

४५ जे उ सगामकालम्मि णाया सूरपुरगमा।
'ण ते पिट्ठमुवेहिंति'[17] किं पर मरण सिया[18]?॥

---

१ य (चू)।
२ सिरसि व (क, वृ), उज्जाणसि (ख), थलसि व (क्व)।
३ एय (चू)।
४ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—गिद्धा।
५ कामेसु (चू)।
६ गया गिह (ख)।
७ व्या वि०—विभक्तिरहितपदम्—भीरू।
८ पिट्ठिओ० (क), पच्छतो भीरू वेहति (चू)।
९ मुहुत्ताण (क)।
१० हवति (क, चू)।
११ के जाणति (चू) (निर्युक्ति गा० ४१)।
१२ विउवाय (क)।
१३ नो (क)।
१४ इच्चे व ण (क, ख)।
१५ वलय (ख)।
१६ विनिगिच्छ° (वृ)।
१७ नो ते पुट्ठ° (ख), °पिट्ठतो पेहति (चू)।
१८ भवे (चू)।

४६ एव 'समुट्ठिए भिक्खू'[1] वोसिज्जा[2] गारवघण ।
आरभ तिरिय[3] कट्टु अत्तत्ताए[4] परिव्वए ॥

परवादवयण-पद

४७ तमेगे परिभासति भिक्खुय साहुजीविण[5] ।
जे 'एव परिभासति'[6] अतए ते समाहिए[7] ॥

४८ सवद्धसमकप्पा हु 'अण्णमण्णेसु मुच्छिया'[8] ।
पिंडवाय गिलाणस्स ज सारेह दलाह य ॥

४९ एव तुब्भे सरागत्था अण्णमण्णमणुव्वसा ।
णट्ठ-सप्पह-सब्भावा ससारस्स अपारगा ॥

५० अह ते पडिभासेज्जा[9] भिक्खू मोक्खविसारए ।
एव तुब्भे पभासता[10] दुपक्ख[11] चेव सेवहा ॥

५१ तुब्भे भुजह पाएसु गिलाणाभिहड[12] ति य ।
त च वीओदग भोच्चा तमुद्देस्सादि[13] ज कड ॥

५२ लित्ता तिव्वाभितावेण[14] उज्झिया[15] असमाहिया ।
णाइकडूइय सेय[16] अरुयस्सावरज्झई[17] ॥

५३ तत्तेण अणुसिट्ठा[18] ते अपडिण्णेण जाणया ।
ण एस णियए[19] मग्गे असमिक्खा[20] वई किई[21] ॥

---

१ समुट्ठित भिक्खु (चू) ।
२ वोसिच्चा (क) ।
३ (वि) तिरिय (चू) ।
४ आनत्ताए(क), आतत्ताए, आतथाए(चूपा) ।
५ ०जीविय (क) ।
६ ते उ० (क), तं उ एव भासति (चू) ।
७ ऽसमाहिते(चू), व्या० वि०—अत्र पञ्चम्येकवचने 'समाहीए' इतिरूप भवति, किन्तु छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम् ।
८ अण्णमण्णसमुच्छिता (चू), अण्णमण्णेहिं मुच्छिया (चू) (निर्युक्ति गा० ४१) ।
९ परिभासेज्जा (ख, वृ), परिभासिज्ज (क) ।
१० पभासिता (क), स्वभासता (चू) ।
११ दुवक्ख (चू) ।
१२ गिलाणाभिहडम्मि (क), गिलाणोऽभिहड ति (ख, चू)
१३ तमुद्दिस्सादि (क), तमुद्देसा य (ख) ।
१४ तिक्खा० (ख), तिव्वाभिलेवेण (चूपा) ।
१५ उज्जया (क), उज्जुया (ख), उज्जाता (चू) ।
१६ साधु (चू) ।
१७ अरुयस्स० (क), अरुकस्सावरज्झति (चूपा) ।
१८ अणुसट्ठा (क, चू) ।
१९ णितिए (चू) ।
२० व्या० वि०—अकारस्य दीर्घत्वम् ।
२१ कति (क, ख) ।

५४ एरिसा जा[1] वई एसा 'अग्गे वेणु व्व करिसिया'[2]।
गिहिण[3] अभिहड सेय भुजिउ ण उ[4] भिक्खुण[5] ॥
५५ धम्मपण्णवणा 'जा सा'[6] सारम्भाण विसोहिया।
ण उ एयाहि दिट्ठीहि पुव्वमासि पगप्पिय ॥
५६ सव्वाहि अणुजुत्तीहि अचयता[7] जवित्तए।
तओ वाय णिराकिच्चा[8] ते भुज्जो वि पगब्भिया ॥
५७ रागदोसाभिभूयप्पा[9] मिच्छत्तेण अभिद्दुया[10]।
अक्कोसे[11] सरण जति टकणा इव पव्वय ॥
५८ वहुगुणप्पकप्पाइ कुज्जा अत्तसमाहिए[12]।
जेणण्णे ण[13] विरुज्झेज्जा तेण त त समायरे ॥
५९ इम च धम्ममायाय कासवेण पवेइय[14]।
कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स अगिलाए[15] समाहिए ॥
६० सखाय पेसल धम्म दिट्ठिम परिणिव्वुडे।
उवसग्गे णियामित्ता[16] आमोक्खाए[17] परिव्वएज्जासि ॥

—त्ति बेमि ॥

चउत्थो उद्देसो

अणुस्सुत-विसीदण-पदं

६१ आहसु महापुरिसा पुव्वि तत्ततवोधणा।
'उदएण सिद्धिमावण्णा'[18] तत्थ मदो विसीयइ ॥

---

१ भो (ख), भे (चूपा)।
२ अग्गवेणु० (ख), अग्गिवेल्लव्व करिसिता (चू), अग्गे वेलुव्व करिसिति (चूपा)।
३ गिहिणो (ख, चू)।
४ व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम्।
५ भिक्खुणो (ख, चू)।
६ एसा (चू)।
७ अचएता (चू)।
८, णिरे किच्चा (चू), नरे किच्चा (क)।
९ रागदोस० (ख)।
१० अभिदुया (ख)।
११ आओसे (ख)।
१२ आतसमाहितो (चू)।
१३. णो (ख)।
१४ पवेदिद (चू)।
१५ अगिणेण (चू)।
१६ अवियासेंतो (चू)।
१७. अमोक्खाए (चू)।
१८ भोज्जा सीतोदग सिद्धा (चू), मदेऽवसीयति (क)।

६२ अभुंजिया णमी वेदेही[1] रामउत्ते[2] य[3] भुंजिया।
वाहुए उदगं भोच्चा तहा तारागणे[4] रिसी ॥

६३ आसिले देविले चेव दीवायण[5] महारिसी।
पारासरे दगं भोच्चा बीयाणि[6] हरियाणि य ॥

६४ एए पुव्वं[7] महापुरिसा आहिया इह संमया।
भोच्चा बीयोदगं[8] सिद्धा इइ[9] मेयमणुस्सुयं ॥

६५ तत्थ मंदा विसीयंति वाहच्छिण्णा व गद्दभा।
पिट्ठओ[10] परिसप्पंति पीढसप्पीव[11] संभमे ॥

सात सातेण विज्जई-पद

६६ इहमेगे उ भासंति[12] सातं सातेण विज्जई।
'जे तत्थ'[13] आरियं[14] मग्गं परमं च[15] समाहियं[16] ॥

६७ मा एयं अवमण्णंता अप्पेणं 'लुंपहा वहुं'[17]।
एयस्स अमोक्खाए 'अयोहारि व्व'[18] जूरहा ॥

६८ 'पाणाइवाए वट्टंता'[19] 'मुसावाए असंजया'[20]।
अदिण्णादाणे वट्टंता मेहुणे य परिग्गहे ॥

---

१ विदेहि (ख)।
२. रामगुत्ते (क, वृ), रामाउत्ते (चू), वृत्तिकारेण 'रामगुप्त' इति व्याख्यातम्, किन्तु ऋषिभाषितस्य संदर्भे नैतत्सम्यक् प्रतिभाति।
३. व (क)।
४. नारायणे (वृ), चूर्ण्यां (पुण्यविजयजी द्वारा संपादित, पृ० ९५) 'नारायणे' इति पाठो मुद्रितोस्ति, किन्तु ऋषिभाषितस्य संदर्भे 'तारागणे' पाठो युज्यते। संभवतो लिपिदोषेण 'तकारं' स्थाने 'नकारो जातः।
५ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—दीवायणे।
६ बीताणि (चू)।
७ पुव्विं (चू)।
८ सीतोदगं (चू)।
९ जह (चू)।
१० अणुधावंति (चू)।
११ पिट्ठ० (ख)।
१२ मन्नंते (चू, वृपा)।
१३ जितत्थ (चू)।
१४ आयरियं (चू)।
१५ ति (चू)।
१६ समाधिता (चू)।
१७ वहुं लुंपध (चू)।
१८ अयहारी व (क, चू)।
१९ पाणाइवाए व मक्खंता (क)।
२० ०य संजया (क), मुसावादे वऽसंजता (चू)।

अबंभचेर-समत्थण-तण्णिरसण-पद

६९ एवमेगे[1] उ[2] पासत्था पण्णवेति अणारिया ।
'इत्थीवस गया'[3] वाला जिणसासणपरमुहा ॥
७० जहा गड पिलाग वा परिपीलेत्ता[4] मुहुत्तग ।
एव विण्णवणित्थीसु[5] दोसो तत्थ कओ[6] सिया ? ॥
७१ जहा 'मधादए णाम'[7] थिमिय पियति[8] दग ।
एव विण्णवणित्थीसु[9] दोसो तत्थ कओ[10] सिया ? ॥
७२ जहा विहगमा पिंगा थिमिय पियति[11] दग ।
एव विण्णवणित्थीसु[12] दोसो तत्थ कओ[13] सिया ? ॥
७३ 'एवमेगे उ पासत्था'[14] मिच्छादिट्ठी[15] अणारिया ।
अज्झोववण्णा कामेहिं पूयणा इव तरुणए[16] ॥
७४ अणागयमपस्सता[17] पच्चुप्पण्णगवेसगा[18] ।
ते पच्छा परितप्पति[19] 'झीणे आउम्मि'[20] जोव्वणे ॥
७५ जेहिं काले परक्कत[21] 'ण पच्छा परितप्पए'[22] ।
ते धीरा[23] बधणुम्मुक्का णावकखति जीविय ॥
७६ जहा णई वेयरणी दुत्तरा[24] इह सम्मता ।
एव लोगसि णारीओ दुत्तरा[25] अमईमया[26] ॥

---

१ एवमेते (चू) ।
२ य (क) ।
३ इत्थीवसगा (क), इत्थीवसगता (चू) ।
४ परिपीलिज्ज (क, ख), णिपीलेत्ता (चू) ।
५ °वणत्थीसु (चू) ।
६ कुतो (चू) ।
७ मधायती नाम (क), मधातइण्णाम (चू) ।
८ भुजती (क, ख) ।
९ °वणत्थीसु (चू) ।
१० कुओ (चू) ।
११ भुजती (क, ख) ।
१२ °वणत्थीसु (चू) ।
१३ कुओ (चू) ।
१४ एव तु समणा एगे (चू) ।
१५ मिच्छदिट्ठी (ख) ।
१६. यद्यपि चूर्णीपाठे 'तरुणए' इत्येव पाठो मुद्रितोऽस्ति, किन्तु 'तण्णगे—छावके' इति व्याख्याशेन प्रतीयते मौलिक पाठ 'तण्णगे' इति आसीत्, किन्तु कठिनशब्दाना सरलीकरणपद्धत्या अत्रापि परिवर्तन जातमिति सभाव्यते ।
१७ °मपासता (चू) ।
१८ °गवेसए (क), °गवेसणा (चू) ।
१९ अणुसोयति (चू) ।
२० खीणे° (ख), झीणाउम्मि (चू) ।
२१ परिक्कत (क, चू) ।
२२ सुकड तेसि सामण्ण (चू) ।
२३ वीरा (क) ।
२४ दुरुत्तरा (ख) ।
२५ दुरुत्तरा (ख), दुरुत्तराओ (चू) ।
२६ व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम् ।

७७ जेहिं 'णारीण सजोगा'[1] पूयणा पिट्ठओ कया ।
सव्वमेय णिराकिच्चा[2] ते ठिया सुसमाहीए[3] ॥

७८ एए ओघं तरिस्सति समुद्द व[4] ववहारिणो ।
जत्थ पाणा विसण्णासी[5] 'किच्चती सयकम्मुणा'[6] ॥

७९ त च भिक्खू परिण्णाय सुव्वए समिए चरे ।
मुसावाय विवज्जेज्जा[7] 'ऽदिण्णादाण च'[8] वोसिरे ॥

८० उड्ढमहे तिरिय वा जे केई तसथावरा ।
सव्वत्थ 'विरतिं कुज्जा'[9] सति णिव्वाणमाहिय ॥

८१ इम च धम्ममायाय कासवेण पवेइय ।
कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स अगिलाए समाहिए ॥

८२ सखाय पेसल धम्म दिट्ठिम परिणिव्वुडे ।
उवसग्गे णियामित्ता[10] आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ॥

—त्ति बेमि ॥

---

१ ते णारि मजोगा (चू) ।
२ णिरेकिच्चा (क, चू) ।
३ सुनमाहिए (क, ख) ।
४ × (ख) ।
५. विम-नाम (क), विपण्गा सन्त (वृ) ।
६ °मयकम्मणा (ख), कच्चति सह कम्मणा (चू) ।
७ च वज्जिजज्जा (ख), विवज्जेज्जा (चू) ।
८ अदिण्णादि च (चू) ।
९ विज्ज विरतिं (चू) ।
१० नियाएत्ता (क), हियासित्ता (ख), णिरेकिच्चा (चू) ।

चउत्थं अज्झयणं

इत्थिपरिण्णा

पढमो उद्देसो

इत्थीससग्ग-विवज्जण-पद

१ जे मायर च पियर च विप्पजहाय[1] पुव्वसजोग ।
एगे सहिए चरिस्सामि आरतमेहुणो[2] विवित्तेसी[3] ॥
२ सुहुमेण त परक्कम्म छण्णपएण इत्थीओ मदा ।
'उवाय पि ताओ जाणति'[4] जह[5] लिस्सति भिक्खुणो एगे ॥
३. पासे भिस णिसीयति अभिक्खण पोसवत्थ[6] परिहिंति ।
काय अहे वि दसति 'बाहु मुद्धट्टु कक्खमणुव्वजे'[7] ॥
४ सयणासणेहि जोग्गेहिं[8] इत्थीओ एगया णिमतेंति ।
एयाणि चेव से जाणे पासाणि विरूवरूवाणि ॥
५ णो तासु[9] चक्खु सधेज्जा णो वि य 'साहस समणुजाणे'[10] ।
णो सद्धिय[11] पि विहरेज्जा एवमप्पा 'सुरक्खिओ होइ'[12] ॥

---

१ विप्पजधाय (चू) ।
२ °मेधुणो (चू) ।
३ विवित्तेसु (वृ), विवित्तेसि (वृपा), विवित्तमेसी (चूपा) ।
४ °जाणिसु (क, ख, वृपा), जाणति ता उवाय च (चू) ।
५ जहा (ख), जध (चू) ।
६. °वत्थ (क, ख) ।
७. वाहु उद्धट्टु° (क), वाहु मुद्धत्तु° (ख), वाहु द्धट्टु कक्ख परामुसे (चू) ।
८ जोगेहि (क, ख) ।
९ तासि (चू) ।
१० साहसमभिजाणेज्जा (क), °समभिजाणे(ख)
११ सहिय (ख) ।
१२ रक्खितु सेओ (चू) ।

६ आमंतिय 'ओसविय वा'[1] भिक्खु आयसा णिमंतेंति।
एयाणि चेव से जाणे[2] सद्दाणि विरूवरूवाणि[3]॥
७ मणबंधणेहि णेगेहिं कलुणविणीयमुवगसित्ताणं[4]।
अदु मंजुलाइं भासंति आणवयंति[5] भिण्णकहाहिं॥
८ सीहं जहा व कुणिमेणं णिब्भयमेगचरं पासेणं।
एवित्थियाओ[6] बंधंति संवुडमेगतियमणगारं॥
९ अह तत्थ पुणो णमयंति रहकारो व णेमिं अणुपुव्वीए[7]।
बद्धे मिए व पासेणं फंदंते वि ण मुच्चई ताहे॥
१० अह सेऽणुतप्पई पच्छा भोच्चा पायसं व विसमिस्सं।
एवं विवागमायाए[8] संवासो ण[9] कप्पई दविए॥
११ तम्हा उ[10] वज्जए इत्थी विसलित्तं व कंटगं णच्चा।
ओए कुलाणि वसवत्ती आघाए[11] ण से वि[12] णिग्गंथे॥
१२ जे एयं 'उंछं तऽणुगिद्धा'[13][14] अण्णयरा हु ते कुसीलाणं।
सुतवस्सिए[15] वि से भिक्खू णो विहरे[16] सहणमित्थीसु[17]॥
१३ अवि[18] धूयराहि सुण्हाहि धाईहिं अदुवा दासीहिं।
महतीहिं[19] वा कुमारीहिं संथवं से ण कुज्जा अणगारे॥
१४ अदु णाइणं व सुहिणं वा अप्पियं दट्ठुं एगया होइ।
'गिद्धा सत्ता'[20] कामेहिं रक्खणपोसणे मणुस्सोऽसि॥
१५ समणं 'पि दट्ठूदासीणं'[21] तत्थ वि ताव एगे कुप्पंति।
अदु[22] भोयणेहिं णत्थेहिं इत्थीदोससंकिणो होंति[23]॥

---

१ ओसविय (ख), ओसविया ण (चूपा)।
२ जाणिया (क), जाणि (चू)।
३ णिमंतणादीणि (चू), विरूवरूवाणि (चूपा)।
४. °मुवागसित्ताण (क, ख), °मुपकम्मित्ताण (चू)।
५ आणमेयंति (क), आणमयंति (चू)।
६ एवित्थिया (क), एवं इत्थियाओ (ख)।
७. अणुपुव्वी (ख), अणुपुव्वीए (चू)।
८ विवेग° (क, ख, वृपा, चूपा), विवाग-मण्णिसा (चू)।
९ न वि (ख)।
१० हु (क, चू)।
११ आघाय (क)।
१२ व (क)।
१३ व्या० वि० सन्धिपदम्—तयणुगिद्धा।
१४ उञ्छं अणुगिद्धा (क, ख)।
१५ सुतमस्सिए (चू)।
१६ विरहे (चू)।
१७ सहण इत्थीसु (क)।
१८ अविए (क)।
१९ महल्लीहिं (चू)।
२० गिद्ध मत्ता (ख)।
२१ पि दट्ठु° (ख), दट्ठूणुदासीणं (वृपा), पि दट्ठूदासीणा (चूपा)।
२२ अह (क), अदुवा (ख), अयवा (वृ)।
२३ भवति (चू)।

१६ कुव्वंति संथवं ताहिं पब्भट्ठा समाहिजोगेहिं ।
तम्हा समणा ! 'ण समेंति आयहियाए'[1] सण्णिसेज्जाओ ॥

१७ बहवे गिहाइं अवहट्टु 'मिस्सीभावं पत्थुया एगे'[2]
धुवमग्गमेव[3] पवयंति[4] वायावीरियं कुसीलाणं ॥

१८ सुद्धं रवइ परिसाए अह रहस्सम्मि दुक्कडं कुणइ[5] ।
जाणंति य णं 'तहा वेदा'[6] माइल्ले महासढेऽयं ति ॥

१९ 'सयं दुक्कडं ण वयइ'[7] 'आइट्ठो वि'[8] पकत्थइ[9] बाले ।
वेयाणुवीइ[10] मा कासी चोइज्जंतो गिलाइ से भुज्जो ॥

२० उसिया वि इत्थिपोसेसु[11] पुरिसा इत्थिवेयखेत्तण्णा[12] ।
पण्णासमण्णिया वेगे[13] णारीणं वसं उवकसंति[14] ॥

२१ अवि[15] हत्थपायछेयाए[16] अदुवा वद्धमंसउक्कंते[17] ।
अवि[18] तेयसाभितावणाइं[19] तच्छिय[20] खारसिंचणाइं च ॥

२२ अदु[21] कण्णणासियाछेज्जं[22] कंठच्छेयणं[23] तितिक्खंती ।
इति एत्थ पाव-संतत्ता ण य बेंति पुणो ण काहिंति[24] ॥

२३ सुयमेयमेवमेगेसिं[25] 'इत्थीवेदे वि'[26] हु सुयक्खायं ।
एयं पि ता वइत्ताणं अदुवा[27] कम्मुणा[28] अवकरेंति ॥

---

१ न समेति आयाहियाय (क), तु जधाहि आतहिओ (चू), उ जहाहि आअहिताओ (वृपा), ण समिति (समेति) आतहिओ (चूपा) ।
२. मिस्सीभावं पण्णता एगे (क), मिस्सीभाव-पण्हया (चू), मिस्सीभावपत्थुया (वृ), मिस्सीभावं पणता (दी) ।
३ धुय° (क) ।
४ भासिसु (चू) ।
५ करेत्ति (ख) ।
६ तधावेता (चू), तथाविद (वृ) ।
७ सयदुक्कडं च अवदने (क), सयदुक्कडं अवदने (चू) ।
८. आइट्ठे व (क), आउट्टो वि (चू) ।
९ पकप्पई (क) ।
१० वेयाणुवीयी (चू) ।
११ °पोसेहिं (चू) ।
१२ °खेदन्ना (ख, चू) ।
१३ एगे (चू) ।
१४ उवणमंति (चू) ।
१५ अदु (चू) ।
१६ °च्छेदाति (क), °च्छेज्जाइं (चू) ।
१७ °उक्कतं (क), °मंसउक्कते (चू) ।
१८ अदु (चू) ।
१९ °तवणाइं (क, चू) ।
२० तच्छेतु (चू) ।
२१ अह (क) ।
२२ °नासछेज्जं (ख), कण्णच्छेज्जं नासं वा (चू) ।
२३ कंठकिज्जणं (चू) ।
२४ करिस्सामो (चू), काहिंति (चूपा) ।
२५ सुतमेवमेतमेगेसिं (चू) ।
२६ इत्थीवेदम्मि य (क), इत्थीवेदेत्ति (ख) ।
२७ अहवा (क), अध पुण (चू) ।
२८ कम्मणा (ख) ।

२४ अण्ण मणेण चितेति 'अण्ण वायाए कम्मुणा'[1] अण्ण ।
तम्हा 'ण सद्दहे भिक्खू'[2] बहुमायाओ इत्थिओ णच्चा ॥

२५ जुवती समण बूया चित्तवत्थालकारविभूसिया[3] ।
विरया चरिस्सह रुक्ख[4] धम्माइक्ख णे भयतारो[5] ॥

२६ अदु साविया पवाएण अहग साहम्मिणी 'य तुब्भ ति'[6] ।
जउकुम्भे जहा उवज्जोई सवासे[7] विऊ विसीदेज्जा ॥

२७ जउकुम्भे जोइसुवगूढे[7] आसुभितत्ते णासमुवयाइ ।
एवित्थियाहिं[8] अणगारा 'सवासेण णासमुवयति'[9] ॥

२८ कुव्वति 'पावग कम्म'[10] पुट्ठा वेगेवमाहसु[11] ।
णा[12] ह करेमि पाव ति अकेसाइणी ममेस त्ति ॥

२९ बालस्स मदय बीय[13] ज च कड अवजाणई भुज्जो ।
दुगुण करेइ से पाव पूयणकामो[14] विसण्णेसी ॥

३० सलोकणिज्जमणगार आयगय णिमतणेणाहसु ।
वत्थ वा[15] ताइ ! पाय वा अण्ण पाणग पडिग्गाहे ॥

३१ णीवारमेव[16] बुज्झेज्जा णो 'इच्छे अगारमागतु'[17] ।
'वद्धे विसयपासेहिं'[18] मोहमावज्जइ[19] पुणो मदे ॥

—त्ति बेमि ॥

---

१. वाया अन्न च कम्मणा (ख) ।
२ तम्हा णो सद्दहेतव्व (चू) ।
३ य चित्तलकारवत्थगाणि परिहित्ता (क, ख) ।
४ लूह (ख, चू), मोण (वृपा) ।
५ समणाण (क, ख) ।
६ सवासेण (चू) ।
७ °सुवगूहे (क), अवगूढे (ख), जोतिमुवगूढे (चू), व्या० वि—द्विपदयो सन्धि—जोइसा+उवगूढे ।
८ एवित्थियासु (चू) ।
९ °णासमवेंति (क), सवासेणाऽसुविणस्सति (चू) ।
१० पावकम्म (चू, वृ) ।
११ वेगे एव माहसु (क, ख) ।
१२ नो (ख) ।
१३ बितिय (ख, चू) ।
१४ पूयण-कामए (क, चू) ।
१५ व (ख, चू) ।
१६ णीयार° (चू), णीयारमन्त (चूपा) ।
१७ °आगार° (ख), इच्छेज्ज अगार गतु (चू), इच्छेज्ज अगारमावत्त (चूपा, वृपा) ।
१८ वद्धे य विसयदामेहिं (क), सवद्धोविसयदामेहिं (चू) ।
१९ °मागच्छति (वृ) ।

बीओ उद्देसो

इत्थी-आसत्तस्स विडंबणा-पदं

३२ ओए सया ण रज्जेज्जा भोगकामी पुणो विरज्जेज्जा[1]।
भोगे[2] समणाण सुणेहा 'जह भुजति भिक्खुणो एगे'[3] ॥
३३ अह तं तु भेयमावण्ण मुच्छिय भिक्खु काममइवट्ट[4]।
पलिभिंदियाण तो[5] पच्छा पादुद्धट्टु मुद्धि पहणति[6] ॥
३४ जइ केसियाए[7] मए भिक्खु णो विहरे सहणमित्थीए।
'केसे वि अह लुचिस्स'[8] णण्णत्थ मए चरेज्जासि[9] ॥
३५ अह ण से होइ उवलद्धे 'तो पेसेति तहाभूएहिं'[10]।
अलाउच्छेय[11] पेहेहि[12] वग्गुफलाइ आहराहि त्ति ॥
३६ दारूणि सागपागाए[13] पज्जोओ वा भविस्सई राओ।
पायाणि य मे रयावेहि एहि य ता मे 'पट्ठि उम्मद्दे'[14] ॥
३७ वत्थाणि य मे पडिलेहेहि 'अण्ण पाणमाहराहि'[15] त्ति।
'गध च'[16] रओहरण च 'कासवग च समणुजाणाहि'[17] ॥
३८ अदु अजणि अलकार कुक्कयय[18] मे पयच्छाहि।
लोद्ध च लोद्धकुसुम च वेणुपलासिय[19] च गुलिय च ॥
३९ कोट्ठ[20] 'तगर अगरु च'[21] सपिट्ठ सह[22] उसीरेण[23]।
तेल्ल 'मुहे भिलिगाय'[24] वेणुफलाइ सण्णिहाणाए ॥

---

१ विरज्जेज्जा (चू), विरज्जेज्ज (चूपा)।
२ भोग (क)।
३ एगे किल जधा भुजते (चू)।
४ कामेसु अतिअट्ट (चू)।
५ ततो (ख)।
६ पहणतु (क), पहणति (ख)।
७ केसियाण (क, ख)।
८ केसाणविहु लुचिसु (क)।
९ विचरेज्जासि (चू)।
१० ततो ण देसेति तधारूवेहि (चू)।
११ लाउच्छेय (क, ख)।
१२ पेहाहि (ख)।
१३ अण्णपागाए (चू, वृपा)।
१४ पट्ठि उम्मद्दे (चू)।
१५ अन्नपाण च आहराहि (क, ख), अण्णपाण वा मे आहराहि (चू)।
१६ गध व (चूपा, वृपा)।
१७ कासव समणाणुजाणाहि (वृ), कासवग मे आणयाहि (चू)।
१८ कुकुहग (चू)।
१९ वेलुपलासी (चू)।
२० कुट्ठ (क)।
२१ अगरु तगर च (ख)।
२२ सम (चू)।
२३ हिरिवेरेण (चू)।
२४ मुहिं भिलिजाए (क), मुहि भिजाए (ख), मुह भिलिजाए (वृ)।

४० णदीचुण्णगाइं पाहराहि[1] 'छत्तोवाहणं च जाणाहि'[2]।
सत्थं च सूवच्छेयाए आणीलं च वत्थं रावेहि[3]॥

४१ सुफणिं च सागपागाए[4] आमलगाइं[5] दगाहरणं[6] च।
तिलगकरणिं[7] अंजणसलागं घिंसु मे विहूणयं[8] विजाणाहि[9]॥

४२ संडासगं च फणिहं[10] च[11] सीहलिपासगं च आणाहि।
आयंसगं च पयच्छाहि दंतपक्खालणं[12] पवेसेहि॥

४३ पूयफलं[13] तंबोलं च 'सूई-सुत्तगं च जाणाहि'[14]।
कोसं च मोयमेहाए 'सुप्पुक्खल-मुसल-खारगलणं च'[15]॥

४४ वदालगं[16] च करगं च वच्चघरगं[17] च आउसो! खणाहि।
सरपाययं[18] च जायाए गोरहगं च सामणेराए॥

४५ 'घडिगं सह डिंडिमएण'[19] चेलगोलं कुमारभूयाए।
वासं इममभिआवण्णं[20] आवसहं 'जाणाहि भत्ता'[21]!॥

४६ आसंदियं च णवसुत्तं पाउल्लाइं[22] संकमट्ठाए।
'अदु पुत्तदोहलट्ठाए'[23] 'आणप्पा हवंति दासा वा'[24]॥

---

१ पहराहि (क, ख)।
२ छत्तगं जाणाहि उवाहणा उ वा (चू)।
३ रयावेहि (क, ख)।
४ सूवपाताए (चू)।
५ आमलगा (चू)।
६ दगाहरणिं (चू)।
७ तिलकरणिं (चूपा)।
८ विहूणय (वृ), विधूवणं (चू)।
९ जाणाहि (चू)।
१० फणिगं (चू)।
११ × (क)।
१२ °पक्खालगं च (क)।
१३ पूयप्फलं (चू)।
१४. सूचिं° (वृ), सूचिं जाणाहि सुत्तगं (चू)।
१५ सुप्पुक्खलगं च खारगलणाए (क), सुप्पुक्खलगं च खारगालगं च (ख), सुप्पुदुक्खलं च खारगलणं च (वृ)।
१६ चंदालगं (क, ख, वृ)। च-व वर्णयोः लिपिसादृश्यहेतुकमिदं परिवर्तनं सम्भाव्यते।
१७ वच्चघरं (वृ)।
१८ सरपायं (ख), नरादगं (चू)।
१९ घडियं च सडिंडिमयं च (क, ख)।
२० समणाहियावण्णं (क), समभिआवण्णं (ख)।
२१ च जाण भत्तं च (क, ख, वृ)। अत्र सम्भाव्यते 'भत्ता' शब्दस्य अर्थानवधारणतया लिपिकारैः 'भत्तं च' इति पाठः उल्लिखितः। वृत्तिकारस्य सम्मुखे एष एव पाठः आसीत्, तेनासावेव व्याख्यातः।
२२ पाउल्लाइं (क), पाउल्लगाइं (चू)।
२३ पुत्तस्स डोहलट्ठाए (क, चूपा)।
२४ आणप्पे भवति दासमिव (चू)।

४७ जाए फले समुप्पण्णे 'गेण्हसु वा ण अहवा जहाहि'[1] ।
अह पुत्तपोसिणो एगे 'भारवहा हवति उट्टा वा'[2] ॥
४८ 'राओ वि उट्ठिया सता'[3] दारग 'सठवेति धाई वा'[4] ।
सुहिरीमणा वि ते सता वत्थधुवा[5] हवति हसा[6] वा ॥
४९ एव[7] बहुहिं कयपुव्व भोगत्थाए जेऽभियावण्णा[8] ।
दासे मिए व पेस्से[9] वा पसुभूए व से ण वा केई[10] ॥
५० 'एव खु तासु विण्णप्प'[11] सथव सवास च चएज्जा[12] ।
तज्जातिया इमे कामा वज्जकरा य एव मक्खाया ॥
५१ 'एव भय ण'[13] सेयाए 'इइ से अप्पग'[14] णिरुभित्ता ।
णो इत्थि णो पसु[15] भिक्खू णो सय पाणिणा णिलिज्जेज्जा[16] ॥
५२ सुविसुद्धलेसे मेहावी परकिरिय च वज्जए णाणी ।
मणसा वयसा[17] काएण सव्वफाससहे अणगारे ॥
५३ इच्चेवमाहु से वीरे 'धुयरए धुयमोहे से भिक्खू'[18] ।
तम्हा अज्झत्थविसुद्धे सुविमुक्के[19] 'आमोक्खाए परिव्वएज्जासि'[20] ॥

—त्ति बेमि ॥

---

१ गेण्हाहि व ण छड्डेहि व ण (चू) ।
२ भरवाहो भवति उट्टो वो लद्दितओ (चू) ।
३ एगे राओ वि उट्ठित्ता (क) ।
४ सण्णवेंति धाव इवा (चू) ।
५ वत्थघोवा (क, ख), वत्थाधुवा (चू) ।
६ हसो (चू) ।
७ एत (चू) ।
८ इत्थिआभिआवण्णा (चू) ।
९ पेसे (क, ख) ।
१० केति (चूपा) ।
११ एत खु तासि वेण्णप्प (चू) ।
१२ वज्जेज्जा (ख) ।
१३ एत भयण्ण (चू) ।
१४ इह सेयऽप्पग (चू) ।
१५ पसू (चू) ।
१६ णिलेज्ज (चू) ।
१७ वयस (क) ।
१८ धूतरायमग्गे सभिक्खू (चू), धूतरायमग्गे स भिक्खू (वृपा) ।
१९ × (चू), सुमुक्के (वृ) ।
२० विहरेज्जामुक्खाए (क) ।

पंचमं अज्झयणं

णरयविभत्ती

पढमो उद्देसो

णरग-वेदणा-पद

१. पुच्छिंसुहं[1] केवलियं महेसिं कहंऽभितावा णरगा पुरत्था ?।
अजाणओ[2] मे मुणि बूहि[3] जाणं कहं णु बाला णरगं उवेंति ? ॥

२ एवं मए[4] पुट्ठे महाणुभावे[5] इणमऽब्बवी[6] कासवे आसुपण्णे।
पवेयइस्सं दुहमट्ठदुग्गं आदीणियं[7] दुक्कडिणं[8] पुरत्था ॥

३ जे केइ बाला इह जीवियट्ठी[9] पावाइं[10] कम्माइं करेंति रुद्दा।
ते घोररूवे तिमिसंधयारे तिव्वाभितावे[11] णरए पडंति ॥

४ तिव्वं तसे पाणिणो थावरे य जे हिंसई आयसुहं पडुच्चा[12]।
जे लूसए होइ अदत्तहारी ण सिक्खई सेयवियस्स किंचि ॥

५ पागब्भि पाणे बहुणं तिवाई[13] अणिव्वुडे[14] घायमुवेइ[15] बाले।
'णिहो णिसं'[16] गच्छइ अंतकाले अहोसिरं कट्टु उवेइ दुग्गं ॥

६ हण 'छिंदह भिंदह णं दहेह'[17] सद्दे सुणेत्ता[18] परधम्मियाणं।
ते णारगा ऊ[19] भयभिण्णसण्णा कंखंति कं णाम दिसं वयामो ? ॥

---

१ पुच्छिस्सहं (ग)।
२ अविजाणओ (चू)।
३. ब्रूहि (चू)।
४. मया (चू)।
५ °भागे (चू), °भावं (चूपा)।
६. इणमो° (वृ)।
७. आदाणियं (चू), आदीणियं (चूपा)।
८ दुक्कडियं (ख, वृ), दुक्कडिणं (वृपा)।
९. जीवियट्ठा (क)।
१०. कूराइ (चू)।
११. तिव्वाणुभावे (चू)।
१२. पडुच्च (ग)।
१३ तिवाती (क), तिवादि (चू)।
१४ अनिव्वुए (घ)।
१५ घातगति उवेति (चू)।
१६ णिधोणत (चू)।
१७ °डहाह (क); छिंदध भिंदध ण दहह (चू)।
१८ सुणति (क)।
१९ तू (क)।

७ इगालरासिं जलियं सजोइं ओवमं भूमिमणुक्कमंता[1]।
ते डज्झमाणा कलुणं थणंति अरहस्सरा तत्थ चिरट्ठिईया ॥
८ जइ ते सुया वेयरणीऽभिदुग्गा 'णिसिओ जहा खुर इव तिक्खसोया'[2]।
तरंति ते वेयरणीऽभिदुग्गं उसुचोइया[3] सत्तिसु हम्ममाणा ॥
९ कोलेहिं[4] विज्झंति असाहुकम्मा णावं उवेंते[5] सइविप्पहूणा।
'अण्णे तु'[6] सूलाहिं तिसूलियाहिं दीहाहिं विद्धूण अहे करेंति ॥
१० 'केसिं च बंधित्तु गले सिलाओ उदगंसि बोलेंति महालयंसि।
कलंबुयावालुयमुम्मुरे य लोलेंति पच्चंति[7] य तत्थ अण्णे'[8] ॥
११ असूरियं णाम महाभितावं[9] अंधं तमं दुप्पतरं महंतं।
उड्ढं अहे य[10] तिरियं दिसासु समाहिओ[11] जत्थगणी झियाइ[12] ॥
१२ जंसी गुहाए जलणेऽतिवट्टे[13] अविजाणओ[14] डज्झइ लुत्तपण्णो[15]।
'सया य[16] कलुणं[17] पुण घम्मठाणं गाढोवणीयं अइदुक्खधम्मं ॥
१३ चत्तारि अगणीओ समारभेत्ता जहिं कूरकम्मा भितवेंति बालं[18]।
ते तत्थ चिट्ठंतऽभितप्पमाणा[19] मच्छा व जीवंतुवजोइपत्ता[20] ॥
१४ संतच्छणं णाम महाभितावं ते णारगा जत्थ असाहुकम्मा[21]।
हत्थेहि पाएहि य बंधिऊणं फलगं व तच्छंति कुहाडहत्था ॥
१५ रुहिरे पुणो वच्च-समुस्सियंगे[22] भिण्णुत्तिमंगे[23] परिवत्तयंता।
पयंति णं णेरइए फुरंते सजीवमच्छे[24] व अयो-कवल्ले ॥

---

१ °अणोक्कमंता (चू)।
२ खुरो जधा णिसितो तिक्खसोता (चू)।
३ असि° (चू)।
४ कालेहि (क), कीलेहि (ख)।
५ उवेंती (चू)।
६ भिन्नेत्थ (चू)।
७ पययंति (ख)।
८ × (चू)।
९ महब्भियाव (क)।
१० या (चू)।
११ समूसिओ (ख), समूसिते (चूपा, वृपा)।
१२ झियायती (क)।
१३ जलणातियट्टे (चू)।
१४ अजाणतो (वृ)।
१५. लूयपन्ने (क)।
१६. × (चू)।
१७ सया य कसिणं (वृपा)।
१८ मदा (चू)।
१९ चिट्ठंति अभि° (क), चिट्ठंति भित° (ख)।
२० जीव उवजोति° (चू), व्या० वि०—द्विपदयो सन्धि—जीवता+उवजोइपत्ता।
२१. °कम्मी (चू)।
२२ समूसितंतो (वृ), समूसितंगा (वृपा)।
२३ भिदुत्तमंगे (ख)।
२४ °मच्छा (क), सज्जो व्व मच्छे (चू), सज्जोक्कमत्थे (चूपा)।

१६ णो चेव ते तत्थ मसीभवति[1] ण मिज्जई तिव्वभिवेयणाए[2]।
तमाणुभाग[3] अणुवेययता[4] दुक्खति दुक्खी[5] इह दुक्कडेण[6]॥
१७ 'तंहि च'[7] ते लोलणसपगाढे[8] गाढ सुतत्त अगणि वयति।
ण तत्थ साय लभतीऽभिदुग्गे[9][10] अरहियाभितावे[11] तह वी तवेति॥
१८ से सुव्वई[12] णगरवहे[13] व सद्दे 'दुहोवणीताण पदाण'[14] तत्थ[15]।
उदिण्णकम्माण उदिण्णकम्मा पुणो पुणो ते सरह[16] दुहेंति[17]॥
१९ पाणेहि ण पाव[18] विओजयति त भे पवक्खामि जहातहेण।
दडेहि तत्था सरयति वाला सव्वेहि दडेहि पुराकएहिं॥
२० ते हम्ममाणा[19] 'णरगे पडति'[20] पुण्णे[21] दुरूवस्स महाभितावे[22]।
ते तत्थ चिट्ठति दुरूवभक्खी तुट्टति कम्मोवगया[23] किमीहिं॥
२१ सया[24] कसिण पुण घम्मठाण गाढोवणीय अइदुक्खधम्म।
अदूसु पक्खिप्प 'विहत्तु देह'[25] 'वेहेण सीस सेऽभितावयति'[26]॥
२२ छिदति वालस्स खुरेण णक्क[27] ओट्ठे वि छिदति दुवे वि कण्णे।
जिब्भ विणिक्कस्स[28] विहत्थिमेत्त तिक्खाहि सूलाहि भितावयति[29]॥
२३ ते तिप्पमाणा 'तलसपुड व्व'[30] राइदिय तत्थ थणति वाला[31]।
'गलति ते सोणियपूयमस'[32] पज्जोइया खारपदिद्धियगा[33]॥

---

१ ०भवेंति (चू)।
२ तिव्वऽतिवे० (चू)।
३ तमाणुभाव (ख), कम्माणभाग (चू)।
४ अणुवेदयती (चू)।
५. दुक्खा (क), सोय (चू)।
६ दुक्कडाण (क)।
७ तंहि पि (चू)।
८ लोलुअस० (क, चू), लोलेण० (ख)।
९ साद (चू)।
१०. लहईभिदुग्गे (क, ख)।
११ अरहब्भियावा (क), ०तावा (ख)।
१२ सुच्चई (ख)।
१३ गामवधे (चू)।
१४ ०याणि पयाणि (ख), उदिण्णकम्माए पयय (चू)।
१५ तत्था (क)।
१६ सहरिसं (चू)।
१७ विधति (चूपा)।
१८ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—पावा।
१९ हिंसमाणा (क), हम्ममाणे (चू)।
२० णग्ग उवेंति (चू)।
२१ पुण्ण (चू)।
२२ महब्भियावे (क), महब्भिताव (चू)।
२३ कम्मोवसगा (चू)।
२४ सया य (क)।
२५ हणति वाल (चू)।
२६ वेहेण त सेभितविंति सीस (क), वेधेहिं विधीत सिराणि तेसिं (चू), वेढेण तावेंति सिराणि तेसिं (चूपा)।
२७ नास (क)।
२८ विणिक्किस्स (चू)।
२९ तिवातयति (क), निपातयति (चू)।
३० तलसपुडच्चा (चू)।
३१ मदा (चू)।
३२ समीरिता सरुधिर-मसदेहा (चू)।
३३ खारपयब्भिखतगा (चू)।

२४. जइ[1] ते सुया लोहियपूयपाई[2] वालागणी तेयगुणा परेण ।
कुभी महताऽहियपोरुसीया[3] समूसिया लोहियपूयपुण्णा ।।
२५ पक्खिप्प तासु पपचति वाले अट्टस्सरे[4] ते कलुण रसते ।
तण्हाइया ते तउतबतत्त पज्जिज्जमाणट्टयर रसति ।।
२६ अप्पेण[5] अप्प इह वचइत्ता भवाहमे 'पुव्वसए सहस्से'[6] ।
चिट्ठति तत्था[7] वहुकूरकम्मा 'जहाकडे कम्म'[8] तहा से[9] भारे ।।
२७ समज्जिणित्ता कलुस अणज्जा इट्ठेहि कतेहि य विप्पहूणा[10] ।
ते दुब्भिगधे कसिणे य फासे कम्मोवगा कुणिमे आवसति ।।

—त्ति वेमि ।।

बीओ उद्देसो

णरग-वेदणा-पद

२८ अहावर सासयदुक्खधम्म त भे पवक्खामि जहातहेण ।
वाला जहा दुक्कडकम्मकारी वेयति कम्माइ[11] पुरेकडाइ ।।
२९ हत्थेहि पाएहि य वधिऊण 'उदर विकत्तति खुरासिएहिं'[12] ।
गेण्हित्तु[13] वालस्स विहत्तु[14] देह वद्ध[15] थिर पिट्ठउ[16] उद्धरति ।।
३० वाहू पकत्तति[17] य मूलओ से थूल[18] वियास मुहे आडहति ।
रहसि जुत्त सरयति वाल आरुस्स विज्झति[19] तुदेण पट्ठे[20] ।।

---

१ जे (क) ।
२ लोहितापागपायी (चू) ।
३ °पोरिसीणा (क), °पोरसीया (ख) ।
४ °स्सर (क, चू) ।
५ अप्पाण (चू) ।
६ पुव्वा सतसहस्से (चू) ।
७ व्या० वि०—छदोदृष्ट्या दीर्घत्वम् ।
८ °कडे कम्मे (क), जधकडे कम्मे (चू) ।
९ सि (ख) ।
१० विप्पहीणा (चू) ।
११ पावाइ (क) ।
१२ उदराइ फोडेंति खुरेहि तेसि (चू), °खुरासितेहिं, °खुरासिगेहिं (चूपा), वृत्तौ 'क्षुरप्रासिभि' इति व्याख्यातमस्ति अस्यानुसारेण 'खुरप्पसीहिं' इति पाठस्य परिकल्पना जायते ।
१३ गिहित्तु (क) ।
१४ विहत्त (क), विविध हत (वृ), विहण्ण (चू) ।
१५ वज्झ (क, चू) ।
१६ व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम् ।
१७ पकप्पति (क) ।
१८ थुल (क) ।
१९ विंधति (ख, चू) ।
२० पिट्ठे (चू) ।

३१ अय व तत्त जलिय सजोइ तओवम[1] भूमिमणुक्कमता[2] ।
ते डज्झमाणा कलुण थणति उसुचोइया तत्तजुगेसु जुत्ता ॥
३२ वाला वला भूमिमणुक्कमता[3] पविज्जल[4] लोहपह व तत्त ।
जसीऽभिदुग्गसि[5] पवज्जमाणा[6] पेसे व[7] दडेहि पुरा करेति ॥
३३ ते सपगाढमि पवज्जमाणा सिलाहि हम्मति भिपातिणीहिं[8] ।
सतावणी णाम चिरट्ठिईया सतप्पई[9] जत्थ असाहुकम्मा[10] ॥
३४ कदूसु[11] पविखप्प पयति वाल तओ विदड्ढा पुण उप्पतति[12] ।
ते उड्ढकाएहि पखज्जमाणा[13] अवरेहि खज्जति सणप्फएहि ॥
३५ समूसिय णाम विधूमठाण 'ज सोयतत्ता'[14] कलुण थणति ।
अहोसिर[15] कट्टु विगत्तिऊण[16] अय व सत्थेहि समूसवेति ॥
३६ समूसिया तत्थ विसूणियगा पक्खीहि खज्जति अओमुहेहि ।
सजीवणी[17] णाम चिरट्ठिईया जसी पया हम्मइ[18] पावचेया ॥
३७ तिक्खाहि सूलाहि ऽभितावयति[19] वसोवग सावयय[20] व लद्ध ।
ते सूलविद्धा कलुण थणति एगतदुक्ख दुहओ गिलाणा ॥
३८ सया जल ठाण[21] णिह महत जसी 'जलतो अगणी अकट्ठो'[22] ।
चिट्ठति तत्था[23] वहुकूरकम्मा अरहस्सरा[24] केइ चिरट्ठिईया ॥

---

१ तत्तोवम (क), चूर्णीकृता प्रथमोद्देशकस्य सप्तमश्लोके 'ततोवम' पाठो व्याख्यात —तप्तऽयसकभल्लतुल्ल, अत्र तु 'तदोवम' पाठो व्याख्यात, तदस्या ओपम्य तदोपमा । वृत्तिकारस्य व्याख्याया उभयत्रापि साम्यमस्ति ।
२ °मणोक्कमेत्ता (क), °मणोक्कमता (चू) ।
३ भूमिअणोक्कमता (चू) ।
४ विपज्जल (चू), पविज्जल (चूपा) ।
५ °दुग्गा (चू) ।
६. वहुकूरकम्मा (चू) ।
७ व्व (क) ।
८. ऽभिपातिमाहिं (चू) ।
९. सतप्पते (चू) ।
१०. °कम्मी (क, चू) ।
११. कडूसु (चू) ।
१२ उप्फिडति (चू) ।
१३. पक्खिज्जमाणा (ख), विलुप्पमाणा (चू) ।
१४. ज सामितत्ता (क), विगिच्चमाणा (चू), जसि त्रिउक्कता, जसि उवियता (चूपा) ।
१५ अहे° (क) ।
१६ विगति° (चू) ।
१७ सजीवणा (चू) ।
१८ हम्मति (क) ।
१९ निवाययति (क), वर्धेति वाला (चू), तिवाययति (क्व) ।
२० सोयरिय (क), सोवरिया (चू), सावरिया (चूपा) ।
२१ नाम (ख, चू) ।
२२ जलती अगणी अकट्ठा (क, चू) ।
२३ वद्धा (ख, वृ) ।
२४ अरहितस्सरा (चू) ।

३६ चिया महतीउ[1] समारभित्ता छुब्भति ते त कलुण रसत।
आवट्टई तत्थ असाहुकम्मा सप्पी जहा छूढ[2] जोइमज्झे॥
४० सया कसिण पुण घम्मठाण गाढोवणीय अइदुक्खधम्म।
हत्थेहि पाएहि य वधिऊण 'सत्तु व'[3] दडेहि समारभति॥
४१ भजति वालस्स वहेण पट्ठि[4] सोस पि भिंदति[5] अयोघणेहि।
ते भिण्णदेहा फलगा व तट्ठा तत्ताहि आराहि णियोजयति॥
४२ अभिजुजिया रुद्द[6] असाहुकम्मा उसुचोइया हत्थिवह[7] वहति।
एग दुरूहित्तु दुवे तओ वा 'आरुस्स विज्झति ककाणओ से'[8]॥
४३ वाला वला भूमिमणुक्कमता[9] पविज्जल कटइल महत।
विवद्धतप्पेहि विसण्णचित्ते[10] समीरिया कोट्टर्वाल करेंति॥
४४ वेयालिए णाम महाभितावे एगायए पव्वयमतलिक्खे।
हम्मति तत्था वहुकूरकम्मा पर सहस्साण मुहुत्तगाण[11]॥
४५ सवाहिया दुक्कडिणो थणति अहो य राओ परितप्पमाणा।
एगतकूडे णरए महते कूडेण तत्था विसमे हया उ॥
४६ 'भजति ण पुव्वमरी सरोस समुग्गरे ते मुसले गहेउ।
ते भिण्णदेहा रुहिर वमता ओमुद्धगा धरणितले पडति'[12]॥
४७ अणासिया णाम महासियाला पगब्भिया[13] तत्थ सयावकोवा[14]।
खज्जति[15] तत्था वहुकूरकम्मा अदूरया[16] सकलियाहि बद्धा॥
४८ सयाजला णाम णईऽभिदुग्गा पविज्जला[17] लोहविलीणतत्ता।
जसीऽभिदुग्गसि पवज्जमाणा एगायताऽणुक्कमण[18] करेंति॥
४९ एयाइँ फासाइँ फुसति वाल णिरतर तत्थ चिरट्ठिईय[19]।
ण हम्ममाणस्स उ होइ[20] ताण एगो सय पच्चणुहोइ दुक्ख॥

---

१ व्या० वि०—अत्र ओकारस्य ह्रस्वत्वम्।
२. पडिय (चू)।
३ सत्तुव्व (क्व)।
४ पुट्ठि (ख)।
५ भजति (चू)।
६ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—रुद्द।
७ हत्थितुल्ल (चू)।
८ °ककाणुओ से (क), आरुब्भ विंधति किंकाणतो सि (चू)।
९ भूमिअणोक्कमता (चू)।
१०. विवण्ण° (क, ख)।
११ मुहुत्तगस्स (चू)।
१२ × (चू)।
१३ पगब्भिणो (क), पागब्भिणो (ख)।
१४ सताय° (क), सयाप° (ख), सदावऽकोप्पा (चू), सदावऽकोप्प (चूपा)।
१५ खायति (चू)।
१६ अदूरिया (क)।
१७ पविज्जल (वृ)।
१८ एकाणिका° (चू)।
१९ चिरट्ठिईया (चू)।
२०. अत्थि (चू)।

५०. ज जारिस पुव्वमकासि कम्म तमेव[1] आगच्छइ सपराए।
एगतदुक्ख भवमज्जिणित्ता 'वेदति दुक्खी तमणतदुक्ख'[2]॥
५१ एयाणि सोच्चा णरगाणि धीरे ण हिंसए कचण[3] सव्वलोए।
एगतदिट्ठी अपरिग्गहे उ[4] वुज्झेज्ज लोगस्स[5] वस ण गच्छे॥
५२ एव 'तिरिक्खमणुयामरेसु चउरतणत तयणूविवाग'[6]।
स[7] सव्वमेय इइ[8] वेयइत्ता कखेज्ज काल धुयमायरते[9]॥
—त्ति वेमि॥

---

१ तवेव (चू)।
२ वेदेति एगो तमणतकाल (चू)।
३ किंचण (ख)।
४ य (चू)।
५ लोभस्स (चू)।
६. तिरिक्खमणुयासुरेसु चतुरतण न तयणु-विवाग (ख), तिरिक्खेसु वि चातुरतं, अणतकाल तदणुव्विवाग (चू)।
७ से (ख)।
८ इध (चू)।
९ °मायरेज्ज (ख), मायरति (चू)।

छट्ठं अज्झयणं

महावीरत्थुई

महावीर-माहप्प-वण्णग-पद

१ पुच्छिंसु णं समणा माहणा य अगारिणो[1] या परतित्थिया य।
से केइ णेगंतहियं[2] धम्ममाहु अणेलिसं? साहुसमिक्खयाए[3] ॥
२ कहं च[4] णाणं? कह दंसणं से? सीलं कहं णायसुयस्स आसि?।
जाणासि णं भिक्खु! जहातहेणं अहासुयं बूहि जहा णिसंतं ॥
३ 'खेयण्णए से कुसले मेहावी'[5] अणंतणाणी य अणंतदंसी।
जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहं[7] ॥
४ 'उड्ढं अहे य'[8] तिरियं दिसासु 'तसा य जे थावर[9] जे य पाणा'[10]।
'से णिच्चणिच्चेहिं'[11] समिक्ख पण्णे 'दीवे व धम्मं समियं उदाहु'[12] ॥
५ से सव्वदंसी अभिभूयणाणी णिरामगंधे धिइमं ठियप्पा।
अणुत्तरे[13] सव्वजगंसि विज्जं 'गंथा अतीते'[14] अभए अणाऊ ॥
६ से भूइपण्णे अणिएयचारी ओहंतरे धीरे अणंतचक्खू।
अणुत्तरं तवति सूरिए[15] वा वइरोयणिंदे[16] व 'तमं पगासे'[17] ॥

---

१ अकारिणो (चू)।
२ इणेगतहियं (क, चू), इमं हितंग (चूपा)।
३ ०याते (क), साधुसमिक्ख दाए (चू)।
४ च (क, ख)।
५ आसुपण्णे (वृ), महेसी (वृपा)।
६ खेतण्णे कुसले आसुपण्णे महेसी (चू)।
७ पिहा (क), पेद्धं (चू), वेहिं (वृपा)।
८ ०य (वृ), उड्ढे अधे वा (चू)।
९ व्या वि०—विभक्तिरहितपदम्—थावरा।
१० जे थावरा जे य तसा य पाणा (चू)।
११ स णिच्चणिच्चे य (चू)।
१२ समिया एव दीवसमो तहा ऽऽहु (चू)।
१३ अणुत्तरं (चू)।
१४ ०अदीते (क), गथातीते (चू)।
१५ तप्पति (क, ख)।
१६ वइरोव० (क), वेरोयणेंदो (चू)।
१७ तमप्पगासे (क), ०पभासे (ख)।

७. अणुत्तर धम्ममिण जिणाण णेता मुणी कासवे[1] आसुपण्णे।
इदे व देवाण महाणुभावे सहस्सणेता[2] 'दिवि ण'[3] विसिट्ठे॥
८ से पण्णया[4] अक्खयसागरे वा महोदही वा वि अणतपारे।
अणाइले या[5] अकसाइ[6] मुक्के[7] सक्के व देवाहिवई जुईम॥
९ से वीरिएण पडिपुण्णवीरिए सुदसणे वा णगसव्वसेट्ठे।
सुरालए 'वा वि'[8] मुदागरे से विरायए णेगगुणोववेए॥
१० सय सहस्साण उ जोयणाण तिकडगे[9] पडगवेजयते।
से जोयणे णवणउर्ति[10] सहस्से उद्धस्सिए[11] हेट्ठ सहस्समेग॥
११ पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए[12] ज सूरिया अणुपरिवट्टयति।
से हेमवण्णे वहुणदणे य[13] जसी[14] रइ वेययई महिंदा॥
१२ से[15] पव्वए सद्दमहप्पगासे विरायती कचणमट्ठवण्णे।
अणुत्तरे गिरिमु[16] य पव्वदुग्गे गिरीवरे से जलिए व भोमे॥
१३ महीए[17] मज्झम्मि ठिए णगिंदे पण्णायते सूरियसुद्धलेसे[18]।
एव सिरीए उ स भूरिवण्णे[19] मणोरमे 'जोयति अच्चिमाली'[20]॥
१४ सुदसणस्सेस[21] जसो गिरिस्स[22] पवुच्चती महतो पव्वतस्स।
एतोवमे समणे णातपुत्ते[23] जाती-जसो-दसण-णाण-सीले॥
१५ गिरीवरे वा णिसढायताण[24] रुयगे व सेट्ठे वलयायताण।
ततोवमे से जगभूतिपण्णे[25] मुणीण 'मज्झे तमुदाहु'[26] पण्णे॥

---

१ कामव (ख)।
२ °णेत्ता (चू), °णेता (चूपा)।
३ दिविण (चू)।
४ पन्नमा (चु)।
५ से (चू)।
६ अकसाय (चू)।
७ भिक्खू (क, ख, चू, वृपा)।
८ वासि (ख, वृ)।
९ तिकडि से (क, चू), तिकड से (ख)।
१० णवणवते (क, ख)।
११ उड्ढुस्सिते (चू), उड्ढ थिरे (चूपा)।
१२ भूमिते ठिते (क, च)।
१३ या (क)।
१४ व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम्।
१५ स (चू)।
१६ व्या० वि०—अत्र सप्तम्या वहुवचने 'गिरीसु' इति रूप भवति, किन्तु छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम्।
१७ महीय (ख, चू)।
१८ सूरियलेस्सभूते (चू)।
१९ भूतिवण्णे (चू)।
२० अच्चीसहस्समालिणी (णो ?) (चू)।
२१ °स्सेव (क, ख)।
२२ गिरिस्सा (क)।
२३ नाय° (क, ख)।
२४ व्या० वि०—द्विपदयो, सन्धि—णिसढे+आयताण।
२५ °भूतपण्णे (चू)।
२६ मावेदमुदाहु (चू)।

१६ अणुत्तरं धम्ममुदीरइत्ता अणुत्तरं झाणवरं झियाइ।
सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्कं संखेंदुवेगंतवदातसुक्कं[1] ॥
१७ अणुत्तरग्गं परमं महेसी 'असेसकम्मं स विसोहइत्ता।
सिद्धिं गतिं साइमणंत[2] पत्ते णाणेण सीलेण य दंसणेण'[3] ॥
१८ 'रुक्खेसु णाते जह सामली वा'[4] जसी रतिं वेययती[5] सुवण्णा।
वणेसु या णंदणमाहु सेट्ठं[6] णाणेण सीलेण य[7] भूतिपण्णे ॥
१९ थणितं व सद्दाण अणुत्तरं उ चंदे व ताराण महाणुभावे[8]।
गंधेसु वा[9] चंदणमाहु सेट्ठं एवं[10] मुणीणं अपडिण्णमाहु ॥
२० जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे णागेसु वा 'धरणिंदमाहु सेट्ठं'[11]।
खोओदए[12] 'वा रस'[13]-वेजयंते तहोवहाणे[14] मुणि[15] वेजयंते ॥
२१ हत्थीसु एरावणमाहु[16] णाते सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा।
पक्खीसु या गरुले वेणुदेवे णिव्वाणवादीणिह[17] णायपुत्ते ॥
२२ जोहेसु णाए जह वीससेणे पुप्फेसु वा 'जह अरविंदमाहु'[18]।
खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥
२३. दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं सच्चेसु या अणवज्जं वयंति।
तवेसु या[19] उत्तमं[20] बंभचेरं लोगुत्तमे समणे[21] णायपुत्ते ॥
२४ ठितीण सेट्ठा लवसत्तमा वा सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा।
णिव्वाणसेट्ठा[22] जह सव्वधम्मा ण णायपुत्ता परमत्थि णाणी ॥
२५ पुढोवमे धुणती विगयगेही ण सण्णिहिं कुव्वइ आसुपण्णे।
तरिउं[23] समुद्दं व महाभवोघं अभयंकरे वीर[24][25] अणंतचक्खू ॥

---

१ अपेव संखेंदुवदातसुद्धं (चू), संखेंदुवेगंतवदातसुक्कं (चूपा)।
२ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—साइमणंत।
३ णाणेण सीलेण य दंसणेण। असेसकम्मं स विसोधइत्ता, सिद्धीगतिं सातियणंत पत्ते (चू)।
४ रुक्खेहिं णाता जह कूडसामली (चू)।
५ वेययती (क, ख)।
६ सेट्ठे (क)।
७ उ (चू)।
८ °भागे (चू)।
९ या (ख)।
१० सेट्ठे (चू)।
११ धरणिंदे आहु सेट्ठे (क), धरणमाहुसेट्ठं (चू)।
१२ खातोदए (क)।
१३ रसतो (चू)।
१४ तवो° (क, ख, वृ)।
१५ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—मुणी।
१६ °माह (क)।
१७ णेव्वाण° (चू)।
१८ अरविंद वदंति (चू)।
१९ वा (क)।
२० व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—उत्तम।
२१ भगवं (चू)।
२२. णेव्वाण° (चू)।
२३ तरित्तु (ख), तरित्ता (चू)।
२४ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—वीरे।
२५ वीरे (क, चू)।

२६ कोहं च माणं च तहेव मायं लोभं चउत्थं अज्झत्तदोसा[1]।
एताणि चत्ता अरहा महेसी ण कुव्वई पावं[2] ण कारवेइ॥
२७ किरियाकिरियं[3] वेणइयाणुवायं अण्णाणियाणं पडियच्च ठाणं।
से[4] सव्ववायं इह[5] वेयइत्ता उवट्ठिए सम्म[6] स दीहरायं[7]॥
२८ से[8] वारिया इत्थि[9] सराइभत्तं[10] उवहाणवं दुक्खखयट्ठयाए।
लोगं विदित्ता 'अपरं परं'[11] च सव्वं पभू वारिय सव्ववारी[12]॥
२९ सोच्चा य धम्मं अरहंतभासियं[13] समाहियं अट्ठपदोवसुद्धं।
तं सद्दहंताऽऽय[14] जणा अणाऊ 'इंदा व'[15] देवाहिव[16] आगमिस्संति[17]॥
—त्ति बेमि॥

---

१ °दोस (क)।
२ पाव (क)।
३ किरिय अकिरिय (ख, चू)।
४ स (चू)।
५ इति (क, ख, वृ)।
६ व्या० वि०—अत्र अनुस्वारलोपः।
७ सजमदीहराय (क, ख, वृ)।
८ स (चू)।
९ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—इत्थि।
१० सराय° (क)।
११ आर पार (क, ख, वृपा)।
१२ सव्ववारे (क), सव्ववार (ख, वृ)।
१३ अरिहंत° (ख)।
१४ व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः वर्णलोपश्च—सद्दहंता आदाय।
१५ इदा वि (क), इदे व (ख)।
१६ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—देवाहिवा।
१७ आगमिस्संति (क, ख, वृ), आगमिस्से (चू)।

सत्तमं अज्झयणं

कुसीलपरिभासितं

ओघतो कुसील-पदं

१ पुढवी य आऊ अगणी य वाऊ 'तण रुक्ख'[1] बीया य तसा य पाणा ।
जे अडया जे य जराउ[2] पाणा ससेयया जे रसयाभिहाणा ॥

२ एताइ कायाइ पवेइयाइ एतेसु जाणे[3] पडिलेह[4] साय ।
'एतेहि काएहि य'[5] आयदडे 'पुणो-पुणो विप्परियासुवेति'[6] ॥

३ जाईपह[7] अणुपरियट्टमाणे 'तसथावरेहिं विणिघायमेति'[8] ।
से जाति[9]-जाति वहुकूरकम्मे ज कुव्वती मिज्जति[10] तेण वाले ॥

४ अस्सि च लोए अदुवा परत्था[11] सयग्गसो वा तह अण्णहा वा ।
ससारमावण्ण[12] 'पर पर ते'[13] बधति वेयति य दुण्णयाणि[14] ॥

---

१ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम् —तणा रुक्खा ।

२ व्या० वि०—विभक्तिरहित वर्णलोपश्च—जराउया ।

३ जाण (वृ) ।

४ पडिलेहि (क) ।

५ एएण काएण य (ख), एतेसु काएसु तु (चू) ।

६ एतेसु या विप्परियासुविंति (क, ख, वृ), व्या० वि०—द्विपदयो सन्धि —विप्परियास-मुवेति ।

७ जाईवह (चू, वृपा) ।

८ °वरेसु विणिग्घात° (चू) ।

९ जाति (वृ) ।

१० मज्जते (चूपा) ।

११ पुरत्था (क) ।

१२ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—ससार-मावण्णा ।

१३ पर परेण (चू) ।

१४ व्या० वि०—वधानुलोम्यात् 'दुण्णीयाणि' अत्र ईकारस्य ह्रस्वत्वम् ।

पासंड-कुसील-पदं

५ जे मायरं च[1] पियरं च[2] हिच्चा समणव्वए[3] अगणिं[4] समारभिज्जा।
अहाहु[5] से लोए कुसीलधम्मे[6] भूयाइ जे हिंसति आतसाते॥
६ उज्जालओ[7] पाण ऽतिवातएज्जा[8] णिव्वावओ अगणि[9] ऽतिवातएज्जा[10]।
तम्हा उ मेहावि समिक्ख धम्मं ण पंडिते अगणि[11] समारभिज्जा॥
७ पुढवी वि जीवा आऊ वि जीवा पाणा य[12] संपातिम[13] संपयंति।
संसेदया[14] कट्ठसमस्सिता य एते दहे अगणि[15] समारभंते॥
८ हरियाणि भूयाणि विलंबगाणि आहार-देहाइं[16] पुढो सियाइं।
जे छिंदई आतसुहं[17] पडुच्च[18] 'पागब्भि-पण्णो'[19] बहुण[20]'तिवाती'[21]॥
९ जाइं च वुड्ढिं च विणासयंते बीयाइ 'अस्संजय आयदंडे'[22]।
अहाहु से लोए अणज्जधम्मे बीयाइं[23] से हिंसइ आयसाते॥

कुसील-विवाग-पदं

१० गब्भाइ मिज्जंति बुयाबुयाणा णरा परे[24] पंचसिहा कुमारा।
जुवाणगा[25] मज्झिम[26] थेरगा[27] य चयंति ते आउखए[28] पलीणा॥

---

१ वा (क)।
२ व (क)।
३ समणव्वदे (क), समणव्वते (ख)।
४ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अगणिं।
५ अयाऽऽह (चू)।
६ अणज्जधम्मे (चू)।
७ उज्जालिया (चू)।
८ व्या० वि—द्विपदयोः सन्धि.—पाणा अतिवातएज्जा।
९ तिवातयति (चू), तिवातएज्जा (वृपा)।
१० व्या० वि०—द्विपदयो सन्धि—अगणि अतिवातएज्जा।
११ निव्वातएज्जा (क), निपातएज्जा (चू)।
१२ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अगणिं।
१३ ति (क), इ (ख)।
१४. व्या०वि०—विभक्तिरहितपदम्—संपातिमा।
१५ संसेइया (क)।
१६ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अगणिं।
१७ देहाय (ख, वृ)।
१८ आयसात (चू)।
१९ पडुच्चा (क)।
२० पागब्भिपाणे (क, ख, वृ)।
२१ व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम्।
२२ निवाती (चू)।
२३ अस्संजति यायदंडे (क)।
२४ हरियादि (क)।
२५ वरे (क)।
२६ युवाणगा (चू)।
२७ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—मज्झिमा।
२८ पोरुसा (वृपा)।
२९. आउक्खए (क, ख)।

११ 'बुज्झाहि जतू ! इह माणवेसु दट्ठु भय वालिएण अलभे'[1]।
एगतदुक्खे जरिए हु[2] लोए सकम्मुणा – विप्परियासुवेति ॥

कुसील-दंसण-पदं

१२ इहेगे मूढा पवदति मोक्ख आहारसपज्जणवज्जणेण[3] ।
एगे य सीतोदगसेवणेण हुतेण एगे पवदति मोक्ख ॥
१३ पाओसिणाणाइसु णत्थि मोक्खो खारस्स[4] लोणस्स अणासणेण[5]।
ते मज्जमस लसुण 'चऽभोच्चा'[6] अण्णत्थ वास परिकप्पयति[7] ॥
१४ उदगेण जे सिद्धिमुदाहरति साय च पात उदग फुसता।
उदगस्स फासेण सिया य सिद्धी सिज्झिसु[8] पाणा वहवे दगसि ॥
१५ मच्छा य कुम्मा य सिरीसिवा य मगू[9] य उट्टा[10] दगरक्खसा य।
अट्ठाणमेय कुसला वयति उदगेण 'सिद्धि जमुदाहरति'[11] ॥
१६ उदग जती[12] कम्ममल हरेज्जा एव सुह[13] इच्छामित्तमेव[14]।
'अध व'[15] णेयारमणुस्सरता[16] पाणाणि चेव विणिहति[17] मदा ॥
१७ पावाइ कम्माइ पकुव्वओ हि सीओदग[18] तू जइ त हरेज्जा।
सिज्झिसु एगे दगसत्तघाती मुस वयते जलसिद्धिमाहु[19] ॥
१८ हुतेण जे सिद्धिमुदाहरति[20] साय च पाय अगणि फुसता।
एव सिया सिद्धि हवेज्ज तेसि[21] अगणि फुसताण कुकम्मिण पि ॥

---

१ सवुज्झहा जतवो माणुसत्त,
दट्ठु भय वालिसेण अलभो (क, ख, वृ)।

२ व (ख, वृ), अस्मिन् श्लोके चूर्णौ वृत्तौ च पाठभेदोर्थभेदश्चापि विद्यते। चूर्णिपाठोर्थ-विचारणया स्वाभाविक प्रतिभाति, तेन स स्वीकृत । वृत्तिकारेण प्रतिदोषेण विपर्यय गत पाठो लब्धस्तेन व्याख्याया जटिलता जातेति सभाव्यते ।

३ आहारसपचगवज्जणेण (चूपा, वृपा);
अग्हारओ पचगवज्जणेण (वृपा)।

४ खाणस्स (क)।

५ अणासतेण (क)।

६ च भोच्चा (वृ), अत्र चूर्णौ वृत्तौ च महानर्थभेदो विद्यते।

७ °गप्पयति (क)।

८ खिज्झसु (क, ख)।

९ मग्गू (क, ख, वृ)।

१० उट्टा (ख, वृ), अत्र लिपिसादृश्येन 'उद्दा' स्थाने 'उट्टा' पाठोस्ति जात । वृत्तिकारस्य सम्मुखे एष एव पाठ आसीत् किन्तु जलचर-प्रकरणे 'उद्दा' पाठ एव सगतोस्ति

११ जे सिद्धिमुदाहरति (क, ख, वृ)।

१२ व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम्।

१३ पुण्ण (चू)।

१४ इच्छामेत्ततो वा (क)।

१५ अधव्व (क)।

१६ °मणुसरित्ता (क, ख)।

१७ विहेढति (चू)।

१८ सिओ° (चू)।

१९ दगसिद्धि° (क)।

२० मोक्खमुदा° (चू)।

२१. तम्हा (क, ख, वृ)।

कुसील-उवालंभ-पद

१९ अपरिच्छ[1] दिट्ठिं[2] ण हु एव सिद्धी एहिंति ते घातमबुज्झमाणा[3] ।
'भूतेहिं जाण[4] पडिलेह सात'[5] विज्ज गहाय तसथावरेहिं[6] ॥
२० थणति लुप्पति तसति कम्मी पुढो[7] जगा[8] परिसखाय[9] भिक्खू ॥
तम्हा विऊ विरए आयगुत्ते दट्ठु तसे य प्पडिसाहरेज्जा[10] ॥

सलिंग-कुसील-पदं

२१ जे धम्मलद्ध विणिहाय[11] भुजे वियडेण साहट्टु य जे सिणाइ[12] ।
जे धावती[13] 'लूसयई व वत्थ'[14] अहाहु से णागणियस्स[15] दूरे ॥

सुसील-पदं

२२ कम्म परिण्णाय दगसि धीरे वियडेण 'जीवेज्ज य'[16] आदिमोक्ख ।
'से वीयकदाइ अभुजमाणे विरए सिणाणाइसु इत्थियासु'[17] ॥

कुसील-पद

२३ जे मायर च पियर च हिच्चा गार तहा पुत्तपसु धण च ।
'कुलाइ जे धावति साउगाइ'[18] अहाहु से सामणियस्स दूरे ॥
२४ कुलाइ जे धावति साउगाइ 'आघाइ धम्म उदराणुगिद्धे'[19] ।
'से आरियाण गुणाण'[20] सतसे 'जे लावएज्जा असणस्स हेउ'[21] ॥
२५ 'णिक्खम्म दीणे'[22] परभोयणम्मि[23] 'मुहमगलिओदरिय[24] पगिद्धे'[25] ।
णीवारगिद्धे व महावराहे 'अदूर एवेहिइ'[26] घातमेव ॥

---

१ अपरिक्ख (ख) ।
२ दिट्ठ (क, ख, वृ) ।
३ घतम° (चू) ।
४ जाण (क, ख) ।
५ भूतेहिं जाण पडिलेह सात (आयारो २।५२) ।
६ त्तस° (क) ।
७ पुढो (क) ।
८ जगाइ (चू) ।
९ पडिसखाए (चू) ।
१० या पडि° (चू), य प्पडिसह° (ख) ।
११ व णिहाय (क), व णिधाय (चू) ।
१२ सिणाइ (क, ख) ।
१३ धोवति (ख) ।
१४ लीसएज्जा वि वत्थ (चूपा) ।
१५ ण अणियस्स (चू) ।
१६ जे जीवति (चू) ।
१७ ते वीज-कदादि अभुजमाणा, विरता सिणाणा अदु इत्थिगातो (चू) ।
१८ आघाति धम्म उदराणुगिद्धो (चू) ।
१९ आघाति अक्खाइउदराओ गिद्धो (चू) ।
२० अहाहु से आयरियाण (क, ख) ।
२१ जे लावए ता असणादिहेतु (चू) ।
२२ णिक्खदद्दीणे (चू) ।
२३ परभोयणत्थि (चू) ।
२४ व्या० वि०—द्विपदयो सन्धि —मुहमगलिओ+ओदरिय ।
२५ मुहमगलिउदरियाणुगिद्धे (क), मुहमगलिए उदराणुगिद्धे (ख) ।
२६ अदूरए एहति (ख), अदूरते वेसति (चू) ।

२६ अण्णस्स पाणस्सिहलोइयस्स अणुप्पिय भासति सेवमाणे।
पासत्थय चेव कुसीलय च णिस्सारए होइ जहा पुलाए।

सुसील-पद

२७ अण्णायपिंडेणऽहियासएज्जा णो[1] पूयण तवसा आवहेज्जा[2]।
'सद्देहि रूवेहि असज्जमाणे सव्वेहि कामेहि विणीय गेहिं'[3]॥
२८ सव्वाइ सगाइ अइच्च धीरे[4] सव्वाइ दुक्खाइ तितिक्खमाणे।
अखिले अगिद्धे अणिएयचारी 'अभयकरे भिक्खु[5] अणाविलप्पा'[6]॥
२९ भारस्स जाता[7] मुणि[8] भुजएज्जा[9] कखेज्ज 'पावस्स विवेग'[10] भिक्खू।
दुक्खेण पुट्ठे धुयमाइएज्जा सगामसीसे 'व पर दमेज्जा'[11]॥
३० 'अवि हम्ममाणे'[12] फलगावतट्ठी[13] समागम कखइ अतगस्स।
णिद्धय कम्म ण पवचुवेइ[14] अक्खक्खए वा सगड त्ति बेमि॥



---

१ ण (चू)।
२ आवहुज्जा (चू)।
३ अण्णे य पाणे य अणाणुगिद्धे,
सव्वेसु कामेसु णियत्तएज्जा (चू)।
४ वीरे (क, ख)।
५ व्या० वि०—भिक्खू।
६ ण सिलोयकामी परिव्वएज्जा (चू)।
७ जत्ता (क)।
८ व्या० वि०—मुणी।
९ भुजमाणे (चू)।
१० यो पाव विवेग (चू), व्या० वि०—विवेग।
११ च पर० (क), अवरे दमेइ (चू)।
१२ प्रणिहम्ममाणे (चूपा)।
१३ ०यतट्ठी (क)।
१४ व्या० वि०—द्विपदयो सन्धि—पवच+उवेइ।

अट्ठमं अज्झयणं

वीरियं

वीरिय-पदं

१ दुहा वेय[1] सुयक्खाय[2] वीरिय ति पवुच्चई।
किण्णु वीरस्स वीरित्त[3]? 'केण वीरो त्ति वुच्चति'[4]?॥

२ कम्ममेव[5] पवेदेति[6] अकम्म वा[7] वि सुव्वया[8]॥
'एतेहिं दोहि ठाणेहि जेहि'[9] दीसति मच्चिया॥

३ पमाय कम्ममाहसु अप्पमाय तहावर।
तब्भावादेसओ[10] वा वि वाल पडियमेव वा॥

वाल-वीरिय-पद

४ सत्थमेगे[11] सुसिक्खति अतिवाताय[12] पाणिण।
एगे[13] मते अहिज्जति पाणभूयविहेडिणो॥

---

१ चेत (क, चू)।

२ समक्खात (चू)।

३ वीरत्त (क, ख, वृ)।

४ कह चेय पुवुच्चति (क, ख)।

५ कम्ममेगे (क, ख, वृ), अत्र वृत्तिकृता 'एगे' इति पाठ स्वीकृत, किन्तु अत्र प्रवेदन तीर्थंकराणा विद्यते, न तु मतान्तरसूचनमस्ति तेन नासौ पाठो घटते।

६ परिण्णाय (चू), पभासति (चूंपा)।

७ चा (वृ)।

८ मुच्चति (क), सुव्वया! (वृ)।

९ 'एतेहिं दोहि ठाणेहिं, जेहिं' अत्र तृतीया करणेनार्यस्य जटिलता जाता। चूर्णौ तृतीयान्त पाठो नास्ति व्याख्यात। तत्र 'एते एव द्वे स्याने' इति पाठो व्याख्यातोस्ति तेन 'एते एव दुवे ठाणे' इति पाठस्य कल्पना जायते। यद्येप पाठ स्यात् तदा व्याख्याया जटिलतापि समाप्ता स्यात्। उत्तराध्ययने (५।२) पि एतत् सवादी पाठो लभ्यते—'सतिमेव दुवे ठाणा' पुनश्च 'जम्मि' अथवा 'जेहिं' इति पाठावपि सुसगच्छाते, °जम्मि (चू)।

१० तब्भाव° (चू)।

११ अत्य° (चू)।

१२ °वादाय (क)।

१३ केइ (चू)।

५ माइणो कट्टु मायाओ 'कामभोगे सम[...]
हंता छेत्ता पगतित्ता आय-सायाणुगामिणो [...]
६ मणसा वयसा चेव कायसा चेव अ[...]
आरतो परतो वा वि दुहा वि य असं[...]
७ वेराइं कुव्वती वेरी 'ततो वेरेहिं रज्जत[...]
पावोवगा य आरंभा दुक्खफासा य अंत[...]
८ संपरायं[3] णियच्छंति[4] अत्तदुक्कडकारिणो[5] [...]
रागदोसस्सिया बाला पावं कुव्वंति ते बहु[...]
९ एतं सकम्मविरियं[6] बालाणं तु पवेइयं [...]
एत्तो अकम्मविरियं पंडियाणं सुणेह मे [...]

पंडित-वीरिय-पदं

१० दविए बंधणुम्मुक्के सव्वतो छिण्णबंधणे ।
पणोल्लं[7] पावगं कम्मं सल्लं 'कतति अंतसो'[8] ॥
११ णेयाउयं सुयक्खातं उवादाय समीहते ।
भुज्जो भुज्जो दुहावासं असुहत्तं तहा तहा ॥
१२ ठाणी विविहठाणाणि चइस्संति ण संसओ ।
अणितिए[9] अयं[10] वासे 'णातीहिं य'[11] सुहीहिं य ॥
१३ एवमायाय मेहावी अप्पणो[12] गिद्धिमुद्धरे ।
आरियं[13] उवसंपज्जे सव्वधम्ममकोवियं[14] ॥
१४ सहसंमइए[15] णच्चा धम्मसारं सुणेत्तु[16] वा ।
'समुवट्ठिए अणगारे पच्चक्खाय पावए'[17] ॥

---

१ °समायरे (क), °समाहरे (चू), आरभाय तिउट्टइ (चूपा, वृपा) ।
२ जेहिं वेरेहिं कज्जति (चू) ।
३ संपराइग (क), संपराग (चू) ।
४ निगच्छति (चू) ।
५ अत्ता° (चू) ।
६ °वीरिय (ख) ।
७ पणोल्लो (क, ख) ।
८ कतइ अप्पणो (वृपा) ।
९ अणीयए (क, ख) ।
१० इमे (चू) ।
११ नायएहि (क, ख) ।
१२ अप्पणा (चू) ।
१३ आयरिय (ख, चूपा) ।
१४. सव्वे धम्मा अकोपिता (चू), °गोविय (ख, वृपा) ।
१५ सहसमुइए (क), सह सम्मुत्तियाए (चू) ।
१६ सुणेत्त (चू) ।
१७ समुवट्ठिए उ° (ख), [...]
(चू) । [...]

१५ जं किंचुवक्कमं[1] जाणे 'आउक्खेमस्स अप्पणो।
तस्सेव अंतरा खिप्पं सिक्खं सिक्खेज्ज पंडिए'[2] ॥

१६ जहा कुम्मे सअंगाइं सए देहे समाहरे।
एवं 'पावेहिं अप्पाणं'[3] अज्झप्पेण समाहरे ॥

१७ साहरे[4] हत्थपाए य मणं[5] सव्विंदियाणि य।
पावगं च[6] परीणामं भासादोसं च तारिसं[7] ॥

१८ 'अणु माणं'[8] च मायं च तं परिण्णाय पंडिए।
'सुतं मे इह मेगेसिं एयं वीरस्स वीरियं'[9] ॥

१९ 'उड्ढमहे तिरियं दिसासु जे पाणा तस थावरा ॥
सव्वत्थ विरतिं कुज्जा संति-णिव्वाणमाहितं'[10] ॥

२० पाणे य णाइवाएज्जा अदिण्णं पि य णातिए[11]।
सातियं[12] ण मुसं बूया एस धम्मे वुसीमओ ॥

२१ 'अतिक्कमंतिं वायाए मणसा वि ण पत्थए।
सव्वओ संवुडे दंते आयाणं सुसमाहरे'[13] ॥

२२ कडं च कज्जमाणं[14] च आगमेस्सं[15] च पावगं।
सव्वं तं णाणुजाणंति आयगुत्ता[16] जिइंदिया ॥

---

१ किन्तुवक्कमं (क), किंचिउवक्कमं (चू), व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धिः—किंचि+उवक्कमं।
२ आउक्खेमं च अप्पणो। तस्सेव अंतरद्धा, खिप्पं सिक्खेज्ज पंडिते (चू)।
३ पावाइं मेहावी (क, ख, वृ)।
४. संहरे (चू)।
५. कायं (चू)।
६. तु (ख)।
७ तारिसं (क, ख, वृ)।
८ अइमाणं (चूपा, वृपा)।
९ आययट्ठं सुयादाय एवं वीरस्स वीरियं (क, ख), साया गारवणिहुते, उवसंते णिहे चरे (क, ख), साया गारवणिहुए, उवसंते णिहे चरे (वृ), सुयं मे इह मेगेसिं, एवं वीरस्स वीरियं (वृपा), आययट्ठं सुआदाय, एयं वीरस्स वीरियं (वृपा)।
१० × (क, ख), अयं च श्लोको न सूत्रादर्शेषु दृष्टः, टीकायां तु दृष्ट इति कृत्वा लिखितः (वृ)।
११ नायए (क), णादिए (ख)।
१२ साइयं (ख), सादियं (वृ)।
१३ °सुसमाहिए (क),
अयं भावरते निच्चं,
भवे भिक्खू सुसंवुडे।
अतिक्कमं तिपादाए,
मणसा वि ण पत्थए ॥ (चू)।
१४ कीर° (चू)।
१५ °मिस्सं (ख)।
१६ आउगुत्ता (क)।

अबुद्ध-परक्कत-पद

२३. जे याऽबुद्धा[1] महाभागा[2] वीरा ऽसम्मत्तदंसिणो[3]।
असुद्ध तेसि परक्कत सफल होइ सव्वसो ॥

बुद्ध-परक्कत-पद

२४ जे उ[4] बुद्धा महाभागा[5] वीरा सम्मत्तदंसिणो।
सुद्ध तेसि परक्कत अफल होइ सव्वसो ॥
२५ तेसि 'तु तवोसुद्धो'[6] णिक्खता जे[7] महाकुला।
'अवमाणिते परेण तु ण सिलोग वयति ते'[8] ॥
२६ अप्पपिंडासि पाणासि अप्प भासेज्ज सुव्वए।
खतेऽभिणिव्वुडे दते 'वीतगेही सया जए'[9] ॥
२७ झाणजोग[10] समाहट्टु काय वोसेज्ज[11] सव्वसो।
तितिक्ख परम णच्चा आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ॥
—त्ति वेमि ॥

---

१ अबुद्धा (क)।
२ महानागा (चू)।
३ असमत्त° (ख), °दरिसिणो (चू)
४ य (ख, वृ)।
५ महानागा (चू)।
६ पि तवो ऽसुद्धो (क,वृ), तु तवो असुद्धो(ख)।
७ जे य (क)।
८. ज नेवन्ने वियाणति, न सिलोग पवेयए (क, ख, वृ)।
९ विगतगेघी ण रज्जति (चू)।
१० °योग (चू)।
११ विउ° (क, ख)।

नवम अज्झयणं

धम्मो

धम्म-पद

१ कयरे धम्मे अक्खाए[1] माहणेण मईमता ? ।
अजु[2] धम्म जहातच्च[3] 'जिणाण त सुणेह मे'[4] ।।
२ माहणा खत्तिया वेस्सा[5] चडाला अदु बोक्कसा ।
एसिया वेसिया सुद्दा 'जे य'[6] आरभणिस्सिया ।।
३ परिग्गहे णिविट्ठाण 'वेर तेसिं'[7] पवड्ढई ।
आरभसभिया[8] कामा ण ते दुक्खविमोयगा ।।
४ आघातकिच्चमाहेउ[9] णाइओ[10] विसएसिणो ।
अण्णे हरति त वित्त 'कम्मी कम्मेहि किच्चती'[11] ।।
५ 'माता पिता ण्हुसा भाया भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
णाल ते मम[12] ताणाए लुप्पतस्स सकम्मुणा'[13] ।।

---

१ आघाते (चू) ।
२ उज्जू (ख), अजु (चू) ।
३ अहा° (क), जधातधा (चू) ।
४ जणगा० (ख), जणगा त सुणे धम्मे (चूपा, वृपा) ।
५ वेसा (क, ख) ।
६ जेऽन्ने (क) ।
७ पाव तेसिं (वृ), तेसिं पाव (चू), वेर तेसिं (वृपा) ।
८ °सवुता (चू), °सम्मुता (चूपा) ।
९ °मावाए (चू), °माधेतु (चूपा) ।
१० णायतो (क) ।
११ °कच्चती (क), कम्माऽय एसति (चू) ।
१२ तव (क, ख, वृ) ।
१३. तुलना—माया पिया ण्हुसा भाया,
भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
नाल ते मम ताणाय,
लुप्पतस्स सकम्मुणा ।।
—उत्तरज्झयणाणि ६।३ ।

६ एयमट्ठ सपेहाए[1] परमट्ठाणुगामिय
णिम्ममो णिरहकारो चरे भिक्खू जिणाहिय ।।
(युग्मम्)

७ 'चिच्चा वित्त च पुत्ते य'[2] णाइओ य परिग्गह ।
'चिच्चाण अतग सोय'[3] णिरवेक्खो परिव्वए ।।

मूलगुण-पद

८ 'पुढवी आऊ'[4] अगणी वाऊ[5] 'तण रुक्ख'[6] सबीयगा ।
अडया 'पोय जराऊ रस ससेय'[7] उब्भिया ।।

९ एतेहि छहि काएहि त विज्ज । परिजाणिया ।
मणसा कायवक्केण णारभी ण परिग्गही ।

१० मुसावाय[8] बहिद्ध च उग्गह च अजाइय[9] ।
सत्थादाणाइ लोगसि त विज्ज । परिजाणिया ।।

उत्तरगुण-पद

११ पलिउचण च भयण च थडिल्लुस्सयणाणि य ।
धुत्तादाणाणि[10] लोगसि त विज्ज । परिजाणिया ।।

१२ 'धावण रयण चेव वमण च विरेयण ।
वत्थिकम्म सिरोवेधे'[11] त विज्ज । परिजाणिया ।।

१३ गधमल्ल[12] सिणाण च दतपक्खालण तहा ।
परिग्गहित्थिकम्म च त विज्ज । परिजाणिया ।।

---

१ व्या० वि०—अत्र 'स' शब्दस्य अनुस्वार-लोप —'सपेहाए' (सप्रेक्ष्य) । सम्मपेहाए (चू) । 'स पेहाए' स प्रेक्षापूर्वकारी (वृ) । उत्तराध्ययन (६।४) सदर्भे चूर्णिव्याख्या सगतास्ति । सपेहाए (स्वप्रेक्षया) इत्यपि पाठो भवितुमर्हति ।

२ °या (क), चेच्चा पुत्ते य मित्ते य (चू) ।

३ चेच्चाण अत्तग सोत (चू), चेच्चा अणतग सोय (चूपा), चेच्चाण अतक सोय, चेच्चाण अत्तग सोय, चेच्चाणऽणतग सोय (वृपा) ।

४ पुढवाऽऽतु (चू) ।

५ वायू (चू) ।

६ व्या०वि०–विभक्तिरहितपदम्–तणा रुक्खा ।

७ व्या० वि०—विभक्तिरहित वर्णलोपश्च—पोयया जराउया रसया ससेइया ।

८ °वात (चू) ।

९ अजाइया (क, ख), मऽजाइय (चू) ।

१० घूणायाणय (क), घूणादाणाइ (ख), वृत्ति-कृता 'घूण' इति पाठो व्याख्यात धूनयेति प्रत्येक क्रिया योजनीया(वृ), किन्तु चूर्णीगत पाठोर्थदृष्ट्या स्वाभाविक प्रतिभाति ।

११ धोयण रयण चेव, वत्थीकम्म विरेयण । वमणजणपलीमथ (क, ख, वृ) ।

१२. °मल्ल (ख, वृ, चू) ।

१४ उद्देसिय कीयगड[1] पामिच्च चेव आहड।
'पूति अणेसणिज्ज'[2] च त विज्ज ! परिजाणिया ॥
१५ आसूणिमक्खिराग[3] च गिद्धवघायकम्मग[4] ।
उच्छोलण च 'कक्क च'[5] त विज्ज ! परिजाणिया ॥
१६ सपसारी कयकिरिए[6] पसिणायतणाणि[7] य।
सागारिय पिड च त विज्ज ! परिजाणिया ॥
१७ अट्ठापद[8] ण सिक्खेज्जा वेधादीय[9] च णो वए।
हत्थकम्म विवाय च त विज्ज ! परिजाणिया ॥
१८ उवाणहाओ[10] छत्त च णलिय[11] वालवीयण[12]।
परकिरिय अण्णमण्ण च त विज्ज ! परिजाणिया ॥
१९ उच्चार पासवण हरितेसु ण करे मुणी।
वियडेण वावि साहट्टु णायमेज्ज[13] कयाइ[14] वि ॥
२० परमत्ते[15] अण्णपाण ण भुजेज्ज कयाइ वि।
परवत्थ अचेलो वि त विज्ज ! परिजाणिया ॥
२१ आसदी पलियके य[16] णिसिज्ज च गिहतरे।
सपुच्छण[17] सरण वा त विज्ज ! परिजाणिया ॥
२२ 'जस कित्ती'[18] सिलोग च जा य वदणपूयणा।
सव्वलोगसि जे कामा त विज्ज ! परिजाणिया ॥
२३ जेणेह[19] णिव्वहे भिक्ख अण्णपाण तहाविह।
अणुप्पदाणमण्णेसि त विज्ज ! परिजाणिया ॥

---

१ कीतकड (चू)।
२. पूइय णेस° (क), पूय अणे° (ख)।
३ आसूणियमक्खि° (चू)।
४ गेह्रुवघाय° (चू)।
५ कक्केण (चु)।
६. य कयकिरीते (क, ख)।
७ पासणिया° (चू)।
८ अट्ठावय (ख)।
९ वेहाईय (ख); वेघातीत (वृ), वेघादीय (वृपा)।
१० पाणहाओ य (क, ख, वृ)।
११ नालीय (ख)।
१२ °वीयणी (क)।
१३ नाच° (ख)।
१४ कदादि (क)।
१५ परमत्ते (चू)।
१६. पलियक च (चू)।
१७ सपुच्छण च (क, चू)।
१८ जस किर्त्ति (ख, चू)।
१९ जणेहि (क), जेणिह (चू), जेणिह (चूपा)।

['सीलमते असीले वा तेंसि दाण विवज्जए।
णिज्जरट्ठाए दायव्व त विज्ज[1] परिजाणिया"]॥
२४ एव उदाहु णिग्गथे महावीरे महामुणी।
अणतणाणदसी से धम्म देसितव सुत॥

भासा-विवेग-पद

२५ भासमाणो ण भासेज्जा 'णो य'[2] वम्फेज्ज मम्मय[3]।
'माइट्ठाण विवज्जेज्जा'[4] 'अणुवीइ वियागरे'[5]॥
२६ 'सतिमा तहिया'[6] भासा ज वइत्ताणुतप्पई।
ज छण्ण[7] त ण वत्तव्व एसा आणा णियठिया॥
२७ होलावाय सहीवाय गोयवाय[8] च णो वए।
तुम तुम ति अमणुण्ण[9] सव्वसो त ण वत्तए॥

ससग्गि-वज्जण-पद

२८ अकुसीले सदा भिक्खू 'णो य'[10] ससग्गिय भए।
सुहरूवा तत्थुवसग्गा पडिवुज्भेज्ज ते विदू॥

सामण्ण-चरिया-पदं

२९ 'णण्णत्थ अतराएण'[11] परगेहे ण णिसीयए।
गाम-कुमारिय किड्ड णाइवेल हसे मुणी॥
३० 'अणुस्सुओ उरालेसु जयमाणो परिव्वए'[12]।
चरियाए अप्पमत्तो 'पुट्ठो तत्थऽहियासए'[13]॥
३१ हम्ममाणो ण कुप्पेज्जा वुच्चमाणो ण सजले।
सुमणो अहियासेज्जा ण य कोलाहल करे॥

---

१ अय श्लोक केवल चूर्णाविव व्याख्यातो लभ्यते।
२ णेय (क), नेव (ख)।
३ मामय (क, वृपा)।
४ मायाठाण ण सेवेज्ज (चू)।
५ अणुवीय° (क), अणुचितिय° (ख), °उदाहरे (वृ), अणुचितिय वाहरे (चू)।
६ तत्थिमा तइया (क, ख, वृ)।
७ छन्न (क, ख, वृपा)।
८ सोलवाद (चू), गोतावाद (चूपा)।
९ अपडिण्णे (चू)।
१० नेव (क, ख)।
११ नन्नत्थतरा° (क)।
१२ अणिस्सिओ उरालेहि, अपमत्तो परिव्वए। (चू), अणिस्सिओ° (वृपा)।
१३ पुट्ठो सम्माधियासए (चू)।

३२ 'लद्धे कामे'[1] ण पत्थेज्जा विवेगे 'एव माहिए'[2]।
आयरियाइ[3] सिक्खेज्जा 'बुद्धाण अतिए'[4] सया ॥
३३ सुस्सूसमाणो उवासेज्जा सुप्पण्ण सुतवस्सिय।
वीरा[5] जे अत्तपण्णेसी धितिमता जिइदिया ॥
३४ गिहे दीवमपासता[6] पुरिसादाणिया णरा।
ते वीरा बधणुम्मुक्का णावकखति जीविय ॥
३५ अगिद्धे सद्दफासेसु आरभेसु अणिस्सिए।
'सव्व त'[7] समयातीत जमेत[8] लविय बहु ॥
३६ अइमाण च माय च त परिण्णाय पडिए।
गारवाणि य सव्वाणि णिव्वाण[9] सधए मुणि ॥

—त्ति बेमि ॥

---

१ लद्धोकामे (चूपा, वृपा)।
२ एम माहिए (क), एस आहिए (ख)।
३ आरियाइ (वृ), आयरियाइ (वृपा)।
४ सुबुद्धाणतिए (चू)।
५. वीरा (वृपा)।
६. ०मपस्सता (क)।
७. सव्वेत (चू)।
८ जमिद (चू)।
९ णेव्वाण (चू)।

दसमं अज्झयणं

समाही

समाधि-पद

१ आघं मइमं[1] अणुवीइ धम्मं अंजु[2] समाहिं तमिणं[3] सुणेह।
अपडिण्णे[4] भिक्खू[5] समाहिपत्ते 'अणिदाणभूते सुपरिव्वएज्जा'[6]॥
२ उड्ढं अहे य[7] तिरियं दिसासु तसा य जे थावर[8] जे य पाणा।
हत्थेहिं पादेहिं य संजमित्ता[9] अदिण्णमण्णेसु य णो गहेज्जा॥
३ सुयक्खायधम्मे वितिगिच्छतिण्णे[10] लाढे चरे आयतुले पयासु[11]।
आयं ण कुज्जा इह जीवियट्ठी चयं ण कुज्जा सुतवस्सि[12] भिक्खू॥

चरित्त-समाधि-पद

४ सव्विंदियाभिणिव्वुडे[13] पयासु चरे मुणी सव्वओ विप्पमुक्के।
पासाहि पाणे य पुढो विसण्णे[14] 'दुक्खेण अट्टे'[15] परिपच्चमाणे[16]॥

---

१ मईम (ख)।
२ अजू (क ख)।
३ तधिय (चू)।
४ अपडिण्ग (क्व)।
५ भिक्खू उ (ख)।
६ °भूते परिवएज्जा (वृ), °भूतेसु परिव्वएज्जा (वृपा, चूपा), °भूते सुपरि° वृपा)।
७ त (क), या (चू)।
८ व्या० वि०—थावरा।
९ संजमतो (चू)।
१० वितिगिंछ° (चू)।
११ पयासु (चू)।
१२ व्या० वि०—सुतवस्सी।
१३ °दियभि° (क), °दियणिव्वुडे (चू)।
१४ वि सत्ते (क, वृ), विसते (चूपा)।
१५ दुक्खट्टितऽट्टे (चूपा)।
१६ परितप्पमाणे (ख, चू, वृपा)।

५ एतेसु[1] बाले य[2] पकुव्वमाणे आवट्टती[3] 'कम्मसु पावएसु'[4]।
अतिवाततो कीरति पावकम्मं णिउंजमाणे उ[5] करेइ कम्मं ॥
६ आदीणवित्ती[6] वि करेति पावं मंता हु[7] एगंतसमाहिमाहु ।
बुद्धे समाहीय[8] रए विवेगे पाणाइवाया विरते ठितप्पा[9] ॥
७ सव्वं जगं तू[10] समयाणुपेही पियमप्पियं कस्सइ णो करेज्जा ।
उट्ठाय 'दीणे तु'[11] पुणो विसण्णे[12] संपूयणं चेव सिलोयकामी ॥
८ आहाकडं[13] चेव णिकाममीणे[14] णिकामसारी[15] य विसण्णमेसी ।
इत्थीसु[16] सत्ते य पुढो य बाले परिग्गहं चेव पकुव्वमाणे[17] ॥
९ 'वेराणुगिद्धे णिचयं करेति'[18] इतो चुते से दुहमट्ठदुग्गं[19] ।
तम्हा तु मेधावि[20] समिक्ख धम्मं चरे मुणी सव्वतो विप्पमुक्के ॥
१० आयं[21] ण कुज्जा इह जीवितट्ठी[22] असज्जमाणो य[23] परिव्वएज्जा ।
णिसम्मभासी य विणीयगिद्धी[24] हिंसण्णितं वा ण कहं करेज्जा ॥
११ आहाकडं वा ण णिकामएज्जा णिकामयंते य ण संथवेज्जा ।
धुणे उरालं अणवेक्खमाणे[25] चेच्चाण सोयं अणुवेक्खमाणे[26] ॥
१२ एगत्तमेवं[27] अभिपत्थएज्जा 'एतं पमोक्खे'[28] ण मुसं ति पास ।
एसप्पमोक्खे अमुसेऽवरे[29] वी अकोहणे सच्चरए तवस्सी[30] ॥

---

१ एवं तु (वृपा, चूपा)।
२ तु (चू)।
३ आउट्टती (चूपा, वृपा)।
४ कम्मेहिं पावएहिं (चू)।
५ वि (ख)।
६ आदीणभोई (क, चू, वृपा)।
७ उ (क, ख)।
८ समाहीइ (क)।
९ ठिनच्चा, ठितच्ची (चूपा, वृपा)।
१० त (ख)।
११ दीणो य (क, ख)।
१२ विसत्तो (क)।
१३ अवाकडं (चू)।
१४ णियायमीणे (चूपा)।
१५ नियामचारी (क, ख, वृपा)।
१६ इत्थीहिं (चू)।
१७ ममायमाणे (चू)।
१८ आरंभसत्ता णिचयं करेंति (चू), आरंभसत्तो° (वृपा)।
१९ °दुग्गे (चू)।
२० व्या० वि०—मेधावी।
२१ छदं (चू, वृपा), आयं (चूपा)।
२२ जीवियट्ठी (वृ)।
२३ उ (क)।
२४ °गिद्धि (वृ), °गेधी (चू)।
२५ अणुवेहमाणे (ख, वृ)।
२६ अणुपेहमाणे (क, वृ)।
२७ °मेयं (ख)।
२८ एवं पमुक्खो (क, ख, वृ)।
२९ वरे (वृ)।
३० तपस्सी (चू)।

१३ इत्थीसु या 'आरयमेहुणे उ'[1] परिग्गहं चेव अकुव्वमाणे[2] ।
'उच्चावएसु विसएसु ताई'[3] 'ण ससय'[4] भिक्खु[5] समाहिपत्ते ॥
१४ अरतिं रतिं च अभिभूय भिक्खू तणादिफासं तह सीतफासं ।
'उण्हं च दसं'[6] चऽहियासएज्जा सुब्भिं च दुब्भिं च तितिक्खएज्जा ॥
१५ गुत्ते[7] वईए य समाहिपत्ते लेसं समाहट्टु परिव्वएज्जा ।
गिहं ण छाए ण वि छादएज्जा[8] सम्मिस्सिभावं[9] पजहे पयासु ॥

असमाधि-पदं

१६ जे केइ लोगम्मि उ अकिरियाता[10] अण्णेण पुट्ठा धुतमादिसंति[11] ।
आरंभसत्ता गढिया य लोए धम्मं ण जाणंति विमोक्खहेउं ॥
१७ 'तेसिं पुढो छंदा माणवाणं किरिया-अकिरियाण व पुढोवादं'[12] ।
'जातस्स बालस्स पकुव्व देहं'[13] पवड्ढती[14] वेरमसंजयस्स ॥
१८ आउक्खयं[15] चेव अबुज्झमाणे ममाइ से साहसकारि[16,17] मंदे ।
अहो य राओ[18] परितप्पमाणे अट्टे सुमूढे अजरामरे[19] व्व ॥
१९ जहाय[20] वित्तं पसवो य सव्वे जे बंधवा जे य पिया य मित्ता ।
लालप्पई 'से वि उवेति मोहं'[21] अण्णे जणा तं सि[22] हरंति वित्तं ॥

---

१ ०मेहुणा उ (ख, वृ), अरतमेघुणे या (चू) । व्या० वि०—आ+अरत+मैथुन—विरत-मैथुन इत्यर्थः ।
२ अमायमीणे (चू) ।
३ उच्चावएहिं विसएहिं ताया (चू) ।
४ णिस्ससय (क, ख, वृ), ण ससय (वृपा) ।
५ व्या० वि०—भिक्खू ।
६ तेउ च० (ख), तेउ च सद्द (चू) ।
७ गुत्तो (क) ।
८ छावएज्जा (क, ख) ।
९ सम्मिस्स० (क, ख, वृ), सम्मिस्सि० (वृपा) ।
१० अकिरियाया (क), अकिरिय आया (ख) ।
११ ०मादियंति (चू) ।
१२ पुढो य छंदा इह माणवातो, किरियाकिरीणं च पुढो य वायं (क), पुढो य छंदा इह माणवा तु, किरियाकिरीणं च पुढो य वायं (ख), पुढो छंदा इह माणवा उ, किरिया किरियाणं च पुढोवायं (वृ) ।
१३ जाताण बालस्स पगब्भणाए (चूपा), जायाए बालस्स पगब्भणाए (वृपा) ।
१४ पवड्ढते (चू) ।
१५ आयु० (चू) ।
१६ व्या० वि०—साहसकारी ।
१७ सहस्स० (चू) ।
१८ रातो य (चू) ।
१९ ०मरि (क, ख) ।
२० जहाहि (क, ख) ।
२१ से वि य एइ मोहं (क, ख), ते वि उवेंति घतं (चू) ।
२२ से (क) ।

मूलगुण-समाहि-पदं

२० सीहं जहा खुद्दमिगा[1] चरंता दूरे[2] चरती परिसंकमाणा।
एवं तु मेहावि[3] समिक्ख धम्मं 'दूरेण पावं परिवज्जएज्जा'[4]॥
२१ संबुज्झमाणे उ[5] णरे मतीमं पावाओ अप्पाणं[6] णिवट्टएज्जा।
'हिंसप्पसूताणि दुहाणि'[7] मत्ता[8] 'वेराणुबंधीणि महब्भयाणि'[9]॥
२२ मुसं ण बूया मुणि[10] अत्तगामी[11] णिव्वाणमेयं[12] कसिणं समाहिं।
सयं ण कुज्जा ण वि[13] कारवेज्जा करंतमण्णं[14] पि य णाणुजाणे॥

उत्तरगुण-समाहि-पदं

२३ 'सुद्धे सिया जाए ण दूसएज्जा'[15] 'अमुच्छितो अणज्झोववण्णो'[16]।
धितिमं 'विमुक्के ण य'[17]पूयणट्ठी ण सिलोयकामी[18] य परिव्वएज्जा॥
२४ णिक्खम्म गेहाओ णिरावकंखी कायं विओसज्ज[19] णिदाणछिण्णे।
णो जीवितं णो मरणाभिकंखी चरेज्ज भिक्खू वलया विमुक्के॥
—त्ति बेमि॥



---

१. खुड्ड° (चू)।
२ दूरेण (वृ)।
३ व्या० वि०—मेहावी।
४. पावाणि दूरेण विवज्जएज्जा (चू)।
५ य (ख, चू)।
६ अप्पाण (क)।
७ °सूयाइ दुहाइ (क, ख)।
८ मता (क, ख)।
६. णेव्वाणभूते व परिव्वएज्जा (चू वृपा)।
१० व्या० वि०—मुणी।
११ °कामी (चू)।
१२ °मेव (चू)।
१३ य (क, चू)।
१४ करेंत° (चू)।
१५ सुद्धेसिया जायण तूसएज्जा (चू)।
१६ अमुच्छिए न य अज्झोववण्णे (क, ख)।
१७ विप्पमुक्के ण (चू)।
१८ °गामी (क, ख, वृ)।
१६ विओस्सेज्ज (क)।

एगारसमं अज्झयणं

मग्गो

मग्ग-सार-पदं

१ कयरे मग्गे अक्खाते[1] माहणेण मतीमता ?।
जं मग्गं उज्जु[2] पावित्ता ओहं तरति दुरुत्तरं ॥
२ तं 'मग्गं अणुत्तरं'[3] सुद्धं सव्वदुक्खविमोक्खणं[4] ।
जाणासि[5] णं जहा भिक्खू ! तं णे बूहि[6] महामुणी ! ॥
३ जइ णे केइ पुच्छेज्जा 'देवा अदुव माणुसा'[7] ।
तेसिं तु कयरं मग्गं आइक्खेज्ज ? कहाहि णो[8] ॥
४ जइ वो केइ पुच्छेज्जा देवा अदुव माणुसा ।
'तेसिमं पडिसाहेज्जा मग्गसारं सुणेह मे'[9] ॥
५ अणुपुव्वेण महाघोरं कासवेण पवेइयं ।
जमादाय इओ पुव्वं समुद्दं[10] ववहारिणो ॥

---

१ आघाते (चू) ।
२ अजु (चू), व्या० वि०—उज्जु ।
३ मग्गमणुत्तरं (ख) ।
४ °मोक्खगं (क) ।
५ जाणेहि (चू) ।
६ ब्रूहि (चू) ।
७ अत्र चूर्णीविवरणानुसारेण 'देवा तिरिय माणुसा' इति पाठस्य परिकल्पना जायते, तच्चेत्थम्—"तिरिया मणुस्सा, उत्तरगुणलद्धिं वा पडुच्च तिय (तिरिय ?) अपि कश्चिद् गिरा वत्ति (वि त ?), वयसा वि पुच्छेज्ज ."
८ णे (चू) ।
९ तेसिं तु इमं मग्गं, आइक्खेज्ज सुणेध मे (चू वृपा), तेसिं तु° (चूपा) ।
१० समुद्दं व (चू) ।

६ अतरिंसु तरंतेगे तरिस्संति अणागया।
त सोच्चा पडिवक्खामि जतवो[!] त सुणेह मे ॥

अहिंसा-पदं

७. पुढवीजीवा पुढो सत्ता आउजीवा तहागणी।
वाउजीवा पुढो सत्ता तण[1] रुक्खा सबीयगा ॥
८ अहावरे[2] तसा पाणा एव छक्काय[3] आहिया।
'इत्ताव एव'[4] जीवकाए 'णावरे विज्जती कए'[5] ॥
९ सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं मइम पडिलेहिया।
सव्वे अकतदुक्खा[6] य अतो सव्वे अहिंसया[7] ॥
१०. एय खु णाणिणो सार ज ण हिंसति कचण[8]।
अहिंसा-समय चेव एतावत विजाणिया ॥
११ 'उड्ढ अहे'[9] तिरिय च जे केइ तसथावरा।
'सव्वत्थ विरतिं कुज्जा'[10] सति णिव्वाणमाहिय ॥
१२ पभू दोसे णिराकिच्चा[11] ण विरुज्झेज्ज केणइ।
मणसा वयसा चेव कायसा चेव अतसो ॥

एसणा-पद

१३ सवुडे से[12] महापण्णे[13] धीरे[14] दत्तेसण चरे।
एसणासमिए णिच्च वज्जयते अणेसण ॥
१४ भूयाइ समारभ[15] 'साधू उद्दिस्स'[16] ज कड।
तारिस तु ण गेण्हेज्जा[17] अण्णपाण[18] सुसजए ॥

---

१ व्या० वि०—तणा।
२ °वरा (चू)।
३ व्या० वि—छक्काया।
४ इत्तावये (क, ख), एताव ता (चू)।
५ नावरे कोइ विज्जई (ख)।
६ अक्कत° (ख)।
७ न हिंमया (क, वृ), अहिंसका (चू)।
८ किचण (क, ख)।
९ उड्ढ अहे य (ख), उड्ढमहे (चू)।
१० °विज्जा (क, वृ)। ३।४।२० श्लोके चूर्णिकृता 'सव्वत्थ विज्ज विरतिं' पाठ स्वीकृत, वृत्तिकृता च 'सव्वत्थ विरतिं कुज्जा' पाठो व्याख्यात। इह च चूर्णिकृता 'सव्वत्थ विरतिं कुज्जा' पाठ स्वीकृत, वृत्तिकृता च 'सव्वत्थ विरतिं विज्जा' पाठो व्याख्यात।
११ णिरे° (चू)।
१२ य (चू)।
१३ °पुण्णे (क)।
१४ वीरे (क)।
१५ च समारभ (क), च समारब्भ (ख)।
१६ समुद्दिस्स य (क), समुद्दिस्सा य (ख), साहू मुद्दिस्स (वृ), तमुद्दिस्सा य (ख)।
१७ भुजिज्जा (वृ)।
१८. अण्ण° (वृ)।

१५ पूतिकम्म[1] ण सेवेज्जा[2] एस धम्मे वुसीमतो।
ज किंचि अभिसकेज्जा[3] सव्वसो[4] त ण कप्पते[5] ॥

भासा-समिति-पद

१६ 'ठाणाइ सति सड्ढीण गामेसु णगरेसु वा।
अत्थि वा णत्थि वा धम्मो? अत्थि धम्मो त्ति णो वते ॥
१७. अत्थि वा णत्थि वा पुण्ण? अत्थि पुण्ण ति णो वए।
अघवा णत्थि पुण्ण ति एवमेय महब्भय'[6] ॥
१८ 'दाणट्ठयाय जे पाणा'[7] हम्मति तसथावरा।
तेसि सारक्खणट्ठाए 'अत्थि पुण्ण ति'[8] णो वए ॥
१९ जेसि त उवकप्पेंति 'अण्ण पाण'[9] तहाविह।
तेसि लाभतराय ति तम्हा णत्थि त्ति णो वए ॥
२० जे य दाण पससति[10] वधमिच्छति पाणिण।
जे य ण पडिसेहति वित्तिच्छेद करेंति ते ॥
२१ दुहओ वि जे[11] ण भासति अत्थि वा णत्थि वा पुणो।
आय रयस्स हेच्चा ण णिव्वाण[12] पाउणति ते ॥

धम्म-दीव-पद

२२ 'णिव्वाण-परमा'[13] बुद्धा णक्खत्ताण व चदमा[14]।
तम्हा सया जए दते णिव्वाण[15] सघए मुणी ॥

---

१ पूती° (क)।
२ सेवेज्ज (चू)।
३. अभिकखेज्जा (क, ख, वृ)।
४ सव्वतो (क)।
५ भोत्तए (चू)।
६ हणत णाणुजाणेज्जा, आयगुत्ते जिइदिए। ठाणाइ सति सड्ढीण, गामेसु नगरेसु वा ॥ तहा गिर समारब्भ, अत्थि पुण्ण ति नो वए। अह वा नत्थि पुण्ण ति, एवमेय महब्भय ॥ (क, ख, वृ), इद गाथा-द्वयमस्माभिश्चूर्ण्य-नुसारि स्वीकृतम्। अत्र वृत्त्यनुसारि गाथा-द्वय त्रुटितप्रकरणमिवाभाति। श्रद्धालो प्रश्न परिपाटी चूर्णौ स्वाभाविकी विद्यते। षोडशे श्लोके धर्मोस्ति नवेति प्रश्नस्तदुत्तर च। सप्तदशे श्लोके पुण्यमस्ति नवेति प्रश्नस्तदुत्तर च। वृत्तौ षोडशे श्लोके नास्ति धर्माधर्म-सम्बन्धी कोपि प्रश्न। सप्तदशे च पुण्य-सम्बन्धी प्रश्नो नास्ति केवलमपृष्टस्य प्रश्नस्योत्तरमस्ति। एतेन प्रतीयते वृत्त्यनुसारी पाठो सम्बद्धोस्ति।
७ दाणट्ठताए जे सत्ता (चू)।
८ तम्हा अत्थि त्ति (चू)।
९ अण्णपाण (क, ख, वृ)।
१० पडिसेधेंति (चू)।
११ ते (क, ख, वृ)।
१२ णेव्वाण (चू)।
१३ णिव्वाण परम (क,ख,वृपा), णेव्वाण° (चू)।
१४ चदिमा (क)।
१५ णेव्वाण (चू)।

२३ वुज्झमाणाण पाणाण किच्चताण[1] सकम्मणा[2]।
आघाति[3] साधुत[4] दीव पतिट्ठेसा पवुच्चई ॥
२४ आयगुत्ते सया दते छिण्णसोए[5] णिरासवे[6]।
जे धम्म सुद्धमक्खाति पडिपुण्णमणेलिस ॥

बोद्धदिट्ठि-समीक्खा-पद

२५ तमेव अविजाणता अवुद्धा वुद्धवादिणो[7]।
वुद्धा मो त्ति य मण्णता अतए ते[8] समाहिए ॥
२६ ते य वीयोदग चेव तमुद्दिस्सा य ज कड।
'भोच्चा झाण'[9] झियायति अखेतण्णा असमाहिया ॥
२७ जहा ढका य कका य कुलला[10] मग्गुका सिही।
मच्छेसण झियायति झाण ते कलुसाधम ॥
२८ एव तु समणा एगे[11] मिच्छदिट्ठी[12] अणारिया।
विसएसण झियायति कका वा कलुसाधमा ॥
२९ 'सुद्ध मग्ग विराहित्ता इहमेगे उ दुम्मती।
उम्मग्गगया दुक्ख घातमेसति त तहा'[13] ॥
३० जहा आसाविर्णि[14] णाव जाइअधो दुरूहिया।
इच्छई[15] पारमागतु अतरा य विसीदति ॥
३१ एव तु समणा एगे मिच्छद्दिट्ठी अणारिया।
सोत कसिणमावण्णा आगतारो महब्भय ॥

मग्ग-सधाण-पदं

३२. 'इम च धम्ममादाय कासवेण पवेदित।
तरे सोय महाघोर अत्तत्ताए परिव्वए'[16] ॥

---

१ कच्च° (क)।
२ सकम्मुणा (चू)।
३ अक्खाति (चू)।
४ साहुत (क, ख), असौ शब्द 'साधुक' अस्ति, तकारश्रुत्या 'साधुत' जातमिति प्रतीयते।
५ °स्सोते (चू)।
६ अणासवे (क, ख)।
७ वुद्धमाणिणो (क, ख, वृ)।
८ दूरतो (चू)।
९ झाण णाम (चू)।
१० पिलजा (चू)।
११ वेगे (क)।
१२ मिच्छा° (क)।
१३ चूर्णिकृता नासौ श्लोको व्याख्यात।
१४ आसाविणी (चू)।
१५ इच्छेज्जा (चू)।
१६ इम च धम्ममादाय, कासवेण पवेदित। कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स,अगिलाए समाहिए ॥

३३ विरते गामधम्मेहिं जे केई जगई जगा।
तेसिं अत्तुवमायाए[1] थाम कुव्व परिव्वए॥
३४ अतिमाण च माय च त परिण्णाय पडिए।
सव्वमेय णिराकिच्चा[2] णिव्वाण[3] सधए मुणी॥
३५ 'सधए साहुधम्म'[4] च पावधम्म णिराकरे[5]।
उवधाणवीरिए भिक्खू कोह माण 'ण पत्थए'[6]॥
३६ जे य बुद्धा अतिक्कता जे य बुद्धा अणागया।
सती तेसिं पइट्ठाण भूयाण[7] जगई जहा॥
३७ 'अह ण वतमावण्ण'[8] फासा उच्चावया फुसे।
ण तेहिं[9] विणिहण्णेज्जा वातेण व महागिरी॥
३८ सवुडे से महापण्णे धीरे[10] 'दत्तेसण चरे'[11]।
णिव्वुडे कालमाकखे एव[12] केवलिणो मत॥

—ति बेमि॥

संखाय पेसल धम्म, दिट्ठिम परिणिव्वुडे।
तरे सोत महाघोर, अत्तताए परिव्वएज्जासि॥
(चू), क्वचित्पश्चार्धस्यान्यथा पाठ—
'कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स, अगिलाए समाहिए' (वृ), उपरिनिर्दिष्टचूर्णिपाठस्य तुलना तृतीयाध्ययनस्य ८१,८२, श्लोकयो षट्पदेभ्यो जायते।

१ अत्तुवमाणेण (चू), ता उवमाऽऽताए (चूपा)।
२ णिरेकिच्चा (चू)।
३ णेव्वाण (चू)।
४. सद्दहे साधुधम्म (चूपा, वृपा)।
५ णिरे करे (चू)।
६ च वज्जए (क, ख)।
७ भूयाण (क)।
८ अधेण भेदमावण्ण (चूपा)।
९ तेसु (क, ख)।
१० बुद्धे, (चू), वीरे (चूपा)।
११ दत्तेसणचरे (वृ)।
१२ एत (वृ)।

वारसमं अज्झयणं

समोसरणं

समोसरण-चउक्क-पद

१ चत्तारि समोसरणाणिमाणि पावादुया जाइ पुढो वयंति।
किरियं अकिरियं 'विणयं ति'[1] तइयं अण्णाणमाहंसु चउत्थमेव॥

अण्णाणवादि-पद

२ अण्णाणिया ता[2] कुसला वि संता असंथुया णो वितिगिच्छ[3] तिण्णा।
अकोविया आहु अकोविएहिं[4] अणाणुवीईति[5] मुसं वदंति॥

३ 'सच्चं असच्चं इति चिंतयंता'[6] असाहु[7] 'साहु त्ति'[8] उदाहरंता।

वेणइयवादि-पद

जेमे जणा वेणइया अणेगे पुट्ठा वि भावं विणइंसु णाम[9]॥

४ अणोवसंखा इति ते उदाहु अट्ठे स ओभासइ[10] अम्हं एवं।

अकिरियवादि-पद

लवावसक्की[11] य अणागएहिं णो किरियमाहंसु अकिरियआया[12]॥

---

१ विणइत्ति (क)।
२ ताव (चू)।
३ व्या० वि०—वितिगिच्छ।
४ अकोविए तं (क), अकोवियाय (ख)।
५ °वाई य (ख), °वीय त्ति (चू)।
६. सच्चं मोसं° (चू), °इति भासयंता। (चूपा)।
७. व्या० वि—असाहु।
८ साधु ति (चू)।
९ णामा (चू)।
१०. नो भासइ (चूपा)।
११. लवावसकी (क, ख), लव—कर्म तस्मादपशङ्कितुम्—अपसर्तुं शीलं येषां ते लवापशङ्किन (वृ)।
१२ °वाई (ख, वृ)।

५ समिस्सभाव सगिरा[1] गिहीते[2] से[3] मुम्मुई[4] होइ[5] अणाणुवाई।
इम दुपक्ख इममेगपक्ख आहसु छलायतण च कम्म ॥
६ ते[6] एवमक्खति अबुज्झमाणा विरूवरूवाणिह[7] अकिरियाता[8]।
जमाइइत्ता वहवे मणूसा भमति ससारमणोवदग्ग ॥
७. णाइच्चो उदेइ[9] ण अत्थमेइ ण चदिमा वड्ढति हायती वा।
सलिला[10] ण सदति ण वति[11] वाया[12] वझे णितिए[13] कसिणे हु लोए ॥
८ जहा हि[14] अधे सह जोइणा वि रूवाणि णो पस्सइ हीणणेत्ते।
सत पि[15] ते एवमकिरियआता[16] किरिय ण पस्सति णिरुद्धपण्णा ॥
९ सवच्छरं सुविण[17] लक्खण च णिमित्तदेह च उप्पाइय च।
अट्ठगमेय वहवे अहित्ता[18] लोगसि जाणति अणागताइ ॥
१० केई[19] णिमित्ता तहिया भवति केसिचि 'ते विप्पडिएति'[20] णाण।
ते विज्जभावं[21] अणहिज्जमाणा 'आहसु विज्जापलिमोक्खमेव'[22] ॥

किरियवादि-पद

११ ते एवमक्खति[23] समेच्च लोग 'तहा-तहा'[24] समणा माहणा य।
सयकड णऽण्णकड च दुक्ख आहसु 'विज्जाचरण पमोक्ख'[25] ॥
१२ ते चक्खु[26] लोगस्सिह[27] णायगा उ[28] मग्गाणुसासति[29] हिय पयाण[30]।
तहा तहा सासयमाहु लोए जसी पया माणव[1] सपगाढा ॥

---

१. च गिरा (चू)।
२ गहीते (ख)।
३ ते (चू)।
४ मुम्मिया (क)।
५ होति (चू)।
६ त (क)।
७ विरूवरूवाणि (वृ)।
८ अकिरियवाई (क ख, वृ)।
९. उट्ठेति (चू)।
१० सरितो (चू)।
११ वयति (ख)।
१२ वायवो (चू)।
१३ नियते (क, ख, वृ)।
१४ य (क, चू)।
१५. तु (चू)।
१६ °किरियवाई (क, ख, वृ)।
१७ सुमिण (चू)।
१८ अधिज्जिता (चू)।
१९ केयी (चू)।
२० त विप्पडिएति (क, ख, वृ)।
२१ भास (चू), विज्जहरिस (चूपा)।
२२ जाणामु लोगसि वयति मदा (ख, वृपा)।
२३ एयमक्खते (चू)।
२४ तथागता (चू), तधा तधा (चूपा)।
२५ °चरणप्पमोक्ख (ख)।
२६ व्या० वि०—चक्खू।
२७ लोगसिह (क, ख, वृ)।
२८ ओ (क)।
२९ व्या० वि०—द्विपदयो सन्धि —मग्ग+अणुसासति।
३० पजाण (चू)।

१३ 'जे रक्खसा जे जमलोइया वा'[1] जे आसुरा[2] गंधव्वा य काया।
आगासगामी य पुढोसिया ते[3] पुणो पुणो विप्परियासुवेंति[4] ॥

१४ जमाहु ओहं सलिलं अपारगं जाणाहि णं भवगहणं[5] दुमोक्खं।
जंसी विसण्णा विसयंगणाहिं[6] दुहतो वि लोयं अणुसंचरंति ॥

१५ ण कम्मुणा कम्म खवेंति बाला अकम्मुणा कम्म खवेंति धीरा[7]।
मेधाविणो 'लोभमया वतीता'[8] संतोसिणो णो पकरेंति पावं ॥

१६ ते तीतउप्पण्णमणागयाइं[9,10] लोगस्स जाणंति तहागताइं।
णेतारो अण्णेसि[11] अणण्णणेया बुद्धा हु ते अंतकडा भवंति ॥

१७ ते णेव कुव्वंति ण कारवेंति भूताभिसंकाए[12] दुगुंछमाणा।
सदा जता विप्पणमंति धीरा विण्णत्ति[13]-वीरा य भवंति एगे ॥

१८ डहरे य पाणे वुड्ढे य पाणे ते आततो पासइ सव्वलोगे।
उवेहती[14] लोगमिणं महंतं 'बुद्धप्पमत्तेसु[15] परिव्वएज्जा[16] ॥

१९ जे आततो परतो वा[17] वि णच्चा अलमप्पणो होति अलं परेसिं।
तं जोइभूयं च सततावसेज्जा[18,19] जे पाउकुज्जा अणुवीइ धम्मं ।

२० अत्ताण[20] जो जाणइ जो य लोगं 'जो आगतिं[21] जाणइऽणागतिं च।
जो सासयं जाण[22] असासयं च जातिं[23] मरणं च चयणोववातं[24] ॥

---

१ जे रक्खसाया जमलोइया य (क, ख, वृ)।
२ या सुरा (वृ)।
३. जे (ख, वृ), य (चू)।
४ °समेंति (चू)।
५ °गहणं (चू)।
६ °गणासु (चू)।
७ वीरा (वृ)।
८ लोभ-मयादतीता (वृपा)।
९ व्या० वि०—मकार अलाक्षणिक।
१० तीवमुप्पण्ण° (क), तीयमुप्पण्ण° (ख)।
११. मण्णेसि (चू)।
१२ °संकाति (क)।
१३ विदित्तु (चू, वृ), विण्णत्ति (चूपा, वृपा)।
१४ उव्वेहती (ख, वृ)।
१५ व्या० वि०—द्विपदयो सन्धि.—वुद्धे+अप्पमत्तेसु। वुद्धे+पमत्तेसु।
१६ वुद्धेऽप्पमत्ते सुपरिव्वएज्जा (चूपा)।
१७ या (ख, चू)।
१८ व्या० वि०—द्विपदयो सन्धि—सतत+आवसेज्जा।
१९ सतावसेज्जा (क, ख)।
२० आताणं (चू), व्या० वि०—अत्ताणं।
२१. गइं च जो (क, ख)।
२२ जाणइ(ख), व्या०वि०—अत्र इकारलोप—जाणइ।
२३ जाती (क, ख)।
२४ जणोववायं (क, ख), °पवादं (चू)।

२१ अहो वि सत्ताण विउट्टण च जो आसव जाणति सवर च ।
दुक्ख च जो जाणइ णिज्जर च[1] 'सो भासिउमरिहति'[2] किरियवाद ॥
२२ सद्देसु रूवेसु असज्जमाणे[3] 'रसेसु गधेसु'[4] अदुस्समाणे ।
णो जीविय णो मरणाभिकखे[5] आयाणगुत्ते 'वलया विमुक्के'[6] ॥
—त्ति बेमि ॥

---

१ वा (चू) ।
२. आइक्खितु मरिहति सो (चूपा) ।
३ अमुच्छमाणो (चू) ।
४ गधेसु रसेसु (क, ख), रसेहि गवेहि (चू) ।
५ मरणाहिकखी (क, ख), मरण विपत्थए (चू), व्या० वि०—द्विपदयो सन्धि—मरण +अभिकखे ।
६ माया विमुक्कि (चूपा) ।

तेरसमं अज्झयणं

आहत्तहीयं

उक्खेव-पदं

१. आहत्तहीयं[1] तु पवेयइस्सं[2] णाणप्पगारं पुरिसस्स जातं :
सतो य धम्मं असतो य सीलं संतिं असंतिं करिस्सामि पाउं ॥

सिस्स-दोस-गुण-पदं

२ अहो य रातो य समुट्ठितेहिं तहागतेहिं पडिलब्भ[3] धम्मं ।
समाहिमाघातमजोसयंता[4] सत्थारमेवं[5] फरुसं वयंति ॥
३ विसोहियं ते[6] अणुकाहयंते जे या ऽऽतभावेण[7] वियागरेज्जा[8] ।
अट्ठाणिए 'होइ बहूगुणाणं'[9] जे णाणसंकाए[10] मुसं वदेज्जा[11] ॥
४. जे यावि[12] पुट्ठा पलिउंचयंति आदाणमट्ठं[13] खलु वंचयंति ।
असाहुणो ते इह साहुमाणी मायण्णिएहिंति[14] अणंतघातं ॥

---

१ °धिज्जं (चू) ।
२. पवेइयस्सं (ख) ।
३. °लभ (चू) ।
४. °मभूसयंता (चू) ।
५ °मेव (चू) ।
६ वा (चू) ।
७ आत° (चू) ।
८ वियागरेंति (चू) ।
९. होति बहूणिवेसे (चूपा, वृपा), व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम् ।
१० °संकाइ (क) ।
११ वदंति (चू) ।
१२ आवि (चू) ।
१३ आताण° (क) ।
१४ °एसिंति (क, ख), °एसति (क्व) व्या० वि०—द्विपदयोः सन्धि.—मायण्णिआ+एहिंति ।

५ जे कोहणे होइ जगट्ठभासी[1] विओसित 'जे य'[2] उदीरएज्जा।
अद्धे[3] व से दडपह गहाय अविओसिते घासति[4] पावकम्मी॥
६ 'जे विग्गहिए अ णायभासी'[5] ण से समे होइ अझझपत्ते।
ओवायकारी य हिरीमणे[6] य एगतदिट्ठी[7] य अमाइरूवे[8]॥
७ से पेसले सुहुमे पुरिसजाते जच्चण्णिते चेव सुउज्जुयारे[9]।
वहु पि अणुसासिए जे तहच्ची[10] समे हु से होइ अझझपत्ते॥
८ जे यावि अप्प वसुम[11] ति मता सखाय वाय अपरिच्छ[12] कुज्जा।
तवेण वाह अहिए[13] ति मता[14] अण्ण जण पस्सति[15] बिबभूत[16]॥
९ एगतकूडेण तु[17] से पलेइ ण विज्जई मोणपदसि गोते[18]।
जे माणणट्ठेण विउक्कसेज्जा वसुमण्णतरेण[19] अबुज्झमाणे॥

मद-परिहार-पद

१० जे माहणे 'खत्तिए जाइए'[20] वा तहुग्गपुत्ते[21] तह लेच्छवी[22] वा।
जे पव्वइए[23] परदत्तभोई 'गोतेण जे थब्भति माणवद्धे'[24]॥
११ ण तस्स जाती व कुल व ताण णण्णत्थ विज्जाचरण सुचिण्ण।
णिक्खम्म से सेवइऽगारिकम्म[25] ण से पारए[26] होति विमोयणाए[27]॥

---

१ जगतट्ठ० (चू), जयट्ठ० (क, चूपा, वृपा)।
२ वा पुणो (चू, वृ)।
३ अधे (क, ख, वृ)।
४ घासति (क्व), घृष्यते (वृ)।
५ जे विग्गहीए अन्नायभासी (क, ख, वृ), जे कोहणे होति उ णायभासी (चूपा), ०अन्नाणभासी (क्व)। अत्र 'अ नायभासी' इत्यस्य रूपान्तर 'अन्नायभासी' इति जातम्, सभवतो लिपिदोषेणैव विपर्ययो जात। व्या० वि०—णातिभासी।
६ हिरीमते (चू)।
७ एगतसड्ढी (वृपा)।
८ अमायरूवी (चू)।
९ स उज्जुकारी (चू), सुउज्जुचारे (वृपा)।
१० तहच्चा (क, ख, वृ)।
११ वुसिम (चू)।
१२ अपरिक्ख (चू)।
१३ सहिते त्ति (क, वृ), सहिज त्ति (ख)।
१४ मत्ता (क्व), णच्चा (चू)।
१५ पासइ (ख)।
१६ चिंघभूत (चूपा)।
१७ य (क)।
१८ गुत्ते (क), गोत्ते (ख)।
१९. वसु पण्णऽण्णतरेण (चू)।
२० जातिए खत्तिए (क), खत्तिय जायए (ख)
२१ तह उग्गपुत्ते (क, ख)।
२२ लेच्छइए (क), लेच्छई (ख, वृ)।
२३ पव्वईए (चू)।
२४ गोत्तेण० (क, ख), गोत्ते ण जे थभभिमाण-बद्धे (वृ)।
२५ ०ऽगारिअग (वृ), ०ऽगारिकम्म (वृपा)।
२६ पारगो (वृ), पारके (चू)।
२७. विमोक्ख० (चू)।

१२ णिक्किचणे[1] 'भिक्खु[2] सुलूहजीवी'[3] जे गारव[4] होइ सिलोगगामी[5]।
आजीवमेय तु अबुज्झमाणो पुणो-पुणो विप्परियासुवेति ॥

१३ जे भासव भिक्खु[6] सुसाहुवादी पडिहाणव[7] होइ विसारए य।
आगाढपण्णे 'सुय-भावियप्पा'[8] अण्ण जण पण्णसा[9] परिहवेज्जा ॥

१४ एव ण से होति समाहिपत्ते जे पण्णसा[10] भिक्खु[11] विउक्कसेज्जा[12]।
अहवा वि जे लाभमदावलित्ते[13] अण्ण जण खिसति बालपण्णे ॥

१५ पण्णामद चेव तवोमद च णिण्णामए[14] गोयमद च भिक्खू।
आजीवग चेव चउत्थमाहु से पडिए उत्तमपोग्गले से ॥

१६ एयाइ मदाइ विगिंच 'धीरा णेताणि सेवति'[15] सुधीरधम्मा।
ते सव्वगोतावगता[16] महेसी उच्च अगोत[17] च गतिं वयति[18] ॥

अणाणुगिद्ध-पद

१७ भिक्खू मुतच्चे[19] तह[20] दिट्ठधम्मे 'गाम व णगर व'[21] अणुप्पविस्सा।
से एसण जाणमणेसण च 'जो अण्णपाणे य'[22] अणाणुगिद्धे ॥

धम्म-वागरण-विवेग-पद

१८. अरतिं रतिं च अभिभूय भिक्खू बहुजणे वा तह एगचारी।
एगतमोणेण वियागरेज्जा एगस्स जतो गतिरागती य ॥

---

१ निगिणेविया (चू)।
२ व्या० वि०—भिक्खू।
३ भिक्खू सलूह° (क)।
४ व्या० वि०—अत्र वर्णलोप—गारवव।
५ चूर्णौ नासौ शब्दो व्याख्यातोस्ति।
६ व्या० वि०—भिक्खू।
७ पणिधाणव (चू), पडिमाणव (चूपा)।
८ सुवि० (ख, वृ)।
९ पण्णया (ख)।
१० पण्णव (ख)।
११ व्या० वि०—भिक्खू।
१२ °सेति (चू)।
१३ लाभमदेण मत्ते (चू), जातिमदेण मत्तो (चूपा)।
१४ तन्नामए (क)।
१५ धीरे ण ताणि सेवेज्ज (क, चू)।
१६ °गोत्तावगया (क)।
१७ अगोत्त (क)।
१८ उवेंति (ख)।
१९ सुयच्चा (क), मुयच्चा (ख)।
२० कइ (चू)।
२१ गाम च णगर च (क, ख), गामे व णगरे व (चू)।
२२ अण्णस्स पाणस्स (क, ख, वृ)।

१६ सय समेच्चा अदुवा वि सोच्चा भासेज्ज धम्म हितय पयाण ।
जे गरहिता सणिदाणप्पओगा णताणि[1] सेवति सुधीरधम्मा ॥

२० केसिचि तक्काए[2] अवुज्झ भाव खुद्द[3] पि गच्छेज्ज असद्दहाणे[4] ।
आउस्स कालातियार वघात[5] लद्धाणुमाणे य[6] परेसु अट्ठे ॥

२१ कम्म च छद च विगिंच[7] धीरे[8] विणएज्ज तु[9] सव्वतो[10] आतभाव[11] ।
रूवेहि लुप्पति भयावहेहि[11] विज्ज गहाय[12] तसथावरेहि ॥

२२ ण पूयण चेव सिलोय[13] कामे[14] पियमप्पिय कस्सइ[15] णो करेज्जा[16] ।
सव्वे अणट्ठे परिवज्जयते अणाइले[17] या अकसाइ[18,19] भिक्खू ॥

निक्खेव-पद

२३ 'आहत्तहीय समुपेहमाणे'[20] सव्वेहि पाणेहि णिहाय[21] दड ।
णो जीविय णो मरणाहिकखे[22] 'परिव्वएज्जा वलया विमुक्के'[23] ॥
—त्ति बेमि ॥

---

१. णेताणि (क, ख) ।
२ तक्काइ (क) ।
३ खुड्ड (क) ।
४ अवुज्झमाणे (चू) ।
५ वघाते (क) ।
६ तु (चू) ।
७ विविंच (क) ।
८ ओ (क, ख) ।
९ सुव्वते (क) ।
१० पाव° (वृ), आय° (वृपा) ।
११ भयारएहि (क) ।
१२ गहाया (चू) ।
१३ व्या० वि०—सिलोय ।
१४ गामी (क), कामी (ख) ।
१५ कस्सति (क, चू) ।
१६ कहेज्जा (चू) ।
१७ अणाउले (क, ख, वृ) ।
१८ व्या० वि०—अकसाई ।
१९ अकसाय (क, ख) ।
२० आहत्तधिज्ज समुपेधमाणे (चू) ।
२१ विहाय (क), णिक्खिप्प (चू), 'णिहाय' अस्य सस्कृतरूप 'निहाय' इति युज्यते । 'निधाय' इत्यस्य 'परित्यज्य' इत्यर्थ कथ स्यात् ?
२२ °कखी (क, ख, वृ, चू) ।
२३ चरेज्ज मेधावी वलय-विप्पमुक्के (वृ), चरेज्ज मेधावी वलया विमुक्के (चू) ।

चउद्दसमं अज्झयणं

गंथो

बंभचेरवासे गथसिक्खा-पद

१. गथ विहाय[1] इह[2] सिक्खमाणो उट्ठाय[3] सुवभचेर वसेज्जा ।
ओवायकारी विणय सुसिक्खे जे छेए[4] से विप्पमाद ण कुज्जा ॥

२ जहा दिया-पोतमपत्तजात्त सावासगा[5] पवितु मण्णमाण ।
तमचाइयं तरुणमपत्तजाय[6] ढकादि अव्वत्तगम हरेज्जा ॥

३ एव तु 'सिक्खे वि अपुट्ठधम्मे णिस्सार वुसिम मण्णमाणो'[7] ।
दियस्स छाव व अपत्तजात हरिसु ण पावधम्मा अणेगे ॥

४ ओसाणमिच्छे मणुए समाहि अणोसिते णतकरे[8] ति णच्चा ।
ओभासमाणे दवियस्स वित्त ण णिक्कमे वहिया आसुपण्णो ॥

५ जे[9] ठाणओ[10] या[11] सयणासणे या[12] परक्कमे यावि सुसाहुजुत्ते ।
समितीसु गुत्तीसु य आयपण्णे[13] वियागरेंते[14] य पुढो वएज्जा ॥

---

१ विधाय (चू) ।
२ इति (चूपा) ।
३ उत्थाय (चू) ।
४ छेगे (चू) ।
५ सवा० (चू) ।
६ °मपक्खग वा (चू) ।
७ सेह पि अपुट्ठधम्म, णिस्सारिय वुसिम मन्नमाणा । (क, ख, वृ), °णिस्सार° (वृपा) ।
८ व्या० वि०—ण+अतकरे ।
९ चूर्णौ 'सद्दाणि सोच्चा' अय पचम श्लोक, 'जे ठाणओ या' असौ षष्ठ श्लोको वर्तते ।
१० ठाणए (चू) ।
११ य (ख), व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम् ।
१२ य (ख) ।
१३ आसुपण्णे (क) ।
१४ °रेति (चू) ।

६ सद्दाणि सोच्चा अदु भेरवाणि अणासवे[1] तेसु परिव्वएज्जा ।
णिद्द च भिक्खू ण 'पमाय[2] कुज्जा'[3] कह कह वी[4] वितिगिच्छ[5] तिण्णे ॥

बंभचेरवासे अणुसिट्ठि-सहण-पदं

७ डहरेण वुड्ढेण ऽणुमासिते तु[6] रातिणिएणाऽवि[7] समव्वएण ।
सम्म तयं[8] थिरतो णाभिगच्छ णिज्जतए वावि अपारए[9] से ॥
८ विउट्ठितेण समयाणुसिट्ठे डहरेण वुड्ढेण 'ऽणुसासिते तु'[10] ।
अब्भुट्ठिताए[11] घडदासिए[12] वा अगारिण[13] वा समयाणुसिट्ठे ॥
९ ण तेसु कुज्झे[14] ण य पव्वहेज्जा ण यावि किंची फरुस वदेज्जा ।
तहा करिस्स ति पडिस्सुणेज्जा[15] सेय खु मेय ण पमाद[16] कुज्जा ॥
१० वणसि मूढस्स जहा अमूढा[17] मग्गाणुसासति[18] हित पयाण ।
'तेणा वि'[19] मज्झ इणमेव सेय ज मे वुधा सम्मऽणुसासयति[20] ॥
११ 'अह तेण'[21] मूढेण अमूढगस्स कायव्व[22] पूया सविसेसजुत्ता ।
एतोवम[23] तत्थ उदाहु वीरे[24] अणुगम्म 'अत्थ उवणेइ'[25] सम्म ॥

बंभचेरवास-फल-पद

१२ णेता जहा अधकारसि राओ मग्ग ण जाणाति अपस्समाणे[26] ।
से सुरियस्सा[27] अब्भुग्गमेण मग्ग वियाणाति पगासितसि ॥

---

१ अणासए (चू) ।
२ व्या० वि०—पमाय ।
३ पमायएज्जा (चू) ।
४ वा (चू), व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम् ।
५ वितिगिछ (क, ख), व्या० वि०—वितिगिच्छ ।
६ ऊ (क) ।
७ ०ण वा (वृ) ।
८ तग (चू) ।
९ ०सट्ठे (वृ) ।
१० व चोइते उ (क), उ चोइते य (ख) ।
११ अब्भुट्ठिताए (वृ) ।
१२ व्या० वि० - छन्दोदृष्ट्या ह्रस्वत्वम् ।
१३ ०रिणा (क) ।
१४ कुप्पे (चू) ।
१५ ०णेत्ता (चू) ।
१६ व्या० वि०—पमाद ।
१७ अमूढे (चू) ।
१८ व्या० वि०—द्विपदयो सन्धि—मग्ग + अणुसासति ।
१९ तेणेव (क, च) ।
२० समणु० (क), व्या० वि०—द्विपदयो सन्धि—सम्म + अणुसासयति ।
२१ तेणावि (चू) ।
२२ व्या० वि० - कायव्वा ।
२३ एवोवम (क) ।
२४ धीरे (चू) ।
२५ अट्ठ उवर्णेति (चू) ।
२६ अपासमाणे (चू) ।
२७ सूरियस्स (ख, चू), व्या० वि०—छन्दोदृष्ट्या दीर्घत्वम् ।

१३ एव तु सेहे वि अपुट्ठधम्मे धम्म ण जाणाति अवुज्झमाणे।
से कोविए[1] जिणवयणेण पच्छा सूरोदए पासइ चक्खुणेव ॥
१४ उड्ढ अहे य[2] तिरिय[3] दिसासु 'तसा य जे थावर[4] जे य[5] पाणा।
'सया जए तेसु परिव्वएज्जा'[6] मणप्पओस अविकपमाणे ॥
१५ कालेण पुच्छे समिय[7] पयासु आइक्खमाणो दवियस्स वित्त।
त सोयकारी य[8] पुढो पवेसे सखाइम[9] केवलिय समाहिं ॥
१६ अस्सि सुठिच्चा तिविहेण तायी एएसु या सति[10] णिरोधमाहु[11]।
ते एवमक्खति तिलोगदसी ण भुज्जमेत[12] ति पमायसग ॥
१७ णिसम्म से भिक्खु[13] समीहमट्ठ[14] पडिभाणव होति 'विसारदे य'[15]।
आदाणमट्ठी[16] वोदाण-मोण उवेच्च 'सुद्धेण उवेइ मोक्ख'[17] ॥

वभचेरवासे लद्धगथस्स कायव्व-पद

१८ सखाए[18] धम्म च वियागरति वुद्धा हु ते अतकरा भवति।
ते पारगा दोण्ह विमोयणाए ससोधिय[19] पण्हमुदाहरति ॥
१९ 'णो छादए णो वि य लूसएज्जा'[20] माण ण सेवेज्ज 'पगासण च'[21]।
ण यावि पण्णे परिहास[22] कुज्जा 'ण याऽऽसिसावाद[23] वियागरेज्जा[24] ॥
२० भूयाभिसकाए[25] दुगुछमाणे ण णिव्वहे मतपएण गोय[26]।
ण किंचिमिच्छे[27] मणुए पयासु असाहुधम्माणि ण सवएज्जा[28] ॥

---

१ कोवितो (चू)।
२ हस्तलिखितवृत्तौ—य।
३ तिरिया (चू)।
४ व्या० वि०—थावरा।
५ जे थावरा जे य तसा य (चू)।
६ सदा जतो तसि परक्कमतो (चू)।
७ समित (क)।
८ × (क)।
९ सव्वाणिम (चू)।
१० व्या० वि०—सती।
११ निरोह° (क, ख)।
१२ भूय एत (चू)।
१३ व्या० वि०—भिक्खू।
१४ समीहियट्ठ (ख,वृ), व्या० वि०—समीक्ष्य—मकार अलाक्षणिक।
१५ विसारतेता (क)।
१६ आयाणअट्ठी (ख), व्या० वि०—मकार अलाक्षणिक।
१७ सुद्धे ण उवेति मार (चू, वृपा)।
१८ सखाय (क, चूपा)।
१९ समोहिया (चू, वृपा)।
२० णो छादएज्जा ण य लूसिता वा (चू)।
२१ पगासए वा (चू)।
२२ व्या० वि०—परिहास।
२३ ण यासियावाय (ख), व्या० वि०—आसिसावाद।
२४ वियाकरेज्जा (चू)।
२५ °सकाइ (क, ख)।
२६ गुत्त (क)।
२७ किंत्ति° (चू)।
२८ सठवेज्जा (चू), सघएज्जा (चूपा)।

२१ हास पि णो सघए[1] पावधम्मे[2] ओए तहिय[3] फरुस वियाणे[4]।
णो तुच्छए णो य[5] विकत्थएज्जा[6] अणाइले[7] या 'अकसाइ[8] भिक्खू[9] ॥
२२ सकेज्ज 'या ऽसकितभाव'[10] भिक्खू विभज्जवाय च वियागरेज्जा[11]।
भासादुग धम्मसमुट्ठितेहिं[12] वियागरेज्जा समयाऽसुपण्णे[13] ॥
२३ अणुगच्छमाणे वितह ऽभिजाणे[14], तहा तहा साहु[15] अकक्कसेण।
ण कत्थई[16] भास[17] विहिंसएज्जा णिरुद्धग वावि ण दीहएज्जा ॥
२४ समालवेज्जा पडिपुण्णभासी णिसामिया[18] समियाअट्ठदसी[19]।
आणाए सिद्ध[20] वयण भिजुजे[21] अभिसधए[22] पावविवेग[23] भिक्खू ॥
२५ अहावुइयाइ सुसिक्खएज्जा 'जएज्ज या'[24] णाइवेल वएज्जा।
से दिट्ठिम दिट्ठि[25] ण लूसएज्जा से जाणइ भासिउ त समाहि ॥
२६ अलूसए णो पच्छण्णभासी 'णो सुत्तमत्थ च करेज्ज अण्ण'[26]।
सत्थारभत्ती अणुवीचि[27] वाय सुय[28] च 'सम्म पडिवादएज्जा'[29] ॥
२७ से सुद्धसुत्ते उवहाणव च धम्म च जे विदति तत्थ तत्थ[30]।
आएज्जवक्के कुसले वियत्ते से अरिहइ भासिउ त समाहि ॥

—ति वेमि ॥

---

१ सघइ (ख)।
२ °धम्म (चू)।
३ तहित (क), तहीय (चू)।
४ ऽभिजाणे (चू)।
५ व (क)।
६ पकत्यएज्जा (चू), त्रिकथएज्जा (क, ख, चूपा, वृपा), पकथएज्जा (चूपा)।
७ अणाउले (ख)।
८ अकमाए (वृ), व्या० वि०—अकसाई।
९ अविरुद्धसेवी (चू)।
१० वोसकितभाव (चू), व्या० वि०—अस कितभावे।
११ वितागरिज्जा (क), वियाकरेज्जा (चू)।
१२ वम्ममुव° (ख), सम्मसमु° (चू)।
१३ समया सुपण्णे (वृ)।
१४ तिजाणे (क), विजाणे (ख)।
१५ व्या० वि०—साहू।
१६ कुव्वइ (क), कत्थई (ख)।
१७ व्या० वि०—भास।
१८ णिसामिय (चू)।
१९ मम्मिया° (क)।
२० सुद्ध (क, ख)।
२१ भिउजे (क, ख)।
२२ कवेज्ज या (चू)।
२३ व्या० वि०—पावविवेग।
२४ जएज्जसु (चू)।
२५ व्या० वि०—दिट्ठि।
२६ °करेज्ज ताती (क, ख), णो सुत्तमण्ण च करेज्ज ताई (वृ), णो सुत्तमत्थ° (चू, वृपा)।
२७ °वीति (क)।
२८ सोउ (चू)।
२९ धम्म पडिवाययति (ख)।
३० तत्था (क)।

पण्णरसमं अज्झयणं

जमईए

अणेलिस-पद

१ जमतीतं पडुप्पण्णं आगमिस्सं च णायओ[1]।
सव्वं मण्णति 'तं ताई'[2] दंसणावरणंतए ॥

२ अंतए वितिगिच्छाए[3] से जाणइ[4] अणेलिसं।
अणेलिसस्स अक्खाया ण से होइ तहिं तहिं ॥

३ तहिं तहिं सुयक्खायं से य सच्चे सुआहिए[5]।
सदा सच्चेण संपण्णे मेत्तिं भूतेसु[6] कप्पए ॥

४ भूतेसु[7] ण विरुज्झेज्जा एस धम्मे वुसीमओ।
वुसीमं[8] जगं परिण्णाय[9] अस्सिं जीवियभावणा ॥

५ भावणाजोगसुद्धप्पा जले णावा व आहिया।
णावा व तीरसंपण्णा[10] सव्वदुक्खा तिउट्टति ॥

६ तिउट्टती[11] उ मेहावी जाणं लोगंसि[12] पावगं।
तुट्टंति[13] पावकम्माणि णवं कम्ममकुव्वओ ॥

---

१ नातओ (क), जाणति (चू)।
२ मेधावी (चू)।
३ °गिछाए (क)।
४ सजाणति (चू)।
५ अणेलिसो (चू)।
६. भूतेहिं (क)।
७ भूतेहिं (क)।
८ वुसिमं (क), साहू (ख)।
९ परिण्णाए (चू)।
१० °संपत्ता (ख)।
११ अतिउट्टती (चू)।
१२ लोगस्स (चू)।
१३ खिज्जति (चू), अतिवट्टति (चूपा)।

७ अकुव्वओ णव णत्थि कम्मं णाम विजाणतो[1]।
णच्चाण[2] से महावीरे जे ण जाई[3] ण मिज्जती[4]॥
८ ण मिज्जती[5] महावीरे जस्स णत्थि पुरेकडं[6]।
'वाऊ व'[7] जालमच्चेइ[8] 'पिया लोगंसि'[9] इत्थिओ॥
९ इत्थिओ जे ण सेवंति आदिमोक्खा हु ते जणा।
ते जणा बंधणुम्मुक्का णावकंखंति जीवितं॥
१० 'जीवितं पिट्ठओ'[10] किच्चा अंतं पावंति कम्मुणं[11]।
कम्मुणा संमुहीभूता[12] जे मग्गमणुसासति॥
११ 'अणुसासणं पुढो पाणी वसुमं पूयणासते।
अणासते जते दंते'[13] दढे आरतमेहुणे॥
१२ 'णीवारे व ण लीएज्जा'[14] छिण्णसोते अणाइले[15]।
अणाइले सदा दंते संधिं पत्ते अणेलिसं॥
१३ अणेलिसस्स खेयण्णे[16] ण विरुज्झेज्ज केणइ[17]।
मणसा वयसा चेव कायसा चेव चक्खुमं[18]॥
१४ 'से हु चक्खू मणुस्साणं जे कंखाए य अंतए'[19]।
अंतेण खुरो वहती चक्कं अंतेण लोट्टति[20]॥
१५ अंताणि धीरा सेवंति तेण अंतकरा इहं।
इहं माणुस्सए ठाणे धम्ममाराहिउं[21] णरा॥

---

१ विजाणति (ख, वृ)।
२ विन्नाय (ख, वृ)।
३ ०ग्रा० वि०—जायइ=जाई।
४ भिज्जति (क), मज्जती (चू)।
५ मज्जते (चू), भिज्जति (वृपा)।
६ परेरयो (चू)।
७ वाउ व्व (ख)।
८ जालं अचेति (चू)।
९ पियो लोगस्स (चू)।
१० अतीतं पिच्छतो (चू)।
११ कम्मुणा (क, ख, वृपा)।
१२ समुहब्भूतो (चू)।
१३ अणुसासति पुढो पाणे, वुसिमं पूयणाऽऽसमति। अणासए सदा दंते (चू), ०अणासवे सदा दंते (चूपा)।
१४ णीवारे य० (क), णीयारे व ण लिज्जेजा (चूपा)।
१५ अणाविले (ख), अणाउले (चूपा, वृपा)।
१६ खेतण्णे (चू)।
१७ केणगि (चू)।
१८ अंतए (चू)।
१९ ०जं कंखाउ अंतए (क), से चक्खु लोगंसिध, जं कंखाय करेति अंतगं (चू)।
२० लोट्ठति (क्व)।
२१ ०माराहगा (चू)।

१६ णिट्ठितट्ठा व देवा व उत्तरीए त्ति 'मे सुत'[1]।
सुत च मेतमेगेसिं अमणुस्सेसु णो तहा ॥
१७ अत करेति दुक्खाण इहमेगेसि आहित।
आघात पुण एगेसिं दुल्लभेऽय समुस्सए ॥
१८ इतो विद्धसमाणस्स पुणो 'सवोहि[2] दुल्लभा'[3]।
'दुल्लभाओ तहच्चाओ जे धम्मट्ठ वियागरे'[4] ॥
१९ जे धम्म सुद्धमक्खति पडिपुण्णमणेलिस ।
अणेलिसस्स ज ठाण तस्स जम्मकहा कुतो[5] ? ॥
२० कुतो कयाइ[6] मेहावी उप्पज्जति तथागता[7] ?।
तथागता[8] अपडिण्णा चक्खू लोगस्सणुत्तरा[9] ॥
२१ अणुत्तरे य ठाणे से कासवेण पवेदिते।
ज किच्चा णिव्वुडा[10] एगे णिट्ठ पावेति पडिया ॥
२२ पडिए वीरिय लद्ध णिग्घायाय पवत्तग[11]।
धुणे पुव्वकड[12] कम्म णव चावि ण कुव्वइ ॥
२३ ण कुव्वइ महावीरे अणुपुव्वकड रय।
रयसा समुहीभूते[13] कम्म हेच्चाण ज मत ॥
२४ ज मत सव्वसाहूण त 'मत सल्लगत्तण'[14]।
साहइत्ताण त तिण्णा देवा वा अभविंसु ते ॥
२५ अभविंसु पुरा वीरा[15] आगमिस्सा वि सुव्वया।
दुण्णिवोहस्स मग्गस्स अत पाउकरा तिण्ण[16] ॥

—त्ति वेमि ॥

---

१ इम सुत (क, ख)।
२ व्या० वि०—सवोही।
३ वोही सुदुल्लहा (वृ)।
४ दुल्लभा य तधच्चा जे, धम्मट्ठी विदितपराऽपरा (चू)।
५ कओ (ख)।
६ कताइ (क), कदायि (चू)।
७ तहागया (क, ख)।
८ तथागता य (चू)।
९ ०त्तर (क), अत्तस्स० (चू)।
१० णिव्वुता (चू)।
११ पव्वत्तए (चू)।
१२ ०कत (चू)।
१३ ०भूता (ख, चू)।
१४ मद सल्लकत्तण (क), सम्मुहुब्भुता (चूपा)।
१५ धीरा (क, ख)।
१६ तिण्णे (ख)।

सोलसमं अज्झयणं

गाहा

उक्खेव-पद

१ अहाह भगवं—एवं से दंते दविए वोसट्ठकाए त्ति वच्चे[1]—माहणे त्ति[2] वा, समणे त्ति वा, भिक्खू त्ति वा, णिग्गंथे त्ति वा ।।

२ पडिआह[3]—भंते ! कहं[4] दंते दविए वोसट्ठकाए त्ति वच्चे—माहणे त्ति वा ? समणे त्ति वा ? भिक्खू त्ति वा ? णिग्गंथे त्ति वा ? तं 'णो बूहि'[5] महामुणी ।

माहण-पद

३ इतिविरतसव्वपावकम्मे[6] पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुण्ण-परपरिवाद-अरतिरति-मायामोस-'मिच्छादंसणसल्ले विरते'[7] समिए सहिए सया जए, णो कुज्झे णो माणी "माहणे" त्ति वच्चे ।।

समण-पद

४ एत्थ वि समणे अणिस्सिए अणिदाणे आदाणं च अतिवायं च 'मुसावायं च'[8] वहिद्धं च कोहं च माणं च मायं च लोहं च पेज्जं च दोसं च—इच्चेव 'जतो-जतो'[9] आदाणाओ[10] अप्पणो पद्दोसहेऊ[11] 'ततो-ततो'[12] आदाणाओ पुव्वं पडिविरते सिआ[13] दंते दविए वोसट्ठकाए "समणे" त्ति वच्चे ।।

---

१ वुच्चे (क, ख) ।
२ इ (क) सर्वत्र ।
३ ०आहु (चू) ।
४. कह नु (ख) ।
५ णे० (क, ख), ०ब्रूहि (चू) ।
६ विरए सव्वपावकम्मेहिं (ख) ।
७ ०सल्लविरते (ख, वृ) ।
८ ×(चू) ।
९ जातो जातो (चू) ।
१० आदाणतो (क) ।
११ ०हेतु (क) ।
१२ तातो तातो (चू) ।
१३ पाणाइवायाओ (क, ख), भवति (चू) ।

भिक्खु-पद

५ एत्थ वि भिक्खू 'अणुण्णते णावणते'[1] दते दविए[2] वोसटुकाए सविधुणीय विरूव-रूवे परीसहोवसग्गे अज्झप्पजोगसुद्धादाणे उवट्ठिए ठिअप्पा सखाए परदत्तभोई "भिक्खू" त्ति वच्चे ॥

णिग्गंथ-पद

६ एत्थ वि णिग्गथे एगे एगविदू[3] वुद्धे सछिण्णसोए[4] सुसजए सुसमिए सुसामाइए आतप्पवादपत्ते[5] विऊ दुहओ वि सोयपलिछिण्णे[6] णो पूयासक्कारलाभट्ठी[7] धम्मट्ठी धम्मविऊ णियागपडिवण्णे समियं[8] चरे दते दविए वोसट्ठकाए "णिग्गथे" त्ति वच्चे[9] । 'से एवमेव जाणह जमहं भयतारो'[10] ।

- त्ति बेमि ॥

ग्रन्थ परिमाण
कुल अक्षर २४३१७
अनुष्टुप् श्लोक ७५९ अक्षर २९

---

१ अणुण्णते विणीए नामए (क, ख), अणुण्णत्ते नामए (वृ), अणुण्णए नावणए महेसी (उत्तरज्झयण २१।२०), अणुन्नए नावणए (दसवेआलिय ५।१।१३) ।
२ शुद्धात्मा शुद्धद्रव्यभूत (वृ) ।
३ एगतिए विदू (चूपा), एगतविदू (वृपा) ।
४ छिन्नसोते (चू) ।
५ आयवायपत्ते (वृ) ।
६ सोतपलिच्छण्णे (चू) ।
७ पूयणट्ठी (चू) ।
८ समय (वृ) ।
९ विज्ज (चू) ।
१० सेवमायाणधमयतारो (चू) ।

बीओ सुयक्खंधो

पढमं अज्झयणं

पोंडरीए

पउमवरपोंडरीय-पदं

१ सुयं मे आउसं ! तेणं[1] भगवया एवमक्खायं—इह[2] खलु पोंडरीए णामज्झयणे । तस्स णं अयमट्ठे पण्णत्ते—से जहाणामए पोक्खरणी[3] सिया बहुउदगा[4] बहुसेया बहुपुक्खला[5] लद्धट्ठा पोंडरीकिणी[6] पासादिया[7] दरिसणीया[8] अभिरूवा पडिरूवा ॥

२ तीसे णं पोक्खरणीए तत्थ-तत्थ देसे-देसे तहिं-तहिं बहवे पउमवरपोंडरीया बुइया—अणुपुव्वट्ठिया[9] ऊसिया[10] रुइला वण्णमंता गंधमंता रसमंता फासमंता 'पासादिया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा'[11] ॥

३ तीसे णं पोक्खरणीए बहुमज्झदेसभाए एगे महं पउमवरपोंडरीए[12] बुइए—अणुपुव्वट्ठिए ऊसिए रुइले वण्णमंते गंधमंते रसमंते फासमंते पासादिए[13] °दरिसणीए अभिरूवे° पडिरूवे ॥

४ सव्वावंति च णं तीसे पोक्खरणीए तत्थ-तत्थ देसे-देसे तहिं-तहिं बहवे पउमवरपोंडरीया बुइया—अणुपुव्वट्ठिया ऊसिया रुइला[14] °वण्णमंता गंधमंता रसमंता फासमंता पासादिया दरिसणीया अभिरूवा° पडिरूवा ॥

---

१ तेण (चू) ।
२ इह (चू) ।
३ पुक्खरिणी (क, ख) ।
४ बहूदगा (चू) ।
५ × (चू) ।
६. पोंडरिगिणी (क, ख), पोंडरीगिणी (चू) ।
७ पासादीया (ख, वृपा) ।
८ दरिसणिज्जा (चू) ।
९ °पुव्वु° (क) ।
१० उस्सिता (चू) ।
११ जाव पडिरूवा (क) ।
१२ पउमे (चू) ।
१३ स० पा०—पासादिए जाव पडिरूवे ।
१४ स० पा०—रुइला जाव पडिरूवा ।

५ सव्वावंति च णं तीसे पोक्खरणीए बहुमज्झदेसभाए एगे महं पउमवरपोंडरीए बुइए—अणुपुव्वट्ठिए' •ऊसिए रुइले वण्णमंते गंधमंते रसमंते फासमंते पासादिए दरिसणीए अभिरूवे॰ पडिरूवे ॥

पढम-पुरिसजात-पदं

६ अह पुरिसे पुरत्थिमाओ दिसाओ आगम्म तं पुक्खरणिं', तीसे पुक्खरणीए तीरे ठिच्चा पासति तं महं एगं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वट्ठियं ऊसियं' •रुइलं वण्णमंतं गंधमंतं रसमंतं फासमंतं पासादियं दरिसणीयं अभिरूवं॰ पडिरूवं ।
तए णं से पुरिसे एवं वयासी—अहमंसि' पुरिसे 'देसकालण्णे खेत्तण्णे कुसले पंडिते विअत्ते मेधावी अबाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे परक्कमण्णू''। अहमेतं पउमवरपोंडरीयं 'उण्णिक्खिस्सामि त्ति वच्चा'' से पुरिसे अभिक्कमे तं पुक्खरणिं । जाव-जावं च णं अभिक्कमेइ ताव-तावं च णं महंते उदए महंते सेए पहीणे तीरं, अपत्ते पउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए 'णो पाराए, अंतरा पोक्खरणीए सेयंसि विसण्णे—पढमे पुरिसजाते' ॥

दोच्च-पुरिसजात-पदं

७ अहावरे दोच्चे पुरिसजाते'—अह पुरिसे दक्खिणाओ दिसाओ आगम्म तं पुक्खरणिं, तीसे पुक्खरणीए तीरे ठिच्चा पासति तं महं एगं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वट्ठियं' •ऊसियं रुइलं वण्णमंतं गंधमंतं रसमंतं फासमंतं पासादियं दरिसणीयं अभिरूवं॰ पडिरूवं ।

---

१ सं॰ पा॰—अणुपुव्वट्ठिए जाव पडिरूवे ।

२ पुक्खरिणिं (क, ख), चूर्णिसम्मते पाठे सर्वत्रापि 'पोक्खरणी' अथवा 'पुक्खरणी' एव रकारयुक्त पाठो विद्यते । आदर्शयो सर्वत्र 'पुक्खरिणी' एव रिकारयुक्त पाठो विद्यते । यद्यपि संस्कृतदृष्ट्यासौ पाठः समीचीनः प्रतिभाति किन्तु प्राकृतदृष्ट्या रकारयुक्त पाठः प्राचीनोस्ति ।

३ सं॰ पा॰—ऊसियं जाव पडिरूवं ।

४ ॰मंसी (चू) ।

५ खेयन्ने कुसले पंडिते वियत्ते मेहावी अबाले मग्गत्थे मग्गविऊ मग्गस्स गइपरक्कमण्णू (क, ख), कुसले पंडिते धम्मण्णू देसकालण्णू खेतण्णे वियत्ते मेधावी अबाले मग्गत्थे मग्गण्णे मग्गस्स गइपरकमण्णू (वृ) ।

६ उण्णिक्खिस्सामि त्ति कट्टु इति वच्चा (क, ख), उन्नखेस्सामि त्ति कट्टु इति वच्चा (वृ), उण्णेक्केस्समिति॰ (चू) । अत्र 'इति कट्टु' इति पदमतिरिक्तं संभाव्यते । चूर्णिकृता नैतद् व्याख्यातम् । वृत्तिकारस्य सम्मुखे उक्तपदयुक्त आदर्श आसीत् तेन वृत्तिकृता तद् व्याख्यातम्, किन्तु व्याख्याया काचिज्जटिलतैव प्रतीयते ।

७ सज्जे, अउत्तरा विसण्णे—पढमे पुरिसे (चू) सर्वत्र । ॰तीसे सेयंसि णि [वि ?] सण्णे (वृ) ।

८ ॰ज्जाए (चू) ।

९ सं॰ पा॰—अणुपुव्वट्ठियं जाव पडिरूवं ।

तं च एत्थ[1] एगं पुरिसजायं पासइ पहीणतीरं, अपत्तपउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए 'णो पाराए, अंतरा पोक्खरणीए सेयंसि विसण्णं'[2]।

तए णं से पुरिसे तं पुरिसं एवं वयासी—अहो! णं इमे पुरिसे 'अदेसकालण्णे अखेत्तण्णे अकुसले अपंडिए अविअत्ते अमेधावी बाले णो मग्गण्णे णो मग्गविदू णो मग्गस्स गति-आगतिण्णे णो परक्कमण्णू'[3], जण्णं एस पुरिसे[4] "अहं देस-कालण्णे खेत्तण्णे कुसले[5] •पंडिते विअत्ते मेधावी अबाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे परक्कमण्णू, अहमेयं° पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खि-स्सामि" णो य खलु एतं पउमवरपोंडरीयं एवं उण्णिक्खेयव्वं जहा णं एस पुरिसे मण्णे।

अहमंसि पुरिसे देसकालण्णे खेत्तण्णे कुसले पंडिते विअत्ते मेधावी अबाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे परक्कमण्णू, अहमेतं पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिस्सामि त्ति वच्चा[6] से पुरिसे अभिक्कमे तं पोक्खरणिं। जाव-जावं च णं अभिक्कमेइ ताव-तावं च णं महंते उदए महंते सेए पहीणे तीरं, अपत्ते पउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए णो पाराए, 'अंतरा पोक्खरणीए सेयंसि विसण्णे'[7]—दोच्चे पुरिसजाते।

तच्च-पुरिसजात-पद

८ अहावरे तच्चे पुरिसजाते—अह पुरिसे पच्चत्थिमाओ दिसाओ आगम्म तं पोक्खरणिं, तीसे पोक्खरणीए तीरे ठिच्चा पासति तं महं एगं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वट्ठियं[8] •ऊसियं रुइलं वण्णमंतं गंधमंतं रसमंतं फासमंतं पासादियं दरि-सणीयं अभिरूवं° पडिरूवं।

ते तत्थ दोण्णि पुरिसजाते पासति पहीणे तीरं, अपत्ते पउमवरपोंडरीयं, णो हव्वाए णो पाराए[9], •अंतरा पोक्खरणीए° सेयंसि विसण्णे[10]°।

---

१ एत्थ (क), तत्थ (ख)।

२ °निसण्णं(ख), सउग्गे, अउत्तरा विसण्णं (चू)।

३ अखेयण्णे अकुसले अपंडिए अवियत्ते अमेधावी बाले णो मग्गत्थे णो मग्गविऊ णो मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू (क, ख), अखेयण्णे अकुसले अपंडिए अवियत्ते अमेधावी बाले णो मग्गत्थे णो मग्गण्णू णो मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू (वृ)। वृत्तौ प्रथमपुरुषजातसूत्रे 'कुसले पंडिए खेयन्ने' असौ क्रमो विद्यते। प्रस्तुत सूत्रे च 'अखेयन्ने अकुसले अपंडिए' असौ क्रमः पूर्वसूत्रात् भिन्नोस्ति।

४ अत्र ८,९,१० सूत्रानुसारेण 'एवं मण्णे' इति पाठो युज्यते।

५. सं० पा०—कुसले जाव पउमवरपोंडरीयं।

६ वुच्चा (ख)।

७ अंतरा सेयंसि निसण्णे (क, ख)।

८ सं० पा० —अणुपुव्वट्ठियं जाव पडिरूवं।

९ सं० पा०—णो पाराए जाव सेयंसि।

१०. निसण्णे (क, ख)।

तए ण से पुरिसे एव वयासी—अहो ! ण इमे पुरिसा अदेसकालण्णा अखेत्तण्णा अकुसला अपडिया अविअत्ता अमेधावी वाला णो मग्गण्णा णो मग्गविदू णो मग्गस्स गति-आगतिण्णा णो परक्कमण्ण, जण्ण एते पुरिसा एव मण्णे —"अम्हे त पउमवरपोडरीय उण्णिक्खिस्सामो" णो य खलु एत पउमवरपोडरीय एव उण्णिक्खेयव्व जहा ण एते पुरिसा मण्णे।

अहमसि पुरिसे देसकालण्णे खेत्तण्णे कुसले पडिए विअत्ते मेधावी अवाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे परक्कमण्णू, अहमेय पउमवरपोडरीय उण्णिक्खिस्सामि त्ति वच्चा से पुरिसे अभिक्कमे त पोक्खरणिं। जाव-जाव च ण अभिक्कमेइ ताव-ताव च ण महते उदए महते सेए[1] °पहीणे तीर, अपत्ते पउमवरपोडरीय, णो हव्वाए णो पाराए, अतरा पोक्खरणीए° सेयसि विसण्णे—तच्चे पुरिसजाते ॥

चउत्थ-पुरिसजात-पद

९ अहावरे चउत्थे पुरिसजाते—अह पुरिसे उत्तराओ दिसाओ आगम्म त पोक्खरणिं, तीसे पोक्खरणीए तीरे ठिच्चा पासति 'त मह'[2] एग पउमवरपोडरीय अणुपुव्वट्ठिय[3] °ऊसिय रुइल वण्णमत गधमत रसमत फासमत पासादिय दरिसणीय अभिरूव° पडिरूव।

ते तत्थ तिण्णि पुरिसजाते पासति पहीणे तीर, अपत्ते[4] °पउमवरपोडरीय, णो हव्वाए णो पाराए, अतरा पोक्खरणीए° सेयसि विसण्णे।

तए ण से पुरिसे एव वयासी—अहो ! ण इमे पुरिसा अदेसकालण्णा अखेत्तण्णा[5] °अकुसला अपडिया अविअत्ता अमेधावी वाला णो मग्गण्णा णो मग्गविदू णो मग्गस्स गति-आगतिण्णा णो° परक्कमण्णू, जण्ण एते पुरिसा एव मण्णे—"अम्हे एत पउमवरपोडरीय उण्णिक्खिस्सामो" णो य खलु एत पउमवरपोडरीय एव उण्णिक्खेयव्व जहा ण एते पुरिसा मण्णे।

अहमसि पुरिसे देसकालण्णे खेत्तण्णे[6] °कुसले पडिए विअत्ते मेधावी अवाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे° परक्कमण्णू, अहमेय पउमवरपोडरीय उण्णिक्खिस्सामि त्ति वच्चा से पुरिसे अभिक्कमे त पोक्खरणिं। जाव-जाव च ण अभिक्कमेइ ताव-ताव च ण महते उदए महते सेए[7] °पहीणे तीर, अपत्ते पउमवरपोडरीय, णो हव्वाए णो पाराए, अतरा पोक्खरणीए सेयसि° विसण्णे—चउत्थे पुरिसजाते ॥

---

१ स० पा०—सेए जाव सेयसि।
२ × (क, ख)।
३ स० पा०—अणुपुव्वट्ठिय जाव पडिरूव।
४ स० पा०—अपत्ते जाव सेयसि।
५ स० पा०—अखेत्तण्णा जाव परक्कमण्णू।
६ स० पा०—खेत्तण्णे जाव परक्कमण्णू।
७ स० पा०—सेए जाव विसण्णे।

भिक्खु-पदं

१० अह भिक्खू लूहे तीरट्ठी देसकालण्णे खेत्तण्णे[1] •कुसले पडिते विअत्ते मेधावी अवाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे° परक्कमण्णू अण्णतरीओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा आगम्म त पोक्खरणिं, तीसे पोक्खरणीए तीरे ठिच्चा पासति त मह एग पउमवरपोडरीय[2] •अणुपुव्वट्ठिय ऊसिय रुइल वण्णमत गधमत रसमत फासमत पासादिय दरिसणीय अभिरूव° पडिरूव।

ते तत्थ चत्तारि पुरिसजाते पासति पहीणे तीर, अपत्ते[3] •पउमवरपोडरीय, णो हव्वाए णो पाराए°, अतरा पोक्खरणीए सेयसि विसण्णे।

तए ण से भिक्खू एव वयासी—अहो! ण इमे पुरिसा अदेसकालण्णा अखेत्तण्णा[4] •अकुसला अपडिया अविअत्ता अमेधावी वाला णो मग्गण्णा णो मग्गविदू णो मग्गस्स गति-आगतिण्णा णो° परक्कमण्णू, जण्ण एते पुरिसा एव मण्णे— "अम्हे एत पउमवरपोडरीय उण्णिक्खिस्सामो" णो य खलु एत पउमवरपोडरीय एव उण्णिक्खेयव्व जहा ण एते पुरिसा मण्णे।

अहमसि भिक्खू लूहे तीरट्ठी देसकालण्णे खेत्तण्णे[5] •कुसले पडिते विअत्ते मेधावी अवाले मग्गण्णे मग्गविदू मग्गस्स गति-आगतिण्णे° परक्कमण्णू, अहमेय पउमवरपोडरीय उण्णिक्खिस्सामि त्ति वच्चा[6] से भिक्खू णो अभिक्कमे त पोक्खरणिं, तीसे पोक्खरणीए तीर ठिच्चा सद्द कुज्जा—'उप्पयाहि खलु भो! पउमवरपोडरीया! उप्पयाहि'[7]। अह से उप्पतिते पउमवरपोडरीए॥

पुव्वुत्त-णातस्स-अट्ठ-पद

११ किट्टिए णाए समणाउसो! अट्ठे पुण से जाणितव्वे[8] भवति।

भतेति! 'णिग्गथा य णिग्गथीओ य समण भगव महावीर'[9] वदति णमसति, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—किट्टिए णाए भगवया[10] अट्ठे पुण से ण जाणामो[11]।

---

१ स० पा०—खेत्तण्णे जाव परक्कमण्णू।

२ स० पा०—पउमवरपोडरीय जाव पडिरूव।

३ स० पा०—अपत्ते जाव अतरा।

४ स० पा०—अखेत्तण्णा जाव परक्कमण्णू।

५ स० पा०—खेत्तण्णे जाव परक्कमण्णू।

६ कट्टु इति वच्चा (क), कट्टु इति वुच्चा (ख)।

७ उप्पदाहि खलु भो पउमवर! उप्पदाहि खलु भो पउमवर! (चू), ऊर्ध्वमुत्पततोत्पतत (वृ)।

८ आजाणि° (चू)।

९ समण भगव महावीर निग्गथा य निग्गथीओ य (क, ख)।

१० समणाउसो (क, ख), प्रयुक्ताप्रयुक्तप्रतिषु 'समणाउसो' इति पाठो लभ्यते किन्तु अर्थविचारणयासौ न सम्यक् प्रतिभाति। चूर्णौ—'से किट्टिते भगवता', वृत्तौ च—'ज्ञात भगवता' इति लभ्यते तेनात्र मूले 'भगवया' इति पाठ स्वीकृत।

११ आयाणामो (चू)।

समणाउसोत्ति ! समणे भगवं महावीरे ते[1] बहवे णिग्गंथे[2] य णिग्गंथीओ य आमंतेत्ता एवं वयासी—हंता समणाउसो ! आइक्खामि विभयामि[3] किट्टेमि पवेदेमि सअट्ठं सहेउं सणिमित्तं[4] भुज्जो भुज्जो उवदंसेमि ॥

१२ से बेमि—लोयं च खलु मए अप्पाहट्टु[5] समणाउसो ! सा[6] पोक्खरणी बुइया ।
कम्मं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से उदए बुइए ।
कामभोगे य खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से सेए बुइए ।
जणजाणवए[7] च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! ते बहवे पउमवरपोंडरीया बुइया ।
रायाणं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से एगे महं पउमवर-पोंडरीए बुइए ।
अण्णउत्थिया य खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! ते चत्तारि पुरिसजाया बुइया ।
धम्मं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से भिक्खू बुइए ।
धम्मतित्थं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से तीरे बुइए ।
धम्मकहं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से सद्दे बुइए ।
णिव्वाणं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से उप्पाए बुइए ।
एवमेयं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से एवमेयं बुइयं ।

तज्जीव-तस्सरीर-वादि-पद

१३ इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया[8] मणुस्सा भवंति अणुपुव्वेणं लोगं[9] उववण्णा[10], तं जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे, उच्चागोया[11] वेगे णीयागोया वेगे, कायमंता वेगे हस्समंता[12] वेगे, सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे, सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे। तेसिं च णं मणुयाणं एगे राया भवति—महाहिमवंत[13]-मलय-मंदर-महिंदसारे[14] जाव[15] पसंतडिंबडमरं रज्जं पसाहेमाणे विहरति ॥

---

१ ते य (ख) ।
२ निग्गंथा (क) ।
३ विभावेमि (क, ख, वृ)। अत्र वृत्तिकृता 'विभावयामि' इति व्याख्यातम्, प्रत्योरपि 'विभावेमि' पाठ उपलभ्यते किन्तु ६७ सूत्रस्य संदर्भे 'विभयामि' इति चूर्णिगतपाठ समीचीनोस्ति ।
४ सकारणं (चू) ।
५ आहट्टु (वृ), अप्पाहट्टु (वृपा) ।
६ ×(क, ख) ।
७ ०वयं (क) ।
८ संति एगतिया (क) ।
९ लोगंतं (क, ख) ।
१० उववत्ता (क) ।
११ उच्चागोता (ख) ।
१२ हुस्समंता (क), रहस्समंता (क्व) ।
१३ महयाहिमवंत-महंत (ओ० सू० १४) ।
१४ 'क' प्रतौ वृत्तौ च संक्षिप्तपाठो वर्तते । चूर्णौ राजवर्णको व्याख्यातोस्ति । 'ख' प्रतौ संक्षिप्तपाठस्य पूर्तीकृतपाठस्य च मिश्रणं जातम् । पूर्वं राजवर्णकस्यौपपातिकानुसारी पाठो लिखितोस्ति ततश्च 'रायवण्णओ जहा उववाइए जाव पसंतडिंबडमरं रज्जं पसाहेमाणे विहरति' ।
१५. ओ० सू० १४ ।

१४ तस्स ण रण्णो परिसा भवति—उग्गा उग्गपुत्ता, भोगा भोगपुत्ता, इक्खागा इक्खागपुत्ता, 'नागा नागपुत्ता'[1], कोरव्वा कोरव्वपुत्ता, भट्टा भट्टपुत्ता, माहणा माहणपुत्ता, लेच्छई लेच्छइपुत्ता, पसत्थारो पसत्थपुत्ता, सेणावई सेणावइपुत्ता[2] ॥

१५ तेसि च ण एगइए सड्ढी भवति। काम त समणा वा माहणा वा सपहारिसु गमणाए। 'तत्थ अण्णतरेण'[3] धम्मेण पण्णत्तारो, 'वय इमेण'[4] धम्मेण पण्णवइस्सामो। से एवमायाणह भयतारो! जहा मे[5] एस धम्मे सुयक्खाते सुपण्णत्ते भवइ, त जहा—उड्ढ पायतला, अहे केसग्गमत्थया, तिरिय तयपरियते जीवे। एस 'आया पज्जवे'[6] कसिणे। एस जीवे जीवति, एस मए णो जीवति। सरीरे धरमाणे धरति, विणट्ठम्मि य णो धरति। एययत[7] जीविय भवति। आदहणाए परेहि णिज्जइ। अगणिझामिए सरीरे कवोतवण्णाणि अट्ठीणि भवति। आसदीपचमा पुरिसा गाम पच्चागच्छति। एव असते असविज्जमाणे।

१६ 'जेसि त'[8] सुयक्खाय भवति—अण्णो भवइ जीवो अण्ण सरीर, तम्हा[9], ते 'णो एव'[10] विप्पडिवेदेति - अयमाउसो! आया दीहे ति वा हस्से[11] ति वा। परिमडले ति वा वट्टे ति वा तसे ति वा चउरसे ति वा आयते ति वा 'छलसे ति वा'[12]। किण्हे ति वा णीले ति वा लोहिए ति वा हालिद्दे नि वा सुक्किल्ले ति वा। सुब्भिगधे ति वा दुब्भिगधे ति वा। तित्ते ति वा कडुए ति वा कसाए ति वा अबिले ति वा महुरे ति वा। कक्खडे ति वा मउए ति वा गरुए[13] ति वा लहुए ति वा सीए ति वा उसिणे ति वा णिद्धे ति वा लुक्खे ति वा। एव असते असविज्जमाणे ॥

---

१ नाया नायपुत्ता (ख)।
२ चूर्णौ केचिदन्येपि शब्दा व्याख्याता। द्रष्टव्यमोवाइय सू० २३।
३ तत्थन्न० (क, ख)।
४ वयमेतेण (क)।
५ मए (ख, वृ)।
६ आयपज्जवे (क, ख)।
७ एतत (क), एयत (ख)।
८ जेसि त असते असविज्जमाणे तेसि त (क, ख), पुरोवर्तिसूत्रत्रयस्य (१६-१८) सदर्भेसौ पाठोशुद्ध प्रतिभाति, लिपिदोषेण पाठपरिवर्तन जातमिति प्रतीयते। वृत्तौ पाठस्य स्पष्टता नोपलभ्यते किन्तु व्याख्यानुसारेण निम्नपाठ कल्पितु शक्यते—जेसि त असतो असविज्जमाणे तेसि त सुयक्खाय भवति, जेसि पुण अण्णो०। चूर्णिगतपाठो मूले स्वीकृत।
९ व्या० वि०—जेसि त सुयक्खाय भवति—अण्णो भवइ जीवो अण्ण सरीर, ते णो एव विप्पडिवेदेति, तम्हा (तस्मादप्येवाऽसुअक्खात—चू) इत्यन्वय।
१० एव नो (ख)।
११ ह्रस्से (क)।
१२ छलसिए ति वा अट्ठसे ति वा (ख)।
१३ गुरुए (ख)।

१७ जेसि त सुयक्खाय भवइ—अण्णो जीवो अण्ण सरीर, तम्हा ते णो एव उवलभनि—

से जहाणामए केइ[1] पुरिमे कोसीओ[2] असि अभिणिव्वट्टित्ता णं उवदसेज्जा—अयमाउसो ! असो, अय कोसी । एवमेव णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता ण उवदसेत्तारो[3]—अयमाउसो ! आया, 'अय सरीरे'[4] ।

से जहाणामए केइ पुरिसे मुजाओ इसिय अभिणिव्वट्टित्ता ण उवदसेज्जा—अयमाउसो ! मुजे '[इमा ?] इसिया'[5] । एवमेव णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता ण उवदसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, 'अय सरीरे'[6] ।

से जहाणामए केइ पुरिसे मसाओ अट्ठि अभिणिव्वट्टित्ता ण उवदसेज्जा—अयमाउसो ! मसे, अय अट्ठी । एवमेव णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता ण उवदसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, अय सरीरे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे करतलाओ आमलक अभिणिव्वट्टित्ता ण उवदसेज्जा—अयमाउसो ! करतले, अय आमलए । एवमेव णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता ण उवदसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, अय सरीरे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे दहीओ णवणीय अभिणिव्वट्टित्ता ण उवदसेज्जा—अयमाउसो ! णवणीय, अय दही । एवमेव णत्थि केइ[7] •पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता ण उवदसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, अय॰ सरीरे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे तिलेहिंतो तेल्ल अभिणिव्वट्टित्ता ण उवदसेज्जा—अयमाउसो ! तेल्ल, अय पिण्णाए । एवमेव[8] •णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता ण उवदसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, अय॰ सरीरे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे इक्खूओ[9] खोयरस[10] अभिणिव्वट्टित्ता ण उवदसेज्जा—अयमाउसो ! खोयरसे, अय छोए । एवमेव[11] •णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता ण उवदसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, अय॰ सरीरे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे अरणीओ अग्गि अभिणिव्वट्टित्ता ण उवदसेज्जा—अयमाउसो ! अरणी, अय अग्गी । एवमेव[12] •णत्थि केइ पुरिसे अभिणिव्वट्टित्ता

---

१ केवि (क) ।
२ कोसओ (ख) ।
३ उवदसेइ (क, ख) ।
४ इम सरीर (ख) ।
५ अय असीया (क), इय इसिया (ख) ।
६. इद सरीर (ख) सर्वत्र ।
७ स॰ पा॰—केइ जाव सरीरे ।
८ स॰ पा॰—एवमेव जाव सरीरे ।
९ उक्खूतो (क) ।
१० खोत्त॰ (क), खोत॰ (ख) ।
११,१२ स॰ पा॰—एवमेव जाव सरीरे ।

ण उवदसेत्तारो—अयमाउसो ! आया, अय° सरीरे। एव असंते असवि
माणे ॥

१८ जेसिं त मुयक्खाय भवइ, त जहा—अण्णो जीवो अण्ण सरीर, तम्हा, त मिच्

१९ से हता[1] हणह खणह छणह डहह पयह आलुपह विलुपह सहसक्कारेह वि
मुसह। एतावताव[2] जीवे, णत्थि परलोए ॥

२० ते णो एव विप्पडिवेदेति, त जहा—किरिया इ वा अकिरिया इ वा सुक
वा दुक्कडे इ वा कल्लाणे इ वा पावए इ वा साहू इ वा असाहू इ वा सिद्ध
वा असिद्धी इ वा णिरए इ वा अणिरए इ वा। एव ते विरूवरूवेहिं कम्मसम
भेहिं विरूवरूवाइ कामभोगाइ समारभति[4] भोयणाए ॥

२१ एव एगे पागब्भिया णिक्खम्म मामग धम्म पण्णवेंति। त सद्दहमाणा त पत्ति
माणा त रोएमाणा[5] साधु सुयक्खाते समणेति[6] ! वा माहणेति[7] वा।
काम खलु आउसो ! तुम पूययामो[8], त जहा—असणेण वा पाणेण वा खाइ
वा साइमेण वा 'वत्थेण वा'[9] पडिग्गहेण वा कवलेण वा पायपुछणेण वा।
तत्थेगे पूयणाए समाउट्टिसु, तत्थेगे पूयणाए णिकाइसु[10] ॥

२२ पुव्वामेव तेसिं णाय भवइ—समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अ
अपसू परदत्तभोइणो भिक्खुणो, पाव कम्म णो करिस्सामो समुट्ठाए।
ते[11] अप्पणा अप्पडिविरया भवति। सयमाइयति, अण्णे वि आइयावेंति, अ
पि आइयत समणुजाणति। एवामेव ते इत्थिकामभोगेहिं मुच्छिया गिद्धा गढि
अज्झोववण्णा लुद्धा रागदोसवसट्टा।
ते णो अप्पाण समुच्छेदेंति, णो पर समुच्छेदेंति, णो अण्णाइ पाणाइ भू
जीवाइ सत्ताइ समुच्छेदेंति। पहीणा पुव्वसजोगा[12] आरिय मग्ग असपत्ता—
ते णो हव्वाए णो पाराए, अतरा कामभोगेहिं[13] विसण्णा।
इति पढमे पुरिसजाए तज्जीवतस्सरीरिए[14] आहिए ॥

---

१ हता त (ख)।
२ एतावता (ख)।
३ सुक्कडे (क, ख)।
४ समारभति (चू)।
५ रोयमाणा (क)।
६,७ °त्ति (ख)।
८ पूययामि (ख)।

वस्त्रगधमाल्यालङ्कारान् सूचयति द्रष्टव्यम्
रायपसेणइय सू० ८०२।
१० णिगायइसु (क)।
११ व्या० वि०—आदौ 'पच्छा' इति अध्याहा
व्यम्।
१२ °सजोग (क, ख)।
१३ कामभोगेसु (ख)।

पंचमहब्भूतवादि-पद

२३ अहावरे दोच्चे पुरिसजाए पचमहब्भूइए त्ति आहिज्जइ—इह खलु पाईण वा पडीण वा उदीण वा दाहिण वा सतेगइया मणुस्सा भवति अणुपुव्वेण[1] •लोग उववण्णा, त जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे, उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे, कायमता वेगे हस्समता वेगे, सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे, सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे। तेसि च ण मणुयाण एगे राया भवति—महाहिमवत-मलय-मदर-मर्हिदसारे जाव[2] पसतडिवडमर रज्ज पसाहेमाणे विहरति ॥

२४ तस्स ण रण्णो परिसा भवति—उग्गा उग्गपुत्ता, भोगा भोगपुत्ता, इक्खागा इक्खागपुत्ता, नागा नागपुत्ता, कोरव्वा कोरव्वपुत्ता, भट्टा भट्टपुत्ता, माहणा माहणपुत्ता, लेच्छई लेच्छइपुत्ता, पसत्थारो पसत्थपुत्ता, सेणावई सेणावइपुत्ता ॥

२५ तेसि च ण एगइए सड्ढी भवति। काम त समणा वा माहणा वा सपहारिसु गमणाए। तत्थ अण्णतरेण धम्मेण पण्णत्तारो, वय इमेण धम्मेण पण्णवइस्सामो। से एवमायाणह भयतारो[3] जहा मे एस धम्मे सुयक्खाते° सुपण्णत्ते भवति—इह खलु पचमहब्भूया जेहिं णो कज्जइ किरिया इ वा अकिरिया इ वा सुकडे इ वा दुक्कडे इ वा कल्लाणे इ वा पावए इ वा साहू इ वा असाहू इ वा सिद्धी इ वा असिद्धी इ वा णिरए इ वा अणिरए इ वा, 'अवि अतसो'[4] तणमायमवि ॥

२६ त च पदोद्देसेण[5] पुढोभूतसमवाय[6] जाणेज्जा, त जहा—पुढवी एगे महब्भूते, आऊ दुच्चे महब्भूते, तेऊ तच्चे[7] महब्भूते, वाऊ चउत्थे महब्भूते, आगासे पचमे महब्भूते। इच्चेते पच महब्भूया अणिम्मिया अणिम्माविया[8] अकडा णो कित्तिमा[9] 'णो कडगा'[10] अणादिया अणिधणा अवझा अपुरोहिता सतता सासया ॥

२७ आयछट्ठा पुण एगे एवमाहु—सतो णत्थि विणासो, असतो णत्थि सभवो। एताव ताव जीवकाए, एताव ताव अत्थिकाए, एताव ताव सव्वलोए, एत मुह लोगस्स करणयाए, अवि अतसो[11] तणमायमवि ॥

२८ से किण किणावेमाणे, हण घायमाणे, पय पयावेमाणे, अवि अतसो पुरिसमवि विक्किणित्ता घायइत्ता, 'एत्थ पि जाणाहि'[12] णत्थित्थ दोसो ॥

---

१ स० पा०—अणुपुव्वेण जाव सुपण्णत्ते।
२ ओ० सू० १४।
३ अस्माकम् (वृ)।
४ अवि यतमो (क), इति० (ख)।
५ पिहुद्देसेण (क, ख)।
६ समवाय (चू)।
७ततिए (क)।
८. अणिमेता (क)।
९ कत्तिमा (चू)।
१० × (चू)।
११ यतसो (क)।
१२ इत्थ पि जाणीहि (क), एत्थ वि जाण (चू)।

२९ ते णो एव विप्पडिवेदेति, त जहा—किरिया इ वा[1] •अकिरिया इ वा सुकडे इ वा दुक्कडे इ वा कल्लाणे इ वा पावए इ वा साहू इ वा असाहू इ वा सिद्धी इ वा असिद्धी इ वा णिरए इ वा° अणिरए इ वा। 'एव ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारभेहिं विरूवरूवाइ कामभोगाइ समारभति भोयणाए ॥

३० एव[2] ते अणारिया विप्पडिवण्णा [मामग धम्म पण्णवेति[3] ?]। त सद्दहमाणा त पत्तियमाणा[4] •त रोएमाणा साधु सुयक्खाते समणेति वा माहणे ति ! वा। काम खलु आउसो ! तुम पूययामो, त जहा—असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कवलेण वा पायपुछणेण वा। तत्थेगे पूयणाए समाउट्टिसु, तत्थेगे पूयणाए णिकाइसु ॥

३१ पुव्वामेव तेसि णाय भवइ—समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसू परदत्तभोइणो भिक्खुणो, पाव कम्म णो करिस्सामो समुट्ठाए।
ते[5] अप्पणा अप्पडिविरिया भवति। सयमाइयति, अण्णे वि आइयावेंति अण्ण पि आइयत समणुजाणति। एवामेव ते इत्थिकामभोगेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा लुद्धा रागदोसवसट्टा।
ते णो अप्पाण समुच्छेदेंति, णो पर समुच्छेदेंति, णो अण्णाइ पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समुच्छेदेति। पहीणा पुव्वसजोगा आरिय मग्ग असपत्ता°— इति ते णो हव्वाए णो पाराए, 'अतरा कामभोगेसु विसण्णा'[6]।
दोच्चे पुरिसजाते पचमहब्भूइए त्ति आहिए ॥

ईसरकारणिय-पद

३२ अहावरे तच्चे पुरिसजाते ईसरकारणिए त्ति आहिज्जइ—इह खलु पाईण वा[7] •पडीण वा उदीण वा दाहिण वा सतेगइया मणुस्सा भवति अणुपुव्वेण लोग उववण्णा, त जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे, उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे, कायमता वेगे हस्समता वेगे, सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे, सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे। तेसिं च ण मणुयाण एगे राया भवति-महाहिमवत-मलय-मदर-महिंदसारे जाव[8] पसतडिंवडमर रज्ज पसाहेमाणे विहरति ॥

---

१ स० पा०—किरिया इ वा जाव अणिरए।
२. एवमेव (ख)।
३ प्रथमपुरुषप्रकरणे २१ सूत्रे वृत्तिकारेण—साप्रत तत्प्रज्ञापितशिष्यव्यापारमधिकृत्याह—'त सद्दहमाणा' इति सवन्धयोजना कृता सा अग्रिमेषु त्रिष्वपि पुरुषेषु तथैव युज्यते। यदि 'त सद्दहमाणा' इत्यादिपाठस्य कर्त्ता 'ते अणारिया विप्पडिवण्णा' स्यात् तदा 'साधु-सुयक्खाते' इत्यादिपाठस्य संवन्धो न घटेत।
४ स० पा०—पत्तियमाणा जाव इति।
५ व्या० वि०—आदौ 'पच्छा' इति अध्याहर्तव्यम्।
६ जाव विसण्णे (क)।
७ स० पा०—पाईण वा जाव सुयक्खाते।
८ ओ० सू० १४।

३३ तस्स णं रण्णो परिसा भवति—उग्गा उग्गपुत्ता, भोगा भोगपुत्ता, इक्खागा इक्खागपुत्ता, नागा नागपुत्ता, कोरव्वा कोरव्वपुत्ता, भट्टा भट्टपुत्ता, माहणा माहणपुत्ता, लेच्छई लेच्छइपुत्ता, पसत्थारो पसत्थपुत्ता, सेणावई सेणावइपुत्ता ।।

३४ तेसिं च णं एगइए सड्ढी भवति । कामं तं समणा वा माहणा वा संपहारिंसु गमणाए । तत्थ अण्णतरेण धम्मेण पण्णत्तारो, वयं इमेण धम्मेण पण्णवइस्सामो । से एवमायाणह भयंतारो ! जहा मे एस धम्मे° सुयक्खाते सुपण्णत्ते भवति—इह खलु धम्मा पुरिसादिया[1] पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता[2] पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठति—

से जहाणामए गंडे सिया सरीरे जाए सरीरे संवुड्ढे[3] सरीरे अभिसमण्णागए सरीरमेव अभिभूय चिट्ठइ । एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया[4] °पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता° पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठति ।

से जहाणामए अरई सिया सरीरे जाया सरीरे संवुड्ढा[5] सरीरे अभिसमण्णागया सरीरमेव अभिभूय चिट्ठइ । एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया[6] °पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता° पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठति ।

से जहाणामए वम्मिए[7] सिया पुढविजाए पुढविसंवुड्ढे पुढविअभिसमण्णागए पुढविमेव अभिभूय चिट्ठइ । एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया[8] °पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता पुरिसमेव° अभिभूय चिट्ठति ।

से जहाणामए रुक्खे सिया पुढविजाए[9] °पुढविसंवुड्ढे पुढविअभिसमण्णागए° पुढविमेव अभिभूय चिट्ठइ । एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया[10] °पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता पुरिसमेव° अभिभूय चिट्ठति ।

से जहाणामए पुक्खरिणी सिया[11] °पुढविजाया पुढविसंवुड्ढा पुढविअभिसमण्णागया° पुढविमेव अभिभूय चिट्ठइ । एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया[12]

---

१ व्या० वि०—पुरुष—ईश्वर ।
२ 'पुरिससंभूता पुरिसअभिसमण्णागता' एते वाक्ये वृत्तौ न व्याख्याते ।
३. वुड्ढे (क, वृ) ।
४ स० पा०—पुरिसादिया जाव पुरिसमेव ।
५. अभिसंवुड्ढा (क, ख), वुड्ढा (वृ) ।
६. स० पा०—पुरिसादिया जाव पुरिसमेव ।
७ विम्मिए (ख) ।
८ स० पा०—पुरिसादिया जाव अभिभूय ।
९ स० पा०—पुढविजाए जाव पुढविमेव ।
१० स० पा०—पुरिसादिया जाव अभिभूय ।
११ स० पा०—सिया जाव पुढविमेव ।
१२. स० पा०—पुरिसादिया जाव अभिभूय ।

°पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता पुरिसमेव° अभिभूय चिट्ठति ।

से जहाणामए उदगपुक्खले सिया[1] °उदगजाए उदगसवुड्ढे उदगअभिसमण्णागए° उदगमेव अभिभूय चिट्ठइ। एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया[2] °पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता पुरिसमेव अभिभूय° चिट्ठति ।

[3]°से जहाणामए उदगबुब्बुए सिया उदगजाए उदगसवुड्ढे उदगअभिसमण्णागए उदगमेव अभिभूय चिट्ठइ। एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससभूता पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागता पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठति° ॥

३५ ज पि य इम समणाण णिग्गथाण उद्दिट्ठ पणीय[4] विअजिय दुवालसग गणिपिडग, त जहा—आयारो[5] °सूयगडो, ठाण, समवाओ, वियाहपण्णत्ती, णायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइ, विवागसुय°, दिट्ठिवाओ—सव्वमेय मिच्छा, ण एत तहिय, ण एत आहातहिय ।

इम सच्च इम तहिय इम आहातहिय—ते एव सण्ण कुव्वति, ते एव सण्ण सठवेति, ते एव सण्ण सोवट्ठवयति । तमेव ते तज्जातिय दुक्ख णातिवट्टति[6], सउणी पजर जहा ॥

३६. ते णो विप्पडिवेदेति त जहा—किरिया इ वा[7] °अकिरिया इ वा सुकडे इ वा दुक्कडे इ वा कल्लाणे इ वा पावए इ वा साहू इ वा असाहू इ वा सिद्धी इ वा असिद्धी इ वा णिरए इ वा° अणिरए इ वा । एव ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारभेहिं विरूवरूवाइ कामभोगाइ समारभति भोयणाए ॥

३७ एव[8] ते अणारिया विप्पडिवण्णा [मामग धम्म पण्णवेति ?] । [9]°त सद्दहमाणा त पत्तियमाणा त रोएमाणा साधु सुयक्खाते समणेति ! वा माहणेति ! वा । काम खलु आउसो ! तुम पूययामो, त जहा—असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कवलेण वा पायपुछणेण वा । तत्थेगे पूयणाए समाउट्टिसु, तत्थेगे पूयणाए णिकाइसु ॥

---

१ स० पा०—सिया जाव उदगमेव ।
२ स० पा०—पुरिसादिया जाव चिट्ठति ।
३ स० पा०—एव उदगवुब्बुए भणियव्वे ।
४ पणिय (क, ख) ।
५ स०पा०—आयारो जाव दिट्ठिवाओ ।
६ ण तिउटटति (वृपा) ।
७ स० पा०—किरिया इ वा जाव अणिरए ।
८ एवमेव (क, ख) ।
९ स० पा०—एव सद्दमाणा जाव इति ।

३८ पुव्वामेव तेसिं णायं भवइ—समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसू परदत्तभोइणो भिक्खुणो, पावं कम्मं णो करिस्सामो समुट्ठाए।
ते[1] अप्पणा अप्पडिविरया भवंति। सयमाइयंति, अण्णे वि आइयावेंति, अण्णं पि आइयंतं समणुजाणंति। एवामेव ते इत्थिकामभोगेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा लुद्धा रागदोसवसट्टा।
ते णो अप्पाणं समुच्छेदेंति, णो परं समुच्छेदेंति, णो अण्णाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समुच्छेदेंति। पहीणा पुव्वसंजोगा आरियं मग्गं असंपत्ता°—इति ते णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा कामभोगेसु विसण्णा।
तच्चे पुरिसजाते ईसरकारणिए त्ति आहिए॥

णियतिवादि-पद

३९ अहावरे चउत्थे पुरिसजाते णियतिवाइए त्ति आहिज्जइ—इह खलु पाईणं वा[2] °पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति अणुपुव्वेण लोगं उववण्णा, तं जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे, उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे, कायमंता वेगे हस्समंता वेगे, सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे, सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे। तेसिं च णं मणुयाणं एगे राया भवति—महाहिमवंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव[3] पसंतडिंबडमरं रज्जं पसाहेमाणे विहरति॥

४० तस्स णं रण्णो परिसा भवति—उग्गा उग्गपुत्ता, भोगा भोगपुत्ता, इक्खागा इक्खागपुत्ता, नागा नागपुत्ता, कोरव्वा कोरव्वपुत्ता, भट्टा भट्टपुत्ता, माहणा माहणपुत्ता, लेच्छई लेच्छइपुत्ता, पसत्थारो पसत्थपुत्ता, सेणावई सेणावइपुत्ता॥

४१ तेसिं च णं एगइए सड्ढी भवति। कामं तं समणा वा माहणा वा संपहारिंसु गमणाए। तत्थ अण्णतरेणं धम्मेणं पण्णत्तारो, वयं इमेणं धम्मेणं पण्णवइस्सामो। से एवमायाणह भयंतारो! जहा मे एस धम्मे° सुयक्खाते सुपण्णत्ते भवति।
इह खलु दुवे पुरिसा भवंति—एगे पुरिसे किरियमाइक्खइ, एगे पुरिसे णोकिरियमाइक्खइ।
जे य पुरिसे किरियमाइक्खइ, जे य पुरिसे णोकिरियमाइक्खइ, दो वि ते पुरिसा तुल्ला एगट्ठा कारणमावण्णा[4]॥

४२. बाले पुण एवं विप्पडिवेदेति कारणमावण्णे। अहमंसि दुक्खामि वा सोयामि वा 'जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा'[5], अहमेयमकासि। परो

---

१ व्या० वि०—आदौ 'पच्छा' इति अव्याहर्तव्यम्।
२ सं० पा०—पाईणं वा जाव सुयक्खाते।
३ ओ० सू० १४।
४ एककारणापन्नत्वादिति (वृ)।
५ तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा जूरामि वा (क, वृ), तप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा (चू)।

वा ज दुक्खइ वा[1] •सोयइ वा जूरइ वा तिप्पइ वा पीडइ वा° परितप्पइ वा, परो एयमकासि। एव से बाले सकारण वा परकारण वा एव विप्पडिवेदेति कारणमावण्णे ।।

४३ मेहावी पुण एव विप्पडिवेदेति कारणमावण्णे। अहमसि दुक्खामि वा[2] •सोयामि वा जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा° परितप्पामि वा, णो अह एयमकासि। परो वा ज दुक्खइ वा[3] •सोयइ वा जूरइ वा तिप्पइ वा पीडइ वा° परितप्पइ वा, णो परो एयमकासि। एव से मेहावी सकारण वा परकारण वा एव विप्पडिवेदेति कारणमावण्णे ।।

४४ से वेमि—पाईण वा पडोण वा उदीण वा दाहिण वा जे तसथावरा पाणा ते एव सघायमागच्छति, ते एव विप्परियायमावज्जति,[4] ते एव विवेगमागच्छति, ते एव विहाणमागच्छति, ते एव सगइयति उवेहाए ।।

४५ ते णो एय विप्पडिवेदेति, त जहा—किरिया इ वा[5] •अकिरिया इ वा सुकडे इ वा दुक्कडे इ वा कल्लाणे इ वा पावए इ वा साहू इ वा असाहू इ वा सिद्धी इ वा असिद्धी इ वा णिरए इ वा अणिरए इ वा। एव ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारंभेहिं विरूवरूवाइ कामभोगाइ समारभति भोयणाए ।।

४६ एव ते अणारिया विप्पडिवण्णा [मामग धम्म पण्णवेति ?]। त सद्दहमाणा त पत्तियमाणा त रोएमाणा साधु सुयक्खाते समणेति ! वा माहणेति ! वा। काम खलु आउसो ! तुम पूययामो, त जहा—असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कवलेण वा पायपुछणेण वा। तत्थेगे पूयणाए समाउट्टिसु, तत्थेगे पूयणाए णिकाइसु ।।

४७ पुव्वामेव तेसिं णाय भवइ—समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसू परदत्तभोइणो भिक्खुणो, पाव कम्म णो करिस्सामो समुट्ठाए।
ते[6] अप्पणा अप्पडिविरिया भवति। सय माइयति, अण्णे वि आइयावेति, अण्ण पि आइयत समणुजाणति। एवामेव ते इत्थिकामभोगेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा लुद्धा रागदोसवसट्टा।
ते णो अप्पाण समुच्छेदेति णो पर समुच्छेदेति, णो अण्णाइ पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समुच्छेदेति। पहीणा पुव्वसजोगा आरिय मग्ग असपत्ता—इति ते णो हव्वाए णो पाराए, अतरा कामभोगेसु विसण्णा°।
चउत्थे पुरिसजाते णियतिवाइए त्ति आहिए ।।

---

१ स० पा०—दुक्खइ वा जाव परितप्पइ।
२ स० पा०—दुक्खामि वा जाव परितप्पामि।
३ स० पा०—दुक्खइ वा जाव परितप्पइ।
४ विप्परियास° (क, ख)।
५ स० पा०—किरिया इ वा जाव णिरए इ वा जाव चउत्थे।
६. व्या० वि०—आदौ 'पच्छा' इति अध्याहर्तव्यम्।

४८ इच्चेते चत्तारि पुरिसजाया णाणापण्णा णाणाछदा 'णाणासीला णाणादिट्ठी'[1] णाणारुई णाणारभा णाणाअज्झवसाणसजुत्ता 'पहीणा पुव्वसजोगा'[2] आरिय मग्ग असपत्ता इति ते णो हव्वाए णो पाराए, अतरा कामभोगेसु विसण्णा ॥

भिक्खुणो भिक्खायरिया-समुट्ठाण-पद

४६ से बेमि--पाईण वा पडीण वा उदीण वा दाहिण वा सतेगइया मणुस्सा[3] भवति, त जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे[4], •उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे, कायमता वेगे हस्समता वेग, सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे, सुरूवा वेगे° दुरूवा वेगे। तेसि च ण खेत्तवत्थूणि परिग्गहियाणि भवति, त जहा—'अप्पयरा वा भुज्जयरा'[5] वा। तेसि च ण जणजाणवयाइ परिग्गहियाइ भवति, त जहा—'अप्पयरा वा भुज्जयरा'[6] वा। तहप्पगारेहि कुलेहि आगम्म अभिभूय एगे भिक्खायरियाए समुट्ठिया। सतो वा वि एगे णायओ य[7] उवगरण च[8] विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया। असतो वा वि एगे णायओ य उवगरण च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया ॥

५० जे ते सतो वा असतो वा णायओ 'य उवगरण च'[9] विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया, पुव्वमेव तेहि णात भवति[10]—इह खलु पुरिसे "अण्णमण्ण"[11] ममट्ठाए" एव विप्पडिवेदेति[12], त जहा—खेत्त मे वत्थू[13] मे हिरण्ण मे सुवण्ण मे 'धण मे'[14] धण्ण मे कस मे दूस मे विपुल-धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सत-सार-सावतेय मे सद्दा मे रूवा मे गधा मे रसा मे फासा मे। एते खलु मे कामभोगा, अहमवि एतेसि।

से मेहावी पुव्वमेव[15] अप्पणा एव समभिजाणेज्जा—इह[16] खलु मम अण्णतरे दुक्खे

---

१ णाणादिट्ठी णाणासीला (क)।
२. पहीणपुव्वसजोगा (क, ख), प्रहीण- पूर्व-सयोग यँ (वृ)।
३ मणूसा (क)।
४ स० पा०—अणारिया वेगे जाव दुरूवा।
५ अप्पयरो वा भुज्जयरो (क, ख)।
६ अप्पयरो वा भुज्जयरो (ख)।
७ य अणातयो य (चू)।
८ च अणुवगरण च (चू)।
९ य अणायओ य उवगरण च (क, ख), य अणायओ य उवगरण च अणुवगरण च (चू)।
१० भवति, त जहा (ख, वृ)।
११ अन्यद् अन्यद् वस्तु उद्दिश्य (वृ)।
१२ विप्परियावेति (क)।
१३ वत्थु (क)।
१४ धणम्मे (क)।
१५ पुव्वा° (ख)।
१६. त इह (ख)।

रोगातके समुप्पज्जेज्जा—अणिट्ठे अकते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे दुक्खे णो सुहे ।

से हता ! भयतारो ! कामभोगा[1] ! मम अण्णतर दुक्ख रोगायक परियाइयह —अणिट्ठ अकत अप्पिय असुभ अमणुण्ण अमणाम दुक्ख णो सुह । माऽह[2] दुक्खामि वा सोयामि वा जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा । इमाओ मे अण्णतराओ दुक्खाओ रोगातकाओ पडिमोयह—अणिट्ठाओ अकताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुण्णाओ अमणामाओ दुक्खाओ णो सुहाओ । 'एवमेव णो लद्धपुव्व'[3] भवति ।

इह खलु कामभोगा णो ताणाए वा णो सरणाए वा । पुरिसे वा एगया पुव्वि कामभोगे विप्पजहइ, कामभोगा वा एगया पुव्वि पुरिस विप्पजहति । अण्णे खलु कामभोगा, अण्णो अहमसि । से किमग पुण वय अण्णमण्णेहि कामभोगेहि मुच्छामो ? इति सखाए ण वय[4] कामभोगे विप्पजहिस्सामो ।।

५१ से मेहावी जाणेज्जा—बाहिरगमेय, इणमेव उवणीयतरग, त जहा—माता मे पिता मे भाया मे 'भगिणी मे भज्जा मे'[5] पुत्ता मे 'णत्ता मे धूया मे पेसा मे सहा मे'[6] सुही मे सयणसगथसथुया मे । एते खलु मम णायओ, अहमवि एएसि । से[7] मेहावी पुव्वमेव अप्पणा एव समभिजाणेज्जा—इह खलु मम अण्णयरे दुक्खे रोगातके समुप्पज्जेज्जा—अणिट्ठे[8] °अकते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे° दुक्खे णो सुहे ।

से हता ! भयतारो ! णायओ ! इम मम अण्णयर दुक्ख रोगातक परियाइयह[9]—अणिट्ठ[10] °अकत अप्पिय असुभ अमणुण्ण अमणाम दुक्ख° णो सुह । माऽह दुक्खामि वा सोयामि वा[11] °जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा° परितप्पामि वा । इमाओ मे अण्णतराओ दुक्खाओ रोगातकाओ परिमोयह[12]—

---

१ कामभोगाइ (क, ख) ।

२ ताऽह (क, ख), द्रष्टव्यम्—५१ सूत्रस्य 'मा मे' पदस्य पादटिप्पणम् ।

३ लद्धपुव्वे (क), एव णो० (ख), वृत्तौ—'न चायमर्थस्तेन दु खितेन 'एवमेवे' ति यथा प्रार्थितस्तथैव लब्धपूर्वो भवति, अग्रिमसूत्रे 'न चैतत्तेन दु खितेन लब्धपूर्व भवति' ' एवमेव नो लब्धपूर्व भवति' इति व्याख्यातमस्ति ।

४ वय च (ख) ।

५ भज्जा मे भगिणी मे (क) ।

६ धूया मे पेसा मे णत्ता मे सुण्हा मे (ख) ।

७ एव से (क, ख) ।

८ स० पा०—अणिट्ठे जाव दुक्खे ।

९ परियादियध (क) ।

१० स० पा०—अणिट्ठ जाव णो सुह ।

११ स० पा०—सोयामि वा जाव परितप्पामि ।

१२ परिमोएह (क), पूर्वस्मिन् सूत्रे 'पडिमोयह' इति पदमस्ति ।

अणिट्ठाओ[1] •अकताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुण्णाओ अमणामाओ दुक्खाओ° णो सुहाओ। एवमेव[2] णो लद्धपुव्व भवइ।

तेर्सि वा वि भयताराण मम णाययाण अण्णयरे दुक्खे रोगातके समुप्पज्जेज्जा—अणिट्ठे[3] •अकते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे दुक्खे° णो सुहे।

से हता! अहमेतेर्सि भयताराण णाययाण इम अण्णतर दुक्ख रोगातक परियाइयामि—अणिट्ठ[4] •अकत अप्पिय असुभ अमणुण्ण अमणाम दुक्ख° णो सुह, 'मा मे'[5] दुक्खतु वा[6] •सोयतु वा जूरतु वा तिप्पतु वा पीडतु वा° परितप्पतु वा। इमाओ ण अण्णयराओ दुक्खाओ रोगातकाओ परिमोएमि—अणिट्ठाओ[7] •अकताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुण्णाओ अमणामाओ दुक्खाओ° णो सुहाओ। एवमेव[8] णो लद्धपुव्व भवति।

अण्णस्स दुक्ख अण्णो णो परियाइयइ[9], अण्णेण कत[10] अण्णो णो पडिसवेदेइ, पत्तेय जायइ, पत्तेय मरइ, पत्तेय चयइ, पत्तेय उववज्जइ, पत्तेय झझा, पत्तेय सण्णा, पत्तेय मण्णा,[11] •पत्तेय विण्णू, पत्तेय° वेदणा।

इति खलु णातिसजोगा णो ताणाए वा णो सरणाए वा। पुरिसे वा एगया पुव्वि णाइसजोगे विप्पजहइ, णाइसजोगा वा एगया पुव्वि पुरिस विप्पजहति। अण्णे खलु णातिसजोगा, अण्णो अहमसि। से किमग पुण वय अण्णमण्णेहि णाइसजोगेहि मुच्छामो? इति सखाए ण वय णातिसजोगे विप्पजहिस्सामो॥

५२. से मेहावी जाणेज्जा—बाहिरगमेय, इणमेव उवणीयतरग[12], त जहा—हत्था मे पाया मे बाहा मे ऊरू मे उदर मे सीस मे[13] आउ मे बल मे वण्णो मे तया मे

---

१ स० पा०—अणिट्ठाओ जाव णो सुहाओ।

२ एवामेव (क), एवमेय (वृ)।

३ स० पा०—अणिट्ठे जाव णो सुहे।

४ स० पा०—अणिट्ठ जाव णो सुह।

५ मम ज्ञातय (वृ) अत्र 'मा' शब्दोस्ति तथैव पूर्ववर्तीद्वयो सदर्भयोरपि 'मा' शब्दो युज्यते। एकत्र 'मा' शब्द प्रतिष्वपि लभ्यते, एकत्र च 'ताह' अथवा 'नाह' इति अस्पष्टोल्लेख प्राप्यते। उत्तरवर्तिसदर्भानुसारेण प्रथमे सदर्भेपि 'मा' एव शब्दो युज्यते।

६. स० पा०—दुक्खतु वा जाव मा मे परितप्पतु।

७. स० पा०—अणिट्ठाओ जाव णो सुहाओ।

८. एवामेव (ख)।

९ पडियादियति (क), परियादियति (ख), पडियाइयइ (प्रत्यापिवति) (वृ)।

१० कत कम्म (क), कड कम्म (वृ), कड(चू)।

११ स० पा०—एव विण्णू वेदणा।

१२ °तराग (क)।

१३ मे सील मे (क, ख)। अत्र 'शील' शब्दोऽधिक प्रतीयते। शीलस्य नात्र कश्चित् प्रसङ्ग। वृत्तिकृता लिखितमपि पुण्णातीदम्—'एतच्च हस्तपादादिक स्पर्शनेन्द्रियपर्यवसान शरीरावयवसवन्धित्वेन विवक्षितम्'।

छाया मे सोय मे चक्खु मे घाण मे जिब्भा मे फासा[1] मे ममाति[2], वयाओ परिजूरइ[3], त जहा—आऊओ वलाओ वण्णाओ तयाओ छायाओ सोयाओ[4] °चक्खूओ घाणाओ जिब्भाओ° फासाओ। सुसधिता[5] सधी विसधीभवति, वलितरगे गाए भवति, किण्हा केसा पलिया भवति[6]। ज पि य इम सरीरग उराल आहारोवचिय[7].एय पि य मे[8] अणुपुव्वेण विप्पजहियव्व भविस्सति ॥

भिक्खुणो लोगनिस्साविहार-पद

५३ एय सखाए से भिक्खु भिक्खायरियाए समुट्ठिए दुहओ लोग जाणेज्जा, त जहा—जीवा चेव, अजीवा चेव। तसा चेव, थावरा चेव ॥

५४ इह खलु गारत्था सारभा सपरिग्गहा, सतेगइया समणा माहणा वि सारभा सपरिग्गहा—जे इमे तसा थावरा पाणा—ते सय समारभति, अण्णेण वि समारभावेंति, अण्ण पि समारभत समणुजाणति।

इह खलु गारत्था सारभा सपरिग्गहा, सतेगइया समणा माहणा वि सारभा सपरिग्गहा—जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता वा—ते सय परिगिण्हति, अण्णेण वि परिगिण्हावेति, अण्ण पि परिगिण्हत समणुजाणति।

इह खलु गारत्था सारभा सपरिग्गहा, सतेगइया समणा माहणा वि सारभा सपरिग्गहा, अह खलु अणारभे अपरिग्गहे। जे खलु गारत्था सारभा सपरिग्गहा, सतेगइया समणा माहणा वि सारभा सपरिग्गहा, एतेसिं चेव णिस्साए वभचेरवास वसिस्सामो।

कस्स ण त हेउ ?

जहा पुव्व तहा अवर, जहा अवर तहा पुव्व।

अजू एते[9] अणुवरया अणुवट्ठिया पुणरवि तारिसगा चेव।

जे खलु गारत्था सारभा सपरिग्गहा, सतेगइया समणा माहणा वि सारभा सपरिग्गहा दुहओ पावाइ कुव्वति, इति सखाए दोहि वि अतेहिं अदिस्समाणो। इति भिक्खू रीएज्जा ॥

---

१ स्पर्शनेन्द्रियम् (वृ)।
२ ममातिज्जति (क, ख)।
३ पडिजूरइ (ख)।
४ स० पा०—सोयाओ जाव फासाओ।
५ सुसधितो (ख)।
६ भवति, त जहा (क, ख, वृ), अत्र 'त जहा' इति पाठो नावश्यक प्रतिभाति, किन्तु वृत्तिकारेणादर्शे लब्ध तेन व्याख्यात। चूर्णौ नैप लभ्यते।
७ °वइय (ख)।
८ × (ख)।
९ सत (क)।
१० वेते (क)।

५५ से बेमि—पाईण वा पडीण वा उदीण वा दाहिण वा एव से परिण्णातकम्मे, एव से ववेयकम्मे,[1] एव से वियतकारए भवइ त्ति मक्खाय[2]।।

अहिसा-धम्म-पद

५६ तत्थ खलु भगवया छज्जीवणिकाया हेऊ पण्णत्ता, त जहा—पुढवीकाए[3] •आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए °तसकाए।

से जहाणामए मम असाय[4] दडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा[5] वा कवालेण वा आउडिज्जमाणस्स[6] वा हम्ममाणस्स वा तज्जिज्जमाणस्स वा ताडिज्जमाणस्स वा[7] परिताविज्जमाणस्स वा 'किलामिज्जमाणस्स वा उद्दविज्जमाणस्स वा'[8] जाव लोमुक्खणणमायमवि हिसाकारग दुक्ख भय पडिसवेदेमि—इच्चेव जाण।

सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता दडेण वा[9] •अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा° कवालेण वा आउडिज्जमाणा वा हम्ममाणा वा तज्जिज्जमाणा वा ताडिज्जमाणा वा परिताविज्जमाणा वा किलामिज्जमाणा वा उद्दविज्जमाणा वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिसाकारग दुक्ख भय पडिसवेदेंति। एव णच्चा सव्वे पाणा[10] •सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे° सत्ता ण हतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा[11] ण उद्दवेयव्वा।।

५७. से बेमि—जे[12] अईया, जे य पडुप्पण्णा, जे य आगमेस्सा[13] अरहता भगवतो[14] सव्वे ते एवमाइक्खति, एव भासति, एव पण्णवेति, एव परूवेति—सव्वे पाणा[15] •सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे° सत्ता ण हतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा ण उद्दवेयव्वा।।

५८ एस धम्मे धुवे णितिए सासए समेच्च लोग खेयण्णेहि पवेइए[16]।।

भिक्खुचरिया-पद

५९ एव से भिक्खू विरए पाणाइवायाओ[17] •विरए मुसावायाओ विरए अदत्तादाणाओ

---

१ विवेय° (क), वियवेय (ख)।

२ व्या० वि०—मकार अलाक्षणिक।

३ स० पा०—पुढविकाए जाव तसकाए।

४ अस्साय (ख)।

५ लेलूण (ख)।

६. आउट्टि° (ख)।

७ वा ताविज्जमाणस्स वा (क)।

८ उद्दविज्जमाणस्स वा किलामिज्जमाणस्स वा (क), किलामिज्जमाणस्स वा (चू), परिक्लाम्यमानस्य° (वृ)।

९ स० पा०—दडेण वा जाव कवालेण।

१० स० पा०—पाणा जाव सत्ता।

११ परितापेयव्वा (क)।

१२ जे य (क)।

१३ आगमिस्सा (क, ख)।

१४ भगवता (क, ख)।

१५ स० पा०—पाणा जाव सत्ता।

१६ तोलनीयम्—आयारो ४।१, २।

१७ स० पा०—पाणाइवायाओ जाव विरए।

विरए मेहुणाओ ० विरए परिग्गहाओ । णो 'दतपक्खालणेण दते पक्खालेज्जा'[1], णो अजण, णो वमण, णो विरेयण[2], णो धूवणे, णो त परियाविएज्जा'[3] ॥

६० से भिक्खू अकिरिए अलूसए अकोहे अमाणे अमाए अलोहे उवसते परिणिव्वुडे णो आसस पुरतो करेज्जा[4]—इमेण मे दिट्ठेण वा सुएण वा मएण[5] वा विण्णाएण वा, इमेण वा सुचरिय-तव-णियम-बभचेरवासेण, इमेण वा जायामायावुत्तिएण[6] धम्मेण इतो चुते पेच्चा[7] देवे सिया 'कामभोगाण वसवत्ती'[8], सिद्धे वा अदुक्खमसुहे[9] । एत्थ वि सिया, एत्थ वि णो सिया ॥

६१. से भिक्खू 'सद्देहिं अमुच्छिए रूवेहिं अमुच्छिए गधेहिं अमुच्छिए रसेहिं अमुच्छिए फासेहिं'[10] अमुच्छिए, विरए—कोहाओ माणाओ मायाओ लोभाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादसणसल्लाओ—इति से महतो आदाणाओ उवसते उवट्ठिए पडिविरते ॥

६२ से भिक्खू[11]—जे इमे तसथावरा पाणा भवति—ते णो सय समारभइ, णो अण्णेहिं[12] समारभावेइ, अण्णे समारभते वि ण समणुजाणइ—इति से महतो आदाणाओ उवसते उवट्ठिए पडिविरते ॥

६३ से भिक्खू—जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता वा—ते णो सय परिगिण्हइ, 'णो अण्णेण'[13] परिगिण्हावेइ, अण्ण परिगिण्हतपि ण समणुजाणइ—इति से महतो आदाणाओ उवसते उवट्ठिए पडिविरते ॥

६४ से भिक्खू—ज पि य इम सपराइय कम्म कज्जइ—णो त सय करेइ, 'णो अण्णेण'[14] कारवेइ, अण्ण पि करेत 'ण समणुजाणइ'[15]—इति से महतो आदाणाओ उवसते उवट्ठिए पडिविरते ॥

६५ से[16] भिक्खू जाणेज्जा—असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अस्सिपडियाए

---

१ दतवणेण दते धोवेज्जा (चू) ।

२ चूर्णौ वृत्तौ च 'विरेयण' व्याख्यानमस्ति, प्रत्यो नोपलभ्यते ।

३ ०द्दितेज्जा (क) ।

४ कुज्जा (ख) ।

५ मुएण (क, ख) ।

६ ०वत्तिएण (ख) ।

७ पिच्चा (क, ख) ।

८ काम कमी कामवसवत्ती (चू) ।

९ ०मसुभे (ख) ।

१० सद्देसु जाव फासेसु (क) ।

११ चूर्णौ वृत्तौ चास्य पाठाशस्य सवन्ध पूर्वसूत्रेण योजित , किन्तु 'से भिक्खू' 'जे इमे' इति सूत्रस्य कर्तृपदमस्ति, तेनास्माभि प्रस्तुत-सूत्रेणैवास्य सम्वन्धयोजना कृता । अग्रिमसूत्रे चूर्णिकृतापि इत्यमेव योजना कृतास्ति ।

१२ वण्णेहिं (ख), अत्र पारिपार्श्विकप्रकरणे कारितानुमोदने प्राय एकवचनमस्ति किन्तु अत्र बहुवचन लभ्यते ।

१३ णेवण्णेण (क) ।

१४ नेवण्णेण (क, ख) ।

१५ णाणुजाणइ (क, ख) ।

१६ तोलनीयम्—'आयारचूला' १।१२ ।

एग साहम्मिय समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ[1] समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टुद्देसिय, त चेतिय सिया, त णो सय भुजइ, णो अण्णेण भुजावेइ, अण्ण पि भुजत ण समणुजाणइ—इति से महतो आदाणाओ उवसते उवट्ठिए पडिविरते ।।

६६ से भिक्खू अह पुण एव जाणेज्जा—त विज्जइ तेसि परक्कमे। जस्सट्ठाए चेतिय सिया, त जहा—अप्पणो पुत्ताण धूयाण सुण्हाण धातीण णातीण राईण दासाण दासीण कम्मकराण कम्मकरीण आएसाण[2] पुढो पहेणाए सामासाए पातरासाए सण्णिहि-सण्णिचओ कज्जति, इह एएसि माणवाण भोयणाए।

तत्थ भिक्खू परकड-परणिट्ठित उग्गमुप्पायणेसणासुद्ध सत्थातीत सत्थपरिणामित अविहिंसित एसित वेसित सामुदाणिय पण्णमसण[3] कारणट्ठा पमाणजुत्त अक्खोवजण-वणलेवणभूय, सजमजायामायावुत्तियं[4] विलमिव पण्णगभूतण अप्पाणेण आहार आहारेज्जा—अण्ण अण्णकाले पाण पाणकाले वत्थ वत्थकाले लेण लेणकाले सयण सयणकाले ।।

धम्म-देसणा-पदं

६७ से भिक्खू मायण्णे अण्णयरिं दिस वा अणुदिस वा पडिवण्णे धम्म आइक्खे विभए किट्टे, उवट्ठिएसु वा अणुवट्ठिएसु वा सुस्सूसमाणेसु पवेदए—'संतिं विरतिं'[5] उवसम णिव्वाण सोयविय[6] अज्जविय मद्दविय लाघविय अणतिवातिय ।।

६८ सव्वेसि पाणाण सव्वेसि भूयाण सव्वेसि जीवाण सव्वेसि सत्ताण अणुवीइ किट्टए धम्मं ।।

६९. से भिक्खू धम्म किट्टेमाणे—णो अण्णस्स हेउ धम्ममाइक्खेज्जा। णो पाणस्स हेउ धम्ममाइक्खेज्जा। णो वत्थस्स हेउ धम्ममाइक्खेज्जा। णो लेणस्स हेउ धम्ममाइक्खेज्जा। णो सयणस्स हेउ धम्ममाइक्खेज्जा। णो अण्णेसि विरूव-रूवाण कामभोगाण हेउ धम्ममाइक्खेज्जा। अगिलाए धम्ममाइक्खेज्जा। णण्णत्थ कम्मणिज्जरट्ठयाए धम्ममाइक्खेज्जा ।।

---

१ समारम्भ (क)।

२ आदेसाण (ख)।

३. व्या० वि०—प्राज्ञम्—गीतार्थेन उपात्तम्।

४ ०वत्तिय (ख)।

५ सतिविरतिं (क, ख, वृ), वृत्तिकारेण 'सतिविरइ' इति सयुक्तपाठ स्वीकृत, तथा च—शान्ति—उपशम क्रोधजयस्तत्प्रधाना प्राणातिपातादिभ्यो विरति शान्तिविरति, यदि वा शान्ति—अशेषक्लेशोपशमरूपा तस्यै—तदर्थं विरति शान्तिविरतिस्ता कथयेत् (वृ), किन्तु चूर्णिकारेण 'जहा धुते' इति समर्पण कृतम्। आचारस्य धुताध्ययने (६।१०२) 'संतिं विरतिं' इति असयुक्त पाठोस्ति। तमनुसृत्यास्माभिस्तथैव स्वीकृत।

६ तथा सोयविय (ख)।

७० इह खलु तस्स भिक्खुस्स अतिए[1] धम्म सोच्चा णिसम्म सम्म उट्ठाणेण उट्ठाय वीरा अस्सि धम्मे समुट्ठिया। जे तस्स भिक्खुस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म सम्म उट्ठाणेण उट्ठाय वीरा अस्सि धम्मे समुट्ठिया, ते एव सव्वोवगता, ते एव सव्वोवरता, ते एव सव्वोवसता, ते एव सव्वत्ताए परिणिव्वुड त्ति वेमि ॥

भिक्खु-वयणिज्ज-पदं

७१ एव से भिक्खू धम्मट्ठी धम्मविऊ णियागपडिवण्णे, से जहेय वुइय, अदुवा पत्ते पउमवरपोडरीय, अदुवा अपत्ते पउमवरपोडरीय।

७२ एव से भिक्खू परिण्णायकम्मे परिण्णायसगे परिण्णायगेहवासे उवसते समिए सहिए सया जए। से एय[2]-वयणिज्जे, त जहा—समणे ति वा माहणे ति वा खते ति वा दते ति वा गुत्ते ति वा मुत्ते ति वा इसी ति वा मुणी ति वा कती[3] ति वा विदू ति वा भिक्खू ति वा लूहे ति वा तीरट्ठी ति वा चरणकरणपारविउ।

—त्ति बेमि ॥

---

१ अतिय से (क)।

२. एव (ख)।

३ किती (ख)।

बीअं अज्झयणं

किरियाठाणे

उक्खेव-पद

१ सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु किरियाठाणे णामज्झयणे[1] पण्णत्ते। तस्स णं अयमट्ठे, इह खलु संजूहेणं दुवे ठाणा एवमाहिज्जंति, तं जहा—धम्मे चेव अधम्मे चेव, उवसंते चेव अणुवसंते चेव॥

अधम्मपक्खे किरिया-पदं

२ तत्थ णं जे से पढमठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे[2], तस्स णं अयमट्ठे, इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे, उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे, कायमंता वेगे हस्समंता[3] वेगे, सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे, सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे। तेसिं च णं इमं एयारूवं दंडसमादाणं[4] संपेहाए, तं जहा—णेरइएसु तिरिक्खजोणिएसु माणुसेसु देवेसु जे यावण्णे तहप्पगारा पाणा विण्णू वेयणं वेयंति। तेसिं पि य णं इमाइं तेरस किरियाठाणाइं भवंतीति मक्खायं[5], तं जहा—अट्ठादंडे[6], अणट्ठादंडे[7], हिंसादंडे, अकस्मादंडे[8], दिट्ठिविपरियासियादंडे[9], मोसवत्तिए,

---

१ णाममज्झयणे (क)।
२ विहंगे (क, ख)।
३ हुस्स° (क)।
४ डंड° (ख)।
५ मक्खायाइं (क, चू)।
६ व्या० वि०—अत्र अकारस्य दीर्घत्वम्।
७ व्या० वि०—अत्र अकारस्य दीर्घत्वम्।
८ अकम्हा° (क, ख), इह चाकस्मादित्यय शब्दो मगधदेशे सर्वेणाप्यागोपालाङ्गनादिना संस्कृतएवोच्चार्यंत इति (वृ०, सू० ६)।
९ °विप्परि° (ख)।

अदिण्णादाणवत्तिए, अज्झत्थिए, माणवत्तिए, मित्तदोसवत्तिए, मायावत्तिए, लोभवत्तिए, इरियावहिए ॥

अट्ठादंड-पद

३ पढमे दडसमादाणे अट्ठादडवत्तिए[1] त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ[2] पुरिसे आयहेउ वा णाइहेउ वा अगारहेउ वा परिवारहेउ[3] वा मित्तहेउ वा णागहेउ वा भूयहेउ वा जक्खहेउ वा त दड तसथावरेहिं पाणेहिं सयमेव णिसिरति, अण्णेण वि णिसिरावेति अण्ण पि णिसिरत समणुजाणति। एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्ज ति आहिज्जइ।
पढमे दडसमादाणे अट्ठादडवत्तिए[4] त्ति आहिए ॥

अणट्ठादड-पदं

४ अहावरे दोच्चे दडसमादाणे अणट्ठादडवत्तिए त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे जे इमे तसा पाणा भवति, ते णो अच्चाए णो[5] अजिणाए णो मसाए णो सोणियाए णो हिययाए णो पित्ताए णो वसाए णो पिच्छाए[6] णो पुच्छाए णो वालाए णो सिंगाए णो विसाणाए 'णो दताए णो दाढाए'[7] णो णहाए णो ण्हारुणिए णो अट्ठीए णो अट्ठिमिजाए[8],
'णो हिंसिसु मे त्ति, णो हिंसति मे त्ति, णो हिंसिस्सति'[9] मे त्ति,
णो पुत्तपोसणाए णो पसुपोसणाए[10] णो अगारपरिवूहणयाए[11] णो समणमाहण-वत्तणाहेउ[12] णो तस्स सरीरगस्स 'किंचि विपरियाइत्ता'[13] भवति।
से हता छेत्ता भेत्ता लुपइत्ता विलुपइत्ता ओदवइत्ता[14] उज्झिउ वाले वेरस्स आभागी भवति[15]—अणट्ठादडे।
से जहाणामए केइ पुरिसे जे इमे थावरा पाणा भवति, त जहा—इक्कडा इ वा

---

१ अट्ठादडे (वृ)।
२ केति (क, ख)।
३ परियार° (चू)।
४ अट्ठादडे (क, ख)।
५ एव हियाए पित्ताए (क, ख)।
६ पिंछाए (क)।
७ वृत्तौ नैतौ शब्दौ व्याख्यातौ स्त।
८ °मजाए (ख)।
९ चूर्णौ कालत्रयेपि एकवचनम्।
१० पसुपोसणयाए (क)।
११ °परिवहणताए (क)।
१२ °वत्तियहेउ (क)।
१३ किंचि परियादित्ता (क), किञ्चित् परित्राण (वृ)।
१४ उवद्दवइत्ता (क)।
१५ भवति—से (क)।

कडिणा[1] इ वा जतुगा इ वा परगा इ वा मोरका इ वा तणा इ वा कुसा इ वा कुच्छगा[2] इ वा पव्वगा[3] इ वा पलाला[4] इ वा—ते णो पुत्तपोसणाए[5] णो पसुपोसणाए णो अगारपरिवूहणयाए[6] णो समणमाहणवत्तणाहेउ[7] णो तस्स सरीरगस्स 'किंचि विपरियाइत्ता'[8] भवति ।

से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता ओदवइत्ता उज्झिउ वाले वेरस्स आभागी भवइ—अणट्ठादंडे ।

से जहाणामए केइ पुरिसे कच्छंसि वा दहंसि वा उदगंसि वा दवियंसि वा वलयंसि वा णूमंसि वा गहणंसि वा गहणविदुग्गंसि वा वणंसि वा वणविदुग्गंसि वा 'पव्वयंसि वा पव्वयविदुग्गंसि वा'[9] तणाइं ऊसविय-ऊसविय सयमेव अगणिकायं णिसिरति, अण्णेण वि अगणिकायं णिसिरावेति, अण्णं पि अगणिकायं णिसिरंतं समणुजाणति—अणट्ठादंडे । एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं[10] ति आहिज्जइ ।

दोच्चे दंडसमादाणे अणट्ठादंडवत्तिए त्ति आहिए ॥

हिंसादंड-पदं

५ अहावरे तच्चे दंडसमादाणे हिंसादंडवत्तिए त्ति आहिज्जइ --

से जहाणामए केइ पुरिसे ममं वा ममियं[11] वा अण्णं वा अण्णियं[12] वा 'हिंसिंसु वा, हिंसंति वा, हिंसिस्संति'[13] वा, तं दंडं तसथावरेहिं पाणेहिं सयमेव णिसिरइ, अण्णेण वि णिसिरावेइ, अण्णं पि णिसिरंतं समणुजाणइ—हिंसादंडे । एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जं[14] ति आहिज्जइ ।

तच्चे दंडसमादाणे हिंसादंडवत्तिए त्ति आहिए ॥

---

१ कठिणा (ख) ।
२ कुच्चग (आयारचूला—२।६३) ।
३ पप्पगा (क, ख), पिप्पलग (आयारचूला—२।६३) ।
४ पलालए (क, ख) ।
५ °पोसणयाए (क) सर्वत्र ।
६ अगारपोसणयाए (क, ख) ।
७ समणमाहणपोसणयाए (क, ख) ।
८ किंचि परियादित्ता (क), किमपि परित्रा-णाय (वृ) ।
९ वृत्तौ नेमौ शब्दौ स्वीकृतौ स्त, यथा—कच्छादिकेषु दशसु स्थानेषु वनदुर्गपर्यन्तेषु ।
१० सावज्जे (क, ख) ।
११ ममिं (ख) ।
१२ अण्णि (ख) ।
१३ वृत्तौ कालत्रये पि एकवचनमस्ति, किन्तु इत पूर्वस्मिन् सूत्रे कालत्रये पि तत्र बहु-वचनं व्याख्यातमस्ति ।
१४ सावज्जे (क) ।

अकस्मादंड-पद

६ अहावरे चउत्थे दडसमादाणे अकस्मादडवत्तिए[1] त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे कच्छसि वा[2] °दहसि वा उदगसि वा दवियसि वा वलयसि वा णूमसि वा गहणसि वा गहणविदुग्गसि वा वणसि वा वणविदुग्गसि वा पव्वयसि वा° पव्वयविदुग्गसि वा मियवत्तिए[3] मियसकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गता "एते मिय" त्ति काउ अण्णयरस्स मियस्स वहाए उसु[4] आयामेत्ता ण णिसिरेज्जा, से[5] "मिय वहिस्सामि" त्ति कट्टु तित्तिर वा वट्टग वा 'चडग वा'[6] लावग वा कवोयग वा कविं वा कविजल वा विंधित्ता भवति —इति[7] खलु से अण्णस्स अट्ठाए अण्ण फुसइ—अकस्मादडे[8] ।
से जहाणामए केइ पुरिसे सालीणि वा वीहीणि वा कोद्दवाणि वा कगूणि वा परगाणि वा रालाणि वा णिलिज्जमाणे[9] अण्णयरस्स तणस्स वहाए सत्थ णिसिरेज्जा, से "सामग तणग मुकुदुग[10] वीहीऊसिय[11] कलेसुय तण छिंदिस्सामि" त्ति कट्टु सालिं वा वीहिं वा कोद्दव वा कगु वा परग वा रालय वा छिंदित्ता भवति—इति खलु से अण्णस्स अट्ठाए अण्ण फुसति—अकस्मादडे । एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्ज[12] ति आहिज्जइ ।
चउत्थे दडसमादाणे अकस्मादडवत्तिए आहिए ॥

दिट्ठिविपरियासियादड-पद

७ अहावरे पचमे दडसमादाणे दिट्ठिविपरियासियादडवत्तिए[13] त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे माईहिं वा पिईहिं वा भाईहिं वा भगिणीहिं वा भज्जाहिं वा पुत्तेहिं वा धूयाहिं वा सुण्हाहिं वा सद्धिं सवसमाणे मित्त अमित्तमिति[14] मण्णमाणे मित्ते हयपुव्वे भवइ—दिट्ठिविपरियासियादडे ।
से जहाणामए केइ पुरिसे गामघायसि वा णगरघायसि वा खेडघायसि कव्वडघायसि मडवघायसि वा दोणमुहघायसि वा पट्टणघायसि वा

---

१ अकम्हा° (ख) ।
२. स० पा०—कच्छसि वा जाव पव्वयविदुग्गसि वा, कच्छसि वा जाव वणविदुग्गसि वा (ख), कच्छे वा यावद् वनदुर्गे वा (वृ) ।
३ °वित्तिए (ख) ।
४ उसुग (क) ।
५ स (ख) ।
६, × (क) ।
७ इह (क, ख) ।
८ अकम्हा° (ख) सर्वत्र ।
९ णितिज्जमाणे (ख) ।
१० मुकुदग (ख), कुमुदग (क्व) ।
११ वाहिरूसित (क) ।
१२ सावज्जे (क) ।
१३ °दडे (क, ख) ।
१४ अमित्तमेव (ख) ।

आसमघायसि वा सण्णिवेसघायसि वा णिगमघायसि वा रायहाणिघायसि वा अतेण तेणमिति मण्णमाणे अतेणे हयपुव्वे भवइ—दिट्ठिविपरियासियादडे। एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्ज[1] ति आहिज्जइ।
पचमे दडसमादाणे दिट्ठिविपरियासियादडवत्तिए[2] त्ति आहिए ॥

मोसवत्तिय-पदं

८ अहावरे छट्ठे किरियट्ठाणे मोसवत्तिए त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे आयहेउ वा णाइहेउ[3] वा अगारहेउ वा परिवारहेउ सयमेव मुस वयति, अण्णेण वि मुस वयावेइ, मुसं वयत पि अण्ण समणुजाणति। एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्जं ति आहिज्जइ।
छट्ठे किरियट्ठाणे मोसवत्तिए त्ति आहिए ॥

अदिण्णादाणवत्तिय-पद

९ अहावरे सत्तमे किरियट्ठाणे अदिण्णादाणवत्तिए त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे आयहेउ वा[4] °णाइहेउ वा अगारहेउ वा° परिवारहेउ वा सयमेव अदिण्ण आदियति, अण्णेण वि अदिण्ण आदियावेति, अदिण्ण आदियत पि अण्ण समणुजाणइ। एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्ज ति आहिज्जइ।
सत्तमे किरियट्ठाणे अदिण्णादाणवत्तिए त्ति आहिए ॥

अज्झत्थिय-पदं

१० अहावरे अट्ठमे किरियट्ठाणे[5] अज्झत्थिए[6] त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे—णत्थि ण केइ किंचि विसवादेइ—सयमेव हीणे दीणे दुट्ठे दुम्मणे ओहयमणसकप्पे चितासोगसागरसपविट्ठे[7] करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठिए झियाति, तस्स ण अज्झत्थिया असंसइया[8] चत्तारि ठाणा एवमाहिज्जति, त जहा—कोहे माणे माया लोहे[9]। एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्ज ति आहिज्जइ।
अट्ठमे किरियट्ठाणे अज्झत्थिए त्ति आहिए ॥

---

१ सावज्जे (क)।
२ °दडे (क, ख)।
३ णाय° (क, ख)।
४ स० पा०—आयहेउ वा जाव परिवारहेउ।
५ किरियाठाणे (क, ख)।
६ अज्झत्थवत्तिए (ख)।
७ °सागरपविट्ठे (वृ)।
८ आससइया (ख)।
९ लोहे। अज्झत्थमेव कोहमाणमायालोहे (क्व)।

माणवत्तिय-पद

११ अहावरे णवमे किरियट्ठाणे माणवत्तिए त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे जाइमदेण वा कुलमदेण वा बलमदेण वा रूवमदेण वा तवमदेण वा सुयमदेण वा लाभमदेण वा इस्सरियमदेण वा पण्णामदेण वा, अण्णयरेण वा मदट्ठाणेण मत्ते समाणे पर हीलेति णिंदेति खिसति गरिहति[1] परिभवति अवमण्णति। "इत्तरिए[2] अय, अहमसि पुण विसिट्ठजाइ-कुलबलाइगुणोववेए"—एव अप्पाण समुक्कसे[3]। देहा चुए कम्मविइए[4] अवसे पयाति, त जहा—गब्भाओ गब्भ जम्माओ जम्म माराओ मार णरगाओ णरग। चडे थद्धे चवले माणी यावि भवइ। एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्ज ति आहिज्जइ।
णवमे किरियट्ठाणे माणवत्तिए त्ति आहिए॥

मित्तदोसवत्तिय-पद

१२ अहावरे दसमे किरियट्ठाणे मित्तदोसवत्तिए त्ति आहिज्जइ—
से जहाणामए केइ पुरिसे माईहिं[5] वा पिईहिं[6] वा भाईहिं वा भइणीहिं वा भज्जाहिं वा धूयाहिं वा पुत्तेहिं वा सुण्हाहिं वा सद्धि सवसमाणे तेसिं अण्णयरसि अहालहुगसि अवराहसि सयमेव 'गरुय दड णिव्वत्तेति'[7], त जहा—सीओदगवियडसि वा काय उब्बोलेत्ता[8] भवइ, उसिणोदगवियडेण वा काय ओसिंचित्ता[9] भवइ, अगणिकायेण काय उद्दहित्ता[10] भवइ, जोत्तेण वा वेत्तेण वा णेत्तेण वा तया[11] वा 'कसेण[12] वा छियाए वा'[13] लयाए वा 'अण्णयरेण वा दवरएण'[14] पासाइ उद्दालित्ता भवति, दडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा[15] वा कवालेण वा काय आउट्टित्ता[16] भवति।

---

१ गरहति (ख)।
२ इत्तिरिए (क)।
३ समुक्कोसे (ख)।
४ °वितिए (क)।
५ मादीहिं (क)।
६ पितिहिं (ख)।
७ गुरुय डड वत्तेति (क)।
८ उवोलेत्ता (क), उच्छोलित्ता (ख), उद्ब्रोडयिता—अत्र 'वोल' धातु प्रयोगो वतते। वृत्तावपि 'वोलयिता' इति व्याख्यातमस्ति। प्राचीनलिप्या सयुक्त-वकारस्य तथा सयुक्तछकारस्य, असयुक्त-वकारछकारयोरपि सादृश्यमस्ति, ततो लिपिदोषेण 'उवो[ब्बो]लेत्ता' स्थाने 'उच्छोलेत्ता' जातमिति प्रतीयते।
९ उस्सिचित्त (चू)।
१० उवडहित्ता (ख), उड्डहित्ता (चू)।
११ तयाइ (ख)।
१२ कसेण (क,) कडएण (चू)।
१३ × (वृ)।
१४ × (क, ख, चू)।
१५ लेलूण (ख)।
१६ उपताडयिता (वृ)।

तहप्पगारे पुरिसजाते सवसमाणे दुम्मणा भवति, पवसमाणे सुमणा भवति ।
तहप्पगारे पुरिसजाते दडपासी, दडगरुए[1], दडपुरक्खडे, अहिते इमसि लोगसि, अहिते परसि लोगसि, सजलणे कोहणे, पिट्ठिमसियावि[2] भवइ । एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्ज ति आहिज्जति ।
दसमे किरियट्ठाणे मित्तदोसवत्तिए त्ति आहिए ॥

मायावत्तिय-पदं

१३ अहावरे एक्कारसमे किरियट्ठाणे मायावत्तिए त्ति आहिज्जइ[3]—जे इमे भवति गूढायारा तमोकासिया[4] उलूगपत्तलहुया[5] पव्वयगुरुया, ते आरिया वि सता अणारियाओ भासाओ पउजति[6], अण्णहा सत[7] अप्पाण अण्णहा मण्णति, अण्ण पुट्ठा अण्ण वागरेंति, अण्ण आइक्खियव्व अण्ण आइक्खति ।
से जहाणामए केइ पुरिसे अतोसल्ले त सल्ल णो सय णीहरति, णो अण्णेण णीहरावेति[8], णो पडिविद्धसेति, एवमेव णिण्हवेति, अविउट्टमाणे अतो-अतो रियाति[9], एवमेव माई माय कट्टु णो आलोएइ, णो पडिक्कमेइ, णो णिंदइ, णो गरहइ, णो विउट्टइ, णो विसोहेइ, णो अकरणाए अब्भुट्ठेइ, णो अहारिह तवोकम्म पायच्छित्त पडिवज्जइ ।
माई अस्सि लोए पच्चायाति, माई[10] परसि लोए पच्चायाति[11], णिंदइ[12], पससति, णिच्चरति, ण[13] णियट्टति, णिसिरिया[14] दड छाएइ, माई[15] असमाहडसुहलेस्से[16] यावि भवइ । एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्ज ति आहिज्जइ ।
एक्कारसमे किरियट्ठाणे मायावत्तिए त्ति आहिए ॥

लोभवत्तिय-पदं

१४ अहावरे बारसमे किरियट्ठाणे लोभवत्तिए त्ति आहिज्जइ[17]—जे इमे भवति[18]

---

१ °गुरुए (क, ख) ।
२ पट्ठि° (ख) ।
३ आहिज्जइ, त जहा—(वृ) ।
४ तमोकाइया (चू) ।
५ उलुग° (ख, चू) ।
६ विउजति (क, चू), विप्पउजति (ख) ।
७ सति (क) ।
८ णीहारा° (ख) ।
९ क्रियानि (व), झोसियाति (चू) ।
१० माती (क) ,
११ पुणो पुणो पच्चा (वृ) ।
१२ निंदइ गहाय (क); निंदइ गरहइ (ख), निंदा गरहा (चू) ।
१३ णो (चू) ।
१४ निसिरिय (ख, चू) ।
१५. मायी (क, ख) ।
१६. असमाहिद° (क), असमाहडलेस्से (चू) ।
१७ आहिज्जइ, त जहा—(वृ) ।
१८ भवन्ति, त जहा (वृ) ।

आरण्णिया आवसहिया गामतिया कण्हुईरहस्सिया[1] णो बहुसजया, णो बहुपडि-विरया सव्वपाणभूयजीवसत्तेहिं, ते अप्पणा[2] सच्चामोसाइ एव विउजति—अह ण हतव्वो अण्णे हतव्वा, अह ण अज्जावेयव्वो अण्णे अज्जावेयव्वा, अह ण परिघेतव्वो अण्णे परिघेतव्वा, अह ण परितावेयव्वो अण्णे परितावेयव्वा, अह ण उद्दवेयव्वो अण्णे उद्दवेयव्वा।

एवामेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया[3] अज्झोववण्णा जाव वासाइ चउपचमाइ छद्दसमाइ अप्पयरो वा भुज्जयरो वा भुजित्तु भोगभोगाइ कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु आसुरिएसु किब्बिसिएसु ठाणेसु उववत्तारो भवति। तओ[4] विप्पमुच्चमाणा भुज्जो 'एलमूयत्ताए तमूयत्ताए[5] जाइमूयत्ताए'[6] पच्चा-यति। एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्ज त्ति आहिज्जइ।

दुवालसमे किरियट्ठाणे लोभवत्तिए त्ति आहिए॥

१५ इच्चेताइ दुवालस किरियट्ठाणाइ दविएण समणेण वा माहणेण वा सम्म सुपरिजाणियव्वाणि[7] भवति॥

इरियावहिय-पदं

१६ अहावरे तेरसमे[8] किरियट्ठाणे इरियावहिए त्ति आहिज्जइ—इह खलु अत्तत्ताए सवुडस्स अणगारस्स इरियासमियस्स भासासमियस्स एसणासमियस्स आयाण-भड-ऽमत्त-णिक्खेवणासमियस्स उच्चार-पासवण-खेल-'सिंघाण-जल्ल'[9]-पारिट्ठा-

---

१ कण्हुतीराहुसिया (क)।

२ अप्पणो (क)।

३ गढिया गरहिया (क, ख), असौ 'गढिया' शब्दस्यैव रूपान्तरमस्ति। वृत्तिकारेण चत्वार एव शब्दा व्याख्याता, यथा—मूर्च्छिता गृद्धा ग्रथिता अध्युपपन्ना।

४ तातो (क)।

५ तम्मूय° (क), × (ख), तमोकाइयत्ताए (चू)।

६ 'एलमूयत्ताए' इति पाठश्चतुर्षु स्थलेषु विद्यते। तत्र अग्रिम पाठ सर्वत्र भिन्नोस्ति, यथा—
२।२।१४ एलमूयत्ताए तमूयत्ताए जाइमूयत्ताए।
२।२।१८ एलमूयत्ताए तमघयाए।
२।२।५६ एलमूयत्ताए तमूयत्ताए।
२।७।२५ एलमूयत्ताए तमोरूवत्ताए।
२।२।१४ स्थाने चूर्णौ 'तमोकाइयत्ताए' पाठोस्ति, २।२।१८, २।७।२५ अनयो, स्थलयोरपि 'तमोकाइयत्ताए' इत्यस्य तुल्यार्थतास्ति। तेन प्रतीयतेत्र तमोवाचक पाठ प्रयुक्तोस्ति। 'तमूयत्ताए' इत्यपि 'तमोयत्ताए' [तमस्तया] इत्यस्य ऊकारकृत प्रयोगो वर्तते। अस्माभि यस्मिन् स्थले यादृश पाठो लब्ध तादृश एव स्वीकृत।

७. पडिलेहितव्वाणि (चू)।

८ तेरसे (क)।

९ जल्ल-सिंघाणग (क)।

वणियासमियस्स मणसमियस्स वइसमियस्स[1] कायसमियस्स मणगुत्तस्स वइ-गुत्तस्स[2] कायगुत्तस्स गुत्तिदियस्स गुत्तबंभयारिस्स आउत्तं गच्छमाणस्स[3] आउत्तं चिट्ठमाणस्स आउत्तं णिसीयमाणस्स आउत्तं तुयट्टमाणस्स 'आउत्तं भुंजमाणस्स आउत्तं भासमाणस्स'[4] आउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं गिण्हमाणस्स वा णिक्खिवमाणस्स वा जाव चक्खुपम्हणिवायमवि, अत्थि विमाया सुहुमा किरिया इरियावहिया णाम कज्जइ—सा पढमसमए बद्धपुट्ठा[5] वितियसमए[6] वेइया ततियसमए णिज्जिण्णा। सा बद्धपुट्ठा उदीरिया वेइया णिज्जिण्णा सेयकाले अकम्मयाऽवि[7] भवइ[8]। एवं खलु तस्स तप्पत्तियं[9] आहिज्जइ।

तेरसमे[10] किरियट्ठाणे इरियावहिए त्ति आहिए॥

१७ से बेमि—जे य अईया जे य पडुप्पण्णा जे य आगमेस्सा अरहंता भगवंता सव्वे ते एयाइं चेव तेरस किरियट्ठाणाइं भासिंसु वा भासेंति वा भासिस्संति वा, पण्णवेंसु वा पण्णवेंति वा पण्णवेस्संति वा, एवं चेव तेरसमं किरियट्ठाणं सेविंसु वा सेवंति वा सेविस्संति वा॥

पावसुयज्झयण-पदं

१८ अदुत्तरं च णं पुरिस-विजय-विभंगमाइक्खिस्सामि—इह खलु णाणापण्णाणं णाणाछंदाणं णाणासीलाणं णाणादिट्ठीणं णाणारुईणं[11] णाणारंभाणं णाणाज्झव-साणसंजुत्ताणं 'इहलोगपडिबद्धाणं परलोगणिप्पिवासाणं विसयतिसियाणं इणं'[12] णाणाविहं 'पावसुयज्झयणं भवइ'[13], तं जहा—१ भोमं २ उप्पायं ३ सुविणं

---

१. वयसमि° (ख)।
२ वयगु° (ख)।
३ आणपाणमाणस्स (चू)।
४ आउत्तं भुंजमाणस्स (ख), × (चू)।
५ बद्धा° (ख)।
६ विईय° (क्व)।
७ अकम्म या वि (चू)।
८ तोलनीयम्—भगवती ३।१४८।
९ तप्पत्तिं सावज्जं ति (क, ख), प्रयुक्तप्रत्यो तथान्येष्वपि प्रचुरेषु आदर्शेषु 'सावज्जं' अथवा 'सावज्जे' पाठोत्र लभ्यते, किन्तु पूर्ववर्ति-द्वादशक्रियास्थानगताभ्यासेन लिपिप्रमादोसौ-जात इति प्रतीयते। अर्थविचारणया नासौ पाठः संगतोस्ति। ईर्यापथिक्या क्रियाया बन्धो न च नाम सावद्यो भवति। चूर्णौ वृत्तौ चापि नास्ति स पाठो व्याख्यातः। चूर्णिकारेण स्पष्टं कृतमस्ति विवेचनम्—हेट्ठिल्ला पुण सावज्जा चेव बारस किरिया-ट्ठाणाइं भवंति, एवं पव्वइओ वा उप्पव्वइओ वा, एवं सरागसंयतस्स सावज्जो चेव (चूर्णी पृ० ३५३)। वृत्तिकारेणापि 'सावज्जं' शब्दस्य नोल्लेखः कृतः। एवं तावद् वीतरा-गस्येर्याप्रत्ययिकं कर्म 'आवीयते'—संबध्यते। (वृत्तिपत्र ५८ पंक्ति ९)।
१० तेरसे (क)।
११ °रुतीणं (क)।
१२ × (क, ख)।
१३ पावसुत्तपसंगं वण्णइस्सामि (चू), पावसुय-ज्झयणं एवं भवइ (क, ख)।

४ अतलिक्ख ५ अग ६. सर ७ लक्खण ८ वजण ९ इत्थिलक्खण १० पुरिसलक्खण ११ हयलक्खण १२ गयलक्खण १३ गोणलक्खण १४ मेंढलक्खण १५ कुक्कुडलक्खण १६ तित्तिरलक्खण १७ वट्टगलक्खण १८ लावगलक्खण १९ चक्कलक्खण २० छत्तलक्खण २१ चम्मलक्खण २२ दडलक्खण २३ असिलक्खण २४ मणिलक्खण २५ कागणिलक्खण २६ सुभगाकर २७ दुब्भगाकर २८ गब्भाकर २९ मोहणकर ३० आहव्वणि ३१ पागसासणि[1] ३२ दव्वहोम ३३ खत्तियविज्ज[2] ३४ चदचरिय ३५ सूरचरिय ३६ सुक्कचरिय ३७ बहस्सइचरिय[3] ३८ उक्कापाय ३९ दिसादाह[4] ४० मियचक्क ४१ वायसपरिमडल ४२ पसुवुट्ठि[5] ४३ केसवुट्ठि ४४ मसवुट्ठि ४५ रुहिरवुट्ठि ४६ वेयालि ४७ अद्धवेयालि ४८ ओसोवणि[6] ४९ तालुग्घाडणि[7] ५० सोवागि ५१ सावरि[8] ५२ दामिलि[9] ५३ कालिंगि ५४ गोरि ५५ गधारि ५६ 'ओवतणि ५७ उप्पतणि'[10] ५८ जभणि ५९ थभणि ६० लेसणि ६१ आमयकरणि ६२ विसल्लकरणि ६३ पक्कमणि[11] ६४ अतद्धाणि[12]। एवमाइयाओ विज्जाओ अण्णस्स हेउ पउजति[13], पाणस्स हेउ पउजति, वत्थस्स हेउ पउजति, लेणस्स हेउ पउजति, सयणस्स हेउ पउजति, अण्णेसिं वा विरूवरूवाण कामभोगाण हेउ पउजति, तेरिच्छ[14] ते विज्ज सेवति[15], ते अणारिया विप्पडिवण्णा कालमासे काल किच्चा 'अण्णयरेसु आसुरिएसु किव्विसिएसु ठाणेसु'[16] उववत्तारो भवति। ततो वि विप्पमुच्चमाणा[17] भुज्जो एलमूयत्ताए तमधयाए पच्चायति ॥

चउद्दसविह-कूरकम्मकरण-पद

१९ से एगइओ आयहेउ वा 'णाइहेउ वा'[18] अगारहेउ वा परिवारहेउ वा णायग वा सहवासिय वा णिस्साए—१ अदुवा अणुगामिए २ अदुवा उवचरए

---

१ पागसासण (ख)।
२ खत्तीविज्ज (ख)।
३ बिहप्फति० (क)।
४ दिसीदाह (क)।
५ पसुवुट्ठी (क)।
६ ओसोयणि (क)।
७ तालुग्घाडण (ख)।
८ सावरि (क), शाम्बरी (वृ)।
९ दामलि (ख)।
१० उप्पतणि णिवडतणि कपणि (चू)।
११ × (चू)।
१२ अतद्धाणि आयमणि (ख)।
१३ विउजति (क) सर्वत्र।
१४ तिरिच्छ (क्व)।
१५ सेवेंति (क, ख)।
१६ अण्णयराइ आसुरियाइ किव्विसियाइ ठाणाइ (क, ख)।
१७ विप्पमुक्का (वृ)।
१८ णायहेउ वा (क), णायहेउ वा सयणहेउ वा (ख)।

३ अदुवा पाडिपहिए[1] ४ अदुवा संधिच्छेयए[2] ५ अदुवा गंठिच्छेयए[3] ६ अदुवा ओरब्भिए ७ अदुवा सोयरिए[4] ८ 'अदुवा वागुरिए ९ अदुवा साउणिए[5] १० अदुवा मच्छिए ११ अदुवा गोवालए[6] १२ अदुवा गोघायए १३ अदुवा सोवणिए[7] १४ अदुवा सोवणियंतिए।

से एगइओ अणुगामियभावं पडिसंधाय तमेव अणुगमिय[8] हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेति—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ उवचरगभावं पडिसंधाय तमेव उवचरिय[9] हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ पाडिपहियभावं पडिसंधाय तमेव[10], पडिपहे ठिच्चा हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ संधिच्छेदगभावं पडिसंधाय तमेव[11], संधिं छेत्ता भेत्ता[12] °लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ°—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ गंठिच्छेदगभावं पडिसंधाय तमेव[13], गंठिं छेत्ता भेत्ता[14] °लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ°—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं[15] उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ ओरब्भियभावं पडिसंधाय उरब्भं वा अण्णतरं वा तसं पाणं हंता[16] °छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति[17]।

---

१ पाडिवधिए (क)।
२ संधिछेदए (ख)।
३ गंठिभेदए (क), गंठिछेदए (ख)।
४ सोवरिए (क, ख), अत्र लिपिदोषेण 'सोकरिए' अथवा 'सोयरिए' स्थाने 'सोवरिए' इति पाठो जातः।
५ अदुवा साउणिए अदुवा वागुरिए (वृ)।
६ गोपालए (क)।
७ सोवणितिए (क), सोतेणिए (ख)।
८ अणुगमियाणुगामितं (क), अणुगामियाणुगमियं (ख), उपचर्य अनुव्रज्य च (वृ), अणुगमियं-अणुगमियं (क्व)।
९ °चरितं (ख)।
१० व्या० वि०—तदेव प्रातिपदिकत्वं कुर्वन्।
११ व्या० वि०—'प्रतिपद्यते' इति क्रियाशेषः।
१२ सं० पा०—भेत्ता जाव इति।
१३ व्या० वि०—'अनुयाति' इति क्रिया शेषः।
१४ सं० पा०—भेत्ता जाव इति।
१५ अप्पाणं (क, ख)।
१६ सं० पा०—हंता जाव उवक्खाइत्ता।
१७ भवति। एसो अभिलावो सव्वत्थ (क, ख)।

से एगइओ सोयरियभाव[1] पडिसधाय महिस वा अण्णयर वा तस पाण हता[2] •छेत्ता भेत्ता लुपइत्ता विलुपइत्ता उद्दवइत्ता आहार आहारेइ—इति से महया पावेहि कम्मेहि अत्ताण° उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ वागुरियभाव पडिसधाय मिय वा अण्णयर वा तस पाण हता[3] •छेत्ता भेत्ता लुपइत्ता विलुपइत्ता उद्दवइत्ता आहार आहारेइ—इति से महया पावेहि कम्मेहि अत्ताण° उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ साउणियभाव पडिसधाय सउणि वा अण्णयर वा तस पाण हता[4] •छेत्ता भेत्ता लुपइत्ता विलुपइत्ता उद्दवइत्ता आहार आहारेइ—इति से महया पावेहि कम्मेहि अत्ताण° उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ मच्छियभाव पडिसधाय मच्छ वा अण्णयर वा तस पाण हता[5] •छेत्ता भेत्ता लुपइत्ता विलुपइत्ता उद्दवइत्ता आहार आहारेइ—इति से महया पावेहि कम्मेहि अत्ताण° उवक्खाइत्ता भवति।

'से एगइओ गोवालगभाव पडिसधाय तमेव गोण[6] परिजविय[7] हता[8] •छेत्ता भेत्ता लुपइत्ता विलुपइत्ता उद्दवइत्ता आहार आहारेइ—इति से महया पावेहि कम्मेहि अत्ताण° उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ गोघायगभाव पडिसधाय गोण वा अण्णयर वा तस पाण हता[9] •छेत्ता भेत्ता लुपइत्ता विलुपइत्ता उद्दवइत्ता आहार आहारेइ—इति से महया पावेहि कम्मेहि अत्ताण° उवक्खाइत्ता भवति'[10]।

से एगइओ सोवणियभाव पडिसधाय सुणग वा अण्णयर वा तस पाण हता[11] •छेत्ता भेत्ता लुपइत्ता विलुपइत्ता उद्दवइत्ता आहार आहारेइ—इति से महया पावेहि कम्मेहि अत्ताण° उवक्खाइत्ता भवति।

से एगइओ सोवणियतियभाव पडिसधाय मणुस्स वा अण्णयर वा तस पाण हता[12] •छेत्ता भेत्ता लुपइत्ता विलुपइत्ता उद्दवइत्ता° आहार आहारेइ—इति से महया पावेहि कम्मेहि अत्ताण उवक्खाइत्ता भवति॥

---

१ सोवरिय° (ख)। चूर्णौ क्रमप्राप्त सौकरिकपद व्याख्यात नास्ति। गोघातकभावस्यानन्तर "केइ पुण भणति—सोयरियभाव ति महिस, अण्णतरो तव्वत्तिरित्तो गोणादि"—(चूर्णी पृ० ३५७) इति उल्लेख प्राप्यते। वृत्तिकारस्य सम्मुखेपि सौकरिकपदस्य पाठ स्पष्टो नासीदिति प्रतीयते—"अत्रान्तरे सौकरिकपद, तच्च स्वबुद्धया व्याख्येयम् सौकरिका'—श्वपचाश्चाण्डाला —खट्टिका इत्यर्थः" (वृत्ति पत्र ६३ प० २)।

२ स० पा०—हता जाव उवक्खाइत्ता।

३,४,५ स० पा०—हता जाव उवक्खाइत्ता।

६ गोण वा (क, ख)।

७ परिजविय-परिजविय (क)।

८,९ स० पा०—हता जाव उवक्खाइत्ता।

१० से एगइओ गोघायगभाव°। से एगइओ गोवालगभाव°। (क, ख)।

११ स० पा०—हता जाव उवक्खाइत्ता।

१२ स० पा०—हता जाव आहार।

सप्पओयण कूरकम्मकरण-पदं

२० से एगइओ परिसामज्झाओ उट्ठेत्ता अहमेय हणामि[1] त्ति कट्टु तित्तिर वा वट्टग वा [चडग वा[2] ?] लावग वा कवोयग वा [कविं वा ?][3] कविजल वा अण्णयर वा तस पाण हता[4] •छेत्ता भेत्ता लुपइत्ता विलुपइत्ता उद्दवइत्ता आहार आहारेइ—इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताण° उवक्खाइत्ता भवति ॥

सद्दादि विसएहिं विरुद्धस्स कूरकम्मकरण-पद

२१ से एगइओ केणइ आदाणेण विरुद्धे समाणे, अदुवा खलदाणेण, अदुवा सुराथालएण गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा सयमेव अगणिकाएण सस्साइ झामेइ, अण्णेण वि अगणिकाएण सस्साइ झामावेइ, अगणिकाएण सस्साइ झामेंत पि अण्ण समणुजाणइ—इति से महया पावकम्मेहिं अत्ताण उवक्खाइत्ता भवति[5] ॥

२२ से एगइओ केणइ आदाणेण विरुद्धे समाणे, अदुवा खलदाणेण, अदुवा सुराथालएण गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टाण वा गोणाण वा घोडगाण[6] वा गद्दभाण वा सयमेव घूराओ कप्पेइ, अण्णेण वि कप्पावेइ, कप्पत वि अण्ण समणुजाणइ—इति से महया[7] •पावकम्मेहिं अत्ताण उवक्खाइत्ता° भवति ॥

२३ से एगइओ केणइ आदाणेण विरुद्धे समाणे, अदुवा खलदाणेण, अदुवा सुराथालएण गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टसालाओ वा गोणसालाओ वा घोडगसालाओ वा गद्दभसालाओ वा कटकवोदियाए पडिपेहित्ता सयमेव अगणिकाएण झामेइ, अण्णेण वि झामावेइ, झामत पि अण्ण समणुजाणइ—इति से महया[8] •पावकम्मेहि अत्ताण उवक्खाइत्ता° भवति ॥

२४ से एगइओ केणइ आदाणेण विरुद्धे समाणे, अदुवा खलदाणेण, अदुवा सुराथालएण गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा कुडल वा[9] मणिं वा मोत्तिय वा सयमेव अवहरइ, अण्णेण वि अवहरावेइ, अवहरत पि अण्ण समणुजाणइ—इति से महया[10] •पावकम्मेहिं अत्ताण उवक्खाइत्ता° भवति ।

---

१ आहणामि (क) ।

२,३. अस्याध्ययनस्य षष्ठे सूत्रे इमौ शब्दौ स्त । अयमुल्लेख स्वतत्रसूत्राणा सकेतोयवा व्याख्यामात्रमिति स्पष्ट न परिज्ञायते ।

४ स० पा०—हता जाव उवक्खाइत्ता ।

५ चूर्णौ अस्य सूत्रस्य व्याख्याया अन्ते 'एव फासे वि' 'आहतो भरितो वा केणइ असुइणा खेलेण उविट्ठेण वा' इत्युल्लिखितमस्ति ।

६ घोडाण (क) ।

७,८ स० पा०—महया जाव भवति ।

९ वा गुणि वा (क) ।

१० स० पा०—महया जाव भवति ।

संपदायलित्तस्स असव्ववहारकरण-पद

२५ से एगइओ केणइ वि आदाणेण विरुद्धे समाणे[1], समणाण वा माहणाण वा 'दडग वा छत्तग वा'[2] भडग वा मत्तग वा लट्ठिग वा भिसिग वा चेलग[3] वा चिलिमिलिग वा 'चम्मग वा चम्मछेयणग'[4] वा चम्मकोसिय वा सयमेव अवहरइ[5], •अण्णेण वि अवहरावेइ, अवहरत पि अण्ण° समणुजाणइ—इति से महया[6] •पावकम्मेहि अत्ताण° उवक्खाइत्ता भवति ॥

वीमंसरहियस्स कूरकम्मकरण-पद

२६ से एगइओ नो वितिगिछइ[7]—गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा सयमेव अगणिकाएण ओसहीओ झामेइ[8], •अण्णेण वि अगणिकाएण ओसहीओ झामावेइ, अगणिकाएण ओसहीओ° झामेत पि अण्ण समणुजाणइ—इति से महया[9] •पावकम्मेहि अत्ताण उवक्खाइत्ता° भवति ॥

२७ से एगइओ णो वितिगिछइ[10]—गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टाण वा गोणाण वा घोडगाण वा गद्दभाण वा सयमेव घूराओ कप्पेइ, अण्णेण वि कप्पावेइ, अण्ण पि कप्पत समणुजाणइ[11]—•इति से महया पावकम्मेहि अत्ताण उवक्खाइत्ता भवति° ॥

२८ से एगइओ णो वितिगिछइ[12]—गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टसालाओ वा[13] •गोणसालाओ वा घोडगसालाओ वा° गद्दभसालाओ वा कटकबोदियाए पडिपेहित्ता सयमेव अगणिकाएण झामेइ[14], •अण्णेण वि झामावेइ, झामत पि अण्ण° समणुजाणइ ॥

---

१ समाणे, अदुवा खलदाणेण, अदुवा सुराथालएण (क, ख), प्रस्तुतसूत्र 'समणमाहणेन' सबद्धमस्ति, तेनात्र 'अदुवा खलदाणेण अदुवा सुराथालएण' इति पाठो नैव युज्यते । पूर्ववर्तिपु सूत्रेषु प्रवर्तमान पाठोसौ अत्रापि लिपिप्रमादेन पूर्वप्रचलितक्रमाभ्यासेन वा लिखितोस्तीति प्रतीयते । चूर्णौ वृत्तौ च अपहरणस्य यानि कारणानि प्रदर्शितानि तेभ्योपि उक्तानुमानस्य परिपुष्टिर्जायते । चूर्णौ यथा—"इमो अण्णो पासडत्थाण दिट्ठिरागेण वादे वा पराइतो सयमेव तेसि अण्ण किंचि णत्थि ज अत्थि त अवहरति," वृत्तौ च यथा—"अथैक कश्चित्स्वदर्शनानुरागेण वा, वादपराजितो वाऽन्येन वा केनचिन्निमित्तेन कुपित सन्नेतत्कुर्यादित्याह ।

२ छत्तग वा दडग वा (ख), तोलनीय—आयारचूला २।४६ ।

३ चेल वा (क) ।

४ चम्म वा चम्मछेदण (क) ।

५ स० पा०—अवहरइ जाव समणुजाणइ ।

६ स० पा०—महया जाव उवक्खाइत्ता ।

७ °गिछइ, त जहा (ख, वृ) ।

८ स० पा०—झामेइ जाव झामेत ।

९ स० पा०—महया जाव भवति ।

१० °गिछइ, तजहा (ख, वृ) ।

११ स० पा०—समणुजाणइ° ।

१२ °गिछइ, तजहा (ख, वृ) ।

१३ स० पा०—उट्टसालाओ वा जाव गद्दभ° ।

१४ स० पा०—झामेइ जाव समणुजाणइ ।

२९ से एगइओ णो वितिगिंछइ[1]—गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा[2] •कुंडलं वा मणिं वा° मोत्तियं वा सयमेव अवहरइ[3], •अण्णेण वि अवहरावेइ, अवहरंतं पि अण्णं° समणुजाणइ ॥

३० से एगइओ णो वितिगिंछइ[4]—समणाण वा माहणाण वा दंडगं वा[5] •छत्तगं वा भंडगं वा मत्तगं वा लट्ठिगं वा भिसिगं वा चेलगं वा चिलिमिलिगं वा चम्मगं वा° चम्मछेयणगं वा सयमेव अवहरइ[6], °अण्णेण वि अवहरावेइ, अवहरंतं पि अण्णं° समणुजाणइ—इति से महया[7] •पावकम्मेहिं अत्ताणं° उवक्खाइत्ता भवति ॥

३१ से एगइओ समणं वा माहणं वा दिस्सा णाणाविहेहिं 'पावेहिं कम्मेहिं'[8] अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ, अदुवा णं अच्छराए आफालित्ता भवइ, अदुवा णं फरुसं वदित्ता भवइ, कालेण वि[9] से अणुपविट्ठस्स 'असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा'[10] णो दवावेत्ता भवति, "जे इमे[11] भवंति—वोण्णमंता भारक्कंता[12] अलसगा वसलगा 'किवणगा समणगा'[13], ते इणमेव[14] जीवितं धिज्जीवियं[15] संपडिवूहेंति"। णाइ ते 'पारलोइयस्स अट्ठस्स'[16] किंचि वि सिलिस्संति[17], ते दुक्खंति ते सोयंति ते जूरंति ते तिप्पंति ते पिट्टंति[18] ते परितप्पंति ते दुक्खण-जूरण-सोयण-तिप्पण-पिट्टण-परितप्पण-वह-बंध[19]-परिकिलेसाओ अपडिविरता[20] भवंति। ते महता आरंभेणं ते महता समारंभेणं ते महता आरंभसमारंभेणं विरूवरूवेहिं पावकम्म-

---

१ °गिंछइ, तंजहा (ख, वृ)।
२ सं० पा०—गाहावइपुत्ताण वा जाव मोत्तियं।
३ सं० पा०—अवहरइ जाव समणुजाणइ।
४ °गिंछइ, तंजहा (ख, वृ)।
५ सं० पा०—दंडगं वा जाव चम्मछेयणगं।
६ सं० पा०—अवहरइ जाव समणुजाणइ।
७ सं० पा०—महया जाव उवक्खाइत्ता।
८ पावकम्मेहिं (क, ख)।
९ वि य (क)।
१० असणं वा पाणं वा जाव (क), असणं वा ४ जाव (ख)।
११ अपरं च दानोद्यतं निषेधयति तत्प्रत्यनीकतया, एतच्च ब्रूते—ये इमे पाषण्डिका भवन्ति (वृ)।
१२ भारोक्कंता (क, ख)।
१३ किमणगा पव्वयंति (क), किवणगा समणगा पव्वयंति (ख), °श्रमणा भवंति—प्रव्रज्यां गृण्हन्ति (वृ)।
१४ अणमेव (क), इणामेव (ख)।
१५ वीजीवितं (क)।
१६ पारलोयस्स° (क), पारलोयस्स अट्ठाए (ख), पारलोइयं अत्थं (चू), पारलोइयस्स अट्ठस्स साहणं (वृ)।
१७ सिलीसंति (ख)।
१८ १।४२,४३,५१—निर्दिष्टाङ्केषु सूत्रेषु 'पीड' धातुप्रयोगो वर्तते, अत्र च तस्मिन्नेव प्रकरणे 'पिट्ट' धातुप्रयोगो लभ्यते। नानयो कश्चिदर्थभेदः संभाव्यते।
१९ वधण (ख)।
२० अप्पडिविरया (ख)

किञ्चेहिं उरालाइ[1] माणुस्सगाइ[2] भोगभोगाइ भुजित्तारो भवति, तजहा—अण्ण अण्णकाले पाण पाणकाले वत्थ वत्थकाले लेण लेणकाले सयण सयणकाले[3]।

सपुव्वावर च ण ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मगल-'पायच्छित्ते सिरसा ण्हाए कठेमालकडे[4] आविद्धमणिसुवण्णे कप्पियमालामउली पडिबद्धसरीरे वग्घारिय-सोणिसुत्तग-मल्ल-दामकलावे अहयवत्थपरिहिए चदणोक्खित्तगाय-सरीरे'[5] महइमहालियाए कूडागारसालाए महइमहालयसि सीहासणसि इत्थी-गुम्मसपरिवुडे 'सव्वराइएण जोइणा झियायमाणेण'[6] महयाहय-णट्ट-गीय-वाइय-तती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइग-पडुप्पवाइय-रवेण उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ।

तस्स ण एगमवि आणवेमाणस्स जाव चत्तारि पच जणा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठेति—भण देवाणुप्पिया! कि करेमो? कि आहरेमो? कि उवणेमो? कि उवट्ठावेमो[7]? कि भे हियइच्छिय[8]? कि भे आसगस्स सयइ?

तमेव पासित्ता अणारिया एव वयति—देवे खलु अय पुरिसे! देवसिणाए खलु अय पुरिसे! 'देवजीवणिज्जे खलु अय पुरिसे'[9]! अण्णे वि य ण उवजीवति।

तमेव पासित्ता आरिया वयति—अभिक्कतकूरकम्मे खलु अय पुरिसे, अइधूए[10], अइआयरक्खे दाहिणगामिए णेरइए कण्हपक्खिए आगमिस्साण दुल्लहबोहिए[11] यावि भविस्सइ॥

३२ इच्चेतस्स ठाणस्स उट्ठित्ता[12] वेगे अभिगिज्झति, अणुट्ठित्ता वेगे अभिगिज्झति, अभिझझाउरा अभिगिज्झति।

एस ठाणे अणारिए अकेवले अप्पडिपुण्णे 'अणेयाउए अससुद्धे'[13] असल्लगत्तणे

---

१ ओरालाइ (क)।

२ मणुस्स° (क, ख)।

३ यद्यपि चूर्णिकारवृत्तिकाराभ्या 'जे इमे भवति' इत 'समणगा' पर्यन्त अन्तर्वाक्य स्वीकृत किन्तु यत्तदो सम्बन्धेन बहुवचनस्य सम्बन्धेन च 'सयण सयणकाले', पर्यन्त अन्तर्वाक्य युज्यते।

४ ×(चू)।

५ पायच्छित्ते कप्पियमालामउली पडिबद्धसरीरे वग्घारियसोणिसुत्तगमल्लदामकलावे सिरसा ण्हाए कठे मालकडे—वृत्तौ चिन्हित-पाठ-स्थाने एतावानेव पाठो निर्दिष्टक्रमेण व्याख्या-तोस्ति।

६ एतावान् पाठो वृत्तौ नास्ति व्याख्यात।

७ आविद्धवेमो (क), आचिट्ठामो, आविट्ठवेमो (क्व)।

८ हिय° (ख)।

९ चिन्हाङ्कित पाठो वृत्तौ नास्ति व्याख्यात।

१० अइधुत्ते (क)।

११ °बोहियाए (ख)।

१२ उवट्ठिते (क)।

१३ असबुद्धे अणेयाउए (क), अणेयाऊए असबुद्धे (ख), वृत्तौ नैष पाठो व्याख्यातोस्ति। प्रत्यो 'असबुद्धे' पाठो लभ्यते किन्तु 'आव-श्यक' चतुर्थाध्ययने 'केवलिय पडिपुण्ण णेयाउय ससुद्ध' अनेन क्रमेणासौ पाठो

असिद्धिमग्गे अमुत्तिमग्गे अणिव्वाणमग्गे[1] अणिज्जाणमग्गे[2] असव्वदुक्खपहीण-मग्गे एगतमिच्छे असाहू ।
एस खलु पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभगे एवमाहिए ॥

धम्मपक्खे भिक्खुणो भिक्खायरिया-समुट्ठाण-पदं

३३ अहावरे दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभगे एवमाहिज्जइ—इह खलु पाईण वा पडीण वा उदीण वा दाहिण वा सतेगइया मणुस्सा[3] भवति, त जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे कायमता वेगे हस्समता वेगे सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे। तेसिं च ण खेत्तवत्थूणि परिग्गहियाइ भवति, '[4]त जहा—अप्पयरा वा भुज्जयरा वा। तेसि च ण जणजाणवयाइ परिग्गहियाइ भवति, त जहा—अप्पयरा वा भुज्ज-यरा वा। तहप्पगारेहिं कुलेहिं आगम्म अभिभूय एगे भिक्खायरियाए समुट्ठिया। सतो वा वि एगे णायओ य उवगरण च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया। असतो वा वि एगे णायओ य उवगरण च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया ॥

३४ जे ते सतो वा असतो वा णायओ य उवगरण च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया, पुव्वमेव तेहिं णात भवति—इह खलु पुरिसे अण्णमण्ण ममट्ठाए एव विप्पडिवेदेति, त जहा—खेत्त मे वत्थू मे हिरण्ण मे सुवण्ण मे धण मे धण्ण मे कस मे दूस मे विपुल-धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सत-सार-सावतेय मे सद्दा मे रूवा मे गधा मे रसा मे फासा मे। एते खलु मे कामभोगा, अहमवि एतेसिं।

से मेहावी पुव्वमेव अप्पणा एव समभिजाणेज्जा—इह खलु मम अण्णतरे दुक्खे रोगातके समुप्पज्जेज्जा—अणिट्ठे अकते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे दुक्खे णो सुहे।

से हता! भयतारो! कामभोगा! मम अण्णतर दुक्ख रोगायक परियाइयह—अणिट्ठ अकत अप्पिय असुभ अमणुण्ण अमणाम दुक्ख णो सुह। माऽह दुक्खामि वा सोयामि वा जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा। इमाओ मे अण्णतराओ दुक्खाओ रोगातकाओ पडिमोयह—अणिट्ठाओ अकताओ

वियते। तत् प्रतिपक्षरूपत्वेनात्र 'अणयाउए असमुद्दे' इति पाठो युज्यते। केषुचित् मुद्रितप्रतिषु इत्थ लभ्यमानोऽप्यस्ति, तेनास्माभिर्मूलेऽमी स्वीकृत ।

१. अपरिणिव्वाणमग्गे (वृ)।

२ ×(क, वृ)।

३ मणुया (ख)।

४ स० पा०—एसो आलावगो तहा णेयव्वो जहा पोडरीए जाव सव्वोवसता सव्वत्ताए परिनिव्वुड त्ति बेमि।

अप्पियाओ असुभाओ अमणुण्णाओ अमणामाओ दुक्खाओ णो सुहाओ । एवमेव णो लद्धपुव्वं भवति ।

इह खलु कामभोगा णो ताणाए वा णो सरणाए वा । पुरिसे वा एगया पुव्विं कामभोगे विप्पजहइ, कामभोगा वा एगया पुव्विं पुरिसं विप्पजहंति । अण्णे खलु कामभोगा, अण्णो अहमंसि । से किमंग पुण वयं अण्णमण्णेहिं कामभोगेहिं मुच्छामो ? इति संखाए णं वयं कामभोगे विप्पजहिस्सामो ।।

३५ से मेहावी जाणेज्जा—बाहिरगमेयं, इणमेव उवणीयतरगं, तं जहा—माता मे पिता मे भाया मे भगिणी मे भज्जा मे पुत्ता मे णत्ता मे धूया मे पेसा मे सहा मे सुही मे सयणसंगंथसंथुया मे । एते खलु मम णायओ, अहमवि एएसिं । से मेहावी पुव्वमेव अप्पणा एवं समभिजाणेज्जा । इह खलु मम अण्णयरे दुक्खे रोगातंके समुप्पज्जेज्जा—अणिट्ठे अकंते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे दुक्खे णो सुहे ।

से हंता ! भयंतारो ! णायओ ! इमं मम अण्णयरं दुक्खं रोगातंकं परियाइयह—अणिट्ठं अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं दुक्खं णो सुहं । माऽहं दुक्खामि वा सोयामि वा जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा । इमाओ मे अण्णतराओ दुक्खाओ रोगातंकाओ परिमोयह—अणिट्ठाओ अकंताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुण्णाओ अमणामाओ दुक्खाओ णो सुहाओ । एवमेव णो लद्धपुव्वं भवइ ।

तेसिं वा वि भयंताराणं मम णाययाणं अण्णयरे दुक्खे रोगातंके समुप्पज्जेज्जा—अणिट्ठे अकंते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे दुक्खे णो सुहे ।

से हंता ! अहमेतेसिं भयंताराणं णाययाणं इमं अण्णतरं दुक्खं रोगातंकं परियाइयामि—अणिट्ठं अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं दुक्खं णो सुहं, मा मे दुक्खंतु वा सोयंतु वा जूरंतु वा तिप्पंतु वा पीडंतु वा परितप्पंतु वा । इमाओ णं अण्णयराओ दुक्खाओ रोगातंकाओ परिमोएमि—अणिट्ठाओ अकंताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुण्णाओ अमणामाओ दुक्खाओ णो सुहाओ । एवमेव णो लद्धपुव्वं भवति ।

अण्णस्स दुक्खं अण्णो णो परियाइयइ, अण्णेणं कंतं अण्णो णो पडिसंवेदेइ, पत्तेयं जायइ, पत्तेयं मरइ, पत्तेयं चयइ, पत्तेयं उववज्जइ, पत्तेयं झंझा, पत्तेयं सण्णा, पत्तेयं मण्णा, पत्तेयं विण्णू, पत्तेयं वेदणा ।

इति खलु णातिसंजोगा णो ताणाए वा णो सरणाए वा । पुरिसे वा एगया पुव्विं णाइसंजोगे विप्पजहइ, णाइसंजोगा वा एगया पुव्विं पुरिसं विप्पजहंति । अण्णे खलु णातिसंजोगा, अण्णो अहमंसि ।

से किमग पुण वय अण्णमण्णेहि णाइसजोगेहि मुच्छामो ? इति सखाए ण वय णातिसजोगे विप्पजहिस्सामो ॥

३६ से मेहावी जाणेज्जा—वाहिरगमेय, इणमेव उवणीयतरग, त जहा—हत्था मे पाया मे वाहा मे ऊरू मे उदर मे सीस मे आउ मे वल मे वण्णो मे तया मे छाया मे सोय मे चक्खु मे घाण मे जिब्भा मे फासा मे ममाति, वयाओ परिजूरइ, त जहा—आऊओ वलाओ वण्णाओ तयाओ छायाओ सोयाओ चक्खूओ घाणाओ जिब्भाओ फासाओ। सुसविता सधी विसधीभवति, वलितरगे गाए भवति, किण्हा केसा पलिया भवति। ज पि य इम सरीरग उराल आहारोवचिय, एय पि य मे अणुपुव्वेण विप्पजहियव्व भविस्सति ॥

भिक्खुणो लोगनिस्साविहार-पद

३७ एय सखाए से भिक्खू भिक्खायरियाए समुट्ठिए दुहओ लोग जाणेज्जा, त जहा—जीवा चेव, अजीवा चेव। तसा चेव, थावरा चेव ॥

३८ इह खलु गारत्था सारभा सपरिग्गहा, सतेगइया समणा माहणा वि सारभा सपरिग्गहा—जे इमे तसा थावरा पाणा—ते सय समारभति, अण्णेण वि समारभावेति, अण्ण पि समारभत समणुजाणति।

इह खलु गारत्था सारभा सपरिग्गहा, सतेगइया समणा माहणा वि सारभा सपरिग्गहा जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता वा—ते सय परिगिण्हति, अण्णेण वि परिगिण्हावेति, अण्ण पि परिगिण्हत समणुजाणति।

इह खलु गारत्था सारभा सपरिग्गहा, सतेगइया समणा माहणा वि सारभा सपरिग्गहा, अह खलु अणारभे अपरिग्गहे। जे खलु गारत्था सारभा सपरिग्गहा, सतेगइया समणा माहणा वि सारभा सपरिग्गहा, एतेसिं चेव णिस्साए वभचेरवास वसिस्सामो।

कस्स ण त हेउ ?

जहा पुव्व तहा अवर, जहा अवर तहा पुव्व।

अजू एते अणुवरया अणुवट्ठिया पुणरवि तारिसगा चेव।

जे खलु गारत्था सारभा सपरिग्गहा, सतेगइया समणा माहणा वि सारभा सपरिग्गहा, दुहओ पावाइ कुव्वति, इति सखाए दोहि वि अतेहि अदिस्समाणो। इति भिक्खू रीएज्जा ॥

३९ से वेमि—पाईण वा पडीण वा उदीण वा दाहिण वा एव से परिण्णातकम्मे, एव से ववेयकम्मे, एव से वियतकारए भवइ त्ति मक्खाय।

अहिंसाधम्म-पद

४० तत्थ खलु भगवया छज्जीवणिकाया हेऊ पण्णत्ता, त जहा—पुढवीकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तसकाए।

से जहाणामए मम असाय दडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा आउडिज्जमाणस्स वा हम्ममाणस्स वा तज्जिज्जमाणस्स वा ताडिज्जमाणस्स वा परिताविज्जमाणस्स वा किलामिज्जमाणस्स वा उद्दविज्जमाणस्स वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारग दुक्ख भय पडिसवेदेमि—इच्चेव जाण। सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता दडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा आउडिज्जमाणा वा हम्ममाणा वा तज्जिज्जमाणा वा ताडिज्जमाणा वा परिताविज्जमाणा वा किलामिज्जमाणा वा उद्दविज्जमाणा वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारग दुक्ख भय पडिसवेदेति। एव णच्चा सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा ण उद्दवेयव्वा ॥

४१ से वेमि—जे अईया, जे य पडुप्पण्णा, जे य आगमेस्सा अरहता भगवतो सव्वे ते एवमाइक्खति, एव भासति, एव पण्णवेति, एव परूवेति सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा ण उद्दवेयव्वा ॥

४२ एस धम्मे धुवे णितिए सासए समेच्च लोग खेयण्णेहि पवेइए ॥

भिक्खुचरिया-पदं

४३ एव से भिक्खू विरए पाणाइवायाओ विरए मुसावायाओ विरए अदत्तादाणाओ विरए मेहुणाओ विरए परिग्गहाओ। णो दतपक्खालणेण दते पक्खालेज्जा, णो अजण, णो वमण, णो विरेयण, णो धूवणे, णो त परियाविएज्जा ॥

४४ से भिक्खू अकिरिए अलूसए अकोहे अमाणे अमाए अलोहे उवसते परिणिव्वुडे णो आसस पुरतो करेज्जा—इमेण मे दिट्ठेण वा सुएण वा मएण वा विण्णाएण वा, इमेण वा सुचरिय-तव-णियम-बभचेरवासेण, इमेण वा जायामायावुत्तिएण धम्मेण इतो चुते पेच्चा देवे सिया कामभोगाण वसवत्ती, सिद्धे वा अदुक्खमसुहे। एत्थ वि सिया, एत्थ वि णो सिया ॥

४५ से भिक्खू सद्देहि अमुच्छिए रूवेहि अमुच्छिए गधेहि अमुच्छिए रसेहि अमुच्छिए फासेहि अमुच्छिए, विरए—कोहाओ माणाओ मायाओ लोभाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादसणसल्लाओ—इति से महतो आदाणाओ उवसते उवट्ठिए पडिविरते ॥

४६ से भिक्खू—जे इमे तसथावरा पाणा भवति—ते णो सय समारभइ, णो अण्णेहि समारभावेइ, अण्णे समारभते वि ण समणुजाणइ—इति से महतो आदाणाओ उवसते उवट्ठिए पडिविरते ॥

४७. से भिक्खू—जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता वा—ते णो सय

परिगिण्हइ, णो अण्णेण परिगिण्हावेइ, अण्ण परिगिण्हतपि ण समणुजाणइ—इति से महतो आदाणाओ उवसते उवट्ठिए पडिविरते ॥

४८ से भिक्खू—ज पि य इम सपराइय कम्म कज्जइ—णो त सय करेइ, णो अण्णेण कारवेइ, अण्ण पि करेंत ण समणुजाणइ—इति से महतो आदाणाओ उवसते उवट्ठिए पडिविरते ॥

४९ से भिक्खू जाणेज्जा—असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अस्सिपडियाए एग साहम्मिय समुद्दिस्स पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्च अच्छेज्ज अणिसट्ठ अभिहड आहट्टुद्देसिय, त चेतिय सिया, त णो सय भुजइ, णो अण्णेण भुजावेइ, अण्ण पि भुजत ण समणुजाणइ—इति से महतो आदाणाओ उवसते उवट्ठिए पडिविरते ॥

५० से भिक्खू अह पुण एव जाणेज्जा—त विज्जइ तेसि परक्कमे। जस्सट्ठाए चेतिय सिया, त जहा—अप्पणो पुत्ताण धूयाण सुण्हाण धातीण णातीण राईण दासाण दासीण कम्मकराण कम्मकरीण आएसाण पुढो पहेणाए सामासाए पातरासाए सण्णिहि-सण्णिचओ कज्जति, इह एएसि माणवाण भोयणाए।

तत्थ भिक्खू परकड-परणिट्ठित उग्गमुप्पायणेसणासुद्ध सत्थातीत सत्थपरिणामित अविहिंसित एसित वेसित सामुदाणिय पण्णमसण कारणट्ठा पमाणजुत्त अक्खोवजण-वणलेवणभूय, सजमजायामायावुत्तिय विलमिव पण्णगभूतेण अप्पाणेण आहार आहारेज्जा—अण्ण अण्णकाले पाण पाणकाले वत्थ वत्थकाले लेण लेणकाले सयण सयणकाले ॥

धम्मदेसणा-पद

५१ से भिक्खू मायण्णे अण्णयरि दिस वा अणुदिस वा पडिवण्णे धम्म आइक्खे विभए किट्टे—उवट्ठिएसु वा अणुवट्ठिएसु वा सुस्सूसमाणेसु पवेदए—सति विरति उवसम णिव्वाण सोयविय अज्जविय मद्दविय लाघविय अणतिवातिय ॥

५२ सव्वेसि पाणाण सव्वेसि भूयाण सव्वेसि जीवाण सव्वेसि सत्ताण अणुवीइ किट्टए धम्म ॥

५३ से भिक्खू धम्म किट्टेमाणे—णो अण्णस्स हेउ धम्ममाइक्खेज्जा। णो पाणस्स हेउ धम्ममाइक्खेज्जा। णो वत्थस्स हेउ धम्ममाइक्खेज्जा। णो लेणस्स हेउ धम्ममाइक्खेज्जा। णो सयणस्स हेउ धम्ममाइक्खेज्जा। णो अण्णेसि विरूव-रूवाण कामभोगाण हेउ धम्ममाइक्खेज्जा। अगिलाए धम्ममाइक्खेज्जा। णण्णत्थ कम्मणिज्जरट्ठयाए धम्ममाइक्खेज्जा ॥

५४ इह खलु तस्स भिक्खुस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म सम्म उट्ठाणेण उट्ठाय वीरा अस्सि धम्मे समुट्ठिया। जे तस्स भिक्खुस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म

सम्मं उट्ठाणेणं उट्ठाय वीरा अस्सिं धम्मे समुट्ठिया, ते एव सव्वोवगता, ते एव सव्वोवरता, ते एव सव्वोवसता, ते एव ॰ सव्वत्ताए परिणिव्वुड त्ति बेमि ॥

५५ एस ठाणे आरिए केवले[1] •पडिपुण्णे णेयाउए ससुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे णिव्वाणमग्गे णिज्जाणमग्गे॰ सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतसम्मे साहू ।

दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए ॥

मीसग-पक्ख-पद

५६ अहावरे तच्चस्स ठाणस्स मीसगस्स विभंगे एवमाहिज्जइ—जे इमे भवंति आरण्णिया आवसहिया गामंतिया[2] कण्हुईरहस्सिया[3] •णो बहुसंजया, णो बहुपडिविरया सव्वपाणभूयजीवसत्तेहिं, ते अप्पणा सच्चामोसाइं एवं विउंजंति—अहं ण हंतव्वो अण्णे हंतव्वा, अहं ण अज्जावेयव्वो अण्णे अज्जावेयव्वा, अहं ण परिघेतव्वो अण्णे परिघेतव्वा, अहं ण परितावेयव्वो अण्णे परितावेयव्वा, अहं ण उद्दवेयव्वो अण्णे उद्दवेयव्वा । एवामेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं अप्पयरो वा भुज्जयरो वा भुंजित्तु भोगभोगाइं कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु आसुरिएसु किब्बिसिएसु ठाणेसु उववत्तारो भवंति ॰ । तओ विप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमूयत्ताए तमूयत्ताए[4] पच्चायंति ॥

५७ एस ठाणे अणारिए अकेवले[5] •अप्पडिपुण्णे अणेयाउए असंसुद्धे असल्लगत्तणे असिद्धिमग्गे अमुत्तिमग्गे अणिव्वाणमग्गे अणिज्जाणमग्गे॰ असव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतमिच्छे असाहू ।

एस खलु तच्चस्स ठाणस्स मीसगस्स विभंगे एवमाहिए ॥

अधम्म-पक्ख-पद

५८ अहावरे पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिज्जइ—इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति—महिच्छा महारंभा महापरिग्गहा अधम्मिया 'अधम्माणुया अधम्मिट्ठा'[6] अधम्मक्खाई

---

१ सं० पा०—केवले जाव सव्वदुक्ख॰ ।

२ गामणियंतिया (क, ख), अस्याध्ययनस्य चतुर्दशे सूत्रे 'गामंतिया' पाठोस्ति, चूर्णौ वृत्तौ च जाव शब्देन स एवात्र संगृहीतो भवति । यद्यपि प्रत्योरत्र 'गामणियंतिया' पाठो लभ्यते, किन्तु उक्तसूत्रमनुसृत्य पूर्ववर्ती पाठ एवास्माभिः स्वीकृतः ।

३ कण्हुईराहस्सिया (क), सं० पा०—कण्हुईरहस्सिया जाव तओ ।

४ मूयत्ताए (क) ।

५ सं० पा०—अकेवले जाव असव्वदुक्ख॰ ।

६ अधर्मिष्ठा अधर्मानुज्ञा (वृ) ।

अधम्मपायजीविणो[1] अधम्मपलोइणो[2] अधम्मपलज्जणा अधम्मसीलसमुदाचारा[3] अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, 'हण' 'छिंद' 'भिंद' विगत्तगा लोहियपाणी चंडा रुद्दा खुद्दा साहस्सिया उक्कंचण-वंचण-माया-णियडि-कूड-कवड-साइ-संपओगबहुला दुस्सीला[4] दुव्वया दुप्पडियाणंदा असाहू सव्वाओ पाणाइवायाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए[5], •सव्वाओ मुसावायाओ अप्पडि-विरया जावज्जीवाए, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ मेहुणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए°, सव्वाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कोहाओ[6] •माणाओ मायाओ लोभाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइर-ईओ मायामोसाओ° मिच्छादंसणसल्लाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए[7],सव्वाओ ण्हाणुम्मद्दण-वण्णग[8]-विलेवण-सद्द - फरिस - 'रस-रूव[9]' - गंध - मल्लालंकाराओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ[10] सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सिय - संदमाणिया - सयणासण - जाण - वाहण - भोग-भोयण-पवित्थरविहीओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कय-विक्कय-मासद्धमास-रूवग-संवव-हाराओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ 'हिरण्ण-सुवण्ण-धण-धण्ण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवालाओ'[11]अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कूडतुल-कूड माणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ आरंभसमारंभाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ करण-कारावणाओ[12] अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ पयण-पयावणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कुट्टण[13]-पिट्टण-तज्जण-ताडण-वह-बंधपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए। जे यावण्णे तहप्पगारा[14] सावज्जा अबोहिया कम्मंता परपाणपरियावणकरा[15] कज्जंति [ततो वि अप्पडिविरया जावज्जीवाए[16]।]

---

१ अहम्मजीवी (ख)।

२ °पलोई (ख), °पविलोइणो (वृ)।

३ °दायारा (ख)।

४ दुस्सीला दुरणुणेया (चू)।

५ सं० पा०—जावज्जीवाए जाव सव्वाओ।

६ सं० पा०—कोहाओ जाव मिच्छा°।

७ × (क, ख)।

८ वण्णगंध (क, ख) लिपिदोषेण 'वण्णग' इत्यस्य स्थाने 'वण्णगंध' इति जातम्।

९ रूवरस (वृ)।

१० औपपातिके (सू० १६१) कानिचिद् वाक्यानि न सन्ति।

११ हिरण्णसुवण्णकोडियाओ (क)।

१२ कारणाओ (क)।

१३ कडनकुट्टण (वृ)।

१४ तहप्पगारे (क, ख)।

१५ °वणकरा जे अणारिएहिं (क, ख, वृ), असौ पाठ व्याख्याश प्रतीयते। ६३,७१ एतयो सूत्रयोरपि नासौ विद्यते। औप-पातिके (सू० १६१,१६३) ऽपि नासौ लभ्यते।

१६ कोष्ठकान्तर्वर्त्ती पाठश्चूर्णौ व्याख्यातो

से जहाणामए केइ[1] पुरिसे कलम-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-णिप्फाव-कुलत्थ-आलिसदग-पलिमथगमादिएहिं[2] अयते कूरे मिच्छादड पउजति, एवमेव[3] तहप्पगारे पुरिसजाए तित्तिर-वट्टग-लावग-कवोय-कविंजल-मिय-महिस-वराह-गाह-गोह-कुम्म-सिरीसिवमादिएहि अयते कूरे मिच्छादड[4] पउजति ।

जा वि य से बाहिरिया परिसा भवइ, त जहा—दासे इ वा पेसे इ वा भयए इ वा भाइल्ले इ वा कम्मकरए इ वा भोगपुरिसे इ वा, तेसिं पि य ण अण्णयरसि अहालहुगसि अवराहसि[5] सयमेव 'गरुय दड'[6] णिव्वत्तेइ[7], त जहा—इम दडेह, इम मुडेह, इम तज्जेह इम तालेह, इम अदुयबधणं[8] करेह, इम णियलबधण करेह, इम हडिबधण करेह, इम चारगबधण करेह, इम णियल-जुयल-सकोडिय-मोडिय करेह, इम हत्थच्छिण्णय करेह, इम पायच्छिण्णय करेह, इम कण्णच्छिण्णय करेह, इम णक्कच्छिण्णय 'करेह, इम'[9] ओट्ठच्छिण्णय करेह, इम सीसच्छिण्णय करेह, इम मुहच्छिण्णय करेह, 'इम वेयवहित करेह, इम अगवहित करेह'[10], इम फोडियपय[11] करेह, इम णयणुप्पाडिय करेह, इम दसणुप्पाडिय करेह, इम वसणुप्पाडिय करेह, इम जिब्भुप्पाडिय करेह, इम ओलविय करेह, इम घसिय करेह, इम घोलिय करेह, इम सूलाइय करेह, इम सूलाभिण्णय करेह, इम खारपत्तिय करेह, इम वज्झपत्तिय[12] करेह, इम सीहपुच्छियग करेह, इम वसहपुच्छियग करेह इम कडग्गिदड्ढय[13] करेह, इम कागणिमसखावियग करेह, इम भत्तपाणणिरुद्धग करेह, इम जावज्जीव वहबधण करेह, इम अण्णतरेण असुभेण कु-मारेण मारेह ।

जा वि य से अब्भितरिया परिसा भवइ, त जहा—माया इ वा पिया इ वा भाया इ वा भगिणी इ वा भज्जा इ वा पुत्ता इ वा धूया इ वा सुण्हा

नास्ति—'परेपा प्राणा परितावेंति, दृष्टान्त क्रियते निर्दयत्वे तेपा, से जहाणामए' "। वृत्तौ स च व्याख्यात, किन्तु तत्र अग्रिम-पाठस्य दृष्टान्तरूपेण सम्बन्धयोजना नास्ति —"पुनरन्यथा बहुप्रकारमधार्मिकपद प्रति-पिपादयिपुराह" । दृष्टान्तस्य स्पष्टवोधार्थ-मसौ पाठ कोष्ठकान्तर्वर्त्ती कृत ।

१ व्या० वि०—बहुवचनप्रकरणे पि यदेकवच-नान्त कर्तृपदम्, तद् उपमानोपमेययोरनुरो-धात् ।

२ पलिमिच्छग° (क) ।

३ एवा° (ख) ।

४ मिच्छ° (क) ।

५ अवराहम्मि (क) ।

६ गुरुय° (क) ।

७ निवत्तेइ (ख) ।

८ अडुय° (ख) ।

९ अतोग्रे 'इम तथा करेह' इति पाठस्य प्रयोग क्वचिद् क्वचिदेव विद्यते स चास्माभि सर्वत्र पूरित ।

१० वेगच्छहिय अगच्छहिय (क) ।

११ पक्खाफोडिय (क्व) ।

१२ वज्भवत्तिय (ख) ।

१३. दवग्गिदड्ढय (ख) ।

इ वा, तेसिं पि य णं अण्णयरंसि अहालहुगंसि अवराहंसि सयमेव गरुयं दंडं णिव्वत्तेति, तं जहा—सीओदगवियडंसि उव्वोलेत्ता[1] भवइ, [2]°उसिणोदगवियडेण वा कायं ओसिंचित्ता भवइ, अगणिकायेणं कायं उद्दहित्ता भवइ, जोत्तेण वा वेत्तेण वा णेत्तेण वा तया वा कसेण वा छियाए वा लयाए वा अण्णयरेण वा दवरएण पासाइं उद्दालित्ता भवति, दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा कायं आउट्टित्ता भवति,

तहप्पगारे पुरिसजाते संवसमाणे दुम्मणा भवति, पवसमाणे सुमणा भवति, तहप्पगारे पुरिसजाते दंडपासी, दंडगरुए, दंडपुरक्खडे, अहिते इमंसि लोगंसि °, अहिते परंसि लोगंसि।

ते[3] दुक्खंति सोयंति जूरंति तिप्पंति पिट्टंति परितप्पंति। ते दुक्खण-सोयण-जूरण - तिप्पण - पिट्टण-परितप्पण - वह-बंधण - परिकिलेसाओ अप्पडिविरया भवंति॥

५६ एवामेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं वा अप्पयरो वा भुज्जयरो वा कालं भुंजित्तु भोगभोगाइं पसवित्तु[4] वेरायतणाइं, संचिणित्ता बहूइं कूराइं[5] कम्माइं उस्सण्णाइं[6] संभारकडेण कम्मुणा—

से जहाणामए अयगोले इ वा सेलगोले इ वा उदगंसि पक्खित्ते समाणे उदगतलमइवइत्ता अहे धरणितलपइट्ठाणे भवति, एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाते वज्जबहुले 'धूयबहुले पंकबहुले'[7] वेरबहुले अप्पत्तियबहुले दंभबहुले णियडिबहुले[8] साइबहुले[9] अयसबहुले उस्सण्णतसपाणघाती कालमासे कालं किच्चा धरणितलमइवइत्ता अहे णरगतलपइट्ठाणे भवति॥

६० ते णं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया णिच्चंधगारतमसा[10] ववगय-गह-चंद-सूर-णक्खत्त-जोइसप्पहा मेद-वसा-मंस-रुहिर-पूय-पडल-चिक्खल्ल[11]-लित्ताणुलेवणतला असुई वीसा[12] परमदुब्भिगंधा कण्ह[13]-अगणिवण्णाभा कक्खडफासा[14] दुरहियासा असुभा णरगा। असुभा णरएसु वेयणाओ। णो चेव

---

१ उव्वोलेत्ता (क), उच्छोलेत्ता (ख)।
२ सं० पा०—जहा मित्तदोसवत्तिए जाव अहिते।
३ व्या० वि०—अस्यार्थसंबन्धं 'कज्जति' पदानन्तरं योजनीयं।
४ पविसूइत्ता (क), परिसुइत्ता (ख)।
५ पावाइं (क)।
६ ओसण्णाइं (क)।
७ पंकबहुले धुन्नबहुले (क)।
८ नियइ° (क)।
९ सादि° (ख)।
१० णिच्चंधतमसा (वृ), णिच्चंधगारतमसा (वृपा)।
११ × (वृ)।
१२ विस्सा (ख)।
१३ कण्हा (क, ख)।
१४ कक्कड° (क)।

ण णरएसु णेरइया णिद्दायंति वा पयलायंति वा सइं[1] वा रइं वा धिइं वा मइं वा उवलभंते। ते णं तत्थ उज्जलं विउलं पगाढं कडुयं कक्कसं चंडं दुक्खं दुग्गं तिव्वं दुरहियासं णेरइय-वेयणं पच्चणुभवमाणा[2] विहरंति ॥

६१ से जहाणामए रुक्खे सिया पव्वयग्गे जाए, मूले छिण्णे, अग्गे गरुए, जओ णिण्णं जओ विसमं जओ दुग्गं तओ पवडति, एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाते गब्भाओ गब्भं जम्माओ जम्मं माराओ मारं णरगाओ णरगं दुक्खाओ दुक्खं[3] दाहिण-गामिए णेरइए कण्हपक्खिए आगमिस्साणं दुल्लभबोहिए यावि भवइ ॥

६२ एस ठाणे अणारिए अकेवले[4] •अप्पडिपुण्णे अणेयाउए असंसुद्धे असल्लगत्तणे असिद्धिमग्गे अमुत्तिमग्गे अणिव्वाणमग्गे अणिज्जाणमग्गे° असव्वदुक्खप्पहीण-मग्गे एगंतमिच्छे असाहू।

पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए ॥

धम्म-पक्ख-पद

६३ अहावरे दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिज्जइ—इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति, तं जहा—अणारंभा अपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुगा धम्मिट्ठा[5] •धम्मक्खाई धम्मप्पलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा[6]° धम्मेणं[7] चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणंदा सुसाहू सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावज्जीवाए[8], •सव्वाओ मुसावायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ मेहुणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोभाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खा-णाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसण-सल्लाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ ण्हाणुम्मद्दण-वण्णग-विलेवण-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध-मल्लालंकाराओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सिय-संदमाणिया-सयणासण-जाण-वाहण-भोग-भोयण-पवित्थरविहीओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कय-विक्कय-

---

१ सुइं (ख)।
२ पच्चणुब्भवमाणा (ख)।
३ व्या० वि०—'याति' इति क्रियाशेष।
४ सं० पा०—अकेवले जाव असव्वदुक्ख°।
५ सं० पा०—धम्मिट्ठा जाव धम्मेणं।
६ अधर्मपक्षवर्णने 'अधम्मसीलसमुदाचारा' इति पाठे 'शील' शब्दो विद्यते, धर्मपक्षवर्णने केवलं 'धम्मसमुदायारा' पाठोस्ति। अत्र शीलशब्दो न विवक्षितोऽथवा लिपिदोषेण त्यक्तोभूदिति न निश्चेतुं शक्यम्।
७ धम्मेण (क)।
८ सं० पा०—जावज्जीवाए जाव जे यावण्णे।

मासद्धमास-रूवग-संववहाराओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ हिरण्ण-सुवण्ण धण-धण्ण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवालाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कूडतुल-कूडमाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ आरंभ-समारंभाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ करण-कारावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ पयण-पयावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ कुट्टण-पिट्टण-तज्जण-ताडण-वह-बंधपरिकिलेसाओ पडिविरया जावज्जीवाए °, जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मंता परपाणपरियावणकरा कज्जंति, तओ वि पडिविरया जावज्जीवाए ॥

६४ से जहाणामए अणगारा भगवंतो 'इरियासमिया भासासमिया एसणासमिया आयाण-भंड-ऽमत्त-णिक्खेवणासमिया उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिया मणसमिया वइसमिया[१] कायसमिया मणगुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता[२] गुत्तिंदिया गुत्तबंभयारी अकोहा अमाणा अमाया अलोभा संता पसंता उवसंता परिणिव्वुडा अणासवा अग्गंथा छिण्णसोया णिरुवलेवा, कंसपाई व मुक्कतोया, संखो[३] इव णिरंजणा, जीव इव अप्पडिहयगई, गगणतलं पिव णिरालंबणा, वायुरिव[४] अप्पडिबद्धा, सारदसलिलं व सुद्धहियया, पुक्खरपत्तं व णिरुवलेवा, कुम्मो इव गुत्तिंदिया, विहग इव विप्पमुक्का, खग्गविसाणं व एगजाया, भारुंडपक्खी[५] व अप्पमत्ता, कुंजरो इव सोंडीरा, वसभो इव जायथामा, सीहो इव दुद्धरिसा, मंदरो इव अप्पकंपा, सागरो इव गंभीरा, चंदो इव सोमलेसा, सूरो इव दित्ततेया, जच्चकणगं[६] व जायरूवा, वसुंधरा इव सव्वफास-विसहा, सुहुयहुयासणो[७] विव तेयसा जलंता[८] ॥

---

१ वय° (क)।

२ × (क)।

३ संख (ख)।

४ वाउ° (ख)।

५ भारंडपखी (ख)।

६ °कंचणग (ख)।

७ सुट्ठुहुया° (क)।

८ चूर्णौ 'से जहाणामए केइ पुरिमा अणगारा ; इरियासमिता जाव सुहुत'° एष संक्षिप्त-पाठो वर्तते, वृत्तौ च 'पञ्चभिः समितिभिः समिता' अतः परं 'धूतकेस'° पर्यन्तं सर्वोपि पाठ औपपातिकवत् समर्पितोस्ति, यथा—ते पञ्चभिः समितिभिः समिता, एवमित्यु-पदर्शने औपपातिकमाचाराङ्गस्यावधिं प्रथम-मुपाङ्गं तत्र साधुगुणाः प्रबन्धेन व्यावर्ण्यन्ते, तदिहापि तेनैव क्रमेण द्रष्टव्यमित्यतिदेशः यावद्धूतम्—अपनीतं केशश्मश्रुलोमनखादिकं यैस्ते तथा (वृत्ति पृष्ठ ७७ पंक्ति ५) चूर्णि-वृत्त्यनुसारेण सर्वोपि पाठः औपपातिकवद् युज्यते, वर्तमानादर्शेषु औपपातिकपाठाद् भिन्नो पाठो लभ्यते। औपपातिक (सूत्र २७) गतपाठ इत्थमस्ति—इरियासमिया भासा-समिया एसणासमिया आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमिया उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिया मणगुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता गुत्तिंदिया गुत्तबंभ-

६५ णत्थि ण तेसिं भगवताण कत्थ वि पडिवधे भवइ। [से पडिवधे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—अडए इ वा पोयए इ वा उग्गहे इ वा पग्गहे इ वा][1] जण्ण-जण्ण दिस इच्छति तण्ण-तण्ण दिस अप्पडिवद्धा सुइभूया लहुभूया अप्पग्गथा[2] सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति ॥

६६ तेसिं ण भगवताण इमा एयारूवा जायामायावित्ती होत्था, त जहा—चउत्थे भत्ते छट्ठे भत्ते अट्ठमे भत्ते दसमे भत्ते दुवालसमे भत्ते चउदसमे भत्ते अद्धमासिए भत्ते मासिए भत्ते दोमासिए भत्ते तिमासिए भत्ते चउम्मासिए भत्ते पचमासिए भत्ते छम्मासिए भत्ते।

अदुत्तर च ण उक्खित्तचरगा णिक्खित्तचरगा उक्खित्तणिक्खित्तचरगा अत-चरगा पतचरगा लूहचरगा समुदाणचरगा ससट्ठचरगा अससट्ठचरगा तज्जाय-ससट्ठचरगा दिट्ठलाभिया अदिट्ठलाभिया पुट्ठलाभिया अपुट्ठलाभिया भिक्ख-लाभिया अभिक्खलाभिया अण्णातचरगा[3] उवणिहिया सखादत्तिया परिमिय-पिंडवाइया सुद्धेसणिया अताहारा पताहारा अरसाहारा विरसाहारा लूहाहारा तुच्छाहारा अतजीवी पतजीवी पुरिमड्ढिया आयविलिया णिव्विगइया अमज्ज-मसासिणो णो णियामरसभोई[4] ठाणाइया[5] पडिमट्ठाइया[6] णेसज्जिया वीरासणिया दडायतिया लगडसाइणो अवाउडा अगत्तया अकडुया अणिट्ठुहा धुतकेसमसु-रोमणहा सव्वगायपडिकम्मविप्पमुक्का चिट्ठति ॥

६७ ते ण एतेण विहारेण विहरमाणा वहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणति, पाउणित्ता आवाहसि उप्पण्णसि वा अणुप्पण्णसि वा वहूइ भत्ताइ पच्चक्खति,

---

यारी अममा अकिंचणा निरुवलेवा, कसपाईव मुक्कतोया, सखो इव निरगणा, जीवो विव अप्पडिहयगई जच्चकणग पिव जायरूवा, आदरिसफलगा इव पागडभावा, कुम्मो इव गुत्तिदिया, पुक्खरपत्त व निरुवलेवा, गगणमिव निरालवणा, अणिलो इव निरालया, चदो इव सोमलेसा, सूरो इव दित्ततेया, सागरो इव गभीरा, विहग इव सव्वओ विप्पमुक्का, मदरो इव अप्पकपा, सारयसलिल व सुद्ध-हियया, खग्गविमाण व एगजाया, भारुड-पक्खी व अप्पमत्ता, कुजरो इव सोडीरा, वसभो इव जायत्थामा, सीहो इव दुद्धरिसा, वसुधरा इव सव्वफासविसहा, सुहुय-हुयासणो इव तेयसा जलता।

सूत्रकृताङ्गवृत्तिकारनिर्दिष्ट 'धूतकेसमसु-रोमनहा' इति पाठ औपपातिकस्य वाचनान्त-रत्वेन स्वीकृतोस्ति।

१ असौ कोष्ठकवर्ती पाठ व्याख्याश प्रतीयते।
२ अणुप्पगथा (क)।
३ °चरगा अण्णाइलोगचरगा (क), ° चरगा अण्णायलोगचरगा (ख)।
४ निताम° (क)।
५ ठाणादीता (क), ठाणाईया (ख)।
६ पडिमट्ठादी (क)।

पच्चक्खित्ता 'बहूइ भत्ताइ' अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता'[2] जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे मुडभावे अण्हाणगे अदतवणगे अछत्तए अणोवाहणए भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बभचेरवासे परघरपवेसे लद्धावलद्ध[3] माणावमाणणाओ हीलणाओ णिंदणाओ खिसणाओ गरहणाओ तज्जणाओ तालणाओ उच्चावया गामकटगा बावीस परीसहोवसग्गा अहियासिज्जति, तमट्ठ आराहेति, तमट्ठ आराहेत्ता चरमेहि उस्सासणिस्सासेहिं अणत अणुत्तर णिव्वाघाय णिरावरण कसिण पडिपुण्ण केवलवरणाणदसण समुप्पाडेति[4], तओ पच्छा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वायति सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

६८ 'एगच्चाए पुण एगे भयतारो भवति'[5] ।।

६९ अवरे पुण पुव्वकम्मावसेसेण कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति, त जहा—महड्ढिएसु महज्जुइएसु महापरक्कमेसु महाजसेसु महब्बलेसु महाणुभावेसु महासोक्खेसु ।

ते ण तत्थ देवा भवति महड्ढिया[6] महज्जुइया[7] •महापरक्कमा महाजसा महब्बला महाणुभावा° महासोक्खा हार-विराइय-वच्छा कडग-तुडिय-थभिय-भुया अगय-कुडल-मट्ठगडयल-कण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा[8] विचित्तमाला-मउलि-मउडा कल्लाणग[9]-पवर-वत्थपरिहिया कल्लाणग-पवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोदी पलबवणमालधरा[10] दिव्वेण रूवेण दिव्वेण वण्णेण दिव्वेण गधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण सघाएण दिव्वेण सठाणेण दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा गइकल्लाणा ठिइकल्लाणा आगमेसिभद्दया यावि भवति ।।

७० एस ठाणे आरिए[11] •केवले पडिपुण्णे णेयाउए ससुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे

---

१ वासाहि (क, ख) ।

२ वृत्तौ एष पाठो नास्ति व्याख्यात ।

३ लद्धावलद्धवित्तीओ (स्थानाङ्ग ९।६२) ।

४ °पाडेंति २त्ता (ख) ।

५ अस्य सूत्रस्य रचना सक्षिप्ता वर्तते । 'पुव्वकम्मावसेसेण' इत्यादि पदानि अग्रिमसूत्रगतानि इह ग्रहीतव्यानि । औपपातिके (सू० १६७) एतद्विषयकसूत्रस्य पूर्णा रचना लभ्यते—एगच्चा पुण एगे भयतारो पुव्वकम्मावसेसेण कालमासे काल किच्चा उक्कोसेण सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवति ।

६ महिड्ढिया (क) ।

७ स० पा०—महज्जुइया जाव महासोक्खा ।

८ °वत्थाभरणा (क) ।

९ 'कल्लाणगध' (क, ख) औपपातिके (सू०४७) 'कल्लाणग' इत्येव पाठो लभ्यते । सभवतो लिपिदोषेणास्य स्थाने 'कल्लाणगध' इति पाठो जात ।

१० °वणमालाधरा (क) ।

११ स० पा०—आरिए जाव सव्वदुक्ख° ।

मुत्तिमग्गे णिव्वाणमग्गे णिज्जाणमग्गे° सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगतसम्मे साहू। दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभगे एवमाहिए ।।

मीसग-पक्ख-पद

७१ अहावरे तच्चस्स ठाणस्स मीसगस्स विभगे एवमाहिज्जइ—इह खलु पाईण वा पडीण वा उदीण वा दाहिण वा सतेगइया मणुस्सा भवति, त जहा—अप्पिच्छा अप्पारभा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया[1] •धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मप्पलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा° धम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरति, सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणदा सुसाहू, एगच्चाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया[2]। •एगच्चाओ मुसावायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ अदिण्णादाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ मेहुणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ परिग्गहाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोहाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादसणसल्लाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ ण्हाणुम्मद्दण-वण्णग-विलेवण-सद्द-फरिस-रस-रूव-गध-मल्लालकाराओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सिय-सदमाणिया-सयणासण-जाण-वाहण-भोग-भोयण - पवित्थरविहीओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ कय-विक्कय-मासद्धमास-रूवग-सववहाराओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ हिरण्ण-सुवण्ण-धण-धण्ण-मणि-मोत्तिय-सख-सिलप्पवालाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ कूडतुल-कूडमाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ आरभ-समारभाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ करण-कारावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ पयण-पयावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया। एगच्चाओ कुट्टण-पिट्टण-तज्जण-ताडण-वह-वध-परिकिलेसाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया°। जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मता परपाणपरितावणकरा

---

१ स० पा०—धम्माणुया जाव धम्मेण। २ स० पा०—अप्पडिविरया जाव जे यावण्णे।

कज्जति, तओ वि 'एगच्चाओ पडिविरया जावज्जीवाए,'[1] एगच्चाओ अप्पडिविरया ॥

७२ से जहाणामए समणोवासगा भवंति—अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा आसव-संवर-'वेयण-णिज्जर-किरिय-अहिगरण'[2]-बंधमोक्ख-कुसला असहेज्जा[3] देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं णिग्गंथाओ पावयणाओ अणतिक्कमणिज्जा, 'इणमो णिग्गंथिए पावयणे'[4] णिस्संकिया णिक्कंखिया णिव्वितिगिच्छा[5] लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ता[6] "अयमाउसो ! णिग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे" ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा 'चियत्ततेउर-परघरदारप्पवेसा'[7] चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणा समणे णिग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पीढ[8]-फलग-सेज्जासंथारएणं पडिलाभेमाणा बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं[9] तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

७३ ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता आबाहंसि उप्पण्णंसि वा अणुप्पण्णंसि वा बहूइं भत्ताइं पच्चक्खंति, पच्चक्खित्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता[10] कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तं जहा—महड्ढिएसु महज्जुइएसु[11] महापरक्कमेसु महाजसेसु महब्बलेसु महाणुभावेसु महासोक्खेसु ।

ते णं तत्थ देवा भवंति—महड्ढिया महज्जुइया महापरक्कमा महाजसा महब्बला महाणुभावा महासोक्खा हार-विराइय-वच्छा कडग-तुडिय-थंभिय-भुया अंगय-कुंडल-मट्ठगंडयल-कण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमाला-मउलि-मउडा कल्लाणग-पवरवत्थपरिहिया कल्लाणग-पवरमल्लाणुलेवणधरा भासुर-

---

१ × (क, ख), प्रत्योः मुद्रितप्रतिषु च नैष पाठो लभ्यते, किन्तु प्रकरणानुसारेणासौ युज्यते । वृत्तावसौ व्याख्यातोस्ति । औपपातिके (सूत्र १६१) ऽप्यसौ लभ्यते ।
२ वेयणानिज्जराकिरियाहिगरण (ख) ।
३ असहेज्ज (क), असाहेज्ज (ख) ।
४ निग्गंथे पावयणे (ओवाइय सू० १६२) ।
५ णिव्वितिगिच्छा (क) ।
६ अट्ठिमिजाए० (ख) ।
७ अचियत्ततेउरपरघरपवेसा (क, ख), अचियत्ततेउर० (वृ) ।
८ पाडिहारिएण य पीढ (ओवाइय सू० १६२)।
९ अहापडि० (ख) ।
१० समाहि० (क) ।
११ सं० पा०—महज्जुइएसु जाव महासोक्खेसु सेसं तहेव एसट्ठाणे आरिए जाव एगंतसम्मे ।

वोदी पलंबवणमालधरा दिव्वेण रूवेण दिव्वेण वण्णेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण संघाएण दिव्वेण संठाणेण दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा गइकल्लाणा ठिइकल्लाणा आगमेसि-भद्दया यावि भवंति ।।

७४ एस ट्ठाणे आरिए केवले पडिपुण्णे णेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे णिव्वाणमग्गे णिज्जाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे ° एगंतसम्मे साहू ।
तच्चस्स ठाणस्स मीसगस्स विभंगे एवमाहिए ।।

तिपद-समोयार-पदं

७५ अविरइं पडुच्च बाले आहिज्जइ । विरइं पडुच्च पंडिए आहिज्जइ । विरया-विरइं पडुच्च बालपंडिए आहिज्जइ ।
तत्थ णं जा सा सव्वओ अविरई एसट्ठाणे आरंभट्ठाणे अणारिए[1] °अकेवले अप्पडि-पुण्णे अणेयाउए असंसुद्धे असल्लगत्तणे असिद्धिमग्गे अमुत्तिमग्गे अणिव्वाणमग्गे अणिज्जाणमग्गे ° असव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतमिच्छे असाहू ।
तत्थ णं जा सा[2] विरई एसट्ठाणे अणारंभट्ठाणे आरिए[3] °केवले पडिपुण्णे णेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे णिव्वाणमग्गे णिज्जाणमग्गे ° सव्व-दुक्खप्पहीणमग्गे एगंतसम्मे साहू ।
तत्थ णं जा सा[4] विरयाविरई एसट्ठाणे आरंभाणारंभट्ठाणे, एसट्ठाणे[5] आरिए[6] °केवले पडिपुण्णे णेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे णिव्वाणमग्गे णिज्जाणमग्गे ° सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतसम्मे साहू ।।

दुपद-समोयार-पद

७६ एवामेव समणुगम्ममाणा इमेहिं चेव दोहिं ठाणेहिं समोयरंति, तं जहा—धम्मे चेव, अधम्मे चेव । उवसंते चेव, अणुवसंते चेव ।
तत्थ णं जे से 'पढमट्ठाणस्स अधम्मपक्खस्स'[7] विभंगे एवमाहिए, तस्स[8] णं इमाइं तिण्णि तेवट्ठाइं पावादुयसयाइं भवंतीति मक्खायाइं[9], तं जहा—किरियावाईणं

---

१ सं० पा०—अणारिए जाव असव्वदुक्ख° ।
२ सा सव्वओ (क, ख) ।
३ सं० पा०—आरिए जाव सव्वदुक्ख° ।
४ सा सव्वओ (क, ख) ।
५ अस्य पाठस्य पुनरुल्लेख विशेषत्वसूचनार्थम्, यथा वृत्तिकार—एतदपि कथञ्चिदार्यमेव ।
६ सं० पा०—आरिए जाव सव्वदुक्ख° ।
७ पढमस्स ट्ठाणस्स अधम्मस्स° (क), पढमस्स अधम्म° (चू) ।
८ तत्थ (वृ) ।
९ अक्खायाइं (क) ।

अकिरियावाईण अण्णाणियवाईण वेणइयवाईण । तेवि णिव्वाणमाहंसु[1], तेवि पलिमोक्खमाहंसु[2], तेवि लवंति सावगा, तेवि लवंति सावइत्तारो ॥

अहिंसा-पदं

७७ ते सव्वे पावादुया[3] आइगरा[4] धम्माणं, णाणापण्णा णाणाछंदा णाणासीला णाणादिट्ठी णाणारुई णाणारंभा णाणाज्झवसाणसंजुत्ता एगं महं मंडलिबंधं[5] किच्चा सव्वे एगओ चिट्ठंति ।

पुरिसे य सागणियाणं इंगालाणं पाइं[6] बहुपडिपुण्णं अओमएणं[7] संडासएणं गहाय ते सव्वे पावादुए[8] आइगरे धम्माणं, णाणापण्णे[9] •णाणाछंदे णाणासीले णाणादिट्ठी णाणारुई णाणारंभे° णाणाज्झवसाणसंजुत्ते एवं वयासी—हंभो पावादुया[10] ! आइगरा[11] ! धम्माणं, णाणापण्णा[12] ! •णाणाछंदा ! णाणासीला ! णाणादिट्ठी ! णाणारुई ! णाणारंभा !° णाणाज्झवसाणसंजुत्ता ! इमं ताव तुब्भे सागणियाणं इंगालाणं पाइं बहुपडिपुण्णं गहाय मुहुत्तगं-मुहुत्तगं पाणिणा धरेह । णो बहु संडासगं संसारियं कुज्जा, णो बहु अग्गिथंभणियं कुज्जा, णो बहु साहम्मियवेयावडियं कुज्जा, णो बहु परधम्मियवेयावडियं कुज्जा, उज्जुया णियागपडिवण्णा अमायं कुव्वमाणा पाणिं पसारेह—इति वुच्चा[13] से पुरिसे तेसिं पावादुयाणं[14] तं सागणियाणं इंगालाणं[15] पाइं बहुपडिपुण्णं 'अओमएणं संडासएणं गहाय पाणिंसु णिसिरति'[16] ।

तए णं ते पावादुया[17] आइगरा धम्माणं, णाणापण्णा[18] •णाणाछंदा णाणासीला णाणादिट्ठी णाणारुई णाणारंभा° णाणाज्झवसाणसंजुत्ता पाणिं पडिसाहरंति[19] ।

तए णं से पुरिसे ते सव्वे पावादुए आइगरे धम्माणं,[20] •णाणापण्णे णाणाछंदे

---

१ निज्जाण° (क) परिणिव्वाण° (वृ) ।
२. परि° (ख) ।
३ पावाइया (क, ख) ।
४ आइकरा (क) ।
५ मंडल° (क) ।
६ पायं (क) ।
७ अतोमतेण (क) ।
८ पावाइए (क, ख) ।
९ सं० पा०—णाणापण्णे जाव णाणाज्झवसाण° ।
१० पावाइया (क, ख) ।
११ आदियरा (ख) ।
१२ सं० पा०—णाणापण्णा जाव णाणाज्झवसाण° ।
१३ वच्चा (क, ख) ।
१४ पावादियाणं (क, ख) ।
१५ अंगालाणं (क) ।
१६ नागार्जुनीयास्तु 'अओमएणं संडासएणं गहाय इंगाले णिसरति (चू) ।
१७ पावादुया (क), पावादिया (ख) ।
१८ सं० पा०—णाणापण्णा जाव णाणाज्झव-साण° ।
१९ पडिसाहरेंति (क) ।
२० सं० पा०—धम्माणं जाव णाणाज्झवसाण° ।

णाणासीले णाणादिट्ठी णाणारुई णाणारभे° णाणाज्झवसाणसजुत्ते एव वयासी—हभो पावादुया! आइगरा! धम्माण, णाणापण्णा[1]! °णाणाछदा! णाणासीला! णाणादिट्ठी! णाणारुई! णाणारभा°! णाणाज्झवसाण-सजुत्ता! 'कम्हा ण तुब्भे पाणि पडिसाहरह'[2]?

'पाणी णो डज्झेज्जा'[3]?

दड्ढे कि भविस्सइ?

दुक्ख।

दुक्ख ति मण्णमाणा पडिसाहरह[4]?

एस तुला एस पमाणे एस समोसरणे।

पत्तेय तुला पत्तेय पमाणे पत्तेय समोसरणे॥

७८ तत्थ ण जे ते समणमाहणा एवमाइक्खति[5], °एव भासति, एव पण्णवेति, एव° परूवेति—"सव्वे पाणा[6] °सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे° सत्ता हतव्वा अज्जावेयव्वा परिघेतव्वा परितावेयव्वा किलामेयव्वा[7] उद्दवेयव्वा"—ते आगतु[8] छेयाए ते आगतु भेयाए[9] ते आगतु[10] जाइ-जरा-मरण-जोणिजम्मण-ससार-पुणब्भव-गब्भवास-भवपवच-कलकलीभागिणो भविस्सति। ते बहूण दडणाण बहूण मुडणाण बहूण तज्जणाण बहूण तालणाण बहूण अदुबधणाण[12] बहूण घोलणाण बहूण माइमरणाण बहूण पिइमरणाण बहूण भाइमरणाण बहूण भगिणीमरणाण बहूण भज्जामरणाण बहूण पुत्तमरणाण बहूण धूयमरणाण बहूण सुण्हामरणाण बहूण दारिद्दाण बहूण दोहग्गाण बहूण अप्पियसवासाण बहूण पिय-विप्पओगाण बहूण दुक्ख-दोमणस्साण[13] आभागिणो भविस्सति। अणादियं च ण अणवयग्ग दीहमद्ध चाउरत[14]-ससार-कतार भुज्जो-भुज्जो

---

१ स० पा०—णाणापण्णा जाव णाणाज्झव-साण°।

२ °पडिसाहरेह (क), कम्हा पाणि णो पसा-रेह (चू)।

३ पाणी डज्झेज्ज (चू)।

४ पाणि ण पसारेह (चू)।

५ स० पा०—एवमाइक्खति जाव परूवेति।

६ स० पा०—पाणा जाव सत्ता।

७ आयारो ४।१,२०,२२,२३,५।१०१ सूयगडो १।५६,५७,२।१४ उल्लिखितसूत्रेषु एष पाठो नास्ति।

८,९ आगतु (क), आगत (ख)।

१० भेयाए जाव (क, ख), अत्राय शब्दोनावश्यक प्रतिभाति। चूर्णौ 'ते आगतु छेयाए जाव कलकलीभावभागिणो भविस्सति' इति सक्षिप्तपाठो विद्यते। प्रत्यो सक्षिप्तपाठस्य पूर्णपाठस्य च मिश्रण जातमिति प्रतीयते।

११ आगतु (क)।

१२ अदुबधणाण जाव (क, ख) अयमपि 'जाव' शब्दो नावश्यक प्रतिभाति।

१३ दुम्मणसाण (क)।

१४ चतुरत (क)।

अणुपरियट्टिस्सति । ते णो सिज्झिस्सति णो बुज्झिस्सति[1] •णो मुच्चिस्सति णो परिणिव्वाइस्सति° णो सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

एस तुला एस पमाणे एस समोसरणे ।

पत्तेय तुला पत्तेय पमाणे पत्तेय समोसरणे ॥

७९ तत्थ ण जे ते समणमाहणा एवमाइक्खति[2], •एव भासति, एव पण्णवेंति, एव° परूवेंति—"सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा ण किलामेयव्वा ण उद्दवेयव्वा"— ते णो आगतु छेयाए ते णो आगतु भेयाए 'ते णो आगतु जाइ'[3]-जरा-मरण-जोणिजम्मण - ससार - पुणब्भव - गब्भवास - भवपवच - कलकलीभागिणो भविस्सति । ते णो बहूण दडणाण[4] •णो बहूण मुडणाण णो बहूण तज्जणाण णो बहूण तालणाण णो बहूण अदुबधणाण णो बहूण घोलणाण णो बहूण माइमरणाण णो बहूण पिइमरणाण णो बहूण भाइमरणाण णो बहूण भगिणीमरणाण णो बहूण भज्जामरणाण णो बहूण पुत्तमरणाण णो बहूण धूयमरणाण णो बहूण सुण्हामरणाण णो बहूण दारिद्दाण णो बहूण दोहग्गाण णो बहूण अप्पियसवासाण णो बहूण पिय-विप्पओगाण° णो बहूण दुक्ख-दोमणस्साण आभागिणो भविस्सति । अणाइय च ण अणवयग्ग दीहमद्ध चाउरत-ससार-कतार भुज्जो-भुज्जो णो अणुपरियट्टिस्सति । ते सिज्झिस्सति[5] •बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिणिव्वाइस्सति° सव्वदुक्खाण अत करिस्सति ॥

उवसहार-पदं

८० इच्चेतेहिं बारसहिं किरियाठाणेहिं वट्टमाणा जीवा णो सिज्झिसु णो बुज्झिसु णो मुच्चिसु णो परिणिव्वाइसु णो सव्वदुक्खाण अत करेंसु वा णो करेंति वा णो करिस्सति वा ।

एयसि[6] चेव तेरसमे किरियाठाणे वट्टमाणा जीवा सिज्झिसु बुज्झिसु मुच्चिसु परिणिव्वाइसु सव्वदुक्खाण अत करेंसु वा करेंति वा करिस्सति वा ॥

८१ एव से भिक्खू आयट्ठी आयहिए आयगुत्ते आयजोगी[7] आयपरक्कमे[8] आयरक्खिए आयाणुकपए आयणिप्फेडए[9] आयाणमेव पडिसाहरेज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

---

१ स० पा०—बुज्झिसति जाव णो सव्व° ।
२ स० पा०—एवमाइक्खति जाव परूवेंति ।
३ जाव (क) ।
४. स० पा०—दडणाण जाव नो बहूण ।
५ स० पा०—सिज्झिस्सति जाव सव्व° ।
६ एतम्मि (क) ।
७ °जोगे (ख) ।
८ × (ख, वृ) ।
९ °प्फोडए (ख) ।

तइयं अज्झयण

आहारपरिण्णा

उक्खेव-पदं

१. सुय मे आउस ! तेण भगवया एवमक्खाय—इह खलु आहारपरिण्णा णामज्झयणे। तस्स ण अयमट्ठे, इह खलु पाईण वा पडीण वा उदीण वा दाहिण वा सव्वओ[1] सव्वावति च ण लोगसि 'चत्तारि वीयकाया एवमाहिज्जति, त जहा—अग्गवीया मूलवीया पोरबीया खधवीया'[2] ।।

थावरकाय-पगरणं

पुढविजोणियरुक्खस्स आहार-पद

२ तेसिं च ण अहावीएण अहावगासेण इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसभवा पुढविवक्कमा[3], 'तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा'[4], कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा णाणाविहजोणियासु पुढवीसु रुक्खत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तासिं[5] णाणाविहजोणियाण पुढवीण सिणेहमाहारेति—ते जीवा

---

१ सव्वाओ (क,चू)।

२ नागार्जुनीयास्तु पठन्ति—"वणस्सइकाइयाण पचविहा वीजवक्कती एवमाहिज्जइ, त जहा—अग्गमूलपोरुक्खववीयरुहा छट्ठावि एगिंदिया समुच्छिमा वीया जायते" (वृ, चू)।

३ पुढविवुक्कमा (क, ख, वृ), वृत्तिकृता सर्वत्र व्युत्क्रम—पद व्याख्यातमस्ति, किन्तु चूर्णिकारेण सर्वत्र अवक्रमपद व्याख्यातम् आयुर्वेदग्रन्थेष्वपि अस्मिन्नर्थे अवक्रान्तिशब्दो लभ्यते।

४ °तदुवक्कमा (क, ख), °तदुव्वुक्कमा (वृ), केसिं चि आलावगो चेव एस णत्थि, जेसिं पि अत्थि तेसिं पि उक्तार्थ एव (चू)।

५ प्रत्यो अत्र 'तेसिं' पाठो लभ्यते। असौ अशुद्ध प्रतिभाति। चूर्णौ वृत्तौ च 'तासिं' इति पाठो विद्यते।

आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं[1] [तस-पाणसरीरं ?][2]। 'णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीरं अचित्तं कुव्वंति'[3]। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं[4] सारूविकडं[5] संतं ['सव्वप्पणत्ताए आहारेंति'[6]]।

---

१ वणप्फइ० (क)।

२ वनस्पतेरालापकानां पद्धतिद्वयं विद्यते। प्रथमायां पद्धतौ द्विचत्वारिंशत् आलापकाः सन्ति। द्वितीयस्यां च द्वात्रिंशत् आलापकाः। द्वयोः पद्धत्योः को भेदोऽस्तीति चूर्णिव्याख्यया न ज्ञातुं शक्यते। वृत्त्या दीपिकया च तत्रैका भेदरेखा रचितास्ति। प्रथमपद्धतौ—'ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं' एतावान् पाठोस्ति। द्वितीयपद्धतौ—'ते जीवा आहारेंति पुढवि-सरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं'। अत्र 'तस-पाणसरीरं' इति विशिष्टमस्ति। वृत्तिकार-दीपिकाकाराभ्यां द्वितीयपद्धतेः व्याख्याया अन्ते उक्तवैशिष्ट्यस्य समर्थनं कृतमस्ति, यथा—त्रसानां प्राणिनां शरीरमाहारयन्त्येतदवसाने द्रष्टव्यम् (वृ)। त्रसानां शरीरमाहारयन्तीति अंते ज्ञेयम् (दीपिका)। हस्तलिखितादर्शेषु प्रथमपद्धतेरालापकाः पूर्ववद् वर्तन्ते। द्वितीय-पद्धतेरालापकेषु 'तसपाणत्ताए विउट्टंति' इति वैशिष्ट्यमस्ति। द्रष्टव्यं ४४ सूत्रस्य पादटिप्पणगतः संक्षिप्तपाठः।

यदि वृत्त्यनुसारी पाठः स्वीक्रियेत तदा वनस्पतियोनिकानां त्रसानां निरूपणं नान्य-त्रोपलभ्यते।

यदि च आदर्शानुसारी पाठः स्वीक्रियेत तदा वनस्पतेः त्रसप्राणशरीरस्य आहारनिरूपणं नान्यत्रोपलभ्यते।

एतामुभयमुखीं समस्यां समाधातुं अस्माभिः प्रथमपद्धतेरालापकेषु 'तसपाणसरीरं' इति पाठः कोष्ठके नियोजितः, द्वितीयपद्धतेरालाप-केषु च आदर्शानुसारी पाठः स्वीकृतः। 'तसपाणसरीरं' इति पाठस्य नियोजनं निरा-धारं नास्ति। 'णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीरं अचित्तं कुव्वंति' इति पाठेन स्वयमेव त्रसप्राणशरीरस्याहारः प्रतिपादितो भवति। वृत्तिकारेणाप्यस्य समर्थनं क्रियते—किं बहुनोक्तेन ?, नानाविधानां त्रसस्थावराणां प्राणिनां यच्छरीरं तत्ते समुत्पद्यमाना 'अचित्त' मिति स्वकायेनावष्टभ्य प्रासुकी-कुर्वन्ति (वृ)। यदि वनस्पतिः त्रसप्राण-शरीरस्याहारं न कुर्यात् तर्हि उक्तपाठस्य संगतिः कथं स्यात् ? अप्कायादिसूत्रेष्वपि इत्थमेव लभ्यते। तेन उक्तपाठनियोजनं सम्यक्प्रतिभाति।

३ नासौ पाठश्चूर्णौ व्याख्यातः। तत्रासौ पाठान्तररूपेण उल्लिखितोस्ति, नागार्जु-नीयास्तु अवरं च णं असवद्धं पुढविसरीरं जाव णाणाविधाण तसथावराण पाणाण शरीरं अचित्तं कुव्वंति जंतवो, पुव्वविउट्टं चेव जीवेण जीवसहगतं आहारत्ताए गेण्हंति, तपि जधा सरीरत्ताए परिणामेंति तदा अचेतनी-करोति, कथं वा अण्णेण जीवेण परिग्गहितं ताव अण्णसरीरत्ताए परिणमेंति ? जया पुण परि-चत्तं भवति, जीवेण जेणेव सरीरगं णिव्वत्ति-तमासी तदा अण्णो जीवो आहरेति, (चू)।

४ विप्प० (क, ख)।

५ सारूवियकडं (क, ख)।

६ आदर्शयोः 'संतं' इति पदस्याग्रे क्रियापदं

'अवरे वि य ण'[1] तेसिं पुढविजोणियाण रुक्खाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

३ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसभवा रुक्खवक्कमा[2], तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा[3], कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा[4] पुढविजोणिएहिं रुक्खेहिं रुक्खत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाण रुक्खाण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं रुक्खजोणियाण रुक्खाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

४ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसभवा रुक्खवक्कमा,[5] तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा[6], कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा[7] रुक्खजोणिएसु रुक्खेसु रुक्खत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाण रुक्खाण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर[तसपाणसरीर?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर[8] पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं रुक्खजोणियाण रुक्खाण सरीरा णाणावण्णा[9] •णाणागधा

नोपलभ्यते। चूर्णौ 'सत' इदि पद नास्ति व्याख्यात, किन्तु 'सव्वप्पणत्ताए आहारेंति' इति क्रियापद लभ्यते। वृत्तौ च सतपदस्याग्रे तन्मयता प्रतिपद्यते इति विवृतमस्ति।

१. नागार्जुनीयास्तु—एव सम्प्रतिपन्ना—अवरे वि य ण, कतर ? सवद्धमसवद्ध वा, जो पुढविकाइयसरीरेहिं तस्यापतितैर्भोगै सश्लेष इत्यर्थ, तेसिं त पुढवितप्पढमताए सिणेहमाहारयति, असवद्ध पुण ज पासत्तो पुढविसरीर वा ते पुण पण्णत्ती आलावगा वि भणति (चू)।

२ रुक्खवुक्कमा (ख, वृ)।

३ तदुवक्कमा (ख, वृ)।

४ °वक्कम (क), °वुक्कमा (ख, वृ)।

५ रुक्खवुक्कमा (ख, वृ) सर्वत्र।

६ तदुवक्कमा (ख, वृ) सर्वत्र।

७ तत्थवुक्कमा (ख, वृ) सर्वत्र।

८ सरीरग (ख)।

९ स० पा०—णाणावण्णा जाव ते जीवा।

णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया °। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

५ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएसु रुक्खेसु मूलत्ताए कदत्ताए खधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए वीयत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसि रुक्खजोणियाण रुक्खाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर[1] °पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय° सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तेसि रुक्खजोणियाण मूलाण कदाण खधाण तयाण सालाण पवालाण[2] °पत्ताण पुप्फाण फलाण° वीयाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा[3] °णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया °णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

अज्झारोहरुक्खस्स आहार-पदं

६ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहि रुक्खेहि अज्झारोहत्ताए[4] विउट्टति।

ते जीवा तेसि रुक्खजोणियाण रुक्खाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर[5] °आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय° सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तेसि रुक्खजोणियाण अज्झारोहाण सरीरा णाणावण्णा[6] °णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति° मक्खाय ॥

७ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसभवा[7]

---

१ स० पा०—सरीर जाव सारूविकड।
२. स० पा०—पवालाण जाव वीयाण।
३. स० पा०—णाणागधा जाव णाणाविह°।
४ अज्झोरुह° (क) सर्वत्र।
५ स० पा०—पुढविसरीर जाव सारूविकड।
६. स० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खाय।
७ स० पा०—अज्झारोहसभवा जाव कम्मणियाणेण।

•अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्म-णियाणेणं तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएसु अज्झारोहेसु अज्झारोहत्ताए विउट्टंति । ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं[1] अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[2] •आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?] । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं° सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सरीरा णाणावण्णा[3] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ।

८ अहावरं पुरक्खायं - इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा[4] •अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्म-णियाणेणं तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएसु अज्झारोहेसु अज्झारोहत्ताए विउट्टंति ।

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[5] •आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तस-पाणसरीरं ?] । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं° सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सरीरा णाणावण्णा[6] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ।।

९ अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा[7] •अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्म-णियाणेणं तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएसु अज्झारोहेसु मूलत्ताए[8] •कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए° बीयत्ताए विउट्टंति ।

---

१. अज्झारोहजोणियाणं (ख), अशुद्धं प्रतिभाति ।
२ सं० पा०—पुढविसरीरं जाव सारूविकडं ।
३ सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं ।
४ सं० पा०—अज्झारोहसंभवा जाव कम्म-णियाणेणं ।
५ सं० पा०—पुढविसरीरं जाव सारूविकडं ।
६ सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं ।
७ सं० पा०—अज्झारोहसंभवा जाव कम्मणि-याणेणं ।
८ सं० पा०—मूलत्ताए जाव बीयत्ताए ।

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति[1]—•ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तस-पाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]° ॥

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं मूलाणं[2] •कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं° बीयाणं सरीरा णाणावण्णा[3] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ॥

पुढविजोणियतणस्स आहार-पदं

१० अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा[4] •पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा° णाणाविहजोणियासु पुढवीसु तणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तासिं णाणाविहजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति[5]—•ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं पुढविजोणियाणं तणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया°। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

११ [6]•अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसंभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ॥

---

१ सं० पा०—सिणेहमाहारेंति जाव अवरे।
२ सं० पा०—मूलाणं जाव बीयाणं।
३ सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।
४ सं० पा०—पुढविसंभवा जाव णाणाविह°।
५ सं० पा०—सिणेहमाहारेंति जाव ते जीवा।
६ सं० पा०—एवं पुढविजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति जाव मक्खायं।

अवरे वि य ण तेर्सि पुढविजोणियाण तणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति॰ मक्खाय ॥

१२ [1]अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा तणजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेर्सि तणजोणियाण तणाण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?] ॥

अवरे वि य ण तेर्सि तणजोणियाण तणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति॰ मक्खाय ॥

१३ [2]अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवकम्मा तणजोणिएसु तणेसु मूलत्ताए कदत्ताए खधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए वीयत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेर्सि तणजोणियाण तणाण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तेर्सि तणजोणियाण मूलाण कदाण खधाण तयाण सालाण पवालाण पत्ताण पुप्फाण फलाण वीयाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति॰ मक्खाय ॥

पुढविजोणियओसहिस्स-आहार-पद

१४ [3]अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसभवा पुढविवक्कमा,

---

१ स॰ पा॰—एव तणजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टति। तणजोणिय तणसरीर च आहारेंति जाव मक्खाय।

२ स॰ पा॰—एव तणजोणिएसु तणेसु मूलत्ताए जाव वीयत्ताए विउट्टति। ते जीवा जाव मक्खाय।

३ स॰ पा॰—एव ओसहीण वि चत्तारि आलावगा।

तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा णाणाविहजोणियासु पुढवीसु ओसहित्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तासि णाणाविहजोणियाण पुढवीण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?] । णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति । परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?] ।

अवरे वि य ण तासि पुढविजोणियाण ओसहीण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

१५ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा, पुढविजोणियासु ओसहीसु ओसहित्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तासि पुढविजोणियाण ओसहीण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?] । णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति । परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?] ।

अवरे वि य ण तासि पुढविजोणियाण ओसहीण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

१६ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा ओसहिजोणियासु ओसहीसु ओसहित्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तासि ओसहिजोणियाण ओसहीण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?] । णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति । परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?] ।

अवरे वि य ण तासि ओसहिजोणियाण ओसहीण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

१७ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसभवा ओसहि-

वक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण
वक्कमा ओसहिजोणियासु ओसहीसु मूलत्ताए कदत्ताए खधत्ताए तयत्ताए
त्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तासि ओसहिजोणियाण ओसहीण सिणेहमाहारेति—ते
आहारेंति पुढवीसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर
पाणसरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कु
परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविक
[सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं ओसहिजोणियाण मूलाण कदाण खधाण तयाण
पवालाण पत्ताण पुप्फाण फलाण वीयाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा
रसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउ
ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय° ॥

पुढविजोणियहरियस्स आहार-पदं

१८ °अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसभवा
वक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण
वक्कमा णाणाविहजोणियासु पुढवीसु हरियत्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तासि णाणाविहजोणियाण पुढवीण सिणेहमाहारेति—ते जीव
रेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [त
सरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कु
परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविक
[सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं पुढविजोणियाण हरियाण सरीरा णाणावण्णा ण
णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउ
ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

१९ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसभवा हरिय
तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थ
पुढविजोणिएसु हरिएसु हरियत्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाण हरियाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा अ
पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरी
णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिवि

सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं पुढविजोणियाणं हरियाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

२० अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कम्मा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा हरियजोणिएसु हरिएसु हरियत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

२१ अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसंभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा हरियजोणिएसु हरिएसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाणं हरियाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं हरियजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

पुढविजोणियकुहणस्स आहार-पदं

२२ अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा[1] °पुढविवक्कमा,

---

१ स० पा०—पुढविसंभवा जाव कम्म° ।

तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा णाणाविहजोणियासु पुढवीसु आयत्ताए[1] कायत्ताए कुहणत्ताए कदुकत्ताए[2] उव्वेहलियत्ताए णिव्वेहलियत्ताए सछ [त्त ?] त्ताए[3] छत्तगत्ताए वासाणियत्ताए[4] कूरत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तासि णाणाविहजोणियाण पुढवीण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर[5] °आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड° सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तेसि पुढविजोणियाण आयाण[6] °कायाण कुहणाण कदुकाण उव्वेहलियाण णिव्वेहलियाण सछत्ताण छत्तगाण वासाणियाण° कूराण सरीरा णाणावण्णा[7] °णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति° मक्खाय। 'एक्को चेव आलावगो, सेसा तिण्णि णत्थि'[8] ॥

उदगजोणियरुक्खस्स आहार-पद

२३. अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसभवा[9] °उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा णाणाविहजोणिएसु उदएसु रुक्खत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसि णाणाविहजोणियाण उदगाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर[10] °आउसरीर तेउसरीर वाउसरोर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड° सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तेसि उदगजोणियाण रुक्खाण सरीरा णाणावण्णा[11] °णाणागधा

---

१ आयत्ताए वायत्ताए (क)।
२ कुदुकत्ताए (क), कदुत्ताए (ख)।
३ सछत्ताए सज्झत्ताए (क)।
४ वासि° (क)।
५ स० पा०—पुढविसरीर जाव सत।
६ आयत्ताण (ख), स० पा०—आयाण जाव कूराण।
७ स० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खाय।
८ कुहणेपु त्वेक एवालापको द्रष्टव्य, तद्योनिकानामपरेषामभावादिति भाव (वृ)।
९ स० पा०—उदगसभवा जाव कम्म°।
१० स० पा०—पुढविसरीर जाव सत।
११ स० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खाय।

णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया ।
ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं ॥

२४ •[1]अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएहिं रुक्खेहिं रुक्खत्ताए विउट्टंति ।
ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।
अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया ।
ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

२५ अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु रुक्खेसु रुक्खत्ताए विउट्टंति ।
ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?] । णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति । परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।
अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया ।
ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं ॥

२६ अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु रुक्खेसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति ।
ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाण-

---

१. सं० पा०—जहा पुढविजोणियाणं रुक्खाणं चत्तारि गमा अज्झारोहाण वि तहेव, तणाणं ओसहीणं हरियाणं चत्तारि आलावगा भाणियव्वा एक्केक्के ।

सरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं उदगजोणियाण मूलाण कदाण खधाण तयाण सालाण पवालाण पत्ताण पुप्फाण फलाण वीयाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

अज्झारोहरुक्खस्स आहार-पद

२७ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्त। रुक्खजोणिया रुक्खसभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा उदगजोणिएहिं रुक्खेहिं अज्झारोहत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाण रुक्खाण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं उदगजोणियाण अज्झारोहाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

२८ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु अज्झारोहेसु अज्झारोहत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाण अज्झारोहाण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं अज्झारोहजोणियाण अज्झारोहाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

२९ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण

तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएसु अज्झारोहेसु अज्झारोहत्ताए विउट्टति।
ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाण अज्झारोहाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।
अवरे वि य ण तेसिं अज्झारोहजोणियाण अज्झारोहाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय॥

३० अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएसु अज्झारोहेसु मूलत्ताए कदत्ताए खधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टति।
ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाण अज्झारोहाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।
अवरे वि य ण तेसिं अज्झारोहजोणियाण मूलाण कदाण खधाण तयाण सालाण पवालाण पत्ताण पुप्फाण फलाण बीयाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय।

उदगजोणियतणस्स आहार-पद

३१ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा णाणाविहजोणिएसु उदएसु तणत्ताए विउट्टति।
ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाण उदगाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।
अवरे वि य ण तेसिं उदगजोणियाण तणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा

णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया।
ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ।।

३२. अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाण तणाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाण-सरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं उदगजोणियाण तणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया।
ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ।।

३३ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा तणजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाण तणाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड-सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं तणजोणियाण तणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया।
ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ।।

३४ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा तणजोणिएसु तणेसु मूलत्ताए कदत्ताए खधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाण तणाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाण-सरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं तणजोणियाण मूलाण कदाणं खधाण तयाण सालाण पवालाण पत्ताण पुप्फाण फलाण वीयाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

उदगजोणियओसहिस्स आहार-पद

३५ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा णाणाविहजोणिएसु उदएसु ओसहित्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाण उदगाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तासिं उदगजोणियाण ओसहीण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

३६ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा उदगजोणियासु ओसहीसु ओसहित्ताए विउट्टति।

ते जीवा तासिं उदगजोणियाण ओसहीण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तासिं उदगजोणियाण ओसहीण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय।

३७ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तवक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा ओसहिजोणियासु ओसहीसु ओसहित्ताए विउट्टति।

ते जीवा तासिं ओसहिजोणियाण ओसहीण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त

कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।
अवरे वि य ण तासि ओसहिजोणियाण ओसहीण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय॥

३८ अहावर पुरक्खाय – इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा ओसहिजोणियासु ओसहीसु मूलत्ताए कदत्ताए खधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए वीयत्ताए विउट्टति।
ते जीवा तासि ओसहिजोगियाण ओसहीण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।
अवरे वि य ण तेसि ओसहिजोणियाण मूलाण कदाण खधाण तयाण सालाण पवालाण पत्ताण पुप्फाण फलाण वीयाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय॥

उदगजोणियहरियस्स आहार-पदं

३९ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा णाणाविहजोणिएसु उदएसु हरियत्ताए विउट्टति।
ते जीवा तेसि णाणाविहजोणियाण उदगाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर ?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।
अवरे वि य ण तेसि उदगजोणियाण हरियाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय॥

४० अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु हरिएसु हरियत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाण हरियाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं उदगजोणियाण हरियाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

४१ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा हरियजोणिएसु हरिएसु हरियत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाण हरियाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं हरियजोणियाण हरियाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

४२ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा, कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा हरियजोणिएसु हरिएसु मूलत्ताए कदत्ताए खधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए वीयत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाण हरियाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर [तसपाणसरीर?]। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं हरियजोणियाण मूलाण कदाण खधाण तयाण सालाण पवालाण पत्ताण पुप्फाण फलाण वीयाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ०॥

उदगजोणियसेवालादिस्स आहार-पदं

४३ अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा[1] •उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहजोणिएसु उदएसु[2] उदगत्ताए अवगत्ताए पणगत्ताए सेवालत्ताए कलंबुगत्ताए हढत्ताए[3] कसेरुगत्ताए कच्छभाणियत्ताए उप्पलत्ताए पउमत्ताए कुमुयत्ताए णलिणत्ताए सुभगत्ताए सोगंधियत्ताए पोंडरीयत्ताए महापोंडरीयत्ताए सयपत्तत्ताए सहस्सपत्तत्ताए कल्हारत्ताए कोकणयत्ताए अरविंदत्ताए तामरसत्ताए भिसत्ताए भिसमुणालत्ताए पुक्खलत्ताए पुक्खलच्छिभगत्ताए[4] विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[5] •आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं [तसपाणसरीरं ?]। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं उदगाणं अवगाणं पणगाणं सेवालाणं कलंबुगाणं हढाणं कसेरुगाणं कच्छभाणियाणं उप्पलाणं पउमाणं कुमुयाणं णलिणाणं सुभगाणं सोगंधियाणं पोंडरीयाणं महापोंडरीयाणं सयपत्ताणं सहस्सपत्ताणं कल्हाराणं कोकणयाणं अरविंदाणं तामरसाणं भिसाणं भिसमुणालाणं पुक्खलाणं पुक्खलच्छिभगाणं[6] सरीरा णाणावण्णा[7] •णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं।

रुक्खजोणियतसपाणस्स आहार-पदं

४४ [8]•अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा,

---

१ स० पा०—उदगसंभवा जाव कम्म°।

२ × (क, ख)।

३. हठत्ताए (क)।

४ पोक्खलत्थिभगत्ताए (क)।

५ स० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।

६ पोक्खलत्थिभगत्ताणं (क, ख)।

७ स० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।

८ स० पा०—अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता तेहिं चेव (१) पुढविजोणिएहिं रुक्खेहिं, (२) रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं, (३) रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं।

(४) रुक्खजोणिएहिं अज्झोरुहेहिं, (५) अज्झोरुहजोणिएहिं अज्झोरुहेहिं, (६) अज्झोरुहजोणिएहिं जाव बीएहिं।

(७) पुढविजोणिएहिं तणेहिं, (८) तणजोणिएहिं तणेहिं, (९) तणजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं।

(१०-१२) एवं ओसहीहिं वि तिण्णि आलावगा।

(१३-१५) एवं हरिएहिं वि तिण्णि

तज्जोणिया तस्सभवा तव्ववकमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा पुढविजोणिएहि रुक्खेहि तसपाणत्ताए[1] विउट्टति ।

ते जीवा तेसि पुढविजोणियाण रुक्खाण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य ण तेसि रुक्खजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ।।

४५ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहि रुक्खेहि तसपाणत्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तेसि रुक्खजोणियाण रुक्खाण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

आलावगा ।

(१६) पुढविजोणिएहि आएहि जाव कूरेहि ।

(१) उदगजोणिएहि रुक्खेहि, (२) रुक्खजोणिएहि रुक्खेहि, (३) रुक्खजोणिएहि मूलेहि जाव बीएहि ।

(४-६) एव अज्झोरुहेहि वि तिण्णि ।

(७-९) तणेहि वि तिण्णि आलावगा ।

(१०-१२) ओसहीहि वि तिण्णि ।

(१३-१५) हरिएहि वि तिण्णि ।

(१६) उदगजोणिएहि उदएहि अवएहि जाव पुक्खलच्छिभएहि तसपाणत्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तेसि पुढविजोणियाण, उदगजोणियाण रुक्खजोणियाण अज्झोरुहजोणियाण तणजोणियाण ओसहिजोणियाण हरियजोणियाण रुक्खाण अज्झोरुहाण तणाण ओसहीण हरियाण मूलाण जाव बीयाण आयाण कायाण जाव कुरवाण उदगाण जाव पुक्खलच्छिभगाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर जाव सत ।

अवरे वि य ण तेसि रुक्खजोणियाण अज्झोरुहजोणियाण तणजोणियाण ओसहिजोणियाण हरियजोणियाण मूलजोणियाण जाव बीयजोणियाण आयजोणियाण कायजोणियाण जाव कुरवजोणियाण उदगजोणियाण अवगजोणियाण जाव पुक्खलच्छिभगजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा जाव मक्खाय ।

१ चूर्णी वृत्तौ च सर्वत्रापि नामौ व्याख्यात।

अवरे वि य ण तेसिं रुक्खजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

४६ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं कदेहिं खधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं वीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाण मूलाण कदाण खधाण तयाण सालाण पवालाण पत्ताण पुप्फाण फलाण वीयाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं मूलजोणियाण कदजोणियाण खधजोणियाण तयजोणियाण सालजोणियाण पवालजोणियाण पत्तजोणियाण पुप्फजोणियाण फलजोणियाण वीयजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

अज्झारोहजोणिय-तसपाणस्स आहार-पद

४७ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहिं अज्झारोहेहिं तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाण अज्झारोहाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं अज्झारोहजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

४८ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएहिं अज्झारोहेहिं तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाण-सरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परि-विद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्व-प्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं।

४९ अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएहिं मूलेहिं कंदेहिं खंधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं बीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं पत्ताणं पुप्फाणं फलाणं बीयाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं खंधजोणियाणं तयजोणियाणं सालजोणियाणं पवालजोणियाणं पत्तजोणियाणं पुप्फजोणियाणं फलजोणियाणं बीयजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं॥

तणजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

५० अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसंभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा पुढविजोणिएहिं तणेहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं तणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तणजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा

णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ।।

५१ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा तणजोणिएहि तणेहि तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसि तणजोणियाण तणाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसि तणजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ।।

५२ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा तणजोणिएहि मूलेहि कदेहि खधेहि तयाहि सालाहि पवालेहि पत्तेहि पुप्फेहि फलेहि बीएहि तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसि तणजोणियाणं मूलाण कदाण खधाण तयाण सालाण पवालाण पत्ताण पुप्फाण फलाण बीयाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाणं सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसि मूलजोणियाण कदजोणियाण खधजोणियाण तयजोणियाण सालजोणियाण पवालजोणियाण पत्तजोणियाण पुप्फजोणियाण फलजोणियाण बीयजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय।

ओसहिजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

५३ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा पुढविजोणियाहि ओसहीहि तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तासि पुढविजोणियाण ओसहीण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति

पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं ओसहिजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागवा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

५४ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसभवा ओसहि-वक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थ-वक्कमा ओसहिजोणियाहि ओसहीहि तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तासिं ओसहिजोणियाण ओसहीण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहा-रेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं ओसहिजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणा-गधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउ-व्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

५५ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसभवा ओसहि-वक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थ-वक्कमा ओसहिजोणिएहि मूलेहि कदेहि खधेहि तयाहि सालाहि पवालेहि पत्तेहि पुप्फेहि फलेहि वीएहि तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं ओसहिजोणियाण मूलाण कदाण खधाण तयाण सालाण पवालाण पत्ताण पुप्फाण फलाण वीयाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढवि-सरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणा-विहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारियं विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहा-रेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं मूलजोणियाण कदजोणियाण खधजोणियाण तयजोणियाण सालजोणियाण पवालजोणियाण पत्तजोणियाण पुप्फजोणियाण फलजोणियाण वीयजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोव-वण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

हरियजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

५६ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा पुढविजोणिएहिं हरिएहिं तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाण हरियाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं हरियजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय॥

५७ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा हरियजोणिएहिं हरिएहिं तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाण हरियाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं हरियजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय॥

५८ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा हरियजोणिएहिं मूलेहिं कदेहिं खधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं वीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाण मूलाण कदाण खधाण तयाण सालाण पवालाण पत्ताण पुप्फाण फलाण वीयाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसि मूलजोणियाण कदजोणियाण खधजोणियाण तयजोणियाण सालजोणियाण पवालजोणियाण पत्तजोणियाण पुप्फजोणियाण फलजोणियाण बीयजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

कुहणजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

५९ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा पुढविजोणिएहि आएहि काएहि कुहणेहि कदुकेहि उव्वेहलिएहि णिव्वेहलिएहि सछत्तेहि छत्तगेहि वासाणिएहि कूरेहि तसपाणत्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तेसि पुढविजोणियाण आयाण कायाण कुहणाण कदुकाण उव्वेहलियाण णिव्वेहलियाण सछत्ताण छत्तगाण वासाणियाण कूराण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर । णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति । परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?] ।

अवरे वि य ण तेसि आयजोणियाण कायजोणियाण कुहणजोणियाण कदुकजोणियाण उव्वेहलियजोणियाण णिव्वेहलियजोणियाण सछत्तजोणियाण छत्तगजोणियाण वासाणियजोणियाण कूरजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय । एक्को चेव आलावगो, सेसा दो णत्थि ।

रुक्खजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

६० अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा उदगजोणिएहि रुक्खेहि तसपाणत्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तेसि उदगजोणियाण रुक्खाण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर । णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति । परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]

अवरे वि य ण तेसि रुक्खजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा

णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

६१ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहि रुक्खेहि तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसि रुक्खजोणियाण रुक्खाण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तेसि रुक्खजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

६२ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहि मूलेहि कदेहि खधेहि तयाहि सालाहि पवालेहि पत्तेहि पुप्फेहि फलेहि वीएहि तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसि रुक्खजोणियाण मूलाण कदाण खधाण तयाण सालाण पवालाण पत्ताण पुप्फाण फलाण वीयाण सिणेहमाहारेति –ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तेसि मूलजोणियाण कदजोणियाण खधजोणियाण तयजोणियाण सालजोणियाण पवालजोणियाण पत्तजोणियाण पुप्फजोणियाण फलजोणियाण वीयजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

अज्झारोहजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

६३ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसभवा रुक्खवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वकम्मा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा रुक्खजोणिएहि अज्झारोहेहि तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाण अज्झारोहाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाण-सरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परि-विद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्प-णत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं अज्झारोहजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

६४ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणिया-णेण तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएहिं अज्झारोहेहिं तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाण अज्झारोहाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तस-पाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं अज्झारोहजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

६५ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसभवा अज्झारोहवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणिया-णेण तत्थवक्कमा अज्झारोहजोणिएहिं मूलेहिं कदेहिं खधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं वीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाण मूलाण कदाण खधाण तयाण सालाण पवालाण पत्ताण पुप्फाण फलाण वीयाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं मूलजोणियाण कदजोणियाण खधजोणियाण तयजोणियाण सालजोणियाण पवालजोणियाण पत्तजोणियाण पुप्फजोणियाण फलजोणियाण वीयजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणा-फासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोव-वण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

तणजोणिय-तसपाणस्स आहार-पद

६६ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा उदगजोणिएहि तणेहि तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाण तणाण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं तणजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय॥

६७ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा तणजोणिएहि तणेहि तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाण तणाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं तणजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय॥

६८ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता तणजोणिया तणसभवा तणवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा तणजोणिएहि मूलेहि कदेहि खधेहि तयाहि सालाहि पवालेहि पत्तेहि पुप्फेहि फलेहि वीएहि तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं तणजोणियाण मूलाण कदाण खधाण तयाण सालाण पवालाण पत्ताण पुप्फाण फलाण वीयाण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं मूलजोणियाण कदजोणियाण खधजोणियाण तयजोणियाण सालजोणियाण पवालजोणियाण पत्तजोणियाण पुप्फजोणियाण फलजोणियाण वीयजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ।।

ओसहिजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

६९ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा उदगजोणियाहिं ओसहीहिं तसपाणत्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तासि उदगजोणियाण ओसहीण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर । णाणा विहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति । परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य ण तेसिं ओसहिजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ।।

७० अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा ओसहिजोणियाण ओसहीहिं तसपाणत्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तासि ओसहिजोणियाण ओसहीण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर । णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति । परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य ण तेसिं ओसहिजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ।।

७१ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता ओसहिजोणिया ओसहिसभवा ओसहिवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा ओसहिजोणिएहिं मूलेहिं कदेहिं खधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं वीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तेसिं ओसहिजोणियाण मूलाण कदाण खधाण तयाण सालाण पवालाण पत्ताण पुप्फाण फलाण वीयाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति

पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाणं तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं मूलजोणियाण कदजोणियाण खधजोणियाण तयजोणियाण सालजोणियाण पवालजोणियाण पत्तजोणियाण पुप्फजोणियाण फलजोणियाण बीयजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय।

हरियजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

७२ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा उदगजोणिएहिं हरिएहिं तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाण हरियाण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं हरियजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय॥

७३ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसभवा हरियवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा हरियजोणिएहिं हरिएहिं तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाण हरियाण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं हरियजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय॥

७४. अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता हरियजोणिया हरियसभवा हरियवक्कमा,

तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा हरियजोणिएहिं मूलेहिं कदेहिं खधेहिं तयाहिं सालाहिं पवालेहिं पत्तेहिं पुप्फेहिं फलेहिं वीएहिं तसपाणत्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तेसिं हरियजोणियाण मूलाण कदाण खधाण तयाण सालाण पवालाण पत्ताण पुप्फाण फलाण वीयाण सिणेहमाहारेंति – ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं मूलजोणियाण कदजोणियाण खधजोणियाण तयजोणियाण सालजोणियाण पवालजोणियाण पत्तजोणियाण पुप्फजोणियाणं फलजोणियाण वीयजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

सेवालादिजोणिय-तसपाणस्स आहार-पदं

७५ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कम्मा उदगजोणिएहिं उदगेहिं अवगेहिं पणगेहिं सेवालेहिं कलबुगेहिं हढेहिं कसेरुगेहिं कच्छभाणिएहिं उप्पलेहिं पउमेहिं कुमुएहिं णलिणेहिं सुभगेहिं सोगधिएहिं पोडरीएहिं महापोडरीएहिं सयपत्तेहिं सहस्सपत्तेहिं कल्हारेहिं कोकणएहिं अरविंदेहिं तामरसेहिं भिसेहिं भिसमुणालेहिं पुक्खलेहिं पुक्खलच्छिभगेहिं तसपाणत्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तेसिं उदगजोणियाण उदगाण अवगाण पणगाण सेवालाण कलबुगाण हढाण कसेरुगाण कच्छभाणियाण उप्पलाण पउमाण कुमुयाण णलिणाण सुभगाण सोगधियाण पोडरीयाण महापोडरीयाण सयपत्ताण सहस्सपत्ताण कल्हाराण कोकणयाण अरविंदाण तामरसाण भिसाण भिसमुणालाण पुक्खलाण पुक्खलच्छिभगाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं उदगजोणियाण अवगजोणियाण पणगजोणियाण सेवाल-जोणियाण कलबुगजोणियाण हढजोणियाण कसेरुगजोणियाण कच्छभाणिय-

जोणियाण उप्पलजोणियाण पउमजोणियाण कुमुयजोणियाण णलिणजोणियाण सुभगजोणियाण सोगंधियजोणियाण पोंडरीयजोणियाण महापोंडरीयजोणियाण सयपत्तजोणियाण सहस्सपत्तजोणियाण कल्हारजोणियाण कोकणयजोणियाण अरविंदजोणियाण तामरसजोणियाण भिसजोणियाण भिसमुणालजोणियाण पुक्खलजोणियाण पुक्खलच्छिभगजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खाय° ॥

तसकाय-पगरणं

णुस्सस्स आहार-पदं

७६ अहावर पुरक्खाय—णाणाविहाण मणुस्साण, त जहा—कम्मभूमगाण अकम्मभूमगाण अतरदीवगाण आरियाण मिलक्खूण[1]। तेसिं च ण अहाबीएण अहावगासेण[2] इत्थीए पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणिए[3], एत्थ ण मेहुणवत्तियाए णाम संजोगे समुप्पज्जइ। ते दुहओ वि सिणेह संचिणति । तत्थ ण जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुसगत्ताए विउट्टंति ।

'ते जीवा माउओय'[4] पिउसुक्क[5] तदुभय-ससट्ठ कलुस किब्बिस तप्पढमयाए आहारमाहारेंति'[6]। तओ पच्छा ज से माया णाणाविहाओ रसवईओ[7] आहारमाहारेति, तओ एगदेसेण ओयमाहारेंति। अणुपुव्वेण वुड्ढा पलिपागमणुपवण्णा[8], तओ कायाओ अभिणिवट्टमाणा इत्थि वेगया[9] जणयति, पुरिस वेगया जणयति, णपुसग वेगया जणयति। ते जीवा डहरा समाणा 'माउक्खीर सप्पि आहारेंति, अणुपुव्वेण वुड्ढा ओयण कुम्मास'[10] तसथावरे य पाणे—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर[11] •आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर

मिलक्खुयाण (क) ।
अहावकासेण (क, ख) ।
व्या० वि०—व्याकरणदृष्ट्या सप्तम्येकवचने दीर्घत्व स्यात् ।
माओउय (चू) ।
पिय° (ख) ।
चूर्णौ असौ पाठ —माओउय सोणिय पितु शुक्रम्—एतावानेव व्याख्यातोस्ति, वृत्तौ च नास्ति व्याख्यात ।
रसविहीओ (क), रसविगईओ (चू) ।
८ पलियागमणुचिण्णा (क), पलिभागमणु-चिन्ना (ख) ।
९ वेगइया (ख) सर्वत्र ।
१० चूर्णौ 'माउक्खीर' शब्दस्याऽनन्तरमेव 'सप्पि' शब्द व्याख्यात, यथा—खीर मातु स्तन्य, सप्पि घृत वा णवणीत वा । वृत्तौ 'वुड्ढा' इति शब्दस्याऽनन्तर—नवनीतदध्योदनादिक याव-त्कुल्मापान् भुञ्जते । प्रतिषु नेत्थ लभ्यते ।
११ स० पा०—पुढविसरीर जाव सारूविकड ।

वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीरं अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ तं सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय° सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।
अवरे वि य ण तेसिं णाणाविहाण मणुस्सगाण कम्मभूमगाण अकम्मभूमगाण अतरदीवगाणं आरियाण मिलक्खूण सरीरा णाणावण्णा[1] °णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा° भवति त्ति मक्खाय ॥

जलचरस्स आहार-पदं

७७ अहावर पुरक्खाय—णाणाविहाण जलचराण पंचिदियतिरिक्खजोणियाण, त जहा—मच्छाण[2] °कच्छभाण गाहाण मगराण° सुसुमाराण। तेसिं च ण अहावीएण अहावगासेण इत्थीए पुरिसस्स य कम्म[3]°कडाए जोणिए, एत्थ ण मेहुणवत्तियाए णाम सजोगे समुप्पज्जइ। ते दुहओ वि सिणेह सचिणति। तत्थ ण जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुसगत्ताए विउट्टति।
ते जीवा माउओय पिउसुक्क तदुभय-ससट्ठ कलुस किब्बिस तप्पढमयाए आहारमाहारेंति। तओ पच्छा ज से माया णाणाविहाओ रसवईओ आहारमाहारेति,° तओ एगदेसेण ओयमाहारेंति। अणुपुव्वेण वुड्ढा पलिपागमणुपवण्णा[4], तओ कायाओ अभिणिवट्टमाणा अड वेगया जणयति, पोय वेगया जणयति, से[5] अडे उब्भिज्जमाणे इत्थि वेगया जणयति, पुरिस वेगया जणयति, णपुसग वेगया जणयति। ते जीवा डहरा समाणा आउसिणेहमाहारेंति, अणुपुव्वेण वुड्ढा वणस्सइकाय तसथावरे य पाणे—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर[6] °आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड° सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।
अवरे वि य ण तेसिं णाणाविहाण जलचरपंचिदियतिरिक्खजोणियाण मच्छाण[7] °कच्छभाण गाहाण मगराण° सुसुमाराण सरीरा णाणावण्णा[8] °णाणागधा

---

१ सं० पा०—णाणावण्णा जाव भवति।
२. स० पा०—मच्छाण जाव सुसुमाराण।
३ सं० पा०—कम्म तहेव जाव तओ।
४. पलिभागमणुचिन्ना (क), पलितागमणुचिन्ना (ख)।
५ जे (क)।
६ स० पा०—पुढविसरीर जाव सत।
७ स० पा०—मच्छाण जाव सुसुमाराण।
८ स० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खाय।

णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं॥

चउप्पयथलचरस्स आहार-पदं

७८ अहावरं पुरक्खायं—णाणाविहाणं चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तं जहा—एगखुराणं दुखुराणं गंडीपदाणं सणप्फयाणं[1]। तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिसस्स य कम्म[2]°कडाए जोणिए, एत्थ णं° मेहुणवत्तिए णामं संजोगे समुप्पज्जइ। ते दुहओ वि सिणेहं संचिणंति। तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए[3]°णपुंसगत्ताए° विउट्टंति।

ते जीवा माउओयं पिउसुक्कं[4] °तदुभयं-संसट्ठं कलुसं किब्बिसं तप्पढमयाए आहारमाहारेंति। तओ पच्छा जं से माया णाणाविहाओ रसवईओ आहार-माहारेति, तओ एगदेसेणं ओयमाहारेंति। अणुपुव्वेणं वुड्ढा पलिपागमणुपवण्णा तओ कायाओ अभिणिवट्टमाणा° इत्थिं वेगया जणयंति, पुरिसं वेगया जणयंति, णपुंसगं वेगया जणयंति। ते जीवा डहरा समाणा माउक्खीरं सप्पिं आहारेंति, अणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरे य पाणे—ते जीवा आहारेंति पुढवि-सरीरं[5] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणा-विहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं णाणाविहाणं चउप्पयथलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं एगखुराणं[6] °दुखुराणं गंडीपदाणं° सणप्फयाणं सरीरा णाणावण्णा[7] °णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं॥

उरपरिसप्पथलचरस्स आहार-पदं

७९ अहावरं पुरक्खायं—णाणाविहाणं उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणि-याणं, तं जहा—अहीणं अयगराणं आसालियाणं महोरगाणं। तेसिं च णं अहा-बीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिसस्स[8] °य कम्मकडाए जोणिए, एत्थ णं

१ सणपयाणं (क)।
२ सं० पा०—कम्म जाव मेहुणवत्तिए।
३. सं० पा०—पुरिसत्ताए जाव विउट्टंति।
४. सं० पा०—एवं जहा मणुस्साणं जाव इत्थिं।
५ सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।
६ सं० पा०—एगखुराणं जाव सणप्फयाणं।
७ सं० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।
८ सं० पा०—पुरिसस्स जाव एत्थ णं मेहुणे एवं तं चेव नाणत्तं°।

मेहुणवत्तियाए णाम संजोगे समुप्पज्जइ। ते दुहओ वि सिणेहं संचिणंति। तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा माउओयं पिउसुक्कं तदुभय-संसट्ठं कलुसं किव्विसं तप्पढमयाए आहारमाहारेंति। तओ पच्छा जं से माया णाणाविहाओ रसवईओ आहारमाहारेंति, तओ एगदेसेणं ओयमाहारेंति। अणुपुव्वेणं वुड्ढा पलिपागमणुपवण्णा, तओ कायाओ अभिणिवट्टमाणा° अंडं वेगया जणयंति, पोयं वेगया जणयंति। से अंडे उब्भिज्जमाणे इत्थिं वेगया जणयंति, पुरिसं 'वेगया जणयंति'[1], णपुंसगं 'वेगया जणयंति'[2]। ते जीवा डहरा समाणा वाउकायमाहारेंति, अणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरे य पाणे—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[3] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं णाणाविहाणं उरपरिसप्पथलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अहीणं[4] °अयगराणं आसालियाणं° महोरगाणं सरीरा णाणावण्णा[5] °णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं।

भुयपरिसप्पथलचरस्स आहार-पद

८० अहावरं पुरक्खायं—णाणाविहाणं भुयपरिसप्पथलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तं जहा—गोहाणं णउलाणं सेहाणं सरडाणं सल्लाणं सरवाणं खाराणं घरकोइलियाणं[6] विस्सभराणं मूसगाणं मगुसाणं पयलाइयाणं विरालियाणं जाहाणं चाउप्पाइयाणं। तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिसस्स य [7]°कम्मकडाए जोणिए, एत्थ णं मेहुणवत्तियाए णाम संजोगे समुप्पज्जइ। ते दुहओ वि सिणेहं संचिणंति। तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा माउओयं पिउसुक्कं तदुभय-संसट्ठं कलुसं किव्विसं तप्पढमयाए आहारमाहारेंति। तओ पच्छा जं से माया णाणाविहाओ रसवईओ आहारमाहारेंति, तओ एगदेसेणं ओयमाहारेंति। अणुपुव्वेणं वुड्ढा पलिपागमणुपवण्णा, तओ कायाओ अभिणिवट्टमाणा अंडं वेगया जणयंति, पोयं वेगया जणयंति। से अंडे

१,२ पि (क, ख)।

३ स० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।

४ स० पा०—अहीणं जाव महोरगाणं

५ स० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खायं।

६ घरकोल्लि° (क)।

७ स० पा०—जहा उरपरिसप्पाणं तहा भाणियव्वं जाव सारूविकडं।

उब्भिज्जमाणे इत्थिं वेगया जणयति, पुरिसं वेगया जणयति, णपुंसगं वेगया जणयति। ते जीवा डहरा समाणा वाउकायमाहारेंति, अणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरे य पाणे—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं° सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य णं तेसिं णाणाविहाणं भुयपरिसप्पपंचिंदियथलचरतिरिक्खजोणियाणं गोहाणं[1] •णउलाणं सेहाणं सरडाणं सल्लाणं सरवाणं खाराणं घरकोइलियाणं विस्सभराणं मूसगाणं मगुसाणं पयलाइयाणं विरालियाणं जाहाणं चाउप्पाइयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति° मक्खायं॥

खहचरस्स आहार-पदं

८१ अहावरं पुरक्खायं—णाणाविहाणं खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं[2], तं जहा—चम्मपक्खीणं लोमपक्खीणं समुग्गपक्खीणं विततपक्खीणं। तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए •[3]पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणिए, एत्थ णं मेहुणवत्तियाए णामं संजोगे समुप्पज्जइ। ते दुहओ वि सिणेहं संचिणंति। तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताए विउट्टंति।

ते जीवा माउओयं पिउसुक्कं तदुभय-संसट्ठं कलुसं किव्विसं तप्पढमयाए आहारमाहारेंति। तओ पच्छा जं से माया णाणाविहाओ रसवईओ आहारमाहारेति, तओ एगदेसेणं ओयमाहारेंति। अणुपुव्वेणं वुड्ढा पलिपागमणुपवण्णा, तओ कायाओ अभिणिवट्टमाणा अंडं वेगया जणयंति, पोयं वेगया जणयंति। से अंडे उब्भिज्जमाणे इत्थिं वेगया जणयंति, पुरिसं वेगया जणयंति, णपुंसगं वेगया जणयंति°। ते जीवा डहरा समाणा माउगायसिणेहमाहारेंति, अणुपुव्वेणं[4] वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरे य पाणे—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[5] •आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं° संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

---

१ सं० पा०—गोहाणं जाव मक्खायं।
२ खचर° (क)।
३. सं० पा०—जहा उरपरिसप्पाणं णाणत्तं°।
४ °पुव्वेण च णं (क)।
५ सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।

अवरे वि य ण तेसिं णाणाविहाण खहचरपचिदियतिरिक्खजोणियाण चम्मपक्खीण[1] •लोमपक्खीण समुग्गपक्खीण विततपक्खीण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गल-विउव्विया । ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति° मक्खाय ।।

विगलिदियस्स आहार-पद

८२ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया णाणाविहसभवा णाणाविहवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा[2] णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा अणुसूयत्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तेसिं णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर[3] •आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर । णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति । परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड° सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?] ।

अवरे वि य ण तेसिं तसथावरजोणियाण अणुसूयगाण[4] सरीरा णाणावण्णा[5] •णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीर-पोग्गलविउव्विया ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति° मक्खाय ।।

८३ •[6]अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया णाणाविहसभवा णाणाविहवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा णाणाविहाण मणुस्साण तिरिक्खजोणियाण य सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा दुरूवसभवत्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तेसिं णाणाविहाण मणुस्साण तिरिक्खजोणियाण य सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति ।

---

१ स० पा०—चम्मपक्खीण जाव मक्खाय ।

२ तत्योवक्कमा (ख), ८२ सूत्रस्य वृत्तौ 'तत्र उपक्रम्य' तथा ८५ सूत्रस्य वृत्तौ 'तत्र व्युत्क्रम्य' इति व्याख्यातमस्ति । अन्यत्र सर्वत्रापि 'तत्र व्युत्क्रमा' इति व्याख्यातम् । लिपिदोषेणैकरूपस्यापि पाठस्य भिन्नता जातेति प्रतीयते । सर्वत्रापि तत्थावक्कम्म (तत्रावक्रम्य) इति पाठो युज्यते । किन्तु आदर्शेष्वन्यत्रासौ पाठो नोपलब्धस्तेन प्राय सर्वत्रापि 'तत्थवक्कमा' इति पाठ स्वीकृत ।

३ स० पा०—पुढविसरीर जाव सत ।

४ अणुसूयाण (क) ।

५ स० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खाय ।

६ स० पा०—एव दुरूवसभवत्ताए एव खुरदुगत्ताए ।

परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं मणुस्सतिरिक्खजोणियाण दुरूवसभवाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविह-सरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय।

८४ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया णाणाविहसभवा णाणाविहवक्कम्मा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कम्मा णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीरेसु सच्चित्तेसु वा अचित्तेसु वा खुरदुगत्ताए[1] विउट्टति।

ते जीवा तेसिं णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं तसथावरजोणियाण खुरदुगाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीर-पोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय°॥

आउकायस्स आहार-पद

८५ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया[2] •णाणाविहसभवा णाणाविहवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्म-णियाणेण तत्थवक्कमा णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीरेसु सच्चित्तेसु वा अचित्तेसु वा [उदगत्ताए विउट्टति ?]। त सरीरग वायससिद्ध वायसगहिय वायपरिगय उड्ढवाएसु उड्ढभागी भवइ, अहेवाएसु अहेभागी भवइ, तिरियवाएसु तिरियभागी भवइ, त जहा—उस्सा[3] हिमए महिया करए हरतणुए सुद्धोदए।

ते जीवा तेसिं णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर[4] •आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड° सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

---

१ खुरुदुगत्ताए (चू)।
२ स० पा०—णाणाविहजोणिया जाव कम्म°।
३ ओसा (क)।
४ स० पा०—पुढविसरीर जाव संत।

अवरे वि य ण तेसि तसथावरजोणियाण उस्साण[1] •हिमगाण महिगाण करगाण हरतणुगाण° सुद्धोदगाण सरीरा णाणावण्णा[2] •णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति° मक्खाय।

८६ अहावर पुरक्खाय— इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसभवा[3] •उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा तसथावरजोणिएसु उदएसु उदगत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसि तसथावरजोणियाण उदगाण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेंत पुढविसरीर[4] •आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड° सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तसथावरजोणियाण उदगाण सरीरा णाणावण्णा[5] •णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति° मक्खाय॥

८७ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया[6] •उदगसभवा उदगवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु उदएसु उदगत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसि उदगजोणियाण उदगाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर[7] •आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड° सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसि उदगजोणियाण उदगाण सरीरा णाणावण्णा[8] •णाणागधा णासारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति° मक्खाय॥

८८ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता उदगजोणिया[9] •उदगसभवा उदगवक्कमा,

---

१ स० पा०—उस्साण जाव सुद्धोदगाण।
२ स० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खाय।
३. स० पा०—उदगसभवा जाव कम्म°।
४. स० पा०—पुढविसरीर जाव सत।
५ स० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खाय।
६ स० पा०—उदगजोणिया जाव कम्म°, उदगजोणियाण (ख) अशुद्ध प्रतिभाति।
७ स० पा०—पुढविसरीर जाव सत।
८ स० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खाय।
९ स० पा०—उदगजोणिया जाव कम्म°।

तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा उदगजोणिएसु उदएसु तसपाणत्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तेसि उदगजोणियाण उदगाण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर[1] •आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड° सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तेसि उदगजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा[2] •णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति° मक्खाय ॥

अगणिकायस्स आहार-पद

८९ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया[3] •णाणाविहसभवा णाणाविहवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्ते वा अगणिकायत्ताए विउट्टति ।

ते जीवा तेसि णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर[4] •आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड° सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तेसि तसथावरजोणियाण अगणीण सरीरा णाणावण्णा[5] •णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति° मक्खाय ॥

९० •[6]अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता अगणिजोणिया अगणिसभवा अगणिवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा तसथावरजोणिएसु अगणीसु अगणिकायत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसि तसथावरजोणियाण अगणीण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर।

---

१ स० पा०—पुढविसरीर जाव सत ।
२ स० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खाय ।
३ स० पा०—णाणाविहजोणिया जाव कम्म° ।
४ स० पा०—पुढविसरीर जाव सत ।
५ स० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खाय ।
६ स० पा०—सेसा तिण्णि आलावगा जहा उदगाण ।

णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तेसि तसथावरजोणियाण अगणीण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

६१ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता अगणिजोणिया अगणिसभवा अगणिवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा अगणिजोणिएसु अगणीसु अगणिकायत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसि अगणिजोणियाण अगणीण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसि अगणिजोणियाण अगणीणं सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

६२ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता अगणिजोणिया अगणिसभवा अगणिवक्कमा, तज्जोणिया तस्ससभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा अगणिजोणिएसु अगणीसु तसपाणत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसि अगणिजोणियाण अगणीण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसि अगणिजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय° ॥

वाउकायस्स आहार-पदं

६३ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया[1] °णाणाविहसभवा णाणाविहवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणिया-

---

१. स० पा०—णाणाविहजोणिया जाव कम्म°।

णेण तत्थवक्कमा णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा वाउक्कायत्ताए विउट्टति।

[1]ते जीवा तेसिं णाणाविहाण तसथावराणं पाणाण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं तसथावरजोणियाण वाऊण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

९४ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता वाउजोणिया वाउसभवा वाउवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा तसथावरजोणिएसु वाऊसु वाउकायत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं तसथावरजोणियाण वाऊण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं तसथावरजोणियाण वाऊण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

९५ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता वाउजोणिया वाउसभवा वाउवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा वाउजोणिएसु वाऊसु वाउकायत्ताए विउट्टति।

ते जीवा तेसिं वाउजोणियाण वाऊण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]

अवरे वि य ण तेसिं वाउजोणियाण वाऊण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

---

१ स० पा०—जहा अगणीण तहा भाणियव्वा चत्तारिगमा।

९६ अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता वाउजोणिया वाउसंभवा वाउवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा वाउजोणिएसु वाऊसु तसपाणत्ताए विउट्टंति।
ते जीवा तेसिं वाउजोणियाणं वाऊणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति। परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूविकडं संतं [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।
अवरे वि य णं तेसिं वाउजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवंति त्ति मक्खायं° ॥

पुढविकायस्स आहार-पदं

९७ अहावरं पुरक्खायं—इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया[1] °णाणाविहसंभवा णाणाविहवक्कमा, तज्जोणिया तस्संभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा° कम्मणियाणेणं तत्थवक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा पुढवित्ताए सक्करत्ताए वालुयत्ताए जाव[2] सूरकंतत्ताए विउट्टंति।
ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं[3] °आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं तसपाणसरीरं। णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति।

---

१ सं० पा०—णाणाविहजोणिया जाव कम्म°।

२ जाव शब्दस्य पूरकपाठ—इमाओ गाहाओ अणुगंतव्वाओ—

१. पुढवी य सक्करा वालुया य,
उवले सिला य लोणूसे।
अय तउय तम्ब सीसग,
रुप्प सुवण्णे य वइरे य ॥

२. हरियाले हिंगुलुए,
मणोसिला सासगंजणपवाले।
अब्भपडलब्भवालुय,
बायरकाए मणिविहाणा ॥

३. गोमेज्जए य रुयए,
अंके फलिहे य लोहियक्खे य।
मरगय मसारगल्ले,
भुयमोयगइंदनीले य ॥

४ चंदणगेरुयहंसगब्भ,
पुलए सोगंधिए य बोद्धव्वे।
चंदप्पभवेरुलिए,
जलकंते सूरकंते य ॥

एयाओ एएसु भाणियव्वाओ गाहाओ—(क, ख)। उल्लिखितसंग्रहगाथाना चूर्णौ वृत्तौ च कोपि संकेतो नोपलभ्यते।

३. सं० पा०—पुढविसरीरं जाव संतं।

परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड ° सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।
अवरे वि य ण तासि तसथावरजोणियाण पुढवीण[1] °सक्कराण वालुयाण जाव° सूरकताण सरीरा णाणावण्णा[2] °णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलवि उव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति° मक्खाय ॥

९८ [3]°अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा तसथावरजोणियासु पुढवीसु पुढवित्ताए विउट्टति ।
ते जीवा तासि तसथावरजोणियाण पुढवीण सिणेहमाहारेति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति । परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।
अवरे वि य ण तासि तसथावरजोणियाण पुढवीण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

९९ अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा पुढविजोणियासु पुढवीसु पुढवित्ताए विउट्टति ।
ते जीवा तासि पुढविजोणियाण पुढवीण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति । परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।
अवरे वि य ण तासि पुढविजोणियाण पुढवीण सरीरा णाणावण्णा णाणागधा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय ॥

१०० अहावर पुरक्खाय—इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसभवा पुढविवक्कमा, तज्जोणिया तस्सभवा तव्वक्कमा, कम्मोवगा कम्मणियाणेण तत्थवक्कमा पुढविजोणियासु पुढवीसु तसपाणत्ताए विउट्टति ।

---

१ स० पा०—पुढवीण जाव सूरकताण ।
२ स० पा०—णाणावण्णा जाव मक्खाय ।
३ स० पा०—सेसा तिण्णि आलावगा जहा उदगाण ।

ते जीवा तासि पुढविजोणियाण पुढवोण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर तसपाणसरीर। णाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति। परिविद्धत्थ त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूविकड सत [सव्वप्पणत्ताए आहारेंति ?]।

अवरे वि य ण तेसिं पुढविजोणियाण तसपाणाण सरीरा णाणावण्णा णाणागवा णाणारसा णाणाफासा णाणासठाणसठिया णाणाविहसरीरपोग्गलविउव्विया। ते जीवा कम्मोववण्णगा भवति त्ति मक्खाय° ॥

निक्खेव-पद

१०१ अहावर पुरक्खाय—सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता णाणाविह-जोणिया णाणाविहसभवा णाणाविहवक्कमा, सरीरजोणिया सरीरसभवा सरीरवक्कमा, सरीराहारा कम्मोवगा कम्मणियाणा कम्मगइया कम्मठिइया कम्मणा[1] चेव विप्परियासमुवेंति ॥

१०२. सेवमायाणह[2] सेवमायाणित्ता[3] आहारगुत्ते समिए सहिए सया जए।

—त्ति बेमि ॥

---

१. कम्मुणा (क)।

२, ३ से एव° (ख)।

चउत्थं अज्झयणं

पच्चक्खाणकिरिया

पइण्णा-पदं

१ सुय मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु पच्चक्खाणकिरियाणामज्झयणे। तस्स णं अयमट्ठे—आया अपच्चक्खाणी यावि भवइ। आया अकिरियाकुसले यावि भवइ। आया मिच्छासंठिए यावि भवइ। आया एगंतदंडे यावि भवइ। आया एगंतबाले यावि भवइ। आया एगंतसुत्ते यावि भवइ। आया अवियार-मण-वयण-काय-वक्के यावि भवइ। आया अप्पडिहय-पच्चक्खाय[1]-पावकम्मे यावि भवइ।

एस खलु भगवया अक्खाए असंजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबाले एगंतसुत्ते। से बाले अवियार-मण-वयण-काय-वक्के सुविणमवि ण पस्सइ, पावे य से कम्मे कज्जइ॥

चोयगस्स अक्खेव-पदं

२ तत्थ चोयए पण्णवगं एवं वयासी—असंतएणं मणेणं पावएणं, असंतियाए वईए पावियाए, असंतएणं काएणं पावएणं, अहणंतस्स अमणक्खस्स अवियार-मण-वयण[2]-काय-वक्कस्स सुविणमवि अपस्सओ पावे कम्मे णो कज्जइ।

कस्स णं तं हेउं?

चोयए एवं ब्रवीति[3]—अण्णयरेणं मणेणं पावएणं मणवत्तिए[4] पावे कम्मे कज्जइ, अण्णयरीए वईए पावियाए वइवत्तिए पावे कम्मे कज्जइ, अण्णयरेणं

---

१ °अपच्चक्खाय (ख)।

२ वयस (क, ख)।

३ ववीति (क्व)।

४ °पत्तिए (क)।

काएण पावएण कायवत्तिए पावे कम्मे कज्जइ, हणतस्स समणक्खस्स सवियार-मण-वयण-काय-वक्कस्स सुविणमवि पासओ—एवगुणजातीयस्स पावे कम्मे कज्जइ ।

पुणरवि चोयए एव ब्रवीति—तत्थण जेते एवमाहमु—असतएण मणेण पावएण, असतियाए वईए पावियाए, असतएण काएण पावएण, अहणतस्स अमणक्खस्स अवियार-मण-वयण-काय-वक्कस्स सुविणमवि अपस्सओ पावे कम्मे कज्जइ—[तत्थ ण जे ते एवमाहसु][1] मिच्छ ते एवमाहसु ॥

हेउ-पद

३ तत्थ पण्णवए चोयग एव वयासी— ज मए पुव्व वुत्त असतएण मणेण पावएण, असतियाए वईए पावियाए, असतएण काएण पावएण, अहणतस्स अमणक्खस्स अवियार-मण वयण-काय-वक्कस्स सुविणमवि अपस्सओ पावे कम्मे कज्जइ—त सम्म ।

कस्स ण त हेउ ?

आचार्य आह—तत्थ खलु भगवया छज्जीवणिकाया हेऊ पण्णत्ता, त जहा—पुढविकाइया[2] °आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया° तस-काइया । इच्चेतेहिं छहिं जीवणिकाएहिं आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे, णिच्च पसढ-विओवात[3]-चित्त-दडे, त जहा—'पाणाइवाए[4] °मुसावाए अदिण्णा-दाणे मेहुणे° परिग्गहे कोहे[5] °माणे मायाए लोहे पेज्जे दोसे कलहे अब्भक्खाणे पेसुण्णे परपरिवाए अरइरईए मायामोसे° मिच्छादसणसल्ले'[6] ॥

---

१ एतत् पुनरुक्त वर्तते तेन कोष्ठके विन्यस्तम् ।

२ स० पा०—पुढविकाइया जाव तसकाइया ।

३ विउवाय (क, ख) ।

४. स० पा०—पाणाइवाए जाव परिग्गहे ।

५ स० पा० —कोहे जाव मिच्छा° ।

६ प्राणातिपातादारभ्य मिथ्यादर्शनशल्यपर्यन्त सक्षिप्तपाठो वर्तते । चूर्णिवृत्त्योरनुसारेण स एव विस्तृतो भवति—पाणाइवाए आया अपडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्च पसढ-पाणाइवायचित्तदडे भवइ । मुसावाए आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्च पसढ-मुसावायचित्तदडे भवइ । अदिण्णादाणे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्च पसढ-अदिण्णादाणचित्तदडे भवइ । मेहुणे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्च पसढ-मेहुणचित्तदडे भवइ । परिग्गहे आया अप्पडि-हयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्च पसढपरिग्गह-चित्तदडे भवइ । कोहे आया अप्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्च पसढकोहचित्तदडे भवइ । माणे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्च पसढमाणचित्तदडे भवइ । मायाए आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्च पसढमायचित्तदडे भवइ । लोहे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्च पसढ-लोहचित्तदडे भवइ । पेज्जे आया अप्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्च पसढपेज्जचित्तदडे

दिट्ठंत-पद

४ आचार्य आह—तत्थ खलु भगवया वहए दिट्ठते पण्णत्ते—से जहाणामए वहए सिया गाहावइस्स वा गाहावइपुत्तस्स वा रण्णो वा रायपुरिसस्स वा खण णिदाए पविसिस्सामि खण लद्धूण वहिस्सामित्ति पहारेमाणे ।

से कि णु हु णाम से वहए 'तस्स वा' गाहावइस्स तस्स[२] वा गाहावइपुत्तस्स तस्स[३] वा रण्णो तस्स[४] वा रायपुरिसस्स[५] खण णिदाए पविसिस्सामि खण लद्धूण वहिस्सामित्ति पहारेमाणे[६] दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्त-भूए मिच्छासठिए णिच्च पसढ-विओवाय[७]-चित्तदडे भवइ ? एव वियागरेमाणे समियाए वियागरे ?

चोयए—हता भवइ ॥

उवणय-पद

५ आचार्य आह—जहा से वहए तस्स वा गाहावइस्स तस्स वा गाहावइपुत्तस्स तस्स वा रण्णो तस्स वा रायपुरिसस्स खण णिदाए पविसिस्सामि खण लद्धूण वहिस्सामित्ति[८] पहारेमाणे दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासठिए णिच्च पसढ-विओवाय[९]-चित्तदडे, एवामेव बाले वि सव्वेसि पाणाण[१०] •सव्वेसि भूयाण सव्वेसि जीवाण° सव्वेसि सत्ताण दिया वा राओ वा

भवइ । दोसे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्च पसढदोसचित्तदडे भवइ । कलहे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्च पसढकलहचित्तदडे भवइ । अब्भक्खाणे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्च पसढअब्भक्खाणचित्तदडे भवइ । पेसुण्णे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्च पसढ-पेसुण्णचित्तदडे भवइ । परपरिवाए आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्च पसढ-परपरिवायचित्तदडे भवइ । अरइरईए आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्च पसढ-अरइरईचित्तदडे भवइ । मायामोसे आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्च पसढ-मायामोसचित्तदडे भवइ । मिच्छादसणसल्ले आया अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे णिच्च पसढमिच्छादसणसल्लचित्तदडे भवइ ।

१ × (ख) ।

२, ३, ४ × (ख) ।

५ °पुरिसस्स वा (ख) ।

६ नागार्जुनीयास्तु पठन्ति—'अप्पणो अक्खण-याए तस्स वा पुरिसस्स छिद्द अलभमाणे णो वहेइ, त जया मे खणो भविस्सइ तस्स पुरिसस्स छिद्द लभिस्सामि तया मे स पुरिसे अवस्स वहेयव्वे भविस्सइ, एव मणो पहारे-माणे (चू, वृ) ।

७ विउवाय (क, ख) ।

८ °मीति (क) ।

९ वित्तिवाय (क) ।

१० स० पा०—पाणाण जाव सव्वेसि ।

सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासठिए णिच्च पसढ-विओवाय[1]-चित्तदडे, त जहा—पाणाइवाए जाव[2] मिच्छादसणसल्ले[3]।

एस[4] खलु भगवया अक्खाए असजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे सकिरिए असवुडे एगतदडे एगतबाले एगतसुत्ते 'यावि भवइ'[5]।

से बाले अवियारमण-वयण[6]-काय-वक्के सुविणमवि ण पस्सइ, पावे य से कम्मे कज्जइ ॥

णिगमण-पदं

६ जहा से वहए तस्स वा गाहावइस्स[7] •तस्स वा गाहावइपुत्तस्स तस्स वा रण्णो° तस्स वा रायपुरिसस्स 'पत्तेय-पत्तेय'[8] 'चित्त समादाय'[9] दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासठिए णिच्च पसढ-विओवाय-चित्तदडे भवइ, एवामेव बाले सव्वेसि पाणाण[10] •सव्वेसि भूयाण सव्वेसि जीवाण° सव्वेसि सत्ताण पत्तेय-पत्तेय चित्त समादाय दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासठिए णिच्च पसढ-विओवाय-चित्तदडे भवइ ॥

चोयगस्स अक्खेव-पद

७ 'णो इणट्ठे समट्ठे'[11]—इह खलु बहवे पाणा, जे इमेण सरीरसमुस्सएण णो दिट्ठा वा सुया वा णाभिमया[12] वा विण्णाया वा, जेसि णो पत्तेय-पत्तेय 'चित्त समादाय'[13] दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासठिए णिच्च पसढ-विओवाय-चित्तदडे, त जहा—'पाणाइवाए जाव[14] मिच्छादसण-सल्ले'[15] ॥

---

१ विउवाय (क, ख)।

२ सू० २।४।३।

३ णिच्च पसढपाणाइवायचित्तदडे णिच्च पसढ-मुसावायचित्तदडे णिच्च पसढअदिण्णादाण-चित्तदडे एव 'मिच्छादसणसल्ल' पर्यन्त पाठ-योजना कार्या। द्रष्टव्यम्—तृतीयसूत्रे एत-त्तुल्यपाठस्य पादटिप्पणम्।

४ एव (ख)।

५ प्रथम सूत्रे एतत्तुल्यवाक्ये 'यावि भवइ' इति पाठाशो नास्ति।

६ वयस (क)।

७ स० पा०—गाहावइस्स जाव तस्स।

८ पत्तेय (क, ख)।

९ चित्तसमादाए (क, ख)।

१० स० पा०—पाणाण जाव सव्वेसि।

११ णो इणत्थे समत्थे चोयक (क), णो इणट्ठे चोदक (ख)।

१२ णाभिमुत्ता (क)।

१३ चित्तसमादाए (क, ख)।

१४ सू० २।४।३।

१५ द्रष्टव्यम्—पचमसूत्रे एतत्तुल्यपाठस्य पाद-टिप्पणम्।

सण्णि-असण्णि-दिट्ठंत-पद

८ आचार्य आह—तत्थ[1] खलु भगवया दुवे दिट्ठता पण्णत्ता, त जहा—सण्णिदिट्ठते य असण्णिदिट्ठते य ।।

९ से कि त सण्णिदिट्ठते ?
सण्णिदिट्ठते—जे इमे सण्णिपचिंदिया पज्जत्तगा । एतेसि ण छज्जीवणिकाए पडुच्च[2], [पइण्ण कुज्जा[3] ?] ।।

१० से एगइओ पुढविकाएण किच्च करेइ वि कारवेइ वि । तस्स ण एव भवइ—एव खलु अह पुढविकाएण किच्च करेमि वि कारवेमि वि । णो चेव ण से एव भवइ—इमेण वा इमेण वा । से 'य तेण'[4] पुढविकाएण किच्च करेइ वि कारवेइ वि । से य तओ[5] पुढविकायाओ असजय-अविरय-अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे यावि भवइ ।।

११ [6]से एगइओ आउकाएण किच्च करेइ वि कारवेइ वि । तस्स ण एव भवइ—एव खलु अह आउकाएण किच्च करेमि वि कारवेमि वि । णो चेव ण से एव भवइ—इमेण वा इमेण वा । से य तेण आउकाएण किच्च करेइ वि कारवेइ वि । से य तओ आउकायाओ असजय-अविरय-अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे यावि भवइ ।।

१२ से एगइओ तेउकाएण किच्च करेइ वि कारवेइ वि । तस्स ण एव भवइ—एव खलु अह तेउकाएण किच्च करेमि वि कारवेमि वि । णो चेव ण से एव भवइ—इमेण वा इमेण वा । से य तेण तेउकाएण किच्च करेइ वि कारवेइ वि । से य तओ तेउकायाओ असजय-अविरय-अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे यावि भवइ ।।

१३ से एगइओ वाउकाएण किच्च करेइ वि कारवेइ वि । तस्स ण एव भवइ - एव खलु अह वाउकाएण किच्च करेमि वि कारवेमि वि । णो चेव ण से एव भवइ—इमेण वा इमेण वा । से य तेण वाउकाएण किच्च करेइ वि कारवेइ वि ।

---

१. अत्र पूरकपाठरूपेण चूर्णिगतविवरण लभ्यते—एव चोदएण वुत्ते पण्णवतो भणति—जइ वि तस्स अपच्चक्खाणियस्स अणवकारेसु अणुवज्जमाणेसु यत सन्निकृष्टेसु विप्रकृष्टेसु वधचित्त ण उप्पज्जति तहा वि सो तेसु अविरति प्रत्ययादमुक्तवैरो भवति ।

२ पडुच्च, त जहा—पुढविकाय जाव तसकाय (क, ख), व्याख्याशोय प्रतीयते ।

३ एव भूता प्रतिज्ञा—नियम कुर्यात् । तद्यथा—अह षट्सु जीवनिकायेषु मध्ये पृथिवीकायेनैवैकेन वालुकाशिलोपललवणादि स्वरूपेण 'कृत्य'—कार्यं कुर्यां, स चैव कृतप्रतिज्ञस्तेन, तस्मिन् तस्मात्त वा करोति कारयति च (वृ) ।

४ एतेण (ख) ।

५ ताओ (क, ख) ।

६ स० पा०—एव जाव तसकाए त्ति भाणियव्व ।

से य तओ वाउकायाओ असजय-अविरय-अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे यावि भवइ ॥

१४ से एगइओ वणस्सइकाएण किच्च करेइ वि कारवेइ वि। तस्स ण एव भवइ—एव खलु अह वणस्सइकाएण किच्च करेमि वि कारवेमि वि। णो चेव ण से एव भवइ—इमेण वा इमेण वा। से य तेण वणस्सइकाएण किच्च करेइ वि कारवेइ वि। से य तओ वणस्सइकायाओ असजय-अविरय-अप्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे यावि भवइ ॥

१५ से एगइओ तसकाएण किच्च करेइ वि कारवेइ वि। तस्स ण एव भवइ—एव खलु अह तसकाएण किच्च करेमि वि कारवेमि वि। णो चेव ण से एव भवइ—इमेण वा इमेण वा। से य तेण तसकाएण किच्च करेइ वि कारवेइ वि। से य तओ तसकायाओ असजय-अविरय-अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे यावि भवइ° ॥

१६ से एगइओ छज्जीवणिकाएहि किच्च करेइ वि कारवेइ वि। तस्स ण एव भवइ—एव खलु छज्जीवणिकाएहि किच्च करेमि वि कारवेमि वि। णो चेव ण से एव भवइ—इमेहि वा इमेहि वा। से य तेहि छहि जीवणिकाएहि[1] °किच्च करेइ वि° कारवेइ वि। से य तेहि छहि जीवणिकाएहि असजय-अविरय-अप्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, त जहा—'पाणाइवाए जाव[2] मिच्छादंसणसल्ले'[3]।

एस खलु भगवया अक्खाए अस्सजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खाय[4]-पावकम्मे सुविणमवि 'ण पस्सइ'[5] पावे य से कम्मे कज्जइ।

—से त सण्णिदिट्ठते ॥

---

१. स० पा०—जीवणिकाएहि जाव कारवेइ।

२ सू० २।४।३।

३ एव मुसावाते वि, ण तस्स एव भवति—इद मया वक्तव्यमनृत इद नो वत्तव्वमिति, से य ततो मुसावायातो तिविहेण असजते। अदिण्णादाणे इद मया घेत्तव्व अमुगस्स ण। मेथुण इम सेवियव्व इम ण। परिग्गहे इम घेत्तव्व इम ण। कोहे इमस्स रूसितव्व इमस्स ण। एव जाव परपरिवाए इम वा विभासा। मिच्छादसणे इम तत्त्वमिति शेपमतत्त्वमिति (चू)। अस्य चूर्णिविवरणस्याधारेण निम्न-निर्दिष्टा पाठपद्धति प्रजायते—से एगइओ मुस वयइ वि वाएइ वि। तस्स ण एव भवइ—एव खलु अह सव्वदव्वेसु मुस वएमि वि, वाएमि वि। णो चेव ण से एव भवइ—इम वत्तव्व, इम ण वत्तव्व। से य सव्वदव्वेसु मुस वयइ वि, वाएइ वि। से य ण तओ मुसावायाओ असजय-अविरय-अप्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे। एव 'मिच्छादसण-सल्ल' पर्यन्त पाठयोजना कार्या।

४. °अपच्चक्खाय (क, ख)।

५ अपस्समो (क, ख)।

१७ से कि त असण्णिदिट्ठते ?

असण्णिदिट्ठते—जे इमे असण्णिणो पाणा, त जहा—पुढविकाइया[1] •आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया° वणस्सइकाइया छट्ठा वेगइया तसा पाणा। जेसिं णो तक्का इ वा सण्णा इ वा पण्णा इ वा मणे इ वा वई इ वा सय वा करणाए, अण्णेहिं वा कारवेत्तए, करेंत वा समणुजाणित्तए, ते वि ण वाला सव्वेसिं पाणाण[2] •सव्वेसिं भूयाण सव्वेसिं जीवाण° सव्वेसिं सत्ताण दिया वा राओ वा सुत्ता[3] वा जागरमाणा[4] अमित्तभूया मिच्छासठिया णिच्च पसढ-विओवाय-चित्तदडा, त जहा—'पाणाइवाए जाव[5] मिच्छादसणसल्ले'[6]।

इच्चेव जाणे[7] णो चेव मणो णो चेव वई पाणाण[8] •भूयाण जीवाण° सत्ताण दुक्खणयाए सोयणयाए जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्टणयाए परितप्पणयाए, ते दुक्खण-सोयण[9] •जूरण - तिप्पण - पिट्टण °-परितप्पण-वह-वध[10]-परिकिलेसाओ अप्पडिविरया भवति।

इति[11] खलु ते[12]असण्णिणो वि सता अहोणिस पाणाइवाए उवक्खाइज्जति जाव[13] अहोणिस मिच्छादसणसल्ले उवक्खाइज्जति ॥

सण्णि-असण्णि-दिट्ठतस्स परिसेस-पद

१८ सव्वजोणिया वि खलु सत्ता—सण्णिणो हुच्चा असण्णिणो होति, असण्णिणो हुच्चा सण्णिणो होति, होच्चा सण्णी अदुवा असण्णी। तत्थ से अविविचित्ता अविधूणित्ता[14] असमुच्छित्ता अणणुतावित्ता असण्णिकायाओ वा सण्णिकाय सकमति, सण्णिकायाओ वा असण्णिकाय सकमति, सण्णिकायाओ वा सण्णिकाय सकमति, असण्णिकायाओ वा असण्णिकाय सकमति ॥

१९ जे एए सण्णी वा असण्णी वा सव्वे ते मिच्छायारा णिच्च पसढ-विओवाय-चित्तदडा, त जहा—'पाणाइवाए जाव[15] मिच्छादसणसल्ले'[16] ॥

---

१ स० पा०—पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया।

२ स० पा०—पाणाण जाव सव्वेसिं।

३ सुत्ते (क, ख)।

४ जागरमाणे (क, ख)।

५ सू० २।४।३।

६ द्रष्टव्यम्—पञ्चमसूत्रे एतत्तुल्यपाठस्य पादटिप्पणम्। एकवचनस्य स्थाने बहुवचन कार्यमिति विशेष।

७ जाण (क); जाव (ख)।

८ स० पा०—पाणाण जाव सत्ताण।

९ स० पा०—सोयण जाव परितप्पण।

१० ववण (क, चू)।

११ इह (क)।

१२ ये (वृ)।

१३ सू० २।४।३।

१४ अविधुणित्ता (क), अविधूणिता (ख)।

१५ सू० २।४।३।

१६ द्रष्टव्यम्—पचमसूत्रे एतत्तुल्यपाठस्य पादटिप्पणम्। एकवचनस्य स्थाने बहुवचन कार्यमिति विशेष।

२०. एवं खलु भगवया अक्खाए असंजए अविरए अप्पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबाले एगंतसुत्ते।
से बाले अवियारमण-वयण-काय-वक्के सुविणमवि ण पासइ, पावे य से कम्मे कज्जइ॥

संजय-पदं

२१ चोयग:—से किं कुव्वं? किं कारवं? कहं संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे भवइ?
आचार्य आह—तत्थ खलु भगवया छज्जीवणिकायहेऊ पण्णत्ता, तं जहा—पुढवी-काइया[1] °आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया° तसकाइया। से जहाणामए मम अस्सातं दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा[2] वा कवा-लेण वा आतोडिज्जमाणस्स वा[3] °हम्ममाणस्स वा तज्जिज्जमाणस्स वा ताडिज्जमाणस्स वा परिताविज्जमाणस्स वा किलामिज्जमाणस्स वा° उवद्दविज्जमाणस्स वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारगं[4] दुक्खं भयं पडिसंवेदेमि—इच्चेवं जाण।
सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता दंडेण वा[5] °अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा° कवालेण वा आतोडिज्जमाणा वा हम्ममाणा वा तज्जिज्ज-माणा वा तालिज्जमाणा वा[6] °परिताविज्जमाणा वा किलामिज्जमाणा वा° उवद्दविज्जमाणा वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारगं दुक्खं भयं पडिसंवेदेंति,—एवं णच्चा सव्वे पाणा[7] °सव्वे भूया सव्वे जीवा° सव्वे सत्ता ण हंतव्वा[8] °ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा° ण उद्दवेयव्वा। एस धम्मे धुवे णिइए सासए समेच्च लोगं खेत्तण्णेहिं पवेइए॥

२२ एवं से भिक्खू विरए पाणाइवायाओ जाव[9] मिच्छादंसणसल्लाओ॥

२३ से भिक्खू णो दंतपक्खालणेण दंते पक्खालेज्जा, णो अंजणं, णो वमणं, णो धूवणेत्तं पिआइए[10]॥

---

१. सं० पा०—पुढविकाइया जाव तसकाइया।
२ लेलूण (क, ख)।
३ सं० पा०—आतोडिज्जमाणस्स वा जाव उवद्दविज्ज°।
४. हिंसक्कार (क, ख)।
५ सं० पा०—दंडेण वा जाव कवालेण।
६ सं० पा०—तालिज्जमाणा वा जाव उवद्दविज्जमाणा।
७ सं० पा०—पाणा जाव सव्वे।
८ सं० पा०—हंतव्वा जाव ण उद्दवेयव्वा।
९ सू० २।४।३।
१० पिआदिते (क, ख)।

२४ से भिक्खू अकिरिए अलूसए अकोहे[1] °अमाणे अमाए° अलोभे उवसंते परिणिव्वुडे ॥

२५ एस खलु भगवया अक्खाए संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे अकिरिए संवुडे एगंतपंडिए यावि भवइ।

—त्ति बेमि ॥

---

१ स० पा०—अकोहे जाव अलोभे।

पचमं अज्झयणं

आयारसुयं

१ 'आदाय बंभचेरं च'[१] आसुपण्णे इमं वइं।
अस्सिं धम्मे अणायारं णायरेज्ज कयाइ वि ॥

सासय-असासय-पदं

२ अणादीयं परिण्णाय[२] अणवदग्गे[३] ति वा पुणो।
सासयमसासए वा[४] इइ दिट्ठिं ण धारए ॥
३ एएहिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारं विजाणए[५] ॥
४ समुच्छिज्जिहिंति[६] सत्थारो सव्वे पाणा अणेलिसा।
गंठिगा वा[७] भविस्संति, सासयं ति व णो वए ॥
५ एएहिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारं [५]विजाणए ॥

सरिस-असरिस-पदं

६ जे केइ खुड्डगा पाणा अदुवा संति महालया।
सरिसं तेहिं वेरं ति असरिसं[८] ति य णो वए ॥
७ एएहिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारं विजाणए ॥

---

१ बंभचेरं आदाय (चू)।
२ परिण्णाते (क)।
३ ०दग्गे (क), अणवयग्गे (ख)।
४ वा वि (क, ख)।
५ तु जाणए (क,ख), तु विजाणए (वृ) सर्वत्र।
६ समुच्छेहिंति (ख), वोच्छिज्जिस्सति (चू)।
७ व (ख)।
८ विशदृशम्—असदृशम् (वृ)।

अहाकम्म-पद

८ अहाकम्माणि[1] भुजति[2] 'अण्णमण्णे सकम्मुणा'[3]।
उवलित्ते त्ति जाणिज्जा अणुवलित्ते त्ति वा पुणो ॥
९ एएहिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायार विजाणए ॥

सरीरवीरिय-पद

१० जमिद ओरालमाहार कम्मग च तमेव[4] य।
सव्वत्थ वीरिय अत्थि णत्थि सव्वत्थ वीरिय ॥
११ एएहि दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायार विजाणए ॥

लोगादीणं अत्थित्त-सण्णा-पदं

१२ णत्थि लोए अलोए वा णेव सण्ण णिवेसए।
अत्थि लोए अलोए वा एव सण्ण णिवेसए ॥
१३ णत्थि जीवा अजीवा वा णेव सण्ण णिवेसए।
अत्थि जीवा अजीवा वा एव सण्ण णिवेसए ॥
१४ णत्थि धम्मे अधम्मे वा णेव सण्ण णिवेसए।
अत्थि धम्मे अधम्मे वा एव सण्ण णिवेसए ॥
१५ णत्थि वघे व मोक्खे वा णेव सण्ण णिवेसए।
अत्थि वघे व मोक्खे वा एव सण्ण णिवेसए ॥
१६ णत्थि पुण्णे व पावे वा णेव सण्ण णिवेसए।
अत्थि पुण्णे व पावे वा एव सण्ण णिवेसए ॥
१७ णत्थि आसवे सवरे वा णेव सण्ण णिवेसए।
अत्थि आसवे सवरे वा एव सण्ण णिवेसए ॥
१८ णत्थि वेयणा णिज्जरा वा णेव सण्ण णिवेसए।
अत्थि वेयणा णिज्जरा वा एव सण्ण णिवेसए ॥
१९ णत्थि किरिया अकिरिया वा णेव सण्ण णिवेसए।
अत्थि किरिया अकिरिया वा एव सण्ण णिवेसए ॥
२० णत्थि कोहे व माणे वा णेव सण्ण णिवेसए।
अत्थि कोहे व माणे वा एव सण्ण णिवेसए ॥

---

१. आहाकडाति (क), अहाकडाणि (ख)।
२ चूर्णौ 'भुजति' इति शब्दो नास्ति व्याख्यात'।
३ अन्नमन्नेसु कम्मुणा (ख), अण्णमणस्स कम्मुणा (चू)।
४ तहेव (ख)।

२१ णत्थि माया व लोभे वा णेव सण्ण णिवेसए।
अत्थि माया व लोभे वा एव सण्ण णिवेसए॥
२२ णत्थि पेज्जे[1] व दोसे वा णेव सण्ण णिवेसए।
अत्थि पेज्जे व दोसे वा एव सण्ण णिवेसए॥
२३ णत्थि चाउरते ससारे णेव सण्ण णिवेसए।
अत्थि चाउरते ससारे एव सण्ण णिवेसए॥
२४ णत्थि देवो व देवी वा णेव सण्ण णिवेसए।
अत्थि देवो व देवी वा एव सण्ण णिवेसए॥
२५ णत्थि सिद्धी असिद्धी वा णेव सण्ण णिवेसए।
अत्थि सिद्धी असिद्धी वा एव सण्ण णिवेसए॥
२६ णत्थि सिद्धी णिय ठाण णेव सण्ण णिवेसए।
अत्थि सिद्धी णिय ठाण एव सण्ण णिवेसए॥
२७ णत्थि साहू असाहू वा णेव सण्ण णिवेसए।
अत्थि साहू असाहू वा एव सण्ण णिवेसए॥
२८ णत्थि कल्लाणे पावे वा णेव सण्ण णिवेसए।
अत्थि कल्लाणे पावे वा एव सण्ण णिवेसए॥
२९ कल्लाणे पावए वा वि ववहारो ण विज्जइ।
ज वेर त ण जाणति समणा वालपडिया॥

वइ-विवेग-पदं

३० असेस अक्खय वावि सव्व[2] दुक्खे ति वा पुणो।
वज्झा पाणा 'अवज्झ त्ति'[3] इति वाय ण णीसिरे[4]॥
३१ दीसति णिहुअप्पाणो[5] भिक्खुणो साहुजीविणो।
'एए मिच्छोवजीवित्ति'[6] इति दिट्ठि ण धारए॥
३२ दक्खिणाए पडिलभो 'अत्थि वा णत्थि वा'[7] पुणो।
ण वियागरेज्ज मेहावी, सतिमग्ग च वूहए॥
३३ इच्चेएहिं ठाणेहिं जिणे[8] दिट्ठेहिं सजए।
धारयते उ[9] अप्पाण[10] आमोक्खाए परिव्वएज्जासि॥

—त्ति वेमि॥

१. रागे (क्व)।
२ सव्व (क, ख)।
३ अवज्झ ति (ख)।
४ णीसरे (ख)।
५ समियाचारा (क, ख, वृपा)।
६ ते य मिच्छाय जीवति (क)।
७. अत्थि णत्थि त्ति वा (क)।
८. जिणु (क्व)।
९ तु (क)।
१०. अप्पाणो (क)।

छट्ठं अज्झयणं

अद्दइज्जं

गोसालगस्स अक्खेव-पद

१ पुराकड[1] अद्द ! इम सुणेह, एगतचारी समणे पुरासो ।
से भिक्खवो[2] उवणेत्ता अणेगे आइक्खतिण्ह[3] पुढो वित्थरेण ।।

२ साऽऽजीविया पट्ठवियाऽथिरेण सभागओ गणओ भिक्खुमज्झे ।
आइक्खमाणो वहुजण्णमत्थ ण सधयाई[4] अवरेण पुव्व ।।

३ एगतमेव[5] अदुवा वि इण्हि दोऽवण्णमण्ण ण समेति जम्हा ।

अद्दगस्स उत्तर-पद

'पुव्वि च इण्हि च अणागय च'[6] 'एगतमेव[7] पडिसधयाइ'[8] ।।

४ समेच्च लोग[9] तसथावराण खेमकरे समणे माहणे वा ।
आइक्खमाणो वि सहस्समज्झे एगतय सारयई तहच्चे ।।

५ धम्म कहतस्स उ णत्थि दोसो खतस्स दतस्स जिइदियस्स ।
भासाय[10] दोसे य विवज्जगस्स गुणे य भासाय[11] णिसेवगस्स ।।

---

१ पुरे० (ख, चू) ।
२ भिक्खुणो (ख) ।
३ आइक्खतेण्हि (क) ।
४ सधियाति (क) ।
५ ०मेव (ख) ।
६ ०अणागत वा (क), पुव्वि व पच्छ व अणागत व (चू) ।
७ ०मेव (ख) ।
८ 'एगतमेव पडिसदधाती' ति वक्तव्ये ग्रन्थानुलोम्यात्सुखमोक्खोच्चारणाद् वृत्त-वन्धानुवृत्तेश्च पसत्थ याति (चू) ।
९ लोगे (ख) ।
१०,११ व्या० वि०—वन्धानुलोम्यात् 'भासाए' इति षष्ठ्यन्तपदस्य स्थाने 'भासाय' इति मृदूच्चारण कृतम् ।

६ महव्वए पच अणुव्वए य तहेव पचासव[1] सवरे य।
विरइ इह स्सामणियम्मि पण्णे[2] लवावसक्की समणे त्ति बेमि ॥

गोसालगस्स अक्खेव-पद

७ सीओदग सेवउ वीयकाय आहायकम्म[3] तह इत्थियाओ।
एगतचारिस्सिह अम्ह धम्मे, तवस्सिणो णाभिसमेइ पाव ॥

अद्दगस्स उत्तर-पद

८ सीओदग वा[4] तह वीयकाय आहायकम्म तह इत्थियाओ।
एयाइ जाणे[5] पडिसेवमाणा अगारिणो अस्समणा भवति ॥
९ सिया य वीयोदगइत्थियाओ पडिसेवमाणा समणा भवतु।
अगारिणो वि[6] समणा भवतु सेवति उ[7] ते वि तहप्पगार ॥
१० जे यावि वीओदगभोइ[8] भिक्खू भिक्ख विह जायइ जीवियट्ठी।
ते 'णाइसजोगमविप्पहाय'[9] काओवगा णतकरा भवति ॥

गोसालगस्स अक्खेव-पद

११ इम वय तु तुम पाउकुव्व पावाइणो गरहसि[10] सव्व एव।
पावाइणो[11] पुढो किट्टयता सय सय दिट्ठि[12] करेति पाउ[13] ॥

अद्दगस्स उत्तर-पद

१२ ते अण्णमण्णस्स उ[14] गरहमाणा अक्खति ऊ समणा माहणा य।
सतो य अत्थी असतो य णत्थी गरहामो दिट्ठि ण गरहामो किंचि ॥
१३ ण किंचि रुवेणऽभिधारयामो सदिट्ठिमग्ग तु करेमो[15] पाउ।
मग्गे इमे किट्टिए आरिएहि अणुत्तरे सप्पुरिसेहिं अजू ॥

---

१ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—पचासवे।
२ पुण्णे (वृ), पण्णे (वृपा)।
३ आहाइ° (क)।
४ च (क, ख)।
५ जाण (क)।
६ वी (क्व)।
७ ज (क्व)।
८ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—वीयोदग-भोई।
९ °सजोग य विप्पजहाय (क)।
१० गरिहसि (ख)।
११ पावाइणो उ (क)।
१२ पदिट्ठि (क्व), व्या० वि०—विभक्तिरहित-पदम्—दिट्ठि।
१३ पाव (क, ख) अशुद्धमेतत्।
१४ वि (ख)।
१५ करेमु (क्व)।

१४. उड्ढं अहे य तिरियं दिसासु तसा य जे थावर[1] जे य पाणा।
भूयाभिसंकाए[2] दुगुंछमाणे णो गरहइ वुसिमं किंचि लोए॥

गोसालगस्स अक्खेव-पदं

१५ आगंतगारे आरामगारे[3] समणे उ भीते ण उवेइ वासं।
दुक्खा हु संती बहवे मणुस्सा ऊणातिरित्ता य लवालवा य॥
१६ मेहाविणो सिक्खिय[4] बुद्धिमंता सुत्तेहिं अत्थेहि य णिच्छयण्णू[5]।
पुच्छिंसु मा णे[6] अणगार[7] अण्णे[8] इति संकमाणो ण उवेइ तत्थ॥

अद्दगस्स उत्तर-पदं

१७ णाकामकिच्चा[9] ण य बालकिच्चा रायाभियोगेण कुओ भएणं[10]?
वियागरेज्जा पसिणं ण वा वि सकामकिच्चेणिह आरियाणं॥
१८ गंता व तत्था अदुवा अगंता वियागरेज्जा समियासुपण्णे।
अणारिया दंसणओ परित्ता इति संकमाणो ण उवेइ तत्थ॥

गोसालगस्स अक्खेव-पदं

१९ पण्णं जहा वणिए उदयट्ठी आयस्स हेउं पगरेइ संगं।
तओवमे[11] समणे णायपुत्ते इच्चेव मे होइ मई वियक्का॥

अद्दगस्स उत्तर-पदं

२० णवं ण कुज्जा विहुणे पुराणं चिच्चा[12]ऽमइं 'ताइ[13] य साह'[14] एवं।
एतावता[15] बंभवति त्ति वुत्ते तस्सोदयट्ठी समणे त्ति बेमि॥
२१ समारभंते वणिया भूयगामं परिग्गहं चेव ममायमाणा[16]।
ते णाइसंजोगमविप्पहाय आयस्स हेउं पगरेंति संगं॥

---

१ विभक्तिरहितपदम्—थावरा।
२ भूयाहिं° (ख)।
३ आरामा° (क)।
४ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—सिक्खिया।
५ निच्छियण्णू (ख) निच्छियन्ना (क्व)।
६ णो (क)।
७ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अणगारा।
८ एगे (क)।
९ नो कामं° (क, ख), 'णाकाम'° इति पाठश्चूर्णि-वृत्त्यनुसारी स्वीकृत। क्वचित्-प्रयुक्तदीपिकादर्शेपि इत्थमेव पाठो लब्ध।
१० भतेण (क)।
११ ततोवमे (क)।
१२ चेच्चा (क)।
१३. व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—ताई।
१४ ताति हि आह (वृ)।
१५ एत्तावता (क, ख)।
१६ ममायमीणा (क)।

२२ वित्तेसिणो मेहुणसपगाढा ते भोयणट्ठा वणिया वयति ।
वय तु कामेहिं अज्झोववण्णा अणारिया पेमरसेसु गिद्धा ॥
२३ आरभग चेव परिग्गह च अविउस्सिया णिस्सिय[1] आयदडा ।
तेसिं च से उदए ज वयासी चउरतणताय[2] दुहाय[3] णेह[4] ॥
२४ णेगति णच्चति तओदए से वयति ते दो वि गुणोदयम्मि ।
से उदए साइमणतपत्ते[5] तमुदय साहयइ ताइ[6] णाई ॥
२५ अहिंसय[7] सव्वपयाणुकपी[8] धम्मे ठिय कम्मविवेगहेउ ।
तमायदडेहि समायरता[9] अवोहिए ते पडिरूवमेयं ॥

वुद्ध-भिक्खूणं साभिप्पाय-निरूवण-पद

२६ पिण्णागपिंडीमवि विद्ध[10] सूले केई पएज्जा पुरिसे इमे त्ति ।
अलाउय वा वि 'कुमारग त्ति'[11] स[12] लिप्पई पाणिवहेण अम्ह ॥
२७. अहवा वि विद्धूण मिलक्खु[13] सूले पिण्णागवुद्धीए णर पएज्जा ।
कुमारग वा वि अलाउए त्ति ण लिप्पई पाणिवहेण अम्ह ॥
२८ पुरिस च विद्धूण कुमारग[14] वा सूलमि केइ पए जायतेए ।
पिण्णागपिंडि सइमारुहेत्ता वुद्धाण त कप्पइ पारणाए ॥
२९ सिणायगाण तु दुवे सहस्से जे भोयए णितिए भिक्खुयाण ।
ते पुण्णखध सुमहऽज्जणित्ता[15] भवति आरोप्प[16] महतसत्ता[17] ॥

अद्दगस्स उत्तर-पद

३० अजोगरूव इह सजयाण पाव तु पाणाण पसज्झ[18] काउ ।
अवोहिए दोण्ह वि त असाहु वयति जे यावि पडिस्सुणति[19] ॥
३१ उड्ढ[20] अहे य तिरिय दिसासु विण्णाय लिंग तसथावराण ।
भूयाभिसकाए दुगुछमाणे वदे करेज्जा वा कुओ विहऽत्थि[21] ?

---

१ व्या० वि—विभक्तिरहितपदम्—णिस्सिया ।
२ ०णताए (क) ।
३ दुहाए (क) ।
४ णे य (ख) ।
५ साय० (क) ।
६ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—ताई ।
७ व्या० वि०—अहिंसयन् ।
८ ०पदाणु० (क), ०सत्ताणुकपी (चू) ।
९. समाणयता (चूपा) ।
१० व्या० वि—विभक्तिरहितपदम्—विद्ध ।
११ कुमारएत्ति (ख) ।
१२ मे (क) ।
१३ मिलक्ख (क), मिलक्खू (ख, चू) ।
१४ कुमारक (क) ।
१५ सुमहज्जिणित्ता (क, ख) । अय पाठ क्वचित्प्रयुक्तदीपिकादर्शाधारेण स्वीकृत । ४३ श्लोके चूर्णौ वृत्तौ च सुमहऽज्जणित्ता इत्येव पाठ समुपलभ्यते ।
१६ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—आरोप्पा ।
१७ महत्त० (क) ।
१८ पसज्ज (ख) ।
१९ पडिसुणेंति (क) ।
२० उड्ढे (क) ।
२१ व्या० वि०—वि+इह+अस्ति ।

३२ पुरिसे त्ति विण्णत्ति[1] ण एवमत्थि[2] अणारिए से पुरिसे तहा हु ।
को सभवो पिण्णगपिंडियाए[3] वाया वि एसा बुइया असच्चा ॥

३३ वायाभिओगेण[4] जमावहेज्जा णो तारिस वायमुदाहरेज्जा ।
अट्ठाणमेय[5] वयण गुणाण णो[6] दिक्खिए बूय[7] सुरालमेय ॥

३४ लद्धे अहट्ठे अहो एव[8] तुब्भे जीवाणुभागे सुविचिंतिते य ।
पुव्व समुद्द अवर च पुट्ठे ओलोइए पाणितलट्ठिए वा ॥

३५. जीवाणुभाग सुविचिंतयता आहारिया[9] अण्णविहीए सोहिं ।
ण वियागरे छण्णपओपजीवी[10] एसोऽणुधम्मो इह सजयाण ॥

३६ सिणायगाण तु दुवे सहस्से जे भोयए णितिए भिक्खुयाण ।
असजए लोहियपाणि[11] से ऊ णियच्छई गरहमिहेव लोए ॥

३७ थूल उरब्भ इह मारियाण उद्दिट्ठभत्त च पगप्पएत्ता ।
त लोणतेल्लेण उवक्खडेत्ता सपिप्पलीय पगरति मस ॥

३८ त भुजमाणा पिसिय पभूय णो उवलिप्पामो वय रएण ।
इच्चेवमाहसु अणज्जधम्मा[12] अणारिया बाल[13] रसेसु गिद्धा ॥

३९. जे यावि भुजति तहप्पगार सेवति ते पावमजाणमाणा ।
'मण ण एय् कुसला करेंति'[14] वाया वि एसा बुइया उ मिच्छा ॥

४० 'सव्वेसि जीवाण'[15] दयट्ठयाए सावज्जदोस परिवज्जयता ।
तस्सकिणो इसिणो णायपुत्ता उद्दिट्ठभत्त परिवज्जयति ॥

४१ भूयाभिसकाए दुगुछमाणा सव्वेसि पाणाण णिहाय दड ।
तम्हा ण भुजति तहप्पगार एसोऽणुधम्मो इह सजयाण ॥

---

१ पिण्णत्ति (क, ख) । व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—विण्णत्ती ।

२ एयअत्थि (क, ख) ।

३ पिण्णाग० (क), छदोदृष्ट्या 'पिण्णाग' शब्दस्य ह्रस्वत्व 'ख' प्रत्यनुसारेण स्वीकृतम् ।

४ ०जोएण (क) ।

५ ०मेव (क) ।

६ जे (क), जिण (ख) ।

७ आकारस्य ह्रस्वत्वम् ।

८. एव (क), छदोदृष्ट्या 'एव' इति जातमस्ति ।

९ ओधारिया (चू) ।

१० छणणपदोपजीवी (चूपा) ।

११ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—लोहियपाणी ।

१२ अणज्जवुद्धो (चू) ।

१३ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—वाला ।

१४ खण ण एव कुसला वदति (चू); मण ण एय कुसला करेंति (चूपा) ।

१५ सव्वेसिं जीवाण (क) ।

४२ 'णिग्गंथधम्मम्मि इमा समाही'[1] अस्सिं सुठिच्चा अणिहे चरेज्जा ।
बुद्धे मुणी सीलगुणोववेए 'इहच्चणं पाउणई सिलोगं'[2] ॥

वेय-वाईणं साभिप्पाय-निरूवण-पदं

४३ सिणायगाणं तु दुवे सहस्से जे भोयए णितिए माहणाणं ।
ते पुण्णखंधं सुमहज्जणित्ता[3] भवंति देवा इइ वेयवाओ ॥

अद्दगस्स उत्तर-पदं

४४ सिणायगाणं तु दुवे सहस्से जे भोयए णितिए कुलालयाणं ।
से गच्छई लोलुवसंपगाढे[4] 'तिव्वाभितावी णरगाभिसेवी'[5] ॥
४५ दयावरं 'धम्मं'[6] दुगुंछमाणे[7] वहावहं धम्मं[8] पसंसमाणे ।
एगं पि जे भोययई असीलं[9] 'णिहो णिसं गच्छइ अंतकाले'[10] ॥

संख-परिवायगाणं साभिप्पाय-निरूवण-पदं

४६ दुहओ वि धम्मम्मि समुट्ठियामो अस्सिं सुट्ठिच्चा तह एस कालं[11] ।
आयारसीले वुइएह णाणे[12] ण संपरायम्मि[13] विसेसमत्थि ॥
४७ अव्वत्तरूवं पुरिसं महंतं सणातणं अक्खयमव्वयं च ।
सव्वेसु भूएसु[14] वि[15] सव्वओ से चंदो व ताराहिं[16] समत्तरूवे ॥

---

१ णिग्गंथ धम्माणं इमो° (चू), °इमं समाहिं (वृ) ।

२ इच्चत्थतं° (क, ख), अच्चत्थतं पाउणतीसिलाहं (वृ), अयं पाठश्चूर्ण्यनुसारी स्वीकृतः । चूर्णौ श्लोको नाम श्लाघा इति व्याख्यातमस्ति, वृत्तौ च श्लाघा मूलत्वेन स्वीकृतास्ति ।

३ सुमहज्जिणित्ता (क, ख) ।

४ लोलग° क), लोलुय° (ख) ।

५ तिव्वाणुतावे णरए वयंति (चू), तिव्वाभितावी णरगाभिसेवी (चूपा) ।

६,८ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्--धम्मं ।

७ धम्मं दूसेमाणो (चू), धम्मं दुगुंछमाणो (क, चूपा) ।

९. कुसीलं (चू) ।

१० णिवो णिसं जाइ कओऽसुरेहिं (क, ख, वृ), णिवो° (चू), णिव्वो णिसं जाइ कओऽसुरेहिं (क्व), अत्र लिपिदोषेण 'णिहो' स्थाने 'णिवो' इति पाठः संजातः । वृत्तिकारेण तादृश एव आदर्श उपलब्धस्तेन स पाठस्तथैव व्याख्यातः । 'जाइ कओऽसुरेहिं' इति पाठस्य परिवर्तनं जातमथवा वाचनाभेदोयमिति न निश्चयेन वक्तुं शक्यते । प्रस्तुतसूत्रे (१।५।५) 'णिहो णिसं गच्छइ अंतकाले' इति पदं विद्यते । तदेवात्रास्तीति चूर्णिव्याख्यया प्रतीयते ।

११ काले (ख) ।

१२ नाणा (क) ।

१३ संपरागंमि (क) ।

१४ पाणेसु (चू) ।

१५ उ (क) ।

१६ तारेहिं (क) ।

अद्दगस्स उत्तर-पद

४८ एव ण मिज्जति ण ससरति[1] ण[2] माहणा[3] खत्तिय-वेस-पेसा ।
कीडा य पक्खी य सरीसिवा[4] य णरा य सव्वे तह देवलोगा ।।
४९ लोग अयाणित्तिह केवलेण कहिंति जे धम्ममजाणमाणा ।
णासेंति अप्पाण[5] पर च णट्ठा ससार घोरम्मि अणोरपारे ।।
५० लोग विजाणतिह केवलेण पुण्णेण णाणेण समाहिजुत्ता ।
धम्म समत्त च कहिंति जे उ तारेंति अप्पाण[6] पर च तिण्णा ।।
५१ जे गरहिय ठाणमिहावसति जे यावि लोए चरणोववेया ।
उदाहड त तु सम मईए अहाउसो ! विप्परियासमेव ।।

हत्थितावसाण साभिप्पाय-निरूवण-पद

५२ सवच्छरेणावि य एगमेग वाणेण[7] मारेउ महागय तु ।
सेसाण जीवाण दयट्ठयाए वास वय वित्तिं[8] पकप्पयामो ।।

अद्दगस्स उत्तर-पद

५३, सवच्छरेणावि य एगमेग पाण हणता अणियत्तदोसा ।
सेसाण जीवाण वहेण लग्गा सिया य थोव गिहिणो वि तम्हा ।।
५४ सवच्छरेणावि य एगमेग पाण[9] हणते 'समणव्वते ऊ'[10] ।
आयाहिए से पुरिसे अणज्जे ण 'तारिस केवलिणो भणति'[11] ।।
५५ बुद्धस्स आणाए इम समाहिं अस्सि सुठिच्चा तिविहेण ताई[12] ।
तरिउ[13] समुद्द व महाभवोघ 'आयाणव धम्ममुदाहरेज्जासि'[14] ।।

—त्ति बेमि ।।

---

१ सचरति (ख) ।
२ ते (क) ।
३ वभणा (चू) ।
४ सिरीसवा (क), सिरीसिवा (ख) ।
५ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अप्पाण ।
६ व्या० वि०—विभक्तिरहितपदम्—अप्पाण ।
७ पाणेण (क), वाणेण (ख) ।
८ वित्ति (ख) ।
९, पाणे (क) ।
१० ०व्वएसु (ख, वृ) ।
११ तारिसा केवलिणो भवति (क), तारिसे केवलिणो भवति (ख, वृ, चूपा) । अत्र चूर्णिपाठोर्थंसमीक्षया समीचीन प्रतिभाति तेन स स्वीकृत ।
१२ ताती (क), तारी (ख) ।
१३. तरित्ता (क, चू) ।
१४ आयाणवघ समुदाहरिज्जासि (क), आयाण वध समुदाहरेज्जासि (ख) ।

सत्तमं अज्झयणं
णालंदइज्जं

उक्खेव-पद

१ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे[1] जाव[2] पडिरूवे ॥

२ तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया[3] उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं णालंदा णामं बाहिरिया होत्था—अणेगभवणसयसण्णिविट्ठा[4] °पासादीया दरिसणीया अभिरूवा° पडिरूवा ॥

लेव-गाहावइ-पदं

३ तत्थ णं णालंदाए बाहिरियाए लेवे[5] णामं गाहावई होत्था—अड्ढे 'दित्ते वित्ते'[6] विच्छिण्ण[7]-विपुल-भवण-सयणासण-जाणवाहणाइण्णे बहुधण-बहुजायरूवरजए आओग-पओग-संपउत्ते विच्छड्डिय-पउर-भत्तपाणे बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए बहुजणस्स अपरिभूए यावि होत्था ॥

४ से णं लेवे णामं गाहावई समणोवासए यावि होत्था—अभिगयजीवाजीवे[8] °उवलद्धपुण्णपावे आसव-संवर-वेयण-णिज्जर-किरिय-अहिगरण-बंध-मोक्ख-कुसले असहेज्जे देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं णिग्गंथाओ पावयणाओ अणतिक्कमणिज्जे,

---

१. रिद्धि° (क)।
२. वण्णओ जाव (क, ख), ओ० सू० १।
३ बहिता (क)।
४ स० पा०—अणेगभवणसयसण्णिविट्ठा जाव पडिरूवा।
५ लेए (क)।
६ दित्तचित्ते (चू)।
७. विरियण (क्व)।
८ स० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ।

इणमो णिग्गथिए पावयणे णिस्सकिए णिक्कखिए णिव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगयट्ठे अट्ठिमिजपेम्माणुरागरत्ते "अयमाउसो ! णिग्गथे पावयणे अट्ठे अय परमट्ठे सेसे अणट्ठे" ऊसियफलिहे अवगुयदुवारे चियत्तेउर-परघरदारप्पवेसे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्ण पोसह सम्म अणुपालेमाणे समणे णिग्गथे फासुएसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुछणेण ओसहभेसज्जेण पीढ-फलग-सेज्जासंथारएण पडिलाभेमाणे बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे° विहरइ ।।

५ तस्स ण लेवस्स गाहावइस्स णालदाए बाहिरियाए उत्तरपुरत्थिमे[1] दिसिभाए, एत्थ ण सेसदविया णाम उदगसाला होत्था—अणेगखभसयसण्णिविट्ठा पासादीया[2] °दरिसणीया अभिरूवा° पडिरूवा ।।

६ तीसे ण सेसदवियाए उदगसालाए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए, एत्थ ण हत्थिजामे णाम वणसडे होत्था—किण्हे वण्णओ वणसडस्स[3] ।।

७ तस्सि च ण गिहपदेससि भगव गोयमे विहरइ, भगव च ण अहे आरामंसि ।।

उदगपेढालपुत्तस्स पण्हाणुमइ-पद

८ अहे ण उदए पेढालपुत्ते भगव पासावच्चिज्जे णियठे मेदज्जे[4] गोत्तेण जेणेव[5] भगव गोयमे तेणेव[6] उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगव गोयम एव वयासी—आउसतो ! गोयमा ! अत्थि खलु मे केइ पदेसे पुच्छियव्वे, त च मे आउसो ! अहासुय अहादरिसियमेव वियागरेहि ।।

९ सवाय[7] भगव गोयमे उदय पेढालपुत्त एव वयासी—अवियाइ आउसो ! सोच्चा णिसम्म जाणिस्सामो ।।

उदगपेढालपुत्तस्स पण्ह-पद

१० सवाय उदए पेढालपुत्ते भगव गोयम एव वयासी—आउसतो[8] ! गोयमा ! अत्थि खलु कम्मारपुत्तिया[9] णाम समणा णिग्गथा तुम्हाग[10] पवयण[11] पवयमाणा

---

१ °पुरच्छिमे (ख) ।
२ स० पा०—पासादीया जाव पडिरूवा ।
३ ओ० सू० ४-७ ।
४ मेतज्जो (क) ।
५ जेणामेव (क, ख) ।
६ तेणामेव (ख) ।
७. सवाद (क) ।
८ आउसो ! (ख) ।
९. कुमारपुत्तिया (क, ख, वृ), अत्र लिपिदोषेण 'कम्मार' शब्दस्य स्थाने 'कुमार' इति रूपान्तर जात इति सभाव्यते ।
१० तुब्भाग (क) ।
११. पवदण (क) ।

गाहावइ[1] समणोवासग उवसपण्ण[2] एव पच्चक्खावेंति—"णण्णत्थ अभिजोगेण[3], गाहावइ-चोरग्गहण-विमोक्खणयाए तसेहिं पाणेहिं णिहाय दड।"

एव ण्हं पच्चक्खताण दुप्पच्चक्खाय भवइ। एव ण्हं पच्चक्खावेमाणाण दुपच्च-क्खाविय भवइ। एव ते पर पच्चक्खावेमाणा अइयरति सय पइण्ण।

कस्स ण त हेउ।

ससारिया खलु पाणा—थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायति। तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायति। थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा तसकायसि उववज्जति। तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा थावरकायसि उववज्जति। तेसि च ण थावर-कायसि उववण्णाण ठाणमेय घत्त।

एव ण्हं पच्चक्खताण सुपच्चक्खाय भवइ।

एव ण्हं पच्चक्खावेमाणाण सुपच्चक्खाविय भवइ।

एव ते पर पच्चक्खावेमाणा णाइयरति सय पइण्ण—"णण्णत्थ अभिजोगेण, गाहावइ-चोरग्गहण-विमोक्खणयाए तसभूएहिं पाणेहिं णिहाय दड।" एव[4] सइ 'भासाए परिकम्मे'[5] विज्जमाणे जे ते कोहा वा लोहा वा पर पच्चक्खावेंति। अय पि[6] णो[7] उवएसे किं णो णेयाउए भवइ? अवियाइ आउसो! गोयमा! तुब्भ पि एय[8] एव रोयइ?

भगवओ गोयमस्स उत्तर-पद

११　सवाय भगव गोयमे उदय पेढालपुत्त एव वयासी—आउसतो! उदगा! णो खलु अम्ह एय एव रोयइ। जेते समणा वा माहणा वा एवमाइक्खति[9], •एव भासेति, एव पण्णवेंति, एव° परूवेंति णो खलु ते समणा वा णिग्गथा वा भास भासति, अणुताविय[10] खलु ते भास भासति, अब्भाइक्खति खलु ते समणे[11] समणोवासए वा। जेहिं वि अण्णेहिं पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं सजमयति ताणि वि ते अब्भाइक्खति।

कस्स ण त हेउ?

१　गाहावइ (क, ख)।
२.　× (क, ख)।
३　रायाभिवाएण (ख), अभिजोगेण तजहा—रायाभिओगेण गणाभिओगेण बलाभिओगेण (चू)।
४.　एवामेव (क), एवमेव (ख)।
५　भासापरक्कमे (क), भासाए परक्कमे (ख, वृ)। 'परिकम्मे' इति पाठश्चूर्ण्याधारेण स्वीकृत। अत्र सविशेषणनिर्विशेषणप्रत्याख्यानस्य चर्चा कृतास्ति तेन पराक्रमापेक्षया परिकर्मशब्दोऽधिक समीचीनोस्ति।
६　पि भे (क, वृ)।
७.　अस्माकम्।
८.　× (ख)।
९　स० पा०—एवमाइक्खति जाव परूवेंति।
१०.　अणुगामिय (चू)।
११.　समणा (क)।

ससारिया खलु पाणा—तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायति। थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायति। तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा थावरकायसि उववज्जति। थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा तसकायसि उववज्जति। तेसि च ण तसकायसि उववण्णाण ठाणमेय अघत्त ॥

उदगपेढालपुत्तस्स पडिपण्ह-पद

१२ सवायं उदए पेढालपुत्ते भगव गोयम एव वयासी—कयरे खलु आउसतो! गोयमा! तुब्भे वयह तसपाणा तसा 'आउ' अण्णहा'[२] ?

भगवओ गोयमस्स पच्चुत्तर-पदं

१३ सवाय भगव गोयमे उदय पेढालपुत्त एव वयासी—आउसतो! उदगा! जे तुब्भे वयह[३] तसभूया[४] पाणा तसा ते 'वय वदामो'[५] 'तसा पाणा तसा'[६]। जे वय वयामो तसा पाणा तसा ते तुब्भे वदह तसभूया पाणा तसा। एए सति दुवे ठाणा तुल्ला एगट्ठा।

किमाउसो! इमे भे[७] सुप्पणीयतराए भवइ—तसभूया पाणा तसा? इमे भे[८] दुप्पणीयतराए भवइ—तसा पाणा तसा? तओ[९] एगमाउसो! पलिकोसह[१०], एक्क अभिणदह। अय पि 'भे उवएसे'[११] णो णेयाउए भवइ।

भगव च ण उदाहु—सतेगइया मणुस्सा[१२] भवति, तेसिं च ण एव वुत्तपुव्व भवइ—णो खलु वय सचाएमो मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए। 'वय ण'[१३] अणुपुव्वेण गोत्तस्स[१४] लिस्सिस्सामो[१५]। 'ते एव सखसावेति'[१६]—

---

१ अदु—उत।
२ आउमन्नहा (क), अह अण्णहा (ख)।
३ वतह (क)।
४ तसब्भूया (क)।
५ वद वतामो (क)।
६. तसा पाणा २ (क), तसा पाणा (ख) सर्वत्र।
७, ८ ते (ख)।
९ तो (क)।
१० पडिकोसह (ख)।
११ भेदो से (क, ख), भे (वृ); 'भे उवएसे' इति पाठस्य स्थाने लिपिदोषेण 'भेदो से' इति जातम्। दशमे सूत्रे 'पि णो उवएसे' इति पाठोस्ति तथा चूर्णौ 'उपदेश' इति व्याख्यातमस्ति। तदाधारेणासौ पाठ स्वीकृत।
१२ मणुस्सा गब्भवक्कतिया सखेज्जवासाउया आरिया (चू)।
१३ वयण्ण (क), वय ण (ख)।
१४ गुत्ततस्स (क), गुत्तस्स (क्व)।
१५ लिसिस्सामी (ख)।
१६ ते एव सख ठवयति ते एव सख सोवठवयति (क), ते एव सख ठवयति ते एव सख सोवठावयति (ख), ते एव सख ठावेंति (चू), नागार्जुनीयास्तु—एव आपाण सकसावेंति (चू), °सठवयति (क्व)।

"णण्णत्थ अभिजोगेण गाहावइ-चोरग्गहण-विमोक्खणयाए तसेहिं पाणेहिं णिहाय दंड"। तं पि तेसिं कुसलमेव भवइ ॥

१४ तसा वि वुच्चंति तसा तससंभारकडेण कम्मुणा, णामं च णं अब्भुवगयं भवइ। 'तसाउयं च णं पलिक्खीणं भवइ, तसकायट्ठिइया ते तओ आउयं विप्पजहंति, ते तओ आउयं विप्पजहित्ता थावरत्ताए पच्चायंति'[1]। थावरा वि वुच्चंति थावरा थावरसंभारकडेण कम्मुणा, णामं च णं अब्भुवगयं भवइ। 'थावराउयं च णं पलिक्खीणं भवइ,'[2] थावरकायट्ठिइया ते तओ आउयं विप्पजहंति, ते तओ आउयं विप्पजहित्ता भुज्जो पारलोइयत्ताए पच्चायंति।
ते पाणा वि वुच्चंति[3], ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया ॥

उदगपेढालपुत्तस्स सपक्ख-ठावणा-पदं

१५ सवायं उदए पेढालपुत्ते भयवं गोयमं एवं वयासी—आउसंतो ! गोयमा ! णत्थि णं से केइ परियाए[4] जंसि[5] समणोवासगस्स 'एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते'[6]। कस्स णं तं हेउं ?
संसारिया खलु पाणा—थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायंति। तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति। थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे तसकायंसि उववज्जंति। तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे थावरकायंसि उववज्जंति। तेसिं च णं थावरकायंसि उववण्णाणं ठाणमेयं घत्तं ॥

भगवओ गोयमस्स पच्चुत्तर-पदं

१६ सवायं भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी—णो खलु आउसो ! अस्माकं[7] वत्तव्वएणं तुब्भं चेव अणुप्पवाएणं अत्थि णं से परियाए जे णं समणोवासगस्स सव्वपाणेहिं सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते भवइ।
कस्स णं तं हेउं ?

---

१ जाव तसाऊ अपलिक्खीणं भवइ° (चू), नागार्जुनीयास्तु—आउअं च णं पलिक्खीणं भवति तसकायट्ठितीए वा ततो आउयं विप्पजहित्ता तिण्हं थावराणं अण्णतरेसूववज्जंति (चू)।

२ जाव थावराऊ अपलिक्खीणं भवई (चू)।

३. वुच्चंति भूता जाव सत्ता वि (चू)।

४. परिताए (क)।

५ जण्णं (क, ख, चू)।

६ एगपाणाइवायविरए वि दंडे णिक्खित्ते (क,ख), एकप्राणातिपातविरमणेपि (वृ), अग्रिमसूत्रे 'एगपाणाए वि' इति पाठो लभ्यते, स च समीचीनं प्रतिभाति, तेनाऽत्रापि स एव स्वीकृतः। जाव सव्वपाणेहिं दंडे णिक्खित्ते (चू)।

७ अस्माकमित्येतन्मगधदेशे आगोपालाङ्गनादिप्रसिद्धं संस्कृतमेवोच्चार्यते तदिहापि तथैवोच्चारितमिति (वृ)।

ससारिया खलु पाणा- तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति। थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायंति। तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे थावरकायंसि उववज्जंति। थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे तसकायंसि उववज्जंति। तेसिं च णं तसकायंसि उववण्णाणं ठाणमेयं अघत्तं।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि[1] समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते"। अयं पि 'भे उवएसे'[2] णो णेयाउए भवइ॥

समणदिट्ठंत-पदं

१७ भगवं च णं उदाहु णियंठा खलु पुच्छियव्वा—आउसंतो! णियंठा! इह खलु संतेगइया मणुस्सा भवंति। तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—जे इमे मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्ता, एएसिं णं आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते। जे इमे अगारमावसंति, एएसिं णं आमरणंताए दंडे णो णिक्खित्ते।

'केई च णं समणे'[3] जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देसं दूइज्जित्ता 'अगारं वएज्जा'[4]?

हंता वएज्जा।

तस्स णं तमगारत्थं[5] वहमाणस्स[6] से पच्चक्खाणे भग्गे भवइ?

णेति[7]।

एवमेव समणोवासगस्स वि तसेहिं पाणेहिं दंडे णिक्खित्ते, थावरेहिं पाणेहिं दंडे णो णिक्खित्ते। तस्स णं तं थावरकायं वहमाणस्स[8] से पच्चक्खाणे णो भग्गे भवइ। सेवमायाणह[9] णियंठा! सेवमायाणियव्वं॥

१८ भगवं च णं उदाहु णियंठा खलु पुच्छियव्वा—आउसंतो! णियंठा! इह खलु गाहावइणो वा गाहावइपुत्ता वा तहप्पगारेहिं कुलेहिं आगम्म धम्मस्सवणवत्तियं उवसंकमेज्जा?

हंता उवसंकमेज्जा।

---

१ जण्णं (क), जम्मि (क्व)।
२ भेदे से (क, ख)।
३ केसिं (क, ख), अशुद्धं प्रतिभाति, केचन श्रमणा (वृ)।
४ अगारमावसेज्जा (ख, वृ)।
५ तं गारत्थं (क), गृहस्थ (वृ)।
६, ८ वहेमाणस्स (क)।
७ णोति (ख)।
९ सेएवं० (ख)।

तेसिं च ण तहप्पगाराण धम्मे आइक्खियव्वे ?

हता आइक्खियव्वे ।

किं ते तहप्पगार धम्म सोच्चा णिसम्म एव वएज्जा—इणमेव णिग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडिपुण्ण 'णेयाउय'[1] ससुद्ध'[2] सल्लकत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग 'णिज्जाणमग्ग णिव्वाणमग्ग'[3] अवितह असदिद्ध सव्वदुक्खप्पहीण-मग्ग। एत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वति[4] सव्व-दुक्खाणमत करेंति ।

इमाणाए[5] तहा[6] गच्छामो तहा चिट्ठामो तहा णिसीयामो[7] तहा तुयट्टामो तहा भुजामो तहा भासामो तहा अब्भुट्ठेमो[8] तहा उट्ठाए उट्ठेत्ता[9] पाणाण भूयाण जीवाण सत्ताण सजमेण सजमामो त्ति वएज्जा ?

हता वएज्जा ।

किं ते तहप्पगारा कप्पति पव्वावेत्तए ?

हता कप्पति ।

किं ते तहप्पगारा कप्पति मुडावेत्तए ?

हता कप्पति ।

किं ते तहप्पगारा कप्पति सिक्खावेत्तए ?

हता कप्पति ।

किं ते तहप्पगारा कप्पति उवट्ठावेत्तए ?

हता कप्पति ।

तेसिं च ण तहप्पगाराण सव्वपाणेहिं[10] °सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं° सव्वसत्तेहिं दडे णिक्खित्ते ?

हता णिक्खित्ते ।

ते[11] ण एयारूवेण विहारेण विहरमाणा जाव वासाइ चउपचमाइ छद्दसमाइ[12] वा अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देस दूइज्जित्ता[13] अगार वएज्जा[14] ?

हता वएज्जा ।

---

१. णेताउत (क) ।
२ ससुद्ध णेयाउय (ख) ।
३ णेज्जाणमग्ग णेव्वाण° (क) ।
४. परिणिव्वायति (ख) ।
५ तमाणाए (ख) ।
६ तह (क) सर्वत्र ।
७. णिसियामो (क), णिस्सियामो (ख) ।
८ अब्भुट्ठामो (ख) ।
९ वट्टेति (ख) ।
१० स० पा०—सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं ।
११. से (क, ख), अशुद्ध प्रतिभाति ।
१२ छद्दसमाणि (क, ख) ।
१३ दूतिज्जित्ता (क, ख) ।
१४. वदेज्जा (क) ।

तस्स ण सव्वपाणेहिं[1] •सव्वभूएहि सव्वजीवेहि॰ सव्वसत्तेहि दडे णिक्खित्ते[2]? णेति[3]।

से जे से जीवे जस्स परेण सव्वपाणेहिं[4] •सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं॰ सव्वसत्तेहि दडे णो णिक्खित्ते। से जे से जीवे जस्स आरेण सव्वपाणेहिं[5] •सव्वभूएहि सव्वजीवेहि सव्व॰सत्तेहि दडे णिक्खित्ते। से जे से जीवे जस्स इयाणिं सव्वपाणेहिं[6] •सव्वभूएहि सव्वजीवेहि सव्व॰सत्तेहि दडे णो णिक्खित्ते भवइ। परेण अस्सजए, आरेण सजए, इयाणिं[7] अस्सजए। अस्सजयस्स ण सव्वपाणेहिं[8] •सव्वभूएहि सव्वजीवेहि सव्व॰सत्तेहि दडे णो णिक्खित्ते भवइ। सेवमायाणह णियठा! सेवमायाणियव्व॥

१९ भगव च ण उदाहु णियठा खलु पुच्छियव्वा—आउसतो! णियठा! इह[9] खलु परिव्वायया[10] वा परिव्वाइयाओ वा अण्णयरेहिंतो तित्थायतणेहिंतो आगम्म धम्मस्सवणवत्तिय उवसकमेज्जा?

हता उवसकमेज्जा।

'किं तेसिं'[11] तहप्पगाराण धम्मे आइक्खियव्वे?

[12]•हता आइक्खियव्वे।

किं ते तहप्पगार धम्म सोच्चा णिसम्म एव वएज्जा—इणमेव णिग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडिपुण्ण णेयाउय ससुद्ध सल्लकत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग णिज्जाणमग्ग णिव्वाणमग्ग अवितह असदिद्ध सव्वदुक्खप्पहीणमग्ग। एत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वति सव्वदुक्खाणमत करेति। इमाणाए तहा गच्छामो तहा चिट्ठामो तहा णिसीयामो तहा तुयट्टामो तहा भुजामो तहा भासामो तहा अब्भुट्ठेमो तहा उट्ठाए उट्ठेत्ता पाणाण भूयाण जीवाण सत्ताण सजमेण सजमामो त्ति वएज्जा?

हता वएज्जा।

किं ते तहप्पगारा कप्पति पव्वावेत्तए?

हता कप्पति।

किं ते तहप्पगारा कप्पति मुडावेत्तए?

हता कप्पति।

किं ते तहप्पगारा कप्पति सिक्खावेत्तए?

हता कप्पति।

---

१ स॰ पा॰—सव्वपाणेहिं जाव सत्तेहिं।
२ णो णिक्खित्ते (क)।
३ णोत्ति (क), णोति (ख)।
४,५,६ स॰ पा॰—सव्वपाणेहिं जाव सत्तेहिं।
७ एयाणिं (क)।
८ स॰ पा॰—सव्वपाणेहि जाव सत्तेहिं।
९ केइ इह (ख)।
१० परिवाइया (क), परिव्वाया (क्व)।
११ पूर्वसूत्रात् किंचित् शब्दभेद।
१२ स॰ पा॰—त चेव जाव उवट्ठावेत्तए।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति उवट्ठावेत्तए ?

हंता कप्पंति° ।

किं ते तहप्पगारा कप्पंति संभुंजित्तए ?

हंता कप्पंति ।

ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा [1]°जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं वा अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देसं दूइज्जित्ता° अगारं वएज्जा ?

हंता वएज्जा ।

ते णं तहप्पगारा कप्पंति संभुंजित्तए ?

णो इणट्ठे[2] समट्ठे ।

से जे से जीवे जे परेणं णो कप्पंति संभुंजित्तए । से जे से जीवे जे आरेणं कप्पंति संभुंजित्तए । से जे से जीवे जे इयाणिं णो कप्पंति संभुंजित्तए । परेणं अस्समणे, आरेणं समणे, इयाणिं अस्समणे । अस्समणेणं[3] सद्धिं णो कप्पंति समणाणं णिग्गंथाणं संभुंजित्तए । सेवमायाणह णियंठा ! सेवमायाणियव्वं ॥

पच्चक्खाणस्स विसय-उवदंसण-पदं

२० भगवं च णं उदाहु[4]—णियंठा खलु पुच्छियव्वा—आउसंतो ! णियंठा ! इह खलु° संतेगइया समणोवासगा भवंति । तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, वयं[5] णं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं[6] सम्मं अणुपालेमाणा विहरिस्सामो । 'थूलगं पाणाइवायं पच्चक्खाइस्सामो'[7], एवं थूलगं मुसावायं थूलगं अदिण्णादाणं[8] थूलगं मेहुणं थूलगं परिग्गहं पच्चक्खाइस्सामो, इच्छापरिमाणं करिस्सामो दुविहं तिविहेणं । मा खलु ममट्ठाए किंचि वि करेह वा कारवेह वा तत्थ वि पच्चक्खाइस्सामो । ते णं अभोच्चा[9] अपिच्चा असिणाइत्ता आसंदीपेढियाओ[10] पच्चोरुहित्ता[11] ते तहं कालगया किं वत्तव्वं सिया ?

सम्मं कालगय त्ति वत्तव्वं सिया ।

---

१ सं० पा०—तं चेव जाव अगारं वएज्जा ।
२. तिणट्ठे (क, ख) ।
३ तेण (क) ।
४ सं० पा०—उदाहु° संतेगइया ।
५. वयं च (क) ।
६ पोसध (क) ।
७ °पच्चाइक्खिस्सामो (क), नागार्जुनीयास्तु—सामाइयकडेऽहिकाउं 'सव्वपाणातिवातं पच्चक्खाइस्सामो' तद्दिवसं (चू) ।
८ अदिण्णं (क, ख) ।
९ अभोच्चाए (क, ख) ।
१० °पीठियाओ (क) ।
११ पच्चोरुभित्ता (ख) ।

ते पाणा वि वुच्चति, ते तसा वि वुच्चति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते वहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खाय भवइ। से[1] महया[2] •तसकायाओ उवसतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स ज ण तुब्भे वा अण्णो वा एव वयह—"णत्थि ण से केइ परियाए जसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दडे णिक्खित्ते °।" अय पि 'भे उवएसे'[3] णो णेयाउए भवइ॥

२१ भगव च ण उदाहु णियठा खलु पुच्छियव्वा—आउसतो! णियठा! इह खलु सतेगइया समणोवासगा भवति। तेसिं च ण एव वुत्तपुव्व भवइ—णो खलु वय सचाएमो मुडा भवित्ता अगाराओ[4] •अणगारिय° पव्वइत्तए, णो खलु वय सचाएमो चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु[5] •पडिपुण्ण पोसह सम्म° अणुपालेमाणा विहरित्तए। वय ण अपच्छिममारणतियसलेहणाझूसणाझूसिया भत्तपाणपडियाइक्खिया[6] काल अणवकखमाणा विहरिस्सामो। सव्व पाणाइवाय पच्चक्खाइस्सामो[7], •एव सव्व मुसावाय सव्व अदिण्णादाण सव्व मेहुण° सव्व परिग्गह पच्चक्खाइस्सामो 'तिविह तिविहेण'[8] मा खलु ममट्ठाए किंचि वि[9] •करेह वा कारवेह वा करत समणुजाणेह वा तत्थ वि पच्चक्खाइस्सामो। तेण अभोच्चा अपिच्चा असिणाइत्ता° आसदीपेढियाओ पच्चोरुहित्ता ते तह कालगया किं वत्तव्व सिया?

सम्म[10] कालगय त्ति वत्तव्व सिया।

ते पाणा वि वुच्चति[11], •ते तसा वि वुच्चति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते वहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खाय भवइ। से महया तसकायाओ उवसतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स ज ण तुब्भे वा अण्णो वा एव वयह—"णत्थि ण से

---

१ इति मे (क, ख)।

२ म० पा०—से महया ज ण तुब्भे वयह त चेव जाव अय।

३ भेदे से (क, ख)।

४ स० पा०—अगाराओ जाव पव्वइत्तए।

५ स० पा०—चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जाव अणुपालेमाणा।

६ जाव (क)।

७ स० पा०—पच्चक्खाइस्सामो जाव सव्व परिग्गह।

८ तिविहेण तिविह (क)।

९ स०पा०—किंचि वि जाव आसदीपेढियाओ।

१० समणा (क)।

११ स० पा०—वुच्चति जाव अय।

केइ परियाए जसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दडे णिक्खित्ते० ।" अय पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ॥

२२ भगव च ण उदाहु[1]—सतेगइया मणुस्सा भवति, त जहा—महिच्छा महारभा महापरिग्गहा अहम्मिया[2] •अधम्माणुया अधम्मिट्ठा अधम्मक्खाई अधम्मपाय-जीविणो अधम्मपलोइणो अधम्मपलज्जणा अधम्मसीलसमुदाचारा अधम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरति, 'हण' 'छिद' 'भिद' विगत्तगा लोहियपाणी चडा रुद्दा खुद्दा साहस्सिया उक्कचण-वचण-माया-णियडि-कूड-कवड-साइ-सपओगबहुला दुस्सीला दुव्वया दुप्पडियाणदा असाहू । सव्वाओ पाणाइवायाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ मुसावायाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ मेहुणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए०, सव्वाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया जावज्जी-वाए, जेहि समणोवासगस्स आयाणसो आमरणताए[3] दडे णिक्खित्ते, ते तओ आउग विप्पजहति, विप्पजहित्ता भुज्जो सगमादाए दोग्गइगामिणो भवति । ते पाणावि वुच्चति[4], •ते तसावि वुच्चति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते बहुतरगा पाणा जेहि समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहि समणोवासगस्स अपच्चक्खाय भवइ । से महया तसकायाओ उवसतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स ज ण तुब्भे वा अण्णो वा एव वयह—"णत्थि ण से केइ परियाए जसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दडे णिक्खित्ते ।" अय पि भे उवएसे० णो णेयाउए भवइ ॥

२३ भगव च ण उदाहु—सतेगइया मणुस्सा भवति, त जहा—अणारभा अपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया[5] •धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मप्पलोई धम्मपलज्जणा धम्म-समुदायारा धम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरति, सुसीला सुव्वया सुप्पडि-याणदा सुसाहू । सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ मुसावायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, सव्वाओ मेहुणाओ पडिविरया जावज्जीवाए०, सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया जावज्जीवाए, जेहि समणोवासगस्स आयाणसो आमर-

---

१ येषु सूत्रेषु प्रश्नोत्तरक्रमो विद्यते तत्रैव 'णियठा खलु पुच्छियव्वा' इत्यादि पाठो गृहीत अत परवर्तिसूत्रेषु प्रश्नोत्तरक्रमो नास्ति तेन तस्य पाठस्य नास्ति तत्रावकाश ।

२. स० पा०—अहम्मिया जाव दुप्पडियाणदा जाव सव्वओ परिग्गहाओ ।

३ आमरणतिआए (क) ।

४. स० पा०—वुच्चति ते तसा ए महा ते चिर ते बहुतरगा आयाणसो इती से महता जेण तुब्भे णो णेयाउए ।

५ स० पा०—धम्माणुया जाव सव्वाओ ।

णंताए दडे णिक्खित्ते, ते तओ आउग विप्पजहति, विप्पजहित्ता ते तओ भुज्जो सगमायाए सोग्गइगामिणो भवति ।

ते पाणावि वुच्चति[1], •ते तसा वि वुच्चति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते वहुतरगा पाणा जेहि समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहि समणोवासगस्स अपच्चक्खाय भवइ । से महया तसकायाओ उवसतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स ज ण तुब्भे वा अण्णो वा एव वयह— "णत्थि ण से केइ परियाए जसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दडे णिक्खित्ते ।" अय पि भे उवएसे॰ णो णेयाउए भवइ ॥

२४. भगव च ण उदाहु—सतेगइया मणुस्सा भवति, त जहा—अप्पिच्छा अप्पारभा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया[2] •धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मप्पलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा धम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरति, सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणदा सुसाहू । एगच्चाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया । एगच्चाओ मुसावायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया । एगच्चाओ अदिण्णादाणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया । एगच्चाओ मेहुणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया । एगच्चाओ परिग्गहाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ॰ अप्पडिविरया । जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणताए दडे णिक्खित्ते, ते तओ आउग विप्पजहति, विप्पजहित्ता ते तओ भुज्जो सगमादाए सोग्गइगामिणो भवति ।

ते पाणा वि वुच्चति,[3] •ते तसावि वुच्चति ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया । ते वहुतरगा पाणा जेहि समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहि समणोवासगस्स अपच्चक्खाय भवइ । से महया तसकायाओ उवसतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स ज ण तुब्भे वा अण्णो वा एव वयह— "णत्थि ण से केइ परियाए जसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दडे णिक्खित्ते ।" अय पि भे उवएसे॰ णो णेयाउए भवइ ॥

२५ भगव च ण उदाहु—सतेगइया मणुस्सा भवति, त जहा—आरण्णिया आवसहिया गामतिया[4] कण्हुईरहस्सिया[5]—जेहि समणोवासगस्स आयाणसो आमरणताए दडे णिक्खित्ते भवइ—णो वहुसजया णो वहुपडिविरया सव्वपाणभूय-

---

१ स॰ पा॰—वुच्चति जाव णो णेयाउए ।

२ स॰ पा॰—धम्माणुया जाव एगच्चाओ परिग्गहाओ-अप्पडिविरया ।

३ स॰ पा॰—वुच्चति जाव णो णेयाउए ।

४ गामणियतिया (क, ख, वृ), द्रष्टव्यम् २।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

५ कण्हृतिरहस्सिया (क) ।

जीवसत्तेहिं[1] अप्पणा सच्चामोसाइं एवं विउंजंति[2]—अहं णं हंतव्वो अण्णे हंतव्वा[3], °अहं णं अज्जावेयव्वो अण्णे अज्जावेयव्वा, अहं णं परिघेतव्वो अण्णे परिघेतव्वा, अहं णं परितावेयव्वो अण्णे परितावेयव्वा, अहं णं उद्दवेयव्वो अण्णे उद्दवेयव्वा।

एवामेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं अप्पयरो वा भुज्जयरो वा भुंजित्तु भोगभोगाइं° कालमासे कालं किच्चा अण्णयराइं आसुरियाइं किब्बिसियाइं[4] °ठाणाइं° उववत्तारो भवंति। तओ वि विप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमूयत्ताए तमोरूवत्ताए[5] पच्चायंति।

ते पाणा वि वुच्चंति[6], °ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया। ते चिरट्ठिइया, ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते"। अयं पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ॥

२६ भगवं च णं उदाहु—संतेगइया पाणा दीहाउया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते भवइ। ते पुव्वामेव कालं करेंति, करेत्ता पारलोइयत्ताए पच्चायंति।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया, ते दीहाउया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स[7] °सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ॥

२७ भगवं च णं उदाहु—संतेगइया पाणा समाउया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते भवइ। ते सममेव कालं करेंति, करेत्ता पारलोइयत्ताए पच्चायंति।

ते पाणा वि वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते समाउया। ते

---

१ पाणभूय° (क, ख)।
२ विप्पडिवेदेंति (क, ख, वृपा)।
३ सं० पा०—हंतव्वा जाव कालमासे।
४ सं० पा०—किब्बिसियाइं जाव उववत्तारो।
५ तमूयत्ताए (क), तमोतत्ताए (ख)।
६ सं० पा०—वुच्चंति जाव णो णेयाउए।
७ सं० पा०—समणोवासगस्स जाव णो णेयाउए।

वहुयरगा[1] •पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खाय भवइ। से महया तसकायाओ उवसतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स ज ण तुब्भे वा अण्णो वा एव वयह—"णत्थि ण से केइ परियाए जसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दडे णिक्खित्ते।" अय पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ॥

२८ भगव च ण उदाहु—सतेगइया पाणा अप्पाउया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणताए दडे णिक्खित्ते भवइ। ते पुव्वामेव काल करेंति, करेत्ता पारलोइयत्ताए पच्चायति।

ते पाणा वि वुच्चति, ते तसावि वुच्चति, ते महाकाया, ते अप्पाउया। ते वहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खाय भवइ। से महया[2] •तसकायाओ उवसतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स ज ण तुब्भे वा अण्णो वा एव वयह—"णत्थि ण से केइ परियाए जसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दडे णिक्खित्ते।" अय पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ॥

णवभगेहिं पच्चक्खाणस्स विसय-उवदसण-पद

२९ भगव च ण उदाहु—सतेगइया समणोवासगा भवति। तेसिं च ण एव वुत्तपुव्व भवइ—णो खलु वय सचाएमो मुडा भवित्ता[3] •अगाराओ अणगारिय° पव्वइत्तए। णो खलु वय सचाएमो चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्ण पोसह अणुपालित्तए। णो खलु वय सचाएमो अपच्छिम[4]•मारणतियसलेहणा-झूसणाझूसिया भत्तपाणपडियाइक्खिया काल अणवकखमाणा° विहरित्तए। वय ण सामाइय देसावगासिय[5]—पुरत्था पाईण पडीण दाहिण उदीण एतावताव सव्वपाणेहिं[6] •सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं° सव्वसत्तेहिं दडे णिक्खित्ते पाणभूयजीवसत्तेहिं खेमकरे अहमसि।

१ तत्थ आरेण जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणताए दडे णिक्खित्ते, ते तओ आउ विप्पजहति, विप्पजहित्ता तत्थ आरेण चेव जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणताए दडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायति तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ।

---

१ स० पा०—वहुयरगा जाव णो णेयाउए।
२ स० पा०—महया जाव णो णेयाउए।
३ स० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए।
४ स० पा०—अच्छिम जाव विहरित्तए।
५ व्या० वि—'अणुपालेमाणा विहरिस्सामो' इति अध्याहर्तव्यम्।
६ स० पा०—सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं।

ते पाणा वि[1] •वुच्चति, ते तसावि वुच्चति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते वहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खाय भवइ। से महया तसकायाओ उवसतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स ज ण तुब्भे वा अण्णो वा एव वयह—"णत्थि ण से केइ परियाए जसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दडे णिक्खित्ते।" अय पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।°

२ तत्थ आरेण जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणताए दडे णिक्खित्ते, ते तओ आउ विप्पजहति, विप्पजहित्ता तत्थ आरेण चेव जे थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायति। तेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दडे णिक्खित्ते।

ते पाणावि वुच्चति, ते तसा[2] •वि वुच्चति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते वहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खाय भवइ। से महया तसकायाओ उवसतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स ज ण तुब्भे वा अण्णो वा एव वयह—"णत्थि ण से केइ परियाए जसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दडे णिक्खित्ते।" अय पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।°

३ तत्थ 'आरेण जे'[3] तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणताए दडे णिक्खित्ते, ते तओ आउ विप्पजहति, विप्पजहित्ता तत्थ परेण चेव जे तसा थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणताए दडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायति। तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ।

ते पाणावि[4] •वुच्चति, ते तसावि वुच्चति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते वहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खाय भवइ। से महया तसकायाओ उवसतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स ज ण तुब्भे वा अण्णो वा एव वयह—"णत्थि ण से केइ परियाए जसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दडे णिक्खित्ते।" अय पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।°

४ तत्थ 'आरेण जे'[5] थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दडे णिक्खित्ते, ते तओ आउ विप्पजहति, विप्पजहित्ता तत्थ आरेण

---

१ स० पा०—पाणावि जाव अय पि भेदे से° ।
२ स० पा०—ते तसा° ते चिर जाव अय पि भेदे से° ।
३ जे आरेण (क, ख)।
४ स० पा०—पाणावि जाव अय पि भेदे ।
५ जे आरेण (क, ख)।

चेव जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणताए दडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायति। तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ।

ते पाणावि[1] •वुच्चति, ते तसावि वुच्चति, से महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते वहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खाय भवइ। से महया तसकायाओ उवसतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स ज ण तुब्भे वा अण्णो वा एव वयह—"णत्थि ण से केइ परियाए जसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दडे णिक्खित्ते।" अय पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।°

५ तत्थ 'आरेण जे'[2] थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दडे णिक्खित्ते, ते तओ आउ विप्पजहति, विप्पजहित्ता ते तत्थ आरेण चेव जे थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायति। तेहि समणोवासगस्स 'अट्ठाए दडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दडे णिक्खित्ते'[3]।

ते पाणावि[4] •वुच्चति, ते तसावि वुच्चति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते वहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खाय भवइ। से महया तसकायाओ उवसतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स ज ण तुब्भे वा अण्णो वा एव वयह—"णत्थि ण से केइ परियाए जसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दडे णिक्खित्ते।" अय पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।°

६ तत्थ 'परेण जे'[5] थावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दडे णिक्खित्ते, ते तओ आउ विप्पजहति, विप्पजहित्ता तत्थ परेण चेव जे तसा थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणताए दडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायति। तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ।

ते पाणावि[6] •वुच्चति, ते तसावि वुच्चति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते वहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खाय भवइ। से महया तसकायाओ उवसतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स ज ण तुब्भे वा अण्णो वा एव वयह—"णत्थि ण से केइ परियाए जसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दडे णिक्खित्ते।"° अय पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।

---

१ स० पा०—पाणावि जाव अय पि भे।
२ जेते आरेण (क, ख)।
३ सुपच्चक्खाय भवति (ख)।
४ स० पा०—पाणावि जाव अय पि भेदे।
५ जेते परेण (क, ख)।
६ स० पा०—पाणावि जाव अय।

७ तत्थ 'परेण जे'[1] तसथावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरण-ताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं जे तसा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चा-यंति। तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ।

ते पाणावि[2] °वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" ° अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।

८ तत्थ 'परेण जे'[3] तसथावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरण-ताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं जे थावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति। तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ।

ते पाणावि[4] °वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दंडे णिक्खित्ते।" अयं पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ।°

९ तत्थ 'परेण जे'[5] तसथावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरण-ताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउं विप्पजहंति, विप्पजहित्ता ते तत्थ परेण चेव जे तसथावरा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणताए दंडे णिक्खित्ते, तेसु पच्चायंति। तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ।

ते पाणावि[6] °वुच्चंति, ते तसा वि वुच्चंति, ते महाकाया, ते चिरट्ठिइया। ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ। से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जं णं तुब्भे वा अण्णो वा एवं वयह—"णत्थि णं से केइ

---

१ जे परेण (क), जेते परेण (ख)।
२ म० पा०—पाणावि जाव अयं।
३ जे परेण (क), जेते परेण (ख)।
४ स० पा०—पाणावि जाव अयं पि भेदे॰॰।
५ जे परेण (क, ख)।
६ स० पा०—पाणावि जाव अयं पि भेदे से॰॰।

परियाए जसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दडे णिक्खित्ते।" अय पि भे उवएसे णो णेयाउए भवइ ।।°

तस-थावर-पाणाण अव्वोच्छित्ति-पद

३० भगव च ण उदाहु—ण एय भूय ण एय भव्व 'ण एय भविस्स'[1] जण्ण—तसा पाणा वोच्छिज्जिर्हिति[2], थावरा पाणा भविस्सति। थावरा पाणा वोच्छिज्जिहिति, तसा पाणा भविस्सति। अवोच्छिण्णेहिं तसथावरेहिं पाणेहिं जण्ण तुब्भे वा अण्णो वा एव वदह—"णत्थि ण से केइ परियाए[3] °जसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दडे णिक्खित्ते।" अय पि भे उवएसे° णो णेयाउए भवइ ।।

उवसहार-पद

३१ भगव च ण उदाहु—आउसतो! उदगा! जे खलु समण वा माहण वा परिभासइ मित्ति[4] मण्णइ आगमित्ता णाण, आगमित्ता दसण, आगमित्ता चरित्त पावाण कम्माण अकरणयाए [उट्ठिए[5] ?], से खलु परलोगपलिमथत्ताए चिट्ठइ।

जे खलु समण वा माहण वा णो परिभासइ मित्ति[6] मण्णइ आगमित्ता णाण, आगमित्ता दसण, आगमित्ता चरित्त पावाण कम्माण अकरणयाए [उट्ठिए ?], से खलु परलोगविसुद्धीए चिट्ठइ[7] ।।

३२ तए ण से उदए पेढालपुत्ते भगव गोयम अणाढायमाणे जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पहारेत्थ गमणाए।।

३३ भगव च ण उदाहु—आउसतो! उदगा! जे खलु तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिए एगमवि आरिय धम्मिय सुवयण सोच्चा णिसम्म अप्पणो चेव सुहुमाए पडिलेहाए अणुत्तर जोगखेमपय लभिए समाणे सो वि ताव त आढाइ 'परिजाणेइ वदइ णमसइ सक्कारेइ सम्माणेइ'[8] कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासइ ।।

---

१ भवइ (वृ), × (चू)।

२ वोच्छिज्जिस्सति (क)।

३ स० पा०—परियाए जाव णो णेयाउए।

४ मेत्ति (क, ख), मैत्री मन्यमानोऽपि (वृ), स्वीकृतपाठश्चूर्ण्यनुसारी वर्तते। व्या० वि०— मामिति।

५ प्रत्योर्नैप पाठो लभ्यते, चूर्णावपि नास्ति। वृत्तावस्ति व्याख्यात।

६ मेत्ति (क, ख), मैत्री मण्यते (वृ)।

७ नागार्जुनीयास्तु—णो खलु समण वा हीलमाणो परिभासति मणसा वायाए काएण आगमित्ता णाण आगमित्ता दसण आगमित्ता चरित्त पावाण कम्माण अकरणयाए, से खलु परलोगपडिमथत्ताए चिट्ठति (चू)।

८ परिजाणाइ वदति णममति (क), × (वृ)।

३४ तए ण से उदए पेढालपुत्ते भगव गोयम एव वयासी—एएसि ण भते ! पदाण पुव्वि अण्णाणयाए अस्सवणयाए अवोहीए अणभिगमेण अदिट्ठाण अस्सुयाण अमुयाण अविण्णायाण अणिज्जूढाण[1] अव्वोगडाण अव्वोच्छिण्णाण अणिसिट्ठाण अणिवूढाण अणुवहारियाण एयमट्ठ णो सद्दहिय णो पत्तिय णो रोइय। एएसि ण भते ! पदाण एण्हि जाणयाए सवणयाए वोहीए[2] °अभिगमेण दिट्ठाण सुयाण मुयाण विण्णायाण णिज्जूढाण वोगडाण वोच्छिण्णाण णिसिट्ठाण णिवूढाण° उवधारियाण एयमट्ठ सद्दहामि पत्तियामि रोएमि 'एवामेय जहा ण'[3], तुब्भे वदह॥

३५ तए ण भगव गोयमे उदग पेढालपुत्त एव वयासी—सद्दहाहि ण अज्जो ! पत्तियाहि ण अज्जो ! रोएहि ण अज्जो ! एवमेय जहा ण अम्हे वयामो॥

३६ तए ण से उदए पेढालपुत्ते भगव गोयम एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिए[4] चाउज्जामाओ धम्माओ पचमहव्वइय सपडिक्कमण धम्म उवसपज्जित्ताण विहरित्तए॥

३७ तए ण भगव गोयमे उदग पेढालपुत्त गहाय जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ। तए ण से उदए पेढालपुत्ते समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पचमहव्वइय सपडिक्कमण धम्म उवसपज्जित्ताण विहरित्तए। अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध करेहि॥

३८ तए ण से उदए पेढालपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पचमहव्वइय सपडिक्कमण धम्म उवसपज्जित्ताण विहरइ।

—त्ति वेमि॥

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर ८४६२२

अनुष्टुप् श्लोक २६४४, अक्षर १४

---

१. × (क)।
२. स० पा०—वोहीए जाव उवधारियाण।
३ एवमेव से जहेय।
४ अतिय (क)।

ठाणां

पढमं ठाणं

१ सुयं मे आउसं ! तेणं भगवता एवमक्खायं—

अत्थिवाय-पद

२ एगे आया ।।
३ एगे दंडे ।।
४ एगा किरिया ।।
५ एगे लोए ।।
६ एगे अलोए ।।
७ एगे धम्मे ।।
८ एगे अहम्मे ।।
९ एगे बंधे ।।
१० एगे मोक्खे ।।
११ एगे पुण्णे ।।
१२ एगे पावे ।।
१३ एगे आसवे ।।
१४ एगे संवरे ।।
१५ एगा वेयणा ।।
१६ एगा णिज्जरा ।।

पइण्णग-पद

१७ एगे जीवे पाडिक्कएणं[1] सरीरएणं ।।
१८ एगा जीवाणं अपरिआइत्ता विगुव्वणा ।।

---

१ पडिक्खएणं (वृपा) ।

१६ एगे मणे ॥
२० एगा वई ॥
२१ एगे काय-वायामे ॥
२२ एगा उप्पा ॥
२३ एगा वियती ॥
२४ एगा वियच्चा ॥
२५ एगा गती ॥
२६ एगा आगती ॥
२७ एगे चयणे ॥
२८ एगे उववाए ॥
२६ एगा तक्का ॥
३० एगा सण्णा ॥
३१ एगा मण्णा ॥
३२ एगा विण्णू ॥
३३ एगा वेयणा ॥
३४ एगे छेयणे ॥
३५ एगे भेयणे ॥
३६ एगे मरणे अतिमसारीरियाणं ॥
३७ एगे संसुद्धे अहाभूए पत्ते ॥
३८ 'एगे दुक्खे'[१] जीवाणं एगभूए ॥
३६ एगा अहम्मपडिमा, 'जं से'[२] आया परिकिलेसति ॥
४० एगा धम्मपडिमा, जं से आया पज्जवजाए[३] ॥
४१ एगे मणे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि ॥
४२ एगा वई[४] देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि ॥
४३ एगे काय-वायामे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि ॥
४४ एगे उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसकार[५]-परक्कमे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि ॥
४५ एगे णाणे ॥
४६ एगे दंसणे ॥

---

१. एगदुक्खे (वृपा) ।
२. जंसि (वृपा) ।
३. पज्जवज्जाए (ख) ।
४. वती (क, ख, ग) ।
५ पुरिसक्कार (क) ।

४७ एगे चरित्ते ॥
४८ एगे समए ॥
४९ एगे पएसे ॥
५० एगे परमाणू ॥
५१ एगा सिद्धी ॥
५२ एगे सिद्धे ॥
५३ एगे परिणिव्वाणे ॥
५४ एगे परिणिव्वुए[1] ॥

पोग्गल-पद

५५ एगे सद्दे ॥
५६ एगे रूवे ॥
५७ एगे गंधे ॥
५८ एगे रसे ॥
५९ एगे फासे ॥
६० एगे सुब्भिसद्दे ।
६१ एगे दुब्भिसद्दे ॥
६२ एगे सुरूवे ॥
६३ एगे दुरूवे ॥
६४ एगे दीहे ॥
६५ एगे हस्से[2] ॥
६६ एगे वट्टे ॥
६७ एगे तंसे ॥
६८ एगे चउरंसे ॥
६९ एगे पिहुले ॥
७० एगे परिमंडले ॥
७१ एगे किण्हे ॥
७२ एगे णीले ॥
७३. एगे लोहिए ॥
७४ एगे हालिद्दे ॥
७५ एगे सुक्किल्ले[3] ॥
७६ एगे सुब्भिगंधे ॥

---

१ °निव्वुडे (क, ग) ।
२ रहस्से (क, ग) ।
३. सुक्किले (क, ग) ।

७७ एगे दुब्भिगंधे ॥
७८. एगे तित्ते ॥
७९ एगे कडुए ॥
८० एगे कसाए ॥
८१ एगे अंबिले ॥
८२ एगे महुरे ॥
८३ एगे कक्खडे[1] ॥
८४ •एगे मउए ॥
८५ एगे गरुए ॥
८६. एगे लहुए ॥
८७ एगे सीते ॥
८८ एगे उसिणे ॥
८९ एगे णिद्धे ॥
९० एगे° लुक्खे ॥

अट्ठारसपाव-पद

९१ एगे पाणातिवाए[2] ॥
९२ •एगे मुसावाए ॥
९३ एगे अदिण्णादाणे ॥
९४ एगे मेहुणे° ॥
९५ एगे परिग्गहे ॥
९६ एगे कोहे[3] ॥
९७ •एगे माणे ॥
९८ एगा माया° ॥
९९ एगे लोभे ॥
१००. एगे पेज्जे ॥
१०१ एगे दोसे[4] ॥
१०२ •एगे कलहे ॥
१०३ एगे अब्भक्खाणे ॥
१०४. एगे पेसुण्णे° ॥

---

१ कक्कडे (क, ग), स० पा०—कक्खडे जाव लुक्खे ।
२ स० पा०—पाणातिवाए जाव एगे ।
३ स० पा०—कोहे जाव एगे ।
४ स० पा०—दोसे जाव एगे ।

१०५ एगे परपरिवाए ॥
१०६ एगा अरतिरती ॥
१०७ एगे मायामोसे ॥
१०८ एगे मिच्छादंसणसल्ले ॥

अट्ठारसपाव-वेरमण-पदं

१०९ एगे पाणाइवाय-वेरमणे[1] ॥
११० °एगे मुसावाय-वेरमणे ॥
१११ एगे अदिण्णादाण-वेरमणे ॥
११२ एगे मेहुण-वेरमणे ॥
११३ एगे° परिग्गह-वेरमणे ॥
११४ एगे कोह[2]-विवेगे[3] ॥
११५ °एगे माण-विवेगे ॥
११६ एगे माया-विवेगे ॥
११७ एगे लोभ-विवेगे ॥
११८ एगे पेज्ज-विवेगे ॥
११९ एगे दोस-विवेगे ॥
१२० एगे कलह-विवेगे ॥
१२१ एगे अब्भक्खाण-विवेगे ॥
१२२ एगे पेसुण्ण-विवेगे ॥
१२३ एगे परपरिवाय-विवेगे ॥
१२४ एगे अरतिरति-विवेगे ॥
१२५ एगे मायामोस-विवेगे ॥
१२६ एगे° मिच्छादंसणसल्ल-विवेगे ॥

ओसप्पिणी-उस्सप्पिणी-पदं

१२७ एगा ओसप्पिणी ॥
१२८. एगा सुसम-सुसमा[4] ॥
१२९ °एगा सुसमा ॥
१३० एगा सुसम-दूसमा ॥

---

१ स० पा०—पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे।
२. कोव (क)।
३ स० पा०—कोहविवेगे जाव मिच्छादंसण-सल्ल°।
४ स० पा०—सुसमसुसमा जाव एगा।

१३१ एगा दूसम-सुसमा ॥
१३२ एगा दूसमा° ॥
१३३ एगा दूसम-दूसमा ॥
१३४ एगा उस्सप्पिणी ॥
१३५. एगा दुस्सम-दुस्समा[1] ॥
१३६ °एगा दुस्समा ॥
१३७ एगा दुस्सम-सुसमा ॥
१३८ एगा सुसम-दुस्समा ॥
१३९ एगा सुसमा° ॥
१४० एगा सुसम-सुसमा ॥

चउवीसदंडग-पद

१४१ एगा णेरइयाणं वग्गणा ॥
१४२ एगा असुरकुमाराणं वग्गणा[2] ॥
१४३ °एगा णागकुमाराणं वग्गणा ॥
१४४ एगा सुवण्णकुमाराणं वग्गणा ॥
१४५ एगा विज्जुकुमाराणं वग्गणा ॥
१४६ एगा अग्गिकुमाराणं वग्गणा ॥
१४७ एगा दीवकुमाराणं वग्गणा ॥
१४८ एगा उदहिकुमाराणं वग्गणा ॥
१४९ एगा दिसाकुमाराणं वग्गणा ॥
१५० एगा वायुकुमाराणं वग्गणा ॥
१५१ एगा थणियकुमाराणं वग्गणा ॥
१५२ एगा पुढविकाइयाणं वग्गणा ॥
१५३ एगा आउकाइयाणं वग्गणा ॥
१५४ एगा तेउकाइयाणं वग्गणा ॥
१५५ एगा वाउकाइयाणं वग्गणा ॥
१५६ एगा वणस्सइकाइयाणं वग्गणा ॥
१५७ एगा बेइंदियाणं वग्गणा ॥
१५८ एगा तेइंदियाणं वग्गणा ॥
१५९ एगा चउरिंदियाणं वग्गणा ॥

---

१ स० पा०—दुस्समदुस्समा जाव एगा ।

२ स० पा०—असुरकुमाराणं वग्गणा चउवीसदंडओ जाव एगा ।

१६० एगा पंचिदियतिरिक्खजोणियाण वग्गणा ॥
१६१ एगा मणुस्साण वग्गणा ॥
१६२ एगा वाणमतराण वग्गणा ॥
१६३ एगा जोइसियाण वग्गणा° ॥
१६४ एगा वेमाणियाण वग्गणा ॥

भव-अभव-सिद्धिय-पद

१६५ एगा भवसिद्धियाण[1] वग्गणा ॥
१६६ एगा अभवसिद्धियाण[2] वग्गणा ॥
१६७ एगा भवसिद्धियाण[3] णेरइयाण वग्गणा ॥
१६८ एगा अभवसिद्धियाण णेरइयाण वग्गणा ॥
१६९ एव जाव[4] एगा भवसिद्धियाण वेमाणियाण वग्गणा, एगा अभवसिद्धियाण वेमाणियाण वग्गणा ॥

दिट्ठि-पदं

१७० एगा सम्मद्दिट्ठियाणं[5] वग्गणा ॥
१७१ एगा मिच्छद्दिट्ठियाण[6] वग्गणा ॥
१७२. एगा सम्मामिच्छद्दिट्ठियाण[7] वग्गणा ॥
१७३ एगा सम्मद्दिट्ठियाण णेरइयाण वग्गणा ॥
१७४ एगा मिच्छद्दिट्ठियाणर णेइयाण वग्गणा ॥
१७५ एगा सम्मामिच्छद्दिट्ठियाण[8] णेरइयाण वग्गणा ॥
१७६ एव जाव[9] थणियकुमाराण वग्गणा ॥
१७७ एगा मिच्छद्दिट्ठियाण पुढविक्काइयाण वग्गणा ॥
१७८ एव जाव[10] वणस्सइकाइयाण ॥
१७९ एगा सम्मद्दिट्ठियाण बेइदियाण वग्गणा ॥
१८० एगा मिच्छद्दिट्ठियाण बेइदियाण वग्गणा ॥
१८१ [11]•एगा सम्मद्दिट्ठियाण तेइदियाण वग्गणा ॥
१८२ एगा मिच्छद्दिट्ठियाण तेइदियाण वग्गणा ॥
१८३ एगा सम्मद्दिट्ठियाण चउरिंदियाण वग्गणा ॥

१,२,३ °सिद्धीयाण (क, ख)।
४ ठा० १।१४२-१६३।
५,६ °दिट्ठीयाण (क, ख, ग)।
७ सम्ममिच्छदिट्ठीयाण (क), °दिट्ठीयाण (ख, ग)।
८ सम्म° (क, ग)।
९ ठा० १।१४२-१५०।
१० ठा० १।१५३-१५५।
११. स० पा०—एव तेइदियाण वि चउरिंदियाण वि।

१८४. एगा मिच्छद्दिट्ठियाण चउरिंदियाण वग्गणा° ॥
१८५ सेसा जहा[1] णरइया जाव[2] एगा सम्मामिच्छद्दिट्ठियाण वेमाणियाण वग्गणा ॥

कण्ह-सुक्क-पक्खिय-पद

१८६ एगा कण्हपक्खियाण वग्गणा ॥
१८७ एगा सुक्कपक्खियाण वग्गणा ॥
१८८. एगा कण्हपक्खियाण णेरइयाण वग्गणा ॥
१८९ एगा सुक्कपक्खियाण णेरइयाण वग्गणा ॥
१९० एव—चउवीसदडओ भाणियव्वो[3] ॥

लेसा-पद

१९१ एगा कण्हलेस्साण वग्गणा ॥
१९२ एगा णीललेसाण वग्गणा ॥
१९३ [4]°एगा काउलेसाण वग्गणा ॥
१९४ एगा तेउलेसाण वग्गणा ॥
१९५ एगा पम्हलेसाण वग्गणा ॥
१९६ एगा° सुक्कलेसाण वग्गणा ॥
१९७ एगा कण्हलेसाण णेरइयाण वग्गणा ॥
१९८ [5]°एगा णीललेसाण णेरइयाण वग्गणा ॥
१९९ एगा° काउलेसाण णेरइयाण वग्गणा ॥
२०० एव—जस्स जइ लेसाओ—भवणवइ-वाणमतर-पुढवि आउ-वणस्सइकाइयाण च चत्तारि लेसाओ, तेउ-वाउ-वेइदिय-तेइदिय-चउरिंदियाण तिण्णि लेसाओ, पचिदियतिरिक्खजोणियाण मणुस्साण छल्लेस्साओ, जोतिसियाण एगा तेउलेसा, वेमाणियाण तिण्णि उवरिमलेसाओ ॥
२०१ एगा कण्हलेसाण भवसिद्धियाण वग्गणा ॥
२०२ एगा कण्हलेसाण अभवसिद्धियाण वग्गणा ॥
२०३ एव—छसुवि लेसासु[6] दो दो पयाणि भाणियव्वाणि ॥
२०४ एगा कण्हलेसाण भवसिद्धियाण णेरइयाण वग्गणा ॥
२०५ एगा कण्हलेसाण अभवसिद्धियाण णेरइयाण वग्गणा ॥

---

१ ठा० १।१६०-१६४।
२. ठा० १।१७३-१७५।
३ ठा० १।१४२-१६४।
४ स० पा०—एव जाव सुक्कलेसाण।
५ स० पा०—एव जाव काउलेसाण।
६ ठा० १।१९२-१९६।

२०६ एव—जस्स जति लेसाओ[1] तस्स ततियाओ[2] भाणियव्वाओ जाव[3] वेमाणियाण ।।
२०७ एगा कण्हलेसाण सम्मद्दिट्ठियाण वग्गणा ।।
२०८ एगा कण्हलेसाण मिच्छद्दिट्ठियाण वग्गणा ।।
२०९ एगा कण्हलेसाण सम्मामिच्छद्दिट्ठियाण वग्गणा ।।
२१० एव—छसुवि लेसासु जाव[4] वेमाणियाण 'जेसिं जइ दिट्ठीओ'[5] ।।
२११ एगा कण्हलेसाण कण्हपक्खियाण वग्गणा ।।
२१२ एगा कण्हलेसाण सुक्कपक्खियाण वग्गणा ।।
२१३ जाव[6] वेमाणियाण । जस्स जति लेसाओ[7] एए अट्ठ, चउवीसदडया ।।

सिद्ध-पद

२१४ एगा तित्थसिद्धाण वग्गणा ।।
२१५ एगा अतित्थसिद्धाण वग्गणा ।।
२१६ [8]°एगा तित्थगरसिद्धाण वग्गणा ।।
२१७ एगा अतित्थगरसिद्धाण वग्गणा ।।
२१८ एगा सयबुद्धसिद्धाण वग्गणा ।।
२१९ एगा पत्तेयबुद्धसिद्धाण वग्गणा ।।
२२० एगा बुद्धबोहियसिद्धाण वग्गणा ।।
२२१ एगा इत्थीलिंगसिद्धाण वग्गणा ।।
२२२ एगा पुरिसलिंगसिद्धाण वग्गणा ।।
२२३ एगा णपुसकलिंगसिद्धाण वग्गणा ।।
२२४ एगा सलिंगसिद्धाण वग्गणा ।।
२२५ एगा अण्णलिंगसिद्धाण वग्गणा ।।
२२६ एगा गिहिलिंगसिद्धाण वग्गणा° ।।
२२७ एगा एक्कसिद्धाण वग्गणा ।।
२२८ एगा अणिक्कसिद्धाण वग्गणा ।।
२२९ एगा अपढमसमयसिद्धाण[9] वग्गणा, एव जाव अणतसमयसिद्धाण वग्गणा ।।

---

१. ठा० १।२०० ।
२ तत्तियाओ (क) ।
३ ठा० १।१४२-१६३ ।
४ ठा० १।१४१-१६३ ।
५ जेसिं-जेसिं° (क), जेसिं जद्दिट्ठीओ (ख), पू०—ठा० १।१७३-१८५ ।
६ ठा० १।१४१-१६३ ।
७ ठा० १।२०० ।
८ स० पा०—एव जाव एगा ।
९ पढमसमय° (ख, वृपा) ।

पोग्गल-पद

२३० एगा परमाणुपोग्गलाण वग्गणा, एव जाव एगा अणतपएसियाण खधाण[1] वग्गणा ।।

२३१ एगा एगपएसोगाढाण पोग्गलाण वग्गणा जाव एगा असखेज्जपएसोगाढाण पोग्गलाण वग्गणा ।।

२३२ एगा एगसमयठितियाण पोग्गलाणं वग्गणा जाव एगा असखेज्जसमय-ठितियाण पोग्गलाण वग्गणा ।।

२३३ एगा एगगुणकालगाण पोग्गलाण वग्गणा जाव एगा असखेज्जगुणकालगाण पोग्गलाण वग्गणा, एगा अणतगुणकालगाण पोग्गलाण वग्गणा ।।

२३४. एव—वण्णा गधा रसा फासा भाणियव्वा जाव[2] एगा अणतगुणलुक्खाण पोग्गलाण वग्गणा ।।

२३५ एगा जहण्णपएसियाण खधाण वग्गणा ।।

२३६ एगा उक्कस्सपएसियाण[3] खधाण वग्गणा ।।

२३७ एगा अजहण्णुक्कस्सपएसियाण खधाण वग्गणा ।।

२३८ [4]•एगा जहण्णोगाहणगाण खधाण वग्गणा ।।

२३९. एगा उक्कोसोगाहणगाण खधाण वग्गणा ।।

२४० एगा अजहण्णुक्कोसोगाहणगाण खधाण वग्गणा ।।

२४१ एगा जहण्णठितियाण खधाण वग्गणा ।।

२४२ एगा उक्कस्सठितियाण खधाण वग्गणा ।।

२४३. एगा अजहण्णुक्कोसठितियाण खधाण वग्गणा ।।

२४४ एगा जहण्णगुणकालगाण खधाण वग्गणा ।।

२४५ एगा उक्कस्सगुणकालगाण खधाग वग्गणा ।।

२४६ एगा अजहण्णुक्कस्सगुणकालगाण खधाण वग्गणा° ।।

२४७ एव—वण्ण-गध-रस-फासाणं वग्गणा भाणियव्वा जाव[5] एगा अजहण्णुक्कस्स-गुणलुक्खाण पोग्गलाण [खंधाणं ?] वग्गणा ।।

जंबुद्दीव-पदं

२४८ एगे जबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाण[6] •सव्वब्भतराए सव्वखुड्डाए, वट्टे तेल्लापूय-

---

१ पोग्गालाण (क, ख, ग)।

२ ठा० १।७२-८९।

३ उक्कोस्स° (ख), उक्कोस° (ग)।

४. स० पा०—एव जहण्णोगाहणगाण•• • • अजहण्णुक्कस्सगुणकालगाणं।

५ ठा० १।७२-८९।

६ स० पा०—सव्वदीवसमुद्दाण जाव अद्धगुलगं।

सठाणसठिए, वट्टे रहचक्कवालसठाणसठिए, वट्टे पुक्खरकण्णियासठाणसठिए, वट्टे पडिपुण्णचदसठाणसठिए, एग जोयणसयसहस्स आयामविक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ सोलस सहस्साइ दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीस च धणुसय तेरस अगुलाइ° अद्धगुलग च किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण ॥

महावीर-णिव्वाण-पद

२४९ एगे समणे भगव महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउव्वीसाए तित्थगराण चरमतित्थयरे[1] सिद्धे बुद्धे मुत्ते[2] °अतगडे परिणिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

देव-पद

२५० अणुत्तरोववाइया ण देवा[3] 'एग रयणिं'[4] उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥

णक्खत्त-पद

२५१ अद्दाणक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ॥
२५२ चित्ताणक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ॥
२५३ सातिणक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ॥

पोग्गल-पद

२५४. एगपदेसोगाढा पोग्गला अणता पण्णत्ता ॥
२५५ [5]°एगसमयठितिया[6] पोग्गला अणता पण्णत्ता° ॥
२५६ एगगुणकालगा[7] पोग्गला अणता पण्णत्ता जाव[8] एगगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता ॥

---

१. चरिम° (क, ग)।
२. स० पा०—मुत्ते जाव सव्वदुक्ख°।
३ देवा ण (क, ख, ग)।
४ एग रत्तिंण (ख)।
५ स० पा०—एवमेगसमयठितिया।
६ °ठितीया (क, ख, ग)।
७ °कालगाण (ख)।
८ ठा० १।७२-८९।

बीअं ठाणं

पढमो उद्देसो

दुपओआर-पद

१ 'जदत्थि ण'[1] लोगे त सव्व दुपओआर[2], त जहा—जीवच्चेव, अजीवच्चेव। 'तसच्चेव, थावरच्चेव'[3]। सजोणियच्चेव, अजोणियच्चेव। साउयच्चेव, अणाउयच्चेव। सइंदियच्चेव, अणिंदियच्चेव[4]। सवेयगा चेव, अवेयगा चेव। सरूवी चेव, अरूवी चेव। सपोग्गला चेव, अपोग्गला चेव। ससारसमावण्णगा चेव, अससारसमावण्णगा चेव। सासया चेव, असासया चेव। आगासे चेव, णोआगासे चेव। धम्मे चेव, अधम्मे चेव। बधे चेव, मोक्खे चेव। पुण्णे चेव, पावे चेव। आसवे चेव, सवरे चेव। वेयणा चेव, णिज्जरा चेव॥

किरिया-पदं

२ दो किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—जीवकिरिया चेव, अजीवकिरिया चेव॥

३ जीवकिरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सम्मत्तकिरिया चेव, मिच्छत्तकिरिया चेव॥

४ अजीवकिरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—इरियावहिया चेव, सपराइगा चेव॥

५ दो किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—काइया चेव, आहिगरणिया[5] चेव॥

६ काइया किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अणुवरयकायकिरिया चेव, दुपउत्तकायकिरिया[6] चेव॥

७ आहिगरणिया[7] किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सजोयणाधिकरणिया चेव, णिव्वत्तणाधिकरणिया चेव॥

---

१ जदत्थि च ण (क,वृपा), जदत्थि ण च (ग)।
२ दुपडोयार (क, ख, ग, वृपा)।
३ तसे चेव थावरे चेव (क्व)।
४ अणिंदिएच्चेव (क, ग)।
५. अहिग० (ग)।
६ दुप्प० (क्व)।
७ अहिकर० (क); आहिकर० (ग)।

८. दो किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा—पाओसिया चेव, पारियावणिया चेव ।।

९ पाओसिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जीवपाओसिया चेव, अजीवपाओसिया चेव ।।

१० पारियावणिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सहत्थपारियावणिया चेव, परहत्थपारियावणिया चेव ।।

११. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—पाणातिवायकिरिया चेव, अपच्चक्खाण-किरिया चेव ।।

१२ पाणातिवायकिरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सहत्थपाणातिवायकिरिया चेव, परहत्थपाणातिवायकिरिया चेव ।।

१३ अपच्चक्खाणकिरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जीवअपच्चक्खाणकिरिया चेव, अजीवअपच्चक्खाणकिरिया चेव ।।

१४ दो किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—आरभिया चेव, पारिग्गहिया चेव ।

१५ आरभिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जीवआरभिया चेव, अजीव-आरभिया चेव ।।

१६ [1]°पारिग्गहिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जीवपारिग्गहिया चेव, अजीवपारिग्गहिया चेव° ।।

१७ दो किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—मायावत्तिया[2] चेव, मिच्छादसणवत्तिया चेव ।

१८ मायावत्तिया[3] किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—आयभाववकणता चेव, पर-भाववकणता चेव ।।

१९ मिच्छादसणवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—ऊणाइरियमिच्छादसण-वत्तिया[4] चेव, तव्वइरित्तमिच्छादसणवत्तिया चेव ।।

२० दो किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—दिट्ठिया चेव, पुट्ठिया चेव ।।

२१ दिट्ठिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जीवदिट्ठिया चेव, अजीवदिट्ठिया चेव ।।

२२ [5]°पुट्ठिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जीवपुट्ठिया चेव, अजीवपुट्ठिया चेव° ।।

२३ दो किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—पाडुच्चिया चेव, सामतोवणिवाइया चेव ।।

---

१ स० पा०—एव पारिग्गहिया वि ।

२ मायवत्तिया (क, ग) ।

३ मायवत्तिया (क, ग) ।

४ ऊणायरिय° (क, ग), ऊणाइरित्त° (क्व) ।

५ स० पा०—एव पुट्ठिया वि ।

२४ पाडुच्चिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जीवपाडुच्चिया चेव, अजीव-पाडुच्चिया चेव ॥

२५ [1]•सामतोवणिवाइया किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जीवसामतोवणिवाइया चेव, अजीवसामतोवणिवाइया चेव° ॥

२६. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—साहत्थिया चेव, णेसत्थिया चेव ॥

२७ साहत्थिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जीवसाहत्थिया चेव अजीव-साहत्थिया चेव ॥

२८ [2]•णेसत्थिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जीवणेसत्थिया चेव, अजीव-णेसत्थिया चेव° ॥

२९ दो किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—आणवणिया चेव, वेयारणिया[3] चेव ॥

३० [4]•आणवणिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जीवआणवणिया चेव, अजीव-आणवणिया चेव ॥

३१ वेयारणिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जीववेयारणिया चेव, अजीव-वेयारणिया चेव° ॥

३२ दो किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—अणाभोगवत्तिया चेव, अणवकखवत्तिया चेव ॥

३३ अणाभोगवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अणाउत्तआइयणता[5] चेव, अणाउत्तपमज्जणता चेव ॥

३४ अणवकखवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—आयसरीरअणवकख-वत्तिया चेव, परसरीरअणवकखवत्तिया चेव ॥

३५ दो किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—पेज्जवत्तिया चेव, दोसवत्तिया चेव ॥

३६. पेज्जवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—मायावत्तिया चेव, लोभवत्तिया चेव ॥

३७ दोसवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—कोहे चेव, माणे चेव ॥

गरहा-पद

३८ दुविहा गरिहा पण्णत्ता, त जहा—मणसा वेगे गरहति, वयसा वेगे गरहति । अहवा—गरहा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—दीह वेगे अद्ध गरहति, रहस्स वेगे अद्ध गरहति ॥

---

१. स० पा०—एव सामतोवणिवाइयावि ।
२. स० पा०—एव णेसत्थियावि ।
३. वेयारणीया (क, ख), अणाणुवणिता (ग) ।
४ स० पा०—जहेव णेसत्थियाओ ।
५ °आयाणता (क) ।

पच्चक्खाण-पदं

३९ दुविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, त जहा—मणसा वेगे पच्चक्खाति, वयसा वेगे पच्चक्खाति ।
अहवा—पच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—दीह वेगे अद्ध पच्चक्खाति, रहस्स वेगे अद्ध पच्चक्खाति ॥

विज्जाचरण-पद

४० दोहिं ठाणेहिं सपण्णे अणगारे अणादीय अणवयग्ग दीहमद्ध चाउरत ससार-कतार वीतिवएज्जा, त जहा—विज्जाए चेव चरणेण चेव ॥

आरभ-परिग्गह-पदं

४१ दो ठाणाइ अपरियाणेत्ता आया णो केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥
४२ दो ठाणाइ अपरियाणेत्ता[1] आया णो केवल वोधि बुज्झेज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥
४३ दो ठाणाइ अपरियाणेत्ता[2] आया णो केवल मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥
४४ [3]•दो ठाणाइ अपरियाणेत्ता आया णो केवल वभचेरवासमावसेज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥
४५ दो ठाणाइ अपरियाणेत्ता आया णो केवलेण सजमेण सजमेज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥
४६ दो ठाणाइ अपरियाणेत्ता आया णो केवलेण सवरेण सवरेज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥
४७ दो ठाणाइ अपरियाणेत्ता आया णो केवलमाभिणिवोहियणाण उप्पाडेज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥
४८ दो ठाणाइ अपरियाणेत्ता आया णो केवल सुयणाण उप्पाडेज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥
४९ दो ठाणाइ अपरियाणेत्ता आया णो केवल ओहिणाण उप्पाडेज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥•

---

१ अपरियादितित्ता (क, ग), अपरियाइत्ता (वृपा) ।
२ अपरियाइत्ता (क, ग) ।
३ स० पा०—एव णो केवल वभचेरवासमावसेज्जा ओहिणाण मणपज्जवणाण केवलणाण ।

५० दो ठाणाइ अपरियाणत्ता आया णो केवल मणपज्जवणाण उप्पाडेज्जा, त जहा—आरभे चेव परिग्गहे चेव ॥

५१ दो ठाणाइ अपरियाणेत्ता आया णो केवल केवलणाण उप्पाडेज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव° ॥

५२ दो ठाणाइ परियाणेत्ता[1] आया केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

५३ [2]°दो ठाणाइ परियाणेत्ता आया केवल वोधि वुज्भेज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

५४ दो ठाणाइ परियाणेत्ता आया केवल मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

५५ दो ठाणाइ परियाणेत्ता आया केवल वभचेरवासमावसेज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

५६ दो ठाणाइ परियाणेत्ता आया केवलेण सजमेण सजमेज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

५७ दो ठाणाइ परियाणेत्ता आया केवलेण सवरेण सवरेज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

५८ दो ठाणाइ परियाणेत्ता आया केवलमाभिणिवोहियणाण उप्पाडेज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

५९ दो ठाणाइ परियाणेत्ता आया केवल सुयणाण उप्पाडेज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

६० दो ठाणाइ परियाणेत्ता आया केवल ओहिणाण उप्पाडेज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

६१. दो ठाणाइ परियाणेत्ता आया केवल मणपज्जवणाण उप्पाडेज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

६२. दो ठाणाइ परियाणेत्ता आया केवल केवलणाण उप्पाडेज्जा, त जहा—आरभे चेव, परिग्गहे चेव ॥

सोच्चा-अभिसमेच्च-पदं

६३. दोहि ठाणेहि आया केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, त जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव ॥

६४ [3]°दोहि ठाणेहि आया केवल वोधि वुज्भेज्जा, त जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव ॥

---

१. परियाइत्ता (क), परियादित्ता (ग)।

२ स० पा०—एव जाव केवलणाण उप्पाडेज्जा ।

३ स० पा०—जाव केवलणाण उप्पाडेज्जा ।

६५ दोहिं ठाणेहिं आया केवल मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव ॥

६६ दोहिं ठाणेहिं आया केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव ॥

६७ दोहिं ठाणेहिं आया केवलं संजमेण संजमेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव ॥

६८ दोहिं ठाणेहिं आया केवलं संवरेण संवरेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव ॥

६९ दोहिं ठाणेहिं आया केवलमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव अभिसमेच्चच्चेव ॥

७० दोहिं ठाणेहिं आया केवलं सुयणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव ॥

७१. दोहिं ठाणेहिं आया केवलं ओहिणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव ॥

७२ दोहिं ठाणेहिं आया केवलं मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव ॥

७३ दोहिं ठाणेहिं आया केवलं केवलणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव° ॥

कालचक्क-पदं

७४ दो समाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—ओसप्पिणी समा चेव, उस्सप्पिणी समा चेव ॥

उम्माय-पदं

७५ दुविहे उम्माए पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे[1] चेव, मोहणिज्जस्स चेव कम्मस्स उदएणं ।
तत्थ णं जे से जक्खाएसे, से णं सुहवेयतराए चेव, सुहविमोयतराए[2] चेव ।
तत्थ णं जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, से णं दुहवेयतराए[3] चेव, दुहविमोयतराए चेव ॥

---

१. जक्खातेसे (क, ग), जक्खावेसे (क्व), ६।४३ सूत्रे 'जक्खावेसेण' पाठो विद्यते, अत्र च 'जक्खाएसे' इति प्रथमान्त पाठोस्ति। वृत्तिकारेणाप्यसौ प्रथमान्तत्वेन व्याख्यात । अत्र लिपिदोषेण परिवर्तनं जातमथवा सूत्रकारस्य रचनाभेद इति न निश्चेतुं शक्यते ।

२ °मोहतराए (ग) ।

३ वेवतराए (ग) ।

दंड-पद

७६ दो दडा पण्णत्ता, त जहा—अट्ठादडे चेव, अणट्ठादडे चेव ।।
७७ णेरइयाण दो दडा पण्णत्ता, त जहा—अट्ठादडे य, अणट्ठादडे य ।।
७८ एव—चउवीसादडओ जाव[1] वेमाणियाण ।।

दसण-पदं

७९ दुविहे दसणे पण्णत्ते, त जहा—सम्मद्दसणे चेव, मिच्छादसणे चेव ।।
८० सम्मद्दसणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—णिसग्गसम्मद्दसणे चेव, अभिगमसम्मद्दसणे चेव ।।
८१ णिसग्गसम्मद्दसणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पडिवाइ चेव, अपडिवाइ चेव ।।
८२ अभिगमसम्मद्दसणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पडिवाइ चेव, अपडिवाइ चेव ।।
८३ मिच्छादसणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—अभिग्गहियमिच्छादसणे चेव, अणभिग्गहियमिच्छादसणे चेव ।।
८४ अभिग्गहियमिच्छादसणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—सपज्जवसिते चेव, अपज्जवसिते चेव ।।
८५ [2]•अणभिग्गहियमिच्छादसणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—सपज्जवसिते चेव, अपज्जवसिते चेव° ।।

णाण-पद

८६ दुविहे णाणे पण्णत्ते, त जहा—पच्चक्खे चेव, परोक्खे चेव ।।
८७. पच्चक्खे णाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—केवलणाणे चेव, णोकेवलणाणे चेव ।।
८८ केवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—भवत्थकेवलणाणे चेव, सिद्धकेवलणाणे चेव ।।
८९ भवत्थकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—सजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ।।
९० सजोगिभवत्थकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ।
अहवा—चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ।।
९१ •[3]अजोगिभवत्थकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पढमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अपढमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ।

---

१. ठा० १।१४२-१६३ ।
२ स०पा०—एव अणभिग्गहियमिच्छादसणे वि ।
३ स०पा०—एव अजोगिभवत्थकेवलणाणे वि ।

अहवा—चरिमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अचरिमसमयअजोगिभवत्थ-केवलणाणे चेव° ॥

९२ सिद्धकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—अणतरसिद्धकेवलणाणे चेव, परपर-सिद्धकेवलणाणे चेव ॥

९३ अणतरसिद्धकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—एक्काणतरसिद्धकेवलणाणे चेव, अणेक्काणतरसिद्धकेवलणाणे चेव ॥

९४ परपरसिद्धकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—एक्कपरपरसिद्धकेवलणाणे चेव, अणेक्कपरपरसिद्धकेवलणाणे चेव ॥

९५ णोकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—ओहिणाणे चेव, मणपज्जवणाणे चेव ॥

९६ ओहिणाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—भवपच्चइए चेव, खओवसमिए चेव ॥

९७ दोण्ह भवपच्चइए पण्णत्ते, त जहा—देवाण चेव, णेरइयाण चेव ॥

९८ दोण्ह खओवसमिए पण्णत्ते, त जहा—मणुस्साण चेव, पचिंदियतिरिक्ख-जोणियाण चेव ॥

९९ मणपज्जवणाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—उज्जुमति चेव, विउलमति चेव ॥

१०० परोक्खे णाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—आभिणिवोहियणाणे चेव, सुयणाणे चेव ॥

१०१ आभिणिवोहियणाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—सुयणिस्सिए चेव, असुयणिस्सिए चेव ॥

१०२ सुयणिस्सिए दुविहे पण्णत्ते, त जहा—अत्थोग्गहे चेव, वजणोग्गहे चेव ॥

१०३ असुयणिस्सिए[1] °दुविहे पण्णत्ते, त जहा—अत्थोग्गहे चेव, वजणोग्गहे चेव° ॥

१०४ सुयणाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—अगपविट्ठे चेव, अगवाहिरे चेव ॥

१०५ अगवाहिरे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—आवस्सए चेव, आवस्सयवतिरित्ते चेव ॥

१०६. आवस्सयवतिरित्ते दुविहे पण्णत्ते, त जहा—कालिए चेव, उक्कालिए चेव ॥

धम्म-पद

१०७ दुविहे धम्मे पण्णत्ते, त जहा—सुयधम्मे चेव, चरित्तधम्मे चेव ॥

१०८ सुयधम्मे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—सुत्तसुयधम्मे चेव, अत्थसुयधम्मे चेव ॥

१०९ चरित्तधम्मे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—अगारचरित्तधम्मे चेव, अणगारचरित्त-धम्मे चेव ॥

सजम-पद

११० दुविहे सजमे पण्णत्ते, त जहा—सरागसजमे चेव, वीतरागसजमे चेव ॥

---

१ स० पा०—असुयणिस्सितेवि एमेव ।

१११ सरागसजमे दुविहे पण्णत्त, त जहा—सुहुमसपरायसरागसजमे चेव, वादरसपरायसरागसजमे चेव ।।

११२ सुहुमसपरायसरागसजमे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पढमसमयसुहुमसपरायसरागसजमे चेव, अपढमसमयसुहुमसपरायसरागसजमे चेव ।।

अहवा—चरिमसमयसुहुमसपरायसरागसजमे चेव, अचरिमसमयसुहुमसपरायसरागसजमे चेव ।

अहवा—सुहुमसपरायसरागसजमे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—सकिलेसमाणए चेव, विसुज्झमाणए चेव ।।

११३ वादरसपरायसरागसजमे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पढमसमयवादरसपरायसरागसजमे चेव, अपढमसमयवादरसपरायसरागसजमे चेव ।

अहवा—चरिमसमयवादरसपरायसरागसजमे चेव, अचरिमसमयवादरसपरायसरागसजमे चेव ।

अहवा—वादरसपरायसरागसजमे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पडिवातिए चेव, अपडिवातिए चेव ।।

११४ वीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—उवसतकसायवीयरागसजमे चेव, खीणकसायवीयरागसजमे चेव ।।

११५ उवसतकसायवीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पढमसमयउवसतकसायवीयरागसजमे चेव, अपढमसमयउवसतकसायवीयरागसजमे चव ।

अहवा—चरिमसमयउवसतकसायवीयरागसजमे चेव, अचरिमसमयउवसतकसायवीयरागसजमे चेव ।।

११६ खीणकसायवीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—छउमत्थखीणकसायवीयरागसजमे चेव, केवलिखीणकसायवीयरागसजमे चेव ।।

११७ छउमत्थखीणकसायवीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—सयवुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागसजमे चेव, वुद्धवोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागसजमे चेव ।।

११८ सयवुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पढमसमयसयवुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागसजमे चेव, अपढमसमयसयवुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागसजमे चेव ।

अहवा—चरिमसमयसयवुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागसजमे चेव, अचरिमसमयसयवुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागसजमे चेव ।।

११९ वुद्धवोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागसजमे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पढमसमयवुद्धवोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागसजमे चेव, अपढमसमयवुद्धवोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागसजमे चेव ।

अहवा—चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागसजमे चेव, अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागसजमे चेव ।।

१२० केवलिखीणकसायवीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसजमे चेव, अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसजमे चेव ।।

१२१ सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसजमे चेव, अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसजमे चेव ।

अहवा—चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसजमे चेव, अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसजमे चेव ।।

१२२ अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसजमे चेव, अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसजमे चेव ।

अहवा—चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसजमे चेव, अचरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसजमे चेव ।।

जीव-णिकाय-पदं

१२३ दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता, त जहा—सुहुमा चेव, बायरा चेव ।।

१२४ [1]•दुविहा आउकाइया पण्णत्ता, त जहा—सुहुमा चेव, बायरा चेव ।।

१२५ दुविहा तेउकाइया पण्णत्ता, त जहा—सुहुमा चेव, बायरा चेव ।।

१२६ दुविहा वाउकाइया पण्णत्ता, त जहा—सुहुमा चेव, बायरा चेव° ।।

१२७ दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता, त जहा—सुहुमा चेव, बायरा चेव ।।

१२८ दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगा चेव, अपज्जत्तगा चेव ।।

१२९ [2]•दुविहा आउकाइया पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगा चेव, अपज्जत्तगा चेव ।।

१३० दुविहा तेउकाइया पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगा चेव, अपज्जत्तगा चेव ।।

१३१ दुविहा वाउकाइया पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगा चेव, अपज्जत्तगा चेव ।।

१३२ दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगा चेव, अपज्जत्तगा चेव° ।।

१३३ दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता, त जहा—परिणया चेव, अपरिणया चेव ।।

१३४ [3]•दुविहा आउकाइया पण्णत्ता, त जहा—परिणया चेव, अपरिणया चेव ।।

१३५ दुविहा तेउकाइया पण्णत्ता, त जहा—परिणया चेव, अपरिणया चेव ।।

१३६ दुविहा वाउकाइया पण्णत्ता, त जहा—परिणया चेव, अपरिणया चेव ।।

१३७ दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता, त जहा—परिणया चेव, अपरिणया चेव °।।

---

१ स० पा०—एव जाव दुविहा ।

२ स० पा०—एव जाव वणस्सइकाइया ।

३ स० पा०—एव जाव वणस्सइकाइया ।

दव्व-पदं

१३८ दुविहा दव्वा पण्णत्ता, तं जहा—परिणया चेव, अपरिणया चेव ॥

जीव-णिकाय-पद

१३९ दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता, तं जहा—गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव ॥
१४० [1]•दुविहा आउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव ॥
१४१ दुविहा तेउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव ॥
१४२ दुविहा वाउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव ॥
१४३ दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता, तं जहा—गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव °॥

दव्व-पद

१४४ दुविहा दव्वा पण्णत्ता, तं जहा—गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव ॥

जीव-णिकाय-पद

१४५ दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोगाढा चेव, परंपरोगाढा चेव ॥
१४६ •दुविहा आउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोगाढा चेव, परंपरोगाढा चेव ॥
१४७ दुविहा तेउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोगाढा चेव, परंपरोगाढा चेव ॥
१४८ दुविहा वाउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोगाढा चेव, परंपरोगाढा चेव ॥
१४९ दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोगाढा चेव, परंपरोगाढा चेव ॥

दव्व-पद

१५० दुविहा दव्वा पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोगाढा चेव, परंपरोगाढा चेव °॥
१५१ दुविहे काले पण्णत्ते, तं जहा—ओसप्पिणीकाले चेव, उस्सप्पिणीकाले[3] चेव ॥
१५२ दुविहे आगासे पण्णत्ते, तं जहा—लोगागासे चेव, अलोगागासे चेव ॥

---

१ सं० पा०—एवं जाव वणस्सइकाइया ।
२ सं० पा०—जाव दव्वा ।
३ उवस्सप्पिणी° (ख), ओस्सप्पिणी° (ग) ।

सरीर-पदं

१५३ णेरइयाणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरए कम्मए, बाहिरए वेउव्विए॥

१५४ [1]•देवाणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरए कम्मए, बाहिरए वेउव्विए॰॥

१५५ पुढविकाइयाणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरगे कम्मए, बाहिरगे ओरालिए जाव[2] वणस्सइकाइयाणं॥

१५६ बेइंदियाणं दो सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणितबद्धे बाहिरगे ओरालिए॥

१५७ [3]•तेइंदियाणं दो सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणितबद्धे बाहिरगे ओरालिए॥

१५८ चउरिंदियाणं दो सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणितबद्धे बाहिरगे ओरालिए॰॥

१५९ पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणियण्हारुछिराबद्धे बाहिरगे ओरालिए॥

१६० [4]•मणुस्साणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणियण्हारुछिराबद्धे बाहिरगे ओरालिए•॥

१६१ विग्गहगइसमावण्णगाणं णेरइयाणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—तेयए चेव, कम्मए चेव। णिरंतरं जाव[5] वेमाणियाणं॥

१६२ णेरइयाणं दोहिं ठाणेहिं सरीरुप्पत्ती सिया, तं जहा—रागेण चेव, दोसेण चेव जाव[6] वेमाणियाणं॥

१६३ णेरइयाणं दुट्ठाणणिव्वत्तिए सरीरगे पण्णत्ते, तं जहा—रागणिव्वत्तिए चेव, दोसणिव्वत्तिए चेव जाव[7] वेमाणियाणं॥

काय-पदं

१६४ दो काया पण्णत्ता, तं जहा—तसकाए चेव, थावरकाए चेव॥

१६५ तसकाए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—भवसिद्धिए चेव, अभवसिद्धिए चेव॥

१६६ [8]•थावरकाए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—भवसिद्धिए चेव, अभवसिद्धिए चेव॰॥

---

१ सं॰ पा॰—एवं देवाणं भाणियव्वं।
२ ठा॰ १।१५३-१५५।
३ सं॰ पा॰—जाव चउरिंदियाणं।
४ सं॰ पा॰—मणुस्साण वि एवं चेव।
५ ठा॰ १।१४२-१६३।
६. ठा॰ १।१४२-१६३।
७ ठा॰ १।१४२-१६३।
८. सं॰ पा॰—एवं थावरकाए वि।

दिसादुगे करणिज्ज-पद

१६७ दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पति णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा पव्वावित्तए—पाईण चेव, उदीण चेव ॥

१६८ [1]•दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पति णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा°—मुडावित्तए, सिक्खावित्तए, उवट्ठावित्तए, सभुजित्तए, सवासित्तए, सज्झायमुद्दिसित्तए, सज्झाय समुद्दिसित्तए, सज्झायमणुजाणित्तए, आलोइत्तए, पडिक्कमित्तए, णिदित्तए, गरहित्तए, विउट्टित्तए, विसोहित्तए, अकरणयाए अब्भुट्ठित्तए अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म पडिवज्जित्तए—•पाईण चेव, उदीण चेव °॥

१६९ दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पति णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा अपच्छिम-मारणतियसलेहणा-जूसणा-जूसियाण भत्तपाणपडियाइक्खिताण पाओवगताण काल अणवकखमाणाण विहरित्तए, त जहा—पाईण चेव, उदीण चेव ॥

बीओ उद्देसो

वेदणा-पद

१७० जे देवा उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा चार-ट्ठितिया[2] गतिरतिया गतिसमावण्णगा, तेसि ण देवाण सता समित जे पावे कम्मे कज्जति, तत्थगतावि एगतिया वेदण वेदेंति, अण्णत्थगतावि एगतिया वेदण वेदेति ॥

१७१ णेरइयाण सता समिय जे पावे कम्मे कज्जति, तत्थगतावि एगतिया वेदण वेदेंति, अण्णत्थगतावि एगतिया वेदण वेदेंति जाव[3] पचिदियतिरिक्खजोणियाण ॥

१७२ मणुस्साण सता समित जे पावे कम्मे कज्जति, इहगतावि एगतिया वेदण वेदेति, अण्णत्थगतावि एगतिया वेदण वेदेंति । मणुस्सवज्जा सेसा एक्कगमा ॥

गति-आगति-पद

१७३ णेरइया दुगतिया दुयागतिया पण्णत्ता, त जहा—णेरइए णेरइएसु उववज्जमाणे मणुस्सेहितो वा पचिदियतिरिक्खजोणिएहितो वा उववज्जेज्जा ।
से चेव ण से णेरइए णेरइयत्त विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा पचिदियतिरिक्ख-जोणियत्ताए वा गच्छेज्जा ॥

---

१ स० पा०—एव ।
२ ठितीया (क, ग) ।
३. ठा० १।१४२-१५६ ।

१७४ एव असुरकुमाराविं[1], णवर—से चेव ण से असुरकुमारे असुरकुमारत्त विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा तिरिक्खजोणियत्ताए वा गच्छेज्जा । एव—सव्वदेवा[2] ॥

१७५ पुढविकाइया दुगतिया दुयागतिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहितो वा णो पुढविकाइएहितो वा उववज्जेज्जा । से चेव ण से पुढविकाइए पुढविकाइयत्त विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा णो पुढविकाइयत्ताए वा गच्छेज्जा ॥

१७६ एव जाव[3] मणुस्सा ॥

दंडग-मग्गणा-पदं

१७७ दुविहा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—भवसिद्धिया चेव, अभवसिद्धिया चेव जाव[4] वेमाणिया ॥

१७८ दुविहा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—अणतरोववण्णगा चेव, परपरोववण्णगा चेव जाव[5] वेमाणिया ॥

१७९ दुविहा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव जाव[6] वेमाणिया ॥

१८० दुविहा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—पढमसमओववण्णगा चेव, अपढमसमओववण्णगा चेव जाव[7] वेमाणिया ॥

१८१ दुविहा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—आहारगा चेव, अणाहारगा चेव । एव जाव[8] वेमाणिया ॥

१८२ दुविहा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—उस्सासगा चेव, णोउस्सासगा चेव जाव[9] वेमाणिया ॥

१८३ दुविहा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—सइंदिया चेव, अणिंदिया चेव जाव[10] वेमाणिया ॥

१८४ दुविहा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगा चेव, अपज्जत्तगा चेव जाव[11] वेमाणिया ॥

१८५ दुविहा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—सण्णी चेव, असण्णी चेव । एव पचेदिया सव्वे विगलिंदियवज्जा जाव[12] वाणमतरा[13] ॥

१८६ दुविहा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—भासगा चेव, अभासगा चेव । एवमेगिंदियवज्जासव्वे[14] ॥

१८७ दुविहा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—सम्मद्दिट्ठिया चेव, मिच्छद्दिट्ठिया चेव । एगिंदियवज्जासव्वे[15] ॥

---

१. असुरकुमारणवि (क, ग) ।
२ ठा० १।१४३-१५१, १६२-१६४ ।
३ ठा० १।१५३-१६० ।
४-११. ठा० १।१४२-१६३ ।
१२ ठा० १।१४२-१५१, १६०, १६१ ।
१३ वेमाणिया (वृ), वाणवतरिया (वृपा) ।
१४,१५ ठा० १।१४२-१५१, १५७-१६४ ।

१८८ दुविहा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—परित्तससारिता चेव, अणतससारिता चेव जाव[1] वेमाणिया ॥

१८९ दुविहा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—सखेज्जकालसमयट्ठितिया[2] चेव, असखेज्ज-कालसमयट्ठितिया चेव। एव—पचेंदिया एगिंदियविगलिंदियवज्जा जाव[3] वाणमतरा ॥

१९० दुविहा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—सुलभबोधिया चेव, दुलभबोधिया चेव जाव[4] वेमाणिया ॥

१९१ दुविहा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—कण्हपक्खिया चेव, सुक्कपक्खिया चेव जाव[5] वेमाणिया ॥

१९२ दुविहा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—चरिमा चेव, अचरिमा चेव जाव[6] वेमाणिया ॥

आहोहि-णाण-दसण-पद

१९३ दोहिं ठाणेहिं आया अहेलोग जाणइ-पासइ, त जहा—समोहतेण चेव अप्पाणेण आया अहेलोग जाणइ-पासइ, असमोहतेण चेव अप्पाणेण आया अहेलोग जाणइ-पासइ।
आहोहि समोहतासमोहतेण[7] चेव अप्पाणेण आया अहेलोग जाणइ-पासइ ॥

१९४ [8]°दोहिं ठाणेहिं आया तिरियलोग जाणइ-पासइ, त जहा—समोहतेण चेव अप्पाणेण आया तिरियलोग जाणइ-पासइ, असमोहतेण चेव अप्पाणेण आया तिरियलोग जाणइ-पासइ।
आहोहि समोहतासमोहतेण चेव अप्पाणेण आया तिरियलोग जाणइ-पासइ ॥

१९५ दोहिं ठाणेहिं आया उड्ढलोग जाणइ-पासइ, त जहा—समोहतेण चेव अप्पाणेण आया उड्ढलोग जाणइ-पासइ, असमोहतेण चेव अप्पाणेण आया उड्ढलोग जाणइ-पासइ।
आहोहि समोहतासमोहतेण चेव अप्पाणेण आया उड्ढलोग जाणइ-पासइ ॥

१९६ दोहिं ठाणेहिं आया केवलकप्प लोग जाणइ-पासइ, त जहा—समोहतेण चेव अप्पाणेण आया केवलकप्प लोग जाणइ-पासइ, असमोहतेण चेव अप्पाणेण आया केवलकप्प लोग जाणइ-पासइ।

---

१ ठा० १।१४२-१६३।
२ सखेज्जकालठितीया (वृपा)।
३ ठा० १।१४२-१५१, १६०, १६१।
४-६ ठा० १।१४२-१६३।
७ समोहिता° (क)।
८ स० पा०—एव तिरियलोग उड्ढलोग केवल-कप्प लोग।

आहोहि समोहतासमोहतेण चेव अप्पाणेण आया केवलकप्प लोग जाणइ-पासइ° ॥

१९७ दोहि ठाणेहि आता अहेलोग जाणइ-पासइ, त जहा—विउव्वितेण चेव अप्पाणेण आता अहेलोग जाणइ-पासइ, अविउव्वितेण चेव अप्पाणेण आता अहेलोग जाणइ-पासइ।

आहोहि[1] विउव्वियाविउव्वितेण चेव अप्पाणेण आता अहेलोग जाणइ-पासइ ॥

१९८. [2]°दोहि ठाणेहि आता तिरियलोग जाणइ-पासइ, त जहा—विउव्वितेण चेव अप्पाणेण आता तिरियलोग जाणइ-पासइ, अविउव्वितेण चेव अप्पाणेण आता तिरियलोग जाणइ-पासइ ।

आहोहि विउव्वियाविउव्वितेण चेव अप्पाणेण आता तिरियलोग जाणइ-पासइ ॥

१९९ दोहि ठाणेहि आता उड्ढलोग जाणइ-पासइ, त जहा—विउव्वितेण चेव आता उड्ढलोग जाणइ-पासइ, अविउव्वितेण चेव अप्पाणेण आता उड्ढलोग जाणइ-पासइ ।

आहोहि विउव्वियाविउव्वितेण चेव अप्पाणेण आता उड्ढलोग जाणइ-पासइ ॥

२०० दोहि ठाणेहि आता केवलकप्प लोग जाणइ-पासइ, त जहा—विउव्वितेण चेव अप्पाणेण आता केवलकप्प लोग जाणइ-पासइ, अविउव्वितेण चेव अप्पाणेण आता केवलकप्प लोग जाणइ-पासइ ।

आहोहि विउव्वियाविउव्वितेण चेव अप्पाणेण आता केवलकप्प लोग जाणइ-पासइ° ॥

देसेण-सव्वेण-पदं

२०१ दोहि ठाणेहि आया सद्दाइ सुणेति, त जहा—देसेण वि आया सद्दाइ सुणेति, सव्वेणवि आया सद्दाइ सुणेति ॥

२०२ [3]°दोहि ठाणेहि आया रूवाइ पासइ, त जहा—देसेण वि आया रूवाइ पासइ, सव्वेणवि आया रूवाइ पासइ ॥

२०३ दोहि ठाणेहि आया गधाइ अग्घाति, त जहा—देसेण वि आया गधाइ अग्घाति, सव्वेणवि आया गधाइ अग्घाति ॥

२०४ दोहि ठाणेहि आया रसाइ आसादेति, त जहा—देसेण वि आया रसाइ आसादेति, सव्वेण वि आया रसाइ आसादेति ॥

---

१ अहो (क, ग) ।

२ स० पा०—एव तिरियलोग उड्ढलोग केवलकप्पं लोग ।

३ स० पा०—एव रूवाइ पासइ गधाइ अग्घाति रसाइं आसादेति फासाइ पडिसवेदेति ।

२०५ दोहिं ठाणेहिं आया फासाइ पडिसवेदेति, त जहा—देसेण वि आया फासाइ पडिसवेदेति, सव्वेण वि आया फासाइ पडिसवेदेति ° ।।

२०६ दोहिं ठाणेहिं आया ओभासति, त जहा—देसेणवि आया ओभासति, सव्वेणवि आया ओभासति ।।

२०७ एव—पभासति, विकुव्वति, परियारेति, भास[1]भासति, आहारेति, परिणामेति, वेदेति, णिज्जरेति ।।

२०८ दोहिं ठाणेहिं देवे सद्दाइ सुणेति, त जहा—देसेणवि देवे सद्दाइ सुणेति, सव्वेणवि देवे सद्दाइ सुणेति जाव[2] णिज्जरेति ।।

सरीर-पदं

२०९ मरुया देवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—'एगसरीरी चेव दुसरीरी'[3] चेव ।।

२१० एव किण्णरा किंपुरिसा गवव्वा णागकुमारा सुवण्णकुमारा अग्गिकुमारा वायुकुमारा ।।

२११ देवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—'एगसरीरी चेव, दुसरीरी'[4] चेव ।।

तइओ उद्देसो

सद्द-पदं

२१२ दुविहे सद्दे पण्णत्ते, त जहा—भासासद्दे चेव, णोभासासद्दे चेव ।।

२१३ भासासद्दे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—अक्खरसवद्धे चेव, णोअक्खरसवद्धे चेव ।।

२१४ णोभासासद्द दुविहे पण्णत्ते, त जहा—आउज्जसद्दे चेव, णोआउज्जसद्दे चेव ।।

२१५ आउज्जसद्दे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—तते चेव, वितते चेव ।।

२१६ तते दुविहे पण्णत्ते, त जहा—घणे चेव, सुसिरे[5] चेव ।।

२१७ [6]°वितते दुविहे पण्णत्ते, त जहा—घणे चेव, सुसिरे चेव ।। °

२१८ णोआउज्जसद्दे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—भूसणसद्दे चेव, णोभूसणसद्दे चेव ।।

२१९ णोभूसणसद्दे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—तालसद्दे चेव, लत्तियासद्दे चेव ।।

२२० दोहिं ठाणेहिं सद्दुप्पाते सिया, त जहा—साहण्णताण चेव पोग्गलाण सद्दुप्पाए सिया, भिज्जताण चेव पोग्गलाण सद्दुप्पाए सिया ।।

---

१ × (ख) ।

२. ठा० २।२०२-२०७ ।

३ एगसरीरिणो चेव दुसरीरि (क), एगसरीरे चेव विसरीरे (ख) ।

४. एगासरीरा चेव विसरीरा (क), एगसरीरे चेव विसरीरे (ख) ।

५ सुसरे (ख), गुसिरे (क्व) ।

६ स० पा०—एव विततेवि ।

पोग्गल-पदं

२२१ दोहिं ठाणेहिं पोग्गला साहण्णंति, तं जहा—सइं वा पोग्गला साहण्णंति, परेण वा पोग्गला साहण्णंति ।।

२२२ दोहिं ठाणेहिं पोग्गला भिज्जंति, तं जहा—सइं वा पोग्गला भिज्जंति, परेण वा पोग्गला भिज्जंति ।।

२२३ दोहिं ठाणेहिं पोग्गला परिपडंति[1], तं जहा—सइं वा पोग्गला परिपडंति, परेण वा पोग्गला परिपडंति[2] ।।

२२४ °[3]दोहिं ठाणेहिं पोग्गला परिसडंति, तं जहा सइं वा पोग्गला परिसडंति, परेण वा पोग्गला परिसडंति ।।

२२५ दोहिं ठाणेहिं पोग्गला विद्धंसंति, तं जहा—सइं वा पोग्गला विद्धंसंति, परेण वा पोग्गला विद्धंसंति ।।°

२२६ दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—भिण्णा चेव, अभिण्णा चेव ।।

२२७ दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—भेउरधम्मा चेव, णोभेउरधम्मा चेव ।।

२२८ दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—परमाणुपोग्गला चेव, णोपरमाणुपोग्गला चेव ।।

२२९ दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमा चेव, बायरा चेव ।।

२३० दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—बद्धपासपुट्ठा चेव, णोबद्धपासपुट्ठा चेव ।।

२३१ दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—परियादितच्चेव[4], अपरियादितच्चेव[5] ।।

२३२ दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—अत्ता[6] चेव, अणत्ता[7] चेव ।।

२३३ दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—इट्ठा चेव, अणिट्ठा चेव । °[8]कंता चेव, अकंता चेव । पिया चेव, अपिया चेव । मणुण्णा चेव, अमणुण्णा चेव । मणामा चेव, अमणामा चेव° ।।

इंदिय-विसय-पदं

२३४ दुविहा सद्दा पण्णत्ता, तं जहा—'अत्ता चेव, अणत्ता चेव'[9] । °[10]इट्ठा चेव, अणिट्ठा चेव । कंता चेव, अकंता चेव । पिया चेव, अपिया चेव । मणुण्णा चेव, अमणुण्णा चेव । मणामा चेव, अमणामा चेव° ।।

---

१ परिवडंति (क), परिसडंति (ग) ।
२ परिवाडिज्जंति (क), परिसाडिज्जंति (ग) ।
३ सं० पा०—एवं परिसडंति विद्धंसंति ।
४ परियादिइत° (क, ग) ।
५ अपरियादिइत° (क, ग) ।
६ अत्ते (क) ।
७ अणत्ते (क) ।
८ सं० पा०—एवं कंता पिया मणुण्णा मणामा ।
९ अत्तच्चेव अणत्तच्चेव (क) ।
१० सं० पा०—एवमिट्ठा जाव मणामा ।

२३५ दुविहा रूवा पण्णत्ता, तं जहा—'अत्ता चेव, अणत्ता चेव'[1]। [2]•इट्ठा चेव, अणिट्ठा चेव। कंता चेव, अकंता चेव। पिया चेव, अपिया चेव। मणुण्णा चेव, अमणुण्णा चेव। मणामा चेव, अमणामा चेव° ॥

२३६ [3]•दुविहा गंधा पण्णत्ता, तं जहा—अत्ता चेव, अणत्ता चेव। इट्ठा चेव, अणिट्ठा चेव। कंता चेव, अकंता चेव। पिया चेव, अपिया चेव। मणुण्णा चेव, अमणुण्णा चेव। मणामा चेव, अमणामा चेव ॥

२३७ दुविहा रसा पण्णत्ता, तं जहा—अत्ता चेव, अणत्ता चेव। इट्ठा चेव, अणिट्ठा चेव। कंता चेव, अकंता चेव। पिया चेव, अपिया चेव। मणुण्णा चेव, अमणुण्णा चेव। मणामा चेव, अमणामा चेव ॥

२३८ दुविहा फासा पण्णत्ता, तं जहा—अत्ता चेव, अणत्ता चेव। इट्ठा चेव, अणिट्ठा चेव। कंता चेव, अकंता चेव। पिया चेव, अपिया चेव। मणुण्णा चेव, अमणुण्णा चेव। मणामा चेव, अमणामा चेव° ॥

आयार-पदं

२३९ दुविहे आयारे पण्णत्ते, तं जहा—णाणायारे चेव, णोणाणायारे चेव ॥

२४० णोणाणायारे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दंसणायारे चेव, णोदंसणायारे चेव ॥

२४१. णोदंसणायारे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—चरित्तायारे चेव, णोचरित्तायारे चेव ॥

२४२ णोचरित्तायारे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—तवायारे चेव वीरियायारे चेव ॥

पडिमा-पदं

२४३. दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समाहिपडिमा चेव, उवहाणपडिमा चेव ॥

२४४ दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—विवेगपडिमा चेव, विउसग्गपडिमा चेव ॥

२४५ दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—'भद्दा चेव, सुभद्दा चेव'[4] ॥

२४६ दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—महाभद्दा[5] चेव, सव्वतोभद्दा[6] चेव ॥

२४७ दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खुड्डिया चेव मोयपडिमा, महल्लिया चेव मोयपडिमा ॥

२४८ दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—जवमज्झा चेव चंदपडिमा, वइरमज्झा चेव चंदपडिमा ॥

सामाइय-पदं

२४९ दुविहे सामाइए पण्णत्ते, तं जहा—अगारसामाइए चेव, अणागारसामाइए चेव ॥

---

१ अत्तच्चेव अणत्तच्चेव (क)।

२. सं० पा०—एवमिट्ठा जाव मणामा।

३. सं० पा०—एवं गंधा रसा फासा एवमिक्केक्के छ छ आलावगा भाणियव्वा।

४ भद्दे चेव सुभद्दे चेव (क, ग)।

५ °भद्दे (क, ग)।

६. °भद्दे (क, ग)।

जम्म-मरण-पद

२५० दोण्ह उववाए पण्णत्ते, त जहा—देवाण चेव, णेरइयाण चेव ।।
२५१ दोण्ह उव्वट्टणा पण्णत्ता, त जहा—णेरइयाण चेव, भवणवासीण चेव ।।
२५२ दोण्ह चयणे पण्णत्ते, त जहा—जोइसियाण चेव, वेमाणियाण चेव ।।
२५३ दोण्ह गब्भवक्कती पण्णत्ता, त जहा—मणुस्साण चेव, पचेंदियतिरिक्खजोणियाण चेव ।।

गब्भत्थ-पदं

२५४ दोण्ह गब्भत्थाण आहारे पण्णत्ते, त जहा—मणुस्साण चेव, पचेंदियतिरिक्खजोणियाण चेव ।।
२५५ दोण्ह गब्भत्थाण वुड्ढी पण्णत्ता, त जहा—मणुस्साण चेव, पचेंदियतिरिक्खजोणियाण चेव ।।
२५६ [1]°दोण्ह गब्भत्थाण°—णिवुड्ढी विगुव्वणा गतिपरियाए समुग्घाते कालसजोगे आयाती[2] मरणे °पण्णत्ते, त जहा—मणुस्साण चेव, पचेंदियतिरिक्खजोणियाण चेव° ।।
२५७ दोण्ह छविपव्वा[3] पण्णत्ता, त जहा—मणुस्साण चेव, पचिंदियतिरिक्खजोणियाण चेव ।।
२५८ दो सुक्कसोणितसभवा पण्णत्ता, त जहा—मणुस्सा चेव, पचिंदियतिरिक्खजोणिया चेव ।।

ठिति-पदं

२५९ दुविहा ठिती पण्णत्ता, त जहा—कायट्ठिती चेव, भवट्ठिती चेव ।।
२६० दोण्ह कायट्ठिती पण्णत्ता, त जहा—मणुस्साण चेव, पचिंदियतिरिक्खजोणियाण चेव ।।
२६१ दोण्ह भवट्ठिती पण्णत्ता, त जहा—देवाण चेव, णेरइयाण चेव ।।

आउय-पदं

२६२ दुविहे आउए पण्णत्ते, त जहा—अद्धाउए चेव, भवाउए चेव ।।
२६३ दोण्ह अद्धाउए पण्णत्ते, त जहा—मणुस्साण चेव, पचिंदियतिरिक्खजोणियाण चेव ।।
२६४ दोण्ह भवाउए पण्णत्ते, त जहा—देवाण चेव, णेरइयाण चेव ।।

---

१ स० पा०—एव ।
२ आयाइ (ग) ।
३ छविपव्वत्ति (क, ग), छवियत्त, छविपत्त (वृपा) ।

कम्म-पदं

२६५ दुविहे कम्मे पण्णत्ते, त जहा—पदेसकम्मे चेव, अणुभावकम्मे चेव ।।

२६६ दो अहाउय पालेति, त जहा—देवच्चेव[1], णेरइयच्चेव ।।

२६७ दोण्ह आउय-सवट्टए पण्णत्ते, त जहा—मणुस्साण चेव, पचेंदियतिरिक्ख-जोणियाण चेव ।।

खेत्त-पदं

२६८ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण दो वासा पण्णत्ता[2]—वहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्ण णातिवट्टति आयाम-विक्खभ[3]-सठाण-परिणाहेण, त जहा—भरहे चेव, एरवए चेव ।।

२६९ एवमेएणमभिलावेण[4]—हेमवते चेव, हेरण्णवए[5] चेव । हरिवासे चेव, रम्मयवासे चेव ।।

२७० जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण दो खेत्ता पण्णत्ता[6]—वहुसमतुल्ला अविसेस[7]•मणाणत्ता अण्णमण्ण णातिवट्टति आयाम-विक्खभ-सठाण-परिणाहेण, त जहा°—पुव्वविदेहे चेव, अवरविदेहे चेव ।।

२७१. जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण दो कुराओ पण्णत्ताओ—वहुसमतुल्लाओ जाव[8] देवकुरा चेव, उत्तरकुरा चेव ।

तत्थ ण दो महतिमहालया महादुमा पण्णत्ता—वहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्ण णाइवट्टति आयाम-विक्खभुच्चत्तोव्वेह-सठाण-परिणाहेण, त जहा—कूडसामली चेव, जवू चेव सुदसणा ।।

तत्थ ण दो देवा महिड्ढिया[10] •महज्जुइया महाणुभागा महायसा महावला° महासोक्खा[11] पलिओवमट्ठितीया परिवसति, त जहा—गरुले चेव वेणुदेवे, अणाढिते चेव जवुद्दीवाहिवती ।।

पव्वय-पदं

२७२ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण दो वासहरपव्वया पण्णत्ता—

---

१. देवे चेव (ख, ग) ।

२. पण्णत्ता त (क,ख,ग), प्रतिषु 'तजहा' द्विवार विद्यते, किन्तु 'पण्णत्ता' शब्दस्यानन्तर 'तजहा' पाठो न युज्यते, तेनास्माभिरसौ पाठान्तरे स्वीकृत । अय क्रमोऽनेकेषु सूत्रेषु अनुवर्तते। प्रतिषु मध्ये-मध्ये क्वचित् 'तजहा' पाठो नास्त्यपि ।

३. विक्खभेण (ख) ।

४ °लावेण णेयव्व (क) ।

५ एरन्नवते (क, ग) ।

६ पण्णत्ता त (क, ख, ग) ।

७ स० पा०—अविसेस जाव पुव्वविदेहे ।

८ ठा० २।२६८ ।

१० स० पा०—महिड्ढिया जाव महासोक्खा ।

११ महेसक्खा (वृपा) ।

बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्णं णातिवट्टंति आयाम-विक्खंभुच्च-त्तोव्वेह-संठाण-परिणाहेणं, तं जहा—चुल्लहिमवंते चेव, सिहरिच्चेव ॥

२७३ एवं—महाहिमवंते चेव, रूप्पिच्चेव । एवं—णिसढे चेव, णीलवंते चेव ॥

२७४ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं हेमवत-हेरण्णवतेसु वासेसु दो वट्टवेयड्ढपव्वता पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता[1] °अण्णमण्णं णातिवट्टंति आयाम-विक्खंभुच्चत्तोव्वेह-संठाण-परिणाहेणं, तं जहा°—सद्दावाती[2] चेव, वियडावाती[3] चेव ।

तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया जाव[4] पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—साती चेव, पभासे चेव ॥

२७५ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं हरिवास-रम्मएसु[5] वासेसु दो वट्टवेयड्ढपव्वया पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[6] तं जहा—गंधावाती[7] चेव, मालवंतपरियाए चेव ।

तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया[8] जाव[9] पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—अरुणे चेव, पउमे चेव ॥

२७६ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं देवकुराए कुराए पुव्वावरे पासे, एत्थ णं आस-क्खंधग-सरिसा अद्धचंद[10]-संठाण-संठिया दो वक्खारपव्वया पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[11] तं जहा—सोमणसे चेव, विज्जुप्पभे चेव ॥

२७७ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं उत्तरकुराए कुराए पुव्वावरे पासे, एत्थ णं आस-क्खंधग-सरिसा अद्धचंद-संठाण-संठिया दो वक्खारपव्वया पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[12] तं जहा—गंधमायणे चेव, मालवंते चेव ॥

२७८ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं दो दीहवेयड्ढपव्वया पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[13] तं जहा—भारहे चेव दीहवेयड्ढे, एरवते[14] चेव दीहवेयड्ढे ॥

गुहा-पद

२७९ भारहए णं दीहवेयड्ढे दो गुहाओ पण्णत्ताओ—बहुसमतुल्लाओ अविसेसमणा-

---

१ सं० पा०—अविसेसमणाणत्ता जाव सद्दावाती ।

२ सद्दावती (क, ख, ग), द्रष्टव्य ठा० ४।३०७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

३ वियडावती (क, ख, ग) ।

४ ठा० २।२७१ ।

५ हरिवरिसरम्मतेसु (क, ग) ।

६ ठा० २।२७२ ।

७ गंधावती (क, ख, ग), द्रष्टव्य ठा० ४।३०७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

८ महिड्ढिया चेव (क, ख, ग) ।

९ ठा० २।२७१ ।

१० अवद्धचंद (वृ), अद्धचंद (वृपा) ।

११-१३ ठा० २।२७२ ।

१४ एरावते (क, ग) ।

णत्ताओ अण्णमण्ण णातिवट्टति आयाम-विक्खभुच्चत्त-सठाण-परिणाहेण, त जहा— तिमिसगुहा चेव, खडगप्पवायगुहा चेव ।
तत्थ ण दो देवा महिड्डिया जाव[1] पलिओवमट्ठितीया परिवसति, त जहा— कयमालए चेव, णट्टमालए चेव ॥

२८० एरवए[2] ण दीहवेयड्ढे दो गुहाओ पण्णत्ताओ जाव[3] त जहा—कयमालए चेव, णट्टमालए चेव ॥

कूड-पद

२८१ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण चुल्लहिमवते वासहरपव्वए दो कूडा पण्णत्ता—वहुसमतुल्ला जाव[4] विक्खभुच्चत्त-सठाण-परिणाहेण, त जहा— चुल्लहिमवतकूडे चेव, वेसमणकूडे चेव ॥

२८२ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण महाहिमवते वासहरपव्वए दो कूडा पण्णत्ता—वहुसमतुल्ला जाव[5] त जहा—महाहिमवतकूडे चेव, वेरुलियकूडे चेव ॥

२८३ एव—णिसढे वासहरपव्वए दो कूडा पण्णत्ता—वहुसमतुल्ला जाव[6] त जहा— णिसढकूडे चेव, रुयगप्पभे[7] चेव ॥

२८४ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण णीलवते वासहरपव्वए दो कूडा पण्णत्ता—वहुसमतुल्ला जाव[8] त जहा—णीलवतकूडे चेव, उवदसणकूडे चेव ॥

२८५ एव—रुप्पिमि वासहरपव्वए दो कूडा पण्णत्ता—वहुसमतुल्ला जाव[9] त जहा— रुप्पिकूडे चेव, मणिकचणकूडे चेव ॥

२८६ एव—सिहरिमि वासहरपव्वते दो कूडा पण्णत्ता—वहुसमतुल्ला जाव[10] त जहा—सिहरिकूडे चेव, तिगिछिकूडे[11] चेव ॥

महादह-पदं

२८७ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण चुल्लहिमवत-सिहरीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा पण्णत्ता—वहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्ण णातिवट्टति आयाम-विक्खभ-उव्वेह-सठाण-परिणाहेण, त जहा—पउमद्दहे चेव, पोंडरीयद्दहे चेव ।

---

१. ठा० २।२७१ ।
२ एरावते (क, ग) ।
३ ठा० २।२७६ ।
४. ठा० २।२६८ ।
५,६ ठा० २।२८१ ।
७. रुयगकूडे (ख) ।
८-१० ठा० २।२८१ ।
११ तेगिंछ० (क), तिगिच्छि० (ख) ।

तत्थ ण दो देवयाओ महिड्ढियाओ जाव[1] पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसति त जहा—मिरी चेव, लच्छी चेव ।।

२८८ एव—महाहिमवत-रुप्पीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा पण्णत्ता—वहुसमतुल्ला जाव[2] त जहा—महापउमद्दहे चेव, महापोडरीयद्दहे चेव ।
तत्थ ण दो देवयाओ[3] हिरिच्चेव, वुद्धिच्चेव ।।

२८९. एव—णिसढ-णीलवतेसु[4] तिगिछद्दहे चेव, केसरिद्दहे चेव ।
तत्थ ण दो देवताओ[5] घिती चेव, कित्ती चेव ।।

महाणदी-पदं

२९० जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण महाहिमवताओ वासहरपव्वयाओ महापउमद्दहाओ दहाओ दो महाणईओ पवहति, त जहा—रोहियच्चेव, हरिकतच्चेव[6] ।।

२९१ एव—णिसढाओ[7] वासहरपव्वयाओ तिगिछिद्दहाओ दहाओ दो महाणईओ पवहति, त जहा—हरिच्चेव, सीतोदच्चेव[8] ।।

२९२ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण णीलवताओ वासहरपव्वताओ केसरिद्दहाओ दहाओ दो महाणईओ पवहति, त जहा—सीता चेव, णारिकता चेव ।।

२९३ एव—रुप्पीओ वासहरपव्वताओ महापोडरीयद्दहाओ दहाओ दो महाणईओ पवहति, त जहा—णरकता चेव, रुप्पकूला चेव ।।

पवायद्दह-पद

२९४ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण भरहे वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता—वहुसमतुल्ला[9], त जहा—गगप्पवायद्दहे चेव, सिधुप्पवायद्दहे चेव ।।

२९५ एव—हेमवए वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता—वहुसमतुल्ला[10], त जहा—रोहियप्पवायद्दहे चेव, रोहियसप्पवायद्दहे चेव ।।

२९६ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण हरिवासे वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता—वहुसमतुल्ला[11], त जहा—हरिपवायद्दहे चेव, हरिकतप्पवायद्दहे चेव ।।

२९७ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण महाविदेहे वासे दो पवायद्दहा

---

१ ठा० २।२७१ ।
२ ठा० २।२८७ ।
३-५ पू०—ठा० २।२८७ ।
६. हरिकता चेव (ख) ।
७ निसिढाओ (क) ।
८ सीतोत° (क, ख, ग) ।
९-११ पू०—ठा० २।२८७ ।

पण्णत्ता—वहुसमतुल्ला जाव[1] त जहा—सीतप्पवायद्दहे चेव, सीतोदप्पवायद्दहे चेव ॥

२९८ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण रम्मए वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता—वहुसमतुल्ला जाव[2] त जहा—णरकतप्पवायद्दहे चेव, णारिकतप्पवायद्दहे चेव ॥

२९९ एव—हेरण्णवते वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता—वहुसमतुल्ला जाव[3] त जहा—सुवण्णकूलप्पवायद्दहे चेव, रुप्पकूलप्पवायद्दहे चेव ॥

३०० जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण एरवए वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता—वहुसमतुल्ला जाव[4] त जहा— रत्तप्पवायद्दहे चेव, रत्तावईपवायद्दहे चेव ॥

महाणदी-पदं

३०१ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण भरहे वासे दो महाणईओ पण्णत्ताओ—वहुसमतुल्लाओ जाव[5] त जहा—गगा चेव, सिंधू चेव ॥

३०२ एव—जहा पवातद्दहा, एव णईओ[6] भाणियव्वाओ जाव[7] एरवए[8] वासे दो महाणईओ पण्णत्ताओ—वहुसमतुल्लाओ जाव[9] त जहा—रत्ता[10] चेव, रत्तावती चेव ॥

कालचक्क-पद

३०३ जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमदूसमाए समाए दो सागरोवमकोडाकोडीओ काले होत्था ॥

३०४ [11]°जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु इमीसे ओसप्पिणीए सुसमदूसमाए समाए दो सागरोवमकोडाकोडीओ काले पण्णत्ते ॥

३०५ जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु आगमिस्साए[12] उस्सप्पिणीए सुसमदूसमाए समाए दो सागरोवमकोडाकोडीओ काले° भविस्सति ॥

३०६ जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए मणुया दो गाउयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था, दोण्णि य पलिओवमाइ परमाउ पालइत्था ॥

३०७ एवमिमीसे ओसप्पिणीए जाव[13] पालइत्था ॥

३०८ एवमागमेस्साए उस्सप्पिणीए जाव[14] पालयिस्सति ॥

१-५ ठा० २।२८७ ।
६ नईओ वि (ख) ।
७ ठा० २।२९५-२९६ ।
८ एरावए (क, ग) ।
९ ठा० २।२८७ ।
१० रत्तिवति (क, ग) ।
११ स० पा०—एवमिमीसे ओसप्पिणीए जाव पण्णत्ते एव आगमिस्साए उस्सप्पिणीए जाव भविस्सति ।
१२ आगामेसाए (क) ।
१३,१४ ठा० २।३०६ ।

सलागा-पुरिस-वस-पद

३०९ जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु 'एगसमये एगजुगे'[1] दो अरहतवसा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा ॥

३१० [2]°जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो चक्कवट्टिवसा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा ॥

३११ जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो दसारवसा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा °॥

सलागा-पुरिस-पद

३१२ जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो अरहता[3] उप्पज्जिसु वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा ॥

३१३ [4]°जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो चक्कवट्टी उप्पज्जिसु वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा ॥

३१४ जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो वलदेवा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा ॥

३१५ जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो वासुदेवा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जति वा° उप्पज्जिस्सति वा ॥

कालाणुभव-पद

३१६ जवुद्दीवे दीवे दोसु कुरासु मणुया सया 'सुसमसुसममुत्तम इड्ढि'[5] पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरति, त जहा देवकुराए चेव, उत्तरकुराए चेव ॥

३१७ जवुद्दीवे दीवे दोसु[6] वासेसु मणुया सया सुसममुत्तम इड्ढि पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरति, त जहा—हरिवासे चेव, रम्मगवासे चेव ॥

३१८ जवुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया सया सुसमदूसममुत्तममिड्ढि पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरति, त जहा—हेमवए चेव, हेरण्णवए[7] चेव ॥

३१९ जवुद्दीवे दीवे दासु खेत्तेसु मणुया सया दूसमसुसममुत्तममिड्ढि पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरन्ति, त जहा—पुव्वविदेहे चेव, अवरविदेहे चेव ॥

३२० जवुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया छव्विहपि काल पच्चणुभवमाणा विहरति, त जहा—भरहे चेव, एरवते चेव ॥

---

१ एगजुगे एगसमये (वृ), एगसमये एगजुगे (वृपा)।

२ स० पा०—एव चक्कवट्टिवसा दसारवसा।

३ अरिहत (ख)।

४ स० पा०—एव चक्कवट्टी एव वलदेवा एव वासुदेवा जाव उप्पज्जिस्सति।

५ °मुत्तमिड्ढि (क), °मुत्तममिड्ढि (ग)।

६ दोसु तत्थ (क)।

७ एरण्णवए (क, ख, ग)।

चद-सूर-पदं

३२१. जवुद्दीवे दीवे—दो चदा पभासिसु वा पभासति वा पभासिस्सति वा ॥
३२२ दो सूरिआ तविसु[1] वा तवति वा तविस्सति[2] वा ॥

णक्खत्त-पदं

३२३ दो कित्तियाओ, दो रोहिणीओ, दो मगसिराओ[3], दो अद्दाओ[4], [5]दो पुणव्वसू, दो पूसा, दो अस्सलेसाओ, दो महाओ, दो पुव्वाफग्गुणीओ, दो उत्तराफग्गुणीओ, दो हत्था, दो चित्ताओ, दो साईओ, दो विसाहाओ, दो अणुराहाओ, दो जेट्ठाओ, दो मूला, दो पुव्वासाढाओ, दो उत्तरासाढाओ, दो अभिईओ, दो सवणा, दो धणिट्ठाओ, दो सयभिसया, दो पुव्वाभद्दवयाओ, दो उत्तराभद्दवयाओ, दो रेवतीओ दो अस्सिणीओ°, दो भरणीओ, [जोय जोएसु वा जोएति वा जोइस्सति वा[5] ?] ॥

णक्खत्तदेव-पद

३२४ [6]दो अग्गी, दो पयावती, दो सोमा, दो रुद्दा, दो अदिती[7], दो बहस्सती, दो सप्पा, दो पिती, दो भगा, दो अज्जमा, दो सविता, दो तट्ठा, दो वाऊ, दो इदग्गी, दो मित्ता, दो इदा, दो णिरती, दो आऊ, दो विस्सा, दो बम्हा[8], दो विण्हू, दो वसू, दो वरुणा, दो अया, दो विविद्धी, दो पुस्सा, दो अस्सा, दो यमा ॥

---

१ तवइसु (क, ख), तवयसु (ग)।

२ तवतिस्सति (क, ख, ग)।

३ मग्गसिरा (क, ख)।

४ स० पा०—दो अद्दाओ एव भाणियव्व। सगहणी गाहा—

कत्तिया रोहिणि मगसिर,
अद्दा य पुणव्वसू अ पूसो य।
तत्तोऽवि अस्सलेसा,
महा य दो फग्गुणीओ य ॥१॥
हत्थो चित्ता साई,
विसाहा तह य होंति अणुराहा।
जेट्ठा मूलो पुव्वाऽऽसाढा,
तह उत्तरा चेव ॥२॥
अभिई सवणे धणिट्ठा,
सयभिसया दो य होंति भद्दवया।
रेवति अस्सिणि भरणी,
णेयव्वा आणुपुव्वीए ॥३॥

एव गाहाणुसारेण णेयव्व जाव दो भरणीओ।

५ असौ पाठ प्रस्तुतसूत्रे साक्षाल्लिखितो नास्ति, किन्तु चन्द्रप्रज्ञप्ति [पाहुड १९] पाठानुसारेणासौ युज्यते। पाठसक्षेपपद्धतौ नास्य क्रियापद लिखितमिति प्रतीयते।

६ अत्र नक्षत्रदेवशब्दस्य साक्षादुल्लेखो नास्ति। असौ च चन्द्रप्रज्ञप्तौ [पाहुड १० पाहुडपाहुड १२], जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ [वक्षस्कार ७] च लभ्यते।

७ अद्दिती (क, ग)।

८ बभ (अ० सू० ३४२)।

महग्गह-पदं

३२५ '[1]दो इंगालगा, दो वियालगा, दो लोहितक्खा, दो सणिच्चरा, दो आहुणिया, दो पाहुणिया, दो कणा, दो कणगा, दो कणकणगा, दो कणगविताणगा[2], दो कणगसताणगा, दो सोमा, दो सहिया, दो आसासणा, दो कज्जोवगा, दो कव्वडगा, दो अयकरगा[3], दो दुदुभगा, दो सखा, दो सखवण्णा, दो सखवण्णाभा, दो कसा, दो कसवण्णा, दो कसवण्णाभा, दो 'रुप्पी, दो रुप्पाभासा[4]', दो णीला, दो णीलोभासा[5], दो भासा, दो भासरासी, दो तिला, दो तिलपुप्फवण्णा, दो दगा, दो दगपचवण्णा, दो काका, दो कक्कधा[6], दो इदग्गी, दो धूमकेऊ, दो हरी, दो पिंगला, दो बुद्धा, दो सुक्का, दो वहस्सती, दो राहू, दो अगत्थी, दो माणवगा, दो कासा[7], दो फासा, दो धुरा[8], दो पमुहा, दो विगडा, दो विसधी, दो णियल्ला, दो पइल्ला, दो जडियाइलगा[9], दो अरुणा, दो अग्गिल्ला, दो काला, दो महाकालगा, दो सोत्थिया, दो सोवत्थिया, दो वद्धमाणगा[10], दो पलवा, दो णिच्चालोगा, दो णिच्चुज्जोता, दो सयपभा, दो ओभासा, दो सेयकरा, दो खेमकरा, दो आभकरा, दो पभकरा, दो अपराजिता, दो अरया, दो असोगा, दो विगतसोगा, दो विमला, 'दो वितता, दो वितत्था'[11], दो विसाला, दो साला, दो सुव्वता, दो अणियट्टी, दो एगजडी, दो दुजडी, दो करकरिगा, दो रायग्गला, दो पुप्फकेतू, दो भावकेऊ, [चार चरिंसु वा चरति वा चरिस्सति वा[12] ?] ॥

जंबुद्दीव-वेइआ-पदं

३२६ जबुद्दीवस्स ण दीवस्स वेइया दो गाउयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥

---

१ अङ्गारकादयोऽष्टाशीतिर्ग्रहा सूत्रसिद्धा, केवलमस्मदृष्टपुस्तकेपु केपुचिदेव यथोक्तसख्या सवदतीति सूर्यप्रज्ञप्त्यनुसारेणासाविह सवादनीया (वृत्ति पत्र ७४) ।

२ स्थानागवृत्तौ उद्धृतसूर्यप्रज्ञप्ति (पाहुड २०) पाठे किञ्चिद् भेदो दृश्यते—
कणवियाणए कणसताणए णीले णीलोभासे रुप्पी रुप्पोभासे ।

३. अतिकरगा (क, ग), अतकरगा (ख) ।

४ रुप्पा दो रुप्पो० (ख) ।

५ नीला० (क, ग) ।

६ क्काकधा (ख) ।

७ कसा (क, ग) ।

८ मधुरा (ग) ।

९ जडियाइला (क, ग) ।

१० वद्धमाणगा दो पूसमाणगा दो अकुसा (ग) ।

११ दो वितत्ता दो वितत्था (क), दो विमुहा दो वितत्ता (ग) ।

१२ असौ पाठ प्रस्तुतसूत्रे साक्षाल्लिखितो नास्ति, किन्तु चन्द्रप्रज्ञप्ति (पाहुड १९) पाठानुसारेणासौ युज्यते । पाठसक्षेपपद्धतौ नास्य क्रियापद लिखितमिति प्रतीयते ।

लवण-समुद्द-पद

३२७ लवणे ण समुद्दे दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते ॥

३२८ लवणस्स ण समुद्दस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

धायइसड-पद

३२९ धायइसडे दीवे पुरत्थिमद्धे ण मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण दो वासा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[1] त जहा—भरहे चेव, एरवए चेव ॥

३३० एव—जहा जंबुद्दीवे तहा एत्थवि भाणियव्वं जाव[2] दोसु वासेसु मणुया छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति, त जहा—भरहे चेव, एरवए चेव, णवर—कूडसामली चेव, धायईरुक्खे[3] चेव । देवा—गरुले चेव वेणुदेवे, सुदंसणे चेव ॥

३३१ धायइसडे[4] दीवे पच्चत्थिमद्धे ण मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण दो वासा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[5] त जहा—भरहे चेव, एरवए चेव ॥

३३२ एव—जहा जंबुद्दीवे तहा एत्थवि भाणियव्वं जाव[6] छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति, त जहा—भरहे चेव, एरवए चेव, णवर—कूडसामली चेव, महाधायईरुक्खे[7] चेव । देवा—गरुले चेव वेणुदेवे, पियदंसणे चेव ॥

३३३ धायइसडे ण दीवे दो भरहाइं, दो एरवयाइं, दो हेमवयाइं, दो हेरण्णवयाइं, दो हरिवासाइं, दो रम्मगवासाइं, दो पुव्वविदेहाइं, दो अवरविदेहाइं, दो देवकुराओ, दो देवकुरुमहद्दुमा, दो देवकुरुमहद्दुमवासी देवा, दो उत्तरकुराओ, दो उत्तरकुरुमहद्दुमा, दो उत्तरकुरुमहद्दुमवासी देवा ॥

३३४ दो चुल्लहिमवंता, दो महाहिमवंता, दो णिसढा, दो णीलवंता, दो रुप्पी, दो सिहरी ॥

३३५ दो सद्दावाती, दो सद्दावातिवासी साती देवा, दो वियडावाती, दो वियडावातिवासी पभासा देवा, दो गंधावाती[8], दो गंधावातिवासी अरुणा देवा, दो मालवंतपरियागा, दो मालवंतपरियागवासी पउमा देवा ॥

३३६ दो मालवंता, दो चित्तकूडा, दो पम्हकूडा, दो णलिणकूडा, दो एगसेला, दो तिकूडा, दो वेसमणकूडा, दो अंजणा, दो मातंजणा, दो सोमणसा,

---

१ ठा० २।२६८ ।
२ ठा० २।२६९-३२० ।
३. धाती° (क, ख, ग) ।
४ धातती° (क, ख, ग) ।
५ ठा० २।२६८ ।
६ ठा० २।२६९-३२० ।
७ महाधायती° (क, ख, ग) ।
८ गंधावती (क, ख, ग), द्रष्टव्य ठा० ४।३०७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

दो विज्जुप्पभा, दो अंकावती, दो पम्हावती, दो आसीविसा, दो सुहावहा, दो चंदपव्वता, दो सूरपव्वता, दो णागपव्वता, दो देवपव्वता, दो गंधमायणा, दो उसुगारपव्वया, दो चुल्लहिमवंतकूडा, दो वेसमणकूडा, दो महाहिमवंतकूडा, दो वेरुलियकूडा, दो णिसढकूडा, दो रुयगकूडा, दो णीलवंतकूडा, दो उवदंसणकूडा, दो रुप्पिकूडा, दो मणिकंचणकूडा, दो सिहरिकूडा, दो तिगिंछिकूडा ।।

३३७ दो पउमद्दहा, दो पउमद्दहवासिणीओ सिरीओ देवीओ, दो महापउमद्दहा, दो महापउमद्दहवासिणीओ हिरीओ देवीओ, एवं जाव[1] दो पुंडरीयद्दहा, दो पोंडरीयद्दहवासिणीओ लच्छीओ देवीओ ।।

३३८ दो गंगप्पवायद्दहा जाव[2] दो रत्तावतीपवातद्दहा ।।

३३९ दो रोहियाओ[3] जाव[4] दो रुप्पकूलाओ, दो गाहवतीओ[5], दो दहवतीओ, दो पंकवतीओ[6], दो तत्तजलाओ, दो मत्तजलाओ, दो उम्मत्तजलाओ, दो खीरोयाओ[7], दो सीहसोताओ[8], दो अंतोवाहिणीओ, दो उम्मिमालिणीओ[9], 'दो फेणमालिणीओ, गंभीरमालिणीओ'[10] ।।

३४० दो कच्छा, दो सुकच्छा, दो महाकच्छा, दो कच्छावती, दो आवत्ता, दो मंगलवत्ता, दो पुक्खला, दो पुक्खलावई, दो वच्छा, दो सुवच्छा, दो महावच्छा, दो वच्छगावती, दो रम्मा, दो रम्मगा, दो रमणिज्जा, दो मंगलावती, दो पम्हा, दो सुपम्हा, दो महपम्हा[11], दो पम्हगावती, दो संखा, दो णलिणा, दो कुमुया, दो सलिलावती, दो वप्पा, दो सुवप्पा, दो महावप्पा, दो वप्पगावती, दो वग्गू, दो सुवग्गू, दो गंधिला, दो गंधिलावती ।।

३४१ दो खेमाओ, दो खेमपुरीओ, दो रिट्ठाओ, दो रिट्ठपुरीओ, दो खग्गीओ, दो मंजूसाओ, दो ओसधीओ[12], दो पोंडरिगिणीओ[13] दो सुसीमाओ, दो कुंडलाओ, दो अपराजियाओ, दो पभंकराओ, दो अंकावईओ, दो पम्हावईओ,

---

१ ठा० २।२८७-२८९ ।

२ ठा० २।२९४-३०० ।

३ रोहियंसाओ (ग), 'दो रोहियाओ' इत्यादौ नद्यधिकारे गङ्गादीनां सदपि द्वित्वं नोक्तं, जम्बूद्वीपप्रकरणोक्तस्य — "महाहिमवंताओ वासहरपव्वयाओ महापउमद्दहाओ दो महानदीओ पवहंति" इत्यादिसूत्रक्रमस्याश्रयणात्, तत्र हि रोहिदादय एवाष्टौ श्रूयन्त इति(वृ) ।

४ ठा० २।२९०-२९३ ।

५ गंधावतीओ (क, ग) ।

६ वेगवती (वृपा) ।

७ खारोआओ (क, ग, वृ), खीरोदाओ (वृपा) ।

८ सीयसोताओ (वृपा) ।

९ उमिणमा० (ख) ।

१० दो गंभीरमालिणीओ, दो फेणमालिणीओ (वृपा) ।

११ महा० (क, ग) ।

१२ उसुहीओ (ख) ।

१३. पोंडरि० (ख) ।

दो सुभाओ, दो रयणसचयाओ, दो आसपुराओ, दो सीहपुराओ, दो महापुराओ, दो विजयपुराओ, दो अवराजिताओ, दो अवराओ[1], दो असोयाओ, दो विगयसोगाओ, दो विजयाओ, दो वेजयंतीओ, दो जयंतीओ, दो अपराजियाओ, दो चक्कपुराओ, दो खग्गपुराओ, दो अवज्झाओ, दो अउज्झाओ ॥

३४२ दो भद्दसालवणा, दो णंदणवणा, दो सोमणसवणा, दो पंडगवणाइं[2] ॥

३४३ दो पंडुकंबलसिलाओ, दो अतिपंडुकंबलसिलाओ, दो रत्तकंबलसिलाओ, दो अइरत्तकंबलसिलाओ ॥

३४४ दो मंदरा, दो मंदरचूलिआओ ॥

३४५ धायइसंडस्स णं दीवस्स वेदिया दो गाउयाइं उड्ढमुच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

३४६ कालोदस्स णं समुद्दस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

पुक्खरवर-पद

३४७ पुक्खरवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव[3] तं जहा—भरहे चेव, एरवए चेव ॥

३४८. तहेव जाव[4] दो कुराओ पण्णत्ताओ—देवकुरा चेव, उत्तरकुरा चेव ।
तत्थ णं दो महतिमहालया महद्दुमा पण्णत्ता, तं जहा—कूडसामली चेव, पउमरुक्खे चेव । देवा—गरुले चेव वेणुदेवे, पउमे चेव जाव[5] छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥

३४९ पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता । तहेव[6] णाणत्तं—कूडसामली चेव, महापउमरुक्खे चेव । देवा—गरुले चेव वेणुदेवे, पुंडरीए चेव ॥

३५० पुक्खरवरदीवड्ढे णं दीवे दो भरहाइं, दो एरवयाइं जाव[7] दो मंदरा, दो मंदरचूलियाओ[8] ॥

वेदिका-पदं

३५१ पुक्खरवरस्स णं दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढमुच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

३५२ सव्वेसिंपि णं दीवसमुद्दाणं वेदियाओ दो गाउयाइं उड्ढमुच्चत्तेणं पण्णत्ताओ ॥

इंद-पदं

३५३ दो असुरकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—चमरे चेव, बली चेव ॥

---

१ अवरयाओ (क, ग), अवयाओ (ख) ।
२ पडुगवणाइं (ख) ।
३ ठा० २।२६८ ।
४ ठा० २।२६९-२७१ ।
५ ठा० २।२७२-३२० ।
६. पू०—ठा० २।२६८ ३२० ।
७. ठा० २।३३३-३४३ ।
८. °चूलियाइं (क) ।

३५४ दो णागकुमारिंदा पण्णत्ता, त जहा—धरणे चेव, भूयाणदे चेव ।।
३५५ दो सुवण्णकुमारिंदा पण्णत्ता, त जहा—वेणुदेवे चेव, वेणुदाली चेव ।।
३५६ दो विज्जुकुमारिंदा पण्णत्ता, त जहा—हरिच्चेव, हरिस्सहे चेव ।।
३५७ दो अग्गिकुमारिंदा पण्णत्ता, त जहा—अग्गिसिहे चेव, अग्गिमाणवे चेव ।।
३५८ दो दीवकुमारिंदा पण्णत्ता, त जहा—पुण्णे चेव, विसिट्ठे[1] चेव ।।
३५९ दो उदहिकुमारिंदा पण्णत्ता, त जहा—जलकते चेव, जलप्पभे चेव ।।
३६० दो दिसाकुमारिंदा पण्णत्ता, त जहा—अमियगती चेव, अमितवाहणे चेव ।।
३६१ दो वायुकुमारिंदा[2] पण्णत्ता, त जहा—वेलवे चेव, पभजणे चेव ।।
३६२ दो थणियकुमारिंदा पण्णत्ता, त जहा—घोसे चेव, महाघोसे चेव ।।
३६३ दो पिसाइदा पण्णत्ता, त जहा—काले चेव, महाकाले चेव ।।
३६४ दो भूइदा पण्णत्ता, त जहा—सुरूवे चेव, पडिरूवे चेव ।।
३६५ दो जक्खिदा पण्णत्ता, त जहा—पुण्णभद्दे चेव, माणिभद्दे चेव ।।
३६६ दो रक्खसिदा पण्णत्ता, त जहा—भीमे चेव, महाभीमे चेव ।।
३६७ दो किण्णरिंदा पण्णत्ता, त जहा—किण्णरे चेव, किंपुरिसे चेव ।।
३६८ दो किंपुरिसिंदा पण्णत्ता, त जहा—सप्पुरिसे चेव, महापुरिसे चेव ।।
३६९ दो महोरगिंदा पण्णत्ता, त जहा—अतिकाए चेव, महाकाए चेव ।।
३७० दो गधव्विदा पण्णत्ता, त जहा—गीतरती चेव, गीयजसे चेव ।।
३७१ दो अणपण्णिदा पण्णत्ता, त जहा—सण्णिहिए चेव, सामण्णे[3] चेव ।।
३७२ दो पणपण्णिदा पण्णत्ता, त जहा—धाए चेव, विहाए चेव ।।
३७३ दो इसिवाइदा पण्णत्ता, त जहा—इसिच्चेव, इसिवालए चेव ।।
३७४ दो भूतवाइदा पण्णत्ता, त जहा—'इस्सरे चेव, महिस्सरे'[4] चेव ।।
३७५ दो कदिदा पण्णत्ता, त जहा—सुवच्छे चेव, विसाले चेव ।।
३७६ दो महाकदिदा पण्णत्ता, त जहा—हस्से चेव, हस्सरती चेव ।।
३७७ दो कुभडिदा[5] पण्णत्ता, त जहा—सेए चेव, महासेए चेव ।।
३७८ दो पतइदा पण्णत्ता, त जहा—पत्तए तेव, पतयवई[6] चेव ।।
३७९ जोइसियाण देवाण दो इदा पण्णत्ता, त जहा—चदे चेव, सूरे चेव ।।
३८० सोहम्मीसाणेसु ण कप्पेसु दो इदा पण्णत्ता, त जहा—सक्के चेव, ईसाणे चेव ।।
३८१ सणकुमार[7]-माहिंदेसु कप्पेसु दो इदा पण्णत्ता, त जहा—सणकुमारे चेव, माहिंदे चेव ।।

---

१ वसिट्ठे (क, ग) ।
२ वात० (क, ग) ।
३ सामाणे (क), सामणि (ख, ग) ।
४ इस्सिरे चेव महिस्सरे (क) ।
५ कुभडिदा (ख), कुभडिबा (ग) ।
६ महापयतए (क), पयगवते (ख); पयतए (ग) ।
७ एव सण० (क, ख, ग) ।

३८२ बंभलोग-लंतएसु णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता, तं जहा—बंभे चेव, लंतए चेव ॥
३८३ महासुक्क-सहस्सारेसु णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता, तं जहा—महासुक्के चेव, सहस्सारे चेव ॥
३८४ आणत-पाणत-आरण-अच्चुतेसु णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता, तं जहा—पाणते चेव, अच्चुते चेव ॥

विमाण-पद

३८५ महासुक्क-सहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा दुवण्णा पण्णत्ता, तं जहा—'हालिद्दा चेव, सुक्किल्ला'[1] चेव ॥

देव-पदं

३८६. गेविज्जगा णं देवा[2] दो रयणीओ उड्ढमुच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

चउत्थो उद्देसो

जीवाजीव-पद

३८७ समयाति वा आवलियाति वा जीवाति या[3] अजीवाति या[4] पवुच्चति ॥
३८८ आणापाणूति वा थोवेति[5] वा जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति ॥
३८९ खणाति वा लवाति वा जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति । एवं—मुहुत्ताति वा अहोरत्ताति वा पक्खाति वा मासाति वा उडूति[6] वा अयणाति वा संवच्छराति वा जुगाति वा वाससयाति वा वाससहस्साइ वा वाससतसहस्साइ वा वासकोडीइ वा पुव्वंगाति वा पुव्वाति वा तुडियंगाति वा तुडियाति वा अडडंगाति वा अडडाति वा 'अववंगाति वा अववाति'[7] वा हूहूअंगाति वा हूहूयाति[8] वा उप्पलंगाति वा उप्पलाति वा पउमंगाति वा पउमाति वा णलिणंगाति वा णलिणाति वा अत्थणिकुरंगाति[9] वा अत्थणिकुराति[10] वा अउअंगाति वा अउआति वा 'णउअंगाति वा णउआति वा'[11] पउतंगाति वा पउताति वा

---

१ हालिद्दे चेव सुक्किल्ले (क, ग)।
२ देवा णं (क, ख, ग)।
३,४ वा (क), वृत्तिकृता 'या' व्याख्यात—चकारौ समुच्चयार्थौ, दीर्घता च प्राकृतत्वात्।
५ थोवाति (क, ख, ग)।
६. उदूति (क, ग)।
७ अपयंगाति वा अपवाति (क, ग)।
८ हूहु° (ग)।
९ अच्छीणिकुरंगाति (क), अत्थियणिकुरंगा (ख)।
१० अत्थणिउराति (क, ग)।
११ × (ग)।

चूलियगाति वा चूलियाति वा सीसपहेलियगाति वा सीसपहेलियाति वा पलि-ओवमाति वा सागरोवमाति वा 'ओसप्पिणीति वा उस्सप्पिणीति वा'[1]—जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति ॥

३९० गामाति वा णगराति वा णिगमाति वा रायहाणीति वा खेडाति वा कब्बडाति वा मडंबाति वा दोणमुहाति वा पट्टणाति वा आगराति वा आसमाति वा संवाहाति वा सण्णिवेसाइ वा घोसाइ वा आरामाइ वा उज्जाणाति वा वणाति वा वणसंडाति वा वावीति वा पुक्खरणीति वा सराति वा सरपंतीति वा अगडाति वा तलागाति वा दहाति वा णदीति वा पुढवीति वा उदहीति वा वातखंधाति वा उवासंतराति वा वलयाति वा विग्गहाति वा दीवाति वा समुद्दाति वा वेलाति वा वेइयाति[2] वा दाराति वा तोरणाति वा णेरइयाति वा णेरइयावासाति वा जाव[3] वेमाणियाति वा वेमाणियावासाति वा कप्पाति वा कप्पविमाणावासाति वा वासाति वा वासधरपव्वताति वा कूडाति वा कूडागाराति वा विजयाति वा रायहाणीति वा—जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति ॥

३९१ छायाति[4] वा आतवाति वा दोसिणाति वा अंधकाराति वा 'ओमाणाति वा'[5] उम्माणाति वा अतियाणगिहाति[6] वा उज्जाणगिहाति वा अवलिंबाति वा सणिप्पवाताति वा—जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति ॥

३९२. दो रासी पण्णत्ता, तं जहा—जीवरासी चेव, अजीवरासी चेव ॥

कम्म-पद

३९३. दुविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—पेज्जबंधे चेव, दोसबंधे चेव ॥

३९४ जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावं कम्मं बंधंति, तं जहा—रागेण चेव, दोसेण चेव ॥

३९५ जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावं कम्मं उदीरेंति, तं जहा—अब्भोवगमियाए चेव वेयणाए, उवक्कमियाए चेव वेयणाए ॥

३९६ [7]°जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावं कम्मं वेदेंति, तं जहा—अब्भोवगमियाए चेव वेयणाए, उवक्कमियाए चेव वेयणाए ॥

३९७ जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावं कम्मं णिज्जरेंति, तं जहा°—अब्भोवगमियाए चेव वेयणाए, उवक्कमियाए चेव वेयणाए ॥

---

१ उस्सप्पिणीति वा ओसप्पिणीति वा (क,ख)।
२ वेतिताति (क, ख, ग)।
३ ठा० १।१४२-१६३।
४ छाताति (क, ख, ग)।
५ ओमाणाति वा पमाणाति वा (क)।
६ अतिताण° (क, ख, ग)।
७ सं० पा०—एवं वेदेंति एवं णिज्जरेंति।

अत्त-णिज्जाण-पदं

३९८ दोहिं ठाणेहिं आता सरीरं फुसित्ता णं णिज्जाति, तं जहा—देसेणवि आता सरीरं फुसित्ता णं णिज्जाति, सव्वेणवि आता सरीरगं फुसित्ता णं णिज्जाति ॥

३९९ [1]• दोहिं ठाणेहिं आता सरीरं फुरित्ता णं णिज्जाति, तं जहा—देसेणवि आता सरीरं फुरित्ता णं णिज्जाति, सव्वेणवि आता सरीरगं फुरित्ता णं णिज्जाति ॥

४०० दोहिं ठाणेहिं आता सरीरं फुडित्ता णं णिज्जाति, तं जहा—देसेणवि आता सरीरं फुडित्ता णं णिज्जाति, सव्वेणवि आता सरीरगं फुडित्ता णं णिज्जाति ॥

४०१ दोहिं ठाणेहिं आता सरीरं संवट्टइत्ता णं णिज्जाति, तं जहा—देसेणवि आता सरीरं संवट्टइत्ता णं णिज्जाति, सव्वेणवि आता सरीरगं संवट्टइत्ता णं णिज्जाति ॥

४०२ दोहिं ठाणेहिं आता सरीरं णिवट्टइत्ता णं णिज्जाति, तं जहा—देसेणवि आता सरीरं णिवट्टइत्ता णं णिज्जाति, सव्वेणवि आता सरीरगं णिवट्टइत्ता णं णिज्जाति ° ॥

खय-उवसम-पदं

४०३ दोहिं ठाणेहिं आता केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, तं जहा—खएण[2] चेव, उवसमेण चेव ॥

४०४ [3]•दोहिं ठाणेहिं आता—केवलं बोधिं बुज्झेज्जा, केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा, केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा, केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, केवलमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा, केवलं सुयणाणं उप्पाडेज्जा, केवलं ओहिणाणं उप्पाडेज्जा, केवलं° मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—खएण चेव, उवसमेण चेव ॥

ओवमिय-काल-पद

४०५ दुविहे अद्धोवमिए पण्णत्ते, तं जहा—पलिओवमे चेव, सागरोवमे चेव ।
से किं तं पलिओवमे ? पलिओवमे—

संगहणी-गाहा

जं जोयणविच्छिण्णं[4], पल्लं एगाहियप्परूढाणं ।
होज्ज णिरंतरणिचितं, भरितं वालग्गकोडीणं ॥१॥

---

१ सं० पा०—एवं फुरित्ता णं एवं फुडित्ता णं एवं संवट्टइत्ता णं एवं णिवट्टइत्ता णं ।

२ खतेण (क, ख, ग) ।

३ सं० पा०—एवं जाव मणपज्जवणाणं ।

४ °च्छन्न (क, ग) ।

वाससए वाससए, एक्केक्के अवहडमि जो कालो ।
सो कालो वोद्धव्वो, उवमा एगस्स पल्लस्स ॥२॥
एएसि पल्लाण, कोडाकोडी हवेज्ज दस गुणिता ।
त सागरोवमस्स उ, एगस्स भवे परीमाण ॥३॥

पाव-पदं

४०६ दुविहे कोहे पण्णत्ते, त जहा—आयपइट्ठिए चेव, परपइट्ठिए चेव ॥

४०७ [1]°दुविहे माणे, दुविहा माया, दुविहे लोभे, दुविहे पेज्जे, दुविहे दोसे, दुविहे कलहे, दुविहे अब्भक्खाणे, दुविहे पेसुण्णे, दुविहे परपरिवाए, दुविहा अरतिरती, दुविहे मायामोसे, दुविहे मिच्छादसणसल्ले पण्णत्ते, त जहा—आयपइट्ठिए चेव, परपइट्ठिए चेव । एव णेरइयाण जाव[2] वेमाणियाण° ॥

जीव-पद

४०८ दुविहा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, त जहा—तसा चेव, थावरा चेव ॥

४०९ दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, त जहा—सिद्धा चेव, असिद्धा चेव ॥

४१० दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, त जहा—सइदिया चेव अणिदिया चेव,[3]°सकायच्चेव अकायच्चेव, सजोगी चेव अजोगी चेव, सवेया चेव अवेया चेव, सकसाया चेव अकसाया चेव, सलेसा चेव अलेसा चेव, णाणी चेव अणाणी चेव, सागारोवउत्ता चेव अणागारोवउत्ता चेव, आहारगा चेव अणाहारगा चेव, भासगा चेव अभासगा चेव, चरिमा चेव अचरिमा चेव, ससरीरी चेव असरीरी चेव° ॥

मरण-पद

४११ दो मरणाइ समणेण भगवता महावीरेण समणाण णिग्गथाण णो णिच्च वण्णियाइ णो णिच्च कित्तियाइ णो णिच्च वुइयाइ[4] णो णिच्च पसत्थाइ णो णिच्च अब्भणुण्णायाइ भवति, त जहा—वलयमरणे[5] चेव, वसट्टमरणे चेव ॥

४१२ एव—णियाणमरणे चेव तब्भवमरणे चेव, गिरिपडणे चेव तरुपडणे चेव, जलपवेसे[6] चेव जलणपवेसे चेव, विसभक्खणे चेव सत्थोवाडणे चेव ॥

---

१ स० पा०—एव णेरइयाण जाव वेमाणियाण एव जाव मिच्छादसणसल्लाण ।

२ ठा० १।१४२-१६३ ।

३ स० पा०—एव एसा गाहा फासेतव्वा जाव ससरीरी चेव असरीरी चेव ।
सगहणी-गाहा
सिद्ध सइदियकाए,
जोगे वेए कसाय लेसा य ।
णाणुवओगाहारे,
भासग चरिमे य ससरीरी ॥१॥

४ पूइयाइ (क, ख, ग, वृपा) ।

५ वलात° (क, ख, ग) ।

६ जलपडणे (ग) ।

४१३ दो मरणाइं[1] •समणेण भगवता महावीरेण समणाणं णिग्गंथाणं णो णिच्चं वण्णियाइं णो णिच्चं कित्तियाइं णो णिच्चं वुइयाइं णो णिच्चं पसत्थाइं° णो णिच्चं अब्भणुण्णायाइं भवंति। कारणे[2] पुण अप्पडिकुट्ठाइं, तं जहा—वेहाणसे[3] चेव गिद्धपट्ठे चेव ॥

४१४ दो मरणाइं समणेण भगवया महावीरेण समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णियाइं[4] •णिच्चं कित्तियाइं णिच्चं वुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं° अब्भणुण्णायाइं भवंति, तं जहा—पाओवगमणे चेव, भत्तपच्चक्खाणे चेव ॥

४१५ पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—णीहारिमे चेव, अणीहारिमे चेव। णियमं अपडिकम्मे[5] ॥

४१६ भत्तपच्चपक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—णीहारिमे चेव, अणीहारिमे चेव। णियमं सपडिकम्मे[6] ॥

लोग-पदं

४१७ के अयं लोगे ?
जीवच्चेव, अजीवच्चेव ॥

४१८ के अणंता लोगे ?
जीवच्चेव, अजीवच्चेव ॥

४१९ के सासया लोगे ?
जीवच्चेव, अजीवच्चेव ॥

बोधि-पदं

४२० दुविहा बोधी पण्णत्ता, तं जहा—णाणबोधी चेव, दंसणबोधी चेव ॥

४२१ दुविहा बुद्धा पण्णत्ता, तं जहा—णाणबुद्धा चेव, दंसणबुद्धा चेव ॥

मोह-पदं

४२२ [7]•दुविहे मोहे पण्णत्ते, तं जहा—णाणमोहे चेव, दंसणमोहे चेव ॥

४२३. दुविहा मूढा पण्णत्ता, तं जहा—णाणमूढा चेव, दंसणमूढा चेव° ॥

कम्म-पदं

४२४ णाणावरणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—देसणाणावरणिज्जे चेव, सव्व-णाणावरणिज्जे चेव ॥

---

१. सं० पा०—मरणाइं जाव णो णिच्चं।
२ कारणेण (क, ख, ग, वृपा)।
३ विहायसि—नभसि भवं वैहायसं प्राकृतत्वेन तु वेहाणसमित्युक्तमिति (वृ)।
४ सं० पा०—वण्णियाइं जाव अब्भणुण्णायाइं।
५ °क्कमे (क, ग)।
६ °क्कमे (क, ग)।
७ सं० पा०—एवं मोहे मूढा।

४२५ दरिसणावरणिज्जे कम्मे[1] °दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—देसदरिसणावरणिज्जे चेव, सव्वदरिसणावरणिज्जे चेव° ॥

४२६ वेयणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सातावेयणिज्जे चेव, असातावेयणिज्जे चेव ॥

४२७ मोहणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दंसणमोहणिज्जे चेव, चरित्त-मोहणिज्जे चेव ॥

४२८ आउए कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अद्धाउए चेव, भवाउए चेव ॥

४२९ णामे कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुभणामे चेव, असुभणामे चेव ॥

४३० गोत्ते कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—उच्चागोते चेव, णीयागोते चेव ॥

४३१ अंतराइए कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पडुप्पण्णविणासिए[2] चेव, पिहति[3] य आगामिपहं[4] चेव ॥

मुच्छा-पदं

४३२ दुविहा मुच्छा पण्णत्ता, तं जहा—पेज्जवत्तिया चेव, दोसवत्तिया चेव ॥

४३३ पेज्जवत्तिया मुच्छा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—माया[5] चेव, लोभे चेव ॥

४३४ दोसवत्तिया मुच्छा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—कोहे चेव, माणे चेव ॥

आराहणा-पदं

४३५ दुविहा आराहणा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मियाराहणा चेव, केवलिआराहणा[6] चेव ॥

४३६ धम्मियाराहणा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुयधम्माराहणा चेव, चरित्तधम्मा-राहणा चेव ॥

४३७ केवलिआराहणा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अंतकिरिया चेव, कप्पविमाणो-ववत्तिया चेव ॥

तित्थगर-वण्ण-पदं

४३८ दो तित्थगरा णीलुप्पलसमा वण्णेणं पण्णत्ता, तं जहा—मुणिसुव्वए चेव, अरिट्ठ-णेमी चेव ॥

---

१ म० पा०—दरिसणावरणिज्जे कम्मे एव चेव ।

२ °विणासी (वृपा) ।

३ पिहित (क्व) ।

४ क्वचिदागामिपथानिति दृश्यते, क्वचिच्च आगमपहति (वृ) ।

५. माते (क, ग) ।

६ कम्मिआ° (ग) ।

४३९ दो तित्थगरा पियंगुसामा[1] वण्णेणं पण्णत्ता, तं जहा—मल्ली चेव, पासे[2] चेव ॥
४४० दो तित्थगरा पउमगोरा वण्णेणं पण्णत्ता, तं जहा—पउमप्पहे चेव, वासुपुज्जे[3] चेव ॥
४४१ दो तित्थगरा चंदगोरा वण्णेणं पण्णत्ता, तं जहा—चंदप्पभे चेव, पुप्फदंते[4] चेव ॥

पुव्ववत्थु-पदं

४४२ सच्चप्पवायपुव्वस्स णं दुवे वत्थू[5] पण्णत्ता ॥

णक्खत्त-पदं

४४३ पुव्वाभद्दवयाणक्खत्ते[6] दुतारे पण्णत्ते ॥
४४४ 'उत्तराभद्दवयाणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते'[7] ॥
४४५ '[8]पुव्वफग्गुणीणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते ॥
४४६ उत्तराफग्गुणीणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते° ॥

समुद्द-पदं

४४७ अंतो णं मणुस्सखेत्तस्स दो समुद्दा पण्णत्ता, तं जहा—लवणे चेव, कालोदे चेव ॥

चक्कवट्टि-पदं

४४८ दो चक्कवट्टी अपरिचत्तकामभोगा कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए अपइट्ठाणे णरए णेरइयत्ताए उववण्णा, तं जहा—सुभूमे चेव, बंभदत्ते चेव ॥

देव-पदं

४४९ असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं[9] देवाणं उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥
४५० सोहम्मे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥
४५१ ईसाणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥
४५२ सणंकुमारे कप्पे देवाणं जहण्णेणं दो सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥
४५३ माहिंदे कप्पे देवाणं जहण्णेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥
४५४ दोसु कप्पेसु कप्पित्थियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सोहम्मे चेव, ईसाणे चेव ॥

---

१ °समा (क)।
२ पासो (ग)।
३ वासपुज्जे (क, ग)।
४ पुप्प° (क, ग)।
५ वत्थू प सुभनामे चेव असुभनामे चेव (क)।
६ पुव्व° (ख)।
७ उत्तर° (ख), × (ग)।
८ सं० पा०—एवं पुव्वफग्गुणी उत्तराफग्गुणी।
९ पू०—ठा० १।१४३-१५१।

४५५ दोसु कप्पेसु देवा तेउलेस्सा पण्णत्ता, त जहा—सोहम्मे चेव, ईसाणे चेव ।।
४५६ दोसु कप्पेसु देवा कायपरियारगा पण्णत्ता, त जहा—सोहम्मे चेव, ईसाणे चेव ।।
४५७ दोसु कप्पेसु देवा फासपरियारगा पण्णत्ता, त जहा—सणकुमारे चेव, माहिंदे चेव ।।
४५८. दोसु कप्पेसु देवा रूवपरियारगा पण्णत्ता, त जहा—बभलोगे चेव, लतगे चेव ।।
४५९ दोसु कप्पेसु देवा सद्दपरियारगा पण्णत्ता, त जहा—महासुक्के चेव, सहस्सारे चेव ।।
४६० दो इदा मणपरियारगा पण्णत्ता, त जहा—पाणए चेव, अच्चुए चेव ।।

पावकम्म-पदं

४६१ जीवाण दुट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा चिणति वा चिणिस्सति वा, त जहा—तसकायणिव्वत्तिए चेव, थावरकायणिव्वत्तिए चेव ।।
४६२ [1]•जीवा ण दुट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए° उवचिणिसु वा उवचिणति वा उवचिणिस्सति वा, बधिसु वा बधेंति वा बधिस्सति वा, उदीरिंसु वा उदीरेंति वा उदीरिस्सति वा, वेदेसु वा वेदेंति वा वेदिस्सति वा, णिज्जरिंसु वा णिज्जरेति वा णिज्जरिस्सति वा, •त जहा—तसकायणिव्वत्तिए चेव, थावरकायणिव्वत्तिए चेव° ।।

पोग्गल-पद

४६३ दुपएसिया खधा अणता पण्णत्ता ।।
४६४ दुपदेसोगाढा पोग्गला अणता पण्णत्ता ।।
४६५ एव जाव[2] दुगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता ।।

---

१ स० पा०—एव । २. ठा० १।२५५,२५६ ।

तइयं ठाणं

पढमो उद्देसो

इंद-पदं

१ तओ इंदा पण्णत्ता, तं जहा—णामिंदे, ठवणिंदे, दव्विंदे ॥

२ तओ इंदा पण्णत्ता, तं जहा—णाणिंदे, दंसणिंदे, चरित्तिंदे ॥

३ तओ इंदा पण्णत्ता, तं जहा—देविंदे, असुरिंदे, मणुस्सिंदे ॥

विकुव्वणा-पदं

४ तिविहा विकुव्वणा पण्णत्ता, तं जहा—बाहिरए[1] पोग्गलए परियादित्ता[2]—एगा विकुव्वणा, बाहिरए पोग्गले अपरियादित्ता—एगा विकुव्वणा, बाहिरए पोग्गले परियादित्तावि अपरियादित्तावि—एगा विकुव्वणा ॥

५ तिविहा विकुव्वणा[3] पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरए पोग्गले परियादित्ता—एगा विकुव्वणा, अब्भंतरए पोग्गले अपरियादित्ता—एगा विकुव्वणा, अब्भंतरए पोग्गले परियादित्तावि अपरियादित्तावि—एगा विकुव्वणा ॥

६ तिविहा विकुव्वणा पण्णत्ता, तं जहा—बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियादित्ता—एगा विकुव्वणा, बाहिरब्भंतरए पोग्गले अपरियादित्ता—एगा विकुव्वणा, बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियादित्तावि अपरियादित्तावि—एगा विकुव्वणा ॥

संचित-पदं

७ तिविहा णेरइया[4] पण्णत्ता, तं जहा—कतिसंचिता, अकतिसंचिता[5], अवत्तव्वगसंचिता ॥

८ एवमेगिंदियवज्जा जाव[6] वेमाणिया ॥

---

१ बाहिरते (क, ख, ग)।

२ परियातित्ता (क, ख, ग)।

३ विगुव्वणा (क, ग)।

४ नेरइया णं (क, ग)।

५ अकिति० (क)।

६ ठा० १।१४२-१५१, १५७-१६३।

परियारणा-पदं

९ तिविहा परियारणा[1] पण्णत्ता, त जहा—
१ एगे देवे अण्णे देवे, अण्णेसिं देवाण देवीओ य अभिजुंजिय-अभिजुंजिय परियारेति[2], अप्पणिज्जिआओ[3] देवीओ अभिजुंजिय[4]-अभिजुंजिय परियारेति, अप्पाणमेव अप्पणा विउव्विय[5]-विउव्विय परियारेति।
२ एगे देवे णो अण्णे देवे, णो अण्णेसिं देवाण देवीओ अभिजुंजिय-अभिजुंजिय परियारेति, अप्पणिज्जिआओ देवीओ अभिजुंजिय-अभिजुंजिय परियारेति, अप्पाणमेव अप्पणा विउव्विय-विउव्विय परियारेति।
३ एगे देवे णो अण्णे देवे, णो अण्णेसिं देवाण देवीओ अभिजुंजिय-अभिजुंजिय परियारेति, णो अप्पणिज्जताओ देवीओ अभिजुंजिय-अभिजुंजिय परियारेति, अप्पाणमेव अप्पाण विउव्विय-विउव्विय परियारेति ॥

मेहुण-पद

१०. तिविहे मेहुणे पण्णत्ते, त जहा—दिव्वे, माणुस्सए, तिरिक्खजोणिए ॥

११ तओ मेहुण गच्छति, त जहा—देवा, मणुस्सा, तिरिक्खजोणिया ॥

१२ तओ मेहुण सेवति, त जहा—इत्थी, पुरिसा, णपुसगा ॥

जोग-पद

१३ तिविहे जोगे पण्णत्ते, त जहा—मणजोगे, वइजोगे कायजोगे। एव—णेरइयाण[6] विगलिंदियवज्जाण जाव[7] वेमाणियाण ॥

१४ तिविहे पओगे पण्णत्ते, त जहा—मणपओगे, वइपओगे कायपओगे। जहा जोगो विगलिंदियवज्जाण जाव[8] तहा पओगोवि ॥

करण-पदं

१५ तिविहे करणे पण्णत्ते, त जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, एव—विगलिंदियवज्ज जाव[9] वेमाणियाण ॥

१६ तिविहे करणे पण्णत्ते, त जहा—आरभकरणे, सरभकरणे, समारभकरणे। णिरतर जाव[10] वेमाणियाण ॥

---

१ परिणावणा (ग)।
२ ०रेंति (ग)।
३ ०णिज्जाओ (क), अप्पणिच्चियाओ (भ० २।७९)।
४ अभिजुजियाओ (ख)।
५. विकुव्विय (ग)।
६ णेरतिताण वि (क), णेरतिता वि (ग)।
७ ठा० १।१४२-१५१, १६०-१६३।
८ ठा० १।१४१-१५१, १६०-१६४।
९ ठा० १।१४१-१५१, १६०-१६३।
१० ठा० १।४१-१६३।

आउय-पगरण-पदं

१७ तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउयत्ताए कम्म पगरेति, त जहा—पाणे अतिवातित्ता भवति, मुस वइत्ता भवति, तहारूव समण वा माहण वा अफासुएण अणेसणिज्जेण असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभेत्ता भवति—इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउयत्ताए कम्म पगरेति ॥

१८ तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउयत्ताए कम्म पगरेति, त जहा—णो पाणे अतिवातित्ता भवइ, णो मुस वइत्ता भवइ, तहारूव समण वा माहण वा 'फासुएण एसणिज्जेण'[1] असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभेत्ता भवइ—इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउयत्ताए कम्म पगरेति ।

१९ तिहिं ठाणेहिं जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्म पगरेंति, त जहा—पाणे अतिवातित्ता भवइ, मुस वइत्ता भवइ, तहारूव समण वा माहण वा हीलित्ता णिंदित्ता खिसित्ता गरहित्ता अवमाणित्ता अण्णयरेण[2] अमणुण्णेण अपीतिकारतेण असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभेत्ता भवइ—इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्म पगरेंति ॥

२० तिहिं ठाणेहिं जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्म पगरेति, त जहा—णो पाणे अतिवातित्ता भवइ, णो मुस वदित्ता भवइ, तहारूव समण वा माहण वा वदित्ता णमसित्ता सक्कारित्ता सम्माणित्ता कल्लाण मगल 'देवत चेतित'[3] पज्जुवासेत्ता मणुण्णेण पीतिकारएण असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभेत्ता भवइ—इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा सुहदीहाउयत्ताए[4] कम्म पगरेति ॥

गुत्ति-अगुत्ति-पदं

२१ तओ[5] गुत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—मणगुत्ती, वइगुत्ती, कायगुत्ती ॥

२२. सजयमणुस्साण[6] तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—मणगुत्ती, वइगुत्ती, कायगुत्ती ॥

२३ तओ अगुत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—मणअगुत्ती, वइअगुत्ती, कायअगुत्ती। एव—णेरइयाण जाव[7] थणियकुमाराण पचिंदियतिरिक्खजोणियाण असजतमणुस्साण वाणमतराण जोइसियाण वेमाणियाण ॥

दड-पद

२४ तओ दडा पण्णत्ता, त जहा—मणदडे, वइदडे, कायदडे ॥

---

१ फासुएसणिज्जेण (क, ग)।
२ × (वृपा)।
३ देवय चेइय (क, ग)।
४ सुभ° (ग)।
५ ततो (क, ग)।
६ सजत° (क, ग)।
७ ठा० १।१४२-१५०।

२५ णेरइयाण तओ दडा पण्णत्ता, त जहा—मणदडे, वइदडे, कायदडे। विगलिंदिय-वज्ज जाव[1] वेमाणियाण ॥

गरहा-पद

२६ तिविहा गरहा पण्णत्ता, त जहा—मणसा वेगे गरहति, वयसा[2] वेगे गरहति, कायसा वेगे गरहति—पावाण कम्माण अकरणयाए[3]।
अहवा—गरहा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—दीहपेगे अद्ध गरहति, रहस्सपेगे अद्ध गरहति, कायपेगे पडिसाहरति—पावाण कम्माण अकरणयाए ॥

पच्चक्खाण-पद

२७ तिविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, त जहा—मणसा वेगे पच्चक्खाति, वयसा वेगे पच्चक्खाति, कायसा वेगे पच्चक्खाति—[4]°पावाण कम्माण अकरणयाए।
अहवा—पच्चक्खाणे तिविहे पण्णत्ते, त जहा—दीहपेगे अद्ध पच्चक्खाति, रहस्सपेगे अद्ध पच्चक्खाति, कायपेगे पडिसाहरति—पावाण कम्माण अकरणयाए °॥

उपकार-पदं

२८ तओ रुक्खा पण्णत्ता, त जहा—'पत्तोवगे, पुप्फोवगे'[5], फलोवगे।
एवामेव तओ पुरिसजाता पण्णत्ता, त जहा—पत्तोवारुक्खसमाणे[6], पुप्फोवारुक्खसमाणे, फलोवारुक्खसमाणे ॥

पुरिसजात-पदं

२९. तओ पुरिसज्जाया पण्णत्ता, त जहा—णामपुरिसे, ठवणपुरिसे, दव्वपुरिसे ॥
३० तओ पुरिसज्जाया पण्णत्ता, त जहा—णाणपुरिसे, दसणपुरिसे, चरित्तपुरिसे ॥
३१ तओ पुरिसज्जाया पण्णत्ता, त जहा—वेदपुरिसे, चिंधपुरिसे, अभिलावपुरिसे ॥
३२ तिविहा पुरिसा पण्णत्ता, त जहा—उत्तमपुरिसा, मज्झिमपुरिसा, जहण्णपुरिसा ॥
३३ उत्तमपुरिसा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—धम्मपुरिसा, भोगपुरिसा, कम्मपुरिसा। धम्मपुरिसा अरहता[7], भोगपुरिसा चक्कवट्टी, कम्मपुरिसा वासुदेवा ॥
३४ मज्झिमपुरिसा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—उग्गा, भोगा, राइण्णा ॥
३५. जहण्णपुरिसा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—दासा, भयगा, भाइल्लगा[8] ॥

---

१ ठा० १।१४२-१५१, १६०-१६३।
२ वइसा (क, ग)।
३ °णताते (क, ग)।
४ स० पा०—एव जहा गरहा तहा पच्चक्खाणे वि दो आलावगा।
५ पत्तोवेगे पुप्फोवेगे (ख)।
६ 'पत्तोवग' इत्यादिवाच्ये पत्तोवा इत्यादिक प्राकृतलक्षणवशादुक्त, 'समाणे' इत्यत्रापि च 'सामाणे' (वृ)।
७ अरिहता (ख)।
८ भातिल्लगा (क, ख, ग)।

मच्छ-पदं

३६ तिविहा मच्छा पण्णत्ता, त जहा—अडया, पोयया[1], समुच्छिमा ॥
३७ अडया[2] मच्छा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—इत्थी, पुरिसा, णपुसगा ॥
३८. पोतया मच्छा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—इत्थी, पुरिसा, णपुसगा ॥

पक्खि-पद

३९ तिविहा पक्खी पण्णत्ता, त जहा—अडया, पोयया, समुच्छिमा ॥
४० अडया पक्खी तिविहा पण्णत्ता, त जहा - इत्थी, पुरिसा, णपुसगा ॥
४१ पोयया पक्खी तिविहा पण्णत्ता, त जहा – इत्थी, पुरिसा, णपुसगा ॥

परिसप्प-पद

४२ [3]°तिविहा उरपरिसप्पा पण्णत्ता, त जहा—अडया, पोयया, समुच्छिमा ॥
४३ अडया उरपरिसप्पा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—इत्थी, पुरिसा, णपुसगा ॥
४४ पोयया उरपरिसप्पा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—इत्थी, पुरिसा, णपुसगा ॥
४५ तिविहा भुजपरिसप्पा पण्णत्ता, त जहा—अडया, पोयया, समुच्छिमा ॥
४६ अडया भुजपरिसप्पा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—इत्थी, पुरिसा, णपुसगा ॥
४७ पोयया भुजपरिसप्पा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—इत्थी, पुरिसा, णपुसगा °॥

इत्थी-पद

४८ तिविहाओ इत्थीओ पण्णत्ताओ, त जहा—तिरिक्खजोणित्थीओ[4], मणुस्सित्थीओ देवित्थीओ ॥

४९ 'तिरिक्खजोणीओ इत्थीओ'[5] तिविहाओ पण्णत्ताओ, त जहा—जलचरीओ, थलचरीओ, खहचरीओ ॥

५० मणुस्सित्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ, त जहा—कम्मभूमियाओ, अकम्मभूमियाओ, अतरदीविगाओ ॥

पुरिस-पद

५१ तिविहा पुरिसा पण्णत्ता, तं जहा—तिरिक्खजोणियपुरिसा, मणुस्सपुरिसा, देवपुरिसा ॥

५२ तिरिक्खजोणियपुरिसा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—जलचरा, थलचरा, खहचरा ॥

---

१ पोतता (क, ग) ।
२. अडगा (क) ।
३ स० पा० —एवमेतेण अभिलावेण उरपरिसप्पावि भाणियव्वा भुजपरिसप्पावि भाणियव्वा एव चेव ।
४ °जोणियातो (क, ख, ग) ।
५ °जोणित्यिओ (ग) ।

५३. मणुस्सपुरिसा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—कम्मभूमिया, अकम्मभूमिया, अतर-दीवगा ।।

णपुसग-पदं

५४ तिविहा णपुसगा पण्णत्ता, त जहा—णेरइयणपुसगा, तिरिक्खजोणियणपुसगा, मणुस्सणपुसगा ।।

५५ तिरिक्खजोणियणपुसगा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—जलयरा, थलयरा, खह-यरा ।।

५६ मणुस्सणपुसगा तिविधा पण्णत्ता, त जहा—कम्मभूमिगा, अकम्मभूमिगा, अतर-दीवगा ।।

तिरिक्खजोणिय-पदं

५७ तिविहा तिरिक्खजोणिया पण्णत्ता, त जहा—इत्थी, पुरिसा, णपुसगा ।।

लेसा-पदं

५८ णेरइयाण तओ लेसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा ।।

५९ असुरकुमाराण तओ लेसाओ सकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा ।।

६० एव जाव[1] थणियकुमाराण ।।

६१ एव—पुढविकाइयाण आउ-वणस्सतिकाइयाणवि ।।

६२ तेउकाइयाण वाउकाइयाण वेदियाण तेदियाण चउरिंदिआणवि[2] तओ लेस्सा, जहा[3] णेरइयाण[4] ।।

६३ पचिंदियतिरिक्खजोणियाण तओ लेसाओ सकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा ।।

६४ पचिंदियतिरिक्खजोणियाण तओ लेसाओ असकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ, त जहा—तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा ।।

६५ [5]°मणुस्साण तओ लेसाओ सकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा ।।

६६ मणुस्साण तओ लेसाओ असकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ, त जहा—तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा° ।।

---

१ ठा० १।१४३-१५० ।

२ °दिआण (क) ।

३ जधा (क) ।

४. ठा० ३।५८ ।

५ स० पा०—एव मणुस्साणवि ।

६७ वाणमतराण जहा असुरकुमाराण[1] ॥

६८ वेमाणियाण तओ लेस्साओ पण्णत्ताओ, त जहा—तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा ॥

ताराख्व-चलण-पद

६९ तिहि ठाणेहि ताराख्वे चलेज्जा, त जहा—विकुव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा, ठाणाओ वा ठाण सकममाणे—ताराख्वे चलेज्जा ॥

देवविक्किया-पद

७० तिहि ठाणेहि देवे विज्जुयार[2] करेज्जा, त जहा—विकुव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा, तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्डि जुति जस वल वीरिय पुरिसक्कार[3]-परक्कम उवदसेमाणे—देवे विज्जुयार करेज्जा ॥

७१ तिहि ठाणेहि देवे थणियसद्द करेज्जा, त जहा—विकुव्वमाणे वा, [4]°परियारेमाणे वा, तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्डि जुति जस वल वीरिय पुरिसक्कार-परक्कम उवदसेमाणे—देवे थणियसद्द करेज्जा° ॥

अंधयार-उज्जोयाइ-पद

७२ तिहि ठाणेहि लोगधयारे सिया, त जहा—अरहतेहि वोच्छिज्जमाणेहि, अरहत-पण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे, पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे ॥

७३ तिहि ठाणेहि लोगुज्जोते सिया, त जहा—अरहतेहि[5] जायमाणेहि, अरहतेहि पव्वयमाणेहि, अरहताण णाणुप्पायमहिमासु ॥

७४ तिहि ठाणेहि देवधकारे सिया, त जहा—अरहतेहि वोच्छिज्जमाणेहि, अरहत-पण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे, पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे ॥

७५ तिहि ठाणेहि देवुज्जोते सिया, त जहा—अरहतेहि जायमाणेहि, अरहतेहि पव्वयमाणेहि, अरहताण णाणुप्पायमहिमासु ॥

७६ तिहि ठाणेहि देवसण्णिवाए सिया, त जहा—अरहतेहि जायमाणेहि, अरहतेहि पव्वयमाणेहि, अरहताण णाणुप्पायमहिमासु ॥

७७ [6]°तिहि ठाणेहि देवुक्कलिया सिया, त जहा—अरहतेहि जायमाणेहि, अरहतेहि पव्वयमाणेहि, अरहताण णाणुप्पायमहिमासु ॥

७८ तिहि ठाणेहि देवकहकहए सिया, त जहा—अरहतेहि जायमाणेहि, अरहतेहि पव्वयमाणेहि, अरहताण णाणुप्पायमहिमासु° ॥

---

१ ठा० ३।५९ ।

२. विज्जुतार (क, ख, ग) ।

३. पुरिसगार° (क, ग) ।

४ स० पा०—एव जहा विज्जुतार तहेव थणियसद्दपि ।

५ अरहतेसु (क) ।

६ स० पा०—एव देवुक्कलिया देवकहकहए ।

७९ तिहि ठाणेहि देविंदा माणुस लोग हव्वमागच्छति, त जहा—अरहतेहि जायमाणेहि, अरहतेहि[1] पव्वयमाणेहि, अरहताण णाणुप्पायमहिमासु ॥

८० एव—सामाणिया, तायत्तीसगा, लोगपाला देवा, अग्गमहिसीओ देवीओ, परिसोववण्णगा देवा, अणियाहिवई[2] देवा, आयरक्खा देवा माणुस लोग हव्वमागच्छति[3], °त जहा—अरहतेहि जायमाणेहि, अरहतेहि पव्वयमाणेहि, अरहताण णाणुप्पायमहिमासु° ॥

८१ तिहि ठाणेहि देवा अब्भुट्ठिज्जा, त जहा—अरहतेहि जायमाणेहि[4], °अरहतेहि पव्वयमाणेहि, अरहताण णाणुप्पायमहिमासु° ॥

८२ [5]°तिहि ठाणेहि देवाण आसणाइ चलेज्जा, त जहा -अरहतेहि जायमाणेहि, अरहतेहि पव्वयमाणेहि, अरहताण णाणुप्पायमहिमासु ॥

८३ तिहि ठाणेहि देवा सीहणाय करेज्जा, त जहा—अरहतेहि जायमाणेहि, अरहतेहि पव्वयमाणेहि, अरहताण णाणुप्पायमहिमासु ॥

८४ तिहि ठाणेहि देवा चेलुक्खेव करेज्जा, त जहा—अरहतेहि जायमाणेहि, अरहतेहि पव्वयमाणेहि, अरहताण णाणुप्पायमहिमासु° ॥

८५ तिहि ठाणेहि देवाण चेइयरुक्खा चलेज्जा, त जहा—अरहतेहि[6] °जायमाणेहि, अरहतेहि पव्वयमाणेहि, अरहताण णाणुप्पायमहिमासु° ॥

८६ तिहि ठाणेहि लोगतिया देवा माणुस लोग हव्वमागच्छेज्जा, त जहा—अरहतेहि जायमाणेहि, अरहतेहि पव्वयमाणेहि, अरहताण णाणुप्पायमहिमासु ॥

दुप्पडियार-पद

८७ तिण्ह दुप्पडियार समणाउसो ! त जहा—अम्मापिउणो, भट्टिस्स, धम्मायरियस्स ।

१ सपातोवि य ण केइ पुरिसे अम्मापियर सयपागसहस्सपागेहि तेल्लेहि अब्भगेत्ता, सुरभिणा गधट्टएण[7] उव्वट्टित्ता, तिहि उदगेहि मज्जावेत्ता, सव्वालकारविभूसिय करेत्ता, मणुण्ण थालीपागसुद्ध अट्ठारसवजणाउल भोयण 'भोयावेत्ता जावज्जीव पिट्ठिवडेसियाए'[8] परिवहेज्जा, तेणावि तस्स अम्मापिउस्स दुप्पडियार भवइ । अहे ण से त अम्मापियर केवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता[9] पण्णवइत्ता[10] परूवइत्ता

---

१ अरहतेहि य (क) ।
२ अणिताधिपती (क, ग) ।
३ स० पा० —हव्वमागच्छति ° ।
४. स० पा० —जायमाणेहि जाव त चेव ।
५ स० पा०—एवमासणाइ चलेज्जा सीहणात करेज्जा चेलुक्खेव करेज्जा ।
६ स० पा०—अरहतेहि त चेव ।
७ गधोवट्टएण (ग) ।
८ भोयावेज्जा त पिट्ठिवडेसए (ग) ।
९ आघइत्ता (क), आघयइत्ता (ग) ।
१० पन्नइवइत्ता (ग) ।

ठावइता[1] भवति, तेणामेव तस्स अम्मापिउस्स सुप्पडियार[2] भवति समणाउसो !
२ केइ महच्चे दरिद्द समुक्कसेज्जा। तए ण से दरिद्दे समुक्किट्ठे समाणे पच्छा पुर च ण विउलभोगसमितिसमण्णागते यावि विहरेज्जा।
तए ण से महच्चे अण्णया कयाइ दरिद्दीहूए समाणे तस्स दरिद्दस्स अतिए हव्वमागच्छेज्जा।
तए ण से दरिद्दे तस्स भट्टिस्स सव्वस्सगवि[3] दलयमाणे तेणावि[4] तस्स दुप्पडियार भवति।
अहे ण से त भट्टि 'केवलिपण्णत्ते धम्मे'[5] आघवइत्ता पण्णवइत्ता परूवइत्ता ठावइता भवति, तेणामेव तस्स भट्टिस्स सुप्पडियार भवति [समणाउसो ! ?]।
३ केति तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिए[6] एगमवि आरिय[7] धम्मिय सुवयण सोच्चा णिसम्म कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णे।
तए ण से देवे त धम्मायरिय दुब्भिक्खाओ वा देसाओ सुभिक्ख देस साहरेज्जा, कताराओ वा णिक्कतार करेज्जा, दीहकालिएण वा रोगातकेण अभिभूत समाण विमोएज्जा, तेणावि तस्स धम्मायरियस्स दुप्पडियार भवति।
अहे ण से त धम्मायरिय केवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भट्ठ समाण भुज्जोवि केवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता[8] •पण्णवइत्ता परूवइत्ता° ठावइता भवति, तेणामेव तस्स धम्मायरियस्स सुप्पडियार भवति [समणाउसो ! ?]॥

ससार-वीईवयण-पदं

८८ तिहिं ठाणेहिं सपण्णे अणगारे अणादीय अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससारकतार वीईवएज्जा, त जहा—अणिदाणयाए, दिट्ठिसपण्णयाए, जोगवाहियाए॥

कालचक्क-पदं

८९ तिविहा ओसप्पिणी[9] पण्णत्ता, त जहा—उक्कोसा[10], मज्झिमा, जहण्णा॥
९० [11]•तिविहा सुसम-सुसमा, तिविहा सुसमा, तिविहा सुसम-दूसमा, तिविहा दूसम-

---

१ ठावइत्ता (क, ग), ठाविता (ख)।
२ °डितार (क)।
३ सव्वस्सवि (क, ग)।
४ तेणे वि (ग)।
५ °पन्नत्त धम्म (क, ग)।
६ अतिय (क, ग)।
७, आयरिय (क, ख)।
८ आघवित्ता (क), स० पा०—आघवइत्ता जाव ठावइत्ता।
९ उस्स° (क, ग)।
१० उक्कस्सा (ग)।
११ स० पा०—एव छप्पि समाओ भाणियव्वाओ जाव दूसमदूसमा।

सुसमा, तिविहा दूसमा, तिविहा दूसम-दूसमा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा° ॥

९१ तिविहा उस्सप्पिणी[1] पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा ॥

९२ °[3]तिविहा दुस्सम-दुस्समा, तिविहा दुस्समा, तिविहा दुस्सम-सुसमा, तिविहा सुसम-दुस्समा, तिविहा सुसमा, तिविहा सुसम-सुसमा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा° ॥

अच्छिण्ण-पोग्गल-चलण-पद

९३ तिहिं ठाणेहिं अच्छिण्णे पोग्गले चलेज्जा, तं जहा—आहारिज्जमाणे वा पोग्गले चलेज्जा, विकुव्वमाणे वा पोग्गले चलेज्जा, ठाणाओ वा ठाणं संकामिज्जमाणे पोग्गले चलेज्जा ॥

उपधि-पद

९४ तिविहे उवधी पण्णत्ते, तं जहा—कम्मोवही, सरीरोवही, बाहिरभंडमत्तोवही। एवं असुरकुमाराणं भाणियव्वं। एवं—एगिंदियणेरइयवज्जं जाव[4] वेमाणियाणं। अहवा—तिविहे उवधी पण्णत्ते, तं जहा—सचित्ते[5], अचित्ते, मीसए। एवं—णेरइयाणं णिरंतरं जाव[6] वेमाणियाणं ॥

परिग्गह-पद

९५ तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—कम्मपरिग्गहे, सरीरपरिग्गहे, बाहिर-भंडमत्तपरिग्गहे। एवं—असुरकुमाराणं। एवं—एगिंदियणेरइयवज्जं जाव[7] वेमाणियाणं।

अहवा—तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—सचित्ते, अचित्ते, मीसए। एवं—णेरइयाणं णिरंतरं जाव[8] वेमाणियाणं ॥

पणिहाण-पद

९६ तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणपणिहाणे, वयपणिहाणे, कायपणिहाणे। एवं—पंचिंदियाणं जाव[9] वेमाणियाणं ॥

---

१ ओस्स° (क)।

२ उक्कस्सा (ग)।

३ सं० पा०—एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ जाव सुसमसुसमा।

४ ठा० १।१४३ १५१, १५७-१६३।

५ सच्चित्ते (क)।

६ ठा० १।१४२-१६३।

७ ठा० १।१४३-१५१, १५७-१६३।

८ ठा० १।१४२-१६३।

९. ठा० १।१४१-१५१, १६०-१६३।

९७ तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते, त जहा—मणसुप्पणिहाणे, वयसुप्पणिहाणे[1], कायसुप्पणिहाणे ॥

९८ सजयमणुस्साण तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते, त जहा—मणसुप्पणिहाणे, वयसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे ॥

९९ तिविहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते, त जहा—मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे । एव—पचिदियाण जाव[2] वेमाणियाण ॥

जोणि-पद

१०० तिविहा जोणी पण्णत्ता, त जहा—सीता, उसिणा, सीओसिणा । एव—एगिंदियाण[3] विगलिंदियाण तेउकाइयवज्जाण समुच्छिमपचिंदियतिरिक्खजोणियाण समुच्छिममणुस्साण य ॥

१०१ तिविहा जोणी पण्णत्ता, त जहा—सचित्ता, अचित्ता, मीसिया । एव—एगिंदियाण विगलिंदियाण समुच्छिमपचिंदियतिरिक्खजोणियाण समुच्छिममणुस्साण य ॥

१०२ तिविहा जोणी पण्णत्ता, त जहा—सवुडा, वियडा,सवुडवियडा ॥

१०३ तिविहा जोणी पण्णत्ता, त जहा—कुम्मुण्णया, सखावत्ता, वसीवत्तिया ।

१ कुम्मुण्णया ण जोणी उत्तमपुरिसमाऊण । कुम्मुण्णयाते ण जोणिए तिविहा उत्तमपुरिसा गब्भ वक्कमति, त जहा—अरहता, चक्कवट्टी, वलदेववासुदेवा ।

२ सखावत्ता ण जोणी इत्थीरयणस्स सखावत्ताए ण जोणीए वहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमति, विउक्कमति, चयति, उववज्जति, णो चेव ण णिप्फज्जति[4] ।

३ वसीवत्तिता ण जोणी पिहज्जणस्स[5] । वसीवत्तिताए ण जोणिए वहवे पिहज्जणा गब्भ वक्कमति ॥

तणवणस्सइ-पद

१०४. तिविहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता, त जहा—सखेज्जजीविका[6], असखेज्जजीविका, अणतजीविका ॥

तित्थ-पद

१०५. जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे तओ तित्था पण्णत्ता, त जहा—मागहे, वरदामे, पभासे ॥

१०६. एव—एरवएवि ॥

---

१ वति० (ख, ग) ।

२ ठा० १।१४१-१५१, १६०-१६३ ।

३ एगिंदियाण जाव (क) ।

४ निप्पज्जति (क, ग) ।

५ पिहु० (ख) ।

६ ०जीविता (क, ख, ग) ।

१०७ जवुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे एगमेगे चक्कवट्टिविजये तओ तित्था पण्णत्ता, त जहा— मागहे, वरदामे, पभासे ॥

१०८ एव – घायइसडे दीवे पुरत्थिमद्धेवि पच्चत्थिमद्धेवि । पुक्खरवरदीवद्धे पुरत्थिमद्धेवि, पच्चत्थिमद्धेवि ॥

कालचक्क-पद

१०९ जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ काले[1] होत्था ॥

११० •[2]जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु इमीसे ओसप्पिणीए सुसमाए समाए तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ काले पण्णत्ते ॥

१११ जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ काले भविस्सति• ॥

११२ एव—घायइसडे पुरत्थिमद्धे पच्चत्थिमद्धे वि । एव—पुक्खरवरदीवद्धे पुरत्थिमद्धे पच्चत्थिमद्धेवि कालो भाणियव्वो ॥

११३ जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए मणुया तिण्णि गाउयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था, तिण्णि पलिओवमाइ परमाउ पालइत्था ॥

११४ एव—इमीसे ओसप्पिणीए, आगमिस्साए उस्सप्पिणीए ॥

११५ जवुद्दीवे दीवे देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया तिण्णि गाउआइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता, तिण्णि पलिओवमाइ परमाउ पालयति ॥

११६ एव जाव[3] पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे ॥

सलागा-पुरिस-वस-पद

११७ जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीए तओ वसाओ उप्पज्जिसु वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा, त जहा—अरहतवसे, चक्कवट्टिवसे, दसारवसे ॥

११८ एव जाव[4] पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे ॥

सलागा-पुरिस-पद

११९ जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीए तओ

---

१ कालो (क, ख, ग) ।

२ स० पा०—एव ओसप्पिणीए णवर पण्णत्ते आगमिस्साते उस्सप्पिणीए भविस्सति ।

३,४ ठा० ३।१०८ ।

उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसु[1] वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा, तं जहा—
अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेववासुदेवा ॥

१२० एवं जाव[2] पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे ॥

आउय-पदं

१२१ तओ अहाउयं पालयंति[3], तं जहा—अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेववासुदेवा ॥
१२२ तओ मज्झिममाउयं पालयंति, तं जहा—अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेववासुदेवा ॥
१२३ बायरतेउकाइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि राइंदियाइं ठिती पण्णत्ता ॥
१२४ बायरवाउकाइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता ॥

जोणि-ठिइ-पदं

१२५ अह भंते ! सालीणं वीहीणं गोधूमाणं जवाणं जवजवाणं—एतेसि णं धण्णाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं ओलित्ताणं लित्ताणं लंछियाणं मुद्दियाणं पिहिताणं केवइयं कालं जोणी संचिट्ठति ?
जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि संवच्छराइं। तेण परं जोणी पमिलायति। तेण परं जोणी[4] पविद्धंसति। तेण परं जोणी विद्धंसति। तेण परं बीए अबीए भवति। तेण परं जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते ॥

णरय-पदं

१२६ दोच्चाए णं सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥
१२७ तच्चाए णं वालुयप्पभाए पुढवीए जहण्णेणं णेरइयाणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥
१२८ पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिण्णि णिरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥
१२९ तिसु णं पुढवीसु णेरइयाणं उसिणवेयणा पण्णत्ता, तं जहा—पढमाए, दोच्चाए, तच्चाए ॥
१३० तिसु णं पुढवीसु णेरइया उसिणवेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा—पढमाए, दोच्चाए, तच्चाए ॥

सम-पदं

१३१ तओ लोगे समा सपक्खिं सपडिदिसिं पण्णत्ता, तं जहा—अप्पइट्ठाणे णरए, जंबुद्दीवे दीवे, सव्वट्ठसिद्धे विमाणे।

---

१ उप्पज्जसु (क)।
२ ठा० ३।१०८।
३ पालेंति (क, ग)।
४. जोणि (ग)।

१३२ तओ लोगे समा सपक्खि सपडिदिसि पण्णत्ता, त जहा—सीमतए ण' णरए, समयक्खेत्ते, ईसीपब्भारा पुढवी ॥

समुद्द-पदं

१३३ तओ समुद्दा पगईए उदगरसेण' पण्णत्ता, त जहा—कालोदे, पुक्खरोदे, सयभुरमणे ॥

१३४ तओ समुद्दा बहुमच्छकच्छभाइण्णा पण्णत्ता, त जहा—लवणे, कालोदे, सयभुरमणे ॥

उववाय-पद

१३५ तओ लोगे णिस्सीला णिव्वता णिग्गुणा णिम्मेरा णिप्पच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे काल किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए अप्पतिट्ठाणे णरए णेरइयत्ताए उववज्जति, त जहा—रायाणो, मडलीया, जे य महारभा कोडुवी ॥

१३६ तओ लोए सुसीला सुव्वया सग्गुणा समेरा सपच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे काल किच्चा सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवति, त जहा—रायाणो परिचत्तकामभोगा, सेणावती, पसत्थारो ॥

विमाण-पदं

१३७ बभलोग-लतएसु ण कप्पेसु विमाणा तिवण्णा पण्णत्ता, त जहा—किण्हा, णीला, लोहिया ॥

देव-पद

१३८ आणयपाणयारणच्चुतेसु ण कप्पेसु देवाण भवधारणिज्जसरीरगा उक्कोसेण तिण्णि रयणीओ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥

पण्णत्ति-पद

१३९ तओ पण्णत्तीओ कालेण अहिज्जति, त जहा—चदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, दीवसागरपण्णत्ती ॥

बीओ उद्देसो

लोग-पदं

१४० तिविहे लोगे पण्णत्ते, त जहा—णामलोगे, ठवणलोगे, दव्वलोगे ॥

१४१ तिविहे लोगे पण्णत्ते, त जहा—णाणलोगे, दसणलोगे, चरित्तलोगे ॥

---

१ × (क, ग) । २ उदगरसा (क, ख) ।

१४२ तिविहे लोगे पण्णत्ते, त जहा—उड्ढलोगे, अहोलोगे, तिरियलोगे ।।

परिसा-पद

१४३ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—समिता, चडा, जाया । अब्भितरिता समिता, मज्झिमिता चडा, बाहिरिता जाया ।।

१४४ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सामाणिताण देवाण तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—समिता जहेव[1] चमरस्स ।।

१४५ एव—तावत्तीसगाणवि[2] ।।

१४६ लोगपालाण—तुवा[3] तुडिया पव्वा ।।

१४७ एव—अग्गमहिसीणवि ।।

१४८ बलिस्सवि[4] एव चेव जाव[5] अग्गमहिसीण ।।

१४९ धरणस्स य सामाणिय-तावत्तीसगाण च—समिता चडा जाता[6] ।।

१५० 'लोगपालाण अग्गमहिसीण'[7]—ईसा तुडिया दढरहा[8] ।।

१५१ जहा धरणस्स तहा सेसाण भवणवासीण[9] ।।

१५२ कालस्स ण पिसाइदस्स पिसायरण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—ईसा तुडिया दढरहा[10] ।।

१५३ एव—सामाणिय-अग्गमहिसीण ।।

१५४ एव जाव[11] गीयरतिगीयजसाण ।।

१५५ चदस्स ण जोतिसिदस्स जोतिसरण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—तुवा तुडिया पव्वा[12] ।।

१५६ एव—सामाणिय-अग्गमहिसीण ।।

१५७ एव—सूरस्सवि ।।

१५८ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—समिता चडा जाया[13] ।।

---

१ ठा० ३।१४३ ।
२ तायत्ती ° (ख) ।
३ तुपा (क), तपा (ग) ।
४ वलस्सवि (क), वालास्सवि (ग) ।
५ ठा० ३।१४३-१४७ ।
६ पू०—ठा० ३।१४३ ।
७ लोगपालग्ग ° (क, ग) ।
८ पू०—ठा० ३।१४३ ।
९ ठा० २।३५४-३६२ ।
१० पू० ठा० ३।१४३ ।
११ ठा० २।३६३-३७० ।
१२ पू०—ठा० ३।१४३ ।
१३ पू०—ठा० ३।१४३ ।

१५९ एव - जहा चमरस्स जाव[1] अग्गमहिसीण ॥

१६० एव जाव[2] अच्चुतस्स लोगपालाण ॥

जाम-पद

१६१ तओ जामा पण्णत्ता, त जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१६२ तिहिं जामेहिं आया केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, त जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१६३ [3]°तिहिं जामेहिं आया केवल बोधि बुज्झेज्जा, त जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१६४ तिहिं जामेहिं आया केवल मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइज्जा, त जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१६५ तिहिं जामेहिं आया केवल वभचेरवासमावसेज्जा, त जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१६६ तिहिं जामेहिं आया केवलेण सजमेण सजमेज्जा, त जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१६७ तिहिं जामेहि आया केवलेण सवरेण सवरेज्जा, त जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१६८ तिहिं जामेहिं आया केवलमाभिणिवोहियणाण उप्पाडेज्जा, त जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१६९ तिहिं जामेहिं आया केवल सुयणाण उप्पाडेज्जा, त जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१७० तिहिं जामेहिं आया केवल ओहिणाण उप्पाडेज्जा, त जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१७१ तिहिं जामेहि आया केवल मणपज्जवणाण उप्पाडेज्जा, त जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

१७२ तिहिं जामेहिं आया केवल° केवलणाण उप्पाडेज्जा, त जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे ॥

वय-पदं

१७३ तओ वया पण्णत्ता, त जहा—पढमे वए[4], मज्झिमे वए, पच्छिमे वए ॥

१७४ तिहिं वएहिं आया केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, त जहा—पढमे वए, मज्झिमे वए, पच्छिमे वए ॥

---

१ ठा० ३।१४४-१४७।

२ ठा० २।३८०-३८४।

३ स० पा०—एव जाव केवलणाण।

४ वते (क, ख, ग)।

१७५ [1]•तिहिं वएहिं आया—केवलं बोधिं बुज्झेज्जा, केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा, केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा, केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, केवलमाभिणिबोहिणाणं उप्पाडेज्जा, केवलं सुयणाणं उप्पाडेज्जा, केवलं ओहिणाणं उप्पाडेज्जा, केवलं मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा, केवलं केवलणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—पढमे वए, मज्झिमे वए, पच्छिमे वए° ॥

बोधि-पद

१७६ तिविधा बोधी पण्णत्ता, तं जहा—णाणबोधी, दंसणबोधी, चरित्तबोधी ॥

१७७ तिविहा बुद्धा पण्णत्ता, तं जहा—णाणबुद्धा, दंसणबुद्धा, चरित्तबुद्धा ॥

मोह-पद

१७८ [2]•तिविहे मोहे पण्णत्ते, तं जहा—णाणमोहे, दंसणमोहे, चरित्तमोहे ॥

१७९ तिविहा मूढा पण्णत्ता, तं जहा—णाणमूढा, दंसणमूढा, चरित्तमूढा° ॥

पव्वज्जा-पद

१८० तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—इहलोगपडिबद्धा, परलोगपडिबद्धा, दुहतो [लोग ?] पडिबद्धा[3] ॥

१८१ तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—पुरतोपडिबद्धा, मग्गतोपडिबद्धा, दुहओ-पडिबद्धा ॥

१८२ तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—तुयावइत्ता, पुयावइत्ता, बुआवइत्ता ॥

१८३ तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—ओवातपव्वज्जा[4], अक्खातपव्वज्जा, संगारपव्वज्जा ॥

णियंठ-पद

१८४ तओ णियंठा णोसण्णोवउत्ता पण्णत्ता, तं जहा—पुलाए, णियंठे, सिणाए ॥

१८५. तओ णियंठा सण्ण[5]-णोसण्णोवउत्ता पण्णत्ता, तं जहा—बउसे, पडिसेवणा-कुसीले[6], कसायकुसीले ॥

सेहभूमि-पद

१८६ तओ सेहभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा। उक्कोसा छम्मासा, मज्झिमा चउमासा, जहण्णा सत्तराइंदिया ॥

---

१ सं० पा०—एसो चेव गमो णेयव्वो जाव केवलणाणंति।

२ सं० पा०—एवं मोहे मूढा।

३ द्रष्टव्यम्—ठा० ४।५७१ सूत्रम्।

४ अववात° (क)।

५ सन्नि (ख)।

६ कुसीले (ग)।

थेरभूमी-पद

१८७ तओ थेरभूमीओ पण्णत्ताओ, त जहा—जातिथेरे, सुयथेरे, परियायथेरे ।
सट्ठिवासजाए समणे णिग्गथे जातिथेरे, ठाणसमवायधरे ण समणे णिग्गथे सुयथेरे, वीसवासपरियाए ण समणे णिग्गथे परियायथेरे ।।

गंता-अगंता-पद

१८८ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुमणे, दुम्मणे, णोसुमणे-णोदुम्मणे ।।

१८९ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—गता णामेगे सुमणे भवति, गता णामेगे दुम्मणे भवति, गता णामेगे णोसमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

१९० तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा –जामीतेगे सुमणे भवति, जामीतेगे दुम्मणे भवति, जामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

१९१ [1]°तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जाइस्सामीतेगे सुमणे भवति, जाइस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, जाइस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति° ।।

१९२. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अगता णामेगे सुमणे भवति, अगता णामेगे दुम्मणे भवति, अगता णामेगे णोसुमण-णोदुम्मणे भवति ।।

१९३ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण जामि एगे सुमणे भवति, ण जामि एगे दुम्मणे भवति, ण जामि एगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

१९४ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण जाइस्सामि[2] एगे सुमणे भवति, ण जाइस्सामि एगे दुम्मणे भवति, ण जाइस्सासि एगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

आगता-अणागता-पद

१९५ [3]°तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—आगता णामेगे सुमणे भवति, आगता णामेगे दुम्मणे भवति, आगता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

१९६ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—एमीतेगे सुमणे भवति, एमीतेगे दुम्मणे भवति, एमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

१९७ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—एस्सामीतेगे सुमणे भवति, एस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, एस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति °।।

१९८ [4]°तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अणागता णामेगे सुमण भवति, अणागता णामेगे दुम्मणे भवति, अणागता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

---

१ स० पा० —एव जाइस्सामीतेगे सुमणे भवति । भवति ३ एगे सुमणे भवति ।

२ जामिस्सामि (क, ग) ।

३ स० पा०—एव आगता णामेगे सुमणे

४ स० पा०—एव एएण अभिलावेण—

१९९ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण एमीतेगे सुमणे भवति, ण एमीतेगे दुम्मणे भवति, ण एमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२०० तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण एस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण एस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण एस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

चिट्ठित्ता-अचिट्ठित्ता-पद

२०१ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—चिट्ठित्ता णामेगे सुमणे भवति, चिट्ठित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, चिट्ठित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२०२ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—चिट्ठामीतेगे सुमणे भवति, चिट्ठामीतेग दुम्मणे भवति, चिट्ठामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२०३ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—चिट्ठिस्सामीतेगे सुमणे भवति, चिट्ठिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, चिट्ठिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२०४ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अचिट्ठित्ता णामेगे सुमणे भवति, अचिट्ठित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अचिट्ठित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२०५ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण चिट्ठामीतेगे सुमणे भवति, ण चिट्ठामीतेगे दुम्मणे भवति, ण चिट्ठामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२०६ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण चिट्ठिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण चिट्ठिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण चिट्ठिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

णिसिइत्ता-अणिसिइत्ता-पद

२०७ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—णिसिइत्ता णामेगे सुमणे भवति, णिसिइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, णिसिइत्ता णामेग णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

सगहणी गाहा—

गता य अगता य,
आगता खलु तहा अणागता ।
चिट्ठित्तमचिट्ठित्ता,
णिसितित्ता चेव णो चेव ।।१।।
हता य अहता य,
छिदित्ता खलु तहा अछिदित्ता ।
बूतित्ता अबूतित्ता,
भासित्ता चेव णो चेव ।।२।।
दच्चा य अदच्चा य,
भुजित्ता खलु तहा अभुजित्ता ।
लभित्ता अलभित्ता,
पिवइत्ता चेव णो चेव ।।३।।
सुतित्ता असुतित्ता,
जुज्झित्ता खलु तहा अजुज्झित्ता ।
जतित्ता अजयित्ता य,
पराजिणित्ता चेव णो चेव ।।४।।
सद्दा रूवा गधा,
रसा य फासा तहेव ठाणा य ।
णिस्सीलस्स गरहिता,
पसत्था पुण सीलवतस्स ।।५।।
एवमिक्केक्के तिण्णि उ तिण्णि उ आलावगा भाणियव्वा ।

२०८ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—णिसीदामीतेगे सुमणे भवति, णिसीदामीतेगे दुम्मणे भवति, णिसीदामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२०९ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—णिसीदिस्सामीतेगे सुमणे भवति, णिसीदिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, णिसीदिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२१० तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अणिसिइत्ता णामेगे सुमणे भवति, अणिसिइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अणिसिइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२११ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा —ण णिसीदामीतेगे सुमणे भवति, ण णिसीदामीतेगे दुम्मणे भवति, ण णिसीदामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२१२ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण णिसीदिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण णिसीदिस्सामोतेगे दुम्मणे भवति, ण णिसीदिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

हता-अहता-पद

२१३ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—हता णामेगे सुमणे भवति, हता णामेगे दुम्मणे भवति, हता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२१४ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—हणामीतेगे सुमणे भवति, हणामीतेगे दुम्मणे भवति, हणामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२१५ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—हणिस्सामीतेगे सुमणे भवति, हणिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, हणिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२१६ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा – अहता णामेगे सुमणे भवति, अहता णामेगे दुम्मणे भवति, अहता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२१७ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण हणामीतेगे सुमणे भवति, ण हणामीतेगे दुम्मणे भवति, ण हणामोतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२१८ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण हणिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण हणिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण हणिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

छिंदित्ता-अछिंदित्ता-पद

२१९ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—छिंदित्ता णामेगे सुमणे भवति, छिंदित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, छिंदित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२२० तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा —छिंदामीतेगे सुमणे भवति, छिंदामीतेगे दुम्मणे भवति, छिंदामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२२१ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—छिंदिस्सामीतेगे सुमणे भवति, छिंदिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, छिंदिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२२२ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अच्छिदित्ता णामेगे सुमणे भवति, अछिंदित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अछिंदित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२२३ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण छिंदामीतेगे सुमणे भवति, ण छिंदामीतेगे दुम्मणे भवति, ण छिंदामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२२४ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण छिंदिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण छिंदिस्सामीनेगे दुम्मणे भवति, ण छिंदिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

वूइत्ता-अवूइत्ता-पद

२२५ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—वूइत्ता णामेगे सुमणे भवति, वूइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, वूइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२२६ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—वेमीतेगे सुमणे भवति, वेमीतेगे दुम्मणे भवति, वेमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२२७ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—वोच्छामीतेगे सुमणे भवति, वोच्छामीतेगे दुम्मणे भवति, वोच्छामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२२८ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अवूइत्ता णामेगे सुमणे भवति, अवूइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अवूइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२२९ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण वेमोतेगे सुमणे भवति, ण वेमीतेगे दुम्मणे भवति, ण वेमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२३० तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण वोच्छामीतेगे सुमणे भवति, ण वोच्छामीतेगे दुम्मणे भवति, ण वोच्छामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

भासित्ता-अभासित्ता-पदं

२३१ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—भासित्ता णामेगे सुमणे भवति, भासित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, भासित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२३२ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—भासामीतेगे सुमणे भवति, भासामीतेगे दुम्मणे भवति, भासामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२३३ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—भासिस्सामीतेगे सुमणे भवति, भासिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, भासिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२३४ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अभासित्ता णामेगे सुमणे भवति, अभासित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अभासित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२३५ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण भासामीतेगे सुमणे भवति, ण भासामीतेगे दुम्मणे भवति, ण भासामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२३६ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण भासिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण भासिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण भासिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

दच्चा-अदच्चा-पद

२३७ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा - दच्चा णामेगे सुमणे भवति, दच्चा णामेगे दुम्मणे भवति, दच्चा णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२३८ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—देमीतेगे सुमणे भवति, देमीतेगे दुम्मणे भवति, देमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२३९ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दासामीतेगे सुमणे भवति, दासामीतेगे दुम्मणे भवति, दासामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२४० तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अदच्चा णामेगे सुमणे भवति, अदच्चा णामेगे दुम्मणे भवति, अदच्चा णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२४१ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण देमीतेगे सुमणे भवति, ण देमीतेगे दुम्मणे भवति, ण देमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२४२. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण दासामीतेगे सुमणे भवति, ण दासामीतेगे दुम्मणे भवति, ण दासामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

भुजित्ता-अभुजित्ता-पदं

२४३ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—भुजित्ता णामेगे सुमणे भवति, भुजित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, भुजित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२४४ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—भुजामीतेगे सुमणे भवति, भुजामीतेगे दुम्मणे भवति, भुजामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२४५ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—भुजिस्सामीतेगे सुमणे भवति, भुजिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, भुजिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२४६ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अभुजित्ता णामेगे सुमणे भवति, अभुजित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अभुजित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२४७ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण भुजामीतेगे सुमणे भवति, ण भुजामीतेगे दुम्मणे भवति, ण भुजामीतेगे णोसुमणे णोदुम्मणे भवति ।।

२४८ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण भुजिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण भुजिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण भुजिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

लभित्ता-अलभित्ता-पद

२४९ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—लभित्ता णामेगे सुमणे भवति, लभित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, लभित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२५० तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—लभामीतेगे सुमणे भवति, लभामीतेगे दुम्मणे भवति, लभामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२५१. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—लभिस्सामीतेगे सुमणे भवति, लभिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, लभिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२५२ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अलभित्ता णामेगे सुमणे भवति, अलभित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अलभित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२५३ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण लभामीतेगे सुमणे भवति, ण लभामी-तेगे दुम्मणे भवति, ण लभामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२५४ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण लभिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण लभिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण लभिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

पिबित्ता-अपिबित्ता-पद

२५५ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पिवित्ता णामेगे सुमणे भवति, पिवित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, पिवित्ता णामगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२५६ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पिवामीतेगे सुमणे भवति, पिवामीतेगे दुम्मणे भवति, पिवामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२५७ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पिविस्सामीतेगे सुमणे भवति, पिविस्सामी-तेगे दुम्मणे भवति, पिविस्सामीतेगे णोसमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२५८ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अपिवित्ता णोमेगे सुमणे भवति, अपिबित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अपिवित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२५९ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण पिवामीतेगे सुमणे भवति, ण पिवामी-तेगे दुम्मणे भवति, ण पिवामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२६० तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण पिविस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण पिविस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण पिविस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

सुइत्ता-असुइत्ता-पदं

२६१ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुइत्ता णामेगे सुमणे भवति, सुइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, सुइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२६२ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुआमीतेगे सुमणे भवति, सुआमीतेगे दुम्मणे भवति, सुआमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२६३ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुइस्सामीतेगे सुमणे भवति, सुइस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, सुइस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२६४ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—असुइत्ता णामेगे सुमणे भवति, असुइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, असुइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२६५ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण सुआमीतेगे सुमणे भवति, ण सुआमी-तेगे दुम्मणे भवति, ण सुआमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

२६६ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण सुइस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण सुइस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण सुइस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ।।

जुज्झित्ता-अजुज्झित्ता-पदं

२६७ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जुज्झित्ता णामेगे सुमणे भवति, जुज्झित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, जुज्झित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२६८ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा--जुज्झामीतेगे सुमणे भवति, जुज्झामीतेगे दुम्मणे भवति, जुज्झामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२६९ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—-जुज्झिस्सामीतेगे सुमणे भवति, जुज्झिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, जुज्झिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२७० तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अजुज्झित्ता णामेगे सुमणे भवति, अजुज्झित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अजुज्झित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२७१ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा ण जुज्झामीतेगे सुमणे भवति, ण जुज्झामीतेगे दुम्मणे भवति, ण जुज्झामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२७२ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण जुज्झिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण जुज्झिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण जुज्झिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

जइत्ता-अजइत्ता-पद

२७३ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जइत्ता णामेगे सुमणे भवति, जइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, जइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२७४ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जिणामीतेगे सुमणे भवति, जिणामीतेगे दुम्मणे भवति, जिणामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२७५ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जिणिस्सामीतेगे सुमणे भवति, जिणिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, जिणिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२७६ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अजइत्ता णामेगे सुमणे भवति, अजइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, अजइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२७७ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण जिणामीतेगे सुमण भवति, ण जिणामीतेगे दुम्मणे भवति, ण जिणामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२७८ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण जिणिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण जिणिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण जिणिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

पराजिणित्ता-अपराजिणित्ता-पद

२७९ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पराजिणित्ता णामेगे सुमणे भवति, पराजिणित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, पराजिणित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२८० तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पराजिणामीतेगे सुमणे भवति, पराजिणामीतेगे दुम्मणे भवति, पराजिणामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२८१ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पराजिणिस्सामीतेगे सुमणे भवति, पराजिणिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, पराजिणिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२८२ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अपराजिणित्ता णामेगे सुमणे भवति, अपराजिणित्ता णामगे दुम्मणे भवति, अपराजिणित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२८३ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण पराजिणामीतेगे सुमणे भवति, ण पराजिणामीतेगे दुम्मणे भवति, ण पराजिणामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२८४ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—ण पराजिणिस्सामीतेगे सुमणे भवति, ण पराजिणिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, ण पराजिणिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति° ॥

सुणेत्ता-असुणेत्ता-पद

२८५ [1]•तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सद्द सुणेत्ता णामेगे सुमणे भवति, सद्द सुणेत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, सद्द सुणेत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२८६ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सद्द सुणामीतेगे सुमणे भवति, सद्द सुणामीतेगे दुम्मणे भवति, सद्द सुणामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२८७ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सद्द सुणिस्सामीतेगे सुमणे भवति, सद्द सुणिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, सद्द सुणिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२८८ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सद्द असुणेत्ता णामेगे सुमणे भवति, सद्द असुणेत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, सद्द असुणेत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२८९ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सद्द ण सुणामीतेगे सुमणे भवति, सद्द ण सुणामीतेगे दुम्मणे भवति, सद्द ण सुणामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२९० तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सद्द ण सुणिस्सामीतेगे सुमणे भवति, सद्द ण सुणिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, सद्द ण सुणिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति° ॥

पासित्ता-अपासित्ता-पद

२९१ [2]•तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—रूव पासित्ता णामेगे सुमणे भवति, रूव पासित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, रूव पासित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२९२ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—रूव पासामीतेगे सुमणे भवति, रूव पासामीतेगे दुम्मणे भवति, रूव पासामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

---

१ म० पा०—सद्द सुणेत्ताणामेगे सुमणे भवति ३ एव सुणामीति ३ एव सुणेस्सामीति ३ एव असुणेत्ताणामेगे सु ३ ण सुणामीति ३ ण सुणिस्सामीति ।

२ स० पा०—एव रूवाइ गधाइ रसाइ फासाइ एक्केक्के छ-छ आलावगा भाणियव्वा ।

२९३. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—रूव पासिस्सामीतेगे सुमणे भवति, रूव पासिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, रूव पासिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२९४ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—रूव अपासित्ता णामेगे सुमणे भवति, रूव अपासित्ता णामेगे दुम्मणे भवति, रूव अपासित्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२९५ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—रूव ण पासामीतेगे सुमणे भवति, रूव ण पासामीतेगे दुम्मणे भवति, रूव ण पासामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२९६ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—रूव ण पासिस्सामीतेगे सुमणे भवति, रूव ण पासिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, रूव ण पासिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

अग्घाइत्ता-अणग्घाइत्ता-पद

२९७ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—गध अग्घाइत्ता णामेगे सुमणे भवति, गध अग्घाइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, गध अग्घाइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२९८ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—गध अग्घामीतेगे सुमणे भवति, गध अग्घामीतेगे दुम्मणे भवति, गध अग्घामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

२९९ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—गध अग्घाइस्सामीतेगे सुमणे भवति, गध अग्घाइस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, गध अग्घाइस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

३०० तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—गध अणग्घाइत्ता णामेगे सुमणे भवति, गध अणग्घाइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, गध अणग्घाइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

३०१ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—गध ण अग्घामीतेगे सुमणे भवति, गध ण अग्घामीतेगे दुम्मणे भवति, गध ण अग्घामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

३०२ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—गध ण अग्घाइस्सामीतेगे सुमणे भवति, गध ण अग्घाइस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, गध ण अग्घाइस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

आसाइत्ता-अणासाइत्ता-पद

३०३ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—रस आसाइत्ता णामेगे सुमणे भवति, रस आसाइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, रस आसाइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

३०४ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—रस आसादेमीतेगे सुमणे भवति, रस आसादेमी तेगे दुम्मणे भवति, रस आसादेमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

३०५ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रसं आसादिस्सामीतेगे सुमणे भवति, रसं आसादिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, रसं आसादिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

३०६ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रसं अणासाइत्ता णामेगे सुमणे भवति, रसं अणासाइत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, रसं अणासाइत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

३०७ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रसं ण आसादेमीतेगे सुमणे भवति, रसं ण आसादेमीतेगे दुम्मणे भवति, रसं ण आसादेमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

३०८ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रसं ण आसादिस्सामीतेगे सुमणे भवति, रसं ण आसादिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, रसं ण आसादिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

फासेत्ता-अफासेत्ता-पद

३०९ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—फासं फासेत्ता णामेगे सुमणे भवति, फासं फासेत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, फासं फासेत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

३१० तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—फासं फासेमीतेगे सुमणे भवति, फासं फासेमीतेगे दुम्मणे भवति, फासं फासेमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

३११ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—फासं फासिस्सामीतेगे सुमणे भवति, फासं फासिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, फासं फासिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति॥

३१२ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—फासं अफासेत्ता णामेगे सुमणे भवति, फासं अफासेत्ता णामेगे दुम्मणे भवति, फासं अफासेत्ता णामेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

३१३ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—फासं ण फासेमीतेगे सुमणे भवति, फासं ण फासेमीतेगे दुम्मणे भवति, फासं ण फासेमीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति ॥

३१४ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—फासं ण फासिस्सामीतेगे सुमणे भवति, फासं ण फासिस्सामीतेगे दुम्मणे भवति, फासं ण फासिस्सामीतेगे णोसुमणे-णोदुम्मणे भवति° ॥

गरहिअ-पद

३१५ तओ ठाणा णिसीलस्स णिग्गुणस्स णिम्मेरस्स णिप्पच्चक्खाणपोसहोववासस्स गरहिता भवति, तं जहा—अस्सिं लोगे गरहिते भवति, उववाते[1] गरहिते भवति, आयाती गरहिता भवति ॥

---

१ अववाते (क, ग) ।

पसत्थ-पद

३१६ तओ ठाणा 'सुसीलस्स सुव्वयस्स'[1] सगुणस्स समेरस्स[2] सपच्चक्खाणपोसहोववासस्स पसत्था भवति, त जहा—अस्सि लोगे पसत्थे भवति, उववाए पसत्थे भवति, आजाती पसत्था भवति ॥

जीव-पद

३१७ तिविधा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, त जहा—इत्थी, पुरिसा, णपुसगा ॥

३१८ तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, त जहा—सम्मद्दिट्ठी, मिच्छाद्दिट्ठी[3], सम्मामिच्छद्दिट्ठी ॥
अहवा—तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगा, अपज्जत्तगा, णोपज्जत्तगा-णोऽपज्जत्तगा। [4]°परित्ता, अपरित्ता, णोपरित्ता-णोऽपरित्ता। सुहुमा, बायरा, णोसुहुमा-णोबायरा। सण्णी, असण्णी, णोसण्णी-णोअसण्णी। भवी, अभवी, णोभवी-णोऽभवी° ॥

लोगठिती-पद

३१९ तिविधा लोगठिती पण्णत्ता, त जहा—आगासपइट्ठिए वाते, वातपइट्ठिए उदही, उदहीपइट्ठिया पुढवी ॥

दिसा-पद

३२० तओ दिसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—उड्ढा, अहा, तिरिया ॥

३२१ तिहिं दिसाहिं जीवाण गती पवत्तति—उड्ढाए, अहाए, तिरियाए ॥

३२२ [6]°तिहिं दिसाहिं जीवाण°—आगती, वक्कती, आहारे, वुड्ढी, णिवुड्ढी, गतिपरियाए, समुग्घाते, कालसजोगे, दसणाभिगमे, जीवाभिगमे °पण्णत्ते, त जहा—उड्ढाए, अहाए, तिरियाए° ॥

३२३ तिहिं दिसाहिं[7] जीवाण अजीवाभिगमे पण्णत्ते, त जहा—उड्ढाए, अहाए, तिरियाए।

३२४ एव—पचिदियतिरिक्खजोणियाण[8] ॥

३२५ एव—मणुस्साणवि[9] ॥

---

१ ससीलस्स सव्वयस्स (ख)।
२ सुमेरस्स (ख)।
३ मिच्छ° (क, ग)।
४ स० पा०—एव सम्मद्दिट्ठिपरित्ता पज्जत्तग-सुहुमसण्णिभविया य।
५. अहाते (क, ख, ग)।
६ स० पा०—एव।
७ ठाणेहिं (ख)।
८,९ पू०—ठा० ३।३२१-३२३।

तस-थावर-पद

३२६ तिविहा तसा पण्णत्ता, त जहा—तेउकाइया, वाउकाइया, उराला तसा पाणा ॥
३२७ तिविहा थावरा पण्णत्ता, त जहा—पुढविकाइया, आउकाइया वणस्सइकाइया ॥

अच्छेज्जादि-पद

३२८ तओ अच्छेज्जा पण्णत्ता, त जहा—समए, पदेसे, परमाणू ॥
३२९ [1]तओ अभेज्जा पण्णत्ता, त जहा—समए, पदेसे, परमाणू ॥
३३० तओ अडज्भा पण्णत्ता, त जहा—समए, पदेसे, परमाणू ॥
३३१ तओ अगिज्भा पण्णत्ता, त जहा—समए, पदेसे, परमाणू ॥
३३२ तओ अणड्ढा पण्णत्ता, त जहा—समए, पदेसे, परमाणू ॥
३३३ तओ अमज्भा पण्णत्ता, त जहा—समए, पदेसे, परमाणू ॥
३३४ तओ अपएसा पण्णत्ता, त जहा—समए, पदेसे, परमाणू ॥
३३५ तओ अविभाइमा[2] पण्णत्ता, त जहा—समए, पदेसे, परमाणू ॥

दुक्ख-पद

३३६ अज्जोति ! समणे भगव महावीरे गोतमादी समणे निग्गथे आमतेत्ता एव वयासी किंभया पाणा ? समणाउसो !
गोतमादी[3] समणा णिग्गथा समण भगव महावीर उवसकमति, उवसकमित्ता वदति णमसति, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—णो खलु वय देवाणुप्पिया ! एयमट्ठ जाणामो वा पासामो वा। त जदि ण देवाणुप्पिया ! एयमट्ठ णो गिलायति परिकहित्तए, तमिच्छामो ण देवाणुप्पियाण अतिए एयमट्ठ जाणित्तए।
अज्जोति[4] ! समणे भगव महावीरे गोतमादी समणे निग्गथे आमतेत्ता एव वयासी—दुक्खभया पाणा समणाउसो !
से ण भते ! दुक्खे केण कडे ?
जीवेण कडे पमादेण।
से ण भते ! दुक्खे कह वेइज्जति ?
अप्पमाएण ॥

३३७ अण्णउत्थिया ण भते ! एव आइक्खति एव भासति एव पण्णवेंति एव परूवेंति कहण्ण समणाण णिग्गथाण किरिया कज्जति ?

---

१ स० पा०—एवमभेज्जा अडज्भा अगिज्भा अणड्ढा अमज्भा अपएसा।
२ अविभातिमा (क, ख, ग)।
३ गोयमाती (क, ख, ग)।
४ °त्ति (ग)।

तत्थ जा सा कडा कज्जइ, णो त पुच्छति। तत्थ जा सा कडा णो कज्जति, णो त पुच्छति। तत्थ जा सा अकडा णो कज्जति, णो त पुच्छति। तत्थ जा सा अकडा कज्जति, णो त पुच्छति। से एव वत्तव्व सिया[१]?

अकिच्च दुक्ख, अफुस दुक्ख, अकज्जमाणकड[२] दुक्ख। अकट्टु-अकट्टु पाणा भूया जीवा सत्ता[३] वेयण वेदेतित्ति वत्तव्व।

जे ते एवमाहसु, मिच्छा ते एवमाहसु। अह पुण एवमाइक्खामि एव भासामि एव पण्णवेमि एव परूवेमि—किच्च दुक्ख, फुस[४] दुक्ख, कज्जमाणकड[५] दुक्ख। कट्टु-कट्टु 'पाणा भूया जीवा सत्ता'[६] वेयण वेयतित्ति वत्तव्वय सिया॥

तइओ उद्देसो

आलोयणा-पद

३३८ तिहि ठाणेहि मायी माय कट्टु णो आलोएज्जा, णो पडिक्कमेज्जा, णो णिदेज्जा, णो गरिहेज्जा, णो विउट्टेज्जा, णो विसोहेज्जा, णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, णो अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म पडिवज्जेज्जा, त जहा—अकरिसु[७] वाह, करेमि वाह, करिस्सामि वाह॥

३३९ तिहि ठाणेहि मायी माय कट्टु णो आलोएज्जा, णो पडिक्कमेज्जा[८], °णो णिदेज्जा, णो गरिहेज्जा, णो विउट्टेज्जा, णो विसोहेज्जा, णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, णो अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म° पडिवज्जेज्जा, त जहा—अकित्ती वा मे सिया[९], अवण्णे वा मे सिया, अविणए[१०] वा मे सिया॥

३४० तिहि ठाणेहि मायी माय कट्टु णो आलोएज्जा[११], °णो पडिक्कमेज्जा, णो णिदेज्जा, णो गरिहेज्जा, णो विउट्टेज्जा, णो विसोहेज्जा, णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, णो अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म° पडिवज्जेज्जा, त जहा—

---

१ सिता (क, ख, ग)।
२ × (ग)।
३ जीवा सत्ता भूता पाणा (क), पाणा भूता (ग)।
४ फुस्स (ख)।
५ किज्ज° (क)।
६ जीवा सत्ता भूता पाणा (क), पाणा भूता (ग)।
७ ठा० ८।१० सूत्रे 'करिसु' पाठो विद्यते। प्राय 'करिसु' 'चिणिसु' इत्यादि प्रयोगा एव लभ्यन्ते, क्वचिदेव 'अकरिसु' 'अभविसु' इत्यादि प्रयोगा सन्ति।
८ स० पा०—णो पडिक्कमेज्जा जाव पडिवज्जेज्जा।
९ सिता (क, ख, ग)।
१० अविणते (क, ख, ग)।
११ स० पा०—णो आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा।

कित्ती वा मे परिहाइस्सति, जसे वा मे परिहाइस्सति, पूयासक्कारे वा मे परिहाइस्सति ।।

३४१ तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा[1], °णिंदेज्जा, गरिहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेज्जा, तं जहा—माइस्स णं अस्सिं लोगे गरहिए भवति, उववाए गरहिए भवति, आयाती गरहिया भवति ।।

३४२ तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा[2], °पडिक्कमेज्जा णिंदेज्जा, गरिहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेज्जा, तं जहा—अमाइस्स णं अस्सिं लोगे पसत्थे भवति, उववाते पसत्थे भवति, आयाती[3] पसत्था भवति ।।

३४३ तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा[4], °पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरिहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेज्जा, तं जहा—णाणट्ठयाए, दंसणट्ठयाए, चरित्तट्ठयाए ।।

सुयधर-पद

३४४ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुत्तधरे, अत्थधरे, तदुभयधरे ।।

उवधि-पद

३४५ कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा तओ वत्थाइं धारित्तए वा परिहरित्तए वा, तं जहा—'जंगिए, भंगिए, खोमिए'[5] ।।

३४६ कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा तओ पायाइं धारित्तए वा परिहरित्तए वा, तं जहा—लाउयपादे वा, दारुपादे वा, मट्टियापादे वा ।।

३४७ तिहिं ठाणेहिं वत्थं धरेज्जा, तं जहा—हिरिपत्तियं, दुगुंछापत्तियं, परीसहवत्तियं ।।

आयरक्ख-पद

३४८ तओ आयरक्खा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएत्ता भवति, तुसिणीए वा सिया, उट्ठित्ता वा आताए एगंतमंतमवक्कमेज्जा ।।

वियड-दत्ति-पद

३४९ णिग्गंथस्स णं गिलायमाणस्स कप्पति तओ वियडदत्तीओ पडिग्गाहित्तते, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा ।।

---

१ म०पा०—पडिक्कमेज्जा जाव पडिवज्जेज्जा ।
२ स० पा०—आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा ।
३ आयाय (ग) ।
४ स० पा०—आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा ।
५ जगिते भगिते खोमिते (क, ख, ग), जगिय भगिय खोमिय (वृ) ।

विसभोग-पद

३५० तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गथे साहम्मिय सभोगिय विसभोगिय[1] करेमाणे णातिक्कमति, त जहा—सय वा दट्ठु, सड्ढयस्स[2] वा णिसम्म, तच्च मोस आउट्टति, चउत्थ णो आउट्टति ॥

अणुण्णादि-पद

३५१ तिविधा अणुण्णा पण्णत्ता, त जहा—आयरियत्ताए, उवज्झायत्ताए, गणित्ताए[3] ॥

३५२ तिविधा समणुण्णा पण्णत्ता, त जहा - आयरियत्ताए, उवज्झायत्ताए, गणित्ताए ॥

३५३ [4]°तिविधा उवसपया पण्णत्ता, त जहा—आयरियत्ताए, उवज्झायत्ताए, गणित्ताए ॥

३५४ तिविधा विजहणा पण्णत्ता, त जहा - आयरियत्ताए, उवज्झायत्ताए, गणित्ताए° ॥

वयण-पद

३५५ तिविहे वयणे पण्णत्ते, त जहा—तव्वयणे, तदण्णवयणे, णोअवयणे ॥

३५६ तिविहे अवयणे पण्णत्ते, त जहा—णोतव्वयणे[5], णोतदण्णवयणे, अवयणे ॥

मण-पद

३५७ तिविहे मणे पण्णत्ते, त जहा—तम्मणे, तयण्णमणे, णोअमणे।

३५८ तिविहे अमणे पण्णत्ते, त जहा—णोतम्मणे, णोतयण्णमणे, अमणे ॥

वुट्ठि-पद

३५९ तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठीकाए सिया, त जहा—

१ तस्सि च ण देससि वा पदेससि वा णो वहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताते वक्कमति विउक्कमति चयति उववज्जति ।

२ देवा णागा जक्खा भूता णो सम्ममाराहिता भवति, तत्थ[6] समुट्ठिय उदग-पोग्गल[7] परिणत वासितुकाम अण्ण देस साहरति ।

३ अब्भवद्दलग च ण समुट्ठित परिणत वासितुकाम वाउकाए विधुणति । इच्चेतेहि तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिगाए सिया ॥

---

१ विसभोतिय (क, ख) ।

२ सड्ढियस्स (क, ख), सड्ढस्स (क्व) ।

३ गणित्ताते (क, ख, ग) ।

४ स० पा०—एव उवसपया एव विजहणा ।

५ तवयणे (ख) ।

६ अन्नत्थ (ख) ।

७ °पोग्गल वा (क) ।

३६० तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठीकाए सिया, तं जहा—
१ तंसि[1] च णं देसंसि वा पदेसंसि[2] वा बहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमंति[3] विउक्कमंति चयंति उववज्जंति।
२ देवा णागा जक्खा भूता सम्ममाराहिता भवंति, अण्णत्थ समुट्ठितं उदग-पोग्गलं परिणयं वासिउकामं तं देसं साहरंति।
३ अब्भवद्दलगं च णं समुट्ठितं परिणयं वासितुकामं णो वाउआए विधुणति।
इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठिकाए सिआ॥

अहुणोववण्ण-देव-पद

३६१ तिहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए, तं जहा[4]—
१ अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववण्णे, से णं माणुस्सए कामभोगे णो आढाति, णो परियाणाति, णो 'अट्ठं बंधति'[5], णो णियाणं पगरेति, णो ठिइपकप्पं पगरेति।
२ अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववण्णे, तस्स णं माणुस्सए पेम्मे वोच्छिण्णे दिव्वे संकंते भवति।
३ अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते[6] °गिद्धे गढिते° अज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवति—'इण्हिं गच्छं मुहुत्तं गच्छं'[7], तेणं कालेणमप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति।
इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए॥

३६२ तिहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, संचाएइ हव्वमागच्छित्तए—
१ अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते अगिद्धे अगढिते अणज्झोववण्णे, तस्स णमेवं भवति—अत्थि णं मम माणुस्सए भवे आयरिएति वा उवज्झाएति वा पवत्तीति वा थेरेति वा गणीति वा गणधरेति वा गणावच्छेदेति वा, जेसिं पभावेणं मए इमा एतारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुती दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागते, तं गच्छामि णं ते

---

१ तंसि (ग)।
२ पतेसंसि (क, ख, ग)।
३ उक्कमंति (ग)।
४ × (क, ग)।
५ अट्टंति (ग)।
६ सं० पा०—मुच्छिते जाव अज्झोववण्णे।
७ इयण्हिं° (ख), इयण्हि गच्छं मुहुत्तागच्छं (ग), इयण्हिं न गच्छं (वृ)।

भगवते वदामि णमस्सामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासामि[1]।

२ अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए °अगिद्धे अगढिते° अणज्झोववण्णे[2], तस्स ण एव भवति—'एस ण[3] माणुस्सए भवे णाणीति वा तवस्सीति वा अतिदुक्कर-दुक्करकारगे, त गच्छामि ण ते भगवते वदामि णमसामि[4] °सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवय चेइय° पज्जुवासामि।

३ अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु °दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए अगिद्धे अगढिते° अणज्झोववण्णे[5], तस्स णमेव भवति - अत्थि ण मम माणुस्सए भवे माताति वा[6] °पियाति वा भायाति वा भगिणीति वा भज्जाति वा पुत्ताति वा धूयाति वा° सुण्हाति[7] वा, त गच्छामि ण तेसिमतिय पाउब्भवामि, पासतु ता मे इम एतारूव दिव्व देविड्ढि दिव्व देवजुति दिव्व देवाणुभाव लद्ध पत्त अभिसमण्णागय।

इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए, सचाएति हव्वमागच्छित्तए॥

देवस्स मणट्ठिइ-पदं

३६३ तओ ठाणाइ देवे पीहेज्जा, त जहा—माणुस्सग भव, आरिए खेत्ते जम्म, सुकुलपच्चायातिं[8]॥

३६४ तिहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेज्जा, त जहा—

१ अहो! ण मए सते बले सते वीरिए सते पुरिसक्कार-परक्कमे खेमसि सुभिक्खसि आयरिय-उवज्झाएहिं विज्जमाणेहि कल्लसरीरेण णो बहुए[9] सुते अहीते।

२ अहो! ण मए इहलोगपडिबद्धेण परलोगपरमुहेण विसयतिसितेण णो दीहे सामण्णपरियाए अणुपालिते।

३ अहो! ण मए इड्ढि-रस-साय[10]-गरुएण भोगासंसगिद्धेण[11] णो विसुद्धे चरित्ते फासिते।

इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेज्जा॥

---

१ °सेमि (क, ख, ग)।
२ स० पा०—अमुच्छिए जाव अणज्झोववण्णे।
३ एयसि ण (क)।
४ स० पा०—णमसामि जाव पज्जुवासामि।
५ स० पा०—देवलोगेसु जाव अणज्झोववण्णे।
६ स० पा०—माताति वा जाव सुण्हाति।
७ मुहीति (ग)।
८ सुकुले° (ख)।
९ बहुते (क, ख, ग)।
१० साया (ख)।
११ भोगामिसगिद्धेण (वृपा)।

३६५ तिहिं ठाणेहिं देवे चइस्सामित्ति जाणइ, त जहा—विमाणाभरणाइ णिप्पभाइ पासित्ता, कप्परुक्खग मिलायमाण पासित्ता, अप्पणो तेयलेस्स परिहायमाणि जाणित्ता—इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं देवे चइस्सामित्ति जाणइ ॥

३६६ तिहि ठाणेहिं देवे उव्वेगमागच्छेज्जा, त जहा—

१ अहो ! ण मए इमाओ एतारूवाओ दिव्वाओ देविड्ढीओ दिव्वाओ देवजुतीओ दिव्वाओ देवाणुभावाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागताओ चइयव्व[1] भविस्सति ।

२ अहो ! ण मए माउओय पिउसुक्क त तदुभयससट्ठ तप्पढमयाए आहारो आयारेयव्वो भविस्सति ।

३ अहो ! ण मए कलमल-जबालाए असुईए उव्वेयणियाए[2] भीमाए गब्भ-वसहीए वसियव्व भविस्सइ ।

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं देवे उव्वेगमागच्छेज्जा ॥

विमाण-पद

३६७ तिसठिया विमाणा पण्णत्ता, त जहा—वट्टा, तसा, चउरसा ।

१ तत्थ ण जे ते वट्टा विमाणा, ते ण पुक्खरकण्णियासठाणसठिया सव्वओ समता पागार-परिक्खित्ता एगदुवारा पण्णत्ता ।

२ तत्थ ण जे ते तसा विमाणा, ते ण सिंघाडगसठाणसठिया दुहतोपागार-परिक्खित्ता एगतो वेइया[3]-परिक्खित्ता तिदुवारा पण्णत्ता ।

३ तत्थ ण जे ते चउरसा[4] विमाणा, ते ण अक्खाडगसठाणसठिया सव्वतो समता वेइया-परिक्खित्ता चउदुवारा पण्णत्ता ॥

३६८ तिपतिट्ठिया विमाणा पण्णत्ता, त जहा—घणोदधिपतिट्ठिता, घणवातपइट्ठिता, ओवासतरपइट्ठिता ॥

३६९ तिविधा विमाणा पण्णत्ता, त जहा—अवट्ठिता[5], वेउव्विता, पारिजाणिया[6] ॥

दिट्ठि-पद

३७० तिविधा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—सम्मादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छा-दिट्ठी ।

३७१ एव—विगलिंदियवज्ज जाव[7] वेमाणियाण ॥

---

१ चवियव्व (क), चतियव्व (ख, ग) ।

२ उव्वेवणितातें (क, ख, ग) ।

३ वेतिता (क, ख, ग) ।

४ चउरस (क, ग) ।

५ उवट्ठिता (क) ।

६ परिजाणिता (क, ख, ग) ।

७ ठा० १।१४२-१५१, १६०-१६३ ।

दुग्गति-सुगति-पद

३७२ तओ दुग्गतीओ पण्णत्ताओ, त जहा—णेरइयदुग्गती, तिरिक्खजोणियदुग्गती[1], मणुयदुग्गती ॥

३७३ तओ सुगतीओ पण्णत्ताओ, त जहा—सिद्धसोगती, देवसोगती, मणुस्ससोगती ॥

३७४ तओ दुग्गता पण्णत्ता, त जहा—णेरइयदुग्गता, तिरिक्खजोणियदुग्गता, मणुस्स-दुग्गता ॥

३७५. तओ सुगता पण्णत्ता, त जहा—सिद्धसोगता, देवसुग्गता, मणुस्ससुग्गता ।

तव-पाणग-पदं

३७६ चउत्थभत्तियस्स ण भिक्खुस्स कप्पति तओ पाणगाइ पडिगाहित्तए, त जहा—उस्सेइमे[2], ससेइमे[3], चाउलधोवणे ॥

३७७ छट्ठभत्तियस्स ण भिक्खुस्स कप्पति तओ पाणगाइ पडिगाहित्तए, त जहा—तिलोदए, तुसोदए, जवोदए ॥

३७८. अट्ठमभत्तियस्स ण भिक्खुस्स कप्पति तओ पाणगाइ पडिगाहित्तए, त जहा—आयामए[4], सोवीरए[5], सुद्धवियडे ॥

पिंडेसणा-पद

३७९ तिविहे उवहडे पण्णत्ते, त जहा—फलिओवहडे[6], सुद्धोवहडे, ससट्ठोवहडे ॥

३८० तिविहे ओग्गहिते[7] पण्णत्ते, त जहा—ज च ओगिण्हति, ज च साहरति, ज च आसगसि[8] पक्खिवति ॥

ओमोयरिया-पदं

३८१ तिविधा ओमोयरिया पण्णत्ता, त जहा—उवगरणोमोयरिया, भत्तपाणो-मोदरिया[9], भावोमोदरिया ॥

३८२ उवगरणोमोदरिया तिविहा पण्णत्ता, त जहा—एगे वत्थे, एगे पाते, चियत्तो-वहि-साइज्जणया[10] ॥

णिग्गथ-चरिया-पद

३८३ तओ ठाणा णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा अहियाए[11] असुभाए अखमाए

---

१ तिरियदु° (क), तिरियजो° (ग)।
२ उस्सेतिमे (क, ख, ग)।
३ ससेतिमे (क, ख, ग)।
४. आयामते (क, ख, ग)।
५ सोवीरते (क, ख, ग)।
६ फन° (क)।
७ उवग्गहिते (क)।
८ आसगमि य (क)।
९ °मोदरिता (क, ख, ग)।
१० सातिज्जणता (क, ख, ग)।
११ अभियाते (क), अहियाते (ख, ग)।

अणिस्सेमाए[1] अणाणुगामियत्ताए भवति, त जहा-कूअणता, कक्करणता, अवज्झाणता ।।

३८४ तओ ठाणा णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा हिताए सुहाए खमाए णिस्सेसाए[2] आणुगामिअत्ताए भवति, त जहा—अकूअणता, अकक्करणता, अणवज्झाणता ।।

सल्ल-पद

३८५ तओ सल्ला पण्णत्ता, त जहा—मायासल्ले, णियाणसल्ले, मिच्छादसणसल्ले ।।

तेउलेस्सा-पद

३८६ तिर्हि ठाणेहिं समणे णिग्गथे सखित्त-विउलतेउलेस्से भवति, त जहा—आयावणताए, खतिखमाए, अपाणगेण तवोकम्मेण ।।

भिक्खुपडिमा-पद

३८७ तिमासिय[3] ण भिक्खुपडिम पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पति तओ दत्तीओ भोअणस्स पडिगाहेत्तए, तओ पाणगस्स ।।

३८८ एगरातिय भिक्खुपडिम सम्म अणणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तओ ठाणा अहिताए असुभाए अखमाए[4] अणिस्सेयसाए अणाणुगमियत्ताए भवति, त जहा—उम्माय वा लभिज्जा, दीहकालिय वा रोगातक पाउणेज्जा, केवलीपण्णत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा ।।

३८९ एगरातिय भिक्खुपडिम सम्म अणुपालेमाणस्स अणगारस्स तओ ठाणा हिताए सुभाए खमाए णिस्सेसाए आणुगामियत्ताए भवति, त जहा—ओहिणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा, मणपज्जवणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा, केवलणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा ।।

कम्मभूमी-पद

३९० जबुद्दीवे दीवे तओ कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, त जहा—भरहे, एरवए, महाविदेहे ।।

३९१ एव—धायइसडे दीवे पुरत्थिमद्धे जाव[5] पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे ।।

दसण-पद

३९२ तिविहे दसणे पण्णत्ते, त जहा—सम्मद्दसणे, मिच्छद्दसणे, सम्मामिच्छद्दसणे ।।

३९३ तिविहा रुई[6] पण्णत्ता, त जहा—सम्मरुई, मिच्छरुई, सम्मामिच्छरुई ।।

---

१ अणिस्सेयसाए (क्व) ।

२ णिम्मेसाते (क, ख, ग), णिस्सेयसाए (क्व) ।

३ तिमासित (क, ग), °सिय (ख) ।

४ अक्खते (ख) ।

५ ठा० ३।१०८ ।

६ रुनी (क, ख, ग) ।

पओग-पदं

३६४ तिविधे पओगे पण्णत्ते, त जहा—सम्मपओगे, मिच्छपओगे, सम्मामिच्छपओगे ॥

ववसाय-पदं

३६५ तिविहे ववसाए[1] पण्णत्ते, त जहा—धम्मिए[2] ववसाए, अधम्मिए ववसाए, धम्मियाधम्मिए ववसाए।
अहवा[3]—तिविधे ववसाए पण्णत्ते, त जहा—पच्चक्खे, पच्चइए[4], आणुगामिए ॥
अहवा—तिविधे ववसाए पण्णत्ते, त जहा—इहलोइए, परलोइए[5], 'इहलोइय-परलोइए'[6] ॥

३६६ इहलोइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते, त जहा—लोइए[7], वेइए[8], सामइए[9] ॥

३६७ लोइए ववसाए तिविधे पण्णत्ते, त जहा—अत्थे, धम्मे, कामे ॥

३६८ वेइए[10] ववसाए तिविधे पण्णत्ते, त जहा—रिव्वेदे[11], जउव्वेदे, सामवेदे ॥

३६९ सामइए[12] ववसाए तिविधे पण्णत्ते, त जहा—णाणे, दसणे, चरित्ते ॥

अत्थजोणी-पदं

४०० तिविधा अत्थजोणी पण्णत्ता, त जहा—सामे, दडे[13], भेदे ॥

पोग्गल-पद

४०१ तिविहा पोग्गला पण्णत्ता, त जहा—पओगपरिणता, मीसापरिणता, वीससा-परिणता।

णरग-पदं

४०२ तिपतिट्ठिया णरगा पण्णत्ता, त जहा—पुढविपतिट्ठिया, आगासपतिट्ठिया, आय-पइट्ठिया। णेगम-सगह-ववहाराण पुढविपतिट्ठिया, उज्जुसुतस्स आगासपतिट्ठिया, तिण्ह सद्दणयाण[14] आयपतिट्ठिया ॥

---

१ ववसाते (क, ख, ग)।
२ धम्मिते (क, ख, ग)।
३ अथवा (क)।
४ पच्चतिते (क, ख, ग)।
५ पारलोगिते (क)।
६ इहलोगित-परलोगिते (क, ख, ग)।
७ लोगिते (क, ख, ग)।
८ वेतिते (क, ख, ग)।
९ सामतिते (क, ख, ग)।
१० वेतिगे (क, ख, ग)।
११ रिउव्वेदे (ख)।
१२ सामातिते (क), सामइते (ख, ग)।
१३ पयाणे (वृपा)।
१४ °णताण (क, ख, ग)।

मिच्छत्त-पद

४०३ तिविधे मिच्छत्ते पण्णत्ते, त जहा—अकिरिया[1], अविणए[2], अण्णाणे ॥

४०४ अकिरिया तिविधा पण्णत्ता, त जहा—पओगकिरिया, समुदाणकिरिया, अण्णाणकिरिया ॥

४०५ पओगकिरिया तिविधा पण्णत्ता, त जहा—मणपओगकिरिया, वइपओगकिरिया, कायपओगकिरिया ॥

४०६ समुदाणकिरिया तिविधा पण्णत्ता, त जहा—अणतरसमुदाणकिरिया, परपरसमुदाणकिरिया, तदुभयसमुदाणकिरिया ॥

४०७ अण्णाणकिरिया तिविधा पण्णत्ता, त जहा—मतिअण्णाणकिरिया, सुतअण्णाणकिरिया, विभगअण्णाणकिरिया[3] ॥

४०८ अविणए तिविहे पण्णत्ते, त जहा—देसच्चाई[4], णिरालवणता, णाणापेज्जदोसे ॥

४०९ अण्णाणे तिविधे पण्णत्ते, त जहा—देसण्णाणे, सव्वण्णाणे, भावण्णाणे ॥

धम्म-पदं

४१० तिविहे धम्मे पण्णत्ते, त जहा—सुयधम्मे, चरित्तधम्मे, अत्थिकायधम्मे ॥

उवक्कम-पदं

४११ तिविधे उवक्कमे पण्णत्ते, त जहा—धम्मिए उवक्कमे, अधम्मिए उवक्कम्मे, धम्मियाधम्मिए उवक्कमे ॥
अहवा—तिविधे उवक्कमे पण्णत्ते, त जहा—आओवक्कमे, परोवक्कमे, तदुभयोवक्कमे ॥

४१२ [5]•तिविधे वेयावच्चे पण्णत्ते, त जहा—आयवेयावच्चे, परवेयावच्चे, तदुभयवेयावच्चे ॥

---

१ अकिरिता (क, ख, ग)।

२ अविणते (क, ख, ग)।

३ विभगणाण° (क)।

४ देसच्चाती (क, ग), देसच्चाता (ख)।

५ स० पा०—एव वेयावच्चे अणुग्गहे अणुसट्ठी उवालभे एवमेक्केके तिण्णि-तिण्णि आलावगा जहेव उवक्कमे। अनेन सक्षिप्तपाठेनेति प्रतीयते—आत्म-पर-तदुभय-वैयावृत्त्यादिवत् धार्मिक - अधार्मिक - धार्मिकाधार्मिक - वैयावृत्त्यादि आलापका अपि युज्यन्ते, किन्तु वृत्तिकृता केवल आत्म-पर-तदुभय-भेदा एव स्वीकृता। तथा च वृत्ति—'एव' मिति उपक्रमसूत्रवत् आत्मपरोभयभेदेन वैयावृत्त्यादयो वाच्या (वृत्ति पत्र १४५)। 'एव' मित्यादिना पूर्वोक्तोतिदेशो व्याख्यात, एव चात्राक्षरघटना—यथैवोपक्रमे आत्मपरतदुभयैस्त्रय आलापका उक्ता एवमेकैकस्मिन् वैयावृत्त्यादिसूत्रे ते त्रयस्त्रयो वाच्या (वृत्ति पत्र १४५)।

४१३ तिविधे अणुग्गहे पण्णत्ते, त जहा—आयअणुग्गहे, परअणुग्गहे, तदुभयअणुग्गहे ॥
४१४ तिविधा अणुसट्ठी पण्णत्ता, त जहा—आयअणुसट्ठी, परअणुसट्ठी, तदुभय-अणुसट्ठी ॥
४१५ तिविधे उवालभे पण्णत्ते, त जहा—आओवालभे, परोवालभे, तदुभयोवालभे° ॥

तिवग्ग-पद

४१६ तिविहा कहा पण्णत्ता, त जहा—अत्थकहा, धम्मकहा, कामकहा ॥
४१७ तिविहे विणिच्छए पण्णत्ते, त जहा—अत्थविणिच्छए, धम्मविणिच्छए, कामविणिच्छए ॥
४१८. तहारूव ण भते ! समण वा माहण वा पज्जुवासमाणस्स किंफला पज्जुवास-णया ?

सवणफला ।

से ण भते ! सवणे किंफले ?

णाणफले ।

से ण भते ! णाणे किंफले ?

विण्णाणफले ।

[1]°से ण भते ! विण्णाणे किंफले ?

पच्चक्खाणफले ।

से ण भते ! पच्चक्खाणे किंफले ?

सजमफले ।

से ण भते ! सजमे किंफले !

अणण्हयफले ।

से ण भते ! अणण्हए किंफले ?

तवफले ।

से ण भते ! तवे किंफले ?

वोदाणफले ।

से ण भते ! वोदाणे किंफले ?

अकिरियफले° ।

सा ण भते ! अकिरिया किंफला ?

णिव्वाणफला ।

से ण भते ! णिव्वाणे किंफले ?

सिद्धिगइ-गमण-पज्जवसाण-फले समणाउसो !

---

१ स० पा०—एवमेतेण अभिलावेण इमा गाहा अणुगतव्वा—सवणे णिव्वाणे जाव से ण भते !

चउत्थो उद्देसो

पडिमा-पदं

४१९ पडिमापडिवण्णस्स णं अणगारस्स कप्पंति तओ उवस्सया पडिलेहित्तए, तं जहा—अहे आगमणगिहंसि वा, अहे वियडगिहंसि वा, अहे रुक्खमूलगिहंसि वा ॥

४२० [1]॰पडिमापडिवण्णस्स णं अणगारस्स कप्पंति तओ उवस्सया अणुण्णवेत्तए, तं जहा—अहे आगमणगिहंसि वा, अहे वियडगिहंसि वा, अहे रुक्खमूलगिहंसि वा ॥

४२१ पडिमापडिवण्णस्स णं अणगारस्स कप्पंति तओ उवस्सया उवाइणित्तए, तं जहा—अहे आगमणगिहंसि वा, अहे वियडगिहंसि वा, अहे रुक्खमूल-गिहंसि वा॰ ॥

४२२ पडिमापडिवण्णस्स णं अणगारस्स कप्पंति तओ संथारगा पडिलेहित्तए, तं जहा—पुढविसिला, कट्ठसिला, अहासंथडमेव ॥

४२३ [2]॰पडिमापडिवण्णस्स णं अणगारस्स कप्पंति तओ संथारगा अणुण्णवेत्तए, तं जहा—पुढविसिला, कट्ठसिला, अहासंथडमेव ॥

४२४ पडिमापडिवण्णस्स णं अणगारस्स कप्पंति तओ संथारगा उवाइणित्तए, तं जहा—पुढविसिला, कट्ठसिला, अहासंथडमेव॰ ॥

काल-पदं

४२५. तिविहे काले पण्णत्ते, तं जहा—तीए, पडुप्पण्णे, अणागए ॥

४२६ तिविहे समए पण्णत्ते, तं जहा—तीए, पडुप्पण्णे, अणागए ॥

४२७ एवं—आवलिया आणापाणू थोवे लवे मुहुत्ते अहोरत्ते जाव[3] वाससतसहस्से[4] पुव्वंगे पुव्वे जाव[5] ओसप्पिणी[6] ॥

४२८ तिविधे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तं जहा—तीते, पडुप्पण्णे, अणागए ॥

वयण-पदं

४२९ तिविहे वयणे पण्णत्ते, तं जहा—एगवयणे, दुवयणे, बहुवयणे ।
अहवा—तिविहे वयणे पण्णत्ते, तं जहा—इत्थिवयणे, पुंवयणे, णपुंसगवयणे ।

---

१ सं॰ पा॰—एवमणुण्णवेत्तते उवातिणित्तते ।
२ सं॰ पा॰—एवं अणुण्णवेत्तए उवाइणित्तए ।
३ ठा॰ २।३८९ ।
४. ठा॰ २।३८९ सूत्रे 'वाससतसहस्साइं वा वासकोडीइं वा पुव्वंगाति वा' इति पाठो विद्यते ।
५ ठा॰ २।३८९ ।
६ उस्स॰ (क, ख) ।

अहवा—तिविहे वयणे पण्णत्ते, त जहा—तीतवयणे[1], पडुप्पण्णवयणे, अणागयवयणे ।।

णाणादीणं पण्णवणा-सम्म-पद

४३० तिविहा पण्णवणा पण्णत्ता, त जहा—णाणपण्णवणा, दसणपण्णवणा, चरित्तपण्णवणा ।।

४३१ तिविधे सम्मे पण्णत्ते, त जहा—णाणसम्मे, दसणसम्मे, चरित्तसम्मे ।।

उवघात-विसोहि-पदं

४३२. तिविधे उवघाते पण्णत्ते, त जहा—उग्गमोवघाते, उप्पायणोवघाते, एसणोवघाते ।।

४३३ [2]•तिविधा विसोही पण्णत्ता, त जहा—उग्गमविसोही, उप्पायणविसोही, एसणाविसोही° ।।

आराहणा-पद

४३४ तिविहा आराहणा पण्णत्ता, त जहा—णाणाराहणा, दसणाराहणा, चरित्ताराहणा ।।

४३५ णाणाराहणा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा ।।

४३६ [3]•दसणाराहणा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा ।।

४३७ चरित्ताराहणा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा° ।।

संकिलेस-असंकिलेस-पद

४३८ तिविधे सकिलेसे पण्णत्ते, तं जहा—णाणसकिलेसे, दसणसकिलेसे, चरित्तसकिलेसे ।।

४३९ [4]•तिविधे असकिलेसे पण्णत्ते, त जहा—णाणअसकिलेसे, दसणअसकिलेसे, चरित्तअसकिलेसे ।।

अइक्कम-आदि-पद

४४० तिविधे अतिक्कमे पण्णत्ते, त जहा—णाणअतिक्कमे, दसणअतिक्कमे, चरित्तअतिक्कमे ।।

४४१ तिविधे वइक्कमे पण्णत्ते, त जहा—णाणवइक्कमे, दसणवइक्कमे, चरित्तवइक्कमे ।।

४४२ तिविधे अइयारे पण्णत्ते, त जहा - णाणअइयारे, दसणअइयारे, चरित्तअइयारे ।।

---

१ अतीत° (क) ।

२ स० पा०—एव विसोही ।

३ स० पा०—एव दसणाराहणावि चरित्ताराहणावि ।

४ स०पा०—एव असकिलेसेवि अणायारेवि ।

४४३ तिविधे अणायारे पण्णत्ते, त जहा—णाणअणायारे, दसणअणायारे, चरित्तअणायारे° ॥

४४४ तिण्हमतिक्कमाण—आलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरहेज्जा,[1] °विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म° पडिवज्जेज्जा, त जहा—णाणातिक्कमस्स, दसणातिक्कमस्स, चरित्तातिक्कमस्स ॥

४४५ [2]°तिण्ह वइक्कमाण[3]—आलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म पडिवज्जेज्जा, त जहा—णाणवइक्कमस्स, दसणवइक्कमस्स, चरित्तवइक्कमस्स ॥

४४६ तिण्हमतिचाराण—आलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा, णिदेज्जा, गरहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म पडिवज्जेज्जा, त जहा—णाणातिचारस्स, दसणातिचारस्स, चरित्तातिचारस्स ॥

४४७ तिण्हमणायाराण—आलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म पडिवज्जेज्जा, तजहा—णाण-अणायारस्स, दसण-अणायारस्स, चरित्त-अणायारस्स° ॥

पायच्छित्त-पद

४४८ तिविधे पायच्छित्ते पण्णत्ते, त जहा—आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे ॥

अकम्मभूमी-पद

४४९ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण तओ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, त जहा—हेमवते, हरिवासे, देवकुरा ॥

४५० जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण तओ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, त जहा—उत्तरकुरा, रम्मगवासे, हेरण्णवए[4] ॥

वास-पद

४५१ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण तओ वासा पण्णत्ता, त जहा—भरहे, हेमवए, हरिवासे ॥

---

१ स० पा०—गरहेज्जा जाव पडिवज्जेज्जा ।
२ स० पा०—एव वइक्कमाण अतिचाराण अणायाराण ।
३ °माण वि (ख) ।
४ एरण्णवए (क, ख, ग) ।

४५२ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं तओ वासा पण्णत्ता तं जहा—रम्मगवासे, हेरण्णवते, एरवए ।।

वासहरपव्वय-पदं

४५३ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं तओ वासहरपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—चुल्लहिमवंते, महाहिमवंते, णिसढे ।।

४५४ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं तओ वासहरपव्वत्ता पण्णत्ता, तं जहा—णीलवंते, रुप्पी, सिहरी ।।

महादह-पदं

४५५ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं तओ महादहा पण्णत्ता, तं जहा—पउमदहे, महापउमदहे, तिगिंछदहे[1] ।
तत्थ णं तओ देवताओ महिड्ढियाओ जाव[2] पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसति, तं जहा—सिरी, हिरी, धिती ।।

४५६ एवं—उत्तरे णवि, नवरं—केसरिदहे, महापोंडरीयदहे, पोंडरीयदहे । देवताओ—कित्ती, बुद्धी, लच्छी ।

णदी-पदं

४५७ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं चुल्लहिमवंताओ वासधरपव्वताओ पउमदहाओ महादहाओ तओ महाणदीओ पवहंति, तं जहा—गंगा, सिंधू, रोहितंसा ।।

४५८ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं सिहरीओ वासहरपव्वताओ पोंडरीयद्दहाओ महादहाओ तओ महाणदीओ पवहंति, तं जहा—सुवण्णकूला, रत्ता, रत्तवती ।।

४५९ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उत्तरे णं तओ अंतरणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—गाहावती, दहवती, पंकवती ।।

४६० जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए दाहिणे णं तओ अंतरणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तत्तजला, मत्तजला, उम्मत्तजला ।।

४६१ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोदाए महाणदीए दाहिणे णं तओ अंतरणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खीरोदा, सीहसोता[3], अंतोवाहिणी ।।

४६२ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोदाए महाणदीए उत्तरे णं तओ अंतरणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उम्मिमालिणी, फेणमालिणी, गंभीर-मालिणी ।।

---

१ तिगिच्छ° (क), तिगिच्छि° (ख) ।
२ ठा० २।७१ ।
३ सीतसोता (क, ग) ।

धायइसड-पुक्खरवर-पद

४६३ एव—धायइसडे दीवे पुरत्थिमद्धेवि अकम्मभूमीओ आढवेत्ता जाव[1] अतर-णदीओत्ति णिरवसेस भाणियव्व जाव[2] पुक्खरवरदीवड्डपच्चत्थिमद्धे तहेव णिरवसेस भाणियव्व ।।

भूकप-पदं

४६४ तिहिं ठाणेहिं देसे पुढवीए चलेज्जा, त जहा—

१ अहे ण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उराला पोग्गला णिवतेज्जा। तते ण उराला पोग्गला णिवतमाणा देसं पुढवीए चालेज्जा[3]।

२ महोरगे[4] वा महिड्ढीए जाव[5] महेसक्खे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे उम्मज्ज-णिमज्जिय करेमाणे देस पुढवीए चालेज्जा[6]।

३ णागसुवण्णाण वा सगामसि वट्टमाणसि देस [देसे[7] ?] पुढवीए चलेज्जा।
इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं देसे पुढवीए चलेज्जा ।।

४६५ तिहिं ठाणेहिं केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा, त जहा—

१ अधे ण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवाते गुप्पेज्जा। तए ण से घणवाते गुविते समाणे घणोदहिमेएज्जा। तए ण से घणोदही एइए समाणे केवलकप्प पुढवि चालेज्जा।

२ देवे वा महिड्ढिए जाव[8] महेसक्खे तहारूवस्स समणस्स माहणस्स वा इड्ढि जुति जस बल वीरिय[9] पुरिसक्कार-परक्कम उवदसेमाणे केवलकप्प पुढवि चालेज्जा।

३ देवासुरसगामसि वा वट्टमाणसि केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा।
इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा ।।

देवकिब्बिसिय-पदं

४६६ तिविधा देवकिब्बिसिया पण्णत्ता, त जहा—तिपलिओवमट्ठितीया, तिसागरोवम-ट्ठितीया, तेरससागरोवमट्ठितीया।

१ कहि ण भते ! तिपलिओवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसति ?

---

१ ठा० ३।४४६-४६२।
२ ठा० ३।१०८।
३ चलेज्जा (क, ख, ग), वृत्तौ चलयेयु इति व्याख्यातमस्ति, तेन चालेज्जा इति पाठ प्रतीयते।
४ महोरते (क, ख, ग)।
५ ठा० २।२७१।
६ चलेज्जा (क, ख, ग)।
७ देसति देशश्चलेदिति (वृ)।
८ ठा० २।२७१।
९ वीरित (क, ख, ग)।

उप्पिं जोइसियाण, हिट्ठिं[1] सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु, एत्थ ण तिपलिओवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति ।

२ कहि ण भते ! तिसागरोवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसति ?
उप्पिं सोहम्मीसाणाण कप्पाण, हेट्ठिं[2] सणकुमार-माहिंदेसु[3] कप्पेसु, एत्थ ण तिसागरोवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसति ।

३ कहि ण भते ! तेरससागरोवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसति ?
उप्पिं बभलोगस्स कप्पस्स, हेट्ठिं[4] लतगे कप्पे, एत्थ ण तेरससागरोवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसति ॥

देवठिति-पद

४६७ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो बाहिरपरिसाए देवाण तिण्णि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

४६८ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो अब्भितरपरिसाए देवीण तिण्णि पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

४६९ ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो बाहिरपरिसाए देवीण तिण्णि पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

पायच्छित्त-पदं

४७० तिविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, त जहा—णाणपायच्छित्ते, दसणपायच्छित्ते, चरित्त-पायच्छित्ते ॥

४७१ तओ अणुग्घातिमा[5] पण्णत्ता, त जहा—हत्थकम्म करेमाणे, मेहुण सेवेमाणे, राईभोयण भुजमाणे ॥

४७२ तओ पारचिता पण्णत्ता, त जहा—दुट्ठे पारचिते, पमत्ते पारचिते, अण्णमण्ण करेमाणे पारचिते ॥

४७३ तओ अणवट्ठप्पा पण्णत्ता, त जहा—साहम्मियाण तेणिय[6] करेमाणे, अण्ण-धम्मियाण तेणिय करेमाणे, हत्थाताल[7] दलयमाणे[8] ॥

पव्वज्जादि-अजोग्ग-पद

४७४ तओ णो कप्पति पव्वावेत्तए, त जहा—पडए, वातिए[9], कीवे ॥

---

१ हव्वि (क, ख) ।
२ हव्वि (क, ख) ।
३ माहिंदे (क) ।
४. हव्वि (क) ।
५ °ग्घातिया (ठा० ५।१०१) ।
६ तेण्ण (क), तेण (क्व) ।
७ हत्थताल (ख), अत्थायाण, हत्थालव (वृपा)
८ दलमाणे (वृ) ।
९ वातिते (क, ख, ग), वाहिए (वृपा) ।

४७५ [1]•तओ णो कप्पति°—मुडावित्तए, सिक्खावित्तए, उवट्ठावेत्तए[2], सभुजित्तए, सवासित्तए, •त जहा—पडए, वातिए, कीवे° ॥

अवायणिज्ज-वायणिज्ज-पद

४७६ तओ अवायणिज्जा पण्णत्ता, त जहा—अविणीए, विगतीपडिवद्धे, अविओस-वितपाहुडे[3] ॥

४७७ तओ कप्पति वाइत्तए[4], त जहा—विणीए, अविगतीपडिवद्धे, विओसवियपाहुडे[5] ।

दुसण्णप्प-सुसण्णप्प-पद

४७८ तओ दुसण्णप्पा पण्णत्ता, त जहा—दुट्ठे, मूढे, वुग्गाहिते ॥

४७९ तओ सुसण्णप्पा पण्णत्ता, त जहा—अदुट्ठे, अमूढे, अवुग्गाहिते ॥

मडलिय-पव्वय-पद

४८० तओ मडलिया पव्वता पण्णत्ता, त जहा—माणुसुत्तरे, कुडलवरे, रुयगवरे[6] ॥

महतिमहालय-पद

४८१ तओ महतिमहालया पण्णत्ता, त जहा—जबुद्दीवए मदरे मदरेसु, सयभूरमणे समुद्दे समुद्देसु, वभलोए कप्पे कप्पेसु ॥

कप्पठिति-पद

४८२ तिविधा कप्पठिती पण्णत्ता, त जहा—सामाइयकप्पठिती, छेदोवट्ठावणिय-कप्पठिती, णिव्विसमाणकप्पठिती ॥

अहवा—तिविहा कप्पट्ठिती पण्णत्ता, त जहा—णिव्विट्ठकप्पट्ठिती, जिणकप्प-ट्ठिती, थेरकप्पट्ठिती ॥

सरीर-पद

४८३ णेरइयाण तओ सरीरगा पण्णत्ता, त जहा—वेउव्विए, तेयए, कम्मए ॥

४८४ असुरकुमाराण तओ सरीरगा पण्णत्ता, [7]•त जहा—वेउव्विए, तेयए, कम्मए° ॥

४८५ एव—सव्वेसि देवाण[8] ॥

---

१ स० पा०—एव ।

२ उट्ठावेत्तए (क, ख) ।

३ अविओसित° (क्व) ।

४ वातित्तते (क, ख, ग) ।

५ विउसिय° (क्व) ।

६ रुतगवरे (क, ख, ग) ।

७ स० पा०—एव चेव ।

८ ठा० १।१४३-१५१, १६२-१६४ ।

४८६. पुढविकाइयाण तओ सरीरगा पण्णत्ता, त जहा—ओरालिए, तेयए, कम्मए ।।
४८७ एव—वाउकाइयवज्जाण जाव[1] चउरिंदियाण ।।

पडिणीय-पदं

४८८ गुरु पडुच्च तओ पडिणीया[2] पण्णत्ता, त जहा—आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए, थेरपडिणीए ।।
४८९ गतिं पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता, त जहा—इहलोगपडिणीए, परलोगपडिणीए, दुहओलोगपडिणीए ।।
४९० समूह पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता, त जहा—कुलपडिणीए, गणपडिणीए, सघपडिणीए ।।
४९१ अणुकप पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता, त जहा—तवस्सिपडिणीए, गिलाणपडिणीए, सेहपडिणीए ।।
४९२ भाव पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता, त जहा—णाणपडिणीए, दसणपडिणीए, चरित्तपडिणीए ।।
४९३ सुय पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता, त जहा—सुत्तपडिणीए, अत्थपडिणीए, तदुभयपडिणीए ।।

अग-पदं

४९४ तओ पितियगा पण्णत्ता, त जहा—अट्ठी, अट्ठिमिंजा, केसमसुरोमणहे ।
४९५ तओ माउयगा पण्णत्ता, त जहा—मसे, सोणिते, मत्थुलिंगे ।।

मणोरह-पद

४९६ तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, त जहा—
१ कया ण अह अप्प वा वहुय वा सुय अहिज्जिस्सामि ?
२ कया ण अह एकल्लविहारपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरिस्सामि ?
३ कया ण अह अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसिते भत्तपाण-पडियाइक्खिते पाओवगते काल अणवकखमाणे विहरिस्सामि ?
एव समणसा सवयसा सकायसा पागडेमाणे[3] समणे[4] निग्गथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति ।।
४९७ तिहिं ठाणेहिं समणोवासए[5] महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, त जहा—
१ कया ण अह अप्प वा वहुय वा परिग्गह परिचइस्सामि ?

---

१ ठा० १।१५३, १५४, १५६-१५९ ।
२ पडिणीता (क, ख, ग) ।
३ पहारेमाणे (वृ), पागडेमाणे (वृपा) ।
४ × (क) ।
५ समणोवासते (क, ख, ग) ।

२ कया ण अह मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारित पव्वइस्सामि ?

३ कया ण अह अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसिते भत्तपाणपडियाइ-क्खिते पाओवगते काल अणवकखमाणे विहरिस्सामि ?

एव समणसा सवयसा सकायसा पागडेमाणे समणोवासए महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति ॥

पोग्गलपडिघात-पद

४९८ तिविहे पोग्गलपडिघाते पण्णत्ते, त जहा—परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गल पप्प पडिहण्णिज्जा, लुक्खत्ताए वा पडिहण्णिज्जा[1], लोगते वा पडिहण्णिज्जा ॥

चक्खु-पद

४९९ तिविहे चक्खू पण्णत्ते, त जहा—एगचक्खू, विचक्खू, तिचक्खू ।
छउमत्थे ण मणुस्से एगचक्खू, देवे विचक्खू, तहारूवे समणे वा माहणे वा उप्पण्णणाणदसणधरे[2] तिचक्खुत्ति वत्तव्व सिया ॥

अभिसमागम-पद

५०० तिविधे अभिसमागमे पण्णत्ते, त जहा—उड्ढ, अह, तिरिय ।
जया ण तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिसेसे णाणदसणे समुप्पज्जति, से ण तप्पढमताए उड्ढमभिसमेति, ततो तिरिय, ततो पच्छा अहे । अहोलोगे ण दुरभिगमे पण्णत्ते समणाउसो !

इड्ढि-पद

५०१ तिविधा इड्ढी पण्णत्ता, त जहा—देविड्ढी, राइड्ढी, गणिड्ढी ॥

५०२ देविड्ढी तिविहा पण्णत्ता, त जहा—विमाणिड्ढी, विगुव्वणिड्ढी[3], परियारणिड्ढी ।
अहवा—देविड्ढी तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सचित्ता, अचित्ता, मीसिता ॥

५०३ राइड्ढी तिविधा पण्णत्ता, त जहा—रण्णो अतियाणिड्ढी, रण्णो णिज्जाणिड्ढी, रण्णो वल-वाहण-कोस-कोट्ठागारिड्ढी ।
अहवा—राइड्ढी[4] तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सचित्ता, अचित्ता, मीसिता ॥

५०४ गणिड्ढी तिविहा पण्णत्ता, त जहा—णाणिड्ढी, दसणिड्ढी, चरित्तिड्ढी ।
अहवा—गणिड्ढी तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सचित्ता, अचित्ता, मीसिता ॥

गारव-पदं

५०५ तओ गारवा पण्णत्ता, त जहा—इड्ढीगारवे, रसगारवे, सातागारवे ॥

---

१ पडिहणेज्जा (ख) ।
२ ०धरे से ण (क, ख) ।
३ विगुव्वि० (क, ग) ।
४ रातिड्ढी (क, ख, ग) ।

करण-पदं

५०६ तिविहे करणे पण्णत्ते, त जहा—धम्मिए करणे, अधम्मिए करणे, धम्मिया-धम्मिए करणे ।।

सुयक्खायधम्म-पदं

५०७ तिविहे भगवता धम्मे पण्णत्ते, त जहा—सुअधिज्झिते, सुज्झाइते[1], सुतवस्सिते । जया सुअधिज्झित भवति तदा सुज्झाइत भवति, जया सुज्झाइत भवति तदा सुतवस्सित भवति, से सुअधिज्झिते सुज्झाइते सुतवस्सिते सुयक्खाते[2] ण भगवता धम्मे पण्णत्ते ।।

जाणु-अजाणु-पदं

५०८ तिविधा वावत्ती पण्णत्ता, त जहा—जाणू, अजाणू, वितिगिच्छा ।।
५०९ [3]°तिविधा अज्झोववज्जणा[4] पण्णत्ता, त जहा—जाणू, अजाणू, वितिगिच्छा ।।
५१० तिविधा परियावज्जणा पण्णत्ता, त जहा—जाणू, अजाणू, वितिगिच्छा° ।।

अत-पद

५११. तिविधे अते पण्णत्ते, त जहा—लोगते, वेयते, समयते ।।

जिण-पदं

५१२ तओ जिणा पण्णत्ता, त जहा—ओहिणाणजिणे, मणपज्जवणाणजिणे, केवलणाणजिणे ।।
५१३ तओ केवली पण्णत्ता, त जहा—ओहिणाणकेवली, मणपज्जवणाणकेवली, केवलणाणकेवली ।।
५१४ तओ अरहा पण्णत्ता, त जहा—ओहिणाणअरहा, मणपज्जवणाणअरहा, केवलणाणअरहा ।।

लेसा-पद

५१५. तओ लेसाओ दुब्भिगधाओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा ।।
५१६ तओ लेसाओ सुब्भिगधाओ पण्णत्ताओ, त जहा—तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा ।।
५१७ [5]°तओ लेसाओ—दोग्गतिगामिणीओ, सकिलिट्ठाओ, अमणुण्णाओ, अविसुद्धाओ,

---

१ सुज्झातिते (क, ख, ग) ।
२ सुतक्खाते (क, ख, ग) ।
३ स० पा०—एवमज्झोवज्जणा परियावज्जणा ।
४ मज्झोवज्जणा (क, ख, ग) ।
५ स० पा०—एव दोग्गतिगामिणीओ सोगति-गामिणीओ, सकिलिट्ठाओ असकिलिट्ठाओ, अमणुण्णाओ मणुण्णाओ, अविसुद्धाओ विसुद्धाओ, अप्पसत्थाओ पसत्थाओ, सीतलुक्खाओ णिद्धुण्हाओ ।

अप्पसत्थाओ, सीत-लुक्खाओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा ॥

५१८ तओ लेसाओ—सोगतिगामिणीओ, असकिलिट्ठाओ, मणुण्णाओ, विसुद्धाओ, पसत्थाओ, णिद्धुण्हाओ पण्णत्ताओ, त जहा—तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा° ॥

मरण-पद

५१९ तिविहे मरणे पण्णत्ते, त जहा—बालमरणे, पडियमरणे, बालपडियमरणे ॥

५२० बालमरणे तिविहे पण्णत्ते, त जहा—ठितलेस्से, सकिलिट्ठलेस्से, पज्जवजातलेस्से॥

५२१ पडियमरणे तिविहे पण्णत्ते, त जहा—ठितलेस्से, असकिलिट्ठलेस्से पज्जवजातलेस्से ॥

५२२ बालपडियमरणे तिविहे पण्णत्ते, त जहा—ठितलेस्से, असकिलिट्ठलेस्से, अपज्जवजातलेस्से ॥

असद्दहतस्स पराभव-पदं

५२३. तओ ठाणा अव्ववसितस्स अहिताए असुभाए अखमाए अणिस्सेसाए अणाणुगामियत्ताए भवति, त जहा—

१ से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए[1] णिग्गथे पावयणे सकिते कखिते वितिगिच्छिते भेदसमावण्णे कलुससमावण्णे णिग्गथ पावयण णो सद्दहति णो पत्तियति णो रोएति, त परिस्सहा अभिजुजिय-अभिजुजिय अभिभवति, णो से परिस्सहे अभिजुजिय-अभिजुजिय अभिभवइ ।

२ से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारित पव्वइए पचहिं महव्वएहिं सकिते[2] °कखिते वितिगिच्छिते भेदसमावण्णे° कलुससमावण्णे पच महव्वताइ णो सद्दहति[3] °णो पत्तियति णो रोएति, त परिस्सहा अभिजुजिय-अभिजुजिय अभिभवति°, णो से परिस्सहे अभिजुजिय-अभिजुजिय अभिभवति ।

३ से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए छहिं जीवणिकाएहिं[4] °सकिते कखिते वितिगिच्छिते भेदसमावण्णे कलुससमावण्णे छ जीवणिकाए णो सद्दहति णो पत्तियति णो रोएति, त परिस्सहा अभिजुजिय-अभिजुजिय अभिभवति, णो से परिस्सहे अभिजुजिय-अभिजुजिय° अभिभवति ॥

---

१. पव्वतिते (क, ख, ग) ।

२ स० पा०—सकिते जाव कलुससमावण्णे ।

३. स० पा०—सद्दहति जाव णो से ।

४ स० पा०—जीवणिकाएहिं जाव अभिभवइ ।

सद्दहंतस्स विजय-पदं

५२४ तओ ठाणा ववसियस्स हिताए[1] •सुभाए खमाए णिस्सेसाए° आणुगामियत्ताए भवति, त जहा—

१ से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए णिग्गथे पावयणें णिस्सकिते[2] •णिक्कखिते णिव्वितिगिच्छिते णो भेदसमावण्णे° णो कलुससमावण्णे णिग्गथ पावयण सद्दहति पत्तियति रोएति[3], से परिस्सहे अभिजुजिय-अभिजुजिय अभिभवति, णो त परिस्सहा अभिजुजिय-अभिजुजिय अभिभवति ।

२ से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए समाणे पचहिं महव्वएहिं णिस्सकिए णिक्कखिए[4] •णिव्वितिगिच्छिते णो भेदसमावण्णे णो कलुससमावण्णे पच महव्वताइ सद्दहति पत्तियति रोएति, से° परिस्सहे अभिजुजिय-अभिजुजिय अभिभवइ, णो त परिस्सहा अभिजुजिय-अभिजुजिय अभिभवति ।

३ से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए छहिं जीवणिकाएहिं णिस्सकिते[5] •णिक्कखिते णिव्वितिगिच्छिते णो भेदसमावण्णे णो कलुससमावण्णे छ जीवणिकाए सद्दहति पत्तियति रोएति, से° परिस्सहे अभिजुजिय-अभिजुजिय अभिभवति, णो त परिस्सहा अभिजुजिय-अभिजुजिय अभिभवति ।।

पुढवी-वलय-पदं

५२५ एगमेगा ण पुढवी तिहिं वलएहिं सव्वओ समता सपरिक्खित्ता, त जहा—घणोदधिवलएण, घणवातवलएण, तणुवायवलएण ।।

विग्गह-गइ-पदं

५२६ णेरइया ण उक्कोसेण तिसमइएण[6] विग्गहेण उववज्जति । एगिंदियवज्ज जाव[7] वेमाणियाण ।।

खीणमोह-पदं

५२७ खीणमोहस्स ण अरहओ तओ कम्मसा जुगव खिज्जति, त जहा—णाणावरणिज्ज, दसणावरणिज्ज, अतराइय[8] ।।

णक्खत्त-पदं

५२८ अभिईणक्खत्ते[9] तितारे पण्णत्ते ।।

५२९ एव—सवणे, अस्सिणी, भरणी, मगसिरे, पूसे, जेट्ठा ।

---

१ स० पा०—हिताते जाव अणुगामितत्ताते ।

२ स० पा०—णिस्सकिते जाव णो कलुससमावण्णे ।

३. रोतेति (क, ख, ग) ।

४ सं० पा०—णिक्कखिए जाव परिस्सहे ।

५ स० पा०—णिस्सकिते जाव परिस्सहे ।

६ तिसमतितेण (क, ख, ग) ।

७ ठा० १।१४२-१५१, १५७-१६३ ।

८ अतरातिय (क, ख, ग) ।

९ अभिती° (क, ख, ग) ।

तित्थकर-पद

५३० धम्माओ ण अरहाओ संती अरहा तिहिं सागरोवमेहिं तिचउब्भागपलिओवम-ऊणएहिं वीतिक्कतेहिं समुप्पण्णे ॥

५३१ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स जाव तच्चाओ पुरिसजुगाओ जुगतकर-भूमी ॥

५३२ मल्ली ण अरहा तिहिं पुरिससएहिं सद्धि मुडे भवित्ता[1] •अगाराओ अणगारियं° पव्वइए ॥

५३३ [2]•पासे ण अरहा तिहिं पुरिससएहिं सद्धि मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए °॥

५३४ समणस्स ण भगवतो महावीरस्स तिण्णि सया चउद्दसपुव्वीण अजिणाण जिणसकासाण सव्वक्खरसण्णिवातीण जिणा[3] [जिणाण ?] इव अवितह वागरमाणाण उक्कोसिया चउद्दसपुव्विसपया हुत्था ॥

५३५ तओ तित्थयरा चक्कवट्टी होत्था, त जहा—सती, कुथू, अरो ॥

गेविज्ज-विमाण-पदं

५३६ तओ गेविज्ज-विमाण-पत्थडा पण्णत्ता, त जहा—हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे ॥

५३७ हिट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे तिविहे पण्णत्ते, त जहा—हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, हेट्ठिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, हेट्ठिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे ॥

५३८ मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे तिविहे पण्णत्ते, त जहा—मज्झिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, मज्झिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, मज्झिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे ॥

५३९ उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे तिविहे पण्णत्ते, त जहा—उवरिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, उवरिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, उवरिम उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे ॥

पावकम्म-पद

५४० जीवाण तिट्ठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणति[4] वा

---

१. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वतिते ।
२ स० पा०—एव पासे वि ।
३ जिणो (ख) ।
४ चिणिंति (क) ।

चिणिस्सति वा, त जहा—इत्थिणिव्वत्तिते, पुरिसणिव्वत्तिते, णपुसगणिव्वत्तिते।
एव—चिण-उवचिण-त्रध उदीर-वेद[1] तह[2] णिज्जरा चेव ॥

पोग्गल-पद

५४१ तिपदेसिया[3] खधा अणता पण्णत्ता ॥
५४२ एवं जाव[4] तिगुणलुक्खा[5] पोग्गला अणता पण्णत्ता ॥

---

१ वेदा (ख)।
२ तहा (क)।
३ तिपतेसिता (क, ख, ग)।
४ ठा० १।२५४-२५६।
५ तिगुणा० (क, ग)।

चउत्थं ठाणं

पढमो उद्देसो

अंतकिरिया-पद

१ चत्तारि अतकिरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—

१ तत्थ खलु इमा पढमा अतकिरिया—अप्पकम्मपच्चायाते यावि भवति। से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए सजमवहुले सवरवहुले समाहिवहुले लूहे तीरट्ठी उवहाणव दुक्खक्खवे तवस्सी। तस्स ण णो तहप्पगारे तवे भवति, णो तहप्पगारा वेयणा भवति। तहप्पगारे पुरिसज्जाते दीहेण परियाएण[1] सिज्झति वुज्झति मुच्चति परिणिव्वाति सव्वदुक्खाणमत करेइ, जहा—से भरहे राया चाउरतचक्कवट्टी—पढमा अतकिरिया।

२ अहावरा दोच्चा अतकिरिया—महाकम्मपच्चायाते यावि भवति। से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए सजमवहुले सवरवहुले[2] °समाहिवहुले लूहे तीरट्ठी° उवहाणव दुक्खक्खवे तवस्सी। तस्स ण तहप्पगारे तवे भवति, तहप्पगारा वेयणा भवति। तहप्पगारे पुरिसजाते णिरुद्धेण[3] परियाएण सिज्झति[4] °वुज्झति मुच्चति परिणिव्वाति सव्वदुक्खाण°मत करेति, जहा—से गयसूमाले[5] अणगारे—दोच्चा अतकिरिया।

३ अहावरा तच्चा अतकिरिया—महाकम्मपच्चायाते यावि भवति। से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए [6]°सजमवहुले सवरवहुले समाहिवहुले लूहे तीरट्ठी उवहाणव दुक्खक्खवे तवस्सी। तस्स ण तहप्पगारे तवे भवति,

---

१ परितातेण (क, ग)।

२ स० पा०—सवरवहुले जाव उवहाणव।

३. विरुद्धेण (क)।

४ स० पा०—सिज्झति जाव मत।

५ गतसुकुमाले (ख)।

६ स० पा०—जहा दोच्चा णवर दीहेण परितातेण।

तहप्पगारा वेयणा भवति । तहप्पगारे पुरिसजाते° दीहेण परियाएण सिज्झति[1] °बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाति° सव्वदुक्खाणमत करेति, जहा—से सणकुमारे राया चाउरतचक्कवट्टी—तच्चा अतकिरिया ।

४ अहावरा चउत्था अतकिरिया—अप्पकम्मपच्चायाते यावि भवति । से ण मुडे भवित्ता[2] °अगाराओ अणगारिय° पव्वइए सजमवहुले[3] °सवरबहुले समाहिबहुले लूहे तीरट्ठी उवहाणव दुक्खक्खवे तवस्सी° तस्स ण णो तहप्पगारे तवे भवति, णो तहप्पगारा वेयणा भवति । तहप्पगारे पुरिसजाते णिरुद्धेण परियाएण सिज्झति[4] °बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाति° सव्वदुक्खाणमत करेति, जहा—सा मरुदेवा भगवती—चउत्था अतकिरिया ॥

उण्णत-पणत-पदं

२ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, त जहा—उण्णते णाममेगे उण्णते, उण्णते णामेगे पणते, पणते णाममेगे उण्णते, पणते णाममेगे पणते ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पण्णत्ता, त जहा—उण्णते णामेगे उण्णते, [5]°उण्णते नाममेगे पणते, पणते णाममेगे उण्णते°, पणते णाममेगे पणते ॥

३ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, त जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतपरिणते, उण्णते णाममेगे पणतपरिणते, पणते णाममेगे उण्णतपरिणते, पणते णाममेगे पणतपरिणते ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पण्णत्ता, त जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतपरिणते, [6]°उण्णते णाममेगे पणतपरिणते, पणते णाममेगे उण्णतपरिणते, पणते णाममेगे पणतपरिणते° ॥

४ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तजहा—उण्णते णाममेगे उण्णतरूवे, [7]°उण्णते णाममेगे पणतरूवे, पणते णाममेगे उण्णतरूवे, पणते णामणेगे पणतरूवे° ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतरूवे, [8]°उण्णते णाममेगे पणतरूवे, पणते णाममेगे उण्णतरूवे, पणते णाममेगे पणतरूवे° ॥

५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतमणे, उण्णते णाममेगे पणतमणे, पणते णाममेगे उण्णतमणे, पणते णाममेगे पणतमणे ॥

६ [9]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतसकप्पे,

---

१ स० पा०—सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण° ।
२ स० पा०—भवित्ता जाव पव्वतिते ।
३ स० पा०—सजमबहुले जाव तस्स ण ।
४ स० पा०—सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण° ।
५ स० पा०—तहेव जाव पणते ।
६ स० पा०—चउभगो ।
७ स० पा०—तहेव चउभगो ।
८ स० पा०—उण्णए णाम ।
९ स० पा०—एव सकप्पे पण्णे पुरिसजाए पडिवक्खो णत्थि ।

उण्णते णाममेगे पणतसकप्पे, पणते णाममेगे उण्णतसकप्पे, पणते णाममेगे पणतसकप्पे ।।

७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतपण्णे, उण्णते णाममेगे पणतपण्णे, पणते णाममेगे उण्णतपण्णे, पणते णाममेगे पणतपण्णे ।।

८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतदिट्ठी, उण्णते णाममेगे पणतदिट्ठी, पणते णाममेगे उण्णतदिट्ठी, पणते णाममेगे पणतदिट्ठी ।।

९ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतसीलाचारे[1], उण्णते णाममेगे पणतसीलाचारे, पणते णाममेगे उण्णतसीलाचारे, पणते णाममेगे पणतसीलाचारे ।।

१० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतववहारे, उण्णते णाममेगे पणतववहारे, पणते णाममेगे उण्णतववहारे, पणते णाममेगे पणतववहारे ।।

११ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतपरक्कमे, उण्णते णाममेगे पणतपरक्कमे, पणते णाममेगे उण्णतपरक्कमे, पणते णाममेगे पणतपरक्कमे° ।।

उज्जु-वंक-पदं

१२ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, त जहा—उज्जू णाममेगे उज्जू, उज्जू णाममेगे वके, [2]°वके णाममेगे उज्जू, वके णाममेगे वके° ।।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—उज्जू णाममेगे उज्जू, [3]°उज्ज णाममेगे वके, वके णाममेगे उज्जू, वके णाममेगे वके ।।

१३ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, त जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुपरिणते, उज्जू णाममेगे वकपरिणते, वके णाममेगे उज्जुपरिणते, वके णाममेगे वकपरिणते ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुपरिणते, उज्जू णाममेगे वकपरिणते, वके णाममेगे उज्जुपरिणते, वके णाममेगे वकपरिणते ।।

१४ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, त जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुरूवे, उज्जू णाममेगे वकरूवे, वके णाममेगे उज्जुरूवे, वके णाममेगे वकरूवे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—उज्जू णाममेग उज्जुरूवे, उज्जू णाममेगे वकरूवे, वके णाममेगे उज्जुरूवे, वके णाममेगे वकरूवे ।।

१५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—उज्जू णाममगे उज्जुमणे, उज्जू णाममेगे वकमणे, वके णाममेगे उज्जुमणे, वके णाममेगे वकमणे ।।

---

१ °सीले आयारे (वृपा) ।

२ स० पा०—चउभगो ।

३ स० पा०—एव जहा उण्णत... विभाणियव्वो जाव परक्कमे ।

१६ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुसकप्पे, उज्जू णाममेगे वंकसकप्पे, वंके णाममेगे उज्जुसकप्पे, वंके णाममेगे वंकसकप्पे ॥

१७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुपण्णे, उज्जू णाममेगे वंकपण्णे, वंके णाममेगे उज्जुपण्णे, वंके णाममेगे वंकपण्णे ॥

१८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुदिट्ठी, उज्जू णाममेगे वंकदिट्ठी, वंके णाममेगे उज्जुदिट्ठी, वंके णाममेगे वंकदिट्ठी ॥

१९ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुसीलाचारे, उज्जू णाममेगे वंकसीलाचारे, वंके णाममेगे उज्जुसीलाचारे, वंके णाममेगे वंकसीलाचारे ॥

२० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुववहारे, उज्जू णाममेगे वंकववहारे, वंके णाममेगे उज्जुववहारे, वंके णाममेगे वंकववहारे ॥

२१ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुपरक्कमे, उज्जू णाममेगे वंकपरक्कमे, वंके णाममेगे उज्जुपरक्कमे, वंके णाममेगे वंकपरक्कमे° ॥

भासा-पद

२२ पडिमापडिवण्णस्स णं अणगारस्स कप्पंति चत्तारि भासाओ भासित्तए, तं जहा—जायणी, पुच्छणी, अणुण्णवणी, पुट्ठस्स वागरणी ॥

२३. चत्तारि भासाजाता पण्णत्ता, तं जहा—सच्चमेगं भासज्जायं, बीयं मोसं, तइयं सच्चमोसं, चउत्थं असच्चमोसं ॥

सुद्ध-असुद्ध-पद

२४. चत्तारि वत्था पण्णत्ता, तं जहा—सुद्धे णामं एगे सुद्धे, सुद्धे णामं एगे असुद्धे, असुद्धे णामं एगे सुद्धे, असुद्धे णामं एगे असुद्धे ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुद्धे णामं एगे सुद्धे, [1]°सुद्धे णामं एगे असुद्धे, असुद्धे णामं एगे सुद्धे, असुद्धे णामं एगे असुद्धे ॥

२५ चत्तारि वत्था पण्णत्ता, तं जहा—सुद्धे णामं एगे सुद्धपरिणए, सुद्धे णामं एगे असुद्धपरिणए, असुद्धे णामं एगे सुद्धपरिणए, असुद्धे णामं एगे असुद्धपरिणए ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुद्धे णामं एगे सुद्धपरिणए, सुद्धे णामं एगे असुद्धपरिणए, असुद्धे णामं एगे सुद्धपरिणए, असुद्धे णामं एगे असुद्धपरिणए ॥

२६ चत्तारि वत्था पण्णत्ता, तं जहा—सुद्धे णामं एगे सुद्धरूवे, सुद्धे णामं एगे असुद्धरूवे, असुद्धे णामं एगे सुद्धरूवे, असुद्धे णामं एगे असुद्धरूवे ।

---

१ सं० पा०—चउभंगो एवं परिणतरूवे वत्था सपडिवक्खा ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुद्धे णाम एगे सुद्धरूवे, सुद्धे णाम एगे असुद्धरूवे, असुद्धे णाम एगे सुद्धरूवे, असुद्धे णाम एगे असुद्धरूवे° ।।

२७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुद्धे णाम एगे सुद्धमणे, [1]°सुद्धे णाम एगे असुद्धमणे, असुद्धे णाम एगे सुद्धमणे, असुद्धे णाम एगे असुद्धमणे ।।

२८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुद्धे णाम एगे सुद्धसकप्पे, सुद्धे णाम एगे असुद्धसकप्पे, असुद्धे णाम एगे सुद्धसकप्पे, असुद्धे णाम एगे असुद्धसकप्पे ।।

२९ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुद्धे णाम एगे सुद्धपण्णे, सुद्धे णाम एगे असुद्धपण्णे, असुद्धे णाम एगे सुद्धपण्णे, असुद्धे णाम एगे असुद्धपण्णे ।।

३० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुद्धे णाम एगे सुद्धदिट्ठी, सुद्धे णाम एगे असुद्धदिट्ठी, असुद्धे णाम एगे सुद्धदिट्ठी, असुद्धे णाम एगे असुद्धदिट्ठी ।।

३१ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुद्धे णाम एगे सुद्धसीलाचारे, सुद्धे णाम एगे असुद्धसीलाचारे, असुद्धे णाम एगे सुद्धसीलाचारे, असुद्धे णाम एगे असुद्धसीलाचारे ।।

३२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुद्धे णाम एगे सुद्धववहारे, सुद्धे णाम एगे असुद्धववहारे, असुद्धे णाम एगे सुद्धववहारे, असुद्धे णाम एगे असुद्धववहारे ।।

३३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुद्धे णाम एगे सुद्धपरक्कमे, सुद्धे णाम एगे असुद्धपरक्कमे, असुद्धे णाम एगे सुद्धपरक्कमे, असुद्धे णाम एगे असुद्धपरक्कमे° ।।

सुत-पदं

३४ चत्तारि सुता पण्णत्ता, त जहा—अतिजाते, अणुजाते, अवजाते, कुलिंगाले ।।

सच्च-असच्च-पदं

३५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सच्चे णाम एगे सच्चे, सच्चे णाम एगे असच्चे, असच्चे णाम एगे सच्चे, असच्चे णाम एगे असच्चे ।।

३६ [2]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सच्चे णाम एगे सच्चपरिणते, सच्चे णाम एगे असच्चपरिणते, असच्चे णाम एगे सच्चपरिणते, असच्चे णाम एगे असच्चपरिणते ।।

३७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सच्चे णाम एगे सच्चरूवे, सच्चे णाम एगे असच्चरूवे, असच्चे णाम एगे सच्चरूवे, असच्चे णाम एगे असच्चरूवे ।।

---

१. स० पा०—चउभगो एव सकप्पे जाव परक्कमे ।

२ स० पा०—एव परिणते जाव परक्कमे ।

३८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सच्चे णाम एगे सच्चमणे, सच्चे णाम एगे असच्चमणे, असच्चे णाम एगे सच्चमणे, असच्चे णाम एगे असच्चमणे ॥

३६ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सच्चे णाम एगे सच्चसकप्पे, सच्चे णाम एगे असच्चसकप्पे, असच्चे णाम एगे सच्चसकप्पे, असच्चे णाम एगे असच्चसकप्पे ॥

४०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सच्चे णाम एगे सच्चपण्णे, सच्चे णाम एगे असच्चपण्णे, असच्चे णाम एगे सच्चपण्णे, असच्चे णाम एगे असच्चपण्णे ॥

४१ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सच्चे णाम एगे सच्चदिट्ठी, सच्चे णाम एगे असच्चदिट्ठी, असच्चे णाम एगे सच्चदिट्ठी, असच्चे णाम एगे असच्चदिट्ठी ॥

४२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सच्चे णाम एगे सच्चसीलाचारे, सच्चे णाम एगे असच्चसीलाचारे, असच्चे णाम एगे सच्चसीलाचारे, असच्चे णाम एगे असच्चसीलाचारे ॥

४३ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सच्चे णाम एगे सच्चववहारे, सच्चे णाम एगे असच्चववहारे, असच्चे णाम एगे सच्चववहारे, असच्चे णाम एगे असच्चववहारे ॥

४४ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सच्चे णाम एगे सच्चपरक्कमे, सच्चे णाम एगे असच्चपरक्कमे, असच्चे णाम एगे सच्चपरक्कमे, असच्चे णाम एगे असच्चपरक्कमे° ॥

सुचि-असुचि-पद

४५ चत्तारि वत्था पण्णत्ता, त जहा—सुई[1] णाम एगे सुई, सुई णाम एगे असुई, [2]°असुई णाम एगे सुई, असुई णाम एगे असुई° ॥
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुई णाम एगे सुई, [3]°सुई णाम एगे असुई, असुई णाम एगे सुई, असुई णाम एगे असुई ॥

४६ चत्तारि वत्था पण्णत्ता, त जहा—सुई णाम एगे सुइपरिणते, सुई णाम एगे असुइपरिणते, असुई णाम एगे सुइपरिणते, असुई णाम एगे असुइपरिणते ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुई णाम एगे सुइपरिणते, सुई णाम एगे असुइपरिणते, असुई णाम एगे सुइपरिणते, असुई णाम एगे असुइपरिणते ॥

४७ चत्तारि वत्था पण्णत्ता, त जहा—सुई णाम एगे सुइरूवे, सुई णाम एगे असुइरूवे, असुई णाम एगे सुइरूवे, असुई णाम एगे असुइरूवे ।

---

१ सुती (क, ख, ग) ।
२ स० पा०—चउभगो ।
३ स० पा०—चउभगो एव जहेव सुद्धेण वत्थेण भणित तहेव सुतिणावि जाव परक्कमे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुई णाम एगे सुइरूवे, सुई णाम एगे असुइरूवे, असुई णाम एगे सुइरूवे, असुई णाम एगे असुइरूवे ।।

४८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुई णाम एगे सुइमणे, सुई णाम एगे असुइमणे, असुई णाम एगे सुइमणे, असुई णाम एगे असुइमणे ।।

४९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुई णाम एगे सुइसकप्पे, सुई णाम एगे असुइसकप्पे, असुई णाम एगे सुइसकप्पे, असुई णाम एगे असुइसकप्पे ।।

५० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुई णाम एगे सुइपण्णे, सुई णाम एगे असुइपण्णे, असुई णाम एगे सुइपण्णे, असुई णाम एगे असुइपण्णे ।।

५१ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुई णाम एगे सुइदिट्ठी, सुई णाम एगे असुइदिट्ठी, असुई णाम एगे सुइदिट्ठी, असुई णाम एगे असुइदिट्ठी ।।

५१ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुई णाम एगे सुइसीलाचारे, सुई णाम एगे असुइसीलाचारे, असुई णाम एगे सुइसीलाचारे, असुई णाम एगे असुइसीलाचारे ।।

५३ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुई णाम एगे सुइववहारे, सुई णाम एगे असुइववहारे, असुई णाम एगे सुइववहारे, असुई णाम एगे असुइववहारे ।।

५४ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुई णाम एगे सुइपरक्कमे, सुई णाम एगे असुइपरक्कमे, असुई णाम एगे सुइपरक्कमे, असुई णाम एगे असुइपरक्कमे° ।।

कोरव-पद

५५ चत्तारि कोरवा पण्णत्ता, त जहा—अवपलवकोरवे, तालपलवकोरवे, वल्लिपलवकोरवे, मेढविसाणकोरवे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अवपलवकोरवसमाणे, तालपलवकोरवसमाणे, वल्लिपलवकोरवसमाणे, मेढविसाणकोरवसमाणे ।।

भिक्खाग-पदं

५६ चत्तारि घुणा पण्णत्ता, त जहा—तयक्खाए[1], छल्लिक्खाए, कट्ठक्खाए, सारक्खाए ।

एवामेव चत्तारि भिक्खागा पण्णत्ता, त जहा—तयक्खायसमाणे[2], °छल्लिक्खायसमाणे, कट्ठक्खायसमाणे°, सारक्खायसमाणे ।

१ तयक्खायसमाणस्स ण भिक्खागस्स सारक्खायसमाणे तवे पण्णत्ते ।

२ सारक्खायसमाणस्स ण भिक्खागस्स तयक्खायसमाणे तवे पण्णत्ते ।

---

१ °क्खाते (क, ख, ग) ।

२ स० पा०—तयक्खायसमाणे जाव सारक्खायसमाणे ।

३ छल्लिक्खायसमाणस्स ण भिक्खागस्स कट्ठक्खायसमाणे तवे पण्णत्ते ।
४ कट्ठक्खायसमाणस्स ण भिक्खागस्स छल्लिक्खायसमाणे तवे पण्णत्ते ।।

तणवणस्सइ-पद

५७ चउव्विहा तणवणस्सतिकाइया[1] पण्णत्ता, त जहा— अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खधबीया ।।

अहुणोववण्ण-णेरइय-पद

५८ चउहि ठाणेहि अहुणोववण्णे णेरइए णिरयलोगसि इच्छेज्जा माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए, णो चेव ण सचाएति हव्वमागच्छित्तए—

१ अहुणोववण्णे णेरइए णिरयलोगसि समुब्भूय[2] वेयण वेयमाणे इच्छेज्जा माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए, णो चेव ण सचाएति हव्वमागच्छित्तए ।

२ अहुणोववण्णे णेरइए णिरयलोगसि णिरयपालेहि भुज्जो-भुज्जो अहिट्ठिज्जमाणे इच्छेज्जा माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए, णो चेव ण सचाएति हव्वमागच्छित्तए ।

३ अहुणोववण्णे णेरइए णिरयवेयणिज्जसि कम्मसि अक्खीणसि अवेइयसि[3] अणिज्जिण्णसि इच्छेज्जा माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए, णो चेव ण सचाएति हव्वमागच्छित्तए ।

४ •'अहुणोववण्णे णेरइए णिरयाउअसि[5] कम्मसि अक्खीणसि अवेइयसि अणिज्जिण्णसि इच्छेज्जा माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए°, णो चेव ण सचाएति हव्वमागच्छित्तए ।

इच्चेतेहि चउहि ठाणेहि अहुणोववण्णे णेरइए[6] •णिरयलोगसि इच्छेज्जा माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए°, णो चेव ण सचाएति हव्वमागच्छित्तए ।।

सघाडी-पद

५९ कप्पति णिग्गथीण चत्तारि सघाडीओ धारित्तए वा परिहरित्तए वा, त जहा— एग दुहत्थवित्थार, दो तिहत्थवित्थारा, एग चउहत्थवित्थार ।।

झाण-पद

६० चत्तारि झाणा पण्णत्ता, त जहा—अट्टे झाणे, रोद्दे झाणे, धम्मे झाणे, सुक्के झाणे ।।

---

१ °कातिता (क, ख, ग) ।
२ सम्मुहब्भूया, समहब्भूय (वृपा) ।
३ अवेतितसि (क, ख, ग) ।
४ स० पा०—एव णिरयाउअसि कम्मसि अक्खीणसि जाव णो चेव ।
५ णिरतिताउ° (क, ग) ।
६ स० पा०—णेरतिते जाव णो चेव ।

६१ अट्ट झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—
१ अमणुण्ण[1]-सपओग-सपउत्ते, तस्स विप्पओग-सति-समण्णागते यावि भवति।
२ मणुण्ण-सपओग-सपउत्ते, तस्स अविप्पओग-सति-समण्णागते यावि भवति।
३ आतक-सपओग-सपउत्ते, तस्स विप्पओग-सति-समण्णागते यावि भवति।
४ परिजुसित[2]-काम-'भोग-सपओग-सपउत्ते'[3] तस्स अविप्पओग-सति-समण्णागते यावि भवति ।।

६२ अट्टस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, त जहा—कदणता, सोयणता[4], तिप्पणता, परिदेवणता ।।

६३ रोद्दे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—हिंसाणुवधि, मोसाणुवधि, तेणाणुवधि, सारक्खणाणुवधि ।।

६४ रुद्दस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, त जहा—ओसण्णदोसे, वहुदोसे, अण्णाणदोसे[5], आमरणतदोसे ।।

६५. धम्मे झाणे चउविहे चउप्पडोयारे[6] पण्णत्ते, त जहा - आणाविजए[7], अवायविजए, विवागविजए, सठाणविजए ।।

६६ धम्मस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, त जहा—आणारुई, णिसग्गरुई सुत्तरुई, ओगाढरुई ।।

६७ धम्मस्स ण झाणस्स चत्तारि आलवणा पण्णत्ता, त जहा—वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा ।।

६८ धम्मस्स ण झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, त जहा—एगाणुप्पेहा, अणिच्चाणुप्पेहा, असरणाणुप्पेहा, ससाराणुप्पेहा ।।

६९ सुक्के झाणे चउव्विहे चउप्पडोआरे[8] पण्णत्ते, त जहा - पुहत्तवितक्के[9] सवियारी, एगत्तवितक्के अवियारी, सुहुमकिरिए[10] अणियट्टी, समुच्छिण्णकिरिए अप्पडिवाती ।।

७० सुक्कस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, त जहा—अव्वहे, असम्मोहे, विवेगे, विउस्सग्गे ।।

---

१ असमणुन्न ° (क, ग, वृपा)।
२ परिजुसिय (क, ग, वृपा)।
३ भोगसपउत्ते (वृ), भोगसपओगसपउत्ते (वृपा)।
४ सोतणता (क, ख, ग)।
५. नाणाविहदोसे (वृपा)।
६. चउप्पयावयार (वृ), चउप्पडोयार (वृपा)।
७ °विजते (क, ख, ग)।
८ चउप्पओआरे (ग)।
९ पुहुत्त ° (ख)।
१० °किरिते (क, ख, ग)।

७१ सुक्कस्स ण भाणस्स चत्तारि आलवणा पण्णत्ता, त जहा--खती, मुत्ती, 'अज्जवे, मद्दवे'[1] ।।

७२ सुक्कस्स ण भाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, त जहा—अणत-वत्तियाणुप्पेहा, विप्परिणामाणुप्पेहा, असुभाणुप्पेहा, अवायाणुप्पेहा ।।

देवाण पदमेरा-पदं

७३ चउव्विहा देवाण ठिती पण्णत्ता, त जहा—देवे णाममेगे, देवसिणाते णाममेगे, देवपुरोहिते णाममेगे, देवपज्जलणे णाममेगे ।।

सवास-पद

७४. चउव्विहे सवासे पण्णत्ते, त जहा—देवे णाममेगे देवीए सद्धि सवास गच्छेज्जा, देवे णाममेगे छवीए[2] सद्धि सवास गच्छेज्जा, छवी णाममेगे देवीए सद्धि सवास गच्छेज्जा, छवी णाममेगे छवीए सद्धि सवास गच्छेज्जा ।।

कसाय-पद

७५ चत्तारि कसाया पण्णत्ता, त जहा—कोहकसाए, माणकसाए, मायाकसाए, लोभ-कसाए । एव—णेरइयाण जाव[3] वेमाणियाण ।।

७६ चउपतिट्ठिते कोहे पण्णत्ते, त जहा—आतपतिट्ठिते, परपतिट्ठिते, तदुभयपतिट्ठिते, अपतिट्ठिते । एव णेरइयाण जाव[4] वेमाणियाण ।।

७७ [5]°चउपतिट्ठिते माणे पण्णत्ते, त जहा—आतपतिट्ठिते, परपतिट्ठिते, तदुभय-पतिट्ठिते, अपतिट्ठिते । एव—णेरयाण जाव[6] वेमाणियाणं ।।

७८ चउपतिट्ठिता माया पण्णत्ता, त जहा—आतपतिट्ठिता, परपतिट्ठिता, तदुभय-पतिट्ठिता, अपतिट्ठिता । एव—णेरइयाण जाव[7] वेमाणियाण ।।

७९ चउपतिट्ठिते लोभे पण्णत्ते, त जहा—आतपतिट्ठिते, परपतिट्ठिते, तदुभयपतिट्ठिते, अपतिट्ठिते । एव—णेरइयाण जाव[8] वेमाणियाण ° ।।

८० चउहिं ठाणेहिं कोधुप्पत्ती सिता, त जहा—खेत्त पडुच्चा, वत्थु पडुच्चा[9], सरीर पडुच्चा, उवहिं पडुच्चा । एव—णेरइयाण जाव[10] वेमाणियाण ।।

---

१ मद्दवे अज्जवे (क, ख, ग), औपपातिके (सूत्र ४३) 'अज्जवे मद्दवे' एव पाठो विद्यते । अत्रापि इत्थमेव युज्यते । लिपिदोषेण शब्द-विपर्ययो जात इति प्रतीयते ।

२ छव्वीते (क, ख, ग) ।

३,४ ठा० १।१४२-१६३ ।

५ स० पा०—एव जाव लोभे वेमाणियाण ।

६,७ ठा० १।१४२-१६३ ।

८ ठा० १।१४२-१६३ ।

९ पडुच्च (क, ख, ग) ।

१० ठा० १।१४२-१६३ ।

८१ [1]°चउहिं ठाणेहिं माणुप्पत्ती सिता, तं जहा—खेत्तं पडुच्चा, वत्थुं पडुच्चा, सरीरं पडुच्चा, उवहिं पडुच्चा। एवं—णेरइयाणं जाव[2] वेमाणियाणं ॥

८२ चउहिं ठाणेहिं मायुप्पत्ती सिता, तं जहा—खेत्तं पडुच्चा, वत्थुं पडुच्चा, सरीरं पडुच्चा, उवहिं पडुच्चा। एवं—णेरइयाणं जाव[3] वेमाणियाणं ॥

८३ चउहिं ठाणेहिं लोभुप्पत्ती सिता, तं जहा—खेत्तं पडुच्चा, वत्थुं पडुच्चा, सरीरं पडुच्चा, उवहिं पडुच्चा। एवं—णेरइयाणं जाव[4] वेमाणियाणं° ॥

८४ चउव्विधे कोहे पण्णत्ते, तं जहा—अणंताणुबंधी कोहे, अपच्चक्खाणकसाए[5] कोहे, पच्चक्खाणावरणे कोहे, संजलणे कोहे। एवं—णेरइयाणं जाव[6] वेमाणियाणं ॥

८५ [7]°चउव्विधे माणे पण्णत्ते, तं जहा—अणंताणुबंधी माणे, अपच्चक्खाणकसाए माणे, पच्चक्खाणावरणे माणे, संजलणे माणे। एवं—णेरइयाणं जाव[8] वेमाणियाणं ॥

८६ चउव्विधा माया पण्णत्ता, तं जहा—अणंताणुबंधी माया, अपच्चक्खाणकसाया माया, पच्चक्खाणावरणा माया, संजलणा माया। एवं—णेरइयाणं जाव[9] वेमाणियाणं ॥

८७ चउव्विधे लोभे पण्णत्ते, तं जहा—अणंताणुबंधी लोभे, अपच्चक्खाणकसाए लोभे, पच्चक्खाणावरणे लोभे, संजलणे लोभे। एवं—णेरइयाणं जाव[10] वेमाणियाणं° ॥

८८ चउव्विहे कोहे पण्णत्ते, तं जहा—आभोगणिव्वत्तिते, अणाभोगणिव्वत्तिते, उवसंते, अणुवसंते। एवं—णेरइयाणं जाव[11] वेमाणियाणं।

८९ [12]°चउव्विहे माणे पण्णत्ते, तं जहा—आभोगणिव्वत्तिते, अणाभोगणिव्वत्तिते, उवसंते, अणुवसंते। एवं—णेरइयाणं जाव[13] वेमाणियाणं ॥

९० चउव्विहा माया पण्णत्ता, तं जहा—आभोगणिव्वत्तिता, अणाभोगणिव्वत्तिता, उवसंता, अणुवसंता। एवं—णेरइयाणं जाव[14] वेमाणियाणं।

९१ चउव्विहे लोभे पण्णत्ते, तं जहा—आभोगणिव्वत्तिते, अणाभोगणिव्वत्तिते, उवसंते, अणुवसंते। एवं—णेरइयाणं जाव[15] वेमाणियाणं° ॥

कम्मपगडि-पदं

९२ जीवा णं चउहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ चिणिंसु, तं जहा—कोहेणं, माणेणं, मायाए, लोभेणं। एवं जाव[16] वेमाणियाणं ॥

---

१ सं० पा०—एवं जाव लोभे वेमाणियाणं।
२,३,४ ठा० १।१४२-१५३।
५ अपच्चक्खाण (ख)।
६ ठा० १।१४२-१६३।
७ सं० पा०—एवं जाव लोभे वेमाणियाणं।
८ ठा० १।१४२-१६३।
९,१०,११ ठा० १।१४२-१६३।
१२ सं० पा०—एवं जाव लोभे वेमाणियाणं।
१३,१४,१५ ठा० १।१४२-१६३।
१६ ठा० १।१४१-१६३।

९३ [1]•जीवा ण चउहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ चिणति, त जहा—कोहेण, माणेण, मायाए, लोभेण । एव जाव[2] वेमाणियाण ।।

९४ जीवा ण चउहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ चिणिस्सति, त जहा—कोहेण, माणेण, मायाए, लोभेण । एव जाव[3] वेमाणियाण ०।।

९५ एव—उवचिणिसु उवचिणति उवचिणिस्सति, बंधिसु बधति बधिस्सति, उदीरिंसु उदीरिति उदीरिस्सति, वेदेसु वेदेति वेदिस्सति, णिज्जरेसु णिज्जरेति णिज्जरिस्सति जाव[4] वेमाणियाण[5] ।।

पडिमा-पद

९६ चत्तारि पडिमाओ पण्णत्ताओ, त जहा—समाहिपडिमा, उवहाणपडिमा, विवेग-पडिमा, विउस्सग्गपडिमा ।।

९७ चत्तारि पडिमाओ पण्णत्ताओ, त जहा—भद्दा, सुभद्दा, महाभद्दा, सव्वतोभद्दा ।।

९८ चत्तारि पडिमाओ पण्णत्ताओ, त जहा—खुड्डिया मोयपडिमा, महल्लिया मोय-पडिमा, जवमज्झा, वइरमज्झा ।।

अत्थिकाय-पद

९९ चत्तारि अत्थिकाया अजीवकाया पण्णत्ता, त जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थि-काए, आगासत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए ।।

१०० चत्तारि अत्थिकाया अरूविकाया पण्णत्ता, त जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थि-काए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए ।।

आम-पक्क-पद

१०१ चत्तारि फला पण्णत्ता, त जहा—आमे णाममेगे आममहुरे, आमे णाममेगे पक्कमहुरे, पक्के णाममेगे आममहुरे, पक्के णाममेगे पक्कमहुरे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—आमे णाममेगे आममहुरफल-समाणे, आमे णाममेगे पक्कमहुरफलसमाणे, पक्के णाममेगे आममहुरफलसमाणे, पक्के णाममेगे पक्कमहुरफलसमाणे ।।

सच्च-मोस-पद

१०२ चउव्विहे सच्चे पण्णत्ते, त जहा—काउज्जुयया, भासुज्जुयया, भावुज्जुयया, अविसवायणाजोगे ।।

---

१ स० पा०—एव चिणति एस दडओ एव•• एवमेतेण तिण्णि दडगा ।

२ ठा० १।१४१-१६३ ।

३,४ ठा० १।१४१-१६३ ।

५ वेमाणियाण एवमेक्केक्के पदे तिण्णि दडगा भाणियव्वा जाव णिज्जरिस्सति (क,ख,ग) ।

१०३ चउव्विहे मोसे पण्णत्ते, त जहा—कायअणुज्जुयया, भासअणुज्जुयया, भाव-अणुज्जुयया, विसवादणाजोगे ।।

पणिधाण-पद

१०४ चउव्विहे पणिधाणे,पण्णत्ते, त जहा—मणपणिधाणे, वइपणिधाणे, कायपणिधाणे, उवकरणपणिधाणे । एव—णेरइयाण पचिंदियाण जाव[1] वेमाणियाण ।।

१०५ चउव्विहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते, त जहा—मणसुप्पणिहाणे[2], °वइसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे°, उवगरणसुप्पणिहाणे । एव—सजयमणुस्साणवि[3] ।।

१०६ चउव्विहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते, त जहा—मणदुप्पणिहाणे[4], °वइदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे°, उवकरणदुप्पणिहाणे । एव—पचिंदियाण जाव[5] वेमाणियाण ।।

आवात-सवास-पदं

१०७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—आवातभद्दए[6] णाममेगे णो सवासभद्दए, सवासभद्दए णाममेगे णो आवातभद्दए, एगे आवातभद्दएवि सवासभद्दएवि, एगे णो आवातभद्दए णो सवासभद्दए ।।

वज्ज-पद

१०८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अप्पणो णाममेगे वज्ज पासति णो परस्स, परस्स णाममेगे वज्ज पासति णो अप्पणो, एगे अप्पणोवि वज्ज पासति परस्सवि, एगो णो अप्पणो वज्ज पासति णो परस्स ।।

१०९ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अप्पणो णाममेगे वज्ज उदीरेइ णो परस्स, परस्स णाममेगे वज्ज उदीरेइ णो अप्पणो, एगे अप्पणोवि वज्ज उदीरेइ परस्सवि, एगे णो अप्पणो वज्ज उदीरेइ णो परस्स ।।

११० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अप्पणो णाममेगे वज्ज उवसामेति णो परस्स, परस्स णामेगे वज्ज उवसामेति णो अप्पणो, एगे अप्पणोवि वज्ज उवसामेति परस्सवि, एगे णो अप्पणो वज्ज उवसामेति णो परस्स ।।

लोगोपचार-विणय-पद

१११ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अब्भुट्ठेति णाममेगे णो अब्भुट्ठावेति,

---

१ ठा० १।१४२-१५१, १६०-१६३ ।

२ स० पा०—मणसुप्पणिहाणे जाव उवगरण° ।

३ 'एव' शब्दस्य स्थाने यदि 'एय' तथा 'अवि' शब्दस्य स्थाने 'एव' स्यात्, यथा—'एय सजयमणुस्साणमेव' तदा अर्थदृष्ट्या रचना-दृष्ट्या च अधिक सगच्छते ।

४ स० पा०—मणदुप्पणिहाणे जाव उवकरण° ।

५ ठा० १।१४१-१५१, १६०-१६३ ।

६ °भद्दते (क, ख, ग) ।

अब्भुट्ठावेति णाममेगे णो अब्भुट्ठेति, एगे अब्भुट्ठेति वि अब्भुट्ठावेति वि, एगे णो अब्भुट्ठेति णो अब्भुट्ठावेति ॥

११२ [1]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—वदति णाममेगे णो वदावेति, वदावेति णाममेगे णो वदति, एगे वदति वि वदावेति वि, एगे णो वदति णो वदावेति° ॥

११३ [2]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सक्कारेइ णाममेगे णो सक्कारावेइ, सक्कारावेइ णाममेगे णो सक्कारेइ, एगे सक्कारेइ वि सक्कारावेइ वि, एगे णो सक्कारेइ णो सक्कारावेइ ॥

११४ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सम्माणेति णाममेगे णो सम्माणावेति, सम्माणावेति णाममेगे णो सम्माणेति, एगे सम्माणेति वि सम्माणावेति वि, एगे णो सम्माणेति णो सम्माणावेति ॥

११५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पूएइ णाममेगे णो पूयावेति, पूयावेति णाममेगे णो पूएइ, एगे पूएइ वि पूयावेति वि, एगे णो पूएइ णो पूयावेति ॥

सज्झाय-पद

११६ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—वाएइ णाममेगे णो वायावेइ, वायावेइ णाममेगे णो वाएइ, एगे वाएइ वि वायावेइ वि, एगे णो वाएइ णो वायावेइ ॥

११७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पडिच्छति णाममेगे णो पडिच्छावेति, पडिच्छावेति णाममेगे णो पडिच्छति, एगे पडिच्छति वि पडिच्छावेति वि, एगे णो पडिच्छति णो पडिच्छावेति ॥

११८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पुच्छइ णाममेगे णो पुच्छावेइ पुच्छावेइ णाममेगे णो पुच्छइ, एगे पुच्छइ वि पुच्छावेइ वि, एगे णो पुच्छइ णो पुच्छावेइ ॥

११९ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—वागरेति णाममेगे णो वागरावेति, वागरावेति णाममेगे णो वागरेति, एगे वागरेति वि वागरावेति वि, एगे णो वागरेति णो वागरावेति° ॥

१२० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुत्तधरे णाममेगे णो अत्थधरे, अत्थधरे णाममेगे णो सुत्तधरे, एगे सुत्तधरे वि अत्थधरे वि, एगे णो सुत्तधरे णो अत्थधरे ॥

लोगपाल-पदं

१२१ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, त जहा—सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे ॥

---

१ स० पा०—एव वदति णाममेगे णो वदावेइ। वाएइ पडिच्छति पुच्छइ वागरेति।

२ स० पा०—एव सक्कारेइ सम्माणेति पूएइ

१२२ एव —बलिस्सवि—सोमे, जमे, वेसमणे, वरुणे। धरणस्स—कालपाले, कोलपाले, सेलपाले, सखपाले। भूयाणदस्स—कालपाले, कोलपाले, सखपाले, सेलपाले। वेणुदेवस्स—चित्ते, विचित्ते, चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे। वेणुदालिस्स[1]—चित्ते, विचित्ते, विचित्तपक्खे, चित्तपक्खे। हरिकतस्स—पभे, सुप्पभे, पभकते, सुप्पभकते। हरिस्सहस्स—पभे, सुप्पभे, सुप्पभकते, पभकते। अग्गिसिहस्स—तेऊ, तेउसिहे, तेउकते, तेउप्पभे। अग्गिमाणवस्स—तेऊ, तेउसिहे, तेउप्पभे, तेउकते। पुण्णस्स—'रूवे, रूवसे'[2], 'रूवकते, रूवप्पभे'[3]। विसिट्ठस्स[4]—रूवे, रूवसे, रूवप्पभे, रूवकते। जलकतस्स—जले, जलरते, जलकते, जलप्पभे। जलप्पहस्स—जले, जलरते, जलप्पहे, जलकते। अमितगतिस्स—तुरियगती, खिप्पगती, सीहगती, सीहविक्कमगती। अमितवाहणस्स—तुरियगती, खिप्पगती, सीहविक्कमगती, सीहगती। वेलवस्स—काले, महाकाले, अजणे, रिट्ठे। पभजणस्स—काले, महाकाले, रिट्ठे, अजणे। घोसस्स—आवत्ते, वियावत्ते, णदियावत्ते, महाणदियावत्ते। महाघोसस्स—आवत्ते, वियावत्ते, महाणदियावत्ते, णदियावत्ते। सक्कस्स—सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे। ईसाणस्स—सोमे, जमे, वेसमणे, वरुणे। एव—एगतरिता जाव[5] अच्चुतस्स ॥

देव-पद

१२३ चउव्विहा वाउकुमारा पण्णत्ता, त जहा—काले, महाकाले, वेलवे, पभजणे ॥

१२४ चउव्विहा देवा पण्णत्ता, त जहा—भवणवासी, वाणमतरा, जोइसिया, विमाणवासी ॥

पमाण-पद

१२५ चउव्विहे पमाणे पण्णत्ते, त जहा—दव्वप्पमाणे, खेत्तप्पमाणे, कालप्पमाणे, भावप्पमाणे ॥

महत्तरिया-पद

१२६ चत्तारि दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—रूया, रूयसा, सुरूवा, रूयावती ॥

१२७ चत्तारि विज्जुकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—चित्ता, चित्तकणगा, सतेरा, सोतामणी ॥

---

१ °दालस्स (ख)।

२ रूप्पे रूप्पसे (क, ग), रूते रूतसे (ख)।

३ रूनकते रूतप्पभे (क, ख, ग), रूदकते रूदप्पभे (क्व)।

४ विसट्ठस्स (ख)।

५ ठा० २।३८१-३८४।

देव-ठिति-पदं

१२८ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो मज्झिमपरिसाए देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता ।।

१२९ ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो मज्झिमपरिसाए देवीण चत्तारि पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता ।।

संसार-पदं

१३० चउव्विहे ससारे पण्णत्ते, त जहा—दव्वससारे, खेत्तससारे, कालससारे, भावससारे ।।

दिट्ठिवाय-पद

१३१ चउव्विहे दिट्ठिवाए पण्णत्ते, त जहा—परिकम्म[1], सुत्ताइ, पुव्वगए, अणुजोगे ।।

पायच्छित्त-पद

१३२ चउव्विहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, त जहा—णाणपायच्छित्ते, दसणपायच्छित्ते, चरित्तपायच्छित्ते, वियत्तकिच्चपायच्छित्ते[2] ।।

१३३ चउव्विहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, त जहा—पडिसेवणापायच्छित्ते, सजोयणापायच्छित्ते, आरोवणापायच्छित्ते, पलिउचणापायच्छित्ते ।।

काल-पद

१३४ चउव्विहे काले पण्णत्ते, त जहा—पमाणकाले, अहाउयनिव्वत्तिकाले, मरणकाले, अद्धाकाले ।।

पोग्गल-परिणाम-पद

१३५ चउव्विहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, त जहा—वण्णपरिणामे, गधपरिणामे, रसपरिणामे, फासपरिणामे ।।

चाउज्जाम-पद

१३६ भरहेरवएसु ण वासेसु पुरिम-पच्छिम-वज्जा मज्झिमगा बावीस अरहता भगवतो चाउज्जाम धम्म पण्णवयति, त जहा—सव्वाओ पाणातिवायाओ वेरमण, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमण ।।

१३७ सव्वेसु ण महाविदेहेसु अरहता भगवतो चाउज्जाम धम्म पण्णवयति, त जहा—सव्वाओ पाणातिवायाओ वेरमण[3], °सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण°, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमण ।।

---

१ परिक्कम (क, ग) ।

२. चियत्त° (वृपा) ।

३ स० पा०—वेरमण जाव सव्वातो ।

दुग्गति-सुगति-पद

१३८ चत्तारि दुग्गतीओ पण्णत्ताओ, त जहा—णेरइयदुग्गती, तिरिक्खजोणियदुग्गती, मणुस्सदुग्गती, देवदुग्गती ॥

१३९ चत्तारि सोग्गईओ पण्णत्ताओ, त जहा—सिद्धसोग्गती, देवसोग्गती, मणुयसोग्गती, सुकुलपच्चायाती ॥

१४० चत्तारि दुग्गता पण्णत्ता, त जहा—णेरइयदुग्गता, तिरिक्खजोणियदुग्गता[1], मणुयदुग्गता[2], देवदुग्गता ॥

१४१ चत्तारि सुग्गता पण्णत्ता, त जहा—सिद्धसुग्गता[3], •देवसुग्गता, मणुयसुग्गता°, सुकुलपच्चायाया ॥

कम्मस-पद

१४२ पढमसमयजिणस्स ण चत्तारि कम्मसा खीणा भवति, त जहा—णाणावरणिज्ज, दसणावरणिज्ज, मोहणिज्ज, अतराइय[4] ॥

१४३ उप्पण्णणाणदसणधरे ण अरहा जिणे केवली चत्तारि कम्मसे वेदेति, त जहा—वेदणिज्ज, आउय, णाम, गोत ॥

१४४ पढमसमयसिद्धस्स ण चत्तारि कम्मसा जुगव खिज्जति, त जहा—वेयणिज्ज, आउय, णाम, गोत ॥

हासुप्पत्ति-पदं

१४५ चउहिं ठाणेहिं हासुप्पत्ती सिया, त जहा—पासेत्ता, भासेत्ता, सुणेत्ता, सभरेत्ता ॥

अतर-पदं

१४६ चउव्विहे अतरे पण्णत्ते, त जहा—कट्ठतरे, पम्हतरे, लोहतरे, पत्थरतरे ।
एवामेव इत्थिए वा पुरिसस्स वा चउव्विहे अतरे पण्णत्ते, त जहा—कट्ठतरसमाणे, पम्हतरसमाणे, लोहतरसमाणे, पत्थरतरसमाणे ॥

भयग-पदं

१४७ चत्तारि भयगा पण्णत्ता, त जहा—दिवसभयए[5], जत्ताभयए, उच्चत्तभयए, कव्वालभयए[6] ॥

---

१ तिरियदुग्गता (क) ।
२ मणुस्स° (ख) ।
३ स० पा०—सिद्धसुग्गता जाव सुकुल° ।
४ अतरातित (क, ख, ग) ।
५ °भयते (क, ख, ग) ।
६ कव्वाडभयते (ख) ।

पडिसेवि-पद

१४८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सपागडपडिसेवी णामेगे णो पच्छण्ण-पडिसेवी, पच्छण्णपडिसेवी णामेगे णो सपागडपडिसेवी, एगे सपागडपडिसेवी वि पच्छण्णपडिसेवी वि, एगे णो सपागडपडिसेवी[1] णो पच्छण्णपडिसेवी[2] ॥

अग्गमहिसी-पदं

१४९ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—कणगा, कणगलता, चित्तगुत्ता, वसुधरा ॥

१५० एव—जमस्स वरुणस्स वेसमणस्स ॥

१५१ वलिस्स ण वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—मितगा, सुभद्दा, विज्जुता, असणी ॥

१५२ एव—जमस्स वेसमणस्स वरुणस्स ॥

१५३ धरणस्स ण णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—असोगा, विमला, सुप्पभा, सुदसणा ॥

१५४ एव जाव[3] सखवालस्स ॥

१५५ भूताणदस्स ण णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—सुणदा, सुभद्दा, सुजाता, सुमणा ॥

१५६ एव जाव[4] सेलवालस्स ॥

१५७ जहा धरणस्स एव सव्वेसि दाहिणिदलोगपालाण जाव[5] घोसस्स ॥

१५८ जहा भूताणदस्स एव जाव[6] महाघोसस्स लोगपालाण ॥

१५९ कालस्स ण पिसाइदस्स पिसायरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा - कमला, कमलप्पभा, उप्पला, सुदसणा ॥

१६० एव - महाकालस्सवि ॥

१६१ सुरूवस्स ण भूतिदस्स भूतरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा — रूववती, वहुरूवा, सुरूवा, सुभगा ॥

१६२ एव—पडिरूवस्सवि ॥

१६३ पुण्णभद्दस्स ण जक्खिदस्स जक्खरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पुण्णा, वहुपुण्णिता[7], उत्तमा, तारगा ॥

१६४ एव—माणिभद्दस्सवि ॥

---

१. °पडिसेवीवि (क, ग) ।

२ °पडिसेवीवि (क, ग) ।

३,४,५,६ ठा० ४।१२२ ।

७ °पुत्तिता (ख) ।

१६५ भीमस्स ण रक्खसिंदस्स रक्खसरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पउमा, वसुमती, कणगा, रतणप्पभा ।।
१६६ एव—महाभीमसस्सवि ।।
१६७ किण्णरस्स ण किण्णरिंदस्स [किण्णररण्णो ?] चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—वडेंसा, केतुमती, रतिसेणा, रतिप्पभा ।।
१६८ एव—किंपुरिसस्सवि ।।
१६९ सप्पुरिसस्स ण किंपुरिसिंदस्स [किंपुरिसरण्णो ?] चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रोहिणी, णवमिता, हिरी, पुप्फवती ।।
१७० एव—महापुरिसस्सवि ।।
१७१ अतिकायस्स ण महोरगिंदस्स [महोरगरण्णो ?] चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—भुयगा, भुयगावती, महाकच्छा, फुडा ।।
१७२ एव—महाकायस्सवि ।।
१७३ गीतरतिस्स ण गधव्विदस्स [गधव्वरण्णो ?] चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—सुघोसा, विमला, सुस्सरा, सरस्सती ।।
१७४ एव—गीयजसस्सवि ।।
१७५ चदस्स ण जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—चदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभकरा ।।
१७६ एव—सूरस्सवि, णवर—सूरप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभकरा ।।
१७७ इगालस्स ण महागहस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—विजया, वेजयती, जयती, अपराजिया ।।
१७८ एव—सव्वेसि महग्गहाण जाव[1] भावकेउस्स ।।
१७९ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रोहिणी, मयणा, चित्ता, सामा[2] ।।
१८० एव जाव[3] वेसमणस्स ।।
१८१ ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पुढवी, राती, रयणी, विज्जू ।।
१८२ एव जाव[4] वरुणस्स ।।

विगति-पद

१८३ चत्तारि गोरसविगतीओ पण्णत्ताओ, त जहा—खीर, दहिं, सप्पि, णवणीत ।।
१८४. चत्तारि सिणेहविगतीओ पण्णत्ताओ, त जहा—तेल्ल, घय, वसा, णवणीत ।।
१८५ चत्तारि महाविगतीओ पण्णत्ताओ, त जहा—महु, मस, मज्ज, णवणीत ।।

---

१ ठा० २।३२५ ।
२ सोमा (क्व) ।
३ ठा० ४।१२२ ।
४ ठा० ४।१२२ ।

गुत्त-अगुत्त-पदं

१८६ चत्तारि कूडागारा पण्णत्ता, त जहा—गुत्ते णाम एगे गुत्ते, गुत्ते णाम एगे अगुत्ते, अगुत्ते णाम एगे गुत्ते, अगुत्ते णाम एगे अगुत्ते।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—गुत्ते णाम एगे गुत्ते, गुत्ते णाम एगे अगुत्ते, अगुत्ते णाम एगे गुत्ते, अगुत्ते णाम एगे अगुत्ते ॥

१८७ चत्तारि कूडागारसालाओ पण्णत्ताओ, त जहा—गुत्ता णाममेगा गुत्तदुवारा, गुत्ता णाममेगा अगुत्तदुवारा, अगुत्ता णाममेगा गुत्तदुवारा, अगुत्ता णाममेगा अगुत्तदुवारा ॥
एवामेव चत्तारित्थीओ पण्णत्ताओ, त जहा—गुत्ता णाममेगा गुत्तिंदिया, गुत्ता णाममेगा अगुत्तिंदिया, अगुत्ता णाममेगा गुत्तिंदिया, अगुत्ता णाममेगा अगुत्तिंदिया ॥

ओगाहणा-पद

१८८ चउविहा ओगाहणा पण्णत्ता, त जहा—दव्वोगाहणा, खेत्तोगाहणा, कालोगाहणा, भावोगाहणा ॥

पण्णत्ति-पद

१८९ चत्तारि पण्णत्तीओ अगवाहिरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—चदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, जंबुद्दीवपण्णत्ती, दीवसागरपण्णत्ती ॥

बीओ उद्देसो

पडिसलीण-अपडिसलीण-पद

१९० चत्तारि पडिसलीणा पण्णत्ता, त जहा—कोहपडिसलीणे[1], माणपडिसलीणे, मायापडिसलीणे, लोभपडिसलीणे।

१९१ चत्तारि अपडिसलीणा पण्णत्ता, त जहा—कोहअपडिसलीणे[2], •माणअपडिसलीणे, मायाअपडिसलीणे°, लोभअपडिसलीणे ॥

१९२ चत्तारि पडिसलीणा पण्णत्ता, त जहा—मणपडिसलीणे, वतिपडिसलीणे, कायपडिसलीणे, इंदियपडिसलीणे ॥

१९३ चत्तारि अपडिसलीणा पण्णत्ता, त जहा—मणअपडिसलीणे[3], •वतिअपडिसलीणे, कायअपडिसलीणे°, इंदियअपडिसलीणे ॥

---

१ कोव° (क)।
२ स० पा०—कोहअपडिसलीणे जाव लोभ°।
३ स० पा०—मणअपडिसलीणे जाव इंदिय°।

दीण-अदीण-पदं

१९४ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दीणे णाममेगे दीणे, दीणे णाममेगे अदीणे, अदीणे णाममेगे दीणे, अदीणे णाममेगे अदीणे ॥

१९५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा दीणे णाममेगे दीणपरिणते, दीणे णाममेगे अदीणपरिणते, अदीणे णाममेगे दीणपरिणते, अदीणे णाममेगे अदीणपरिणते ॥

१९६ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दीणे णाममेगे दीणरूवे, दीणे णाममेगे अदीणरूवे, अदीणे णाममेगे दीणरूवे, अदीणे णाममेगे अदीणरूवे ॥

१९७ [1]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दीणे णाममेगे दीणमणे, दीणे णाममेगे अदीणमणे, अदीणे णाममेगे दीणमणे, अदीणे णाममेगे अदीणमणे ॥

१९८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दीणे णाममेगे दीणसकप्पे, दीणे णाममेगे अदीणसकप्पे, अदीणे णाममेगे दीणसकप्पे, अदीणे णाममेगे अदीणसकप्पे ॥

१९९ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दीणे णाममेगे दीणपण्णे, दीणे णाममेगे अदीणपण्णे, अदीणे णाममेगे दीणपण्णे, अदीणे णाममेगे अदीणपण्णे ॥

२०० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दीणे णाममेगे दीणदिट्ठी, दीणे णाममेगे अदीणदिट्ठी, अदीणे णाममेगे दीणदिट्ठी, अदीणे णाममेगे अदीणदिट्ठी ॥

२०१ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दीणे णाममेगे दीणसीलाचारे, दीणे णाममेगे अदीणसीलाचारे, अदीणे णाममेगे दीणसीलाचारे, अदीणे णाममेगे अदीणसीलाचारे ॥

२०२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दीणे णाममेगे दीणववहारे, दीणे णाममेगे अदीणववहारे, अदीणे णाममेगे दीणववहारे, अदीणे णाममेगे अदीणववहारे° ॥

२०३ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दीणे णाममेगे दीणपरक्कमे, दीणे णाममेगे अदीणपरक्कमे, [2]°अदीणे णाममेगे दीणपरक्कमे, अदीणे णाममेगे अदीणपरक्कमे° ॥

२०४ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दीणे णाममेगे दीणवित्ती, दीणे णाममेगे अदीणवित्ती, अदीणे णाममेगे दीणवित्ती, अदीणे णाममेगे अदीणवित्ती ॥

२०५ [1]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दीणे णाममेगे दीणजाती, दीणे णाममेगे अदीणजाती, अदीणे णाममेगे दीणजाती, अदीणे णाममेगे अदीणजाती ॥

---

१ स० पा०—एव दीणमणे दीणसकप्पे दीणपण्णे दीणदिट्ठी दीणसीलाचारे दीणववहारे ।

२. स० पा०—एव सव्वेसि चउभगो भाणियव्वो ।

३ स० पा०—एव दीणजाती दीणभासी दीणोभासी ।

२०६ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दीणे णाममेगे दीणभासी, दीणे णाममेगे अदीणभासी, अदीणे णाममेगे दीणभासी, अदीणे णाममेगे अदीणभासी ।।

२०७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दीणे णाममेगे दीणोभासी, दीणे णाममेगे अदीणोभासी, अदीणे णाममेगे दीणोभासी, अदीणे णाममेगे अदीणोभासी° ।।

२०८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दीणे णाममेगे दीणसेवी, दीणे णाममेगे अदीणसेवी, अदीणे णाममेगे दीणसेवी, अदीणे णाममेगे अदीणसेवी ।।

२०९ [1]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दीणे णाममेगे दीणपरियाए, दीणे णाममेगे अदीणपरियाए, अदीणे णाममेगे दीणपरियाए, अदीणे णाममेगे अदीणपरियाए ।।

२१० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दीणे णाममेगे दीणपरियाले, दीणे णाममेगे अदीणपरियाले, अदीणे णाममेगे दीणपरियाले, अदीणे णाममेगे अदीणपरियाले° ।।

अज्ज-अणज्ज-पद

२११ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अज्जे णाममेगे अज्जे, अज्जे णाममेगे अणज्जे, अणज्जे णाममेगे अज्जे, अणज्जे णाममेगे अणज्जे ।।

२१२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अज्जे णाममेगे अज्जपरिणए, अज्जे णाममेगे अणज्जपरिणए, अणज्जे णाममेगे अज्जपरिणए, अणज्जे णाममेगे अणज्जपरिणए ।।

२१३ [2]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अज्जे णाममेगे अज्जरूवे, अज्जे णाममेगे अणज्जरूवे, अणज्जे णाममेगे अज्जरूवे, अणज्जे णाममेगे अणज्जरूवे ।।

२१४ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अज्जे णाममेगे अज्जमणे, अज्जे णाममेगे अणज्जमणे, अणज्जे णाममेगे अज्जमणे, अणज्जे णाममेगे अणज्जमणे ।।

२१५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अज्जे णाममेगे अज्जसकप्पे, अज्जे णाममेगे अणज्जसकप्पे, अणज्जे णाममेगे अज्जसकप्पे, अणज्जे णाममेगे अणज्जसकप्पे ।।

२१६ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अज्जे णाममेगे अज्जपण्णे, अज्जे णाममेगे अणज्जपण्णे, अणज्जे णाममेगे अज्जपण्णे, अणज्जे णाममेगे अणज्जपण्णे ।।

---

१ स० पा०—एव दीणे णाममेगे दीणपरियाए एव दीणे णाममेगे दीणपरियाले सव्वत्थ चउभगो ।

२ स० पा०—एव अज्जरूवे° ··· अज्जेण वि भाणियव्वा ।

२१७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अज्जे णाममेगे अज्जदिट्ठी, अज्जे णाममेगे अणज्जदिट्ठी, अणज्जे णाममेगे अज्जदिट्ठी, अणज्जे णाममेगे अणज्ज-दिट्ठी ॥

२१८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अज्जे णाममेगे अज्जसीलाचारे, अज्जे णाममेगे अणज्जसीलाचारे, अणज्जे णाममेगे अज्जसीलाचारे, अणज्जे णाम-मेगे अणज्जसीलाचारे ॥

२१९ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अज्जे णाममेगे अज्जववहारे, अज्जे णाममेगे अणज्जववहारे, अणज्जे णाममेगे अज्जववहारे, अणज्जे णाममेगे अणज्जववहारे ॥

२२० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अज्जे णाममेगे अज्जपरक्कमे, अज्जे णाममेगे अणज्जपरक्कमे, अणज्जे णाममेगे अज्जपरक्कमे, अणज्जे णाममेगे अणज्जपरक्कमे ॥

२२१ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अज्जे णाममेगे अज्जवित्ती, अज्जे णाममेगे अणज्जवित्ती, अणज्जे णाममेगे अज्जवित्ती, अणज्जे णाममेगे अणज्जवित्ती ॥

२२२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अज्जे णाममेगे अज्जजाती, अज्जे णाममेगे अणज्जजाती, अणज्जे णाममेगे अज्जजाती, अणज्जे णाममेगे अणज्जजाती ॥

२२३ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अज्जे णाममेगे अज्जभासी, अज्जे णाममेगे अणज्जभासी, अणज्जे णाममेगे अज्जभासी, अणज्जे णाममेगे अणज्ज-भासी ॥

२२४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अज्जे णाममेगे अज्जओभासी, अज्जे णाममेगे अणज्जओभासी, अणज्जे णाममेगे अज्जओभासी, अणज्जे णाममेगे अणज्जओभासी ॥

२२५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अज्जे णाममेगे अज्जसेवी, अज्जे णाममेगे अणज्जसेवी, अणज्जे णाममेगे अज्जसेवी, अणज्जे णाममेगे अणज्ज-सेवी ॥

२२६ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अज्जे णाममेगे अज्जपरियाए, अज्जे णाममेगे अणज्जपरियाए, अणज्जे णाममेगे अज्जपरियाए, अणज्जे णाममेगे अणज्जपरियाए ॥

२२७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अज्जे णाममेगे अज्जपरियाले, अज्जे णाममेगे अणज्जपरियाले, अणज्जे णाममेगे अज्जपरियाले, अणज्जे णाममेगे अणज्जपरियाले° ॥

२२८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अज्जे णाममेगे अज्जभावे, अज्जे णाममेगे अणज्जभावे, अणज्जे णाममेगे अज्जभावे, अणज्जे णाममेगे अणज्जभावे ।।

जाति-पद

२२९ चत्तारि उसभा पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे, कुलसपण्णे, वलसपण्णे, रूवसपण्णे ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे[1], °कुलसपण्णे, वलसपण्णे° रूवसपण्णे ।।

२३० चत्तारि उसभा पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाम एगे णो कुलसपण्णे, कुलसपण्णे णाम एगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि कुलसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो कुलसपण्णे ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाममेगे णो कुलसपण्णे, कुलसपण्णे णाममेगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि कुलसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो कुलसपण्णे ।।

२३१ चत्तारि उसभा पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाम एगे णो वलसपण्णे, वलसपण्णे णाम एगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि वलसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो वलसपण्णे ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाम एगे णो वलसपण्णे, वलसपण्णे णाम एगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि वलसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो वलसपण्णे ।।

२३२ चत्तारि उसभा पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाम एगे णो रूवसपण्णे, रूवसपण्णे णाम एगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि रूवसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो रूवसपण्णे ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाम एगे णो रूवसपण्णे, रूवसपण्णे णाम एगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि रूवसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो रूवसपण्णे ।।

कुल-पद

१३३ चत्तारि उसभा पण्णत्ता, त जहा—कुलसपण्णे णाम एगे णो वलसपण्णे, वलसपण्णे णाम एगे णो कुलसपण्णे, एगे कुलसपण्णेवि वलसपण्णेवि, एगे णो कुलसपण्णे णो वलसपण्णे ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—कुलसपण्णे णाम एगे णो

---

१ स० पा०—जातिसपण्णे जाव रूवसपण्णे ।

वलसपण्णे, वलसपण्णे णाम एगे णो कुलसपण्णे, एगे कुलसपण्णेवि वलसपण्णेवि, एगे णो कुलसपण्णे णो वलसपण्णे ॥

२३४ चत्तारि उसभा पण्णत्ता, त जहा—कुलसपण्णे णाम एगे णो रूवसपण्णे, रूवसपण्णे णाम एगे णो कुलसपण्णे, एगे कुलसपण्णेवि रूवसपण्णेवि, एगे णो कुलसपण्णे णो रूवसपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—कुलसपण्णे णाम एगे णो रूवसपण्णे, रूवसपण्णे णाम एगे णो कुलसपण्णे, एगे कुलसपण्णेवि रूवसपण्णेवि, एगे णो कुलसपण्णे णो रूवसपण्णे ॥

वल-पद

२३५ चत्तारि उसभा पण्णत्ता, त जहा—वलसपण्णे णाम एगे णो रूवसपण्णे, रूवसपण्णे णाम एगे णो वलसपण्णे, एगे वलसपण्णेवि रूवसपण्णेवि, एगे णो वलसपण्णे णो रूवसपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—वलसपण्णे णाम एगे णो रूवसपण्णे, रूवसपण्णे णाम एगे णो वलसपण्णे, एगे वलसपण्णेवि रूवसपण्णेवि, एगे णो वलसपण्णे णो रूवसपण्णे ॥

हत्थि-पद

२३६ चत्तारि हत्थी पण्णत्ता, त जहा—भद्दे, मदे, मिए[1], सकिण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—भद्दे, मदे, मिए, सकिण्णे ॥

२३७ चत्तारि हत्थी पण्णत्ता, त जहा—भद्दे णाममेगे भद्दमणे, भद्दे णाममेगे मदमणे, भद्दे णाममेगे मियमणे, भद्दे णाममेगे सकिण्णमणे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—भद्दे णाममेगे भद्दमणे, भद्दे णाममेगे मदमणे, भद्दे णाममेगे मियमणे, भद्दे णाममेगे सकिण्णमणे ॥

२३८ चत्तारि हत्थी पण्णत्ता, त जहा—मदे णाममेगे भद्दमणे, मदे णाममेगे मदमणे, मदे णाममेगे मियमणे, मदे णाममेगे सकिण्णमणे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—मदे णाममेगे भद्दमणे, [2]•मदे णाममेगे मदमणे, मदे णाममेगे मियमणे, मदे णाममेगे सकिण्णमणे° ॥

२३९ चत्तारि हत्थी पण्णत्ता, त जहा—मिए णाममेगे भद्दमणे, मिए णाममेगे मदमणे, मिए णाममेगे मियमणे, मिए णाममेगे सकिण्णमणे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—मिए णाममेगे भद्दमणे, [3]•मिए णाममेगे मदमणे, मिए णाममेगे मियमणे, मिए णाममेगे सकिण्णमणे° ॥

---

१. मिते (क, ख, ग) ।

२. स० पा०—त चेव ।

३ स० पा०—त चेव ।

२४० चत्तारि हत्थी पण्णत्ता, त जहा—सकिण्णे णाममेगे भद्दमणे, सकिण्णे णाममेगे मदमणे, सकिण्णे णाममेगे मियमणे, सकिण्णे णाममेगे सकिण्णमणे ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सकिण्णे णाममेगे भद्दमणे, [1]•सकिण्णे णाममेगे मदमणे, सकिण्णे णाममेगे मियमणे°, सकिण्णे णाममेगे सकिण्णमणे ।

संगहणी-गाहा

मधुगुलिय-पिगलक्खो, अणुपुव्व-सुजाय-दीहणगूलो ।
पुरओ उदग्गधीरो, सव्वगसमाधितो भद्दो ॥१॥
चल-वहल-विसम-चम्मो, थूलसिरो[2] थूलएण पेएण ।
थूलणह-दत-वालो, हरिपिंगल-लोयणो मदो ॥२॥
तणुओ तणुयग्गीवो[3], तणुयतओ[4] तणुयदत-णह-वालो ।
भीरू तत्थुव्विग्गो, तासी य भवे मिए णाम ॥३॥
एतेसिं हत्थीण 'थोवा थोव',[5] तु जो अणुहरति हत्थी ।
रूवेण व सीलेण व, सो सकिण्णोत्ति णायव्वो ॥४॥
भद्दो मज्जइ सरए, मदो उण मज्जते वसतमि ।
मिउ मज्जति हेमते, सकिण्णो सव्वकालमि ॥५॥

विकहा-पदं

२४१ चत्तारि विकहाओ पण्णत्ताओ, त जहा—इत्थिकहा, भत्तकहा, देसकहा, रायकहा ॥

२४२ इत्थिकहा चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—इत्थीण जाइकहा, इत्थीण कुलकहा, इत्थीण रूवकहा, इत्थीण णेवत्थकहा ॥

२४३ भत्तकहा चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—भत्तस्स आवावकहा[6], भत्तस्स णिव्वावकहा[7], भत्तस्स आरभकहा, भत्तस्स णिट्ठाणकहा[8] ॥

२४४ देसकहा चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—देसविहिकहा, देसविकप्पकहा, देसच्छद-कहा, देसणेवत्थकहा ॥

२४५ रायकहा चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—रण्णो अतियाणकहा[9], रण्णो णिज्जाणकहा, रण्णो वलवाहणकहा, रण्णो कोसकोट्ठागारकहा ॥

---

१ स० पा०—त चेव जाव सकिण्णे ।
२ थुल्लसिरो (क, ग) ।
३ तणुतग्गीवो (क, ख, ग) ।
४ तणुयततो (क, ख, ग) ।
५ थोव थोव (क्व) ।
६ आवाहकहा (क, ग), अवोहकहा (ख) ।
७ णिव्वाहकहा (क, ग), णिच्चावकहा(ख) ।
८ णिट्ठावणकहा (क, ग) ।
९ अतिताण° (क, ख, ग) ।

कहा-पदं

२४६ चउव्विहा कहा[1] पण्णत्ता, तं जहा—अक्खेवणी, विक्खेवणी, संवेयणी[2], णिव्वेदणी[3] ॥

२४७ अक्खेवणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—आयारअक्खेवणी, ववहार-अक्खेवणी, पण्णत्तिअक्खेवणी[4], दिट्ठिवातअक्खेवणी ॥

२४८ विक्खेवणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—ससमयं कहेइ ससमयं कहित्ता परसमयं कहेइ, परसमयं कहेत्ता ससमयं ठावइता[5] भवति, सम्मावायं[6] कहेइ सम्मावायं कहेत्ता मिच्छावायं कहेइ, मिच्छावायं कहेत्ता सम्मावायं ठावइता[7] भवति ॥

२४९ संवेयणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—इहलोगसंवेयणी, परलोगसंवेयणी, आतसरीरसंवेयणी, परसरीरसंवेयणी ॥

२५० णिव्वेदणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—
१ इहलोगे[8] दुच्चिण्णा कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवति ।
२ इहलोगे दुच्चिण्णा कम्मा परलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवति ।
३ परलोगे दुच्चिण्णा कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवति ।
४ परलोगे दुच्चिण्णा कम्मा परलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवति ।
१ इहलोगे सुचिण्णा कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवति ।
२ इहलोगे सुचिण्णा कम्मा परलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवति ।
३ [9]°परलोगे सुचिण्णा कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवति ।
४ परलोगे सुचिण्णा कम्मा परलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवति° ॥

किस-दढ-पदं

२५१ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—किसे णाममेगे किसे, किसे णाममेगे दढे, दढे णाममेगे किसे, दढे णाममेगे दढे ॥

२५२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—किसे णाममेगे किससरीरे, किसे णाम-मेगे दढसरीरे, दढे णाममेगे किससरीरे, दढे णाममेगे दढसरीरे ॥

२५३ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—किससरीरस्स णाममेगस्स णाणदंसणे

---

१ धम्मकहा (क्व) ।
२ संवेगणी (क, ख, ग) सर्वत्र ।
३ निव्वेगणी (ख, ग) ।
४ पन्नत्तिक्खेवणी (क, ग) ।
५ ठावतित्ता (क, ख), ठवइत्ता (ग) ।
६ °वात (क, ख, ग) ।
७. ठावतित्ता (क, ख), ठवेत्ता (ग) ।
८ °लोग (क) ।
९ सं० पा०—एवं चउभंगो तहेव ।

समुप्पज्जति णो दढसरीरस्स, दढसरीरस्स णाममेगस्स णाणदसणे समुप्पज्जति णो किससरीरस्स, एगस्स किससरीरस्सवि णाणदसणे समुप्पज्जति दढसरीरस्सवि, एगस्स णो किससरीरस्स णाणदसणे समुप्पज्जति णो दढसरीरस्स ।।

अतिसेस-णाण-दसण-पद

२५४ चउहि ठाणेहि णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा अस्सि समयसि अतिसेसे णाणदसणे समुप्पज्जिउकामेवि ण समुप्पज्जेज्जा, त जहा—
१ अभिक्खण-अभिक्खण इत्थिकह भत्तकह देसकह रायकह कहेत्ता भवति ।
२ विवेगेण विउस्सग्गेण णो सम्ममप्पाण भावित्ता भवति ।
३ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि णो धम्मजागरिय जागरइत्ता भवति ।
४ फासुयस्स एसणिज्जस्स उछस्स सामुदाणियस्स णो सम्म गवेसित्ता भवति ।
इच्चेतेहि चउहि ठाणेहि णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा[1] •अस्सि समयसि अतिसेसे णाणदसणे समुप्पज्जिउकामेवि° णो समुप्पज्जेज्जा ।।

२५५ चउहि ठाणेहि णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा [अस्सि समयसि ?] अतिसेसे णाणदसणे समुप्पज्जिउकामे समुप्पज्जेज्जा, त जहा—
१ इत्थिकह भत्तकह देसकह रायकह णो कहेत्ता भवति ।
२ विवेगेण विउस्सगेण सम्ममप्पाण भावेत्ता भवति ।
३ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरइत्ता भवति ।
४ फासुयस्स एसणिज्जस्स उछस्स सामुदाणियस्स सम्म गवेसित्ता भवति ।
इच्चेतेहि चउहि ठाणेहि णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा[2] •[अस्सि समयसि ?] अतिसेसे णाणदसणे समुप्पज्जिउकामे° समुप्पज्जेज्जा ।।

सज्झाय-पद

२५६ णो कप्पति णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा चउहि महापाडिवएहि सज्झाय करेत्तए, त जहा—आसाढपाडिवए, इदमहपाडिवए, कत्तियपाडिवए, सुगिम्हगपाडिवए ।।

२५७ णो कप्पति णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा चउहि सझाहि सज्झाय करेत्तए, त जहा—पढमाए[3], पच्छिमाए, मज्झण्हे, अड्ढरत्ते ।।

२५८ कप्पइ णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा चउक्ककाल सज्झाय करेत्तए, त जहा—पुव्वण्हे, अवरण्हे, पओसे, पच्चूसे ।।

लोगट्ठिति-पद

२५९ चउव्विहा लोगट्ठिती पण्णत्ता, त जहा—आगासपतिट्ठिए वाते, वातपतिट्ठिए उदधी, उदधिपतिट्ठिया पुढवी, पुढविपतिट्ठिया तसा थावरा पाणा ।।

---

१ स० पा०—णिग्गथीण वा जाव णो समुप्प°।
२ स० पा०—णिग्गथीण वा जाव समुप्प° ।
३ पढमाते (क, ख, ग) ।

पुरिस-भेद-पद

२६० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—तहे णाममेगे, णोतहे णाममेगे, सोवत्थी णाममेगे, पधाणे णाममेगे ।।

आय-पर-पद

२६१ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आयतकरे णाममेगे णो परतकरे, परतकरे णाममेगे णो आयतकरे, एगे आयतकरेवि परतकरेवि, एगे णो आयतकरे णो परतकरे ।।

२६२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आयतमे णाममेगे णो परतमे, परतमे णाममेगे णो आयतमे, एगे आयतमेवि परतमेवि, एगे णो आयतमे णो परतमे ।।

२६३ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आयदमे णाममेगे णो परदमे, परदमे णाममेगे णो आयदमे, एगे आयदमेवि परदमेवि, एगे णो आयदमे णो परदमे ।।

गरहा-पद

२६४ चउव्विहा गरहा पण्णत्ता, तं जहा—उवसंपज्जामित्तेगा गरहा, वितिगिच्छामित्तेगा गरहा, जंकिंचिमिच्छामित्तेगा गरहा, एवंपि पण्णत्तेगा[1] गरहा ।।

अलमंथु-पद

२६५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अप्पणो णाममेगे अलमंथू भवति णो परस्स, परस्स णाममेगे अलमंथू भवति णो अप्पणो, एगे अप्पणोवि अलमंथू भवति परस्सवि, एगे णो अप्पणो अलमंथू भवति णो परस्स ।।

उज्जु-वंक-पद

२६६ चत्तारि मग्गा पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जू, उज्जू णाममेगे वंके, वंके णाममेगे उज्जू, वंके णाममेगे वंके ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जू, उज्जू णाममेगे वंके, वंके णाममेगे उज्जू, वंके णाममेगे वंके ।।

खेम-अखेम-पद

२६७ चत्तारि मग्गा पण्णत्ता, तं जहा—खेमे णाममेगे खेमे, खेमे णाममेगे अखेमे, अखेमे णाममेगे खेमे, अखेमे णाममेगे अखेमे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—खेमे णाममेगे खेमे, खेमे णाममेगे अखेमे, अखेमे णाममेगे खेमे, अखेमे णाममेगे अखेमे ।।

२६८ चत्तारि मग्गा पण्णत्ता, तं जहा—खेमे णाममेगे खेमरूवे, खेमे णाममेगे अखेमरूवे, अखेमे णाममेगे खेमरूवे, अखेमे णाममेगे अखेमरूवे ।

---

१ पण्णत्ते एगा (वृपा) ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—खेमे णाममेगे खेमरूवे, खेमे णाममेगे अखेमरूवे, अखेमे णाममेगे खेमरूवे, अखेमे णाममेगे अखेमरूवे ॥

वाम-दाहिण-पद

२६९ चत्तारि सवुक्का पण्णत्ता, त जहा—वामे णाममेगे वामावत्ते, वामे णाममेगे दाहिणावत्ते, दाहिणे णाममेगे वामावत्ते, दाहिणे णाममेगे दाहिणावत्ते ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—वामे णाममेगे वामावत्ते, वामे णाममेगे दाहिणावत्ते, दाहिणे णाममेगे वामावत्ते, दाहिणे णाममेगे दाहिणावत्ते ॥

२७०. चत्तारि धूमसिहाओ पण्णत्ताओ, त जहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, वामा णाममेगा दाहिणावत्ता, दाहिणा णाममेगा वामावत्ता, दाहिणा णाममेगा दाहिणावत्ता ।

एवामेव चत्तारि इत्थीओ पण्णत्ताओ, त जहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, वामा णाममेगा दाहिणावत्ता, दाहिणा णाममेगा वामावत्ता, दाहिणा णाममेगा दाहिणावत्ता ॥

२७१ चत्तारि अग्गिसिहाओ पण्णत्ताओ, त जहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, वामा णाममेगा दाहिणावत्ता, दाहिणा णाममेगा वामावत्ता, दाहिणा णाममेगा दाहिणावत्ता ।

एवामेव चत्तारि इत्थीओ पण्णत्ताओ, त जहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, वामा णाममेगा दाहिणावत्ता, दाहिणा णाममेगा वामावत्ता, दाहिणा णाममेगा दाहिणावत्ता ॥

२७२ चत्तारि वायमडलिया पण्णत्ता, त जहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, वामा णाममेगा दाहिणावत्ता, दाहिणा णाममेगा वामावत्ता, दाहिणा णाममेगा दाहिणावत्ता ॥

एवामेव चत्तारि इत्थीओ पण्णत्ताओ, त जहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, वामा णाममेगा दाहिणावत्ता, दाहिणा णाममेगा वामावत्ता, दाहिणा णाममेगा दाहिणावत्ता ॥

२७३ चत्तारि वणसडा पण्णत्ता, त जहा—वामे णाममेगे वामावत्ते, वामे णाममेगे दाहिणावत्ते, दाहिणे णाममेगे वामावत्ते, दाहिणे णाममेगे दाहिणावत्ते ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—वामे णाममेगे वामावत्ते, वामे णाममेगे दाहिणावत्ते, दाहिणे णाममेगे वामावत्ते, दाहिणे णाममेगे दाहिणावत्ते ॥

णिग्गथ-णिग्गथी-पद

२७४ चउहि ठाणेहि णिग्गथे णिग्गथि आलवमाणे वा सलवमाणे वा णातिक्कमति, त जहा—१ पथ पुच्छमाणे वा, २ पथ देसमाणे वा, ३ असण वा पाण वा

खाइम वा साइम वा दलेमाणे[1] वा, ४ 'असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा'[2] दलावेमाणे[3] वा ॥

तमुक्काय-पद

२७५ तमुक्कायस्स ण चत्तारि णामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—तमेति वा, तमुक्कातेति वा, अधकारेति वा, महधकारेति वा ॥

२७६ तमुक्कायस्स ण चत्तारि णामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—लोगधगारेति वा, लोगतमसेति वा, देवधगारेति वा, देवतमसेति वा ॥

२७७ तमुक्कायस्स ण चत्तारि णामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—वातफलिहेति[4] वा, वातफलिहखोभेति[5] वा, देवरण्णेति वा, देववूहेति वा ॥

२७८ तमुक्काते ण चत्तारि कप्पे आवरित्ता चिट्ठति, त जहा—सोधम्मीसाण सणकुमार-माहिंद ॥

दोस-पदं

२७९ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सपागडपडिसेवी णाममेगे, पच्छण्ण-पडिसेवी णाममेगे, पडुप्पण्णणदी[6] णाममेगे, णिस्सरणणदी णाममेगे ॥

जय-पराजय-पद

२८० चत्तारि सेणाओ पण्णत्ताओ, त जहा—जइत्ता[7] णाममेगा णो पराजिणित्ता, पराजिणित्ता णाममेगा णो जइत्ता, एगा जइत्तावि पराजिणित्तावि, एगा णो जइत्ता णो पराजिणित्ता ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जइत्ता णाममेगे णो परा-जिणित्ता, पराजिणित्ता णाममेगे णो जइत्ता, एगे जइत्तावि पराजिणित्तावि, एगे णो जइत्ता णो पराजिणित्ता ॥

२८१ चत्तारि सेणाओ पण्णत्ताओ, त जहा—जइत्ता णाममेगा जयइ, जइत्ता णाममेगा पराजिणति, पराजिणित्ता णाममेगा जयइ, पराजिणित्ता णाममेगा पराजिणति ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जइत्ता णाममेगे जयइ, जइत्ता णाममेगे पराजिणति, पराजिणित्ता णाममेगे जयइ, पराजिणित्ता णाममेगे पराजिणति ॥

---

१ दलनमाणे (क, ग), दलमाणे (ख) ।
२ × (क ख, ग) ।
३ दवावेमाणे (क, ग) ।
४ देवफलिहेति (वृपा) ।
५ वातपरिखोभेति, देवपरिखोभेति (वृपा) ।
६ पडुप्पन्नसेवी (वृपा) ।
७ जतित्ता (क, ख, ग) ।

माया-पद

२८२ चत्तारि केतणा पण्णत्ता, त जहा—वसीमूलकेतणए, मेंढविसाणकेतणए, गोमुत्ति-केतणए, अवलेहणियकेतणए ।

'एवामेव चउविधा माया पण्णत्ता, त जहा—वसीमूलकेतणासमाणा[2], •मेंढ-विसाणकेतणासमाणा, गोमुत्तिकेतणासमाणा°, अवलेहणियकेतणासमाणा ।

१ वसीमूलकेतणासमाण मायमणुपविट्ठे जीवे काल करेति, णेरइएसु उववज्जति ।

२ मेंढविसाणकेतणासमाण मायमणुपविट्ठे जीवे काल करेति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति ।

३. गोमुत्ति[3]•केतणासमाण मायमणुपविट्ठे जीवे° काल करेति, मणुस्सेसु उववज्जति ।

४ अवलेहणिय[4]•केतणासमाण मायमणुपविट्ठे जीवे काल करेति°, देवेसु उववज्जति ॥

माण-पद

२८३ चत्तारि थभा पण्णत्ता, त जहा—सेलथभे, अट्ठिथभे, दारुथभे, तिणिसलताथभे ।

एवामेव चउव्विधे माणे पण्णत्ते, त जहा—सेलथभसमाणे[5], •अट्ठिथभसमाणे, दारुथभसमाणे°, तिणिसलताथभसमाणे ।

१ सेयथभसमाण माण अणुपविट्ठे जीवे काल करेति, णेरइएसु उववज्जति ।

२ •[6]अट्ठिथभसमाण माण अणुपविट्ठे जीवे काल करेति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति ।

३ दारुथभसमाण माण अणुपविट्ठे जीवे काल करेति, मणुस्सेसु उववज्जति° ।

४ तिणिसलताथभसमाण माण अणुपविट्ठे जीवे काल करेति, देवेसु उववज्जति ॥

लोभ-पद

२८४ चत्तारि वत्था पण्णत्ता, त जहा—किमिरागरत्ते, कद्दमरागरत्ते, खजणरागरत्ते, हलिद्दरागरत्ते[7] ।

एवामेव चउव्विधे लोभे पण्णत्ते, त जहा—किमिरागरत्तवत्थसमाणे, कद्दम-रागरत्तवत्थसमाणे, खजणरागरत्तवत्थसमाणे, हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणे ।

---

१ पूर्वं क्रोधमानसूत्राणि ततो मायासूत्राणि (वृपा) ।

२ स० पा०—वसीमूलकेतणासमाणा जाव अवलेह° ।

३. स० पा०—गोमुत्ति जाव काल ।

४ स० पा०—अवलेहणित जाव देवेसु ।

५ स० पा०–सेलथभसमाणे जाव तिणिस° ।

६ स० पा०—एव जाव तिणिस° ।

७ हलिद्दा° (क) ।

१ किमिरागरत्तवत्थसमाण लोभमणुपविट्ठे जीवे काल करेइ, णेरइएसु उववज्जइ।

२ [1]•कद्दमरागरत्तवत्थसमाण लोभमणुपविट्ठे जीवे काल करेइ, तिरिक्ख-जोणितेसु उववज्जइ।

३ खजणरागरत्तवत्थसमाण लोभमणुपविट्ठे जीवे काल करेइ, मणुस्सेसु उववज्जइ°।

४. हलिद्दरागरत्तवत्थसमाण लोभमणुपविट्ठे जीवे काल करेइ, देवेसु उववज्जइ॥

संसार-पदं

२८५ चउव्विहे ससारे पण्णत्ते, त जहा—णेरइयससारे[2], •तिरिक्खजोणियससारे, मणुस्ससंसारे°, देवससारे॥

२८६ चउव्विहे आउए[3] पण्णत्ते, त जहा—णेरइयआउए,[4] •तिरिक्खजोणियआउए, मणुस्साउए°, देवाउए॥

२८७ चउव्विहे भवे पण्णत्ते, त जहा—णेरइयभवे[5], •तिरिक्खजोणियभवे, मणुस्सभवे°, देवभवे॥

आहार-पदं

२८८ चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, त जहा—असणे, पाणे, खाइमे, साइमे॥

२८९ चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, त जहा—उवक्खरसपण्णे, उवक्खडसपण्णे[6], सभाव-सपण्णे, परिजुसियसपण्णे॥

कम्मावत्था-पदं

२९० चउव्विहे बधे पण्णत्ते, त जहा—पगतिबधे, ठितिबधे, अणुभावबधे, पदेसबधे॥

२९१ चउव्विहे उवक्कमे पण्णत्ते, त जहा—बधणोवक्कमे, उदीरणोवक्कमे, उवसमणोवक्कमे, विप्परिणामणोवक्कमे॥

२९२. बधणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—पगतिबधणोवक्कमे, ठितिबधणो-वक्कमे, अणुभावबधणोवक्कमे, पदेसबधणोवक्कमे॥

२९३ उदीरणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—पगतिउदीरणोवक्कमे, ठिति-उदीरणोवक्कमे, अणुभावउदीरणोवक्कमे, पदेसउदीरणोवक्कमे॥

२९४ उवसामणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—पगतिउवसामणोवक्कमे, ठिति-उवसामणोवक्कमे, अणुभावउवसामणोवक्कमे, पदेसउवसामणोवक्कमे॥

---

१ स० पा०—तहेव जाव हलिद्द°।

२ सं० पा०—णेरतियससारे जाव देवससारे।

३ आउते (क, ख, ग)।

४ स० पा०—णेरतिआउते जाव देवाउते।

५ स० पा० – णेरतियभवे जाव देवभवे।

६ नो उवक्खरसपन्ने (वृपा)।

२९५ विप्परिणामणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—पगतिविप्परिणामणोवक्कमे, ठितिविप्परिणामणोवक्कमे, अणुभावविप्परिणामणोवक्कमे, पएसविप्परिणाम-णोवक्कमे[1] ।।

२९६ चउव्विहे अप्पाबहुए पण्णत्ते, त जहा—पगतिअप्पाबहुए, ठितिअप्पाबहुए, अणुभावअप्पाबहुए, पएसअप्पाबहुए ।।

२९७ चउव्विहे सकमे पण्णत्ते, त जहा—पगतिसकमे, ठितिसकमे, अणभावसकमे, पएससकमे ।।

२९८ चउव्विहे णिधत्ते पण्णत्ते, त जहा—पगतिणिधत्ते, ठितिणिधत्ते, अणुभावणिधत्ते, पएसणिधत्ते ।।

२९९ चउव्विहे णिगायिते पण्णत्ते, त जहा—पगतिणिगायिते, ठितिणिगायिते, अणुभावणिगायिते, पएसणिगायिते ।।

संखा-पद

३०० चत्तारि एक्का पण्णत्ता, त जहा—दविएक्कए[2], माउएक्कए[3], पज्जवेक्कए[4], सगहेक्कए[5] ।।

३०१ चत्तारि कती पण्णत्ता, त जहा—दवितकती, माउयकती, पज्जवकती, सगहकती ।

३०२ चत्तारि सव्वा पण्णत्ता, त जहा—णामसव्वए, ठवणसव्वए, आएससव्वए, णिरवसेससव्वए ।।

कूड-पद

३०३ माणुसुत्तरस्स ण पव्वयस्स चउदिसि चत्तारि कूडा पण्णत्ता, त जहा—रयणे, रतणुच्चए, सव्वरयणे, रतणसचए[6] ।।

कालचक्क-पद

३०४ जबुद्दीवे दीवे भरहेरवतेसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो हुत्था ।।

३०५ जबुद्दीवे दीवे भरहेरवतेसु वासेसु इमीसे ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो पण्णत्तो[7] ।।

३०६ जबुद्दीवे दीवे भरहेरवतेसु वासेसु आगमेस्साए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो भविस्सइ ।।

---

१. पतेस ० (क, ख, ग) ।
२. दविए एक्कए (ग, वृपा) ।
३ माउयएक्कते (ख) ।
४. पज्जवेक्कगे (क), पज्जवे एक्कए (ख, ग) ।
५ सगहे एक्कते (ख, ग) ।
६ रतणसचये (क, ख, ग) ।
७. हुत्था (ख, ग) ।

अकम्मभूमी-पदं

३०७ जंबुद्दीवे दीवे देवकुरुउत्तरकुरुवज्जाओ चत्तारि अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—हेमवते, हेरण्णवते, हरिवरिसे[1], रम्मगवरिसे[2]।
चत्तारि वट्टवेयड्ढपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—सद्दावाती[3], वियडावाती, गंधावाती, मालवंतपरियाते।
तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव[4] पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—साती, पभासे, अरुणे, पउमे॥

महाविदेह-पदं

३०८ जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—पुव्वविदेहे, अवरविदेहे, देवकुरा, उत्तरकुरा॥

पव्वय-पदं

३०९ सव्वे वि णं णिसढणीलवंतवासहरपव्वता चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, चत्तारि गाउसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता॥
३१० जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उत्तरकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता, तं जहा—चित्तकूडे, पम्हकूडे[5], णलिणकूडे, एगसेले॥
३११ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता, तं जहा—तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे, मातंजणे॥
३१२ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओदाए महाणदीए

---

१ ०वस्से (ग)।
२ ०वासे (ख), ०वस्से (ग)।
३ ठा० २।२७४, २७५ सूत्रयोः 'सद्दावाती वियडावाती गंधावाती' पाठः वृत्त्याधारेण स्वीकृतः। ठा० २।३३५ सूत्रे प्रतिषु 'सद्दावाती' तथा 'सद्दावतिवासी'—इत्थं रूपद्वयं लभ्यते। प्रस्तुतसूत्रे प्रतिषु 'सद्दावई वियडावई गंधावई' इति पाठोस्ति। 'रायपसेणइय' सूत्रे तथा 'जंबुद्दीवपण्णत्ती' सूत्रेपि प्राप्तादर्शेषु 'सद्दावई वियडावई गंधावई' पाठो लभ्यते। स्थानाङ्गवृत्तौ तथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तौ च 'शब्दापाती विकटापाती गंधापाती' इति संस्कृतरूपं कृतमस्ति। वृत्त्याधारेण 'सद्दावाती' प्रभृतिपाठस्य कल्पना जायते। 'सद्दावई' इत्यादि पाठः मृदूच्चारणार्थं कृतमथवा लिपिदोषेण परिवर्तनं जातमिति न निश्चेतुं शक्यते, तेनास्माभिः सर्वत्रापि 'सद्दावाती' प्रभृतिपाठः स्वीकृतः।
४ ठा० २।२७१।
५ वम्भकूडे (क)।

दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता, त जहा—अकावती, पम्हावती, आसीविसे, सुहावहे ॥

३१३ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे ण सीओदाए महाणदीए[1] उत्तरकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता, त जहा—चदपव्वते, सूरपव्वते, देवपव्वते, णागपव्वते ॥

३१४ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स चउसु विदिसासु चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता, त जहा—सोमणसे, विज्जुप्पभे, गधमायणे, मालवते ॥

सलागा-पुरिस-पद

३१५ जवुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे जहण्णपए[2] चत्तारि अरहता चत्तारि चक्कवट्टी चत्तारि वलदेवा चत्तारि वासुदेवा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा ॥

मदर-पव्वय-पद

३१६ जवुद्दीवे दीवे मदरे पव्वते चत्तारि वणा पण्णत्ता, त जहा—भद्दसालवणे, णदणवणे, सोमणसवणे, पडगवणे ॥

३१७. जवुद्दीवे दीवे मदरे पव्वते पडगवणे चत्तारि अभिसेगसिलाओ पण्णत्ताओ, त जहा—पडुकवलसिला, अइपडुकवलसिला, रत्तकवलसिला, अतिरत्तकवलसिला ॥

३१८ मदरचूलिया ण उवरिं चत्तारि जोयणाइ विक्खभेण पण्णत्ता ॥

धायइसड-पुक्खरवर-पद

३१९ एवं—धायइसडदीवपुरत्थिमद्धेवि काल आदिं करेत्ता जाव[3] मदरचूलियत्ति ।
एव जाव[4] पुक्खरवरदीवपच्चत्थिमद्धे जाव मदरचूलियत्ति ।

सगहणी-गाहा

जवुद्दीवगआवस्सग[5] तु कालाओ चूलिया जाव ।
धायइसडे पुक्खरवरे य पुव्वावरे पासे ॥१॥

दार-पद

३२० जवुद्दीवस्स ण दीवस्स चत्तारि दारा पण्णत्ता, तं जहा—विजये, वेजयते,

---

१ महाणतीते (क, ख, ग) ।
२ जहण्णपते (क, ख, ग) ।
३ ठा० ४।३०४-३१८ ।
४ ठा० ३।१०८ ।
५ जवुद्दीवे० (वृपा) ।

जयते, अपराजिते। ते ण दारा चत्तारि जोयणाइं विक्खभेण, तावइय[1] चेव पवेसेण पण्णत्ता।

तत्थ ण चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव[2] पलिओवमट्ठितीया परिवसति, त जहा—विजये, वेजयते, जयते, अपराजिते ॥

अतरदीव-पद

३२१ जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण चुल्लहिमवतस्स वासहरपव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्द तिण्णि-तिण्णि जोयणसयाइ ओगाहित्ता, एत्थ ण चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता, त जहा—एगूरुयदीवे[3], आभासियदीवे, वेसाणियदीवे, णगोलियदीवे।

तेसु ण दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसति, त जहा—एगूरुया[4], आभासिया, वेसाणिया, णगोलिया ॥

३२२ तेसि ण दीवाण चउसु विदिसासु लवणसमुद्द चत्तारि-चत्तारि जोयणसयाइ ओगाहेत्ता, एत्थ ण चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता, त जहा—हयकण्णदीवे, गयकण्णदीवे, गोकण्णदीवे, सक्कुलिकण्णदीवे[5]।

तेसु ण दीवेसु चउव्विधा मणुस्सा परिवसति, त जहा—हयकण्णा, गयकण्णा, गोकण्णा, सक्कुलिकण्णा ॥

३२३ तेसि ण दीवाण चउसु विदिसासु लवणसमुद्द पच-पच जोयणसयाइ ओगाहित्ता, एत्थ ण चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता, त जहा—आयसमुहदीवे, मेढमुहदीवे, अओमुहदीवे, गोमुहदीवे।

तेसु ण दीवेसु चउव्विहा मणस्सा[6] °परिवसति, त जहा—आयसमुहा, मेढमुहा, अओमुहा, गोमुहा° ॥

३२४ तेसि ण दीवाण चउसु विदिसासु लवणसमुद्द छ-छ जोयणसयाइ ओगाहेत्ता, एत्थ ण चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता, त जहा—आसमुहदीवे, हत्थिमुहदीवे, सीहमुहदीवे, वग्घमुहदीवे।

तेसु ण दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा[7] °परिवसति, त जहा—आसमुहा, हत्थिमुहा, सीहमुहा, वग्घमुहा° ॥

३२५ तेसि ण दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्द सत्त-सत्त जोयणसयाइ ओगाहेत्ता, एत्थ ण चत्तारि अतरदीवा, पण्णत्ता, त जहा—आसकण्णदीवे, हत्थिकण्णदीवे अकण्णदीवे, कण्णपाउरणदीवे[8] ॥

---

१ तावतित (क, ख, ग)।
२ ठा० २।२७१।
३ एगरूअदीवे (क, ख, ग)।
४. एगरूता (क, ग), एगुरूता (ख)।
५ सकुलि° (क्व)।
६ स० पा०—मणुस्सा भाणियव्वा।
७ स० पा०—मणुस्सा भाणियव्वा।
८ कन्नापाउ° (क, ग)।

तेसु ण दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा[1] •परिवसति, त जहा—आसकण्णा, हत्थि-कण्णा, अकण्णा, कण्णपाउरणा° ॥

३२६ तेसि ण दीवाण चउसु विदिसासु लवणसमुद्द अट्ठट्ठ जोयणसयाइ ओगाहेत्ता, एत्थ ण चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता, त जहा—उक्कामुहदीवे, मेहमुहदीवे, विज्जुमुहदीवे, विज्जुदतदीवे ।

तेसु ण दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा[2] •परिवसति, त जहा—उक्कामुहा, मेहमुहा, विज्जुमुहा, विज्जुदता° ॥

३२७ तेसि ण दीवाण चउसु विदिसासु लवणसमुद्द णव-णव जोयणसयाइ ओगाहेत्ता, एत्थ ण चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता, त जहा—घणदतदीवे, लट्ठदतदीवे, गूढदतदीवे, सुद्धदतदीवे ।

तेसु ण दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसति, त जहा—घणदता, लट्ठदता गूढदता, सुद्धदता ॥

३२८ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण सिहरिस्स वासहरपव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्द तिण्णि-तिण्णि जोयणसयाइ ओगाहेत्ता, एत्थ ण चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता, त जहा—एगूरुयदीवे[3], सेस तहेव णिरवसेस भाणियव्व जाव[4] सुद्धदता ॥

महापायाल-पद

३२९ जवुद्दीवस्स ण दीवस्स वाहिरिल्लाओ वेइयताओ[5] चउदिसि लवणसमुद्द पचाणउइ जोयणसहस्साइ ओगाहेत्ता, एत्थ ण महतिमहालता महालजरसठाणसठिता[6] चत्तारि महापायाला पण्णत्ता, त जहा—वलयामुहे[7], केउए[8], जूवए, ईसरे ।

तत्थ ण चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव[9] पलिओवमट्ठितीया परिवसति, त जहा—काले, महाकाले, वेलवे, पभजणे ॥

आवास-पव्वय-पद

३३० जवुद्दीवस्स ण दीवस्स वाहिरिल्लाओ वेइयताओ चउद्दिसि लवणसमुद्द वायालीस-वायालीस जोयणसहस्साइ ओगाहेत्ता, एत्थ ण चउण्ह वेलधरणागराईण चत्तारि आवासपव्वता पण्णत्ता, त जहा—गोथूभे, उदओभासे[10], सखे, दगसीमे ।

---

१ सं० पा०—मणुस्सा भाणियव्वा ।
२ स० पा०—मणुस्सा भाणियव्वा ।
३ एगरूय° (क, ख, ग) ।
४. ठा० ४।३२१-३२७ ।
५. वेतितताओ (क, ख, ग) ।
६ महालिजर° (क, ग) ।
७ वलतामुहे (क, ख, ग) ।
८ केउते (क, ख, ग) ।
९ ठा० २।२७१ ।
१० दउयभासे (ख), उदयभासे (क्व) ।

तत्थ ण चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव[1] पलिओवमट्ठितीया परिवसति, त जहा—गोथूभे, सिवए, सखे, मणोसिलाए ॥

३३१ जबुद्दीवस्स ण दीवस्स वाहिरिल्लाओ वेइयताओ चउसु विदिसासु लवणसमुद्द वायालीस-वायालीस जोयणसहस्साइ ओगाहेत्ता, एत्थ ण चउण्ह अणुवेलधरणागराईण[2] चत्तारि आवासपव्वता पण्णत्ता, त जहा—ककोडए, विज्जुप्पभे, केलासे, अरुणप्पभे ।

तत्थ ण चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव[3] पलिओवमट्ठितीया परिवसति, त जहा—कक्कोडए, कद्दमए, केलासे, अरुणप्पभे ॥

जोइस-पद

३३२. लवणे ण समुद्दे चत्तारि चदा पभासिसु वा पभासति वा पभासिस्सति वा । चत्तारि सूरिया[4] तविसु[5] वा तवति वा तविस्सति वा । चत्तारि कित्तियाओ जाव[6] चत्तारि भरणीओ ॥

३३३ चत्तारि अग्गी जाव[7] चत्तारि जमा ॥

३३४ चत्तारि अगारा[8] जाव[9] चत्तारि भावकेऊ ॥

दार-पद

३३५ लवणस्स ण समुद्दस्स चत्तारि दारा पण्णत्ता, त जहा—विजए, वेजयते, जयते अपराजिते । ते ण दारा चत्तारि जोयणाइ विक्खभेण तावइय चेव पवेसेण पण्णत्ता ।

तत्थ ण चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव[10] पलिओवमट्ठितीया परिवसति, त जहा—विजए[11], वेजयते, जयते, अपराजिए ॥

धायइसंड-पुक्खरवर-पद

३३६. धायइसडे ण दीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइ चक्कवालविक्खभेण पण्णत्ते ॥

३३७ जबुद्दीवस्स ण दीवस्स वहिया चत्तारि भरहाइ, चत्तारि एरवयाइ । एव जहा

---

१ ठा० २।२७१ ।
२ °रातीण (क, ख, ग) ।
३ ठा० २।२७१ ।
४ सूरिता (क, ख, ग) ।
५ तवइसु (वृ) ।
६. ठा० २।३२३ ।
७ ठा० २।३२४ ।
८ अगारया (क, ग) ।
९ ठा० २।३२५ ।
१० ठा० २।२७१ ।
११ विजते (क, ख, ग) ।

सद्दुद्देसए[1] तहेव णिरवसेस भाणियव्व जाव[2] चत्तारि मंदरा चत्तारि मदरचूलियाओ ॥

णंदीसरवरदीव-पदं

३३८ णदीसरवरस्स ण दीवस्स चक्कवाल-विक्खभस्स बहुमज्झदेसभागे चउद्दिसिं चत्तारि अजणगपव्वता पण्णत्ता, त जहा—पुरत्थिमिल्ले अजणगपव्वते, दाहिणिल्ले अजणगपव्वते, पच्चत्थिमिल्ले अजणगपव्वते, उत्तरिल्ले अजणगपव्वते। ते ण अजणगपव्वता चउरासीतिं जोयणसहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण, एग जोयणसहस्स उव्वेहेण, मूले दसजोयणसहस्स उव्वेहेण, मूले दसजोयणसहस्साइ विक्खभेण, तदणतर च ण मायाए-मायाए परिहायमाणा-परिहायमाणा उवरिमेग जोयणसहस्स विक्खभेण पण्णत्ता। मूले इक्कतीस जोयणसहस्साइ छच्च तेवीसे जोयणसते परिक्खेवेण, उवरिं तिण्णि-तिण्णि जोयणसहस्साइ एग च बावट्ठ जोयणसत परिक्खेवेण। मूले विच्छिण्णा मज्झे सखेत्ता उप्पि तणुया गोपुच्छ-सठाणसठिता सव्वअजणमया[3] अच्छा 'सण्हा लण्हा'[4] घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पका णिक्ककड-च्छाया सप्पभा समिरीया[5] सउज्जोया पासाईया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा ॥

३३९ तेसि ण अजणगपव्वयाण उवरिं बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता।
तेसि ण बहुसमरमणिज्जाण भूमिभागाण बहुमज्झदेसभागे चत्तारि सिद्धायतणा पण्णत्ता। ते ण सिद्धायतणा एग जोयणसय आयामेण, पण्णास जोयणाइ विक्खभेण, बावत्तरिं जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण।
तेसि ण सिद्धायतणाण चउदिसिं चत्तारि दारा पण्णत्ता, त जहा—देवदारे, असुरदारे, णागदारे, सुवण्णदारे।
तेसु ण दारेसु चउव्विहा देवा परिवसति, त जहा—देवा, असुरा, णागा, सुवण्णा।
तेसि ण दाराण पुरओ चत्तारि मुहमडवा पण्णत्ता।
तेसि ण मुहमडवाण पुरओ चत्तारि पेच्छाघरमडवा पण्णत्ता।
तेसि ण पेच्छाघरमडवाण बहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइरामया अक्खाडगा पण्णत्ता।

---

१ शब्दोपलक्षित उद्देशक शब्दोद्देशको द्विस्थानकस्य तृतीय इत्यर्थ (वृ)।
२ ठा० २।३३३-३४३, ३५०।
३. सव्वजण ० (वृ)।
४ 'सण्हा लण्हा' एतौ एकस्यैव शब्दस्य रूपभेदौ स्त । श्लक्ष्णशब्दस्य 'ल्' लोपे कृते 'सण्हा' तथा 'स्' लोपे कृते 'लण्हा' इतिरूप जायते। वृत्तिकारेणानयो किञ्चिदर्थभेदोऽपि सूचित ,यथा—सण्हा—श्लक्ष्णपरमाणुस्कन्धनिष्पन्ना , श्लक्ष्णदलनिष्पन्नपटवत्, लण्हा—श्लक्ष्णा मसृणा इत्यर्थ (वृ)।
५ सस्सिरीया (क)।

तेसि णं वइरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि मणिपेढियातो पण्णत्ताओ।
तासि णं मणिपेढिताणं उवरिं चत्तारि सीहासणा पण्णत्ता।
तेसि णं सीहासणाणं उवरिं चत्तारि विजयदूसा पण्णत्ता।
तेसि णं विजयदूसगाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइरामया[1] अंकुसा पण्णत्ता।
तेसु णं वइरामएसु अंकुसेसु चत्तारि कुंभिका मुत्तादामा पण्णत्ता। ते णं कुंभिका मुत्तादामा पत्तेयं-पत्तेयं अण्णेहिं तदद्धउच्चत्तपमाणमित्तेहिं चउहिं अद्ध-कुंभिक्केहिं[2] मुत्तादामेहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता।
तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ[3] पण्णत्ताओ।
तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि-चत्तारि चेइयथूभा[4] पण्णत्ता।
तेसि णं चेइयथूभाणं पत्तेयं-पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ।
तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि जिणपडिमाओ सव्वरयणामईओ सपलियंकणिसण्णाओ थूभाभिमुहाओ चिट्ठंति, तं जहा—रिसभा, वद्धमाणा, चंदाणणा, वारिसेणा।
तेसि णं चेइयथूभाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ।
तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि चेइयरुक्खा पण्णत्ता।
तेसि णं चेइयरुक्खाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ।
तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि महिंदज्झया[5] पण्णत्ता।
तेसि णं महिंदज्झयाणं पुरओ चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ।
तासि णं पुक्खरिणीणं पत्तेयं-पत्तेयं चउदिसिं चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता, तं जहा—पुरत्थिमे णं, दाहिणे णं, पच्चत्थिमे णं, उत्तरे णं।

संगहणी-गाहा

पुव्वे णं असोगवणं, दाहिणओ होइ सत्तवण्णवणं।
अवरे णं चंपगवणं, चूतवणं उत्तरे पासे॥१॥

३४० तत्थ णं जे से पुरत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते, तस्स[6] णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णंदुत्तरा, णंदा, आणंदा, णंदिवद्धणा। ताओ णं णंदाओ पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयसहस्सं आयामेणं, पण्णासं जोयण-सहस्साइं विक्खंभेणं, दसजोयणसताइं उव्वेहेणं।

---

१ वइरामता (क, ख, ग)।
२ °कुंभिकेहिं (ख, वृ)।
३. °पेढिताओ (क, ख, ग)।
४ चेतितथूभा (क, ख, ग)।
५ महेन्द्रा इति—अतिमहान्त समयभाषया ते च ते ध्वजाश्चेति, अथवा महेन्द्रस्येव—शक्रादेर्ध्वजाः महेन्द्रध्वजा (वृ)।
६ तत्थ (क) सर्वत्र।

तासि ण पुक्खरिणीण पत्तेय-पत्तेय चउद्दिसि चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता ।
तेसि ण तिसोवाणपडिरूवगाण पुरतो चत्तारि तोरणा पण्णत्ता, त जहा—पुरत्थिमे ण, दाहिणे ण, पच्चत्थिमे ण, उत्तरे ण ।
तासि ण पुक्खरिणीण पत्तेय-पत्तेय चउद्दिसि चत्तारि वणसडा पण्णत्ता, त जहा—पुरतो, दाहिणे ण, पच्चत्थिमे ण, उत्तरे ण ॥

संगहणी-गाहा

पुव्वे ण असोगवण[1], °दाहिणओ होइ सत्तवण्णवण ।
अवरे ण चपगवण°, चूयवण उत्तरे पासे ॥१॥

तासि ण पुक्खरिणीण वहुमज्झदेसभागे चत्तारि दधिमुहगपव्वया पण्णत्ता ।
ते ण दधिमुहगपव्वया चउसट्ठि जोयणसहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण, एग जोयण-सहस्स उव्वेहेण, सव्वत्थ समा पल्लगसठाणसठिता, दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण, एक्कतीस जोयणसहस्साइ छच्च तेवीसे जोयणसते परिक्खेवेण, सव्वरयणामया अच्छा जाव[2] पडिरूवा ।
तेसि ण दधिमुहगपव्वताण उवरि वहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता । सेस जहेव अजणगपव्वताण तहेव णिरवसेस भाणियव्व जाव[3] चूतवण उत्तरे पासे ॥

३४१ तत्थ ण जे से दाहिणिल्ले अजणगपव्वते, तस्स ण चउदिसि चत्तारि णदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, त जहा—भद्दा, विसाला, कुमुदा, पोडरीगिणी[4] । ताओ ण णदाओ पुक्खरिणीओ एग जोयणसयसहस्स, सस त चेव जाव[5] दधिमुहगपव्वता जाव[6] वणसडा ॥

३४२ तत्थ ण जे से पच्चत्थिमिल्ले अजणगपव्वते, तस्स ण चउद्दिसि चत्तारि णदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, त जहा—णदिसेणा, अमोहा, गोथूभा, सुदसणा । सेस त चेव, तहेव दधिमुहगपव्वता, तहेव सिद्धाययणा जाव[7] वणसडा ॥

३४३ तत्थ ण जे से उत्तरिल्ले अजणगपव्वते, तस्स ण चउद्दिसि चत्तारि णदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, त जहा—विजया, वेजयती, जयती, अपराजिता । ताओ ण णदाओ पुक्खरिणीओ एग जोयणसयसहस्स, सेस त चेव पमाण, तहेव दधिमुहगपव्वत्ता, तहेव सिद्धाययणा जाव[8] वणसडा ॥

३४४ णदीसरवरस्स णं दीवस्स चक्कवाल-विक्खभस्स वहुमज्झदेसभागे चउसु

---

१ स० पा०—असोगवण जाव चूयवण ।
२ ठा० ४।३३८ ।
३ ठा० ४।३३९ ।
४ पोंडरगिणी (क, ग), पोडरिगिणी (ख) ।
५,६ ठा० ४।३४० ।
७ ठा० ४।३४० ।
८ ठा० ४।३४० ।

विदिसासु चत्तारि रतिकरगपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—उत्तरपुरत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए, दाहिणपुरत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए, दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए, उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए। ते णं रतिकरगपव्वता दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस गाउयसताइं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा झल्लरिसंठाणसंठित्ता, दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते परिक्खेवेणं, सव्वरयणामया अच्छा जाव[1] पडिरूवा ॥

३४५ तत्थ णं जे से उत्तरपुरत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णंदुत्तरा, णंदा, उत्तरकुरा, देवकुरा। कण्हाए, कण्हराईए[2], रामाए, रामरक्खियाए ॥

३४६ तत्थ णं जे से दाहिणपुरत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसि सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समणा, सोमणसा, अच्चिमाली, मणोरमा। पउमाए, सिवाए, सतीए[3], अंजूए ॥

३४७ तत्थ णं जे से दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणमेत्ताओ[4] चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भूता, भूतवडेंसा, गोथूभा, सुदंसणा। अमलाए, अच्छराए, णवमियाए[5], रोहिणीए ॥

३४८ तत्थ णं जे से उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिमीसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवप्पमाणमेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणा, रतणुच्चया, सव्वरतणा, रतणसंचया। वसूए, वसुगुत्ताए, वसुमित्ताए, वसुंधराए ॥

सच्च-पदं

३४९ चउव्विहे सच्चे पण्णत्ते, तं जहा—णामसच्चे, ठवणसच्चे, दव्वसच्चे, भावसच्चे ॥

आजीविय-तव-पदं

३५०. आजीवियाणं चउव्विहे तवे पण्णत्ते, तं जहा—उग्गतवे[6], घोरतवे, रसणिज्जूहणता, जिब्भिंदियपडिसंलीणता।

---

१ ठा० ४।३३८।
२ कण्हरातीते (क, ख, ग)।
३ सुतीते (क, ख, ग)।
४ प्राग्वर्तिनो द्वयो सूत्रयो केवलं 'पमाणाओ' पाठोस्ति। अत्र उत्तरवर्तिनि सूत्रे च 'पमाणमेत्ताओ' पाठोस्ति। आदर्शेषु इत्थमेव लभ्यते, तेन तथैव स्वीकृत।
५ णवमिताते (क, ख, ग)।
६ उदारतवे (वृपा)।

३५१ चउव्विहे सजमे पण्णत्ते, त जहा—मणसजमे, वइसजमे[1], कायसजमे, उवगरण-सजमे ।।

३५२. चउव्विधे चियाए[2] पण्णत्ते, त जहा—मणचियाए, वइचियाए, कायचियाए, उवगरणचियाए ।।

३५३ चउव्विहा अकिचणता पण्णत्ता, त जहा—मणअकिचणता, वइअकिचणता, कायअकिचणता, उवगरणअकिचणता ।।

तइओ उद्देसो

कोह-पदं

३५४ चत्तारि राईओ[3] पण्णत्ताओ, त जहा—पव्वयराई, पुढविराई, वालुयराई, उदगराई।

एवामेव चउव्विहे कोहे पण्णत्ते, त जहा—पव्वयराइसमाणे, पुढविराइसमाणे, वालुयराइसमाणे, उदगराइसमाणे ।

१. पव्वयराइसमाण कोहमणुपविट्ठे जीवे काल करेइ, णेरइएसु उववज्जति ।

२ पुढविराइसमाण कोहमणुपविट्ठे जीवे काल करेइ, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति ।

३ वालुयराइसमाण कोहमणुपविट्ठे जीवे काल करेइ, मणुस्सेसु उववज्जति ।

४ उदगराइसमाण कोहमणुपविट्ठे जीवे काल करेइ, देवेसु उववज्जति ।।

भाव-पदं

३५५ चत्तारि उदगा पण्णत्ता, त जहा—कद्दमोदए, खजणोदए, वालुओदए, सेलोदए।

एवामेव चउव्विहे भावे पण्णत्ते, त जहा—कद्दमोदगसमाणे, खजणोदगसमाणे, वालुओदगसमाणे, सेलोदगसमाणे ।

१. कद्दमोदगसमाण भावमणुपविट्ठे जीवे काल करेइ, णेरइएसु उववज्जति ।

२ [4]°खजणोदगसमाण भावमणुपविट्ठे जीवे काल करेइ, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति ।

३ वालुओदगसमाण भावमणुपविट्ठे जीवे काल करेइ, मणुस्सेसु उववज्जति °।

४ सेलोदगसमाण भावमणुपविट्ठे जीवे काल करेइ, देवेसु उववज्जति ।।

रुत-रूव-पद

३५६ चत्तारि पक्खी पण्णत्ता, त जहा—रुतसपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे, रूवसपण्णे

---

१ वति° (क, ख, ग)।

२ चिताते (क, ख, ग)।

३ रातीओ (क, ख, ग)।

४ स० पा०—एव जाव सेलोदग°।

णाममेगे णो रुतसपण्णे, एगे रुतसपण्णेवि रूवसपण्णेवि, एगे णो रुतसपण्णे णो रूवसपण्णे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—रुतसपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे, रूवसपण्णे णाममेगे णो रुतसपण्णे, एगे रुतसपण्णेवि रूवसपण्णेवि, एगे णो रुतसपण्णे णो रूवसपण्णे ॥

पत्तिय-अप्पत्तिय-पद

३५७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पत्तिय करेमीतेगे पत्तिय करेति, पत्तिय करेमीतेगे अप्पत्तिय करेति, अप्पत्तिय करेमीतेगे पत्तिय करेति, अप्पत्तिय करेमीतेगे अप्पत्तिय करेति ॥

३५८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अप्पणो णाममेगे पत्तिय करेति णो परस्स, परस्स णाममेगे पत्तिय करेति णो अप्पणो, एगे अप्पणोवि पत्तिय करेति परस्सवि, एगे णो अप्पणो पत्तिय करेति णो परस्स ॥

३५९ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पत्तिय पवेसामीतेगे पत्तिय पवेसेति, पत्तिय पवेसामीतेगे अप्पत्तिय पवेसेति, अप्पत्तिय पवेसामीतेगे पत्तिय पवेसेति, अप्पत्तिय पवेसामीतेगे अप्पत्तिय पवेसेति ॥

३६० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अप्पणो णाममेगे पत्तिय पवेसेति णो परस्स, परस्स णाममेगे पत्तिय पवेसेति णो अप्पणो, एगे अप्पणोवि पत्तिय पवेसेति परस्सवि, एगे णो अप्पणो पत्तिय पवेसेति णो परस्स ॥

उपकार-पद

३६१ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, त जहा—पत्तोवए, पुप्फोवए, फलोवए, छायोवए।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पत्तोवारुक्खसमाणे, पुप्फोवारुक्खसमाणे, फलोवारुक्खसमाणे, छायावारुक्खसमाणे ॥

आसास-पद

३६२ भारण्ण[1] वहमाणस्स चत्तारि आसासा पण्णत्ता, त जहा—

१ जत्थ ण असाओ अस साहरइ, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।

२ जत्थवि य ण उच्चार वा पासवण वा परिट्ठवेति, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।

३ जत्थवि य ण णागकुमारावाससि वा सुवण्णकुमारावाससि वा वास उवेति, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।

---

१ भारूण्ण (क), भारुप्प (ग)।

४. जत्थवि य ण आवकहाए चिट्ठति, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।
एवामेव समणोवासगस्स चत्तारि आसासा पण्णत्ता, त जहा—
१ 'जत्थवि य ण'[1] सीलव्वत-गुणव्वत-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइ पडिवज्जति, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।
२ जत्थवि य ण सामाइय देसावगासिय सम्ममणुपालेइ, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।
३ जत्थवि य ण चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्ण पोसह सम्म अणुपालेइ, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।
४. जत्थवि य ण अपच्छिम-मारणतित-सलेहणा-'झूसणा-झूसिते'[2] भत्तपाण-पडियाइक्खिते[3] पाओवगते कालमणवकखमाणे विहरति, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते ॥

उदित-अत्थमित-पदं

३६३ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—उदितोदिते णाममेगे, उदितत्थमिते णाममेगे, अत्थमितोदिते णाममेगे, अत्थमितत्थमिते णाममेगे।
भरहे राया चाउरतचक्कवट्टी ण उदितोदिते, बभदत्ते ण राया चाउरतचक्कवट्टी उदितत्थमिते, हरिएसबले[4] ण अणगारे अत्थमितोदिते, काले ण सोयरिये अत्थमितत्थमिते ॥

जुम्म-पदं

३६४. चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, त जहा—कडजुम्मे, तेयोए, दावरजुम्मे, कलिओए ॥
३६५ णेरइयाण चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, त जहा—कडजुम्मे, तेओए, दावरजुम्मे, कलिओए ॥
३६६ एव—असुरकुमाराण जाव[5] थणियकुमाराण। एव—पुढविकाइयाण आउ-तेउ-वाउ-वणस्सतिकाइयाण बेदियाण तेदियाण चउरिंदियाण पचिंदियतिरिक्ख-जोणियाण मणुस्साण वाणमतर-जोइसियाण वेमाणियाण—सव्वेसि जहा णेरइयाण ॥

सूर-पद

३६७ चत्तारि सूरा पण्णत्ता, त जहा—तवसूरे, खतिसूरे, दाणसूरे, जुद्धसूरे।
खतिसूरा अरहता, तवसूरा अणगारा, दाणसूरे वेसमणे, जुद्धसूरे वासुदेवे ॥

---

१ जत्थ ण से (ख)।
२ झूसणाझूसिते (वृ)।
३ °पडितातिक्खिते (क, ख, ग)।
४ हरितेसबले (क, ख, ग)।
५ ठा० १।१४३-१५०।

उच्चणीय-पदं

३६८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—उच्चे णाममेगे उच्चच्छदे, उच्चे णाममेगे णीयच्छदे, णीए[1] णाममेगे उच्चच्छदे, णीए णाममेगे णीयच्छदे ॥

लेसा-पद

३६९ असुरकुमारा चत्तारि लेसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा ॥

३७० एव जाव[2] थणियकुमाराण। एव—पुढविकाइयाण आउ-वणस्सइकाइयाण वाणमतराण—सव्वेसि जहा असुरकुमाराण ॥

जुत्त-अजुत्त-पदं

३७१ चत्तारि जाणा पण्णत्ता, त जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते ॥

३७२ चत्तारि जाणा पण्णत्ता, त जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते ॥

३७३ चत्तारि जाणा पण्णत्ता, त जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ॥
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ॥

३७४ चत्तारि जाणा पण्णत्ता, त जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे ॥

३७५ चत्तारि जुग्गा पण्णत्ता, त जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते ॥

---

१ णीते (क, ख, ग)।　　　　२ ठा० १।१४३-१५०।

३७६ [1]•चत्तारि जुग्गा पण्णत्ता, त जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते ॥

३७७ चत्तारि जुग्गा पण्णत्ता, त जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ॥

३७८ चत्तारि जुग्गा पण्णत्ता, त जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे° ॥

सारहि-पदं

३७९ चत्तारि सारही पण्णत्ता, त जहा—जोयावइत्ता णाम एगे णो विजोयावइत्ता, विजोयावइत्ता णाममेगे णो जोयावइत्ता, एगे जोयावइत्तावि विजोयावइत्तावि, एगे णो जोयावइत्ता णो विजोयावइत्ता।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जोयावइत्ता णाम एगे णो विजोयावइत्ता, विजोयावइत्ता णाम एगे णो जोयावइत्ता, एगे जोयावइत्तावि विजोयावइत्तावि, एगे णो जोयावइत्ता णो विजोयावइत्ता ॥

जुत्त-अजुत्त-पद

३८० चत्तारि हया पण्णत्ता, त जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते ॥

३८१ [2]•चत्तारि हया पण्णत्ता, त जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्त-परिणते ॥

---

१ स० पा०—एव जहा जाणेण···पुरिसजाया २ सं० पा०—एव जुत्तपरिणते·· पुरिसजाता। जाव सोभेत्ति।

३८२ चत्तारि हया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ॥

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ॥

३८३ चत्तारि हया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे° ॥

३८४ चत्तारि गया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते ॥

३८५ [1]°चत्तारि गया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते ॥

३८६ चत्तारि गया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ॥

३८७ चत्तारि गया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे ।

एवामेवा चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे° ॥

पंथ-उप्पह-पद

३८८ चत्तारि जुग्गारिता[2] पण्णत्ता, तं जहा—पंथजाई[3] णाममेगे णो उप्पहजाई, उप्पहजाई णाममेगे णो पंथजाई, एगे पंथजाईवि उप्पहजाईवि, एगे णो पंथजाई णो उप्पहजाई ।

---

१ सं० पा०—एवं जहा हयाणं ‥ तहेव पुरिसजाया ।

२ जुगारिता (ख), जुग्गायरिया (वृपा) ।

३ °जाती (क, ख, ग) ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पथजाई णाममेगे णो उप्पहजाई, उप्पहजाई णाममेगे णो पथजाई, एगे पथजाईवि उप्पहजाईवि, एगे णो पथजाई णो उप्पहजाई ।।

रूव-सील-पद

३८९ चत्तारि पुप्फा पण्णत्ता, त जहा—रूवसपण्णे णाममेगे णो गधसपण्णे, गधसपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे, एगे रूवसपण्णेवि गधसपण्णेवि, एगे णो रूवसपण्णे णो गधसपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—रूवसपण्णे णाममेगे णो सीलसपण्णे, सीलसपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे, एगे रूवसपण्णेवि सील-सपण्णेवि, एगे णो रूवसपण्णे णो सीलसपण्णे ।।

जाति-पदं

३९० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाममेगे णो कुलसपण्णे, कुलसपण्णे णाममेगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि कुलसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो कुलसपण्णे ।।

३९१ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाममेगे णो बलसपण्णे, बलसपण्णे णाममेगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि बलसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो बलसपण्णे ।।

३९२ [1]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे, रूवसपण्णे णाममेगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि रूवसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो रूवसपण्णे ।।

३९३ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाममेगे णो सुयसपण्णे, सुयसपण्णे णाममेगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि सुयसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो सुयसपण्णे ।।

३९४ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाममेगे णो सीलसपण्णे, सीलसपण्णे णाममेगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि सीलसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो सीलसपण्णे ।।

३९५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाममेगे णो चरित्तसपण्णे, चरित्तसपण्णे णाममेगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि चरित्तसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो चरित्तसपण्णे° ।।

---

१ स० पा०—एव जातीते य ''''जातीते य चरित्तेण य ।

कुल-पदं

३९६ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कुलसपण्णे णाममेगे णो बलसपण्णे, बलसपण्णे णाममेगे णो कुलसपण्णे, एगे कुलसपण्णेवि बलसपण्णेवि, एगे णो कुलसपण्णे णो बलसपण्णे ॥

३९७ [1]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कुलसपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे, रूवसपण्णे णाममेगे णो कुलसपण्णे, एगे कुलसपण्णेवि रूवसपण्णेवि, एगे णो कुलसपण्णे णो रूवसपण्णे ॥

३९८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कुलसपण्णे णाममेगे णो सुयसपण्णे, सुयसपण्णे णाममेगे णो कुलसपण्णे, एगे कुलसपण्णेवि सुयसपण्णेवि, एगे णो कुलसपण्णे णो सुयसपण्णे ॥

३९९ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कुलसपण्णे णाममेगे णो सीलसपण्णे, सीलसपण्णे णाममेगे णो कुलसपण्णे, एगे कुलसपण्णेवि सीलसपण्णेवि, एगे णो कुलसपण्णे णो सीलसपण्णे ॥

४०० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कुलसपण्णे णाममेगे णो चरित्तसपण्णे, चरित्तसपण्णे णाममेगे णो कुलसपण्णे, एगे कुलसपण्णेवि चरित्तसपण्णेवि, एगे णो कुलसपण्णे णो चरित्तसपण्णे° ॥

बल-पदं

४०१ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बलसपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे, रूवसपण्णे णाममेगे णो बलसपण्णे, एगे बलसपण्णेवि रूवसपण्णेवि, एगे णो बलसपण्णे णो रूवसपण्णे ॥

४०२ [2]°चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बलसपण्णे णाममेगे णो सुयसपण्णे, सुयसपण्णे णाममेगे णो बलसपण्णे, एगे बलसपण्णेवि सुयसपण्णेवि, एगे णो बलसपण्णे णो सुयसपण्णे ॥

४०३ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बलसपण्णे णाममेगे णो सीलसपण्णे, सीलसपण्णे णाममेगे णो बलसपण्णे, एगे बलसपण्णेवि सीलसपण्णेवि, एगे णो बलसपण्णे णो सीलसपण्णे ॥

४०४ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बलसपण्णे णाममेगे णो चरित्तसपण्णे, चरित्तसपण्णे णाममेगे णो बलसपण्णे, एगे बलसपण्णेवि चरित्तसपण्णेवि, एगे णो बलसपण्णे णो चरित्तसपण्णे° ॥

रूव-पद

४०५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा - रूवसपण्णे णाममेगे णो सुयसपण्णे

---

१ सं० पा०—एवं कुलेण य° चरित्तेण य । २ सं० पा०—एवं बलेण य°° चरित्तेण य ।

सुयसपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे, एगे रूवसंपण्णेवि सुयसपण्णेवि, एगे णो रूवसपण्णे णो सुयसपण्णे ॥

४०६ [1]•चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—रूवसपण्णे णाममेगे णो सीलसपण्णे, सीलसपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे, एगे रूवसपण्णेवि सीलसपण्णेवि, एगे णो रूवसपण्णे णो सीलसपण्णे ॥

४०७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—रूवसपण्णे णाममेगे णो चरित्तसपण्णे, चरित्तसपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे, एगे रूवसपण्णेवि चरित्तसपण्णेवि, एगे णो रूवसपण्णे णो चरित्तसपण्णे° ॥

सुय-पदं

४०८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुयसपण्णे णाममेगे णो सीलसपण्णे, सीलसपण्णे णाममेगे णो सुयसपण्णे, एगे सुयसपण्णेवि सीलसपण्णेवि, एगे णो सुयसपण्णे णो सीलसपण्णे ॥

४०९. [2]•चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुयसपण्णे णाममेगे णो चरित्तसपण्णे, चरित्तसपण्णे णाममेगे णो सुयसपण्णे, एगे सुयसपण्णेवि चरित्तसपण्णेवि, एगे णो सुयसपण्णे णो चरित्तसपण्णे° ॥

सील-पदं

४१० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सीलसपण्णे णाममेगे णो चरित्तसपण्णे, चरित्तसपण्णे णाममेगे णो सीलसपण्णे, एगे सीलसपण्णेवि चरित्तसपण्णेवि, एगे णो सीलसपण्णे णो चरित्तसपण्णे ॥

आयरिय-पद

४११ चत्तारि फला पण्णत्ता, त जहा—आमलगमहुरे, मुद्दियामहुरे, खीरमहुरे, खडमहुरे ।

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, त जहा– आमलगमहुरफलसमाणे[3], •मुद्दियामहुरफलसमाणे, खीरमहुरफलसमाणे°, खडमहुरफलसमाणे ॥

वेयावच्च-पदं

४१२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—आतवेयावच्चकरे[4] णाममेगे णो परवेयावच्चकरे, परवेयावच्चकरे णाममेगे णो आतवेयावच्चकरे, एगे आतवेयावच्चकरेवि परवेयावच्चकरेवि, एगे णो आतवेयावच्चकरे णो परवेयावच्चकरे ॥

---

१. स० पा०—एव रूवेण य चरित्तेण य ।

२. स० पा०—एव सुतेण य चरित्तेण य ।

३. स० पा०—आमलगमहुरफलसमाणे जाव खडमहुर° ।

४ वेतावच्चकरे (क, ख, ग) ।

४१३ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—करेति णाममेगे वेयावच्च णो पडिच्छइ, पडिच्छइ णाममेगे वेयावच्च णो करेति, एगे करेतिवि वेयावच्च पडिच्छइवि, एगे णो करेति वेयावच्च णो पडिच्छइ ॥

अट्ठ-माण-पदं

४१४ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अट्ठकरे णाममेगे णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो अट्ठकरे, एगे अट्ठकरेवि माणकरेवि, एगे णो अट्ठकरे णो माणकरे ॥

४१५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—गणट्ठकरे णाममेगे णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो गणट्ठकरे, एगे गणट्ठकरेवि माणकरेवि, एगे णो गणट्ठकरे णो माणकरे ॥

४१६ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—गणसगहकरे णाममेग णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो गणसगहकरे, एगे गणसगहकरेवि माणकरेवि, एगे णो गणसगहकरे णो माणकरे ॥

४१७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—गणसोभकरे णाममेगे णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो गणसोभकरे, एगे गणसोभकरेवि माणकरेवि, एगे णो गणसोभकरे णो माणकरे ॥

४१८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—गणसोहिकरे णाममेगे णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो गणसोहिकरे, एगे गणसोहिकरेवि माणकरेवि, एगे णो गणसोहिकरे णो माणकरे ॥

धम्म-पदं

४१९ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—रूव णाममेगे जहति णो धम्म, धम्म णाममेगे जहति णो रूव, एगे रूवपि जहति धम्मपि, एगे णो रूव जहति णो धम्म ।

४२० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—धम्म णाममेगे जहति णो गणसठिर्ति, गणसठिर्ति णाममेगे जहति णो धम्म, एगे धम्मवि जहति गणसठितिवि, एगे णो धम्म जहति णो गणसठिर्ति ॥

४२१ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पियधम्मे णाममेगे णो दढधम्मे, दढ-धम्मे णाममेगे णो पियधम्मे, एगे पियधम्मेवि दढधम्मेवि, एगे णो पियधम्मे णो दढधम्मे ॥

आयरिय-पदं

४२२. चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, त जहा—पव्वावणारिए[1] णाममेगे णो उवट्ठावणायरिए, उवट्ठावणायरिए णाममेगे णो पव्वावणायरिए, एगे

---

१ पव्वायणा° (क्व) ।

पव्वावणायरिएवि उवट्ठावणायरिए वि, एगे णो पव्वावणायरिए णो उवट्ठावणायरिए—धम्मायरिए ॥

४२३ चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, त जहा—उद्देसणायरिए णाममेगे णो वायणायरिए, वायणायरिए णाममेगे णो उद्देसणायरिए, एगे उद्देसणायरिएवि वायणायरिएवि, एगे णो उद्देसणायरिए णो वायणायरिए—धम्मायरिए ॥

अतेवासि-पद

४२४. चत्तारि अतेवासी पण्णत्ता, त जहा—पव्वावणतेवासी णाममेगे णो उवट्ठावणतेवासी, उवट्ठावणतेवासी णाममेगे णो पव्वावणतेवासी, एगे पव्वावणतेवासीवि उवट्ठावणतेवासीवि, एगे णो पव्वावणतेवासी णो उवट्ठावणतेवासी—धम्मतेवासी ॥

४२५. चत्तारि अतेवासी पण्णत्ता, त जहा—उद्देसणतेवासी णाममेगे णो वायणतेवासी, वायणतेवासी णाममेगे णो उद्देसणतेवासी, एगे उद्देसणतेवासीवि वायणतेवासीवि, एगे णो उद्देसणतेवासी णो वायणतेवासी—धम्मतेवासी ॥

महाकम्म-अप्पकम्म-णिग्गथ-पदं

४२६ चत्तारि णिग्गथा पण्णत्ता, त जहा—

१ रातिणिए[1] समणे णिग्गथे महाकम्मे महाकिरिए अणायावी असमिते धम्मस्स अणाराधए[2] भवति ।

२ रातिणिए समणे णिग्गथे अप्पकम्मे अप्पकिरिए[3] आतावी समिए धम्मस्स आराहए भवति ।

३ ओमरातिणिए समणे णिग्गथे महाकम्मे महाकिरिए अणातावी असमिते धम्मस्स अणाराहए भवति ।

४ ओमरातिणिए समणे णिग्गथे अप्पकम्मे अप्पकिरिए आतावी समिते धम्मस्स आराहए भवति ॥

महाकम्म-अप्पकम्म-णिग्गथी-पदं

४२७ चत्तारि णिग्गथीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

१ रातिणिया समणी णिग्गथी [4]•महाकम्मा महाकिरिया अणायावी असमिता धम्मस्स अणाराधिया भवति ।

२ रातिणिया समणी णिग्गथी अप्पकम्मा अप्पकिरिया आतावी समिता धम्मस्स आराहिया भवति ।

---

१ रातिणिते (क, ख, ग) ।

२ अणाराधते (क, ख, ग) ।

३ ०किरिते (क, ख, ग) ।

४ स० पा०—एव चेव ।

३ ओमरातिणिया समणी णिग्गथी महाकम्मा महाकिरिया अणायावी असमिता धम्मस्स अणाराधिया भवति ।

४. ओमरातिणिया समणी णिग्गथी अप्पकम्मा अप्पकिरिया आतावी समिता धम्मस्स आराहिया भवति° ॥

महाकम्म-अप्पकम्म-समणोवासग-पद

४२८ चत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता, त जहा—

१ राइणिए समणोवासए महाकम्मे [1]°महाकिरिए अणायावी असमिते धम्मस्स अणाराधए भवति ।

२ राइणिए समणोवासए अप्पकम्मे अप्पकिरिए आतावी समिए धम्मस्स आराहए भवति ।

३ ओमराइणिए समणोवासए महाकम्मे महाकिरिए अणातावी असमिते धम्मस्स अणाराहए भवति ।

४ ओमराइणिए समणोवासए अप्पकम्मे अप्पकिरिए आतावी समिते धम्मस्स आराहए भवति° ॥

महाकम्म-अप्पकम्म-समणोवासिया-पद

४२९. चत्तारि समणोवासियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—

१ राइणिया[2] समणोवासिता महाकम्मा [3]°महाकिरिया अणायावी असमिता धम्मस्स अणाराधिया भवति ।

२ राइणिया समणोवासिता अप्पकम्मा अप्पकिरिया आतावी समिता धम्मस्स आराहिया भवति।

३ ओमराइणिया समणोवासिता महाकम्मा महाकिरिया अणायावी असमिता धम्मस्स अणाराधिया भवति ।

४ ओमराइणिया समणोवासिता अप्पकम्मा अप्पकिरिया आतावी समिता धम्मस्स आराहिया भवति° ॥

समणोवासग-पदं

४३० चत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता, त जहा—अम्मापितिसमाणे, भातिसमाणे, मित्तसमाणे, सवत्तिसमाणे ॥

४३१. चत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता, त जहा—अद्दागसमाणे, पडागसमाणे, खाणुसमाणे, खरकटयसमाणे[4] ॥

---

१ स० पा०—तहेव ।

२. रायणिता (क) ।

३. स० पा०—तहेव चत्तारि गमा ।

४ खरण्टसमाणे (वृपा) ।

४३२ समणस्स ण भगवतो महावीरस्स समणोवासगाण सोधम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे चत्तारि पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

अहुणोववण्ण-देव-पद

४३३ चउहि ठाणेहि अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज[1] माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए, णो चेव ण सचाएति हव्वमागच्छित्तए, त जहा—

१ अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववण्णे, से ण माणुस्सए कामभोगे णो आढाइ, णो परियाणाति, णो अट्ठ बधइ, णो णियाण[2] पगरेति, णो ठितिपगप्प पगरेति ।

२ अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववण्णे, तस्स ण माणुस्सए पेमे वोच्छिण्णे दिव्वे सकते भवति ।

३ अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववण्णे, तस्स ण एव भवति—इण्हि[3] गच्छ मुहुत्तेण गच्छ, तेण कालेणमप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा सजुत्ता भवति ।

४ अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववण्णे, तस्स ण माणुस्सए गधे पडिकूले पडिलोमे यावि[4] भवति, उड्ढपि य ण माणुस्सए गधे जाव चत्तारि पच जोयणसताइ हव्वमागच्छति ।

इच्चेतेहि चउहि ठाणेहि अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्ज माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए, णो चेव ण सचाएति हव्वमागच्छित्तए ॥

४३४ चउहि ठाणेहि अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्ज माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए, सचाएति हव्वमागच्छित्तए, त जहा—

१. अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते[5] °अगिद्धे अगढिते° अणज्झोववण्णे, तस्स ण एव भवति—अत्थि खलु मम माणुस्सए भवे आयरिएति वा उवज्झाएति वा पवत्तीति वा थेरेति वा गणीति वा गणधरेति गणावच्छेदेति वा, जेसि पभावेण मए इमा एतारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुती [दिव्वे देवाणुभावे ?] लद्धे पत्ते अभिसमण्णागते, त गच्छामि ण ते भगवते वदामि[6] °णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवय चेइय° पज्जुवासामि ।

२. अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु[7] °दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते अगिद्धे अगढिते°

---

१ इच्छेज्जा (क, ख, ग) ।
२ णिताण (क, ख, ग) ।
३ इयण्हि (ख) ।
४. तावि (क, ख, ग) ।
५ स० पा०—अमुच्छिते जाव अणज्झोववण्णे।
६. स० पा०—वदामि जाव पज्जुवासामि ।
७ स० पा०—देवलोएसु जाव अणज्झोववण्णे ।

अणज्झोववण्णे, तस्स णमेव भवति—एस ण माणुस्सए भवे णाणीति वा तवस्सीति वा अइदुक्कर-दुक्करकारगं, त गच्छामि ण ते भगवते वदामि[1] •णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवय चेइय ° पज्जुवासामि।
३ अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु[2] •दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते अगिद्धे अगढिते ° अणज्झोववण्णे, तस्स णमेव भवति—अत्थि ण मम माणुस्सए भवे मातातिवा[3] •पियाति वा भायाति वा भगिणीति वा भज्जाति वा पुत्ताति वा धूयाति वा° सुण्हाति वा, त गच्छामि ण तेसिमतिय[4] पाउब्भवामि, पासतु ता मे[5] इममेतारूव दिव्व देविड्ढि दिव्व देवजुति [दिव्व देवाणुभाव ?] लद्ध पत्त अभिसमण्णागत।
४ अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु[6] •दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते अगिद्धे अगढिते° अणज्झोववण्णे, तस्स णमेव भवति—अत्थि ण मम माणुस्सए भवे मित्तेति वा सहाति[7] वा सुहीति वा सहाएति[8] वा सगइएति वा, तेसि च ण अम्हे अण्णमण्णस्स सगारे पडिसुते भवति—जो[9] मे पुव्वि चयति से सबोहेतव्वे। इच्चेतेहि[10] •चउहि ठाणेहि अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्ज माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए° सचाएति हव्वमागच्छित्तए।।

अधयार-उज्जोयाइ-पद

४३५ चउहि ठाणेहि लोगधगारे[11] सिया, त जहा—अरहतेहि वोच्छिज्जमाणेहि, अरहतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे, पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे, जायतेजे[12] वोच्छिज्जमाणे।।

४३६ चउहि ठाणेहि लोउज्जोते सिया, त जहा—अरहतेहि जायमाणेहि, अरहतेहि पव्वयमाणेहि[13],अरहताण णाणुप्पायमहिमासु, अरहताण परिनिव्वाणमहिमासु।।

४३७ [14]•चउहि ठाणेहि देवधगारे सिया, त जहा—अरहतेहि वोच्छिज्जमाणेहि, अरहतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे, पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे, जायतेजे वोच्छिज्जमाणे।।

---

१ स० पा०—वदामि जाव पज्जुवासामि।
२ स० पा०—देवलोएसु जाव अणज्झोववण्णे।
३ स० पा०—मातातिवा जाव सुण्हाति।
४ तेसिमतित (क, ख, ग)।
५ इमे (ख, वृपा)।
६ स० पा०—देवलोगेसु जाव अणज्झोववण्णे।
७ सहीति (ख, ग)।
८ सहीएति (ख)।
९ ज (क)।
१०. स० पा०—इच्चेतेहि जाव सचातेति।
११ लोगधारे (क)।
१२ जायतेते (ख)।
१३. पव्वतमाणेहि (क)।
१४ स० पा०—एव देवधगारे देवकहकहते।

४३८ चउहिं ठाणेहिं देवुज्जोते सिया, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ॥

४३९ चउहिं ठाणेहिं देवसण्णिवाते सिया, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ॥

४४० चउहिं ठाणेहिं देवुक्कलिया[1] सिया, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ॥

४४१ चउहिं ठाणेहिं देवकहकहए सिया, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाण-महिमासु° ॥

४४२ चउहिं ठाणेहिं देविंदा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति[2], •तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ॥

४४३ एवं—सामाणिया, तायत्तीसगा, लोगपाला देवा, अग्गमहिसीओ देवीओ, परिसोववण्णगा देवा, अणियाहिवई देवा, आयरक्खा देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ॥

४४४ चउहिं ठाणेहिं देवा अब्भुट्ठिज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ॥

४४५ चउहिं ठाणेहिं देवाणं आसणाइं चलेज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ॥

४४६ चउहिं ठाणेहिं देवा सीहणायं करेज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाण-महिमासु ॥

४४७ चउहिं ठाणेहिं देवा चेलुक्खेवं करेज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाण-महिमासु ॥

४४८ चउहिं ठाणेहिं देवाणं चेइयरुक्खा चलेज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाण-महिमासु ॥

---

१ देवुक्कलितातो (क)।

२. सं० पा०—एवं जहा तिठाणे जाव लोगंतिता

• जायमाणेहिं जाव अरहंताणं महिमासु।

४४९ चउहिं ठाणेहिं लोगंतिया देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छेज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु°, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु ॥

दुहसेज्जा-पद

४५० चत्तारि दुहसेज्जाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

१ तत्थ[1] खलु इमा पढमा दुहसेज्जा—से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ[2] अणगारियं पव्वइए णिग्गंथे पावयणे संकिते कंखिते वितिगिच्छिते भेयसमावण्णे कलुससमावण्णे णिग्गंथं पावयणं णो सद्दहति णो पत्तियति णो रोएइ, णिग्गंथं पावयणं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे[3] अरोएमाणे मणं उच्चावयं णियच्छति, विणिघातमावज्जति—पढमा दुहसेज्जा।

२ अहावरा दोच्चा दुहसेज्जा—से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ[4] •अणगारियं° पव्वइए सएणं लाभेणं णो तुस्सति, परस्स लाभमासाएति पीहेति पत्थेति अभिलसति, परस्स लाभमासाएमाणे[5] •पीहेमाणे पत्थेमाणे° अभिलसमाणे मणं उच्चावयं णियच्छइ, विणिघातमावज्जति—दोच्चा दुहसेज्जा।

३ अहावरा तच्चा दुहसेज्जा—से णं मुंडे भवित्ता[6] •अगाराओ अणगारियं° पव्वइए दिव्वे माणुस्सए कामभोगे आसाएइ[7] •पीहेति पत्थेति° अभिलसति, दिव्वे माणुस्सए कामभोगे आसाएमाणे[8] •पीहेमाणे पत्थेमाणे° अभिलसमाणे मणं उच्चावयं णियच्छति, विणिघातमावज्जति—तच्चा दुहसेज्जा।

४ अहावरा चउत्था दुहसेज्जा—से णं मुंडे[9] •भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए, तस्स णं एवं भवति—जया णं अहमगारवासमावसामि तदा णमहं संवाहण-परिमद्दण-गातब्भंग-गातुच्छोलणाइं लभामि, जप्पभिइं च णं अहं मुंडे[10] •भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए तप्पभिइं च णं अहं संवाहण[11] •परिमद्दण-गातब्भंग° गातुच्छोलणाइं णो लभामि। से णं संवाहण[12] •परिमद्दण-गातब्भंग° गातुच्छोलणाइं आसाएति[13] •पीहेति पत्थेति° अभिलसति,

---

१ तं तत्थ (क, ख, ग)।
२ आगारातो (क, ग)।
३ अपत्तिएमाणे (ख)।
४ सं० पा०—अगारातो जाव पव्वतिते।
५ सं० पा०—आसाएमाणे जाव अभिलसमाणे।
६ सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइए।
७ सं० पा०—आसाएइ जाव अभिलसति।
८ सं० पा० आसाएमाणे जाव अभिलसमाणे।
९ सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइए (तिते)।
१० सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइए (तिते)।
११ सं० पा०—संवाहण जाव गातु°।
१२ सं० पा०—संवाहण जाव गातु°।
१३ सं० पा०—आसएति जाव अभिलसति।

से ण सवाहण[1]-•परिमद्दण-गात•भग ° गातुच्छोलाणाइ आसाएमाणे[2] •पीहेमाणे पत्थेमाणे अभिलसमाणे° मण उच्चावय णियच्छति, विणिघातमावज्जति—चउत्था दुहसेज्जा ॥

सुहसेज्जा-पदं

४५१ चत्तारि सुहसेज्जाओ पण्णत्ताओ, त जहा—

१ तत्थ खलु इमा पढमा सुहसेज्जा—से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए णिग्गथे पावयणे णिस्सकिते णिक्कखिते णिव्वितिगिच्छिए णो भेदसमावण्णे णो कलुससमावण्णे णिग्गथ पावयण सद्दहइ पत्तियइ[3] रोएति, णिग्गथ पावयण सद्दहमाणे पत्तियमाणे रोएमाणे णो मण उच्चावय णियच्छति, णो विणिघातमावज्जति—पढमा सुहसेज्जा ।

२ अहावरा दोच्चा सुहसेज्जा—से ण मुडे[4] •भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइए सएण[5] लाभेण तुस्सति परस्स लाभ णो आसाएति णो पीहेति णो पत्थेति णो अभिलसति, परस्स लाभमणासाएमाणे[6] •अपीहेमाणे अपत्थेमाणे° अणभिलसमाणे णो मण उच्चावय णियच्छति, णो विणिघातमावज्जति—दोच्चा सुहसेज्जा ।

३ अहावरा तच्चा सुहसेज्जा—से ण मुडे[7] •भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइए दिव्वमाणुस्सए कामभोगे णो आसाएति[8] •णो पीहेति णो पत्थेति° णो अभिलसति, दिव्वमाणुस्सए कामभोगे अणासाएमाणे[9] •अपीहेमाणे अपत्थेमाणे° अणभिलसमाणे णो मण उच्चावय णियच्छति, णो विणिघातमावज्जति—तच्चा सुहसेज्जा ।

४ अहावरा चउत्था सुहसेज्जा—से ण मुडे[10] •भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइए, तस्स ण एव भवति—जइ ताव अरहता भगवतो हट्ठा अरोगा बलिया कल्लसरीरा अण्णयराइ ओरालाइ कल्लाणाइ विउलाइ पयताइ पग्गहिताइ महाणुभागाइ कम्मक्खयकरणाइ तवोकम्माइ पडिवज्जति, किमग पुण अह अब्भोवगमिओवक्कमिय वेयण णो सम्म सहामि खमामि तितिक्खेमि अहियासेमि ?

---

१ स० पा०—सवाहण जाव गातु° ।
२ स० पा०—आसाएमाणे जाव मण ।
३ पतीइ (ख) ।
४ स० पा०—मुडे जाव पव्वतिते ।
५ सतेण (क, ख, ग) ।
६ स० पा०—अणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे ।
७ स० पा०—मुडे जाव पव्वइए ।
८ स० पा०—णो आसाएति जाव णो अभिलसति ।
९ स० पा०—अणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे ।
१० स० पा०—मुडे जाव पव्वतिते ।

मम च ण अब्भोवगमिओवक्कमिय [वेयण ?]सम्ममसहमाणस्स अक्खममाणस्स अतितिक्खेमाणस्स अणहियासेमाणस्स किं मण्णे कज्जति ?
एगतसो मे पावे कम्मे कज्जति ।
मम च ण अब्भोवगमिओ[1]•वक्कमिय [वेयण ?]° सम्म सहमाणस्स[2] •खममाणस्स तितिक्खेमाणस्स° अहियासेमाणस्स किं मण्णे कज्जति ?
एगतसो मे णिज्जरा कज्जति -चउत्था सुहसेज्जा ॥

अवायणिज्ज-वायणिज्ज-पद

४५२ चत्तारि अवायणिज्जा पण्णत्ता, त जहा—अविणीए, विगइपडिबद्धे[3], अविओसवितपाहुडे, माई ॥

४५३ चत्तारि वायणिज्जा[4] पण्णत्ता, त जहा –विणीते, अविगतिपडिबद्धे[5], विओसवितपाहुडे[6], अमाई[7] ॥

आय-पर-पद

४५४ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—आतभरे णाममेगे णो परंभरे, परभरे णाममेगे णो आतभरे, एगे आतभरेवि परभरेवि, एगे णो आतभरे णो परंभरे ॥

दुग्गत-सुग्गत-पद

४५५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दुग्गए णाममेगे दुग्गए, दुग्गए णाममेगे सुग्गए, सुग्गए णाममेगे दुग्गए, सुग्गए णाममेगे सुग्गए ॥

४५६ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दुग्गए णाममेगे दुव्वए, दुग्गए णाममेगे सुव्वए, सुग्गए णाममेगे दुव्वए, सुग्गए णाममेगे सुव्वए ॥

४५७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दुग्गए णाममेगे दुप्पडिताणदे, दुग्गए णाममेगे सुप्पडिताणदे, सुग्गए णाममेगे दुप्पडिताणदे, सुग्गए णाममेगे सुप्पडिताणदे ॥

४५८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दुग्गए णाममेगे दुग्गतिगामी, दुग्गए णाममेगे सुग्गतिगामी, सुग्गए णाममेगे दुग्गतिगामी, सुग्गए णाममेगे सुग्गतिगामी ॥

४५९ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—दुग्गए णाममेगे दुग्गतिं गते, दुग्गए णाममेगे सुग्गतिं गते, सुग्गए णाममेगे दुग्गतिं गते, सुग्गए णाममेगे सुग्गतिं गते ॥

---

१ स० पा०—अब्भोवगमिओ जाव सम्म ।
२ स० पा०—सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स ।
३ वीए° (क), वीई° (ख, ग) ।
४ वातणिज्जा (क) ।
५ अविती° (क, ख, ग) ।
६ वितोसवित° (क) ।
७ अमाती (क, ख, ग) ।

तम-जोति-पदं

४६० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—तमे णाममेगे तमे, तमे णाममेगे जोती, जोती णाममेगे तमे, जोती णाममेगे जोती ।।

४६१ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—तमे णाममेगे तमबले, तमे णाममेगे जोतिबले, जोती णाममेगे तमबले, जोती णाममेगे जोतिबले ।।

४६२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—तमे णाममेगे तमबलपलज्जणे[1], तमे णाममेगे जोतिबलपलज्जणे, जोती णाममेगे तमबलपलज्जणे, जोती णाममेगे जोतिबलपलज्जणे ।।

परिण्णात-अपरिण्णात-पद

४६३ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—परिण्णातकम्मे णाममेगे णो परिण्णातसण्णे परिण्णातसण्णे णाममेगे णो परिण्णातकम्मे, एगे परिण्णातकम्मेवि परिण्णातसण्णेवि, एगे णो परिण्णातकम्मे णो परिण्णातसण्णे ।।

४६४ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—परिण्णातकम्मे णाममेगे णो परिण्णातगिहावासे, परिण्णातगिहावासे णाममेगे णो परिण्णातकम्मे, एगे परिण्णातकम्मेवि परिण्णातगिहावासेवि, एगे णो परिण्णातकम्मे णो परिण्णातगिहावासे ।।

४६५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता', त जहा—परिणातसण्णे णाममेगे णो परिण्णातगिहावासे, परिण्णातगिहावासे णाममेगे णो परिण्णातसण्णे, एगे परिण्णातसण्णेवि परिण्णातगिहावासेवि, एगे णो परिण्णातसण्णे णो परिण्णातगिहावासे ।।

इहत्थ-परत्थ-पदं

४६६ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—इहत्थे णाममेगे णो परत्थे, परत्थे णाममेगे णो इहत्थे, एगे इहत्थेवि परत्थेवि, एगे णो इहत्थे णो परत्थे ।।

हाणि-वुड्ढि-पदं

४६७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—एगेण णाममेगे वड्ढति एगेण हायति, एगेण णाममेगे वड्ढति दोहिं हायति, दोहिं णाममेगे वड्ढति एगेण हायति, दोहिं णाममेगे वड्ढति दोहिं हायति ।।

आइण्ण-खलुक-पदं

४६८ चत्तारि पकथगा[2] पण्णत्ता, त जहा—आइण्णे णाममेगे आइण्णे, आइण्णे णाममेगे खलुके, खलुके णाममेगे आइण्णे, खलुके णाममेगे खलुके ।

---

१ °पज्जलणे (क, ख, ग, वृपा) । २. पकथका (क), कथका (वृपा) ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—आइण्णे णाममेगे आइण्णे, [1]°आइण्णे णाममेगे खलुके, खलुके णाममेगे आइण्णे, खलुके णाममेगे खलुके° ॥

४६९ चत्तारि पकथगा पण्णत्ता, त जहा—आइण्णे णाममेगे आइण्णताए वहति[2], आइण्णे णाममेगे खलुकताए[3] वहति, खलुके णाममेगे आइण्णताए वहति, खलुके णाममेगे खलुकताए वहति ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—आइण्णे णाममेगे आइण्णताए वहति, आइण्णे णाममेगे खलुकताए वहति, खलुके णाममेगे आइण्णताए वहति, खलुके णाममेगे खलुकताए वहति ॥

जाति-पद

४७० चत्तारि पकथगा[4] पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाममेग णो कुलसपण्णे, कुलसपण्णे णाममेगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि कुलसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो कुलसपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाममेगे णो कुलसपण्णे, कुलसपण्णे णाममेगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि कुलसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो कुलसपण्णे ॥

४७१ चत्तारि पकथगा पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाममेगे णो वलसपण्णे, वलसपण्णे णाममेगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि वलसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो वलसपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाममेगे णो वलसपण्णे, वलसपण्णे णाममेगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि वलसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो वलसपण्णे ॥

४७२ चत्तारि[प ?]कथगा पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसपण्णे णाममेगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि रूवसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो रूवसपण्णे ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे, रूवसपण्णे णाममेगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णे वि रूवसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो रूवसपण्णे ॥

४७३ चत्तारि[प ?]कथगा पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाममेगे णो जयसपण्णे, जयसपण्णे णाममेगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि जयसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो जयसपण्णे ।

---

१ स० पा०—चउभगो ।
२ विहरति (क, ख, ग, वृपा) ।
३ खलुकत्ताए (क, ग) ।
४ कथका (ख, वृपा) ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जातिसपण्णे णाममेगे णो जयसपण्णे, जयसपण्णे णाममेगे णो जातिसपण्णे, एगे जातिसपण्णेवि जयसपण्णेवि, एगे णो जातिसपण्णे णो जयसपण्णे ॥

कुल-पदं

४७४ [1]°चत्तारि पकथगा पण्णत्ता, त जहा—कुलसपण्णे णाममेगे णो वलसपण्णे, वलसपण्णे णाममेगे णो कुलसपण्णे, एगे कुलसपण्णेवि वलसपण्णेवि, एगे णो कुलसपण्णे णो वलसपण्णे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—कुलसपण्णे णाममेगे णो वलसपण्णे, वलसपण्णे णाममेगे णो कुलसपण्णे, एगे कुलसपण्णेवि वलसपण्णेवि, एगे णो कुलसपण्णे णो वलसपण्णे ॥

४७५ चत्तारि पकथगा पण्णत्ता, त जहा—कुलसपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे, रूवसपण्णे णाममेगे णो कुलसपण्णे, एगे कुलसपण्णेवि रूवसपण्णेवि, एगे णो कुलसपण्णे णो रूवसपण्णे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—कुलसपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे, रूवसपण्णे णाममेगे णो कुलसपण्णे, एगे कुलसपण्णेवि रूवसपण्णेवि एगे णो कुलसपण्णे णो रूवसपण्णे ॥

४७६ चत्तारि पकथगा पण्णत्ता, त जहा—कुलसपण्णे णाममेगे णो जयसपण्णे, जयसपण्णे णाममेगे णो कुलसपण्णे, एगे कुलसपण्णेवि जयसपण्णेवि, एगे णो कुलसपण्णे णो जयसपण्णे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—कुलसपण्णे णाममेगे णो जयसपण्णे, जयसपण्णे णाममेगे णो कुलसपण्णे, एगे कुलसपण्णेवि जयसपण्णेवि, एगे णो कुलसपण्णे णो जयसपण्णे° ॥

वल-पद

४७७ [2]°चत्तारि पकथगा पण्णत्ता, त जहा—वलसपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे, रूवसपण्णे णाममेगे णो वलसपण्णे, एगे वलसपण्णेवि रूवसपण्णेवि, एगे णो, वलसपण्णे णो रूवसपण्णे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—वलसपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे, रूवसपण्णे णाममेगे णो वलसपण्णे, एगे वलसपण्णेवि रूवसपण्णेवि, एगे णो वलसपण्णे णो रूवसपण्णे ॥

---

१ स० पा०—एव कुलसपण्णेण य जयसपण्णेण य।

२ स० पा०—एव वलसपण्णेण य पुरिसजाया पडिवक्खो।

४७८ चत्तारि पकयगा पण्णत्ता, त जहा—वलसपण्णे णाममेगे णो जयसपण्णे, जयसपण्णे णाममेगे णो वलसपण्णे, एगे वलसपण्णेवि जयसपण्णेवि, एगे णो वलसपण्णे णो जयसपण्णे ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—वलसपण्णे णाममेगे णो जयसपण्णे, जयसपण्णे णाममेगे णो वलसपण्णे, एगे वलसपण्णेवि जयसपण्णेवि, एगे णो वलसपण्णे णो जयसपण्णे ° ।।

रूव-पद

४७९ चत्तारि पकथगा पण्णत्ता, त जहा—रूवसपण्णे णाममेगे णो जयसपण्णे, जयसपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे, एगे रूवसपण्णेवि जयसपण्णेवि, एगे णो रूवसपण्णे णो जयसपण्णे ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—रूवसपण्णे णाममेगे णो जयसपण्णे, जयसपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे, एगे रूवसपण्णेवि जयसपण्णेवि, एगे णो रूवसपण्णे णो जयसपण्णे ।।

सीह्-सियाल-पदं

४८० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सीहत्ताए णाममेगे णिक्खते सीहत्ताए विहरइ, सीहत्ताए णाममेगे णिक्खते सीयालत्ताए विहरइ, सीयालत्ताए णाममेग णिक्खते सीहत्ताए विहरइ, सीयालत्ताए णाममेगे णिक्खते सीयालत्ताए विहरइ ।।

सम-पदं

४८१ चत्तारि लोगे समा पण्णत्ता, त जहा—अपइट्ठाणे णरए, जवुद्दीवे दीवे, पालए जाणविमाणे, सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे ।।

४८२. चत्तारि लोगे समा सपक्खि सपडिदिसिं पण्णत्ता, त जहा—सीमतए णरए, समयक्खेत्ते, उडुविमाणे, इसीपब्भारा पुढवी ।।

विसरीर-पद

४८३ उड्ढलोगे ण चत्तारि विसरीरा पण्णत्ता, त जहा—पुढविकाइया, आउकाइया, वणस्सइकाइया, उराला तसा पाणा ।।

४८४ अहोलोगे ण चत्तारि विसरीरा पण्णत्ता, त जहा—[1]°पुढविकाइया, आउकाइया, वणस्सइकाइया, उराला तसा पाणा ।।

४८५ तिरियलोगे ण चत्तारि विसरीरा पण्णत्ता, त जहा—पुढविकाइया, आउकाइया, वणस्सइकाइया, उराला तसा पाणा °।।

---

१ स० पा०—एव चेव एव तिरियलोए वि ।

सत्त-पदं

४८६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—हिरिसत्ते, हिरिमणसत्ते, चलसत्ते, थिरसत्ते ॥

पडिमा-पदं

४८७ चत्तारि सेज्जपडिमाओ पण्णत्ताओ ॥
४८८ चत्तारि वत्थपडिमाओ पण्णत्ताओ ॥
४८९ चत्तारि पायपडिमाओ पण्णत्ताओ ॥
४९० चत्तारि ठाणपडिमाओ पण्णत्ताओ ॥

सरीर-पद

४९१ चत्तारि सरीरगा जीवफुडा पण्णत्ता, त जहा वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए ॥
४९२ चत्तारि सरीरगा कम्मुम्मीसगा[1] पण्णत्ता, त जहा—ओरालिए, वेउव्विए, आहारए[2], तेयए[3] ॥

फुड-पद

४९३ चउहिं अत्थिकाएहिं लोगे फुडे पण्णत्ते, त जहा—धम्मत्थिकाएण, अधम्मत्थिकाएण, जीवत्थिकाएण, पुग्गलत्थिकाएण ॥
४९४ चउहिं बादरकाएहिं[4] उववज्जमाणेहिं लोगे फुडे पण्णत्ते, त जहा—पुढविकाइएहिं, आउकाइएहिं, वाउकाइएहिं, वणस्सइकाइएहिं ॥

तुल्ल-पद

४९५ चत्तारि पएसग्गेण तुल्ला पण्णत्ता, त जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, लोगागासे, एगजीवे ॥

णो सुपस्स-पदं

४९६ चउण्हमेग सरीर णो सुपस्स[5] भवइ, त जहा—पुढविकाइयाण, आउकाइयाण, तेउकाइयाण, वणस्सइकाइयाण ॥

इदियत्थ-पद

४९७ चत्तारि इदियत्था पुट्ठा वेदेति, त जहा—सोइदियत्थे, घाणिदियत्थे, जिब्भिदियत्थे, फासिदियत्थे ॥

---

१. कम्ममीसगा (ख) ।
२ आहारते (क, ख, ग) ।
३ तेतते (क, ख, ग) ।
४ °कातेहिं (क, ख, ग) ।
५ पस्स (वृ), सुपस्स (वृपा) ।

अलोग-अगमण-पदं

४९८ चउहिं ठाणेहिं जीवा य पोग्गला य णो संचाएंति बहिया लोगंता गमणयाए, तं जहा—गतिअभावेणं, णिरुवग्गहयाए, लुक्खताए, लोगाणुभावेणं ।।

णात-पदं

४९९ चउव्विहे णाते पण्णत्ते, तं जहा—आहरणे, आहरणतद्देसे, आहरणतद्दोसे, उवण्णासोवणए ।।

५०० आहरणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अवाए, उवाए, ठवणाकम्मे, पडुप्पण्णविणासी ।।

५०१ आहरणतद्देसे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अणुसिट्ठी[1], उवालंभे, पुच्छा, णिस्सावयणे ।।

५०२ आहरणतद्दोसे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अधम्मजुत्ते, पडिलोमे, अत्तोवणीते, दुरुवणीते ।।

५०३ उवण्णासोवणए चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—तव्वत्थुते, तदण्णवत्थुते, पडिणिभे, हेतू ।।

हेउ-पदं

५०४ हेऊ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—जावए, थावए, वंसए, लूसए ।
अहवा—हेऊ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—पच्चक्खे, अणुमाणे, ओवम्मे, आगमे ।
अहवा—हेऊ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अत्थित्तं अत्थि सो हेऊ, अत्थित्तं णत्थि सो हेऊ, णत्थित्तं अत्थि सो हेऊ, णत्थित्तं णत्थि सो हेऊ ।।

संखाण-पदं

५०५ चउव्विहे संखाणे पण्णत्ते, तं जहा—परिकम्मं[2], ववहारे, रज्जू, रासी ।।

अंधगार-उज्जोय-पदं

५०६ अहोलोगे णं चत्तारि अंधगारं करेंति, तं जहा—णरगा, णेरइया, 'पावाइं कम्माइं'[3], असुभा पोग्गला ।।

५०७ तिरियलोगे णं चत्तारि उज्जोतं करेंति, तं जहा—चंदा, सूरा, मणी, जोती ।।

५०८ उड्ढलोगे णं चत्तारि उज्जोतं करेंति, तं जहा—देवा, देवीओ, विमाणा, आभरणा ।।

---

१ अणुसट्ठे (क, ग) ।
२ पडिकम्म (क, ख, ग) ।
३. पाव-कम्माइं (क, ग) ।

चउत्थो उद्देसो

पसप्पग-पद

५०९ चत्तारि पसप्पगा पण्णत्ता, त जहा—अणुप्पण्णाण भोगाण उप्पाएत्ता[1] एगे पसप्पए, पुव्वुप्पण्णाण भोगाण अविप्पओगेण एगे पसप्पए, अणुप्पण्णाण सोक्खाण उप्पाइत्ता एगे पसप्पए, पुव्वुप्पण्णाण सोक्खाण अविप्पओगेण एगे पसप्पए ।।

आहार-पदं

५१० णेरइयाण चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, त जहा—इगालोवमे, मुम्मुरोवमे, सीतले, हिमसीतले ।।

५११ तिरिक्खजोणियाण चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, त जहा—ककोवमे, विलोवमे, पाणमसोवमे, पुत्तमसोवमे ।

५१२ मणुस्साण चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, त जहा—असणे, पाणे, खाइमे, साइमे ।।

५१३ देवाण चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, त जहा —वण्णमते, गधमते, रसमते, फासमते ।।

आसीविस-पद

५१४ चत्तारि जातिआसीविसा पण्णत्ता, त जहा—विच्छुयजातिआसीविसे[2], मडुक्क-जातिआसीविसे, उरगजातिआसीविसे, मणुस्सजातिआसीविसे ।

विच्छुयजातिआसीविसस्स ण भते ! केवइए विसए पण्णत्ते ?

पभू ण विच्छुयजातिआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्त वोदिं विसेण विसपरिणय[3] विसट्टमाणि करित्तए । विसए से विसट्ठताए, णो चेव ण सपत्तीए करेंसु[4] वा करेति वा करिस्सति वा ।

मडुक्कजातिआसीविसस्स[5] °ण भते ! केवइए विसए पण्णत्ते° ?

पभू ण मडुक्कजातिआसीविसे भरहप्पमाणमेत्त वोदिं विसेण विसपरिणय विसट्टमाणि [6]°करित्तए । विसए से विसट्ठताए, णो चेव ण सपत्तीए करेंसु वा करेंति वा° करिस्सति वा ।

उरगजाति[7]°आसीविसस्स ण भते ! केवइए विसए पण्णत्ते° ?

पभू ण उरगजातिआसीविसे जबुद्दीवपमाणमेत्त वोदिं विसेण [8]°विसपरिणय

---

१. उप्पायत्ता (क, ग) ।

२ °जातीयासीविसे (क, ख, ग) सर्वत्र ।

३ विसपरिगय (वृपा) ।

४ इह चैकवचनप्रक्रमेऽपि बहुवचननिर्देशो वृश्चिकाशीविषाणा बहुत्वज्ञापनार्थम् (वृ) ।

५ स० पा०—मडुक्कजातिआसीविसस्स पुच्छा ।

६ स० पा०—सेस त चेव जाव करिस्सति ।

७ स० पा०—उरगजाति पुच्छा ।

८ स० पा०—सेस त चेव जाव करिस्सति ।

विसट्टमाणि करित्तए। विसए से विसट्टताए, णो चेव ण सपत्तीए करेंसु वा करेति वा° करिस्सति वा।

मणुस्सजाति[1]•आसीविस्स ण भते ! केवइए विसए पण्णत्ते° ?

पभू ण मणुस्सजातिआसीविसे समयक्खेत्तपमाणमेत्त बोंदि विसेण विसपरिणत विसट्टमाणि करेत्तए। विसए से विसट्टताए, णो चेव ण[2] •सपत्तीए करेंसु वा करेति वा° करिस्सति वा ॥

वाहि-तिगिच्छा-पदं

५१५ चउव्विहे वाही पण्णत्ते, त जहा—वातिए, पित्तिए, सिंभिए, सण्णिवातिए ॥

५१६ चउव्विहा तिगिच्छा पण्णत्ता, त जहा—विज्जो, ओसधाइ, आउरे, परियारए ॥

५१७ चत्तारि तिगिच्छगा पण्णत्ता, त जहा—आततिगिच्छए णाममेगे णो परतिगिच्छए, परतिगिच्छए णाममेगे णो आततिगिच्छए, एगे आततिगिच्छएवि परतिगिच्छएवि, एगे णो आततिगिच्छए णो परतिगिच्छए ॥

वणकर-पद

५१८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—वणकरे णाममेगे णो वणपरिमासी, वणपरिमासी णाममेगे णो वणकरे, एगे वणकरेवि वणपरिमासीवि, एगे णो वणकरे णो वणपरिमासी ॥

५१९ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—वणकरे णाममेगे णो वणसारक्खी, वणसारक्खी णाममेगे णो वणकरे, एगे वणकरेवि वणसारक्खीवि, एगे णो वणकरे णो वणसारक्खी ॥

५२० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—वणकरे णाममेगे णो वणसरोही[3] वणसरोही णाममेगे णो वणकरे, एगे वणकरेवि वणसरोहीवि, एगे णो वणकरे णो वणसरोही।

अंतोवाहि-पदं

५२१. चत्तारि वणा पण्णत्ता, त जहा—अतोसल्ले णाममेगे णो बाहिसल्ले, बाहिसल्ले णाममेगे णो अतोसल्ले, एगे अतोसल्लेवि बाहिसल्लेवि, एगे णो अतोसल्ले णो बाहिसल्ले।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अतोसल्ले णाममेगे णो

---

१ म० पा०—मणुस्सजाति पुच्छा।
२ स० पा०—णो चेव ण जाव करिस्सति।
३ °सारोठी (ग)।

वाहिंसल्ले, वाहिसल्ले णाममेगे णो अनोसल्ले, एगे अतोसल्लेवि वाहिंसल्लेवि, एगे णो अतोसल्ले णो वाहिंसल्ले ॥

५२२ चत्तारि वणा पण्णता, त जहा—अतोदुट्ठे णाममेगे णो वाहिंदुट्ठे, वाहिंदुट्ठे णाममेगे णो अतोदुट्ठे, एगे अतोदुट्ठेवि वाहिदुट्ठेवि, एगे णो अतोदुट्ठे णो वाहिंदुट्ठे ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अतोदुट्ठे णाममेगे णो वाहिं-दुट्ठे, वाहिंदुट्ठे णाममेगे णो अतोदुट्ठे, एगे अतोदुट्ठेवि वाहिंदुट्ठेवि, एगे णो अतो-दुट्ठे णो वाहिंदुट्ठे ॥

सेयंस-पावंस-पद

५२३ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सेयसे णाममेगे सेयसे, सेयसे णाममेगे पावसे, पावसे णाममेगे सेयसे, पावसे णाममेगे पावसे ॥

५२४ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सेयसे णाममेगे सेयसेत्तिसालिसए, सेयसे णाममेगे पावसेत्तिसालिसए, पावसे णाममेगे सेयसेत्तिसालिसए, पावसे णाममेगे पावसेत्तिसालिसए ॥

५२५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सेयसे णाममेगे सेयसेत्ति मण्णति, सेयसे णाममेगे पावसेत्ति मण्णति, पावसे णाममेगे सेयसेत्ति मण्णति, पावसे णाममेगे पावसेत्ति मण्णति ॥

५२६ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सेयसे णाममेगे सेयसेत्तिसालिसए मण्णति, सेयसे णाममेगे पावसेत्तिसालिसए मण्णति, पावसे णाममेगे सेयसेत्ति-सालिसए मण्णति, पावसे णाममेगे पावसेत्तिसालिसए मण्णति ॥

आघवण-पदं

५२७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—आघवइत्ता णाममेगे णो पविभावइत्ता[1], पविभावइत्ता णाममेगे णो आघवइत्ता, एगे आघवइत्तावि पविभावइत्तावि, एगे णो आघवइत्ता णो पविभावइत्ता ॥

५२८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—आघवइत्ता णाममेगे णो उछजीवि-सपण्णे, उछजीविसपण्णे णाममेगे णो आघवइत्ता, एगे आघवइत्तावि उछजीवि-सपण्णेवि, एगे णो आघवइत्ता णो उछजीविसपण्णे ॥

रुक्खविगुव्वणा-पदं

५२९ चउव्विहा रुक्खविगुव्वणा पण्णत्ता, त जहा—पवालत्ताए, पत्तत्ताए[2], पुप्फत्ताए, फलत्ताए ॥

---

१ परि० (ग) ।

२ पण्णत्ताए (क, ख, ग) ।

वादिसमोसरण-पद

५३० चत्तारि वादिसमोसरणा पण्णत्ता, तं जहा—किरियावादी, अकिरियावादी, अण्णाणियावादी, वेणइयावादी ।।

५३१ णेरइयाणं चत्तारि वादिसमोसरणा पण्णत्ता, तं जहा—किरियावादी[1], °अकिरियावादी, अण्णाणियावादी° वेणइयावादी ।।

५३२ एवमसुरकुमाराणवि जाव[2] थणियकुमाराणं । एवं—विगलिंदियवज्जं जाव[3] वेमाणियाणं ।।

मेह-पद

५३३ चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा—गज्जित्ता णाममेगे णो वासित्ता, वासित्ता णाममेगे णो गज्जित्ता, एगे गज्जित्तावि वासित्तावि, एगे णो गज्जित्ता णो वासित्ता ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—गज्जित्ता णाममेगे णो वासित्ता, वासित्ता णाममेगे णो गज्जित्ता, एगे गज्जित्तावि वासित्तावि, एगे णो गज्जित्ता णो वासित्ता ।।

५३४ चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा—गज्जित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता, विज्जुयाइत्ता णाममेगे णो गज्जित्ता, एगे गज्जित्तावि विज्जुयाइत्तावि, एगे णो गज्जित्ता णो विज्जुयाइत्ता ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—गज्जित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता, विज्जुयाइत्ता णाममेगे णो गज्जित्ता, एगे गज्जित्तावि विज्जुयाइत्तावि, एगे णो गज्जित्ता णो विज्जुयाइत्ता ।।

५३५ चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा—वासित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता, विज्जुयाइत्ता णाममेगे णो वासित्ता, एगे वासित्तावि विज्जुयाइत्तावि, एगे णो वासित्ता णो विज्जुयाइत्ता ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वासित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता, विज्जुयाइत्ता णाममेगे णो वासित्ता, एगे वासित्तावि विज्जुयाइत्तावि, एगे णो वासित्ता णो विज्जुयाइत्ता ।।

५३६ चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा—कालवासी णाममेगे णो अकालवासी, अकालवासी णाममेगे णो कालवासी, एगे कालवासीवि अकालवासीवि, एगे णो कालवासी णो अकालवासी ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कालवासी णाममेगे णो

---

१ स० पा०—किरियावादी जाव वेणइयावादी। ३ ठा० १।१६०-१६३ ।
२ ठा० १।१४३-१५० ।

अकालवासी, अकालवासी णाममेगे णो कालवासी, एगे कालवासीवि अकालवासीवि, एगे णो कालवासी णो अकालवासी ।।

५३७ चत्तारि मेहा पण्णत्ता, त जहा—खेत्तवासी[1] णाममेगे णो अखेत्तवासी, अखेत्तवासी णाममेगे णो खेत्तवासी, एगे खेत्तवासीवि अखेत्तवासीवि, एगे णो खेत्तवासी णो अखेत्तवासी ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—खेत्तवासी णाममेगे णो अखेत्तवासी, अखेत्तवासी णाममेगे णो खेत्तवासी, एगे खेत्तवासीवि अखेत्तवासीवि, एगे णो खेत्तवासी णो अखेत्तवासी ।।

अम्म-पियर-पदं

५३८ चत्तारि मेहा पण्णत्ता, त जहा—जणइत्ता णाममेगे णो णिम्मवइत्ता, णिम्मवइत्ता णाममेगे णो जणइत्ता, एगे जणइत्तावि णिम्मवइत्तावि, एगे णो जणइत्ता णो णिम्मवइत्ता ।

एवामेव चत्तारि अम्मपियरो पण्णत्ता, त जहा—जणइत्ता णाममेगे णो णिम्मवइत्ता, णिम्मवइत्ता णाममेगे णो जणइत्ता, एगे जणइत्तावि णिम्मवइत्तावि, एगे णो जणइत्ता णो णिम्मवइत्ता ।।

राय-पद

५३९ चत्तारि मेहा पण्णत्ता, त जहा—देसवासी णाममेगे णो सव्ववासी, सव्ववासी णाममेगे णो देसवासी, एगे देसवासीवि सव्ववासीवि, एगे णो देसवासी णो सव्ववासी ।

एवामेव चत्तारि रायाणो पण्णत्ता, त जहा—देसाधिवती णाममेगे णो सव्वाधिवती, सव्वाधिवती णाममेगे णो देसाधिवती, एगे देसाधिवतीवि सव्वाधिवतीवि, एगे णो देसाधिवती णो सव्वाधिवती ।।

मेह-पदं

५४० चत्तारि मेहा पण्णत्ता, त जहा—पुक्खलसवट्टते, पज्जुण्णे[2], जीमूते, जिम्मे[3] । पुक्खलसवट्टए ण महामेहे एगेण वासेण दसवाससहस्साइ भावेति । पज्जुण्णे ण महामेहे एगेण वासेण दसवाससयाइ भावेति । जीमूते ण महामेहे एगेण वासेण

---

१ खेत्तावासी (ख) ।

२ प्राप्तादर्शेषु सर्वत्रापि 'पज्जुण्णे' इति पाठो लभ्यते । भगवत्या (१४।२१) सामान्यमेघाय 'पज्जण्णे' इति पाठो विद्यते । तमनुसृत्याऽत्रापि सदेहो जायते, क्वचित् लिपिदोषेण 'पज्जण्ण' शब्दस्य 'पज्जुण्ण' इति न जातम् ? किन्तु अत्र मेघस्य विशिष्टप्रकारा निर्दिष्टा सन्ति, तेन 'पज्जुण्ण' इति पाठो पि नासभवी ।

३ जिम्हे (क्व) ।

दसवासाइ भावेति । जिम्मे ण महामेहे वहूहिं वासेहिं एग वास भावेति वा ण वा भावेति ।।

आयरिय-पद

५४१ चत्तारि करडगा पण्णत्ता, त जहा—सोवागकरडए, वेसियाकरडए, गाहावति-करडए, रायकरडए ।
एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, त जहा—सोवागकरडगसमाणे, वेसियाकरडगसमाणे, गाहावतिकरडगसमाणे, रायकरडगसमाणे ।।

५४२ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, त जहा—साले णाममेगे सालपरियाए, साले णाममेगे एरडपरियाए, एरडे णाममेगे सालपरियाए, एरडे णाममेगे एरडपरियाए ।
एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, त जहा—साले णाममेगे सालपरियाए, साले णाममेगे एरडपरियाए, एरडे णाममेगे सालपरियाए, एरडे णाममेगे एरडपरियाए ।।

५४३ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, त जहा—साले णाममेगे सालपरिवारे, साले णाममेगे एरडपरिवारे, एरडे णाममेगे सालपरिवारे, एरडे णाममेगे एरडपरिवारे ।
एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, त जहा—साले णाममेगे सालपरिवारे, साले णाममेगे एरडपरिवारे, एरडे णाममेगे सालपरिवारे, एरडे णाममेगे एरडपरिवारे ।

संगहणी-गाहा

सालदुममज्झयारे, जह साले णाम होइ दुमराया ।
इय सुदरआयरिए, सुदरसीसे मुणयव्वे ।।१।।
एरडमज्झयारे, जह साले णाम होइ दुमराया ।
इय सुदरआयरिए, मगुलसीसे मुणेयव्वे ।।२।।
सालदुममज्झयारे, एरडे णाम होइ दुमराया ।
इय मगुलआयरिए, सुदरसीसे मुणेयव्वे ।।३।।
एरडमज्झयारे, एरडे णाम होइ दुमराया ।
इय मगुलआयरिए, मगुलसीसे मुणेयव्वे ।।४।।

भिक्खाग-पदं

५४४. चत्तारि मच्छा पण्णत्ता, त जहा—अणुसोयचारी, पडिसोयचारी, अतचारी, मज्झचारी ।
एवामेव चत्तारि भिक्खागा पण्णत्ता, तं जहा—अणुसोयचारी, पडिसोयचारी, अतचारी, मज्झचारी ।।

गोल-पदं

५४५ चत्तारि गोला पण्णत्ता, त जहा—मधुसित्थगोले, जउगोले, दारुगोले, मट्टियागोले।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—मधुसित्थगोलसमाणे, जउगोलसमाणे, दारुगोलसमाणे, मट्टियागोलसमाणे ॥

५४६. चत्तारि गोला पण्णत्ता, त जहा—अयगोले, तउगोले, तवगोले, सीसगोले।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—अयगोलसमाणे[1], °तउगोलसमाणे, तवगोलसमाणे°, सीसगोलसमाणे ॥

५४७ चत्तारि गोला पण्णत्ता, त जहा—हिरण्णगोले, सुवण्णगोले, रयणगोले, वयरगोले।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—हिरण्णगोलसमाणे[2], °सुवण्णगोलसमाणे, रयणगोलसमाणे°, वयरगोलसमाणे ॥

पत्त-पद

५४८ चत्तारि पत्ता पण्णत्ता, त जहा—असिपत्ते, करपत्ते, खुरपत्ते, कलवचीरियापत्ते।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—असिपत्तसमाणे[3], °करपत्तसमाणे, खुरपत्तसमाणे°, कलवचीरियापत्तसमाणे ॥

कड-पदं

५४९. चत्तारि कडा पण्णत्ता, त जहा—सुवकडे,[4] विदलकडे, चम्मकडे, कवलकडे।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सुवकडसमाणे[5], °विदलकडसमाणे, चम्मकडसमाणे,° कवलकडसमाणे ॥

तिरिय-पद

५५०. चउव्विहा चउप्पया पण्णत्ता, त जहा—एगखुरा, दुखुरा, गडीपदा, सणप्फया[6] ॥

५५१. चउव्विहा पक्खी पण्णत्ता, त जहा—चम्मपक्खी, लोमपक्खी, समुग्गपक्खी, विततपक्खी ॥

५५२. चउव्विहा खुड्डपाणा पण्णत्ता, त जहा—वेइदिया, तेइदिया, चउरिंदिया, समुच्छिमपचिंदियतिरिक्खजोणिया ॥

---

१. स० पा०—अयगोलसमाणे जाव सीसगोल°।
२ स० पा०—हिरण्णगोलसमाणे जाव वइरगोल°।
३ स० पा०—असिपत्तसमाणे जाव कलवचीरिता°।
४ सुठकडे (क, ख, ग)।
५ स० पा०—सुबकडसमाणे जाव कवलकड°।
६ सणप्पदा (क), सणपदा (ग)।

भिक्खाग-पदं

५५३- चत्तारि पक्खी पण्णत्ता, त जहा—णिवतित्ता णाममेगे णो परिवइत्ता, परिवइत्ता णाममेगे णो णिवतित्ता, एगे णिवतित्तावि परिवइत्तावि, एगे णो णिवतित्ता णो परिवइत्ता ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—णिवतित्ता णाममेगे णो परिवइत्ता, परिवइत्ता णाममेगे णो णिवतित्ता, एगे णिवतित्तावि परिवइत्तावि, एगे णो णिवतित्ता णो परिवइत्ता ।।

णिक्कट्ठ-अणिक्कट्ठ-पद

५५४ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—णिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठे, णिक्कट्ठे णाममेगे अणिक्कट्ठे, अणिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठे, अणिक्कट्ठे णाममेगे अणिक्कट्ठे ।।

५५५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—णिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठप्पा, णिक्कट्ठे णाममेगे अणिक्कट्ठप्पा, अणिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठप्पा, अणिक्कट्ठे णाममेगे अणिक्कट्ठप्पा ।।

वुध-अबुध-पद

५५६ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—वुहे णाममेगे वुहे, वुहे णाममेगे अवुहे, अवुहे णाममेगे वुहे, अवुहे णाममेगे अवुहे ।।

५५७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—वुधे णाममेगे वुधहियए[1], वुधे णाममेगे अवुधहियए, अवुधे णाममेगे वुधहियए, अवुधे णाममेगे अवुधहियए ।।

अणुकपग-पद

५५८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—आयाणुकपए णाममेगे णो पराणुकपए, पराणुकपए णाममेगे णो आयाणुकपए, एगे आयाणुकपएवि पराणुकपएवि, एगे णो आयाणुकपए णो पराणुकपए ।।

सवास-पद

५५९ चउव्विहे सवासे पण्णत्ते, त जहा—दिव्वे, आसुरे, रक्खसे, माणुसे ।।

५६० चउव्विहे सवासे पण्णत्ते, त जहा—देवे णाममेगे देवीए सद्धि सवास गच्छति, देवे णाममेगे असुरीए सद्धि सवास गच्छति, असुरे णाममेगे देवीए सद्धि सवास गच्छति, असुरे णाममेगे असुरीए सद्धि सवास गच्छति ।।

५६१ चउव्विधे सवासे पण्णत्ते, त जहा—देवे णाममेगे देवीए सद्धि सवास गच्छति,

---

१ वुहवोहिए (ख) ।

देवे णाममेगे रक्खसीए सद्धि सवास गच्छति, रक्खसे णाममेगे देवीए सद्धि सवास गच्छति, रक्खसे णाममेगे रक्खसीए सद्धि सवास गच्छति ।।

५६२. चउव्विधे सवासे पण्णत्ते, त जहा—देवे णाममेगे देवीए सद्धि सवास गच्छति, देवे णाममेगे मणुस्सीए[1] सद्धि सवास गच्छति, मणुस्से णाममेगे देवीए सद्धि सवास गच्छति, मणुस्से णाममेगे मणुस्सीए सद्धि सवास गच्छति ।।

५६३ चउव्विधे सवासे पण्णत्ते, त जहा—असुरे णाममेगे असुरीए सद्धि सवास गच्छति, असुरे णाममेगे रक्खसीए सद्धि सवास गच्छति, रक्खसे णाममेगे असुरीए सद्धि सवास गच्छति, रक्खसे णाममेगे रक्खसीए सद्धि सवास गच्छति ।।

५६४ चउव्विधे सवासे पण्णत्ते, त जहा—असुरे णाममेगे असुरीए सद्धि सवास गच्छति, असुरे णाममेगे मणुस्सीए सद्धि सवास गच्छति, मणुस्से णाममेगे असुरीए सद्धि सवास गच्छति, मणुस्से णाममेगे मणुस्सीए सद्धि सवास गच्छति ।।

५६५ चउव्विधे सवासे पण्णत्ते, त जहा—रक्खसे णाममेगे रक्खसीए सद्धि सवास गच्छति, रक्खसे णाममेगे मणुस्सीए सद्धि सवास गच्छति, मणुस्से णाममेगे रक्खसीए सद्धि सवास गच्छति, मणुस्से णाममेगे मणुस्सीए सद्धि सवास गच्छति ।।

अवद्धस-पदं

५६६ चउव्विहे अवद्धसे पण्णत्ते, त जहा—आसुरे, आभिओगे[2], समोहे, देवकिव्विसे ।।

५६७ चउहि ठाणेहि जीवा आसुरत्ताए कम्म पगरेति, त जहा—कोवसीलताए[3], पाहुडसीलताए, ससत्ततवोकम्मेण णिमित्ताजीवयाए[4] ।।

५६८ चउहि ठाणेहि जीवा आभिओगत्ताए कम्म पगरेति, त जहा—अत्तुक्कोसेण, परपरिवाएण, भूतिकम्मेण, कोउयकरणेण ।।

५६९ चउहि ठाणेहि जीवा सम्मोहत्ताए कम्म पगरेति, त जहा—उम्मग्गदेसणाए, मग्गतराएण, कामाससपओगेण, भिज्जाणियाणकरणेण ।।

५७० चउहि ठाणेहि जीवा देवकिव्विसियत्ताए कम्म पगरेति, त जहा—अरहताण अवण्ण वदमाणे, अरहतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्ण वदमाणे, आयरियउवज्झायाणमवण्ण वदमाणे, चाउवण्णस्स सघस्स अवण्ण वदमाणे ।।

---

१ मणुस्सीहि देवीहि मणुस्सीहि—एषु बहुवचन लिपिदोषेण जातमिति सभाव्यते । एकस्मिन् आदर्शे 'मणुस्सीइ' इति लभ्यते । एकारस्य स्थाने इकारो जात ; तत् स्थाने च 'हि' इति जातम् । पूर्वापरसूत्रेषु सर्वत्र एकवचनमेव दृश्यते ।

२. अभिओगे (क, ख, घ) ।

३ कोव° (ख), कोधन° (वृ) ।

४ °जीवाते (ग) ।

पव्वज्जा-पदं

५७१ चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, त जहा—इहलोगपडिवद्धा, परलोगपडिवद्धा, दुहतोलोगपडिवद्धा, अप्पडिवद्धा ॥

५७२ चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, त जहा—पुरओपडिवद्धा, मग्गओपडिवद्धा, दुहतोपडिवद्धा, अप्पडिवद्धा ॥

५७३ चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, त जहा—ओवायपव्वज्जा, अक्खातपव्वज्जा, सगारपव्वज्जा, विहगगइपव्वज्जा[1] ॥

५७४ चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, त जहा—तुयावइत्ता[2], पुयावइत्ता, वुआवइत्ता[3], परिपुयावइत्ता[4] ॥

५७५ चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, त जहा—णडखइया, भडखइया, सोहखइया, सियालखइया ॥

५७६ चउव्विहा किसी पण्णत्ता, त जहा—वाविया, परिवाविया, णिदिता परिणिदिता ।
एवामेव चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, त जहा—वाविता, परिवाविता, णिदिता, परिणिदिता ॥

५७७ चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, त जहा—धण्णपुंजितसमाणा धण्णविरल्लितसमाणा, धण्णविक्खित्तसमाणा, धण्णसंकट्टितसमाणा ॥

सण्णा-पदं

५७८ चत्तारि सण्णाओ पण्णत्ताओ, त जहा—आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा ॥

५७९ चउहिं ठाणेहिं आहारसण्णा समुप्पज्जति, त जहा—ओमकोट्ठताए, छुहावेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएण, मतीए, तदट्ठोवओगेण ॥

५८० चउहिं ठाणेहिं भयसण्णा समुप्पज्जति, त जहा—हीणसत्तताए, भयवेयणिज्जस्स[5] कम्मस्स उदएण, मतीए, तदट्ठोवओगेण ॥

५८१ चउहिं ठाणेहिं मेहुणसण्णा समुप्पज्जति, त जहा—चितमंससोणिययाए, मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, मतीए, तदट्ठोवओगेण ॥

५८२ चउहिं ठाणेहिं परिग्गहसण्णा समुप्पज्जति, त जहा—अविमुत्तयाए, लोभवेयणिज्जस्स[6] कम्मस्स उदएण, मतीए, तदट्ठोवओगेण ॥

---

१ विहगपव्वज्जा (क, ख, ग, वृपा) ।
२ उयावइत्ता (वृपा) ।
३ मोयावइत्ता (क, ख, ग, वृपा) ।
४. परिपूयावइत्ता (क, ग), परिवुयावइत्ता (ख, वृ) ।
५ भयमोहणिज्जस्स (क) ।
६ लोभमोहणिज्जस्स (क) ।

काम-पद

५८३ चउव्विहा कामा पण्णत्ता, त जहा—सिंगारा, कलुणा, वीभच्छा, रोद्दा । सिंगारा कामा देवाण, कलुणा कामा मणुयाण, वीभच्छा कामा तिरिक्खजोणियाण, रोद्दा कामा णेरइयाण ।।

उत्ताण-गभीर-पद

५८४ चत्तारि उदगा पण्णत्ता, त जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोदए, उत्ताणे णाममेगे गभीरोदए, गभीरे णाममेगे उत्ताणोदए, गभीरे णाममेगे गभीरोदए ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणहिदए, उत्ताणे णाममेगे गभीरहिदए, गभीरे णाममेगे उत्ताणहिदए, गभीरे णाममेगे गभीरहिदए ।।

५८५ चत्तारि उदगा पण्णत्ता, त जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी, उत्ताणे णाममेगे गभीरोभासी, गभीरे णाममेगे उत्ताणोभासी, गभीरे णाममेगे गभीरोभासी ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी, उत्ताणे णाममेगे गभीरोभासी, गभीरे णाममेगे उत्ताणोभासी, गभीरे णाममेगे गभीरोभासी ।।

५८६. चत्तारि उदही पण्णत्ता, त जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोदही, उत्ताणे णाममेगे गभीरोदही, गभीरे णाममेगे उत्ताणोदही, गभीरे णाममेगे गभीरोदही ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणहियए, उत्ताणे णाममेगे गभीरहियए, गभीरे णाममेगे उत्ताणहियए, गभीरे णाममेगे गभीरहियए ।।

५८७ चत्तारि उदही पण्णत्ता, त जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी, उत्ताणे णाममेगे गभीरोभासी, गभीरे णाममेगे उत्ताणोभासी, गभीरे णाममेगे गभीरोभासी ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी, उत्ताणे णाममेगे गभीरोभासी, गभीरे णाममेगे उत्ताणोभासी, गभीरे णाममेगे गभीरोभासी ।।

तरग-पद

५८८ चत्तारि तरगा पण्णत्ता,त जहा—समुद्द तरामीतेगे समुद्द तरति, समुद्द तरामीतेगे गोप्पय[1] तरति,गोप्पय तरामीतेगे समुद्द तरति,गोप्पय तरामीतेगे गोप्पय तरति ।।

---

१ गोप्पत (क, ख, ग) सर्वत्र ।

५८९ चत्तारि तरगा पण्णत्ता, त जहा—समुद्द 'तरेत्ता णाममेगे'[1] समुद्दे विसीयति[2], समुद्द तरेत्ता णाममेगे गोप्पए विसीयति, गोप्पय तरेत्ता णाममेगे समुद्दे विसीयति, गोप्पय तरेत्ता णाममेगे गोप्पए विसीयति ॥

पुण्ण-तुच्छ-पद

५९० चत्तारि कुभा पण्णत्ता, त जहा—पुण्णे णाममेगे पुण्णे, पुण्णे णाममेगे तुच्छे, तुच्छे णाममेगे पुण्णे, तुच्छे णाममेगे तुच्छे।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पुण्णे णाममेगे पुण्णे, पुण्णे णाममेगे तुच्छे, तुच्छे णाममेगे पुण्णे, तुच्छे णाममेगे तुच्छे ॥

५९१ चत्तारि कुभा पण्णत्ता, त जहा—पुण्णे णाममेगे पुण्णोभासी, पुण्णे णाममेगे तुच्छोभासी, तुच्छे णाममेगे पुण्णोभासी, तुच्छे णाममेगे तुच्छोभासी।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पुण्णे णाममेगे पुण्णोभासी, पुण्णे णाममेगे तुच्छोभासी, तुच्छे णाममेगे पुण्णोभासी, तुच्छे णाममेगे तुच्छोभासी ॥

५९२ चत्तारि कुभा पण्णत्ता, त जहा -पुण्णे णाममेगे पुण्णरूवे, पुण्णे णाममेगे तुच्छरूवे, तुच्छे णाममेगे पुण्णरूवे, तुच्छे णाममेगे तुच्छरूवे।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पुण्णे णाममेगे पुण्णरूवे, पुण्णे णाममेगे तुच्छरूवे, तुच्छे णाममेगे पुण्णरूवे, तुच्छे णाममेगे तुच्छरूवे ॥

५९३ चत्तारि कुभा पण्णत्ता, त जहा—पुण्णेवि एगे पियट्ठे[3], पुण्णेवि एगे अवदले[4], तुच्छेवि एगे पियट्ठे, तुच्छेवि एगे अवदले।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पुण्णेवि एगे पियट्ठे, [5]°पुण्णेवि एगे अवदले, तुच्छेवि एगे पियट्ठे, तुच्छेवि एगे अवदले° ॥

५९४ चत्तारि कुभा पण्णत्ता, त जहा—पुण्णेवि एगे विस्सदति, पुण्णेवि एगे णो विस्सदति, तुच्छेवि एगे विस्सदति, तुच्छेवि एगे णो विस्सदति।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—पुण्णेवि एगे विस्सदति, °[6]पुण्णेवि एगे णो विस्सदति, तुच्छेवि एगे विस्सदति, तुच्छेवि एगे णो विस्सदति° ॥

चरित्त-पदं

५९५ चत्तारि कुभा पण्णत्ता, त जहा—भिण्णे, जज्जरिए, परिस्साई, अपरिस्साई।

---

१ तरामीतेगे (क)।
२. सीतति (क), विमीतति (ख, ग)।
३ पितट्ठे (क, ख, ग)।
४ अवद्दले (क, ख, ग)।
५ स० पा०—तहेव।
६ स० पा०—तहेव।

एवामेव चउव्विहे चरित्ते पण्णत्ते, त जहा—भिण्णे[1], •जज्जरिए, परिस्साई०, अपरिस्साई ।।

महु-विस-पदं

५९६ चत्तारि कुभा पण्णत्ता, त जहा—महुकुभे णाममेगे महुपिहाणे, महुकुभे णाममेगे विसपिहाणे, विसकुभे णाममेगे महुपिहाणे, विसकुभे णाममेगे विसपिहाणे । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—महुकुभे णाममेगे महुपिहाणे, महुकुभे णाममेगे विसपिहाणे, विसकुभे णाममेगे महुपिहाणे, विमकुभे णाममेगे विसपिहाणे ।

संगहणी-गाहा

हिययमपावकलुस, जीहाऽवि य महुरभासिणी णिच्च ।
जम्मि पुरिसम्मि विज्जति, से मधुकुभे मधुपिहाणे ।।१।।
हिययमपावकलुस, जीहाऽवि य कडुयभासिणी णिच्च ।
जम्मि पुरिसम्मि विज्जति, से मधुकुभे विसपिहाणे ।।२।।
ज हियय कलुसमय, जीहाऽवि य मधुरभासिणी णिच्च ।
जम्मि पुरिसम्मि विज्जति, से विसकुभे महुपिहाणे ।।३।।
ज हियय कलुसमय, जीहाऽवि य कडुयभासिणी णिच्च ।
जम्मि पुरिसम्मि विज्जति, से विसकुभे विसपिहाणे ।।४।।

उवसग्ग-पदं

५९७ चउव्विहा उवसग्गा पण्णत्ता, त जहा—दिव्वा, माणुसा, तिरिक्खजोणिया, आयसचेयणिज्जा[2] ।।

५९८ दिव्वा उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—'हासा, पाओसा,'[3] वीमसा, पुढोवेमाता ।।

५९९ माणुसा[4] उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—हासा, पाओसा, वीमसा, कुसीलपडिसेवणया ।।

६०० तिरिक्खजोणिया उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—भया[5], पदोसा, आहार-हेउ, अवच्चलेण-सारक्खणया ।।

६०१ आयसचेयणिज्जा उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—घट्टणता, पवडणता, थभणता, लेसणता ।।

---

१ स० पा०—भिण्णे जाव अपरिस्साई ।
२ आयसंवेय० (क) ।
३ हास पउस (ख) ।
४ माणुस्सा (ग) ।
५ भता (क, ख, ग) ।

कम्म-पदं

६०२ चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा—सुभे णाममेगे सुभे, सुभे णाममेगे असुभे, असुभे णाममेगे सुभे, असुभे णाममेगे असुभे ॥

६०३ चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते, त जहा—सुभे णाममेगे सुभविवागे, सुभे णाममेगे असुभविवागे, असुभे णाममेगे सुभविवागे, असुभे णाममेगे असुभविवागे ॥

६०४ चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते, त जहा—पगडीकम्मे, ठितीकम्मे, अणुभावकम्मे, पदेसकम्मे ॥

संघ-पदं

६०५ चउव्विहे सघे पण्णत्ते, त जहा—समणा, समणीओ, सावगा, सावियाओ ॥

बुद्धि-पदं

६०६. चउव्विहा बुद्धी पण्णत्ता, त जहा—उप्पत्तिया, वेणइया, कम्मिया, परिणामिया ॥

मइ-पदं

६०७ चउव्विहा मई पण्णत्ता, त जहा—उग्गहमती, ईहामती, अवायमती, धारणामती ।

अहवा—चउव्विहा मती पण्णत्ता, त जहा—अरजरोदगसमाणा, वियरोदग-समाणा, सरोदगसमाणा, सागरोदगसमाणा ॥

जीव-पद

६०८ चउव्विहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, त जहा—णेरइया तिरिक्ख-जोणिया, मणुस्सा, देवा ॥

६०९ चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, त जहा—मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी, अजोगी ।

अहवा—चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, त जहा—इत्थिवेयगा, पुरिसवेयगा, णपुसकवेयगा, अवेयगा ।

अहवा—चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, त जहा—चक्खुदसणी, अचक्खुदसणी, ओहिदसणी, केवलदसणी ।

अहवा—चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, त जहा—सजया, असजया, सजया-सजया, णोसजया णोअसजया ॥

मित्त-अमित्त-पद

६१० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—मित्ते णाममेगे मित्ते, मित्ते णाममेगे अमित्ते अमित्ते णाममेगे मित्ते, अमित्ते णाममेगे अमित्ते ॥

६११ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—मित्ते णाममेगे मित्तरूवे, [1]•मित्ते णाममेगे अमित्तरूवे, अमित्ते णाममेगे मित्तरूवे, अमित्ते णाममेगे अमित्तरूवे°॥

मुत्त-अमुत्त-पद

६१२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—मुत्ते णाममेगे मुत्ते, मुत्ते णाममेगे अमुत्ते, अमुत्ते णाममेगे मुत्ते, अमुत्ते णाममेगे अमुत्ते ॥

६१३ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—मुत्ते णाममेगे मुत्तरूवे, मुत्ते णाममेगे अमुत्तरूवे, अमुत्ते णाममेगे मुत्तरूवे, अमुत्ते णाममेगे अमुत्तरूवे ॥

गति-आगति-पद

६१४ पचिदियतिरिक्खजोणिया चउगइया चउआगइया पण्णत्ता, त जहा—पचिदिय-तिरिक्खजोणिए पचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणे[2] णेरइएहिंतो वा, तिरिक्खजोणिएहिंतो वा, मणुस्सेहिंतो वा, देवेहिंतो वा उववज्जेज्जा ।
से चेव ण से पचिदियतिरिक्खजोणिए पचिदियतिरिक्खजोणियत्त विप्पजहमाणे णेरइयत्ताए वा[3], •तिरिक्खजोणियत्ताए वा, मणुस्सत्ताए वा°, देवत्ताए वा गच्छेज्जा[4] ॥

६१५ मणुस्सा चउगइआ चउआगइआ [5]•पण्णत्ता, त जहा—मणुस्से मणुस्सेसु उववज्जमाणे णेरइएहिंतो वा, तिरिक्खजोणिएहिंतो वा, मणुस्सेहिंतो वा, देवेहिंतो वा उववज्जेज्जा ।
से चेव ण से मणुस्से मणुस्सत्त विप्पजहमाणे णेरइयत्ताए वा, तिरिक्खजोणियत्ताए वा, मणुस्सत्ताए वा, देवत्ताए वा गच्छेज्जा° ॥

सजम-असंजम-पद

६१६ वेइदिया ण जीवा असमारभमाणस्स चउव्विहे सजमे कज्जति, त जहा—जिब्भामयातो सोक्खातो अववरोवित्ता भवति, जिब्भामएण दुक्खेण असजोगेत्ता भवति, फासामयातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति, फासामएण दुक्खेण असजोगित्ता भवति ॥

६१७ वेइदिया ण जीवा समारभमाणस्स चउविधे असजमे कज्जति, त जहा—जिब्भामयातो सोक्खातो ववरोवित्ता भवति, जिब्भामएण दुक्खेण सजोगित्ता भवति, फासामयातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति, [6]•फासामएण दुक्खेण सजोगित्ता भवति° ॥

---

१ स० पा०—चउभगो ।
२ उववज्जमाणा (क्व) ।
३ स० पा०—णेरइयत्ताए वा जाव देवत्ताए ।
४ उवागच्छेज्जा (क्व) ।
५ स० पा०—एव चेव मणुस्सावि ।
६ स० पा०—एव चेव ।

किरिया-पद

६१८ सम्मद्दिट्ठियाण णेरइयाण चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—आरभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया[1], अपच्चक्खाणकिरिया ।।

६१९ सम्मद्दिट्ठियाणमसुरकुमाराण चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—[2]°आरभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया° ।।

६२० एव—विगलिदियवज्ज जाव[3] वेमाणियाण ।।

गुण-पद

६२१ चउहि ठाणेहि सते गुणे णासेज्जा, त जहा—कोहेण, पडिणिवेसेण, अकयण्णुयाए, मिच्छत्ताभिणिवेसेण ।।

६२२ चउहि ठाणेहि असते[4] गुणे दीवेज्जा, त जहा—अब्भासवत्तिय, परच्छदाणुवत्तिय, कज्जहेउ, कतपडिकतेति वा ।।

सरीर-पद

६२३ णेरइयाण चउहि ठाणेहि सरीरुप्पत्ती सिया, त जहा—कोहेण[5], माणेण, मायाए, लोभेण ।।

६२४ एव जाव[6] वेमाणियाण ।।

६२५ णेरइयाण चउट्ठाणणिव्वत्तिते सरीरे[7] पण्णत्ते, त जहा—कोहणिव्वत्तिए[8], °माणणिव्वत्तिए, मायाणिव्वत्तिए°, लोभणिव्वत्तिए ।।

६२६ एव जाव[9] वेमाणियाण ।।

धम्म-दार-पद

६२७ चत्तारि धम्मदारा पण्णत्ता, त जहा—खती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे ।।

आउ-बध-पद

६२८ चउहि ठाणेहि जीवा णेरइयाउयत्ताए[10] कम्म पकरेति, त जहा - महारभताए, महापरिग्गहयाए[11], पचिदियवहेण, कुणिमाहारेण ।।

६२९ चउहि ठाणेहि जीवा तिरिक्खजोणिय[आउय ?]त्ताए कम्म पगरेति, त जहा—माइल्लताए, णियडिल्लताए, अलियवयणेण, कूडतुलकूडमाणेण ।।

---

१ मातावत्तिया (क, ख, ग) ।
२ स० पा०—एव चेव ।
३ ठा० १।१४३-१५१, १६०-१६३ ।
४ सते (क, ख, ग, वृपा) ।
५ कोवेण (क, ग) ।
६ ठा० १।१४२-१६३ ।
७ सरीरए (क) ।
८ स० पा०—कोहणिव्वत्तिए जाव लोभ° ।
९ ठा० १।१४२-१६३ ।
१० णेरतियत्ताए (क, ख, ग, वृ), णेरइयाउयत्ताए (वृपा) ।
११ °परिग्गहाते (क) ।

६३० चउहिं ठाणेहिं जीवा मणुस्साउयत्ताए[1] कम्म पगरेति, त जहा—पगतिभद्दताए, पगतिविणीययाए, साणुक्कोसयाए, अमच्छरिताए ॥

६३१ चउहि ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्म पगरेति, त जहा—सरागसजमेण, सजमासजमेण, वालतवोकम्मेण, अकामणिज्जराए ॥

वज्ज-णट्टआइ-पद

६३२ चउव्विहे वज्जे पण्णत्ते, त जहा—तते, वितते, घणे, भुसिरे ॥

६३३ चउव्विहे णट्टे पण्णत्ते, त जहा—अचिए, रिभिए, आरभडे, भसोले[2] ॥

६३४ चउव्विहे गेए पण्णत्ते, त जहा—'उक्खित्तए, पत्तए, मदए[3], रोविंदए'[4] ॥

६३५ चउव्विहे मल्ले पण्णत्ते, त जहा—गथिमे, वेढिमे, पूरिमे[5], सघातिमे ॥

६३६ चउव्विहे अलकारे पण्णत्ते, त जहा—केसालकारे, वत्थालकारे, मल्लालकारे, आभरणालकारे ॥

६३७ चउव्विहे अभिणए पण्णत्ते, त जहा—'दिट्ठतिए, पाडिसुते[6], सामण्णओविणिवाइय[7], लोगमज्झावसिते[8]'[9] ॥

---

१. मणुस्सत्ताते (ख)।

२ भिसोले (क, ग)।

३ मेदए (क)।

४ रायपसेणइयसुत्ते (११५, २८१ सूत्रयो) क्रमश —'उक्खित्त पायत मदाय रोइयावसाण' 'उक्खित्ताय पायताय मदाय रोइयावसाण' पाठ प्राप्यते। तत्रापि २८१ सूत्रे प्रतिपु 'रोइदावसाण' पाठोऽस्ति, किन्तु वृत्तिकारेण 'रोइयावसाण' पाठोऽस्ति व्याख्यात। स्थानाङ्गवृत्तौ तु नास्ति व्याख्यातोसौ पाठ। स्वय वृत्तिकारेणालेखि—नाट्यगेयाभिनयसूत्राणि सम्प्रदायाभावान्न विवृतानि। —वृत्ति पत्र २७२।

५ पूतिमे (क)।

६ पाडसुते (क, ग), पाडुसुत्ते (ख)।

७ सामतोवातणिते (क, ख, ग)।

८ °मज्झो° (ख)।

९ रायपसेणइय (सूत्र ११७, २८१)	स्थानाङ्ग (४।६३७)	जीवाभिगम (३।२)
दिट्ठतिय पाडतिय सामन्नओविणिवाइय लोगमज्झावसाणिय	दिट्ठतिए पाडिसुते सामन्नओविणिवाइय लोगमज्झावसिते	दिट्ठतियं पाडिसुय सामन्नओविणिवाइय लोगमज्झावसाणिय

स्थानाङ्गवृत्तौ नास्ति व्याख्यातोसौ पाठ। जीवाभिगमस्य पाठो वृत्तिमनुसृत्यास्माभिरुट्टङ्कित। रायपसेणइयसूत्रे प्रथमवारमसौ व्याख्यातोस्ति—'दार्ष्टान्तिकम् प्रात्यन्तिकम् सामान्यतोविनिपातम् लोकमध्यावसानिकम्।' —वृत्ति पत्र १४५।

विमाण-पद

६३८ सणकुमार-माहिदेसु ण कप्पेसु विमाणा चउवण्णा पण्णत्ता, त जहा—णीला, लोहिता, हालिद्दा, सुक्किल्ला ॥

देव-पद

६३९ महासुक्क-सहस्सारेसु ण कप्पेसु देवाण भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं चत्तारि रयणीओ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥

गब्भ-पद

६४० चत्तारि दगगब्भा[1] पण्णत्ता, त जहा—उस्सा, महिया, सीता, उसिणा ।

६४१ चत्तारि दगगब्भा[2] पण्णत्ता, त जहा—हेमगा, अब्भमथडा, सीतोसिणा, पच-रूविया ।

सगहणी-गाहा

माहे उ हेमगा गब्भा, फग्गुणे अब्भसथडा ।
सीतोसिणा उ चित्ते, वइसाहे[3] पचरूविया ॥१॥

६४२ चत्तारि मणुस्सीगब्भा पण्णत्ता, त जहा—इत्थित्ताए, पुरिसत्ताए, णपुसगत्ताते, विवत्ताए ।

सगहणी-गाहा

अप्प सुक्क वहु ओय, इत्थी तत्थ पजायति ।
अप्प ओय वहु सुक्क, पुरिसो तत्थ जायति ॥१॥
दोण्हपि रत्तसुक्काण, तुल्लभावे णपुसओ ।
इत्थी-ओय[4]-समायोगे[5], विंव तत्थ पजायति ॥२॥

पुव्ववत्थु-पदं

६४३ उप्पायपुव्वस्स ण चत्तारि चलवत्थू पण्णत्ता ॥

वृत्त्यनुसारेणात्र 'सामन्नओविणिवात' पाठो युज्यते । जीवाभिगमवृत्तावपि 'सामान्यतोविनिपातिकम्' इति व्याख्यातमस्ति । आदर्शेपु 'सामतोवणिवाइय' जातम् । सम्भवत 'सामन्नओ' स्थाने 'सामन्नो' जात, अस्यैव 'सामन्तो' रूपे परिवर्तन जातमिति प्रतीयते । स्थानाङ्गे 'पाडिसुते' पाठस्तथा जीवाभिगमवृत्तौ 'प्रतिश्रुतिकम्' इति व्याख्यातोऽस्ति पाठ । एतौ द्वावपि 'रायपसेणइय' सूत्रस्य 'पाडतिय' शब्दाद् वाचनाभेद गच्छत ।

१ उदग० (क) ।

२ उदग० (क, ग) ।

३. वतिसाहे (क, ख, ग) ।

४ तोत (क, ख, ग) ।

५ समातोगे (क, ख, ग) ।

कव्व-पद

६४४ चउव्विहे कव्वे पण्णत्ते, त जहा—गज्जे, पज्जे, कत्थे, गेए ।।

समुग्घात-पद

६४५ णेरइयाण चत्तारि समुग्घाता पण्णत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाते, कसायसमुग्घाते, मारणतियसमुग्घाते, वेउव्वियसमुग्घाते ।

६४६ एव—वाउक्काइयाणवि ।।

चोदसपुव्वि-पद

६४७ अरहतो ण अरिट्ठणेमिस्स चत्तारि सया चोद्दसपुव्वीणमजिणाण जिणसकासाण सव्वक्खरसण्णिवाईण जिणो[1] [जिणाण ?] इव अवितथ[2] वागरमाणाण उक्कोसिया चउद्दसपुव्विसपया हुत्था ।।

वादि-पद

६४८ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वादीण सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाण उक्कोसिता वादिसपया हुत्था ।।

कप्प-पदं

६४९. हेट्ठिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचदसठाणसठिया पण्णत्ता, त जहा—सोहम्मे, ईसाणे, सणकुमारे, माहिंदे ।।

६५० मज्झिल्ला चत्तारि कप्पा पडिपुण्णचदसठाणसठिया पण्णत्ता, त जहा—बभलोगे, लतए, महासुक्के, सहस्सारे ।।

६५१ उवरिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचदसठाणसठिया पण्णत्ता, त जहा—आणते, पाणते, आरणे, अच्चुते ।।

समुद्द-पदं

६५२ चत्तारि समुद्दा पत्तेयरसा पण्णत्ता, त जहा—लवणोदे, वरुणोदे, खीरोदे, घतोदे ।।

कसाय-पदं

६५३ चत्तारि आवत्ता पण्णत्ता, त जहा—खरावत्ते, उण्णतावत्ते, गूढावत्ते, आमिसावत्ते ।

---

१ तृतीयस्थानस्य ५३४ सूत्रे 'जिणा इव' पाठो लभ्यते तथा 'ख' प्रतौ 'जिणो इव' । अत्र तु सर्वासु प्रतिषु 'जिणो इव' पाठो लभ्यते । व्याकरणदृष्ट्या उभयत्रापि 'जिणाण इव' युज्यते ।

२ अवितह (ख, ग) ।

एवामेव चत्तारि कसाया पण्णत्ता, त जहा—खरावत्तसमाणे कोहे[1], उण्णतावत्तसमाणे माणे, गूढावत्तसमाणा माया, आमिसावत्तममाणे लोभे।
१ खरावत्तसमाण कोह अणुपविट्ठे जीवे काल करेति, णेरइएसु उववज्जति।
२ [2]°उण्णतावत्तसमाण माण अणुपविट्ठे जीवे काल करेति, णेरइएसु उववज्जति।
३ गूढावत्तसमाण माय अणुपविट्ठे जीवे काल करेति, णेरइएसु उववज्जति°।
४ आमिसावत्तसमाण लोभमणुपविट्ठे जीवे काल करेति, णेरइएसु उववज्जति॥

णक्खत्त-पद

६५४ अणुराहाणक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते॥
६५५ पुव्वासाढा[3]°णक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते°॥
६५६ उत्तरासाढा[4]°णक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते°॥

पावकम्म-पद

६५७ जीवाण चउट्ठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा चिणति वा चिणिस्सति वा—णेरइयणिव्वत्तिते, तिरिक्खजोणियणिव्वत्तिते, मणुस्सणिव्वत्तिते, देवणिव्वत्तिते॥
६५८ एव[5]—उवचिणिसु वा उवचिणति वा उवचिणिस्सति वा।
एव—चिण-उवचिण-बध-उदीर-वेय तह णिज्जरा चेव॥

पोग्गल-पद

६५९ चउपदेसिया खधा अणता पण्णत्ता॥
६६० चउपदेसोगाढा पोग्गला अणता पण्णत्ता॥
६६१ चउसमयट्ठितीया पोग्गला अणता पण्णत्ता॥
६६२ चउगुणकालगा पोग्गला अणता जाव[6] चउगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता॥

---

१ कोवे (क, ग)।
२ स० पा०—उण्णत्तावत्तसमाण माण एव चेव गूढावत्तसमाण मातमेव चेव।
३ पुव्वासाढे (क, ग), स० पा०—पुव्वासाढा एव चेव।
४ उत्तरासाढे (क, ग), स० पा०—उत्तरासाढा एव चेव।
५ ठा० ४।६५७।
६. ठा० १।२५६।

पंचमं ठाणं

पढमो उद्देसो

महव्वय-अणुव्वय-पदं

१ पच महव्वया पण्णत्ता, त जहा—सव्वाओ पाणातिवायाओ[1] •वेरमण, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमण°, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण ।।

२ पचाणुव्वया पण्णत्ता, त जहा—थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमण, थूलाओ मुसावायाओ वेरमण, थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण, सदारसतोसे, इच्छा-परिमाणे ।।

इंदिय-विसय-पदं

३ पच वण्णा पण्णत्ता, त जहा—किण्हा, णीला, लोहिता, हालिद्दा, सुक्किल्ला ।।

४ पच रसा पण्णत्ता, त जहा—तित्ता[2], •कडुया, कसाया, अविला°, मधुरा ।।

५ पच कामगुणा पण्णत्ता, त जहा—सद्दा, रूवा, गधा, रसा, फासा ।।

६ पचहिं ठाणेहिं जीवा सज्जति, त जहा—सद्देहिं[3], •रूवेहि, गधेहि, रसेहि°, फासेहि ।।

७ [4]•पचहि ठाणेहि जीवा रज्जति, त जहा—सद्देहिं, रूवेहि, गधेहि, रसेहिं, फासेहि ।।

८ पचहि ठाणेहि जीवा मुच्छति, त जहा—सद्देहि, रूवेहि, गधेहि, रसेहिं, फासेहि ।।

---

१ स० पा०—पाणातिवायाओ जाव सव्वातो ।

२. स० पा०—तित्ता जाव मधुरा ।

३ स० पा०—सद्देहि जाव फासेहि ।

४ स० पा०—एव रज्जति मुच्छति गिज्झति अज्झोववज्जति ।

९ पचहिं ठाणेहिं जीवा गिज्झनि, त जहा—सद्देहिं, रूवेहिं, गधेहिं, रसेहिं, फासेहिं ॥

१० पचहिं ठाणेहिं जीवा अज्झोववज्जति, त जहा—सद्देहिं, रूवेहिं, गधेहिं, रसेहिं, फासेहिं° ॥

११ पचहिं ठाणेहिं जीवा विणिघायमावज्जति, त जहा—सद्देहिं[1], °रूवेहिं, गधेहिं, रसेहिं°, फासेहिं ॥

१२ पच ठाणा अपरिण्णाता जीवाण अहिताए असुभाए अखमाए अणिस्सेस्साए अणाणुगामियत्ताए भवति, त जहा—सद्दा[2], °रूवा, गधा, रसा°, फासा ॥

१३ पच ठाणा सुपरिण्णाता जीवाण हिताए सुभाए[3], °खमाए णिस्सेस्साए° आणुगामियत्ताए भवति, त जहा—सद्दा[4], °रूवा, गधा, रसा°, फासा ॥

१४ पच ठाणा अपरिण्णाता जीवाण दुग्गतिगमणाए भवति, त जहा—सद्दा[5], °रूवा, गधा, रसा°, फासा ॥

१५ पच ठाणा सुपरिण्णाता जीवाण सुग्गतिगमणाए भवति, त जहा—सद्दा[6], °रूवा, गधा, रसा°, फासा ॥

आसव-सवर-पद

१६ पचहिं ठाणेहिं जीवा दोग्गतिं गच्छति, त जहा—पाणातिवातेण[7], °मुसावाएणं, अदिण्णादाणेण, मेहुणेण°, परिग्गहेण ॥

१७ पचहिं ठाणेहिं जीवा सोगतिं गच्छति, त जहा—पाणातिवातवेरमणेण[8], °मुसावायवेरमणेण, अदिण्णादाणवेरमणेण, मेहुणवेरमणेण°, परिग्गहवेरमणेण ॥

पडिमा-पद

१८ पच पडिमाओ पण्णत्ताओ, त जहा—भद्दा, सुभद्दा, महाभद्दा, सव्वतोभद्दा, भद्दुत्तरपडिमा ॥

थावरकाय-पद

१९ पच थावरकाया पण्णत्ता, त जहा—इदे थावरकाए, बभे थावरकाए, सिप्पे थावरकाए, सम्मती[9] थावरकाए, पायावच्चे[10] थावरकाए ॥

---

१ स० पा०—सद्देहिं जाव फासेहिं ।
२ स० पा०—सद्दा जाव फासा ।
३ स० पा०–सुभाते जाव आणुगामियत्ताते ।
४,५,६ स० पा०—सद्दा जाव फासा ।
७ स० पा०—पाणातिवातेण जाव परिग्गहेण ।
८ स० पा०—पाणातिवातवेरमणण जाव परिग्गह° ।
९ सुमति (क), समुति (ग) ।
१० पातावच्चे (क, ख, ग) ।

२० पच्च थावरकायाधिपती पण्णत्ता, त जहा—इदे थावरकायाधिपती[1], •वभे थावरकायाधिपती, सिप्पे थावरकायाधिपती, सम्मती थावरकायाधिपती°, पायावच्चे थावरकायाधिपती ।।

अइसेस-णाण-दंसण-पद

२१ पचहि ठाणेहि ओहिदसणे समुप्पज्जिउकामेवि तप्पढमयाए खभाएज्जा[2], त जहा—

१ अप्पभूत वा पुढवि पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा ।

२ कुथुरासिभूत वा पुढवि पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा ।

३ महतिमहालय वा महोरगसरीर पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा ।

४ देव वा महिड्डिय[3] •महज्जुइय महाणुभाग महायस महावल° महासोक्ख[4] पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा ।

५ पुरेसु वा 'पोराणाइ उरालाइ'[5] महतिमहालयाइ महाणिहाणाइ पहीण-सामियाइ पहीणसेउयाइ[6] पहीणगुत्तागाराइ उच्छिण्णसामियाइ उच्छिण्णसेउ-याइ उच्छिण्णगुत्तागाराइ जाइ इमाइ गामागर-णगर-खेड-कव्वड-मडव-दोणमुह-पट्टणासम-सवाह-सण्णिवेसेसु सिघाडग - तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु णगर-णिद्धमणेसु सुसाण-सुण्णागार-गिरिकदर-सति-सेलोवट्ठावण-भवण-गिहेसु सणिक्खित्ताइ चिट्ठति, ताइ वा पासित्ता तप्पढमताए खभाएज्जा ।

इच्चेतेहि पचहि ठाणेहि ओहिदसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए खभा-एज्जा ।।

२२ पचहि ठाणेहि केवलवरणाणदसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए णो खभाएज्जा, त जहा—

१ अप्पभूत वा पुढवि पासित्ता तप्पढमयाए णो खभाएज्जा ।

२ [7]•कुथुरासिभूत वा पुढवि पासित्ता तप्पढमयाए णो खभाएज्जा ।

३ महतिमहालय वा महोरगसरीर पासित्ता तप्पढमयाए णो खभाएज्जा ।

४ देव वा महिड्डिय महज्जुइय महाणुभाग महायस महावल महासोक्ख पासित्ता तप्पढमयाए णो खभाएज्जा ।

५ पुरेसु वा पोराणाइ उरालाइ महतिमहालयाइ महाणिहाणाइ पहीणसामियाइ

---

१ स० पा०—इंदे थावरकाताधिपती जाव पातावच्चे ।

२ खभातेज्जा (क, ख, ग) सर्वत्र ।

३ स० पा०—महिड्डिय जाव महासोक्ख ।

४ महेसक्क (क, ग), महेसक्ख (वृपा) ।

५ पोराणाइ महति (ख), पोराणाइ (वृ), पोराणाइ ओरालाइ (वृपा) ।

६ पहीणमेक्काराइं (वृ), पहीणसेउयाइ(वृपा) ।

७ स० पा०—सेस तहेव जाव भवणगिहेसु ।

पहीणसेउयाइ पहीणगुत्तागाराइ उच्छिण्णसामियाइ उच्छिण्णसेउयाइ उच्छिण्णगुत्तागाराइ जाइ इमाइ गामागर-णगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-संबाह-सण्णिवेसेसु सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु णगर-णिद्धमणेसु सुसाण-सुण्णागार-गिरिकंदर-संति-सेलोवट्ठावण° भवण-गिहेसु सण्णिक्खित्ताइ चिट्ठंति, ताइ वा पासित्ता तप्पढमयाए णो खभाएज्जा।[1]

इच्चेतेहि पचहि ठाणेहि[1] °केवलवरणाणदसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए° णो खभाएज्जा ॥

सरीर-पद

२३ णेरइयाण सरीरगा पचवण्णा पचरसा पण्णत्ता, त जहा—किण्हा[2] °णीला, लोहिता, हालिद्दा°, सुक्किल्ला। तित्ता[3], °कडुया, कसाया, अबिला°, मधुरा ॥

२४ एव—णिरतर जाव[4] वेमाणियाण ॥

२५ पच सरीरगा पण्णत्ता, त जहा—ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए[5] ॥

२६ ओरालियसरीरे पचवण्णे पचरसे पण्णत्ते, त जहा—किण्हे[6], °णीले, लोहिते, हालिद्दे°, सुक्किल्ले। तित्ते[7], °कडुए, कसाए, अबिले°, महुरे ॥

२७ [8]°वेउव्वियसरीरे पचवण्णे पचरसे पण्णत्ते, त जहा—किण्हे, णीले, लोहिते, हालिद्दे, सुक्किल्ले। तित्ते, कडुए, कसाए, अबिले, महुरे ॥

२८ आहारयसरीरे पचवण्णे पचरसे पण्णत्ते, त जहा – किण्हे, णीले, लोहिते, हालिद्दे, सुक्किल्ले। तित्ते, कडुए, कसाए, अबिले, महुरे ॥

२९ तेययसरीरे पचवण्णे पचरसे पण्णत्ते, त जहा—किण्हे, णीले, लोहिते, हालिद्दे, सुक्किल्ले। तित्ते, कडुए, कसाए, अबिले, महुरे ॥

३० कम्मगसरीरे पचवण्णे पचरसे पण्णत्ते, त जहा—किण्हे, णीले, लोहिते, हालिद्दे, सुक्किल्ले। तित्ते, कडुए, कसाए, अबिले, महुरे° ॥

३१ सव्वेवि ण बादरबोंदिधरा कलेवरा पचवण्णा पचरसा दुगधा अट्ठफासा ॥

तित्थभेद-पद

३२ पचहि ठाणेहि पुरिम-पच्छिमगाण जिणाण दुग्गम भवति, त जहा—दुआइक्ख, दुव्विभज्ज[9], दुपस्स, दुतितिक्ख, दुरणुचर ॥

---

१ स० पा०—ठाणेहि जाव णो खंभातेज्जा।

२. स० पा०—किण्हा जाव सुक्किल्ला।

३ स० पा०—तित्ता जाव मधुरा।

४ ठा० १।१४२-१६३।

५. कम्मते (क, ग)।

६ स० पा०—किण्हे जाव सुक्किल्ले।

७ स० पा०—तित्ते जाव महुरे।

८ स० पा०—एव जाव कम्मगसरीरे।

९ दुव्विभव (वृपा)।

३३ पचहिं ठाणेहिं मज्झिमगाण जिणाण सुग्गम भवति, त जहा—सुआइक्ख, सुविभज्ज, सुपस्स, सुतितिक्ख, सुरणुचर[1] ॥

अब्भणुण्णात-पद

३४ पच ठाणाइ समणेण भगवता महावीरेण समणाण णिग्गथाण णिच्च वण्णिताइ णिच्च कित्तिताइ णिच्च वुइयाइ[2] णिच्च पसत्थाइ णिच्चमब्भणुण्णाताइ भवति, त जहा—खती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे ॥

३५ पच ठाणाइ समणेण भगवता महावीरेण[3] •समणाण णिग्गथाण णिच्च वण्णिताइ णिच्च कित्तिताइ णिच्च वुइयाइ णिच्च पसत्थाइ णिच्च° अब्भणुण्णाताइ भवति, त जहा—सच्चे, सजमे, तवे, चियाए, बभचेरवासे ॥

३६ पच ठाणाइ समणेण[4] •भगवता महावीरेण समणाण णिग्गथाण णिच्च वण्णिताइ णिच्च कित्तिताइ णिच्च वुइयाइ णिच्च पसत्थाइ णिच्च° अब्भणुण्णाताइ भवति, त जहा -उक्खित्तचरए, णिक्खित्तचरए, अतचरए, पतचरए, लूहचरए ॥

३७ पच ठाणाइ[5] •समणेण भगवता महावीरेण समणाण णिग्गथाण णिच्च वण्णिताइ णिच्च कित्तिताइ णिच्च वुइयाइ णिच्च पसत्थाइ णिच्च° अब्भणुण्णाताइ भवति, त जहा—अण्णातचरए, अण्णइलायचरए[6], मोणचरए, ससट्ठकप्पिए, तज्जातससट्ठकप्पिए ॥

३८ पच ठाणाइ[7] •समणेण भगवता महावीरेण समणाण णिग्गथाण णिच्च वण्णिताइ णिच्च कित्तिताइ णिच्च वुइयाइ णिच्च पसत्थाइ णिच्च° अब्भणुण्णाताइ भवति, त जहा—उवणिहिए, सुद्धेसणिए, सखादत्तिए, दिट्ठलाभिए, पुट्ठलाभिए ॥

३९ पच ठाणाइ[8] •समणेण भगवता महावीरेण समणाण णिग्गथाण णिच्च वण्णिताइ णिच्च कित्तिताइ णिच्च वुइयाइ णिच्च पसत्थाइ णिच्च° अब्भणुण्णाताइ भवति, त जहा—आयविलिए, णिव्विइए[9], पुरिमड्ढिए[10], परिमितपिंडवातिए[11], भिण्णपिंडवातिए ॥

४० पच ठाणाइ[12] •समणेण भगवता महावीरेण समणाण णिग्गथाण णिच्च

---

१ 'सुरनुचर' न्ति रेफप्राकृतत्वादिति (वृ) ।
२ पूतिताइ (ग) ।
३ स० पा०—महावीरेण जाव अब्भणुण्णायाइ ।
४ स० पा०—समणेण जाव अब्भणुण्णायाइ ।
५ स० पा०—ठाणाइ जाव अब्भणुण्णायाइ ।
६ अन्नवेलचरए (वृपा) ।
७,८ स० पा०—ठाणाइ जाव अब्भणुण्णायाइ ।
९ निव्विते (क, ग) ।
१० पुरमड्ढिते (क) ।
११ परिमितपिंडवातिते (क) ।
१२ स० पा०—ठाणाइ जाव अब्भणुण्णायाइ ।

वण्णिताइ णिच्च कित्तिताइ णिच्च वुइयाइ णिच्च पसत्थाइ णिच्च° अब्भणुण्णाताइ भवति, त जहा—अरसाहारे, विरसाहारे, अताहारे, पताहारे, लूहाहारे ॥

४१ पच ठाणाइ[1] •समणेण भगवता महावीरेण समणाण णिग्गथाण णिच्च वण्णिताइ णिच्च कित्तिताइ णिच्च वुइयाइ णिच्च पसत्थाइ णिच्च° अब्भणुण्णाताइ भवति, त जहा—अरसजीवी, विरसजीवी, अतजीवी, पतजीवी, लूहजीवी ॥

४२ पच ठाणाइ[1] •समणेण भगवता महावीरेण समणाण णिग्गथाण णिच्च वण्णिताइ णिच्च कित्तिताइ णिच्च वुइयाइ णिच्च पसत्थाइ णिच्च अब्भणुण्णाताइ° भवति, त जहा—ठाणातिए, उक्कुडुआसणिए, पडिमट्ठाई, वीरासणिए, णेसज्जिए ॥

४३ पच ठाणाइ[1] •समणेण भगवता महावीरेण समणाण णिग्गथाण णिच्च वण्णिताइ णिच्च कित्तिताइ णिच्च वुइयाइ णिच्च पसत्थाइ णिच्च अब्भणुण्णाताइ° भवति, त जहा—दडायतिए, लगडसाई, आतावए, अवाउडए[4], अकडूयए ॥

महाणिज्जर-पद

४४ पचहि ठाणेहि समणे णिग्गथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, त जहा—अगिलाए आयरियवेयावच्च करेमाणे, अगिलाए उवज्झायवेयावच्च करेमाणे, अगिलाए थेरवेयावच्च करेमाणे, अगिलाए तवस्सिवेयावच्च करेमाणे, अगिलाए गिलाणवेयावच्च करेमाणे ॥

४५ पचहि ठाणेहि समणे णिग्गथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, त जहा—अगिलाए सेहवेयावच्च करेमाणे, अगिलाए कुलवेयावच्च करेमाणे, अगिलाए गणवेयावच्च करेमाणे, अगिलाए सघवेयावच्च करेमाणे, अगिलाए साहम्मियवेयावच्च करेमाणे ॥

विसभोग-पद

४६ पचहि ठाणेहि समणे णिग्गथे साहम्मिय सभोइय[5] विसभोइय[6] करेमाणे णातिक्कमति, त जहा—१ सकिरियट्ठाण पडिसेवित्ता भवति। २ पडिसेवित्ता णो आलोएइ। ३ आलोइत्ता णो पट्ठवेति। ४ पट्ठवेत्ता णो णिव्विसति।

१ स० पा०—ठाणाइ जाव अब्भणुण्णायाइ।
२,३ स० पा०—ठाणाइ जाव भवति।
४ अवाअडते (क)।
५. सभोतित (क, ख, ग)।
६ विसभोतित (क, ख, ग)।

५ जाइ इमाइ थेराण ठितिपकप्पाइ भवति ताइ अतियचिय-अतियचिय पडि-सेवेति, से हृदह पडिसेवामि किं म थेरा करेस्सति ?

पारचित-पदं

४७ पचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गथे साहम्मिय पारचित करेमाणे णातिक्कमति, त जहा—१ कुले[1] वसति कुलस्स भेदाए अब्भुट्ठिता भवति। २ गणे वसति गणस्स भेदाए अब्भुट्ठेत्ता भवति। ३ हिंसप्पेही। ४ छिद्दप्पेही। ५ अभिक्खण-अभिक्खणं पसिणायतणाइ पउजित्ता भवति ॥

वुग्गहट्ठाण-पद

४८ आयरियउवज्झायस्स ण गणसि पच वुग्गहट्ठाणा पण्णत्ता, त जहा—

१ आयरियउवज्झाए ण गणसि आण वा धारण वा णो सम्म पउजित्ता भवति।

२ आयरियउवज्झाए ण गणसि आधारातिणियाए कितिकम्म णो सम्म पउजित्ता भवति।

३ आयरियउवज्झाए ण गणसि जे सुत्तपज्जवजाते धारेति ते[2] काले-काले णो सम्ममणुप्पवाइत्ता भवति।

४ आयरियउवज्झाए ण गणसि गिलाणसेहवेयावच्च णो सम्ममब्भुट्ठित्ता भवनि।

५ आयरियउवज्झाए ण गणसि अणापुच्छियचारी[3] यावि हवइ, णो आपुच्छिय-चारी ॥

अवुग्गहट्ठाण-पद

४९. आयरियउवज्झायस्स ण गणसि पचावुग्गहट्ठाणा पण्णत्ता, त जहा—

१ आयरियउवज्झाए ण गणसि आण वा धारण वा सम्म पउजित्ता भवति।

२ "°आयरियउवज्झाए ण गणसि° आधारातिणिताए सम्म किइकम्म पउजित्ता भवति।

३ आयरियउवज्झाए ण गणसि जे सुत्तपज्जवजाते धारेति ते काले-काले सम्म अणुपवाइत्ता भवति।

४ आयरियउवज्झाए गणसि गिलाणसेहवेयावच्च सम्म अब्भुट्ठित्ता भवति।

५ आयरियउवज्झाए गणसि आपुच्छियचारी यावि भवति, णो अणापुच्छिय-चारी ॥

---

१ सकुले (क, ग)।

२ ताइ (ख)।

३ आणाउच्छितचारी (क, ग)।

४ स० पा०—एवमाधारातिणिताते।

णिसिज्जा-पदं

५० पंच णिसिज्जाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उक्कुडुया[1], गोदोहिया, समपायपुता, पलियंका[2], अद्धपलियंका[3] ॥

अज्जवट्ठाण-पदं

५१ पंच अज्जवट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—साधुअज्जवं, साधुमद्दवं, साधुलाघवं, साधुखंति, साधुमुत्ती ॥

जोइसिय-पदं

५२ पंचविहा जोइसिया पण्णत्ता, तं जहा—चंदा, सूरा, गहा, णक्खत्ता, ताराओ ॥

देव-पदं

५३ पंचविहा देवा पण्णत्ता, तं जहा—भवियदव्वदेवा[4], णरदेवा, धम्मदेवा, देवातिदेवा, भावदेवा ॥

परिचारणा-पदं

५४ पंचविहा परियारणा[5] पण्णत्ता, तं जहा—कायपरियारणा[6], फासपरियारणा, रूवपरियारणा, सद्दपरियारणा, मणपरियारणा ॥

अग्गमहिसी-पदं

५५ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—काली, राती, रयणी[7], विज्जू, मेहा ॥

५६ बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स[8] वइरोयणरण्णो पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुंभा, णिसुंभा, रंभा, णिरंभा, मदणा[9] ॥

अणिय-अणियाहिवइ-पदं

५७ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो पंच संगामिया अणिया, पंच संगामिया अणियाधिवती पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए, पीढाणिए, कुंजराणिए, महिसाणिए, रहाणिए ।

---

१ उक्कडती (क), उक्कडुती (ग) ।
२ पुलितका (क, ग), पलितका (ख) ।
३ अद्धपलितका (क, ख, ग) ।
४ भवित° (क, ख, ग) ।
५ परितारणा (क, ख, ग) ।
६ कात° (क, ख, ग) ।
७ रतणी (क, ख, ग) ।
८ वतिरोत° (क, ख, ग) ।
९ मतणा (क, ख, ग) ।

दुमे पायत्ताणियाधिवती, सोदामे आसराया पीढाणियाधिवती, कुथू[1] हत्थिराया कुजराणियाधिवती, लोहितक्खे महिसाणियाधिवती, किण्णरे रधाणियाधिवती ॥

५८ वलिस्स ण वइरोणिदस्स वइरोयणरण्णो पच सगामियाणिया, पच सगामियाणियाधिवती पण्णत्ता, त जहा—पायत्ताणिए[2], °पीढाणिए, कुजराणिए, महिसाणिए°, रधाणिए।
महद्दुमे पायत्ताणियाधिवती, महासोदामे[3] आसराया[4] पीढाणियाधिवती, मालकारे हत्थिराया कुजराणियाधिपती, महालोहिअक्खे महिसाणियाधिपती, किंपुरिसे रधाणियाधिपती ॥

५६ धरणस्स ण णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो पच संगामिया अणिया, पच सगामियाणियाधिपती पण्णत्ता, त जहा—पायत्ताणिए[5] जाव[6] रहाणिए।
भद्दसेणे पायत्ताणियाधिपती, जसोधरे आसराया पीढाणियाधिपती, सुदसणे हत्थिराया कुजराणियाधिपती, णीलकठे महिसाणियाधिपती, आणदे रहाणियाहिवई ॥

६० भूयाणदस्स ण णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो पच सगामियाणिया, पच सगामियाणियाहिवई पण्णत्ता, त जहा—पायत्ताणिए[7] जाव[8] रहाणिए।
दक्खे पायत्ताणियाहिवई, सुग्गीवे आसराया पीढाणियाहिवई, सुविक्कमे हत्थिराया कुजराणियाहिवई, सेयकठे महिसाणियाहिवई, णदुत्तरे रहाणियाहिवई ॥

६१ वेणुदेवस्स ण सुवण्णिदस्स सुवण्णकुमाररण्णो पच सगामियाणिया, पच्च सगामियाणियाहिपती पण्णत्ता, त जहा—पायत्ताणिए[9]। एव जधा धरणस्स[10] तधा वेणुदेवस्सवि। वेणुदालियस्स जहा भूताणदस्स[11] ॥

६२ जधा धरणस्स[12] तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाण जाव[13] घोसस्स ॥

६३ जधा भूताणदस्स[14] तधा सव्वेसिं उत्तरिल्लाण जाव[15] महाघोसस्स ॥

---

१ वेकुथू (क, ग)।
२ स० पा०—पायत्ताणिते जाव रधाणिते।
३ °सोतासे (क, ग)।
४ आसराता (क, ख, ग)।
५ पत्ताणीएते (क)।
६ ठा० ५।५७।
७ पत्ताणीएते (क)।
८ ठा० ५।५७।
९ पत्ताणीग्ते (क)।
१० ठा० ५।५९।
११ ठा० ५।६०।
१२ ठा० ५।५९।
१३ ठा० २।३५६-३६१।
१४ ठा० ५।६०।
१५ ठा० २।३५६-३६१।

६४ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो पच सगामिया अणिया, पंच सगामियाणियाधिवती पण्णत्ता, त जहा—पायत्ताणिए[1], •पीढाणिए, कुजराणिए,° उसभाणिए, रधाणिए ।
हरिणेगमेसी पायत्ताणियाधिवती, वाऊ आसराया पीढाणियाधिवती, एरावणे हत्थिराया कुजराणियाधिपती, दामड्ढी उसभाणियाधिपती, माढरे रधाणियाधिपती ।।

६५ ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो पच सगामिया अणिया जाव[2] पायत्ताणिए[3], पीढाणिए, कुजराणिए, उसभाणिए, रधाणिए ।
लहुपरक्कमे पायत्ताणियाधिवती, महावाऊ आसराया पीढाणियाहिवती, पुप्फदते हत्थिराया कुजराणियाहिवती, महादामड्ढी उसभाणियाहिवती, महामाढरे रधाणियाहिवती ।।

६६ जधा सक्कस्स[4] तहा सव्वेसि दाहिणिल्लाण जाव[5] आरणस्स ।।

६७ जधा ईसाणस्स[6] तहा सव्वेसि उत्तरिल्लाण जाव[7] अच्चुतस्स ।।

देवठिति-पद

६८ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो अब्भतरपरिसाए देवाण पच पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता ।।

६९ ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो अब्भतरपरिसाए देवीण पच पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता ।।

पडिहा-पद

७० पचविहा पडिहा[8] पण्णत्ता, त जहा—गतिपडिहा, ठितिपडिहा, बधणपडिहा, भोगपडिहा, बल-वीरिय-पुरिसयार-परक्कमपडिहा ।।

आजीव-पद

७१ पचविधे आजीवे पण्णत्ते, त जहा—जातिआजीवे, कुलाजीवे, कम्माजीवे, सिप्पाजीवे, लिगाजीवे[9] ।।

---

१ पत्ताणीएते (क), स० पा०—पायत्ताणिते जाव उसभाणिते ।
२ ठा० ५।५७ ।
३ पत्ताणीएते (क) ।
४ ठा० ५।६४ ।
५ ठा० २।३८१-३८४ ।
६ ठा० ५।६५ ।
७ ठा० २।३८१-३८४ ।
८ 'पडिह' त्ति प्राकृतत्वात् 'उप्पा' इत्यादिवत्-प्रतिघात (वृ) ।
९ गणाजीवे (वृपा) ।

राय-चिंध-पदं

७२ पंच[1] रायककुधा[2] पण्णत्ता, तं जहा—खग्गं, छत्तं, उप्फेसं[3], पाणहाओ[4], वालवीअणी[5]॥

उदिण्ण-परिस्सहोवसग्ग-पदं

७३ पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे णं उदिण्णे[6] परिस्सहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा खमेज्जा तितिक्खेज्जा अहियासेज्जा, तं जहा—

१ उदिण्णकम्मे[7] खलु अयं पुरिसे उम्मत्तगभूते। तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भछेति वा बंधेति वा रुंभति वा छविच्छेदं करेति वा, पमारं वा णेति, उद्दवेइ[8] वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणमच्छिंदति वा विच्छिंदति वा भिंदति वा अवहरति वा।

२ जक्खाइट्ठे[9] खलु अयं पुरिसे। तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा [10]•अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भछेति वा बंधेति वा रुंभति वा छविच्छेदं करेति वा, पमारं वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणमच्छिंदति वा विच्छिंदति वा भिंदति वा° अवहरति वा।

३ ममं च णं तब्भववेयणिज्जे कम्मे उदिण्णे[11] भवति। तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा [12]•अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भछेति वा बंधेति वा रुंभति वा छविच्छेदं करेति वा, पमारं वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणमच्छिंदति वा विच्छिंदति वा भिंदति वा° अवहरति वा।

४ ममं च णं सम्ममसहमाणस्स अखममाणस्स अतितिक्खमाणस्स अणधियासमाणस्स[13] किं मण्णे कज्जति? एगंतसो मे पावे कम्मे कज्जति।

---

१ अनन्तरं साधूनां रजोहरणादिकं लिङ्गमुक्तम्, अधुना तच्चिह्नादिरूपं राज्ञां तदेवाह—'पंच रायककुभा' इत्यादि (वृ० प० २८९) अनेन वृत्त्युल्लेखेन ज्ञायते प्रस्तुतसूत्रात् पूर्वं वृत्तिकारस्य सम्मुखीनेष्वादर्शेषु निर्दिष्टं सूत्रमासीत् साम्प्रतिकेष्वादर्शेषु तन्नोपलभ्यते। वस्त्र-रजोहरणसूत्रे अतोग्रे (१९०-१९१) लभ्येते।

२ रात° (क, ख, ग)।

३ उप्फोसं (क, ग)।

४ उपाणहाओ (ख)।

५ वालवीयणि (क, ग), वालवीयणे (ख)।

६ अदिन्ने (क)।

७ ओयन्नकम्मे (क)।

८ उवद्दवेइ (वृ)।

९ जक्खातिट्ठे (क, ख, ग)।

१० सं० पा०—तहेव जाव अवहरति।

११ उतिन्ने (क, ग)।

१२ सं० पा०—तहेव जाव अवहरति।

१३ अणधितास° (क, ख, ग)।

५ मम च ण सम्म सहमाणस्स[1] •खममाणस्स तितिक्खमाणस्स° अहिया-सेमाणस्स किं मण्णे कज्जति ? एगतसो मे णिज्जरा कज्जति ।
इच्चेतेहिं पचहिं ठाणेहिं छउमत्थे उदिण्णे परिसहोवसग्गे सम्म सहेज्जा[2] •खमेज्जा तितिक्खेज्जा° अहियासेज्जा ।।

७४ पचहिं ठाणेहिं केवली उदिण्णे परिसहोवसग्गे सम्म सहेज्जा[3] •खमेज्जा तितिक्खेज्जा° अहियासेज्जा, त जहा—
१ खित्तचित्ते खलु अय[4] पुरिसे । तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा [5]•अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भछेति वा वधेति वा रुभति वा छविच्छेद करेति वा, पमार वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थ वा पडिग्गह वा कवल वा पायपुछणमच्छिदति वा विच्छिदति वा भिदति वा° अवहरति वा ।
२ दित्तचित्ते खलु अय पुरिसे । तेण मे एस पुरिसे[6] •अक्कोसति वा अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भछेति वा वधेति वा रुभति वा छविच्छेद करेति वा, पमार वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थ वा पडिग्गह वा कवल वा पायपुछणमच्छिदति वा विच्छिदति वा भिदति वा° अवहरति वा ।
३ जक्खाइट्ठे खलु अय पुरिसे । तेण मे एस पुरिसे[7] •अक्कोसति वा अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भछेति वा वधेति वा रुभति वा छविच्छेद करेति वा, पमार वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थ वा पडिग्गह वा कवल वा पायपुछणमच्छिदति वा विच्छिदति वा भिदति वा° अवहरति वा ।
४ मम च ण तब्भववेयणिज्जे कम्मे उदिण्णे भवति । तेण मे एस पुरिसे[8] •अक्कोसति वा अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भछेति वा वधेति वा रुभति वा छविच्छेद करेति वा, पमार वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थ वा पडिग्गह वा कवल वा पायपुछणमच्छिदति वा विच्छिदति वा भिदति वा° अवहरति वा ।
५ मम च ण सहमाण खममाण तितिक्खमाण[9] अहियासेमाण पासेत्ता वहवे अण्णे छउमत्था समणा णिग्गथा उदिण्णे-उदिण्णे परीसहोवसग्गे एव सम्म सहिस्सति[10] •खमिस्सति तितिक्खिस्सति° अहियासिस्सति ।
इच्चेतेहिं पचहिं ठाणेहिं केवली उदिण्णे परीसहोवसग्गे सम्म सहेज्जा[11] •खमेज्जा तितिक्खेज्जा° अहियासेज्जा ।।

---

१ स० पा०—सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स ।
२,३ स० पा०—सहेज्जा जाव अहियासेज्जा ।
४ अत (क, ख, ग) ।
५ स० पा०—तहेव जाव अवहरति ।
६,७,८ स० पा०—पुरिसे जाव अवहरति ।
९ तितिक्खेमाण (क, ग) ।
१० स० पा०—सहिस्सति जाव अहियासिस्सति ।
११ स० पा०—सहेज्जा जाव अहियासेज्जा ।

हेउ-पदं

७५ पच[1] हेऊ पण्णत्ता, त जहा—हेउ ण जाणति, हेउ ण पासति, हेउ ण वुज्झति, हेउ णाभिगच्छति, हेउ अण्णाणमरण मरति ॥

७६ पच हेऊ पण्णत्ता, त जहा—हेउणा ण जाणति[2], °हेउणा ण पासति, हेउणा ण वुज्झति, हेउणा णाभिगच्छति°, हेउणा अण्णाणमरण मरति ॥

७७. पच हेऊ पण्णत्ता, त जहा—हेउ जाणइ[3], °हेउ पासइ, हेउ वुज्झइ, हेउ अभिगच्छइ°, हेउ छउमत्थमरण मरति ॥

७८ पच हेऊ पण्णत्ता, त जहा—हेउणा जाणइ[4]°, हेउणा पासइ, हेउणा वुज्झइ, हेउणा अभिगच्छइ°, हेउणा छउमत्थमरण मरइ ॥

अहेउ-पदं

७९ पच अहेऊ पण्णत्ता, त जहा—अहेउ ण जाणति[5], °अहेउ ण पासति, अहेउ ण वुज्झति, अहेउ णाभिगच्छति°, अहेउ छउमत्थमरण मरति ॥

८० पच अहेऊ पण्णत्ता त जहा—अहेउणा ण जाणति[6], °अहेउणा ण पासति, अहेउणा ण वुज्झति, अहेउणा णाभिगच्छति°, अहेउणा छउमत्थमरण मरति ॥

८१ पच अहेऊ पण्णत्ता, त जहा—अहेउ जाणति[7], °अहेउ पासति, अहेउ वुज्झति, अहेउ अभिगच्छति°, अहेउ केवलिमरण मरति ॥

८२ पच अहेऊ पण्णत्ता, त जहा—अहेउणा जाणति[8], °अहेउणा पासति, अहेउणा वुज्झति, अहेउणा अभिगच्छति,° अहेउणा केवलिमरण मरति ॥

अणुत्तर-पद

८३ केवलिस्स ण पच अणुत्तरा पण्णत्ता, त जहा—अणुत्तरे णाणे, अणुत्तरे दसणे अणुत्तरे चरित्ते, अणुत्तरे तवे, अणुत्तरे वीरिए ॥

पंच कल्लाण-पद

८४ पउमप्पहे ण अरहा पचचित्ते[9] हुत्था, त जहा—१ चित्ताहिं[10] चुते चइत्ता गब्भ वक्कते । २ चित्ताहिं जाते । ३ चित्ताहिं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारित्त

---

१ भगवती पचमशतकस्य सप्तमोद्देशे एतानि अष्टसूत्राणि क्रमभेदेन तथा किञ्चित् पाठभेदेन लभ्यन्ते ।

२ स० पा०—जाणति जाव हेउणा ।

३ स० पा०—जाणइ जाव हेउ ।

४ स० पा०—जाणइ जाव हेउणा ।

५ स० पा०—जाणति जाव अहेउ ।

६ स० पा०—जाणति जाव अहेउणा ।

७ स० पा०—जाणति जाव अहेउ ।

८ स० पा०—जाणति जाव अहेउणा ।

९ °चित्ता (क, ग) ।

१० चित्राभिरिति रूढ्या वहुवचनम् (वृ) ।

पव्वइए । ४ चित्ताहिं अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे । ५ चित्ताहिं परिणिव्वुते ॥

८५ पुप्फदंते णं अरहा पंचमूले हुत्था, तं जहा—मूलेणं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[1] ॥

८६. [2]°सीयले णं अरहा पंचपुव्वासाढे हुत्था, तं जहा—पुव्वासाढाहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[3] ॥

८७ विमले णं अरहा पंचउत्तराभद्दवए हुत्था, तं जहा—उत्तराभद्दवयाहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[4] ॥

८८ अणंते णं अरहा पंचरेवतिए हुत्था, तं जहा—रेवतिहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[5] ॥

८९ धम्मे णं अरहा पंचपूसे हुत्था, तं जहा—पूसेणं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[6] ॥

९० संती णं अरहा पंचभरणीए हुत्था, तं जहा—भरणीहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[7] ॥

९१ कुंथू णं अरहा पंचकत्तिए हुत्था, तं जहा—कत्तियाहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[8] ॥

९२ अरे णं अरहा पंचरेवतिए हुत्था, तं जहा—रेवतिहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[9] ॥

९३ मुणिसुव्वए णं अरहा पंचसवणे हुत्था, तं जहा—सवणेणं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[10] ॥

९४ णमी णं अरहा पंचआसिणीए[11] हुत्था, तं जहा—आसिणीहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[12] ॥

९५ णेमी णं अरहा पंचचित्ते हुत्था, तं जहा—चित्ताहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[13] ॥

९६. पासे णं अरहा पंचविसाहे हुत्था, तं जहा—विसाहाहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते[14]° ॥

९७ समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे होत्था, तं जहा—१ हत्थुत्तराहिं चुते चइत्ता

---

१ पू०— ठा० ५।८४ ।

२ सं० पा०—एवं चेव एवमेतेणं अभिलावेणं इमातो गाहातो अणुगंतव्वातो—

पउमप्पभस्स चित्ता,
मूले पुण होइ पुप्फदंतस्स ।
पुव्वाइं आसाढा,
सीयलस्सुत्तर विमलस्स भद्दवता ॥१॥
रेवतित अणंतजिणो,
पूसो धम्मस्स संतिणो भरणी ।
कुंथुस्स कत्तियाओ,
अरस्स तह रेवतीतो य ॥२॥
मुणिसुव्वयस्स सवणो,
आसिणि णमिणो य णेमिणो चित्ता ।
पासस्स विसाहाओ,
पंच य हत्थुत्तरे वीरो ॥३॥

३ पू०—ठा० ५।८४ ।

४-१० पू०—ठा० ५।८४ ।

११ °असिणिए (क, ग) ।

१२-१४ पू०—ठा० ५।८४ ।

गब्भ वक्कते। २ हत्थुत्तराहि गब्भाओ गब्भ साहरिते। ३ हत्थुत्तराहि जाते। ४. हत्थुत्तराहि मुडे भवित्ता[1] •अगाराओ अणगारित° पव्वइए। ५ हत्थुत्तराहि अणते अणुत्तरे[2] •णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे° केवलवरणाणदसणे समुप्पण्णे ॥

बीओ उद्देसो

महाणदी-उत्तरण-पद

९८ णो कप्पइ णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा इमाओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ[3] वियजियाओ[4] पच महण्णवाओ महाणदीओ अतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए[5] वा सतरित्तए वा, त जहा—गगा, जउणा, सरऊ, एरावती, मही। पचहि ठाणेहि कप्पति, त जहा—१ भयसि[6] वा, २ दुब्भिक्खसि वा, ३ पव्वहेज्ज वा ण कोई, ४ दओघसि[7] वा एज्जमाणसि महता वा, ५ अणारिएसु ॥

पढमपाउस-पद

९९ णो कप्पइ णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा पढमपाउससि गामाणुगाम दूइज्जित्तए[8]। पचहि ठाणेहि कप्पइ, त जहा—१ भयसि वा, २ दुब्भिक्खसि वा[9], ३ •पव्वहेज्ज वा ण कोई, ४ दओघसि वा एज्जमाणसि° महता वा, ५ अणारिएहि ॥

वासावास-पदं

१०० वासावास पज्जोसविताण णो कप्पइ णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा गामाणुगाम दूइज्जित्तए।
पचहि ठाणेहि कप्पइ, त जहा—१ णाणट्ठयाए, २ दसणट्ठयाए, ३ चरित्तट्ठयाए, ४ आयरिय-उवज्झाया वा से वीसुभेज्जा, ५ आयरिय-उवज्झायाण वा वहिता वेआवच्चकरणयाए ॥

अणुग्घातिय-पदं

१०१ पच अणुग्घातिया[10] पण्णत्ता, त जहा—हत्थकम्म करेमाणे, मेहुण पडिसेवेमाणे, रातीभोयण भुजेमाणे, सागारियपिंड भुजेमाणे, रायपिंड भुजेमाणे ॥

---

१. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वइए।
२ स० पा०—अणुत्तरे जाव केवलवर°।
३ × (क, ग)।
४ वितजितातो (क, ख, ग)।
५ उत्तरित्तें (क, ग)।
६ भतसि (क)।
७ उदओघसि (ख)।
८ दूतिज्जते (क, ग)।
९ स० पा०—दुब्भिक्खसि वा जाव महता।
१० °ग्घातिमा (३।४७१)।

रायंतेउर-पवेस-पद

१०२ पचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गथे रायंतेउरमणुपविसमाणे णाइक्कमति, त जहा—
१ णगरे सिया सव्वतो समता गुत्ते गुत्तदुवारे, वहवे समणमाहणा णो सचाएति भत्ताए वा पाणाए वा णिक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, तेसि विण्णवणट्ठयाए रायंतेउरमणुपविसेज्जा ।
२ पाडिहारिय वा पीढ-फलग-सेज्जा-सथारग पच्चप्पिणमाणे रायंतेउरमणुपविसेज्जा ।
३ हयस्स[1] वा गयस्स वा दुट्ठस्स आगच्छमाणस्स भीते रायंतेउरमणुपविसेज्जा ।
४ परो व ण सहसा वा वलसा वा वाहाए गहाय रायंतेउरमणुपवेसेज्जा ।
५ वहिता व ण आरामगय वा उज्जाणगय वा रायंतेउरजणो सव्वतो समता सपरिक्खिवित्ता ण सण्णिवेसिज्जा[2] ।
इच्चेतेहिं पचहि ठाणेहिं समणे णिग्गथे[3] •रायंतेउरमणुपविसमाणे° णातिक्कमइ ॥

गब्भधरण-पदं

१०३ पचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धि असवसमाणीवि गब्भ धरेज्जा, त जहा—
१ इत्थी दुव्वियडा दुण्णिसण्णा सुक्कपोग्गले अधिट्ठिज्जा । २ सुक्कपोग्गलसंसिट्ठे व से वत्थे अतो जोणीए अणुपवेसेज्जा । ३ सइ वा से सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा । ४ परो व से सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा । ५ सीओदगवियडेण वा से आयममाणीए सुक्कपोग्गला अणुपवेसेज्जा—इच्चेतेहिं पचहिं ठाणेहिं[4] •इत्थी पुरिसेण सद्धि असवसमाणीवि गब्भ° धरेज्जा ॥

१०४ पचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धि सवसमाणीवि गब्भ णो धरेज्जा, त जहा—
१ अप्पत्तजोव्वणा । २ अतिकतजोव्वणा । ३. जातिवझा । ४ गेलण्णपुट्ठा । ५ दोमणसिया—इच्चेतेहिं पचहिं ठाणेहिं[5] •इत्थी पुरिसेण सद्धि सवसमाणीवि गब्भ° णो धरेज्जा ॥

१०५ पचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धि सवसमाणीवि णो गब्भ धरेज्जा, त जहा—
१. णिच्चोउया, २ अणोउया । ३ वावण्णसोया । ४ वाविद्धसोया । ५ अणगपडिसेवणी—इच्चेतेहिं[6] •पचहि ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धि सवसमाणीवि गब्भ° णो धरेज्जा ॥

---

१. हतस्स (क, ख, ग) ।
२. निवेसिज्जा (ख, ग) ।
३. स० पा०—णिग्गथे जाव णातिक्कमइ ।
४ स० पा०—ठाणेहिं जाव धरेज्जा ।
५ स० पा०—ठाणेहिं जाव णो धरेज्जा ।
६ स० पा०—इच्चेतेहिं जाव णो धरेज्जा ।

१०६ पचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं सवसमाणीवि गब्भ णो धरेज्जा, त जहा—
१ उउमि[1] णो णिगामपडिसेविणी यावि[2] भवति। २ समागता वा से सुक्कपोग्गला पडिविद्धसति। ३ उदिण्णे वा से पित्तसोणिते। ४ पुरा वा देवकम्मणा। ५ पुत्तफले वा णो णिव्विट्ठे[3] भवति—इच्चेतेहिं[4] •पचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं सवसमाणीवि गब्भ° णो धरेज्जा॥

णिग्गथ-णिग्गथी-एगओवास-पद

१०७ पचहिं ठाणेहिं णिग्गथा णिग्गथीओ य एगतओ ठाण वा सेज्ज वा णिसीहिय वा चेतेमाणा णातिक्कमति, त जहा—

१ अत्थेगइया णिग्गथा य णिग्गथीओ य एग मह अगामिय छिण्णावाय दीहमद्धमडविमणुपविट्ठा, तत्थेगयतो ठाण वा सेज्ज वा णिसीहिय वा चेतेमाणा णातिक्कमति।

२ अत्थेगइया णिग्गथा य णिग्गथीओ य गामसि वा णगरसि वा[5] •खेडसि वा कव्वडसि वा मडवसि वा पट्टणसि वा दोणमुहसि वा आगरसि वा णिगमसि वा आसमसि वा सण्णिवेससि वा° रायहाणिसि वा वास उवागता, एगतिया जत्थ उवस्सय लभति, एगतिया णो लभति, तत्थेगतो[6] ठाण वा[7] •सेज्ज वा णिसीहिय वा चेतेमाणा° णातिक्कमति।

३ अत्थेगइया णिग्गथा य णिग्गथीओ य णागकुमारावाससि वा 'सुवण्णकुमारावाससि वा'[8] वास उवागता, तत्थेगओ[9] •ठाण वा सेज्ज वा णिसीहिय वा चेतेमाणा° णातिक्कमति।

४ आमोसगा दीसति, ते इच्छति णिग्गथीओ चीवरपडियाए पडिगाहित्तए, तत्थेगओ ठाण वा[10] •सेज्ज वा णिसीहिय वा चेतेमाणा° णातिक्कमति।

५ जुवाणा दीसति, ते इच्छति णिग्गथीओ मेहुणपडियाए पडिगाहित्तए, तत्थेगओ ठाण वा[11] •सेज्ज वा णिसीहिय वा चेतेमाणा° णातिक्कमति।

इच्चेतेहिं पचहिं ठाणेहिं[12] •णिग्गथा णिग्गथीओ य एगतओ ठाण वा सेज्जं वा निसीहिय वा चेतेमाणा° णातिक्कमति॥

---

१ अउमि (क)।
२ तावि (क, ख, ग)।
३ निविट्ठे (ख)।
४ स० पा०—इच्चेतेहिं जाव णो धरेज्जा।
५. स० पा०—णगरसि वा जाव रायहाणिसि।
६ तत्थेगतिता (क), तत्थगतिता (ग)।
७ स० पा०—ठाण वा जाव णातिक्कमति।
८ × (ख, ग)।
९ °गतिओ (क, ग), °गयाओ (क्व), स० पा०—तत्थेगओ जाव णातिक्कमति।
१०,११ स०पा०—ठाण वा जाव णातिक्कमति।
१२ स० पा०—ठाणेहिं जाव णातिक्कमति।

१०८ पंचहि ठाणेहि समणे णिग्गथे अचेलए सचेलियाहि णिग्गथीहि सद्धि सवसमाणे णातिक्कमति, त जहा—
१ खित्तचित्ते[1] समणे णिग्गथे णिग्गथेहिमविज्जमाणेहि अचेलए सचेलियाहि णिग्गथीहि सद्धि सवसमाणे णातिक्कमति ।
२ °दित्तचित्ते[3] समणे णिग्गथे णिग्गथेहिमविज्जमाणेहि अचेलए सचेलियाहि णिग्गथीहि सद्धि मवसमाणे णातिक्कमति ।
३. जक्खाइट्ठे समण णिग्गथे णिग्गथेहिमविज्जमाणेहि अचेलए सचेलियाहि णिग्गथीहि सद्धि सवसमाणे णातिक्कमति ।
४ उम्मायपत्ते समणे णिग्गथे णिग्गथेहिमविज्जमाणेहि अचेलए सचेलियाहि णिग्गथीहि सद्धि सवसमाणे णातिक्कमति °।
५ णिग्गथीपव्वाइयए समणे णिग्गथेहि अविज्जमाणेहि अचेलए सचेलियाहि णिग्गथीहि सद्धि सवसमाणे णातिक्कमति ॥

आसव-संवर-पद

१०९ पच आसवदारा पण्णत्ता, त जहा—मिच्छत्त, अविरती, पमादो, कसाया[4], जोगा ॥

११० पच सवरदारा पण्णत्ता, त जहा—समत्त, विरती, अपमादो, अकसाइत्त अजोगित्त ॥

दड-पद

१११ पच दडा पण्णत्ता, त जहा—अट्ठादडे, अणट्ठादडे, हिंसादड, अकस्मादडे[5], दिट्ठीविप्परियासियादडे ॥

किरिया-पदं

११२ पच किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—आरभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया[6], अपच्चक्खाणकिरिया, मिच्छादसणवत्तिया ॥

११३ मिच्छादिट्ठियाण णेरइयाण पच किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा[7]—°आरभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया°, मिच्छादसणवत्तिया ॥

---

१ खेत्तइत्ते (क, ख, ग) ।
२ स० पा०—एवमेतेण गमएण दित्तचित्ते जक्खातिट्ठे उम्मायपत्ते ।
३ दित्ततित्ते (क, ख, ग) ।
४ कसाता (क, ख, ग) ।
५ अकम्हा° (ख) ।
६ मातावत्तिता (क, ख, ग) ।
७ स० पा०—तजहा जाव मिच्छादसणवत्तिया ।

११४. एव—सव्वेसि णिरतर जाव[1] मिच्छद्दिट्ठियाण वेमाणियाण, णवर—विगलिदिया मिच्छद्दिट्ठी ण भण्णति । सेस तहेव ॥

११५ पच किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—काइया[2], आहिगरणिया, पाओसिया[3], पारितावणिया, पाणातिवातकिरिया ॥

११६ णेरइयाण पच एव चेव । एव—णिरतर जाव[4] वेमाणियाण ॥

११७ पच किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—आरभिया[5], °पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया°, मिच्छादसणवत्तिया ॥

११८ णेरइयाण पच किरिया णिरतर जाव[6] वेमाणियाण ॥

११९ पच किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—दिट्ठिया, पुट्ठिया, पाडुच्चिया[7], सामतोवणिवाइया, साहत्थिया[8] ॥

१२० एव णेरइयाण जाव[9] वेमाणियाण ॥

१२१ पच किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—णेसत्थिया, आणवणिया, वेयारणिया, अणाभोगवत्तिया, अणवकखवत्तिया । एव जाव[10] वेमाणियाण ॥

१२२ पच किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—पेज्जवत्तिया, दोसवत्तिया, पओगकिरिया, समुदाणकिरिया, ईरियावहिया । एव—मणुस्साणवि । सेसाण णत्थि ॥

परिण्णा-पद

१२३ पचविहा परिण्णा पण्णत्ता, त जहा—उवहिपरिण्णा, उवस्सयपरिण्णा, कसायपरिण्णा, जोगपरिण्णा, भत्तपाणपरिण्णा ॥

ववहार-पद

१२४ पचविहे[11] ववहारे पण्णत्ते, त जहा—आगमे, सुते, आणा, धारणा, जीते ।
जहा से तत्थ आगमे सिया, आगमेण ववहार पट्ठवेज्जा ।
णो से तत्थ आगमे सिया जहा से तत्थ सुते सिया, सुतेण ववहार पट्ठवेज्जा ।
णो से तत्थ सुते सिया [12]°जहा से तत्थ आणा सिया, आणाए ववहार पट्ठवेज्जा ।
णो से तत्थ आणा सिया जहा से तत्थ धारणा सिया, धारणाए ववहार पट्ठवेज्जा ।

---

१ ठा० १।१४२-१५१, १६०-१६३ ।
२ कातिता (क, ख, ग) ।
३ पातोसिता (क, ख, ग) ।
४ ठा० १।१४२-१६३ ।
५ स० पा०—आरभिता जाव मिच्छादसणवत्तिता ।
६ ठा० १।१४२-१६३ ।
७ पाडोच्चिता (क, ख, ग) ।
८ सोहत्थिता (ग) ।
९,१० ठा० १।१४२-१६३ ।
११ तुलना—भगवती ८।३०१, व्यवहार १० ।
१२ स० पा०—एव जाव जहा से ।

णो से तत्थ धारणा सिया° जहा से तत्थ जीते सिया, जीतेण ववहार पट्ठवेज्जा।
इच्चेतेहिं पचहि ववहार पट्ठवेज्जा—आगमेण[1] °सुतेण आणाए धारणाए° जीतेण।
जधा-जधा से तत्थ आगमे[2] °सुते आणा धारणा° जीते तधा-तधा ववहार पट्ठवेज्जा।
से किमाहु भते! आगमबलिया समणा णिग्गथा?
इच्चेत पचविध ववहार जया[3]-जया जहिं-जहिं तया[4]-तया तहिं-तहिं अणिस्सितोवस्सित[5] सम्म ववहरमाणे समणे णिग्गथे आणाए आराधए भवति॥

सुत्त-जागर-पद

१२५ सजयमणुस्साण सुत्ताण पच जागरा पण्णत्ता, त जहा—सद्दा[6], °रूवा, गधा, रसा°, फासा॥

१२६ सजतमणुस्साण जागराण पच सुत्ता पण्णत्ता, त जहा- सद्दा[7], °रूवा, गधा, रसा°, फासा॥

१२७ असजयमणुस्साण सुत्ताण वा जागराण वा पच जागरा पण्णत्ता, त जहा—सद्दा[8], °रूवा, गधा, रसा°, फासा॥

रयादाण-वमण-पद

१२८ पचहिं ठाणेहिं जीवा रय आदिज्जति, त जहा—पाणातिवातेण[9], °मुसावाएण, अदिण्णादाणेण, मेहुणेण°, परिग्गहेण॥

१२९ पचहिं ठाणेहिं जीवा रय वमति, त जहा—पाणातिवातवेरमणेण[10], मुसावायवेरमणेण, अदिण्णादाणवेरमणेण, मेहुणवेरमणेण°, परिग्गहवेरमणेण॥

दत्ति-पद

१३० पचमासिय ण भिक्खुपडिम पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पति पंच दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेत्तए, पच पाणगस्स॥

उवघात-विसोहि-पद

१३१ पचविधे उवघाते पण्णत्ते, त जहा—उग्गमोवघाते, उप्पायणोवघाते, एसणोवघाते, परिकम्मोवघाते, परिहरणोवघाते॥

---

१ स० पा०—आगमेण जाव जीतेण।
२ स० पा०—आगमे जाव जीते।
३ जता (क, ख, ग)।
४ तता (क, ख, ग)।
५ अणिस्सातो° (क, ग)।
६,७,८ स० पा०—सद्दा जाव फासा।
९ स० पा०—पाणातिवातेण जाव परिग्गहेणं।
१० स० पा०—पाणातिवातवेरमणेण जाव परिग्गह°।

१३२ पचविहा विसोही पण्णत्ता, त जहा—उग्गमविसोही, उप्पायणविसोही, एसणविसोही, परिकम्मविसोही, परिहरणविसोही ॥

दुल्लभ-सुलभबोहि-पद

१३३ पचहिं ठाणेहिं जीवा दुल्लभबोधियत्ताए कम्म पकरेति, त जहा—अरहताण अवण्ण वदमाणे, अरहतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्ण वदमाणे, आयरिय-उवज्झायाण अवण्ण वदमाणे, चाउवण्णस्स सघस्स अवण्ण वदमाणे, विवक्क[1]-तव-बभचेराण देवाण अवण्ण वदमाणे ॥

१३४ पचहिं ठाणेहिं जीवा सुलभबोधियत्ताए कम्म पकरेति, त जहा—अरहताण वण्ण वदमाणे[2], °अरहतपण्णत्तस्स धम्मस्स वण्ण वदमाणे, आयरियउवज्झायाण वण्ण वदमाणे, चाउवण्णस्स सघस्स वण्ण वदमाणे°, विवक्क[3]-तव-बभचेराण देवाण वण्ण वदमाणे ॥

पडिसलीण-अपडिसलीण-पद

१३५ पच पडिसलीणा पण्णत्ता, त जहा—सोइदियपडिसलीणे[4], °चक्खिदियपडिसलीणे, घाणिंदियपडिसलीणे, जिब्भिदियपडिसलीणे°, फासिदियपडिसलीणे ॥

१३६ पच अपडिसलीणा पण्णत्ता, त जहा—सोतिंदियअपडिसलीणे[5], °चक्खिदियअपडिसलीणे, घाणिंदियअपडिसलीणे, जिब्भिदियअपडिसलीणे°, फासिदियअपडिसलीणे ॥

सवर-असवर-पद

१३७ पचविधे सवरे पण्णत्ते, त जहा—सोतिंदियसवरे[6], °चक्खिदियसवरे, घाणिंदियसवरे, जिब्भिदियसवरे°, फासिदियसवरे ॥

१३८ पचविधे असवरे पण्णत्ते, त जहा—सोतिंदियअसवरे[7], °चक्खिदियअसवरे, घाणिंदियअसवरे, जिब्भिदियअसवरे°, फासिदियअसवरे ॥

सजम-असंजम-पद

१३९ पचविधे सजमे पण्णत्ते, त जहा—सामाइयसजमे[8], छेदोवट्ठावणियसजमे, परिहारविसुद्धियसजमे[9], सुहुमसपरागसजमे, अहक्खायचरित्तसजमे ॥

---

१ विविक्क (ख)।

२ स० पा०—वदमाणे जाव विवक्कतव°।

३ विविक्क (ख)।

४ स० पा०—सोइदियपडिसलीणे जाव फासिदिय°।

५. स० पा०—सोतिदियअपडिसलीणे जाव फासिदिय°।

६ स० पा०—सोतिदियसवरे जाव फासिदिय°।

७ स० पा०—सोतिदियअसवरे जाव फासिदिय°।

८ सामातिते (क, ख, ग)।

९ °विसुद्धित° (क, ख, ग)।

१४० एगिंदिया णं जीवा असमारंभमाणस्स पंचविधे संजमे कज्जति, तं जहा—पुढविकाइयसंजमे[1], •आउकाइयसंजमे, तेउकाइयसंजमे, वाउकाइयसंजमे°, वणस्सतिकाइयसंजमे ।।

१४१ एगिंदिया णं जीवा समारंभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जति, तं जहा—पुढविकाइयअसंजमे[2], •आउकाइयअसंजमे, तेउकाइयअसंजमे, वाउकाइय-असंजमे°, वणस्सतिकाइयअसंजमे ।।

१४२ पंचिंदिया णं जीवा असमारंभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जति, तं जहा—सोतिंदियसंजमे[3], •चक्खिदियसंजमे, घाणिंदियसंजमे, जिब्भिदियसंजमे°, फासिंदियसंजमे ।।

१४३ पंचिंदिया णं जीवा समारंभमाणस्स पंचविधे असंजमे कज्जति, तं जहा—सोतिंदियअसंजमे[4], •चक्खिदियअसंजमे, घाणिंदियअसंजमे, जिब्भिदियअसंजमे°, फासिंदियअसंजमे ।।

१४४ सव्वपाणभूयजीवसत्ता णं असमारंभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जति, तं जहा—एगिंदियसंजमे[5], •बेइंदियसंजमे, तेइंदियसंजमे, चउरिंदियसंजमे°, पंचिंदिय-संजमे ।।

१४५ सव्वपाणभूयजीवसत्ता णं समारंभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जति, तं जहा—एगिंदियअसंजमे[6], •बेइंदियअसंजमे, तेइंदियअसंजमे, चउरिंदियअसंजमे°, पंचिंदियअसंजमे ।।

तणवणस्सइ-पदं

१४६ पंचविहा तणवणस्सतिकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अग्गबीया, मूलबीया, पोर-बीया, खंधबीया, बीयरुहा ।।

आयार-पदं

१४७ पंचविहे आयारे पण्णत्ते, तं जहा—णाणायारे, दंसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे ।।

आयारपकप्प-पदं

१४८ पंचविहे आयारपकप्पे पण्णत्ते, तं जहा—मासिए उग्घातिए, मासिए अणुग्घा-तिए, चउमासिए उग्घातिए, चउमासिए अणुग्घातिए, आरोवणा ।।

---

१ सं० पा०—पुढविकातियसंजमे जाव वण-स्सति° ।

२ सं० पा०—पुढविकातितअसंजमे जाव वण-स्सति° ।

३ सं० पा०—सोतिंदियसंजमे जाव फासिं-दिय° ।

४. सं० पा०—सोतिंदियअसंजमे जाव फासिं-दिय° ।

५ सं० पा०—एगिंदियसंजमे जाव पंचिंदिय° ।

६. सं० पा०—एगिंदियअसंजमे जाव पंचिंदिय° ।

आरोवणा-पदं

१४९ आरोवणा पचविहा पण्णत्ता, त जहा—पट्ठविया, ठविया, कसिणा, अकसिणा[1], हाडहडा ।।

वक्खारपव्वय-पदं

१५० जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण सीयाए महाणदीए उत्तरे ण पच वक्खारपव्वता पण्णत्ता, त जहा - मालवते, चित्तकूडे, 'पम्हकूडे, णलिणकूडे'[2], एगसेले ।।

१५१ जंवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण सीयाए महाणदीए दाहिणे ण पच वक्खारपव्वता पण्णत्ता, त जहा—तिकूडे, वेसमणकूडे, अजणे, मायजणे, सोमणसे ।।

१५२ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे ण सीओयाए महाणदीए दाहिणे ण पच वक्खारपव्वता पण्णत्ता, त जहा—विज्जुप्पभे, अकावती, पम्हावती, आसीविसे, सुहावहे ।।

१५३ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे ण सीओयाए[3] महाणदीए उत्तरे ण पच वक्खारपव्वता पण्णत्ता, त जहा—चदपव्वते, सूरपव्वते, णागपव्वते, देवपव्वते, गवमादणे ।।

महादह-पदं

१५४ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण देवकुराए कुराए पच महद्दहा पण्णत्ता, त जहा—णिसहदहे, देवकुरुदहे, सूरदहे, सुलसदहे, विज्जुप्पभदहे ।।

१५५ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण उत्तरकुराए कुराए पच महादहा पण्णत्ता, त जहा—णीलवतदहे, उत्तरकुरुदहे, चददहे, एरावणदहे, मालवतदहे ।।

वक्खारपव्वय-पदं

१५६ सव्वेवि ण वक्खारपव्वया सीया-सीओयाओ महाणईओ 'मदर वा पव्वत'[4] पच जोयणसताइ उड्ढ उच्चत्तेण, पचगाउसताइ उव्वेहेण ।।

धायइसंड-पुक्खरवर-पद

१५७ धायइसडे दीवे पुरत्थिमद्धे ण मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण सीयाए महाणदीए

---

१ अकसिणा जाव (क, ग) ।

२ वभकूडे पम्हकूडे (क, ग) ।

३ सीतोताते (क, ख, ग) ।

४. मदर वा पव्वततेण (क, ख, ग), समवायाङ्गस्य 'पइण्णग' समवायस्य २३ सूत्रानुसारेण 'मदर वा पव्वय' इति पाठो युज्यते । प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तावपि मदर वा—'मेरु वा पर्वत प्रति' इति व्याख्यातमस्ति । तदनुसारेणापि 'मदर वा पव्वत' इति पाठो युज्यते । तेनैप एव पाठ स्वीकृत ।

उत्तरे ण पच वक्खारपव्वता पण्णत्ता, त जहा—मालवते, एव जहा जबुद्दीवे[1] तहा जाव[2] पुक्खरवरदीवड्ढ पच्चत्थिमद्धे 'वक्खारपव्वया दहा य'[3] उच्चत्त भाणियव्व ॥

समयक्खेत्त-पद

१५८ समयक्खत्ते ण पच भरहाइ, पच एरवताइ, एव जहा चउट्ठाणे वितीयउद्देसे तहा एत्थवि भाणियव्व जाव[4] पच मदरा पच मदरचूलियाओ, णवर—उसुयारा णत्थि ॥

ओगाहणा-पद

१५९ उसभे ण अरहा कोसलिए पच धणुसताइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

१६० भरहे ण राया चाउरतचक्कवट्टी पच धणुसताइ उडढ उच्चत्तेण होत्था ।

१६१ वाहुवली ण अणगारे [5]°पच धणुसताइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था° ।

१६२ वभी ण अज्जा [6]°पच धणुसताइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था° ॥

१६३ [7]°सुदरी ण अज्जा पच धणुसताइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था° ॥

विबोध-पद

१६४ पचहिं ठाणेहिं सुत्ते विवुज्झेज्जा, त जहा—सद्देण, फासेण, भोयणपरिणामेण, णिद्दक्खएण, सुविणदसणेण ॥

णिग्गथी-अवलबण-पद

१६५ पचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गथे णिग्गथिं गिण्हमाणे वा अवलबमाणे वा णातिक्कमति, त जहा—

१ णिग्गथिं च ण अण्णयरे पसुजातिए वा पक्खिजातिए वा ओहातेज्जा, तत्थ णिग्गथे णिग्गथिं गिण्हमाणे वा अवलवमाणे वा णातिक्कमति ।

२. णिग्गथे णिग्गथिं दुग्गसि वा विसमसि वा पक्खलमाणिं वा पवडमाणिं वा गिण्हमाणे वा अवलवमाणे वा णातिक्कमति ।

३ णिग्गथे णिग्गथिं सेयसि[8] वा पकसि वा पणगसि वा उदगसि वा उक्कसमाणिं वा उवुज्जमाणिं[9] वा गिण्हमाणे वा अवलवमाणे वा णातिक्कमति ।

---

१. ठा० ५।१५०-१५६ ।
२ ठा० ३।१०८ ।
३ वक्खार दहा य वक्खार-पव्वयाण (ख), वक्खारदहा त (ग) ।
४ ठा० ४।३३७ ।
५,६ स० पा०—एव चेव ।
७. स० पा०—एव सुदरी वि ।
८ सेतसि (क, ख, ग) ।
९ उवज्झमाणी (क), उवुज्झमाणी (ग) ।

४. णिग्गथे णिग्गथिं णाव आरुभमाणे वा ओरोहमाणे वा णातिक्कमति ।

५. खित्तचित्त[1] दित्तचित्त[2] जक्खाइट्ठ उम्मायपत्त उवसग्गपत्त साहिगरण सपायच्छित्त जाव भत्तपाणपडियाइक्खिय अट्ठजाय वा णिग्गथे णिग्गथिं गेण्हमाणे वा अवलवमाणे वा णातिक्कमति ॥

आयरिय-उवज्झाय-अइसेस-पदं

१६६ आयरिय-उवज्झायस्स ण गणसि पच अतिसेसा पण्णत्ता, त जहा—

१ आयरिय-उवज्झाए अतो उवस्सयस्स[3] पाए 'णिगज्झिय-णिगज्झिय'[4] पप्फोडेमाणे वा पमज्जेमाणे वा णातिक्कमति ।

२ आयरिय-उवज्झाए अतो उवस्सयस्स उच्चारपासवण विगिंचमाणे वा विसोधेमाणे वा णातिक्कमति ।

३ आयरिय-उवज्झाए पभू इच्छा वेयावडिय करेज्जा, इच्छा णो करेज्जा ।

४ आयरिय-उवज्झाए अतो उवस्सयस्स एगरात वा दुरात वा एगगो[5] वसमाणे णातिक्कमति ।

५ आयरिय-उवज्झाए वाहिं उवस्सयस्स एगरात वा दुरात वा [एगओ ?] वसमाणे णातिक्कमति ॥

आयरिय-उवज्झाय-गणावक्कमण-पदं

१६७ पचहिं ठाणेहिं आयरिय-उवज्झायस्स गणावक्कमणे पण्णत्ते, त जहा—

१ आयरिय-उवज्झाए गणसि आण वा धारण वा णो सम्म पउजित्ता भवति ।

२ आयरिय-उवज्झाए गणसि आधारायणियाए कितिकम्म वेणइय णो सम्म पउजित्ता भवति ।

३ आयरिय-उवज्झाए गणसि जे सुयपज्जवजाते धारेति, ते 'काले-काले'[6] णो सम्ममणुपवादेत्ता भवति ।

४ आयरिय-उवज्झाए गणसि सगणियाए[7] वा परगणियाए वा णिग्गथीए वहिल्लेसे भवति ।

५ मित्ते णातिगणे वा से गणाओ अवक्कमेज्जा, तेसिं सगहोवग्गहट्ठयाए गणावक्कमणे पण्णत्ते ॥

---

१ खेत्तइत्त (क, ख, ग) ।
२ दित्तइत्त (क, ख, ग) ।
३ उवस्सगस्स (ख) सर्वत्र ।
४ निगिज्झिय (क्व) ।
५. × (क, ख, ग) ।
६ काले (ख, ग) ।
७. सगणिताते (क, ख, ग) ।

ङ्गिमत-पद

९८ पचविहा इड्ढिमता मणुस्सा पण्णत्ता, त जहा—अरहता, चक्कवट्टी, बलदेवा, वासुदेवा, भावियप्पाणो अणगारा ।।

तइओ उद्देसो

अत्थिकाय-पद

१६९ पच अत्थिकाया पण्णत्ता, त जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए ।।

१७० धम्मत्थिकाए अवण्णे अगधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे ।

से समासओ पचविधे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।

दव्वओ ण धम्मत्थिकाए एग दव्व ।

खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते ।

कालओ ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भवति, ण कयाइ ण भविस्सइत्ति[1]—भुवि च भवति य भविस्सति य, धुवे णिइए सासते अक्खए अव्वए[2] अवट्ठिते णिच्चे ।

भावओ अवण्णे अगधे अरसे अफासे ।

गुणओ गमणगुणे ।।

१७१ अधम्मत्थिकाए अवण्णे [3]अगधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे ।

से समासओ पचविधे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।

दव्वओ ण अधम्मत्थिकाए एग दव्व ।

खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते ।

कालओ ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भवति, ण कयाइ ण भविस्सइत्ति—भुवि च भवति य भविस्सति य, धुवे णिइए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिते णिच्चे ।

---

१ भविस्सइ (ख) ।

२ अव्वते (क, ख, ग) ।

३ स० पा०—एव चेव णवर गुणतो ठाणगुणे ।

भावओ अवण्णे अगधे अरसे अफासे ।
गुणओ ठाणगुणे° ।

१७२ आगासत्थिकाए अवण्णे [1]°अगधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगालोगदव्वे ।
से समासओ पचविधे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ ण आगासत्थिकाए एग दव्व ।
खेत्तओ लोगालोगपमाणमेत्ते ।
कालओ ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भवति, ण कयाइ ण भविस्सइत्ति—भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णिइए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिते णिच्चे ।
भावओ अवण्णे अगधे अरसे अफासे ।
गुणओ अवगाहणागुणे° ॥

१७३ जीवत्थिकाए ण अवण्णे [2]°अगधे अरसे अफासे अरूवी जीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पचविधे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ ण जीवत्थिकाए[3] अणताइ दव्वाइ ।
खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते ।
कालओ ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भवति, ण कयाइ ण भविस्सइत्ति—भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णिइए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिते णिच्चे ।
भावओ अवण्णे अगधे अरसे अफासे ।
गुणओ उवओगगुणे° ॥

१७४ पोग्गलत्थिकाए पचवण्णे पचरसे दुगधे अट्ठफासे रूवी अजीवे सासते अवट्ठिते[4] °लोगदव्वे ।
से समासओ पचविवे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ° ।
दव्वओ ण पोग्गलत्थिकाए अणताइ दव्वाइ ।

---

१ स० पा०—एव चेव णवर खेत्तओ अवगाहणागुणे सेस त चेव ।
२ स० पा०—एव चेव णवर दव्वओण'' उवओगगुणे सेस त चेव ।
३ जीवत्थिगाते (क, ख, ग) ।
४ स० पा०—अवट्ठिते जाव दव्वओ ।

खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते ।
कालओ ण कयाइ णासि[1], °ण कयाइ ण भवति, ण कयाइ ण भविस्सइत्ति—भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णिइए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिते° णिच्चे ।
भावओ वण्णमते गंधमते रसमते फासमते ।
गुणओ गहणगुणे ॥

गइ-पदं

१७५ पंच गतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णिरयगती, तिरियगती, मणुयगती, देवगती, सिद्धिगती ॥

इंदियत्थ-पदं

१७६ पंच इंदियत्था पण्णत्ता, तं जहा—सोतिंदियत्थे[2], °चक्खिंदियत्थे, घाणिंदियत्थे, जिब्भिंदियत्थे°, फासिंदियत्थे ॥

मुंड-पदं

१७७ पंच मुंडा पण्णत्ता, तं जहा—सोतिंदियमुंडे[3], °चक्खिंदियमुंडे घाणिंदियमुंडे, जिब्भिंदियमुंडे,° फासिंदियमुंडे ।
अहवा—पंच मुंडा पण्णत्ता, तं जहा—कोहमुंडे माणमुंडे, मायामुंडे, लोभमुंडे, सिरमुंडे ॥

बायर-पदं

१७८, अहेलोगे णं पंच बायरा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया, आउकाइया, वाउकाइया, वणस्सइकाइया, ओराला तसा पाणा ॥

१७९ उड्ढलोगे णं पंच बायरा पण्णत्ता, तं जहा—[4]°पुढविकाइया, आउकाइया, वाउकाइया, वणस्सइकाइया, ओराला तसा पाणा° ॥

१८०. तिरियलोगे णं पंच बायरा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदिया[5], °बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया° पंचिंदिया ॥

१८१ पंचविहा बायरतेउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—इंगाले, जाले, मुम्मुरे, अच्ची, अलाते ॥

---

१ सं० पा०—णासि जाव णिच्चे ।
२ सं० पा०—सोतिंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे ।
३ सं० पा०—सोतिंदियमुंडे जाव फासिंदिय° ।
४. सं० पा०—एवं चेव ।
५ सं० पा०—एगिंदिया जाव पंचिंदिया ।

१८२ पचविधा बादरवाउकाइया पण्णत्ता, त जहा—पाईणवाते, पडीणवाते, दाहिणवाते, उदीणवाते, विदिसवाते ।।

अचित्त-वाउकाय-पद

१८३ पचविधा अचित्ता वाउकाइया पण्णत्ता, त जहा—अक्कते, धते[1], पीलिए, सरीराणुगते, समुच्छिमे ।।

णियंठ-पदं

१८४ पच णियठा पण्णत्ता, त जहा—पुलाए[2], बउसे, कुसीले, णियठे, सिणाते ।।

१८५ पुलाए पचविहे पण्णत्ते, त जहा—णाणपुलाए, दसणपुलाए, चरित्तपुलाए, लिंगपुलाए, अहासुहुमपुलाए णाम पचमे ।।

१८६ बउसे पचविधे पण्णत्ते, ण जहा—आभोगबउसे, अणाभोगबउसे, सवुडबउसे, असवुडबउसे, अहासुहुमबउसे णाम पचमे ।।

१८७ कुसीले पचविधे पण्णत्ते, त जहा—णाणकुसीले, दसणकुसीले, चरित्तकुसीले, लिंगकुसीले[3], अहासुहुमकुसीले णाम पचमे ।।

१८८ णियठे पचविहे पण्णत्ते, त जहा—पढमसमयणियठे, अपढमसमयणियठे, चरिमसमयणियठे, अचरिमसमयणियठे, अहासुहुमणियठे णाम पचमे ।।

१८९ सिणाते पचविधे पण्णत्ते, त जहा—अच्छवी, असवले, अकम्मसे, ससुद्धणाणदसणधरे अरहा जिणे केवली, अपरिस्साई[4] ।।

उपधि-पदं

१९० कप्पति[5] णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा पच वत्थाइ धारित्तए वा परिहरेत्तए वा, त जहा—जगिए[6], भगिए[7], साणए[8], पोत्तिए[9], तिरीडपट्टए[10] णाम पचमए ।

१९१ कप्पति[11] णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा पच रयहरणाइ[12] धारित्तए वा परिहरेत्तए वा, त जहा—उण्णिए[13], उट्टिए[14], साणए, पच्चापिच्चिए[15], मुजापिच्चिए णाम पचमए ।।

---

१ धम्मने (ख) ।

२ पुलाते (क, ख, ग) ।

३ तवकुसीले (वृपा) ।

४ अपरिस्साती (क, ख, ग), अरहा (वृपा) ।

५ कप्पति (वृ), तृतीयस्थानस्य (३।३४५) वृत्तौ 'कल्पते' इति व्याख्यातमस्ति, अत्र तु 'कल्पन्ते' इति व्याख्यातम् ।

६ जगिते (क, ख, ग) ।

७ भगिते (क, ख, ग) ।

८ साणते (क, ख, ग) ।

९ पोत्तिते (क, ख, ग) ।

१० तिरीडपट्टते (क, ख, ग) ।

११ कप्पति (वृ) ।

१२ रतहरणाइ (क, ख, ग) ।

१३ उण्णीते (क, ख, ग) ।

१४ उट्टिते (क, ख, ग) ।

१५ पच्चापिच्चियए (ग) ।

णिस्साट्ठाण-पदं

१९२ धम्मण्ण चरमाणस्स पच णिस्साट्ठाणा पण्णत्ता, त जहा—छक्काया, गणे, राया[1], गाहावती, सरीर ।।

णिहि-पदं

१९३ पच णिहि पण्णत्ता, त जहा—पुत्तणिही, मित्तणिही, सिप्पणिही, धणणिही, धण्णणिही ।।

सोच-पदं

१९४ पचविहे सोए[2] पण्णत्ते, त जहा—पुढविसोए, आउसोए, तेउसोए, मतसोए, बभसोए ।।

छउमत्थ-केवलि-पद

१९५ पच ठाणाइ छउमत्थे सव्वभावेण ण जाणति ण पासति, त जहा—धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, जीव असरीरपडिबद्ध, परमाणुपोग्गल ।
एयाणि चेव उप्पण्णणाणदसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेण जाणति पासति, त जहा—धम्मत्थिकाय[3], •अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकायं, जीव असरीरपडिबद्ध°, परमाणुपोग्गल ।।

महाणिरय-पद

१९६ अवेलोगे ण पच अणुत्तरा महतिमहालया महाणिरया पण्णत्ता, त जहा—काले, महाकाले, रोरुए, महारोरुए, अप्पतिट्ठाणे ।।

महाविमाण-पदं

१९७ उड्ढलोगे ण पच अणुत्तरा महतिमहालया महाविमाणा पण्णत्ता, त जहा—विजये, वेजयते, जयते, अपराजिते, सव्वट्ठसिद्धे ।।

सत्त-पदं

१९८ पच पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—हिरिसत्ते, हिरिमणसत्ते, चलसत्ते, थिरसत्ते, उदयणसत्ते ।।

भिक्खाग-पदं

१९९ पच मच्छा पण्णत्ता, त जहा—अणुसोतचारी, पडिसोतचारी, अतचारी, मज्झचारी, सव्वचारी ।

---

१ राता (क, ख, ग) ।
२ सोते (क, ख, ग) ।
३ स० पा०—धम्मत्थिकात जाव परमाणुपोग्गल ।

एवामेव पच भिक्खागा पण्णत्ता, त जहा—अणुसोतचारी[1], °पडिसोतचारी, अतचारी, मज्झचारी°, सव्वचारी ॥

वणीमग-पद

२०० पच वणीमगा पण्णत्ता, त जहा—अतिहिवणीमगे[2], किवणवणीमगे, माहण-वणीमगे, साणवणीमगे, समणवणीमगे ॥

अचेल-पदं

२०१ पचहिं ठाणेहिं अचेलए पसत्थे भवति, त जहा—अप्पापडिलेहा[3], लाघविए पसत्थे, रूवे वेसासिए, तवे अणुण्णाते, विउले इदियणिग्गहे ॥

उक्कल-पद

२०२ पच उक्कला पण्णत्ता, त जहा—दडुक्कले, रज्जुक्कले, तेणुक्कले, देसुक्कले, सव्वुक्कले ॥

समिती-पद

२०३ पच समितीओ पण्णत्ताओ, त जहा—इरियासमिती, भासासमिती[4], °एसणा-समिती, आयाणभड-मत्त-णिक्खेवणासमिती, उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल°-पारिठावणियासमिती ॥

जीव-पदं

२०४ पचविधा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, त जहा—एगिंदिया[5], °बेइदिया, तेइदिया, चउरिंदिया°, पचिंदिया ॥

गति-आगति-पद

२०५ एगिंदिया पचगतिया पचागतिया पण्णत्ता, त जहा—एगिंदिए एगिंदिएसु उव-वज्जमाणे एगिंदिएहिंतो वा[6], °बेइदिएहिंतो वा, तेइदिएहिंतो वा, चउरिंदिए-हिंतो वा°, पचिंदिएहिंतो वा उववज्जेज्जा ।

'से चेव ण से'[7] एगिंदिए एगिंदियत्त विप्पजहमाणे एगिंदियत्ताए[8] वा[9], °बेइदिय-त्ताए वा, तेइदियत्ताए वा, चउरिंदियत्ताए वा°,पचिंदियत्ताए[10] वा गच्छेज्जा ॥

---

१ स० पा०—अणुसोतचारी जाव सव्वचारी ।
२ °वणीमते (क, ख, ग) ।
३ अप्पपडिलेही (ख) ।
४ स० पा०—भासासमिती जाव पारिठावणिया-समिती ।
५ स० पा०—एगिंदिया जाव पचिंदिया ।
६ स० पा०—एगिंदितेहिंतो वा जाव पचिंदिय° ।
७ × (क, ग) ।
८ एगिंदित्ताते (क, ग) ।
९ स० पा०—एगिंदियत्ताते वा जाव पचिंदिय-त्ताते ।
१० पचिंदित्ताते (क, ग) ।

२०६ बेदिया पचगतिया पचागतिया एव चेव[1] ॥

२०७ एव जाव[2] पचिंदिया पचगतिया पचागतिया पण्णत्ता, त जहा—पचिंदिए जाव[3] गच्छेज्जा ॥

जीव-पद

२०८ पचविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, त जहा—कोहकसाई[4], °माणकसाई, माया-कसाई°, लोभकसाई, अकसाई।

अहवा—पचविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, त जहा—णेरइया[5], °तिरिक्खजोणिया, मणुस्सा°, देवा, सिद्धा ॥

जोणि-ठिइ-पदं

२०९ अह भते ! कल-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-णिप्फाव-कुलत्थ-आलिसदग-सतीण-पलिमथगाण[6]—एतेसि ण धण्णाण कुट्ठाउत्ताण [7]°पल्लाउत्ताण मचाउत्ताण मालाउत्ताण ओलित्ताण लित्ताण लछियाण मुद्दियाण पिहिताण° केवइय काल जोणी सचिट्ठति ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पच सवच्छराइ। तेण पर जोणी पमिलायति[8], °तेण पर जोणी पविद्धसति, तेण पर जोणी विद्धसति, तेण पर वीए अवीए भवति°, तेण पर जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते ॥

संवच्छर-पद

२१० पच सवच्छरा पण्णत्ता, त जहा—णक्खत्तसवच्छरे, जुगसवच्छरे, पमाणसवच्छरे, लक्खणसवच्छरे, सणिचरसवच्छरे ॥

२११ जुगसवच्छरे पचविहे पण्णत्ते, त जहा—चदे, चादे, अभिवड्ढिते, चदे, अभिवड्ढिते चेव ॥

२१२. पमाणसवच्छरे पचविहे पण्णत्ते, त जहा—णक्खत्ते, चदे, उऊ, आदिच्चे, अभिवड्ढिते ॥

२१३ लक्खणसवच्छरे पचविहे पण्णत्ते, त जहा—

संगहणी-गाहा

समग णक्खत्ताजोग जोयति[9] समग उदू परिणमति ।
णच्चुण्ह[10] णातिसीतो, बहूदओ[11] होति णक्खत्तो ॥१॥

---

१ पू०—ठा० ५।२०५।
२ ठा० ५।२०४।
३ ठा० ५।२०५।
४ स० पा०—कोहकसाई जाव लोभकसाई।
५ स० पा०—णेरइया जाव देवा।
६ पमिलिथगाण (क), पलिमथगाणी (ख), पमिलियमाणे (ग)।
७ स० पा०—जधा सालीण जाव केवतित।
८ स० पा०—पमिलायति जाव तेण पर।
९ जयति (क, ग)।
१०. णउण्ह (क, ग)।
११ बहूदतो (क, ख, ग)।

ससिसगलपुण्णमासी, जोएइ विसमचारिणक्खत्ते[1]।
कडुओ[2] बहूदओ वा, तमाहु सवच्छर चद ॥२॥
विसम पवालिणो परिणमति अणुदूसु देंति पुप्फफल ।
वास ण सम्म वासति, तमाहु सवच्छर कम्म ॥३॥
पुढविदगाण तु रस, पुप्फफलाण तु देइ आदिच्चो ।
अप्पेणवि वासेण, सम्म णिप्फज्जए सास ॥४॥
आदिच्चतेयतविता, खणलवदिवसा उऊ परिणमति ।
'पूरिति रेणु थलयाइ'[3], तमाहु अभिवड्ढित जाण ॥५॥

जीवस्स णिज्जाणमग्ग-पद

२१४ पचविवे जीवस्स णिज्जाणमग्गे पण्णत्ते, त जहा—पाएहिं, ऊरूहिं, उरेण, सिरेण, सव्वगेहिं ।

पाएहिं णिज्जायमाणे णिरयगामी भवति, ऊरूहिं णिज्जायमाणे तिरियगामी भवति, उरेण णिज्जायमाणे मणुयगामी भवति, सिरेण णिज्जायमाणे देवगामी भवति, सव्वगेहिं णिज्जायमाणे सिद्धिगति-पज्जवसाणे पण्णत्ते ॥

छेयण-पदं

२१५ पचविहे छेयणे पण्णत्ते, त जहा—उप्पाछेयणे[4], वियच्छेयणे, वधच्छेयणे, पएसच्छेयणे[5], दोधारच्छेयणे ॥

आणंतरिय-पद

२१६ पचविहे आणतरिए पण्णत्ते, त जहा—उप्पायाणतरिए[6], वियाणतरिए[7], पएसाणतरिए[8], समयाणतरिए[9], सामण्णाणतरिए ॥

अणत-पद

२१७ पचविधे अणतए[10] पण्णत्ते, त जहा—णामाणतए[11], ठवणाणतए, दव्वाणतए, गणणाणतए पदेसाणतए ।

अहवा—पचविहे अणतए पण्णत्ते, त जहा—एगतोऽणतए, दुहओणतए, देसवित्थाराणतए, सव्ववित्थाराणतए, सासयाणतए ॥

---

१ विसमच्चारण° (क, ग), विसमाचारिण° (ख) ।
२ कडुतो (क, ख, ग) ।
३ पूरेति त थलताइ (क, ख) ।
४ उप्पाय° (क, ग) ।
५ पथच्छेयण (वृपा) ।
६ उप्पातयणतरिते (क, ख, ग) ।
७ वितणतरिते (क, ख, ग) ।
८ पतेसाणतरिते (क, ख, ग) ।
९ समताणतरिते (क, ख, ग) ।
१० अणते (क, ख, ग) ।
११ णामणतते (क, ग) ।

णाण-पद

२१८ पचविहे णाणे पण्णत्ते, त जहा—आभिणिवोहियणाणे, सुयणाणे, ओहिणाणे, मणपज्जवणाणे, केवलणाणे ।।

२१९ पचविहे णाणावरणिज्जे कम्मे पण्णत्ते, त जहा—आभिणिवोहियणाणावरणिज्जे[1], °सुयणाणावरणिज्जे, ओहिणाणावरणिज्जे, मणपज्जवणाणावरणिज्जे°, केवलणाणावरणिज्जे ।।

२२० पचविहे सज्झाए पण्णत्ते, त जहा—वायणा, पुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा ।।

पच्चक्खाण-पद

२२१ पचविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, त जहा—सद्दहणसुद्धे, विणयसुद्धे, अणुभासणासुद्धे, अणुपालणासुद्धे, भावसुद्धे ।।

पडिक्कमण-पद

२२२ पचविहे पडिक्कमणे पण्णत्ते, त जहा—आसवदारपडिक्कमणे, मिच्छत्तपडिक्कमणे, कसायपडिक्कमणे, जोगपडिक्कमणे, भावपडिक्कमणे ।।

सुत्त-पद

२२३ पचहि ठाणेहि सुत्त वाएज्जा, त जहा—सगहट्ठयाए, उवग्गहट्ठयाए[2], णिज्जरट्ठयाए, सुत्ते वा मे पज्जवयाते भविस्सति, सुत्तस्स वा अवोच्छित्तिणयट्ठयाए ।।

२२४ पचहि ठाणेहि सुत्त सिक्खेज्जा, त जहा—णाणट्ठयाए, दसणट्ठयाए, चरित्तट्ठयाए, वुग्गहविमोयणट्ठयाए[3], अहत्थे वा भावे जाणिस्सामीतिकट्टु ।।

कप्प-पद

२२५ सोहम्मीसाणेसु ण कप्पेसु विमाणा पचवण्णा[4] पण्णत्ता, त जहा—किण्हा[5], °णीला, लोहिता, हालिद्दा°, सुक्किल्ला ।।

२२६ सोहम्मीसाणेसु ण कप्पेसु विमाणा पचजोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।।

२२७ वभलोग-लतएसु ण कप्पेसु देवाण भवधारणिज्जसरीरगा उक्कोसेण पचरयणी उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।।

वध-पद

२२८ णेरइया ण पचवण्णे पचरसे पोग्गले वधेसु वा वधति वा वधिस्सति वा,

---

१ स० पा०—आभिणिवोहियणाणावरणिज्जे जाव केवल° ।

२ उवग्गहणट्ठयाए (ख) ।

३ °विमोतणट्ठयाते (क, ख, ग) ।

४ पचविधा (क, ग) ।

५ स० पा०—किण्हा जाव सुक्किल्ला ।

त जहा—किण्हे[1], •णीले, लोहिते, हालिद्दे°, सुक्किल्ले। तित्ते[2], •कडुए, कसाए, अंबिले°, मधुरे ॥

२२९ एव जाव[3] वेमाणिया ॥

महाणदी-पद

२३० जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण गंग महाणदिं पंच महाणदीओ समप्पेंति, त जहा—जउणा, सरऊ, आवी[4], कोसी, मही ॥

२३१ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण सिंधु महाणदिं पंच महाणदीओ समप्पेंति, त जहा—'स[त ?]द्दू, वितत्था, विभासा'[5], एरावती, चंदभागा ॥

२३२ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण रत्त महाणदिं पंच महाणदीओ समप्पेति, त जहा—किण्हा, महाकिण्हा, णीला, महाणीला, महातीरा ॥

२३३ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण रत्तावतिं महाणदिं पंच महाणदीओ समप्पेति, त जहा—इंदा, इंदसेणा, सुसेणा, वारिसेणा, महाभोगा ॥

तित्थगर-पद

२३४ पंच तित्थगरा कुमारवासमज्झे[6] वसित्ता मुंडा[7] •भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइया, त जहा—वासुपुज्जे, मल्ली, अरिट्ठणेमी, पासे, वीरे ॥

सभा-पद

२३५ चमरचंचाए रायहाणीए पंच सभा पण्णत्ता, त जहा—सभासुधम्मा, उववातसभा, अभिसेयसभा, अलकारियसभा[8], ववसायसभा[9] ॥

२३६ एगमेगे ण इंदट्ठाणे पंच सभाओ पण्णत्ताओ, त जहा—सभासुहम्मा[10], •उववातसभा, अभिसेयसभा, अलंकारियसभा,° ववसायसभा ॥

णक्खत्त-पद

२३७ पंच णक्खत्ता पंचतारा पण्णत्ता, त जहा—धणिट्ठा, रोहिणी, पुणव्वसू, हत्थो, विसाहा ॥

पावकम्म-पद

२३८ जीवा ण पंचट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा

---

१ स० पा०—किण्हे जाव सुक्किल्ले।
२ स० पा०—तित्ते जाव मधुरे।
३ ठा० १।१८२-१९३।
४ आदी (क, ख, ग)।
५ सतद्दू विभासा वितत्था (ख)।
६ °मज्झा (क, ग)।
७ स० पा०—मुंडा जाव पव्वतिता।
८ अलंकारित° (क, ख, ग)।
९ ववसात° (क, ख, ग)।
१० स० पा०—सभासुहम्मा जाव ववसातसभा।

चिणिस्सति वा, त जहा—एगिदियणिव्वत्तिए[1], •वेइदियणिव्वत्तिए, तेइदियणिव्वत्तिए, चउरिदियणिव्वत्तिए,° पचिदियणिव्वत्तिए ॥
एव—चिण-उवचिण-वध-उदीर-वेद तह णिज्जरा चेव ॥

पोग्गल-पद

२३९ पचपएसिया खधा अणता पण्णत्ता ॥
२४० पचपएसोगाढा पोग्गला अणता पण्णत्ता जाव[2] पचगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता ॥

---

१ स० पा०—एगिदियणिव्वित्तिते जाव पचिदित° ।
२ ठा० १।२५५, २५६ ।

छट्ठं ठाणं

गण-धारण-पद

१ छहिं ठाणेहिं सपण्णे अणगारे अरिहति गण धारित्तए, त जहा—सड्ढी पुरिसजाते, सच्चे पुरिसजाते, मेहावी पुरिसजाते, वहुस्सुते पुरिसजाते, सत्तिम अप्पाधिकरणे ॥

णिग्गथी-अवलवण-पद

२. छहिं ठाणेहिं णिग्गथे णिग्गथिं गिण्हमाणे वा अवलवमाणे वा णाइक्कमइ, त जहा—खित्तचित्त, दित्तचित्तं, जक्खाइट्ठ, उम्मायपत्त[1], उवसग्गपत्त, साहिकरण[2] ॥

साहम्मियस्स अतकम्म-पद

३ छहिं ठाणेहिं णिग्गथा णिग्गथीओ य साहम्मिय कालगत समायरमाणा णाइक्कमति, त जहा—अतोहिंतो वा वाहिं णीणेमाणा, वाहीहिंतो वा णिव्वाहिं णीणेमाणा, उवेहेमाणा वा, उवासमाणा[3] वा, अणुण्णवेमाणा वा, तुसिणीए वा सपव्वयमाणा ॥

छउमत्थ-केवलि-पद

४ छ ठाणाइ छउमत्थे सव्वभावेण ण जाणति ण पासति, त जहा—धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकाय, आयास, जीवमसरीरपडिवद्ध, परमाणुपोग्गल, सद्द ।
एताणि चेव उप्पण्णणाणदसणधरे अरहा जिणे[4] °केवली° सव्वभावेण जाणति पासति, त जहा—धम्मत्थिकाय[5], °अधम्मत्थिकाय, आयास, जीवमसरीर-पडिवद्ध, परमाणुपोग्गल°, सद्द ॥

---

१. उम्मातपत्त (क, ख, ग) ।
२ साहीकरणी (ख) ।
३ भयमाणा, उवसामेमाणा (वृपा) ।
४. स० पा०—जिणे जाव सव्वभावेण ।
५ स० पा०—धम्मत्थिकात जाव सद्द ।

असभव-पदं

५ छहिं ठाणेहिं सव्वजीवाण णत्थि इड्ढीति वा जुतीति वा जसेति वा बलेति वा वीरिएति वा पुरिसक्कार-परक्कमेति वा, त जहा—१ जीव वा अजीव करणताए। २ अजीव वा जीव करणताए। ३ एगसमए णं वा दो भासाओ भासित्तए। ४ सय कड वा कम्म वेदेमि वा मा वा वेदेमि। ५ परमाणु-पोग्गल[1] वा छिंदित्तए वा भिंदित्तए वा अगणिकाएण वा समोदहित्तए[2]। ६ वहिता वा लोगता[3] गमणताए ॥

जीव-पद

६ छज्जीवणिकाया पण्णत्ता, त जहा—पुढविकाइया[4], •आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया, वणस्सइकाइया° तसकाइया ॥

७ छ तारग्गहा पण्णत्ता, त जहा—सुक्के, वुहे, वहस्सती, अगारए, सणिच्छरे, केतू ॥

८ छव्विहा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, त जहा—पुढविकाइया[5], •आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया, वणस्सइकाइया,° तसकाइया ॥

गति-आगति-पद

९ पुढविकाइया छगतिया छआगतिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविकाइए पुढवि-काइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा[6], •आउकाइएहिंतो वा, तेउकाइएहिंतो वा, वाउकाइएहिंतो वा, वणस्सइकाइएहिंतो वा,° तसकाइए-हिंतो वा उववज्जेज्जा ॥

से चेव ण से पुढविकाइए पुढविकाइयत्त विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा[7], •आउकाइयत्ताए वा, तेउकाइयत्ताए वा, वाउकाइयत्ताए वा, वणस्सइकाइय-त्ताए वा° तसकाइयत्ताए वा गच्छेज्जा ॥

१० आउकाइया छगतिया छआगतिया एव[8] चेव जाव[9] तसकाइया ॥

जीव-पद

११ छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, त जहा—आभिणिवोहियणाणी[10], •सुयणाणी, ओहिणाणी, मणपज्जवणाणी,° केवलणाणी, अण्णाणी।

---

१ सुहुमपोग्गले (क, ग)।
२ सम्मोदहित्तते (क)।
३ लोगे वा (क, ग)।
४ स० पा०—पुढविकाइया जाव तसकाइया।
५ स० पा०—पुढविकाइया जाव तसकाइया।
६ स० पा०—पुढविकाइएहिंतो वा जाव तस०।
७ स० पा०—पुढविकातितत्ताते वा जाव तस०।
८ ठा० ६।९।
९ ठा० ६।६।
१० स० पा०—आभिणिवोहियणाणी जाव केवलणाणी।

अहवा—छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, त जहा—एगिंदिया[1], •वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया,° पचिंदिया, अणिंदिया ।

अहवा—छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, त जहा—ओरालियसरीरी, वेउव्वियसरीरी, आहारगसरीरी, तेअगसरीरी, कम्मगसरीरी, असरीरी ॥

तणवणस्सइ-पदं

१२ छव्विहा तणवणस्सतिकाइया पण्णत्ता, त जहा—अग्गवीया, मूलवीया, पोरवीया, खधवीया, वीयरुहा, समुच्छिमा ॥

णो-सुलभ-पद

१३ छट्ठाणाइ सव्वजीवाण णो सुलभाइ भवति, त जहा—माणुस्सए भवे । आरिए खेत्ते जम्म । सुकुले पच्चायाती । केवलीपण्णत्तस्स धम्मस्स सवणता । सुतस्स वा सद्दहणता । सद्दहितस्स वा पत्तितस्स वा रोइतस्स वा सम्म काएण फासणता ॥

इदियत्थ-पदं

१४ छ इंदियत्था पण्णत्ता, त जहा—सोइंदियत्थे,[2] •चक्खिदियत्थे, घाणिंदियत्थे, जिब्भिदियत्थे,° फासिंदियत्थे, णोइंदियत्थे ॥

संवर-असंवर-पद

१५ छव्विहे सवरे पण्णत्ते, त जहा—सोतिंदियसवरे,[3] •चक्खिदियसवरे, घाणिंदियसवरे, जिब्भिदियसवरे,° फासिंदियसवरे, णोइंदियसवरे ॥

१६. छव्विहे असवरे पण्णत्ते, त जहा—सोतिंदियअसवरे[4], •चक्खिदियअसवरे घाणिंदियअसवरे, जिब्भिदियअसवरे°, फासिंदियअसवरे, णोइंदियअसवरे ॥

सात-असात-पद

१७ छव्विहे साते पण्णत्ते, त जहा सोतिंदियसाते[5], •चक्खिदियसाते, घाणिंदियसाते, जिब्भिदियसाते, फासिंदियसाते°, णोइंदियसाते ॥

१८ छव्विहे असाते पण्णत्ते, त जहा—सोतिंदियअसाते[6], •चक्खिदियअसाते, घाणिंदियअसाते, जिब्भिदियअसाते, फासिंदियअसाते°, णोइंदियअसाते ॥

पायच्छित्त-पद

१९ छव्विहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, त जहा—आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे, विउस्सग्गारिहे, तवारिहे ॥

---

१ स० पा०—एगिंदिया जाव पचिंदिया ।

२ स० पा०—सोइंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे ।

३ स० पा०—सोतिंदियसवरे जाव फासिंदिय° ।

४. स० पा०—सोतिंदियअसवरे जाव फासिंदिय° ।

५ स० पा०—सोतिंदियसाते जाव नोइंदियसाते ।

६ स० पा०—सोतिंदियअसाते जाव नोइंदियअसाते ।

मणुस्स-पदं

२० छव्विहा मणुस्सा पण्णत्ता, त जहा—जवूदीवगा, धायइसडदीवपुरत्थिमद्धगा, धायइसडदीवपच्चत्थिमद्धगा, पुक्खरवरदीवड्डपुरत्थिमद्धगा, पुक्खरवरदीवड्ड-पच्चत्थिमद्धगा, अतरदीवगा ।

अहवा--छव्विहा मणुस्सा पण्णत्ता, त जहा—समुच्छिममणुस्सा—कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अतरदीवगा, गब्भवक्कतिअमणुस्सा—कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अतरदीवगा ॥

२१ छव्विहा इड्डिमता मणुस्सा पण्णत्ता, त जहा—अरहता, चक्कवट्टी, वलदेवा, वासुदेवा, चारणा, विज्जाहरा ॥

२२ छव्विहा अणिड्डिमता मणुस्सा पण्णत्ता, त जहा—हेमवतगा, हेरण्णवतगा, हरिवासगा[1], रम्मगवासगा[2], कुरुवासिणो, अतरदीवगा ॥

कालचक्क-पद

२३ छव्विहा ओसप्पिणी पण्णत्ता, त जहा—सुसम-सुसमा[3], °सुसमा, सुसम-दूसमा, दूसम-सुसमा, दूसमा°, दूसम-दूसमा ॥

२४ छव्विहा उस्सप्पिणी पण्णत्ता, त जहा—दुस्सम-दुस्समा[4], °दुस्समा, दुस्सम-सुसमा, सुसम-दुस्समा, सुसमा°, सुसम-सुसमा ॥

२५ जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसम-सुसमाए समाए मणुया छ घणुसहस्साइ उड्ढमुच्चत्तेण हुत्था, छच्च अद्धपलिओवमाइ परमाउ पालयित्था ॥

२६ जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु इमीसे ओसप्पिणीए सुसम-सुसमाए समाए [5]°मणुया छ घणुसहस्साइ उड्ढमुच्चत्तेण पण्णत्ता, छच्च अद्धपलिओवमाइ परमाउ पालयित्था °॥

२७ जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु आगमेस्साए उस्सप्पिणीए सुसम-सुसमाए समाए [6]°मणुया छ घणुसहस्साइ उड्ढमुच्चत्तेण भविस्सति°, छच्च अद्धपलि-ओवमाइ परमाउ पालइस्सति ॥

२८ जवुद्दीवे दीवे देवकुरु-उत्तरकुरुकुरासु[7] मणुया छ घणुस्सहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता, छच्च अद्धपलिओवमाइ परमाउ पालेंति ॥

१,२ °वसगा (क, ग), °वसगा (ख), २।२६६ सूत्रानुसारेण 'वास' पाठ स्वीकृत ।

३ स० पा०—सुसमसुसमा जाव दूसमदूसमा ।

४ स० पा०—दुस्समदुस्समा जाव सुसमसुसमा ।

५ स० पा०—एव चेव ।

६ स० पा०—एव चेव जाव छच्च ।

७ उत्तरकुराकुराए (ख) ।

२९. एवं धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे चत्तारि आलावगा[1] जाव[2] पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे चत्तारि आलावगा[3]।

संघयण-पदं

३० छव्विहे संघयणे पण्णत्ते, तं जहा—वइरोसभ[4]-णाराय[5]-संघयणे, उसभ-णाराय-संघयणे, णाराय-संघयणे, अद्धणाराय-संघयणे, खीलिया-संघयणे, छेवट्ट-संघयणे ॥

संठाण-पदं

३१ छव्विहे संठाणे पण्णत्ते, तं जहा—समचउरंसे, णग्गोहपरिमंडले, साई[6], खुज्जे, वामणे, हुंडे ॥

अणत्तव-अत्तव-पदं

३२ छट्ठाणा अणत्तवओ अहिताए असुभाए अखमाए अणीसेसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा—परियाए[7], परियाले[8], सुते, तवे, लाभे, पूयासक्कारे ॥

३३ छट्ठाणा अत्तवतो हिताए[9] •सुभाए खमाए णीसेसाए° आणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा—परियाए, परियाले[10], •सुते, तवे, लाभे°, पूयासक्कारे ॥

आरिय-पदं

३४ छव्विहा जाइ-आरिया मणुस्सा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

अंबट्ठा य कलंदा य, वेदेहा वेदिगादिया[11]।
हरिता चुंचुणा[12] चेव, छप्पेता इब्भजातिओ ॥१॥

३५ छव्विहा कुलारिया मणुस्सा पण्णत्ता, तं जहा—उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, णाता, कोरव्वा ॥

लोगट्ठिति-पदं

३६ छव्विहा लोगट्ठिती पण्णत्ता, तं जहा—आगासपतिट्ठिते वाए, वातपतिट्ठिते

---

१ ठा० ६।२५-२८।
२ ठा० ३।१०८।
३ ठा० ६।२५-२८।
४. वति° (क, ख, ग)।
५ णारात (क, ख, ग)।
६. साती (क, ख, ग)।
७ परिताते (क, ख, ग)।
८ परिताले (क, ख, ग)।
९ सं० पा०—हिताते जाव आणुगामियत्ताते।
१० सं० पा०—परिताले जाव पूतासक्कारे।
११ वेदिगातिता (क, ख, ग)।
१२ चुंवणा (क), चुंबुणा (ग)।

उदही, उदधिपतिट्ठिता पुढवी, पुढविपतिट्ठिता तसा थावरा पाणा, अजीवा जीवपतिट्ठिता, जीवा कम्मपतिट्ठिता ।।

दिसा-पद

३७ छद्दिसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—पाईणा[1], पडीणा, दाहिणा, उदीणा[2], उड्ढा, अधा ।।

३८ छहि दिसाहि जीवाण गती पवत्तति, त जहा—पाईणाए[3], •पडीणाए, दाहिणाए, उदीणाए, उड्ढाए °, अधाए ।।

३९ [4]•छहि दिसाहि जीवाण °—आगई वक्कती आहारे वुड्ढी णिवुड्ढी विगुव्वणा गतिपरियाए समुग्घाते कालसजोगे दसणाभिगमे णाणाभिगमे जीवाभिगमे अजीवाभिगमे •पण्णत्ते, त जहा—पाईणाए, पडीणाए, दाहिणाए, उदीणाए, उड्ढाए, अधाए °।।

४० एव[5] पचिंदियतिरिक्खजोणियाणवि, मणुस्साणवि ।।

आहार-पद

४१ छहि ठाणेहि समणे णिग्गथे आहारमाहारेमाणे णातिक्कमति, त जहा—

सगहणी-गाहा

वेयण[6]-वेयावच्चे, ईरियट्ठाए य सजमट्ठाए ।
तह पाणवत्तियाए, छट्ठ पुण धम्मचिंताए ।।१।।

४२ छहि ठाणेहि समणे णिग्गथे आहार वोच्छिदमाणे णातिक्कमति, त जहा—

सगहणी-गाहा

आतके उवसग्गे, तितिक्खणे वभचेरगुत्तीए ।
पाणिदया-तवहेउ, सरीरवुच्छेयणट्ठाए[7] ।।१।।

उम्माय-पद

४३ छहि ठाणेहि आया उम्माय[8] पाउणेज्जा, त जहा—अरहताण अवण्ण वदमाणे, अरहतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्ण वदमाणे, आयरिय-उवज्झायाण अवण्ण

---

१ पातीणा (क, ख, ग) ।
२ उतीणा (क, ग) ।
३ स० पा०—पातीणाते जाव अधाते ।
४ स० पा०—एव ।
५ ठा० ६।३८,३९ ।
६ वेतण (क, ख, ग) ।
७ °ट्ठुयाए (क) ।
८ उम्मायपमाय (वृपा) ।

वदमाणे, चाउव्वण्णस्स सघस्स अवण्ण वदमाणे, जक्खावेसेण[1] चेव, मोहणिज्जस्स चेव कम्मस्स उदएण ।।

पमाय-पदं

४४ छव्विहे पमाए[2] पण्णत्ते, त जहा—मज्जपमाए, णिद्दपमाए, विसयपमाए, कसाय-पमाए, जूतपमाए, पडिलेहणापमाए ।।

पडिलेहणा-पद

४५ छव्विहा पमायपडिलेहणा पण्णत्ता, त जहा—

सगहणी-गाहा

आरभडा समद्दा, वज्जेयव्वा य 'मोसली ततिया'[3] ।
पप्फोडणा चउत्थी, विक्खित्ता[4] वेइया[5] छट्ठी ।।१।।

४६ छव्विहा अप्पमायपडिलेहणा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

अणच्चावित अवलित[6], अणाणुवधि अमोसलिं चेव ।
छप्पुरिमा णव खोडा, पाणीपाणविसोहणी ।।१।।

लेसा-पद

४७ छ लेसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेसा,[7] °णीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा, पम्हलेसा°, सुक्कलेसा ।।

४८ पचिदियतिरिक्खजोणियाण छ लेसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेसा[8], °णीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा, पम्हलेसा°, सुक्कलेसा ।।

४९ एव मणुस्स-देवाण वि ।

अग्गमहिसी-पद

५० सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ।।

५१ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो जम्मस्स महारण्णो छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ।।

---

१ जक्खादेसेण (क, ख, ग) ।
२ पमाते (क, ख, ग) ।
३ अट्ठाणठवणयाए (वृपा) ।
४ वक्खित्ता (क, ख, ग) ।
५ वेतिया (क, ख, ग) ।
६ अचलित (ख) ।
७,८ स० पा०—कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा ।

देवठिति-पदं

५२ ईसाणस्स णं देविंदस्स [देवरण्णो[1] ?] मज्झिमपरिसाए देवाणं छ पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

महत्तरिया-पदं

५३ छ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ[2] पण्णत्ताओ, तं जहा—रूवा[3], रूवंसा[4], सुरूवा, रूववती, रूवकंता[5], रूवप्पभा[6] ॥

५४ छ विज्जुकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—अला, सक्का, सतेरा, सोतामणी, इंदा, घणविज्जुया ॥

अग्गमहिसी-पदं

५५ धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा— अला[7], सक्का, सतेरा, सोतामणी, इंदा, घणविज्जुया ॥

५६ भूताणंदस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—'रूवा, रूवंसा'[8], सुरूवा, रूववती, रूवकंता, रूवप्पभा ॥

५७ जहा[9] धरणस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव[10] घोसस्स ॥

५८ जहा[11] भूताणंदस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव[12] महाघोसस्स ॥

सामाणिय-पदं

५९ धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो छस्सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥

६० एवं भूताणंदस्सवि जाव[13] महाघोसस्स ॥

मइ-पदं

६१ छव्विहा ओगहमती[14] पण्णत्ता, तं जहा—खिप्पमोगिण्हति[15], बहुमोगिण्हति, बहुविधमोगिण्हति, धुवमोगिण्हति, अणिस्सियमोगिण्हति, असंदिद्धमोगिण्हति ॥

---

१ सर्वत्रापि एवं दृश्यते ।
२ °महत्तरितातो (क, ख, ग) ।
३ रूता (क, ख, ग) ।
४ रूतंसा (क, ख, ग) ।
५ रूयकंता (क, ख, ग) ।
६ रूतप्पभा (क, ख, ग) ।
७ आला (क्व) ।
८ रूता रूतंसा (क), रूता रूवंसा (ग) ।
९ ठा० ६।५५ ।
१० ठा० २।३५५-३६१ ।
११ ठा० ६।५६ ।
१२ ठा० २।३५५-२६१ ।
१३ ठा० २।३५५-३६२ ।
१४ उग्गह° (क) ।
१५ खिप्पा° (क, ग) ।

६२ छव्विहा ईहामती पण्णत्ता, तं जहा—खिप्पमीहति, वहुमीहति[1], •वहुविधमीहति, धुवमीहति, अणिस्सियमीहति°, असदिद्धमीहति ।।

६३ छव्विधा अवायमती पण्णत्ता, तं जहा—खिप्पमवेति[2], •वहुमवेति, वहुविधमवेति, धुवमवेति, अणिस्सियमवेति°, असदिद्धमवेति ।।

६४ छव्विहा धारणा [मती ?] पण्णत्ता, तं जहा—वहु धरेति, वहुविह धरेति, पोराण धरेति, दुद्धर धरेति, अणिस्सित धरेति, असदिद्ध धरेति ।।

तव-पदं

६५ छव्विहे वाहिरए तवे पण्णत्ते, तं जहा—अणसण, ओमोदरिया, भिक्खायरिया[3], रसपरिच्चाए[4], कायकिलेसो, पडिसलीणता ।।

६६. छव्विहे अब्भतरिए तवे पण्णत्ता, तं जहा—पायच्छित्त, विणओ, वेयावच्च, सज्झाओ[5], झाण, विउस्सग्गो ।।

विवाद-पद

६७ छव्विहे विवादे पण्णत्ते, तं जहा —ओसक्कइत्ता[6], उस्सक्कइत्ता[7], अणुलोमइत्ता[8], पडिलोमइत्ता, भइत्ता, भेलइत्ता[9] ।।

खुड्डपाण-पदं

६८ छव्विहा खुड्डा[10] पाणा पण्णत्ता, तं जहा -- 'वेंदिया, तेइदिया, चउरिंदिया, समुच्छिमपचिदियतिरिक्खजोणिया, तेउकाइया, वाउकाइया'[11] ।।

गोयरचरिया-पद

६९ छव्विहा गोयरचरिया[12] पण्णत्ता, तं जहा—पेडा, अद्धपेडा, गोमुत्तिया[13], पतग-वीहिया[14], सवुक्कावट्टा[15], गतुपच्चागता ।।

महाणिरय-पद

७० जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए छ

---

१ स० पा०—वहुमीहति जाव असदिद्धमीहति ।

२. स० पा०—खिप्पमवेति जाव असदिद्ध° ।

३ भिक्खातरिता (क, ख, ग) ।

४ रसपरिच्चाते (क, ख, ग) ।

५ अहेव सज्झाओ (ख) ।

६. ओक्कस्सतित्ता (क, ग), ओसक्कावइत्ता (वृपा) ।

७ उक्कस्सइत्ता (क, ग), ओसक्कइत्ता (वृ), उस्सक्कावइत्ता (वृपा) ।

८ सकामइत्ता (क, ग) ।

९ भेलतित्ता (क, ख, ग), भेयइत्ता (वृपा) ।

१० खुड्ड (क) ।

११ वाचनान्तरे तु सिंहा व्याघ्रा वृका दीपिका ऋक्षास्तरक्षा (वृ) ।

१२ °चरिता (ख, ग) ।

१३ गोमुत्तिता (क, ख, ग) ।

१४ °विहिया (क, ख, ग) ।

१५ सवुक्कवट्टा (ख, ग) ।

अवक्कतमहाणिरया पण्णत्ता, त जहा—लोले, लोलुए, उद्दड्ढे, णिद्दड्ढे, जरए[1], पज्जरए ।।

७१ चउत्थीए ण पकप्पभाए पुढवीए छ अवक्कतमहाणिरया पण्णत्ता, त जहा—आरे, वारे, मारे, रोरे, रोरुए, खाडखडे ।।

विमाण-पत्थड-पद

७२ वभलोगे ण कप्पे छ विमाण-पत्थडा पण्णत्ता, त जहा—अरए[2], विरए[3], णीरए[4], णिम्मले, वितिमिरे, विसुद्धे ।।

णक्खत्त-पद

७३ चदस्स ण जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो छ णक्खत्ता पुव्वभागा समखेत्ता तीमति-मुहुत्ता पण्णत्ता, त जहा—पुव्वाभद्दवया, कत्तिया, महा, पुव्वफग्गुणी, मूलो, पुव्वासाढा[5] ।।

७४ चदस्स ण जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो छ णक्खत्ता णत्तभागा अवड्ढक्खेत्ता पण्ण-रसमुहुत्ता पण्णत्ता, त जहा—सयभिसया, भरणी, भद्दा, अस्सेसा, साती, जेट्ठा ।।

७५ चदस्स ण जोइसिदस्स जोतिसरण्णो छ णक्खत्ता उभयभागा दिवड्ढखेत्ता पणयालीसमुहुत्ता पण्णत्ता, त जहा—रोहिणी, पुणव्वसू, उत्तराफग्गुणी, विसाहा, उत्तरासाढा, उत्तराभद्दवया ।।

इतिहास-पद

७६ अभिचदे ण कुलकरे छ धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण हुत्था ।।

७७ भरहे ण राया चाउरतचक्कवट्टी छ पुव्वसतसहस्साइ महाराया हुत्था ।।

७८ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणियस्स छ सता वादीण सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाण सपया होत्था ।।

७९ वासुपुज्जे ण अरहा छहिं पुरिससतेहिं सद्धि मुडे[6] •भवित्ता अगाराओ अणगा-रिय° पव्वइए ।।

८० चदप्पभे ण अरहा छम्मासे[7] छउमत्थे हुत्था ।।

सजम-असंजम-पद

८१ तेइदिया[8] ण जीवा असमारभमाणस्स[9] छव्विहे सजमे कज्जति, त जहा—

---

१. जरते (क, ख, ग) ।
२. अरते (क, ख, ग) ।
३ विरते (क, ख, ग) ।
४. णीरते (क, ख, ग) ।
५ पुव्वा आसाढा (ग) ।
६ स० पा०—मुडे जाव पव्वइते ।
७ छम्मासा (ख) ।
८. तेंतिदिया (क, ख, ग) ।
९ असमारभ° (ख) ।

घाणामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति। घाणामएण दुक्खेण असजोएत्ता भवति। जिब्भामातो[1] सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति, [2]•जिब्भामएण दुक्खेण असजोएत्ता भवति। फासामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति। फासामएण दुक्खेण असजोएत्ता भवति° ॥

८२ तेइदिया ण जीवा समारभमाणस्स छव्विहे असजमे कज्जति, त जहा—घाणामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति। घाणामएण दुक्खेण सजोगेत्ता भवति[3]। •जिब्भामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति। जिब्भामएण दुक्खेण सजोगेत्ता भवति। फासामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति° फासामएण दुक्खेण सजोगेत्ता भवति ॥

खेत्त-पव्वय-पद

८३ जवुद्दीवे दीवे छ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, त जहा—हेमवते, हेरण्णवते, हरिवस्से, रम्मगवासे, देवकुरा, उत्तरकुरा ॥

८४ जवुद्दीवे दीवे छव्वासा पण्णत्ता, त जहा—भरहे, एरवते, हेमवते, हेरण्णवए, हरिवासे, रम्मगवासे ॥

८५ जवुद्दीवे दीवे छ वासहरपव्वता पण्णत्ता, त जहा—चुल्लहिमवते, महाहिमवते, णिसढे, णीलवते, रुप्पी, सिहरी ॥

८६ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण छ कूडा पण्णत्ता, त जहा—चुल्लहिमवतकूडे, वेसमणकूडे, महाहिमवतकूडे, वेरुलियकूडे, णिसढकूडे[4], रुयगकूडे ॥

८७. जवुद्दीवे दोवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण छ कूडा पण्णत्ता, त जहा—णीलवतकूडे[5], उवदसणकूडे, रुप्पिकूडे, मणिकचणकूडे, सिहरिकूडे, तिगिछिकूडे[6] ॥

महादह-पदं

८८ जवुद्दीवे दीवे छ महद्दहा पण्णत्ता, त जहा—पउमद्दहे, महापउमद्दहे, तिगिछिद्दहे[7], केसरिद्दहे, महापोडरीयद्दहे, पुडरीयद्दहे।

तत्थ ण छ देवयाओ महिड्ढियाओ जाव[8] पलिओवमट्ठितियाओ परिवसति, त जहा—सिरी, हिरी, धिती, कित्ती, वुद्धी, लच्छी ॥

णदी-पदं

८९ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण छ महाणदीओ पण्णत्ताओ, त जहा—गगा, सिधू, रोहिया, रोहितसा, हरी, हरिकता ॥

---

१ जिब्भमतो फासमतो (ग)।
२ स० पा०—एव चेव एव फासामातो वि।
३ स० पा०—भवति जाव फासामतेण।
४ णिसभकूडे (क, ग)।
५ णेल° (क)।
६ तिगिच्छकूडे (क, ख, ग)।
७ तिगिच्छ° (क), तिगिछ° (ख)।
८ ठा० २।२७१।

९० जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं छ महाणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णरकंता, णारिकंता, सुवण्णकूला, रुप्पकूला, रत्ता, रत्तवती ।।

९१ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उभयकूले छ अंतरणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—गाहावती, दहवती, पंकवती, तत्तजला, मत्तजला, उम्मत्तजला ।।

९२ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोदाए महाणदीए उभयकूले छ अंतरणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खीरोदा, सीहसोता, अंतोवाहिणी, उम्मिमालिणी, फेणमालिणी, गंभीरमालिणी ।।

धायइसंड-पुक्खरवर-पदं

९३ धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे णं छ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—हेमवए[1], °हेरण्णवते, हरिवस्से, रम्मगवासे, देवकुरा, उत्तरकुरा° ।।

९४ एवं जहा जंबुद्दीवे दीवे जाव[2] अंतरणदीओ जाव[3] पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे भाणितव्वं ।।

उउ-पदं

९५ छ उदू[4] पण्णत्ता, तं जहा—पाउसे, वरिसारत्ते, सरए, हेमंते, वसंते, गिम्हे ।।

ओमरत्त-पदं

९६ छ ओमरत्ता पण्णत्ता, तं जहा—ततिए पव्वे, सत्तमे पव्वे, एक्कारसमे पव्वे, पण्णरसमे पव्वे, एगूणवीसइमे पव्वे, तेवीसइमे पव्वे ।।

अतिरत्त-पदं

९७ छ अतिरत्ता पण्णत्ता, तं जहा—चउत्थे पव्वे, अट्ठमे पव्वे, दुवालसमे पव्वे, सोलसमे पव्वे, वीसइमे पव्वे, चउवीसइमे पव्वे ।।

अत्थोग्गह-पदं

९८ आभिणिबोहियणाणस्स णं छव्विहे अत्थोग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियत्थोग्गहे[5], °चक्खिंदियत्थोग्गहे, घाणिंदियत्थोग्गहे, जिब्भिंदियत्थोग्गहे, फासिंदियत्थोग्गहे°, णोइंदियत्थोग्गहे ।।

ओहिणाण-पदं

९९ छव्विहे ओहिणाणे पण्णत्ते, तं जहा—आणुगामिए, अणाणुगामिए, वड्ढमाणए, हायमाणए, पडिवाती, अपडिवाती ।।

---

१. सं० पा०—हेमवए···· ।
२. ठा० ६।८८-९२ ।
३. ठा० ३।१०८ ।
४. उड्ड (ग) ।
५. सं० पा०—सोइंदियत्थोग्गहे जाव णोइंदिय° ।

अवयण-पदं

१०० णो कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा इमाइं छ अवयणाइं[1] वदित्तए, तं जहा—अलियवयणे, हीलियवयणे, खिंसितवयणे, फरुसवयणे, गारत्थियवयणे, विउसवितं वा पुणो उदीरित्तए ॥

कप्पस्स पत्थार-पदं

१०१ छ कप्पस्स पत्थारा पण्णत्ता, तं जहा—पाणातिवायस्स वायं वयमाणे, मुसावायस्स वायं[2] वयमाणे, अदिण्णादाणस्स वायं वयमाणे, अविरतिवायं[3] वयमाणे, अपुरिसवायं वयमाणे, दासवायं वयमाणे—इच्चेते छ कप्पस्स पत्थारे पत्थारेत्ता[4] सम्ममपडिपूरेमाणे[5] तट्ठाणपत्ते ॥

पलिमंथु-पदं

१०२ छ कप्पस्स पलिमंथू[5] पण्णत्ता, तं जहा—कोकुइते[6] संजमस्स पलिमंथू, मोहरिए[7] सच्चवयणस्स पलिमंथू, चक्खुलोलुए[8] ईरियावहियाए[9] पलिमंथू, तितिणिए एसणागोयरस्स[10] पलिमंथू, इच्छालोभिते मोत्तिमग्गस्स पलिमंथू, भिज्जाणिदाणकरणे मोक्खमग्गस्स पलिमंथू, सव्वत्थ भगवता अणिदाणता[11] पसत्था ॥

कप्पट्ठिति-पदं

१०३ छव्विहा कप्पट्ठिती पण्णत्ता, तं जहा—सामाइयकप्पट्ठिती[12], छेओवट्ठावणियकप्पट्ठिती[13], णिव्विसमाणकप्पट्ठिती, णिव्विट्ठकप्पट्ठिती, जिणकप्पट्ठिती, थेरकप्पट्ठिती ॥

महावीरस्स छट्ठभत्त-पदं

१०४ समणे भगवं महावीरे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं मुंडे[14] °भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए ॥

१०५ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं अणंते अणुत्तरे[15] °णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे° समुप्पण्णे ॥

---

१ अवतणाइं (क, ख, ग)।
२ वादं (क)।
३ °वातं (क, ख, ग)।
४ सम्मा° (ख)।
५ पाठान्तरेण परिमन्था वाच्या (वृ)।
६ कोकुतिते (क, ख, ग)।
७ मोहरिते (क, ख, ग)।
८ चक्खुलोलुते (क, ख, ग)।
९ ईरितावहिताते (क, ख, ग)।
१० एसणागोतरस्स (क, ख, ग)।
११ अणिताणता (क, ख, ग)।
१२ सामातित° (क, ख, ग)।
१३. छेतोवट्ठावणित° (क, ख, ग)।
१४ सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइए।
१५ सं० पा०—अणुत्तरे जाव समुप्पण्णे।

१०६ समणे भगवं महावीरे छट्ठेण भत्तेण अपाणएण सिद्धे[1] •बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

विमाण-पद

१०७ सणकुमार-माहिंदेसु णं कप्पेसु विमाणा छ जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

देव-पद

१०८ सणकुमार-माहिंदेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जगा सरीरगा उक्कोसेणं छ रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

भोयण-परिणाम-पद

१०९ छव्विहे भोयणपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा—मणुण्णे, रसिए, पीणणिज्जे, 'विंहणिज्जे, मयणिज्जे[2], दप्पणिज्जे'[3] ॥

विसपरिणाम-पद

११० छव्विहे विसपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा—डक्के, भुत्ते, णिवतिते, मंसाणुसारी सोणिताणुसारी, अट्ठिमिंजाणुसारी ॥

पट्ठ-पद

१११ छव्विहे पट्ठे[4] पण्णत्ते, तं जहा—संसयपट्ठे, वुग्गहपट्ठे, अणुजोगी, अणुलोमे, तहणाणे, अतहणाणे ॥

विरहिय-पद

११२ चमरचंचा णं रायहाणी उक्कोसेणं छम्मासा विरहिया उववातेणं ॥
११३ एगमेगे णं इंदट्ठाणे उक्कोसेणं छम्मासे विरहिते उववातेणं ॥
११४ अधेसत्तमा णं पुढवी उक्कोसेणं छम्मासा विरहिता उववातेणं ॥
११५ सिद्धिगती णं उक्कोसेणं छम्मासा विरहिता उववातेणं ॥

आउयबंध-पद

११६ छव्विधे आउयबंधे पण्णत्ते, तं जहा—जातिणामणिधत्ताउए, गतिणामणिधत्ताउए, ठितिणामणिधत्ताउए, ओगाहणाणामणिधत्ताउए, पएसणामणिधत्ताउए, अणुभागणामणिहत्ताउए[5] ॥

११७ णेरइयाणं छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते, तं जहा—जातिणामणिहत्ताउए[6],

---

१ स० पा०—सिद्धे जाव सव्वदुक्ख° ।
२ दीवणिज्जे (वृ), मयणिज्जे (वृपा) ।
३ दप्पणिज्जे विंहणिज्जे मयणिज्जे (क, ग) ।
४. अट्ठे (वृपा) ।
५ अणुभाव° (क, ख, ग) ।
६. स० पा०—जातिणामणिहत्ताउते जाव अणुभाग° ।

•गतिणामणिहत्ताउए, ठितिणामणिहत्ताउए, ओगाहणाणामणिहत्ताउए, पएसणामणिहत्ताउए,° अणुभागणामणिहत्ताउए[1] ॥

११८ एव जाव[2] वेमाणियाण ॥

परभवियाउय-पद

११९ णेरइया णियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउय पगरेंति ॥

१२० एव असुरकुमाराविं जाव[3] थणियकुमारा ॥

१२१ असखेज्जवासाउया सण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिया णियम छम्मासावसेसाउया परभवियाउय पगरेंति ॥

१२२ असखेज्जवासाउया सण्णिमणुस्सा णियम[4] •छम्मासावसेसाउया परभवियाउय पगरेंति ॥

१२३ वाणमतरा जोतिसवासिया वेमाणिया जहा णेरइया[5] ॥

भाव-पद

१२४ छव्विधे भावे पण्णत्ते, त जहा—ओदइए[6], उवसमिए, खइए[7] खओवसमिए,[8] पारिणामिए, सण्णिवातिए ॥

पडिक्कमण-पद

१२५ छव्विहे पडिक्कमणे पण्णत्ते, त जहा—उच्चारपडिक्कमणे, पासवणपडिक्कमणे, इत्तरिए, आवकहिए, जकिंचिमिच्छा, सोमणतिए ॥

णक्खत्त-पदं

१२६ कत्तियाणक्खत्ते छत्तारे पण्णत्ते ॥

१२७ असिलेसाणक्खत्ते छत्तारे पण्णत्ते ॥

पावकम्म-पद

१२८ जीवा ण छट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा चिणति वा चिणिस्सति वा, त जहा—पुढविकाइयणिव्वत्तिए,[10] •आउकाइयणिव्वत्तिए,

---

१ अणुभाव° (क, ख, ग)।

२ ठा० १।१४२-१६३।

३ ठा० १।१४३-१५०।

४ स० पा०—णियम जाव पगरेंति।

५ ठा० ६।११९।

६ ओदतिते (क, ख, ग)।

७ खतिते (क, ख, ग)।

८ खतोवसमिते (क, ख, ग)।

९ इत्तिरिते (क, ख, ग)।

१० स०पा०—पुढविकाइयणिव्वत्तिते जाव तस°।

तेउकाइयणिव्वत्तिए, वाउकाइयणिव्वत्तिए, वणस्सइकाइयणिव्वत्तिए,° तसकायणिव्वत्तिए।

एव—चिण-उवचिण-वध-उदीर-वेय तह णिज्जरा चेव॥

पोग्गल-पद

१२६ छप्पएसिया ण खधा अणता पण्णत्ता॥

१३० छप्पएसोगाढा पोग्गला अणता पण्णत्ता॥

१३१ छसमयट्ठितीया पोग्गला अणता पण्णत्ता॥

१३२ छगुणकालगा पोग्गला जाव[1] छगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता॥

---

१. ठा० १।२५६।

सत्तमं ठाणं

गणावक्कमण-पदं

१. सत्तविहे गणावक्कमणे पण्णत्ते, तं जहा—'सव्वधम्मा रोएमि'[1]। एगइया रोएमि एगइया णो रोएमि। सव्वधम्मा वितिगिच्छामि। एगइया वितिगिच्छामि एगइया णो वितिगिच्छामि। सव्वधम्मा जुहुणामि। एगइया जुहुणामि एगइया णो जुहुणामि। इच्छामि णं भंते! एगल्लविहारपडिमं उवसंपिज्जत्ता णं विहरित्तए॥

विभंगणाण-पदं

२. सत्तविहे विभंगणाणे पण्णत्ते, तं जहा—एगदिसिं लोगाभिगमे, पंचदिसिं लोगाभिगमे, किरियावरणे जीवे, मुदग्गे जीवे, अमुदग्गे जीवे, रूवी जीवे, सव्वमिणं जीवा।

तत्थ खलु इमे पढमे विभंगणाणे—जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति। से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं पासति पाईणं वा पडिणं वा दाहिणं वा उदीणं वा उड्ढं वा जाव सोहम्मे कप्पे। तस्स णं एवं भवति—अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे—एगदिसिं[2] लोगाभिगमे। संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु—पंचदिसिं लोगाभिगमे। जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु—पढमे विभंगणाणे॥

अहावरे दोच्चे विभंगणाणे—जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति। से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं पासति पाईणं वा[3] पडिणं वा दाहिणं वा उदीणं वा उड्ढं वा जाव सोहम्मे कप्पे। तस्स णं एवं भवति—अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे—पंचदिसिं

---

१ सव्वधम्म जाणामि एवं पि एगे अवक्कमे (वृपा)।

२ एगदिसि (क, ग), एगदिसं (वृ)।

३ क्वचिद्वाशब्दा न दृश्यन्ते (वृ)।

लोगाभिगमे। सतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहसु—एगदिसिं लोगाभिगमे। जे ते एवमाहसु, मिच्छं ते एवमाहसु—दोच्चे विभगणाणे।

अहावरे तच्चे विभगणाणे—जया ण तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभगणाणे समुप्पज्जति। से ण तेण विभगणाणेण समुप्पण्णेण पासति पाणे अतिवातेमाणे, मुसं वयमाणे, अदिण्णमादियमाणे, मेहुणं पडिसेवमाणे, परिग्गहं परिगिण्हमाणे, राइभोयणं भुंजमाणे, पावं च णं कम्मं कीरमाणं णो पासति। तस्स णं एवं भवति—अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे—किरियावरणे जीवे। सतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहसु—णो किरियावरणे जीवे। जे ते एवमाहसु, मिच्छं ते एवमाहसु—तच्चे विभगणाणे।

अहावरे चउत्थे विभगणाणे—जया णं तधारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा[1] °विभगणाणे° समुप्पज्जति। से णं तेणं विभगणाणेणं समुप्पण्णेणं देवामेव पासति बाहिरब्भतरए पोग्गले परियाइत्ता[2] पुढेगत्तं[3] णाणत्तं फुसित्ता फुरित्ता फुट्टित्ता[4] विकुव्वित्ता णं चिट्ठित्तए। तस्स णं एवं भवति—अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे—मुदग्गे जीवे। सतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहसु—अमुदग्गे जीवे। जे ते एवमाहसु, मिच्छं ते एवमाहसु—चउत्थे विभगणाणे।

अहावरे पंचमे विभगणाणे—जया[5] णं तधारूवस्स समणस्स[6] °वा माहणस्स वा विभगणाणे° समुप्पज्जति। से णं तेणं विभगणाणेणं समुप्पण्णेणं देवामेव पासति बाहिरब्भतरए पोग्गलए अपरियाइत्ता[7] पुढेगत्तं णाणत्तं[8] °फुसित्ता फुरित्ता फुट्टित्ता° विउव्वित्ता णं चिट्ठित्तए। तस्स णं एवं भवति—अत्थि[9] °णं मम अतिसेसे णाणदंसणे° समुप्पण्णे—अमुदग्गे जीवे। सतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहसु—मुदग्गे जीवे। जे ते एवमाहसु, मिच्छं ते एवमाहसु—पंचमे विभगणाणे।

अहावरे छट्ठे विभगणाणे—जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा[10] °विभगणाणे° समुप्पज्जति। से णं तेणं विभगणाणेणं समुप्पण्णेणं देवामेव पासति बाहिरब्भतरए पोग्गले परियाइत्ता वा अपरियाइत्ता वा पुढेगत्तं णाणत्तं

---

१ सं० पा०—माहणस्स वा जाव समुप्पज्जति।
२ परितावितित्ता (क, ग)।
३ पुढविगत्त (ख)।
४ फुडित्ता (क, ख), फुट्टित्ता संवट्टित्ता निव्वट्टित्ता (वृपा)।
५ जधा (क, ग)।
६ सं० पा०—समणस्स जाव समुप्पज्जति।
७ अपरितादितित्ता (क, ख)।
८ सं० पा०—णाणत्तं जाव विउव्वित्ता।
९ सं० पा०—अत्थि जाव समुप्पण्णे।
१० सं० पा०—माहणस्स वा जाव समुप्पज्जति।

फुसित्ता[1] °फुरित्ता फुट्टित्ता° विकुव्वित्ता ण चिट्ठित्तए। तस्स ण एव भवति—अत्थि ण मम अतिसेसे णाणदसणे समुप्पण्णे—रूवी जीवे। सतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहसु—अरूवी जीवे। जे ते एवमाहसु, मिच्छ ते एवमाहसु—छट्ठे विभगणाणे।

अहावरे सत्तमे विभगणाणे—जया ण तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभगणाणे समुप्पज्जति। से ण तेण विभगणाणेण समुप्पण्णेण पासई सुहुमेण वायुकाएण फुड पोग्गलकाय एयत[2] वेयत[3] चलत खुब्भत फदत घट्टत उदीरेत त त भाव परिणमत। तस्स ण एव भवति—अत्थि ण मम अतिसेसे णाणदसणे समुप्पण्णे—सव्वमिण जीवा। सतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहसु—जीवा चेव, अजीवा चेव। जे ते एवमाहसु, मिच्छ ते एवमाहसु। तस्स ण इमे चत्तारि जीवणिकाया णो सम्ममुवगता[4] भवति, त जहा—पुढविकाइया, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया। इच्चेतेहिं चउहिं जीवणिकाएहिं मिच्छादड पवत्तेइ—सत्तमे विभगणाणे॥

जोणिसगह-पद

३ सत्तविवे जोणिसगहे[5] पण्णत्ते, त जहा—अडजा, पोतजा, जराउजा, रसजा, ससेयगा[6], समुच्छिमा, उब्भिगा॥

गति-आगति-पद

४. अडगा सत्तगतिया सत्तागतिया पण्णत्ता, त जहा—अडगे अडगेसु उववज्जमाणे अडगेहिंतो वा, पोतजेहिंतो वा[7], °जराउजेहिंतो वा, रसजेहिंतो वा, ससेयगेहिंतो वा, समुच्छिमेहिंतो वा°, उब्भिगेहिंतो वा उववज्जेज्जा।

सच्चेव[8] ण से अडए अडगत्त विप्पजहमाणे अडगत्ताए वा, पोतगत्ताए वा[9], °जराउजत्ताए वा, रसजत्ताए वा, ससेयगत्ताए वा, समुच्छिमत्ताए वा°, उब्भिगत्ताए वा गच्छेज्जा॥

५ पोतगा[10] सत्तगतिया सत्तागतिया एव चेव। सत्तण्हवि गतिरागती भाणियव्वा जाव[11] उब्भियत्ति॥

---

१ स० पा०—फुसित्ता जाव विकुव्वित्ता।
२ एतत (क, ख, ग)।
३ वेतत (क, ख, ग)।
४ °मुवागता (क, ख, ग)।
५ °सगवे (क)।
६ ससेत्तगा (क, ग)।
७ स० पा०—पोतजेहिंतो वा जाव उब्भिगेहिंतो।
८ सेच्चेव (ख)।
९ स० पा०—पोतगत्ताते वा जाव उब्भिगत्ताते।
१० पोत्तगा (क, ग)।
११ ठा० ७।३।

सगहट्ठाण-पदं

६ आयरिय-उवज्झायस्स ण गणसि सत्त सगहठाणा पण्णत्ता, त जहा—

१ आयरिय-उवज्झाए ण गणसि आण वा धारण वा सम्मं पउजित्ता भवति।

२. [1]•आयरिय-उवज्झाए ण गणसि आधारातिणियाए कितिकम्म सम्म पउजित्ता भवति।

३ आयरिय-उवज्झाए ण गणसि जे सुत्तपज्जवजाते धारेति ते काले-काले सम्ममणुप्पवाइत्ता भवति।

४ आयरिय-उवज्झाए ण गणसि गिलाणसेहवेयावच्च सम्मम०भुट्ठित्ता भवति°।

५ आयरिय-उवज्झाए ण गणसि आपुच्छियचारी यावि भवति, णो अणा-पुच्छियचारी[2]।

६ आयरिय-उवज्झाए ण गणसि अणुप्पण्णाइ उवगरणाइ सम्म उप्पाइत्ता भवति।

७ आयरिय-उवज्झाए ण गणसि पुव्वुप्पण्णाइ उवकरणाइ सम्म सारक्खेत्ता सगोवित्ता भवति, णो असम्म सारक्खेत्ता सगोवित्ता भवति ॥

असगहट्ठाण-पदं

७ आयरिय-उवज्झायस्स ण गणसि सत्त असगहठाणा पण्णत्ता, त जहा—

१ आयरिय-उवज्झाए ण गणसि आण वा धारण वा णो सम्म पउजित्ता भवति।

२ [3]•आयरिय-उवज्झाए ण गणसि आधारातिणियाए कितिकम्म णो सम्म पउजित्ता भवति।

३ आयरिय-उवज्झाए ण गणसि जे सुत्तपज्जवजाते धारेति ते काले-काले णो सम्ममणुप्पवाइत्ता भवति।

४ आयरिय-उवज्झाए ण गणसि गिलाणसेहवेयावच्च णो सम्मम०भुट्ठित्ता भवति।

५ आयरिय-उवज्झाए ण गणसि अणापुच्छियचारी यावि हवइ, णो आपुच्छियचारी।

६ आयरिय-उवज्झाए ण गणसि अणुप्पण्णाइ उवगरणाइ णो सम्म उप्पाइत्ता भवति।

---

१ स० पा०—एव जधा पचट्ठाणे जाव आयरिय। ३ स० पा०—एव जाव पच्चुप्पण्णाण।

२ °चारी यावि भवति (क, ख, ग)।

७ आयरिय-उवज्झाए ण गणसि° पच्चुप्पण्णाण उवगरणाण णो सम्म सारक्खेत्ता सगोवेत्ता भवति ।।

पडिमा-पद

८ सत्त पिंडेसणाओ पण्णत्ताओ ।।
९ सत्त पाणेसणाओ पण्णत्ताओ ।।
१० सत्त उग्गहपडिमाओ पण्णत्ताओ ।।

आयारचूला-पद

११ सत्तसत्तिक्कया पण्णत्ता ।।
१२ सत्त महज्झयणा पण्णत्ता ।।

पडिमा-पद

१३ सत्तसत्तमिया ण भिक्खुपडिमा एकूणपण्णत्ताए राइदिएहिं एगेण य छण्णउएण भिक्खासतेण अहासुत्त[1] °अहाअत्थ अहातच्च अहामग्ग अहाकप्प सम्म काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया° आराहिया[2] यावि भवति ।।

अहेलोगट्ठिति-पद

१४ अहेलोगे ण सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ ।।
१५ सत्त घणोदवीओ पण्णत्ताओ ।।
१६ सत्त घणवाता पण्णत्ता ।।
१७ सत्त तणुवाता पण्णत्ता ।।
१८ सत्त ओवासतरा पण्णत्ता ।।
१९ एतेसु ण सत्तसु ओवासतरेसु सत्त तणुवाया पइट्ठिया ।।
२० एतेसु ण सत्तसु तणुवातेसु सत्त घणवाता पइट्ठिया ।।
२१ एतेसु ण सत्तसु घणवातेसु सत्त घणोदवी पतिट्ठिया ।।
२२ एतेसु ण सत्तसु घणोदवीसु 'पिंडलग-पिहुल-सठाण-सठियाओ'[3] सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पढमा जाव सत्तमा ।।
२३ एतासि ण सत्तण्ह पुढवीण सत्त णामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—घम्मा, वसा, सेला, अजणा, रिट्ठा, मघा, माघवती ।।

---

१ अहासुत्ता (क, ख, ग), स० पा०—अहासुत्त जाव आराहिया ।

२ समवायाङ्गे (४९।१) 'आणाए आराहिया' पाठोऽस्ति ।

३ छत्तातिछत्तसठाणसठियाओ (वृ), पिंडलग-पिहुलसठाणसठिआओ, पिहुलपिहुलसठाण-सठियाओ (वृपा) ।

२४ एतासि ण सत्तण्ह पुढवीण सत्त गोत्ता पण्णत्ता, त जहा—रयणप्पभा, सक्करप्पभा, वालुअप्पभा, पकप्पभा, धूमप्पभा, 'तमा, तमतमा'[1] ।।

वायरवाउकाइय-पद

२५ सत्तविहा वायरवाउकाइया पण्णत्ता, त जहा—पाईणवाते, पडीणवाते[2], दाहिणवाते, उदीणवाते, उड्ढवाते, अहेवाते, विदिसिवाते ।।

सठाण-पद

२६ सत्त सठाणा पण्णत्ता, त जहा—दीहे, रहस्से, वट्टे, तसे, चउरसे, पिहुले, परिमडले ।।

भयट्ठाण-पद

२७ सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता, त जहा—इहलोगभए[3], परलोगभए, आदाणभए, अकम्हाभए, वेयणभए, मरणभए, असिलोगभए ।।

छउमत्थ-पद

२८ सत्तहि ठाणेहि छउमत्थ जाणेज्जा, त जहा—पाणे अइवाएत्ता भवति । मुस वइत्ता भवति । 'अदिण्ण आदित्ता'[4] भवति । सद्दफरिसरसरूवगधे आसादेत्ता भवति । पूयासक्कार[5] अणुवूहेत्ता भवति । इम सावज्जति पण्णवेत्ता पडिसेवेत्ता भवति । णो जहावादी[6] तहाकारी[7] यावि भवति ।।

केवलि-पद

२९ सत्तहि ठाणेहि केवली जाणेज्जा, त जहा—णो पाणे अइवाइत्ता भवति[8] । °णो मुस वइत्ता भवति । णो अदिण्ण आदित्ता भवति । णो सद्दफरिसरसरूवगधे आसादेत्ता भवति । णो पूयासक्कार अणुवूहेत्ता भवति । इम सावज्जति पण्णवेत्ता णो पडिसेवेत्ता भवति° । जहावादी तहाकारी यावि भवति ।।

गोत्त-पद

३० सत्त मूलगोत्ता पण्णत्ता, त जहा—कासवा, गोतमा, वच्छा, कोच्छा, कोसिआ, मडवा, वासिट्ठा ।।

३१ जे कासवा ते सत्तविधा पण्णत्ता, त जहा—ते कासवा, ते सडिल्ला, ते गोला, ते वाला, ते मुजइणो, ते पव्वतिणो[9], ते वरिसकण्हा ।।

---

१ तमप्पभा तमतमप्पभा (क) ।
२. पाडी° (क) ।
३ °भते (क, ख, ग) ।
४ अदिन्नमदितित्ता (क, ग) ।
५ पूता° (क, ख, ग) ।
६ जधा° (क, ख, ग) ।
७. तधा° (क, ख, ग) ।
८ स० पा०—अइवाइत्ता भवति जाव जधावाती ।
९ पव्वपेच्छतिणो (क्व) ।

३२ जे गोतमा ते सत्तविधा पण्णत्ता, त जहा—ते गोतमा, ते गग्गा, ते भारद्दा, ते अगिरसा, ते सक्कराभा, ते भक्खराभा, ते उदत्ताभा[1] ।।

३३ जे वच्छा ते सत्तविधा, पण्णत्ता, त जहा—ते वच्छा, ते अग्गेया, ते मित्तेया[2], ते सामलिणो, ते सेलयया[3], ते अट्ठिसेणा, ते वीयकण्हा ।।

३४ जे कोच्छा ते सत्तविधा पण्णत्ता, त जहा—ते कोच्छा, ते मोग्गलायणा, ते पिंगलायणा[4], ते कोडिणो [ण्णा ?], ते मडलिणो, ते हारिता, ते सोमया[5] ।।

३५ जे कोसिआ ते सत्तविधा पण्णत्ता, त जहा—ते कोसिआ, ते कच्चायणा, ते सालकायणा, ते गोलिकायणा, ते पक्खिकायणा, ते अग्गिच्चा, ते लोहिच्चा ।।

३६ जे मडवा ते सत्तविधा पण्णत्ता, त जहा—ते मडवा, ते आरिट्ठा, ते समुता,[6] ते तेला, ते एलावच्चा, ते कडिल्ला,[7] ते खारायणा[8] ।।

३७ जे वसिट्ठा ते सत्तविधा पण्णत्ता, त जहा—ते वासिट्ठा, ते उजायणा, ते जारुकण्हा,[9] ते वग्घावच्चा, ते कोडिण्णा, ते सण्णी, ते पारासरा ।।

णय-पद

३८ सत्त मूलणया पण्णत्ता, त जहा—णेगमे, सगहे, ववहारे, उज्जुसुते, सद्दे, समभिरूढे, एवभूते ।।

सरमडल-पद

३९. सत्त सरा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

सज्जे रिसभे गधारे, मज्झिमे पचमे सरे।
धेवते[10] चेव णेसादे,[11] सरा सत्त वियाहिता ।।१।।

४० एएसि ण सत्तण्ह सराण सत्त सरट्ठाणा पण्णत्ता, त जहा—

सज्ज तु अग्गजिब्भाए, उरेण रिसभ सर।
कठुग्गतेण गधार, मज्झजिब्भाए मज्झिम ।।१।।
णासाए पचम बूया, दतोट्ठेण य धेवत[12]।
'मुद्धाणेण य'[13] णेसाद, सरट्ठाणा वियाहिता। २।।

---

१ उद्दसणाभा (क टिप्पण), उदगत्ताभा (क्व)।
२ मित्ता (क, ग), मित्तेना (ख), मित्तिया (क्व)।
३ सेलतता (क, ख, ग)।
४ पिगातणा (क, ख, ग)।
५ सोमभी (क, ख, ग)।
६ समुता (ग)।
७. कतेल्ला (ख)।
८ खारातिणा (क), खातणा (ख), खारवेणा (ग)।
९ जारेकण्हा (क्व)।
१० रेवते (ग, वृपा)।
११ णेसाते (क, ख)।
१२ रेवत (क, ग)।
१३ भमुहक्खेवेण (अ० सू० २९९)।

४१ सत्त सरा जीवणिस्सिता पण्णत्ता, त जहा—

सज्ज रवति मयूरो, कुक्कुडो रिसभ सर।
हसो णदति[1] गधार, मज्झिम तु गवेलगा ॥१॥
अह कुसुमसभवे काले, कोइला पचम सर।
छट्ठ च सारसा कोचा, णेसाय सत्तम गजो[2] ॥२॥

४२ सत्त सरा अजीवणिस्सिता पण्णत्ता, त जहा—

सज्ज रवति मुइगो, गोमुही रिसभ सर।
सखो णदति[3] गधार, मज्झिम पुण झल्लरी ॥१॥
चउचलणपतिट्ठाणा, गोहिया पचम सर।
आडवरो धेवतिय[4], महाभेरी य सत्तम ॥२॥

४३ एतेसि ण सत्तण्ह सराण सत्त सरलक्खणा पण्णत्ता, त जहा—

सज्जेण लभति वित्ति, कत च ण विणस्सति।
गावो 'मित्ता य पुत्ता य'[5], णारीण चेव[6] वल्लभो ॥१॥
रिसभेण उ एसज्ज, सेणावच्च धणाणि य।
वत्थगधमलकार, इत्थिओ सयणाणि य ॥२॥
गधारे गीतजुत्तिण्णा, वज्जवित्ती[7] कलाहिया[8]।
भवति कइणो[9] पण्णा, जे अण्णे सत्थपारगा ॥३॥
मज्झिमसरसपण्णा[10], भवति सुहजीविणो।
खायती पियती[11] देती, मज्झिमसरमस्सितो ॥४॥
पचमसरसपण्णा[12], भवति पुढवीपती।
सूरा सगहकत्तारो, अणेगगणणायगा ॥५॥

---

१ रवइ (अ० सू० ३००)।
२ गओ (अ० सू० ३००)।
३ रवइ (अ० सू० ३०१)।
४ रेवतिय (क, ख, ग)।
५ पुत्ता य मित्ता य (अ० सू० ३०२)।
६ होई (अ० सू० ३०२)।
७ विज्जवित्ती (अ०सू० ३०२), स्थानाङ्गवृत्तौ अनुयोगद्वारस्य मलधारिहेमचन्द्रीयवृत्तौ च 'वर्यवृत्तय –प्रधानजीविका' इति व्याख्यातमस्ति, किन्तु अस्मिन् श्लोके कलाप्रधानाना शास्त्रप्रधानाना च निर्देशो वर्तते, तस्मिन् प्रसङ्गेऽत्र 'विज्जवित्ती' (वैद्यवृत्तय) इति पाठ समीचीन प्रतिभाति। अनुयोगद्वारस्य आदर्शद्वये असौ लब्ध एव। वृत्तिकारयो सम्मुखे 'वज्जवित्ती' इति पाठ आसीत्, तेन ताभ्या 'वर्यवृत्तय' इति व्याख्या कृता।
८ कलाहिता (क, ख, ग)।
९ कतिणो (क, ख, ग)।
१० मज्झिमसरमता उ (अ० सू० ३०२)।
११ पितती (क, ख, ग)।
१२ पचमसरमता उ (अ० सू० ३०२)।

धेवतसरसपण्णा[1], भवति कलहप्पिया[2]।
'साउणिया वग्गुरिया, सोयरिया मच्छवधा य'[3] ॥६॥
'चंडाला मुट्ठिया मेया, जे अण्णे पावकम्मिणो।
गोघातगा य जे चोरा, णेसाय[4] सरमस्सिता'[5] ॥७॥

४४ एतेसि णं सत्तण्हं सराणं तओ गामा पण्णत्ता, तं जहा—सज्जगामे मज्झिमगामे गंधारगामे ॥

४५ सज्जगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
मंगी कोरव्वीया, हरी य रयणी य सारकंता य।
छट्ठी य सारसी णाम, सुद्धसज्जा य सत्तमा ॥१॥

४६ मज्झिमगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
उत्तरमंदा रयणी, उत्तरा उत्तरायता[6]।
अस्सोकंता[7] य सोवीरा, 'अभिरू हवति'[8] सत्तमा ॥१॥

४७ गंधारगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
णंदी य खुद्दिमा[9] पूरिमा, य चउत्थी य सुद्धगंधारा।
उत्तरगंधाराविं य, पंचमिया हवति मुच्छा उ ॥१॥
सुट्ठुत्तरमायामा, सा छट्ठी णियमसो उ णायव्वा।
अह उत्तरायता, कोडिमा य[10] सा सत्तमी मुच्छा ॥२॥

४८ सत्त सरा कतो संभवंति? गीतस्स[11] का भवति जोणी?
कतिसमया[12] उस्सासा? कति वा गीतस्स[13] आगारा? ॥१॥
सत्त सरा णाभीतो, भवंति गीतं च रुण्णजोणीय[14]।
पदसमया[15] ऊसासा, तिण्णि य गीयस्स आगारा ॥२॥

---

१ रेवत० (क, ख, ग), धेवयसरमंता उ (अ० सू० ३०२)।
२ दुहजीविणो (अ० सू० ३०२)।
३ साउणिया वाउरिया, सोयरिया य मुट्ठिया (अ० सू० ३०२)।
४ णेसात (क, ख, ग)।
५. नेसायसरमंता उ, हवंति हिंसगा नरा। जंघाचरा लेहवाहा, हिंडगा भारवाहगा ॥ (अ० सू० ३०२)।
६ उत्तरासमा (क, ख, ग), अत्र आदर्शेषु 'उत्तरासमा' इति पाठो विद्यते, किन्तु वस्तुतः अनुयोगद्वारस्वीकृत 'उत्तरायता' पाठः समीचीनोस्ति, संगीतरत्नाकरेपि एतद् नाम लभ्यते, तेन असौ पाठः अत्रापि स्वीकृतः।
७ आसोकंता (ख, ग), आसकंता (अ० सू० ३०५)।
८ अभिरूवेति (क)।
९ खुड्डिया (अ० सू० ३०६)।
१०. तं (क, ग)।
११ गेयस्स (क, ख, ग)।
१२ कतिसमता (क, ख, ग)।
१३ गेयस्स (क, ख, ग)।
१४. रुय० (ख)।
१५ पादसमता (ख), पायसमा (अ०सू० ३०७)।

आइमिउ आरभता, समुव्वहृता य मज्झगारमि।
अवसाणे 'य झवेता'[1], तिण्णि य गेयस्स आगारा ॥३॥

छद्दोसे अट्ठगुणे, तिण्णि य वित्ताइ 'दो य'[2] भणितीओ।
'जो णाहिति'[3]सो गाहिइ, सुसिक्खिओ रगमज्झम्मि ॥४॥

भीत 'दूत रहस्स'[4], 'गायतो मा य गाहि उत्ताल'[5]।
काकस्सरमणुणास, च होति गेयस्स छद्दोसा ॥५॥

पुण्ण रत्त च अलकिय च वत्त तहा अविघुट्ठ।
मधुर सम सुललिय[6], अट्ठ गुणा होति गेयस्स ॥६॥

उर-कठ-सिर-विसुद्ध[7], च गिज्जते[8] मउय-रिभिअ-पदबद्ध।
समतालपडुक्खेव[9], सत्तसरसीहृर गेय[10] ॥७॥

णिद्दोस सारवत च, हेउजुत्तमलकिय।
उवणीत सोवयार च, मित मधुरमेव य ॥८॥

---

१ त ज्जवेता (ख, ग)।

२ दोण्णि (अ० सू० ३०७)।

३ जा णाहिति (ग)।

४ दुत उप्पिच्छ (वृपा), दुयमप्पिच्छ (अ० सू० ३०७)।

५ उत्ताल च कममो मुणेयव्व (अ०सू० ३०७)।

६ सुकुमार (क, ख, ग), वृत्तिकृता 'सुकुमार—ललित' इति व्याख्यातम्।

७ पसत्थ (क, ख, ग)।

८ गिज्जते (ख)।

९ °पडुक्खेव (क, ख, ग, वृ), आदर्शेषु 'पडुक्खेव' इति पाठो लिखितो लभ्यते, वृत्तावपि मुख्यत्वेनासौ व्याख्यातोस्ति, यथा—तथा सम प्रत्युत्क्षेप प्रतिक्षेपो वा—मुरजकशिकाद्यातोद्याना यो ध्वनिस्तल्लक्षण नृत्यत्पादक्षेपलक्षणो वा यस्मिस्तत्समप्रत्युत्क्षेप समप्रतिक्षेप वेति (वृत्ति पत्र ३७६)। वृत्तिकारेण 'पडुक्खेव' इति पाठो लब्धस्तत प्रत्युत्क्षेप इतिशब्दानुसारी अर्थ कृत, विकल्परूपेण नृत्यत्पादक्षेपलक्षण इत्यर्थोपि कृत। अनुयोगद्वारस्य हारीभद्रीयवृत्तौ 'पदुक्खेव' इति पाठ प्राप्यते। अर्थ सगत्यासौ समीचीनोस्ति। दु-डु वर्णयो प्राचीनलिप्या सादृश्येन 'पदुक्खेव इति स्थाने 'पडुक्खेव' इति परिवर्तन जात सम्भाव्यते।

१० अनुयोगद्वारे अस्या गायाया अनन्तर निम्नलिखिता गाथा वर्तते—

अक्खरसम पदसम,
तालसम लयसम गहसम च।
निस्ससिउस्ससियसम,
सचारसम सरा सत्त ॥
(अ० सू० ३०७)।

अत्र वृत्तिकृता अनुयोगद्वारटीकामाश्रित्य व्याख्या कृतास्ति—इय च गाथा स्वरप्रकरणोपान्ते 'ततिसम' मित्यादिरधीतापि इहाक्षरसममित्यादि व्याख्यायते, अनुयोगद्वारटीकायामेवमेवदर्शनादिति (वृ)।

सममद्धसम चेव, सव्वत्थ विसम च ज ।
तिण्णि वित्तप्पयाराइ[1], चउत्थ णोपलब्भती ॥९॥
सक्कता पागता चेव, 'दोण्णि य'[2] भणिति आहिया ।
सरमडलमि गिज्जते, पसत्था इसिभासिता ॥१०॥
केसी गायति[3] मधुर ? केसि गायति खर च रुक्ख च ?
केसी गायति चउर ? 'केसि विलव'[4] ? दुत केसी ?
विस्सर पुण केरिसी ? ॥११॥
सामा गायइ मधुर, काली गायइ खर च रुक्ख च ।
गोरी गायति चउर, काण विलव दुत अधा ॥
विस्सर पुण पिंगला ॥१२॥
ततिसम तालसम, पादसम लयसम गहसम च ।
णीससिऊससियसम, सचारसमा सरा सत्त ॥१३॥
सत्त सरा तओ गामा, मुच्छणा एकविंसती[5] ।
ताणा एगूणपण्णासा, समत्त सरमडल ॥१४॥

कायकिलेस-पद

४९ सत्तविधे कायकिलेसे पण्णत्ते, तं जहा—ठाणातिए[6], उक्कुडुयासणिए, पडिमठाई, वीरासणिए, णेसज्जिए, दडायतिए[7], लगडसाई ॥

खेत्त-पव्वय-णदी-पद

५० जवुद्दीवे दीवे सत्त वासा पण्णत्ता, त जहा—भरहे, एरवते, हेमवते, हेरण्णवते, हरिवासे[8], रम्मगवासे, महाविदेहे ॥

५१ जवुद्दीवे दीवे सत्त वासहरपव्वता पण्णत्ता, त जहा—चुल्लहिमवते, महाहिमवते, णिसढे[9], णीलवते, रुप्पी, सिहरी, मदरे ॥

५२ जवुद्दीवे दीवे सत्त महाणदीओ पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्द समप्पेंति[10],त जहा—गगा, रोहिता, हरी, सीता, णरकता, सुवण्णकूला रत्ता ॥

५३ जवुद्दीवे दीवे सत्त महाणदीओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्द समप्पेति, त जहा - सिंधू, रोहितसा, हरिकता, सीतोदा, णारिकता[11], रुप्पकूला, रत्तावती[12]॥

---

१ वित्तप्पयायाइ (ख) ।
२ दुव्विधा (क, ग) ।
३ गातति (क, ख, ग) ।
४ केसी य विलविय (अ० सू० ३०७) ।
५ ०वीसती (ख) ।
६ ठाणातिते (क, ख, ग) ।
७ दडातितिते (क, ग), दडातिए (ख) ।
८. हरिवसे (क, ग), अशुद्ध प्रतिभाति ।
९ निसभे (क, ग) ।
१० समुप्पेंति (क, ख, ग) ।
११. नारीकता (ख, ग) ।
१२. रत्तवती (क) ।

५४ धायइसडदीवपुरत्थिमद्धे ण सत्त वासा पण्णत्ता, त जहा—भरहे[1], •एरवते, हेमवते, हेरण्णवते, हरिवासे, रम्मगवासे°, महाविदेहे ॥

५५ धायइसडदीवपुरत्थिमद्धे ण सत्त वासहरपव्वता पण्णत्ता, त जहा—चुल्लहिमवते[2], •महाहिमवते, णिसढे, णीलवते, रुप्पी, सिहरी°, मदरे ॥

५६ धायइसडदीवपुरत्थिमद्धे ण सत्त महाणदीओ पुरत्थाभिमुहीओ कालोयसमुद्द समप्पेंति, त जहा—गगा[3], •रोहिता, हरी, सीता, णरकता, सुवण्णकूला°, रत्ता ॥

५७ धायइसडदीवपुरत्थिमद्धे ण सत्त महाणदीओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्द समप्पेंति, त जहा—सिधू[4], •रोहितसा, हरिकता, सीतोदा, णारिकता, रुप्पकूला°, रत्तावती ॥

५८ धायइसडदीवे पच्चत्थिमद्धे ण सत्त वासा एव[5] चेव, णवर—पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्द समप्पेंति, पच्चत्थाभिमुहीओ कालोद । सेस त चेव ॥

५९ पुक्खरवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धे ण सत्त वासा तहेव[6], नवर—पुरत्थाभिमुहीओ पुक्खरोद समुद्द समप्पेति, पच्चत्थाभिमुहीओ कालोद समुद्द समप्पेति । सेस त चेव ॥

६० एव पच्चत्थिमद्धेवि नवर—पुरत्थाभिमुहीओ कालोद समुद्द समप्पेति, पच्चत्थाभिमुहीओ पुक्खरोद समप्पेति । सव्वत्थ वासा वासहरपव्वता णदीओ य भाणितव्वाणि ॥

कुलगर-पद

६१ जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे तीताए[7] उस्सप्पिणीए सत्त कुलगरा हुत्था, त जहा—

संगहणी-गाहा

मित्तदामे सुदामे य, सुपासे य सयपभे ।
विमलघोसे सुघोसे य, महाघोसे य सत्तमे ॥१॥

६२ जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए सत्त कुलगरा हुत्था—

पढमित्थ विमलवाहण, चक्खुम जसम चउत्थमभिचदे ।
तत्तो य पसेणइए[8], मरुदेवे चेव णाभी य ॥१॥

---

१ स० पा०—भरहे जाव महाविदेहे ।
२ स० पा०—चुल्लहिमवते जाव मदरे ।
३. स० पा०—गगा जाव रत्ता ।
४ स० पा०—सिधू जाव रत्तावती ।
५ ठा० ७।५४-५७ ।
६ ठा० ७।५४-५७ ।
७ णतीतो (क, ख, ग) ।
८ पसेणइ पुण (ख) ।

६३ एएसि ण सत्तण्ह कुलगराण सत्त भारियाओ हुत्था, त जहा—

चदजस चदकता, सुरूव पडिरूव चक्खुकता य।
सिरिकता मरुदेवी, कुलकरइत्थीण णामाइ ॥१॥

६४ जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सत्त कुलकरा भविस्सति—

मित्तवाहण[1] सुभोमे य, सुप्पभे य सयपभे।
दत्ते सुहुमे सुबधू य, आगमिस्सेण होक्खती ॥१॥

६५ विमलवाहणे ण कुलकरे सत्तविधा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छिसु, त जहा—

मतगया[2] य भिगा, चित्तगा चेव होति चित्तरसा।
मणियगा य अणियणा, सत्तमगा कप्परुक्खा य ॥१॥

६६ सत्तविधा दडनीति पण्णत्ता, त जहा—हक्कारे, मक्कारे, धिक्कारे, परिभासे, मडलवधे, चारए, छविच्छेदे[3] ॥

चक्कवट्टिरयण-पद

६७ एगमेगस्स ण रण्णो चाउरतचक्कवट्टिस्स सत्त एगिदियरतणा पण्णत्ता, त जहा—चक्करयणे, छत्तरयणे, चम्मरयणे, दडरयणे, असिरयणे, मणिरयणे, काकणिरयणे[4] ॥

६८ एगमेगस्स ण रण्णो चाउरतचक्कवट्टिस्स सत्त पचिदियरतणा पण्णत्ता, त जहा—सेणावतिरयणे, गाहावतिरयणे, वड्ढइरयणे, पुरोहितरयणे, इत्थिरयणे, आसरयणे, हत्थिरयणे ॥

दुस्समा-लक्खण-पद

६९ सत्तहि ठाणेहि ओगाढ दुस्सम जाणेज्जा, त जहा—अकाले वरिसइ, काले ण वरिसइ, असाधू पुज्जति, साधू ण पुज्जति, गुरूहि जणो मिच्छ पडिवण्णो, मणोदुहता, वइदुहता ॥

सुसमा-लक्खण-पद

७० सत्तहि ठाणेहि ओगाढ सुसम जाणेज्जा, तं जहा—अकाले ण वरिसइ, काले

---

१ मित्तप्पभे (क, ग)।

२ मत्तगता (क, ख, ग), यद्यपि आदर्शेषु वृत्तावपि चात्र 'मत्तगता' पाठो लभ्यते, तथापि अर्थसमीक्षया 'मतगया' पाठ समीचीन प्रतिभाति। 'मदगया' इत्यस्य स्थाने 'त' श्रुत्या 'मतगया' इति पाठो जात, तस्यैव 'मत्तगता' इत्याकारे परिवर्तन जातमिति सभाव्यते। तेनैव वृत्तिकृता 'मत्ताग' शब्दो व्याख्यात —मत्त–मदस्तस्य कारणत्वान्मद्यमिह मत्तशब्देनोच्यते तस्याङ्गभूता –कारणभूतास्तदेव वाऽङ्ग —अवयवो येषा ते मत्ताङ्गका (वृ)।

३ छव्विछेदे (ख)।

४ कागिणि० (ग)।

वरिसइ, असावू ण पुज्जति, साधू पुज्जति, गुरूहिं जणो सम्म पडिवण्णो, मणोसुहता, वइसुहता ।

जीव-पद

७१ सत्तविहा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, त जहा—णेरइया, तिरिक्खजोणिया, तिरिक्खजोणिणीओ, मणुस्सा, मणुस्सीओ, देवा, देवीओ ।

आउभेद-पदं

७२ सत्तविघे आउभेदे पण्णत्ते, त जहा—

सगहणी-गाहा

अज्झवसाण-णिमित्ते, आहारे वेयणा पराघाते ।
फासे आणापाणू 'सत्तविध भिज्जए'[1] आउ ॥१॥

जीव -पद

७३ सत्तविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, त जहा—पुढविकाइया, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया, वणस्सतिकाइया, तसकाइया, अकाइया ।
अहवा—सत्तविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, त जहा—कण्हलेसा[2], •णीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा, पम्हलेसा°, सुक्कलेसा, अलेसा ॥

बभदत्त-पद

७४ बभदत्ते ण राया चाउरतचक्कवट्टी सत्त धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण, सत्त य वाससयाइ परमाउ पालइत्ता कालमासे काल किच्चा अधेसत्तमाए पुढवीए अप्पतिट्ठाणे णरए णरइयत्ताए उववण्णे ॥

मल्ली-पव्वज्जा-पद

७५ मल्ली ण अरहा अप्पसत्तमे मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए, त जहा—मल्ली विदेहरायवरकण्णगा, पडिबुद्धी इक्खागराया, चदच्छाये अगराया, रुप्पी कुणालाधिपती, सखे कासीराया, अदीणसत्तू कुरुराया, जितसत्त पचालराया ॥

दंसण-पदं

७६ सत्तविहे दसणे पण्णत्ते, त जहा—सम्मद्दसणे, मिच्छद्दसणे, सम्मामिच्छदसणे, चक्खुदसणे, अचक्खुदसणे, ओहिदसणे, केवलदसणे[3] ॥

---

१. सत्त विधि विभिज्जए (क, ग) ।
२ स० पा०—कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा ।
३. केवलि° (क, ग) ।

छउमत्थ-केवलि-पदं

७७. छउमत्थ-वीयरागे ण मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ वेदेति, त जहा—णाणावरणिज्ज, दसणावरणिज्ज[1], वेयणिज्ज, आउय, णाम, गोत, अतराइय ॥

७८ सत्त ठाणाइ छउमत्थे सव्वभावेण ण याणति ण पासति, त जहा—धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, जीव असरीरपडिवद्ध, परमाणुपोग्गल, सद्द, गध ।

एयाणि चेव उप्पण्णणाण[2]•दसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेण॰ जाणति पासति, त जहा—धम्मत्थिकाय[3], •अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, जीव असरीरपडिवद्ध, परमाणुपोग्गल, सद्द॰, गध ॥

महावीर-पद

७९ समणे भगव महावीरे वइरोसभणारायसघयणे समचउरस-सठाण-सठिते सत्त रयणीओ उड्ढ उच्चत्तेण हुत्था ॥

विकहा-पद

८० सत्त विकहाओ[4] पण्णत्ताओ, त जहा—इत्थिकहा, भत्तकहा, देसकहा, रायकहा, मिउकालुणिया[5], दसणभेयणी, चरित्तभेयणी ॥

आयरिय-उवज्झाय-अइसेस-पद

८१ आयरिय-उवज्झायस्स ण गणसि सत्त अइसेसा पण्णत्ता, त जहा—

१ आयरिय-उवज्झाए अतो उवस्सयस्स[6] पाए[7] णिगिज्झिय-णिगिज्झिय पप्फोडेमाणे वा पमज्जमाणे वा णातिक्कमति ।

२ [8]•आयरिय-उवज्झाए अतो उवस्सयस्स उच्चारपासवण विगिंचमाणे वा विसोधेमाणे वा णातिक्कमति ।

३. आयरिय-उवज्झाए पभू इच्छा वेयावडिय करेज्जा, इच्छा णो करेज्जा ।

४ आयरिय-उवज्झाए अतो उवस्सयस्स एगरात वा दुरात वा एगगो वसमाणे णातिक्कमति ।

५ आयरिय-उवज्झाए॰ वाहिं उवस्सयस्स एगरात वा दुरात वा [एगओ ?] वसमाणे णातिक्कमति ।

---

१ दरिसणा॰ (क, ग) ।
२ स॰ पा॰—उप्पण्णणाण जाव जाणति ।
३ स॰ पा॰—धम्मत्थिकाय जाव गध ।
४ विकधातो (क, ग) ।
५ मिउकालणिता (क,ग), मिउकोलुणिता (ख) ।
६ उवस्सगस्स (क, ख, ग) ।
७ पाते (क, ख, ग) ।
८ स॰ पा॰— एव जधा पचट्ठाणे जाव वाहिं ।

६ उवकरणातिसेसे ।
७ भत्तपाणातिसेसे ॥

सजम-असंजम-पदं

८२ सत्तविधे सजमे पण्णत्ते, त जहा—पुढविकाइयसजमे[1], •आउकाइयसजमे, तेउकाइयसजमे, वाउकाइयसजमे, वणस्सइकाइयसजमे°, तसकाइयसजमे, अजीवकाइयसजमे ॥

८३ सत्तविधे असजमे पण्णत्ते, त जहा—पुढविकाइयअसजमे[2], •आउकाइयअसजमे, तेउकाइयअसजमे, वाउकाइयअसजमे, वणस्सइकाइयअसजमे°, तसकाइयअसजमे, अजीवकाइयअसजमे[3] ॥

आरभ-पदं

८४ सत्तविहे आरभे पण्णत्ते, त जहा—पुढविकाइयआरभे[4], आउकाइयआरभे, तेउकाइयआरभे, वाउकाइयआरभे, वणस्सइकाइयआरभे, तसकाइयआरभे°, अजीवकाइयआरभे ॥

८५ [5]•सत्तविहे अणारभे पण्णत्ते, त जहा—पुढविकाइयअणारभे[6] ॥

८६ सत्तविहे सारभे[7] पण्णत्ते, त जहा—पुढविकाइयसारभे[8] ॥

८७ सत्तविहे असारभे पण्णत्ते, त जहा—पुढविकाइयअसारभे[9] ॥

८८ सत्तविहे समारभे पण्णत्ते, त जहा—पुढविकाइयसमारभे[10] ॥

८९ सत्तविहे असमारभे पण्णत्ते, त जहा—पुढविकाइयअसमारभे[11]° ॥

जोणि-ठिइ-पद

९० अध भते ! अदसि-कुसुम्भ-कोद्दव-कगु-रालग-'वरट्ट-कोद्दूसग'[12]-सण-सरिसव-मूलगबीयाण—एतेसि ण धण्णाण कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताण[13] •मचाउत्ताण मालाउत्ताण ओलित्ताण लित्ताण लछियाण मुद्दियाण° पिहियाण केवइय काल जोणी सचिट्ठति ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण[14] सत्त सवच्छराइ । तेण पर जोणी

---

१. स० पा०—पुढविकातितसजमे जाव तस° ।
२ स० पा०—पुढविकातितअसजमे जाव तस° ।
३. अजीवकाय° (ख, ग) ।
४ स० पा०—पुढविकातितआरभे जाव अजीव° ।
५ स० पा०—एवमणारभेवि जाव अजीवकाय-असमारभे ।
६ पू०—ठा० ७।८४ ।
७ रभे (क) ।
८-११ पू०—ठा० ७।८४ ।
१२ वराकोद्दूसगा (ख, ग), भगवत्या (६।१३१) 'वरग' इति पाठोस्ति ।
१३ स० पा०—पल्लाउत्ताण जाव पिहियाण ।
१४ उक्कोस (क, ग) ।

पमिलायति[1], °तेण पर जोणी पविद्धसति, तेण पर जोणी विद्धसति, तेण पर वीए अवीए भवति, तेण पर° जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते ॥

ठिति-पद

९१ वायरआउकाइयाण उक्कोसेण सत्त वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता ॥

९२ तच्चाए ण वालुयप्पभाए[2] पुढवीए उक्कोसेण णेरइयाण सत्त सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

९३ चउत्थीए ण पकप्पभाए पुढवीए जहण्णेण णेरइयाण सत्त सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

अग्गमहिसी-पद

९४ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ॥

९५ ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ॥

९६ ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ॥

देव-पदं

९७ ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो अब्भितरपरिसाए देवाण सत्त पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

९८ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो अग्गमहिसीण देवीण सत्त पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

९९ सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाण देवीण उक्कोसेण सत्त पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

१००. 'सारस्सयमाइच्चाण [देवाण ?] सत्त देवा सत्तदेवसता पण्णत्ता ॥

१०१ गद्दतोयतुसियाण देवाण सत्त देवा सत्त देवसहस्सा पण्णत्ता'[3] ॥

१०२ सणकुमारे कप्पे उक्कोसेण देवाण सत्त सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

१०३ माहिंदे कप्पे उक्कोसेण देवाण सातिरेगाइ सत्त सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

१०४ वभलोगे कप्पे जहण्णेण देवाण सत्त सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

१०५ वभलोय-लतएसु ण कप्पेसु विमाणा सत्त जोयणसताइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥

१०६ भवणवासीण देवाण भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेण सत्त रयणीओ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥

---

१ स० पा०—पमिलायति जाव जोणी° ।

२ वालुप्पभाते (ख, ग) ।

३ तुलना—भ० ६।११४ ।

१०७ [1]वाणमंतराणं देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

१०८ जोइसियाणं देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

१०९ सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु देवाणं 'भवधारणिज्जा सरीरगा'[2] उक्कोसेणं सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

णंदीसरवर-पदं

११० णंदिस्सरवरस्स णं दीवस्स अंतो सत्त दीवा पण्णत्ता, तं जहा—जंबुद्दीवे, धायइ-संडे, पोक्खरवरे, वरुणवरे, खीरवरे, घयवरे, खोयवरे ॥

१११ णंदीसरवरस्स णं दीवस्स अंतो सत्त समुद्दा पण्णत्ता, तं जहा—लवणे, कालोदे[3], पुक्खरोदे, वरुणोदे, खीरोदे, घओदे, खोओदे[4] ॥

सेढि-पदं

११२ सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुआयता, एगतोवंका, दुहतोवंका, एगतो-खहा[5], दुहतोखहा, चक्कवाला, अद्धचक्कवाला ॥

अणिय-अणियाहिवइ-पदं

११३ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाधिपती[6] पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए, पीढाणिए, कुंजराणिए, महिसाणिए, रहाणिए, णट्टाणिए, गंधव्वाणिए।

[7]दुमे पायत्ताणियाधिवती, सोदामे आसराया पीढाणियाधिवती, कुंथू हत्थि-राया कुंजराणियाधिवती, लोहितक्खे महिसाणियाधिवती°, किण्णरे रधाणि-याधिवती, रिट्ठे णट्टाणियाधिवती, गीतरती गंधव्वाणियाधिवती ॥

११४ बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सत्ताणिया, सत्त अणियाधिपती पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए[8] जाव[9] गंधव्वाणिए।

महद्दुमे पायत्ताणियाधिपती जाव[10] किंपुरिसे रधाणियाधिपती, महारिट्ठे[11] णट्टा-णियाधिपती, गीतजसे गंधव्वाणियाधिपती ॥

---

१. सं० पा०—एवं वाणमंतराणं एवं जोइ-सियाणं।

२ भवधारणिज्जगा सरीरा (क, ख, ग)।

३ कालोते (क, ख, ग)।

४ खोतोदे (क, ख, ग)।

५ °खुहा (ग)।

६ अणित्ता° (ख)।

७ सं० पा०—एवं जहा पंचट्ठाणे जाव किण्णरे।

८. पत्ताणिते (क, ग)।

९ ठा० ७।११३।

१० ठा० ५।५८।

११ महारिहे (क, ख, ग)।

११५ धरणस्स ण णागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाधिपती पण्णत्ता, त जहा—पायत्ताणिए जाव[1] गधव्वाणिए ।
भद्दसेणे[2] पायत्ताणियाधिपती जाव[3] आणदे रधाणियाधिपती, णदणे णट्टाणियाधिपती, तेतली गधव्वाणियाधिपती ॥

११६ भूताणदस्स ण णागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाहिवई पण्णत्ता, त जहा —पायत्ताणिए जाव[4] गधव्वाणिए ।
दक्खे पायत्ताणियाहिवती जाव[5] णदुत्तरे रहाणियाहिवई, रती णट्टाणियाहिवई, माणसे गधव्वाणियाहिवई ॥

११७ [6]•जधा धरणस्स तधा[7] सव्वेसिं दाहिणिल्लाण जाव[8] घोसस्स ॥

११८ जधा भूताणदस्स तधा[9] सव्वेसिं उत्तरिल्लाण जाव[10] महाघोसस्स• ॥

११९ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाहिवती पण्णत्ता, त जहा—पायत्ताणिए जाव[11] रहाणिए, णट्टाणिए, गधव्वाणिए ।
हरिणेगमेसी पायत्ताणियाधिपती जाव[12] माढरे रधाणियाधिपती, सेते णट्टाणियाहिवती, तुवुरु[13] गधव्वाणियाधिपती ॥

१२० ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाहिवई पण्णत्ता, त जहा—पायत्ताणिए जाव[14] गधव्वाणिए ।
लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवती जाव[15] महासेते णट्टाणियाहिवती, रते गधव्वाणिताधिपती ॥

१२१ [16]•जधा सक्कस्स तहा[17] सव्वेसिं दाहिणिल्लाण जाव[18] आरणस्स ॥

---

१ ठा० ७।११३ ।
२ रुद्दसेणे (क, ख, ग) । पचमस्थाने (सू० ५९) पादातानीकाधिपतेर्नाम 'भद्दसेणे' विद्यते, तस्यानुसारेणात्रापि 'भद्दसेणे' पाठो युज्यते । सभवतो लिपिदोषेण 'भ' स्थाने 'रु' वर्णो जात अथवा कश्चिद् वाचनाभेद• स्यात् । आवश्यकचूर्णो 'रुद्दसेण' इति नाम लभ्यते—दाहिणिल्लाण पादत्ताणियाधिवती रुद्दसेणो (पृ० १४६) जवूद्वीपप्रज्ञप्तौ (वक्ष ५) 'भद्दसेणे' पाठो लभ्यते ।
३. ठा० ५।५९ ।
४. ठा० ७।११३ ।
५ ठा० ५।६० ।
६ स० पा०—एव जाव घोसमहाघोसाण णेयव्व ।
७ ठा० ७।११५ ।
८ ठा० २।३५५-३६१ ।
९ ठा० ७।११६ ।
१० ठा० २।३५५-३६१ ।
११ ठा० ५।६४ ।
१२ ठा० ५।६४ ।
१३ तवुरू (क), तवुरु (ख), तपुरू (ग) ।
१४ ठा० ७।११९ ।
१५ ठा० ५।६५ ।
१६ स० पा०—सेस जहा पचट्ठाणे एव जाव अच्चुतस्सवि णेतव्व ।
१७ पू०—ठा० ७।११९ ।
१८ ठा० २।३८१- ३८४ ।

१२२ जधा ईसाणस्स तहा[1] सव्वेसिं उत्तरिल्लाण जाव[2] अच्चुतस्स° ॥

१२३ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणियाधिपतिस्स सत्त कच्छाओ पण्णत्ताओ, त जहा—पढमा कच्छा जाव सत्तमा कच्छा ॥

१२४ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणियाधिपतिस्स पढमाए कच्छाए चउसट्ठि देवसहस्सा पण्णत्ता। जावतिया पढमा कच्छा तव्विगुणा दोच्चा कच्छा। जावतिया दोच्चा कच्छा तव्विगुणा तच्चा कच्छा। एव जाव जावतिया छट्ठा कच्छा तव्विगुणा सत्तमा कच्छा ॥

१२५ एव[3] बलिस्सवि, णवर—महद्दुमे सट्ठिदेवसाहस्सिओ। सेस त चेव[4] ॥

१२६ धरणस्स एव[5] चेव, णवर—अट्ठावीस देवसहस्सा। सेस त चेव[6] ॥

१२७ जधा धरणस्स एव जाव[7] महाघोसस्स, णवर—पायत्ताणियाधिपती अण्णे, ते पुव्वभणिता ॥

१२८ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो हरिणेगमेसिस्स सत्त कच्छाओ पण्णत्ताओ, त जहा—पढमा कच्छा एव जहा चमरस्स तहा[8] जाव[9] अच्चुतस्स। णाणत्त पायत्ताणियाधिपतीण। ते पुव्वभणिता। देवपरिमाण इम—सक्कस्स चउरासीतिं देवसहस्सा, ईसाणस्स असीतिं[10] देवसहस्साइ जाव[11] अच्चुतस्स लहुपरक्कमस्स दस देवसहस्सा जाव[12] जावतिया छट्ठा कच्छा तव्विगुणा सत्तमा कच्छा। देवा इमाए गाथाए अणुगतव्वा -

चउरासीति असीति, बावत्तरी सत्तरी य सट्ठी य।
पण्णा चत्तालीसा, तीसा वीसा य दससहस्सा ॥१॥

वयणविकप्प-पदं

१२९ सत्तविहे वयणविकप्पे[13] पण्णत्ते, त जहा—आलावे, अणालावे, उल्लावे, अणुल्लावे[14], सलावे, पलावे, विप्पलावे ॥

विणय-पदं

१३० सत्तविहे विणए पण्णत्ते, त जहा—णाणविणए, दसणविणए, चरित्तविणए, मणविणए, वइविणए, कायविणए, लोगोवयारविणए ॥

---

१ ठा० ७।१२०।
२ ठा० २।३८१-३८४।
३ ठा० ७।१२३।
४ ठा० ७।१२४।
५. ठा० ७।१२३।
६ ठा० ७।१२४।
७ ठा० २।३५४-३६२।
८ ठा० ७।१२३, १२४।
९ ठा० २।३८०-३८४।
१० असीति (क ग)।
११ ठा० २।३८१-३८४।
१२ ठा० ७।१२४।
१३ वतणविकप्पे (क, ख, ग)।
१४ अणुलावे (वृपा)।

१३१ पसत्थमणविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—अपावए, असावज्जे, अकिरिए, णिरुवक्केसे, अणण्हयकरे, अच्छविकरे, अभूताभिसकणे[1]।

१३२ अपसत्थमणविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—पावए, सावज्जे, सकिरिए, सउवक्केसे, अण्हयकरे[2], छविकरे, भूताभिसकणे ॥

१३३ पसत्थवइविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—अपावए, असावज्जे[3], °अकिरिए, णिरुवक्केसे, अणण्हयकरे, अच्छविकरे°, अभूताभिसकणे ॥

१३४ अपसत्थवइविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—पावए[4], °सावज्जे, सकिरिए, सउवक्केसे, अण्हयकरे, छविकरे°, भूताभिसकणे ॥

१३५ पसत्थकायविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—आउत्तं गमणं, आउत्तं ठाणं, आउत्तं णिसीयणं, आउत्तं तुअट्टणं, आउत्तं उल्लंघणं, आउत्तं पल्लंघणं, आउत्तं सव्विंदियजोगजुंजणता[5] ॥

१३६ अपसत्थकायविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—अणाउत्तं गमणं[6], °अणाउत्तं ठाणं, अणाउत्तं णिसीयणं, अणाउत्तं तुअट्टणं, अणाउत्तं उल्लंघणं, अणाउत्तं पल्लंघणं°, अणाउत्तं सव्विंदियजोगजुंजणता ॥

१३७ लोगोवयारविणए[7] सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—अब्भासवत्तितं[8], परच्छंदाणुवत्तितं, कज्जहेउं, कतपडिकतिता, अत्तगवेसणता, देसकालण्णता, सव्वत्थेसु अपडिलोमता ॥

समुग्घात-पद

१३८ सत्त समुग्घाता पण्णत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए, वेउव्वियसमुग्घाए, तेजससमुग्घाए[9], आहारगसमुग्घाए, केवलिसमुग्घाए[10] ॥

१३९ मणुस्साणं सत्त समुग्घाता पण्णत्ता एवं चेव ॥

पवयणणिण्हग-पद

१४० समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तित्थंसि सत्त पवयणणिण्हगा[11] पण्णत्ता,

१ अभिभूता° (क, ग)।
२ अण्हकरे (क, ख, ग)।
३. स० पा०—असावज्जे जाव अभूताभिसकणे।
४ स० पा०—पावते जाव भूताभिसकणे।
५ सव्विंदित° (क, ख, ग)।
६. स० पा०—गमणं जाव अणाउत्तं।
७ लोगोवतारविणते (क, ख, ग)।
८ आभा° (क, ग)।
९ तेयग° (ख)।
१० केवल° (ख)।
११. पवतण° (क, ख, ग)।

त जहा—वहुरता, जीवपएसिया[1], अवत्तिया[2], सामुच्छेइया[3], दोकिरिया[4], तेरासिया[5], अवद्धिया[6] ॥

१४१ एएसि ण सत्तण्ह पवयणणिण्हगाण सत्त धम्मायरिया[7] हुत्था, त जहा—जमाली, तीसगुत्ते, आसाढे, आसमित्ते, गंगे, छलुए, गोट्ठामाहिले ॥

१४२ एतेसि ण सत्तण्ह पवयणणिण्हगाण सत्तउप्पत्तिणगरा हुत्था, त जहा—

संगहणी-गाहा

सावत्थी उसभपुर, सेयविया मिहिलउल्लगातीरं[8] ।
पुरिमतरंजि दसपुर, णिण्हगउप्पत्तिणगराइ ॥१॥

अणुभाव-पदं

१४३ सातावेयणिज्जस्स ण कम्मस्स सत्तविवे अणुभावे पण्णत्ते, त जहा—मणुण्णा सद्दा, मणुण्णा रूवा[9], °मणुण्णा गंधा, मणुण्णा रसा°, मणुण्णा फासा, मणोसुहता, वइसुहता ॥

१४४ असातावेयणिज्जस्स णं कम्मस्स सत्तविवे अणुभावे पण्णत्ते, त जहा—अमणुण्णा सद्दा[10], °अमणुण्णा रूवा, अमणुण्णा गंधा, अमणुण्णा रसा, अमणुण्णा फासा, मणोदुहता°, वइदुहता ॥

णक्खत्त-पदं

१४५ महाणक्खत्ते सत्ततारे पण्णत्ते ॥

१४६ अभिईयादिया[11] ण सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया[12] पण्णत्ता, त जहा—अभिई[13], सवणो, वणिट्ठा, सतभिसया[14], पुव्वभद्दवया, उत्तरभद्दवया, रेवती ॥

---

१ जीवपतेसिता (क, ख, ग) ।
२. अवत्तिता (क, ख, ग) ।
३ सामुच्छेइता (क, ख, ग) ।
४. दोकिरिता (क, ख, ग) ।
५ तेरासिता (क, ख, ग) ।
६. अवद्धिता (क), अवद्धिता (ख, ग) ।
७ धम्मातरिता (क, ख, ग) ।
८ मिहला उल्लग° (ख) ।
९ स० पा०—रूवा जाव मणुण्णा ।
१० स० पा०—सद्दा जाव वतिदुहता ।
११ अभितीयादिता (क, ख, ग), इह चार्ये पञ्च मतानि सन्ति, यत आह चद्रप्रज्ञप्त्याम्—"तत्थ खलु इमाओ पच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तत्थेगे एवमाहसु—कत्तिआइया सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता" एवमन्ये मघादीन्यपरे धनिष्ठादीनि इतरेऽश्विन्यादीनि अपरे भरण्यादीनि, दक्षिणापरोत्तरद्वाराणि च सप्त सप्त यथामत क्रमेणैव समवसेयानीति, 'वय पुण एव वयामो—अभियाइया ण सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एव दक्षिणद्वारिकादीन्यपि क्रमेणैवेति, तदिह पष्ठ मतमाश्रित्य सूत्राणि प्रवृत्तानि, लोके तु प्रथम मतमाश्रित्यैतदभिधीयते' (वृ) ।
१२ पुव्वदारिता (क, ख, ग) ।
१३ अभिती (क, ख, ग) ।
१४ सतभिसता (क, ख, ग) ।

१४७ अस्सिणियादिया[1] ण सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, त जहा—अस्सिणी, भरणी, कित्तिया[2], रोहिणी, मिगसिरे[3], अद्दा, पुणव्वसू ॥

१४८ पुस्सादिया ण सत्त णक्खत्ता अवरदारिया पण्णत्ता, त जहा—पुस्सो, असिलेसा[4], मघा, पुव्वाफग्गुणी[5], उत्तराफग्गुणी, हत्थो, चित्ता ॥

१४९ सातियाइया ण सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, त जहा—साती, विसाहा, अणुराहा, जेट्ठा, मूलो, पुव्वासाढा, उत्तरासाढा ॥

कूड-पद

१५० जबुद्दीवे दीवे सोमणसे वक्खारपव्वते सत्त कूडा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

सिद्धे सोमणसे या[6], वोद्धव्वे[7] मगलावतीकूडे ।
देवकुरु विमल कचण, विसिट्ठकूडे य[8] वोद्धव्वे ॥१॥

१५१ जबुद्दीवे दीवे गधमायणे वक्खारपव्वते सत्त कूडा पण्णत्ता, त जहा—

सिद्धे य[9] गधमायण, वोद्धव्वे गधिलावतीकूडे ।
उत्तरकुरु फलिहे, लोहितक्खे आणदणे चेव ॥१॥

कुलकोडी-पद

१५२ विइदियाण[10] सत्त जाति[11]-कुलकोडि-जोणीपमुह-सयसहस्सा पण्णत्ता ॥

पावकम्म-पद

१५३ जीवा ण सत्तट्ठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा चिणति वा चिणिस्सति वा, त जहा—णेरइयनिव्वत्तिते[12], °तिरिक्खजोणियणिव्वत्तिते, तिरिक्खजोणिणीणिव्वत्तिते, मणुस्सणिव्वत्तिते, मणुस्सीणिव्वत्तिते,° देवणिव्वत्तिते देवीणिव्वत्तिते ।

एव—चिण-[13]°उवचिण-बध-उदीर-वेद तह° णिज्जरा चेव ॥

पोग्गल-पदं

१५४ सत्तपएसिया खधा अणता पण्णत्ता ॥

१५५ सत्तपएसोगाढा पोग्गला जाव[14] सत्तगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता ॥

---

१ अस्मणितादिता (क, ख, ग) ।
२ कित्तिता (क, ख, ग) ।
३ मिगसिर (ख) ।
४ अस्सिलेसा (क, ग) ।
५ पुव्व° (क, ग) ।
६ ता (क, ख, ग), तह (क्व) ।
७ वोधव्वे (क, ख, ग) ।
८ त (क, ख, ग) ।
९ त (क, ख, ग) ।
१० वितिदिताण (क, ख, ग) ।
११ जाती (क, ख, ग) ।
१२ स० पा०—णेरतियणिव्वत्तिते जाव देवणिव्वत्तिते ।
१३ स० पा०—चिण जाव णिज्जरा ।
१४ ठा० १।२५४-२५६ ।

अट्ठमं ठाणं

एगल्लविहार-पडिमा-पदं

१ अट्ठहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहति एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, तं जहा—सड्ढी पुरिसजाते, सच्चे पुरिसजाते, मेहावी पुरिसजाते, बहुस्सुते पुरिसजाते, सत्तिमं, अप्पाधिगरणे, धितिमं, वीरियसंपण्णे ॥

जोणिसंगह-पदं

२ अट्ठविधे जोणिसंगहे पण्णत्ते, तं जहा—अंडगा, पोतगा[1], °जराउजा, रसजा, संसेयगा संमुच्छिमा,° उब्भिगा, उववातिया[2] ॥

गति-आगति-पदं

३ अंडगा अट्ठगतिया अट्ठागतिया पण्णत्ता, तं जहा—अंडए अंडएसु उववज्जमाणे अंडएहिंतो वा, पोतएहिंतो वा[3], °जराउजेहिंतो वा, रसजेहिंतो वा, संसेयगेहिंतो वा, संमुच्छिमेहिंतो वा, उब्भिएहिंतो वा°, उववातिएहिंतो वा उववज्जेज्जा।

से चेव णं से[4] अंडए[5] अंडगत्तं विप्पजहमाणे अंडगत्ताए वा, पोतगत्ताए वा[6], °जराउजत्ताए वा, रसजत्ताए वा, संसेयगत्ताए वा, संमुच्छिमत्ताए वा, उब्भियत्ताए वा,° उववातियत्ताए वा गच्छेज्जा ॥

४ एवं पोतगावि जराउजावि सेसाणं गतिरागती[7] णत्थि ॥

कम्म-बंध-पदं

५ जीवा णं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं जहा—

---

१ सं० पा०—पोतगा जाव उब्भिगा।

२ उववातिता (क, ख, ग)।

३ सं० पा०—पोततेहिंतोवा जाव उववातितेहिंतो।

४ × (क, ख, ग)।

५ अडते (क, ख, ग)।

६ सं० पा०—पोतगत्ताते वा जाव उववातितत्ताते।

७ गतिरागतिश्च नास्तीत्यष्टप्रकारा इति शेषः (वृ)।

णाणावरणिज्जं, दरिसणावरणिज्जं, वेयणिज्जं, मोहणिज्जं, आउयं[1], णामं गोत्तं, अंतराइयं[2] ॥

६ णेरइया णं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा एवं चेव ॥

७ एवं णिरंतरं जाव[3] वेमाणियाणं ॥

८. जीवा णं अट्ठ कम्मपगडीओ उवचिणिंसु वा उवचिणंति वा उवचिणिस्संति वा एवं चेव ।

एवं—चिण-उवचिण-बंध-उदीर-वेय तह णिज्जरा चेव ।

'एते छ चउवीसा दंडगा'[4] भाणियव्वा ॥

आलोयणा-पदं

९ अट्ठहिं ठाणेहिं मायी[5] मायं कट्टु णो आलोएज्जा, णो पडिक्कमेज्जा[6] •णो णिंदेज्जा णो गरिहेज्जा, णो विउट्टेज्जा, णो विसोहेज्जा, णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, णो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेज्जा, तं जहा—करिंसु[7] वाहं, करेमि वाहं, करिस्सामि वाहं, अकित्ती वा मे सिया, अवण्णे वा मे सिया, अविणए[8] वा मे सिया, कित्ती वा मे परिहाइस्सइ, जसे वा मे परिहाइस्सइ ॥

१० अट्ठहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा[9], •पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरिहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेज्जा, तं जहा—

---

१ आउतं (क, ख ग) ।

२ अंतरातितं (क, ख, ग) ।

३ ठा० १।१४२-१६३ ।

४ अस्य पाठस्य वृत्तिर्निम्नप्रकारा वर्तते—यतश्चयनादिपदानि षड् अतः सामान्यसूत्रपूर्वका षडेव दण्डकाः (वृ) । इयं वृत्ति उपलब्धपाठानुसारिणी नास्ति । अस्या अनुसारेण पाठः इत्थं प्रतीयते—'एए छ, दंडगा भाणियव्वा' ।

५ माती (क, ख, ग) ।

६ सं० पा०—णो पडिक्कमेज्जा जाव णो पडिवज्जेज्जा ।

७ ठा० ३।३३८ सूत्रे 'अकरिंसु' पाठो विद्यते ।

८ अवणए (ख, ग), ३।३३९ सूत्रे 'अविणए' पाठोस्ति । अस्मिन् सूत्रे तस्य तुल्यमस्ति प्रकरणम् । अत्र 'अवणए' पाठोस्ति । वृत्तिकृता प्रथमे स्थाने 'अविनयः साधुकृतो मे स्यात्' द्वितीयस्मिन् स्थाने 'अपनयो वा पूजा सत्कारादेरपनयन मे स्यादिति' लिखितम् । इतिदर्शनेन प्रतीयते वृत्तिकारेण यादृशः पाठो लब्धस्तादृश एवार्थः कृतः । 'क' आदर्शे 'अविणए' पाठो लिखित आसीत् । ततः 'वि' वर्णगतेकारमात्रा हरितालेनाच्छिद्य वकारः कृतोस्ति । पूर्वपाठस्य संगतिदृष्ट्यात्रापि 'अविणए' पाठो युज्यते ।

९. सं० पा०—आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा ।

१ मायिस्स ण अस्सि लोए गरहिते भवति।
२ उववाए गरहिते भवति।
३ आयाती[1] गरहिता भवति।
४ एगमवि मायी माय[2] कट्टु णो आलोएज्जा[3], °णो पडिक्कमेज्जा, णो णिंदेज्जा, णो गरिहेज्जा, णो विउट्टेज्जा, णो विसोहेज्जा, णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, णो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेज्जा, णत्थि तस्स आराहणा।
५ एगमवि मायी मायं कट्टु आलोएज्जा[4], °पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरिहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेज्जा, अत्थि तस्स आराहणा।

६ बहुओवि मायी मायं कट्टु णो आलोएज्जा[5], °णो पडिक्कमेज्जा, णो णिंदेज्जा णो गरिहेज्जा, णो विउट्टेज्जा, णो विसोहेज्जा, णो अकरणाए अब्भुट्ठेज्जा, णो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेज्जा, णत्थि तस्स आराहणा।

७ बहुओवि मायी मायं कट्टु आलोएज्जा[6], °पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरिहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेज्जा°, अत्थि तस्स आराहणा।

८ आयरिय-उवज्झायस्स वा मे अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जेज्जा, से य[7] ममालोएज्जा मायी णं एसे।

मायी णं मायं कट्टु से जहाणामए अयागरेति[8] वा तंवागरेति वा तउआगरेति वा सीसागरेति वा रुप्पागरेति वा सुवण्णागरेति वा तिलागणीति वा तुसागणीति वा बुसागणीति वा णलागणीति वा दलागणीति वा सोंडियालिंछाणि[9] वा भंडियालिंछाणि वा गोलियालिंछाणि वा कुंभारावाएति वा कवेल्लुआवाएति वा इट्टावाएति वा जंतवाडचुल्लीति[10] वा लोहारंवरिसाणि वा।

तत्ताणि समजोतिभूताणि किंसुकफुल्लसमाणाणि उक्कासहस्साइं विणिम्मुयमाणाइं-विणिम्मुयमाणाइं, जालासहस्साइं पमुंचमाणाइं-पमुंचमाणाइं इंगाल-

---

१. आताती (क, ख, ग)।
२ मात (क, ख, ग)।
३. स० पा०—णो आलोएज्जा जाव णो पडिवज्जेज्जा।
४ स० पा०—आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा।
५ स० पा०—णो आलोएज्जा जाव णो पडिवज्जेज्जा।
६. स० पा०—आलोएज्जा जाव अत्थि।
७ त (क, ख, ग)।
८ आया° (क, ख, ग)।
९. °लिच्छाणि (क)।
१० °चुल्लि (क, ग)।

सहस्साइं[1] पविकिरमाणाइं-पविकिरमाणाइं,[2] अंतो-अंतो झियायति, एवामेव मायी मायं कट्टु अंतो-अंतो झियाइ[3]।

जवि[4] य णं अण्णे केइ वदति तंपि य णं मायी जाणति अहमेसे 'अभिसंकिज्जामि-अभिसंकिज्जामि'[5]।

'मायी णं मायं कट्टु'[6] अणालोइयपडिक्कते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए 'उववत्तारो भवति'[7], तं जहा—णो महिड्ढिएसु[8] °णो महज्जुइएसु णो महाणुभागेसु णो महायसेसु णो महाबलेसु णो महासोक्खेसु° णो दूरगतिएसु णो चिरट्ठितिएसु। से णं तत्थ देवे भवति णो महिड्ढिए[9] °णो महज्जुइए णो महाणुभागे णो महायसे णो महाबले णो महासोक्खे णो दूरगतिए° णो चिरट्ठितिए।

जावि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवति, सावि य णं णो आढाति णो परिजाणाति णो महरिहेण[10] आसणेण उवणिमंतेति, भासंपि य से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच देवा अणुत्ता[11] चेव अब्भुट्ठंति—मा बहुं देवे! भासउ-भासउ।

से णं ततो देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठितिक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति, तं जहा—अंतकुलाणि वा पंतकुलाणि वा तुच्छकुलाणि वा दरिद्दकुलाणि वा भिक्खागकुलाणि वा किवणकुलाणि वा, तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाति। से णं तत्थ पुमे भवति दुरूवे दुवण्णे दुग्गंधे दुरसे दुफासे अणिट्ठे अकंते अप्पिए अमणुण्णे अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे अकंतस्सरे अपियस्सरे अमणुण्णस्सरे अमणामस्सरे अणाएज्जवयणे पच्चायाते।

जावि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवति, सावि य णं णो आढाति णो परिजाणाति[12] णो महरिहेण आसणेण उवणिमंतेति, भासंपि य से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच जणा अणुत्ता[13] चेव अब्भुट्ठंति—मा बहुं अज्जउत्तो[14]! भासउ-भासउ।

---

१ अणाल° (क, ख, ग)।
२ परिकिसर° (क, ग), परिकिर° (ख)।
३ झियायइ (ख)।
४ जतवि (क), जतवि (ख, ग)।
५ अभिसिंकिज्जामि (क, ग)।
६ से णं तस्स (वृ), मायी णं मायं कट्टु(वृपा)।
७ 'उववत्तारो' त्ति वचनव्यत्ययादुपपत्ता भवतीति (वृ)।
८ सं० पा०—णो महिड्ढिएसु जाव णो दूरगतितेसु।
९ सं० पा०—णो महिड्ढिए जाव णो चिरट्ठितिते।
१० महा° (क)।
११ अवुत्ता (ख)।
१२ परिताणाति (ख, ग)।
१३ अवुत्ता (ग)।
१४ अज्जपुत्ते (ख)।

मायी ण माय कट्टु आलोचित-पडिक्कते कालमासे काल किच्चा अण्णतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवति, त जहा—महिड्डिएसु[1] °महज्जुइएसु महाणुभागेसु महायसेसु महाबलेसु महासोक्खेसु दूरगतिएसु° चिरट्ठितिएसु[2]। से ण तत्थ देवे भवति महिड्डिए[3] °महज्जुइए महाणुभागे महायसे महाबले महासोक्खे दूरगतिए° चिरट्ठितिए हार-विराइय[4]-वच्छे कडक-तुडित-थभित-भुए[5] अगद-कुडल-मट्ठ-गडतल-कण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणे विचित्तवत्था-भरणे विचित्तमालामउली कल्लाणग-पवर-वत्थ-परिहिते कल्लाणग-'पवर-गध-मल्लाणुलेवणधरे'[6] भासुरबोंदी पलब-वणमालधरे दिव्वेण वण्णेण दिव्वेण गधेण दिव्वेण रसेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण सघातेण दिव्वेण सठाणेण दिव्वाए इड्डीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेस्साए दस दिसाओ उज्जोवेमाणे पभासेमाणे महयाहत-णट्ट-गीत-वादित-तती-तल-ताल-तुडित-घण-मुइग-पडुप्पवादित-रवेण दिव्वाइ भोग-भोगाइ भुजमाणे विहरइ।

जावि य से तत्थ बाहिरब्भतरिया परिसा भवति, सावि य ण आढाइ परिजा-णाति महरिहेण आसणेण उवणिमतेति, भासपि य से भासमाणस्स जाव चत्तारि पच देवा अणुत्ता चेव अब्भुट्ठति—बहु देवे! भासउ-भासउ।

से ण ताओ देवलोगाओ आउक्खएण[7] °भवक्खएण ठितिक्खएण अणतर चय° चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइ इमाइ कुलाइ भवति—अड्ढाइ[8] °दित्ताइ[9] विच्छिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइ[10] 'बहुधण-बहुजायरूव-रय-याइ'[11] आओगपओग-सपउत्ताइ विच्छड्डिय-पउर-भत्तपाणाइ बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलय-प्पभूयाइ° बहुजणस्स अपरिभूताइ, तहप्पगारेसु[12] कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाति। से ण तत्थ पुमे भवति सुरूवे सुवण्णे सुगधे सुरसे सुफासे इट्ठे कते[13] °पिए मणुण्णे° मणामे अहीणस्सरे[14] °अदीणस्सरे इट्ठस्सरे कतस्सरे पियस्सरे मणुण्णस्सरे° मणामस्सरे आदेज्जवयणे पच्चायाते।

जावि य से तत्थ बाहिरब्भतरिया परिसा भवति, सावि य ण आढाति[15] °परि-

---

१. स० पा०—महिड्डिएसु जाव चिरट्ठितिएसु।
२ °ट्ठितीसु (क, ग)।
३ स० पा०—महिड्डिए जाव चिरट्ठितिते।
४ विरातित (क, ख, ग)।
५ भुते (क, ख, ग)।
६ पवर-मल्लाण° (वृ), पवर-गधमल्लाण° (वृपा)।
७. स० पा०—आउक्खएण जाव चइत्ता।
८ स० पा०—अड्ढाइ जाव बहुजणस्स।
९ औपपातिके (सूत्र १४१)—दित्ताइ वित्ताइ।
१० क्वचिद्—वाहणाइन्नाइ (वृ)।
११ औपपातिके (सूत्र १४१) बहुधण-जाय°।
१२ तहाप्प° (क, ग)।
१३ स० पा०—कते जाव मणामे।
१४ स० पा०—अहीणस्सरे जाव मणामस्सरे।
१५ स० पा०—आढाति जाव बहु।

जाणाति महरिहेण आसणेण उवणिमतेति, भासपि य से भासमाणस्स जाव चत्तारि पच जणा अणुत्ता चेव अब्भुट्ठति°—वहु अज्जउत्ते ! भासउ-भासउ ॥

संवर-असवर-पद

११ अट्ठविहे सवरे पण्णत्ते, त जहा—सोइदियसवरे[1], °चक्खिदियसवरे, घाणिंदियसवरे, जिब्भिदियसवरे°, फासिदियसवरे, मणसवरे, वइसवरे, कायसवरे ॥

१२ अट्ठविहे असवरे पण्णत्ते, त जहा—सोतिंदियअसवरे[2], °चक्खिदियअसवरे, घाणिंदियअसवरे, जिब्भिदियअसवरे, फासिदियअसवरे, मणअसवरे, वइअसवरे° कायअसवरे ॥

फास-पदं

१३ अट्ठ फासा पण्णत्ता, त जहा—कक्खडे[3], मउए, गरुए, लहुए, सीते, उसिणे णिद्धे, लुक्खे ॥

लोगट्ठिति-पद

१४ अट्ठविधा लोगट्ठिती पण्णत्ता, त जहा—आगासपतिट्ठिते वाते, वातपतिट्ठिते उदही, [4]°उदविपतिट्ठिता पुढवी, पुढविपतिट्ठिता तसा थावरा पाणा, अजीवा जीवपतिट्ठिता° जीवा कम्मपतिट्ठिता, अजीवाजीवसगहीता[5], जीवा कम्मसगहीता ॥

गणिसपया-पद

१५ अट्ठविहा गणिसपया पण्णत्ता, त जहा—आचारसपया, सुयसपया, सरीरसपया, वयणसपया[6], वायणासपया[7], मतिसपया, पओगसपया, सगहपरिण्णा णाम अट्ठमा ॥

महाणिहि-पदं

१६ एगमेगे ण महाणिही अट्ठचक्कवालपतिट्ठाणे अट्ठट्ठजोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ते ॥

समिति-पदं

१७ अट्ठ समितीओ पण्णत्ताओ, त जहा—इरियासमिती, भासासमिती, एसणा-

---

१ स० पा०—सोइदियसवरे जाव फासिदिय°।

२ स० पा०—सोतिंदियअसवरे जाव कायअसवरे।

३ कक्कडे (क, ख, ग)।

४ स० पा०—एव जधा छट्ठाणे जाव जीवा।

५ °सगहिता (क, ग)।

६ वणसपता (ख)।

७ वातणासपता (क, ख, ग)।

समिती, आयाणभंड-मत्त-णिक्खेवणासमिती, उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-परिठावणियासमिती, मणसमिती, वइसमिती, कायसमिती।

आलोयणा-पदं

१८ अट्ठहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहति आलोयणं[1] पडिच्छित्तए, तं जहा—आयारवं[2], आधारवं, ववहारवं, ओवीलए, पकुव्वए, अपरिस्साई, णिज्जावए, अवायदंसी ॥

१९ अट्ठहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहति अत्तदोसमालोइत्तए[3], तं जहा—जातिसंपण्णे, कुलसंपण्णे, विणयसंपण्णे, णाणसंपण्णे, दंसणसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे, खंते, दंते ॥

पायच्छित्त-पदं

२० अट्ठविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा—आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे, विउसग्गारिहे, तवारिहे, छेयारिहे, मूलारिहे ॥

मदट्ठाण-पदं

२१ अट्ठ मयट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—जातिमए, कुलमए, बलमए, रूवमए, तवमए, सुतमए, लाभमए, इस्सरियमए ॥

अकिरियावादि-पदं

२२ अट्ठ अकिरियावाई पण्णत्ता, तं जहा—एगावाई, अणेगावाई, मितवाई, णिम्मितवाई[4], सायवाई, समुच्छेदवाई, णितावाई, णसंतपरलोगवाई[5] ॥

महाणिमित्त-पदं

२३ अट्ठविहे महाणिमित्ते पण्णत्ते, तं जहा—भोमे, उप्पाते, सुविणे, अंतलिक्खे, अंगे, सरे, लक्खणे, वंजणे ॥

वयणविभत्ति-पदं

२४ अट्ठविधा वयणविभत्ती पण्णत्ता, तं जहा—

---

१ आलोतणा (ख)।
२ आतारवं (क, ख, ग)।
३ °मालोतेत्तते (क, ग), °मातोयत्तते (ख)।
४ अमितवातो (क)।
५ ण संति परलोकवाती (ख, ग, वृ), वृत्तिकारेण 'ण संति' इति पाठो व्याख्यातः 'न विद्यते शान्तिश्च मोक्षः।' किन्तु 'णसंते' इति पाठः समीचीनः प्रतिभाति 'असत्परलोकवादी' इति स्वाभाविकोर्थोऽस्ति।

संगहणी-गाहा

णिद्देसे पढमा होती[1], बितिया उवएसणे।
ततिया करणम्मि कता, चउत्थी सपदावणे ॥१॥

पचमी य अवादाणे[2], छट्ठी सस्सामिवादणे[3]।
सत्तमी सण्णिहाणत्थे[4], अट्ठमी आमतणी[5] भवे ॥२॥

तत्थ पढमा विभत्ती, णिद्देसे—सो इमो अह वत्ति।
बितिया[6] उण उवएसे— भण 'कुण व'[7] इम व त वत्ति ॥३॥

ततिया करणम्मि कया— णीत[8] व कत व तेण व मए वा।
हदि णमो साहाए, हवति चउत्थी पदाणमि ॥४॥

अवणे गिण्हसु तत्तो, इत्तोत्ति वा पचमी अवादाणे।
छट्ठी तस्स इमस्स व, गतस्स वा सामि-सबधे ॥५॥

हवइ पुण सत्तमी तमिमम्मि आहारकालभावे य।
आमतणी भवे अट्ठमी उ जह हे जुवाण[!] त्ति ॥६॥

छउमत्थ-केवलि-पद

२५ अट्ठ ठाणाइ छउमत्थे सव्वभावेण ण याणति ण पासति, त जहा—धम्मत्थिकाय[9], •अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, जीव असरीरपडिवद्ध, परमाणुपोग्गल, सद्द°, गर्ध, वात।
एताणि चेव उप्पण्णणाणदसणधरे अरहा जिणे केवली[10] •सव्वभावेण जाणइ पासइ, त जहा—धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, जोव असरीर-पडिवद्ध, परमाणुपोग्गल, सद्द°, गध, वात ॥

आउवेद-पदं

२६ अट्ठविधे आउवेदे पण्णत्ते, त जहा—कुमारभिच्चे, कायतिगिच्छा, सालाई[11], सल्लहत्ता[12], जगोली, भूतवेज्जा, खारतते, रसायणे[13] ॥

---

१. होति (क, ग)।
२ अवाताणे (क, ख, ग)।
३ इह प्राकृतत्वाद् दीर्घत्वम्।
४ सन्नियाणत्थे (क, ग)।
५ आमतणा (क, ख, ग)।
६ वितीता (ग)।
७ कुणसु (अ० सू० ३०८)।
८ भणिय (अ० सू० ३०८)।
९ धम्मत्थिगात (क, ख, ग), स० पा—धम्म-त्थिकाय जाव गध।
१० स० पा०—केवली जाणइ पासइ जाव गध।
११ सालभते (क), सालाती (ख, ग)।
१२ सेल्लहता (ख)।
१३ रसातणे (क, ख, ग)।

अग्गमहिसी-पद

२७ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो अट्ठग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पउमा, सिवा, सची[1], अजू, अमला, अच्छरा, णवमिया, रोहिणी ।।

२८ ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो अट्ठग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हा, कण्हराई[2], रामा, रामरक्खिता, वसू, वसुगुत्ता, वसुमित्ता, वसुधरा ।।

२९ सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अट्ठग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ।।

३० ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो अट्ठग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ।।

महग्गह-पदं

३१ अट्ठ महग्गहा पण्णत्ता, त जहा—चदे, सूरे, सुक्के, बुहे, बहस्सती, अगारे, सणिचरे, केऊ ।।

तणवणस्सइ-पदं

३२ अट्ठविधा तणवणस्सतिकाइया पण्णत्ता, त जहा—मूले, कदे, खधे, तया, साले, पवाले, पत्ते, पुप्फे ।।

संजम-असजम-पदं

३३ चउरिंदिया ण जीवा असमारभमाणस्स अट्ठविधे सजमे कज्जति, त जहा—चक्खुमातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति । चक्खुमएण दुक्खेण असजोएत्ता भवति । [3]•घाणामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति । घाणामएण दुक्खेण असजोएत्ता भवति । जिब्भामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति । जिब्भामएण दुक्खेण असजोएत्ता भवति° । फासामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति । फासामएण दुक्खेण असजोगेत्ता भवति ।।

३४ चउरिंदिया ण जीवा समारभमाणस्स अट्ठविधे असजमे कज्जति, त जहा—चक्खुमातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति । चक्खुमएण दुक्खेण सजोगेत्ता भवति । [4]•घाणामातो सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवति । घाणामएण दुक्खेण सजोगेत्ता भवति । जिब्भामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति, जिब्भामएण दुक्खेण सजोगेत्ता भवति° । फासामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति । फासामएण दुक्खेण सजोगेत्ता भवति ।।

---

१ सूती (ख, ग), सती (क्व) ।
२. कण्हराती (क, ख, ग) ।
३. स० पा०—एव जाव फासामातो ।
४ स० पा०—एव जाव फासामातो ।

सुहुम-पदं

३५ अट्ठ सुहुमा पण्णत्ता, त जहा—पाणसुहुमे, पणगसुहुमे, बीयसुहुमे, हरितसुहुमे, पुप्फसुहुमे, अडसुहुमे, लेणसुहुमे, सिणेहसुहुमे ।।

भरहचक्कवट्टि-पदं

३६ भरहस्स ण रण्णो चाउरतचक्कवट्टिस्स अट्ठ पुरिसजुगाइ अणुबद्ध[1] सिद्धाइ[2] °बुद्धाइ मुत्ताइ अतगडाइ परिणिव्वुडाइ° सव्वदुक्खप्पहीणाइ, त जहा—आदिच्चजसे, महाजसे, अतिबले महाबले, तेयवीरिए[3] कत्तवीरिए[4] दडवीरिए, जलवीरिए ।।

पास-गण-पदं

३७ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणियस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था, त जहा—सुभे, अज्जघोसे, वसिट्ठे, बभचारी, सोमे, सिरिधरे, 'वीरभद्दे, जसोभद्दे'[5] ।।

दंसण-पदं

३८ अट्ठविधे दसणे पण्णत्ते, त जहा—सम्मदसणे, मिच्छदसणे, सम्मामिच्छदसणे, चक्खुदसणे[6], °अचक्खुदसणे, ओहिदसणे°, केवलदसणे, सुविणदसणे ।।

ओवमिय-काल-पदं

३९ अट्ठविधे अद्धोवमिए पण्णत्ते, त जहा—पलिओवमे, सागरोवमे, ओसप्पिणी, उस्सप्पिणी, पोग्गलपरियट्टे, तीतद्धा, अणागतद्धा, सव्वद्धा ।।

अरिट्ठणेमि-पद

४० अरहतो ण अरिट्ठणेमिस्स जाव अट्ठमातो पुरिसजुगातो जुगतकरभूमी । दुवासपरियाए अतमकासी ।।

महावीर-पद

४१ समणेण भगवता महावीरेण अट्ठ रायाणो मुडे भवेत्ता[7] अगाराओ अणगारित पव्वाइया[8], त जहा—

---

१. अणुहुव (क, ग) ।
२ स० पा०—सिद्धाइ जाव सव्वदुक्ख° ।
३ तेतवीरिते (क, ख, ग) ।
४ कण्णवीरिते (क, ग) ।
५ वीरिते भद्दजसे (ख, ग) ।
६ स० पा०—चक्खुदसणे जाव केवलदसणे ।
७ 'भवित्त' त्ति अन्तर्भूतकारितार्थत्वात् मुण्डान् भावयित्वेति दृश्यम् (वृ) ।
८. पव्वाविता (क, ख, ग) ।

संगहणी-गाहा

वीरंगए वीरजसे, संजय एणिज्जए य रायरिसी।
सेये सिवे उद्दायणे[1], तह[2] संखे कासिवद्धणे ॥१॥

आहार-पदं

४२ अट्ठविहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—मणुण्णे—असणे, पाणे, खाइमे, साइमे। अमणुण्णे[3]—°असणे, पाणे, खाइमे°, साइमे ॥

कण्हराइ-पदं

४३ उप्पिं सणंकुमार-माहिंदाणं कप्पाणं हेट्ठिं[4] बंभलोगे कप्पे रिट्ठविमाण[5]-पत्थडे, एत्थ णं अक्खाडग-समचउरंस-संठाण-संठिताओ अट्ठ कण्हराईओ[6] पण्णत्ताओ, तं जहा—पुरत्थिमे णं दो कण्हराईओ, दाहिणे णं दो कण्हराईओ, पच्चत्थिमे णं दो कण्हराईओ, उत्तरे णं दो कण्हराईओ। पुरत्थिमा अब्भंतरा कण्हराई दाहिणं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा। दाहिणा अब्भंतरा कण्हराई पच्चत्थिमं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा। पच्चत्थिमा अब्भंतरा कण्हराई उत्तरं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा। उत्तरा अब्भंतरा कण्हराई पुरत्थिमं बाहिरं कण्हराइं[7] पुट्ठा। पुरत्थिमपच्चत्थिमिल्लाओ[8] बाहिराओ दो कण्हराईओ छलंसाओ। उत्तरदाहिणाओ बाहिराओ दो कण्हराईओ तंसाओ। सव्वाओ वि णं अब्भंतरकण्हराईओ चउरंसाओ ॥

४४ एतासि णं अट्ठण्हं कण्हराईणं अट्ठ णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—कण्हराईति वा, मेहराईति वा, मघाति वा, माघवतीति वा, वातफलिहेति[9] वा, वातपलिक्खोभेति[10] वा, देवफलिहेति वा, देवपलिक्खोभेति वा ॥

४५ एतासि णं अट्ठण्हं कण्हराईणं अट्ठसु ओवासंतरेसु अट्ठ लोगंतियविमाणा पण्णत्ता, तं जहा—अच्ची, अच्चिमाली, वइरोअणे, पभंकरे[11], चंदाभे, सूराभे, 'सुपइट्ठाभे, अग्गिच्चाभे'[12] ॥

---

१ उदायणे (क, ख, ग)।
२ × (क)।
३ सं० पा०—अमणुण्णे जाव साइमे।
४ हव्वि (क), हट्ठि (ख)।
५ रिट्ठे° (क)।
६ कण्हरातीतो (क, ख, ग)।
७ कण्हरातीयं (क)।
८ °मल्लाओ (क, ख, ग)।
९ °फलहितेति (क)।
१० °फलक्खो° (क)।
११. सुभंकरे (वृ)।
१२ अंकाभे सुपइट्ठाभे (वृ), सुक्काभे सुपइट्ठाभे (भ० ६।१०६); लोकान्तिकविमानानां नाम्नां तिस्रः परंपराः प्राप्यन्ते। एका भगवतीसूत्रस्य। तत्र षड् नामानि तुल्यानि सप्तमाष्टमयोरन्तरमस्ति। द्वितीया च स्थानांगसमवाययोः (समवाय ८।१५)। तृतीया च वृत्तिगता। तत्रापि पंच नामानि तुल्यानि, चतुर्थसप्तमाष्टमानि च भिन्नानि सन्ति।

४६ एतेसु ण अट्ठसु लोगतियविमाणेसु अट्ठविधा लोगंतिया देवा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

सारस्सतमाइच्चा, वण्ही वरुणा[1] य गद्दतोया य ।
तुसिता अव्वावाहा, अग्गिच्चा चेव बोद्धव्वा[2] ॥१॥

४७ एतेसि ण अट्ठण्ह लोगतियदेवाण अजहण्णमणुक्कोसेण अट्ठ सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

मज्झपदेस-पदं

४८ अट्ठ धम्मत्थिकाय[3]-मज्झपएसा पण्णत्ता ॥

४९ अट्ठ अवम्मत्थिकाय-[4]•मज्झपएसा पण्णत्ता° ॥

५० अट्ठ आगासत्थिकाय-[5]•मज्झपएसा पण्णत्ता° ॥

५१ अट्ठ जीव-मज्झपएसा पण्णत्ता ॥

महापउम-पद

५२ अरहा ण महापउमे अट्ठ रायाणो मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारित पव्वावेस्सति, त जहा—पउम, पउमगुम्म, णलिण, णलिणगुम्म, पउमद्धय[6], धणुद्धय, कणगरह, भरह ।

कण्ह-अग्गमहिसी-पद

५३ कण्हस्स ण वासुदेवस्स अट्ठ अग्गमहिसीओ अरहतो ण अरिट्ठणेमिस्स अतिते मुडा भवेत्ता अगाराओ अणगारित पव्वइया सिद्धाओ[7] •बुद्धाओ मुत्ताओ अतगडाओ परिणिव्वुडाओ° सव्वदुक्खप्पहीणाओ, त जहा—

सगहणी-गाहा

पउमावती य गोरी, गधारी लक्खणा सुसीमा य ।
जववती सच्चभामा, रुप्पिणी अग्गमहिसीओ ॥१॥

पुव्ववत्थु-पद

५४ वोरियपुव्वस्स ण अट्ठ वत्थू[8] अट्ठ चूलवत्थू पण्णत्ता ॥

---

१ लोकान्तिकदेवाना नामसु चतुर्थाष्टमे नाम्नी तत्त्वार्थसूत्रे भिन्ने स्त—सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुपिताव्यावाधमरुतोरिष्टाश्च (४।२६) दिगम्बरपरम्परासम्मते 'मरुत्' नाम न विद्यते—सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुपिताव्यावाधरिष्टाश्च ।

२. वोधव्वा (क, ख, ग) ।

३ °गात (क, ख, ग) ।

४ स० पा०—एव चेव।

५ स० पा०—एव चेव ।

६ पउमद्धत (क, ख, ग) ।

७ सिद्धाओ जाव सव्वदुक्ख° ।

८ मूलवत्थू (क) ।

गति-पद

५५. अट्ठ गतीओ पण्णत्ताओ, त जहा—णिरयगती, तिरियगती[1], •मणुयगती, देव-गती°, सिद्धिगती, गुरुगती, पणोल्लणगती, पब्भारगती ।।

दीवसमुद्द-पद

५६ गगा-सिधु-रत्त-रत्तवतिदेवीण दीवा 'अट्ठ-अट्ठ'[2] जोयणाइ आयामविक्खभेण पण्णत्ता ।।

५७ उक्कामुह-मेहमुह-विज्जुमुह-विज्जुदतदीवा ण दीवा अट्ठ-अट्ठ जोयणसयाइ आयामविक्खभेण पण्णत्ता ।।

५८ कालोदे[3] ण समुद्दे अट्ठ जोयणसयसहस्साइ चक्कवालविक्खभेण पण्णत्ते ।।

५९ अब्भतरपुक्खरद्धे ण अट्ठ जोयणसयसहस्साइ चक्कवालविक्खभेण पण्णत्ते ।।

६० एव बाहिरपुक्खरद्धेवि ।।

काकणिरयण-पद

६१ एगमेगस्स ण रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठसोवण्णिए काकणिरयणे छत्तले दुवालसंसिए अट्ठकण्णिए अधिकरणिसठिते ।।

मागध-जोयण-पद

६२ मागधस्स ण जोयणस्स अट्ठ धणुसहस्साइ णिधत्ते[4] पण्णत्ते ।।

जबूदीव-पद

६३ जबू ण सुदसणा अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण, बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइ विक्खभेण, सातिरेगाइ अट्ठ जोयणाइ सव्वग्गेण पण्णत्ता ।।

६४ कूडसामली ण अट्ठ जोयणाइ एव चेव ।।

६५ तिमिसगुहा ण अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण ।।

६६ खडप्पवातगुहा ण अट्ठ[5] •जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण° ।

६७ जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण सीताए महाणदीए उभतो कूले अट्ठ वक्खारपव्वया पण्णत्ता, त जहा—चित्तकूडे, पम्हकूडे[6], णलिणकूडे, एग-सेले, तिकूडे, वेसमणकूडे, अजणे, मायजणे ।।

६८ जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेण सीतोयाए महाणदीए उभतो कूले

---

१ स० पा०—तिरियगती जाव सिद्धगती ।

२ अट्ठट्ठ (क) ।

३ कालोते (क, ख, ग) ।

४ निहारे (वृ), निहत्ते (वृपा) ।

५ स० पा०—अट्ठ एव चेव ।

६ बम्भकूडे (क) ।

अट्ठ वक्खारपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—अंकावती, पम्हावती, आसीविसे, सुहावहे, चंदपव्वते, सूरपव्वते, 'णागपव्वते, देवपव्वते'[1] ॥

६९ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उत्तरे णं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तं जहा—कच्छे, सुकच्छे, महाकच्छे, कच्छगावती, आवत्ते[2], °मंगलावत्ते, पुक्खले°, पुक्खलावती ॥

७० जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए दाहिणे णं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तं जहा—वच्छे, सुवच्छे[3], °महावच्छे, वच्छगावती[4], रम्मे, रम्मगे, रमणिज्जे°, मंगलावती ॥

७१ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोयाए महाणदीए दाहिणे णं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तं जहा—पम्हे[5], °सुपम्हे, महपम्हे, पम्हगावती, संखे, णलिणे, कुमुए°, सलिलावती ॥

७२ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोयाए महाणदीए उत्तरे णं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तं जहा—वप्पे, सुवप्पे[6], °महावप्पे, वप्पगावती, वग्गू, सुवग्गू, गंधिल्ले°, गंधिलावती[7] ॥

७३ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उत्तरे णं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खेमा, खेमपुरी[8], °रिट्ठा, रिट्ठपुरी, खग्गी, मंजूसा, ओसधी°, पुंडरीगिणी ॥

७४ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणईए दाहिणे णं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुसीमा, कुंडला[9], °अपराजिया, पभंकरा, अंकावई, पम्हावई, सुभा°, रयणसंचया ॥

७५ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओदाए महाणदीए दाहिणे णं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आसपुरा[10], °सीहपुरा, महापुरा, विजयपुरा, अवराजिता, अवरा, असोया°, वीतसोगा[11] ॥

७६ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोयाए महाणईए उत्तरे णं

---

१ ठा० ४।३१३ सूत्रे 'देवपव्वते णागपव्वते' एवं पाठो विद्यते ।

२ सं० पा०—आवत्ते जाव पुक्खलावती ।

३ सं० पा०—सुवच्छे जाव मंगलावती ।

४ ठा० २।३४० सूत्रे 'कच्छावती' पाठो विद्यते ।

५ सं० पा०—पम्हे जाव सलिलावती ।

६ सं० पा०—सुवप्पे जाव गंधिलावती ।

७ गंधला° (ख) ।

८ खेमपुरा (क, ख, ग), सं० पा०—खेमपुरी जाव पुंडरीगिणी ।

९ सं० पा०—कुंडला चेव जाव रयणसंचया ।

१० सं० पा०—आसपुरा जाव वीतसोगा ।

११ वीतिसोगा (क,ग), विगयसोगा (२।३४१) ।

अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ, त जहा—विजया, वेजयती[1], •जयती, अपराजिया, चक्कपुरा, खग्गपुरा, अवज्झा°, अउज्झा ।।

७७ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण सीताए महाणदीए उत्तरे ण उक्कोसपए अट्ठ अरहता, अट्ठ चक्कवट्टी, अट्ठ वलदेवा, अट्ठ वासुदेवा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा ।।

७८ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण सीताए [महाणदीए ?] दाहिणे ण उक्कोसपए एव चेव ।।

७९ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे ण सीओयाए महाणदीए दाहिणे ण उक्कोसपए एव चेव ।।

८०. एव उत्तरेणवि ।।

८१ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण सीताए महाणईए उत्तरे ण अट्ठ दीहवेयड्ढा, अट्ठ तिमिसगुहाओ, अट्ठ खडगप्पवातगुहाओ, अट्ठ कयमालगा देवा, अट्ठ णट्टमालगा देवा, अट्ठ गगाकुडा, अट्ठ सिंधुकुडा, अट्ठ गगाओ, अट्ठ सिंधूओ, अट्ठ उसभकूडा पव्वता, अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता ।।

८२. जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण सीताए महाणदीए दाहिणे ण अट्ठ दीहवेअड्ढा एव चेव जाव[2] अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता, णवरमेत्थ रत्त-रत्तावती, तासि चेव कुडा ।।

८३ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे ण सीतोयाए महाणदीए दाहिणे ण अट्ठ दीहवेयड्ढा जाव[3] अट्ठ णट्टमालगा देवा, अट्ठ गगाकुडा, अट्ठ सिंधुकुडा, अट्ठ गगाओ, अट्ठ सिंधूओ, अट्ठ उसभकूडा पव्वता, अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता ।।

८४ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे ण सीओयाए महाणदीए उत्तरे ण अट्ठ दीहवेयड्ढा जाव[4] अट्ठ णट्टमालगा देवा पण्णत्ता[5]। अट्ठ रत्ताकुडा, अट्ठ रत्तावतिकुडा, अट्ठ रत्ताओ[6], •अट्ठ रत्तावतीओ, अट्ठ उसभकूडा पव्वत्ता°, अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता ।।

८५ मदरचूलिया ण वहुमज्झदेसभाए[7] अट्ठ जोइणाइ विक्खभेण पण्णत्ता ।।

धायइसंड-पद

८६. धायइसडदीवपुरत्थिमद्धे ण धायइरुक्खे अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण, वहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइ विक्खभेण, साइरेगाइ अट्ठ जोयणाइ सव्वग्गेण पण्णत्ते ।।

---

१ स० पा०—वेजयती जाव अउज्झा ।

२. ठा० ८।८१ ।

३,४ ठा० ८।८१ ।

५ पण्णत्ता नवरमेत्थ (क, ग) ।

६. मं० पा०—रत्ताओ जाव अट्ठ उसभकूडा ।

७ °भाते (क, ग) ।

८७ एव धायइरुक्खाओ आढवेत्ता सच्चेव जवूदीववत्तव्वता भाणियव्वा जाव[1] मदरचूलियत्ति ॥

८८ एव पच्चत्थिमद्धेवि महाधातइरुक्खातो आढवेत्ता जाव[2] मदरचूलियत्ति ॥

पुक्खरवर-पदं

८९ एव पुक्खरवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धेवि पउमरुक्खाओ आढवेत्ता जाव[3] मदरचूलियत्ति ॥

९० एव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धेवि महापउमरुक्खातो जाव[4] मदरचूलियत्ति ॥

कूड-पद

९१. जवुद्दीवे दीवे मदरे पव्वते भद्दसालवणे अट्ठ दिसाहत्थिकूडा पण्णत्ता, त जहा—

सगहणी-गाहा

पउमुत्तर णीलवते, सुहत्थि अजणागिरी ।
कुमुदे[5] य पलासे य, वडेसे रोयणागिरी[6] ॥१॥

जगती-पद

९२ जवूदीवस्स ण दीवस्स जगती अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण, वहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइ विक्खभेण पण्णत्ता ॥

कूड-पद

९३ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण महाहिमवते वासहरपव्वते अट्ठ कूडा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

सिद्ध महाहिमवते, हिमवते रोहिता हिरीकूडे[7] ।
हरिकता हरिवासे, वेरुलिए चेव कूडा उ ॥१॥

९४ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण रुप्पिमि वासहरपव्वते अट्ठ कूडा पण्णत्ता, त जहा—

---

१. ठा० ८।६४-८५ ।
२ ठा० ८।६३-८५ ।
३,४ ठा० ८।६३-८५ ।
५ कुमुते (क, ख, ग) ।
६. रोतणागिरी (क, ख, ग) ।
७ हरी० (क, ख, ग) ।

सिद्धे य रुप्पि रम्मग, णरकंता बुद्धि[1] रुप्पकूडे य ।
हिरण्णवते मणिकंचणे, य रुप्पिम्मि कूडा उ ॥१॥

९५ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं रुयगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पण्णत्ता, तं जहा—
रिट्ठे तवणिज्ज कंचण, रयत दिसासोत्थिते पलंबे य ।
अंजणे अंजणपुलए, रुयगस्स पुरत्थिमे कूडा ॥१॥
तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ जाव[2] पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति, तं जहा—
णंदुत्तरा य णंदा, आणंदा णंदिवद्धणा ।
विजया य वेजयंती, जयंती अपराजिया ॥२॥

९६ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं रुयगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पण्णत्ता, तं जहा—
कणए कंचणे पउमे, णलिणे ससि दिवायरे चेव ।
वेसमणे वेरुलिए, रुयगस्स उ दाहिणे कूडा ॥१॥
तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति, तं जहा—
समाहारा सुप्पतिण्णा, सुप्पबुद्धा[3] जसोहरा ।
लच्छिवती सेसवती, चित्तगुत्ता वसुंधरा ॥२॥

९७ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं रुयगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पण्णत्ता, तं जहा—
सोत्थिते य अमोहे य, हिमवं मंदरे तहा ।
रुअगे रुयगुत्तमे[4] चंदे, अट्ठमे य सुदंसणे ॥१॥
तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति, तं जहा—
इलादेवी सुरादेवी, पुढवी पउमावती ।
एगणासा[5] णवमिया, सीता भद्दा य अट्ठमा ॥२॥

९८ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं रुअगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पण्णत्ता, तं जहा—
रयण-रयणुच्चए या[6], सव्वरयण रयणसंचए चेव ।
विजये य वेजयंते, जयंते अपराजिते ॥१॥

---

१ मुट्ठि (क, ग) ।
२ ठा० २।२७१ ।
३ सुपबुद्धा (क, ग), सुपवई (ख) ।
४ रुतगुत्तमे (क, ख, ग) ।
५. एगानासा (क, ख) ।
६ ता (क, ख, ग) ।

तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महड्डियाओ जाव पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति, तं जहा—

अलंवुसा मिस्सकेसी[1], पोंडरिगी य वारुणी।
आसा सव्वगा चेव, सिरी हिरी चेव उत्तरतो ॥२॥

महत्तरिया-पदं

९९ अट्ठ अहेलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

संगहणी-गाहा

भोगंकरा भोगवती, सुभोगा भोगमालिणी।
सुवच्छा वच्छमित्ता य, वारिसेणा बलाहगा ॥१॥

१०० अट्ठ उड्ढलोगवत्थव्वाओ[2] दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

मेघंकरा मेघवती, सुमेघा मेघमालिणी।
तोयधारा विचित्ता य, पुप्फमाला अणिंदिता ॥१॥

कप्प-पदं

१०१ अट्ठ कप्पा तिरिय-मिस्सोववण्णगा पण्णत्ता, तं जहा—सोहम्मे[3], °ईसाणे, सणंकुमारे, माहिंदे, बंभलोगे, लंतए, महासुक्के°, सहस्सारे ॥

१०२ एतेसु णं अट्ठसु कप्पेसु अट्ठ इंदा पण्णत्ता, तं जहा—सक्के[4], °ईसाणे, सणंकुमारे, माहिंदे, बंभे, लंतए, महासुक्के°, सहस्सारे ॥

१०३ एतेसि णं अट्ठण्हं इंदाणं अट्ठ परियाणिया विमाणा पण्णत्ता, तं जहा—पालए, पुप्फए, सोमणसे, सिरिवच्छे, णंदियावत्ते[5], कामकमे, पीतिमणे, मणोरमे[6] ॥

पडिमा-पद

१०४ अट्ठट्ठमिया णं भिक्खुपडिमा[7] चउसट्ठीए राइंदिएहिं दोहि य अट्ठासीतेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं[8] °अहाअत्थं अहातच्चं अहामग्गं अहाकप्पं सम्मं काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया° अणुपालितावि भवति ॥

---

१ मितकेसी (क्व)।
२ °वच्छव्वाओ (क, ग)।
३ सं० पा०—सोहम्मे जाव सहस्सारे।
४ सं० पा०—सक्के जाव सहस्सारे।
५ णदावत्ते (क्व)।
६ विमले (क, ख, ग), यद्यपि सर्वेषु आदर्शेषु 'विमले' इति पाठो विद्यते, किन्तु दशमस्थानस्य १५० सूत्रे जाव 'विमलवरे सव्वतोभद्दे' पाठोस्ति। तत्र वृत्तिकृता अष्टमः शब्दः 'मणोरमे' इति व्याख्यातः। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तावपि इत्थमेव पाठोस्ति। तेनात्र 'मणोरमे' इति पाठः स्वीकृतः।
७ भिक्खुपडिमा णं (क, ख, ग)।
८ सं० पा०—अहासुत्तं जाव अणुपालितावि।

जीव-पदं

१०५ अट्ठविधा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयणेरइया, अपढमसमयणेरइया,[1] •पढमसमयतिरिया, अपढमसमयतिरिया, पढमसमयमणुया, अपढमसमयमणुया, पढमसमयदेवा°, अपढमसमयदेवा ॥

१०६ अट्ठविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—णेरइया, तिरिक्खजोणिया, तिरिक्खजोणिणीओ, मणुस्सा मणुस्सीओ, देवा, देवीओ, सिद्धा ।
अहवा—अट्ठविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—आभिणिवोहियणाणी[2], •सुयणाणी, ओहिणाणी, मणपज्जवणाणी°, केवलणाणी, मतिअण्णाणी, सुतअण्णाणी, विभंगणाणी ॥

संजम-पद

१०७ अट्ठविधे संजमे पण्णत्ते, तं जहा—पढमसमयसुहुमसंपरागसरागसंजमे, अपढमसमयसुहुमसंपरागसरागसंजमे, पढमसमयबादरसंपरागसरागसंजमे, अपढमसमयबादरसंपरागसरागसंजमे, पढमसमयउवसंतकसायवीतरागसंजमे, अपढमसमयउवसंतकसायवीतरागसंजमे, पढमसमयखीणकसायवीतरागसंजमे, अपढमसमयखीणकसायवीतरागसंजमे ॥

पुढवि-पदं

१०८. अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा[3], •सक्करप्पभा, वालुअप्पभा, पंकप्पभा, धूमप्पभा, तमा°, अहेसत्तमा, ईसिपब्भारा ॥

१०९ ईसिपब्भाराए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभागे अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ते ॥

११० ईसिपब्भाराए णं पुढवीए अट्ठ णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—ईसिति वा, ईसिपब्भाराति वा, तणूति वा, तणुतणूइ वा, सिद्धीति वा, सिद्धालएति[4] वा, मुत्तीति वा, मुत्तालएति वा ॥

अब्भुट्ठेतव्व-पद

१११ अट्ठहिं ठाणेहिं सम्मं घडितव्वं जतितव्वं परक्कमितव्वं अस्सिं च णं अट्ठे णो पमाएतव्वं भवति—
१ असुयाणं धम्माणं सम्मं सुणणताए अब्भुट्ठेतव्वं भवति ।
२ सुताणं धम्माणं ओगिण्हणयाए उवधारणयाए अब्भुट्ठेतव्वं भवति ।

---

१ सं० पा०—अपढमसमयनेरतिता एवं जाव अपढम° ।
२ सं० पा०—आभिणिवोहितणाणी जाव केवल° ।
३. सं० पा०—रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा ।
४ सिद्धालतेति (क, ख, ग) ।

३ णवाणं[1] कम्माणं संजमेणमकरणताए अब्भुट्ठेयव्वं भवति ।
४ पोराणाणं कम्माणं तवसा विगिंचणताए विसोहणताए अब्भुट्ठेतव्वं भवति ।
५ असंगिहीतपरिजणस्स[2] संगिण्हणताए अब्भुट्ठेयव्वं भवति ।
६ सेहं आयारगोयरं गाहणताए अब्भुट्ठेयव्वं भवति ।
७ गिलाणस्स अगिलाए वेयावच्चकरणताए अब्भुट्ठेयव्वं भवति ।
८ साहम्मियाणमधिकरणंसि उप्पण्णंसि तत्थ अणिस्सितोवस्सितो अपक्खग्गाही मज्झत्थभावभूते कहं णु साहम्मिया अप्पसद्दा अप्पझंझा अप्पतुमंतुमा ? उवसामणताए अब्भुट्ठेयव्वं भवति ।।

विमाण-पद

११२ महासुक्क-सहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा अट्ठ जोयणसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।।

वादि-पदं

११३ अरहतो णं अरिट्ठणेमिस्स अट्ठसया वादीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए वादे अपराजिताणं उक्कोसिया वादिसंपया हुत्था ।।

केवलिसमुग्घात-पद

११४ अट्ठसमइए[3] केवलिसमुग्घाते पण्णत्ते, तं जहा—पढमे समए दंडं करेति, बीए समए कवाडं करेति, ततिए समए मंथं[4] करेति, चउत्थे समए लोगं पूरेति, पंचमे समए लोगं पडिसाहरति, छट्ठे समए मंथं[5] पडिसाहरति, सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरति, अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरति ।।

अणुत्तरोववाइय-पदं

११५ समणस्स णं भगवतो महावीरस्स अट्ठ सया अणुत्तरोववाइयाणं गतिकल्लाणाणं[6] °ठितिकल्लाणाणं° आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइयसंपया हुत्था ।।

वाणमंतर-पदं

११६ अट्ठविधा वाणमंतरा देवा पण्णत्ता, तं जहा—पिसाया, भूता, जक्खा, रक्खसा, किण्णरा, किंपुरिसा, महोरगा, गंधव्वा ।।

११७ एतेसि णं अट्ठविहाणं वाणमंतरदेवाणं अट्ठ चेइयरुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—

---

१. पावाणं (क्व) ।
२. °परितणस्स (क, ग), °परियणतस्स (ख) ।
३. °समतिते (क, ख, ग) ।
४. मथानं (ख) ।
५. मथुं (क, ग) ।
६. सं० पा०—गतिकल्लाणाणं जाव आगमे° ।

संगहणी-गाहा

कलवो उ पिसायाण, वडो जक्खाण चेइय ।
तुलसी भूयाण भवे, रक्खसाण च कडओ ॥१॥
असोओ किण्णराण च, 'किंपुरिसाण तु'[1] चपओ ।
णागरुक्खो भुयगाण, गधव्वाण य तदुओ ॥२॥

जोइस-पद

११८ इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए वहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठजोयणसते उड्ढमवाहाए सूरविमाणे चार चरति ॥

११९ अट्ठ णक्खत्ता चदेण सद्धि पमद्द जोग जोएति, त जहा—कत्तिया, रोहिणी, पुणव्वसू, महा, चित्ता, विसाहा, अणुराधा, जेट्ठा ॥

दार-पद

१२० जबुद्दीवस्स ण दीवस्स दारा अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥

१२१ सव्वेसिपि ण दीवसमुद्दाण दारा अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥

बंधठिति-पद

१२२. पुरिसवेयणिज्जस्स ण कम्मस्स जहण्णेण अट्ठसवच्छराइ ववठिती पण्णत्ता ॥

१२३ जसोकित्तीणामस्स ण[2] कम्मस्स जहण्णेण अट्ठ मुहुत्ताइ ववठिती पण्णत्ता ॥

१२४ उच्चागोतस्स ण कम्मस्स [3]°जहण्णेण अट्ठ मुहुत्ताइ ववठिती पण्णत्ता° ॥

कुलकोडी-पद

१२५ तेइदियाण अट्ठ जाति-कुलकोडी-जोणीपमुह-सतसहस्सा पण्णत्ता ॥

पावकम्म-पद

१२६ जीवा ण अट्ठठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा चिणति वा चिणिस्संति वा, त जहा—पढमसमयणेरइयणिव्वत्तिते[4], °अपढमसमयणेरइयणिव्वत्तिते, पढमसमयतिरियणिव्वत्तिते, अपढमसमयतिरियणिव्वत्तिते पढमसमयमणुयणिव्वत्तिते, अपढमसमयमणुयणिव्वत्तिते, पढमसमयदेवणिव्वत्तिते°, अपढमसमयदेवणिव्वत्तिते ।

एव—चिण-उवचिण[5]-°वध-उदीर-वेद तह° णिज्जरा चेव ॥

पोग्गल-पद

१२७. अट्ठपएसिया खधा अणता पण्णत्ता ॥

१२८ अट्ठपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता जाव[6] अट्ठगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता ॥

---

१ °साण य (ख) ।
२. °नामए (क) ।
३ स० पा०—एव चेव ।
४ स० पा०—पढमसमयणेरतितणिव्वत्तिते जाव अपढम° ।
५ स० पा०—उवचिण जाव णिज्जरा ।
६ ठा० १।२५५,२५६ ।

णवमं ठाणं

विसंभोग-पदं

१ णवहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे संभोइयं विसंभोइयं करेमाणे णातिक्कमति, तं जहा—आयरियपडिणीयं, उवज्झायपडिणीयं, थेरपडिणीयं, कुलपडिणीयं, गणपडिणीयं, संघपडिणीयं, णाणपडिणीयं, दंसणपडिणीयं, चरित्तपडिणीयं ।।

बंभचेरअज्झयण-पदं

२ णव बंभचेरा पण्णत्ता, तं जहा—सत्थपरिण्णा, लोगविजओ[1], °सीओसणिज्जं, सम्मत्तं, आवंती, धूतं, विमोहो°, उवहाणसुयं, महापरिण्णा ।।

बंभचेरगुत्ति-पदं

३ णव बंभचेरगुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१ विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवति—णो इत्थिसंसत्ताइं णो पसुसंसत्ताइं णो पंडगसंसत्ताइं । २ णो इत्थीणं कहं कहेत्ता भवति । ३ 'णो इत्थिठाणाइं'[2] सेवित्ता भवति । ४ णो इत्थीणमिंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता णिज्झाइता भवति । ५ णो पणीतरसभोई [भवति ?] । ६ णो पाणभोयणस्स अतिमातमाहारए सया[3] भवति । ७ णो पुव्वरतं पुव्वकीलियं सरेत्ता भवति । ८ णो सद्दाणुवाती णो रूवाणुवाती णो सिलोगाणुवाती [भवति ?] । ९. णो सातसोक्खपडिबद्धे यावि भवति ।।

---

१ सं० पा०—लोगविजओ जाव उवहाणसुयं ।

२ 'नो इत्थिगणाइं' तीह सूत्रं दृश्यते केवलं 'नो इत्थिगणाइं' ति सम्भाव्यते उत्तराध्ययनेषु तथाधीतत्वात् प्रक्रमानुसारित्वाच्चास्येतीदमेव व्याख्यायते .... दृश्यमानपाठाभ्युगमें त्वेवं व्याख्या—नो स्त्रीगणानां पर्युपासको भवेदिति (वृ) ।

३ संता (क, ख, ग) ।

बंभचेरअगुत्ति-पदं

४. णव बंभचेरअगुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१. णो विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवति—इत्थीसंसत्ताइं पसुसंसत्ताइं पंडगसंसत्ताइं। २ इत्थीणं कहं कहेत्ता भवति। ३ इत्थिठाणाइं सेवित्ता भवति। ४ इत्थीणं इंदियाइं[1] °मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता° णिज्झाइत्ता भवति। ५ पणीयरसभोई [भवति ?]। ६ पाणभोयणस्स अइमायमाहारए सया भवति। ७ पुव्वरयं पुव्वकीलियं सरित्ता भवति। ८. सद्दाणुवाई रूवाणुवाई सिलोगाणुवाई [भवति ?]। ९ सायासोक्खपडिबद्धे यावि भवति॥

तित्थगर-पदं

५. अभिणंदणाओ णं अरहओ सुमती अरहा णवहिं सागरोवमकोडीसयसहस्सेहिं[2] वीइक्कतेहिं समुप्पण्णे॥

सब्भावपयत्थ-पदं

६ णव सब्भावपयत्था पण्णत्ता, तं जहा—जीवा, अजीवा, पुण्णं, पावं, आसवो, संवरो, णिज्जरा, बंधो, मोक्खो॥

जीव-पदं

७ णवविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया[3], °आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया°, वणस्सइकाइया, बेइंदिया[4], °तेइंदिया, चउरिंदिया°, पंचिंदिया[5]॥

गति-आगति-पदं

८ पुढविकाइया णवगतिया णवआगतिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा[6], °आउकाइएहिंतो वा, तेउकाइएहिंतो वा, वाउकाइएहिंतो वा, वणस्सइकाइएहिंतो वा, बेइंदिएहिंतो वा, तेइंदिएहिंतो वा, चउरिंदिएहिंतो वा°, पंचिंदिएहिंतो वा उववज्जेज्जा।

से चेव णं से पुढविकाइए पुढविकायत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा[7], °आउकाइयत्ताए वा, तेउकाइयत्ताए वा, वाउकाइयत्ताए वा, वणस्सइकाइयत्ताए वा, बेइंदियत्ताए वा, तेइंदियत्ताए वा, चउरिंदियत्ताए वा°, पंचिंदियत्ताए वा गच्छेज्जा॥

९ एवमाउकाइयावि जाव पंचिंदियत्ति॥

---

१. सं० पा०—इंदियाइं जाव णिज्झाइत्ता।

२. °कोडाकोडी° (ग)।

३ सं० पा०—पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया।

४. सं० पा०—बेइंदिया जाव पंचिंदिया।

५ पंचिंदियत्ति (क, ग)।

६ सं० पा०—पुढविकाइएहिंतो वा जाव पंचिंदिएहिंतो।

७. सं० पा०—पुढविकाइयत्ताए वा जाव पंचिंदियत्ताते।

जीव-पदं

१० णवविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, णेरइया, पंचेदियतिरिक्खजोणिया, मणुया, देवा, सिद्धा।
अहवा—णवविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयणेरइया, अपढमसमयणेरइया[1], °पढमसमयतिरिया, अपढमसमयतिरिया, पढमसमयमणुया, अपढमसमयमणुया, पढमसमयदेवा°, अपढमसमयदेवा, सिद्धा॥

ओगाहणा-पदं

११. णवविहा सव्वजीवोगाहणा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइओगाहणा, आउकाइओगाहणा[3], °तेउकाइओगाहणा, वाउकाइओगाहणा°, वणस्सइकाइओगाहणा, बेइंदियओगाहणा[4], तेइंदियओगाहणा[5], चउरिंदियओगाहणा, पंचिंदियओगाहणा॥

संसार-पदं

१२ जीवा णं णवहिं ठाणेहिं संसारं[6] वत्तिंसु वा वत्तंति वा वत्तिस्संति वा, तं जहा—पुढविकाइयत्ताए[7], °आउकाइयत्ताए, तेउकाइयत्ताए, वाउकाइयत्ताए, वणस्सइकाइयत्ताए, बेइंदियत्ताए, तेइंदियत्ताए, चउरिंदियत्ताए°, पंचिंदियत्ताए[8]॥

रोगुप्पत्ति-पदं

१३ णवहिं ठाणेहिं रोगुप्पत्ती सिया, तं जहा—अच्चासणयाए[9], अहितासणयाए, अतिणिद्दाए[10], अतिजागरितेण, उच्चारणिरोहेणं, पासवणणिरोहेणं, अद्धाणगमणेणं, भोयणपडिकूलताए, इंदियत्थविकोवणयाए॥

दरिसणावरणिज्ज-पदं

१४ णवविधे दरिसणावरणिज्जे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा—णिद्दा, णिद्दाणिद्दा, पयला, पयलापयला, थीणगिद्धी, चक्खुदंसणावरणे[11], अचक्खुदंसणावरणे, ओहिदंसणावरणे[12], केवलदंसणावरणे॥

---

१ सं० पा०—अपढमसमयणेरतिता जाव अपढमसमयदेवा।
२ °काइया° (ख)।
३ सं० पा०—आउकाइओगाहणा जाव वणस्सइकाइओगाहणा।
४ बेंदिओ° (क)।
५ तेंदिओ° (क)।
६. सासारं (ख)।
७ सं० पा०—पुढविकाइयत्ताए जाव पंचिंदियत्ताए।
८ पंचिंदियकाइयत्ताए (ग)।
९ °सणाते (ख, ग)।
१० °णिद्दितेण (क), णिदितें (ग)।
११ चक्खुदरिसणा° (क, ग)।
१२ अवधि° (क, ग)।

जोइस-पदं

१५ अभिई णं णक्खत्ते सातिरेगे णवमुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोगं जोएति ॥

१६ अभिइआइया णं णव णक्खत्ता णं चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति, तं जहा—अभिई, सवणो[1] धणिट्ठा[2], °सयभिसया, पुव्वाभद्दवया, उत्तरापोट्ठवया, रेवई, अस्सिणी°, भरणी ॥

१७ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमीभागाओ णव जोअण-सताइं उड्ढं अबाहाए उवरिल्ले ताराख्वे चारं चरति ॥

मच्छ-पदं

१८ जंबुद्दीवे णं दीवे णवजोयणिआ मच्छा पविसिंसु वा पविसंति वा पवि-सिस्संति वा ॥

बलदेव-वासुदेव-पद

१९ जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए णव बलदेव-वासुदेवपियरो हुत्था, तं जहा—

संगहणी-गाहा

'पयावती य बंभे'[3] रोद्दे सोमे सिवेति य ।
महसीहे अग्गिसीहे, दसरहे णवमे य वसुदेवे ॥१॥

इत्तो आढत्तं[4] जधा समवाये णिरवसेसं जाव[5]—
एगा से गब्भवसही, सिज्झिहिति आगमेसेणं ॥

२० जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेसाए उस्सप्पिणीए णव बलदेव-वासुदेवपितरो भविस्संति, णव बलदेव-वासुदेवमायरो भविस्संति । एवं जधा समवाए णिरव-सेसं जाव[6] महाभीमसेणे, सुग्गीवे य अपच्छिमे ।

एए खलु पडिसत्तू, कित्तिपुरिसाण वासुदेवाणं ।
सव्वे वि[7] चक्कजोही, हम्मेहिंती[8] सचक्केहिं ॥१॥

---

१ समणो (ग) ।

२ सं० पा०—धणिट्ठा जाव भरणी, चन्द्रप्रज्ञप्तौ (१०-११) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (वक्ष ७) च चन्द्रस्योत्तरेण योगं युञ्जानानां द्वादश-नक्षत्राणामुल्लेखोस्ति । अत्र तु नवमस्थान-कानुरोधेन नवैव गृहीतानि ।

३ जतावती त पम्हे (ग) ।

४ मलिनोभय-शुक्ति-छुप्तारब्ध -पदातेर्मइलावह-सिप्पि-छिक्काढत्त-पाइक्कं (हेमशब्दानुशासन ८।२।१३८) ।

५. पइण्णगसमवाय सू० २३९-२४७ ।

६. पइण्णगसमवाय सू० २५६, २५७ ।

७ य (क, ग) ।

८. हम्मेहिंति (ख, ग) ।

महाणिहि-पदं

२१ एगमेगे ण महाणिधी णव-णव जोयणाइ विक्खभेण पण्णत्ते ।।

२२ एगमेगस्स ण रण्णो चाउरतचक्कवट्टिस्स णव महाणिहिओ [णो ?] पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

णेसप्पे पडुयए, पिंगलए सव्वरयण महापउमे ।
काले य महाकाले, माणवग महाणिही सखे ।।१।।
णेसप्पमि णिवेसा, गामागर-णगर-पट्टणाण च ।
दोणमुह-मडवाण, खधाराण गिहाण च ।।२।।
गणियस्स य वीयाण, माणुम्माणस्स ज पमाण च ।
धण्णस्स य वीयाण, उप्पत्ती पडुए भणिया ।।३।।
सव्वा आभरणविही, पुरिसाण जा य होइ महिलाण ।
आसाण य हत्थीण य, पिंगलगणिहिम्मि सा भणिया ।।४।।
रयणाइ सव्वरयणे, चोद्दस पवराइ चक्कवट्टिस्स ।
उपज्जति एगिंदियाइ, पचिंदियाइ च ।।५।।
वत्थाण य उप्पत्ती, णिप्फत्ती चेव सव्वभत्तीण ।
रगाण य वोयाण[1] य[2], सव्वा एसा महापउमे ।।६।।
काले कालण्णाण, भव्व पुराण च तीसु वासेसु ।
सिप्पसत कम्माणि य, तिण्णि पयाए हियकराइ ।।७।।
लोहस्स य उप्पत्ती, होइ महाकाले आगराण च ।
रुप्पस्स सुवण्णस्स य, मणि-मोत्ति-सिल-प्पवालाण ।।८।।
जोधाण य उप्पत्ती, आवरणाण च पहरणाण च ।
सव्वा य जुद्धनीती, माणवए दडणीती य ।।९।।
णट्टविही णाडगविही, कव्वस्स चउव्विहस्स उप्पत्ती ।
सखे महाणिहिम्मी, तुडियगाण च सव्वेसि ।।१०।।
चक्कट्ठपइट्ठाणा, अट्ठुस्सेहा य णव य विक्खभे ।
वारसदीहा मजूस- सठिया जह्णवीए[3] मुहे ।।११।।
वेरुलियमणि-कवाडा, कणगमया विविध-रयण-पडिपुण्णा ।
ससि-सूर-चक्क-लक्खण-अणुसम-जुग-वाहु-वयणा य ।।१२।।

---

१ घोयाण (क), धोवाण (ख) ।
२ × (क) ।
३ जह्णवीइ (क, ग) ।

पलिओवमट्ठितीया, णिहिसरिणामा य तेसु खलु देवा।
जेसिं ते आवासा, अक्किज्जा[1] आहिवच्चा वा ॥१३॥
एए ते णवणिहिणो,[2] पभूतधणरयणसंचयसमिद्धा ।
जे वसमुवगच्छंती, सव्वेसिं चक्कवट्टीणं ॥१४॥

विगति-पदं

२३ णव विगतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खीरं, दधिं, णवणीतं, सप्पिं, तेलं, गुलो, महुं, मज्जं, मंसं ॥

बोंदी-पदं

२४ णव-सोत-परिस्सवा बोंदी पण्णत्ता, तं जहा—दो सोत्ता, दो णेत्ता, दो घाणा, मुहं, पोसए, पाऊ ॥

पुण्ण-पदं

२५ णवविधे पुण्णे, पण्णत्ते, तं जहा—अण्णपुण्णे, पाणपुण्णे, वत्थपुण्णे, लेणपुण्णे, सयणपुण्णे, मणपुण्णे, वइपुण्णे, कायपुण्णे, णमोक्कारपुण्णे ॥

पावायतण-पद

२६ णव पावस्सायतणा पण्णत्ता, तं जहा—पाणातिवाते, मुसावाए[3], °अदिण्णादाणे, मेहुणे°, परिग्गहे, कोहे, माणे, माया, लोभे ॥

पावसुयपसंग-पद

२७ णवविधे पावसुयपसंगे पण्णत्ते, तं जहा—

संगहणी-गाहा

उप्पाते णिमित्ते मंते, आइक्खिए[4] तिगिच्छिए ।
कला आवरणे अण्णाणे मिच्छापवयणे[5] ति य ॥१॥

णेउणिय-पद

२८ णव णेउणिया वत्थू पण्णत्ता, तं जहा—

संखाणे णिमित्ते काइए पोराणे पारिहत्थिए ।
परपंडिते[6] 'वाई य'[7], भूतिकम्मे तिगिच्छिए ॥१॥

गण-पदं

२९ समणस्स णं भगवतो महावीरस्स णव गणा हुत्था, तं जहा—गोदासगणे, उत्तर-

१. अग्गिच्चा (क, ग)।
२. निहओ (ख, ग)।
३ सं० पा०—मुसावाते जाव परिग्गहे।
४. आतिक्खते (क, ख, ग)।
५ °पवतणे (क, ग); °पावतणे (ख)।
६. परिपंडितते (क, ग)।
७ वातित (क, ग), वाती (ख), वातिते (क्व)।

वलिस्सहगणे[1], उद्देहगणे, चारणगणे, 'उद्दवाइयगणे, विस्सवाइयगणे'[2], काम-ड्डियगणे[3], माणवगणे, कोडियगणे ।।

भिक्खा-पद

३० समणेण भगवता महावीरेण समणाण णिग्गथाण णवकोडिपरिसुद्धे भिक्खे पण्णत्ते, त जहा—ण हणइ, ण हणावइ, हणत णाणुजाणइ, ण पयइ[4], ण पयावेति, पयत[5] णाणुजाणति, ण किणति, ण किणावेति, किणत णाणुजाणति ।।

देव-पद

३१ ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो णव अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ।।

३२ ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो अग्गमहिसीण णव पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता ।।

३३ ईसाणे कप्पे उक्कोसेण देवीण णव पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता ।।

३४ णव देवणिकाया पण्णत्ता, त जहा—

सगहणी-गाहा

सारस्सयमाइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वावाहा, अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ।।१।।

३५ अव्वावाहाण देवाण णव देवा णव देवसया पण्णत्ता ।।

३६ [6]°अग्गिच्चाण देवाण णव देवा णव देवसया पण्णत्ता ।।

३७ रिट्ठाण देवाण णव देवा णव देवसया पण्णत्ता° ।।

३८ णव गेवेज्ज-विमाण-पत्थडा पण्णत्ता, त जहा—हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, हेट्ठिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, हेट्ठिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, मज्झिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, मज्झिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, मज्झिम - उवरिम - गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, उवरिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, उवरिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, उवरिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे ।।

---

१ °पलितस्सतगणे (क, ग), वलितस्सतगणे (ख) ।

२ उद्दवातितगणे विस्सवाइतगणे (क, ख, ग), कल्पसूत्रे (सूत्र २१३, २१४) पंचमपष्ठयोर्गणयोर्नाम्नी किञ्चिद् भेदेन विद्येते, यथा—उड्डवाडियगणे वेसववाडिययगणे' ।

३ कामिड्डितिगणे (क, ख, ग) ।

४ पतति (क, ख, ग) ।

५ पतत (क, ख, ग) ।

६ स० पा०—एव अग्गिच्चावि एव रिट्ठावि ।

३९. एतेसि ण णवण्ह गेविज्ज-विमाण-पत्थडाण णव णामधिज्जा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

भद्दे सुभद्दे सुजाते, सोमणसे पियदरिसणे ।
सुदसणे अमोहे य, सुप्पवुद्धे जसोधरे[1] ॥१॥

आउपरिणाम-पदं

४० णवविहे आउपरिणामे पण्णत्ते, त जहा—गतिपरिणामे, गतिबधणपरिणामे, ठितीपरिणामे, ठितिबधणपरिणामे, उड्ढगारवपरिणामे, अहेगारवपरिणामे, तिरियगारवपरिणामे, दीहगारवपरिणामे, रहस्सगारवपरिणामे ॥

पडिमा-पदं

४१ णवणवमिया ण भिक्खुपडिमा एगासीतीए[2] रातिदिएहिं चउहि य पचुत्तरेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्त[3] °अहाअत्थ अहातच्च अहामग्ग अहाकप्प सम्म काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया ° आराहिया यावि भवति ॥

पायच्छित्त-पदं

४२ णवविधे पायच्छित्ते पण्णत्ते, त जहा—आलोयणारिहे[4], °पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे, विउसग्गारिहे, तवारिहे, छेयारिहे°, मूलारिहे, अणवट्ठप्पारिहे ॥

कूड-पदं

४३ जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण भरहे दीहवेतड्ढे णव कूडा पण्णत्ता, त जहा—

सगहणी-गाहा

सिद्धे भरहे खडग, माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा ।
भरहे वेसमणे या, भरहे कूडाण णामाइं[5] ॥१॥

४४ जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण णिसहे[6] वासहरपव्वते णव कूडा पण्णत्ता, त जहा—

---

१ जसेवरे (क) ।
२. एगासीतातें (ख, ग) ।
३. स० पा०—अहासुत्त जाव आहारिया ।
४ स० पा०—आलोयणारिहे जाव मूलारिहे ।
५ अत्र पद्यत्वात् नाम्ना सक्षेपो विद्यते, पूर्णनामानि इत्थ सन्ति—खडग—खडप्रपात, माणी—माणिभद्र, पुण्ण—पूर्णभद्र ।
६ निसुभे (क, ग) ।

सिद्धे णिसहे हरिवस, विदेह हरि[1] धिति असीतोया ।
अवरविदेहे रुयगे, णिसहे कूडाण णामाणि ।।१।।

४५ जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वते णदणवणे णव कूडा पण्णत्ता, त जहा—
णदणे मदरे चेव, णिसहे हेमवते रयय रुयए य ।
सागरचित्ते वइरे, वलकूडे चेव बोद्धव्वे ।।१।।

४६ जबुद्दीवे दीवे मालवतवक्खारपव्वते णव कूडा पण्णत्ता, त जहा—
सिद्धे य मालवते, उत्तरकुरु[2] कच्छ सागरे रयते ।
सीता य पुण्णणामे, हरिस्सहकूडे य बोद्धव्वे ।।१।।

४७ जबुद्दीवे दीवे कच्छे दीहवेयड्ढे णव कूडा पण्णत्ता, त जहा—
सिद्धे कच्छे खडग, माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा ।
कच्छे वेसमणे या, कच्छे कूडाण णामाइ ।।१।।

४८ जबुद्दीवे दीवे सुकच्छे दीहवेयड्ढे णव कूडा पण्णत्ता, त जहा—
सिद्धे सुकच्छे खडग, माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा ।
सुकच्छे वेसमणे या, सुकच्छे कूडाण णामाइ ।।१।।

४९ एव जाव[3] पोक्खलावइम्मि दीहवेयड्ढे ।।
५० एव वच्छे दीहवेयड्ढे ।।
५१ एव जाव[4] मगलावतिम्मि दीहवेयड्ढे ।।
५२ जबुद्दीवे दीवे विज्जुप्पभे वक्खारपव्वते णव कूडा पण्णत्ता, त जहा—
सिद्धे अ विज्जुणामे, देवकुरा पम्ह कणग सोवत्थी ।
सीओदा य सयजले, हरिकूडे चेव बोद्धव्वे ।।१।।

५३ जबुद्दीवे दीवे पम्हे दीहवेयड्ढे णव कूडा पण्णत्ता, त जहा—
सिद्धे पम्हे खडग, माणी वेयड्ढ[5] °पुण्ण तिमिसगुहा ।
पम्हे वेसमणे या, पम्हे कूडाण णामाइ° ।।१।।

५४ एव चेव जाव[6] सलिलावतिम्मि दीहवेयड्ढे ।।
५५ एव वप्पे दीहवेयड्ढे ।।

---

१. आदर्शेषु 'हरि' पाठो विद्यते । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (वक्ष० ४) चापि 'हरि' पाठोस्ति । अस्या वृत्तिकारेणापि 'हरिसलिलानदीसुरीकूट' उल्लिखितमस्ति । किन्तु अभयदेवसूरिणा अत्र वृत्तौ 'ह्रीकूट' इति उल्लिखितम्—'ह्रीदेवीनिवासो ह्रीकूट' सम्भवत 'हिरि' पाठ तत् सम्मुखीन आसीत्, तेन तथा व्याख्यात ।
२ उत्तरकुरा (क, ग) ।
३ ठा० ८।६९ ।
४ ठा० ८।७० ।
५ स० पा०—वेयड्ढ°° ।
६ ठा० ८।७१ ।

५६ एव जाव[1] गधिलावतिम्मि दीहवेयड्ढे णव कूडा पण्णत्ता, त जहा—
सिद्धे गधिल खडग, माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा ।
गधिलावति वेसमणे, कूडाण होंति णामाइ ॥१॥
एव—सव्वेसु दीहवेयड्ढेसु दो कूडा सरिसणामगा, सेसा ते चेव[2] ॥
५७ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण णेलवते वासहरपव्वते णव कूडा पण्णत्ता, त जहा—
सिद्धे णेलवते विदेहे, सीता कित्ती य णारिकता य ।
अवरविदेहे रम्मगकूडे, उवदसणे चेव ॥१॥
५८ जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण एरवते दीहवेतड्ढे णव कूडा पण्णत्ता, त जहा—
सिद्धेरवए खडग, माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा ।
एरवते वेसमणे, एरवते कूडणामाइ ॥१॥

पास-पदं

५९ पासे ण अरहा पुरिसादाणिए वज्जरिसहणारायसघयणे समचउरस-सठाण-सठिते णव रयणीओ उड्ढ उच्चत्तेण हुत्था ॥

तित्थगरणामणिव्वत्तण-पदं

६० समणस्स ण भगवतो महावीरस्स तित्थसि णवहि जीवेहि तित्थगरणामगोत्ते कम्मे णिव्वत्तिते, त जहा—सेणिएण, सुपासेण, उदाइणा, पोट्टिलेण अणगारेण, दढाउणा, सखेण, सतएण[3], सुलसाए सावियाए[4], रेवतीए ॥

भावितित्थगर-पद

६१ एस ण अज्जो ! कण्हे वासुदेवे, रामे वलदेवे, उदए पेढालपुत्ते, पुट्टिले, सतए गाहावती, दारुए[5] णियंठे[6], सच्चई[7] णियठीपुत्ते[8], सावियवुद्धे[9] अव [म्म ?] डे परिव्वायए, अज्जावि ण सुपासा पासावच्चिज्जा । आगमेस्साए उस्सप्पिणीए चाउज्जाम धम्म पण्णवइत्ता सिज्झिहिति[10] °बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाइहिति सव्वदुक्खाण° अत काहिति ॥

महापउम-पद

६२. एस णं अज्जो ! सेणिए राया भिंभिसारे कालमासे काल किच्चा इमीसे

---

१ ठा० ८।७२ ।
२ ठा० ६।४३ ।
३ सततेण (क, ख, ग) ।
४ सावितातें (क, ख, ग) ।
५ दारुते (क, ख, ग) ।
६ नितठे (क, ख, ग) ।
७ सच्चती (क, ख, ग) ।
८ नितठी° (क, ख, ग) ।
९ सावित° (क, ख, ग) ।
१० म० पा०—सिज्झिहिति जाव अत ।

रयणप्पभाए पुढवीए सीमंतए णरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठितीयंसि[1] णिरयंसि[2] णेरइयत्ताए उववज्जिहिति। से णं तत्थ णेरइए भविस्सति—काले कालोभासे[3] •गंभीरलोमहरिसे भीमे उत्तासणए° परमकिण्हे वण्णेणं। से णं तत्थ वेयणं वेदिहिती उज्जलं[4] •तिउलं[5] पगाढं कडुयं कक्कसं चंडं दुक्खं दुग्गं दिव्वं° दुरहियासं।

से णं ततो णरयाओ[6] उव्वट्टेत्ता आगमेसाए उस्सप्पिणीए इहेव जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले पुंडेसु जणवएसु सतदुवारे णगरे संमुइस्स कुलकरस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुमत्ताए पच्चायाहिति।

तए णं सा भद्दा भारिया णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीतिक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं[7] अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदिय-सरीरं लक्खण-वंजण[8]-•गुणोववेयं माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंग-सुंदरंगं ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं° सुरूवं दारगं पयाहिती। जं रयणिं च णं से दारए पयाहिती, तं रयणिं च णं सतदुवारे णगरे सब्भंतरबाहिरए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिति।

तए णं तस्स दारयस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते[9] •णिवत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते° बारसाहे[10] अयमेयारूवं गोण्णं गुणणिप्फण्णं णामधिज्जं काहिंति, जम्हा णं अम्हमिमंसि दारगंसि जातंसि समाणंसि सयदुवारे णगरे सब्भिंतरबाहिरए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वुट्ठे, तं होउ णमम्हमिमस्स दारगस्स णामधिज्जं महापउमे-महापउमे। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधिज्जं काहिंति महापउमेत्ति।

तए णं महापउमं दारगं अम्मापितरो सातिरेगं अट्ठवासजातगं जाणित्ता महता-महता रायाभिसेएणं अभिसिंचिहिंति। से णं तत्थ राया भविस्सति महता-हिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे रायवण्णओ जाव[11] रज्जं पसासेमाणे विहरिस्सति।

---

१ °स्थितिषु (वृ)।
२ निरयंसि णेरइएसु (क, ग), नरकेषु (वृ)।
३ सं० पा०—कालोभासे जाव परमकिण्हे।
४ सं० पा०—उज्जलं जाव दुरहियासं।
५ विउलं (वृपा)।
६ णरताती (क, ख, ग)।
७. °पातं (क, ख, ग)।
८ सं० पा०—वंजण जाव सुरूवं।
९ सं० पा०—वीइक्कंते जाव बारसाहे।
१० बारसाहे दिवसे (क, ख, ग), बारसाह-दिवसे त्ति द्वादशानां पूरणो द्वादशः स एवाख्या यस्य स द्वादशाख्यः स चासौ दिवसश्चेति विग्रहः, अथवा द्वादश च तदहश्च द्वादशाहस्तन्नामको दिवसो द्वादशाह-दिवस इति (वृ), द्रष्टव्यं औपपातिक सूत्र १४४ 'बारसाहे' पाठस्य पादटिप्पणम्।
११ ओ० सू० १४।

तए ण तस्स महापउमस्स रण्णो अण्णदा कयाइ दो देवा महिड्डिया[1] •महज्जुइया महाणुभागा महायसा महावला° महासोक्खा[2] सेणाकम्म काहिंति, त जहा—पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य ।

तए ण सतदुवारे णगरे वहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावति-सत्थवाह-प्पभितयो अण्णमण्ण सद्दावेहिति, एवं वइस्सति—जम्हा ण देवाणुप्पिया ! अम्ह महापउमस्स रण्णो दो देवा महिड्डिया[3] •महज्जुइया महाणुभागा महायसा महावला° महासोक्खा सेणाकम्म करेति, त जहा—पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य । त होउ णमम्ह देवाणुप्पिया ! महापउमस्स रण्णो दोच्चेवि णामधेज्जे देवसेणे-देवसेणे । तते ण तस्स महापउमस्स रण्णो दोच्चेवि णामधेज्जे भविस्सइ देवसेणेति ।

तए ण तस्स देवसेणस्स रण्णो अण्णया कयाई[4] सेय-सखतल-विमल-सण्णिकासे चउदते हत्थिरयणे समुप्पज्जिहिति । तए ण से देवसेणे राया त सेय सखतल-विमल-सण्णिकास चउदत हत्थिरयण दुरूढे समाणे सतदुवार णगर मज्झमज्झेण अभिक्खण-अभिक्खण 'अतिज्जाहिति य णिज्जाहिति'[5] य ।

तए ण सतदुवारे णगरे वहवे राईसर-तलवर[6]-•माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावति-सत्थवाह-प्पभितयो° अण्णमण्ण सद्दावेहिति, एव वइस्सति—जम्हा ण देवाणुप्पिया ! अम्ह देवसेणस्स रण्णो सेते सखतल-विमल-सण्णिकासे चउदते हत्थिरयणे समुप्पण्णे, त होउ णमम्ह देवाणुप्पिया ! देवसेणस्स तच्चेवि णामधेज्जे विमलवाहणे-[विमलवाहणे ?] । तए ण तस्स देवसेणस्स रण्णो तच्चेवि णामधेज्जे भविस्सति विमलवाहणेति ।

तए ण से विमलवाहणे राया तीस वासाइ अगारवासमज्झे वसित्ता अम्मापितीहिं देवत्त गतेहिं गुरुमहत्तरएहिं अब्भणुण्णाते समाणे, उदुमि सरए, सवुद्धे अणुत्तरे मोक्खमग्गे पुणरवि[7] लोगतिएहिं[8] जीयकप्पिएहि देवेहि, ताहि इट्ठाहि कताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि उरालाहि कल्लाणाहि सिवाहि धण्णाहि

---

१ स० पा०—महिड्ढिया जाव महासोक्खा ।

२ महेसक्खा (क, ख, ग), २।२७१ सूत्रे 'महासोक्खा' इति पाठोऽस्ति । वृत्तिकृता 'महेसक्खा' इति पाठान्तरत्वेन उल्लिखितम् । अत्रापि मूलपाठे स एव उपयुज्यते ।

३ स० पा०—महिड्ढिया जाव महासोक्खा ।

४ कताती (क, ख, ग) ।

५ आदर्शेषु अप्राप्त 'ति' वर्णं भगवती (१५।१७२) सूत्रानुसारेण स्वीकृत । वृत्तिकृता एष पाठो न लब्ध तेन व्याख्यातमिदम्—क्वचिद्वर्त्तमाननिर्द्देशो दृश्यते स च तत्कालापेक्ष (वृ) ।

६ स० पा०—तलवर जाव अण्णमण्ण ।

७ पुणो त (क, ग) ।

८ लोगतितेहिं (क, ख, ग) ।

मंगलाहिं सस्सिरिआहिं वग्गूहिं अभिणंदिज्जमाणे अभिथुव्वमाणे य वहिया सुभूमिभागे उज्जाणे एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयाहिति। से णं भगवं जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता[1] °अगाराओ अणगारियं° पव्वयाहिति तं चेव दिवसं सयमेयमेतारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिहिति[2]—जे केइ

१ सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वयाहिति।

२ 'क' प्रतौ स्वीकृतपाठस्य वाचनान्तरस्य च सम्मिश्रणं लभ्यते। वृत्तिकारेणापि वाचनान्तरस्य व्याख्या कृतास्ति, यथा—इतो वाचनान्तरमनुश्रित्य लिख्यते। तस्स णं भगवतस्स [अत्र 'से णं भगवं' युज्यते] साइरेगाइं दुवालसवासाइं निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उप्पज्जिहिंति तं दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा, ते सव्वे सम्मं सहिस्सइ खमिस्सइ तितिक्खिस्सइ अहियासिस्सइ, तए णं से भगवं अणगारे भविस्सइ इरियासमिए भासासमिए एसणासमिए आयाणभंडमत्त-निक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-जल्ल-सिंघाण-पारिट्ठावणियासमिए मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी अममे अकिंचणे छिन्नगंथे (वृपा—किन्नगंथे) निरुपलेवे कंसपाईव मुक्कतोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणे तिव तेयसा जलंते।

कंसे संखे जीवे,
गगणे वाते य सारए सलिले।
पुक्खरपत्ते कुम्मे,
विहगे खग्गे य भारंडे ॥१॥
कुंजर वसहे सीहे,
नगराया चेव सागरमखोहे।
चंदे सूरे कणगे,
वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवतस्स कत्थइ पडिबंधे भविस्सइ, सेयं पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अंडएइ वा पोयएइ वा उग्गहेइ वा पग्गहिएइ वा, जं णं जं णं दिसं इच्छइ तं णं तं णं दिसं अपडिबद्धे सुचिभूए लहुभूए अणुप्पगंथे संजमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सइ, तस्स णं भगवतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एवं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खत्तीए मुत्तीए गुत्तीए सच्चं संजम तव गुण सुचरिय सोय वियं [चिय ?] फलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिहिति।

तए णं से भगवं अरहे जिणे भविस्सति केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स परियागं जाणइ पासइ सव्वलोए सव्वजीवाणं आगइं गतिं ठियं चयणं उववायं तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी तं तं कालं मणसवयसकाइए जोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ।

तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवर-नाणदंसणेणं सदेवमणुआसुराइं लोगं अभि-समिच्चा समणाणं निग्गंथाणं सणेरइए जाव पंचमहव्वयाइं स भावणाइं छ जीवनिकाया धम्मं देसेमाणे विहरिस्सति।

उवसग्गा उप्पज्जिहिंति,[1] त जहा—दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा ते सव्वे सम्म 'सहिस्सइ खमिस्सइ'[2] तितिक्खिस्सइ अहियास्सिसइ ।

तए ण से भगव अणगारे भविस्सति—इरियासमिते भासामसिते एव जहा वद्धमाणसामी त चेव णिरवसेस जाव[3] अव्वावारविउसजोगजुत्ते ।

तस्स ण भगवतस्स एतेण विहारेण विहरमाणस्स दुवालसहिं सवच्छरेहिं वीतिक्कतेहि तेरसहि य पक्खेहिं तेरसमस्स[4] ण सवच्छरस्स अतरा[5] वट्टमाणस्स[6] अणुत्तरेण णाणेण जहा भावणाते[7] केवलवरणाणदसणे समुप्पजिहिति । जिणे भविस्सति केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी सणेरइय जाव[8] पच महव्वयाइ सभावणाइ छच्च जीवणिकाए धम्म देसेमाणे विहरिस्सति ।

से जहाणामए अज्जो ! मए[9] समणाण णिग्गथाण ऐगे आरभठाणे पण्णत्ते । एवामेव महापउमेवि अरहा समणाण णिग्गथाण एग आरभठाण पण्णवेहिति ।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाण णिग्गथाण दुविहे बधणे पण्णत्ते, त जहा—पेज्जवधणे य, दोसवधणे य । एवामेव महापउमेवि अरहा समणाण णिग्गथाण दुविह बधण पण्णवेहिति, त जहा—पेज्जवधण च, दोसवधण च ।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाण णिग्गथाण तओ दडा पण्णत्ता, त जहा—मणदडे, वयदडे, कायदडे । एवामेव महापउमेवि अरहा समणाण णिग्गथाण तओ दडे पण्णवेहिति, त जहा—मणोदड, वयदड, कायदड ।

---

१ उप्पज्जति (ख) ।

२ सहेज्जा खमेज्जा (क, ख, ग) ।

३ अस्य पूर्तिस्थल अद्यावधिनोपलब्धम् ।

४ तेरसगस्स (क, ग), तेरसम्मस्स (ख) ।

५ अतो (क, ग) ।

६. वद्धमाणस्स (ग) ।

७ अस्यपूर्तिर्भावनाध्ययनस्य चूर्णिविवृतपाठस्याधारेण इत्थ जायते—अणुत्तरेण दसणेण अणुत्तरेण चरित्तेण एव आलएण विहारेण अज्जवेण मद्दवेण लाघवेण खतीए मुत्तीए सच्च-सजम-तव-गुण-सुचरिय-सोवचिय-फल-परिनिव्वाण-मग्गेण अप्पाण भावेमाणस्स झाणतरियाए वट्टमाणस्स अणते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे । अगसुत्ताणि भाग १, परिशिष्ट २, आलोच्य-पाठ तथा वाचनान्तर ।

८ अस्यपूर्तिर्भावनाध्ययनस्य चूर्णिविवृतपाठस्याधारेण इत्थ जायते—तिरियनरामरस्स लोगस्स पज्जवे जाणिस्सइ पासिस्सइ, त जहा—आगति गति ठिति चयण उववाय तक्क मणोमाणसिय भुत्त कड पडिसेविय आवीकम्म रहोकम्म अरहा अरहस्स भागी, त त काल मणसवयसकाइएहिं जोगेहिं वट्टमाणाण सव्वलोए सव्वजीवाण सव्वभावे अजीवाण य जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ । तए ण से भगव तेण अणुत्तरेण केवलवरनाणदसणेण सदेवमणुयासुर लोग अभिसमिच्चा समणाण निग्गथाण । अगसुत्ताणि भाग १, परिशिष्ट २, आलोच्य-पाठ तथा वाचनान्तर ।

९. मते (क, ख, ग) ।

से जहाणामए [1]•अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा—कोहकसाए, माणकसाए, मायाकसाए, लोभकसाए। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं चत्तारि कसाए पण्णवेहिति, तं जहा—कोहकसायं, माणकसायं, मायाकसायं, लोभकसायं।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं पंच कामगुणा पण्णत्ता, तं जहा—सद्दे, रूवे, गंधे, रसे, फासे। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं पंच कामगुणे पण्णवेहिति, तं जहा—सद्दं, रूवं, गंधं, रसं, फासं।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं छज्जीवणिकाया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया, वणस्सइकाइया, तसकाइया। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं छज्जीवणिकाए पण्णवेहिति, तं जहा—पुढविकाइए, आउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सइकाइए°, तसकाइए।

से जहाणामए[2] •अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं° सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा[3]—•इहलोगभए, परलोगभए, आदाणभए, अकम्हाभए, वेयणभए, मरणभए, असिलोगभए°। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं सत्त भयट्ठाणे पण्णवेहिति[4], •तं जहा—इहलोगभयं परलोगभयं आदाणभयं अकम्हाभयं वेयणभयं मरणभयं असिलोगभयं°।

एवं अट्ठ मयट्ठाणे, णव बंभचेरगुत्तीओ, दसविधे समणधम्मे, एवं जाव[5] तेत्तीसमासातणाउत्ति।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं णग्गभावे[6] मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणए अच्छत्तए अणुवाहणए भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे लद्धावलद्धवित्तीओ[7] पण्णत्ताओ। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं णग्गभावं[8] •मुंडभावं अण्हाणयं अदंतवणयं अच्छत्तयं अणुवाहणयं भूमिसेज्जं फलगसेज्जं कट्ठसेज्जं केसलोयं बंभचेरवासं परघरपवेसं° लद्धावलद्धवित्ती[9] पण्णवेहिति।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं आधाकम्मिएति वा उद्देसिएति वा मीसज्जाएति वा अज्झोयरएति वा पूतिए कीते पामिच्चे अच्छेज्जे

---

१ सं० पा०—एवमेतेणमभिलावेणं··· एवामेव जाव तसकाइया।
२. सं० पा०—से जहाणामते °······।
३ सं० पा०—सत्त भयट्ठाणा प० तं०··· ।
४ सं० पा०—पण्णवेहिति···· ·।
५ आवस्सय ४।
६ निग्गभावे (ख)।
७ लद्धावलद्धवित्ती जाव (क, ग)।
८ सं० पा०—णग्गभावं जाव लद्धावलद्धवित्ती।
९ लद्धावलद्धवित्ती जाव (क)।

अणिसट्ठे अभिहडेति वा कंतारभत्तेति वा दुब्भिक्खभत्तेति वा गिलाणभत्तेति वा वद्दलियाभत्तेति वा पाहुणभत्तेति वा मूलभोयणेति वा कंदभोयणेति वा फलभोयणेति वा बीयभोयणेति वा हरियभोयणेति वा पडिसिद्धे। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं आधाकम्मियं वा[1] °उद्देसियं वा मीसज्जायं वा अज्झोयरयं वा पूतियं कीतं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं वा कंतारभत्तं वा दुब्भिक्खभत्तं वा गिलाणभत्तं वा वद्दलियाभत्तं वा पाहुणभत्तं वा मूलभोयणं वा कंदभोयणं वा फलभोयणं वा बीयभोयणं वा° हरितभोयणं वा पडिसेहिस्सति।

से जहाणामए अज्जो! मए समणाणं णिग्गंथाणं पंचमहव्वतिए सपडिक्कमणे अचेलए धम्मे पण्णत्ते। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं पंचमहव्वतियं[2] °सपडिक्कमणं° अचेलगं धम्मं पण्णवेहिति।

से जहाणामए अज्जो! मए समणोवासगाणं पंचाणुव्वतिए सत्तसिक्खावतिए—दुवालसविधे सावगधम्मे पण्णत्ते। एवामेव महापउमेवि अरहा समणोवासगाणं पंचाणुव्वतियं[3] °सत्तसिक्खावतियं—दुवालसविधं° सावगधम्मं पण्णवेस्सति।

से जहाणामए अज्जो! मए समणाणं णिग्गंथाणं सेज्जातरपिंडेति वा रायपिंडेति वा पडिसिद्धे। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं सेज्जातरपिंडं वा रायपिंडं वा पडिसेहिस्सति।

से जहाणामए अज्जो! मम णव गणा एगारस गणधरा। एवामेव महापउमस्सवि अरहतो णव गणा एगारस गणधरा भविस्संति।

से जहाणामए अज्जो! अहं तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता[4] °अगाराओ अणगारियं° पव्वइए, दुवालस संवच्छराइं तेरस पक्खा छउमत्थपरियागं पाउणित्ता तेरसहिं पक्खेहिं ऊणगाइं तीसं वासाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता, बायालीसं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, बावत्तरिवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिस्सं[5] °बुज्झिस्सं मुच्चिस्सं परिणिव्वाइस्सं° सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सं। एवामेव महापउमेवि अरहा तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता[6] °मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वाहिती, दुवालस संवच्छराइं[7] °तेरसपक्खा छउमत्थपरियागं पाउणित्ता, तेरसहिं पक्खेहिं ऊणगाइं तीसं वासाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता, बायालीसं वासाइं सामण्णपरि-

---

१ सं० पा०—आधाकम्मितं वा जाव हरितभोयणं।

२ सं० पा०—पंचमहव्वतितं जाव अचेलगं।

३ सं० पा०—पंचाणुव्वतितं जाव सावगधम्मं।

४ सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वतिते।

५ सं० पा०—सिज्झिस्सं जाव सव्वदुक्खाणं°।

६ सं० पा०—वसित्ता जाव पव्वाहिती।

७ सं० पा०—संवच्छराइं जाव बावत्तरिवासाइं।

याग पाउणित्ता°, बावत्तरिवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिहिती[1] °बुज्झिहिती मुच्चिहिती परिणिव्वाइहिती° सव्वदुक्खाणमंतं काहिती—

संगहणी-गाहा

जस्सील-समायारो, अरहा तित्थकरो महावीरो।
तस्सील-समायारो, होति उ अरहा महापउमो ॥१॥

णक्खत्त-पदं

६३ णव णक्खत्ता 'चंदस्स पच्छंभागा'[2] पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

अभिई समणो धणिट्ठा, रेवति अस्सिणि[3] मग्गसिर[4] पूसो।
हत्थो चित्ता य तहा, पच्छंभागा णव हवंति ॥१॥

विमाण-पदं

६४ आणत-पाणत-आरणच्चुतेसु कप्पेसु विमाणा णव जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

कुलगर-पदं

६५ विमलवाहणे णं कुलकरे णव धणुसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था ॥

तित्थगर-पदं

६६ उसभेणं अरहा कोसलिएणं इमीसे ओसप्पिणीए णवहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं वोइक्कताहिं तित्थे पवत्तिते ॥

दीव-पदं

६७ घणदंत-लट्ठदंत-गूढदंत-सुद्धदंतदीवा णं दीवा णव-णव जोयणसताइं आयाम-विक्खंभेणं पण्णत्ता ॥

महग्गह-पदं

६८ सुक्कस्स णं महागहस्स णव वीहीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—हयवीही[5], गयवीही[6], णागवीही, वसहवीही, गोवीही, उरगवीही[7], अयवीही, मियवीही[8], वेसाणरवीही ॥

---

१ सं० पा०—सिज्झिहिती जाव सव्वदुक्खाण°।
२ पच्छभागा (क), पच्छ भागा (ख, ग)।
३ अस्सेति (ख)।
४ मिगसिरा (ग)।
५ हत° (क, ख, ग)।
६ गत° (क, ख, ग)।
७ जरगवीही (क, ख), जरग्गविही (ग)।
८ मित° (क, ख, ग)।

कम्म-पदं

६६. णवविधे णोकसायवेयणिज्जे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा—इत्थिवेए[1], पुरिसवेए, णपुंसकवेए, हासे, रती, अरती, भये, सोगे, दुगुंछा ।।

कुलकोडि-पदं

७० चउरिंदियाण णव जाइ-कुलकोडि-जोणिपमुह-सयसहस्सा पण्णत्ता ।।

७१ भुयगपरिसप्प-थलयर-पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं णव जाइ-कुलकोडि-जोणि-पमुह-सयसहस्सा पण्णत्ता ।।

पावकम्म-पदं

७२ जीवा णं णवट्ठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं जहा—पुढविकाइयणिव्वत्तिते[2], °आउकाइयनिव्वत्तिते, तेउकाइयणिव्वत्तिते, वाउकाइयणिव्वत्तिते, वणस्सइकाइयणिव्वत्तिते, वेइंदियणिव्वत्तिते, तेइंदियणिव्वत्तिते, चउरिंदियणिव्वत्तिते° पंचिंदियणिव्वत्तिते ।

एवं—चिण-उवचिण[3] °बंध-उदीर-वेद तह° णिज्जरा चेव ।।

पोग्गल-पदं

७३ णवपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता जाव[4] णवगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ।।

---

१ °वेते (क, ख, ग) ।

२ सं० पा०—पुढविकाइयणिव्वित्तिते जाव पंचिंदियणिव्वत्तिते ।

३ सं० पा०—उवचिण जाव णिज्जरा ।

४. ठा० १।२५४-२५६ ।

दसमं ठाणं

लोगट्ठिति-पदं

१ दसविधा लोगट्ठिती पण्णत्ता, त जहा—

१ जण्ण जीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायंति—एवप्पेगा[1] लोगट्ठिती पण्णत्ता।

२ जण्ण जीवाण सया समित पावे कम्मे कज्जति—एवप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

३ जण्ण जीवाण सया समित[2] मोहणिज्जे पावे कम्मे कज्जति—एवप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

४. ण एव[3] भूत वा भव्व वा भविस्सति वा ज जीवा अजीवा भविस्सति, अजीवा वा जीवा भविस्सति—एवप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

५. ण एव[4] भूत वा भव्व वा भविस्सति वा ज तसा पाणा वोच्छिज्जिस्सति 'थावरा पाणा भविस्सति'[5], थावरा पाणा वोच्छिज्जिस्सति तसा पाणा भविस्सति—एवप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

६ ण एव भूत वा भव्व वा भविस्सति वा ज लोगे अलोगे भविस्सति, अलोगे वा लोगे भविस्सति—एवप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

७. ण एव भूत वा भव्व वा भविस्सति वा ज लोए अलोए पविस्सति, अलोए वा लोए पविस्सति—एवप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

८ जाव ताव लोगे ताव ताव जीवा, 'जाव ताव'[6] जीवा ताव ताव लोए—एवप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

---

१ एव एगा (क, ख, ग, वृपा)।

२ समिते (क, ग)।

३,४ एत (क, ख, ग)।

५ × (क्व)।

६ इह यावज्जीवास्तावत्तावल्लोको, यावति क्षेत्रे जीवास्तावत्क्षेत्र लोक इति भावार्थ, 'जाव तावे' त्यादिवाक्यरचना तु भाषामात्रम् (वृ)।

९ जाव ताव जीवाण य पोग्गलाण य गतिपरियाए[1] ताव ताव लोए, जाव ताव लोगे ताव ताव जीवाण य पोग्गलाण य गतिपरियाए एवप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

१० सव्वेसुवि ण लोगतेसु अवद्धपासपुट्ठा पोग्गला लुक्खत्ताए कज्जति, जेणं जीवा य पोग्गला य णो सचायति वहिया लोगता गमणयाए—एवप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।।

इदियत्थ-पद

२ दसविहे सद्दे पण्णत्ते, त जहा—

सगह-सिलोगो

णीहारि[2] पिंडिमे लुक्खे, भिण्णे जज्जरिते इ[3] य।
दीहे रहस्से पुहत्ते य, काकणी खिखिणिस्सरे ।।१।।

३ दस इदियत्था तीता पण्णत्ता, त जहा—देसेणवि एगे सद्दाइ सुणिसु। सव्वेणवि एगे सद्दाइ सुणिसु। देसेणवि एगे रूवाइ पासिसु। सव्वेणवि एगे रूवाइ पासिसु। [4]°देसेणवि एगे गधाइ जिंघिसु। सव्वेणवि एगे गधाइ जिंघिसु। देसेणवि एगे रसाइ आसादेसु। सव्वेणवि एगे रसाइ आसादेसु। देसेणवि एगे फासाइ पडिसवेदेसु°। सव्वेणवि एगे फासाइ पडिसवेदेसु ।।

४ दस इदियत्था पडुप्पण्णा पण्णत्ता, त जहा—देसेणवि एगे सद्दाइ सुणेति। सव्वेणवि एगे सद्दाइ सुणेति। [5]°देसेणवि एगे रूवाइ पासति। सव्वेणवि एगे रूवाइ पासति। देसेणवि एगे गधाइ जिघति। सव्वेणवि एगे गधाइ जिघति। देसेणवि एगे रसाइ आसादेति। सव्वेणवि एगे रसाइ आसादेति। देसेणवि एगे फासाइ पडिसवेदेति। सव्वेणवि एगे फासाइ पडिसवेदेति° ।।

५ दस इदियत्था अणागता पण्णत्ता, त जहा—देसेणवि एगे सद्दाइ सुणिस्सति। सव्वेणवि एगे सद्दाइ सुणिस्सति। [6]°देसेणवि एगे रूवाइ पासिस्सति। सव्वेणवि एगे रूवाइ पासिस्सति। देसेणवि एगे गधाइ जिघिस्सति। सव्वेणवि एगे गधाइ जिघिस्सति। देसेणवि एगे रसाइ आसादेस्सति। सव्वेणवि एगे रसाइ आसादेस्सति। देसेणवि एगे फासाइ पडिसवेदेस्सति°। सव्वेणवि एगे फासाइ पडिसवेदेस्सति ।।

---

१ गतिपरितात्ते (क, ख, ग)।
२ नीहारिए (क, ग)।
३ × (क, ग)।
४ स० पा०—एव गधाइ रसाइ फासाई जाव सव्वेणवि।
५ स० पा०—एव जाव फासाइ।
६ स० पा०—एव जाव सव्वेणवि।

अच्छिण्ण-पोग्गल-चलण-पद

६ दसहिं ठाणेहिं अच्छिण्णे पोग्गले चलेज्जा, त जहा—आहारिज्जमाणे वा चलेज्जा। परिणामेज्जमाणे वा चलेज्जा। उस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा। णिस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा। वेदेज्जमाणे वा चलेज्जा। णिज्जरिज्जमाणे वा चलेज्जा। विउव्विज्जमाणे वा चलेज्जा। परियारिज्जमाणे वा चलेज्जा। जक्खाइट्ठे वा चलेज्जा। वातपरिगए[1] वा चलेज्जा॥

कोधुप्पत्ति-पदं

७. दसहिं ठाणेहिं कोधुप्पत्ती सिया, त जहा—मणुण्णाइ मे सद्द फरिस-रस-रूव-गधाइ अवहरिंसु[2]। अमणुण्णाइ मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गधाइ उवहरिंसु[3]। मणुण्णाइ मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गधाइ अवहरइ। अमणुण्णाइ मे सद्द-फरिस[4]-°रस-रूव°-गधाइ उवहरति। मणुण्णाइ मे सद्द[5]-°फरिस-रस-रूव-गधाइ° अवहरिस्सति। अमणुण्णाइ मे सद्द[6]-फरिस-रस-रूव-गधाइ° उवहरिस्सति। मणुण्णाइ मे सद्द[7]-°फरिस-रस-रूव°-गधाइ अवहरिंसु वा अवहरइ वा अवहरिस्सति वा। अमणुण्णाइ मे सद्द[8]-°फरिस-रस-रूव-गधाइ° उवहरिंसु वा उवहरति वा उवहरिस्सति वा। मणुण्णामणुण्णाइ मे सद्द[9]-°फरिस-रस-रूव-गधाइ° अवहरिंसु वा अवहरति वा अवहरिस्सति वा, उवहरिंसु वा उवहरति वा उवहरिस्सति वा। अह च ण आयरिय-उवज्झायाण सम्म वट्टामि, मम च ण आयरिय-उवज्झाया मिच्छ विप्पडिवण्णा[9]॥

सजम-असजम-पदं

८ दसविधे सजमे पण्णत्ते, त जहा—पुढविकाइयसजमे[10], °आउकाइयसजमे, तेउकाइयसजमे, वाउकाइयसजमे°, वणस्सतिकाइयसजमे, बेइदियसजमे, तेइदियसजमे, चउरिंदियसजमे, पचिंदियसजमे, अजीवकायसजमे॥

---

१ प्रतिपु 'वातपरिग्गहे' पाठो लभ्यते, किन्तु अर्थ समीक्षया स सगति नैति। वृत्तिव्याख्यात पाठोत्र समीचीनो विभाति, तेनात्र स एव मूले स्वीकृत। वृत्तौ व्याख्या इत्यमस्ति—"वातपरिगतो—देहगतवायुप्रेरित वातपरिगते वा देहे सति वाह्यवातेन वोरिक्षप्त इति।" (वृत्तिपत्र ४४८)।

२ इह चैकवचनवहुवचनयोर्न विशेष प्राकृतत्वात् (वृ)।

३ स० पा०—फरिस जाव गधाइ।

४ स० पा०—सद्द जाव अवहरिस्सति।

५ स० पा०—सद्द जाव उवहरिस्सति।

६ स० पा०—सद्द जाव गधाइ।

७ स० पा०—सद्द जाव उवहरिंसु।

८ स० पा०—सद्द जाव अवहरिंसु।

९ पडिवन्ना (क्व)।

१० स० पा०—पुढविकातितसजमे जाव वणस्सति°।

९ दसविधे असंजमे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयअसंजमे, आउकाइयअसंजमे, तेउकाइयअसंजमे, वाउकाइयअसंजमे, वणस्सतिकाइयअसंजमे[1], •बेइंदियअसंजमे, तेइंदियअसंजमे, चउरिंदियअसंजमे, पंचिंदियअसंजमे°, अजीवकायअसंजमे ॥

संवर-असंवर-पदं

१० दसविधे संवरे पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियसंवरे[2], •चक्खिंदियसंवरे, घाणिंदियसंवरे, जिब्भिंदियसंवरे°, फासिंदियसंवरे, मणसंवरे वयसंवरे कायसंवरे, उवकरणसंवरे, सूचीकुसग्गसंवरे ॥

११ दसविधे असंवरे पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियअसंवरे[3], •चक्खिंदियअसंवरे, घाणिंदियअसंवरे, जिब्भिंदियअसंवरे, फासिंदियअसंवरे, मणअसंवरे, वयअसंवरे, कायअसंवरे, उवकरणअसंवरे°, सूचीकुसग्गअसंवरे ॥

अहमंत-पदं

१२ दसहिं ठाणेहिं अहमंतीति थंभिज्जा, तं जहा—जातिमएण वा, कुलमएण वा[4], •बलमएण वा, रूवमएण वा, तवमएण वा, सुतमएण वा, लाभमएण वा°, इस्सरियमएण वा, णागसुवण्णा वा मे अंतियं हव्वमागच्छंति, पुरिसधम्मातो वा मे उत्तरिए आहोधिए[5] णाणदंसणे समुप्पण्णे ॥

समाधि-असमाधि-पदं

१३ दसविधा समाधी पण्णत्ता, तं जहा—पाणातिवायवेरमणे, मुसावायवेरमणे, अदिण्णादाणवेरमणे, मेहुणवेरमणे, परिग्गहवेरमणे, इरियासमिती[6], भासासमिती, एसणासमिती, आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमिती, उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-जल्ल-पारिट्ठावणिया समिती ॥

१४ दसविधा असमाधी पण्णत्ता, तं जहा—पाणातिवाते,[7] •मुसावाए, अदिण्णादाणे, मेहुणे°, परिग्गहे, इरियाऽसमिती[8], •भासाऽसमिती, एसणाऽसमिती, आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणाऽसमिती°, उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-जल्ल-पारिट्ठावणियाऽसमिती ॥

पव्वज्जा-पदं

१५ दसविधा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—

---

१ सं० पा०—वणस्सतिकातिनअसंजमे जाव अजीवकाय° ।

२ सं० पा०—सोतिंदियसंवरे जाव फासिंदिय° ।

३. सं० पा०—सोतिंदितअसंवरे जाव सूचीकुसग्ग° ।

४ सं० पा०—कुलमतेण वा जाव इस्सरिय° ।

५ अवोवित (ग), अहो° (वृ) ।

६ रितासमिती (क), इरिता° (ख, ग) ।

७. सं० पा०—पाणातिवाते जाव परिग्गहे ।

८, सं० पा०—इरिताऽसमिती जाव उच्चार° ।

संगहणी-गाहा

छदा रोसा परिजुण्णा, सुविणा पडिस्सुता चेव ।
सारणिया रोगिणिया, अणाढिता देवसण्णत्ती ॥१॥
वच्छाणुवधिया ॥

समणधम्म-पदं

१६ दसविधे समणधम्मे पण्णत्ते, त जहा—खती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे, सच्चे, सजमे तवे, चियाए, वभचेरवासे ॥

वेयावच्च-पदं

१७ दसविधे वेयावच्चे पण्णत्ते, त जहा—आयरियवेयावच्चे, उवज्झायवेयावच्चे, थेरवेयावच्चे, तवस्सिवेयावच्चे, गिलाणवेयावच्चे, सेहवेयावच्चे, कुलवेयावच्चे, गणवेयावच्चे, सघवेयावच्चे, साहम्मियवेयावच्चे ॥

परिणाम-पदं

१८ दसविधे जीवपरिणामे पण्णत्ते, त जहा—गतिपरिणामे, इदियपरिणामे[1], कसाय-परिणामे, लेसापरिणामे, जोगपरिणामे, उवओगपरिणामे, णाणपरिणामे, दसण-परिणामे, चरित्तपरिणामे, वेयपरिणामे[2] ॥

१९ दसविधे अजीवपरिणामे पण्णत्ते, त जहा—बधणपरिणामे, गतिपरिणामे, सठाण-परिणामे, भेदपरिणामे, वण्णपरिणामे, रसपरिणामे, गधपरिणामे, फास-परिणामे, अगुरुलहुपरिणामे, सद्दपरिणामे ॥

असज्झाइय-पदं

२० दसविधे अतलिक्खए[3] असज्झाइए पण्णत्ते, त जहा—उक्कावाते, दिसिदाघे, गज्जिते, विज्जुते, णिग्घाते, जुवए[4], जक्खालित्ते[5], धूमिया, महिया, रयुग्घाते[6] ॥

२१ दसविधे ओरालिए असज्झाइए पण्णत्ते, त जहा —अट्ठि, मसे, सोणिते[7], असुइ-सामते, सुसाणसामते, चदोवराए[8], सूरोवराए[9], पडणे, रायवुग्गहे, उवस्सयस्स अतो ओरालिए सरीरगे ॥

---

१ इदित० (क, ख, ग) ।
२. वेत० (क, ख, ग) ।
३ अतलिक्खिते (क, ख, ग) ।
४ जूयते (ख) ।
५ जक्खलित्तते (क), जक्खालित्तते (ख), जक्खलितिते (ग) ।
६ रतुग्घाते (क, ख) ।
७. ग्रन्यान्तरे चर्माप्यधीयते, यदाह—"सोणिय मस चम्म, अट्ठीवि य होंति चत्तारि" (वृ) ।
८. चदोवराते (क, ख, ग) ।
९ सूरोवराते (क, ख, ग) ।

संजम-असजम-पदं

२२ पंचिदिया ण जीवा असमारभमाणस्स दसविधे सजमे कज्जति, त जहा—सोतामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवति। सोतामएण दुक्खेण असजोगेत्ता भवति। [1]°चक्खुमयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवति। चक्खुमएण दुक्खेण असजोगेत्ता भवति। घाणामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवति। घाणामएण दुक्खेण असजोगेत्ता भवति। जिब्भामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवति। जिब्भामएण दुक्खेण असजोगेत्ता भवति। फासामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवति°। फासामएण दुक्खेण असजोगेत्ता भवति॥

२३ [2]°पंचिदिया ण जीवा समारभमाणस्स दसविधे असजमे कज्जति, त जहा—सोतामयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवति। सोतामएण दुक्खेण सजोगेत्ता भवति। चक्खुमयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवति। चक्खुमएण दुक्खेण सजोगेत्ता भवति। घाणामयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवति। घाणामएण दुक्खेण सजोगेत्ता भवति। जिब्भामयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवति। जिब्भामएण दुक्खेण सजोगेत्ता भवति। फासामयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवति। फासामएण दुक्खेण सजोगेत्ता भवति °॥

सुहुम-पद

२४ दस सुहुमा पण्णत्ता, त जहा—पाणसुहुमे, पणगसुहुमे[3], °बीयसुहुमे, हरितसुहुमे, पुप्फसुहुमे, अंडसुहुमे, लेणसुहुमे°, सिणेहसुहुमे, गणियसुहुमे, भंगसुहुमे॥

महाणदी-पद

२५ जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण गंगा-सिंधु-महाणदीओ दस महाणदीओ समप्पेंति, त जहा—जउणा, सरऊ, आवी, कोसी, मही, सतद्दू, वितत्था[4], विभासा, एरावती, चंदभागा॥

२६ जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण रत्ता-रत्तवतीओ महाणदीओ दस महाणदीओ समप्पेंति, तं जहा—किण्हा, महाकिण्हा, णीला, महाणीला, महातीरा, इदा[5], °इंदसेणा, सुसेणा, वारिसेणा°, महाभोगा[6]॥

---

१ स० पा०—एव जाव फासामतेण।

२. स० पा०—एव असंयमो वि भाणितव्वो।

३ स० पा०—पणगसुहुमे जाव सिणेहसुहुमे।

४. विवच्छा (क), विवत्था (ग)।

५ स० पा०—इदा जाव महाभोगा।

६ सर्वेषु प्रयुक्तादर्शेषु निम्नप्रकार पाठो लभ्यते—"किण्हा महाकिण्हा नीला महानीला तीरा महातीरा इदा जाव महाभोगा।" वृत्तौ च—"एव रक्तासूत्रमपि नवर यावत्करणात् 'इन्दसेणा वारिसेण' ति द्रष्टव्यमिति" (वृत्तिपत्र ४५४)। किन्तु पंचमस्थानसमागतपाठस्य (सू० २३२, २३३) सदर्भे नैष पाठ समीचीनो भाति, तेनास्माभिर्मूले पंचमस्थानसमागत. पाठ स्वीकृत।

रायहाणी-पदं

२७ जबुद्दीवे दीवे भरहे वासे दस रायहाणीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

सगहणी-गाहा

चपा[1] महुरा वाणारसी य सावत्थि 'तह य'[2] साकेत[3]।
हत्थिणउर कपिल्ल, मिहिला कोसवि रायगिह ॥१॥

राय-पदं

२८ एयासु ण दससु रायहाणीसु दस रायाणो मुडा भवेत्ता[4] •अगाराओ अणगारिय ० पव्वइया, त जहा—भरहे, सगरे[5], मघव, सणकुमारे, सती, कुथू, अरे, महापउमे, हरिसेणे, जयणामे ॥

मदर-पदं

२९ जबुद्दीवे दीवे मदरे पव्वए दस जोयणसयाइ उव्वेहेण, धरणितले दस जोयण-सहस्साइ विक्खभेण, उवरि दसजोयणसयाइ विक्खभेण, दसदसाइ जोयण-सहस्साइ सव्वग्गेण पण्णत्ते ॥

दिसा-पदं

३० जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिम-हेट्ठिल्लेसु खुड्डगपतरेसु, एत्थ ण अट्ठपएसिए[6] रुयगे पण्णत्ते, जओ ण इमाओ दस दिसाओ पवहति, त जहा—पुरत्थिमा, पुरत्थिमदाहिणा, दाहिणा, दाहिणपच्चत्थिमा, पच्चत्थिमा, पच्चत्थिमुत्तरा, उत्तरा, उत्तरपुरत्थिमा, उड्ढा, अहा ।

३१ एतासि ण दसण्ह दिसाण दस णामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—

सगहणी-गाहा

इदा अग्गेइ[7] जम्मा य, णेरती वारुणी य वायव्वा ।
सोमा ईसाणी य, विमला य तमा य बोद्धव्वा ॥१॥

लवणसमुद्द-पदं

३२ लवणस्स ण समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइ गोतित्थविरहिते खेत्ते पण्णत्ते ॥

३३ लवणस्स ण समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइ उदगमाले पण्णत्ते ॥

---

१ चप (ग) ।
२. चद त (ग) ।
३ सातेत (क, ख, ग) ।
४. स० पा० —भवेत्ता जाव पव्वतिता ।
५ सागरो (ख) ।
६ ०पतेसिते (क, ख, ग) ।
७ अग्गीयी (ख) ।

पायाल-पदं

३४ सव्वेवि ण महापाताला दसदसाइ जोयणसहस्साइ उव्वेहेण पण्णत्ता, मूले दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण पण्णत्ता, वहुमज्झदेसभागे एगपएसियाए सेढीए दसदसाइ जोयणसहस्साइ विक्खभेण पण्णत्ता, उवरि मुहमूले दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण पण्णत्ता। तेसि ण महापातालाण कुड्डा सव्ववइरामया सव्वत्थ समा दस जोयणसयाइ वाहल्लेणं पण्णत्ता ॥

३५ सव्वेवि ण खुद्दा पाताला दस जोयणसताइ उव्वेहेण पण्णत्ता, मूले दसदसाइ जोयणाइ विक्खभेण पण्णत्ता, वहुमज्झदेसभागे एगपएसियाए सेढीए दस जोयणसताइ विक्खभेण पण्णत्ता, उवरि मुहमूले दसदसाइ जोयणाइ विक्खभेण पण्णत्ता। तेसि ण खुड्डापातालाण[1] कुड्डा सव्ववइरामया सव्वत्थ समा दस जोयणाइ वाहल्लेण पण्णत्ता ॥

पव्वय-पद

३६ धायइसडगा ण मदरा दसजोयणसयाइ उव्वेहेण, धरणीतले देसूणाइ दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण, उवरि दस जोयणसयाइ विक्खभेण पण्णत्ता ॥

३७ पुक्खरवरदीवड्ढगा ण मदरा दस जोयणसयाइ उव्वेहेण, एव चेव ॥

३८ सव्वेवि ण वट्टवेयड्ढपव्वता दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, दस गाउयसयाइं उव्वेहेण, सव्वत्थ समा पल्लगसठिता,[2] दस जोयणसयाइ विक्खभेण पण्णत्ता ॥

खेत्त-पदं

३९ जबुद्दीवे दीवे दस खेत्ता पण्णत्ता, त जहा—भरहे, एरवते, हेमवते, हेरण्णवते, हरिवस्से, रम्मगवस्से, पुव्वविदेहे, अवरविदेहे, देवकुरा, उत्तरकुरा ॥

पव्वय-पदं

४० माणुसुत्तरे ण पव्वते मूले दस बावीसे जोयणसते विक्खभेण पण्णत्ते ॥

४१ सव्वेवि ण अजण-पव्वता दस जोयणसयाइ उव्वेहेण, मूले दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण, उवरि दस जोयणसताइ विक्खभेण पण्णत्ता ॥

४२ सव्वेवि ण दहिमुहपव्वता दस जोयणसताइ उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा पल्लगसठिता,[3] दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण पण्णत्ता ॥

४३ सव्वेवि ण रतिकरपव्वता दस जोयणसताइ उड्ढ उच्चत्तेण, दसगाउयसताइ उव्वेहेण, सव्वत्थ समा झल्लरिसठिता, दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण पण्णत्ता ॥

---

१ खुड्डापोताला (ग)। २, ३ सठाणसठिता (क्व)।

४४ रुयगवरे ण पव्वते दस जोयणसयाइ उव्वेहेण, मूले दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण, उवरिं दस जोयणसताइ विक्खभेण पण्णत्ते ।।

४५ एव कुडलवरेवि ।।

दवियाणुओग-पदं

४६. दसविहे दवियाणुओगे पण्णत्ते, त जहा—दवियाणुओगे, माउयाणुओगे, एगट्ठियाणुओगे, करणाणुओगे, अप्पितणप्पिते[1], भाविताभाविते, बाहिराबाहिरे, सासतासासते, तहणाणे, अतहणाणे ।।

उप्पातपव्वय-पदं

४७ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तिगिंछिकूडे[2] उप्पातपव्वते मूले दस बावीसे जोयणसते विक्खभेण पण्णत्ते ।।

४८ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो सोमप्पभे उप्पातपव्वते दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, दस गाउयसताइ उव्वेहेण[3], मूले दस जोयणसयाइ विक्खभेण पण्णत्ते ।।

४९ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो जमस्स महारण्णो जमप्पभे उप्पातपव्वते एव चेव ।।

५० एव वरुणस्सवि ।।

५१ एव वेसमणस्सवि ।।

५२ बलिस्स ण वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो रुयगिंदे उप्पातपव्वते मूले दस बावीसे जोयणसते विक्खभेण पण्णत्ते ।।

५३ बलिस्स ण वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स एव चेव, जधा चमरस्स लोगपालाण[4] त चेव बलिस्सवि[5] ।।

५४ धरणस्स ण णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो धरणप्पभे उप्पातपव्वते दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, दस गाउयसताइ उव्वेहेण, मूले दस जोयणसताइ विक्खभेण ।।

५५ धरणस्स ण णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो कालवालप्पभे[6] उप्पातपव्वते जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण एव चेव ।।

---

१ अप्पिणप्पिते (क) ।

२ तेगिच्छि० (क) ।

३ ओव्वे० (क) ।

४. द्रष्टव्यम्—ठा० ४।१२२ ।

५ ठा० १०।४८-५१ ।

६ महाकालप्पभे (क, ख, ग), आदर्शेषु 'महाकालप्पभ' पाठो लभ्यते, किन्तु 'सव्वेसि उप्पायपव्वया भाणियव्वा सरिनामगा'

५६ एव जाव[1] सखवालस्स ॥
५७ एव भूताणदस्सवि[2] ॥
५८ एव लोगपालाणवि[3] से, जहा धरणस्स ॥
५९ एव जाव[4] थणितकुमाराण सलोगपालाण[5] भाणियव्व, सव्वेसि उप्पायपव्वया भाणियव्वा सरिणामगा[6] ॥
६० सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सक्कप्पभे उप्पातपव्वते दस जोयणसहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण, दस गाउयसहस्साइ उव्वेहेण, मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खभेण पण्णत्ते ॥
६१ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो। जधा सक्कस्स तधा सव्वेसि लोगपालाण,[7] सव्वेसि च इदाण जाव[8] अच्चुयत्ति। सव्वेसि पमाणमेग ॥

ओगाहणा-पद

६२ बायरवणस्सइकाइयाण उक्कोसेण दस जोयणसयाइ सरीरोगाहणा पण्णत्ता ॥
६३ जलचर-पचिंदियतिरिक्खजोणियाण उक्कोसेण दस जोयणसताइ सरीरोगाहणा पण्णत्ता ॥
६४ उरपरिसप्प-थलचर-पचिंदियतिरिक्खजोणियाण उक्कोसेण [9]°दस जोयण-सताइं सरीरोगाहणा पण्णत्ता° ॥

तित्थगर-पद

६५ सभवाओ ण अरहातो अभिणदणे अरहा दसहिं सागरोवमकोडिसतसहस्सेहिं वीतिक्कतेहिं समुप्पण्णे ॥

अणंत-पदं

६६ दसविहे अणतए[10] पण्णत्ते, त जहा—णामाणंतए ठवणाणतए, दव्वाणतए, गणणाणंतए, पएसाणंतए, एगतोणतए, दुहतोणतए, देसवित्थाराणतए, सव्ववित्थाराणतए सासताणंतए ॥

पुव्ववत्थु-पदं

६७ उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थू पण्णत्ता ॥
६८ अत्थिणत्थिप्पवायपुव्वस्स[11] ण दस चूलवत्थू पण्णत्ता ॥

इति नियामकपाठेन 'कालवालप्पभ' इति पाठो युज्यते। वृत्तौ कालवालस्य कालवाल-प्रभ' इत्युल्लिखितमस्ति। एतत् समी-क्षयास्माभि. 'कालवालप्पभ' पाठ स्वीकृतः।

१. ठा० ४।१२२।
२. ठा० १०।५४।
३ लोगपालाणपि (क, ख, ग)।
४. ठा० १।१४४-१५०।
५ द्रष्टव्यम्—ठा० ४।१२२।
६. सरिसणामगा (ख)।
७ द्रष्टव्यम् ठा० ४।१२२।
८ ठा० २।३८०-३८४।
९ स० पा०—एव चेव।
१० अणतते (क, ख, ग)।
११ °प्पवात° (क, ख, ग)।

पडिसेवणा-पदं

६९ दसविहा पडिसेवणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

दप्प पमायऽणाभोगे, आउरे आवतीसु य।
संकिते सहसक्कारे, भयप्पओसा य वीमंसा ॥१॥

आलोयणा-पदं

७० दस आलोयणादोसा पण्णत्ता, तं जहा—

आकंपइत्ता अणुमाणइत्ता, जं दिट्ठं बायरं च सुहुमं वा।
छण्णं सद्दाउलगं, बहुजण अव्वत्त तस्सेवी ॥१॥

७१ दसहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहति अत्तदोसमालोएत्तए, तं जहा—जाइसंपण्णे, कुलसंपण्णे, [1]°विणयसंपण्णे, णाणसंपण्णे, दंसणसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे,° खंते, दंते, अमायी[2], अपच्छाणुतावी ॥

७२ दसहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहति आलोयणं पडिच्छित्तए, तं जहा—आयारवं, आहारवं[3], ववहारवं, ओवीलए, पकुव्वए, अपरिस्साई, णिज्जावए,° अवायदंसी, पियधम्मे[4] दढधम्मे ॥

पायच्छित्त-पदं

७३ दसविधे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा—आलोयणारिहे[5], °पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे, विउसग्गारिहे, तवारिहे, छेयारिहे, मूलारिहे°, अणवट्ठप्पारिहे, पारंचियारिहे ॥

मिच्छत्त-पदं

७४ दसविधे मिच्छत्ते पण्णत्ते, तं जहा—अधम्मे धम्मसण्णा, धम्मे अधम्मसण्णा, उमग्गे[6] मग्गसण्णा, मग्गे उम्मग्गसण्णा[7], अजीवेसु जीवसण्णा, जीवेसु अजीवसण्णा,

---

१ सं० पा०—एवं जधा अट्ठट्ठाणे जाव खंते।
२ अमाती (क, ख, ग)।
३ अवहारवं (ख, ग, वृ), ८।१८ सूत्रे 'आधारवं' पाठो विद्यते। भगवत्या (२५।५५४) मपि 'आहारवं' पाठो लभ्यते। अष्टमस्थानेपि वृत्तिकारेणास्यार्थः 'अवधारणावान्' कृतः अत्रापि स एवार्थः कृतोस्ति। भगवतीवृत्तावपि एष एवार्थोस्ति। अत्र 'आधारवान्' इत्यर्थोभिप्रेतोस्ति, तेन 'आधा [हा] रवं' इत्येव पाठः समीचीनः प्रतिभाति। सं० पा०—आहारवं जाव अवातदंसी।
४. वित° (क), पित° (ख, ग)।
५ सं० पा०—आलोयणारिहे जाव अणवट्ठप्पारिहे।
६ अमग्गे (ख)।
७ अमग्गसण्णा (वृ)।

असाहुसु साहुसण्णा, साहुसु असाहुसण्णा, अमुत्तेसु मुत्तसण्णा, मुत्ते
अमुत्तसण्णा ॥

तित्थगर-पदं

७५. चदप्पभे ण अरहा दस पुव्वसतसहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे[1] •बुद्धे मु
अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

७६ धम्मे ण अरहा दस वासमयसहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे[2] •बुद्धे मु
अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

७७ णमी ण अरहा दस वाससहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे[3] •बुद्धे मुत्ते अतग
परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

वासुदेव-पद

७८ पुरिससीहे ण वासुदेवे दस वाससयसहस्साइ[4] सव्वाउय पालइत्ता छट्ठीए तमा
पुढवीए णेरइयत्ताए उववण्णे ॥

तित्थगर-पदं

७९ णेमी ण अरहा दस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण, दस य वाससयाइ सव्वाउय पालइ
सिद्धे[5] •बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

वासुदेव-पद

८० कण्हे ण वासुदेवे दस धणूइं उड्ढ उच्चत्तेण, दस य वाससयाइ सव्वाउ
पालइत्ता तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववण्णे ॥

भवणवासि-पदं

८१ दसविहा भवणवासी देवा पण्णत्ता, त जहा—असुरकुमारा जाव[6] थणियकुमारा

८२ एएसि णं दसविधाण भवणवासीण देवाण दस चेइयरुक्खा पण्णत्ता, त जहा-

संगहणी-गाहा

अस्सत्थ[7] सत्तिवण्णे, सामलि उवर सिरीस दहिवण्णे ।
वजुल-पलास-वग्घा[8], तते य कणियाररुक्खे[9] ॥१॥

१,२,३. स० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।

४ वाससहस्साइ (क, ख, ग) ।

५ स० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।

६. ठा० १ १४३-१५० ।

७ असत्थ (ख), अम्सत्त (ग) ।

८ द्वयोरादर्शयो मुद्रितपुस्तकेपु च 'वप्पा, वप्पो, वप्पे' इति पाठा लभ्यन्ते । किन्तु 'वप्र' शब्दस्य वृक्षवाचित्व नोपलभ्यते । 'वग्घ' शब्दोत्र उपयुक्तोस्ति । पाइयसद्दमहण्ण 'व्याघ्र' शब्दस्य वृक्षवाचि अर्थद्वय विद्यते- रक्तएरण्ड का पेड, करज का पेड आप्टेमहोदयस्य सस्कृतइगलिशशब्दको 'व्याघ्र' शब्दस्यार्थं रक्तएरण्डवृक्षः कृतोस्ति 'The red variety of the castor O plant

९ कणितार° (क,ख, ग) ।

सोक्ख-पदं

८३ दसविधे सोक्खे पण्णत्ते, तं जहा—

आरोग्ग दीहमाउ, अड्ढेज्ज काम भोग संतोसे।
अत्थि सुहभोग णिक्खम्ममेव तत्तो अणाबाहे ॥१॥

उवघात-विसोहि-पद

८४ दसविधे उवघाते पण्णत्ते, तं जहा—उग्गमोवघाते, उप्पायणोवघाते, °[1]एसणोवघाते, परिकम्मोवघाते°, परिहरणोवघाते, णाणोवघाते, दंसणोवघाते, चरित्तोवघाते, अचियत्तोवघाते, सारक्खणोवघाते ॥

८५ दसविधा विसोही पण्णत्ता, तं जहा—उग्गमविसोही, उप्पायणविसोही[2], °एसणविसोही, परिकम्मविसोही, परिहरणविसोही, णाणविसोही, दंसणविसोही, चरित्तविसोही, अचियत्तविसोही°, सारक्खणविसोही ॥

संकिलेस-असंकिलेस-पद

८६ दसविधे संकिलेसे पण्णत्ते, तं जहा—उवहिसंकिलेसे, उवस्सयसंकिलेसे, कसायसंकिलेसे, भत्तपाणसंकिलेसे, मणसंकिलेसे, वइसंकिलेसे, कायसंकिलेसे, णाणसंकिलेसे, दंसणसंकिलेसे, चरित्तसंकिलेसे ॥

८७ दसविहे असंकिलेसे पण्णत्ते, तं जहा—उवहिअसंकिलेसे[3], °उवस्सयअसंकिलेसे, कसायअसंकिलेसे, भत्तपाणअसंकिलेसे, मणअसंकिलेसे, वइअसंकिलेसे, कायअसंकिलेसे, णाणअसंकिलेसे, दंसणअसंकिलेसे°, चरित्तअसंकिलेसे ॥

बल-पद

८८ दसविधे बले पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियबले[4], °चक्खिंदियबले, घाणिंदियबले, जिब्भिंदियबले°, फासिंदियबले, णाणबले, दंसणबले, चरित्तबले, तवबले, वीरियबले ॥

भासा-पदं

८९ दसविहे सच्चे पण्णत्ते, तं जहा—

संगहणी-गाहा

जणवय सम्मय ठवणा, णामे रूवे पडुच्चसच्चे य।
ववहार भाव जोगे, दसमे ओवम्मसच्चे य ॥१॥

---

१ सं० पा०—जह पच्चक्खाणे जाव परिहरणोवघाते।
२ सं० पा०—उप्पायणविसोही जाव सारक्खणविसोही।
३ सं० पा०—उवहिअसंकिलेसे जाव चरित्त°।
४ सं० पा०—सोतिंदितबले जाव फासिंदितबले।

९० दसविवे मोसे पण्णत्ते, त जहा—
कोधे माणे माया, लोभे पिज्जे तहेव दोसे य ।
हास भए अक्खाइय, उवघात णिस्सिते दसमे ॥१॥

९१ दसविवे सच्चामोसे पण्णत्ते, त जहा—उप्पण्णमीसए, विगतमीसए, उप्पण्ण-विगतमीसए, जीवमीसए, अजीवमीसए, जीवाजीवमीसए, अणतमीसए, परित्त-मीसए, अद्धामीसए, अद्धद्धामीसए ॥

दिट्ठिवाय-पदं

९२ दिट्ठिवायस्स ण दस णामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—दिट्ठिवाएति वा, हेउवाएति वा, भूयवाएति वा, तच्चावाएति वा, सम्मावाएति वा, धम्मावाएति वा, भासाविजएति वा, पुव्वगतेति वा, अणुजोगगतेति वा, सव्वपाणभूतजीवसत्त-सुहावहेति वा ॥

सत्यपद

९३ दसविवे सत्थे पण्णत्ते, तं जहा—

सगह-सिलोगो

सत्थमग्गी विस लोण, सिणेहो खारमविल ।
दुप्पउत्तो मणो वाया, काओ[1] भावो य अविरती ॥१॥

दोस-पद

९४ दसविहे दोसे पण्णत्ते, त जहा—
तज्जातदोसे मतिभगदोसे, पसत्थारदोसे परिहरणदोसे ॥
सलक्खण-क्कारण-हेउदोसे, सकामण णिग्गह-वत्थुदोसे ॥१॥

विसेस-पदं

९५ दसविधे विसेसे पण्णत्ते, त जहा—
वत्थु तज्जातदोसे य, दोसे एगट्ठिएति य ।
कारणे य पडुप्पण्णे, दोसे णिच्चेहिय अट्ठमे ॥
अत्तणा[2] उवणीते[3] य, विसेसेति य ते दस ॥१॥

सुद्धवायाणुओग-पदं

९६ दसविधे सुद्धवायाणुओगे पण्णत्ते, त जहा—'चकारे, मकारे, पिंकारे'[4], सेयकारे, एगत्ते, पुधत्ते[5], सजूहे, सकामिते, भिण्णे ॥

---

१ कातो (क, ग), काया (ख) ।
२ 'अत्तण' त्ति आत्मना कृतमिति शेष (वृ) ।
३. उपनीत—प्रापित परेणेति शेष (वृ) ।
४. चकारे मिकारे पिकारे (ख, ग) ।
५. सुद्धत्ते (क), सुधत्ते (ग) ।

दाण-पदं

९७ दसविहे दाणे पण्णत्ते, तं जहा—

संगह-सिलोगो

अणुकंपा संगहे चेव, भये कालुणिएति य।
लज्जाए गारवेणं च, अहम्मे उण सत्तमे ॥
धम्मे य अट्ठमे वुत्ते, काहीति य कतंति य ॥१॥

गति-पदं

९८ दसविधा गती पण्णत्ता, तं जहा—णिरयगती, णिरयविग्गहगती, तिरियगती, तिरियविग्गहगती, [1]°मणुयगती, मणुयविग्गहगती, देवगती, देवविग्गहगती°, सिद्धिगती, सिद्धिविग्गहगती ॥

मुंड-पदं

९९. दस मुंडा पण्णत्ता, तं जहा—सोतिंदियमुंडे[2], °चक्खिंदियमुंडे, घाणिंदियमुंडे, जिब्भिंदियमुंडे°, फासिंदियमुंडे, कोहमुंडे[3], °माणमुंडे मायामुंडे° लोभमुंडे, सिरमुंडे ॥

संखाण-पदं

१०० दसविधे संखाणे पण्णत्ते, तं जहा—

संगहणी-गाहा

परिकम्मं ववहारो, रज्जू रासी कला-सवण्णे य।
जावंतावंति वग्गो, घणो य तह वग्गवग्गोवि ॥१॥
कप्पो य° ॥

१०१ दसविधे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा—

अणागयमतिक्कंतं, कोडीसहियं णियंटितं चेव।
सागारमणागारं, परिमाणकडं णिरवसेसं ॥
संकेयगं चेव अद्धाए, पच्चक्खाणं दसविहं तु ॥१॥

सामायारी-पदं

१०२ दसविहा सामायारी पण्णत्ता, तं जहा—

---

१ सं० पा०—एवं जाव सिद्धिगती।
२. सोतिंदित° (क, ख, ग), सं० पा०—सोतिंदितमुंडे जाव फासिंदित°।
३ सं० पा०—कोहमुंडे जाव लोभमुंडे।

संगह-सिलोगो

इच्छा मिच्छा तहक्कारो, आवस्सिया[1] य णिसीहिया ।
आपुच्छणा य पडिपुच्छा, छंदणा य णिमंतणा ॥
उवसंपया य काले, सामायारी[2] दसविहा उ ॥१॥

महावीर-सुमिण-पदं

१०३ समणे भगवं महावीरे छउमत्थकालियाए अंतिमराइयंसी इमे दस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तं जहा—

१ एगं च णं महं 'घोररूवदित्तधरं'[3] तालपिसायं सुमिणे पराजितं पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

२ एगं च णं महं सुक्किलपक्खगं पुंसकोइलगं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

३ एगं च णं महं चित्तविचित्तपक्खगं पुंसकोइलं[4] सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

४ एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

५ एगं च णं महं सेतं गोवग्गं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

६ एगं च णं महं पउमसरं सव्वओ समंता कुसुमितं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

७ एगं च णं महं सागरं उम्मी-वीची-सहस्सकलितं[5] भुयाहिं तिण्णं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

८ एगं च णं महं दिणयरं तेयसा जलंतं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

९ एगं[6] च णं महं हरि-वेरुलिय-वण्णाभेणं णियएणमंतेणं माणुसुत्तरं पव्वतं सव्वतो समंता आवेढियं परिवेढियं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

१० एगं च णं महं मंदरे पव्वते मंदरचूलियाए उवरिं सीहासणवरगयमत्ताणं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

१ जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुमिणे पराजितं पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्णं समणेणं भगवता महावीरेणं मोहणिज्जे कम्मे मूलओ उग्घाइते ।

२ जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं सुक्किलपक्खगं[7] °पुंसकोइलगं सुमिणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे सुक्कज्झाणोवगए विहरइ ।

---

१ आवस्सिती (क) ।
२ सामायारी भवे (क, ग) ।
३ महाघोररूवदित्तधरं (क, ख, ग, वृ) ।
४. पूंस० (क, ख, ग) ।
५ उम्मीसहस्स० (वृपा) ।
६ एगेणं (वृ); एगं (वृपा) ।
७ सं० पा०—सुक्किलपक्खगं जाव पडिबुद्धे ।

३ जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं चित्तविचित्तपक्खगं[1] •पुंसकोइलं सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे ससमय-परसमयियं चित्तविचित्तं दुवालसंगं गणिपिडगं आघवेति पण्णवेति परूवेति दंसेति णिदंसेति उवदंसेति, तं जहा—आयारं[2], •सूयगडं, ठाणं, समवायं, विवा[आ ?]हपण्णत्ति, णायधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइं, विवागसुयं° दिट्ठिवायं।

४ जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं[3] •सुमिणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे दुविहं धम्मं पण्णवेति, तं जहा—अगारधम्मं च, अणगारधम्मं च।

५ जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं सेतं गोवग्गं सुमिणे[4] •पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउव्वण्णाइण्णे संघे, तं जहा—समणा, समणीओ, सावगा, सावियाओ।

६. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं पउमसरं[5] •सव्वओ समंता कुसुमितं सुमिणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे चउव्विहे देवे पण्णवेति, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरे, जोइसिए, वेमाणिए।

७ जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं सागरं उम्मी-वीची[6]-•सहस्स-कलितं भुयाहिं तिण्णं सुमिणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तं णं समणेणं भगवता महावीरेणं अणादिए[7] अणवदग्गे दीहमद्धे चाउरंते संसारकंतारे तिण्णे।

८ जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं दिणयरं[8] •तेयसा जलंतं सुमिणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अणंते अणुत्तरे[9] •णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे° समुप्पण्णे।

९ जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं हरि-वेरुलिय[10] •वण्णाभेणं णिय-एणमंतेणं माणुसुत्तरं पव्वतं सव्वतो समंता आवेढियं परिवेढियं सुमिणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवतो महावीरस्स सदेवमणुयासुरे लोगे उराला कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगा परिगुव्वंति[11]—इति खलु समणे भगवं महावीरे, इति खलु समणे भगवं महावीरे।

---

१ सं० पा०—चित्तविचित्तपक्खगं जाव पडिबुद्धे।
२. सं० पा०—आयारं जाव दिट्ठिवायं।
३. सं० पा०—सव्वरयणा जाव पडिबुद्धे।
४ सं० पा०—सुमिणे जाव पडिबुद्धे।
५ सं० पा०—पउमसरं जाव पडिबुद्धे।
६ सं० पा०—उम्मीवीची जाव पडिबुद्धे।
७. अणातीते (क, ख, ग)।
८ सं० पा०—दिणयरं जाव पडिबुद्धे।
९ सं० पा०—अणुत्तरे जाव समुप्पण्णे।
१० सं० पा०—हरिवेरुलिय जाव पडिबुद्धे।
११ परिभमंति(वृपा),परिभमंति(भ० १६।६१), 'परिगुव्वंति' परिगुप्यन्ति व्याकुलीभवन्ति सततं भ्रमन्तीत्यर्थः, अथवा परिगूयन्ते—गूङ्धातो शब्दार्थत्वात् सशब्द्यते (वृ)।

१० जण्ण समणे भगव महावीरे एग च ण मह मदरे पव्वते मदरचूलियाए उवरिं[1] •सीहासणवरगयमत्ताण सुमिणे पासित्ता ण° पडिवुद्धे, तण्ण समणे भगव महावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगते केवलिपण्णत्त धम्म आघवेति पण्णवेत्ति[2] •परूवेति दसेति णिदसेति° उवदसेति ॥

रुचि-पद

१०४ दसविधे सरागसम्मद्दसणे पण्णत्ते, त जहा—

सगहणी-गाहा

णिसग्गुवएसरुई[3], आणारुई सुत्तवीयरुइ मेव ।
अभिगम वित्थाररुई, किरिया-सखेव-धम्मरुई ॥१॥

सण्णा-पदं

१०५ दस सण्णाओ पण्णत्ताओ, त जहा—आहारसण्णा[4], •भयसण्णा, मेहुणसण्णा°, परिग्गहसण्णा, कोहसण्णा[5], °माणसण्णा, मायासण्णा°, लोभसण्णा, 'लोगसण्णा, ओहसण्णा'[6] ॥

१०६ णेरइयाण दस सण्णाओ एव चेव ॥

१०७ एव णिरतर जाव[7] वेमाणियाण ॥

वेयणा-पदं

१०८ णेरइया ण दसविध वेयण पच्चणुभवमाणा विहरति, त जहा—सीत, उसिण, खुध, पिवास, कडु, परज्झ, भय, सोग, जर, वाहिं ॥

छउमत्थ-केवलि-पद

१०९ दस ठाणाइ छउमत्थे[8] सव्वभावेण ण जाणति ण पासति, त जहा—धम्मत्थिकाय[9], •अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, जीव असरीरपडिवद्ध, परमाणुपोग्गल, सद्द, गध°, वात, 'अय जिणे भविस्सति वा ण वा भविस्सति'[10], अय सव्वदुक्खाणमत करेस्सति वा ण वा करेस्सति ।

एताणि चेव उप्पण्णणाणदसणधरे अरहा[11] •जिणे केवली सव्वभावेण जाणइ पासइ, त जहा—धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय, जीव असरीर-

---

१ स० पा०—उवरिं जाव पडिवुद्धे ।
२ स० पा०—पण्णवेति जाव उवदसेति ।
३. °वतेसरुती (क, ख, ग) ।
४. स० पा०—आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा ।
५ कोव° (ग), स० पा०—कोहसण्णा जाव लोभसण्णा ।
६ ओघसण्णा लोगसण्णा (वृ), लोगसण्णा ओघसण्णा (वृपा) ।
७ ठा० १।१४२-१६३ ।
८. छउमत्थे ण (क, ख, ग) ।
९. स० पा०—धम्मत्थिगात जाव वात ।
१०. अजिणा भविस्सति वा ण भविस्सति (ग) ।
११ स० पा०—अरहा जाव अय ।

पडिवद्ध, परमाणुपोग्गल, सद्द, गध, वात, अय जिणे भविस्सति वा ण वा भविस्सति °, अय सव्वदुक्खाणमत करेस्सति वा ण वा करेस्सति ॥

दसा-पदं

११०. दस दसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—कम्मविवागदसाओ, उवासगदसाओ, अतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, आयारदसाओ, पण्हावागरणदसाओ, वधदसाओ, दोगिद्धिदसाओ, दीहदसाओ, सखेवियदसाओ ॥

१११ कम्मविवागदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

संगह-सिलोगो

मियापुत्ते य गोत्तासे, अडे सगडेति यावरे ।
माहणे णदिसेणे, सोरिए[1] य उदुवरे ॥
सहसुद्दाहे आमलए, कुमारे लेच्छई इति ॥१॥

११२ उवासगदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

आणदे कामदेवे आ, गाहावतिचूलणीपिता ।
सुरादेवे चुल्लसतए, गाहावतिकुडकोलिए ॥
सद्दालपुत्ते महासतए, णदिणीपिया लेइयापिता[2] ॥१॥

११३ अतगडदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

णमि मातगे सोमिले, रामगुत्ते[3] सुदसणे चेव ।
जमाली य भगाली य, किकसे[4] चिल्लए[5] ति य ॥
फाले[6] अवडपुत्ते य एमेते दस आहिता[7] ॥१॥

---

१. सूरिते (क, ख, ग) ।

२ सालितियापिता (क, ग), सालेतितापिता (ख), हस्तलिखितवृत्ती 'लेइकापितृ०' इत्यपिलभ्यते—लेइयापियत्ति लेयिकापितृ-नाम्न श्रावस्तीनिवासिनो गृहमेधिनो भगवतो वोधिलाभिनोऽनतर तथैव सौधर्म्मगामिनो वक्तव्यतानिवद्ध लेयिकापितृनामक दस-ममिति । तदाधारेणसौ पाठ स्वीकृतोस्ति । 'उवासगदसाओ' सूत्रेपि 'लेइयापिता' पाठ स्वीकृतोस्ति, यथा—एव खलु जम्बू । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सत्तमस्स अगस्स उवासगदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

आणदे कामदेवे य, गाहावतिचुलणीपिता ।
सुरादेवे चुल्लसयए, गाहावतिकुडकोलिए ॥
सद्दालपुत्ते महासतए,
नदिणीपिया लेइयापिता ।
(उवासगदसाओ १।६) ।

३ समणगुत्ते (क) ।

४ किकम्मे (क्व) ।

५ पिल्लते (ख) ।

६ फले (क, ग); काले (ख) ।

७ वृत्तिकारेण ससूचितमत्र—एतानि च नमी-त्यादिकान्यन्तकृत्साधुनामानि अन्तकृद्द्शाङ्ग-प्रथमवर्गेध्ययनसग्रहे नोपलभ्यते, यतस्तत्राभि-धीयते—

११४ अणुत्तरोववातियदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—
इसिदासे य वण्णे य, सुणक्खत्ते कातिए ति य।
सठाणे[1] सालिभद्दे य, आणदे तेतली ति य॥
दसण्णभद्दे अतिमुत्ते, एमेते दस आहिया[2]॥१॥

११५ आयारदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—वीस असमाहिट्ठाणा, एगवीस सबला, तेत्तीस आसायणाओ, अट्ठविहा गणिसपया, दस चित्तसमाहिट्ठाणा, एगारस उवासगपडिमाओ, वारस भिक्खुपडिमाओ, पज्जोसवणाकप्पो, तीस मोहणिज्जट्ठाणा, आजाइट्ठाण[3]।

११६ पण्हावागरणदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—उवमा, सखा, इसिभासियाइ, आयरियभासियाइ, महावीरभासिआइ, खोमगपसिणाइ[4], 'कोमलपसिणाइ, अद्दागपसिणाइ'[5], अगुट्ठपसिणाइ, वाहुपसिणाइ[6]।

"गोयम समुद्द सागर,
गभीरे चेव होइ थिमिए य।
अयले कपिल्ले खलु,
अक्खोम पसेणई विण्हू॥"
ततो वाचनान्तरापेक्षाणीमानीति सभावयाम, न जन्मान्तरनामापेक्षयैतानि भविष्यन्तीति वाच्य, जन्मान्तराणा तत्रानभिधीयमानत्वादिति (वृत्ति पत्र ४८३), तत्त्वार्थराजवार्तिके अन्तकृतदशाया अध्ययनाना नामानि इत्थ सन्ति—'ससारस्यान्त कृतो यैस्तेन्तकृत नमिमतगसोमिलरामपुत्रसुदर्शनयमलीकवलीकनिष्कवलपालावष्ठपुत्रा इत्येते दस वर्धमानतीर्थंकरतीर्थे" (तत्त्वार्थराजवार्तिक १।२०)। एषु कानिचिद् नामानि सदृशानि कानिचिच्च भिन्नानि। अत्र भेदो लिपिकारणेन स्यादथवा वाचनान्तरापेक्षया। स्थानाङ्गवृत्तिकारेण 'वाचनान्तरापेक्षाणि इमानि'—इति लिखितम्। तत्त्वार्थराजवार्तिके इमानि लभ्यन्ते। दिगम्बरपरपरैव वाचनान्तरमत्र विवक्षितम्?

१. सठाण (क, ग)।

२ वृत्तिकारेण ससूचितमत्र—इह च त्रयो वर्गास्तत्र तृतीयवर्गे दृश्यमानाध्ययनै कैश्चित् सह साम्यमस्ति न सर्वे, यत इहोक्तम्—'इसिदासे' त्यादि, तत्र तु दृश्यते—
धन्ने य सुनक्खत्ते, इसिदासे य आहिए।
पेल्लए रामपुत्ते य, चदिमा पोट्टिके इय॥१॥
पेढालपुत्ते अणगारे, अणगारे पोट्टिले इय।
विहल्ले दसमे वुत्ते, एमे ए दस आहिया॥२॥
तदेवमिहापि वाचनान्तरापेक्षयाऽध्ययनविभाग उक्तो न पुनरुपलभ्यमानवाचनापेक्षयेति (वृत्ति पत्र ४८३); तत्त्वार्थराजवार्तिके अनुत्तरोपपातिकदशाया अध्ययनाना नामानि इत्थ सन्ति—'अनुत्तरेष्वौपपादिका अनुत्तरौपपादिका ऋषिदासधन्यसुनक्षत्रकार्तिकनन्दनन्दनशालिभद्रअभयवारिषेणचिलातपुत्रा इत्येते दस वर्धमानतीर्थंकरतीर्थे (तत्त्वार्थराजवार्तिक १।२०), °कार्तिकेयानन्दनन्दन° (षट्खण्डागमधवलावृत्ति १।१।२)।

३ अजाइ° (क, ग)। अज्जाइ° (ख)।

४. खोमाग° (ख)।

५ अद्दागपसिणाइ कोमलपसिणाइ (क)।

६ वृत्तिकारेण ससूचितमत्र—प्रश्नव्याकरणदशा इहोक्तरूपा न दृश्यन्ते दृश्यमानास्तु पञ्चाश्रवपञ्चसवरात्मिका इति इहोक्ताना तूपमादीनामध्ययनानामक्षरार्थ प्रतीयमान एवेति (वृत्ति पत्र ४८५)।

११७ बधदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—
वधे य मोक्खे य देवड्ढि, दसारमडलेवि[1] य ।
आयरियविप्पडिवत्ती, उवज्झायविप्पडिवत्ती, भावणा, विमुत्ती, सातो[2], कम्मे[3] ॥

११८ दोगेद्धिदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—वाए, विवाए, उववाते, सुखेत्ते, कसिणे, वायालीस सुमिणा, तीस महासुमिणा, वावत्तरिं सव्वसुमिणा,
हारे रामगुत्ते य, एमेते दस आहिता[4] ॥

११९ दीहदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा —
चदे सूरे य सुक्के य, सिरिदेवी पभावती ।
दीवसमुद्दोववत्ती, वहूपुत्ती मदरेति य ॥
थेरे सभूतिविजए य, थेरे पम्ह ऊसासणीसासे[5] ॥१॥

१२० सखेवियदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—खुड्डिया विमाणपविभत्ती, महल्लिया विमाणपविभत्ती, अगचूलिया[6], वग्गचूलिया[7], विवाहचूलिया, अरुणोववाते, 'वरुणोववाते, गरुलोववाते'[8], वेलधरोववाते, वेसमणोववाते[9] ॥

कालचक्क-पदं

१२१ दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणीए ॥

१२२. दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो उस्सप्पिणीए ॥

अणतर-परंपर-उववण्णादि-पद

१२३ दसविधा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—अणतरोववण्णा, परपरोववण्णा, अणतरावगाढा, परपरावगाढा, अणतराहारगा, परपराहारगा, अणतरपज्जत्ता, परपरपज्जत्ता, चरिमा, अचरिमा ।
एव—णिरतर जाव[10] वेमाणिया ॥

---

१ °मडलेति (ग) ।
२ सासते (ख) ।
३ वृत्तिकारेण ससूचितमत्र—वन्धदशानामपि वन्धाद्यध्ययनानि श्रौतेनार्थेन व्याख्यातव्यानि (वृत्ति पत्र ४८५) ।
४. वृत्तिकारेण ससूचिमत्र—द्विगृद्धिदशाश्च स्वरूपतोप्यनवसिता (वृत्ति पत्र ४८५) ।
५ वृत्तिकारेण ससूचितमत्र—दीर्घदशा स्वरूपतोऽनवगता एव, तदध्ययनानि तु कानिचिन्नरकावलिकाश्रुतस्कन्धे उपलभ्यन्ते (वृत्ति पत्र ४८५) ।
६ आयारचूलिता (क); अगारचूलिया (ग) ।
७ वग° (क, ग) ।
८ गरुलोववाते वरुणोववाए (क, ख, ग) ।
९ वृत्तिकारेण ससूचितमत्र—सक्षेपिकदशा अप्यनवगतस्वरूपा एव (वृत्ति पत्र ४८६) ।
१० ठा० १।१४२-१६३ ।

णरय-पदं

१२४ चउत्थीए ण पकप्पभाए पुढवीए दस णिरयावाससतसहस्सा पण्णत्ता ॥

ठिति-पदं

१२५ रयणप्पभाए पुढवीए जहण्णेण णेरइयाण दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता ॥

१२६ चउत्थीए ण पकप्पभाए पुढवीए उक्कोसेण णेरइयाण दस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

१२७ पचमाए ण धूमप्पभाए पुढवीए जहण्णेण णेरइयाण दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

१२८ असुरकुमाराण जहण्णेणं दस वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता । एव जाव[1] थणियकुमाराण ॥

१२९ वायरवणस्सतिकाइयाणं उक्कोसेण दस वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता ॥

१३० वाणमतराणं देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता ॥

१३१ बभलोगे कप्पे उक्कोसेणं देवाण दस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

१३२ लतए कप्पे देवाण जहण्णेण दस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

भाविभद्दत्त-पदं

१३३ दसहिं ठाणेहिं जीवा आगमेसिभद्दत्ताए[2] कम्म पगरेंति, त जहा—अणिदाणताए, दिट्ठिसपण्णताए, जोगवाहिताए[3], खतिखमणताए, जितिंदियताए, अमाइल्लताए, अपासत्यताए, सुसामण्णताए, पवयणवच्छल्लताए, पवयणउब्भावणताए ॥

आससप्पओग-पद

१३४ दसविहे आससप्पओगे पण्णत्ते, त जहा—इहलोगाससप्पओगे, परलोगाससप्पओगे, दुहओलोगाससप्पओगे, जीवियाससप्पओगे, मरणाससप्पओगे, कामाससप्पओगे, भोगाससप्पओगे, लाभाससप्पओगे, पूयाससप्पओगे, सक्काराससप्पओगे ॥

धम्म-पदं

१३५ दसविधे धम्मे पण्णत्ते, त जहा—गामधम्मे, णगरधम्मे, रट्ठधम्मे, पासडधम्मे, कुलधम्मे, गणधम्मे, सघधम्मे, सुयधम्मे, चरित्तधम्मे, अत्थिकायधम्मे[4] ॥

थेर-पद

१३६ दस थेरा पण्णत्ता, त जहा—गामथेरा, णगरथेरा, रट्ठथेरा, पसत्थथेरा[5], कुलथेरा, गणथेरा, सघथेरा, जातिथेरा, सुअथेरा, परियायथेरा[6] ॥

---

१ ठा० १।१४३-१५० ।

२ °भद्दगताए (क, ग) ।

३. जोगवाहियत्ताते (क, ग), जोगवाहित्ताते (ख) ।

४ अत्थिगातधम्मे (क, ख, ग) ।

५ पत्थारथेरा (क); पासत्थेरा थेरथेरा (ग), पसत्थारथेरा (ख) ।

६. परिताग° (क, ख, ग) ।

पुत्त-पद

१३७. दस पुत्ता पण्णत्ता, त जहा—अत्तए, खेत्तए, दिण्णए, विण्णए, उरसे, मोहरे, सोडीरे[1], सवुड्ढे, उवयाइते[2], धम्मतेवासी ॥

अणुत्तर-पदं

१३८ केवलिस्स ण दस अणुत्तरा पण्णत्ता, त जहा—अणुत्तरे णाणे, अणुत्तरे दसणे, अणुत्तरे चरित्ते, अणुत्तरे तवे, अणुत्तरे वीरिए, अणुत्तरा खती, अणुत्तरा मुत्ती, अणुत्तरे अज्जवे, अणुत्तरे मद्दवे, अणुत्तरे लाघवे ॥

कुरा-पदं

१३९ समयक्खेत्ते ण दस कुराओ पण्णत्ताओ, त जहा—पच देवकुराओ पच उत्तरकुराओ।

तत्थ ण दस महतिमहालया महादुमा पण्णत्ता, त जहा—जम्बू सुदसणा, धायइरुक्खे, महाधायइरुक्खे, पउमरुक्खे, महापउमरुक्खे, पच कूडसामलीओ।

तत्थ ण दस देवा महिड्डिया जाव[3] परिवसति, त जहा—अणाढिते जबुद्दीवाधिपती, सुदसणे, पियदसणे, पोडरीए, महापोडरीए, पच गरुला वेणुदेवा ॥

दुस्समा-लक्खण-पदं

१४० दसहिं ठाणेहिं ओगाढ दुस्सम जाणेज्जा, त जहा—अकाले वरिसइ, काले ण वरिसइ, असाहू पूइज्जति, साहू[4] ण पूइज्जति, गुरुसु जणो मिच्छ पडिवण्णो, अमणुण्णा सद्दा[5], °अमणुण्णा रूवा, अमणुण्णा गधा, अमणुण्णा रसा, अमणुण्णा° फासा ॥

सुसमा-लक्खण-पद

१४१ दसहिं ठाणेहिं ओगाढ सुसम जाणेज्जा, त जहा—अकाले ण वरिसति, [6]°काले वरिसति, असाहू ण पूइज्जति, साहू पूइज्जति, गुरुसु जणो सम्म पडिवण्णो, मणुण्णा सद्दा, मणुण्णा रूवा, मणुण्णा गधा, मणुण्णा रसा,° मणुण्णा फासा ॥

रुक्ख-पद

१४२ सुसमसुसमाए ण समाए दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छति, त जहा—

---

१ सोडीरे (क, ख, ग)।
२ उववातिते (ग)।
३. ठा० २।२७१।
४. साहु (ग)।
५ स० पा०—अमणुण्णा सद्दा जाव फासा।
६ स० पा०—त चेव विवरीत जाव मणुण्णा फासा।

संगहणी-गाहा

मतंगया[1] य भिंगा[2], तुडितंगा दीव जोति चित्तगा[3]।
चित्तरसा मणियगा, गेहागारा अणियणा य ॥१॥

कुलगर-पदं

१४३ जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे तीताए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा हुत्था, तं जहा—

संगहणी-गाहा

सयजले[4] सयाऊ य, अणंतसेणे य अजितसेणे[5] य।
कक्कसेणे[6] भीमसेणे, महाभीमसेणे य सत्तमे ॥१॥
दढरहे दसरहे, सयरहे[7] ॥

१४४ जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमीसाए[8] उस्सप्पिणीए दस कुलगरा भविस्संति, तं जहा—सीमंकरे, सीमंधरे, खेमंकरे, खेमंधरे, विमलवाहणे, संमुती, पडिसुते, दढधणू, दसधणू, सतधणू[9] ॥

---

१ मत्तगता (क, ग), द्रष्टव्यम्—७।६५ पादटिप्पणम्।
२ सिंगा (क)।
३. चितगा (ख)।
४. सयज्जले (क, ग)।
५ अतितसेणे (क, ग), स्थानाङ्गस्य मुद्रितप्रतौ (आगमोदयसमिति पत्र ५१८ सूत्रांक ७३७) चतुर्थकुलकरस्य नाम 'अमितसेणे' विद्यते। किन्तु पाठशोधनप्रयुक्तयो 'क' 'ग' प्रत्यो 'ख' प्रतौ च क्रमश, 'अतितसेणे' 'अजितसेणे' पाठो विद्यते। समवायाङ्गे (श्रेष्ठि माणेकलाल चुन्नीलाल श्रेष्ठि कान्तिलाल चुन्नीलाल द्वारा प्रकाशित पत्र १३६ सूत्रांक १५७) तृतीयकुलकरस्य नाम 'अजितसेणे' विद्यते। पाठशोधनप्रयुक्तयो. 'क' 'ख' प्रत्योरपि एष एव पाठोस्ति। स्थानाङ्गस्य मुद्रितप्रतौ पञ्चमकुलकरस्य नाम 'तक्कसेणे' विद्यते। 'क' 'ग' प्रत्योरपि एष एव पाठो लभ्यते। समवायाङ्गस्य मुद्रितप्रतौ 'कज्जसेणे' तथा हस्तलिखितादर्शेषु 'कक्कसेणे' पाठोस्ति। प्रतीयते स्थानाङ्गे समवायाङ्गे 'च' 'अजियसेणे' 'कक्कसेणे' पाठ आसीत् किन्तु लिपिदोषेण पाठविपर्ययो जात ।
६ तक्कसेणे (क, ग)।
७ समवायाङ्गे (पइण्णगसमवाय सू० २१७) नाम्ना क्रमो भिन्नोस्ति—
सयजले सयाऊ य, अजियसेणे अणंतसेणे य।
कक्कसेणे भीमसेणे, महाभीमसेणे य सत्तमे ॥
दढरहे दसरहे सतरहे।
८. अगामी० (ग)।
९ समवायाङ्गे (पइण्णगसमवाय सू० २५०) नाम्ना क्रमो भिन्नोस्ति—
विमलवाहणे सीमंकरे, सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे।
दढधणू दसधणू, सयधणू पडिसूई संमुइ त्ति ॥

वक्खारपव्वय-पदं

१४५ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणईए उभओकूले दस वक्खारपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—मालवंते, चित्तकूडे, पम्हकूडे[1], °णलिणकूडे, एगसेले, तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे, मायंजणे,° सोमणसे ॥

१४६ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओदाए महाणईए उभओकूले दस वक्खारपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—विज्जुप्पभे[2], °अंकावती, पम्हावती, आसीविसे, सुहावहे, चंदपव्वते, सूरपव्वते, णागपव्वते, देवपव्वते°, गंधमायणे ॥

१४७ एवं धायइसंडपुरत्थिमद्धेवि[3] वक्खारा भाणियव्वा जाव[4] पुक्खरवर-दीवड्ढपच्चत्थिमद्धे ॥

कप्प-पदं

१४८ दस कप्पा इंदाहिट्ठिया पण्णत्ता, तं जहा—सोहम्मे[5], °ईसाणे, सणंकुमारे, माहिंदे, बंभलोए, लंतए, महासुक्के,° सहस्सारे, पाणते, अच्चुते ॥

१४९ एतेसु णं दससु कप्पेसु दस इंदा पण्णत्ता, तं जहा—सक्के, ईसाणे[6], °सणंकुमारे, माहिंदे, बंभे, लंतए, महासुक्के, सहस्सारे, पाणते°, अच्चुते ॥

१५० एतेसि णं दसण्हं इंदाणं दस परिजाणिया विमाणा[7] पण्णत्ता, तं जहा—पालए, पुप्फए[8], °सोमणसे, सिरिवच्छे, णंदियावत्ते, कामकमे, पीतिमणे, मणोरमे° विमलवरे, सव्वतोभद्दे ॥

पडिमा-पदं

१५१ दसदसमिया णं भिक्खुपडिमा एगेण राइंदियसतेणं अद्धछट्ठेहि य भिक्खासतेहिं[9] अहासुत्तं[10] °अहाअत्थं अहातच्चं अहामग्गं अहाकप्पं सम्मं काएणं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया° आराहिया यावि भवति ॥

जीव-पदं

१५२ दसविधा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयएगिंदिया, अपढमसमयएगिंदिया, [11]°पढमसमयबेइंदिया, अपढमसमयबेइंदिया, पढमसमय-तेइंदिया, अपढमसमयतेइंदिया, पढमसमयचउरिंदिया, अपढमसमयचउरिंदिया, पढमसमयपंचिंदिया,° अपढमसमयपंचिंदिया ॥

---

१ वभकूडे (क, ख, ग), सं० पा०—पम्हकूडे जाव सोमणसे ।

२ सं० पा०—विज्जुप्पभे जाव गंधमातणे ।

३ ठा० १०।१४५,१४६ ।

४ ठा० ३।१०८ ।

५ सं० पा०—सोहम्मे जाव सहस्सारे ।

६ सं० पा०—ईसाणे जाव अच्चुते ।

७ जाणविमाणा (वृ), विमाणा (वृपा) ।

८ सं० पा०—पुप्फए जाव विमलवरे ।

९ भिक्खायतेहिं (ख) ।

१० सं० पा०—अहासुत्तं जाव आराहिया ।

११ सं० पा०—एवं जाव अपढमसमयपंचिंदिता ।

१५३ दसविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया[1], *आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया,° वणस्सइकाइया, बेंदिया[2], *तेइंदिया, चउरिंदिया°, पचेंदिया, अणिंदिया।

अहवा—दसविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयणेरइया, अपढमसमयणेरइया[3], *पढमसमयतिरिया, अपढमसमयतिरिया, पढमसमय-मणुया, अपढमसमयमणुया, पढमसमयदेवा°, अपढमसमयदेवा, पढमसमय-सिद्धा, अपढमसमयसिद्धा ॥

सताउय-दसा-पदं

१५४ वाससताउयस्स णं पुरिसस्स दस दसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

संगह-सिलोगो

वाला किड्डा मंदा, बला पण्णा हायणी।
पवंचा पब्भारा[4], मुम्मुही सायणी तधा[5] ॥१॥

तणवणस्सइ-पदं

१५५ दसविधा तणवणस्सतिकाइया पण्णत्ता, तं जहा—मूले, कंदे[6], *खंधे, तया, साले, पवाले, पत्ते°, पुप्फे, फले, बीये ॥

सेढि-पदं

१५६ सव्वाओवि णं विज्जाहरसेढीओ दस-दस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ॥

१५७ सव्वाओवि णं आभिओगसेढीओ दस-दस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ॥

गेविज्जग-पदं

१५८ गेविज्जगविमाणा णं दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

तेयसा भासकरण-पदं

१५९ दसहिं ठाणेहिं सह तेयसा[7] भासं कुज्जा, तं जहा—

१ केइ[8] तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते

---

१ सं० पा०—पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया।

२ सं० पा०—बेंदिता जाव पचेंदिता।

३ सं० पा०—अपढमसमयणेरतिता जाव अपढमसमयदेवा।

४ वभारा (ग)।

५ द्रष्टव्यम्—दशवैकालिकनिर्युक्ति १०

वाला किड्डा मंदा बला
य पन्ना य हायणि पवंचा
पब्भार मम्मुही सायणी
य दसमा उ कालदसा ॥१०॥

६ सं० पा०—कंदे जाव पुप्फे।

७ तेतसा (क, ख, ग)।

८ कति (ग)।

समाणे परिकुविते तस्स तेयं[1] णिसिरेज्जा। से तं परितावेति, से तं परितावेत्ता तामेव[2] सह तेयसा भासं कुज्जा।

२. केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते समाणे देवे परिकुविए[3] तस्स तेयं णिसिरेज्जा। से तं परितावेति, से तं परितावेत्ता तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

३ केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते समाणे परिकुविते देवेवि य परिकुविते ते दुहओ पडिण्णा तस्स तेयं णिसिरेज्जा। ते तं परितावेंति, ते तं[4] परितावेत्ता तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

४. केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा[5], से य अच्चासातिते [समाणे ?] परिकुविए तस्स तेयं णिसिरेज्जा। तत्थ फोडा समुच्छंति[6], ते फोडा भिज्जंति, ते फोडा भिण्णा समाणा तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

५ केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते [समाणे ?] देवे परिकुविए तस्स तेयं णिसिरेज्जा। तत्थ फोडा समुच्छंति, ते फोडा भिज्जंति, ते फोडा भिण्णा समाणा तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

६ केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते [समाणे ?] परिकुविए देवेवि य परिकुविए ते दुहओ पडिण्णा तस्स तेयं णिसिरेज्जा। तत्थ फोडा समुच्छंति, [7]•ते फोडा भिज्जंति, ते फोडा भिण्णा समाणा तामेव सह तेयसा° भासं कुज्जा।

७ केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते [समाणे ?] परिकुविए तस्स तेयं णिसिरेज्जा। तत्थ फोडा समुच्छंति, ते फोडा भिज्जंति, तत्थ पुला समुच्छंति, ते पुला भिज्जंति, ते पुला भिण्णा समाणा तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

८ [8]•केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते [समाणे ?] देवे परिकुविए तस्स तेयं णिसिरेज्जा। तत्थ फोडा समुच्छंति, ते फोडा भिज्जंति, तत्थ पुला समुच्छंति, ते पुला भिज्जंति, ते पुला भिण्णा समाणा तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

९ केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते [समाणे ?] परिकुविए देवेवि य परिकुविए ते दुहओ पडिण्णा तस्स तेयं

---

१ तेतं (क, ख, ग)।

२ 'तामेव' त्ति तमेव ....दीर्घत्वं प्राकृतत्वात् (वृ)।

३ परिकुव्विते (क, ग)।

४. च (क, ख)।

५ अच्चासाएज्जा (क, ख, ग)।

६. समुप्पज्जति (वृ)।

७ सं० पा०—सेसं तहेव जाव भासं।

८ सं० पा०—एते तिण्णि आलावगा भाणितव्वा।

णिसिरेज्जा। तत्थ फोडा समुच्छंति, ते फोडा भिज्जंति, तत्थ पुला समुच्छंति, ते पुला भिज्जंति, ते पुला भिण्णा समाणा तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा °।

१० केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेमाणे तेयं णिसिरेज्जा, से य तत्थ णो कम्मति, णो पकम्मति, अंचिअंचिय[1] करेति, करेत्ता आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता उड्ढं वेहासं उप्पतति, उप्पतेत्ता से णं ततो पडिहते पडिणियत्तति, पडिणियत्तित्ता तमेव सरीरगं अणुदहमाणे-अणुदहमाणे सह तेयसा भासं कुज्जा—जहा वा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेतेए॥

अच्छेरग-पदं

१६० दस अच्छेरगा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

उवसग्ग गब्भहरणं, इत्थीतित्थं अभाविया परिसा।
कण्हस्स अवरकंका, उत्तरणं चंदसूराणं॥१॥
हरिवंसकुलुप्पत्ती, चमरुप्पातो य अट्ठसयसिद्धा।
अस्संजतेसु पूआ, दसवि अणंतेण कालेण॥२॥

कंड-पदं

१६१ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए रयणे कंडे[2] दस जोयणसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ते॥

१६२. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए वइरे[3] कंडे[4] दस जोयणसताइं बाहल्लेणं पण्णत्ते॥

१६३ एवं वेरुलिए, लोहितक्खे, मसारगल्ले, हंसगब्भे, पुलए, सोगंधिए, जोतिरसे, अंजणे, अंजणपुलए, रतयं, जातरूवे, अंके, फलिहे, रिट्ठे। जहा रयणे तहा सोलसविधा भाणितव्वा॥

उव्वेह-पदं

१६४. सव्वेवि णं दीव-समुद्दा दस जोयणसताइं उव्वेहेणं पण्णत्ता॥

१६५ सव्वेवि णं महादहा दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता॥

१६६ सव्वेवि णं सलिलकुंडा दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता॥

१६७ सीता-सीतोया णं महाणईओ मुहमूले दस-दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ताओ॥

णक्खत्त-पदं

१६८ कत्तियाणक्खत्ते सव्वबाहिराओ मंडलाओ दसमे मंडले चारं चरति॥

१६९ अणुराधाणक्खत्ते सव्वब्भंतराओ मंडलाओ दसमे मंडले चारं चरति॥

णाणविद्धिकर-पदं

१७० दस णक्खत्ता णाणस्स विद्धिकरा पण्णत्ता, तं जहा—

---

१ अञ्चि अञ्चि (क), अंचि अंचि (ग)।
२ कंदे (क, ग)।
३ वतिरे (क, ख, ग)।
४ कंदे (क, ग)।

सगहणी-गाहा

मिगसिरमद्दा पुस्सो, तिण्णि य पुव्वाइ मूलमस्सेसा।
हत्थो चित्ता य तहा, दस विद्धिकराइ[1] णाणस्स ॥१॥

कुलकोडि-पद

१७१ चउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाण दस जाति-कुलकोडि-जोणिपमुह-सतसहस्सा पण्णत्ता ॥

१७२ उरपरिसप्पथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाण दस जाति-कुलकोडि-जोणिपमुह-सतसहस्सा पण्णत्ता ॥

पावकम्म-पदं

१७३ जीवा ण दसठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा चिणति वा चिणिस्सति वा, त जहा—पढमसमयएगिदियणिव्वत्तिए[2], •अपढमसमयएगिंदिय-णिव्वत्तिए, पढमसमयवेइदियणिव्वत्तिए, अपढमसमयवेइदियणिव्वत्तिए, पढम-समयतेइदियणिव्वत्तिए, अपढमसमयतेइदियणिव्वत्तिए, पढमसमयचउरिंदिय-णिव्वत्तिए, अपढमसमयचउरिदियणिव्वत्तिए, पढमसमयपचिंदियणिव्वत्तिए, अपढमसमय°पचिदियणिव्वत्तिए।

एव— चिण-उवचिण-बध-उदीर-वेय तह णिज्जरा चेव ॥

पोग्गल-पद

१७४ दसपएसिया खधा अणता पण्णत्ता ॥

१७५ दसपएसोगाढा पोग्गला अणता पण्णत्ता ॥

१७६ दससमयठितीया[3] पोग्गला अणता पण्णत्ता ॥

१७७ दसगुणकालगा पोग्गला अणता पण्णत्ता ॥

१७८ एव वण्णेहि गधेहिं रसेहि फासेहिं दसगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता ॥

ग्रन्थ-परिमाण
कुल अक्षर १६५४८
अनुष्टुप् श्लोक ५१७०, अक्षर ८

---

१ वुद्धिकराइ (क, ग), विड्ढिकराइ (ख)।

२ स० पा०—पढमसमयएगिदियणिव्वत्तिए जाव पचिंदियणिव्वत्तिए, पाठसशोधनप्रयुक्तादर्शेपु 'जाव फासिदितनिव्वत्तिते' इति पाठो लभ्यते, किन्तु वृत्तौ नैप व्याख्यातोस्ति, नास्यार्थोप्यत्र घटते। तेन प्रतीयते लिपि-प्रमादोसौ जात। अस्य स्थाने 'जाव पचि-दियणिव्वत्तिए'।

३ °समतठितीता (क, ख, ग)।

समवाओ

पढमो समवाओ

१ सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—

२ 'इह खलु समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिसवरपोंडरीएणं पुरिसवरगंधहत्थिणा लोगोत्तमेणं लोगनाहेणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोगपज्जोयगरेणं अभयदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरणदएणं जीवदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायगेणं धम्मसारहिणा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहयवरणाणदंसणधरेणं वियट्टच्छउमेणं जिणेणं जावएणं[1] तिण्णेणं तारएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वण्णुणा सव्वदरिसिणा सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपाविउकामेणं इमे दुवालसंगे गणिपिडगे पण्णत्ते, तं जहा—आयारे सूयगडे ठाणे समवाए विवा[आ ?]हपन्नत्ती नायधम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पण्हावागरणाइं विवागसुए दिट्ठिवाए ।।

३ तत्थ णं जे से चउत्थे अंगे समवाएत्ति आहिते, तस्स णं अयमट्ठे, तं जहा'[2]—

४ एगे आया ।।

५ एगे अणाया ।।

६ एगे दंडे ।।

७ एगे अदंडे ।।

८ एगा किरिआ ।।

९ एगा अकिरिआ ।।

१० एगे लोए ।।

---

१ जाणएणं (क) ।

२ कस्याञ्चिद् वाचनायामपरमपि सम्बन्धसूत्रमुपलभ्यते 'इह खलु समणेणं भगवया ... अयमट्ठे, तंजहा' (वृ) ।

११ एगे अलोए ।।

१२ एगे धम्मे ।।

१३ एगे अधम्मे ।।

१४ एगे पुण्णे ।।

१५ एगे पावे[1] ।।

१६ एगे बधे ।।

१७ एगे मोक्खे ।।

१८ एगे आसवे ।।

१९ एगे सवरे ।।

२० एगा वेयणा ।।

२१ एगा णिज्जरा ।।

२२ जबुद्दीवे दीवे एग जोयणसयसहस्स आयामविक्खभेण[2] पण्णत्ते ।।

२३ अप्पइट्ठाणे नरए एग जोयणसयसहस्स आयामविक्खभेण पण्णत्ते ।।

२४ पालए जाणविमाणे एग जोयणसयसहस्स आयामविक्खभेण पण्णत्ते ।।

२५ सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे एग जोयणसयसहस्स आयामविक्खभेण पण्णत्ते ।।

२६ अद्दानक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ।।

२७ चित्तानक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ।।

२८ सातिनक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ।।

२९ 'इमीसे ण'[3] रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ।।

३० इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाण उक्कोसेण एग सागरोवम ठिई पण्णत्ता ।।

३१ दोच्चाए ण पुढवीए नेरइयाण जहन्नेण एग सागरोवम ठिई पण्णत्ता ।।

३२ असुरकुमाराण 'देवाण अत्थेगइयाण'[4] एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ।।

३३ असुरकुमाराण देवाण उक्कोसेण एग साहिय सागरोवम ठिई पण्णत्ता ।।

३४ असुरकुमारिंदवज्जियाण भोमिज्जाण देवाण अत्थेगइयाणं एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ।।

३५ असखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणियाण अत्थेगइयाण एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ।।

---

१. अपुण्णे (क) ।

२ चक्कवालविक्खभेण (क, ग, वृपा) ।

३. इमीसे (क, ग); हस्तलिखितवृत्तौ 'इमीसेण' पाठोऽस्ति मुद्रितवृत्तौ 'इमीसे' इति विद्यते ।

४ अत्थेगइयाण देवाण (क, ख, ग) ।

३६ असखेज्जवासाउयगब्भवक्कतियसण्णिमणुयाण अत्थेगइयाण एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ॥

३७ वाणमतराण देवाण उक्कोसेण एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ॥

३८ जोइसियाण देवाण उक्कोसेण एग पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहिय ठिई पण्णत्ता ॥

३९ सोहम्मे कप्पे देवाण जहन्नेण एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ॥

४० सोहम्मे कप्पे देवाण अत्थेगइयाण एग सागरोवम ठिई पण्णत्ता ॥

४१ ईसाणे कप्पे 'देवाण जहण्णेण'[1] साइरेग एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ॥

४२ ईसाणे कप्पे देवाण अत्थेगइयाण एग सागरोवम ठिई पण्णत्ता ॥

४३ जे देवा सागर सुसागर सागरकत भव[2] मणु माणुसोत्तर लोगहिय विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण एग सागरोवम ठिई पण्णत्ता ॥

४४ ते ण देवा एगस्स अद्धमासस्स आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ॥

४५ तेसि ण देवाण एगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुपज्जइ ॥

४६. सतेगइया भवसिद्धिया 'जीवा, जे एगेण'[3] भवग्गहणेण सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ॥

बीओ समवाओ

१ दो दडा पण्णत्ता, त जहा—अट्ठादडे चेव, अणट्ठादडे चेव ॥

२ दुवे रासी पण्णत्ता, त जहा—जीवरासी चेव, अजीवरासी चेव ॥

३ दुविहे बंधणे पण्णत्ते, त जहा—रागबधणे चेव, दोसबधणे[4] चेव ॥

४ पुव्वाफग्गुणीनक्खत्ते[5] दुतारे[6] पण्णत्ते ॥

५ उत्तराफग्गुणीनक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते ॥

६ पुव्वाभद्दवयानक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते ॥

७. उत्तराभद्दवयानक्खत्ते[7] दुतारे पण्णत्ते ॥

८ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

९ दुच्चाए पुढवीए[8] अत्थेगइयाण नेरइयाण दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

---

१ जहण्णेण देवाण (क, ख, ग)।
२ भुव (ग)।
३. ते जीवा जे एगेण (क)।
४ रोसबधणे (क)।
५ पुव्व॰ (क)।
६ दुत्तारे (ख, ग)।
७ उत्तर॰ (ग)।
८ पुढवीए ण (क)।

१० असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

११ असुरिंदवज्जियाण भोमिज्जाण देवाण उक्कोसेण देसूणाइ दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१२ असखेज्जवासाउयसण्णिपचेंदियतिरिक्खजोणिआण अत्थेगइयाण दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१३ असखेज्जवासाउयगब्भवक्कतियसण्णिमणुस्साण अत्थेगइयाण दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१४ सोहम्मे कप्पे अत्थेगइयाण देवाण दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१५ ईसाणे कप्पे अत्थेगइयाण देवाण दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१६ सोहम्मे कप्पे देवाण उक्कोसेण दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१७ ईसाणे कप्पे देवाण उक्कोसेण साहियाइ दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१८ सणकुमारे कप्पे देवाण जहण्णेण दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१९ माहिंदे कप्पे देवाण जहण्णेण साहियाई दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

२० जे देवा सुभ सुभकत सुभवण्ण सुभगध सुभलेस सुभफास सोहम्मवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

२१ ते ण देवा दोण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।।

२२ तेसि ण देवाण दोहि वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

२३ अत्थेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे दोहि भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

तइओ समवाओ

१ तओ दडा पण्णत्ता, त जहा—मणदडे वइदडे कायदडे ।।

२ तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—मणगुत्ती वइगुत्ती कायगुत्ती ।।

३ तओ सल्ला पण्णत्ता, त जहा—मायासल्ले ण नियाणसल्ले ण मिच्छादंसणसल्ले ण ।।

४ तओ गारवा पण्णत्ता, त जहा—इड्ढीगारवे रसगारवे सायागारवे ।।

५ तओ विराहणाओ पण्णत्ताओ, त जहा—नाणविराहणा दंसणविराहणा चरित्तविराहणा ।।

मिगसिरनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।।

७ पुस्सनक्खत्ते[1] तितारे पण्णत्ते ॥
८ जेट्ठानक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ॥
९ अभीइनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ॥
१० सवणनक्खत्ते[2] तितारे पण्णत्ते ॥
११ असिणिनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ॥
१२ भरणीनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ॥
१३ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तिण्णि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
१४ दोच्चाए ण पुढवीए नेरइयाण उक्कोसेण तिण्णि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
१५ तच्चाए ण पुढवीए नेरइयाण जहण्णेण तिण्णि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
१६ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण तिण्णि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
१७ असखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणियाण उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
१८ असखेज्जवासाउयगब्भवक्कतियसण्णिमणुस्साण[3] उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
१९ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण तिण्णि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
२० सणकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण तिण्णि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
२१ जे देवा आभकर पभकर आभकरपभकर चद चदावत्त चदप्पभ चदकत चदवण्ण चदलेस चदज्झय चदसिंग चदसिट्ठ चदकूड चदुत्तरवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण तिण्णि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
२२ ते ण देवा तिण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ॥
२३ तेसि ण देवाण उक्कोसेण तिहि वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥
२४ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तिहि भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति[4] •बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति° सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ॥

---

१ पुस्से (क), पुक्ख° (ग)।
२ समण° (क, ग), सवणे° (ख)।
३ अत्र सर्वासु प्रतिषु 'सण्णि' शब्द 'गब्भवक्कतिय' पाठात् पूर्वं लभ्यते, किन्तु (१।३६) सूत्रानुसारेण, 'गब्भवक्कतिय' पाठात् परतो युज्यते। तेनात्र तथा स्वीकृत ।
४ स० पा०—सिज्झिस्सति जाव सव्वदुक्खाण°।

चउत्थो समवाओ

१ चत्तारि कसाया पण्णत्ता, त जहा—कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभकसाए ॥

२ चत्तारि झाणा पण्णत्ता, त जहा अट्टे झाणे रोद्दे झाणे धम्मे झाणे सुक्के झाणे ॥

३ चत्तारि विगहाओ पण्णत्ताओ, त जहा—इत्थिकहा भत्तकहा रायकहा देसकहा ॥

४. चत्तारि सण्णा पण्णत्ता, त जहा—आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गह-सण्णा ॥

५. चउव्विहे बधे पण्णत्ते, त जहा— पगडिबधे ठिइबधे 'अणुभावबधे'[1] पएसबधे'[2] ॥

६ चउगाउए जोयणे पण्णत्ते ॥

७ अणुराहानक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते ॥

८ पुव्वासाढनक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते ॥

९ उत्तरासाढनक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते ॥

१० इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

११ तच्चाए ण पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण चत्तारि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१२ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१३ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१४. सणकुमार-माहिदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१५. जे देवा किट्ठि सुकिट्ठि किट्ठियावत्त किट्ठिप्पभ किट्ठिकत[3] किट्ठिवण्ण किट्ठिलेस किट्ठिज्झय किट्ठिसिंग किट्ठिसिट्ठ किट्ठिकूड किट्ठुत्तरवडेसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१६ ते ण देवा चउण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ॥

१७ तेसि देवाण चउहि वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥

१८ अत्थेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे चउहि भवग्गणेहि सिज्झिस्सति[4] °बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति° सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ॥

---

१ अणुभाग० (क, ख) ।

२. पएसबधे अणुभागबधे (ग) ।

३. °जुत्त (क, ख, ग), कृष्टिमुकृष्ट्यादीनि द्वादशविमानानि पूर्वोक्तविमाननामानुसार-वन्तीति (वृत्ति पत्र ९) वृत्तिगतोल्लेखेन 'कत' इति पाठ स्वीकृत. ।

४. स० पा०—सिज्झिस्सति जाव सव्वदुक्खाण° ।

पचमो समवाओ

१ पच किरिया पण्णत्ता, त जहा—काइया अहिगरणिया पाउसिआ पारियावणिआ पाणाइवायकिरिया ॥

२ पच महव्वया पण्णत्ता, त जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वाओ मुसावायाओ[1] •वेरमण, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमण, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमण°, सव्वाओ परिग्गहाओ[2] वेरमण ॥

३ पच कामगुणा पण्णत्ता, त जहा—सद्दा रूवा रसा गधा फासा ॥

४ पच आसवदारा पण्णत्ता, त जहा—मिच्छत्त अविरई 'पमाया कसाया'[3] जोगा ॥

५ पच सवरदारा पण्णत्ता, त जहा—सम्मत्त विरई अप्पमाया[4] अकसाया[5] अजोगा[6] ॥

६ पच निज्जरट्ठाणा[7] पण्णत्ता, त जहा—पाणाइवायाओ वेरमण, मुसावायाओ वेरमण, अदिन्न(दाणाओ वेरमण, मेहुणाओ वेरमण, परिग्गहाओ वेरमण ॥

७ पच समिईओ पण्णत्ताओ, त जहा—इरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाण-भड-मत्त-निक्खेवणासमिई उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिई ॥

८ पच अत्थिकाया पण्णत्ता, त जहा—धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए ॥

९ रोहिणीनक्खत्ते पचतारे पण्णत्ते ॥

१० पुणव्वसुनक्खत्ते पचतारे पण्णत्ते ॥

११ हत्थनक्खत्ते[8] पचतारे पण्णत्ते ॥

१२ विसाहानक्खत्ते पचतारे पण्णत्ते ॥

१३ धणिट्ठानक्खत्ते पचतारे पण्णत्ते ॥

१४ इमीसे ण[9] रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण पच पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१५ तच्चाए ण पुढवीए अत्थेगइया नेरइयाण पच सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१६ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण पच पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

---

१. स० पा०—मुसावायाओ जाव सव्वाओ ।
२ पडि० (ग) ।
३ पमाए कसाए (क, ग) ।
४ अप्पमाए (क), अप्पमादो (ग) ।
५ अकसाए (क); अकसायया (ख, ग) ।
६ अजोगया (ग) ।
७. निज्जराट्ठाणा (ग) ।
८. हत्थे° (ग) ।
९ × (क, ख, ग) ।

१७ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण पच पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।
१८ सणकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण पच सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।
१९ जे देवा वाय सुवाय वातावत्त वातप्पभ वातकत वातवण्ण वातलेस वातज्झय वातसिग वातसिट्ठ वातकूड वाउत्तरवडेंसग सूर सुसूर सूरावत्त सूरप्पभ सूर-कत सूरवण्ण सूरलेस सूरज्झय सूरसिग सूरसिट्ठ सूरकूड सूरुत्तरवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण पच सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।
२० ते ण देवा पचण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।।
२१ तेसि ण देवाण पचहि वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।
२२ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे पचहि भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति[1] °बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण°मत करिस्सति ।।

छट्ठो समवाओ

१ छल्लेसा पण्णत्ता, त जहा—कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा ।।
२ छज्जीवनिकाया पण्णत्ता, त जहा—पुढवीकाए[2] आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तसकाए ।।
३ छव्विहे वाहिरे तवोकम्मे पण्णत्ते, त जहा—अणसणे ओमोदरिया[3] वित्ति-सखेवो[4] रसपरिच्चाओ कायकिलेसो[5] सलीणया ।।
४ छव्विहे अब्भितरे[6] तवोकम्मे पण्णत्ते, त जहा—पायच्छित्त विणओ वेयावच्च सज्झाओ झाण उस्सग्गो ।।
५ छ छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयसमुग्घाए[7] आहारसमुग्घाए ।।
६ छव्विहे अत्थुग्गहे पण्णत्ते, त जहा—सोइदियअत्थुग्गहे चक्खिदियअत्थुग्गहे घाणिंदियअत्थुग्गहे जिब्भिदियअत्थुग्गहे फासिदियअत्थुग्गहे नोइदिय-अत्थुग्गहे ।।
७ कत्तियानक्खत्ते छतारे पण्णत्ते ।।
८ असिलेसानक्खत्ते छतारे पण्णत्ते ।।

---

१ स० पा०—सिज्झिस्सति जाव अत ।
२ °काइया (ग) ।
३. उनोदरिया (ग) ।
४ वित्ती° (ख, ग) ।
५. कायकिलेस (क) ।
६ ब्भतरए (क) ।
७ तेया° (क, ख) ।

९. इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण छ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।
१० तच्चाए ण पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण छ सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।
११. असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण छ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।
१२. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण छ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।
१३ सणकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण छ सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।
१४ जे देवा सयभु सयभुरमण घोस सुघोस महाघोस किट्ठिघोस वीर सुवीर वीरगत वीरसेणिय वीरावत्त वीरप्पभ वीरकत वीरवण्ण वीरलेस वीरज्झय वीरसिंग वीरसिट्ठ वीरकूड वीरुत्तरवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण छ सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।
१५ ते ण देवा छण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।।
१६ तेसि ण देवाण छहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जई ।।
१७ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे छहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति[1] °बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति° सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।।

सत्तमो समवाओ

१ सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता, जहा—इहलोगभए परलोगभए आदाणभए अकम्हाभए आजीवभए मरणभए असिलोगभए ।।
२ सत्त समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयसमुग्घाए[2] आहारसमुग्घाए केवलिसमुग्घाए ।।
३ समणे भगव महावीरे सत्त रयणीओ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।।
४ सत्त[3] वासहरपव्वया पण्णत्ता, त जहा—चुल्लहिमवते महाहिमवते निसढे नीलवते रुप्पी सिहरी मदरे ।।
५ सत्त[4] वासा पण्णत्ता, त जहा—भरहे हेमवते हरिवासे महाविदेहे रम्मए हेरण्णवते[5] एरवए[6] ।।
६ खीणमोहे ण भगव मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ वेएई ।।
७ महानक्खते सत्ततारे पण्णत्ते ।।

---

१ स० पा०—सिज्झिस्सति जाव सव्वदुक्खाण° ।
२ तेया° (क, ख) ।
३,४ इहेव जम्बुद्दीवे दीवे सत्त (क्व) ।
५ एरण्णवए (क्व) ।
६ एरावते (क, ग) ।

८ 'कत्तिआइया सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिआ पण्णत्ता'[1] ॥

९ महाइया सत्त नक्खत्ता दाहिणदारिआ पण्णत्ता ॥

१० अणुराहाइया सत्त नक्खत्ता अवरदारिआ पण्णत्ता ॥

११ धणिट्ठाइया सत्त नक्खत्ता उत्तरदारिआ पण्णत्ता ॥

१२ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण सत्त पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१३ तच्चाए ण पुढवीए नेरइयाण उक्कोसेण सत्त सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१४ चउत्थीए ण पुढवीए नेरइयाण जहण्णेणं सत्त सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१५ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण सत्त पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१६ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण सत्त पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१७ सणकुमारे कप्पे अत्थेगइयाण देवाण उक्कोसेण सत्त सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१८ माहिंदे कप्पे देवाण उक्कोसेण साइरेगाइ सत्त सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१९ बंभलोए कप्पे देवाण जहण्णेण[2] सत्त सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

२० जे देवा सम समप्पभ महापभ पभासं भासुरं[3] विमल कंचणकूडं सणकुमारवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

२१ ते ण देवा सत्तण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ॥

२२ तेसि ण देवाण सत्तहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥

२३ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे[4] सत्तहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति[5] °बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण° मत करिस्सति ॥

---

१ ख, ग प्रतौ पाठान्तरेण 'अभियाइया [अभिईया] सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता' मूलपाठेऽप्यमौ पाठभेदो लभ्यते। अभिजिदादीनि सप्त नक्षत्राणि पूर्वद्वारिकाणि—पूर्वदिशि येषु गच्छत शुभ भवति, एवमश्विन्यादीनि दक्षिणद्वारिकाणि पुष्यादीन्यपरद्वारिकाणि स्वात्यादीन्युत्तरद्वारिकाणीति सिद्धान्तमतमिह तु मतान्तरमाश्रित्य कृत्तिकादीनि सप्त सप्त पूर्वद्वारिकादीनि भणितानि, चन्द्रप्रज्ञप्तौ तु बहुतराणि मतानि दर्शितानीहार्थे इति (वृ)।

२ जहन्नेण साहिय (ग), प्रज्ञापनायाञ्चतुर्थपदे सप्तसागरोपमाणामेव स्थिति- प्रतिपादितास्ति तेन 'साहिय' अशुद्ध प्रतिभाति।

३. भासर (क, ग)।

४ जे ण (क, ख, ग)।

५ स० पा०—सिज्झिस्सति जाव अत।

अट्ठमो समवाओ

१ अट्ठ मयट्ठाणा पण्णत्ता, त जहा—जातिमए कुलमए वलमए रूवमए तवमए सुयमए लाभमए इस्सरियमए ।।

२ अट्ठ पवयणमायाओ पण्णत्ताओ, त जहा—इरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाण-भड-मत्त-निक्खेवणासमिई उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिई मणगुत्ती वइगुत्ती कायगुत्ती ।।

३ वाणमतराण देवाण चेइयरुक्खा अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।।

४ जवू ण सुदसणा अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।।

५ कूडसामली ण गरुलावासे अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ते ।।

६ 'जवुद्दीवस्स ण'[1] जगई अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।।

७ अट्ठसामइए[2] केवलिसमुग्घाए पण्णत्ते, त जहा—पढमे समए दड करेइ, वीए समए कवाड करेइ, तइए समए मथ करेइ, चउत्थे समए मथतराइ पूरेइ, पचमे समए मथतराइ पडिसाहरइ, छट्ठे समए मथ पडिसाहरइ, सत्तमे समए कवाड पडिसाहरइ, अट्ठमे समए दड पडिसाहरइ, तत्तो पच्छा सरीरत्थे भवइ ।।

८ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणिअस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था, त जहा—

सुभे य सुभघोसे य, वसिट्ठे वभयारि य ।
सोमे सिरिधरे[3] चेव, वीरभद्दे जसे इ य ।।१।।

९ अट्ठ नक्खत्ता चदेण सद्धि पमद्द जोग जोएति, त जहा—कत्तिया रोहिणी पुणव्वसू महा चित्ता विसाहा अणुराहा जेट्ठा ।।

१० इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण अट्ठ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

११ चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण अट्ठ सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१२ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण अट्ठ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१३ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाणं अट्ठ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१४ वभलोए कप्पे अत्थेगइयाण देवाण अट्ठ सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१५ जे देवा अच्चि अच्चिमालि वइरोयण पभकर चदाभ सूराभ सुपइट्ठाभ अग्गिच्चाभ रिट्ठाभ अरुणाभ अरुणुत्तरवडेसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण अट्ठ सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

---

१ जम्बुद्दीवियाण (क) ।

२ °समतिए (क, ख) ।

३ अ सुरवरे (क), सिरिवरे(ख), सिरिदरे (ग) ।

१६ ते णं देवा अट्ठण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ॥
१७ तेसि ण देवाण अट्ठहि वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥
१८ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे अट्ठहि भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति[1] °बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण°मत करिस्सति ॥

नवमो समवाओ

१ नव बभचेरगुत्तीओ, त जहा—
नो इत्थी-पसु-पडग-ससत्ताणि सिज्जासणाणि सेवित्ता भवइ ।
नो इत्थीण कह कहित्ता भवइ ।
नो इत्थीण ठाणाइ[2] सेवित्ता भवइ ।
नो इत्थीणं इदियाइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ ।
नो पणीयरसभोई भवइ[3] ।
नो पाणभोयणस्स अतिमाय[4] आहारइत्ता भवइ[5] ।
नो इत्थीण पुव्वरयाइ पुव्वकीलियाइ सुमरइत्ता भवइ ।
नो सद्दाणुवाई नो रूवाणुवाई नो गधाणुवाई नो रसाणुवाई नो फासाणुवाई नो सिलोगाणुवाई ।
नो सायासोक्खपडिबद्धे यावि भवइ ॥
२ नव बभचेरअगुत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—
इत्थी-पसु-पडग-ससत्ताणि सिज्जासणाणि सेवित्ता[6] °भवइ ।
इत्थीण कह कहित्ता भवइ ।
इत्थीण ठाणाइ सेवित्ता भवइ ।
इत्थीण इदियाइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ ।
पणीयरसभोई भवइ ।
पाणभोयणस्स अतिमाय आहारइत्ता भवइ ।
इत्थीण पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइ सुमरइत्ता भवइ ।
सद्दाणुवाई रूवाणुवाई गधाणुवाई रसाणुवाई फासाणुवाई सिलोगाणुवाई° ।
सायासोक्खपडिबद्धे यावि भवइ ॥
३ नव बभचेरा पण्णत्ता, त जहा—

---

१. स० पा०—सिज्झिस्सति जाव अत ।
२ गणान् (वृ) ।
३ ×(क, ख, ग) ।
४. अतिमाय आहार (क) ।
५. × (क, ख, ग) ।
६ स० पा०—सेवणया [सेवित्ता] जाव साया-सोक्ख° ।

संगहणी-गाहा

सत्थपरिण्णा लोगविजओ, सीओसणिज्ज[1] सम्मत्त ।
आवती धुत विमोहायण, उवहाणसुय महपरिण्णा ।।१।।

४ पासे ण अरहा[2] नव रयणीओ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।।

५ अभीजिनक्खत्ते साइरेगे नव मुहुत्ते चदेण सद्धि जोग जोएइ ।।

६ अभीजियाइया नव नक्खत्ता चदस्स उत्तरेण जोग जोएति, त जहा—अभीजि सवणो[3] •धणिट्ठा सयभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तरापोट्ठवया रेवई अस्सिणी° भरणी[4] ।।

७ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए वहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नव जोयणसए उड्ढ अवाहाए उवरिल्ले ताराख्वे चार चरइ ।।

८ जवुद्दीवे ण दीवे नवजोयणिया मच्छा पविसिसु वा पविसति वा पविसिस्सति वा ।।

९ विजयस्स ण दारस्स एगमेगाए वाहाए नव-नव भोमा पण्णत्ता ।।

१० वाणमतराण देवाण सभाओ सुधम्माओ नव जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ताओ ।।

११ दसणावरणिज्जस्स ण कम्मस्स नव उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ, त जहा—निद्दा पयला निद्दानिद्दा पयलापयला थीणगिद्धी[5] चक्खुदसणावरणे अचक्खुदसणावरणे ओहिदसणावरणे केवलदसणावरणे ।।

१२ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण नव पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१३ चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण नव सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१४ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण नव पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१५ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण नव पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१६ वभलोए कप्पे अत्थेगइयाण देवाण नव सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१७. जे देवा पम्ह[6] सुपम्ह पम्हावत्त पम्हप्पह पम्हकत पम्हवण्ण पम्हलेस[7] •पम्हज्झय पम्हसिग पम्हसिट्ठ पम्हकूड° पम्हुत्तरवडेंसग सुज्ज सुसुज्ज सुज्जावत्त सुज्जपभ सुज्जकत[8] •सुज्जवण्ण सुज्जलेस सुज्जज्झय सुज्जसिग

---

१ सीओसिणिज्ज (क) ।

२ अरहा पुरिसादाणीए (क्व) ।

३ स० पा०—सवणो जाव भरणी ।

४ चन्द्रप्रज्ञप्तौ (१०।११) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (वक्ष ७) च चन्द्रस्योत्तरेण योग युञ्जानाना द्वादशनक्षत्राणामुल्लेखोस्ति । अत्र तु नवमसमवायानुरोधेन नवैव गृहीतानि ।

५. थीणद्धी (क्व) ।

६ 'क' प्रतौ अस्मिन् सूत्रान्तर्गत 'पम्ह' शव्दस्य स्थाने सर्वत्र 'वम्ह' शव्दस्तथा 'इल्ल' शव्दस्य स्थाने सर्वत्र 'रयल' इति पाठो विद्यते ।

७ स० पा०—पम्हलेस जाव पम्हुत्तरवडेंसग ।

८ स० पा०—सुज्जकत जाव सुज्जुत्तरवडेंसग ।

सुज्जसिट्ठं सुज्जकूडं° सुज्जुत्तरवडेंसगं रुइल्लं रुइल्लावत्तं रुइल्लप्पभं[1] •रुइल्लकंतं रुइल्लवण्णं रुइल्ललेसं रुइल्लज्झयं रुइल्लसिंगं रुइल्लसिट्ठं रुइल्लकूडं° रुइल्लुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं [उक्कोसेणं[2]?] नव सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१८ ते णं देवा नवण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा॥

१९ तेसि णं देवाणं नवहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ॥

२० संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे नवहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[3] •बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति॥

दसमो समवाओ

१ दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, तं जहा—खंती मुत्ती अज्जवे मद्दवे लाघवे सच्चे संजमे तवे चियाए बंभचेरवासे॥

२ दस चित्तसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—

धम्मचिंता वा से असमुप्पण्णपुव्वा समुप्पज्जिज्जा, सव्वं धम्मं जाणित्तए।

सुमिणदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, अहातच्चं सुमिणं[4] पासित्तए।

सण्णिनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, पुव्वभवे सुमरित्तए।

देवदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं पासित्तए।

ओहिनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, ओहिणा लोगं जाणित्तए[5]।

ओहिदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, ओहिणा लोगं पासित्तए।

मणपज्जवनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, मणोगए[6] भावे जाणित्तए।

केवलनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, केवलं लोगं जाणित्तए।

केवलदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, केवलं लोयं पासित्तए।

केवलिमरणं वा मरिज्जा, सव्वदुक्खप्पहीणाए॥

---

१ सं० पा०—रुइल्लप्पभं जाव रुइल्लुत्तरवडेंसगं।

२ एतत् तुल्येषु सूत्रेषु सर्वत्रापि 'उक्कोसेणं' पाठो विद्यते। नायं पाठोत्र प्रतिषु लभ्यते, किन्तु तथा विधान्यसूत्रपद्धत्यनुसारेण युज्यते।

३ सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं°।

४ सुजाणं (वृपा)।

५ जाणेज्जा (क)।

६ जाव मणोगए (क, ख, ग), वृत्तौ 'जाव' शब्दो नास्ति व्याख्यातः। नावश्यकोपि प्रतिभाति तेन न स्वीकृतः।

३ मदरे ण पव्वए मूले दसजोयणसहस्साइ विक्खभेण पण्णत्ते ।।

४ अरहा ण अरिट्ठनेमी दस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।।

५ कण्हे ण वासुदेवे दस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।।

६ रामे ण बलदेवे दस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।।

७ दस नक्खत्ता नाणविद्धिकरा पण्णत्ता, त जहा—

सगहणी-गाहा

मिगसिरमद्दा पुस्सो, तिण्णि अ पुव्वा य मूलमस्सेसा ।
हत्थो चित्ता य तहा, दस वुद्धिकराइ नाणस्स ।।१।।

८ अकम्मभूमियाण मणुआण दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए उवत्थिया पण्णत्ता, त जहा—

मत्तगया य भिगा, तुडिअगा दीव जोइ चित्तगा ।
चित्तरसा मणिअगा, गेहागारा अणिगणा[1] य ।।१।।

९ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाण[2] जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता ।।

१० इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण दस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

११ चउत्थीए पुढवीए दस निरयावाससयसहस्सा[3] पण्णत्ता ।।

१२ चउत्थीए पुढवीए नेरइयाण उक्कोसेण दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१३ पचमाए पुढवीए नेरइयाण जहण्णेण दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१४ असुरकुमाराण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता ।।

१५ असुरिदवज्जाण भोमेज्जाण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता ।।

१६ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण दस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१७ बायरवणप्फतिकाइयाण उक्कोसेण दस वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता ।।

१८ वाणमतराण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता ।।

१९ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण दस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

२० बभलोए कप्पे देवाण उक्कोसेण दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

२१ लतए कप्पे देवाण जहण्णेण दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

---

१ अणियणा (ग), अणिगिणा (क्व) ।

२ अत्थेगइयाण नेरइयाण (क, ख, ग) ।

३ °सहस्साइ (क्व) ।

२२ जे देवा घोस सुघोस महाघोसं नदिघोस सुसर मणोरम रम्मं रम्मग रमणिज्ज मगलावत्त बंभलोगवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

२३ ते ण देवा दसण्ह अद्धमासाणं आणमति वा पाणमति वा ऊसमति वा नीसमति वा ॥

२४ तेसि ण देवाण दसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥

२५ सतेगइया[1] भवसिद्धिया जीवा, जे दसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति[2] *बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण °मत करिस्सति ॥

एक्कारसमो समवाओ

१ एक्कारस उवासगपडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१ दसणसावए २. कयव्वयकम्मे ३ सामाइअकडे ४ पोसहोववास-निरए ५ दिया बभयारी रत्ति[3] परिमाणकडे ६ दिआवि राओवि बभयारी असिणाई[4] वियडभोई मोलिकडे ७ सचित्तपरिण्णाए ८ आरभपरिण्णाए ९. पेसपरिण्णाए १० उद्दिट्ठभत्तपरिण्णाए ११ समणभूए[5] यावि भवइ समणाउसो !

२ 'लोगताओ ण 'एक्कारस एक्कारे जोयणसए'[6] अबाहाए जोइसते पण्णत्ते ॥

३. जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स 'एक्कारस एक्कवीसे जोयणसए'[7] अबाहाए[8] जोइसे चार चरइ[9] ।

---

१ सतेगइया (क, ख, ग) ।

२. स० पा०—सिज्झिस्सति जाव अत ।

३ राति (क) ।

४. असिनाई (वृपा) ।

५ पुस्तकान्तरेत्वेव वाचना—१ दसणसावए २ कयवयकम्मे ३ कयसामाइए ४ पोसहोववासनिरए ५ राइभत्तपरिण्णाए ६. सचित्तपरिण्णाए ७ दियाबभयारी राओ परिमाणकडे ८ दियावि राओवि बभयारी असिणाणए यावि भवति वोसट्ठकेसरोमनहे ९ आरभपरिण्णाए पेसणपरिण्णाए १०. उद्दिट्ठभत्तवज्जए ११. समणभूए । क्वचित्तु आरम्भपरिज्ञात इति नवमी, प्रेष्यारम्भपरिज्ञात इति दशमी, उद्दिष्टभक्तवर्जक श्रमणभूतश्चैकादशीति (वृ) ।

६ एक्कारसहिं एक्कारेहिं जोयणसएहिं (क, ख, ग) ।

७. एक्कारसहिं एक्कवीसेहिं जोयणसएहिं (क, ख, ग), २, ३ सूत्रयोरादर्शेषु सप्तम्यन्त: पाठो लभ्यते, किन्तु वृत्तावसौ पाठ द्वितीयान्तत्वेन व्याख्यातोऽस्ति—जम्बूद्वीपे द्वीपे मदरस्य पर्वतस्य एकादश 'एगवीसे' त्ति एकविंशतियोजनाधिकानि एकादशयोजनशतानि 'अबाहाए' त्ति अबाधया व्यवधानेन कृत्वेति शेष. ज्योतिष—ज्योतिश्चक्र चार—परिभ्रमण चरति—आचरति, तथा लोकान्तात् णमित्यलङ्कारे एकादश 'एक्कारे' त्ति एकादशयोजनाधिकानि अबाधया—व्यवहिततया कृत्वेति शेष. 'ज्योतिसते' ति ज्योतिश्चक्रपर्यन्त प्रज्ञप्त (वृ) ।

८ असौ शब्द: आदर्शेषु नोपलभ्यते, केवल वृत्तावेव सुरक्षितोऽस्ति 'चदपण्णत्ति' सूत्रे (पाहुड १८) ऽप्येष शब्दो लभ्यते—'एक्कारस एक्कवीसे जोयणसए अबाहाए जोइसे चार चरइ' ।

९. जबुद्दीवे ° चरइ । लोगताओ °° पण्णत्ते । इद

४ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स एक्कारस गणहरा होत्था, त जहा—इदभूती अग्गिभूती वायुभूती विअत्ते सुहम्मे मडिए मोरियपुत्ते अकपिए अयलभाया मेतज्जे पभासे ।।

५ मूले नक्खत्ते एक्कारसतारे पण्णत्ते ।।

६ हेट्ठिमगेविज्जयाण देवाण एक्कारसुत्तर गेविज्जविमाणसत भवइत्ति मक्खाय ।।

७ मदरे ण पव्वए धरणितलाओ सिहरतले एक्कारसभागपरिहीणे उच्चत्तेण पण्णत्ते ।।

८ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एक्कारस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

९ पचमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एक्कारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१० असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण एक्कारस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

११. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण एक्कारस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१२ लतए कप्पे अत्थेगइयाण देवाण एक्कारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१३ जे देवा 'वभ सुवभ वभावत्त वभप्पभ वभकत वभवण्ण वभलेस''[1] वभज्झय[2] वभसिग वभसिट्ठ वभकूड वभुत्तरवडेसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण [उक्कोसेण[3] ?] एक्कारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१४. ते ण देवा एक्कारसण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।।

१५ तेसि ण देवाण एक्कारसण्ह वाससहस्साण आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१६ सतेगइया[4] भवसिद्धिया जीवा, जे एक्कारसहि भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति[5] •बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति° सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

वारसमो समवाओ

१ वारस भिक्खुपडिमाओ पण्णत्ताओ, त जहा—मासिआ भिक्खुपडिमा, दोमासिआ भिक्खुपडिमा, तेमासिआ भिक्खुपडिमा, चाउमासिआ भिक्खुपडिमा, पचमासिआ भिक्खुपडिमा, छम्मासिआ भिक्खुपडिमा, सत्तमासिआ भिक्खु-

---

च वाचनान्तर व्याख्यातम्, अधिकृतवाचनाया पुनरिदमनन्तर व्याख्यातमालापकद्वय व्यत्ययेनापि दृश्यते (वृ) ।

१ पम्ह' पम्हलेस (ग) ।

२ पम्हज्झय (ग) ।

३ द्रष्टव्य ९।१७ टिप्पणम् ।

४ अत्थे° (क, ख, ग) ।

५ स० पा०—सिज्झिस्सति जाव सव्वदुक्खाण० ।

पडिमा, पढमा सत्तराइदिआ भिक्खुपडिमा, दोच्चा सत्तराइदिआ भिक्खुपडिमा, तच्चा सत्तराइदिआ भिक्खुपडिमा, अहोराइया भिक्खुपडिमा, एगराइया भिक्खुपडिमा ॥

२ दुवालसविहे संभोगे पण्णत्ते, तं जहा—

संगहणी-गाहा

उवही सुअ भत्तपाणे, अंजलीपग्गहेत्ति य।
दायणे[1] य निकाए अ, अब्भुट्ठाणेत्ति आवरे ॥१॥
कितिकम्मस्स य करणे, वेयावच्चकरणे इ अ।
समोसरणं संनिसेज्जा य, कहाए अ पबंधणे ॥२॥

३ दुवालसावत्ते[3] कितिकम्मे पण्णत्ते, [तं जहा—

दुओणयं जहाजायं, कितिकम्मं बारसावयं।
चउसिरं तिगुत्तं च, दुपवेसं एगनिक्खमणं[2] ॥१॥]

४. विजया णं रायहाणी दुवालस जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता ॥

५ रामे णं बलदेवे दुवालस वाससयाइं सव्वाउयं पालित्ता देवत्तं[4] गए ॥

६ मंदरस्स णं पव्वयस्स चूलिआ मूले दुवालस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ॥

७ जंबूदीवस्स णं दीवस्स वेइया मूले दुवालस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ॥

८ सव्वजहण्णिआ राई दुवालसमुहुत्तिआ पण्णत्ता ॥

९ [5]॰सव्वजहण्णओ दिवसो दुवालसमुहुत्तिओ पण्णत्तो॰ ॥

१० सव्वट्ठसिद्धस्स णं महाविमाणस्स उवरिल्लाओ थूभिअग्गाओ दुवालस जोयणाइं उड्ढं उप्पतिता ईसिपब्भारा नामं पुढवी पण्णत्ता ॥

११ ईसिपब्भाराए णं पुढवीए दुवालस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—ईसित्ति वा ईसिपब्भारत्ति वा तणूइ वा तणुयतरित्ति[6] वा सिद्धित्ति वा सिद्धालएत्ति वा मुत्तीति वा मुत्तालएत्ति वा बंभेत्ति वा बंभवडेंसएत्ति वा लोकपडिपूरणेत्ति वा लोगग्गचूलिआइ वा ॥

१२ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

---

१ दायणा (क, ख)।
२ ॰साइए (क)।
३ एषा आवश्यकनिर्युक्ति (१२१६) गता गाथा कृतिकर्मव्याख्यानपरा वर्तते, न तु द्वादशावर्त-व्याख्यानपरा। इयं प्रासङ्गिकरूपेण लिखिता सम्भाव्यते, तेन नास्माभिर्मूले स्वीकृता।
४. देवत्ति (क); देवत्ति (ख), देवत्तिए (ग)।
५ सं॰ पा॰—एवं दिवसोवि नायव्वो।
६. तणूयतरिति (क), तणुयत्ति (ग)।

१३ पचमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण वारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
१४ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण वारस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
१५ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण वारस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
१६ लतए कप्पे अत्थेगइयाण देवाण वारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
१७ जे देवा महिद महिदज्झय कबु कबुग्गोव पुख सुपुख महापुख पुड सुपुड महापुड नरिद नरिदकत नरिदुत्तरवडेसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाणं उक्कोसेण वारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
१८ ते ण देवा वारसण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ॥
१९ तेसि ण देवाण वारसहि वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥
२० सतेगइआ[1] भवसिद्धिया जीवा, जे वारसहि भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति[2] •वुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति° सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ॥

तेरसमो समवाओ

१ तेरस किरियाठाणा पण्णत्ता, त जहा—अट्ठादडे अणट्ठादडे हिंसादडे अकम्हादडे दिट्ठिविप्परिआसिआदडे मुसावायवत्तिए अदिण्णादाणवत्तिए अज्झत्थिए माणवत्तिए मित्तदोसवत्तिए मायावत्तिए लोभवत्तिए ईरियावहिए नाम तेरसमे ॥
२ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु तेरस विमाणपत्थडा पण्णत्ता ॥
३ सोहम्मवडेसगे ण विमाणे ण अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइ आयामविक्खभेण पण्णत्ते ॥
४ एव ईसाणवडेंसगे वि ॥
५ जलयरपचिंदिअतिरिक्खजोणिआण अद्धतेरस जाइकुलकोडीजोणीपमुहसयसहस्सा[3] पण्णत्ता ॥
६ पाणाउस्स ण पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता ॥
७ गब्भवक्कतिअपचेदिअतिरिक्खजोणिआण तेरसविहे पओगे पण्णत्ते, त जहा—सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चामोसमणपओगे असच्चामोसमणपओगे सच्चवइपओगे मोसवइपओगे सच्चामोसवइपओगे असच्चामोसवइपओगे ओरालिअसरीरकायपओगे ओरालिअमीससरीरकायपओगे वेउव्विअसरीरकायपओगे वेउव्विअमीससरीरकायपओगे कम्मसरीरकायपओगे ॥

---

१ अत्थेगइया (क, ख, ग) ।
२ स० पा०—सिज्झिस्सति जाव सव्वदुक्खाण° ।
३ सहस्साइ (क्व) ।

८ सूरमडले जोयणेण तेरसहि एगसट्ठिभागेहि जोयणस्स ऊणे पण्णत्ते ॥
९ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तेरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
१० पचमाए ण पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तेरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
११ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण तेरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
१२ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण तेरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
१३ लतए कप्पे अत्थेगइयाण देवाण तेरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
१४ जे देवा वज्ज सुवज्ज वज्जावत्त वज्जप्पभ वज्जकत वज्जवण्ण वज्जलेस वज्जज्झय वज्जसिग वज्जसिट्ठ वज्जकूड वज्जुत्तरवडेंसग वइर वइरावत्त[1] °वइरप्पभ वइरकत वइरवण्ण वइरलेस वइरज्झय वइरसिग वइरसिट्ठ वइरकूड° वइरुत्तरवडेंसग लोग लोगावत्त लोगप्पभ[2] °लोगकत लोगवण्ण लोगलेस लोगज्झय लोगसिग लोगसिट्ठ लोगकूड° लोगुत्तरवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण तेरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
१५ ते ण देवा तेरसहि अद्धमासेहि आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ॥
१६ तेसि ण देवाण तेरसहि वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥
१७ सतेगइया[3] भवसिद्धिया जीवा, जे तेरसहि भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति[4] °बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण°मत करिस्सति ॥

चउद्दसमो समवाओ

१ चउद्दस भूअग्गामा पण्णत्ता, त जहा—सुहुमा अपज्जत्तया, सुहुमा पज्जत्तया, बादरा अपज्जत्तया, बादरा पज्जत्तया, बेइदिया अपज्जत्तया, बेइदिया पज्जत्तया, तेइदिया अपज्जत्तया, तेइदिया पज्जत्तया, चउरिदिया अपज्जत्तया, चउरिदिया पज्जत्तया, पचिदिया असण्णिअपज्जत्तया, पचिदिया असण्णिपज्जत्तया, पचिदिया सण्णिअपज्जत्तया, पचिदिया सण्णिपज्जत्तया ॥
२ चउदस पुव्वा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

उप्पायपुव्वमग्गेणिय च तइय च वीरिय पुव्व ।
अत्थीनत्थिपवाय, तत्तो नाणप्पवाय च ॥१॥

---

१ स० पा०—वइरावत्त जाव वइरुत्तरवडेंसग । ३ अत्थेगइया (क, ख) ।
२ स० पा०—लोगप्पभ जाव लोगुत्तरवडेंसग । ४ स० पा०—सिज्झिस्सति जाव अंत ।

सच्चप्पवायपुव्व, तत्तो आयप्पवायपुव्व च ।
कम्मप्पवायपुव्व, पच्चक्खाण भवे नवम ॥२॥
विज्जाअणुप्पवाय, अवझपाणाउ बारस पुव्व ।
तत्तो किरियविसाल, पुव्व तह विदुसार च ॥३॥

३ अग्गेणीअस्स ण पुव्वस्स चउद्दस वत्थू पण्णत्ता ॥

४ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स चउद्दस समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समण-सपया होत्था ॥

५ कम्मविसोहिमग्गण पडुच्च चउद्दस जीवट्ठाणा पण्णत्ता, त जहा—मिच्छदिट्ठी, सासायणसम्मदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी, अविरयसम्मदिट्ठी, विरयाविरए[1], पमत्त-सजए, अप्पमत्तसजए, नियट्टिबायरे, अनियट्टिबायरे, सुहुमसपराए—उवसमए[2] वा खवए[3] वा, उवसतमोहे, खीणमोहे, सजोगी केवली, अजोगी केवली ॥

६ भरहेरवयाओ ण जीवाओ चउद्दस-चउद्दस जोयणसहस्साइ चत्तारि य एगुत्तरे जोयणसए छच्च एकूणवीसे भागे जोयणस्स आयामेण पण्णत्ताओ ॥

७ एगमेगस्स ण रण्णो चाउरतचक्कवट्टिस्स चउद्दस रयणा पण्णत्ता, त जहा—इत्थीरयणे सेणावइरयणे गाहावइरयणे पुरोहियरयणे वड्ढइरयणे आसरयणे हत्थिरयणे असिरयणे दडरयणे चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे मणिरयणे कागिणिरयणे ॥

८ जबुद्दीवे ण दीवे चउद्दस महानईओ पुव्वावरेण लवणसमुद्द समप्पेति[4], त जहा—गगा सिंधू रोहिआ रोहिअसा हरी हरिकता सीआ सीओदा नरकता नारिकता सुवण्णकूला रुप्पकूला रत्ता रत्तवई ॥

९ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं चउद्दस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१० पचमाए ण पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण चउद्दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

११ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण चउद्दस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१२ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण चउद्दस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१३ लंतए कप्पे देवाण उक्कोसेण चउद्दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१४ महासुक्के कप्पे देवाण जहण्णेण चउद्दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१५ जे देवा सिरिकत सिरिमहिय सिरिसोमनस लतय काविट्ठ महिंद महिंदोकत[5] महिंदुत्तरवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण चउद्दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

---

१ विरयाविरयसम्मदिट्ठी (क, ख, ग) ।
२ उवसामए (क) ।
३ खमए (ग) ।
४ समुप्पेंति (ग) ।
५ महिंदकत (ख) ।

१६. ते णं देवा चउद्दसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥

१७ तेसि णं देवाणं चउद्दसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥

१८ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे चउद्दसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[1] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥

पण्णरसमो समवाओ

१ पण्णरस परमाहम्मिआ पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

अंबे अंबरिसी चेव, सामे सबलेत्ति यावरे ।
रुद्दोवरुद्दकाले य, महाकालेत्ति यावरे[2] ॥१॥
असिपत्ते धणु कुम्भे, वालुए वेयरणीति य ।
खरस्सरे महाघोसे, एमेते[3] पण्णरसाहिआ ॥२॥

२ णमी णं अरहा पण्णरस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

३ धुवराहू[4] णं बहुलपक्खस्स पाडिवयं[5] पण्णरसइं[6] भागं पण्णरसइं भागेणं चंदस्स लेसं आवरेत्ताणं चिट्ठति, तं जहा—पढमाए पढमं भागं[7] °बीआए बीयं भागं तइआए तइयं भागं चउत्थीए चउत्थं भागं पंचमीए पंचमं भागं छट्ठीए छट्ठं भागं सत्तमीए सत्तमं भागं अट्ठमीए अट्ठमं भागं नवमीए नवमं भागं दसमीए दसमं भागं एक्कारसीए एक्कारसमं भागं बारसीए बारसमं भागं तेरसीए तेरसमं भागं चउद्दसीए चउद्दसमं भागं° पण्णरसेसु पण्णरसमं भागं । तं चेव सुक्कपक्खस्स उवदंसेमाणे-उवदंसेमाणे चिट्ठति, तं जहा—पढमाए पढमं भागं जाव पण्णरसेसु पण्णरसमं भागं ।

४ छ णक्खत्ता पण्णरसमुहुत्तसंजुत्ता पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

सतभिसय भरणि अद्दा, असलेसा साइ 'तह य'[8] जेट्ठा य ।
एते छण्णक्खत्ता, पण्णरसमुहुत्तसंजुत्ता ॥१॥

---

१ सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतं ।
२ वावरे (क) ।
३. एते (क, ग) ।
४. निच्चराहू (ग) ।
५. पडिवाते (ग) ।
६ पन्नरस (ख) ।
७ सं० पा०—भागं जाव पण्णरसेसु ।
८ तधव (क) ।

५ चेत्तासोएसु मासेसु सइ[1] पण्णरसमुहुत्तो दिवसो भवति, सइ[2] पण्णरस मुहुत्ता राई भवति ॥

६ विज्जाअणुप्पवायस्स[3] णं पुव्वस्स पण्णरस वत्थू पण्णत्ता ॥

७ मणूसाणं पण्णरसविहे पओगे पण्णत्ते, तं जहा—सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चामोसमणपओगे असच्चामोसमणपओगे सच्चवइपओगे मोसवइपओगे सच्चामोसवइपओगे असच्चामोसवइपओगे ओरालिअसरीरकायपओगे ओरालिअमीससरीरकायपओगे वेउव्विअसरीरकायपओगे वेउव्विअमीससरीर-कायपओगे आहारयसरीरकायपओगे आहारयमीससरीरकायपओगे कम्मय-सरीरकायपओगे ॥

८ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पण्णरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

९ पंचमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पण्णरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पण्णरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

११ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पण्णरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१२ महासुक्के कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं पण्णरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१३ जे देवा णंदं सुणंदं णंदावत्तं णंदप्पभं[4] •णंदकंतं णंदवण्णं णंदलेसं णंदज्झयं णंदसिंगं णंदसिट्ठं णंदकूडं° णंदुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१४ ते णं देवा पण्णरसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥

१५ तेसि णं देवाणं पण्णरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥

१६ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे पण्णरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[5] •बुज्झि-स्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणं° मंतं करिस्संति ॥

---

१ × (क, ग)।

२ सईय (ग), एवं चेत्तमासेसु (चेत्तासोएसु मासेसु) (क्व), अष्टादशे समवाए (८) वृत्तिकृता 'सइ' शब्दो व्याख्यातः । अत्र तु नास्ति व्याख्यातः । नासौ पाठः उपलब्ध इति प्रतीयते ।

३ अणुप्प° (क, ख, ग), नंदी (सू० ११३) 'विज्जाणुप्पवाय' इति विद्यते ।

४ सं० पा०—कंतं वण्णं लेसं जाव णंदुत्तरवडें-सगं ।

५ सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव अंतं ।

सोलसमो समवाओ

१ सोलस य गाहा-सोलसगा पण्णत्ता, तं जहा—समए वेयालिए उवसग्गपरिण्णा इत्थिपरिण्णा निरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए वीरिए धम्मे समाही मग्गे समोसरणे आहत्तहिए[1] गंथे जमईए गाहा[2] ॥

२ सोलस कसाया पण्णत्ता, तं जहा—अणंताणुबंधी कोहे, [3]°अणंताणुबंधी माणे, अणंताणुबंधी माया, अणंताणुबंधी लोभे°, अपच्चक्खाणकसाए कोहे, [4]°अपच्चक्खाणकसाए माणे, अपच्चक्खाणकसाए माया, अपच्चक्खाणकसाए लोभे°, पच्चक्खाणावरणे कोहे, [5]°पच्चक्खाणावरणे माणे, पच्चक्खाणावरणा माया, पच्चक्खाणावरणे लोभे°, संजलणे कोहे [6]°संजलणे माणे, संजलणे माया संजलणे लोभे° ॥

३ मंदरस्स णं पव्वयस्स सोलस नामधेया पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

'मंदर-मेरु-मणोरम'[7], सुदंसण सयंपभे य गिरिराया ।
रयणुच्चय पियदंसण, मज्झे लोगस्स नाभी य ॥१॥
अत्थे अ सूरियावत्ते, सूरियावरणेत्ति य ।
उत्तरे य दिसाई य, वडेंसे इअ सोलसे[8] ॥२॥

४ पासस्स णं अरहतो पुरिसादाणीयस्स सोलस समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समण-संपदा होत्था ॥

५ आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता ॥

६ चमरबलीणं ओवारियालेणे[9] सोलस जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ।।

७ लवणे णं समुद्दे सोलस जोयणसहस्साइं उस्सेहपरिवुड्ढीए[10] पण्णत्ते ॥

८ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

---

१ अहातहिए (ग, वृ) ।
२ गाहा सोलसमे (ख), गाहा सोलसए (ग), गाहा सोलसमे सोलसगे (क्व) ।
३,४,५,६ सं० पा०—एवं माणे माया लोभे ।
७ मंदरे मेरु मनोरमे (क) ।
८ सोलस (ख) ।
९ उवातिया लेणा (क), उवारिया लेणे (ग,वृ) ।
१० उव्वेह° (ग) ।

९ पचमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण सोलस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।
१० असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण सोलस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।
११ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण सोलस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।
१२ महासुक्के कप्पे देवाण अत्थेगइयाण सोलस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।
१३ जे देवा आवत्त वियावत्त नदियावत्त महाणदियावत्त अकुस अकुसपलव भद्द सुभद्द महाभद्द सव्वओभद्द भद्दुत्तरवडेसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाण उक्कोसेण सोलस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।
१४ ते ण देवा सोलसण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नोससति वा ।।
१५ तेसि ण देवाण सोलसवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।
१६ सतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा, जे सोलसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति[1] °बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण° मत करिस्सति ।।

सत्तरसमो समवाओ

१ सत्तरसविहे असजमे पण्णत्ते, त जहा—पुढवीकायअसजमे आउकायअसजमे तेउकायअसजमे, वाउकायअसजमे वणस्सइकायअसजमे बेइदियअसजमे तेइदियअसजमे चउरिंदियअसजमे पचिंदियअसजमे अजीवकायअसजमे पेहाअसजमे उपेहाअसजमे अवहट्टुअसजमे अप्पमज्जणाअसजमे मणअसजमे वइअसजमे कायअसजमे ।।
२ सत्तरसविहे सजमे पण्णत्ते, त जहा—पुढवीकायसजमे[2] °आउकायसजमे तेउकायसजमे वाउकायसजमे वणस्सइकायसजमे बेइदियसजमे तेइदियसजमे चउरिंदियसजमे पचिंदियसजमे अजीवकायसजमे पेहासजमे उपेहासजमे अवहट्टुसजमे पमज्जणासजमे मणसजमे वइसजमे° कायसजमे ।।
३ माणुसुत्तरे[3] ण पव्वए सत्तरस-एक्कवीसे जोयणसए उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ते ।।
४ सव्वेसिपि ण वेलधर-अणुवेलधर-णागराईण आवासपव्वया सत्तरस-एक्कवीसाइ जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।।
५. लवणे ण समुद्दे सत्तरस जोयणसहस्साइ सव्वग्गेण पण्णत्ते ।।
६ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सातिरेगाइ सत्तरस जोयणसहस्साइ उड्ढ उप्पतित्ता ततो पच्छा चारणाण तिरिय गति पवत्तति ।।

---

१ स० पा०—सिज्झिस्सति जाव अत ।
२. स० पा०—पुढवीकायसजमे एव जाव काय-सजमे ।
३ माणसुत्तरे (क), माणुसत्तरे (ग) ।

७ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुर [कुमार ?] रण्णो तिगिंछिकूडे उप्पायपव्वए सत्तरस एक्कवीसाइ जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ते ।।

८ वलिस्स ण[1] °वतिरोयणिदस्स वतिरोयणरण्णो° रुयगिदे उप्पायपव्वए सत्तरस एक्कवीसाइ जोयणसयाइ[2] उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ते ।।

९ सत्तरसविहे मरणे पण्णत्ते, त जहा—आवीईमरणे ओहिमरणे आयतियमरणे[3] वलायमरणे[4] वसट्टमरणे[5] अतोसल्लमरणे तब्भवमरणे वालमरणे पडितमरणे वालपडितमरणे छउमत्थमरणे केवलिमरणे वेहासमरणे गिद्धपट्ठमरणे[6] भत्तपच्चक्खाणमरणे इगिणीमरणे पाओवगमणमरणे ।।

१० सुहुमसपराए ण भगव सुहुमसपरायभावे वट्टमाणे सत्तरस कम्मपगडीओ णिवधति, त जहा—आभिणिवोहियणाणावरणे सुयणाणावरणे ओहिणाणावरणे मणपज्जवणाणावरणे केवलणाणावरणे चक्खुदसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे ओहीदसणावरणे केवलदसणावरणे सायावेयणिज्ज जसोकित्तिनाम उच्चागोयं दाणतराय लाभतराय भोगतराय उवभोगतराय वीरिअअतराय ।।

११ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण सत्तरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१२ पचमाए पुढवीए नेरइयाण उक्कोसेण सत्तरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१३ छट्ठीए पुढवीए नेरइयाण जहण्णेण सत्तरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१४ असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाण सत्तरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१५ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण सत्तरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१६ महासुक्के कप्पे देवाण उक्कोसेण सत्तरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१७ सहस्सारे कप्पे देवाण जहण्णेण सत्तरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१८ जे देवा सामाण सुमामाण महासामाण पउम महापउम कुमुद महाकुमुद नलिणं महानलिण पोडरीअ महापोडरीअ सुक्कं महासुक्क सीह सीहोकत[7] सीहवीअ भाविअ विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण सत्तरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१९. ते ण देवा सत्तरसहि अद्धमासेहि आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।।

---

१ स० पा०—वलिस्स ण° ।

२ °सयाइ साइरेगेण (क), °सयाइ साइरेगाइ (ख, ग) ।

३. अतित° (क) ।

४. वलय° (भ० २।४९), वलात° (स्यानाग २।३९९) ।

५. वसह° (क), वतट्ट° (ग) ।

६ गद्धपट्ठ° (क); गिद्धिपट्ठ° (ग), गिद्धपिट्ठ (क्व) ।

७. सीहकत (क्व) ।

२० तेसि ण देवाण सत्तरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

२१ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे सत्तरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति[1] °बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति° सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।।

अट्ठारसमो समवाओ

१ अट्ठारसविहे बभे पण्णत्ते, त जहा—ओरालिए कामभोगे णेव सय मणेण सेवइ[2], नोवि अण्ण मणेण सेवावेइ, मणेण 'सेवत पि[3] अण्ण न समणुजाणाइ[4] ।
ओरालिए कामभोगे णेव सय वायाए सेवइ, नोवि अण्ण वायाए सेवावेइ, वायाए सेवत पि अण्ण न समणुजाणाइ ।
ओरालिए कामभोगे णेव सय कायेण सेवइ, नोवि अण्ण काएण सेवावेइ, काएण सेवत पि अण्ण न समणुजाणाइ ।
दिव्वे कामभोगे णेव सय मणेण सेवइ, नोवि अण्ण मणेण सेवावेइ, मणेण सेवत पि अण्ण न समणुजाणाइ ।
दिव्वे कामभोगे णेव सय वायाए सेवइ, नोवि अण्ण वायाए सेवावेइ, वायाए सेवत पि अण्ण न समणुजाणाइ ।
दिव्वे कामभोगे णेव सयं काएण सेवइ, नोवि अण्ण काएण सेवावेइ, काएण सेवत पि अण्ण न समणुजाणाइ ।।

२ अरहतो ण अरिट्ठनेमिस्स अट्ठारस समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसपया होत्था ।।

३ समणेण भगवया महावीरेण समणाण णिग्गथाण सखुड्डयविअत्ताण अट्ठारस ठाणा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

वयछक्क कायछक्क, अकप्पो गिहिभायण ।
पलियक निसिज्जा य, सिणाण सोभवज्जण ।।१।।

४ आयारस्स ण भगवतो सचूलिआगस्स अट्ठारस पयसहस्साइ पयग्गेण पण्णत्ताइ ।।

५ 'बभीए ण लिवीए'[5] अट्ठारसविहे लेखविहाणे पण्णत्ते, त जहा—१ बभी २ जवणालिया[6] ३ दोसऊरिया[7] ४ खरोट्ठिया ५ खरसाहिया[8] ६ पहाराइया

---

१ स० पा०—सिज्झिस्सति जाव सव्वदुक्खाण° ।
२ सेवेइ (क, ख) ।
३. सेवते पि (ख), सेवते वि (ग) ।
४. °जाणइ (ख, ग) ।
५ भाएण विवीए (क), बभए ण लिविए (ग) ।
६ जवणामिलिया (ख) ।
७ दासऊरिया (क), दसाऊरिया (ग) ।
८. पुक्करसाविया (क) ।

७ उच्चत्तरिया[1] ८ अक्खरपुट्टिया ९ भोगवइया[2] १० वेणइया[3] ११ निण्हइया १२ अंकलिवी १३ 'गणियलिवी १४ गंधव्वलिवी[4] १५ आयंसलिवी[5] १६ माहेसरी[6] १७ दामिली[7] १८ पोलिंदी[8]।

६ अत्थिनत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू पण्णत्ता ॥

७ धूमप्पभा णं पुढवी अट्ठारसुत्तरं जोयणसयहस्सं बाहल्लेणं पण्णत्ता ॥

८ पोसासाढेसु णं मासेसु सइ उक्कोसेणं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइ उक्कोसेणं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवइ ॥

९ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१० छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

११ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१२ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१३ सहस्सारे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१४ आणए कप्पे देवाणं जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१५ जे देवा कालं सुकालं महाकालं अंजणं रिट्ठं सालं समाणं दुमं महादुमं विसालं सुसालं पउमं पउमगुम्मं कुमुदं कुमुदगुम्मं नलिणं नलिणगुम्मं पुंडरीअं पुंडरीयगुम्मं सहस्सारवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं [उक्कोसेणं[9]] अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१६ ते णं देवाणं अट्ठारसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥

१७ तेसि णं देवाणं अट्ठारसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥

१८ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे अट्ठारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[10] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥

---

१ चुच्चत्तरिया (क)।
२ भोगवयता (क, ख, ग)।
३ वेणणिया (ग)।
४ गणियलिवी गंधव्वलिवी भूयलिवी (ख), गंधव्वलिवी गणियलिवी भूयलिवी (ग)।
५ आदसलिवी (ग)।
६ माहेसरलिवी (क, ख, ग)।
७ दामिलिवी (क, ख, ग)।
८ वोलिंदिलिवी (क, ख, ग)।
९ द्रष्टव्य (९।१७) टिप्पणम्।
१०. सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं°।

एगूणवीसमो समवाओ

१ एगूणवीसं णायज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

उक्खित्तणाए संघाडे, अंडे कुम्मे य सेलए।
तुंबे य रोहिणी मल्ली[1], मागंदी चंदिमाति य ॥१॥
दावद्दवे उदगणाए, मंडुक्के तेतलीइ य।
नंदीफले अवरकंका, आइण्णे 'सुंसुमाइ य'[2] ॥२॥
अवरे य पोंडरीए, णाए एगूणवीसइमे[3] ॥

२ जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिआ उक्कोसेणं एकूणवीसं जोयणसयाइं उड्ढमहो तवंति[4] ॥

३ सुक्केणं महग्गहे अवरेणं उदिए समाणे एकूणवीसं णक्खत्ताइं समं चारं चरित्ता अवरेणं अत्थमणं उवागच्छइ ॥

४. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स कलाओ एकूणवीसं छेयणाओ पण्णत्ताओ ॥

५ एगूणवीसं तित्थयरा अगारमज्झा[5] वसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइआ ॥

६ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

७ छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

८ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

९ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एगूणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१० आणयकप्पे देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

११ पाणए कप्पे देवाणं जहण्णेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१२ जे देवा आणतं पाणतं णतं विणतं घणं सुसिरं इंदं इंदोकंतं इंदुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१३ ते णं देवा एगूणवीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥

१४ तेसि णं देवाणं एगूणवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥

---

१. मल्ले (क)।
२ सुंसुमातिय (ग)।
३ एकूणविंसतेमे (ग)।
४ तवयम्मि (ग)।
५ °मज्झे (क्व)।

१५ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे एगूणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[1] •बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥

वीसइमो समवाओ

१ वीसं असमाहिट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—१ दवदवचारि यावि भवइ २ अपमज्जियचारि यावि भवइ ३ दुप्पमज्जियचारि यावि भवइ ४. अतिरित्तसेज्जासणिए ५ रातिणियपरिभासी[2] ६ थेरोवघातिए ७ भूओवघातिए ८. संजलणे ९ कोहणे[3] १०. पिट्ठिमंसिए[4] ११. अभिक्खणं-अभिक्खणं ओहारइत्ता भवइ १२ णवाणं अधिकरणाणं अणुप्पण्णाणं उप्पाएत्ता भवइ १३. पोराणाणं अधिकरणाणं खामिय-विओसवियाणं[5] पुणोदीरेत्ता भवइ १४. ससरक्खपाणिपाए १५ अकालसज्झायकारए यावि भवइ १६ कलहकरे १७ सद्दकरे १८ झंझकरे १९ सूरप्पमाणभोई २०. एसणाऽसमिते आवि भवइ ॥

२ मुणिसुव्वए णं अरहा वीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥

३ सव्वेवि णं घणोदही वीसं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ता ॥

४ पाणयस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वीसं सामाणिअसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥

५. णपुंसयवेयणिज्जस्स णं कम्मस्स वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ बंधओ बंधठिई पण्णत्ता ॥

६ पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पण्णत्ता ॥

७ 'ओसप्पिणि-उस्सप्पिणि'[6]-मंडले वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ कालो पण्णत्तो ॥

८ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

९ छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

११ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१२ पाणते कप्पे देवाणं उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१३. आरणे कप्पे देवाणं जहण्णेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१४ जे देवा सातं विसातं सुविसातं सिद्धत्थं उप्पलं 'रुइलं तिगिच्छं दिसासोवत्थियवद्धमाणयं पलंबं'[7] पुप्फं सुपुप्फं पुप्फावत्तं पुप्फपभं पुप्फकंतं पुप्फवण्णं पुप्फलेसं

---

१ सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं°।

२ °परिभासी (क)।

३ कोवणे (क)।

४. पिट्ठिमंसए (ग)।

५ विउसमियाणं (ग)।

६ उस°ओस° (क), उस° उस° (ग)।

७. भित्तिलं तिगिच्छं दिसासोवत्थियं पलंबं रुइलं (ख)।

पुप्फज्झय पुप्फसिंग पुप्फमिट्ठ पुप्फकूड[1] पुप्फुत्तरवडेंसग विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१५ ते णं देवा वीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१६ तेसि णं देवाणं वीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१७ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे वीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[2] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

एक्कवीसइमो समवाओ

१ एक्कवीसं सबला पण्णत्ता, तं जहा—१ हत्थकम्मं करेमाणे सबले। २ मेहुणं[3] पडिसेवमाणे सबले। ३ राइभोयणं भुंजमाणे सबले। ४ आहाकम्मं भुंजमाणे सबले। ५ सागारियपिंडं भुंजमाणे सबले। ६ उद्देसियं, कीयं, आहट्टु[4] °दिज्जमाणं भुंजमाणे सबले। ७ अभिक्खणं पडियाइक्खेत्ता णं भुंजमाणे सबले। ८ अंतो छण्हं मासाणं गणाओ गणं संकममाणे सबले। ९ अंतो मासस्स तओ दगलेवे करेमाणे सबले। १० अंतो मासस्स तओ माईठाणे सेवमाणे सबले। ११ रायपिंडं भुंजमाणे सबले। १२ आउट्टिआए पाणाइवायं करेमाणे सबले। १३ आउट्टिआए मुसावायं वदमाणे सबले। १४ आउट्टिआए अदिण्णादाणं गिण्हमाणे सबले। १५ आउट्टिआए अणंतरहिआए पुढवीए ठाणं वा निसीहियं वा चेतेमाणे सबले। १६ आउट्टियाए ससणिद्धाए पुढवीए ससरक्खाए पुढवीए ठाणं वा निसीहियं वा चेतेमाणे सबले। १७ आउट्टिआए चित्तमंताए पुढवीए, चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंताए लेलूए, कोलावासंसि वा दारुए [अण्णयरे वा तहप्पगारे[5] ?] जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउत्तिंगे पणग-दगमट्टी-मक्कडासंताणए ठाणं वा निसीहियं वा चेतेमाणे सबले। १८ आउट्टिआए मूलभोयणं वा कंदभोयणं वा खंधभोयणं वा तया-भोयणं वा पवालभोयणं वा पत्तभोयणं वा पुप्फभोयणं वा फलभोयणं वा बीयभोयणं वा हरियभोयणं वा भुंजमाणे सबले। १९ अंतो संवच्छरस्स दस दगलेवे करेमाणे सबले। २० अंतो संवच्छरस्स दस माइठाणाइं सेवमाणे

---

१ × (क्व)।

२. स० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं°।

३ मेहुणे (क)।

४ अत्र पाठपूर्तिर्दशाश्रुतस्कन्धवत् कृता किन्तु क्रमो वृत्त्यनुसारी स्वीकृतः। स० पा०—कीयं आहट्टु जाव अभिक्खणं।

५ वृत्त्यनुसारेणासौ पाठो युज्यते।

सबले °। २१. 'अभिक्खण-अभिक्खणं सीतोदय-वियड-वग्घारिय-पाणिणा असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पडिगाहित्ता भुजमाणे सबले'[1] ॥

२ णिअट्टिवादरस्स ण खवितसत्तयस्स मोहणिज्जस्स कम्मस्स एक्कवीस कम्मसा सतकम्मा पण्णत्ता, त जहा—अपच्चक्खाणकसाए कोहे [2]°अपच्चक्खाणकसाए माणे अपच्चक्खाणकसाए माया अपच्चक्खाणकसाए लोभे° पच्चक्खाणावरणे[3] कोहे [4]°पच्चक्खाणावरणे माणे पच्चक्खाणावरणा माया पच्चक्खाणावरणे लोभे° सजलणे कोहे [5]°सजलणे माणे सजलणे माया सजलणे लोभे° इत्थिवेदे पुवेदे नपुसयवेदे हासे अरति रति भय सोग दुगुछा ॥

३ एकमेक्काए ण ओसप्पिणीए पचमछट्ठाओ समाओ एक्कवीस-एक्कवीसं वाससहस्साइ कालेण पण्णत्ताओ, त जहा—दूसमा दूसमदूसमा य ॥

४ एगमेगाए ण उस्सप्पिणीए पढमवितियाओ समाओ एक्कवीस-एक्कवीस वाससहस्साइ कालेण पण्णत्ताओ, त जहा—दूसमदूसमा दूसमा य ॥

५ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एकवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

६ छट्टीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एकवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

७ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण एगवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

८ सोहम्मीसाणेमु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाण एक्कवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

९ आरणे कप्पे देवाण उक्कोसेण एक्कवीसं सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१० अच्चुते कप्पे देवाण जहण्णेण एकवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

११ जे देवा सिरिवच्छ सिरिदामगड मल्ल किट्ठि[6] चावोण्णत आरण्णवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण एक्कवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१२ ते ण देवा एक्कवीसाए अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ॥

१३ तेसि ण देवाण एक्कवीसाए वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥

१४. सतेगइआ भवसिद्धिया जीवा, जे एक्कवीसाए भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति[7] °वुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति° सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ॥

---

१ असौ पाठांशो वृत्त्यनुसारी स्वीकृत दशाश्रुत-स्कन्धेसौ किञ्चिद्भेदेन लभ्यते, यथा—'आउट्टियाए सीतोदगवग्घारिएण हत्थेण वा मत्तेण वा दव्विए भायणेण वा असण वा°"।

२ स० पा०—एव माणे माया लोभे।

३ पचक्खाणकसाए (ग)।

४,५ स० पा०—एव माणे माया लोभे।

६ किट्ठ (ग)।

७ स० पा०—सिज्झिस्सति जाव सव्वदुक्खाण°।

वावीसइमो समवाओ

१ वावीसं परीसहा पण्णत्ता, त जहा—दिगिंछापरीसहे पिवासापरीसहे सीतपरीसहे उसिणपरीसहे दसमसगपरीसहे[1] अचेलपरीसहे अरइपरीसहे इत्थिपरीसहे चरियापरीसहे निसीहियापरीसहे सेज्जापरीसहे अक्कोसपरीसहे वहपरीसहे जायणापरीसहे अलाभपरीसहे रोगपरीसहे तणफासपरीसहे[2] जल्लपरीसहे सक्कारपुरक्कारपरीसहे 'नाणपरीसहे दसणपरीसहे पण्णापरीसहे'[3] ॥

२ दिट्ठिवायस्स ण वावीस सुत्ताइ छिण्णछेयणइयाइ ससमयसुत्तपरिवाडीए।
वावीस सुत्ताइं अछिण्णछेयणइयाइ आजीवियसुत्तपरिवाडीए।
वावीस सुत्ताइ तिकणइयाइ तेरासिअसुत्तपरिवाडीए।
वावीस सुत्ताइ चउक्कणइयाइ ससमयसुत्तपरिवाडीए[4] ॥

३ वावीसइविहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, त जहा—कालवण्णपरिणामे[5] नीलवण्णपरिणामे लोहियवण्णपरिणामे हालिद्दवण्णपरिणामे सुक्किलवण्णपरिणामे सुब्भिगधपरिणामे दुब्भिगधपरिणामे तित्तरसपरिणामे '[6]कडुयरसपरिणामे कसायरसपरिणामे अविलरसपरिणामे महुररसपरिणामे° कक्खडफासपरिणामे मउयफासपरिणामे गरुफासपरिणामे लहुफासपरिणामे सीतफासपरिणामे उसिणफासपरिणामे णिद्धफासपरिणामे लुक्खफासपरिणामे 'गरुलहुफासपरिणामे अगरुलहुफासपरिणामे'[7] ॥

४ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण वावीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता

५. छट्ठीए पुढवीए नेरइयाण उक्कोसेण वावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

६. अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइयाण जहण्णेण वावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

७ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइया ण वावीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

८ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण वावीस पलिओमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

९ अच्चुते कप्पे देवाण उक्कोसेण वावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१०. हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेवेज्जगाण[8] देवाण जहण्णेण वावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

---

१ दसमसगफासप° (क)।
२ तणपरीसहे (क, ग)।
३ अण्णाण° दसण° पण्णा° (क, ख, वृपा), अन्नाणादसण° पण्णा° (ग), पन्ना° अन्नाण° दसण° (उत्तरा° २ सू० ३)।
४ समय° (ग)।
५ कालय° (क, ग)।
६ स० पा०—एव पचवि रसा।
७ गरुयलहुय° अगरुलहुय° (क), गरुलहु° अगरुयलहुय° (ख), गरुलहुय° अगरुलहु° (ग)।
८. गेवेज्जाण (क, ग)।

११ जे देवा महित विसुत[1] विमल पभास[2] वणमाल अच्चुतवडेसग विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण वावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१२ ते ण देवा वावीसाए अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ॥

१३ तेसि ण देवाण वावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥

१४ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे वावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति[3] •वुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति° सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ॥

तेवीसइमो समवाओ

१ तेवीस सूयगडज्झयणा पण्णत्ता, त जहा -समए वेतालिए उवसग्गपरिण्णा थीपरिण्णा नरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए विरिए धम्मे समाही मग्गे समोसरणे[4] आहत्तहिए[5] गथे जमईए गाहा पुडरीए किरियठाणा आहारपरिण्णा अपच्चक्खाणकिरिया अणगारसुय अद्दइज्ज णालंदइज्ज ॥

२ जंवुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमासे ओसप्पिणीए तेवीसाए[6] जिणाण सूरुग्गमणमुहुत्तसि केवलवरनाणदसणे समुप्पण्णे ॥

३ जवुद्दीवे ण दीवे इमीसे ओसप्पिणीए तेवीस तित्थकरा पुव्वभवे एक्कारसगिणो होत्था, त जहा—अजिए संभवे अभिणदणे[7] •सुमती पउमप्पभे सुपासे चदप्पहे सुविही सीतले सेज्जसे वासुपुज्जे विमले अणते धम्मे सती कुथू अरे मल्ली मुणिसुव्वए णमी अरिट्ठणेमी° पासे[8] वद्धमाणे य[9]। उसभे ण अरहा कोसलिए चोद्दसपुव्वी होत्था ॥

४ जवुद्दीवे ण दीवे इमीसे ओसप्पिणीए तेवीस तित्थगरा पुव्वभवे मडलियरायाणो होत्था, त जहा—अजिए सभवे अभिणदणे[10] •सुमती पउमप्पभे सुपासे चदप्पहे सुविही सीतले सेज्जसे वासुपुज्जे विमले अणते धम्मे सती कुथू अरे मल्ली मुणिसुव्वए णमी अरिट्ठणेमी° पासे[11] वद्धमाणे य[12]। उसभे ण अरहा कोसलिए चक्कवट्टी[13] होत्था ॥

---

१ विस्सुत (क, ख), विसूहिय (क्व)।
२ पभात (क)।
३ स० पा०—सिज्झिस्सति जाव सव्वदुक्खाण°।
४ समोसरिणे (क), समोसरिए (ग)।
५ अधत्तवेए (क)।
६ तेवीस (क, ग)।
७ स० पा०—अभिणदण जाव पास।
८ पासो (क, ख, ग)।
९ त्ति (ख)।
१० स० पा०—अभिणदण जाव पास।
११ पासो (क, ख, ग)।
१२ त्ति (ख)।
१३ पुव्वभवे चक्कवट्टी (क्व)।

५ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तेवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

६ अहेसत्तमाए ण पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तेवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

७. असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण तेवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

८ सोहम्मीसाणाण देवाण अत्थेगइयाण तेवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

९ हेट्ठिम-मज्झिम-गेविज्जाण[1] देवाण जहण्णेण तेवीस सागरोवमाइ ठिइ पण्णत्ता ।।

१० जे देवा हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण तेवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

११ ते ण देवा तेवीसाए अद्धमासेहि आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।।

१२ तेसि ण देवाण तेवीसाए वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१३ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तेवीसाए भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति[2] बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति ° सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।।

चउव्वीसइमो समवाओ

१ चउव्वीस देवाहिदेवा पण्णत्ता, त जहा—उसभे अजिते[3] °सभवे अभिणदणे सुमती पउमप्पभे सुपासे चदप्पहे सुविही सीतले सेज्जसे वासुपुज्जे विमले अणते धम्मे सती कुथू अरे मल्ली मुणिमुव्वए णमी अरिट्ठणेमी पासे ° वद्धमाणे ।।

२ चुल्लहिमवतसिहरीण वासहरपव्वयाण जीवाओ चउव्वीस-चउव्वीस जोयणसहस्साइ णववत्तीसे जोयणसए एग च अट्ठत्तीसइ भाग[4] जोयणस्स किंचिविसेसाहिआओ आयामेण पण्णत्ताओ ।।

३ चउवीस देवट्ठाणा सइदया पण्णत्ता, सेसा अहमिंदा अनिंदा अपुरोहिआ ।।

४ उत्तरायणगते ण सूरिए चउवीसगुलिय पोरिसियच्छाय णिव्वत्तइत्ता ण णिअट्टति ।।

५ गगासिंधूओ ण महाणईओ पवहे सातिरेगे चउवीस कोसे वित्थारेण पण्णत्ताओ ।।

---

१ गेवेज्जगाण (ख) ।

२ स० पा०—सिज्झिस्सति जाव सव्वदुक्खाण ° ।

३ स० पा०—अजित जाव वद्धमाणे ।

४ अट्ठतीस (क, ग) ।

६ रत्तारत्तवतीओ ण महाणदीओ पवहे सातिरेगे चउवीस कोसे वित्थारेण पण्णत्ताओ ।।

७ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण चउवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

८ अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण चउवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

९ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण चउवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण चउवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

११ हेट्ठिम-उवरिम-गेवेज्जाण देवाण जहण्णेण चउवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१२ जे देवा हेट्ठिम-मज्झिम-गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाणं उक्कोसेण चउवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१३ ते ण देवा चउवीसाए अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।।

१४ तेसि ण देवाण चउवीसाए वाससहस्सेहिं[1] आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१५ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे चउवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति[2] °बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति° सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।।

पणवीसइमो समवाओ

१ पुरिमपच्छिमताण[3] तित्थगराण पचजामस्स पणवीस[4] भावणाओ पण्णत्ताओ, त जहा—

१ इरियासमिई २ मणगुत्ती ३ वयगुत्ती ४ आलोय[5]-भायण-भोयण ५ आदाण-भड-मत्त-निक्खेवणासमिई ।

१ अणुवीति-भासणया २ कोहविवेगे ३ लोभविवेगे ४ भयविवेगे ५ हास-विवेगे ।

१ उग्गह[6]-अणुण्णवणता २ उग्गह-सीमजाणणता ३ सयमेव उग्गहअणुगेण्ह-णता ४ साहम्मियउग्गह अणुण्णविय परिभुजणता ५ साधारणभत्तपाण अणुण्णविय परिभुजणता[7] ।

---

१ वाससहस्साण (क, ख, ग) ।
२ स० पा०—सिज्झिस्सति जाव सव्वदुक्खाण° ।
३ प°च्छिमताण (ग), °पच्छिमगाण (क्व) ।
४ पणुवीस (क, ख) प्रायः सर्वत्रापि ।
५ आलोयण (क, ख) ।
६ उग्गहाण (वृ) ।
७ पडि° (क, ख, ग) ।

१ इत्थी-पसु-पडग-ससत्तसयणासणवज्जणया २ इत्थी-कहविवज्जणया ३ इत्थीए इदियाण आलोयण-वज्जणया ४. पुव्वरय-पुव्वकोलिआण अणणुसरणया ५ पणीताहारविवज्जणया।

१ सोइदियरागोवरई २ "°चक्खिदियरागोवरई ३ घाणिदियरागोवरई ४ जिब्भिदियरागोवरई ५ फासिदियरागोवरई²° ॥

२ मल्ली ण अरहा पणवीस धणुइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ॥

३ सव्वेवि ण दीहवेयड्ढपव्वया पणवोस-पणवीस जोयणाणि उड्ढ उच्चत्तेण, पणवीस-पणवीस गाउयाणि उव्वेहेण पण्णत्ता ॥

४ दोच्चाए ण पुढवीए पणवीस णिरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

५ आयारस्स ण भगवओ सचूलियायस्स पणवीस अज्झयणा पण्णत्ता³ ॥

६ मिच्छादिट्ठिविगलिदिए ण अपज्जत्तए⁴ सकिलिट्ठपरिणामे नामस्स कम्मस्स पणवीस उत्तरपयडीओ णिबधति, त जहा—तिरियगतिनाम विगलिदियजातिनाम ओरालियसरीरनाम तेअगसरीरनाम कम्मगसरीरनाम हुडसठाणनाम

---

१ स० पा०—एव पचवि इदिया।

२. वाचनान्तरे आवश्यकानुसारेण दृश्यन्ते (वृ)। आवश्यकनियुक्तेरवचूर्णौ पचविशति भावनाना विवरणमित्य लभ्यते—

इरियासमिए सया जए,
उवेह भुजेज्ज व पाणभोयण।
आयाणनिक्खेवदुगुछ सजए,
समाहिए सजमए मणोवई ॥१॥
अहस्ससच्चे अणुवीइ भासए,
जे कोहलोहभयमेव वज्जए।
स दीहराय समुपेहिया सिया,
मुणी हु मोस परिवज्जए सया ॥२॥
सयमेव उ उग्गहजायणे घडे,
मतिम निसम्म सह भिक्खु उग्गह।
अणुण्णविय भुजिज्ज पाणभोयण,
जाइत्ता साहमियाण उग्गह ॥३॥
आहारगुत्ते अविभूसियप्पा,
इत्थि निज्झाइ न सथवेज्जा।
वुद्धो मुणी खुड्डकह न कुज्जा,
धम्माणुपेही सधए बमचेर ॥४॥
जे सद्दरूवरसगधमागए,
फासे य सपप्प मणुण्णपावए।
गिहीपदोस न करेज्ज पडिए,
स होइ दते विरए अकिंचणे ॥५॥
—आवश्यकनिर्युक्तेरवचूर्णि पृ० १३४

३ सत्थपरिण्णा लोग-
विजओ सीओसणीअ सम्मत्त।
आवतिधुयविमोह,
उवहाणसुय महपरिण्णा ॥१॥
२ पिंडेसण सिज्जिरिआ,
भासज्झयणा य वत्थ पाएसा।
उग्गहपडिमा सत्तिक्क,
सत्तया भावण विमुत्ती ॥२॥
निसीहज्झयण पणवीसइम।

प्रयुक्तप्रतिषु गाथे इमे नोपलभ्येते। वृत्तावपि न स्त इमे व्याख्याते। मुद्रितप्रतिषु च लभ्येते। तथाऽनयो पुरत 'निसीहज्झयण पणवीसइम' इत्यपि पाठो विद्यते। अयमनावश्यकोऽस्ति। पचविशतिरध्ययनानि द्वयोराचाराङ्गयोरेव सन्ति।

४, अपज्जत्तए ण (ख)।

ओरालियसरीरंगोवंगनामं सेवट्टसंघयणनामं[1] वण्णनामं गंधनामं रसनामं फास-नामं तिरियाणुपुव्विनामं अगरुयलहुयनामं[2] उवघायनामं तसनामं बादरनामं अपज्जत्तयनामं पत्तेयसरीरनामं अथिरनामं असुभनामं दुभगनामं अणादेज्जनामं अजसोकित्तिनामं निम्माणनामं ॥

७ गंगासिंधूओ णं महाणदीओ पणवीसं गाउयाणि पुहुत्तेणं[3] दुहओ घडमुह-पवित्तिएणं मुत्तावलिहार-संठिएणं पवातेण पवडंति ॥

८ रत्तारत्तवतीओ णं महाणदीओ पणवीसं गाउयाणि पुहुत्तेणं[4] दुहओ मकरमुह-पवित्तिएणं मुत्तावलिहार-संठिएणं पवातेण पवडंति ॥

९ लोगबिंदुसारस्स णं पुव्वयस्स पणवीसं वत्थू पण्णत्ता ॥

१० इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

११ अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१२ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१३ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१४ मज्झिम-हेट्ठिम-गेवेज्जाणं देवाणं जहण्णेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१५ जे देवा हेट्ठिम-उवरिम-गेवेज्जगविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१६ ते णं देवा पणवीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥

१७ तेसि णं देवाणं पणवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥

१८ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे पणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[5] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥

छव्वीसइमो समवाओ

१ छव्वीसं दस-कप्प-ववहाराणं उद्देसणकाला पण्णत्ता, तं जहा—दस दसाणं, छ कप्पस्स, दस ववहारस्स ॥

२ अभवसिद्धियाणं जीवाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स छव्वीसं कम्मंसा संतकम्मा

---

१ छेवट्ठ° (क्व)।
२ अगरुयलहु° (ख, ग), अगुरुलहु (क्व)।
३,४. पुहत्तेणं (क, ख, ग)।
५ सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण°।

पण्णत्ता, त जहा—मिच्छत्तमोहणिज्ज[1] सोलस कसाया इत्थीवेदे पुरिसवेदे नपुसकवेदे हास अरति रति भय सोगो[2] दुगुछा[3] ।।

३ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण छव्वीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

४ अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण छव्वीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

५. असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण छव्वीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

६ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाण अत्थेगइयाण छव्वीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

७ मज्झिम-मज्झिम-गेवेज्जयाण देवाण जहण्णेण छव्वीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

८ जे देवा मज्झिम-हेट्ठिम-गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण छव्वीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

९ ते ण देवा छव्वीसाए अद्धमासेहिं आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।।

१० तेसि ण देवाण छव्वीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

११ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे छव्वीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति[4] °बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति° सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।।

सत्तावीसइमो समवाओ

१ सत्तावीस अणगारगुणा पण्णत्ता, त जहा—पाणातिवायवेरमणे[5] [6]°मुसावाय-वेरमणे अदिण्णादाणवेरमणे मेहुणवेरमणे परिग्गहवेरमणे° सोइदियनिग्गहे[7] °चक्खिदियनिग्गहे घाणिदियनिग्गहे जिब्भिदियनिग्गहे° फासिदियनिग्गहे कोहविवेगे[8] °माणविवेगे मायाविवेगे° लोभविवेगे भावसच्चे करणसच्चे जोग-सच्चे खमा विरागता मणसमाहरणता[9] वतिसमाहरणता कायसमाहरणता णाण-सपण्णया दसणसपण्णया चरित्तसपण्णया वेयणअहियासणया[10] मारणतिय-अहियासणया ।।

---

१ मिच्छमो° (क)।
२ सोग (क)।
३ दुगुछ (क)।
४ स० पा०—सिज्झिस्सति जाव सव्वदुक्खाण°।
५ वेरमणा (क)।
६ स० पा०—एव पचवि।
७ स० पा०—सोइदियनिग्गहे जाव फासिदिय°।
८, स० पा०—कोहविवेगे जाव लोभ°।
९ °समन्नाहरणया (वृपा)।
१० °अधेया° (क)।

२ जंबुद्दीवे दीवे अभिइवज्जेहिं सत्तावीसाए णक्खत्तेहिं संववहारे वट्टति ॥
३ एगमेगे णं णक्खत्तमासे 'सत्तावीसं राइंदियाइं'[1] राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ॥
४ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणपुढवी सत्तावीसं जोयणसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ता ॥
५ वेयगसम्मत्तबंधोवरयस्स णं[2] मोहणिज्जस्स कम्मस्स सत्तावीसं 'कम्मंसा संत-कम्मा'[3] पण्णत्ता ॥
६ सावण-सुद्ध-सत्तमीए णं सूरिए सत्तावीसंगुलियं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तइत्ता णं दिवसखेत्तं निवड्ढेमाणे[4] रयणिखेत्तं अभिणिवड्ढेमाणे चारं चरइ ॥
७ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥
८ अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥
९ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥
१० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥
११ मज्झिम-उवरिम-गेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥
१२ जे देवा मज्झिम-मज्झिम-गेवेज्जयमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥
१३ ते णं देवा सत्तावीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥
१४ तेसि णं देवाणं सत्तावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥
१५ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे सत्तावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[5] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥

---

१ सत्तवीसं रात्तिंदियाइं (ख), सत्तावीसं राइंदिय (ग)।

२ × (क, ग)।

३ उत्तरपगडीओ संतकम्मंसा (क, ख, ग, वृ), एकविंशतितमे समवाये 'कम्मंसा संतकम्मा' एव पाठो विद्यते। षड्विंशतितमे अष्टाविंशतितमे समवाये चापि एवमेव। एकत्रिंशतितमे समवाये वृत्तिकृता 'कम्मंस' शब्दस्यार्थं उत्तरप्रकृतिस्तथा 'संतकम्म' शब्दार्थं सत्तावस्थं कर्म कृतोस्ति। अत्र 'उत्तरप्रकृति' शब्दो मूलपाठे समागतस्तथा 'संतकम्म' शब्दस्य स्थाने 'संतकम्मंसा' इति पाठो जातः। एतत् परिवर्तनं किमर्थंजातमितिकारणं न ज्ञायते। प्रतीयते व्याख्यांश एव मूले स्थानं प्राप्तोस्ति। तेनास्माभिर्मूलपाठः पूर्वपाठानुसारी स्वीकृतः।

४ णिव्वड्ढे° (ग)।

५ सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं°।

अट्ठावीसइमो समवाओ

१ अट्ठावीसविहे[1] आयारपकप्पे[2] पण्णत्ते, त जहा—
मासिया आरोवणा, सपचरायमासिया आरोवणा, सदसरायमासिया आरोवणा, सपण्णरसरायमासिया आरोवणा, सवीसइरायमासिया आरोवणा, सपचवीसरायमासिया आरोवणा।
°[3]दोमासिया आरोवणा, सपचरायदोमासिया आरोवणा, सदसरायदोमासिया आरोवणा, सपण्णरसरायदोमासिया आरोवणा, सवीसइरायदोमासिया आरोवणा, सपचवीसरायदोमासिया आरोवणा।
तेमासिया आरोवणा, सपचरायतेमासिया आरोवणा, सदसरायतेमासिया आरोवणा, सपण्णरसरायतेमासिया आरोवणा, सवीसइरायतेमासिया आरोवणा, सपचवीसरायतेमासिया आरोवणा।
चउमासिया आरोवणा, सपचरायचउमासिया आरोवणा, सदसरायचउमासिया आरोवणा, सपण्णरसरायचउमासिया आरोवणा, सवीसइरायचउमासिया आरोवणा, सपचवीसरायचउमासिया आरोवणा°।
उग्घातिया[4] आरोवणा, अणुग्घातिया[5] आरोवणा, कसिणा आरोवणा, अकसिणा आरोवणा।
एत्ताव[6] ताव आयारपकप्पे[7] एत्ताव[8] ताव आयरियव्वे[9]॥

२ भवसिद्धियाण जीवाण अत्थेगइयाण मोहणिज्जस्स कम्मस्स अट्ठावीस कम्मसा सतकम्मा[10] पण्णत्ता, त जहा—सम्मत्तवेअणिज्ज मिच्छत्तवेयणिज्ज सम्ममिच्छत्तवेयणिज्ज[11] सोलस कसाया णव णोकसाया॥

३ आभिणिबोहियणाणे अट्ठावीसइविहे पण्णत्ते, त जहा—
सोइदियत्थोग्गहे[12] चक्खिदियत्थोग्गहे[13] घाणिदियत्थोग्गहे जिब्भिदियत्थोग्गहे फासिदियत्थोग्गहे णोइदियत्थोग्गहे।
सोइदियवजणोग्गहे घाणिदियवजणोग्गहे जिब्भिदियवजणोग्गहे फासिदियवजणोग्गहे।

---

१ अट्ठावीसइविहे (ख, ग)।
२ आयारकप्पे (क)।
३ स० पा०—एव चेव दोमासिया आरोवणा सपचरायदोमासिया आरोवणा एव तेमासिया आरोवणा एव चउमासिया आरोवणा।
४ उवघातिया (ग)।
५ अणुवघातिया (ग)।
६ इत्ताव (क, ग)।
७ आयारकप्पे (क)।
८ इत्ताव (क, ग)।
९ आया° (क, ख)।
१० सतकम्म (क), सतकम्म (ग)।
११ सम्मा° (ख), सम्मत्त° (ग)।
१२ सोतिदियत्थोवग्गहे (ग)।
१३ चक्खुदियत्थोग्गहे (ख), चक्खुदियत्थावग्गहे (ग)।

सोतिंदियईहा[1] •चक्खिदियईहा घाणिंदियईहा जिब्भिदियईहा° फासिंदियईहा णोइंदियईहा।

सोतिंदियावाते[2] •चक्खिदियावाते घाणिंदियावाते जिब्भिदियावाते फासिंदियावाते° णोइंदियावाते।

सोइंदियधारणा[3] •चक्खिदियधारणा घाणिंदियधारणा जिब्भिदियधारणा फासिंदियधारणा° णोइंदियधारणा॥

४ ईसाणे णं कप्पे अट्ठावीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता॥

५ जीवे णं देवगतिं णिबंधमाणे नामस्स कम्मस्स अट्ठावीसं उत्तरपगडीओ णिबंधति, तं जहा—देवगतिनामं पंचिंदियजातिनामं वेउव्वियसरीरनामं तेययसरीरनामं कम्मगसरीरनामं समचउरंससंठाणनामं वेउव्वियसरीरंगोवंगनामं वण्णनामं गंधनामं रसनामं फासनामं देवाणुपुव्विनामं अगरुयलहुयनामं उवघायनामं पराघायनामं ऊसासनामं पसत्थविहायगइनामं तसनामं बायरनामं पज्जत्तनामं पत्तेयसरीरनामं थिराथिराणं[4] दोण्हमण्णयरं एगं नामं णिबंधइ, सुभासुभाणं दोण्हमण्णयरं एगं नामं णिबंधइ, सुभगनामं सुस्सरनामं, आएज्ज-अणाएज्जाणं दोण्हं अण्णयरं एगं नामं णिबंधइ, जसोकित्तिनामं निम्माणनामं॥

६ एवं चेव नेरइयेवि[5], णाणत्तं अप्पसत्थविहायगइनामं हुंडसंठाणनामं अथिरनामं दुब्भगनामं असुभनामं दुस्सरनामं अणादेज्जनामं अजसोकित्तीनामं[6]॥

७ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता॥

८ अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता॥

९. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता॥

१० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता॥

११ उवरिम-हेट्ठिम-गेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता॥

१२ जे देवा मज्झिम-उवरिम-गेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता॥

---

१. सं० पा०—सोतिंदियईहा जाव फासिंदियईहा।

२ सं०पा०—सोतिंदियावाते जाव णोइंदियावाते।

३ सं० पा०—सोइंदियधारणा जाव णोइंदियधारणा।

४ थिरमथिराणं (क)।

५ णेरइयावि (ख, ग)।

६ अजसोकित्तीनामं निम्माणनामं (क, ख, ग), एष पाठोऽनावश्यको भाति। वृत्तावपि एतत् संवादी उल्लेखः प्राप्यते—'नारकसूत्रे विंशतिस्ता एव प्रकृतयोऽष्टानां तु स्थाने अष्टावन्या बध्नाति' (वृत्ति, पत्र ४७)।

१३ ते णं देवा अट्ठावीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥
१४ तेसि णं देवाणं अट्ठावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥
१५ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे अट्ठावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[1] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥

एगूणतीसइमो समवाओ

१ एगूणतीसइविहे पावसुयपसंगे णं पण्णत्ते, तं जहा—भोमे उप्पाए सुमिणे अंतलिक्खे अंगे सरे वंजणे लक्खणे ।
भोमे[2] तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुत्ते वित्ती वत्तिए, एवं एक्केक्कं तिविहं । विकहाणुजोगे विज्जाणुजोगे मंताणुजोगे जोगाणुजोगे अण्णतित्थियपवत्ताणुजोगे[3] ॥
२ आसाढे णं मासे एकूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते[4] ॥
३. °भद्दवए णं मासे एकूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ॥
४ कत्तिए णं मासे एकूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ॥
५ पोसे[5] णं मासे एकूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ॥
६. फग्गुणे णं मासे एकूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ॥
७ वइसाहे णं मासे एकूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते° ॥
८ चंददिणे णं एगूणतीसं मुहुत्ते सातिरेगे मुहुत्तग्गेणं[6] पण्णत्ते ॥
९ जीवे णं पसत्थज्झवसाणजुत्ते भविए सम्मदिट्ठी 'तित्थकरनामसहियाओ नामस्स कम्मस्स'[7] णियमा एगूणतीसं उत्तरपगडीओ निबंधित्ता वेमाणिएसु देवेसु देवत्ताए उववज्जइ ॥
१० इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥
११ अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥
१२ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

---

१ म० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण° ।
२ भोमे उप्फए (क) ।
३ °पवत्तणाणुयोगे (क) ।
४ म० पा०—भद्दवए णं मासे कित्तिए णं पोसे णं फग्गुणे णं वइसाहे णं मासे ।
५ पोसिए (ग) ।
६ मुहुत्तेण (ग) ।
७ तित्थकरसहिताओ नामस्स (क), तित्थकरनामस्स य (ग) ।

१३ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१४ उवरिम-मज्झिम-गेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१५ जे देवा उवरिम-हेट्ठिम-गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१६ ते णं देवा एगूणतीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥

१७ तेसि णं देवाणं एगूणतीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥

१८ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे एगूणतीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[1] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥

तीसइमो समवाओ

१ तीसं मोहणीयठाणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

जे यावि तसे पाणे, वारिमज्झे विगाहिया ।
उदएण क्कम्म मारेइ, महामोहं पकुव्वइ ॥१॥
सीसावेढेण[2] जे केई, आवेढेइ अभिक्खणं ।
तिव्वासुभसमायारे[3], महामोहं पकुव्वइ[4] ॥२॥
पाणिणा संपिहित्ताणं, सोयमावरिय पाणिणं ।
अंतोनदंतं मारेई, महामोहं पकुव्वइ ॥३॥
जायतेयं समारब्भ, बहुं ओरुभिया जणं ।
अंतोधूमेण मारेई, महामोहं पकुव्वइ ॥४॥
सिस्सम्मि जे पहणइ, उत्तमंगम्मि चेयसा ।
विभज्ज मत्थयं फाले, महामोहं पकुव्वइ ॥५॥

---

१ सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्व-दुक्खाणं° ।
२ सीसं० (ग) ।
३. तिव्वे असुभ° (क, ग) ।
४ यावत्करणात् केषुचित्सूत्रपुस्तकेषु शेषमोहनीयस्थानाभिधानपरा श्लोका सूचिताः, केषुचित् दृश्यन्त एवेति ते व्याख्यायन्ते (वृ) ।

पुणो पुणो पणिहिए, हणित्ता उवहसे जण[1]।
फलेण अदुव दडेण, महामोह पकुव्वइ ॥६॥
गूढायारी निगूहेज्जा, माय मायाए छायए।
असच्चवाई णिण्हाई[2], महामोह पकुव्वइ ॥७॥
धसेइ जो अभूएण, 'अकम्म अत्तकम्मुणा'[3]।
अदुवा[4] तुम कासित्ति, महामोह पकुव्वइ ॥८॥
जाणमाणो[5] परिसओ, सच्चामोसाणि भासइ।
अज्झीणझझे पुरिसे, महामोह पकुव्वइ ॥९॥
अणायगस्स नयव, दारे[6] तस्सेव धसिया।
विउल विक्खोभइत्ताण, किच्चा ण पडिवाहिर ॥१०॥
उवगसतपि झपित्ता, पडिलोमाहि वग्गुहि।
भोगभोगे[7] वियारेई, महामोह पकुव्वइ ॥११॥ (युग्मम्)
अकुमारभूए जे केई, कुमारभूएत्तह[8] वए।
इत्थीहि गिद्धे वसए, महामोह पकुव्वइ ॥१२॥
अबभयारी जे केई, वभयारीत्तह[9] वए।
गद्दभेव्व गवा मज्झे, विस्सर नयई नद ॥१३॥
अप्पणो 'अहिए वाले'[10], मायामोस वहु भसे।
इत्थीविसयगेहीए, महामोह पकुव्वइ ॥१४॥ (युग्मम्)
ज निस्सिए उव्वहइ, जससाअहिगमेण वा।
तस्स लुब्भइ वित्तम्मि, महामोह पकुव्वइ ॥१५॥
ईसरेण अदुवा गामेण, अणिस्सरे ईसरीकए[11]।
तस्स सपग्गहीयस्स, सिरी अतुलमागया ॥१६॥
ईसादोसेण आइट्ठे, कलुसाविलचेयसे[12]।
जे 'अतराय चेएइ'[13], महामोह पकुव्वइ ॥१७॥ (युग्मम्)
'सप्पी जहा अडउड'[14], भत्तार जो विहिसइ।
सेणावइ पसत्थार, महामोह पकुव्वइ ॥१८॥

---

१ जणा (क)।
२ णिगिण्हाई (ग)।
३ कम्म असत्त ° (ग)।
४ अहवा (क)।
५ °माणओ (क)।
६ दार (क, ख, ग)।
७ °भोग (क)
८ °त्तिह (क, ग)।
९ वभयारिह (क)।
१० अहियाले (क), अहिय वाले (ग)।
११ इस्सरे° (क)।
१२. °उलचेवसा (ग)।
१३ अतराइ चेति (ग)।
१४ सप्पेजहाअडपुड (ग)।

जे नायग व रट्ठस्स, नयार निगमस्स वा।
सेट्ठि वहुरव हंता,[1] महामोहं पकुव्वइ ॥१९॥
वहुजणस्स णेयार, दीव ताण च पाणिण।
एयारिस नर हता, महामोहं पकुव्वइ ॥२०॥
उवट्ठिय पडिविरय, 'सजयं सुतवस्सिय'[2]।
वोकम्म धम्माओ भसे[3], महामोह पकुव्वइ ॥२१॥
तहेवाणतणाणीण, जिणाण वरदसिण।
तेसि अवण्णव[4] वाले, महामोह पकुव्वइ।
नेयाउअस्स मग्गस्स, दुट्ठे अवयरई[5] वहु ॥२२॥
त तिप्पयतो[6] भावेइ, महामोह पकुव्वइ ॥२३॥
आयरियउवज्झाएहि, सुय विणय च गाहिए।
ते चेव खिसई वाले, महामोह पकुव्वइ ॥२४॥
आयरियउवज्झायाण, सम्म नो पडितप्पइ।
अप्पडिपूयए थद्धे, महामोह पकुव्वइ ॥२५॥
अवहुस्सुए य जे केई, सुएण पविकत्थइ[7]।
सज्झायवाय [सब्भाववाय?[8]] वयइ,महामोह पकुव्वइ ॥२६॥
अतवस्सीए य[9] जे केई, तवेण पविकत्थइ[10]।
सव्वलोयपरे तेणे, महामोह पकुव्वइ ॥२७॥
साहारणट्ठा जे केई, गिलाणम्मि उवट्ठिए।
पभू ण कुणई किच्च, मज्झपि से न कुव्वइ ॥२८॥
सढे नियडीपण्णाणे, कलुसाउलचेयसे[11]।
अप्पणो य अवोहीए, महामोह पकुव्वइ ॥२९॥ (युग्मम्)

---

१. हत्ता (क)।
२ सजय सुतवस्सिण (क), जे भिक्खु जगजीवन (ग, वृपा)।
३ भस (क), भनेइ (ख)।
४ अवण्णिम (क), अवण्ण (ग)।
५ अवगरई (क), अवहरई (वृपा)।
६. विप्प° (ग)।
७ परिकथई (ग)।
८ समवायाङ्गेषु आदर्शेषु 'सज्झायवाय' इति पाठो लभ्यते। वृत्तावपि अभयदेवसूरिणा 'स्वाध्यायवाद' इति व्याख्यातम्। किन्तु अर्थ-मीमानया मीमासनीयोसौ पाठ प्रतिभाति। दशाश्रुतस्कन्धस्य (सू० २६) वृत्तौ 'सद्भाव-वाद' इति व्याख्यातमस्ति। तेन प्रतीयते 'सब्भाववाय' इति पाठ आसीत्। प्राचीन-लिप्या मयुक्त 'भकारस्य' तया सयुक्त 'झकारस्य' प्राय सादृश्यमेव। तेन 'सब्भाव' इत्यस्य स्थाने 'सज्झाय' इति परिवर्तन जातम्। अर्थमीमांसया 'सब्भाववाय' इति पाठ समीचीन प्रतिभाति।
९ उ (ग)।
१० परिकथई (ग)।
११ °चेयसा (ग)।

जे कहाहिगरणाइ, सपउजे[1] पुणो पुणो ।
सव्वतित्थाण भेयाय[2], महामोह पकुव्वइ ॥३०॥
जे य आहम्मिए जोए, सपउजे पुणो पुणो ।
सहाहेउ सहीहेउ, महामोह पकुव्वइ ॥३१॥
जे य माणुस्सए भोए, अदुवा पारलोइए ।
तेऽतिप्पयतो[3] आसयइ, महामोह पकुव्वइ ॥३२॥
इड्ढी जुई जसो वण्णो, देवाण बलवीरिय ।
तेसि अवण्णव[4] वाले, महामोह पकुव्वइ ॥३३॥
अपस्समाणो पस्सामि, देवे जक्खे य गुज्झगे ।
अण्णाणि जिणपूयट्ठी, महामोह पकुव्वइ ॥३४॥

२ थेरे ण मडियपुत्ते तीस वासाइ सामण्णपरियाय पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे[5] °मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

३ एगमेगे ण अहोरत्ते 'तीस मुहुत्ता'[6] मुहुत्तग्गेण पण्णत्ता 'एएसि ण'[7] तीसाए मुहुत्ताण तीस[8] नामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—रोद्दे सेते मित्ते वाऊ सुपीए[9] अभियदे[10] माहिंदे पलवे[11] वभे सच्चे आणदे विजए वीससेणे वायावच्चे उवसमे ईसाणे तिट्ठे[12] भावियप्पा वेसमणे वरुणे सतरिसभे गधव्वे अग्गिवेसायणे आतव आवध[13] तट्ठवे[14] भूमहे रिसभे[15] सव्वट्ठसिद्धे रक्खसे ॥

४ अरे ण अरहा तीस धणुइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ॥

५ सहस्सारस्स ण देविंदस्स देवरण्णो तीस सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥

६ पासे ण अरहा तीस वासाइ अगारमज्झे[16] वसित्ता [मुडे भवित्ता ?] अगाराओ अणगारिय पव्वइए ॥

७ समणे भगव महावीरे तीस वासाइ अगारमज्झे[17] वसित्ता [मुडे भवित्ता ?] अगाराओ अणगारिय पव्वइए ॥

---

१ सपउजिय (ग)।
२ भेयाण (ग)।
३ °तप्पि° (ग)।
४ अवण्णिय (ग)।
५ स० पा०—बुद्धे जाव सव्वदुक्ख°।
६ तीसमुहुत्ते (क्व)।
७ तेसिण (ख)।
८ तीसं (ख)।
९ सुविए (ग)।
१० अभिइदे (ग), अभिचदे (क्व)।
११ पलव (ख, ग)।
१२ तट्ठे (क्व)।
१३ आवत्ते (क्व)।
१४ तट्ठव (ख, ग)।
१५ रिसवे (ग)।
१६ °मज्झा (क, ख), आगारमज्झा (ग), अगारवासमज्झे (क्व)।
१७ अगारमज्झा (क, ख, ग)।

८ रयणप्पभाए ण पुढवीए तीस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

९ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

११ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण तीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।। [सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाण अत्थेगइयाण तीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता[१] ?] ।।

१२ उवरिम-उवरिम-गेवेज्जयाण देवाण जहण्णेण तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१३ जे देवा उवरिम-मज्झिम-गेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१४ ते ण देवा तीसाए अद्धमासेहिं आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।।

१५ तेसि ण देवाण तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१६ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति[२] °वुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति° सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।।

एक्कतीसइमो समवाओ

१ एक्कतीस सिद्धाइगुणा पण्णत्ता, त जहा—खीणे आभिणिवोहियणाणावरणे[३], खीणे सुयणाणावरणे, खीणे ओहिणाणावरणे, खीणे मणपज्जवणाणावरणे, खीणे केवलणाणावरणे, खीणे चक्खुदसणावरणे, खीणे अचक्खुदसणावरणे, खीणे ओहिदसणावरणे, खीणे केवलदसणावरणे, 'खीणा निद्दा, खीणा णिद्दा-णिद्दा, खीणा पयला, खीणा पयलापयला, खीणा थीणगिद्धी'[४], खीणे सायावेय-णिज्जे, खीणे असायावेयणिज्जे, खीणे दसणमोहणिज्जे, खीणे चरित्तमोहणिज्जे, खीणे नेरइयाउए, खीणे तिरियाउए, खीणे मणुस्साउए, खीणे देवाउए, खीणे उच्चागोए, खीणे नियागोए, खीणे सुभणामे, खीणे असुभणामे, खीणे दाणतराए, खीणे लाभतराए, खीणे भोगतराए, खीणे उवभोगतराए, खीणे वीरियतराए ।।

२ मदरे ण पव्वए धरणितले एक्कतीस जोयणसहस्साइ छच्च[५] तेवीसे जोयणसए किंचिदेसूणे[६] परिक्खेवेण पण्णत्ते ।।

---

१ पूर्वक्रमानुसारेणैष पाठोऽत्रयुज्यते ।

२ स० पा०—सिज्झिस्सति जाव सव्वदुक्खाण° ।

३ °णाणावरणिज्जे (ख) ।

४ निद्दा पयला निद्दा २ पयला २ खीणे थीणगद्धी (ग), °थीणद्धी (क्व) ।

५ छच्चेव (क्व) ।

६ देसूण (क) ।

३ जया णं[1] सूरिए सव्वबाहिरियं मंडलं उवसंकमित्ता णं चारं चरइ तया णं इहगयस्स मणुस्सस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहि य एक्कतीसेहिं जोयण-सएहिं तीसाए सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ ।।

४. अभिवड्ढिए णं मासे एक्कतीसं सातिरेगाणि राइंदियाणि राइंदियग्गेणं पण्णत्ताइं ।।

५ आइच्चे णं मासे एक्कतीसं राइंदियाणि किंचि विसेसूणाणि राइंदियग्गेणं पण्णत्ताइं ।।

६ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

७ अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

८ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

९ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१० विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियाणं देवाणं जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

११ जे देवा उवरिम-उवरिम-गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१२ ते णं देवा एक्कतीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

१३ तेसि णं देवाणं एक्कतीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१४ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे एक्कतीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[2] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

बत्तीसइमो समवाओ

१ बत्तीसं जोगसंगहा पण्णत्ता, तं जहा—

आलोयणा निरवलावे, आवईसु दढधम्मया ।
अणिस्सिओवहाणे य, सिक्खा निप्पडिकम्मया ।।१।।
अण्णातता अलोभे य, तितिक्खा अज्जवे सुती ।
सम्मदिट्ठी समाही य, आयारे विणओवए ।।२।।

---

१ × (क, ग) । २ स० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं° ।

धिईमई य संवेगे, पणिही सुविहि संवरे।
अत्तदोसोवसंहारे, सव्वकामविरत्तया ॥३॥
पच्चक्खाणे विउस्सग्गे, अप्पमादे लवालवे।
झाणसंवरजोगे य, उदए मारणंतिए ॥४॥
संगाणं च परिण्णा[1], पायच्छित्तकरणेत्ति य।
आराहणा य मरणंते, बत्तीसं जोगसंगहा ॥५॥

२ बत्तीसं देविंदा पण्णत्ता, तं जहा—चमरे बली धरणे भूयाणंदे[2] °वेणुदेवे वेणुदाली हरि[3] हरिस्सहे अग्गिसहे अग्गिमाणवे पुन्ने विसिट्ठे[4] जलकंते जलप्पभे अमियगती अमितवाहणे वेलंबे पभंजणे° घोसे महाघोसे चंदे सूरे सक्के ईसाणे सणंकुमारे[5] °माहिंदे बंभे लंतए महासुक्के[6] सहस्सारे° पाणए अच्चुए॥

३ कुंथुस्स णं अरहओ बत्तीसहिया[7] बत्तीसं जिणसया होत्था॥

४ सोहम्मे कप्पे बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता॥

५. रेवइणक्खत्ते बत्तीसइतारे पण्णत्ते॥

६ बत्तीसतिविहे णट्टे पण्णत्ते॥

७ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता॥

८ अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता॥

९ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता॥

१०. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता॥

११ जे देवा विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता॥

१२ ते णं देवा बत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा॥

१३ तेसि णं देवाणं बत्तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ॥

१४ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे बत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति[8] °बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति, परिनिव्वाइस्संति° सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति॥

---

१. परिण्णाया (ख), परिण्णाए (ग)।
२. सं० पा०—भूयाणंदे जाव घोसे।
३. समवायाङ्गवृत्तौ 'हरि' स्थाने 'हरिकंते' पाठोऽस्ति। स्थानाङ्गेऽपि लोकपाल-प्रकरणे (४।१२२) 'हरिकंतस्स' पाठो विद्यते। 'हरि' अस्यैव संक्षेप प्रतीयते।
४ समवायाङ्गवृत्तौ 'वसिट्ठे' पाठोऽस्ति।
५ सं० पा०—सणंकुमारे जाव पाणए।
६ समवायाङ्गवृत्तौ 'सुक्के' पाठोऽस्ति।
७. बत्तीसं जिणा (क, ख), X (ग)।
८. सं० पा०—सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं°।

तेत्तीसइमो समवाओ

१. तेत्तीस आसायणाओ पण्णत्ताओ, त जहा—

१ सेहे राइणियस्स आसन्न गता भवइ—'आसायणा सेहस्स'[1]।

२. सेहे राइणियस्स पुरओ गता भवइ—आसायणा सेहस्स।

३ सेहे राइणियस्स सपक्ख गता भवइ—आसायणा सेहस्स।

४ सेहे राइणियस्स आसन्न ठिच्चा भवइ—आसायणा सेहस्स[2]।

५ •सेहे राइणियस्स पुरओ ठिच्चा भवइ—आसायणा सेहस्स।

६ सेहे राइणियस्स सपक्ख ठिच्चा भवइ—आसायणा सेहस्स।

७ सेहे राइणियस्स आसन्न निसीइत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स।

८ सेहे राइणियस्स पुरओ निसीइत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स।

९ सेहे राइणियस्स सपक्ख निसीइत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स।

१० सेहे राइणिएण सद्धि वहिया वियारभूमिं निक्खते समाणे पुव्वामेव सेहतराए आयामेइ पच्छा राइणिए—आसायणा सेहस्स।

११ सेहे राइणिएण सद्धि वहिया विहारभूमि वा वियारभूमि वा निक्खते समाणे तत्थ पुव्वामेव सेहतराए आलोएति पच्छा राइणिए—आसायणा सेहस्स।

१२ सेहे राइणियस्स रातो वा वियाले वा वाहरमाणस्स अज्जो के सुत्ते ? के जागरे ? तत्थ सेहे जागरमाणे राइणियस्स अपडिसुणेत्ता भवति—आसायणा सेहस्स।

१३ केइ राइणियस्स पुव्व सलवित्तए सिया, त सेहे पुव्वतराग आलवेति पच्छा राइणिए—आसायणा सेहस्स।

१४ सेहे असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पडिगाहेत्ता त पुव्वमेव सेहतरागस्स आलोएइ, पच्छा राइणियस्स—आसायणा सेहस्स।

१५ सेहे असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पडिगाहेत्ता त पुव्वमेव सेहतरागस्स उवदसेति, पच्छा राइणियस्स—आसायणा सेहस्स।

---

१ × (क, ख, ग)।

२ स० पा०—सेहस्स जाव सेहे राइणियस्स। अस्मिन् सूत्रे पच आशातना प्रत्यक्षमुल्लिखिता सन्ति, शेषाश्च जाव शब्देन सूचिता। वृत्तिकृता समर्पणस्य पूर्तिकृते दशाश्रुतस्कन्धस्य निर्देश कृत, यथा—"यावत्करणाद्दशाश्रुतस्कन्धानुसारेणान्या इह द्रष्टव्या" तया अर्थरूपेण सर्वासामप्याशातनानामुल्लेखो वृत्तिकृता कृत। वृत्तिकृत क्रमो दशाश्रुतस्कन्धप्राप्तक्रमाद् भिन्नोस्ति। सभाव्यते वृत्तिकर्तु समक्षे दशाश्रुतस्कन्धस्य काचिदन्या वाचनाऽसीत्। अस्माभि पाठपूर्तिर्दशाश्रुतस्कन्धमनुसृत्य कृता, क्रमश्च वृत्त्यानुसारी स्वीकृत।

१६ सेहे असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पडिगाहेत्ता त पुव्वमेव सेहतराग उवणिमतेइ, पच्छा राइणिय—आसायणा सेहस्स।
१७ सेहे राइणिएण सद्धि असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पडिगाहेत्ता त राइणिय अणापुच्छित्ता जस्स-जस्स इच्छइ तस्स-तस्स खद्ध-खद्ध दलयइ—आसायणा सेहस्स।
१८ सेहे असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पडिगाहेत्ता राइणिएण सद्धि आहरेमाणे तत्थ सेहे खद्ध-खद्ध डाय-डाय ऊसढ-ऊसढ रसित-रसित मणुण्ण-मणुण्ण मणाम-मणाम निद्ध-निद्ध लुक्ख-लुक्ख आहरेत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स।
१९ सेहे राइणियस्स वाहरमाणस्स अपडिसुणेत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स।
२० सेहे राइणियस्स खद्ध-खद्ध वत्ता भवति—आसायणा सेहस्स।
२१ सेहे राइणियस्स 'किं' ति वइत्ता भवति - आसायणा सेहस्स।
२२ सेहे राइणिय 'तुम'ति वत्ता भवति—आसायणा सेहस्स।
२३ सेहे राइणिय तज्जाएण-तज्जाएण पडिभणित्ता भवइ—आसायणा सेहस्स।
२४ सेहे राइणियस्स कह कहेमाणस्स 'इति एव' ति वत्ता न भवति—आसायणा सेहस्स।
२५ सेहे राइणियस्स कह कहेमाणस्स 'नो सुमरसी'ति वत्ता भवति—आसायणा सेहस्स।
२६ सेहे राइणियस्स कह कहेमाणस्स कह अच्छिदित्ता भवति—आसायणा सेहस्स।
२७ सेहे राइणियस्स कह कहेमाणस्स परिस भेत्ता भवति—आसायणा सेहस्स।
२८ सेहे राइणियस्स कह कहेमाणस्स तीसे परिसाए अणुट्ठिताए अभिन्नाए अवुच्छिन्नाए अव्वोगडाए दोच्च पि तमेव कह कहित्ता भवति—आसायणा सेहस्स।
२९ सेहे राइणियस्स सेज्जा-सथारग पाएण सघट्टित्ता, हत्थेण अणणुण्णवेत्ता गच्छति—आसायणा सेहस्स।
३० सेहे राइणियस्स सेज्जा-सथारए चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवइ—आसायणा सेहस्स।
३१ सेहे राइणियस्स उच्चासणे चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति—आसायणा सेहस्स।
३२ सेहे राइणियस्स समासणे चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति—आसायणा सेहस्स°।

३३ सेहे राइणियस्स आलवमाणस्स तत्थगते चिय पडिसुणित्ता भवइ—आसायणा सेहस्स[1] ।।

२ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचचाए रायहाणीए एक्कमेक्के[2]वारे तेत्तीस-तेत्तीस भोमा पण्णत्ता ।।

३ महाविदेहे ण वासे तेत्तीस जोयणसहस्साइ साइरेगाइ विक्खभेण पण्णत्ते ।।

४ जया ण सूरिए 'वाहिराण अतर'[3] तच्च मडल उवसकमित्ता ण चार चरइ, तया ण इहगयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं किंचिविसेसूणेहिं चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ ।।

५ इमीसे ण रयप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तेत्तीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

६ अहेसत्तमाए पुढवीए काल-महाकाल-रोरुय-महारोरुएसु नेरइयाण उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

७ अप्पइट्ठाणनरए नेरइयाण अजहण्णमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

८ असुरकुमाराण अत्थेगइयाण देवाण तेत्तीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

९ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण तेत्तीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१० विजय-वेजयत-जयत-अपराजिएसु विमाणेसु उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

११ जे देवा सव्वट्ठसिद्ध महाविमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण अजहण्णमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

१२ ते ण देवा तेत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।।

१३ तेसि ण देवाण तेत्तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

१४ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तेत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति[4] °बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति° सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।।

चोत्तीसइमो समवाओ

१ चोत्तीस बुद्धाइसेसा पण्णत्ता, त जहा—१ अवट्ठिए केसमसुरोमनहे। २ निरामया निरुवलेवा गायलट्ठी। ३ गोक्खीरपडुरे मससोणिए।

---

१ इति खलु एताओ तेत्तीस आसायणाओ (क, ख, ग)।

२ °मेक्क (ग)।

३ वाहिराण (क), वाहिराणतर (ख)।

४. स० पा०—सिज्झिस्सति जाव सव्वदुक्खाणमत°।

४ पउमुप्पलगंधिए उस्सासनिस्सासे। ५ पच्छन्ने आहारनीहारे, अद्दिस्से मंसचक्खुणा। ६ 'आगासगयं चक्कं'[1]। ७ आगासगयं[2] छत्तं। ८ आगासियाओ[3] सेयवरचामराओ। ९ आगासफालियामयं सपायपीढं सीहासणं। १० आगासगओ कुडभीसहस्सपरिमंडिआभिरामो इंदज्झओ पुरओ गच्छइ। ११ जत्थ जत्थवि य णं अरहंता भगवंतो चिट्ठंति वा निसीयंति वा तत्थ तत्थवि य णं तक्खणादेव[4] संछन्नपत्तपुप्फपल्लवसमाउलो सच्छत्तो सज्झओ सघंटो सपडागो असोगवरपायवो अभिसंजायइ। १२ ईसिं पिट्ठओ मउडठाणंमि तेयमंडलं 'अभिसंजायइ[5], अंधकारेवि य णं दस दिसाओ पभासेइ'[6]। १३ बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे। १४ अहोसिरा कंटया भवंति। १५ उउविवरीया सुहफासा[7] भवंति। १६ सीयलेणं सुहफासेणं सुरभिणा मारुएणं जोयणपरिमंडलं सव्वओ समंता संपमज्जिज्जंति। १७ 'जुत्तफुसिएण य मेहेण'[8] निहय-रय-रेणुयं कज्जइ। १८ जल-थलय-भासुर-पभूतेणं विंटट्ठाइणा दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं जाणुस्सेहप्पमाणमित्ते पुप्फोवयारे कज्जइ[9]। १९ अमणुण्णाणं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाणं अवकरिसो भवइ। २० मणुण्णाणं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाणं पाउब्भावो भवइ। २१ पच्चाहरओवि य णं हिययगमणीओ[10] 'जोयणनीहारी सरो'[11] २२ भगवं च णं अद्धमागहीए[12] भासाए धम्ममाइक्खइ। २३ सावि य णं अद्धमागही[13] भासा भासिज्जमाणी तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं दुप्पय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खि-सिरीसिवाणं अप्पणो 'हिय-सिव-सुहदाभासत्ताए'[14] परिणमइ। २४ पुव्वबद्धवेरावि य णं देवासुर-नाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगा अरहओ पायमूले

---

१ आगासतं चक्खु (क), आगासत्थं चक्कं (ग), आगासगं चक्कं (वृपा)।

२ आगासगं (क, वृ)।

३ आगासगयाओ (ग)।

४. तक्खणे° (क)।

५ समजायंति (ग)।

६ 'अभि ° पभासेइ' एतावान् पाठो वृत्तौ नास्ति व्याख्यात।

७. सुहु° (क)।

८ जुत्तफासएण य मेहेण (क), जुत्तिफुसिएण य मेहेण य (ग)।

९ 'कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे भवइ' 'उभयो पासिं च णं अरहंताणं भगवंताणं दुवे जक्खा कडयतुडियथंभियभुया चामरुक्खेवणं करंति' वृद्धवाचनायामनन्तरोक्तमतिशयद्वयं नाधीयते (वृ)।

१० हियणतय° (क)।

११ °णीहारो सरो (क)।

१२ अद्धमागधाए (क, ख, ग)।

१३ अद्धमागहा (ख), अद्धमागधा (ग)।

१४ °सुहदाय° (ग)।

पसतचित्तमाणसा धम्म निसामति। २५ 'अण्णउत्थिय-पावयणियावि'[1] य ण मागया वदति। २६ आगया समाणा अरहओ पायमूले निप्पडिवयणा हवति'[2]। २७. जओ जओवि य ण अरहतो भगवतो विहरति तओ तओवि य ण जोयणपणवीसाएण ईती न भवइ। २८. मारी न भवइ। २९ सचक्क न भवइ। ३० परचक्क न भवइ। ३१ अइवुट्ठी न भवइ। ३२ अणावुट्ठी न भवइ ३३ दुब्भिक्ख न भवइ। ३४ पुव्वुप्पण्णावि य ण[3] उप्पाइया वाही खिप्पमिव उवसमति॥

२ जबुद्दीवे ण दीवे चउत्तीस चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, त जहा—बत्तीस महाविदेहे, दो[4] भरहेरवए॥

३ जबुद्दीवे ण दीवे चोत्तीस दीहवेयड्ढा पण्णत्ता॥

४ जबुद्दीवे ण दीवे उक्कोसपए चोत्तीस तित्थकरा समुप्पज्जति॥

५ चमरस्स ण असुरिदस्स असुररण्णो चोत्तीस भवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता॥

६ पढमपचमछट्ठीसत्तमासु—चउसु पुढवीसु चोत्तीस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता॥

पणतीसइमो समवाओ

१ पणतीस सच्चवयणाइसेसा[5] पण्णत्ता॥

२ कुथू ण अरहा पणतीस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था॥

३ दत्ते ण वासुदेवे पणतीस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था॥

४ नदणे ण बलदेवे पणतीस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था॥

---

१ पावयणीवि (ख, ग)।

२ × (वृ) वृहद्वाचनायामिदमन्यदतिशयद्वयमधीयते, यदुत—अण्ण वदति। आगया हवति। (वृ)।

३. ण न भवइ (ग)।

४ × (ख, ग)।

५. सत्यवचनातिशया आगमे न दृष्टा, एते तु ग्रन्थान्तरदृष्टा सम्भाविता', वचन हि गुणवद्वक्तव्य, तद्यथा—सस्कारवत् १ उदात्त २ उपचारोपेत ३ गम्भीरशब्द ४ अनुनादि ५ दक्षिण ६ उपनीतराग ७ महार्थं ८ अव्याहतपौर्वापर्यं ९ शिष्ट १० असदिग्ध ११ अपहृतान्योत्तर १२ हृदयग्राहि १३ देशकालाव्यतीत १४ तत्त्वानुरूप १५. अप्रकीर्णप्रसृत १६ अन्योऽन्यप्रगृहीत १७ अभिजात १८ अतिस्निग्धमधुर १९ अपरमर्मविद्ध २० अर्थधर्माभ्यासानपेत २१ उदार २२ परनिन्दात्मोत्कर्षविप्रयुक्त २३ उपगतश्लाघ २४ अनपनीत २५ उत्पादिताच्छिन्नकौतूहल २६ अद्भुत २७ अनतिविलम्बित २८ विभ्रमविक्षेपकिलिकिञ्चितादिविमुक्त २९ अनेकजातिसश्रयाद्विचित्र ३० आहितविशेष ३१. साकार ३२. सत्त्वपरिग्रह ३३ अपरिखेदित ३४ अव्युच्छेद ३५ चेति वचन महानुभावैर्वक्तव्यमिति(वृ)।

५ सोहम्मे कप्पे सुहम्माए सभाए माणवए चेइयक्खंभे हेट्ठा उवरिं च अद्धतेरस-अद्धतेरस जोयणाणि वज्जेत्ता मज्झे पणतीस[1] जोयणेसु वइरामएसु गोलवट्ट-समुग्गएसु जिण-सकहाओ पण्णत्ताओ ॥

६ वितियचउत्थीसु—दोसु पुढवीसु पणतीस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

छत्तीसइमो समवाओ

१ छत्तीस उत्तरज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—विणयसुय परीसहो[2] चाउरंगिज्ज असखय अकाममरणिज्ज पुरिसविज्जा उरब्भिज्ज काविलिज्ज[3] नमिपव्वज्जा दुमपत्तय वहुसुयपूया[4] हरिएसिज्ज चित्तसभूय उसुकारिज्ज सभिक्खुग समाहि-ठाणाइ पावसमणिज्ज सजइज्ज मिगचारिया अणाहपव्वज्जा समुद्दपालिज्ज रहनेमिज्ज गोयमकेसिज्ज समितीओ जण्णइज्ज सामायारी खलुकिज्जं मोक्ख-मग्गगई अप्पमाओ तवोमग्गो चरणविही पमायठाणाइ कम्मपगडी लेसज्झयण अणगारमग्गे जीवाजीवविभत्ती य ॥

२ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुररण्णो सभा सुहम्मा छत्तीस जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था[5] ॥

३ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स छत्तीस अज्जाण साहस्सीओ होत्था ॥

४. चेत्तासोएसु ण मासेसु सइ छत्तीसगुलिय सूरिए पोरिसीछाय निव्वत्तइ ॥

सत्ततीसइमो समवाओ

१. कुथुस्स ण अरहओ 'सत्ततीस गणा'[6], सत्ततीस गणहरा होत्था ।।

२ हेमवयहेरण्णवइयाओ ण जीवाओ सत्ततीस-सत्ततीस जोयणसहस्साइ छच्च चोवत्तरे[7] जोयणसए सोलसयएगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेसूणाओ आयामेण पण्णत्ताओ ॥

३ सव्वासु ण विजय-वेजयत-जयत-अपराजियासु रायहाणीसु पागारा सत्ततीसं-सत्ततीस जोयणाणि उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥

४ खुड्डियाए ण विमाणप्पविभत्तीए पढमे वग्गे सत्ततीस उद्देसणकाला पण्णत्ता ॥

---

१ पणतीसाए (क) ।
२ परीसहा (क, ख), परीसह (ग) ।
३ काविलिय (क्व) ।
४ °पुज्जा (क, ख, ग) ।
५ पण्णत्ता (क, ग) ।
६ × (क) ।
७ वोहत्तरे (ख), वावत्तरे (ग), चउसत्तरे (क्व) ।

५ कत्तियबहुलसत्तमीए ण सूरिए सत्ततीसगुलिय पोरिसिच्छाय निव्वत्तइत्ता ण चार चरइ ।।

अट्ठतीसइमो समवाओ

१ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठतीस अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासपया होत्था ।।

२ हेमवतेरण्णवतियाण जीवाण धणुपट्ठे अट्ठतीस[1] जोयणसहस्साइ सत्त य चत्ताले जोयणसए दस एगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचिविसेसूणा परिक्खेवेण पण्णत्ते ।।

३ अत्थस्स ण पव्वयरण्णो वितिए कडे अट्ठतीस जोयणसहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ते ।।

४ खुड्डियाए ण विमाणपविभत्तीए वितिए वग्गे अट्ठतीस उद्देसणकाला पण्णत्ता ।।

एगूणचत्तालीसइमो समवाओ

१ नमिस्स ण अरहओ एगूणचत्तालीस आहोहियसया होत्था ।।

२ समयखेत्ते ण एगूणचत्तालीस कुलपव्वया पण्णत्ता, त जहा—तीस वासहरा, पचमदरा, चत्तारि उसुकारा ।।

३ दोच्चचउत्थपचमछट्ठसत्तमासु ण पचसु पुढवीसु एगूणचत्तालीस निरयावास-सयसहस्सा पण्णत्ता ।।

४ नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्तस्स आउस्स—एयासि ण चउण्ह कम्म-पगडीण एगूणचत्तालीस उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ।।

चत्तालीसइमो समवाओ

१ अरहओ ण अरिट्ठनेमिस्स चत्तालीस अज्जियासाहस्सीओ होत्था ।।

२ मदरचूलिया[2] ण चत्तालीस जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।।

३ सती अरहा चत्तालीस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।।

४ भूयाणदस्स ण नागरण्णो[3] चत्तालीस भवणावाससयसहस्स पण्णत्ता ।।

५ खुड्डियाए ण विमाणपविभत्तीए[4] तइए[5] वग्गे चत्तालीस उद्देसणकाला पण्णत्ता ।।

६ फग्गुणपुण्णिमासिणीए[6] ण सूरिए चत्तालीसगुलिय पोरिसिच्छाय निव्वट्टइत्ता ण चार चरइ ।।

---

१ अट्ठतीस अट्ठतीस (क) ।

२ मदरस्स॰ (ख) ।

३ नागकुमारस्स नागरन्नो (क्व) ।

४. विमाणविभत्तीए (क) ।

५ ततिय (ग) ।

६ ॰पुण्णमासिणीए (ख), ॰पुन्निमासीए (ग), 'वइसाहपुण्णिमासिणीए' त्ति यत्केपुचित् पुस्त-केपु दृश्यते सोऽपपाठ (वृ) ।

७ एव कत्तियाएवि पुण्णिमाए ॥

८ महासुक्के कप्पे चत्तालीस विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता ॥

एक्कचत्तालीसइमो समवाओ

१ नमिस्स ण अरहओ एक्कचत्तालीस अज्जियासाहस्सीओ होत्था ॥

२ चउसु पुढवीसु एक्कचत्तालीस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, त जहा—रयणप्पभाए पकप्पभाए तमाए तमतमाए ॥

३ महालियाए ण विमाणपविभत्तीए पढमे वग्गे एक्कचत्तालीस उद्देसणकाला पण्णत्ता ॥

बायालीसइमो समवाओ

१ समणे भगव महावीरे बायालीस वासाइ साहियाइ सामण्णपरियाग पाउणित्त सिद्धे[1] °बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

२ जबुद्दीवस्स ण दीवस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ गोथूभस्स ण आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमते, एस ण बायालीस जोयणसहस्साइ अबाहाते[2] अतरे[3] पण्णत्ते ॥

३ एव चउद्दिसि पि दओभासे सखे दयसीमे य ॥

४ कालोए ण समुद्दे बायालीसं चदा जोइसु वा जोइति वा जोइस्सति वा, बायालीस सूरिया पभासिसु वा पभासिति वा पभासिस्सति वा ॥

५ समुच्छिमभुयपरिसप्पाण उक्कोसेण बायालीस वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता ॥

६ नामे ण[4] कम्मे बायालीसविहे पण्णत्ते, त जहा—गइनामे जातिनामे सरीरनामे सरीरगोवगनामे सरीरबधणनामे सरीरसघायणनामे सघयणनामे सठाणनामे वण्णनामे गंधनामे रसनामे फासनामे अगरुयलहुयनामे उवघायनामे पराघायनामे आणुपुव्वीनामे उस्सासनामे आतवनामे उज्जोयनामे विहगगइनामे तसनामे थावरनामे सुहुमनामे बायरनामे पज्जत्तनामे अपज्जत्तनामे साधारणसरीरनामे पत्तेयसरीरनामे थिरनामे अथिरनामे सुभनामे असुभनामे सुभगनामे दूभगनामे सुस्सरनामे दुस्सरनामे आएज्जनामे अणाएज्जनामे जसोकित्तिनामे अजसोकित्तिनामे निम्माणनामे तित्थकरनामे ॥

७ लवणे ण समुद्दे बायालीस नागसाहस्सीओ अब्भितरिय वेल धारेंति ॥

---

१. स० पा०—सिद्धे जाव सव्वदुक्ख° ।

२ आवाहते (ख), आवाहाते (ग), आवाधाते आवाहाए—अग्रे पि प्राय एवमेव लभ्यते ।

३ अतकरे (क) ।

४ ×(क) ।

८ महालियाए ण विमाणपविभत्तीए[1] वितिए वग्गे वायालीस उद्देसणकाला पण्णत्ता ॥

९ एगमेगाए ओसप्पिणीए पचमछट्ठीओ समाओ वायालीस वाससहस्साइ कालेण पण्णत्ताओ ॥

१० एगमेगाए उस्सप्पिणीए पढमवीयाओ समाओ वायालीस वाससहस्साइ कालेण पण्णत्ताओ ॥

तेयालीसइमो समवाओ

१ तेयालीस कम्मविवागज्झयणा पण्णत्ता ॥

२ पढमचउत्थपचमासु—तीसु पुढवीसु तेयालीस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

३ जबुद्दीवस्स ण दीवस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ गोथूभस्स ण आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमते, एस ण तेयालीस जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

४ एव चउद्दिसिपि दओभासे सखे दयसीमे [य ?] ॥

५ महालियाए ण विमाणपविभत्तीए[2] ततिये वग्गे तेयालीस उद्देसणकाला पण्णत्ता ॥

चोयालीसइमो समवाओ

१ 'चोयालीस अज्झयणा इसिभासिया दियलोगचुयाभासिया पण्णत्ता'[3] ॥

२ विमलस्स ण अरहतो चोयालीस पुरिसजुगाइ अणुपट्ठि[4] सिद्धाइ[5] °बुद्धाइ मुत्ताइ अतगडाइ परिणिव्वुयाइ सव्वदुक्ख°प्पहीणाइ ॥

३ धरणस्स ण नागिदस्स नागरण्णो चोयालीस भवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

४ महालियाए ण विमाणपविभत्तीए[6] चउत्थे वग्गे चोयालीस उद्देसणकाला पण्णत्ता ॥

पणयालीसइमो समवाओ

२ समयखेत्ते ण पणयालीस जोयणसयसहस्साइ आयामविक्खभेण पण्णत्ते ॥

२ सीमतए ण नरए[7] पणयालीस जोयणसयसहस्साइ आयामविक्खभेण पण्णत्ते ॥

---

१ विमाणवि° (क)।

२. विमाणवि° (क)।

३ देवलोयचुयाण इमीण चोयालीसं इसिभासियज्झयणा प° (वृपा)।

४. अणुपुट्ठि (ग), अणुपिट्ठि (क्व); अणुवघेण (वृपा)।

५ स° पा°—सिद्धाइ जाव प्पहीणाइ।

६ विमाणवि° (क)।

७ नरएण (ख)।

३ एव उडुविमाणे पण्णत्ते ।।
४ ईसिपब्भारा ण पुढवी पण्णत्ता एव चेव ।।
५ धम्मे ण अरहा पणयालीस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।।
६ मदरस्स ण पव्वयस्स चउदिसिपि पणयालीस-पणयालीस जोयणसहस्साइ अबाहाते अतरे पण्णत्ते ।।
७ सव्वेवि ण दिवड्ढखेत्तिया नक्खत्ता पणयालीस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोग जोइसु वा जोइति वा जोइस्सति वा—

संगहणी-गाहा

तिन्नेव उत्तराइ, पुणव्वसू रोहिणी विसाहा य ।
एए छ नक्खत्ता, पणयालमुहुत्तसजोगा ।।१।।

८ महालियाए ण विमाणपविभत्तीए पचमे वग्गे पणयालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।।

छायालीसइमो समवाओ

१ दिट्ठिवायस्स ण छायालीस माउयापया पण्णत्ता ।।
२. बभीए ण लिवीए छायालीस माउयक्खरा पण्णत्ता ।।
३ पभजणस्स ण वातकुमारिंदस्स[1] छायालीस भवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

सत्तचालीसइमो समवाओ

१ जया ण सूरिए सव्वब्भतरमडल उवसकमित्ता ण चार चरइ तया ण इहगयस्स मणूसस्स सत्तचत्तालीस जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसएहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफास हव्वमागच्छइ ।।
२ थेरे ण अग्गिभूई सत्तालीस[2] वासाइ अगारमज्झा[3] वसित्ता मुडे भवित्ता[4] अगाराओ अणगारिय पव्वइए ।।

अडयालीसइमो समवाओ

१ एगमेगस्स ण रण्णो चाउरतचक्कवट्टिस्स अडयालीस पट्टणसहस्सा पण्णत्ता ।।
२ धम्मस्स ण अरहओ अडयालीस गणा अडयालीस गणहरा होत्था ।।
३ सूरमडले ण अडयालीस एकसट्ठिभागे जोयणस्स विक्खभेण पण्णत्ते ।।

---

१ वातस्स° (ग), वाउ° (क्व) ।
२ सत्तयालीस (क, ख) ।
३ °मज्झे (क्व) ।
४. भवित्ता ण (क, ख) ।

एगूणपण्णासइमो समवाओ

१ सत्तसत्तमिया ण भिक्खुपडिमा[1] एगूणपण्णाए राइदिएहिं छन्नउएण[2] भिक्खासएण अहासुत्त[3] •अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आणाए° आराहिया यावि भवइ ॥

२ देवकुरुउत्तरकुरासु ण मणुया एगूणपण्णाए[4] राइदिएहिं सपत्तजोव्वणा भवति ॥

३ तेइदियाण उक्कोसेण एगूणपण्ण राइदिया ठिई पण्णत्ता ॥

पण्णासइमो समवाओ

१ मुणिसुव्वयस्स ण अरहओ पचास अज्जियासाहस्सीओ होत्था ॥

२ अणते[5] ण अरहा पण्णास धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ॥

३ पुरिसोत्तमे ण वासुदेवे पण्णास धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ॥

४ सव्वेवि ण दीहवेयड्ढा मूले पण्णास-पण्णास जोयणाणि विक्खभेण पण्णत्ता ॥

५ लतए कप्पे पण्णास विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता ॥

६ सव्वाओ[6] ण तिमिस्सगुहाखडगप्पवायगुहाओ[7] पण्णास-पण्णास जोयणाइ आयामेण पण्णत्ता ॥

७ सव्वेवि ण कचणगपव्वया सिहरतले पण्णास-पण्णास जोयणाइ विक्खभेण पण्णत्ता ॥

एगपण्णासइमो समवाओ

१ नवण्ह बभचेराण एकावण्ण उद्देसणकाला पण्णत्ता ॥

२ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुररण्णो[8] सभा सुधम्मा एकावण्णखभसयसनिविट्ठा[9] पण्णत्ता ॥

३ एव चेव बलिस्सवि ॥,

४ सुप्पभे[10] ण बलदेवे एकावण्ण वाससयसहस्साइ परमाउ पालइत्ता सिद्धे बुद्धे[11] •मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

५ दसणावरणनामाण—दोण्ह कम्माण एकावण्ण उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ॥

---

१ °पडिमाए (ग) ।

२ छन्नउइतेण य (ख, ग), छन्नउइ (क्व), स्थानाङ्गे (७।११) 'एगेण य छण्णउएण' पाठोऽस्ति ।

३ स० पा०—अहासुत्त जाव आराहिया ।

४ एकूणपण्णत्ताए (क) ।

५ अणतस्स (ग) ।

६ सव्वातोवि (ग) ।

७ तिमिस्सगुह खडप्पवाया° (क), तिमिस्सगुह° (ख) ।

८ असुरा (क), असुर (ख, ग) ।

९ °सयणिविट्ठा (ग) ।

१० सुप्पहे (वृ) ।

११ स० पा०—बुद्धे जाव सव्वदुक्ख° ।

बावण्णइमो समवाओ

१ मोहणिज्जस्स णं कम्मस्स बावन्नं नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा संजलणे कलहे चंडिक्के भंडणे[1] विवाए।
माणे मदे दप्पे थंभे अत्तुक्कोसे[2] गव्वे परपरिवाए उक्कोसे[3] अवक्कोसे[4] उन्नए उन्नामे।
माया उवही नियडी वलए गहणे णूमे कक्के कुरुए दंभे कूडे जिम्हे किब्बिसिए अणायरणया गूहणया वंचणया[5] पलिकुंचणया सातिजोगे।
लोभे इच्छा मुच्छा कंखा गेही तिण्हा भिज्जा अभिज्जा कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा नंदी रागे॥

२ गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ वलयामुहस्स महा-पायालस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं बावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते॥

३ एवं दओभासस्स णं केउकस्स [य ?], संखस्स जूयकस्स [य ?], दयसीमस्स[6] ईसरस्स [य ?]॥

४ नाणावरणिज्जस्स नामस्स अंतरातियस्स[7]—एतासि णं तिण्हं कम्मपगडीणं बावन्नं उत्तरपयडीओ पण्णत्ताओ॥

५ सोहम्म-सणंकुमार-माहिंदेसु तिसु कप्पेसु बावन्नं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता॥

तेवण्णइमो समवाओ

१. देवकुरुउत्तरकुरियाओ[8] णं जीवाओ तेवन्नं-तेवन्नं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामेणं पण्णत्ताओ॥

२ महाहिमवंतरुप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवाओ तेवन्नं-तेवन्नं जोयणसहस्साइं नव य एगतीसे जोयणसए छच्च एक्कूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ताओ॥

३ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तेवन्नं अणगारा संवच्छरपरियाया पंचसु अणुत्तरेसु महइमहालएसु महाविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना॥

४ संमुच्छिमउरपरिसप्पाणं उक्कोसेणं तेवन्नं वाससहस्सा ठिई पण्णत्ता॥

---

१. भंडिणे (ख)।
२. अत्तुक्कासे (क, ख, ग)।
३. उक्कासे (क, ग)।
४. अवकासे (क), अवक्कासे (ख); अचक्कासे (ग)।
५. वमणया (क),
६. °सीमयस्स (क)।
७. अंतराबियस्स (ग)।
८. °उत्तरयातो (ग), °उत्तरकुरुयाओ (क्व०)।

चउवण्णइमो समवाओ

१. भरहेरवएसु ण वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणीए एगमेगाए उस्सप्पिणीए चउप्पण्ण-चप्उप्पण्ण उत्तमपुरिसा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा, त जहा—चउवीस तित्थकरा, वारस चक्कवट्टी, नव वलदेवा, नव वासुदेवा ॥

२ अरहा ण अरिट्ठनेमी चउप्पण्ण राइदियाइ छउमत्थपरियाग पाउणित्ता जिणे जाए केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी ॥

३ समणे भगव महावीरे एगदिवसेण एगनिसेज्जाए[1] चउप्पण्णाइ वागरणाइ वागरित्था[2] ॥

४ अणतस्स ण अरहओ 'चउप्पण्ण गणा'[3] चउप्पण्ण गणहरा होत्था ॥

पणपण्णइमो समवाओ

१ 'मल्ली ण अरहा'[4] पणपण्ण वाससहस्साइ परमाउ पालइत्ता[5] सिद्धे बुद्धे[6] °मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

२. मदरस्स ण पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमताओ विजयदारस्स पच्चत्थि-मिल्ले चरिमते, एस ण पणपण्ण जोयणसहस्साइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

३ एव चउद्दिसिपि वेजयत-जयत-अपराजियति ॥

४ समणे भगव महावीरे अतिमराइयसि पणपण्ण अज्झयणाइ कल्लाणफलविवागाइ, पणपण्ण अज्झयणाणि पावफलविवागाणि वागरित्ता सिद्धे बुद्धे[7] °मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

५ पढमविइयासु—दोसु पुढवीसु पणपण्ण निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

६ दसणावरणिज्जनामाउयाण—तिण्ह कम्मपगडीण पणपन्न उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ॥

छप्पण्णइमो समवाओ

१ जवुद्दीवे ण दीवे छप्पण्ण नक्खत्ता चदेण सद्धि जोग जोएसु वा, जोएति वा, जोइस्सति वा ॥

२ विमलस्स ण अरहओ छप्पण्ण गणा छप्पण्ण गणहरा होत्था ॥

---

१ °निसाते (ग) ।
२ वागरित्ता (ग) ।
३ ×(क, ग) ।
४ मल्लिस्स ण अरहओ (ग) ।
५ पालित्ता (ग) ।
६,७ स० पा०—बुद्धे आव प्पहीणे ।

सत्तावण्णइमो समवाओ

१ तिण्हं गणिपिडगाणं आयारचूलियावज्जाणं सत्तावण्णं अज्झयणा[1] पण्णत्ता, तं जहा—आयारे सूयगडे ठाणे ॥

२ गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए, एस णं सत्तावण्णं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

३ एवं दओभासस्स [ण ?] केउयस्स य, संखस्स[2] जूयकस्स य दयसीमस्स[3] ईसरस्स य ॥

४ मल्लिस्स णं अरहओ सत्तावण्णं मणपज्जवनाणिसया होत्था ॥

५ महाहिमवंतरुप्पीणं वासधरपव्वयाणं जीवाणं धणुपट्ठा सत्तावण्णं-सत्तावण्णं जोयणसहस्साइं दोण्णि य तेणउए जोयणसए दस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं पण्णत्ता ॥

अट्ठावण्णइमो समवाओ

१ पढमदोच्चपंचमासु—तिसु पुढवीसु अट्ठावण्णं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

२. नाणावरणिज्जस्स वेयणिज्जस्स[4] आउयनामअंतराइयस्स[5] य—एयासि णं पंचण्हं कम्मपगडीणं अट्ठावण्णं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ॥

३ गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ[6] वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए, एस णं अट्ठावण्णं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

४ एवं[7] °दओभासस्स णं केउकस्स [य ?], संखस्स जूयकस्स [य ?], दयसीमस्स ईसरस्स [य ?] ° ॥

एगूणसट्ठिमो समवाओ

१ चंदस्स णं संवच्छरस्स एगमेगे उदू एगूणसट्ठिं राइंदियाणि राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ॥

२ संभवे णं अरहा एगूणसट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झावसित्ता[8] मुंडे[9] °भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं° पव्वइए[10] ॥

३ मल्लिस्स णं अरहओ एगूणसट्ठिं ओहिनाणिसया होत्था ॥

---

१ अज्झीणे (क)।
२ संखस्स य (ख, ग)।
३ दयसीमयस्स (क)।
४ वेयणिय (क, ख)।
५ आउनाम° (ख)।
६ चरमंताओ (क)।
७. सं० पा०—एवं चउदिसिंपि नेयव्वं।
८ आगारमज्झे° (क, ग), °मज्झे° (ख)।
९ सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइए।
१० पव्वतित्ति (क)।

सट्ठिमो समवाओ

१ एगमेगे णं मडले सूरिए सट्ठिए-सट्ठिए मुहुत्तेहिं सघाएइ ॥
२ लवणस्स ण समुद्दस्स सट्ठि नागसाहस्सीओ[1] अग्गोदय धारेति ॥
३ विमले ण अरहा सट्ठि धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ॥
४ वलिस्स ण वइरोयणिदस्स सट्ठि सामाणियसाहस्सीओ[2] पण्णत्ताओ ॥
५ वभस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सट्ठि सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥
६. सोहम्मीसाणेसु—दोसु कप्पेसु सट्ठि विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

एगसट्ठिमो समवाओ

१ पचसवच्छरियस्स ण जुगस्स रिदुमासेण मिज्जमाणस्स एगसट्ठिं उदुमासा पण्णत्ता ॥
२ मदरस्स ण पव्वयस्स पढमे कडे एगसट्ठिजोयणसहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ते ॥
३. चदमडले ण एगसट्ठिविभागविभाइए[3] समसे पण्णत्ते ॥
४ एव सूरस्सवि ॥

वावट्ठिमो समवाओ

१. पचसवच्छरिए[4] ण जुगे वावट्ठिं पुण्णिमाओ वावट्ठि अमावसाओ पण्णत्ताओ ॥
२ वासुपुज्जस्स ण अरहओ वावट्ठिं गणा वावट्ठिं गणहरा होत्था ॥
३ सुक्कपक्खस्स ण चदे वावट्ठिं भागे दिवसे-दिवसे परिवड्ढइ, ते चेव वहुलपक्खे दिवसे-दिवसे परिहायइ ॥
४ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु पढमे पत्थडे पढमावलियाए[5] एगमेगाए दिसाए वावट्ठिं-वावट्ठिं विमाणा पण्णत्ता ॥
५ सव्वे वेमाणियाण वावट्ठिं विमाणपत्थडा पत्थडग्गेण पण्णत्ता ॥

तेवट्ठिमो समवाओ

१ उसभे ण अरहा कोसलिए तेसट्ठिं पुव्वसयसहस्साइ महारायवासमज्झावसित्ता[6] मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए ॥

---

१ °सहस्साइ (क), °सहस्साओ (ख)।
२ °सहस्सीओ (क), °सहसाओ (ग)।
३ °विभागहाइएविभइए (क)।
४ °सवत्सरि (क)।
५ पढमावलिया (वृपा)।
६ °मज्झे° (ख), महारायमज्झा° (ग), महारायमज्झे° (क्व)।

२ हरिवासरम्मयवासेसु[1] मणुस्सा तेवट्ठिए राइदिएहिं संपत्तजोव्वणा भवंति ।।
३ निसेहे णं पव्वए तेवट्ठिं सूरोदया पण्णत्ता ।।
४ एवं नीलवंतेवि ।।

चउसट्ठिमो समवाओ

१ अट्ठट्ठमिया णं भिक्खुपडिमा चउसट्ठीए राइदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं[2] •अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आणाए° आराहिया यावि भवइ ।।
२ चउसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।
३ चमरस्स णं रण्णो चउसट्ठिं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ।।
४ सव्वेवि णं दधिमुहा पव्वया पल्ला-संठाण-संठिया सव्वत्थ समा 'दस जोयणसहस्साइं'[3] 'विक्खभेणं, उस्सेहेणं'[4] चउसट्ठिं-चउसट्ठिं जोयणसहस्साइं पण्णत्ता ।।
५ सोहम्मीसाणेसु बंभलोए य—तिसु कप्पेसु चउसट्ठिं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।
६ सव्वस्सवि य णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चउसट्ठिलट्ठीए महग्घे मुत्तामणिमए हारे पण्णत्ते ।।

पणसट्ठिमो समवाओ

१ जंबुद्दीवे णं दीवे पणसट्ठिं सूरमंडला पण्णत्ता ।।
२ थेरे णं मोरियपुत्ते पणसट्ठिवासाइं अगारमज्झावसित्ता[5] मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।।
३ सोहम्मवडेंसयस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए पणसट्ठिं-पणसट्ठिं भोमा पण्णत्ता ।।

छावट्ठिमो समवाओ

१ दाहिणड्ढमणुस्सखेत्ताणं छावट्ठिं चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, छावट्ठिं सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा ।।

---

१. हरिवरस्स° (क, ख), हरिवरस° (ग) ।
२ सं० पा०—अहासुत्तं जाव आराहिया ।
३ × (क, ख, ग) ।
४ विक्खंभुस्सेहेणं (क, ख, ग), क्वचित्तु 'विक्खंभुस्सेहेणं' ति पाठस्तत्र तृतीयैकवचनलोपदर्शनाद्विष्कम्भेनेति (वृ) ।
५ °मज्झे° (क, ख, ग) ।

२. उत्तरड्ढमणुस्सखेत्ताण छावट्ठि चदा पभासेंसु वा पभासेति वा पभासिस्सति वा, छावट्ठि सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्सति वा ॥
३ सेज्जसस्स ण अरहओ छावट्ठि गणा छावट्ठि गणहरा होत्था ॥
४. आभिणिवोहियनाणस्स ण उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

सत्तसट्ठिमो समवाओ

१ पचसवच्छरियस्स ण जुगस्स नक्खत्तमासेण मिज्जमाणस्स सत्तसट्ठि नक्खत्त-मासा पण्णत्ता ॥
२ हेमवतेरण्णवतियाओ ण वाहाओ सत्तसट्ठि-सत्तसट्ठि जोयणसयाइ पणपण्णाइ तिण्णि य भागा जोयणस्स आयामेण पण्णत्ताओ ॥
३. मदरस्स ण पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ 'गोयमस्स ण'[1] दीवस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमते, एस ण सत्तसट्ठि जोयणसहस्साइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ॥
४ सव्वेसिपि ण नक्खत्ताण सीमाविक्खभेण सत्तसट्ठि 'भाग भइए'[2] समसे पण्णत्ते ॥

अट्ठसट्ठिमो समवाओ

१ धायइसडे ण दीवे अट्ठसट्ठि चक्कवट्टिविजया अट्ठसट्ठि रायहाणीओ पण्णत्ताओ ॥
२ धायइसडे ण दीवे उक्कोसपए अट्ठसट्ठि अरहता समुप्पज्जिसु वा समुप्पज्जेंति वा समुप्पज्जिस्सति वा ॥
३ एव चक्कवट्टी वलदेवा वासुदेवा ॥
४ पुक्खरवरदीवड्ढे ण अट्ठसट्ठि °[3]चक्कवट्टिविजया अट्ठसट्ठि रायहाणीओ पण्णत्ताओ ॥
५ पुक्खरवरदीवड्ढे ण उक्कोसपए अट्ठसट्ठि अरहता समुप्पज्जिसु वा समुप्पज्जेंति वा समुप्पज्जिस्सति वा ॥
६ एव चक्कवट्टी वलदेवा° वासुदेवा ॥
७ विमलस्स ण अरहओ अट्ठसट्ठि समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसपया होत्था ॥

---

१ गोयम (क, ख), यद्यपि सूत्रपुस्तकेपु गौतमशब्दो न दृश्यते तथाप्यसौ दृश्य, जीवाभिगमादिपु लवणसमुद्रे गौतमचन्द्ररविद्वीपान् विना द्वीपान्तरस्याश्रयमाणत्वादिति ।
२ भाग भयते (ग) ।
३ स० पा०—विजया एव चेव जाव वासुदेवा ।

एगूणसत्तरिमो समवाओ

१ समयखेत्ते ण मदरवज्जा एगूणसत्तरिं वासा वासवरपव्वया पण्णत्ता, त जहा— पणतीस वासा, तीस वासहरा, चत्तारि उमुयारा ॥

२ मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमताओ गोयमदीवस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमते, एस ण एगूणसत्तरिं जोयणसहस्साइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

३ मोहणिज्जवज्जाण सत्तण्ह कम्माण[1] एगूणसत्तरिं उत्तरपगडीओ[2] पण्णत्ताओ ॥

सत्तरिमो समवाओ

१ समणे भगव महावीरे वासाण सवीसइराए मासे वीतिक्कते सत्तरिए राइंदिएहिं सेसेहिं वासावास पज्जोसवेइ[3] ॥

२ पासे ण अरहा पुरिसादाणीए सत्तरिं वासाइ वहुपडिपुण्णाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे[4] °मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

३ वासुपुज्जे ण अरहा सत्तरिं धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ॥

४. मोहणिज्जस्स ण कम्मस्स सत्तरिं सागरोवमकोडाकोडीओ अवाहूणिया कम्मठिई कम्मणिसेगे पण्णत्ते ॥

५ माहिंदस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सत्तरिं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥

एक्कसत्तरिमो समवाओ

१ चउत्थस्स ण चदसवच्छरस्स हेमताण एक्कसत्तरीए[5] राइदिएहिं वीइक्कतेहिं सव्ववाहिराओ मडलाओ सूरिए आउट्टि करेइ ॥

२ 'वीरियप्पवायस्स ण'[6] एक्कसत्तरिं पाहुडा पण्णत्ता ॥

३ अजिते ण अरहा एक्कसत्तरिं पुव्वसयसहस्साइ अगारमज्भावसित्ता[7] मुडे भवित्ता[8] °ण अगाराओ अणगारिअ° पव्वइए ॥

४ सगरे ण राया चाउरतचक्कवट्टी एक्कसत्तरिं पुव्व[9] °सयसहस्साइ अगारमज्भावसित्ता मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिअ° पव्वइए ॥

---

१ कम्मपगडीण (ख, ग) ।
२. कम्मप्पगडीतो (क) ।
३ पज्जोमविए (क, ख, ग) ।
४ स० पा०—वुद्धे जाव प्पहीणे ।
५ एक्कसत्तरी (क), एक्कसत्तरीतेहिं (ग) ।
६. वीरियपुव्वस्स ण पुव्वस्स (क,ख), वीरियप्पवायस्स ण पुव्वस्स (क्व) ।
७. °मज्फे° (क, ख, ग) ।
८ स० पा०—भवित्ता जाव पव्वइए ।
९. स० पा०—एव सगरेवि राया चाउरतचक्कवट्टी एकसत्तरिं पुव्व जाव पव्वइए ।

वावत्तरिमो समवाओ

१ वावत्तरिं सुवण्णकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

२ लवणस्स समुद्दस्स वावत्तरिं नागसाहस्सीओ वाहिरिय वेल धारति ।।

३ समणे भगव महावीरे वावत्तरिं वासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे वुद्धे[1] °मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ।।

४ थेरे ण अयलभाया वावत्तरिं वासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे[2] °वुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ।।

५ अब्भतरपुक्खरद्धे ण वावत्तरिं चदा पभासिंसु वा पभासेति वा पभासिस्सति वा वावत्तरिं सूरिया तविंसु वा तवेति वा तविस्सति वा ।।

६ एगमेगस्स ण रण्णो चाउरतचक्कवट्टिस्स वावत्तरिं पुरवरसाहस्सीओ पण्णत्ताओ।।

७ वावत्तरिं कलाओ पण्णत्ताओ, त जहा—१ लेह २ गणिय ३ रूव ४ नट्ट ५. गीय ६ वाइय ७ सरगय ८ पुक्खरगय ९ समताल १० जूय ११ जणवाय[3] १२ पोरेकव्व १३ अट्ठावय १४ दगमट्टिय १५ 'अण्णविहिं १६ पाणविहिं'[4] १७ लेणविहिं[5] १८ सयणविहिं १९ अज्ज[6] २० पहेलिय २१ मागहिय २२ गाह २३ सिलोग २४ गधजुत्ति २५ मधुसित्थ २६ आभरणविहिं २७ तरुणीपडिकम्म २८. इत्थीलक्खण २९ पुरिसलक्खण ३० हयलक्खण ३१ गयलक्खण ३२ गोणलक्खण ३३ कुक्कुडलक्खण ३४ मिंढयलक्खण ३५ चक्कलक्खण ३६ छत्तलक्खण ३७ दडलक्खण ३८ असिलक्खण ३९ मणिलक्खण ४० काकणिलक्खण ४१ चम्मलक्खण ४२ चदचरिय[7] ४३ सूरचरिय ४४ राहुचरिय ४५ गहचरिय ४६ 'सोभाकर ४७ दोभाकर'[8] ४८ विज्जागय ४९ मतगय ५० रहस्सगय ५१ 'सभास ५२ चार'[9] ५३ पडिचार ५४ वूह ५५ पडिवूह ५६ खधावारमाण[10] ५७ नगरमाण ५८ वत्थुमाण ५९ खधावारनिवेस ६० निगरनिवेस ६१ वत्थुनिवेस ६२ ईसत्थ ६३ छरुप्पगय[11] ६४ आससिक्ख ६५ हत्थिसिक्ख ६६ धणुव्वेय ६७ 'हिरण्णपाग सुवण्णपाग'[12] मणिपाग धातुपाग ६८ वाहुजुद्ध दडजुद्ध मुट्ठिजुद्ध अट्ठिजुद्ध

---

१ स० पा०—वुद्धे जाव प्पहीणे ।

२ स० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।

३ जाणवय (क), जाणवाय (ख, ग) ।

४. अन्नविध पाणविध (क) ।

५ लोणविहिं (क), लोहविहिं (ग), वत्थविहिं (क्व) ।

६ पज्ज (ग) ।

७. चदलक्खण (ख, ग) ।

८ सोभाग° ४७ दोभाग° (क्व) ।

९ सभाव ५२ चर (क), सभाव ५२ चार (ख), सभास्ना ५२ चार (ग) ।

१० °मामण (ग) ।

११ छरुप्पवाय (क्व) ।

१२ हिरण्णवय सुवण्णवय (क), हिरण्णवाय सुवण्णवाय (ख, ग) ।

जुद्ध निजुद्ध जुद्धातिजुद्ध ६९ मुत्तखेड्ड 'नालियाखेड्ड वट्टखेड्ड'[1] ७० पत्तच्छेज्ज कडगच्छेज्ज[2] पत्तगच्छेज्ज ७१ सजीव[3] निज्जीव ७२ सउणरुय।

८ सम्मुच्छिमखयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं बावत्तरिं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता॥

तेवत्तरिमो समवाओ

१ हरिवासरम्मयवासियाओ णं जीवाओ तेवत्तरिं-तेवत्तरिं जोयणसहस्साइं नव य एक्कुत्तरे जोयणसए सत्तरस य एकूणवीसइभागे जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं पण्णत्ताओ॥

२ विजए णं बलदेवे तेवत्तरिं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे[4] •बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे॥

चोवत्तरिमो समवाओ

१ थेरे णं अग्गिभूई गणहरे चोवत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे[5] •बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे॥

२ निसहाओ णं वासहरपव्वयाओ तिगिंछिद्दहाओ[6] सीतोतामहानदी चोवत्तरिं जोयणसयाइं साहियाइं उत्तराहुत्ति पवहित्ता वतिरामतियाए जिब्भियाए चउजोयणायामाए पण्णासजोयणविक्खंभाए[7] वइरतले कुंडे महया घडमुहपवत्तिएणं मुत्तावलिहारसंठाणसंठिएणं पवाएणं महया सद्देणं पवडइ।

३ एवं सीतावि दक्खिणहुत्तिं[8] भाणियव्वा॥

४ चउत्थवज्जासु छसु पुढवीसु चोवत्तरिं निरयावाससयसहस्सा[9][10] पण्णत्ता॥

पण्णत्तरिमो समवाओ

१ सुविहिस्स णं पुप्फदंतस्स अरहओ[11] पण्णत्तरिं जिणसया होत्था॥

२ सीतले णं अरहा पण्णत्तरिं पुव्वसहस्साइं अगारमज्झावसित्ता[12] मुंडे भवित्ता[13] •णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइए॥

---

१ नालियाखेड्ड वट्टखेड्ड धम्मखेड्ड चम्मखेड्ड (ख), वट्टखेड्ड नालियाखेड्ड वम्मखेड्ड (ग)।
२ कणगच्छेज्ज (ग)।
३ अज्जीव (ख), अजीव (ग)। सजीव (क्व)।
४ स० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे।
५ स० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे।
६ °द्दहाओ णं दहाओ (ख, ग)।
७ पण्णास जोयण° (ख), पण्णास जोयण° (ग)।
८ 'दुहओ' त्ति क्वचित् दृश्यते तदपपाठ (वृ)।
९ दक्खिणाहिमुही (क्व)।
१० नरया° (ग)।
११. अरहतो पण्णत्तरिं जिणा (ख, ग)।
१२ °मज्झे° (क, ख, ग)।
१३. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वइए।

३ सती ण अरहा पण्णत्तरिं वाससहस्साइ अगारवासमज्झावसित्ता[1] मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए ॥

छावत्तरिमो समवाओ

१. छावत्तरिं विज्जुकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥
२ एव—

संगहणी-गाहा

दीवदिसाउदहीण, विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीण ।
छण्हपि जुगलयाण, छावत्तरिमो[2] सयसहस्सा ॥१॥

सत्तत्तरिमो समवाओ

१ भरहे राया चाउरतचक्कवट्टी सत्तत्तरिं पुव्वसयसहस्साइ कुमारवासमज्झावसित्ता 'महारायाभिसेय सपत्ते'[3] ॥
२ अगवसाओ ण सत्तत्तरिं रायाणो मुंडे[4] •भवित्ता ण अगाराओ अणगारिअ० पव्वइया ॥
३ गद्दतोयतुसियाण देवाण सत्तत्तरिं देवसहस्सा परिवारा पण्णत्ता ॥
४ एगमेगे ण मुहुत्ते सत्तत्तरिं लवे[5] लवग्गेण पण्णत्ते ॥

अट्ठसत्तरिमो समवाओ

१ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो वेसमणे महाराया अट्ठसत्तरीए सुवण्णकुमार-दीवकुमारावाससयसहस्साण आहेवच्च पोरेवच्च भट्टित्त सामित्त महारायत्त आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥
२ थेरे ण अकपिए अट्ठसत्तरिं वासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे[6] •बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख०प्पहीणे ॥
३ उत्तरायणनियट्टे ण सूरिए पढमाओ मडलाओ एगूणचत्तालीसइमे मडले अट्ठहत्तरिं एगसट्ठिभाए दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता ण चार चरइ ॥
४ एव दक्खिणायणनियट्टेवि ॥

---

१ अगारमज्झे० (क), अगारमज्झा० (ग) ।
२ छावत्तरिं (क्व) ।
३, ०भिसियपत्ते (क) ।
४ स० पा०—मुंडे जाव पव्वइया ।
५ लवा (ग) ।
६ स० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।

एगूणासीइमो समवाओ

१ वलयामुहस्स णं पायालस्स हेट्ठिल्लाओ चरिमंताओ इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं एगूणासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

२ एवं केउस्सवि जूयस्सवि ईसरस्सवि ॥

३ छट्ठीए पुढवीए बहुमज्झदेसभायाओ छट्ठस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं एगूणासीतिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

४ जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बारस्स य बारस्स य, एस णं एगूणासीइं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

असीइइमो समवाओ

१ सेज्जंसे णं अरहा असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥

२ तिविट्ठू णं वासुदेवे असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥

३ अयले णं बलदेवे असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥

४ तिविट्ठू णं वासुदेवे असीइं वाससयसहस्साइं महाराया होत्था ॥

५ आउबहुले णं कंडे असीइं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते ॥

६ ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो असीइं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥

७ जंबुद्दीवे णं दीवे असीउत्तरं जोयणसयं ओगाहेत्ता सूरिए उत्तरकट्ठोवगए पढमं उदयं करेइ ॥

एक्कासीइइमो समवाओ

१ नवनवमिया[1] णं भिक्खुपडिमा एक्कासीइ राइंदिएहिं चउहि य पंचुत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं[2] °अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आणाए° आराहिया यावि भवति ॥

२ कुंथुस्स णं अरहओ एक्कासीति मणपज्जवनाणिसया होत्था ॥

३ विआहपण्णत्तीए[3] एकासीतिं महाजुम्मसया पण्णत्ता ॥

बासीतिइमो समवाओ

१ जंबुद्दीवे दीवे बासीतं मंडलसयं जं सूरिए दुक्खुत्तो संकमित्ता णं चारं चरइ, तं जहा—निक्खममाणे य पविसमाणे[4] य ॥

२ समणे भगवं महावीरे बासीए राइंदिएहिं वीइक्कतेहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए ॥

---

१. णवणम्मया (क)।
२. सं० पा०—अहासुत्तं जाव आराहिया।
३. विवाह° (ग)।
४. पविसनिमाणे (क)।

३ महाहिमवतस्स ण वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाओ चरिमताओ सोगधियस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते, एस ण वासीइ जोयणसयाइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ॥
४ एव रुप्पिस्सवि ॥

तेयासीइइमो समवाओ

१ समणे भगव महावोरे वासीइराइदिएहि वोइक्कतेहि तेयासोइमे राइदिए वट्टमाणे गब्भाओ गब्भ साहरिए ॥
२ सीयलस्स ण अरहओ तेसीति गणा तेसीति गणहरा होत्था ॥
३ थेरे ण मडियपुत्ते तेसीइ वासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे[1] °बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥
४ उसभे ण अरहा कोसलिए तेसीइ पुव्वसयसहस्साइ अगारवासमज्झावसित्ता[2] मुडे भवित्ता ण[3] °अगाराओ अणगारिअ° पव्वइए ॥
५ भरहे ण राया चाउरतचक्कवट्टी तेसोइ पुव्वसयसहस्साइ अगारमज्भावसित्ता जिणे जाए केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी ॥

चउरासीइइमो समवाओ

१ चउरासीइ निरयावाससयसहस्साइ पण्णत्ता ॥
२ उसभे ण अरहा कोसलिए चउरासीइ पुव्वसयसहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे[4] °मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥
३ एव भरहो बाहुबली 'बभी सुदरी'[5] ॥
४ सेज्जसे ण अरहा चउरासीइ वाससयसहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे[6] °बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥
५. तिविट्ठू ण वासुदेवे चउरासीइ वाससयसहस्साइ सव्वाउय[7] पालइत्ता अप्पइट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववण्णे ॥
६ सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो चउरासीई सामाणियसाहिस्सीओ पण्णत्ताओ ॥
७ सव्वेवि ण बाहिरया[8] मदरा चउरासीइ-चउरासीइ जोयणसहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥
८ सव्वेवि ण अजणगपव्वया चउरासीइ-चउरासीइ जोयणसहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥

---

१. स० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।
२ °मज्झे° (क) ।
३ स० पा०—भवित्ता ण जाव पव्वइए ।
४ स० पा०—बुद्धे जाव प्पहीणे ।
५ बभिसुदरि (क, ख, ग) ।
६ स० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।
७ परमाउ (क, ग) ।
८ बाहिरिया (ग) ।

९ हरिवासरम्मयवासियाणं जीवाण धणुपट्ठा[1] चउरासीइं-चउरासीइं जोयण-सहस्साइं सोलस जोयणाइं चत्तारि य भागा जोयणस्स परिक्खेवेण पण्णत्ता ॥

१० पंकबहुलस्स णं कंडस्स उवरिल्लाओ चरिमंताओ हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं चोरासीइं जोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

११ वियाहपण्णत्तीए[2] णं भगवतीए चउरासीइं पयसहस्सा पदग्गेणं पण्णत्ता ॥

१२ चोरासीइं नागकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

१३ चोरासीइं पइण्णगसहस्सा पण्णत्ता ॥

१४ चोरासीइं जोणिप्पमुहसयसहस्सा पण्णत्ता ॥

१५ पुव्वाइयाणं सीसपहेलियापज्जवसाणाणं सट्ठाणट्ठाणंतराणं चोरासीए गुणकारे पण्णत्ते ॥

१६ उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स चउरासीइं गणा चउरासीइं गणहरा होत्था ॥

१७. उसभस्स णं कोसलियस्स उसभसेणपामोक्खाओ चउरासीइं समणसाहस्सीओ होत्था ॥

१८. चउरासीइं विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवंतीति मक्खायं ॥

पंचासीइइमो समवाओ

१ आयारस्स णं भगवओ सचूलियागस्स पंचासीइं उद्देसणकाला पण्णत्ता ॥

२ धायइसंडस्स णं मंदरा पंचासीइं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता ॥

३ रुयए णं मंडलियपव्वए पंचासीइं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते ॥

४ नंदणवणस्स णं हेट्ठिल्लाओ चरिमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं पंचासीइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

छलसीइइमो समवाओ

१. सुविहिस्स णं पुप्फदंतस्स अरहओ छलसीइं गणा छलसीइं गणहरा होत्था ॥

२ सुपासस्स णं अरहओ छलसीइं वाइसया होत्था ॥

३ दोच्चाए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभागाओ दोच्चस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं छलसीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

सत्तासीइइमो समवाओ

१ मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स

---

१ धणुपिट्ठा (क्व)। २ विवाह° (ग)।

पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

२ मंदरस्स णं पव्वयस्स दक्खिणिल्लाओ चरिमंताओ दओभासस्स आवासपव्वयस्स उत्तरिल्ले चरिमंते, एस णं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

३. मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ संखस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते, [1]°एस णं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते° ॥

४ मंदरस्स[2] °णं पव्वयस्स° उत्तरिल्लाओ चरिमंताओ दगसीमस्स आवासपव्वयस्स दाहिणिल्ले चरिमंते, एस णं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

५ छण्हं कम्मपगडीओ आतिम-उवरिल्ल-वज्जाणं सत्तासीइं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ॥

६ महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाओ चरिमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं सत्तासीइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

७ एवं रुप्पिकूडस्सवि ॥

अट्ठासीइइमो समवाओ

१ एगमेगस्स णं चंदिमसूरियस्स अट्ठासीइं-अट्ठासीइं महग्गहा परिवारो पण्णत्तो ॥

२ दिट्ठिवायस्स णं अट्ठासीइं सुत्ताइं पण्णत्ताइं, तं जहा—१ उज्जुसुयं २ परिणयापरिणयं ३ [3]°बहुभंगियं ४ विजयचरियं ५ अणंतरं ६ परंपरं ७ सामाणं ८ संजूहं ९ संभिण्णं १० आहच्चायं ११ सोवत्थियं घंटं १२ नंदावत्तं १३ बहुलं १४ पुट्ठापुट्ठं १५ वियावत्तं १६ एवंभूयं १७ दुयावत्तं १८ वत्तमाणुप्पयं १९ समभिरूढं २० सव्वओभद्दं २१ पण्णासं २२ दुप्पडिग्गहं।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं छिण्णच्छेयनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिण्णच्छेयनइयाणि आजीवियसुत्तपरिवाडीए।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं तिगनइयाणि तेरासियसुत्तपरिवाडीए।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए।

एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीइं सुत्ताइं भवंति त्ति मक्खायं° ॥

३ मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं अट्ठासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

---

१ सं० पा०—एवं मंदरस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ संखस्स पुरत्थिमिल्ले च।

२ सं० पा०—एवं चेव मंदरस्स।

३ सं० पा०—एवं अट्ठासीइं सुत्ताणि भाणियव्वाणि जहा नंदीए।

४. [1]•मदरस्स ण पव्वयस्स दक्खिणिल्लाओ चरिमताओ दओभासस्स आवासपव्वयस्स दाहिणिल्ले चरिमते, एस ण अट्ठासीइ जोयणसहस्साइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

५ मदरस्स ण पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमताओ सखस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमते, एस ण अट्ठासीइं जोयणसहस्साइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

६ मदरस्स ण पव्वयस्स उत्तरिल्लाओ चरिमताओ दगसीमस्स आवासपव्वयस्स उत्तरिल्ले चरिमते, एस ण अट्ठासीइ जोयणसहस्साइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते° ॥

७ 'वाहिराओ ण'[2] उत्तराओ कट्ठाओ सूरिए पढम छम्मास अयमीणे[3] चोयालीसइमे मडलगते अट्ठासीति इगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता सूरिए चार चरइ ॥

८ दक्खिणकट्ठाओ ण सूरिए दोच्च छम्मास अयमीणे[4] चोयालीसतिमे मडलगते अट्ठासीई इगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता ण सूरिए चार चरइ ॥

एगूणणउइइमो समवाओ

१ उसभे ण अरहा कोसलिए इमीसे ओसप्पिणीए ततियाए समाए पच्छिमे भागे एगूणणउइए अद्धमासेहि सेसेहि कालगए वीइक्कते[5] •समुज्जाए छिण्णजाइ-जरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

२ समणे भगव महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउत्थीए समाए पच्छिमे भागे एगूणणउइए अद्धमासेहि सेसेहि कालगए[6] •वीइक्कते समुज्जाए छिण्णजाइ-जरामरणबधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

३ हरिसेणे ण राया चाउरतचक्कवट्टी एगूणणउइ वाससयाइ महाराया होत्था ॥

४. सतिस्स ण अरहओ एगूणणउई अज्जासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जासपया होत्था ॥

णउइइमो समवाओ

१. सीयले ण अरहा नउइ धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ॥

---

१ स० पा० —एव चउसुवि दिसासु नेयव्व ।

२ × (क, ग) ।

३. अयमाणे (क्व) ।

४. अयमाणे (क्व) ।

५ स० पा०—वीइक्कते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे । अत्र 'वीइक्कंते' इति विशेषण पूर्वागतविशेषणेभ्योतिरिक्तमस्ति, तेनास्य पूर्तिर्जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति (वक्षस्कार २) मनुसृत्य कृता समवायागसूत्रस्य वृत्तिकृतास्य सूत्रस्य पूर्तिरेव कृतास्ति—'जाव' त्तिकरणात् 'अतगडे सिद्धे बुद्धे मुत्ते' त्ति दृश्यम् ।

६ स० पा०—कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ।

२ अजियस्स ण अरहओ नउइ गणा नउइ गणहरा होत्था ॥
३ [1]°संतिस्स ण अरहओ नउइ गणा नउइ गणहरा होत्था° ॥
४. सयभुस्स ण वासुदेवस्स णउइवासाइ विजए होत्था ॥
५ सव्वेसि ण वट्टवेयड्डपव्वयाण उवरिल्लाओ सिहरतलाओ सोगधियकडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते, एस ण नउइ जोयणसयाइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

एक्काणउइइमो समवाओ

१. एक्काणउई परवेयावच्चकम्मपडिमाओ पण्णत्ताओ ॥
२ कालोए ण समुद्दे एक्काणउई जोयणसहस्साइ साहियाइ[2] परिक्खेवेण पण्णत्ते ॥
३. कुथुस्स ण अरहओ एक्काणउई आहोहियसया होत्था ॥
४ आउय-गोय-वज्जाण छण्ह कम्मपगडीण एक्काणउई उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ॥

बाणउइइमो समवाओ

१. बाणउइ पडिमाओ पण्णत्ताओ ॥
२ थेरे ण इदभूती बाणउइ वासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे[3] °मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे° ॥
३ मदरस्स ण पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागाओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमते, एस ण बाणउइ जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ॥
४ एव चउण्हपि आवासपव्वयाण ॥

तेणउइइमो समवाओ

१ चदप्पहस्स ण अरहओ तेणउइ गणा तेणउइ गणहरा होत्था ॥
२ सतिस्स ण अरहओ तेणउइ चउद्दसपुव्विसया होत्था ॥
३ तेणउइ मडलगते ण सूरिए अतिवट्टमाणे[4] निवट्टमाणे वा सम अहोरत्त विसम करेइ ॥

चउणउइइमो समवाओ

१ निसहनीलवतियाओ ण जीवाओ चउणउइ-चउणउइ जोयणसहस्साइ एक्क छप्पण्ण जोयणसय दोण्णि य एगूणवीसइभागे जोयणस्स आयामेण पण्णत्ताओ ॥
२ अजियस्स ण अरहओ चउणउइ ओहिनाणिसया होत्था ॥

---

१. स० पा०—एव सतिस्सवि ।
२ साहितेण (क) ।
३ स० पा०—बुद्धे ।
४ अनियट्टमाणे (क) ।

पंचाणउइइमा समवाओ

१. सुपासस्स ण अरहओ पचाणउइ गणा पचाणउइ गणहरा होत्था ।।

२ जबुद्दीवस्स ण दीवस्स चरिमताओ चउद्दिसि लवणसमुद्द पचाणउइ-पचाणउइ जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता चत्तारि महापायाला[1] पण्णत्ता, त जहा—वलयामुहे केउए[2] जूवते[3] ईसरे ।।

३ लवणसमुद्दस्स उभओपासपि पचाणउइ-पचाणउइ पदेसाओ उव्वेहुस्सेहपरिहाणीए[4] पण्णत्ताओ ।।

४ कुथू ण अरहा पचाणउइ वाससहस्साइ परमाउ पालइत्ता सिद्धे बुद्धे •मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ।।

५. थेरे ण मोरियपुत्ते पचाणउइवासाइ सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे[5] •बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ।।

छण्णउइइमो समवाओ

१ एगमेगस्स ण रण्णो चाउरतचक्कवट्टिस्स छण्णउइ-छण्णउइं गामकोडीओ होत्था ।।

२ वाउकुमाराण छण्णउइ भवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

३ ववहारिए[7] ण दडे छण्णउइ अगुलाई अगुलपमाणेण ।।

४ [8]•ववहारिए ण धणू छण्णउइ अगुलाइ अगुलपमाणेण ।।

५. ववहारिया ण नालिया छण्णउइ अगुलाइ अगुलपमाणेण ।।

६ ववहारिए ण जुगे छण्णउइ अगुलाइ अगुलपमाणेण ।।

७ ववहारिए ण अक्खे छण्णउइं अगुलाइ अगुलपमाणेण ।।

८ ववहारिए ण मुसले छण्णउइ अगुलाइ अगुलपमाणेणं° ।।

९. अब्भतराओ आतिमुहुत्ते छण्णउइ[9]-अंगुलछाए पण्णत्ते ।।

सत्ताणउइइमो समवाओ

१ मदरस्स ण पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमताओ गोथुभस्स ण आवास-

---

१. महापायालकलसा (क्व) ।
२ केऊते (ग) ।
३. जूयए (क्व) ।
४ वबुन्सह° (क), वहुस्सेह° (ग) ।
५ स० पा०—बुद्धे जाव प्पहीणे ।
६ स० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।
७ वावहारिए (क, ख) ।
८. स० पा०—एव धणू नालिया जुगे अक्ख मुसले वि ।
९ छण्णउइ (क, ख, ग) ।

पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमते, एस ण सत्ताणउइ जोयणसहस्साइ अवाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

२ एव चउदिसिंपि ॥

३ अट्ठण्ह कम्मपगडीण सत्ताणउइ उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ॥

४ हरिसेणे ण राया चाउरतचक्कवट्टी देसूणाइ सत्ताणउइ वाससयाइ अगारमज्भा-वसित्ता[1] मुडे भवित्ता ण अगाराओ[2] °अणगारिअ° पव्वइए ॥

अट्ठाणउइइमो समवाओ

१ नदणवणस्स ण उवरिल्लाओ चरिमताओ पडयवणस्स हेट्ठिल्ले चरिमते, एस ण अट्ठाणउइ जोयणसहस्साइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

२ मदरस्स ण पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमते, एस ण अट्ठाणउइ जोयणसहस्साइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

३ एव चउदिसिंपि ॥

४ दाहिणभरहद्धस्स[3] ण धणुपट्ठे[4] अट्ठाणउइ जोयणसयाइ किंचूणाइ आयामेण पण्णत्ते ॥

५ उत्तराओ ण कट्ठाओ सूरिए पढम छम्मास अयमीणे एगूणपचासतिमे[5] मडलगते अट्ठाणउइ एकसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता ण सूरिए चार चरइ ॥

६ दक्खिणाओ ण कट्ठाओ सूरिए दोच्च छम्मास अयमीणे एगूणपण्णासइमे मडल-गते अट्ठाणउइ एकसट्ठिभाए मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता ण सूरिए चार चरइ ॥

७ रेवईपढमजेट्ठपज्जवसाणाण[6] एगूणवीसाए नक्खत्ताण अट्ठाणउइ ताराओ तारग्गेण पण्णत्ताओ ॥

णवणउइइमो समवाओ

१ मदरे ण पव्वए णवणउइ जोयणसहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ते ॥

२ नदणवणस्स ण पुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ पच्चत्थिमिल्ले चरिमते, एस ण णवणउइ जोयणसयाइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

---

१ अगारवासमज्भा° (क, ग)।

२ स० पा०—अगाराओ जाव पव्वइए।

३ °भरहस्स (ख, ग), 'वेयड्ढस्स ण' मित्यादि य केपुचित्पुस्तकेपु दृश्यते सोऽप-पाठ (वृ)।

४ धणुपिट्ठे (क्व)।

५ एगूणपन्नासतिमे (ग), 'एकतालीसइमे' इति केपुचित्पुस्तकेपु दृश्यते सोऽपपाठ (वृ)।

६. °जेट्ठा° (क्व)।

३ [1]•नदणवणस्स ण दक्खिणिल्लाओ चरिमताओ उत्तरिल्ले° चरिमते, एम ण णवणउइ जोयणसयाइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

४ पढमे[2] सूरियमडले णवणउइ जोयणसहस्साइ साइरेगाइ आयामविक्खभेण पण्णत्ते ॥

५ दोच्चे सूरियमडले णवणउइ जोयणसहस्साइ साहियाइ[3] आयामविक्खभेण पण्णत्ते ॥

६ तइए सूरियमडले णवणउइ जोयणसहस्साइ साहियाइ आयामविक्खभेण पण्णत्ते ॥

७ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अजणस्स कडस्स हेट्ठिल्लाओ चरिमताओ वाणमतर-भोमेज्ज-विहाराण उवरिल्ले चरिमते, एस ण णवणउइ जोयणसयाइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

सततमो समवाओ

१ दसदसमिया ण भिक्खुपडिमा एगेण राइदियसतेण अद्धछट्ठेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्त[4] •अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आणाए° आराहिया यावि भवइ ॥

२ सयभिसयानक्खत्ते एक्कसयतारे पण्णत्ते ॥

३ सुविही पुप्फदते ण अरहा एग धणुसय उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ॥

४. पासे ण अरहा पुरिसादाणीए एक्क वाससय सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे[5] •बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

५ थेरे ण अज्जसुहम्मे, [6]•एक्क वाससय सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे° ॥

६ सव्वेवि ण दीहवेयड्ढपव्वया एगमेग गाउयसयं उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥

७. सव्वेवि ण चुल्लहिमवत-सिहरी-वासहरपव्वया एगमेग जोयणसय उड्ढ उच्चत्तेण, एगमेग गाउयसय उव्वेहेण पण्णत्ता ॥

८ सव्वेवि ण कचणगपव्वया एगमेग जोयणसय उड्ढ उच्चत्तेण, एगमेग गाउयसय उव्वेहेण, एगमेग जोयणसय मूले विक्खभेण पण्णत्ता ॥

---

१ स० पा०—एव दक्खिणिल्लाओ उत्तरे ।
२ पढम (वृ) ।
३ सातिरेगाइ (क) ।
४. स० पा०—अहासुत्त जाव आराहिया ।
५ स० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।
६ स० पा०—एव थेरे वि अज्जसुहम्मे ।

पइण्णगसमवाओ

१ चदप्पभे ण अरहा दिवड्ढ धणुसय उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ॥
२ आरणे कप्पे दिवड्ढ विमाणावाससय पण्णत्त ॥
३ एव अच्चुएवि ॥
४ सुपासे ण अरहा दो धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ॥
५ सव्वेवि ण महाहिमवत-रुप्पी-वासहरपव्वया दो-दो जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, दो-दो गाउयसयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता ॥
६ जबुद्दीवे ण दीवे दो कचणपव्वयसया पण्णत्ता ॥
७. पउमप्पभे ण अरहा अड्ढाइज्जाइ धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ॥
८. असुरकुमाराण देवाण पासायवडेसगा अड्ढाइज्जाइ जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥
९. सुमई ण अरहा तिण्णि धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ॥
१० अरिट्ठनेमी ण अरहा तिण्णि वाससयाइ कुमार[वास ?]मज्झावसित्ता मुडे भवित्ता [अगाराओ अणगारिअ ?] पव्वइए ॥
११. वेमाणियाण देवाण विमाणपागारा तिण्णि-तिण्णि जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥
१२ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स तिण्णि सयाणि चोद्दसपुव्वीण होत्था ॥
१३ पचधणुसइयस्स ण अतिमसारीरियस्स सिद्धिगयस्स सातिरेगाणि तिण्णि धणुसयाणि जीवप्पदेसोगाहणा पण्णत्ता ॥
१४ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स अद्धुट्ठसयाइ चोद्दसपुव्वीण सपया होत्था ॥
१५ अभिनदणे ण अरहा अद्धुट्ठाइ धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ॥
१६. सभवे ण अरहा चत्तारि धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ॥

१७ सव्वेवि ण णिसढ-नीलवता वासहरपव्वया चत्तारि-चत्तारि जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, चत्तारि-चत्तारि गाउयसयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता ।।

१८ सव्वेवि[1] ण वक्खारपव्वया णिसढ-नीलवतवासहरपव्वयनेण चत्तारि-चत्तारि जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, चत्तारि-चत्तारि गाउयसयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता ।।

१९ आणय-पाणएसु—दोसु कप्पेसु चत्तारि विमाणसया पण्णत्ता ।।

२० समणस्स ण भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वाईण सदेवमणुयासुरम्मि लोगम्मि वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसपया होत्था ।।

२१ अजिते ण अरहा अद्धपचमाइ धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।।

२२ सगरे ण राया चाउरतचक्कवट्टी अद्धपचमाइ धणुसयाइ उड्ढं उच्चत्तेण होत्था ।।

२३ सव्वेवि ण वक्खारपव्वया सीया-सीतोयाओ महानईओ मदर वा पव्वय पच-पच जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, पच-पच गाउयसयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता ।।

२४ सव्वेवि ण वासहरकूडा पच-पच जोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेण, मूले पच-पंच जोयणसयाइ विक्खभेण पण्णत्ता ।।

२५ उसभे ण अरहा कोसलिए पच धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

२६ भरहे ण राया चाउरतचक्कवट्टी पच धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।।

२७ सोमणस-गधमादण-विज्जुप्पभ-मालवता ण वक्खारपव्वया ण मंदरपव्वयतेण[2] पच-पच जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, पच-पच गाउयसयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता ।।

२८ सव्वेवि ण वक्खारपव्वयकूडा हरि-हरिस्सहकूडवज्जा पच-पच जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, मूले पच-पच जोयणसयाइ आयामविक्खभेण पण्णत्ता ।।

२९. सव्वेवि ण नदणकूडा बलकूडवज्जा पच-पच जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, मूले पच-पच जोयणसयाइ आयामविक्खभेण पण्णत्ता ।।

३०. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणा पच-पच जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।।

३१ सणकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु विमाणा 'छ-छ'[3] जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।।

३२. चुल्लहिमवतकूडस्स ण उवरिल्लाओ चरिमंताओ चुल्लहिमवतस्स वासहर-पव्वयस्स समे धरणितले, एस ण छ जोयणसयाइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।।

३३ एव सिहरीकूडस्सवि ।।

३४. पासस्स ण अरहओ छ सया वाईण सदेवमणुयासुरे लोए वाए अपराजिआण 'उक्कोसिया'[4] वाइसपया होत्था ।।

---

१ सव्वेवि य (क, ग) ।

२ मदिरेण (क) ।

३ छ (क, ग) ।

४. उक्कोस (क), उक्कोसा (ग) ।

३५ अभिचदे ण कुलगरे 'छ घणुसयाइ'[1] उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ॥

३६ वासुपुज्जे ण अरहा छहिं पुरिससएहिं सद्धिं[2] मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए ॥

३७ बभ-लतएसु कप्पेसु विमाणा सत्त-सत्त जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥

३८ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स सत्त जिणसया होत्था ॥

३९ समणस्स भगवओ महावीरस्स सत्त वेउव्वियसया होत्था ॥

४० अरिट्ठनेमी ण अरहा सत्त वाससयाइ देसूणाइ केवलपरियाग पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे[3] °मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

४१ महाहिमवतकूडस्स ण उवरिल्लाओ चरिमताओ महाहिमवतस्स वासहर-पव्वयस्स समे धरणितले, एस ण सत्त जोयणसयाइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

४२ एव रुप्पिकूडस्सवि ॥

४३ महासुक्क-सहस्सारेसु—दोसु कप्पेसु विमाणा अट्ठ-[अट्ठ ?] जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥

४४ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए पढमे कडे अट्ठसु जोयणसएसु वाणमतर-भोमेज्ज-विहारा पण्णत्ता ॥

४५ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स अट्ठसया अणुत्तरोववाइयाण देवाण गइ-कल्लाणाण ठिइकल्लाणाण आगमेसिभद्दाण उक्कोसिआ अणुत्तरोववाइयसपया[4] होत्था ॥

४६ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठहिं जोयणसएहिं सूरिए चार चरति ॥

४७ अरहओ ण अरिट्ठनेमिस्स अट्ठ सयाइ वाईण सदेवमणुयासुरम्मि लोगम्मि वाए अपराजियाण उक्कोसिया वाइसपया होत्था ॥

४८ आणय-पाणय-आरणच्चुएसु कप्पेसु विमाणा नव-नव जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥

४९ निसहकूडस्स[5] ण उवरिल्लाओ सिहरतलाओ णिसढस्स वासहरपव्वयस्स समे धरणितले, एस ण नव जोयणसयाइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

५०. एव नीलवतकूडस्सवि ॥

५१ विमलवाहणे ण कुलगरे ण नव धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ॥

५२ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नवहिं जोयणसएहिं सव्वुपरिमे ताराख्वे चार चरइ ॥

---

१ षट् धनु शतानि पचाशदधिकानि (वृ) ।

२. × (क, ग) ।

३ स० पा०—बुद्धे जाव प्पहीणे ।

४ अणुत्तरोववाइयाण सपया (ग) ।

५ निसभ° (क, ख, ग) ।

५३ निसढस्स ण वासवरपव्वयस्स उवरिल्लाओ सिहरतलाओ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए पढमस्स कडस्स बहुमज्झदेसभाए, एस ण नव जोयणसयाइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

५४ एव नीलवतस्सवि ॥

५५ सव्वेवि ण गेवेज्जविमाणा दस-दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥

५६ सव्वेवि ण जमगपव्वया दस-दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेणं, दस-दस गाउयसयाइ उव्वेहेण, मूले दस-दस जोयणसयाइ आयामविक्खभेण पण्णत्ता ॥

५७ एव चित्त-विचित्तकूडा वि भाणियव्वा ॥

५८ सव्वेवि ण[1] वट्टवेयड्ढपव्वया दस-दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, दस-दस गाउयसयाइ उव्वेहेण, सव्वत्थ समा पल्लगसठाणसठिया, मूले दस-दस जोयणसयाइ विक्खभेण पण्णत्ता ॥

५९ सव्वेवि ण हरि-हरिस्सहकूडा वक्खारकूडवज्जा[2] दस-दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, मूले दस जोयणसयाइ विक्खभेण पण्णत्ता ॥

६० एव बलकूडावि नदणकूडवज्जा ॥

६१ अरहा वि अरिट्ठनेमी दस वाससयाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे[3] °मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

६२ पासस्स ण अरहओ दस सयाइ जिणाण होत्था ॥

६३ पासस्स ण अरहओ दस अतेवासिसयाइ कालगयाइ[4] °वीइक्कताइ समुज्जयाइं छिण्णजाइजरामरणबधणाइ सिद्धाइ बुद्धाइ मुत्ताइ अतगडाइ परिणिव्वुयाइ° सव्वदुक्खप्पहीणाइ ॥

६४. पउमद्दह-पुडरीयद्दहा य दस-दस जोयणसयाइ आयामेण पण्णत्ता ॥

६५ अणुत्तरोववाइयाण देवाण विमाणा एक्कारस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥

६६ पासस्स ण अरहओ इक्कारससयाइ वेउव्वियाण होत्था ॥

६७ महापउम-महापुडरीयदहाण दो-दो जोयणसहस्साइ आयामेण पण्णत्ता ॥

६८ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए वइरकडस्स उवरिल्लाओ चरिमताओ लोहियक्खस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते, एस ण तिण्णि जोयणसहस्साइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

६९ 'तिगिच्छ-केसरिदहा ण'[5] चत्तारि-चत्तारि जोयणसहस्साइ आयामेण पण्णत्ता ॥

---

१ य ण (ग)।

२. वक्खारपव्वयकूड° (क)।

३ स० पा०—बुद्धे जाव सव्वदुक्ख°।

४. स० पा०—कालगयाइं जाव सव्वदुक्ख°।

५. °द्दहा ण दहा (क,ग), दहा ण दहा (ख)।

७० धरणितले मदरस्स ण पव्वयस्स वहुमज्झदेसभाए[1] रुयगनाभीओ[2] चउदिसिं[3] पच-पच जोयणसहस्साइं अवाहाए मदरपव्वए पण्णत्ते ।।

७१ सहस्सारे ण कप्पे छ विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता ।।

७२ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए रयणस्स कडस्स उवरिल्लाओ चरिमताओ पुलगस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते, एस ण सत्त जोयणसहस्साइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ।।

७३ हरिवास-रम्मया ण वासा अट्ठ-[अट्ठ ?] जोयणसहस्साइ साइरेगाइ वित्थरेण पण्णत्ता ।।

७४ दाहिणड्ढभरहस्स ण जीवा पाईणपडीणायया दुहओ समुद्द पुट्ठा नव जोयणसहस्साइ आयामेण पण्णत्ता ।।

७५ मदरे ण पव्वए धरणितले दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण पण्णत्ते ।।

७६ जवूदीवेण दीवे एग जोयणसयसहस्स आयामविक्खभेण पण्णत्ते ।।

७७ लवणे ण समुद्दे दो जोयणसयसहस्साइ चक्कवालविक्खभेण पण्णत्ते ।।

७८ पासस्स ण अरहओ तिण्णि सयसाहस्सीओ सत्तावीस च सहस्साइ उक्कोसिया साविया-सपया होत्था ।।

७९ धायइसडे ण दीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइ चक्कवालविक्खभेण पण्णत्ते ।।

८० लवणस्स ण समुद्दस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ पच्चत्थिमिल्ले चरिमते एस ण पच जोयणसयसहस्साइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ।।

८१ भरहे ण राया चाउरतचक्कवट्टी छ पुव्वसयसहस्साइ रायमज्झावसित्ता मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए ।।

८२ जवूदीवस्स ण दीवस्स पुरत्थिमिल्लाओ वेइयताओ धायसडचक्कवालस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमते, [एस ण ?] सत्त जोयणसयसहस्साइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ।।

८३ माहिंदे ण कप्पे अट्ठ विमाणावाससयसहस्साइ पण्णत्ताइ ।।

८४ अजियस्स ण अरहओ साइरेगाइं नव ओहिनाणिसहस्साइ[4] होत्था ।।

८५ पुरिससीहे ण वासुदेवे दस वाससयसहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता पचमाए पुढवीए नरएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ।।

८६ समणे भगव महावीरे तित्थगरभवग्गहणाओ छट्ठे पोट्टिलभवग्गहणे एग

---

१ °भागाओ उ (क) ।

२ रुवगणाभीतो (क) ।

३ °द्दिस (क), °द्दिसि (ग) ।

४ सतसहस्साइ (ग), अमितस्यार्हत सातिरेकाणि नवावधिज्ञानिसहस्राणि, अतिरेकश्चत्वारि शतानि, इद च सहस्रस्थानकमपि लक्षस्थानकाधिकारे यदधीत तत् सहस्रशब्दसाधर्म्याद्विचित्रत्वाद्वा सूत्रगतेर्लेखकदोषाद्वेति (वृ) ।

वासकोडिं सामण्णपरियागं पाउणित्ता सहस्सारे कप्पे सव्वट्ठे विमाणे देवत्ताए उववण्णे ॥

८७ उसभसिरिस्स भगवओ चरिमस्स य महावीरवद्धमाणस्स एगा सागरोवम-कोडाकोडी अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

दुवालसंग-पदं

८८ दुवालसंगे गणिपिडगे पण्णत्ते, तं जहा—आयारे सूयगडे ठाणे समवाए विआहपण्णत्ती णाया-धम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पण्हावागरणाइं विवागसुए दिट्ठिवाए ॥

८९ से किं तं आयारे ?

आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय-ट्ठाण-गमण-चंकमण-पमाण - जोगजुंजण-भासा-समिति-गुत्ती-सेज्जोवहि- भत्तपाण - उग्गम-*उप्पायणएसणाविसोहि - सुद्धासुद्धग्गहण - वय - णियम-तवोवहाण-सुप्पसत्थमा-*हिज्जइ। से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—णाणायारे दंसणायारे चरित्तायारे तवायारे वीरियायारे ।

आयारस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ ।

से णं अंगट्ठयाए पढमे अंगे दो सुयक्खंधा पणवीसं अज्झयणा पंचासीइं उद्देसणकाला पंचासीइं समुद्देसणकाला अट्ठारस पयसहस्साइं पदग्गेणं[1], संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ।

से एवं आया[2] एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । सेत्तं आयारे॥

९० से किं तं सूयगडे ?

सूयगडे णं ससमया सूइज्जंति परसमया सूइज्जंति ससमयपरसमया सूइज्जंति जीवा सूइज्जंति अजीवा सूइज्जंति जीवाजीवा सूइज्जंति 'लोगे सूइज्जंति अलोगे सूइज्जंति लोगालोगे सूइज्जंति'[3] ।

सूयगडे णं जीवाजीव-पुण्ण-पावासव-संवर-निज्जर-बंध-मोक्खावसाणा पयत्था सूइज्जंति, समणाणं अचिरकालपव्वइयाणं कुसमय-मोह-मोह-मइमोहियाणं संदेहजाय-सहजबुद्धि-परिणाम-संसइयाणं पावकर-मइलमइ-गुण-विसोहणत्थं

---

१ पयग्गेणं प° (ग) प्रायः सर्वत्र ।

२ आवा (क), आए (ग), इदं च सूत्रं पुस्तकेषु न दृष्टं, नन्द्यां तु दृश्यते इतीह व्याख्यातमिति (वृ) ।

३ लोगो° अलोगो° लोगालोगो° (ग) ।

'आसीतस्स किरियावादिसतस्स'[1] चउरासीए अकिरियवाईण[2], सत्तट्ठीए अण्णाणियवाईण, वत्तीसाए वेणइयवाईण—तिण्ह तेसट्ठाण[3] अण्णदिट्ठियसयाण वूह किच्चा ससमए ठाविज्जति। णाणादिट्ठतवयण-णिस्सार सुट्ठु दरिसयता विविहवित्थराणुगम-परमसब्भाव-गुण-विसिट्ठा मोक्खपहोयारगा उदारा अण्णाणतमधकारदुग्गेसु दीवभूता सोवाणा चेव सिद्धिसुगइघरुत्तमस्स णिक्खोभ-निप्पकपा सुत्तत्था।

सूयगडस्स ण परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा सखेज्जाओ पडिवत्तीओ सखेज्जा वेढा सखेज्जा सिलोगा सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ।

से ण अगट्ठयाए दोच्चे अगे दो सुयक्खधा तेवीस अज्झयणा तेत्तीस उद्देसणकाला तेत्तीस समुद्देसणकाला छत्तीस पदसहस्साइं पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा[4] •अणता गमा अणता पज्जवा° परित्ता तसा अणता थावरा सासया कडा णिवद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति[5] •पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति° उवदसिज्जति।

'से एव आया एव णाया एव विण्णाया'[6] एव चरण-करण-परूवणया आघविज्जति[7] •पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति°। सेत्त सूयगडे॥

९१. से किं त ठाणे?

ठाणे ण ससमया ठाविज्जति परसमया ठाविज्जति ससमयपरसमया ठाविज्जति जीवा ठाविज्जति अजीवा ठाविज्जति जीवाजीवा ठाविज्जति लोगे ठाविज्जति अलोगे ठाविज्जति लोगालोगे ठाविज्जति।

ठाणे ण दव्व-गुण-खेत्त-काल-पज्जव पयत्थाण—

संगहणी-गाहा

सेला सलिला य समुद्द-सूरभवणविमाण[8] आगर[9] णदीओ।
णिहओ[10] पुरिसज्जाया[11], सरा य गोत्ता य जोइसचाला॥१॥

---

१ असीति सयस्स किरियावादिण (ग)।
२. अकिरियादीण (ग)।
३. तेअट्ठाण (ग)।
४ स० पा०—अक्खरा त चेव जाव परित्ता।
५ स० पा०—आघविज्जति जाव उवदसिज्जति।
६ से एवं णाते एव विण्णाते (क, ग)।
७ स० पा०—आघविज्जति।
८ सूरा भवन विमाणा (क)।
९ आगरा (ख)।
१० णिवहो (क), णिधओ (ग)।
११. पुरसजोय (वृपा)।

एक्कविहवत्तव्वय दुविहवत्तव्वय जाव दसविहवत्तव्वय जीवाण पोग्गलाण 'य लोगट्ठाइण च''[1] परूवणया आघविज्जति ।

ठाणस्स ण परित्ता वायणा[2] •सखेज्जा अणुओगदारा सखेज्जाओ पडिवत्तीओ सखेज्जा वेढा° सखेज्जा सिलोगा सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ सखेज्जाओ सगहणीओ ।

से ण अगट्ठयाए तइए अगे एगे सुयक्खधे दस अज्झयणा एक्कवीस उद्देसणकाला एक्कवीस समुद्देसणकाला वावत्तरि पयसहस्साइ पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा[3] •अणता गमा अणता पज्जवा परित्ता तसा अणता थावरा सासया कडा णिवद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।

से एव आया एव णाया एव विण्णाया एव चरण-करण-परूवणया आघविज्जति[4] •पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति° । सेत्त ठाणे ॥

९२ से किं त समवाए[5] ?

समवाए ण ससमया सूइज्जति परसमया सूइज्जति ससमयपरसमया सूइज्जति जीवा सूइज्जति अजीवा सूइज्जति जीवाजीवा सूइज्जति लोगे सूइज्जति अलोगे सूइज्जति लोगालोगे सूइज्जति ।

समवाए ण एकादियाण एगत्थाण एगुत्तरियपरिवुड्ढीय[6], दुवालसगस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समणुगाइज्जइ[7], ठाणगसयस्स वारसविहवित्थरस्स सुयणाणस्स जगजीवहियस्स भगवओ समासेण समायारे आहिज्जति, तत्थ य णाणाविहप्पगारा जीवाजीवा य वण्णिया वित्थरेण अवरे वि य वहुविहा विसेसा नरग - तिरिय-मणुय - सुरगणाण अहारुस्सास - लेस-आवास-सख-आययप्पमाण उववाय-चयण-ओगाहणोहि-वेयण-विहाण-उवओग-जोग-इदिय-कसाय[8], विविहा य जीवजोणी विक्खभुस्सेह-परिरय-प्पमाणं विधिविमेसा य मदरादीण महीधराण कुलगर-तित्थगर-गणहराण समत्तभरहाहिवाण चक्कीण चेव चक्कहर-हलहराण य वासाण य निग्गमा य समाए ।

१ लोगट्ठाइ च ण (क, ख, ग), प्रतिपु 'लोगट्ठाइ च ण' पाठो लभ्यते। किन्तु वृत्त्यनुसारेण 'लोगट्ठाइण च' एव पाठो युज्यते। लिपिदोषेण वर्णविपर्ययो जात इति प्रतीयते।

२ स० पा०—वायणा जाव सखेज्जा ।

३ स० पा०—अक्खरा जाव चरण-करण ।

४. स० पा०—आघविज्जति ।

५ समाते (ख, वृ) ।

६ °परिवुड्ढिय (ख, वृ) ।

७ समणुवाइज्जइ (क) ।

८ कषाया-क्रोधादय आहारश्चोच्छ्वासश्चेत्यादिर्द्वन्द्वस्तत कषायशब्दात्प्रथमावहुवचनलोपो द्रष्टव्य (वृ) ।

एए अण्णे य एवमादित्थ वित्थरेण अत्था समासिज्जति[1]।

समवायस्स ण परित्ता वायणा[2] •सखेज्जा अणुओगदारा सखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा सखेज्जा सिलोगा सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ सखेज्जाओ सगहणीओ° ।

से ण अगट्ठयाए चउत्थे अगे एगे अज्झयणे एगे सुयक्खधे एगे उद्देसणकाले एगे समुद्देसणकाले एगे चोयाले पदसयसहस्से[3] पदग्गेण, 'सखेज्जाणि अक्खराणि'[4] •अणता गमा अणता पज्जवा परित्ता तसा अणता थावरा सासया कडा णिवद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।

से एव आया एव णाया एव विण्णाया एव चरण-करण-परूवणया आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति° । सेत्त समवाए ॥

९३ से कि त वियाहे ?

वियाहे ण ससमया वियाहिज्जति परसमया वियाहिज्जति ससमयपरसमया वियाहिज्जति जीवा वियाहिज्जति अजीवा वियाहिज्जति जीवाजीवा वियाहिज्जति लोगे वियाहिज्जइ अलोगे वियाहिज्जइ लोगालोगे वियाहिज्जइ ।

वियाहे ण नाणाविह-सुर-नरिंद-रायरिसि-विविहससइय-पुच्छियाण जिणेण[5] वित्थरेण[6] भासियाण दव्व-गुण-खेत्त-काल-पज्जव-पदेस-परिणाम-जहत्थिभाव-अणुगम-निक्खेव-णय-प्पमाण-सुनिउणोवक्कम[7]-विविहप्पगार[8]-पागड-पयसियाण[9] लोगालोग-पगासियाण ससारसमुद्द-रुद-उत्तरण-समत्थाण सुरपति-सपूजियाण भविय-जणपय-हिययाभिनदियाण तमरय-'विद्धसणाण सुदिट्ठ'[10]-'दीवभूय-ईहा-मतिवुद्धि-वद्धणाण'[11] छत्तीससहस्समणूणयाण वागरणाण दसणा[12] सुयत्थ-वहुविहप्पगारा सीसहियत्थाय गुणहत्था ।

वियाहस्स ण परित्ता वायणा[13] •सखेज्जा अणुओगदारा सखेज्जाओ पडिवत्तीओ सखेज्जा वेढा सखेज्जा सिलोगा सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ सखेज्जाओ सगहणीओ ।

---

१ समाहिज्जति (क, ग) ।
२ सं० पा०—वायणा जाव से ण ।
३ पदसहस्से (ग) ।
४ पूर्ववर्तित्रिपु सूत्रेषु 'सखेज्जा अक्खरा' इति विद्यते । स० पा०—अक्खराणि जाव सेत्त ।
५ जिणाण (क) ।
६. वित्थार (क), वित्थर (ख) ।
७ सुणिउणउवक्कम (क) ।
८ °प्पगारा (क) ।
९ वयसियाण (क) ।
१० विद्धसणाणसुदिट्ठ° (वृ), विद्धसणाण सुदिट्ठ° (वृपा) ।
११ दीवभूयाण (वृपा) ।
१२ दसणाओ (ग) ।
१३ स० पा०—वायणा जाव अगट्ठय ए ।

से ण० अगट्ठयाए पंचमे अगे एगे सुयक्खधे एगे साइरेगे अज्झयणसते दस उद्देसगसहस्साइ दस समुद्देसगसहस्साइ छत्तीसं वागरणसहस्साइ चउरासीई पयसहस्साइ पयग्गेण, सखेज्जाइ अक्खराइ अणता गमा[1] •अणता पज्जवा परित्ता तसा अणता थावरा० सासया कडा णिवद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति[2] •पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।

से एव आया एवं णाया एव विण्णाया० एव चरण-करण-परूवणया आघविज्जति[3] •पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति० ।

सेत्त वियाहे ।।

९४ से किं त 'नाया-धम्मकहाओ'[4] ?

नायाधम्मकहासु ण नायाण नगराइं उज्जाणाइ चेइआइ वणसडाइ रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ परियागा सलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइ पाओवगमणाइ देवलोगगमणाइ सुकुलपच्चायाती पुण वोहिलाभो अतकिरियाओ य आघविज्जति[5] •पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जंति निदसिज्जति उवदसिज्जति० ।

नाया-धम्मकहासु ण 'पव्वइयाण विणयकरण-जिणसामि-सासणवरे'[6] सजम-पइण्ण[7]-पालण[8]-धिइ-मइ - ववसाय - दुल्लभाण[9], तव-नियम-तवोवहाण-रण[10]-दुद्धरभर[11]-'भग्गा[12]-णिसहा[13]-णिसट्ठाण[14], घोरपरीसह-पराजिया[15]-ऽसह-पारद्ध-रुद्ध-सिद्धालयमग्ग - निग्गयाण, 'विसयसुह - तुच्छ'[16]-आसावस-दोस-मुच्छियाण विराहिय-चरित्त-नाण-दंसण-जइगुण-विविह-प्पगार-निस्सार-सुण्णयाण ससार-अपार-दुक्ख-दुग्गइ-भव-विविहपरपरा-पवचा[17] ।

---

१ स० पा०—अणता गमा जाव सासया ।
२ स० पा०—आघविज्जति जाव एव ।
३. स० पा०—आघविज्जति ।
४ णया० (क), प्राय सर्वत्र । नाय० (ग) ।
५ स० पा०—आघविज्जति जाव नाया० ।
६ समणाण विनयकरणजिणसासणमि पवरे (वृपा) ।
७ ०पतिण्णा (ग) ।
८ पायाल (वृ), पालण (वृपा) ।
९ दुव्वलाण (क, ख, वृपा) ।
१०. चरण (ग) ।
११. दुद्धारभर (ख, ग) ।
१२ भग्गाण (क) ।
१३. इह च प्राकृतत्वेन ककारलोपसन्धिकरणाभ्या भग्ना इत्यादौ दीर्घत्वमवसेयम् (वृ) ।
१४. निविट्ठाण (वृपा) ।
१५. पराजियाण (वृपा) ।
१६. विसवसुहमहेच्छतुच्छ (वृपा) ।
१७ पववा (क) ।

धीराण य जिय-परिसह-कसाय-सेण्ण-धिइ-धणिय-सजम-उच्छाह-निच्छियाण आराहिय - नाण - दसण-चरित्त - जोग-निस्सल्ल-सुद्ध-सिद्धालयमग्ग-मभिमुहाण सुरभवण-विमाण-सुक्खाइ अणोवमाइ भुत्तूण चिर च भोगभोगाणि ताणि दिव्वाणि महरिहाणि ततो य काल-क्कम-च्चुयाण जह य पुणो लद्धसिद्धिमग्गाण अतकिरिया ।

चलियाण य सदेव-माणुस्स-धीरकरण-करणाणि बोधण-अणुसासणाणि गुण-दोस-दरिसणाणि ।

दिट्ठते पच्चए य सोऊण लोगमुणिणो 'जह य ठिया'[1] सासणम्मि जर-मरण-नासणकरे ।

आराहिय-सजमा य सुरलोगपडिनियत्ता ओवेति जह सासय सिव सव्वदुक्ख-मोक्ख ।

एए अण्णे य एवमादित्थ वित्थरेण य ।

नाया-धम्मकहासु ण परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा[2] °सखेज्जाओ पडिवत्तीओ सखेज्जा वेढा सखेज्जा सिलोगा सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ° सखेज्जाओ सगहणीओ ।

से ण अगट्ठयाए छट्ठे अगे दो सुअक्खधा एगूणतीस[3] अज्झयणा, 'ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, त जहा—चरिता य कप्पिया य'[4] ।

दस धम्मकहाण वग्गा । तत्थ ण एगमेगाए धम्मकहाए पच-पच अक्खाइया-सयाइ । एगमेगाए अक्खाइयाए पच-पच उवक्खाइयासयाइ । एगमेगाए उव-क्खाइयाए पच-पच अक्खाइयउवक्खाइयासयाइ—एवामेव सपुव्वावरेण अद्धुट्ठाओ अक्खाइयकोडीओ भवतीति मक्खायाओ । एगूणतीस उद्देसणकाला एगूणतीस समुद्देसणकाला सखेज्जाइ पयसयसहस्साइ[5] पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा[6] °अणता गमा अणता पज्जवा परित्ता तसा अणता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ताभावा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।

से एव आया एव णाया एव विण्णाया एव° चरण-करण-परूवणया आघ-

---

१ जह ठिय (क), जह य ठिय (ग) ।
२ स० पा०—अणुओगदारा जाव सखेज्जाओ ।
३ एकूणवीस (क), एक्कूणवीस (ग), यत्र 'नातज्झयणा' तत्र 'एगूणवीस' इति पाठ· सम्यक् स्यात्। किन्तु यत्र केवल 'अज्झयणा' इति तत्र 'एगूणतीस' पाठो युज्यते। प्रयुक्त 'ग' प्रतिगतवृत्तौ 'एक्कूणतीसमज्झयण' त्ति पाठाशो लभ्यते । अध्ययनाना सामान्य-निरूपणे असौ सम्यक् प्रतिभाति ।
४ असौ पाठो वृत्तौ नास्ति व्याख्यात· ।
५ पयसहस्साइं (ख) ।
६. स० पा०—अक्खरा जाव चरण ।

विज्जति[1] °पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति° । सेत्तं णाया-धम्मकहाओ ॥

९५ से किं तं उवासगदसाओ ?

उवासगदसासु णं उवासयाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणसंडाइं रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा, उवासयाणं च सीलव्वय-वेरमण-गुण-पच्चक्खाण-पोसहोववास-पडिवज्जणयाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाओ उवसग्गा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं[2] पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईं पुण बोहिलाभो अंतकिरियाओ य आघविज्जति ।

उवासगदसासु णं उवासयाणं रिद्धिविसेसा परिसा वित्थर-धम्मसवणाणि बोहिलाभ-अभिगम[3]-सम्मत्तविसुद्धया थिरत्तं मूलगुणउत्तरगुणाइयारा ठिइविसेसा य बहुविसेसा पडिमाभिग्गहग्गहण-पालणा उवसग्गाहियासणा णिरुवसग्गा य, तवा य विचित्ता[4], सीलव्वय-'वेरमण-गुण'[5]-पच्चक्खाण-पोसहोववासा, अपच्छिम-मारणंतियाऽयसंलेहणा-झोसणाहिं अप्पाणं जह य भावइत्ता, बहूणि भत्ताणि अणसणाए य छेयइत्ता उववण्णा कप्पवरविमाणुत्तमेसु जह अणुभवंति सुरवर-विमाणवरपोंडरीएसु सोक्खाइं अणोवमाइं कमेण भोत्तूण उत्तमाइं, तओ आउ-क्खएण चुया समाणा जह जिणमयम्मि बोहिं लद्धूण य संजमुत्तमं तमरयोघ-विप्पमुक्का उवेंति जह अक्खयं सव्वदुक्खमोक्खं ।

एते अण्णे य एवमाइअत्था वित्थरेण य ।

उवासगदसासु णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा[6] °संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ° संखेज्जाओ संगहणीओ ।

से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा दस उद्देसणकाला दस समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं[7] पयग्गेणं, संखेज्जाइं अक्खराइं[8] °अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया° एवं चरण-करण-परूवणया आघ-

---

१ सं० पा०—आघविज्जति ।
२ भत्तपाण° (वृ) ।
३ अभिगमण (ग) ।
४ चित्ता (क, ख, ग) ।
५ गुण वेरमण (क, ख, ग) ।
६ सं० पा०—अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ ।
७. पयसहस्साइं (क, ख) ।
८. सं० पा०—अक्खराइं जाव एवं चरण ।

विज्जति[1] •पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति°।
सेत्त उवासगदसाओ ॥

९६ से किं त अतगडदसाओ ?

अतगडदसासु ण अतगडाण नगराइ उज्जाणाइ चेइयाइ वणसडाइ रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइ धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ पडिमाओ वहुविहाओ, खमा अज्जव मद्दव च, सोअ च सच्चसहिय, सत्तरसविहो य सजमो उत्तम च वभ, आकिंचणया तवो चियाओ[2] समिइगुत्तीओ चेव, तह[3] अप्पमाय-जोगो, सज्झायज्झाणाण य उत्तमाण दोण्हपि लक्खणाइ ।

पत्ताण य सजमुत्तम जियपरीसहाण चउव्विहकम्मक्खयम्मि जह केवलस्स लभो, परियाओ जत्तिओ य जह पालिओ[4] मुणिहिं, पायोवगओ य जो जहिं जत्तियाणि भत्ताणि छेयइत्ता अतगडो मुणिवरो तमरयोघविप्पमुक्को[5], मोक्खसुहमणुत्तर च पत्ता[6] ।

एए अण्णे य एवमाइअत्था वित्थारेण परूवेई[7]।

•अतगडदसासु ण परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा सखेज्जाओ पडिवत्तीओ सखेज्जा वेढा सखेज्जा सिलोगा सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ सखेज्जाओ सगहणीओ° ।

से ण अगट्ठयाए अट्ठमे अगे एगे सुयक्खधे दस अज्झयणा सत्त वग्गा दस उद्देसण-काला दस समुद्देसणकाला सखेज्जाइ पयसयसहस्साइं[8] पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा[9] •अणता गमा अणता पज्जवा परित्ता तसा अणता थावरा सासया कडा णिवद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ताभावा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।

से एव आया एव णाया एव विण्णाया° एव चरण-करण-परूवणया आघ-

---

१ स० पा०—आघविज्जति ।

२ चियातो किरियाओ (क), किरियाओ (ख), चाओ किरियाओ (ग) ।

३ तह य (ग) ।

४. परिपालिओ (ग) ।

५ °मुक्का (ख, ग), अत्र प्रस्तुतपाठस्य क्रमेण 'अतगडा मुणिवरा तम-रयोघ-विप्पमुक्का' इति पाठो युज्यते, किन्तु वृत्तिकारस्य सम्मुखे 'अतगडो मुणिवरो तम-रयोघ-विप्पमुक्को' इति पाठ आसीत् तेन वृत्तिकारेण अत्रैकवचन व्याख्यातम्, 'पत्ता' अत्र च वहुवचनम् । १२८ सूत्रे 'अतगडा मुणिवरुत्तमा तम-रओघ-विप्प-मुक्का' इति पाठो लभ्यते, तत पूर्वोक्ता-नुमानस्य पुष्टिर्जायते ।

६ पत्तो (ग) ।

७ स० पा०—परूवेई जाव से ण ।

८ पयसहस्साइ (ख) ।

९ स० पा०—अक्खरा जाव एव चरण ।

विज्जति[1], °पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति°। सेत्त अंतगडदसाओ ॥

९७. से किं त अणुत्तरोववाइयदसाओ ?
अणुत्तरोववाइयदसासु ण अणुत्तरोववाइयाण नगराइ उज्जाणाइ चेइयाइ वणसडाइ रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइ धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइया इड्डिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ परियागा[2] सलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइ[3] पाओवगमणाइ अणुत्तरोववत्ति[4] सुकुल-पच्चायाती पुण वोहिलाभो अतकिरियाओ य आघविज्जति।

'अणुत्तरोववातियदसासु ण'[5]तित्थकरसमोसरणाइ परममगल्लजगहियाणि जिणातिसेसा य वहुविसेसा जिणसीसाणं चेव समणगणपवरगधहत्थीणं थिरजसाण[6] परिसहसेण्ण-रिउ-वल-पमद्दणाण 'तव-दित्त'[7]-चरित्त-णाण-सम्मत्तसार-विविहप्पगार-वित्थर-पसत्थगुण-सजुयाण[8] अणगारमहरिसीण अणगारगुणाण वण्णओ, उत्तमवरतव-विसिट्ठणाण-जोगजुत्ताण जह य जगहिय भगवओ जारिसा य रिद्धिविसेसा देवासुरमाणुसाण परिसाण पाउब्भावा य जिणसमीव, जह य उवासति जिणवर, जह य परिकहेति धम्म लोगगुरू अमरनरसुरगणाण[9], सोऊण य तस्स भासिय अवसेसकम्म[10]-विसयविरत्ता नरा जह अब्भुवेंति धम्ममुराल सजम तव चावि वहुविहप्पगार, जह वहूणि वासाणि अणुचरित्ता आराहिय-नाण-दसण-चरित्त-जोगा 'जिणवयणमणुगय-महियभासिया'[11] जिणवराण हियएणमणुणेत्ता, जे य जहिं जत्तियगणि भत्ताणि छेयइत्ता लद्धूण य समाहिमुत्तम झाणजोगजुत्ता उववण्णा मुणिवरोत्तमा[12] जह अणुत्तरेसु पावति जह अणुत्तर तत्थ विसयसोक्ख, तत्तो य चुया कमेण काहिंति सजया जह य अतकिरिय।

एए अण्णे य एवमाइअत्था वित्थरेण।

अणुत्तरोववाइयदसासु ण परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा[13] °सखेज्जाओ पडिवत्तीओ सखेज्जा वेढा सखेज्जा सिलोगा सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ° सखेज्जाओ सगहणीओ।

---

१ स० पा०—आघविज्जति।
२. पडिमाओ (क, ख, ग)।
३ भत्तपाण° (क्व)।
४ अणुत्तरोववाओ (क्व)।
५ अणुत्तरोववाइयदसाण (क)।
६ थेर° (क), विर° (ग)।
७. दवदित्त (वृ), तवदित्त (वृपा)।
८ ज्झयाण (ग, वृपा)।
९ °नरासुरा° (क)।
१०. °कम्मा (क, ख, ग)।
११ जिणवयणानुगइसुभासिया (वृपा)।
१२ मुणिपवरुत्तमा (क)।
१३. स० पा०—अणुओगदारा सखेज्जाओ।

से ण अगट्ठयाए नवमे अगे एगे सुयक्खधे दस अज्झयणा तिण्णि वग्गा दस उद्दे-सणकाला दस समुद्देसणकाला सखेज्जाइ पयसयसहस्साइ[1] पयग्गेण, सखेज्जाणि अक्खराणि[2] °अणता गमा अणता पज्जवा परित्ता तसा अणता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।

से एव आया एव णाया एव विण्णाया° एव चरण-करण-परूवणया आघ-विज्जति[3] °पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति°। सेत्त अणुत्तरोववाइयदसाओ ॥

९८ से किं त पण्हावागरणाणि ?

पण्हावागरणेसु अट्ठुत्तर पसिणसय अट्ठुत्तर अपसिणसय अट्ठुत्तर पसिणा-पसिणसय विज्जाइसया, नागसुवण्णेहिं सद्धि दिव्वा सवाया आघविज्जति ।

पण्हावागरणदसासु ण ससमय-परसमय-पण्णवय-पत्तेयबुद्ध-विविहत्थ[4]-भासा-भासियाण अतिसय-गुण-उवसम-णाणप्पगार-आयरिय-भासियाण वित्थरेण वीरमहेसीहिं[5] विविहवित्थर-भासियाण च जगहियाण अद्दागगुट्ठ-बाहु-असि-मणि-खोम-आतिच्चमातियाण विविहमहापसिणविज्जा-मणपसिणविज्जा-देवय-पओगपहाण-गुणप्पगासियाण सब्भूयविगुणप्पभाव[6]-नरगणमइ-विम्हयकारीण[7] अतिसयमतीतकालसमए दमतित्थकरुत्तमस्स ठितिकरण[8]-कारणाण दुरहिगम-दुरवगाहस्स[9] सव्वसव्वण्णुसम्मयस्स बुहजणविबोहकरस्स[10] पच्चक्खय-पच्चय-कराण पण्हाण विविहगुणमहत्था जिणवरप्पणीया आघविज्जति ।

पण्हावागरणेसु ण परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा[11] °सखेज्जाओ पडिव-त्तीओ सखेज्जा वेढा सखेज्जा सिलोगा सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ° सखेज्जाओ सगहणीओ ।

से णं अगट्ठयाए दसमे अगे 'एगे सुयक्खधे [पणयालीस अज्झयणा'[12]] पणया-लीस उद्देसणकाला पणयालीस समुद्देसणकाला सखेज्जाणि पयसयसहस्साणि[13]

---

१. पयसहस्साइ (ख, ग) ।
२ स० पा०—अक्खराणि जाव एव चरण ।
३. स० पा०—आघविज्जति ।
४. विवित्था (क) ।
५ थिर° (वृ), वीर° (वृपा) ।
६. °विविहगुण° (वृपा), °दुगुण° (क्व) ।
७. °करीण (ख) ।
८. थिति° (क), थिर° (ग) ।
९ दुरोवगाहस्स (क) ।
१० °विबोधन° (वृ) ।
११ स० पा०—अणुओगदारा जाव सखेज्जाओ ।
१२ यद्यपि समवायागादर्शेषु नैष पाठो लभ्यते, किन्तु उद्देशनकालात्पूर्वं अध्ययनाना सख्या निर्दिश्यते, नन्दी सूत्रेऽपि प्रश्नव्याकरण-विवरणे पाठोऽसौ लभ्यते, तेनात्रासौ युज्यते ।
१३ पयसहस्साणि (ख) ।

पयग्गेण, संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा[1] °अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ।।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं° चरण-करण-परूवणया आघविज्जंति[2] °पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति° । सेत्तं पण्हावागरणाइं ।।

९९ से किं तं विवागसुए[3] ?

विवागसुए णं सुक्कडदुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जंति।

से समासओ दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दुहविवागे चेव, सुहविवागे चेव ।

तत्थ णं दह दुहविवागाणि दह सुहविवागाणि ।

से किं तं दुहविवागाणि ?

दुहविवागेसु णं दुहविवागाणं[4] नगराइं 'उज्जाणाइं चेइयाइं'[5] वणसंडाइं रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ नगरगमणाइं[6] संसारपवंधे[7] दुहपरंपराओ य आघविज्जंति । सेत्तं दुहविवागाणि ।

से किं तं सुहविवागाणि ?

सुहविवागेसु सुहविवागाणं नगराइं[8] °उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया° धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा[9] संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाती पुण बोहिलाभो अंतकिरियाओ य आघविज्जंति।

दुहविवागेसु णं पाणाइवाय-अलियवयण-चोरिक्क-करण-परदार-मेहुण-ससंगयाए[10] महतिव्वकसाय-इंदियप्पमाय[11]-पावप्पओय-असुहज्झवसाण-संचियाणं[12] कम्माणं पावगाणं पाव-अणुभाग-फलविवागा णिरयगति[13]-तिरिक्खजोणि-बहुविह-वसण-सय-परंपरा-पबद्धाणं, मणुयत्तेवि आगयाणं जहा पावकम्मसेसेण पावगा होंति फलविवागा ।

वहवसणविणास -नासकण्णोट्ठंगुट्ठकरचरणनहच्छेयण -जिब्भछेयण[14]- अंजण-कड-

१. सं० पा०—गमा जाव चरण ।
२ सं० पा०—आघविज्जति ।
३ °सुय (क) ।
४. × (क, ख) ।
५ चेइयाइं उज्जाणाइं (क, ख, ग) ।
६ णरगगमणाइं (क, ख) ।
७ °पवंच (क, ख) ।
८ सं० पा०—नगराइं जाव धम्मकहाओ ।
९ पडिमाओ (ग) ।
१० °गताओ (क) ।
११ °प्पवाद (क) ।
१२ संट्ठियाण (ग) ।
१३ णरय° (क, ग) ।
१४ जति° (ग) ।

ग्गिदाहण-गयचलण-मलणफालणउत्तवण[1]-सूललयालउडलट्ठिभजण-तउसीसग-तत्ततेल्लकलकलअभिसिचण-कुभिपाग-कपण-थिरवधण-वेह-वज्झ-कत्तण-पतिभयकर-करपलीवणादिदारुणाणि दुक्खाणि अणोवमाणि वहुविविहपरपराणुवद्धा ण मुच्चति पावकम्मवल्लीए। अवेयइत्ता हु णत्थि मोक्खो तवेण धिइ-धणिय-वद्ध-कच्छेण सोहण तस्स वावि होज्जा।

एत्तो य सुहविवागेसु सील-सजम-णियम-गुण-तवोवहाणेसु साहुसु सुविहिएसु अणुकपाऽऽसयप्पओग-तिकाल-मइविसुद्ध-भत्तपाणाइ पयतमणसा हिय-सुह-नीसेस-तिव्वपरिणाम-निच्छियमई पयच्छिऊण पओगसुद्धाइ जह य निव्वत्तेति उ वोहिलाभ, जह य परित्तीकरेति नर-निरय-तिरिय-सुरगतिगमण[2]-विपुलपरियट्ट-अरति-भय-विसाय-सोक-मिच्छत्त-सेल-सकड अण्णाणतमधकार-चिक्खिल्ल-सुदुत्तार जर-मरण-जोणि-सखुभियचक्कवाल सोलसकसाय-सावय-पयड-चड अणाइय अणवदग्ग ससारसागरमिण, जह य निवधति आउग सुरगणेसु, जह य अणुभवति सुरगणविमाणसोक्खाणि अणोवमाणि, ततो य कालतरच्चुआण इहेव नरलोगमागयाण आउ-वउ-वण्ण-रूव-जाति-कुल-जम्म-आरोग्ग-वुद्धि-मेहा-विसेसा मित्तजण-सयण-धण-धण्ण-विभव-समिद्धिसार-समुदयविसेसा वहुविह-कामभोगुब्भवाण सोक्खाण सुहविवागोत्तमेसु।

अणुवरयपरपराणुवद्धा असुभाण सुभाण चेव कम्माण भासिआ वहुविहा विवागा विवागसुयम्मि भगवया जिणवरेण सवेगकारणत्था।

'अण्णेवि य एवमाइया, वहुविहा वित्थरेण अत्थपरूवणया आघविज्जति'[3]।

विवागसुअस्स ण परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा[4] °सखेज्जाओ पडिवत्तीओ सखेज्जा वेढा सखेज्जा सिलोगा सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ° सखेज्जाओ सगहणीओ।

---

१ °चलपरिमलण° (ग)।

२ सुगति° (क, ग)।

३ सू० ९२ एए अण्णे य एवमादित्थ वित्थरेण अत्था समासिज्जति।

सू० ९४ एए अण्णे य एवमादित्थ वित्थरेण य।

सू० ९५ एते अण्णे य एवमाइअत्था वित्थरेण य।

सू० ९६ एए अण्णे य एवमाइअत्था वित्थरेण।

सू० ९७ एए अण्णे य एवमाइअत्था वित्थारेण।

सू० ९९ अण्णेवि एवमाइया, वहुविहा वित्थरेण अत्थपरूवणया आघविज्जति।

एतेपु पाठेपु किञ्चित् परिवर्तन दृश्यते। अर्थसापेक्षत्वेनेद कृतमस्ति अथवा लिपिदोषेण जातमिति वक्तु न शक्यम्। सर्वत्रापि आख्यायन्ते इति क्रियाशेपो ज्ञातव्य। वृत्तिकृता 'अण्णे वि एवमाइया' इति पाठ वहुवचनत्वेन व्याख्यात। शेषपाठ एकवचनत्वेन व्याख्यात। तथा च वृत्ति—अन्येपि चैवमादिका आख्यायन्त इति पूर्वोक्तक्रियया वचनपरिणामाद्वोत्तरक्रियया योग एव च वहुविधा विस्तरेणार्थप्ररूपणता आख्यायत इति (वृ)।

४ स० पा०—अणुओगदारा जाव सखेज्जाओ।

से णं अंगट्ठयाए एक्कारसमे अंगे वीसं अज्झयणा वीसं उद्देसणकाला वीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं[1] पयग्गेणं, संखेज्जाणि अक्खराणि[2] •अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया° एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जंति[3] •पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति°। सेत्तं विवागसुए ॥

१०० से किं तं दिट्ठिवाए?

दिट्ठिवाए णं सव्वभावपरूवणया आघविज्जति। से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—परिकम्मं सुत्ताइं पुव्वगयं अणुओगे चूलिया ॥

१०१. से किं तं परिकम्मे?

परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—१ सिद्धसेणियापरिकम्मे २. मणुस्ससेणियापरिकम्मे ३ पुट्ठसेणियापरिकम्मे[4] ४. ओगाहणसेणियापरिकम्मे ५. उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ६ विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ७ चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ॥

१०२ से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे?

सिद्धसेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—१. माउयापयाणि २. एगट्ठियपयाणि ३ 'अट्ठपयाणि ४ पाढो'[5] ५ आगासपयाणि ६. केउभूयं[6] ७. रासिबद्धं ८ एगगुणं ९ दुगुणं १० तिगुणं ११ केउभूयपडिग्गहो १२ संसारपडिग्गहो १३ नंदावत्तं १४ सिद्धावत्तं[7]। सेत्तं सिद्धसेणियापरिकम्मे ॥

१०३ से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे?

मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—[8]•१ माउयापयाणि २ एगट्ठियपयाणि ३ अट्ठपयाणि ४ पाढो ५. आगासपयाणि ६ केउभूयं ७ रासिबद्धं ८ एगगुणं ९ दुगुणं १० तिगुणं ११ केउभूयपडिग्गहो १२ संसारपडिग्गहो° १३ नंदावत्तं १४. मणुस्सावत्तं[9]। सेत्तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे ॥

---

१ पयसहस्साइं (क, ख, ग)।

२. सं० पा०—अक्खराणि जाव एवं।

३ सं० पा०—आघविज्जंति।

४. वुद्धा° (क)।

५. पादो अद्धपयाणि (क), पढो अट्ठापयाणि (ख), पाढो अट्ठपयाणि (ग)।

६ केउव्वयं (ग)।

७ सिद्धावद्धं (क)।

८ सं० पा०—ताइं चेव माउयापयाणि जाव नंदावत्तं।

९ मणुस्सावट्टं (क), मणुस्सबद्धं (ग)।

१०४. [1]°से किं त पुट्ठसेणियापरिकम्मे ?
पुट्ठसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, त जहा—१ पाढो २ आगासपयाणि ३. केउभूय ४ रासिवद्ध ५ एगगुण ६ दुगुण ७ तिगुण ८ केउभूयपडिग्गहो ९ ससारपडिग्गहो १० नदावत्त ११ पुट्ठावत्त । सेत्त पुट्ठसेणियापरिकम्मे ।।

१०५ से किं त ओगाहणसेणियापरिकम्मे ?
ओगाहणसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, त जहा—१ पाढो २ आगासपयाणि ३ केउभूय ४ रासिवद्ध ५. एगगुण ६ दुगुण ७ तिगुण ८ केउभूयपडिग्गहो ९ ससारपडिग्गहो १० नदावत्त ११. ओगाहणावत्त । सेत्त ओगाहणसेणियापरिकम्मे ।।

१०६. से किं त उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे ?
उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, त जहा—१ पाढो २ आगासपयाणि ३. केउभूय ४ रासिवद्ध ५ एगगुण ६ दुगुण ७ तिगुण ८. केउभूयपडिग्गहो ९ ससारपडिग्गहो १०. नदावत्त ११ उवसपज्जणावत्तं । सेत्त उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ।।

१०७ से किं त विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ?
विप्पजहणसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, त जहा—१ पाढो २ आगासपयाणि ३ केउभूय ४. रासिवद्ध ५ एगगुणं ६ दुगुण ७. तिगुण ८ केउभूयपडिग्गहो ९ ससारपडिग्गहो १० नदावत्त ११ विप्पजहणावत्त । सेत्त विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ।।

१०८ से किं त चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ?
चुयाचुयसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, त जहा—१ पाढो २ आगासपयाणि ३ केउभूय ४ रासिवद्ध ५ एगगुण ६ दुगुण ७ तिगुण ८ केउभूयपडिग्गहो ९ ससारपडिग्गहो १० नदावत्त ११ चुयाचुयावत्त । सेत्त चुयाचुयसेणियापरिकम्मे° ।।

१०९. इच्चेयाइ सत्त परिकम्माइ छ ससमइयाणि सत्त [2]आजीवियाणि, छ चउक्कणइयाणि' सत्त तेरासियाणि । एवामेव सपुव्वावरेण सत्त परिकम्माइ तेसीति[3] भवतीति मक्खायाइ । सेत्त परिकम्मे[4] ।।

---

१. सं० पा०—अवसेसाइ परिकम्माइ पाढाइयाइ एक्कारसविहाइ पण्णत्ताइ ।
२ × (क) ।
३. × (क, ग) ।
४ परियम्माणि (क), परिकम्माणि (ग) ।

११० से किं त सुत्ताइ ?
सुत्ताइ अट्ठासीतिभवतीति मक्खायाइ, त जहा—१. उज्जुग[1] २. परिणयापरिणय ३ बहुभंगिय ४ विजयचरिय[2] ५ अणतर ६ परपर ७ सामाण[3] ८ संजूहं ९ भिण्ण[4] १० आहच्चाय[5] ११. सोवत्थिय घट १२ नदावत्त १३ बहुल १४ पुट्ठापुट्ठ[6] १५ वियावत्त १६ एवभूय १७ दुआवत्त १८ वत्तमाणुप्पय[7] १९ समभिरूढ २० सव्वओभद्द २१ पण्णास[8] २२ दुपडिग्गह ॥

१११ इच्चेयाइ बावीस सुत्ताइ छिण्णछेयनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए ।
इच्चेयाइ बावीस सुत्ताइ अछिण्णछेयनइयाणि आजीवियसुत्तपरिवाडीए ।
इच्चेयाइ बावीस सुत्ताइ तिकनयाणि तेरासियसुत्तपरिवाडीए ।
इच्चेयाइ बावीस सुत्ताइ चउक्कनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए ।
एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठासीति सुत्ताइ भवतीति मक्खायाणि[9] । सेत्त सुत्ताइ ॥

११२ से किं त पुव्वगए ?
पुव्वगए चउद्दसविहे पण्णत्ते, त जहा—१ उप्पायपुव्व २. अग्गेणीय ३ वीरिय ४ अत्थिणत्थिप्पवाय ५ नाणप्पवाय ६ सच्चप्पवाय ७ आयप्पवाय ८ कम्मप्पवाय ९ पच्चक्खाण[10] १० विज्जाणुप्पवाय[11] ११ अवझ १२ पाणाउ १३ किरियाविसाल १४ लोगबिंदुसार ॥

११३ उप्पायपुव्वस्स ण दस वत्थू, चत्तारि चुलियावत्थू पण्णत्ता ॥
११४ अग्गेणियस्स ण पुव्वस्स चोद्दस वत्थू, बारस चूलियावत्थू पण्णत्ता ॥
११५ वीरियस्स ण पुव्वस्स अट्ठ वत्थू, अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता ॥
११६ अत्थिणत्थिप्पवायस्स ण पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू, दस चूलिया वत्थू पण्णत्ता ॥
११७ नाणप्पवायस्स ण पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ॥
११८ सच्चप्पवायस्स ण पुव्वस्स दो वत्थू पण्णत्ता ॥
११९ आयप्पवायस्स ण पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता ॥
१२० कम्मप्पवायस्स ण पुव्वस्स तीस वत्थू पण्णत्ता ॥
१२१ पच्चक्खाणस्स ण पुव्वस्स वीस वत्थू पण्णत्ता ॥
१२२ विज्जाणुप्पवायस्स[12] ण पुव्वस्स पनरस वत्थू पण्णत्ता ॥
१२३ अवझस्स ण पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ॥
१२४ पाणाउस्स ण पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता ॥

---

१ उज्जग (क, ग) ।
२ विपच्चविय (क, ग) ।
३ समाण (ख) ।
४ सभिण्ण (ख) ।
५ अहच्चाय (ख) ।
६ पुढपुट्ठ (क) ।
७ वत्तमाणुपय (ख) ।
८ पसण (क), पणस (ग) ।
९ मक्खाइयाइ (ग) ।
१० पच्चक्खाणप्पवाय (ग) ।
११ अणुप्पवाय (क, ग) ।
१२ अणु० (क, ख, ग) ।

१२५ किरियाविसालस्स ण पुव्वस्स तीस वत्थू पण्णत्ता ॥
१२६ लोयविंदुसारस्स ण पुव्वस्स पणुवीस[1] वत्थू पण्णत्ता ॥

दस चोद्दस अट्ठट्ठारसेव बारस दुवे य वत्थूणि ।
सोलस तीसा वीसा, पण्णरस अणुप्पवायम्मि ॥१॥
बारस एक्कारसमे, बारसमे तेरसेव वत्थूणि ।
तीसा पुण तेरसमे, चोदसमे पण्णवीसाओ ॥२॥
चत्तारि दुवालस अट्ठ, चेव दस चेव चूलवत्थूणि ।
आतिल्लाण चउण्ह, सेसाण चूलिया णत्थि ॥३॥

—सेत्त पुव्वगए[2] ॥

१२७ से किं त अणुओगे ?
अणुओगे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—मूलपढमाणुओगे य गडियाणुओगे य[3] ॥

६२८ से किं त मूलपढमाणुओगे ?
मूलपढमाणुओगे—एत्थ ण[4] अरहताण भगवताण पुव्वभवा, देवलोगगमणाणि, आउ, चवणाणि[5], जम्मणाणि य अभिसेया, रायवरसिरीओ, सीयाओ पव्वज्जाओ, तवा य भत्ता, केवलणाणुप्पाता[6], तित्थपवत्तणाणि य, सघयण, सठाण, उच्चत्त, आउय[7], वण्णविभातो[8], सीसा, गणा, गणहरा य, अज्जा, पवत्तिणीओ—सघस्स चउव्विहस्स ज वावि परिमाण, 'जिण-मणपज्जव-ओहिनाणी'[9], सम्मत्तसुयनाणिणो य, वाई, अणुत्तरगई य 'जत्तिया, जत्तिया'[10] सिद्धा, 'पातोवगता य'[11] जे[12]जहिं जत्तियाइ भत्ताइ छेयइत्ता अतगडा[13] मुणिवरुत्तमा[14] तम-रओघ-विप्पमुक्का सिद्धिपहमणुत्तर[15] च पत्ता ।
एए अण्णे य एवमादी भावा मूलपढमाणुओगे कहिया आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति । सेत्त मूलपढमाणुओगे ॥

१२९. से किं त गडियाणुओगे ?
गडियाणुओगे अणेगविहे पण्णत्ते, त जहा—कुलगरगडियाओ, तित्थगरगडियाओ,

---

१ पुणवीस (ग) ।
२. पुव्वगय (क, ग) ।
३ × (क) ।
४ सा (ग) ।
५. चयणाणि (क, ख) ।
६ °णुपातपा (ग) ।
७ आउ (क) ।
८ अण्ण° (क) ।
९ °पज्जयतोहिणाणि (क), °पव्वज्जातोहिणाणि (ग) ।
१० जित्तिया जित्तिया (ग) ।
११ °गतो (क), °गतो य (ख) ।
१२ जो (क, ख, ग) ।
१३ अतकडो (क, ख), अतगडो (ग) ।
१४ °त्तमो (क, ख, ग) ।
१५ सिद्ध° (ग) ।

गणधरगडियाओ चक्कवट्टिगडियाओ, दसारगडियाओ, बलदेवगडियाओ, वासुदेवगडियाओ, हरिवसगडियाओ, भद्दबाहुगडियाओ, तवोकम्मगडियाओ, चित्ततरगडियाओ, उस्सप्पिणीगडियाओ, ओसप्पिणगडियाओ, अमर-नर-तिरिय-निरय-गइ-गमण-विविह-परियट्टणाणुओगे, एवमाइयाओ गडियाओ आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति । सेत्त गडियाणुओगे ॥

१३० से कि त 'चूलियाओ ?
चूलियाओ'—आइल्लाण चउण्ह पुव्वाणं चूलियाओ, सेसाइ पुव्वाइ अचूलियाइ । सेत्त चूलियाओ' ॥

१३१ दिट्ठिवायस्स ण परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा' °संखेज्जाओ पडिवत्तीओ सखेज्जा वेढा सखेज्जा सिलोगा° संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ सखेज्जाओ सगहणीओ ।
से ण अगट्ठयाए बारसमे अगे एगे सुयखधे चोद्दस पुव्वाइ सखेज्जा वत्थू सखेज्जा चूलवत्थू' सखेज्जा पाहुडा संखेज्जा पाहुडपाहुडा संखेज्जाओ पाहुडियाओ सखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा अणता गमा अणता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।
से एव आया एव णाया एव विण्णाया एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जति' °पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति° । सेत्त दिट्ठिवाए । सेत्त दुवालसगे गणिपिडगे ॥

१३२ इच्चेत दुवालसग गणिपिडग अतीते काले अणता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरत संसारकतार अणुपरियट्टिसु ।
इच्चेत दुवालसग गणिपिडग पडुप्पण्णे काले परित्ता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरत संसारकतार अणुपरियट्टंति ।
इच्चेत दुवालसग गणिपिडग अणागए काले अणता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टिस्सति ।
इच्चेतं दुवालसग गणिपिडग अतीते काले अणता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरतं ससारकतार विइवइसु ।

---

१. चूलियाणुओगे जाम (ग) ।
२. चूलियाओ एव विण्णाते (ग) ।
३. स० पा०—अणुओगदारा जाव सखेज्जाओ ।
४ चुल्ल° (ग) ।
५. स०पा०—आघविज्जति ।

[1]•इच्चेतं दुवालसगं गणिपिडग पडुप्पण्णे काले परित्ता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरत ससारकतार विइवयति ।
इच्चेतं दुवालसग गणिपिडग अणागए काले अणता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरत ससारकतार विइवइस्सति° ॥

१३३ दुवालसगे ण गणिपिडगे ण कयाइ णासी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ। भुविं च, भवति य, भविस्सति य। धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे ।
से जहाणामए पच अत्थिकाया ण कयाइ ण आसी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सति। भुविं च, भवति य, भविस्सति य। धुवा णितिया[2] •सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया° णिच्चा ।
एवामेव दुवालसगे गणिपिडगे ण कयाइ ण आसी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ। भुविं च, भवति य, भविस्सइ य[3]। •धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए° अवट्ठिए णिच्चे ॥

१३४ एत्थ ण दुवालसगे गणिपिडगे अणता भावा अणता अभावा अणता हेऊ अणता अहेऊ अणता कारणा अणता अकारणा अणता जीवा अणता अजीवा अणता भवसिद्धिया अणता अभवसिद्धिया अणता सिद्धा अणता असिद्धा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ॥

रासि-पद

१३५ दुवे रासी पण्णत्ता, त जहा—जीवरासी[4] अजीवरासी य ॥

१३६ अजीवरासी दुविहे पण्णत्ते, त जहा—'रूविअजीवरासी अरूविअजीवरासी'[5] य ॥

१३७ से किं त अरूविअजीवरासी ?
अरूविअजीवरासी दसविहे पण्णत्ते, त जहा—धम्मत्थिकाए[6], •धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पदेसा°, अद्धासमए ॥

१३८ जाव[7]—

---

१ स० पा०—एव पडुप्पण्णेवि अणागएवि ।
२ स० पा०—णितिया जाव णिच्चा ।
३ स० पा०—भविस्सइ य जाव अवट्ठिए ।
४ °रासी य (क) ।
५ रूवी० अरूवी० (ग) ।
६ स० पा०—धम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए ।
७ इह च प्रज्ञापनाया प्रथमपद प्रज्ञापनाख्य सर्वं तदक्षरमध्येतव्य, किमवसानमित्याह—'जाव से किं त' मित्यादि, केवलमस्य प्रज्ञापनासूत्रस्य चाय विशेष, इह 'दुवे रासी पण्णत्ता' इत्यभिलापसूत्र तत्र तु 'दुविहा पण्णवणा पण्णत्ता—जीवपण्णवणा अजीवपण्णवणा य' त्ति (वृ) ।

१३९ से किं त अणुत्तरोववाइआ ?
अणुत्तरोववाइओ पचविहा, पण्णत्ता, त जहा—विजय-वेजयत-जयत-अपराजित-सव्वट्ठसिद्धिया[1]। सेत्त अणुत्तरोववाइआ। सेत्त पचिंदियससारसमावण्ण-जीवरासी ॥

पज्जत्तापज्जत्त-पद

१४० दुविहा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्ता य अपज्जत्ता य। एव दडओ[2] भाणियव्वो जाव[3] वेमाणियत्ति ॥

आवास-पद

१४१ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए केवइय ओगाहेत्ता केवइया णिरया पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहल्लाए उवरिं एग जोयणसहस्स ओगाहेत्ता हेट्ठा चेग जोयणसहस्स वज्जेत्ता मज्झे अट्ठहत्तरे[4] जोयणसयसहस्से, एत्थ ण रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाण तीस णिरयावाससयसहस्सा[5] भवतीति मक्खाय। तेण णरया अतो वट्टा वाहिं चउरसा[6] °अहे खुरप्प-सठाण-सठिया णिच्चधयारतमसा ववगयगह-चद-सूर-णक्खत्त-जोइसपहा मेद-वसा-पूय-रुहिर-मसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा° असुभा णिरया असुभातो णरएसु वेयणाओ ॥

१४२ एव सत्तवि भाणियव्वाओ ज जासु जुज्जइ—

संगहणी-गाहा

आसीय वत्तीस, अट्ठावीस तहेव वीस च।
अट्ठारस सोलसग, अट्ठुत्तरमेव वाहल्ल ॥१॥
तीसा य पण्णवीसा, पण्णरस दसेव सयसहस्साइ।
तिण्णेग पचूण, पचेव अणुत्तरा नरगा ॥२॥

[दोच्चाए ण पुढवीए, तच्चाए ण पुढवीए, चउत्थीए पुढवीए, पचमीए पुढवीए, छट्ठीए पुढवीए, सत्तमीए पुढवीए—गाहाहिं भाणियव्वा][7] ॥

---

१. °सिद्धया (क, ग)।
२ 'दडओ' त्ति नेरइया १ असुराई १० पुढवाइ ५ वेइंदियादओ ४ मणुया १। वतर १ जोइस १ वेमाणिया य १ अह दडओ एव ॥१॥
३. ठा० १।१४०-१६३।
४ अट्ठट्ठहत्तरे (क)।
५ निरयवास° (ख), नरयावास° (ग)।
६ स० पा०—चउरसा जाव असुभा।
७ कोष्ठकान्तर्गत पाठ पुनरावृत्तिरूपो विद्यते। 'एव सत्तवि भाणियव्वाओ' इत्यनेन गाथाभ्याञ्च गतार्थत्वात्। 'सत्तमाए ण पुढवीए' इति सूत्रस्य पृथक्करण सप्रयोजन-

१४३ सत्तमाए ण पुढवीए[1] •केवइय ओगाहेत्ता केवइया णिरया पण्णत्ता॰ ?
गोयमा ! सत्तमाए पुढवीए अट्ठुत्तरजोयणसयसहस्साइ वाहल्लाए उवरि अद्धतेवण्ण जोयणसहस्साइ ओगाहेत्ता हेट्ठा वि अद्धतेवण्ण जोयणसहस्साइ वज्जेत्ता मज्भे तिसु जोयणसहस्सेसु, एत्थ ण सत्तमाए पुढवीए नेरइयाण पच अणुत्तरा महइमहालया महानिरया पण्णत्ता, त जहा—काले महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पइट्ठाणे नाम पचमए । ते ण नरया[2] वट्टे[3] य तसा य अहे[4] खुरप्प-सठाण-सठिया •णिच्चधयारतमसा ववगयगह-चद-सूर-णक्खत्त-जोइसपहा मेद-वसा-पूय-रुहिर-मसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा॰ असुभा नरगा असुभाओ नरएसु वेयणाओ ॥

१४४ केवइया ण भते ! असुरकुमारावासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहल्लाए उवरिं[5] एग जोयणसहस्स ओगाहेत्ता हेट्ठा चेग जोयणसहस्स वज्जेत्ता मज्भे अट्ठहत्तरे जोयणसयसहस्से, एत्थ ण रयणप्पभाए पुढवीए चउसट्ठि असुरकुमारा-वाससयसहस्सा पण्णत्ता । ते ण भवणा वाहिं वट्टा अतो चउरसा अहे पोक्खर-कण्णिया-सठाण-सठिया उक्किण्णतर-विपुल-गभीर-खात-फलिया अट्टालय-चरिय[6]-दारगोउर-कवाड-तोरण-पडिदुवार-देसभागा जत-मुसल-मुसुढि[7]-सतग्घि-परिवारिया अउज्झा[8] अडयाल-कोट्ठय-रइया अडयाल-कय-वणमाला लाउल्लोइय-महिया गोसीस-सरसरत्तचदण-दद्दर-दिण्णपचगुलितला कालागुरु-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-उज्झत-धूव-मघमघेत-गधुद्धुयाभिरामा[9] 'सुगधि-वरगध-गधिया'[10] गध-वट्टियाभूया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सप्पभा समिरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

१४५ एव 'जस्स ज'[11] कमती त तस्स, ज-ज गाहाहिं भणिय तह चेव वण्णओ—

मस्ति । अत्र पूर्ववर्णितात् किञ्चिद्विशेपो विद्यते । प्रतिपु सग्रहगाथा एकत्रैव विद्यन्ते । किन्तु तेन क्रमेण पाठस्य जटिलता जायते । तेनास्माभिर्गाथाना यथा-वश्यकमायोजना कृता । भगवती (१।२१२) सूत्रेष्वेव विभाति ।

१ स॰ पा॰—सत्तमाए ण पुढवीए पुच्छा ।

२ णिरया (क) ।

३ वट्टा (क), 'वट्टे य तसा य' त्ति मध्यमो वृत्त शेपास्त्र्यस्रा इति (वृ) ।

४ अधे (क, ग) ।

५ उवरि (क, ग) ।

६ चउरय (ग, वृपा) ।

७ मुसढि (ग) ।

८ अवोज्झा (क), अजोहाणि (ग) ।

९ गधुद्धुराभि॰ (ख, वृ) ।

१० सुगधवरगधिया (क) ।

११ ज जस्स (वृ) ।

संगहणी-गाहा

चउसट्ठी असुराण, चउरासीइ च होइ नागाण ।
बावत्तरि सुवन्नाण, वायुकुमाराण छण्णउति ॥१॥
दीवदिसाउदहीण, विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीण ।
छण्हपि जुवलयाण, छावत्तरिमो सयसहस्सा ॥२॥

१४६. केवइया ण भते ! पुढवीकाइयावासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा पुढवीकाइयावासा पण्णत्ता ॥

१४७ एव जाव[1] मणुस्सत्ति ॥

१४८ केवइया ण भते ! वाणमतरावासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरि एग जोयणसय ओगाहेत्ता हेट्ठा चेग जोयणसय वज्जेत्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु, एत्थ ण वाणमतराण देवाण तिरियमसखेज्जा भोमेज्जनगरावाससयसहस्सा पण्णत्ता । ते ण भोमेज्जा नगरा बाहिं वट्टा अतो चउरंसा, एवं जहा भवणवासीण तहेव नेयव्वा, नवर—पडागमालाउला[2] सुरम्मा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

१४९ केवइया ण भते ! 'जोइसियाण विमाणावासा'[3] पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तनउयाइ जोयणसयाइ उड्ढ उप्पइत्ता, एत्थ ण दसुत्तरजोयणसयबाहल्ले तिरिय जोइसविसए जोइसियाण देवाण असंखेज्जा जोइसियविमाणावासा पण्णत्ता । ते ण जोइसियविमाणावासा अब्भुग्गयमूसिय-पहसिया विविहमणि-रयण-भत्तिचित्ता[4] वाउद्धुय-विजय-वेजयती-पडाग-छत्तातिछत्तकलिया तुगा गगणतलमणुलिहतसिहरा जालतररयण[5]-पजरुम्मिलितव्व मणि-कणग-थूभियागा विगसित-सयपत्त-पुडरीय-तिलय-रयणड्डचद-चित्ता अतो बहिं च सण्हा[6] तवणिज्ज-

---

१ ठा० १।१५३-१६० ।

२ प्रज्ञापनाया द्वितीये स्थानपदे वाणमतरदेवाना वर्णने 'गधवट्टिभूता' इति पाठस्यानन्तर निम्नप्रकार पाठो विद्यते—'अच्छरगणसघसविकिण्णा दिव्वतुडितसद्दसपणादिता पडागमालाउलाभिरामा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पका णिक्ककडच्छाया सप्पभा समरीइया सउज्जोना पासातीता दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।' एतस्य पाठस्य संदर्भे प्रस्तुतसूत्रवर्तीपाठ पठ्यते तदा १४४ सूत्रवर्तिन 'गधवट्टिभूया' पाठस्यानन्तर 'पडागमालाउला' प्रभृति विशेषणानि युज्यन्ते । 'अच्छा' प्रभृति विशेषणानि प्रज्ञापनाया विद्यन्ते, किन्तु अत्र सूत्रकृता नापेक्षितानीति प्रतीयते ।

३ जोतिसिया वासा (क, ख) ।

४. भित्ति ° (ग) ।

५ इह प्रथमाबहुवचनलोपो द्रष्टव्य (वृ) ।

६ सण्ह (वृपा) ।

वालुगा-पत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

१५० केवइया ण भते ! वेमाणियावासा[1] पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए वहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढ चदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाण वीइवइत्ता वहूणि जोयणाणि वहूणि जोयणसयाणि वहूणि जोयणसहस्साणि वहूणि जोयणसयसहस्साणि वहूओ जोयणकोडीओ वहूओ जोयणकोडाकोडीओ असखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढ दूर वीइवइत्ता, एत्थ ण वेमाणियाण देवाण सोहम्मीसाण-सणकुमार-माहिद-वभ-लतग-सुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरणच्चुएसु गेवेज्जमणुत्तरेसु य चउरासीइ विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइ[2] सहस्सा तेवीस च विमाणा भवतीति मक्खाया । ते ण विमाणा अच्चिमालिप्पभा भासरासिवण्णाभा[3] अरया नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा[4] घट्ठा मट्ठा णिप्पका णिक्ककडच्छाया सप्पभा समिरीया[5] सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा[6] ॥

१५१ सोहम्मे ण भते ! कप्पे केवइया विमाणावासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! वत्तीस विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

१५२ एव ईसाणाइसु—अट्ठावीस वारस अट्ठ चत्तारि—एयाइ सयसहस्साइ, पण्णास चत्तालीस छ—एयाइ सहस्साइ, आणए पाणए चत्तारि, आरणच्चुए तिण्णि—एयाणि सयाणि । एव गाहाहि भाणियव्व—

सगहणी-गाहा

वत्तीसट्ठावीसा, वारस अट्ठ चउरो सयसहस्सा ।
पण्णा चत्तालीसा, छच्च सहस्सा सहस्सारे ॥१॥
आणयपाणयकप्पे, चत्तारि सयाऽऽरणच्चुए तिन्नि ।
सत्त विमाणसयाइ, चउसुवि एएसु कप्पेसु ॥२॥
एक्कारसुत्तर[7] हेट्ठिमेसु सत्तुत्तर च मज्झिमए ।
सयमेग उवरिमए, पचेव अणुत्तरविमाणा ॥३॥

ठिइ-पदं

१५३ नेरइयाण भते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?

---

१ वेमाणियाण ° (क) ।
२ सत्ताणउइ च (ग) ।
३ °वण्णप्पभा (क) ।
४ × (क) ।
५ समिरिया (क, ख) ।
६ पडिरूवा सूरूवा (क) ।
७ °सुत्तरसय (ग) ।

गोयमा ! जहण्णेण दस वाससहस्साइं उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१५४ अपज्जत्तगाणं भंते ! नेरइयाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥

१५५. पज्जत्तगाणं[1] •भंते ! नेरइयाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा° ! जहण्णेण दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

१५६ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए, एवं जाव[2] विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियाणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण 'बत्तीसं सागरोवमाइं'[3] उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं[4] ॥

१५७ सव्वट्ठे अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता[5] ॥

सरीर-पद

१५८ कति णं भंते ! सरीरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए ॥

१५९ ओरालियसरीरे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिंदियओरालियसरीरे जाव[6] गब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरे य ॥

१६०. ओरालियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेण साइरेगं जोयणसहस्सं ॥

१६१ एवं जहा ओगाहणासंठाणे[7] ओरालियपमाणं तहा निरवसेसं। एवं जाव मणुस्सेत्ति उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइं ॥

१६२ कइविहे णं भंते ! वेउव्वियसरीरे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते—एगिंदियवेउव्वियसरीरे य पंचिंदियवेउव्वियसरीरे य ॥

१६३ एवं जाव ईसाणकप्पपज्जंतं सणंकुमारे आढत्तं जाव[8] अणुत्तरा भवधारणिज्जा तेसिं रयणी-रयणी परिहायइ ॥

---

१ स० पा०—पज्जत्तगाणं° ।

२ पण्ण° ४ ।

३ इह च विजयादिषु जघन्यतो द्वात्रिंशत्सागरोपमाण्युक्तानि गन्धहस्त्यादिष्वपि तथैव दृश्यते, प्रज्ञापनायां त्वेकत्रिंशदुक्तेति मतान्तरमिदम् (वृ) ।

४. पर्याप्तकापर्याप्तकगमद्वयमिह समूह्यम् (वृ) ।

५ एवं सर्वार्थसिद्धिस्थितिरपि त्रिभिर्गमैर्वाच्येति (वृ), पण्ण° ४ ।

६ पण्ण° २१ ।

७ ओगाहण संठाणे (ग), अवगाहनासंस्थानाभिधानं प्रज्ञापनायां एकविंशतितमं पदम् ।

८ पण्ण° २१ ।

९ पुस्तकान्तरेत्विदं वाक्यमन्यथा दृश्यते (वृ) ।

१६४ आहारयसरीरे ण भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

गोयमा ! एगाकारे पण्णत्ते ।

जइ एगाकारे पण्णत्ते, किं मणुस्सआहारयसरीरे ? अमणुस्सआहारयसरीरे ?

गोयमा ! मणुस्सआहारगसरीरे, णो अमणुस्सआहारगसरीरे ।

[1]जइ मणुस्स आहारगसरीरे, किं गब्भवक्कतियमणुस्सआहारगसरीरे ? समुच्छिममणुस्सआहारगसरीरे ?

गोयमा ! गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे नो समुच्छिममणुस्सआहारयसरीरे ।

जइ गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे, किं कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्स-आहारयसरीरे ? अकम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ?

गोयमा ! कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे, नो अकम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ।

जइ कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे, किं सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ? असखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ?

गोयमा ! सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे, नो असखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ।

जइ सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे, किं पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ? अपज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ?

गोयमा ! पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतिमणुस्सआहारय-सरीरे, नो अपज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारय-सरीरे ।

जइ पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे, किं सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्स-आहारयसरीरे ? मिच्छदिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भ-वक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ? सम्मामिच्छदिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ?

गोयमा ! सम्मद्दिट्ठि - पज्जत्तय - सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतिय-मणुस्सआहारयसरीरे, नो मिच्छदिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे, नो सम्मामिच्छदिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ।

---

१ स० पा०—एव जइ मणुस्स किं ··· वयणावि भंतियव्वा ।

जइ समद्दिट्ठि-पज्जत्तय- सखेज्जवासाउय - कम्मभूमग - गब्भवक्कतियमणुस्स-आहारयसरीरे, किं सजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भ-वक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ? असजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग - गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ? सजयासजय - सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ?

गोयमा ! सजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतिय-मणुस्सआहारयसरीरे, नो असजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्म-भूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे, नो सजयासजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ।

जइ सजय - सम्मद्दिट्ठि - पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतिय-मणुस्सआहारयसरीरे, किं पमत्तसजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग - गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ? अपमत्तसजय - सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ?

गोयमा ! पमत्तसजय - सम्मद्दिट्ठि - पज्जत्तय - सखेज्जवासाउय - कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे, नो अपमत्तसजय - सम्मद्दिट्ठि - पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ।

जइ पमत्तसजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतिय-मणुस्सआहारयसरीरे, किं इड्ढिपत्त-पमत्तसजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ? अणिड्ढिपत्त-पमत्त-सजय-सम्मद्दिट्ठि - पज्जत्तय - सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्स-आहारयसरीरे ?

गोयमा ? इड्ढिपत्त-पमत्तसजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे, नो अणिड्ढिपत्त - पमत्तसजय - सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे° ॥

१६५ [1]•आहारयसरीरे ण भते ! किं सठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! समचउरससठाणसठिए पण्णत्ते° ॥

१६६ [2]•आहारयसरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण देसूणा रयणी उक्कोसेण पडिपुण्णा रयणी° ॥

१६७ तेयासरीरे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

---

१ स० पा०—आहारयसरीरे समचउरस-सठाणसठिते ।

२ स० पा०—आहारय जह देसूणा रयणि उ० पडिपुण्णा रयणी ।

गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते—एगिंदियतेयासरीरे य[1] •बेंदियतेयासरीरे य तेंदिय-तेयासरीरे य चउरिंदियतेयासरीरे य पचेंदियतेयासरीरे य° ॥

१६८ एव जाव[2]—

१६९ गेवेज्जस्स ण भते ! देवस्स मारणतियसमुग्घातेण समोहयस्स तेयासरीरस्स[3] केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ती[4] विक्खभवाहल्लेण, आयामेण जहण्णेण अहे जाव विज्जाहरसेढीओ[5], उक्कोसेण अहे जाव अहोलोइया गामा, तिरिय जाव मणुस्स-खेत्त, उड्ढ जाव सयाइ विमाणाइ[6] ॥

१७० एव[7] अणुत्तरोववाइया वि ॥

१७१ एव कम्मयसरीर पि भाणियव्व ॥

ओहि-पदं

सगहणी-गाहा

भेदे विसय सठाणे, अब्भतर वाहिरे य देसोही ।
ओहिस्स वड्ढि-हाणी, पडिवाती चेव अपडिवाती ॥१॥

१७२ कइविहे ण भते ! ओही पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते—भवपच्चइए य खओवसमिए य । एव सव्व ओहिपद[8] भाणियव्व ॥

वेयणा-पद

सगहणी-गाहा

सीता य दव्व सारीर, साय तह वेयणा भवे दुक्खा ।
अब्भुवगमुवक्कमिया, णिदाए[9] चेव अणिदाए ॥१॥

---

१ स० पा०—बे ते चउ पच ।
२ पण्ण० २१ ।
३. प्रयुक्तादर्शेषु 'समाणस्स' पाठ प्राप्यते, किन्तु अर्थमीमासया नासौ समीचीन प्रतिभाति । तेनात्र प्रज्ञापनाया एकविंशतितमपदस्थ 'तेयासरीरस्स' इति पाठ स्वीकृत ।
४ °मेत्ता (क्व) ।
५. °सेढी (क, ख) ।
६. प्रतिपु पूर्वं 'उड्ढ जाव सयाइ विमाणाइ' पश्चाच्च 'तिरिय जाव मणुस्सखेत्त' इति पाठो विद्यते ।
७ एव जाव (क, ख, ग) । अत्र 'जाव' शब्दोऽनावश्यक प्रतिभाति । प्रज्ञापनायामपि (पद २१) 'अणुत्तरोववाइयस्स वि एव चेव' इति पाठो लभ्यते ।
८ पण्ण० ३३ ।
९ णीताई (क, ग); णिताए तहा (ख) ।

१७३ नेरइया ण भते ! किं सीतवेयण[1] वेदति ? उसिणवेयण वेदति ? सीतोसिण-वेयण वेदति ?
गोयमा ! नेरइया[2] °सीत वि वेदण वेदेति, उसिण पि वेदण वेदेति, णो सीतोसिण वेदण वेदेति° । एव चेव वेयणापद[3] भाणियव्व ॥

लेसा-पद

१७४ कइ ण भते ! लेसाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! छ लेसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—किण्हलेस्सा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा । एव लेसापय[4] भाणियव्व ॥

आहार-पद

सगहणी-गाहा

'अणतरा य आहारे'[5] आहाराभोगणाऽवि[6] य ।
पोग्गला नेव[7] जाणति, अज्झवसाणा[8] य सम्मत्ते ॥१॥

१७५ नेरइया ण भते ! अणतराहारा तओ निव्वत्तणया तओ परियाइयणया तओ परिणामणया तओ परियारणया तओ पच्छा विकुव्वणया ?
हता गोयमा[9] ! °नेरइया ण अणतराहारा तओ निव्वत्तणया ततो परियाइयणया तओ परिणामणया तओ परियारणया तओ पच्छा विकुव्वणया° । एव आहार-पद[10] भाणियव्व ॥

आउगवध-पदं

१७६ कइविहे ण भते ! आउगवधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे आउगवधे पण्णत्ते, त जहा—जाइनामनिधत्ताउके[11] °गतिनाम-निधत्ताउके ठिइनामनिधत्ताउके पएसनामनिधत्ताउके अणुभागनामनिधत्ताउके ओगाहणानामनिधत्ताउके° ॥

१७७ नेरइयाण भते ! कइविहे आउगवधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते, त जहा—जातिनाम[12] °निधत्ताउके गइनामनिधत्ताउके

---

१ सीत वेयण (ख) ।
२ स० पा०—नेरइया० ।
३. पण्ण० ३५ ।
४ पण्ण० १७ ।
५ (क) 'अणतरा य आहारे' त्ति अनन्तराश्च-अव्यवधानाश्चाहारविपये अनन्तराहारा जीवा वाच्या इत्यार्थ (वृ० पत्र १३५) ।
(ख) 'अणतरागयाहारे' इत्यादि, प्रथममनन्तरागताहारको नैरयिकादिर्वक्तव्य [पन्नवणा पद ३४ वृत्ति] ।
६ ति (क) ।
७ मेव (क, ख, ग) ।
८ °साणे (ग) ।
९ स० पा०—हता गोयमा !
१० पण्ण० ३४ ।
११ स० पा०—एव गतिनाम° °° ओगाहणा-नाम° ।
१२. स० पा०—जातिनाम जाव ओगाहणा-नाम° ।

ठिइनामनिधत्ताउके पएसनामनिधत्ताउके अणुभागनामनिधत्ताउके ओगाहणा-नामनिधत्ताउके ।।

१७८ एव जाव[1] वेमाणियत्ति ।

उववाय-उव्वट्टणा-विरह-पदं

१७९ निरयगई ण भते ! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण बारसमुहुत्ते ।।

१८० एव तिरियगई मणुस्सगई देवगई ।।

१८१ सिद्धिगई ण भते ! केवइय काल विरहिया सिज्झणयाए पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण छम्मासे ।।

१८२ एव सिद्धिवज्जा उव्वट्टणा ।।

१८३ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केवइय काल विरहिया उववाएण[2] •पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण चउव्वीस मुहुत्ता° ।
एव उववायदडओ भाणियव्वो, उव्वट्टणादडओ वि[3] ।।

आगरिस-पद

१८४ नेरइया ण भते ! जातिनामनिहत्ताउग कतिहिं आगरिसेहिं पगरेंति ?
गोयमा ! 'सिय एक्केण सिय दोहिं सिय तीहिं सिय चउहिं सिय पचहिं सिय छहिं सिय सत्तहिं'[4] सिय अट्ठहिं, नो चेव ण नवहिं ।।

१८५ 'सेसाणि वि'[5] आउगाणि जाव[6] वेमाणियत्ति ।।

सघयण-पदं

१८६ कइविहे ण भते ! सघयणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे सघयणे पण्णत्ते, त जहा—वइरोसभनारायसघयणे रिसभ-नारायसघयणे[7] नारायसघयणे अद्धनारायसघयणे खालियासघयणे[8] छेवट्ट-सघयणे[9] ।।

१८७ नेरइया ण भते ! किंसघयणी ?

---

१ ठा० १।१४२-१६३ ।
२ स० पा०—उववाएण एव ।
३ य (क, ग) ।
४ सिय १ सिय २,३,४,५,६,७ (क, ख, ग) ।
५ सेसाणवि (क, ख, ग) अशुद्धम् ।
६ ठा० १।४२-१६३ ।
७ उसभ° (क) ।
८ कीलिया° (क्व) ।
९ सेवट्ट° (क्व) ।

गोयमा ! छण्ह संघयणाणं असंघयणी—णेवट्ठी[1] णेव छिरा 'णेव ण्हारू'[2], जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया असुभा[3] अमणुण्णा अमणामा[4] ते तेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति ॥

१८८ असुरकुमारा णं भंते ? किंसंघयणी पण्णत्ता ?
गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी—णेवट्ठी णेव छिरा णेव ण्हारू, जे पोग्गला इट्ठा कंता पिया सुभा[5] मणुण्णा मणामा[6] ते तेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति ॥

१८९ एवं जाव[7] थणियकुमारत्ति।

१९० पुढवीकाइया णं भंते ? किंसंघयणी पण्णत्ता ?
गोयमा ! छेवट्टसंघयणी[8] पण्णत्ता ॥

१९१ एवं जाव[9] संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ति ॥

१९२ गब्भवक्कंतिया छव्विहसंघयणी ॥

१९३ संमुच्छिममणुस्सा णं छेवट्टसंघयणी ॥

१९४ गब्भवक्कंतियमणुस्सा छव्विहसंघयणी पण्णत्ता ॥

१९५ जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया य ॥

संठाण-पदं

१९६ कइविहे णं भंते ! संठाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे संठाणे पण्णत्ते, तं जहा—समचउरंसे णग्गोहपरिमंडले साती खुज्जे वामणे हुंडे ॥

१९७ णेरइया णं भंते ! किंसंठाणा[10] पण्णत्ता ?
गोयमा ! हुंडसंठाणा[11] पण्णत्ता ॥

१९८ असुरकुमारा किंसंठाणसंठिया[12] पण्णत्ता ?
गोयमा ! समचउरंससंठाणसंठिया पण्णत्ता जाव[13] थणियत्ति ॥

१९९ पुढवी मसूरयसंठाणा पण्णत्ता ॥

२०० आऊ थिवुयसंठाणा[14] पण्णत्ता ॥

---

१ णेतट्ठि (क)।
२ णवि ण्हारु (क, ग)।
३ ×(क), अणाएज्जा असुभा (क)।
४. अमणा वा (क); अमणामा अमणाभिरामा (ग)।
५. ×(क, ग)।
६. मणामा भिरामा (क), मणामा मणाभिरामा (ग)।
७ ठा० ३।१४३-१५०।
८ सेवट्ट° (क, ख)।
९ ठा० १५३-१५९।
१० किंसठाणी (क्व)।
११ °संठाणे (क), °संठाणी (क्व)।
१२. किंसंठाणी (क, ख)।
१३ ठा० १।१४३-१५०।
१४ °संठाणे (क)।

२०१ तेऊ सूइकलावसठाणा पण्णत्ता ॥
२०२ वाऊ पडागसठाणा[1] पण्णत्ता ॥
२०३ वणप्फई नाणासठाणसठिया पण्णत्ता ॥
२०४ वेइदिय-तेइदिय-चउरिदिय-सम्मुच्छिमपचेंदियतिरिक्खा[2] हुडसठाणा पण्णत्ता ॥
२०५ गब्भवक्कतिया छव्विहसठाणा पण्णत्ता ॥
२०६ सम्मुच्छिममणुस्सा हुडसठाणसठिया पण्णत्ता ॥
२०७ गब्भवक्कतियाण मणुस्साण छव्विहा सठाणा पण्णत्ता ॥
२०८ जहा असुरकुमारा तहा वाणमतरा जोइसिया वेमाणिया ॥

वेय-पदं

२०९ कइविहे ण भते ! वेए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे वेए पण्णत्ते, त जहा—इत्थीवेए पुरिसवेए नपुसगवेए ।
२१० नेरइया ण भते ! 'किं इत्थीवेया पुरिसवेया णपुसगवेया पण्णत्ता'[3] ?
गोयमा ! णो इत्थिवेया णो पुवेया, णपुसगवेया पण्णत्ता ॥
२११ असुरकुमाराण भते ! किं इत्थिवेया पुरिसवेया नपुसगवेया ?
गोयमा ! इत्थिवेया पुरिसवेया, णो णपुसगवेया जाव[4] थणियत्ति ॥
२१२ पुढवि - आउ-तेउ-वाउ-वणप्फइ-बि-ति-चउरिदिय - समुच्छिमपचिंदियतिरिक्ख-समुच्छिममणुस्सा णपुसगवेया ॥
२१३ गब्भवक्कतियमणुस्सा 'पचेंदियतिरिया य'[5] तिवेया ॥
२१४ जहा असुरकुमारा तहा वाणमतरा जोइसिया वेमाणियावि[6] ॥

समवसरण-पद

२१५ तेण कालेण तेण समएण कप्पस्स[7] समोसरण णेयव्व[8] जाव गणहरा सावच्चा निरवच्चा[9] वोच्छिण्णा ॥

कुलगर-पद

२१६ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे तीयाए ओसप्पिणीए सत्त कुलगरा होत्था, त जहा—

---

१ पठातिया० (क), पडातिया० (ग) ।
२ ०तिरिय (क, ख) ।
३. किं वेए पण्णत्ते (ग) ।
४ ठा० १।४३-१५० ।
५ ०तिरिक्खजोणिया (ग) ।
६ ०याय (ख) ।
७ पज्जुसणाकप्पस्स (वृपा), द्रष्टव्य परिशिष्टम्, सख्याङ्क २ ।
८ णातव्व (ग) ।
९ निरवच्चा य (ग) ।

सगहणी-गाहा

मित्तदामे सुदामे य, सुपासे य सयपभे।
विमलघोसे सुघोसे य, महाघोसे य सत्तमे ॥१॥

२१७ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे तीयाए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा होत्था, त जहा—

सयजले[1] सयाऊ[2] य, अजियसेणे[3] अणतसेणे य।
कक्कसेणे भीमसेणे, महाभीमसेणे[4] य सत्तमे ॥१॥
दढरहे दसरहे सतरहे ॥

२१८ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए[5] सत्त कुलगरा होत्था, त जहा—

पढमेत्थ विमलवाहण, चक्खुम जसम चउत्थमभिचदे।
तत्तो य पसेणइए[6], मरुदेवे चेव नाभी य ॥१॥

२१९ एतेसि ण सत्तण्ह कुलगराण सत्त भारिआ होत्था, त जहा—

चदजस चदकता, सुरूव-पडिरूव चक्खुकता य।
सिरिकता मरुदेवी, कुलगरपत्तीण णामाइ ॥१॥

तित्थगर-पदं

२२० जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं पियरो होत्था, त जहा—

'णाभी य जियसत्तू य'[7], जियारी सवरे इ य।
मेहे धरे पइट्ठे य, महसेणे य खत्तिए ॥१॥

---

१ सतज्जले (ग)।
२ सताहू (ग)।
३ स्थानाङ्गस्य मुद्रितप्रतौ (आगमोदयसमिति पत्र ५१८ सूत्राङ्क ७६७) चतुर्थकुलकरस्य नाम 'अमितसेणे' विद्यते। किन्तु पाठशोधन-प्रयुक्तयो 'क' 'ग' प्रत्यो 'ख' प्रतौ च क्रमश 'अतितसेणे' 'अजितसेणे' पाठो विद्यते। समवायाङ्गे (श्रेष्ठि माणेकलाल चुन्नीलाल श्रेष्ठि कान्तिलाल चुन्नीलाल द्वारा प्रकाशित पत्र १३९ सूत्राङ्क १५७) तृतीयकुलकरस्य नाम 'अजितसेणे' विद्यते। पाठशोधन-प्रयुक्तयो 'क' 'ख' प्रत्योरपि एष एव पाठोस्ति। स्थानाङ्गस्य मुद्रितप्रतौ पञ्चमकुलकरस्य नाम 'तक्कसेणे' विद्यते। 'क' 'ग' प्रत्योरपि एष एव पाठो लभ्यते। समवायाङ्गस्य मुद्रितप्रतौ 'कज्जसेणे' तथा हस्तलिखितादर्शेषु 'कक्कसेणे' पाठोस्ति। प्रतीयते स्थानाङ्गे समवायाङ्गे च 'अजियसेणे' 'कक्कसेणे' पाठ आसीत् किन्तु लिपिदोषेण पाठ-विपर्ययो जात।
४ महासेणे (ख)।
५ ओसप्पिणीए समाए (ग)।
६ पसेणइ (ख)।
७ णाभी जियसत्तू राया (ग—हस्तलिखित वृत्ति)।

सुग्गीवे दढरहे विण्हू, वसुपुज्जे य खत्तिए।
कयवम्मा सीहसेणे य, भाणू विस्ससेणे इ य ॥२॥
सूरे सुदसणे कुभे, सुमित्तविजए समुद्दविजये य।
राया य आससेणे, सिद्धत्येच्चिय खत्तिए ॥३॥
उदितोदितकुलवसा[1], विसुद्धवसा गुणेहि उववेया।
तित्थप्पवत्तयाण[2], एए पियरो जिणवराण ॥४॥

२२१ जवुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीस तित्थगराण मायरो होत्था, त जहा—

मरुदेवा विजया सेणा, सिद्धत्था मगला सुसीमा य।
पुहवी लक्खण रामा, नदा विण्हू जया सामा ॥१॥
'सुजसा सुव्वय अइरा, सिरिया देवी पभावई।
पउमा वप्पा सिवा य, वामा तिसला देवी य जिणमाया'[3] ॥२॥

२२२ जवुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीस तित्थगरा होत्था, त जहा—उसभे अजिते[4] •सभवे अभिणदणे सुमती पउमप्पभे सुपासे चदप्पहे सुविही सीतले सेज्जसे वासुपुज्जे विमले अणते धम्मे सती कुथू अरे मल्ली मुणिसुव्वए णमी अरिट्ठणेमी पासे॰ वद्धमाणे य ॥

२२३ एएसि चउवीसाए तित्थगराण चउवीस पुव्वभविया णामधेज्जा होत्था, त जहा—

संगहणी-गाहा

पढमेत्थ वइरणाभे, विमले तह विमलवाहणे चेव।
तत्तो य धम्मसीहे, सुमित्ते तह धम्ममित्ते य ॥१॥
सुदरवाहू तह दीहवाहू, जुगवाहू लट्ठवाहू य।
दिण्णे य इददत्ते, सुदर माहिदरे[5] चेव ॥२॥
सीहरहे मेहरहे, रुप्पी य सुदसणे य वोद्धव्वे।
तत्तो य नदणे खलु, सीहगिरी चेव वीसइमे ॥३॥
अदीणसत्त सखे, सुदसणे नदणे य वोद्धव्वे।
ओसप्पिणीए[6] एए, तित्थकराण तु[7] पुव्वभवा ॥४॥

---

१ ॰कुलवस (क), ॰कुलदसा (ग)।
२ ॰पवत्तणायाण (ख), ॰प्पवत्तणयाण (ग), ('ख' प्रतौ अग्रेपि एवम्)।
३. सुजसा सुव्वय अइरा, सिरि देवी य पभावइ। पउमावनी य वप्पा, सिव वमा तिसलाइय (ग—हस्तलिखित वृत्ति)।
४ स॰ पा॰—अणित जाव वद्धमाणे।
५ महिमदरे (क)।
६ ओसप्पिणीय (क)।
७ × (ग)।

२२४ एएसि ण चउवीसाए तित्थकराण चउवीस सीया होत्था, त जहा—

सीया सुदसणा सुप्पभा य, सिद्धत्थ सुप्पसिद्धा य ।
विजया य वेजयती, जयती अपराजिया चेव[1] ॥१॥

अरुणप्पभ चदप्पभ[2], 'सूरप्पह अग्गिसप्पभा'[3] चेव ।
विमला य पचवण्णा, सागरदत्ता तह णागदत्ता य[4] ॥२॥

अभयकर णिव्वुतिकरी, मणोरमा तह[5] मणोहरा चेव ।
देवकुरु उत्तरकुरा, विसाल चदप्पभा सीया ॥३॥

एयातो सीयाओ, सव्वेसि चेव जिणवरिंदाण ।
सव्वजगवच्छलाण, सव्वोतुयसुभाए छायाए ॥४॥

पुव्वि उक्खित्ता, माणुसेहि साहट्टरोमकूवेहिं ।
पच्छा वहति सीय, असुरिंदसुरिंदनागिंदा ॥५॥

चलचवलकुडलधरा, सच्छदविउव्वियाभरणधारी ।
सुरअसुरवदियाण, वहति सीय जिणिंदाण[6] ॥६॥

पुरओ वहति देवा, नागा पुण दाहिणम्मि पासम्मि ।
पच्चत्थिमेण असुरा, गरुला पुण उत्तरे पासे ॥७॥

२२५. उसभो य विणीयाए, बारवईए अरिट्ठवरणेमी ।
अवसेसा तित्थयरा, निक्खता जम्मभूमीसु ॥१॥

२२६. सव्वेवि एगदूसेण, णिग्गया जिणवरा चउवीस ।
ण य णाम अण्णलिंगे, ण य गिहिलिंगे कुलिंगे व ॥१॥

२२७. एक्को भगव वीरो, पासो मल्ली य तिहिं-तिहिं सएहिं ।
भयवपि वासुपुज्जो, छहिं पुरिससएहिं निक्खतो ॥१॥

उग्गाण भोगाण, राइण्णाण च खत्तियाण च ।
चउहिं सहस्सेहिं उसभो, सेसा उ सहस्सपरिवारा ॥२॥

२२८ सुमइत्थ णिच्चभत्तेण, णिग्गओ वासुपुज्जो जिणो चउत्थेण ।
पासो मल्ली वि य, अट्ठमेण सेसा उ छट्ठेण ॥१॥

२२९. एएसि ण चउवीसाए तित्थगराण चउवीस पढमभिक्खादया[7] होत्था, त जहा—

---

१ × (ख) ।
२ × (ख), ओदप्पह (ग) ।
३. सूरप्पभ सुकप्पभ अग्गिसप्पभा (ख), सूरप्पह सुदरप्पह अग्गिप्पभा (ग) ।
४ × (ख) ।
५. × (ख, ग) ।
६ जिणदाण (ग) ।
७ °दायरो (ख), °देया (ग), °दायारो(क्व) ।

सेज्जसे[1] वभदत्ते, सुरिंददत्ते य इददत्ते य ।
'तत्तो य धम्मसीहे, सुमित्ते तह धम्ममित्ते य'[2] ॥१॥
पुस्से पुणव्वसू पुण्णणद[3], सुणदे जये य विजये य ।
'पउमे य सोमदेवे, महिंददत्ते य सोमदत्ते य'[4] ॥२॥
अपरातिय वीससेणे, वीसतिमे होइ उसभसेणे य ।
दिण्णे वरदत्ते, धन्ने[5] वहुले य आणुपुव्वीए ॥३॥
एते विसुद्धलेसा, जिणवरभत्तीए[6] पजलिउडा य ।
त काल त समय, पडिलाभेई जिणवरिंदे ॥४॥

२३० सवच्छरेण भिक्खा, लद्धा उसभेण लोगणाहेण ।
सेसेहिं वीयदिवसे, लद्धाओ पढमभिक्खाओ ॥१॥
उसभस्स पढमभिक्खा, खोयरसो आसि लोगणाहस्स ।
सेसाण परमण्ण, अमयरसरसोवम[7] आसि ॥२॥
सव्वेसिपि जिणाण, जहिय लद्धाओ पढमभिक्खातो ।
तहिय वसुधाराओ, सरीरमेत्तीओ वुट्ठाओ ॥३॥

२३१ एतेसि ण चउवीसाए तित्थगराण चउवीस चेइयरुक्खा होत्था, त जहा—
णग्गोह-सत्तिवण्णे, साले पियए[8] पियगु छत्ताहे ।
सिरिसे य णागरुक्खे, माली[9] य पिलखुरुक्खे य ॥१॥
तेंदुग पाडल जवू, आसोत्थे खलु तहेव दधिवण्णे ।
णदीरुक्खे तिलए य[10] अवयरुक्खे असोगे य ॥२॥
चपय वउले य तहा, वेडसिरुक्खे[11] धायईरुक्खे ।
साले य वड्ढमाणस्स, चेइयरुक्खा जिणवराण ॥३॥
वत्तीसइ[12] धणूइ, चेइयरुक्खो य वद्धमाणस्स ।
णिच्चोउगो असोगो, ओच्छण्णो सालरुक्खेण ॥४॥
तिण्णे व गाउयाइ, चेइयरुक्खो जिणस्स उसभस्स ।
सेसाण पुण रुक्खा, सरीरतो वारसगुणा उ ॥५॥

---

१ सेज्जस (क) ।
२ पउमे य सोमदेवे, माहिंदे तह सोमदत्ते य (क्व) ।
३. ०णदे (ग) ।
४ तत्तो य धम्मसीहे, सुमित्त तह वग्गसीहे अ (क्व) ।
५ धम्मे (क) ।
६ ०भत्तीय (क, ग) ।
७ अमिय० (क्व) ।
८ पियाले (क) ।
९ साली (ख) ।
१० × (क) ।
११ वडेस० (क्व) ।
१२ वत्तीस (ग) ।

सच्छत्ता सपडागा, सवेइया तोरणेंहि उववेया।
सुरअसुरगरुलमहिया, चेइयरुक्खा जिणवराण ॥६॥

२३२ एतेसि ण चउवोसाए तित्थगराण चउवोस पढमसोसा होत्था, त जहा—
पढमेत्थ उसभसेणे, वीए पुण होइ सीहसेणे उ।
चारू य वज्जणाभे, चमरे तह सुव्वते[1] विदब्भे ॥१॥
दिण्णे वाराहे पुण, आणदे[2] गोथुभे सुहम्मे य।
मदर जसे अरिट्ठे, चक्काउह सयभु कुभे य ॥२॥
'भिसए य इद कुभे'[3], वरदत्ते दिण्ण इदभूती य।
उदितोदितकुलवसा, विसुद्धवसा गुणेहि उववेया।
तित्थप्पवत्तयाण, पढमा सिस्सा जिणवराण ॥३॥

२३३ एएसि ण चउवीसाए तित्थगराणं चउवीस पढमसिस्सिणीओ होत्था, त जहा—
वभी फग्गू[4] सम्मा[5], अतिराणी[6] कासवी रई सोमा।
सुमणा वारुणि सुलसा, धारिणि वरणी य वरणिधरा ॥१॥
पउमा सिवा सुई अजू, भावियप्पा य रक्खिया।
वधू[7]-पुप्फवती चेव, अज्जा धणिला[8] य आहिया ॥२॥
जक्खिणी पुप्फचूला य, चदणऽज्जा य आहिया।
उदितोदितकुलवसा, विसुद्धवसा गुणेहि उववेया।
तित्थप्पवत्तयाण, पढमा सिस्सी जिणवराण ॥३॥

चक्कवट्टि-पद

२३४ जवुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए वारस चक्कवट्टिपियरो होत्था त जहा—
उसभे सुमित्तविजए, समुद्दविजए य 'अस्ससेणे य'[9]।
विस्ससेणे य सूरे, सुदसणे कत्तवीरिए य ॥१॥

---

१. सुज्जय (ग)।
२ आणदे पुण (ख)।
३ इदे कुभे य सुभे (क्व)।
४ फग्गुण (ख)।
५ सामा (क्व)।
६. अजिया (क्व)।
७. वधूवती (क, ग)।
८. वणिला (ग), अमिला (क्व)।
९ × (क, ख, ग), सर्वेषु प्रयुक्तादर्शेषु 'अस्ससेणे' पाठो नास्ति 'व' प्रतौ पाठान्तररूपेणासौ लिखितोऽस्ति। किन्तु 'विस्ससेण' पचमचक्रवर्तिश्रीशान्तिनाथस्य पितुर्नामास्ति। यदि 'अस्ससेणे' पाठो न स्वीक्रियते तदा 'विस्ससेणे' चतुर्थचक्रवर्तिन पितुर्नाम भवेत्। आवश्यकनिर्युक्तावपि 'अस्ससेणे' पाठो लभ्यते तेनासौ पाठ स्वीकृत। आवश्यकनिर्युक्तौ

पउमुत्तरे महाहरी, विजए राया तहेव य ।
वम्हे वारसमे वुत्ते, पिउनामा चक्कवट्टीण ॥२॥

२३५ जवुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे इमाए ओसप्पिणीए वारस चक्कवट्टिमायरो होत्था, त जहा—

सुमगला जसवती, भद्दा सहदेवी अइर सिरि देवी ।
'तारा जाला'[1] मेरा, वप्पा चुलणी अपच्छिमा ॥१॥

२३६ जवुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे इमाए ओसप्पिणीए वारस चक्कवट्टी होत्था, त जहा—

भरहो सगरो मघव, सणकुमारो य रायसद्दूलो ।
सती कुथू य अरो, हवइ सुभूमो य कोरव्वो ॥१॥
नवमो य महापउमो, हरिसेणो चेव रायसद्दूलो ।
जयनामो य नरवई, वारसमो वभदत्तो य ॥२॥

२३७ एएसि ण वारसण्ह चक्कवट्टीण वारस इत्थिरयणा होत्था, त जहा—

पढमा होइ सुभद्दा[2], भद्दा[3] सुणदा जया य विजया य ।
कण्हसिरी सूरसिरी, पउमसिरी वसुधरा देवी ॥१॥
लच्छिमई कुरुमई, इत्थिरयणाण नामाइ ॥

बलदेव-वासुदेव-पद

२३८ जवुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे इमासे ओसप्पिणीए नव बलदेव-वासुदेवपितरो होत्था, त जहा—

गाथाद्वयमित्थमस्ति—

उसभे सुमित्तविजए, समुद्दविजए अ अस्ससेणे य ।
तह वीससेण सूरे, सुदसणे कत्तविरिए अ ॥३९९॥
पउमुत्तरे महाहरि, विजए राया तहेव वभे य ।
ओसप्पिणी इमीसे, पिउनामा चक्कवट्टीण ॥४००॥

आदर्शगत गाथाद्वय चेत्यम्—

उसभे सुमित्तविजए, समुद्दविजए य विस्ससेणे य ।
सूरिए सुदसणे पउमुत्तर कत्तवीरिए चेव ॥
महाहरी य विजए य, पउमे राया तहेव य ।
वम्हे वारसमे वुत्ते, पिउनामा चक्कवट्टीण ॥

१. जाला तारा (क, ख, ग) । आदर्शेषु नाम-विपर्ययो विद्यते ।
२ सुहद्दा (क) ।
३. भद्द (ग) ।

पयावती य वभे, रोद्दे सोमे सिवेति य ।
महसिहे अग्गिसिहे, दसरहे नवमे य वसुदेवे[1] ॥१॥

२३९ जवुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे इमोसे ओसप्पिणीए णव वासुदेवमायरो होत्था, त जहा—

मियावई उमा चेव, पुहवी सीया य अम्मया।
लच्छिमती सेसवती, केकई देवई इय ॥१॥

२४० जवुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे इमोसे ओसप्पिणीए णव वलदेवमायरो होत्था, त जहा—

भद्दा तह सुभद्दा य, सुप्पभा य सुदसणा ।
विजया य वेजयती, जयती अपराइया ॥१॥
णवमिया[2] रोहिणी, वलदेवाण मायरो ॥

२४१ जवुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे इमाए ओसप्पिणीए नव दसारमडला[3] होत्था, त जहा—उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा ओयसी[4] तेयसी वच्चसी जससी छायसी कता सोमा सुभगा पियदसणा[5] सुरुवा[6] सुहसीला सुहाभिगमा सव्वजण-णयण-कता ओहवला अतिवला महावला अणिहता अपराइया सत्तु-मद्दणा रिपुसहस्स-माण-महणा साणुक्कोसा अमच्छरा अचवला अचडा मिय-मजुल-पलाव-हसिया गंभीर-मधुर-पडिपुण्ण-सच्चवयणा अब्भुवगय-वच्छला सरण्णा लक्खण-वजण-गुणोववेया माणुम्माण-पमाण-पडिपुण्ण-सुजात-सव्वग-सुदरगा ससि-सोमागार-कत-पिय-दसणा अमसणा[7] पयडदडप्पयार-गभीर-दरिसणिज्जा तालद्धओव्विद्ध-गरुल-केऊ महाधणु-विकड्ढगा[8] महासत्तसागरा दुद्धरा धणुद्धरा धीरपुरिसा जुद्ध-कित्तिपुरिसा विउलकुल-समुब्भवा महारयण[9]-

---

१ एषा गाथा स्थानाङ्गस्य नवमस्थानात् स्वीकृतास्ति । समवायाङ्गहस्तलिखितवृत्तौ निम्नप्रकारासौ वर्तते—
पयावई य वभो सोमो,
रुद्दो सिवो महसिरो य ।
अग्गिसिहो य दसरहो,
नवमो भणिओ य वसुदेवो ॥
अस्या गाथाया 'रोद्दे सोमे' नाम्नोर्विपर्ययोस्ति । आवश्यकनिर्युक्तावपि स्थानाङ्गस्य समर्थन लभ्यते—
हवइ पयावइ वभो,
रुदो सोमो सिवो महासिवो य ॥
अग्गिसीहे अ दसरहे,
नवमे भणिए अ वसुदेवे ॥४१॥

२ नवमिया य (ग) ।
३ दसारमडणा (वृपा) ।
४ जोयसी (ग) ।
५ सुदसणा (ग) ।
६ सुत्तवा (क) ।
७ अमरिसणा (क्व) ।
८ विगरसगा (ग) ।
९. महारण (वृपा) ।

विहाडगा अद्धभरहसामी सोमा रायकुल-वस-तिलया अजिया अजियरहा हल-मुसल-कणग-पाणी सख-चक्क-गय-सत्ति-नदगधरा पवरुज्जल-सुक्कत[1]-विमल-गोथुभ-तिरीडधारी कुडल-उज्जोइयाणणा पुडरीय-णयणा एकावलि-कठलइय-वच्छा सिरिवच्छ-सुलछणा वरजसा सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-सुरइत-पलवसोभत-कत-विकसत-चित्त[2]-वरमाल-रइयवच्छा अट्ठसय-विभत्त-लक्खण-पसत्थ-सुदर-विरइयगमगा मत्तगयवरिंद-ललिय-विक्कम-विलसियगई सारय-नवथणियमधुर-गभीर-कोचनिग्घोस-दुदुभिसरा कडिसुत्तगनील-पीय-कोसेयवाससा पवरदित्त-तेया[3] नरसीहा नरवई नरिंदा नरवसभा मरुयवसभकप्पा अब्भहिय राय-तेय-लच्छीए दिप्पमाणा नीलग-पीतग-वसणा दुवे-दुवे रामकेसवा भायरो होत्था, त जहा—

संगहणी-गाहा

तिविट्ठू य[4] •दुविट्ठू य, सयभू पुरिसुत्तमे ।
पुरिससीहे तह पुरिसपुडरीए दत्ते नारायणे°कण्हे ॥१॥
अयले[5] •विजए भद्दे, सुप्पभे य सुदसणे ।
आणदे णदणे पउमे°, रामे यावि[6] अपच्छिमे ॥२॥

२४२ एतेसि ण णवण्ह बलदेव-वासुदेवाण पुव्वभविया नव-नव नामधेज्जा होत्था, त जहा—

विस्सभूई पव्वयए, धणदत्त समुद्ददत्त सेवाले ।
पियमित्त[7] ललियमित्ते, पुणव्वसू गगदत्ते य ॥१॥
एयाइ नामाइ, पुव्वभवे आसि वासुदेवाण ।
एत्तो बलदेवाण, जहक्कम कित्तइस्सामि ॥२॥
विसनदी सुबधू य, सागरदत्ते असोगललिए य ।
वाराह धम्मसेणे, अपराइय रायललिए य ॥३॥

२४३ एतेसि ण नवण्ह वासुदेवाण पुव्वभविया[8] नव धम्मायरिया होत्था, त जहा—

सभूत[9] सुभद्दे[10] सुदसणे, य सेयसे कण्ह गगदत्ते य ।
सागरसमुद्दनामे, दुमसेणे य णवमए ॥१॥

---

१ सुकय (वृपा) ।
२ विचित्त (ग) ।
३ कोसेयज्ज° (ग) ।
४ स० पा०—तिविट्ठू य जाव कण्हे ।
५ स० पा०—अयले जाव रामे ।
६ य (ख) ।
७ पियमेत्त (क), पियमित्ते (ग) ।
८ पुव्वभवियाए (क), पुव्वभवे (ग) ।
९ सभूते (ख, ग) ।
१० सुभद्द (ग) ।

एते धम्मायरिया, कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं ।
पुव्वभवे आसिण्हं', जत्थ नियाणाइं कासी य ॥२॥

२८४ एएसि णं नवण्हं वासुदेवाणं पुव्वभवे नव नियाणभूमीओ होत्था, तं जहा—
महुरा य' *कणगवत्थू, सावत्थी पोयणं च रायगिहं ।
कागंदी कोसंबी, मिहिलपुरी °हत्थिणपुरं च ॥१॥

२८५ एएसि णं नवण्हं वासुदेवाणं नव नियाणकारणा होत्था, तं जहा—
गावी जुवे' *य संगामे इत्थी पराइओ रंगे ।
भज्जाणुराग गोट्ठी, परइड्ढी° माउया इय ॥१॥

२८६ एएसि णं नवण्हं वासुदेवाणं नव पडिसत्तू होत्था, तं जहा—
अस्सग्गीवे' *तारए, मेरए महुकेढवे निसुंभे य ।
बलिपहराए(दे?)तह रावणे य नवमे° जरासंधे ॥१॥
एए खलु पडिसत्तू', *कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं ।
सव्वे वि चक्कजोही, सव्वे वि हया° सचक्केहिं ॥२॥

२८७ एक्को य सत्तमाए, पंच य छट्ठीए पंचमा एक्को ।
एक्को य चउत्थीए, कण्हो पुण तच्चपुढवीए ॥१॥
अणिदाणकडा रामा, सव्वे वि य केसवा नियाणकडा ।
उड्ढंगामी रामा, केसव सव्वे अहोगामी ॥२॥
अट्ठंतकडा रामा, एगो पुण बंभलोयकप्पंमि ।
एक्का से गब्भवसही, सिज्झिस्सइ आगमेस्साणं' ॥३॥

एरवय-तित्थगर-पदं

२८८. जंबुद्दीवे णं दीवे एरवए वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा होत्था, तं जहा—
चंदाणणं सुचंदं च, अग्गिसेणं च नंदिसेणं' च ।
इसिदिण्णं वयहारिं', वंदिमो सामचंदं च ॥१॥
वंदामि जुत्तिसेणं, अजियसेणं'' तहेव सिवसेणं'' ।
बुद्धं च देवसम्मं'', सययं'' निक्खित्तसत्थं'' च ॥२॥

---

१ आसिनवण्ह (ख) ।
२. सं० पा०—महुरा य जाव हत्थिणपुर ।
३ सं० पा०—जुवे जाव माउया ।
४ सं० पा०—अस्सगीवे जाव जरासंधे ।
५. सं० पा०—पडिसत्तू जाव सचक्केहिं ।
६. आगमिस्सेण (वृ), आगमेस्साण (वृपा) ।
७ अत्तसेण (वृपा) ।
८ वयहारिं च (वृपा) ।
९ सर्वचिदय दीर्घाह्वः, दीर्घेण वोच्यते (वृ) ।
१०. सयाउ (वृपा) ।
११ सच्चसेण, सच्चइ (वृपा) ।
१२ देवसेण (वृपा) ।
१३ सिद्ध (ग) ।
१४. निक्खित्तसत्त (ग); सेज्जस (वृपा) ।

अत्तजल[1] जिणवसहं, वंदे य अणंतयं[2] अमियणाणिं।
उवसंतं च धुयरयं, वंदे खलु गुत्तिसेणं च ॥३॥
अतिपासं च सुपासं, देवेसरवंदियं च मरुदेवं।
णिव्वाणगयं च धरं[3], खीणदुहं सामकोट्ठं[4] च ॥४॥
जियरागमग्गिसेणं, वंदे खीणरयमग्गिउत्तं च।
वोक्कसियपेज्जदोसं, च वारिसेणं गयं सिद्धिं ॥५॥

भावि-कुलगर-पदं

२४९ जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए सत्त कुलकरा भविस्संति, तं जहा—
मित्तवाहणे[5] सुभूमे य, सुप्पभे य सयंपभे।
दत्ते सुहुमे सुबंधू य, आगमेस्साण होक्खति[6] ॥१॥

२५० जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमिस्साए ओसप्पिणीए[7] दस कुलगरा भविस्संति, तं जहा—
विमलवाहणे सीमंकरे, सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे।
दढधणू[8] दसधणू, सयधणू पडिसूई संमुइत्ति[9] ॥१॥

भावि-तित्थगर-पदं

२५१ जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा भविस्संति, तं जहा—
महापउमे सूरदेवे, सुपासे य सयंपभे।
सव्वाणुभूई अरहा, देवउत्ते[10] य होक्खति ॥१॥
उदए पेढालपुत्ते य, पोट्टिले सतएत्ति[11] य।
मुणिसुव्वए य अरहा, सव्वभावविदू जिणे ॥२॥
अममे णिक्कसाए य, निप्पुलाए य निम्ममे।
चित्तउत्ते समाही य, आगमिस्साए होक्खइ ॥३॥
संवरे अणियट्टी य, विजए विमलेति य।
देवोववाए अरहा, अणंतविजए ति य ॥४॥

---

१. सयजल (वृपा)।
२ सीहसेण (वृपा)।
३ वर (ग)।
४ सामकोह (ग)।
५ सित्तवाहणे (ग)।
६ होक्खति (ग)।
७ उस्सप्पिणीए एरवए वासे (क्व)।
८ अट्टधणू (ग)।
९ सुमइत्ति (क्व)।
१० देवस्सुए (क्व)।
११ सत्तकित्ति (क्व)।

एए वुत्ता चउवीस, भरहे वासम्मि केवली।
आगमेस्साण होक्खति, धम्मतित्थस्स देसगा ॥५॥

२५२ एतेसि ण चउवीसाए तित्थगराण पुव्वभविया चउवीस नामधेज्जा भविस्सति[1], त जहा—

सेणिय सुपास उदए, पोट्टिल अणगारे तह दढाऊ य।
कत्तिय सखे य तहा, नद सुनदे सतए य बोद्धव्वा ॥१॥
देवई च्चेव सच्चइ, तह वासुदेव वलदेवे।
रोहिणि सुलसा चेव, तत्तो खलु रेवई चेव ॥२॥
तत्तो हवइ मिगाली[2], वोद्धव्वे खलु तहा भयाली य।
दीवायणे य कण्हे, तत्तो खलु नारए चेव ॥३॥
'अवडे दारुमडे य'[3], साई वुद्धे य होइ वोद्धव्वे।
'उस्सप्पिणी आगमेस्साए, तित्थगराण तु पुव्वभवा'[4] ॥४॥

२५३ एतेसि ण चउवीसाए तित्थगराण चउवीसं पियरो भविस्सति, चउवीस मायरो भविस्सति, चउवीस पढमसीसा भविस्सति, चउवीस पढमसिस्सिणीओ भविस्सति, चउवीस पढमभिक्खादा भविस्सति, चउवीस चेइयरुक्खा भविस्सति ॥

भावि-चक्कवट्टि-पदं

२५४ जवुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए वारस चक्कवट्टी भविस्सति, त जहा—

संगहणी-गाहा

भरहे य दीहदते, गूढदते य सुद्धदते य।
सिरिउत्ते सिरिभूई, सिरिसोमे य सत्तमे ॥१॥
पउमे य महापउमे, विमलवाहणे विपुलवाहणे चेव।
रिट्ठे वारसमे वुत्ते, आगमेसा भरहाहिवा ॥२॥

२५५ एएसि ण वारसण्ह चक्कवट्टीण वारस पियरो भविस्सति, वारस मायरो भविस्सति, वारस इत्थीरयणा भविस्सति ॥

भावि-वलदेव-वासुदेव-पदं

२५६. जवुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए नव वलदेव-वासुदेव-पियरो भविस्सति, नव वासुदेवमायरो भविस्सति, नव वलदेवमायरो भविस्सति

---

१ होत्था (ख)।
२. मिमाली (क), सयाली (क्व)।
३ तत्तो दारुमडिया (क); अबडे दारुपडे या (ख)।
४. भावीतित्थगराण णामाइ पुव्वभवियाइ (क्व)।

नव दसारमडला भविस्सति, त जहा—उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाण-पुरिसा ओयसी तेयसो एव सो चेव वण्णओ भाणियव्वो जाव[1] नीलग-पीतग-वसणा दुवे-दुवे रामकेसवा भायरो भविस्सति, त जहा—

संगहणी-गाहा

नदे य नदमित्ते, दीहबाहू तहा महाबाहू।
अइबले महाबले, बलभद्दे य सत्तमे ॥१॥
दुविट्ठू य तिविट्ठू य, आगमेसाण वण्हिणो।
जयते विजए भद्दे, सुप्पभे य सुदसणे।
आणदे नदणे पउमे, सकरिसणे य अपच्छिमे ॥२॥

२५७ एएसि ण नवण्ह बलदेव-वासुदेवाण पुव्वभविया णव नामधेज्जा भविस्सति, नव धम्मायरिया भविस्सति, नव नियाणभूमीओ भविस्सति, नव नियाणकारणा भविस्सति, नव पडिसत्तू भविस्सति, त जहा—

तिलए य लोहजघे, वइरजघे य केसरी पहराए।
अपराइए य भीमे, 'महाभीमे य सुग्गीवे'[2] ॥१॥
एए खलु पडिसत्तू, कित्तीपुरिसाण वासुदेवाण।
सव्वेवि[3] चक्कजोही, हम्मिहिति सचक्केहिं[4] ॥२॥

एरवय-भावि-तित्थगर-पद

२५८ जबुद्दीवे ण दीवे एरवए वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीस तित्थकरा भविस्सति, त जहा—

सुमगले 'य सिद्धत्थे'[5], णिव्वाणे य महाजसे।
धम्मज्झए य अरहा, आगमिस्साण होक्खइ ॥१॥
सिरिचदे पुप्फकेऊ, महाचदे य केवली।
सुयसागरे य अरहा, आगमिस्साण होक्खइ ॥२॥
सिद्धत्थे पुण्णघोसे य, महाघोसे य केवली।
सच्चसेणे य अरहा, 'आगमिस्साण होक्खइ ॥३॥
सूरसेणे य अरहा, महासेणे'[6] य केवली।
सव्वाणदे य अरहा, देवउत्ते[7] य होक्खइ ॥४॥

---

१ प० सू० २४१।
२. महाभीमसेणे य सुग्गीवे य अपच्छिमे (ग)।
३ सव्वेय (ग)।
४. सच्चकेण (ग)।
५ अत्थ सिद्धे य (ग)।
६ अणत विजए इय इय सूरसेणे महासेणे देवसेणे (ग)।
७. देवदत्ते (ग)।

सुपासे सुव्वए अरहा, 'अरहे य मुकोसले।
अरहा अणतविजए, आगमिस्साण होक्खइ'[1] ॥५॥
विमले उत्तरे अरहा, अरहा य महावले।
'देवाणदे य'[2] अरहा, आगमिस्साण होक्खइ ॥६॥
एए वुत्ता चउव्वीस, एरवयम्मि[3] केवली।
आगमिस्साण होक्खति, धम्मतित्थस्स देसगा ॥७॥

एरवय-भावि-चक्कवट्टि-वलदेव-वासुदेव-पदं

२५९ वारस चक्कवट्टी भविस्सति, वारस चक्कवट्टिपियरो भविस्सति, वारस मायरो भविस्सति, वारस इत्थीरयणा भविस्सति।
नव वलदेव-वासुदेवपियरो भविस्सति, णव वासुदेवमायरो भविस्सति, णव वलदेवमायरो भविस्सति, णव दसारमंडला भविस्सति, उत्तमपुरिसा मज्झिम-पुरिसा पहाणपुरिसा जाव[4] दुवे-दुवे रामकेसवा भायरो भविस्सति, णव पडिसत्तू भविस्सति, नव पुव्वभवणामधेज्जा, णव धम्मायरिया, णव णियाणभूमीओ, णव णियाणकारणा, आयाए, एरवए आगमिस्साए भाणियव्वा ॥

२६० एव दोसुवि आगमिस्साए भाणियव्वा ॥

निक्खेव-पदं

२६१ इच्चेय एवमाहिज्जति[5], त जहा—कुलगरवसेति य, एव तित्थगरवसेति य चक्कवट्टिवसेति व दसारवसेति य गणधरवसेति य इसिवसेति य जतिवसेति य मुणिवसेति य सुतेति वा सुतगेति वा सुयसमासेति वा सुयखधेति वा समाएति[6] वा सखेति वा। समत्तमगमक्खाय अज्झयण।

—त्ति बेमि ॥

ग्रन्थ-परिमाण
कुल अक्षर ७१७२०।
अनुष्टुप् श्लोक २२४१, अक्षर ८।

---

१. ए महानुक्के य सुकोसले। देवाणंदे अरहा अणत विजए इय (ग)।
२ देवोववाए (ग)।
३ एरवतवासमि (ग)।
४. प० नू० २४१।
५ ०हिज्जति (क, ख, ग)।
६ सामाएति (ग), समवाएइ (क्व)।

परिशिष्टः

परिशिष्ट-१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल

आयारो

सक्षिप्त-पाठ,	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अहमसी जाव अण्णयरीओ	१।३	१।१
आगममाणे जाव समत्तमेव	८।९५,९६,१२३,१२४	८।७८,८०
एव ज परिघेतव्व ति, मन्नसि ज एव हिययाए पित्ताए वसाए पिच्छाए पुच्छाए वालाए सिंगाए विसाणाए दताए दाढाए नहाए ण्हारुणीए अट्ठीए अट्ठिमिजाए अट्ठाए अणट्ठाए	५।१०१ १।१४०	५।१०१ १।१४०
गाम वा जाव रायहाणि	८।१२६	८।१०६
जाएज्जा जाव एव	८।६४-६७	८।४४-४८
धारेज्जा जाव गिम्हे	८।८८-९२	८।४६-५०
परक्कमेज्ज वा जाव हुरत्था	८।२३	८।२१
समारम्भ जाव चेएइ	८।२४	८।२३

आयारचूला

अतनिक्खजाए जाव णो	५।३७,३८	५।३६
अकिरिय जाव अभूतोवघाइय	४।११	४।१०
अक्कोसति वा जाव उद्दवति	३।६१	२।२२
अक्कोसति वा तहेव तेल्लादि सिणाणादि सीओदगवियडादि णिगिणाइ य जहा सिज्जाए आलावगा णवर ओग्गहवत्तव्वया	७।१६-२०	२।५१-५५
अक्कोसेज्ज वा जाव उद्दवेज्ज	३।९	२।२२
अणुवयति त चेव जाव णो सातिज्जति वहुवयणेण भाणियव्व	५।४७	५।४६

१ अत्र 'जाव' शब्दस्य व्यत्ययोपि वर्तते।

१,२ अत्र 'जाव' शब्दस्य व्यत्ययोपि वर्तते।

१,२ अत्र 'जाव' शब्दस्य अत्ययोपि वर्तते ।

सूयगडो

1 येषा चत्वारश्चत्वार आलापकास्तेषा तृतीय आलापको न ग्राह्य ।

हरियजोणियाण रुक्खाण अज्झोरुहाण तणाण ओसहीण हरियाण मूलाण जाव बीयाण आयाण कायाण जाव कूरवाण उदगाण जाव पुक्खलच्छिभगाण सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर जाव सत । अवरे वि य ण तेसिं रुक्खजोणियाण अज्झोरुहजोणियाण तणजोणियाण ओसहिजोणियाण हरियजोणियाण मूल-जोणियाण जाव बीयजोणियाण आयजोणियाण कायजोणियाण जाव कूरवजोणियाण उदगजोणियाण अवगजोणियाण जाव पुक्खलच्छिभगजोणियाण तसपाणाण सरीरा नाणावण्णा जाव मक्खाय ।	३।४४-७५	३।२-४३
अहीण जाव मोहरगाण	३।७६	३।७६
जातोडिज्जमाणस्स वा जाव उवद्दविज्ज०	४।२१	१।५६
आयहेउ वा जाव परिवारहेउ	२।६	२।३
आयाण जाव कूराण	३।२२	३।२२
आयारो जाव दिट्ठिवाओ	१।३५	नंदी सू० ८०
आरिए जाव सव्वदुक्ख०	२।७०,७५	२।३२
अट्टालाओ वा जाव गद्दभ०	२।२८	२।२३
उदगजोणिया जाव कम्म०	३।८७,८८	३।८६
उदगसंभवा जाव कम्म०	३।२३,४३,८६	३।२
उदाहु ·· मतंगइया	७।२०	७।१७
उम्माण जाव सुद्धोदगाण	३।८५	३।८५
ऊसिय जाव पडिरूव	१।६	१।३
एगखुराण जाव सणप्फयाण	३।७८	३।७८
एवं उदगवुब्बुए भणियव्वे	१।३४	१।३४
एवं ओसहीण वि चत्तारि आलावगा	३।१४-१७	३।२-५
एवं जहा मणुस्साण जाव इत्थि	३।७८	३।७६
एवं जाव तसत्ताए त्ति भाणियव्वं	४।११-१५	४।१०,३
एवं तणजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति तणजोणियतणसरीरं च आहारेंति जाव मक्खाय	३।१२	३।८

धम्माणुया जाव एग्गच्चाओ परिग्गहाओ		
अप्पडिविरया	७।२४	२।७१
धम्माणुया जाव धम्मेण	२।७१	ओ० सू० १६१
धम्माणुया जाव सव्वाओ	७।२३	२।६३
धम्मिट्ठा जाव धम्मेण	२।६३	ओ० सू० १६१
पउमवरपोंडरीय जाव सव्व परिग्गह	१।१०	१।६
पच्चक्खाइस्सामो जाव सव्व परिग्गह	७।२१	७।२०
पत्तियमाणा जाव इति	१।३०,३१	१।२१,२२
परियाए जाव णो णेयाउए	७।३०	७।१६
पवालाण जाव वीयाण	३।५	३।५
पाईण वा जाव सुयक्खाते	१।३२-३४,३६-४१	१।२३-२५
पाणाइवाए जाव परिग्गहे	४।३	१।५६
पाणाइवायाओ जाव विरए	१।५६	ओ० सू० १७१
पाणा जाव सत्ता	१।५६,५७,२।७८	१।४७
पाणा जाव सव्वे	४।२१	१।४७
पाणाण जाव सत्ताण	४।१७	१।४७
पाणाण जाव सव्वेसि	४।५,६,१७	१।४७
पाणावि जाव अय······	७।२६	७।२०
पाणावि जाव अय पिभे······	७।२६	७।२०
पाणा वि जाव अय पिभेदे··	७।२६	७।२०
पासादिए जाव पडिरूवे	१।३	१।१
पासादीया जाव पडिरूवा	७।५	१।१
पुढविकाइया जाव तसकाइया	४।३,२१	१।५६
पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया	४।१७	१।५६
पुढविकाए जाव तसकाए	१।५६	ठाण ७।७३
पुढविकाए जाव पुढविमेव	१।३४	१।३४
पुढविमभवा जाव कम्म०	३।२२	३।२
पुढविसभवा जाव णाणाविह०	३।१०	३।२
पुढविसरीर जाव सत	३।२२ २३,४३,७७-७६ ८१,८२,८५-८६, ६७	३।२
पुढविसरीर जाव सारूविकड	३।६,७,८,७६	३।२
पुढवीण जाव सूरकताण	३।६७	३।६७
पुरिसत्ताए जाव विउट्ट ति	३।७८	३।७६
पुरिसस्स जाव एत्थ ण मेहुणे एव त चेव नाणत्त	३।७६	३।७६

सेए जाव सेयसि	१।८	१।६
सेसा तिण्णि आलावणा जहा उदगाण	३।९०-९२,९८-१००	३।८६-८८
सोयण जाव परितप्पण	४।१७	४।१७
सोयाओ जाव फासाओ	१।५२	१।५२
सोयामि वा जाव परितप्पामि	१।५९	१।४२
हतव्वा जाव ण उद्दवेयव्वा	४।२१	१।५६
हतव्वा जाव कालमासे	७।२५	२।१४
हता जाव आहार	२।१९	२।१९
हता जाव उवक्खाइत्ता	२।१९,२०	२।१९

ठाणं

अइवाइत्ता भवति जाव जवावाती	७।२९	७।२८
अगारातो जाव पव्वतिते	४।४५०	३।५२३
अट्ठ एव चेव	८।६६	८।६५
अड्ढाइ जाव वहुजणस्स	८।१०	वृत्ति
अणामाएमाणे जाव अणभिलसमाणे	४।४५१	४।४५०
अणुत्तरे जाव केवलवर०	५।९७	५।८४
अणुत्तरे जाव समुप्पणे	६।१०५	५।८४
अणुत्तरे जाव समुप्पणे	१०।१०३	१०।१०३
अणुसोतचारी जाव सव्वचारी	५।१९९	५।१९९
अत्थि जाव समुप्पणे	७।२	७।२
अपढमसमयणेरतिता एव जाव अपढम०	८।१०५	५।१७५
अपढमसमयणेरतिता जाव अपढमसमयदेवा	९।१०,१०।१५३	५।१७५
अब्भोवगमिओ जाव सम्म	४।४५१	४।४५१
अमणुण्णा सद्दा जाव फासा	१०।१४०	५।५
अमणुण्णे जाव साइमे	८।४२	८।४२
अमुच्छिए [ते] जाव अणज्झोववण्णे	३।३६२,४।४३४	३।३६२
अयगोलसमाणे जाव सीसगोल०	४।५४६	४।५४६
अरहंतेहिं त चेव	३।८५	३।८१
अरहा जाव अय	१०।१०९	५।१९५,१०।१०९
अवट्ठिते जाव दव्वओ	५।१७४	५।१७०
अवलेहणित जाव देवेसु	४।२८२	४।२८२
अविसेस जाव पुव्वविदेहे	२।२७०	२।२६८

अविसेसमणाणत्ता जाव सद्दावाती	२।२७४	२।२७२
असावज्जे जाव अभूताभिसकणे	७।१३३	७।१३१
असिपत्तसमाणे जाव कलवचीरिया०	४।५४८	४।५४८
असुयणिस्सिते वि एमेव	२।१०३	२।१०२
असुरकुमाराण वग्गणा चउवीस दडओ जाव एगा	१।१४३-१६३	२।३५४-३६२,४।३६६
असोगवण जाव चूयवण	४।३४०	४।३३९
अहासुत्त जाव अणुपालित्ता	८।१०४	७।१३
अहासुत्त जाव आराहिया	७।१३,९।४१,१०।१५१	वृत्ति[1]
अहीणस्सरे जाव मणामस्सरे	८।१०	८।१०
आउकाइओगाहणा जाव वणस्सइकाइओगाहणा	९।११	७।१३
आउक्खएण जाव चइत्ता	८।१०	८।१०
आगमे जाव जीते	५।१२४	५।१२४
आगमेण जाव जीतेण	५।१२४	५।१२४
आघवइत्ता जाव ठावतिता	३।८७	३।८७
आढाति जाव वहु	८।१०	८।१०
आघाकम्मित वा जाव हरितभोयण	९।६२	९।६२
अनिणिवोहियणाणावरणिज्जे जाव केवल०	५।२१९	५।२१८
आभिणिवोहिय [त] णाणी जाव केवल०	६।११,८।१०६	५।२१८
आमलगमहुरफलसमाणे जाव खडमहुर०	४।४११	४।४११
आयार जाव दिट्ठिवाय	१०।१०३	समवाओ १।२
आरभिता जाव मिच्छादसणवत्तिता	५।११७	५।११२
आलोएज्जा जाव अत्थि	८।१०	८।१०
आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा	३।३४२,३४३,८।१०	३।३३८
आलोयणारिहे जाव अणवट्ठप्पारिहे	१०।७३	९।४२
आलोयणारिहे जाव मूलारिहे	९।४२	८।२०
आवत्ते जाव पुक्खलावती	८।६९	२।३४०
आसपुरा जाव वीतसोगा	८।७५	२।३४१

१ वृत्तौ किञ्चद् भेदने लभ्यते—७।१३—अहासुत्त यावत्करणात् अहाअत्थं अहातच्च अहामग्गं अहाकप्पं सम्मं काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आराहिया त्ति (पत्र ३६८)। ८।१०४—'अहासुत्ता अहाकप्पा अहामग्गा अहातच्चा सम्म काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आराहिया' इति यावत्करणात् दृश्य मणुपालिय' त्ति (पत्र ८१७)। ९।१४१—यथासूत्र यथाकल्प यथामार्गं यथातत्त्व सम्यक् कायेन स्पृष्टा पालिता शोभिता तीरित्ता कीर्तिता आराधिता चापि भवतीति। (पत्र ४३०) १०।१५१—अहासुत्तं यावत्करणात् अहाअत्थं अहातच्च अहामग्गं अहाकप्प सम्यक्कायेन, फासिया पालिया शोधिता शोभिता वा तीरिया कीर्तिता आराधिता भवति (पत्र ४९२)।

एव	२।४६२	२।४६१
एव	३।३२२	३।३२१
एव	३।४७५	३।४७४
एव	६।३९	६।३८
एव अग्गिच्चावि एव रिट्ठावि	९।३६,३७	९।३५
एव अजोगिभवत्थकेवलणाणे वि	२।९१	२।९०
एव अणुण्णवेत्तए उवाइणित्तए	३।४२३,४२४	३।४२२
एव अज्जरूवे अज्जमणे अज्जसकप्पे		
अज्जपण्णे अज्जदिट्ठी अज्जसीलाचारे		
अज्जववहारे अज्जपरक्कमे अज्जवित्ती		
अज्जजाती अज्जभासी अज्जओभासी		
अज्जसवी अज्जपरियाए अज्जपरियाले		
एव सत्तरस्स आलावगा जहा दीणेण भणिया		
तहा अज्जेण वि भाणियव्वा	४।२१३-२२७	४।१९६-२१०
एव अणभिग्गहितमिच्छादसणे वि	२।८५	२।८४
एव असकिलेसे वि एवमतिक्कमे वि		
वइक्कमे वि अइयारे वि अणायारे वि	३।४३९-४४३	३।४३८
एव असयमो वि भाणितव्वो	१०।२३	१०।२२
एव आगता णामेगे सुमणे भवति ३		
एमीतेगे सु३ एस्सामीति एगे सुमणे भवति	३।१९५-१९७	३।१८९-१९१
एव उवसपया एव विजहणा	३।३५३,३५४	३।३५१
एव एएण अभिलावेण—		

संगहणी-गाहा

गता य अगता य, आगता खलु तहा अणागता ।
चिट्ठित्तमचिट्ठित्ता[1], णिसिततित्ता[2] चेव णो चेव ॥१॥
हता य अहता य, छिदित्ता खलु तहा अछिदित्ता ।
वूतित्ता अवूत्तिता, भासित्ता चेव णो चेव ॥२॥
'दच्चा य अदच्चा'[3] य, भुजित्ता खलु तहा अभुजित्ता ।
लभित्ता अलभित्ता, पिवइत्ता[4] चेव णो चेव ॥३॥

---

१ चिट्ठित्त न चिट्ठित्ता (क) ।
२ णिसित्तत्ता (क, ख) ।
३ दत्ता प्रदत्ता (क) ।
४ पिवइत्ता (क, ग), पिइता (ख) ।

सुतित्ता असुतित्ता, जुज्झित्ता खलु तहा अजुज्झित्ता । जतित्ता अजयित्ता य, पराजिणित्ता चेव णो चेव ।।४।। सद्दा रूवा 'गधा, रसा य'[1] फासा तहेव ठाणा य । णिस्सीलस्स गरहिता, पसत्था पुण सीलवतस्स ।।५।। एवमिक्केक्के तिण्णि उ तिण्णि उ आलावगा भाणियव्वा ।	३।१९८-२८४	सगहणी-गाहा, ३।१८९-१९४
एव एसा गाहा फासेतव्वा, जाव—ससरीरी चेव असरीरी चेव सिद्धसइदियकाए, जोगे वेए कसाय लेसा य । णाणुवओगाहारे, भासग चरिमे य ससरीरी ।।१।।	२।४१०	सगहणी-गाहा
एव ओसप्पिणीए नवर पण्णत्ते आगमिस्साते उस्सप्पिणीए भविस्सति	३।११०,१११	३।१०९
एव कता पिया मणुण्णा मणामा	२।२३३	२।२३२
एव कुलसपण्णेण य वलसपण्णेण य कुलसप- ण्णेण य रूवसपण्णेण य कुलसपण्णेण य जय- सपण्णेण य	४।४७४-४७६	४।४७१-४७३
एव कुलेण य रूवेण य कुलेण य सुतेण य कुलेण त सीलेण य कुलेण य चरित्तेण य	४।३९७-४००	३।३९६
एव गधाइ रसाइ फासाइ जाव सव्वेण वि	१०।३	१०।३,२।२०३,२०४
एव गधा रसा फासा एवमिक्किक्के छ-छ आलावगा भाणियव्वा	२।२३०-२३८	२।२३४
एव चउभगो तहेव	४।२५०	४।२५०
एव चक्कवट्टिवसा दसारवसा	२।३१०,३११	२।३०९
एव चक्कवट्टी एव वलदेवा एव वासुदेवा जाव उप्पज्जिस्सति	२।३१३-३१५	२।३१२
एव चिणति एस दडओ एव चिणिस्सति एस दडओ एवमेतेण तिण्णि दडगा	४।९३,९४	४।९२
एव चेव	३।४८४	३।४८३
एव चेव	४।४२७	४।४२६
एव चेव	४।६१७	४।६१७
एव चेव	४।६१९	४।६१८
एव चेव	५।१६१	५।१५९

1 रसा गंधा (क, ग) ।

एव चेव	५।१६२	५।१५९
एव चेव	६।२६	६।२५
एव चेव	८।४९,५०	८।४८
एव चेव	८।१२४	८।१२३
एव चेव	१०।६४	१०।६३
एव चेव एव तिरियलोए वि	४।४८४,४८५	४।४८३
एव चेव एव फामामातो वि	६।८१	६।८१
एव चेव एवमेतेण आभिलावेण इमातो गाहातो अणुगतव्वातो—		
पउमप्पभस्स चित्ता, मूले पुण होइ पुप्फदतस्स । पुव्वाइ आसाढा, मीयलस्सुत्तर विमलस्स भद्दवना ॥१॥ रेवतित अणतजिणो, पूसो धम्मस्स सतिणो भरणी । कुथुस्स कत्तियाओ, अरस्स तह रेवतीतो य ॥२॥ मुणिसुव्वयस्स सवणो, आसिणी णमिणो य णेमिणो चित्ता । पासस्स विसाहाओ, पच य हत्थुत्तरे वीरे ॥३॥	५।८६-९६	५।८४
एव चेव जाव छच्च	६।२७	६।२५
एव चेव णवर खेत्तओ लोगालोगपमाणमिते गुणतो अवगाहणागुणे सेस त चेव	५।१७२	५।१७०
एव चेव णवर गुणतो ठाणगुणे	५।१७१	५।१७०
एव चेव णवर दव्वओण जीवत्थिगाते अणताइ दव्वाइ अरूवि जीवे गुणतो उवओगगुणे सेसं त चेव	५।१७३	५।१७०
एव चेव मणुस्सावि	४।६१५	४।६१४
एव छप्पि समाओ भाणियव्वाओ जाव दूसमदूसमा	३।९०	२।१२८-१३३
एव छप्पि समाओ भाणियव्वाओ जाव सुसमसुसमा	३।९२	२।१३५-१४०
एव जधा अट्ठाणे जाव सवे	१०।७१	८।१९
एव जधा छट्ठाणे जाव जीवा	८।१८	६।३६
एव जधा पचट्ठाणे जाव आयरिय	७।६	५।४८
एव जधा पचट्ठाणे जाव वाहिं	७।८१	५।१६६
एवं जहण्णोगाहणगाण उक्कोसोगाहणगाण अजहण्णुक्कोसोगाहणगाण जहण्णठितियाण उक्कोसठितियाण अजहण्णुक्कोसठितियाण		

अभिई सवणे घणिट्ठा, सयभिसया दो य होंति भद्दवया ।
रेवति अस्सिणि भरणी, णेयव्वा अणुपुव्वीए ॥३॥

---

[1] स्थानाङ्गवृत्तौ—'पिया इ वा भज्जा इ वा माया इ वा भगिणी इ वा पुत्ता इ वा धूया इ वे' त्ति यावच्छब्दाक्षेप (पत्र १३४)। 'माया इ वा भज्जा इ वा भइणी इ वा पुत्ता इ वा धूया इ वे' त्ति यावच्छब्दाक्षेप (पत्र २३३)।

१ सुणेमाणे (ख), सुणेमीति (ग)।

सव्वदीवसमुद्दाण जाव अद्धगुलग	१।२४८	ज०[1] २
सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स	४।४५१	४।४५१
सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स	५।७३	५।७२
सहिस्सति जाव अहियासिस्सति	५।७४	५।७३
सहेज्जा जाव अहियासेज्जा	५।७३,७४	५।७३
सिंघू जाव रत्तावती	७।५७	७।५३
सिज्झति जाव मत	४।१	४।१
सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण०	४।१	४।१
सिज्झिहिति जाव अत	६।६१	४।१
सिज्झिहिती जाव सव्वदुक्खाण०	६।६२	४।१
सिज्झिस्स जाव सव्वदुक्खाण०	६।६२	४।१
सिद्धसुग्गता जाव सुकुल०	४।१४१	४।१३९
सिद्धाइ जाव सव्वदुक्ख०	८।३६	१।२४९
सिद्धाओ जाव सव्वदुक्ख०	८।५३	१।२४९
सिद्धे जाव प्पहीणे	१०।७५,७६,७८,७९	१।२४९
सिद्धे जाव सव्वदुक्ख०	६।१०६	१।२४९
सुवकडसमाणे जाव कवलकड०	४।५४९	४।५४९
सुक्किलपक्खग जाव पडिवुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
सुभाते जाव आणुगामियत्ताए	५।१३	५।१२
सुमिणे जाव पडिवुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
सुवच्छे जाव मगलावती	८।७०	२।३२६
सुवप्पे जाव गधिलावती	८।७२	२।३२६
सुसमसुसमा जाव एगा	१।१२९-१३२	वृत्ति
सुसमसुसमा जाव दूसमदूसमा	६।२३	१।१२९-१३२
से जहाणामते··· ·· ·	६।६२	६।६२
सेलथभसमाणे जाव तिणिस०	४।२८३	४।२८३
सेस जहा पचट्ठाणे एव जाव अच्चुतस्सवि णेतव्व	७।१२१,१२२	५।६६,६७
सेस त चेव जाव करिस्सति	४।५१४	४।५१४
सेस तहेव जाव भवणगिहेसु	५।२२	५।२२
सेस तहेव जाव भास	१०।१५९	१०।१५९

१ वृत्तो मस्य पाठस्य पूर्ति निम्नप्रकारा विद्यते—यावदुग्रहणावेम सूत्र द्रष्टव्यम्—सव्व०मतरए सव्वखुड्डाए वट्टे त्रेल्लापुयसठाणसठिए एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खमेण तिन्नि जोयणसयसहस्साइ सोलससहस्साइं दोन्नि सयाइ सत्तावीसाइ तिन्नि कोसा मट्ठावीस घणुसय तेरस अगलाइ (पत्र ३३)।

समवाओ

१ पइण्णगसमवाय-सूत्र ।

अक्खरा त चेव जाव परित्ता	प० ९०	प० ८९
अगाराओ जाव पव्वइए	९७।४	१९।५
अजित जाव वद्धमाणे	२४।१,प० २२२	अ० सू० २२७
अणतागमा जाव चरण-करण	प० ९८	प० ८९
अणतागमा जाव सासया	प० ९३	प० ८९
अणुओगदारा जाव सखेज्जाओ	प० ९४,९५,९८,९९,१३१	प० ८९
अणुओगदारा सखेज्जाओ	प० ९७	प० ९१
अभिणदण जाव पास	२३।३,४	अ० सू० २२७
अयले जाव रामे	प० २४१	वृत्ति
अवसेसाइ परिक्कमाइ पाढाइयाइ एक्कारसविहाइ पण्णत्ताइ	प० १०४-१०८	प० १०१,१०२
अम्मगीवे जाव जरासवे	प० २४६	वृत्ति
अहासुत्त जाव आराहिया	४९।१,६४।१,८१।१,१००।१	वृत्ति[1]
आघविज्जति जाव उवदसिज्जति	प० ९०	प० ८९
आघविज्जति जाव एव	प० ९३	प० ८९
आघविज्जति जाव नाया०	प० ९४	वृत्ति, प० ८९
आघविज्जति०	प० ९०,९१,९३-९९,१३१	प० ८९
आहारय जह देसूणारयणि उ पडिपुण्णारयणी	प० १६६	पण्ण० २१
आहारयसरीरे समचउरससठाण सठिते	प० १६५	पण्ण० २१
उववाएण	प० १८३	पण्ण० ६
एव अट्ठासीइ सुत्ताणि भाणियव्वाणि जहा नदीए	८८।२	नदी १०२
एव गतिनाम ··ओगाहणानाम	प० १७६	प० १७६
एव चउदिसिपि नेयव्व	५८।४	५८।३,५२।३
एव चउसुवि दिसासु नेयव्व[2]	८८।४,५,६	८८।३
एव चेव दोमासिया आरोवणा सपचराय दोमासिया आरोवणा एव तेमासिया आरोवणा एव चउमासिया आरोवणा	२८।१	२८।१
एव चेव मदरस्स	८७।४	८७।१

---

१ वृत्तौ किञ्चिद् भेदेन लभ्यते, यथा—६४।१ यावत्करणात् 'अहाकप्प फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया सम्म आणाए आराहियावि भवति। ८१।१ 'जाव' त्तिकरणाद्यथाकल्प यथामार्ग यथातत्त्व सम्यक्कायेन स्पृष्टा पालिता शोभिता तीरिता कीर्तिता आज्ञयाऽऽराधितेति।

२ नायव्व (क), नातव्व (ख, ग)।

एव जइ मणुस्स कि गब्भवक्कतिय समुच्छिम णो गब्भवक्कतिय णो समुच्छिम जइ गब्भवक्कतिय कि कम्मभूमग अकम्मभूमग णो कम्मभूमग णो अकम्मभूमग जइ कम्मभूमग कि सखेज्जवासाउय असखेज्जवासाउय णो सखेज्जवासाउय णो असखेज्जवासाउय जइ सखेज्जवासाउय कि पज्जत्तय अपज्जत्तय गोयमा पज्जत्तय णो अपज्जत्तय जइ पज्जत्तय कि सम्म मिच्छ सम्मामिच्छ णो सम्मद्दिट्ठि नो मिच्छदिट्ठि नो सम्मामिच्छदिट्ठि जइ सम्मदिट्ठि कि सजत असजत सजतासजत णो सजय णो असजय णो सजतासजत जति सजय कि पमत्तसजय अपमत्तसजय णो पमत्तसजय णो अपमत्तस जइ पमत्तसजय कि इड्ढिपत्त अणिड्ढिपत्त णो इड्ढिपत्त नो अनिड्ढिपत्त वयणावि भतियव्वा	प० १६४	प० १६४
एव थेरे वि अज्जसुहम्मे	१००।५	१००।४
एव दक्खिणिल्लाओ उत्तरे	६६।३	६६।२
एव दिवसोऽवि नायव्वो	१२।६	१२।८
एव धणू नालिया जुगे अक्खे मुसले वि	६६।४-८	६६।३
एव पचवि	२७।१	५।२
एव पचवि इदिया	२५।१	पण्ण० १५।१
एव पचवि रसा	२२।६	ठा० १.७८-८२
एव पडुप्पण्णेवि अणागएवि	प० १३२	प० १३२
एव मदरस्स पच्चत्थिमिल्लिाओ चरिमताओ मलस्स पुरत्थिमिल्ले च	८७।३	८७।१
एव माणे माया लोभे	१६।२,२१।२	अस्य पूर्ति अत्रैव
एव सतिम्सवि	६०।३	६०।२
एव सगरे वि राया चाउरतचक्कवट्टी एवसत्तरिं पुव्व जाव पव्वइए	७१।४	७१।३
कत वण्ण लेस जाव णदुत्तरवडेंसग	१५।१३	३।२१
कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे	८६।२	८६।१
कालगयाइ जाव सव्वदुक्ख०	प० ६३	८६।१
कीय आहट्टु जाव अभिक्खण	२१।१	दसा० २

कोहविवेगे जाव लोभ	२७।१	४।१
चउरंसा जाव असुभा	पृ० १४१	वृत्ति
जातिनाम जाव ओगाहणानाम	पृ० १७७	पृ० १७६
जुवे जाव माउया	पृ० २४५	वृत्ति
णितिया जाव णिच्चा	पृ० १३३	पृ० १३३
ताइ चेव माउया पयाणि जाव नदावत्त	पृ० १०३	पृ० १०२
तिविट्ठू य जाव कण्हे	पृ० २४१	वृत्ति
धम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए	पृ० १३७	पण्ण० १
नेरइया०	पृ० १७३	पण्ण० ३५
पज्जत्तगाण०	पृ० १५५	पृ० १५४
पडिसत्तू जाव सचक्केहिं	पृ० २४६	वृत्ति
पढभाए पढम भाग जाव पण्णरसेसु	१५।३	केवल सख्यापूरिता
पम्हलेस जाव पम्हुत्तरवडेसग	६।१७	३।२१
परूवेई जाव से ण	पृ० ९६	पृ० ९५
पुढवीकायसजमे एव जाव कायसजमे	१७।२	१७।१
वलिस्स ण ·· ·	१७।८	ठा० ४।१५१
वुद्धे · ·····	९२।२	४२।१
वुद्धे जाव प्पहीणे	५५।१,४,७२।३,८४।२,९५।४,पृ० ४०	४२।१
वुद्धे जाव सव्वदुक्ख०	३०।२,५१।४,पृ० ६१	४२।१
वे ते चउ पच	पृ० १६७	पृ० १६७
भद्दवए ण मासे कित्तिए ण पोसे ण फग्गुणे ण वइसाहे ण मासे	२९।३-७	२९।२
भवित्ता जाव पव्वइए	७१।३,७५।२	१९।५
भवित्ता ण जाव पव्वइए	८३।४	१९।५
भविस्सइ य जाव अवट्ठिए	पृ० १३३	पृ० १३३
भूयाणदे जाव घोसे	३२।२	ठा० २।३५५-३६१
महुरा जाव हत्थिणपुर	पृ० २४४	वृत्ति
मुडे जाव पव्वइए	५९।२	१९।५
मुडे जाव पव्वइया	७७।२	१९।५
मुसावायाओ जाव सव्वाओ	५।२	५।६
रुइल्लप्पभ जाव रुइल्लुत्तरवडेंसग	६।१७	३।२१
लोगप्पभ जाव लोगुत्तरवडेंसग	१३।१४	३।२१
वइरावत्त जाव वइरुत्तरवडेंसग	१३।१४	३।२१
वायणा जाव अणट्ठयाए	पृ० ९३	पृ० ९१

वायणा जाव सव्रेज्जा	प० ६१	प० ८६
वायणा जाव से ण	प० ६२	प० ६१
विजया एव चेव जाव वासुदेवा	६८।४-६	६८।१-३
वीइक्कते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे	८६।१	ज० २
सणकुमारे जाव पाणए	३२।२	ठा० २।३८१-३८४
सत्तमाए ण पुढवीए पुच्छा	प० १४३	प० १४१
मवणो जाव भरणी	६।६	चद० १०।११
सिज्भिस्सति जाव अत	५।२२,७।२३,८।१८,१०।२५, १३।१७,१५।१६,१६।१६	१।४६
सिज्भिस्सति जाव सव्वदुक्खाण०	३।२४,४।१८,६।१७,६।२०,११।१६, १२।२०,१४।१८,१७।२१,१८।१८, १६।१५,२०।१७,२१।१४,२२।१७, २३।१३,२४।१५,२५।१८,२६।११, २७।१५,२८।१५,२६।१८,३०।१६, ३१।१४,३२।१४,३३।१४	१।४६
सिद्धाइ जाव प्पहीणाइ	४४।२	४२।१
सिद्धे जाव प्पहीणे	७२।४,७३।२,७४।१,७८।२,८३।३, ८४।४,६५।५,१००।४	४२।१
सिद्धे जाव सव्वदुक्ख०	४२।१	वृत्ति[1]
सुज्जकत जाव सुज्जुत्तरवडेंसग	६।१७	३।२१
सेवणया [सवित्ता] जाव सायासोक्ख०	६।२	६।१
सेहस्स जाव सेहे राइणियस्स	३३।१	दसा० ३
सोइदियधारणा जाव णोइदियधारणा	२८।३	२८।३
सोइदियनिग्गहे जाव फासिदिय०	२७।१	२८।३
सोतिदियईहा जाव फासिदियईहा	२८।३	२८।३
सोतिदियावाते जाव णोइदियावाते	२८।३	२८।३
हता गोयमा !... ...	प० १७५	प० १७५

१- वृत्तौ किञ्चद्भेदेन लभ्यते यथा—
४२।१ जाव निकरणात् 'बुद्धे मुत्ते अतगडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे'त्ति दृश्यम् ।
४४।२ जाव त्तिकरणेण 'बुद्धाइ मुत्ताइ अतगडाइ सव्वदुक्खप्पहीणाइ'ति दृश्यम् ।
८६।१ जाव त्तिकरणात् 'अतगडे सिद्धे बुद्धे मुत्ते' ति दृश्यम् ।

परिशिष्ट-२

आलोच्य-पाठ तथा वाचनान्तर

आलोच्य-पाठ

परियावेण [आयारो २।२, पृ० १७]

यद्यपि चूर्णौ वृत्तौ च 'परियावेण' इति पाठो व्याख्यातोऽस्ति, आदर्शेष्वपि एप एव पाठो लभ्यते। तथापि 'माया मे, पिया मे' इत्यादि पदाना अर्थप्रमगतया 'परियारेण' इति पाठस्य परिकल्पना सहजमेव जायते। प्राचीनलिप्या रकारवकारयो सादृश्यात् एतत् परिवर्तन नास्वाभाविकमस्ति।

मानवा [आयारो ५।६३, पृ० ४३]

वृत्तिकृता 'मानवा' मनुजा इति विवृतम्। चूर्णिकृता च नैतत् पद विवृतम्। किन्तु 'एव थभे मायाए वि लोभे वि जोएयव्व' इति निर्देश कृत। तेन 'माणवा' इति पदस्य स्थाने 'माणओ' इति पाठस्य परिकल्पना जायते।

अचिर [आयारो ८।८।२०, पृ० ७१]

चूर्णौ वृत्तौ च 'अचिर, पद स्थानार्थे व्याख्यातमस्ति। यद्येतत् स्थानावाची स्यात् तदा 'अइर' मिति पाठ सगच्छते। 'अजिर प्रागणम्,' इति तस्यार्थो भवेत्। 'अइर' इति अति-रोहितार्थवाची देशीशव्दोपि विद्यते। केनापि कारणेन इकारस्य चकारो जात इति प्रतीयते। अथवा चूर्णिकारेण वैकल्पिकरूपेण कालार्थे अचिरशव्दस्य प्रयोगो निर्दिष्ट, सोपि युक्त स्यात्।

एस खलु भगवया सेज्जाए अक्खाए [आयारचूला १।२९, पृ० ९०]

आयारचूलाया पाठ-सशोधने पड्आदर्शा प्रयुक्ता, चूर्णिवृत्तिश्च। तत्र पञ्चादर्शेपु उक्तपाठस्य ये पाठ-भेदास्ते तत्रैव पादटिप्पणे प्रदर्शिता सन्ति। वृत्तौ (पत्र ३००) 'एस विलुगयामो सेज्जाए' इति पाठो व्याख्यातोस्ति—"गृहस्थश्चानेनाभिसन्धानेन सस्कुर्याद्—यथैप साधु शय्याया सस्कारे विधातव्ये 'विलुगयामो' त्ति निर्ग्रन्थ अकिञ्चन इत्यत स गृहस्थ. कारणे सयतो वा स्वयमेव सम्कारयेदिति।" अस्माभि 'घ' प्रत्यनुसारी पाठ स्वीकृत। चूर्णावपि (पृ० ३३२) 'एस खलु भगवया' इति पाठो लभ्यते। 'सेज्जाए अक्खाए'

अत्र दोषशब्द अध्याहर्त्तव्य । वस्तुत उक्तपाठ व्याख्यागत प्रतीयते । 'सथरेज्जा' इति पाठस्यानन्तर 'तम्हा से नजए' इत्यादि पाठ स्यात्तदानीमपि स खण्डितो न प्रतिभाति । वृत्तिकृता उक्तपाठस्य या व्याख्या कृता, तथापि पूर्वानुमानस्य पुष्टिर्जायते । वृत्तिकारस्य सम्मुखे 'विलुगयामो' पाठ आसीत् स केपुचिदेव आदर्शेपु उपलभ्यते, नतु सर्वेपु ।

कप्पस्स [पइण्णगसमवाय सू० २१५, पृ० ६४१]

अत्र 'कप्पस्स' इति पाठस्याशयो वृत्तिकृता कल्पभाष्यत्वेन सूचित, वाचनान्तरे च पर्युपणाकल्पत्वेन सूचित, यथा—'कप्पस्स समोसरण नेयव्व' ति इहावसरे कल्पभाष्यक्रमेण समवसरणवक्तव्यताऽध्येया, सा चावश्यकोक्ताया न व्यतिरिच्यते, वाचनान्तरे तु पर्युपणाकल्पोक्त-क्रमेणेत्यभिहितम् (वृत्ति, पत्र १४४) ।

पर्युपणाकल्पे समवसरणवक्तव्यता इत्थमस्ति—तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा एक्कारस गणहरा होत्था ॥२०१॥

से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा एक्कारस गणहरा होत्था ? समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे इदभूई अणगारे गोयमे गोत्तेण पच समणसयाइ वातेइ, मज्झिमे अणगारे अग्गिभूई नामेण गोयमे गोत्तेण पच समणसयाइ वाएइ, कणीयसे अणगारे वाउभूई नामेण गोयमे गोत्तेण पच समणसयाइ वाएइ, थेरे अज्जवियत्ते भारद्दाये गोत्तेण पच समणसयाइ वाएइ, थेरे अज्जसुहम्मे अग्गिवेसायणे गोत्तेण पच समणसयाइ वाएइ, थेरे मडियपुत्ते वासिट्ठे गोत्तेण अद्धुट्ठाइ समणसयाइ वाएइ, थेरे मोरियपुत्ते कासवगोत्तेण अद्धुट्ठाइ समणसयाइ वाएइ, थेरे अकपिए गोयमे गोत्तेण थेरे अयलभाया हारियायणे गोत्तेण ते दुन्नि वि थेरा तिन्नि तिन्नि समणसयाइ वाइति, थेरे मेयज्जे थेरे य प्पभासे एए दोन्नि वि थेरा कोडिन्ना गोत्तेण तिन्नि तिन्नि समणसयाइ वाएति, से एतेण अट्ठेण अज्जो ! एव वुच्चइ—समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा एक्कारस गणहरा होत्था ॥२०२॥

सव्वे एए समणस्स भगवओ महावीरस्स एक्कारस वि गणहरा दुवालसगिणो चोद्दसपुव्विणो समत्तगणिपिडगधरा रायगिहे नगरे मासिएण भत्तेण अपाणएण कालगया जाव सव्वदुक्खप्पहीणा । थेरे इदभूई थेरे अज्जसुहम्मे सिद्धि गए महावीरे पच्छा दोन्नि वि परिनिव्वुया ॥२०३॥

जे इमे अज्जत्ताते समणा निग्गथा विहरति एए ण सव्वे अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स आवच्चिज्जा, अवसेसा गणहरा निरवच्चा वोच्छिन्ना ॥२०४॥ कल्पसूत्र, पृ० ६०,६१

प्रस्तुताङ्गस्य उपसहारसूत्रे ऋषि-यति-मुनि-वशाना वर्णनस्योल्लेखोऽस्ति । वृत्तिकृतास्य सवन्ध पर्युपणाकल्पगतसमवसरणप्रकरणेन सहयोजित, यथा—गणधरव्यतिरिक्ता शेषा जिनशिष्या ऋपयस्तद्वशप्रतिपादकत्वादृपिवश इति च तत्प्रतिपादन चात्र पर्युपणाकल्पस्य ऋपिवशपर्यवसानस्य समवसरणप्रक्रमेण भणितत्वादत एव यतिवशो मुनिवशश्चैतदुच्यते, यतिमुनिशब्दयो ऋपिपर्यायत्वात् । वृत्ति, पत्र १४७, १४८

पूर्वोक्तसमर्पणेन पर्युषणाकल्पस्य २०१ सूत्रात् २०४ पर्यन्ताना सूत्राणा ग्रहण जायते, किन्तु वृत्तिकृता ऋषिवशस्य यद् व्याख्यान कृत तेन २०१ सूत्रात् २२३ पर्यन्ताना सूत्राणा ग्रहणामावश्यक भवति। अत्र महती समस्या वर्तते। यदि पूर्ववर्ति समर्पण मान्य क्रियेत तदा ऋषिवशस्य वर्णन नान्यत्र क्वापि समुपलभ्यते। यदि च ऋषिवशस्य वर्णन समवसरणप्रक्रमेण सह सबध्यते तदा पूर्वोक्तसमर्पणस्याप्रयोजनीयता सिध्यति। वृत्तिकारेण नास्या असगते कापि चर्चा कृता। किमत्र रहस्यमिति निश्चयपूर्वक वक्तु न शक्यते, तथापि सभाव्यते समवसरणस्य सक्षेपीकरणसमये किंचित् परिवर्तन जातम्।

ऋषिवशवर्णनम्—

समणे भगव महावीरे कासवगोत्ते ण। समणस्स ण भगवओ महावीरस्स कासवगोत्तस्स अज्जसुहम्मे थेरे अतेवासी अग्गिवेसायणसगोत्ते। थेरस्स ण अज्जसुहम्मस्स अग्गिवेसायणसगोत्तस्स अज्जजवुनामे थेरे अतेवासी कासवगोत्ते। थेरस्स ण अज्जजवुनामस्स कासवगोत्तस्स अज्जप्पभवे थेरे अतेवासी कच्चायणसगोत्ते। थेरस्स ण अज्जप्पभवस्स कच्चायणसगोत्तस्स अज्जसेज्जभवे थेरे अतेवासी मणगपिया वच्छसगोत्ते। थेरस्स ण अज्जसेज्जभवस्स मणगपिउणो वच्छसगोत्तस्स अज्जजसभद्दे थेरे अतेवासी तुगियायणसगोत्ते ॥२०५॥

सखित्तवायणाए अज्जजसभद्दाओ अग्गओ एव थेरावली भणिया, त०—थेरस्स ण अज्जजसभद्दस्स तुगियायणसगोत्तस्स अतेवासी दुवे थेरा—थेरे अज्जसभूयविजए माढरसगोत्ते, थेरे अज्जभद्दवाहु पाइणसगोत्ते। थेरस्स ण अज्जसभूयविजयस्स माढरसगोत्तस्स अतेवासी थेरे अज्जथूलभद्दे गोयमसगोत्ते। थेरस्स ण अज्जथूलभद्दस्स गोयमसगोत्तस्स अतेवासी दुवे थेरा—थेरे अज्जमहागिरी एलावच्छसगोत्ते थेरे अज्जसुहत्थी वासिट्ठसगोत्ते। थेरस्स ण अज्जसुहत्थिस्स वासिट्ठसगोत्तस्स अतेवासी दुवे थेरा—सुट्ठियसुपडिवुद्धा कोडियकाकदगा वग्घावच्चसगोत्ता। थेराण सुट्ठियसुपडिवुद्धाण कोडियकाकदगाण वग्घावच्चसगोत्ताण अतेवासी थेरे अज्जइददिन्ने कोसियगोत्ते। थेरस्स ण अज्जइददिन्नस्स कोसियगोत्तस्स अतेवासी थेरे अज्जदिन्ने गोयमसगोत्ते। थेरस्स ण अज्जदिन्नस्स गोयमसगोत्तस्स अतेवासी थेरे अज्जसीहगिरी जाइस्सरे कोसियगोत्ते। थेरस्स ण अज्जसीहगिरिस्स जातिसरस्स कोसियगोत्तस्स अतेवासी थेरे अज्जवइरे गोयमसगोत्ते। थेरस्स ण अज्जवइरस्स गोयमसगोत्तस्स अतेवासी चत्तारि थेरा—थेरे अज्जनाइले थेरे अज्जपोमिले थेरे अज्जजयते थेरे अज्जतावसे। थेराओ अज्जनाइलाओ अज्जनाइला साहा निग्गया, थेराओ अज्जपोमिलाओ अज्जपोमिला साहा निग्गया, थेराओ अज्जजयताओ अज्जजयती साहा निग्गया, थेराओ अज्जतावसाओ अज्जतावसी साहा निग्गया इति ॥२०६॥

वित्थरवायणाए पुण अज्जजसभद्दाओ परओ थेरावली एव पलोइज्जइ, त जहा—थेरस्स ण अज्जजसभद्दस्स इमे दो थेरा अतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, त जहा—थेरे अज्जभद्दवाहू पाईणसगोत्ते, थेरे अज्जसभूयविजये माढरसगोत्ते। थेरस्स ण अज्जभद्दवाहुस्स पाईणगोत्तस्स इमे चत्तारि थेरा अतेवासी अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, त०—थेरे गोदासे थेरे अग्गिदत्ते थेरे जण्णदत्ते थेरे सोमदत्ते कासवगोत्ते ण। थेरेहितो ण गोदासेहितो कासवगोत्तेहितो

एत्थ ण गोदासगणे नाम गणे निग्गए, तस्स ण इमाओ चत्तारि साहाओ एवमाहिज्जति, त जहा—तामलित्तिया कोडीवरिसिया पोंडवद्धणिया दासी खब्बडिया ॥२०७॥

थेरस्स ण अज्जसभूयविजयस्स माढरसगोत्तस्स इमे दुवालस थेरा अतेवासी अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, त जहा—

नदणभद्दे उवनदभद्दे तह तीसभद्द जसभद्दे ।
थेरे य सुमिणभद्दे मणिभद्दे य पुन्नभद्दे य ॥१॥
थेरे य थूलभद्दे उज्जुमती जवुनामधेज्जे य ।
थेरे य दीहभद्दे थेरे तह पडुभद्दे य ॥२॥

थेरस्स ण अज्जसभूइविजयस्स माढरसगोत्तस्स इमाओ सत्त अतेवासिणीओ अहावच्चाओ अभिन्नाताओ होत्था, त जहा—

जक्खा य जक्खदिन्ना भूया तह होइ भूयदिन्ना य ।
सेणा वेणा रेणा भगिणीओ थूलभद्दस्स ॥१॥ ॥२०८॥

थेरस्स ण अज्जथूलभद्दस्स गोयमगोत्तस्स इमे दो थेरा अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, त जहा—थेरे अज्जमहागिरी एलावच्चसगोत्ते, थेरे अज्जसुहत्थी वासिट्ठसगोत्ते। थेरस्स ण अज्जमहागिरिस्स एलावच्चसगोत्तस्स इमे अट्ठ थेरा अतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, त०—थेरे उत्तरे थेरे वलिस्सहे थेरे धणड्ढे थेरे सिरिड्ढे थेरे कोडिन्ने थेरे नागे थेरे नागमित्ते थेरे छलुए रोहगुत्ते कोसिए गोत्तेण। थेरेहिंतो णं छलुएहिंतो रोहगुत्तेहिंतो कोसियगोत्तेहिंतो तत्थ ण तेरासिया निग्गया। थेरेहिंतो ण उत्तरवलिस्सहेहिंतो तत्थ ण उत्तरवलिस्सहगणे नाम गणे निग्गए। तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ एवमाहिज्जति, त जहा—कोसविया सोतित्तिया कोडवाणी चदनागरी ॥२०९॥

थेरस्स ण अज्जसुहत्थिस्स वासिट्ठसगोत्तस्स इमे दुवालस थेरा अतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, त जहा—

थेरे त्थ अज्जरोहण भद्दजसे मेहगणी य कामिड्ढी ।
सुट्ठियसुप्पडिवुद्धे रक्खिय तह रोहगुत्ते य ॥१॥
इसिगुत्ते सिरिगुत्ते गणी य बभे गणी य तह सोमे ।
दस दो य गणहरा खलु एए सीसा सुहत्थिस्स ॥२॥ ॥२१०॥

थेरेहिंतो ण अज्जरोहणेहिंतो कासवगुत्तेहिंतो तत्थ ण उद्देहगणे नाम गणे निग्गए। तस्सिमाओ चत्तारि साहाओ निग्गयाओ छच्च कुलाइं एवमाहिज्जति। से किं त साहाओ? एवमाहिज्जति—उदुवरिज्जिया मासपूरिया मतिपत्तिया सुवन्नपत्तिया, से त्त साहाओ। से किं त कुलाइ? एवमाहिज्जति, त जहा—

पढम च नागभूय बीय पुण सोमभूइय होइ ।
अह उल्लगच्छ तइय चउत्थय हत्थिलिज्ज तु ॥१॥
पचमग नदिज्ज छट्ठ पुण पारिहासिय होइ ।
उद्देहगणस्सेते छच्च कुला होति नायव्वा ॥२॥ ॥२११॥

थेरेहिंतो ण सिरिगुत्तेहिंतो ण हारियसगोत्तेहिंतो एत्थ ण चारणगणे नाम गणे निग्गए तस्स ण इमाओ चत्तारि साहाओ सत्त य कुलाइ एवमाहिज्जति। से किं त साहातो ? एवमाहिज्जति, त जहा - हारियमालागारी सकासिया गवेधुया वज्जनागरी, से त्त साहाओ। से किं त कुलाइ ? एवमाहिज्जति, त जहा—

पढमेत्थ वत्थलिज्ज वीय पुण वीचिधम्मक होइ।
तइय पुण हालिज्ज चउत्थग पूसमित्तेज्ज ॥१॥
पचमग मालिज्ज छट्ठ पुण अज्जवेडय होइ।
सत्तमग कण्हसह सत्त कुला चारणगणस्स ॥२॥ ॥२१२॥

थेरेहिंतो भद्दजसेहिंतो भारद्दायसगोत्तेहिंतो एत्थ ण उडुवाडियगणे नाम गणे निग्गए। तस्स ण इमाओ चत्तारि साहाओ तिन्नि कुलाइ एवमाहिज्जति। से किं त साहाओ ? एवमाहिज्जति, त०—चपिज्जिया भद्दिज्जिया काकदिया मेहलिज्जिया, से त्त साहाओ। से किं त कुलाइ ? एवमाहिज्जति—

भद्दजसिय तह भद्दगुत्तिय तइय च होइ जसभद्द।
एयाइ उडुवाडियगणस्स तिन्नेव य कुलाइ ॥१॥ ॥२१३॥

थेरेहिंतो ण कामिड्ढिहिंतो कुडिलसगोत्तेहिंतो एत्थ ण वेसवाडियगणे नाम गणे निग्गए। तस्स ण इमाओ चत्तारि सहाओ चत्तारि कुलाइ एवमाहिज्जति। से किं त साहाओ ? एव०— सावत्थिया रज्जपालिया अन्तरिज्जिया खेमलिज्जिया, से त साहाओ। से किं त कुलाइ ? एव०—

गणिय मेहिय कामड्ढिय च तह होइ इदपुरग च।
एयाइ वेसवाडियगणस्स चत्तारि उ कुलाइ ॥१॥ ॥२१४॥

थेरोहतो ण इसिगोत्तेहिंतो ण काकदएहिंतो वासिट्ठसगोत्तेहिंतो एत्थ ण माणवगणे नाम गणे निग्गए। तस्स ण इमाओ चत्तारि साहाओ तिण्णि य कुलाइ एव०। से किं त साहाओ ? साहाओ एवमाहिज्जति—कासविज्जिया गोयमिज्जिया वासिट्ठिया सोरट्ठिया, से त्त साहाओ। से किं त कुलाइ ? २ एवमाहिज्जति, त जहा—

इसिगोत्तियऽत्थ पढम, विइय इसिदत्तिय मुणेयव्व।
तइय च अभिजसत तिन्नि कुला माणवगणस्स ॥१॥ ॥२१५॥

थेरेहिंतो ण सुट्ठियसुप्पडिबुद्धेहिंतो कोडियकाकदिएहिंतो वग्घावच्चसगोत्तेहिंतो एत्थ ण कोडियगणे नाम गणे निग्गए। तस्स ण इमाओ चत्तारि साहाओ चत्तारि कुलाइ एव०। से किं त साहाओ ? २ एवमाहिज्जति, त जहा—

उच्चानागरि विज्जाहरी य वइरी य मज्झिमिल्ला य।
कोडियगणस्स एया, हवति चत्तारि साहाओ ॥१॥

से किं त कुलाइ ? २ एव० त जहा—

पढमेत्थ वभलिज्ज वितिय नामेण वच्छलिज्ज तु।
ततिय पुण वाणिज्ज चउत्थय पन्नवाहणय ॥१॥ ॥२१६॥

थेराण सुट्ठियसुपडिबुद्धाण कोडियकाकदाण वग्घावच्चसगोत्ताण इमे पच थेरा अतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था त जहा—थेरे अज्जइददिन्ने थेरे पियगथे थेरे विज्जाहरगोवाले कासवगोत्ते ण थेरे इसिदत्ते थेरे अरहदत्ते। थेरेहिंतो ण पियगथेहिंतो एत्थ ण मज्झिमा साहा निग्गया। थेरेहिंतो ण विज्जाहरगोवालेहिंतो तत्थ ण विज्जाहरी साहा निग्गया ॥२१७॥

थेरस्स ण अज्जइददिन्नस्स कासवगोत्तस्स अज्जदिन्ने थेरे अतेवासी गोयमसगोत्ते थेरस्स ण अज्जदिन्नस्स गोयमसगोत्तस्स इमे दो थेरा अतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया वि होत्था, त०—थेरे अज्जसतिसेणिए माढरसगोत्ते थेरे अज्जसीहगिरी जाइस्सरे कोसियगोत्ते। थेरेहिंतो ण अज्जसतिसे-णिएहिंतो ण माढरसगोत्तेहिंतो एत्थ ण उच्चानागरी साहा निग्गया ॥२१८॥

थेरस्स ण अज्जसतिसेणियस्स माढरसगोत्तस्स इमे चत्तारि थेरा अतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, त०—थेरे अज्जसेणिए थेरे अज्जतावसे थेरे अज्जकुबेरे थेरे अज्जकुबेरे थेरे अज्जइसिपालिते। थेरेहिंतो ण अज्जसेणितेहिंतो एत्थ ण अज्जसेणिया साहा निग्गया। थेरेहिंतो ण अज्जतावसेहिंतो एत्थ ण अज्जतावासी साहा निग्गया। थेरेहिंतो ण अज्जकुबेरेहिंतो एत्थ ण अज्जकुबेरा साहा निग्गया। थेरेहिंतो ण अज्जइसिपालेहिंतो एत्थ ण अज्जइसिपालिया साहा निग्गया ॥२१९॥

थेरस्स ण अज्जसीहगिरिस्स जातीसरस्स कोसियगोत्तस्स इमे चत्तारि थेरा अतेवासी अहा-वच्चा अभिण्णाया होत्था, त०—थेरे वणगिरी थेरे अज्जवइरे थेरे अज्जसमिए थेरे अरहदिन्ने। थेरेहिंतो ण अज्जसमिएहिंतो एत्थ ण बभदेवीया साहा निग्गया। थेरेहिंतो ण अज्जवइरेहिंतो गोयमसगोत्तेहिंतो एत्थ ण अज्जवइरा साहा निग्गया ॥२२०॥

थेरस्स ण अज्जवइरस्स गोत्तमसगोत्तमस्स इमे तिन्नि थेरा अतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, त०—थेरे अज्जवइरसेणिए थेरे अज्जपउमे थेरे अज्जरहे। थेरेहिंतो ण अज्जवइरसेणिएहिंतो एत्थ ण अज्जनाइली साहा निग्गया। थेरेहिंतो ण अज्जपउमेहिंतो एत्थ ण अज्जपउमा साहा निग्गया। थेरेहिंतो ण अज्जरहेहिंतो एत्थ ण अज्जजयंती साहा निग्गया ॥२२१॥

थेरस्स ण अज्जरहस्स वच्छसगोत्तस्स अज्जपूसगिरी थेरे अतेवासी कोसियगोत्ते। थेरस्स ण अज्जपूसगिरिस्स कोसियगोत्तस्स अज्जफग्गुमित्ते थेरे अतेवासी गोयमसगुत्ते ॥२२२॥

वदामि फग्गुमित्त च गोयम वणगिरिं च वासिट्ठ।
कोच्छि सिवभूइ पि य कोसिय दोज्जितकटे य ॥१॥
त वदिऊण सिरसा चित्त वदामि कासव गोत्त।
णक्खं कासवगोत्त रक्ख पि य कासव वदे ॥२॥
वदामि अज्जनाग च गोयम जेहिल च वासिट्ठ।
विण्हु माढरगोत्त कालगमवि गोयम वदे ॥३॥
गोयमगोत्तभार सप्पलय तह य भद्दय वदे।
थेर च सघवालियकासवगोत्त पणिवयामि ॥४॥
वदामि अज्जहत्थि च कासव खतिसागर धीर।
गिम्हाण पढममासे कालगय चेत्तसुद्धस्स ॥५॥

वदामि अज्जधम्म च सुव्वय सीसलद्धिसपन्न ।
जस्स निक्खमणे देवो छत्त वरमुत्तम वहइ ।।६।।
हत्थ कासवगोत्त धम्म सिवसाहग पणिवयामि ।
सीह कासवगोत्त धम्म पि य कासव वदे ।।७।।
सुत्तत्थरयणभरिए खमदममद्दवगुणेहिं सपन्ने ।
देविड्ढिखमासमणे कासवगोत्ते पणिवयामि ।।८।। ।।२२३।।

कल्पभाष्ये समवसरणवक्तव्यता—

गाथा ११७७-१२१७ बृहत्कल्पसूत्र, भाग २, पृ० ३६६-३७७

आवश्यकनिर्युक्तौ समवसरणवक्तव्यता—गा० ५४५-६५८

आवश्यकनिर्युक्तिमलयगिरीया वृत्ति, पत्र ३०१-३३९

वाचनान्तर

[आयारचूला १५।३५ के पश्चात् पृ० २४०]

स्थानाङ्गसूत्रे महापद्मप्रकरणे (९।६२) वृत्तिकारप्रदर्शिते वाचनान्तरे "कसपाईव मुक्कतोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणेतिव तेयसा जलते" इति पाठे आयारचूलाया भावनाध्ययनस्य समर्पण सूचितमस्ति। वृत्तिकृता श्रीमदभयदेवसूरिणाऽपि एतत् सवादि समुल्लिखितम्—"यथा भावनायामाचाराङ्गद्वितीयश्रुतस्कन्ध-पञ्चदशाध्ययने तथा अय वर्णको वाच्य इति भाव, कियद्दूर यावदित्याह—'जाव सुहुये' त्यादि" (वृत्ति, पत्र ४४०)।

औपपातिकसूत्रे (सूत्राङ्क २७, वृत्ति पृष्ठ ६६) "वक्ष्यमाणपदाना च भावनाध्ययनाद्युक्ते इमे सग्रहगाथे—

कसे सखे जीवे, गयणे वाए य सारए सलिले ।।
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारडे ।।
कुजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे ।
चदे सूरे कणगे, वसुधरा चेव सुहुयहुए ।।"

इति वृत्तिकृता भावनाध्ययनगतसग्रहगाथयो सूचन कृतमस्ति।

एतयोर्द्वयो समर्पण-सूचनयो सन्दर्भे भावनाध्ययन दृष्ट तदा क्वापि समर्पित पाठो नोपलब्ध । भावनाध्ययनस्य वृत्तिरत्यन्त सक्षिप्ताऽसि, तत्र तस्य पाठस्य नास्ति कोपि सकेत आदर्शेषु चापि तस्यानुपलब्धिरेव। चूर्णौ उक्तपाठस्य व्याख्या समुपलब्धा तेनेति निर्णय कर्तुं शक्यते—चूर्णिव्याख्यातात् पाठात् आदर्शगत पाठो भिन्नोऽस्ति। अय वाचनाभेद चूर्णिकारस्य समक्षमासीन्नवेति नानुमान कर्तुं किञ्चित् साधन लभ्यते।

स्थानाङ्गस्य वाचनान्तर-पाठे भावनाध्ययनस्य समर्पणमस्ति तस्य सम्बन्ध चूर्ण्यनुसारीपाठेनैव विद्यते, तथैव औपपातिकवृत्ते सूचनस्यापि सम्बन्धस्तेनैव।

स्थानाङ्गे महापद्मप्रकरणे एव स्वीकृतपाठेपि 'जहा भावणाते' इति समर्पणमस्ति। तस्यापि सम्बन्धश्चूर्ण्यनुसारिपाठेन विद्यते।

आलोच्यमानपाठ किञ्चिद् भेदेनानेकेषु आगमेषु लभ्यते। तस्य तुलनात्मकमध्ययनमत्र प्रस्तूयते। आचाराङ्गचूर्णौ पूर्ण पाठो विवृतो नास्ति। स स्थानाङ्गस्य, कल्पसूत्रस्य, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ते, आचाराङ्गचूर्णेश्च सम्बन्ध-समीक्षा-पूर्वकं मयोजित। स च इत्थं सम्भाव्यते—

संयोजित पाठ

तए णं से भगवं अणगारे जाए इरियासमिए भासासमिए जाव गुत्तबंभयारी अममे अकिंचणे छिन्नसोते निरुवलेवे कंसपाईव मुक्कतोए संखो इव निरंगणे जीवो विव अप्पडिहयगई जच्चकणगं पिव जायरूवे आदरिसफलगे इव पागडभावे कुम्मो इव गुत्तिदिए पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे गगणमिव निरालवणे अणिलो इव निरालए चंदो इव सोमलेसे सूरो इव दित्ततेए सागरो इव गंभीरे विहग इव सव्वओ विप्पमुक्के मंदरो इव अप्पकंपे सारयसलिलं व सुद्धहियए खग्गविसाणं व एगजाए भारुंडपक्खी व अप्पमत्ते कुंजरो इव सोंडीरे वसभे इव जायत्थामे सीहो इव दुद्धरिसे वसुंधरा इव सव्वफासविसहे सुहुयहुयासणे इव तेयसा जलंते।

[कंसे संखे जीवे, गगणे वाते य सारए सलिले।
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारुंडे ॥१॥
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥२॥]

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे भवइ। से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा—अंडए वा पोयए इ वा उग्गहेइ वा पग्गहिएइ वा, जं जं णं जं णं दिसं इच्छइ तं णं तं णं दिसं अपडिबद्धे सुचिभूए लहुभूए अणुप्पगंथे संजमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एवं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतीए मुत्तीए सच्च-संजम-तव-गुण-सुचरिय-सोवचिय-फल-परिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने।

तए णं से भगवं अरहे जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सनेरइयतिरियनरामरस्स लोगस्स पज्जवे जाणइ पासइ, तं जहा—आगतिं गतिं ठितिं चयणं उववायं तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी, तं तं कालं मणसवयसकाएहिं जोगेहिं वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे अजीवाण य जाणमाणे पासमाणे विहरइ।

तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाणदंसणेणं सदेवमणुयासुरं लोगं अभिसमिच्चा समणाणं निग्गंथाणं पंचमहव्वयाइं सभावणाइं छज्जीवनिकाए धम्मं अक्खाइ [देसमाणे विहरइ], तंजहा—पुढविकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तसकाए।

स्थानाङ्ग (६।६२)

तस्स णं भगवतस्स[1] साइरेगाइं दुवालसवासाइं निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उप्पज्जिहिंति तं दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा, ते सव्वे सम्मं सहिस्सइ खमिस्सइ तितिक्खिस्सइ अहियासिस्सइ।

तए णं से भगवं अणगारे भविस्सइ इरियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणियासमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी अममे अकिंचणे छिन्नगंथे [वृ० पा० किन्नगंथे] निरुपलेवे कंसपाईव मुक्कतोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणे तिव तेयसा जलंते।

कंसे संखे जीवे, गगणे वाते य सारए सलिले।
पुक्खरपत्ते - कुम्मे विहगे खग्गे य भारंडे ॥१॥
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवतस्स कत्थइ पडिबंधे भविस्सइ, से य पडिबंधे चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा— अंडएइ वा पोयएइ वा उग्गहेइ वा पग्गहिएइ वा, जं णं जं णं दिसं इच्छइ तं णं तं णं दिसं अपडिबद्धे सुचिभूए लहुभूए अणुप्पगंथे संजमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सइ, तस्स णं भगवतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एवं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतिए मुत्तीए गुत्तीए सच्च-संजम-तव-गुण-सुचरिय-सोय-चिय-[चिय ?]-फल-परिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिहिंति।

तए णं से भगवं अरहे जिणे भविस्सति, केवली सव्वण्णसव्वदरिसी सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स परियागं जाणइ पासइ सव्वलोए सव्व जीवाणं आगइं गतिं ठियं चयणं उववायं तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी तं तं कालं मणसवयसकाइए जोगे वट्टमाणाणं सव्वलोहे सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ।

तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाणदंसणेणं सदेवमणुआसुरं लोगं अभिसमिच्चा समणाणं निग्गंथाणं मणेत्इए जाव पंचमहव्वयाइं सभावणाइं छजीवनिकाया धम्मं देसेमाणे विहरिस्सति।

कल्पसूत्र

तए णं समणे भगवं महावीरे अणगारे जाए इरियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिए, मणसमिए, वइसमिए, कायसमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिंदिए, गुत्तबंभयारी, अकोहे, अमाणे, अमाए, अलोभे, संते, पसंते, उवसंते परिनिव्वुडे, अणासवे, अममे, अकिंचणे, छिन्नगंथे निरुवलेवे, कंसपाई इव मुक्कतोये १, संखो इव निरंजणे २, जीवो इव अप्पडिहयगई ३, गगणं पिव निरालंबणे ४,

---

१ अस्य स्थाने 'से णं भगवं' युज्यते।

वायुरिव अप्पडिबद्धे ५, सारयसलिल व सुद्धहियए ६, पुक्खरपत्त व निरुवलेवे ७, कुम्मो इव गुत्तिदिए ८, खग्गिविसाण व एगजाए ९, विहग इव विप्पमुक्के १०, भारुडपक्खी इव अप्पमत्ते ११, कुजरो इव सोडीरे १२, वसभो इव जायथामे १३, सीहो इव दुद्धरिसे १४, मदरो इव अप्पकपे १५, सागरो इव गभीरे १६, चदो इव सोमलेसे १७, सूरो इव दित्ततेए १८, जच्चकणग व जायरूवे १९, वसुधरा इव सव्वफासविसहे २०, सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलते २१। एतेसि पदाण इमातो दुन्नि सघयणगाहाओ—

कसे सखे जीवे, गगणे वायू य सरयसलिले य।
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारडे ॥१॥
कुजरे वसभे सीहे, णगराया चेव सागरमखोभे।
चदे सूरे कणगे, वसुधरा चेव हूयवहे ॥२॥

नत्थि ण तस्स भगवतस्स कत्थइ पडिबधो भवति। से य पडिबधे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। दव्वओ ण सचित्ताचित्तमीसिएसु दव्वेसु। खेत्तओ ण गामे वा नगरे वा अरण्णे वा खित्ते वा खले वा घरे वा अगणे वा णहे वा। कालओ ण समए वा आवलियाए वा आणापाणुए वा थोवे वा खणे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊ वा अयणे वा सवच्छरे वा अन्नयरे वा दीहकालसजोगे वा। भावओ ण कोहे वा माणे वा मायाए वा लोभे वा भये वा हासे वा पेज्जे वा दोसे वा कलहे वा अब्भक्खाणे वा पेसुन्ने वा परपरिवाए वा अरतिरती वा मायामोसे वा मिच्छादसणसल्ले वा। तस्स ण भगवतस्स नो एव भवइ।

से ण भगव वासावासवज्ज अट्ठ गिम्हहेमतिए मासे गामे एगराईए वासीचदणसमाणकप्पे समतिणमणिलेट्ठुकचणे समदुक्खसुहे इहलोगपरलोगअपडिबद्धे जीवियमरणे निरवकखे ससारपारगामी कम्मसगनिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिए एव च ण विहरइ।

तस्स ण भगवतस्स अणुत्तरेण नाणेण अणुत्तरेण दसणेण अणुत्तरेण चरित्तेरेण अणुत्तरेण आलएण अणुत्तरेण विहारेण अणुत्तरेण वीरिएण अणुत्तरेण अज्जवेण अणुत्तरेण मद्दवेण अणुत्तरेण लाघवेण अणुत्तराए खतीए अणुत्तराए मुत्तीए अणुत्तराए गुत्तीए अणुत्तराए तुट्ठीए अणुत्तरेण सच्चसजमतवसुचरियसोवचइयफलपरिनिव्वाणमग्गेण अप्पाण भावेमाणस्स दुवालस सवच्छराइ विइक्कताइ। तेरसमस्स सवच्छरस्स अतरा वट्टमाणस्स जे से गिम्हाण दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे वइसाहसुद्धे तस्स ण वइसाहसुद्धस्स दसमीए पक्खेण पाईणगामिणीए छायाए पोरिसीए अभिनिवट्टाए पमाणपत्ताए सुव्वएण दिवसेण विजएण मुहुत्तेण जभियगामस्स नगरस्स बहिया उजुवालियाए नईए तीरे वियावत्तस्स चेईयस्स अदूरसामते सामागस्स गाहावइस्स कट्ठकरणसि सालपायवस्स अहे गोदोहियाए उक्कुडुयनिसिज्जाए आयावणाए आयावेमाणस्स छट्ठेण भत्तेण अपाणएण हत्थुत्तराहि नक्खत्तेण जोगमुवागएण झाणतरियाए वट्टमाणस्स अणते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुन्ने केवलवरनाणदसणे समुप्पन्ने।

तए ण से भगव अरहा जाए जिणे केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियाय जाणइ पासइ, सव्वलोए सव्वजीवाण आगइ गइ ठिइ चवण उववाय तक्क मणो

माणंयिं भुत्तं कडं पडिसेवियं आविकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्सभागी तं तं कालं मणवयणकायजोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरइ।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, वक्ष २ (पत्र १४६)

तए णं से भगवं समणे जाए इरियासमिए जाव परिट्ठावणिआसमिए मणसमिए वयसमिए कायसमिए मणगुत्ते जाव गुत्तबंभयारी अकोहे जाव अलोहे संते पसंते उवसंते परिणिव्वुडे छिण्णसोए निरुवलेवे संखमिव निरंजणे जच्चकणगं व जायरूवे आदरिसपडिभागे इव पागडभावे कुम्मो इव गुत्तिदिए पुक्खरपत्तमिव निरुवलेवे गगणमिव निरालंबणे अणिले इव णिरालए चंदो इव सोमदंसणे सूरो इव तेअंसी विहग इव अपडिबद्धगामी सागरो इव गंभीरे मंदरो इव अकंपे पुढवी विव सव्वफासविसहे जीवो विव अप्पडिहयगइत्ति। णत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे, से पडिबंधे चउव्विहे भवति, तंजहा—दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ इह खलु माया मे माया मे भगिणी मे जाव संगंथसंथुआ मे हिरण्णं मे सुवण्णं मे जाव उवगरणं मे, अहवा समासओ सचित्ते वा अचित्ते वा मीसए वा दव्वजाए सेवं तस्स ण भवइ, खित्तओ गामे वा णगरे वा अरण्णे वा खेत्ते वा खले वा गेहे वा अंगणे वा एवं तस्स ण भवइ, कालओ थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊए वा अयणे वा संवच्छरे वा अन्नयरे वा अन्नयरे वा दीहकालपडिबंधे एवं, तस्स ण भवइ, भावओ कोहे वा जाव लोहे वा भए वा हासे वा एवं तस्स ण भवइ, से णं भगवं वासावासवज्जं हेमंतगिम्हासु गामे एगराइए णगरे पंचराइए ववगयहास सोगअरइभयपरित्तासे णिम्ममे णिरहंकारे लहुभूए अगंथे वासीतच्छणे अदुट्ठे चंदणाणुलेवणे अरत्ते लेट्ठुम्मि कंचणंमि अ समे इह लोए अपडिबद्धे जीवियमरणे निरवकंखे संसारपारगामी कम्मसंगणिग्घायणाए अब्भुट्ठिए विहरइ। तस्स णं भगवंतस्स एतेणं विहारेणं विहरमाणस्स एगे वाससहस्से विइक्कंते समाणे पुरिमतालस्स नगरस्स बहिआ सगडमुहंसि उज्जाणंसि णिग्गोहवरपायवस्स अहे झाणंतरिआए वट्टमाणस्स फग्गुणबहुलस्स इक्कारसीए पुव्वण्हकालसमयंमि अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं उत्तरासाढाणक्खत्तेणं जोगमुवागएणं अणुत्तरेणं नाणेणं जाव चरित्तेणं अणुत्तरेणं तवेणं बलेणं वीरिएणं आलएणं विहारेणं भावणाए खंतीए गुत्तीए मुत्तीए तुट्ठीए अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं सुचरिअसोवचिअफलनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवल-वरनाणदंसणे समुप्पण्णे जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सणेरइअतिरियनरामरस्स लोगस्स पज्जवे जाणइ पासइ, तंजहा—आगइं गइं ठिइं उववायं भुत्तं कडं पडिसेविअं आवीकम्मं रहोकम्मं तं तं कालं मणवयकायजोगे एयमादी जीवाणवि सव्वभावे अजीवाणवि सव्वभावे मोक्खमग्गस्स विसुद्धतराए भावे जाणमाणे पासमाणे एस खलु मोक्खमग्गे मम अण्णेसिं च जीवाणं हियसुहणिस्सेसकरे सव्वदुक्खविमोक्खणे परमसुहसमाणणे भविस्सइ। तते णं से भगवं समणाणं निग्गंथाण य णीग्गंथीण य पंच महव्वयाइं सभावणगाइं छच्च जीवणिकाए धम्मं देसेमाणे विहरति, तंजहा—पुढविकाइए भावणागमेणं पंच महव्वाइं सभावणागाइं भाणिअव्वाइं ति।

सूत्रकृताङ्गे (२।६४-६६) प्रश्नव्याकरणे (संवरद्वार ५।११) रायपसेणइयसूत्रे (सूत्राङ्क ८१३-८१६) औपपातिकसूत्रे (सूत्र २७-२९, १५२,१५३,१६४,१६५) चालोच्यमानपाठेनाधिकी क्वचिच्च तदधिकापि तुलना जायते। किन्तु एतेषां सूत्राणां पाठा अनगार-वर्णन-सम्बद्धा सन्ति, तत पूर्णा तुलना प्रस्तुतपाठेन न नाम जायते।

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३	१	मदम	मदम्म
१५	२७	मत्य	मत्य
१६	४	वियति	वयन्ति
२६	१८	जाणे	जाण
४२	२२	पाव	पाव
४५	१७	समण०	समणु०
४८	१५	णियाणाओ	णियाणओ
५२	७	णिज्झोसइत्ता	णिज्झोसइत्ता
५४	३	णियट्टति	णियट्ट ति
५५	६	तिनिक्खा०	तितिक्खा
६५	१	×	उवगरण-पद
७१	१	×	पाओवगमण-पद
८४	१८	भुज्जिय	भुज्जिय
८६	१५	अणासेविय	अणासेविय
९१	१०	पट्टणसि	पट्टणसि
१०३	१६	जाणज्जा	जाणेज्जा
११५	७	उवाणिमतेज्जा	उवणिमंतेज्जा
१६४	२६	ज	ज
१७८	२१	अणसणिज्ज	अणेसणिज्ज
१७८	११	वियडण	वियडेण
१८१	१८	पहाए	पेहाए
१८७	१२	पण	पुण
२९९	५	सोस	सीस
३४८	३	परक्कमण्ण	परक्कमण्णू
३४८	१५	गवमत	गवमत
३६३	१२	मारत्था	गारत्था
५३७	१२	मच्छा-पद	मुच्छा-पद
६२२	१७	जलमय	अलमयू
६५२	११	मुडे	मुंडे
८९५	२३	निगर०	नगर०

पाठान्तर

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२९६	पा० २६	विघीत	विवति
३१०	,, २	समक्खाय	समक्खात
३२०	,, २१	आय	आय
३२१	,, ६	तेउ	तेउ
४००	,, ७	अतोमतेण	जनोमतेण
४३५	,, १	घृत	वृत